हयातुस्सहाबा

(भाग-2)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

हयातुस्सहाबा

(भाग-2)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

हयातुस्सहाबा (भाग–2)

Hayat-us-Sahabah (Vol. 2)

लेखक : हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी (रह०)

अनुवादक : अहमद नदीम नदवी

प्रकाशन: 2013

ISBN 81-7101-212-4

TP-207-13

ISBN: 81-7101-212-4 (Vol. 2)
ISBN: 81-7101-214-0 (Set)

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

विषय-सूची

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ?	कहां ?

कहां ? **क्या ?**

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ? कहां ?

क्या ? **कहां ?**

क्या ? कहां ?

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सहाबा किराम रज़ि० का आपसी इत्तिहाद और एक राय होकर काम करने का एहतिमाम करना और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की तरफ़ दावत देने और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने में आपस के इख़्तिलाफ़ और झगड़े से बचने का एहतिमाम करना

इब्ने इस्हाक़ से रिवायत है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने सक़ीफ़ा बनी साइदा वाले दिन बयान करते हुए फ़रमाया कि यह बात जायज़ नहीं है कि मुसलमानों के दो अमीर हों, क्योंकि जब भी ऐसा होगा, मुसलमानों के तमाम कामों और तमाम हुक्मों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा और उनका मेल बिखर जाएगा और उनका आपस में झगड़ा हो जाएगा और फिर सुन्नत छूट जाएगी और बिदअत ग़ालिब आ जाएगी और बड़ा फ़ित्ना ज़ाहिर हो जाएगा और कोई भी उसे ठीक न कर सकेगा।[1]

हज़रत सालिम बिन उबैद रह० हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत के बारे में रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि इस मौक़े पर अंसार में से एक आदमी ने कहा, एक अमीर हम (अंसार) में से हो, और एक अमीर आप (मुहाजिरीन) में से हो, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकती हैं।[2]

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 145

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० ने एक बार बयान में फ़रमाया, ऐ लोगो !(अपने अमीर की) की बात मानना और आपस में इकट्ठे रहना अपने लिए ज़रूरी समझो, क्योंकि यही चीज़ अल्लाह की वह रस्सी है जिसको मज़बूती से थामने का अल्लाह ने हुक्म दिया है और आपस में जुड़ मिलकर चलने में जो नागवार बातें तुम्हें पेश आएंगी, वे तुम्हारी उन पसन्दीदा बातों से बेहतर हैं जो तुमको अलग चलने में हासिल होंगी। अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा फ़रमाई है, उसके लिए अल्लाह ने एक इंतिहा भी बनाई है जहां वह चीज़ पहुंच जाती है।

यह इस्लाम के जमाव और तरक़्क़ी का ज़माना है और बहुत जल्द यह भी अपनी इंतिहा को पहुंच जाएगा, फिर क़ियामत के दिन इसमें कमी-ज़्यादती होती रहेगी और इसकी निशानी यह है कि लोग बहुत ज़्यादा फ़क़ीर हो जाएंगे और फ़क़ीर को ऐसा आदमी नहीं मिलेगा, जो उस पर एहसान करे और ग़नी भी यह समझेगा कि उसके पास जो कुछ है, वह उसके लिए काफ़ी नहीं है, यहां तक कि आदमी अपने सगे भाई और चचेरे भाई से अपनी फ़क़ीरी की शिकायत करेगा, लेकिन वह भी उसे कुछ न देगा और यहां तक कि ज़रूरतमंद मांगने वाला एक जुमा से दूसरे जुमा तक हफ़्ते भर मांगने के लिए फिरता रहेगा, लेकिन कोई भी उसके हाथ पर कुछ नहीं रखेगा।

और जब नौबत यहां तक पहुंच जाएगी तो ज़मीन से एक दर्द भरी आवाज़ इस तरह निकलेगी कि हर मैदान के लोग यही समझेंगे कि यह आवाज़ उनके मैदान ही से निकली है और फिर जब तक अल्लाह चाहेंगे, ज़मीन में ख़ामोशी रहेगी, फिर ज़मीन अपने जिगर के टुकड़ों को बाहर निकाल फेंकेगी। उनसे पूछा गया, ऐ हज़रत अबू अब्दुर्रहमान! ज़मीन के जिगर के टुकड़े क्या चीज़ें हैं?

आपने फ़रमाया, सोने और चांदी के स्तून और फिर उस दिन के बाद से क़ियामत के दिन तक सोने और चांदी से किसी तरह का नफ़ा नहीं उठाया जा सकेगा।[1]

2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 145

और हज़रत मुजालिद रह० के अलावा दूसरों की रिवायत में यह मज़्मून है कि रिश्तेदारियों को तोड़ा जाएगा, यहां तक कि मालदार को सिर्फ़ फ़क़ीरी का डर होगा और फ़क़ीर को कोई आदमी ऐसा न मिलेगा जो उस पर एहसान करे और आदमी का चचेरा भाई मालदार होगा और वह उससे अपनी ज़रूरत की शिकायत करेगा, लेकिन वह चचेरा भाई उसे कुछ नहीं देगा। इसके बाद वाला मज़्मून ज़िक्र नहीं किया।[1]

एक साहब बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत अबूज़र रज़ि० को देने के लिए एक चीज़ उठा कर ले चले। उनकी जगह रबज़ा पहुंचकर हमने उनके बारे में पूछा, तो वह हमें वहां न मिले और हमें बताया गया कि उन्होंने (अमीरुल मोमिनीन से) हज पर जाने की इजाज़त मांगी थी। उनको इजाज़त मिल गई थी। (वह हज करने गए हुए हैं।)

चुनांचे हम वहां से चलकर शहर मिना में उनके पास पहुंचे। हम लोग उनके पास बैठे हुए थे कि किसी ने उनको बताया कि (अमीरुल मोमिनीन) हज़रत उस्मान रज़ि० ने (मिना में) चार रक्अत नमाज़ पढ़ी है, तो उन्हें इससे बड़ी नागवारी हुई और इस बारे में उन्होंने बड़ी सख़्त बात कही और फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० के साथ (यहां मिना में) नमाज़ पढ़ी थी तो, आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी थी और मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० के साथ (यहां) नमाज़ पढ़ी थी, (तो उन्होंने भी दो-दो रक्अत नमाज़ पढ़ी थी) लेकिन जब नमाज़ पढ़ने का वक़्त आया तो हज़रत अबूज़र रज़ि० ने खड़े होकर चार रक्अत नमाज़ पढ़ी। (हज़रत उस्मान रज़ि० ने मक्का में शादी कर ली थी और मक्का में कुछ दिन रहने का इरादा कर लिया था, इसलिए वह 'मुक़ीम' हो गए थे और चार रक्अत नमाज़ पढ़ रहे थे।) इस पर उनकी ख़िदमत में कहा गया कि अमीरुल मोमिनीन के जिस काम पर आप एतराज़ कर रहे थे, अब आप ख़ुद ही उसे कर रहे हैं?

फ़रमाया, अमीर की मुख़ालफ़त करना इससे ज़्यादा सख़्त है। एक

3. हैसमी, भाग 7, पृ० 328
1. हुलीया, भाग 9, पृ० 249

बार हुज़ूर सल्ल० ने हम लोगों में बयान फ़रमाया था, तो इर्शाद फ़रमाया था कि मेरे बाद बादशाह होगा, तुम उसे ज़लील न करना, क्योंकि जिसने उसे ज़लील करने का इरादा किया, उसने इस्लाम की रस्सी को अपनी गरदन से निकाल फेंका और उस आदमी की तौबा उस वक़्त तक क़ुबूल न होगी, जब तक वह उस सूराख़ को बन्द न कर दे जो उसने किया है। (यानी बादशाह को ज़लील करके उसने इस्लाम को जो नुक़सान पहुंचाया है, उसको पूरा न कर ले) और वह ऐसा कर न सकेगा और (अपने पिछले रवैए से) रुजू करके उस बादशाह की इज़्ज़त करने वाला न बन जाए।

हुज़ूर सल्ल० ने हमें इस बात का हुक्म दिया कि तीन बातों में बादशाहों को हम अपने पर ग़ालिब न आने दें, (यानी हम उनकी इज़्ज़त करते रहें, लेकिन उनकी वजह से ये तीन काम न छोड़ दें)—

—एक तो हम नेकी का लोगों को हुक्म देते रहें,

—दूसरे बुराई से रोकते रहें, और

—तीसरे लोगों को सुन्नत तरीक़े सिखाते रहें।[1]

हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल०, हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० मक्का और मिना में दो रक्अत क़स्र पढ़ा करते थे और इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ि० ने भी अपनी ख़िलाफ़त के शुरू के ज़माने में दो ही रक्अत नमाज़ पढ़ी, लेकिन बाद में चार रक्अत पढ़ने लग गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा, 'इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' (लेकिन जब नमाज़ पढ़ने का वक़्त आया) तो उन्होंने खड़े होकर चार रक्अत नमाज़ पढ़ी, तो उनसे कहा गया कि (चार रक्अत की ख़बर पर तो) आपने 'इन्ना लिल्लाह' पढ़ी थी और ख़ुद चार रक्अत पढ़ रहे हैं, तो उन्होंने फ़रमाया, अमीर की मुख़ालफ़त करना इससे ज़्यादा बुरी चीज़ है।[2]

हज़रत अली रज़ि० ने एक बार फ़रमाया कि तुम वैसे ही फ़ैसले

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 216
2. कंज़, भाग 4, पृ० 242

करते रहो, जैसे पहले किया करते थे, क्योंकि मैं इख़्तिलाफ़ को बहुत बुरी चीज़ समझता हूं। या तो लोगों की एक ही जमाअत रहे या मैं मर जाऊं जैसे मेरे साथी (हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० बग़ैर इख़्तिलाफ़ के) मर गए।

चुनांचे हज़रत इब्ने सीरीन रह० की राय यह थी कि (इंतिहा पसन्द) लोग हज़रत अली रज़ि० से आम तौर पर जो रिवायतें नक़ल करते हैं, वे ग़लत हैं।[1]

हज़रत सलीम बिन क़ैस आमिरी बयान करते हैं कि इब्ने कव्वा ने हज़रत अली रज़ि० से सुन्नत और बिदअत और इकट्ठे रहने और बिखर जाने के बारे में पूछा, तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने कव्वा! तुमने सवाल याद रखा, अब इसका जवाब समझ लो। अल्लाह की क़सम! सुन्नत तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है। बिदअत वह काम है जो उस तरीक़े से हटकर हो और अल्लाह की क़सम! हक़ वालों का इकट्ठा होना ही असल में इकट्ठा होना है, चाहे वे तायदाद में कम हों और बातिल वालों का इकट्ठा होना हक़ीक़त में बिखर जाना है, चाहे वे तायदाद में ज़्यादा हों।[2]

सहाबा किराम रज़ि० का हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ख़िलाफ़त पर इत्तिफ़ाक़

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि (हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल की ख़बर सुनकर) हज़रत अबूबक्र रज़ि० सुख़ मुहल्ला से अपनी सवारी पर तशरीफ़ लाए और मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचकर सवारी से नीचे उतरे। आप बड़े बेचैन और ग़मगीन थे और उन्होंने अपनी बेटी हज़रत आइशा रज़ि० से घर में आने की इजाज़त चाही। हज़रत आइशा रज़ि० ने इजाज़त दे दी।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० अन्दर तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. मंतख़ब, भाग 5, पृ० 50
2. कंज़, भाग 1, पृ० 96

अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो चुका था और आप अपने बिस्तर पर थे और आपकी बीवियां आपके चारों ओर बैठी हुई थीं। हज़रत आइशा रज़ि० के अलावा बाक़ी तमाम बीवियों ने अपने चेहरे चादरों से छिपा लिए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से परदा कर लिया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के मुबारक चेहरे से चादर हटाई और घुटनों के बल बैठकर बोसा लेने लगे और रोते हुए फ़रमाने लगे कि हज़रत (उमर) बिन ख़त्ताब जो कह रहे हैं, वह ठीक नहीं है (कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल नहीं हुआ है, बल्कि यह बेहोशी तारी हुई है या उनकी रूह मेराज में गई है जो वापस आ जाएगी) अल्लाह के रसूल सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया है। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर अल्लाह की रहमत हो। आप ज़िंदगी की हालत में और वफ़ात के बाद भी कितने पाकीज़ा हैं।

फिर हज़रत अबूक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर चादर डाल दी और फिर तेज़ी से मस्जिद की तरफ़ चले और लोगों की गरदनों को फलांगते हुए मिंबर तक पहुंचे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० को आता हुआ देखकर हज़रत उमर रज़ि० बैठ गए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मिंबर की ओर खड़े होकर लोगों को आवाज़ दी। आवाज़ सुनकर सब बैठ गए और ख़ामोश हो गए।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कलिमा शहादत, जैसा उन्हें आता था, पढ़ा और फ़रमाया कि जब अल्लाह के नबी सल्ल० तुम्हारे बीच ज़िंदा थे, उसी वक़्त अल्लाह ने उनको मौत की ख़बर दे दी थी और तुमको भी तुम्हारी मौत की ख़बर दे दी और यह मौत एक यक़ीनी बात है। अल्लाह के अलावा तुममें से कोई भी (इस दुनिया में) बाक़ी नहीं रहेगा। अल्लाह ने (क़ुरआन में) फ़रमाया है—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (آل عمران آیت ۱۴۴)

'और मुहम्मद निरे रसूल ही तो हैं और आपसे पहले और बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जाए या आप ही शहीद हो जावें, तो क्या तुम लोग उलटे फिर जाओगे?'

(आले इम्रान, आयत 144)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (मैं इस आयत को बिल्कुल ही भूल गया था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पढ़ने से मुझे यह याद आई और मुझे ऐसे लगा कि जैसे) क़ुरआन की यह आयत आज ही उतरी है और आज से पहले नहीं उतरी और अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० से फ़रमाया है—

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ (زمر آیت ۳۰)

'आपको भी मरना है और उनको भी मरना है।' (ज़ुमर आयत 30)

और अल्लाह ने फ़रमाया है—

كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (قصص آیت ۸۸)

'सब चीज़ें फ़ना होने वाली हैं, अलावा उसकी ज़ात के, उसी की हुकूमत है (जिसका कामिल तौर पर ज़ाहिर होना क़ियामत में है) और उसी के पास तुम सबको जाना है। (पस सबको उनके किए का बदला देगा)'

(क़सस, आयत 88)

और अल्लाह का इर्शाद है—

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ (رحمٰن آیت ۲۶)

'जितने (जानदार) धरती पर मौजूद हैं, सब फ़ना हो जाएंगे और आपके पालनहार की ज़ात, जो कि अज़्मत वाली है, एहसान वाली है, बाक़ी रह जाएगी।' (रहमान, आयत 26)

और अल्लाह का इर्शाद है—

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ.

(آل عمران آیت ۱۸۵)

'हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुमको पूरा बदला क़ियामत के दिन मिलेगा।' (आले इम्रान, आयत 185)

और फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को इतनी उम्र अता फ़रमाई और उनको इतने दिन दुनिया में बाक़ी रखा कि इस मुद्दत में आपने अल्लाह के दीन को क़ायम कर

दिया, अल्लाह के हुक्म को ग़ालिब कर दिया, अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया और अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया। फिर आपको अल्लाह ने इसी हालत पर वफ़ात दी और हुज़ूर सल्ल० तुम्हें एक (साफ़ और खुले) रास्ते पर छोड़कर गए हैं। अब जो भी हलाक होगा, वह इस्लाम की खुली दलीलों और (कुफ़्र और शिर्क से) शिफ़ा देने वाले क़ुरआन को देखकर ही हलाक होगा। जिस आदमी के रब अल्लाह हैं तो अल्लाह हमेशा ज़िंदा हैं, जिन पर मौत नहीं आ सकती और जो हज़रत मुहम्मद सल्ल० की इबादत किया करता था और उनको माबूद का दर्जा दिया करता था तो (वह सुन ले कि) उसका माबूद मर गया।

ऐ लोगो! अल्लाह से डरो और अपने दीन को मज़बूत पकड़ो और अपने रब पर तवक्कुल करो, क्योंकि अल्लाह का दीन मौजूद है और अल्लाह की बात पूरी है और जो अल्लाह (के दीन) की मदद करेगा, अल्लाह उसकी मदद फ़रमाएंगे और अपने दीन की इज़्ज़त फ़रमाएंगे और अल्लाह की किताब हमारे पास है, जो कि नूर और शिफ़ा है। इसी किताब के ज़रिए हज़रत मुहम्मद सल्ल० को हिदायत फ़रमाई और इसी किताब में अल्लाह की हराम और हलाल की हुई चीज़ों का ज़िक्र है।

अल्लाह की क़सम! अल्लाह की मख़्लूक़ में से जो भी हमारे ऊपर फ़ौज लाएगा, हम उसकी कोई परवाह नहीं करेंगे। बेशक अल्लाह की तलवारें सुती हुई हैं। हमने उनको अभी रखा नहीं है और जो हमारी मुख़ालफ़त करेगा, हम उससे जिहाद करेंगे, जैसे कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ जिहाद किया करते थे। अब जो भी ज़्यादती करेगा, वह हक़ीक़त में अपने ऊपर ही ज़्यादती करने वाला है। फिर उनके साथ मुहाजिरीन हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ (कफ़न और दफ़न के लिए) चले गए।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० का वह आख़िरी ख़ुत्बा सुना, जो उन्होंने मिंबर पर बैठकर बयान फ़रमाया था। यह हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात से अगले दिन की बात है और उस वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० बिल्कुल ख़ामोश थे और कोई बात न फ़रमा रहे थे।

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 243

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे उम्मीद थी कि हुज़ूर सल्ल० इतनी ज़्यादा मुद्दत तक ज़िंदा रहेंगे कि हम दुनिया से पहले चले जाएंगे और हुज़ूर सल्ल० हमारे बाद तशरीफ़ ले जाएंगे। (लेकिन अल्लाह को ऐसा मंज़ूर नहीं था, अब) अगर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इंतिक़ाल हो गया है तो (घबराने की कोई बात नहीं है।) अल्लाह ने तुम्हारे बीच एक नूर (यानी क़ुरआन) बाक़ी रखा हुआ है, जिसके ज़रिए से तुम हिदायत पा सकते हो और उसी के ज़रिए से अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को हिदायत नसीब फ़रमाई थी और (दूसरी बात यह है कि) हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के (ख़ास) सहाबी हैं और (उनकी ख़ास बात और बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि जब हुज़ूर सल्ल० हिजरत की रात में मक्का से चलकर सौर ग़ार में छिप गए थे तो उस वक़्त सिर्फ़ अबूबक्र रज़ि० ही हुज़ूर सल्ल० के साथ थे, जिसकी वजह से क़ुरआन मजीद के लफ़्ज़ों के मुताबिक़) यह दो में के दूसरे हैं और यह तुम्हारे कामों के लिए तमाम मुसलमानों में से सबसे ज़्यादा मुनासिब हैं, इस वजह से खड़े होकर इनसे बैअत हो जाओ और इससे पहले सक़ीफ़ा बनी साइदा में एक जमाअत हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत हो चुकी थी और आम मुसलमानों की बैअत (मस्जिद में) मिंबर पर हुई।[1]

हज़रत ज़ोहरी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से नक़ल करते हैं कि मैंने उस दिन हज़रत उमर रज़ि० से सुना कि वह हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कह रहे थे कि आप मिंबर पर तशरीफ़ ले जाएं और उनको लगातार बार-बार यही कहते रहे, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मिंबर पर ख़ुद चढ़ाया, फिर आम मुसलमानों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत की।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब सक़ीफ़ा (बनी साइदा) में हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत हो गई और हज़रत अबूबक्र रज़ि० (हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के) अगले दिन मिंबर पर बैठे और हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० से पहले बयान फ़रमाया और

1. बुख़ारी,

अल्लाह का ज़ोरदार गुण-गान किया, फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! कल मैंने तुम्हारे सामने ऐसी बात कह दी थी, जो अल्लाह की किताब में नहीं है और न ही मुझे उसमें मिली है और न उसका मुझसे हुज़ूर सल्ल० ने वायदा लिया था, बस मेरा अपना यह ख़्याल था कि हुज़ूर सल्ल० हम सबके बाद दुनिया से तशरीफ़ ले जाएंगे, (इसलिए कल मैंने कह दिया था कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० का इंतिक़ाल नहीं हुआ, जो कि ग़लत था) और अब अल्लाह ने तुम्हारे में अपनी इस किताब को बाक़ी रखा हुआ है, जिसके ज़रिए से अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को हिदायत नसीब फ़रमाई थी। अगर तुम इसे मज़बूती से पकड़ लोगे, तो अल्लाह तुम्हें भी उन बातों की हिदायत दे देगा, जिनकी उन्हें हिदायत दी थी और अल्लाह ने तुम्हारे मामले (यानी ख़िलाफ़त के मामले) को तुम्हारे में से सबसे बेहतरीन आदमी पर जमा फ़रमा दिया है जो हुज़ूर सल्ल० के सहाबी और सौर ग़ार के साथी हैं। इसलिए तुम सब खड़े होकर उनसे बैअत हो जाओ।

चुनांचे सक़ीफ़ा की बैअत के बाद (अब मस्जिद में) आम मुसलमानों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत की, फिर अबूक्र रज़ि० ने बयान फ़रमाया। पहले अल्लाह की शान के मुनासिब हम्द व सना बयान की और फिर कहा, मुझे तुम्हारा वाली बना दिया गया है, हालांकि मैं तुममें सबसे बेहत॰ नहीं हूं। (हज़रत अबूबक्र रज़ि० यह बात इंकिसारी में फ़रमा रहे हैं, वरना उम्मत के तमाम उलेमा के नज़दीक हज़रत अबूबक्र रज़ि० तमाम सहाबा रज़ि० में सबसे अफ़ज़ल हैं) अगर मैं ठीक काम करूं तो तुम मेरी मदद करो और अगर मैं ठीक न करूं, तो तुम मुझे सीधा कर देना। सच्चाई अमानतदारी है और झूठ ख़ियानत है और तुम्हारा कमज़ोर मेरे नज़दीक ताक़तवर है। वह जो भी शिकायत मेरे पास लेकर आएगा, मैं इन्शाअल्लाह उसे ज़रूर दूर करूंगा। तुम्हारा ताक़तवर मेरे नज़दीक कमज़ोर है, मैं उससे कमज़ोर का हक़ लेकर कमज़ोर को इन्शाअल्लाह दूंगा। जो लोग भी अल्लाह के रास्ते का जिहाद छोड़ देंगे, अल्लाह उन पर ज़िल्लत मुसल्लत फ़रमा देंगे और जो लोग भी बेहयाई की इशाअत करने लग जाएंगे, अल्लाह (दुनिया में) उन सबको (फ़रमांबरदार और नाफ़रमान को) आम सज़ा देंगे। जब तक मैं अल्लाह और उसके रसूल की बात

मानता रहूं, तुम भी मेरी मानते रहो, और जब मैं अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करूं तो फिर मेरी इताअत तुम पर ज़रूरी नहीं है। अब नमाज़ के लिए खड़े हो जाओ, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को क़ुरआन पढ़ाया करता था। (उस ज़माने में बड़े-छोटों से भी इल्म हासिल किया करते थे।) एक दिन हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० अपने ठहरने की जगह पर वापस आए, तो उन्होंने मुझे अपने इन्तिज़ार में पाया और यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के आख़िरी हज का और मिना का वाक़िया है।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने मुझे बताया कि एक आदमी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में आकर कहा कि फ़्लां आदमी कह रहा था कि अगर हज़रत उमर रज़ि० का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं फ़्लां आदमी से (यानी हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० से) ख़िलाफ़त की बैअत कर लूंगा। अल्लाह की क़सम! हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत यों अचानक हुई थी और पूरी हो गई थी। (मैं भी यों उनसे अचानक बैअत कर लूंगा, तो उनकी बैअत भी पूरी हो जाएगी और सब उनसे बैअत हो जाएंगे।)

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आज शाम इन्‌शाअल्लाह मैं लोगों में खड़े होकर बयान करूंगा और लोगों को उस जमाअत से डराऊंगा, जो मुसलमानों से उनकी ख़िलाफ़त का मामला (यों अचानक) छीनना चाहते हैं। (यानी बग़ैर मश्विरा और सोच-विचार के अपनी मर्ज़ी के आदमी को अहलियत देखे बग़ैर ख़लीफ़ा बनाना चाहते हैं।)

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप ऐसा न करें, क्योंकि हज के मौसम में गिरे-पड़े, कम समझ और आम लोग जमा हो जाते हैं। जब आप बयान के लिए लोगों में खड़े होंगे, तो यही आपकी मज्लिस में ग़ालिब आ जाएंगे (और यों समझदार, अक़्लमंद आदमियों को आपकी मज्लिस में

1. बिदाया, भाग 1, पृ० 248

जगह न मिलेगी) इसलिए मुझे ख़तरा है कि आप जो बात कहेंगे, उसे ये लोग ले उड़ेंगे, न ख़ुद पूरी तरह समझेंगे और न उसे मौक़ा-महल के मुताबिक़ दूसरों से बयान कर सकेंगे। (इसलिए अभी आप सब्र फ़रमाएं)। जब आप मदीना पहुंच जाएं (तो वहां आप यह बयान फ़रमाएं) क्योंकि मदीना हिजरत की जगह और नबी सल्ल० की सुन्नतों का घर है। लोगों में से उलेमा और सरदारों को अलग लेकर आप जो कहना चाहते हैं, इत्मीनान से कह लें। वे लोग आपकी बात को पूरी तरह समझ भी लेंगे और मौक़ा-महल के मुताबिक़ उसे दूसरों से बयान भी करेंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने (मेरी बात को क़ुबूल करते हुए) फ़रमाया, अगर मैं सही-सालिम मदीना पहुंच गया तो (इनशाअल्लाह) मैं अपने सबसे पहले बयान में लोगों से यह बात ज़रूर कहूंगा।

(हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि) जब हम ज़िलहिज्जा के आख़िरी दिनों में जुमा के दिन मदीना पहुंचे तो मैं कड़ी गर्मी की परवाह किए बग़ैर ठीक दोपहर के वक़्त जल्दी से (मस्जिदे नबवी) गया, तो मैंने देखा कि हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० मुझसे पहले आकर मिंबर के दाहिने किनारे पर बैठे हुए हैं। मैं उनके बराबर में घुटने से घुटना मिलाकर बैठ गया। थोड़ी देर ही गुज़री थी कि हज़रत उमर रज़ि० तशरीफ़ ले आए।

मैंने हज़रत उमर रज़ि० को देखकर कहा कि आज हज़रत उमर रज़ि० इस मिंबर पर ऐसी बात कहेंगे जो आज से पहले इस पर किसी ने न कही होगी।

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ि० ने मेरी इस बात का इंकार किया और कहा कि मेरा तो यह ख़्याल नहीं है कि हज़रत उमर रज़ि० आज ऐसी बात कहेंगे, जो इनसे पहले किसी ने न कही हो। (क्योंकि दीन तो हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में पूरा हो चुका, अब कौन नई बात ला सकता है?)

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० मिंबर पर बैठ गए (फिर मुअज़्ज़िन ने अज़ान दी)। जब मुअज़्ज़िन ख़ामोश हो गया तो हज़रत उमर रज़ि० खड़े हुए और अल्लाह की शान के मुताबिक़ अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया, अम्माबाद, ऐ लोगो ! मैं एक बात कहने वाला हूं।

जिस बात को कहना पहले से ही मेरे मुक़द्दर में लिखा जा चुका है और हो सकता है यह बात मेरी मौत का पेश ख़ेमा हो।

इसलिए जो मेरी बात को याद रखे और उसे अच्छी तरह समझ ले तो जहां तक उसकी सवारी उसे दुनिया में ले जाए, वहां तक के तमाम लोगों में मेरी इस बात को बयान करे और जो मेरी बात को अच्छी तरह न समझे तो मैं उसे इसकी इजाज़त नहीं देता हूं कि वह मेरे बारे में ग़लतबयानी से काम ले, (सबको चौकन्ना करने के लिए हज़रत उमर रज़ि० ने यह बात पहले फ़रमा दी) अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० को हक़ देकर भेजा और उन पर किताब को नाज़िल फ़रमाया और जो किताब हुज़ूर सल्ल० पर नाज़िल हुई, उसमें रज्म (यानी ज़ानी को संगसार करने) की आयत भी है (और वह आयत यह थी—

اَلشَّيْخُ وَالشَّيْخَةُ اِذَا زَنَيَا فَارْجُمُوْهُمَا.

इस आयत के लफ़्ज़ तो मंसूख़ हो चुके हैं, लेकिन इसका हुक्म बाक़ी है) हमने इस आयत को पढ़ा और उसे याद किया और इसे अच्छी तरह समझा और हुज़ूर सल्ल० ने रज्म किया और आपके बाद हमने भी रज्म किया, लेकिन मुझे इस बात का डर है कि लम्बा समय गुज़रने पर कोई आदमी यों कहे कि हम तो रज्म की आयत अल्लाह की किताब में नहीं पाते हैं और इस तरह अल्लाह के उतारे फ़र्ज़ को छोड़कर वे लोग गुमराह हो जाएंगे।

ज़ानी को रज्म करने का हुक्म अल्लाह की किताब में था, जो मुह्सन (शादीशुदा) मर्द या औरत ज़िना करेगी और ज़िना के गवाह पाए जाएंगे या ज़िना से हामिला औरत ज़िना का इक़रार कर लेगी या कोई मर्द या औरत वैसे ही ज़िना का इक़रार करेगी तो उसे रज्म करना शरई तौर पर ज़रूरी होगा और सुनो! हम (क़ुरआन में) यह आयत भी पढ़ा करते थे—

لَا تَرْغَبُوْا عَنْ اٰبَائِكُمْ فَاِنَّ كُفْرًا بِكُمْ اَنْ تَرْغَبُوْا عَنْ اٰبَائِكُمْ.

'अपने बाप-दादा को छोड़कर किसी दूसरे की ओर नसब की निस्बत न करो, क्योंकि अपने बाप, दादा के नसब को छोड़ना कुफ़्र है। (अब इस आयत के लफ़्ज़ मंसूख़ हो चुके हैं, लेकिन इसका हुक्म बाक़ी है)'

और सुनो ! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मेरी तारीफ़ में ऐसा मुबालग़ा न करो जैसे कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलै० की तारीफ़ में मुबालग़ा किया गया। मैं तो बस एक बन्दा ही हूं। इसलिए तुम (मेरे बारे में) यह कहो कि ये अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और मुझे यह बात पहुंची है कि तुममें कोई आदमी यह कह रहा है कि अगर हज़रत उमर रज़ि० मर गए, तो मैं फ़्लां से बैअत कर लूंगा, उसे इस बात से धोखा नहीं लगना चाहिए कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत अचानक हुई थी और वह पूरी भी हो गई थी।

सुनो ! वह बैअत वाक़ई ऐसे ही (जल्दी में) हुई थी, लेकिन इस बात के (जल्दी में होने के) शर से अल्लाह ने (सारी उम्मत को) बचा लिया और आज तुममें हज़रत अबूबक्र रज़ि० जैसा कोई नहीं है जिसकी फ़ज़ीलत के सब क़ायल हों और दूर व नज़दीक सब उसका साथ दे लें।

जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त का हमारा क़िस्सा यह है कि हज़रत अली रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० और उनके साथ कुछ और लोग हुज़ूर सल्ल० की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के घर में पीछे रह गए और उधर तमाम अंसार सक़ीफ़ा बनी साइदा में जमा हो गए और मुहाजिरीन हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास जमा हो गए।

मैंने उनसे कहा, ऐ अबूबक्र ! आएं हम अपने अंसारी भाइयों के पास चलें। चुनांचे हम उन अंसारियों के इरादे से चल पड़े। रास्ते में हमें दो नेक आदमी (हज़रत उवैम अंसारी रज़ि० और हज़रत मान रज़ि०) मिले और अंसार जो कर रहे थे, वह उन लोगों ने हमें बताया और हमसे पूछा कि ऐ मुहाजिरो ! तुम्हारा कहां जाने का इरादा है ?

मैंने कहा, हम अपने अंसारी भाइयों के पास जा रहे हैं।

उन दोनों ने कहा, उन अंसार के पास जाना आप लोगों के लिए ज़रूरी नहीं है। ऐ मुहाजिरो ! तुम अपने मामले का ख़ुद फ़ैसला कर लो।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! नहीं, हम तो उनके पास ज़रूर जाएंगे। चुनांचे हम गए और हम उनके पास पहुंचे। वे सब सक़ीफ़ा

बनी साइदा में जमा थे और उनके बीच एक आदमी चादर ओढ़े हुए थे। मैंने पूछा, यह कौन हैं?

उन लोगों ने कहा, यह साद बिन उबादा हैं।

मैंने कहा, इनको क्या हुआ?

उन्होंने बताया, यह बीमार हैं।

जब हम बैठ गए तो उनमें से एक साहब बयान के लिए खड़े हुए और उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना के बाद कहा, हम अल्लाह (के दीन) के अंसार व मददगार और इस्लाम की फ़ौज हैं और ऐ मुहाजिरो! आप लोग हमारे नबी की जमाअत हैं और आप लोगों में से कुछ लोग ऐसी बातें कर रहे हैं जिससे यह मालूम होता है कि आप लोग हमें काटना चाहते हैं और ख़िलाफ़त के मामलों से दूर रखना चाहते हैं।

जब वह साहब चुप हो गए, तो मैंने बात करनी चाही और मैंने एक मज़्मून (अपने ज़ेहन में) तैयार कर रखा था, जो मुझे बहुत पसन्द था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सामने मैं इसे कहना चाहता था और मैं इसमें नर्मी अख़्तियार किए हुए था और मैं ग़ुस्से वाली बातें नहीं कहना चाहता था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ उमर! आराम से बैठे रहो।

मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को नाराज़ करना पसन्द न किया, (इसलिए अपनी बात कहने के लिए खड़ा न हुआ)।

चुनांचे उन्होंने बातें कीं और वह मुझसे ज़्यादा समझदार और ज़्यादा संजीदा थे और अल्लाह की क़सम! जब वह ख़ामोश हुए तो मैंने अपने मज़्मून में जितनी बातें सोची थीं, वे सब बातें उन्होंने अपने बयान में हाथ के हाथ कह दीं, या तो वही बातें कहीं या उनसे बेहतर कहीं।

चुनांचे उन्होंने कहा, तुमने अपने बारे में जिस भलाई का ज़िक्र किया, तुम लोग वाक़ई उसके अह्ल हो, लेकिन तमाम अरब के लोग ख़िलाफ़त के मामलों का हक़दार सिर्फ़ कुरैश क़बीला को ही समझते हैं और कुरैश क़बीला सारे अरब में नसब और शहर के एतबार से सबसे अफ़ज़ल है और मुझे तुम्हारे (ख़लीफ़ा बनने के) लिए इन दो आदमियों में से एक आदमी पसन्द है। दोनों में से जिससे चाहो, बैअत हो जाओ।

यह कहकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मेरा हाथ पकड़ा और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० का और इस एक बात के अलावा हज़रत अबूबक्र रज़ि० की और कोई बात मुझे नागवार न गुज़री। अल्लाह की क़सम! मुझे आगे बढ़ाकर बग़ैर किसी गुनाह के मेरी गरदन उड़ा दी जाए, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० के होते हुए मैं लोगों का अमीर बन जाऊं। उस वक़्त मेरे दिल की यही कैफ़ियत थी, लेकिन मरते वक़्त मेरी यह कैफ़ियत बदल जाए तो और बात है।

फिर अंसार में से एक आदमी ने कहा कि इस मसले का मेरे पास बेहतरीन हल है और इस रोग की बहुत अच्छी दवा है और वह यह है कि ऐ क़ुरैश के लोगो! एक अमीर हममें से हो और एक अमीर आप लोगों में से हो।

इसके बाद सब बोलने लग गए, आवाज़ें बुलन्द हो गईं और हमें आपस के इख़्तिलाफ़ का ख़तरा हुआ, तो मैंने कहा, ऐ अबूबक्र! आप अपना हाथ बढ़ाएं।

चुनांचे उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया। पहले मैं उनसे बैअत हुआ, फिर मुहाजिर बैअत हुए। इसके बाद अंसार उनसे बैअत हुए और यों हम हज़रत साद बिन उबादा पर ग़ालिब आ गए (कि वह अमीर न बन सकें) इस पर उनमें से किसी ने कहा, अरे! तुमने तो साद को मार डाला।

मैंने कहा, अल्लाह उन्हें मारे। (यानी जैसे उन्होंने इस मौक़े पर हक़ की मदद नहीं की है, ऐसे ही अल्लाह अमीर बनने में उनकी मदद न करे)

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह की क़सम! इस मौक़े पर हम जितने मामलों में शरीक हुए, उनमें कोई मामला हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत से ज़्यादा कारामद और मुनासिब न पाया (और मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत का सिलसिला एकदम इसलिए शुरू करा दिया) क्योंकि हमें डर था कि बैअत के बग़ैर हम इन अंसार को यहां छोड़कर चले गए तो ये हमारे बाद किसी न किसी से बैअत हो जाएंगे, फिर हमें (इनका साथ देने के लिए) या तो नापसंदीदा सूरतेहाल

के बावजूद इनसे बैअत होना पड़ेगा, या हमें इनकी मुख़ालफ़त करनी पड़ेगी तो फ़साद खड़ा हो जाएगा। (इसलिए एक भरपूर क़ानून सुन लो) जो आदमी मुसलमानों से मश्विरा किए बग़ैर किसी अमीर से बैअत हो जाएगा, तो उसकी यह बैअत शरई तौर पर भरोसे के क़ाबिल न होगी और न उस अमीर की बैअत की कोई हैसियत होगी, बल्कि इस बात का डर है कि (इन दोनों के बारे में शरई हुक्म यह हो कि अगर ये हक़ न मानें तो इन) दोनों को क़त्ल कर दिया जाए।

हज़रत ज़ोहरी हज़रत उर्व: से नक़ल करते हैं कि वे दो आदमी जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० को रास्ते में मिले थे, वे हज़रत उवैम बिन साइदा और हज़रत मान बिन अदी रज़ि० थे।

और हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि० से रिवायत है कि जिन साहब ने कहा था कि इस मसले का मेरे पास बेहतरीन हल है, वह हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर रज़ि० थे।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम का क़िस्सा इस तरह हुआ कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ, तो हमारे पास एक आदमी ने आकर कहा कि अंसार सक़ीफ़ा बनी साइदा में हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास जमा हो चुके हैं और वे बैअत होना चाहते हैं।

यह सुनकर मैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० घबराकर उनकी ओर चल पड़े कि कहीं ये अंसार इस्लाम में नई बात न खड़ी कर दें। रास्ते में हमें अंसार के दो आदमी मिले जो बड़े सच्चे आदमी थे। एक हज़रत उवैम बिन साइदा रज़ि०, दूसरे हज़रत मान बिन अदी रज़ि०। इन दोनों ने कहा, आप लोग कहां जा रहे हैं?

हमने कहा, तुम्हारी क़ौम (अंसार) के पास, क्योंकि हमें उनकी बात पहुंच गई है।

उन दोनों ने कहा, आप लोग वापस चले जाएं, क्योंकि आप लोगों का विरोध हरगिज़ नहीं किया जा सकता और ऐसा कोई काम नहीं

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 245, कंज़, भाग 3, पृ० 138, 139,

किया जा सकता जो आप लोगों को नागवार हो।

लेकिन हमने कहा, हम तो उनके पास ज़रूर जाएंगे और मैं (रास्ते में) वहां जाकर बयान करने के लिए मज़्मून तैयार करता जा रहा था, यहां तक कि हम अंसार के पास पहुंच गए, तो वे हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के चारों ओर जमा थे और हज़रत साद रज़ि० अपने तख़्त पर बीमार पड़े हुए थे।

जब हम उनके मज्मा में पहुंच गए, तो उन्होंने (हमसे) कहा, ऐ क़ुरैश के लोगो ! एक अमीर हम में से हो और एक अमीर आप लोगों में से हो और हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० ने कहा कि इस रोग की मेरे पास बहुत अच्छी दवा है और इस मसले का मेरे पास बेहतरीन हल है और अल्लाह की क़सम, अगर तुम चाहो तो हम इस मसले का फ़ैसला जवान ऊंट की तरह पसंदीदा बना दें।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, आप सब लोग अपनी जगह आराम से बैठे रहें।

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने इरादा किया कि कुछ कहूं, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ उमर ! तुम ख़ामोश रहो और फिर उन्होंने हम्द व सना के बाद कहा, ऐ अंसार के लोगो ! अल्लाह की क़सम ! आप लोगों की फ़ज़ीलत का और इस्लाम में जिस बड़े दर्जे तक आप लोग पहुंच गए हैं, उस दर्जे का और आप लोगों के वाजिब हक़ का हमें इंकार नहीं है, लेकिन आप लोगों को मालूम है कि इस क़बीला क़ुरैश को अरबों में एक ख़ास दर्जा हासिल है, जो इनके अलावा और किसी को हासिल नहीं है और अरब इस क़बीले ही के किसी आदमी पर जमा हो सकेंगे, इसलिए हम लोग अमीर होंगे और आप लोग वज़ीर। इसलिए आप अल्लाह से डरें और इस्लाम के शीराज़े को न बिखेरें और आप लोग इस्लाम में सबसे पहले नई बात पैदा करने वाले न बनें और ज़रा ग़ौर से सुनें, मैंने आप लोगों के लिए इन दो आदमियों में से एक को पसन्द किया है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने दो आदमियों से मुझे और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को मुराद लिया था।

फिर फ़रमाया, इन दोनों में से जिससे आप लोग बैअत हो जाएं, वे भरोसे के क़ाबिल इंसान हैं।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं जो बात भी कहना पसन्द करता था, वह बात हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कह दी थी सिवाए उस आख़िरी बात के कि यह मुझे पसन्द न थी, क्योंकि अल्लाह की क़सम! मुझे किसी गुनाह के बग़ैर क़त्ल किया जाए और फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर मुझे क़त्ल किया जाए और फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं ऐसे लोगों का अमीर बनूं, जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० भी हों।

फिर मैंने कहा, ऐ अंसार के लोगो! और ऐ मुसलमानो! हुज़ूर सल्ल० के बाद उनकी ख़िलाफ़त के मामलों के लोगों में सबसे ज़्यादा हक़दार वह साहब हैं जिनके बारे में (क़ुरआन मजीद में)—

ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ

के लफ़्ज़ आए हैं और वह हैं हज़रत अबूबक्र रज़ि०, जो हर नेकी में खुले तौर पर सबसे सबक़त ले जाने वाले हैं। फिर मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हाथ (बैअत होने के लिए) पकड़ना चाहा, लेकिन एक अंसारी आदमी मुझसे बाज़ी ले गए और उन्होंने मेरे हाथ देने से पहले हज़रत अबूबक्र रज़ि० के हाथ में हाथ दे दिया (और बैअत हो गए) फिर तो लगातार लोगों ने बैअत होना शुरू कर दिया और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० की ओर से सबकी तवज्जोह हट गई।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन रह० फ़रमाते हैं कि क़बीला ज़ुरैक़ के एक आदमी ने बयान किया कि उस दिन (यानी हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के दिन) हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० हुजरे से निकले और अंसार के पास पहुंचे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अंसार के लोगो! हमें तुम्हारे हक़ का इंकार नहीं है और न ही कोई मोमिन तुम्हारे हक़ का इंकार कर सकता है और अल्लाह की क़सम! हम लोगों ने जो ख़ैर भी हासिल किया है, तुम उसमें हमारे बराबर के शरीक रहे हो,

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 139

लेकिन अरब के लोग क़ुरैश ही के किसी आदमी (के ख़लीफ़ा बनने) से राज़ी और मुतमइन हो सकेंगे, क्योंकि उनकी ज़ुबान तमाम लोगों से ज़्यादा सुन्दर है और उनके चेहरे सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं और उनका शहर (मक्का) तमाम अरब (के शहरों) से अफ़ज़ल है और ये तमाम लोगों से ज़्यादा अरबों को खाना खिलाने वाले हैं, इसलिए हज़रत उमर रज़ि० की ओर आओ और उनसे बैअत हो जाओ।

अंसार ने कहा, नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, क्यों? (यह बात हज़रत उमर रज़ि० ने अन्दर की कहलवाने के लिए पूछी थी, वरना उनका ख़ुद ख़लीफ़ा बनने का इरादा नहीं था।)

अंसार ने कहा, हमें ख़तरा है कि हम पर दूसरों को तर्जीह दी जाएगी।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जब तक मैं ज़िंदा रहूंगा, उस वक़्त तक तो तुम पर दूसरों को तर्जीह नहीं दी जाएगी। आप लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत हो जाएं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, तुम मुझसे ज़्यादा मज़बूत हो।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप मुझसे ज़्यादा अफ़ज़ल हैं। यही बात दोनों में दूसरी बार हुई। जब तीसरी बार हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरी सारी ताक़त आपके साथ होगी और फिर आपको मुझ पर फ़ज़ीलत भी हासिल है।

चुनांचे लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत हो गए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत के वक़्त कुछ लोग हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० के पास (बैअत होने) आए। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, तुम मेरे पास आ रहे हो, हालांकि तुममें वह साहब भी हैं, जिनके बारे में (क़ुरआन मजीद में) 'सानियस्नैने' के लफ़्ज़ हैं। (यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि०)[1]

1. कंज़, भाग 3, पृ० 140

हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का ख़िलाफ़त के मामले में हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मुक़द्दम समझना और उनकी ख़िलाफ़त पर राज़ी होना और जिस आदमी ने उनमें तोड़ पैदा करना चाहा, सहाबा किराम रज़ि० का उसे रद्द कर देना

हज़रत मुस्लिम रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को पैग़ाम भेजा कि आओ, मैं तुम्हें (हुज़ूर सल्ल० का) ख़लीफ़ा बना दूं, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि हर उम्मत के लिए एक अमीन होता है और आप इस उम्मत के अमीन हैं।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, मैं उस आदमी से आगे नहीं बढ़ सकता, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने (नमाज़ में) हमारा इमाम बनने का हुक्म दिया हो (और वह ख़ुद आप ही हैं)[1]

हज़रत अबुल बख़्तरी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० से फ़रमाया, तुम अपना हाथ आगे बढ़ाओ, ताकि मैं तुमसे बैअत हो जाऊं, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि आप इस उम्मत के अमीन हैं।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, मैं उस आदमी से आगे नहीं बढ़ सकता हूं, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने (नमाज़ में) हमारा इमाम बनने का हुक्म दिया हो और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल तक हमारी इमामत की हो। (और वह हज़रत अबूबक्र हैं, इसलिए मैं ख़लीफ़ा नहीं बन सकता।)[2]

इब्ने साद और इब्ने जरीर ने हज़रत इब्राहीम तैमी से इसी जैसी हदीस रिवायत की है और उसमें यह मज़्मून भी है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने (हज़रत उमर रज़ि० से) कहा, जब से तुम इस्लाम लाए हो, मैंने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 136, हाकिम, भाग 3, पृ० 267, कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 126
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 183, कंज़, भाग 3, पृ० 140

उससे पहले तुमसे आजिज़ी और ग़फ़लत की बात नहीं देखी है। क्या तुम मुझसे बैअत होना चाहते हो? हालांकि आप लोगों में वह साहब मौजूद हैं जो सिद्दीक़ (अक्बर) हैं और जो (ग़ार सौर में) दो में के दूसरे थे, यानी हुज़ूर सल्ल० के ग़ार के साथी।

ख़ैसमा अतरा बुलसी हज़रत हुमरान रज़ि० से नक़ल करते हैं कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने फ़रमाया कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० तमाम लोगों से ज़्यादा ख़िलाफ़त के मामले के ज़्यादा हक़दार हैं, क्योंकि वह सिद्दीक़ भी हैं (और हिजरत के मौक़े पर ग़ार सौर के) हुज़ूर सल्ल० के साथी भी हैं और हुज़ूर सल्ल० के सहाबी भी हैं।[1]

हज़रत साद बिन इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत उमर रज़ि० के साथ थे और हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की तलवार तोड़ दी। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने खड़े होकर लोगों में बयान फ़रमाया और उनके सामने अपना उज़्र पेश किया और फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! किसी दिन या किसी रात भी यानी ज़िंदगी भर कभी भी मेरे दिल में अमीर बनने की तमन्ना नहीं पैदा हुई और न इसकी ख़्वाहिश हुई और मैंने कभी अल्लाह से इमारत को छिपकर या एलानिया मांगा, लेकिन मुझे (मुसलमानों में) फ़ित्ना (पैदा हो जाने) का डर हुआ (कि अगर मैं अमीर बनना क़ुबूल न करता, तो मुसलमानों में जोड़ बाक़ी न रहता, बल्कि उनमें तोड़ पैदा हो जाता) और मेरे लिए अमीर बनने में राहत का कोई सामान नहीं है और एक बहुत बड़े मामले (यानी ख़िलाफ़त के मामले) की ज़िम्मेदारी मुझ पर डाल दी गई है जो मेरी ताक़त से बाहर है। हां, अल्लाह ताक़त अता फ़रमाए, (तो फिर यह ज़िम्मेदारी ठीक तरह से अदा हो सकती है) और मैं दिल से यह चाहता हूं कि लोगों में से जो सबसे ज़्यादा ताक़तवर आदमी है, वह आज मेरी जगह इस इमारत पर आ जाए।

मुहाजिर सहाबा ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की इस बात को और

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 140

उनके उज्र को क़ुबूल कर लिया। अलबत्ता हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने फ़रमाया कि हमें तो सिर्फ़ इस बात पर ग़ुस्सा आया था कि हमें मश्विरे में शरीक नहीं किया गया, वरना हम अच्छी तरह समझते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के बाद लोगों में ख़िलाफ़त के सबसे ज़्यादा हक़दार हज़रत अबूबक्र रज़ि० हैं। यह हुज़ूर सल्ल० के ग़ार के साथी हैं और (क़ुरआन के लफ़्ज़ों के मुताबिक़) यह सानियस्नैन (दो के दूसरे हैं) हम उनकी शराफ़त और बुज़ुर्गी को ख़ूब पहचानते हैं और हुज़ूर सल्ल० ने अपनी ज़िंदगी में उन्हीं को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया था।[1]

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़लः रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० के पास (उनके घर) गए और यों कहा, ऐ अली! और ऐ अब्बास! (यह बताओ कि) यह ख़िलाफ़त का काम कैसे क़ुरैश के सबसे ज़्यादा कम इज़्ज़त और सबसे ज़्यादा छोटे ख़ानदान में चला गया। अल्लाह की क़सम! अगर तुम चाहो तो मैं (अबूबक्र रज़ि० के ख़िलाफ़) सवार और पैदल फ़ौज से सारा मदीना भर दूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं! अल्लाह की क़सम! मैं तो नहीं चाहता कि तुम (अबूबक्र के ख़िलाफ़) सवार और पैदल फ़ौज से सारा मदीना भर दो और ऐ अबू सुफ़ियान! अगर हम हज़रत अबूबक्र रज़ि० को इस ख़िलाफ़त का अह्ल न समझते तो हम हरगिज़ उनके लिए ख़िलाफ़त को न छोड़ते। बेशक मोमिन तो ऐसे लोग हैं कि सब एक दूसरे का भला चाहने वाले होते हैं और आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने वाले होते हैं, अगरचे उनके वतन और जिस्म दूर हों और मुनाफ़िक़ ऐसे लोग हैं जो एक दूसरे को धोखा देने वाले होते हैं।[2]

हज़रत अबू अहमद दहक़ान ने इसी जैसे मतलब वाली रिवायत ज़िक्र की है, जिसमें आगे यह मज़्मून भी है कि मुनाफ़िक़ों के बदन और वतन अगरचे क़रीब हों, लेकिन वे एक दूसरे को धोखा देनेवाले होते हैं

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 66, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 152
2. कंज़, भाग 3, पृ० 141

और हम तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० से बैअत हो चुके हैं और वे इसके अह्ल हैं।[1]

हज़रत इब्ने अबजर रह० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० सिद्दीक़ की बैअत हो गई तो हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० को आकर कहा, क्या तुम लोगों पर इस ख़िलाफ़त के बारे में क़ुरैश के एक कम दर्जे का घराना ग़ालिब आ गया? ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! अगर तुम चाहो तो मैं (अबूबक्र रज़ि० के ख़िलाफ़) सवार और पैदल फ़ौज से सारा मदीना भर दूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तुम ज़िंदगी भर इस्लाम और अह्ले इस्लाम से दुश्मनी करते रहे, लेकिन इससे इस्लाम और अह्ले इस्लाम का कुछ भी नुक़्सान न हुआ। हम हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ख़िलाफ़त का अह्ल समझते हैं।[2]

हज़रत मुर्रा तैयिब फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० के पास आकर कहा कि यह क्या हुआ कि ख़िलाफ़त क़ुरैश के सबसे कम दर्जे वाले और सबसे कम इज़्ज़त वाले आदमी यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मिल गई? अल्लाह की क़सम! अगर तुम चाहो, तो मैं सारे मदीना को अबूबक्र रज़ि० के ख़िलाफ़ सवार और पैदल फ़ौज से भर दूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबू सुफ़ियान! तुम इस्लाम और अह्ले इस्लाम की बहुत दुश्मनी कर चुके हो, लेकिन तुम्हारी दुश्मनी से इस्लाम और अह्ले इस्लाम का कुछ भी नुक़्सान नहीं हुआ। हमने अबूबक्र रज़ि० को इस ख़िलाफ़त के मामले का अह्ल पाया (तभी तो हम उनसे बैअत हुए।)[3]

हुज़ूर सल्ल० के पहरेदार हज़रत सख़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ि० यमन

1. कंज़, भाग 3, पृ० 140
2. इस्तीआब, भाग 4, पृ० 87
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 78

में थे और जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त भी हज़रत ख़ालिद यमन में ही थे। हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के एक महीने बाद हज़रत ख़ालिद (मदीना मुनव्वरा) आए। उन्होंने दीबाज का रेशमी जुब्बा पहन रखा था। उनकी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से मुलाक़ात हुई।

हज़रत उमर रज़ि० ने आस-पास के लोगों से ऊंची आवाज़ में कहा, इसके जुब्बे को फाड़ दो। क्या यह रेशम पहन रहा है? हालांकि अम्न के ज़माने में हमारे मर्दों के लिए इसका इस्तेमाल ठीक नहीं है, चुनांचे लोगों ने उनका जुब्बा फाड़ दिया।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ अबुल हसन! ऐ बनू अब्द मुनाफ़! क्या ख़िलाफ़त के मामले में तुम लोग मग़लूब हो गए हो?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम इसे एक दूसरे पर ग़लबा पाने की कोशिश समझते हो या यह ख़िलाफ़त है?

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ बनू अब्द मुनाफ़! तुमसे ज़्यादा हक़दार आदमी ख़िलाफ़त के इस मामले पर ग़ालिब नहीं आ सकता। (हज़रत अबूबक्र रज़ि० तो बनू अब्दे मुनाफ़ में से नहीं हैं, इसलिए वह कैसे ख़लीफ़ा बन गए? चूंकि हज़रत ख़ालिद रज़ि० की यह बात मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ की वजह बन सकती थी, इस वजह से समझाने के लिए) हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, अल्लाह तेरे दांतों को तोड़कर गिरा दे। अल्लाह की क़सम! तुमने जो बात कही है, झूठे आदमी उसके बारे में सोच-विचार करते रहेंगे और फिर सिर्फ़ अपना ही नुक़सान करेंगे।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ि० की साहबज़ादी उम्मे ख़ालिद कहती हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बैअत हो जाने के बाद मेरे वालिदैन यमन से मदीना आए तो उन्होंने हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, ऐ बनू अब्दे मुनाफ़! क्या तुम इस बात पर राज़ी हो गए हो कि दूसरे लोग ख़िलाफ़त के इस मामले में तुम्हारे सरदार बनें?

1. तबरी, भाग 4, पृ० 28, कंज़, भाग 8, पृ० 59

यह बात हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को पहुंचाई लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इससे कोई असर न लिया, अलबत्ता हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० की इस बात से असर लेकर उसे दिल में बिठा लिया। चुनांचे हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से तीन महीने तक बैअत न की। इसके बाद एक बार दोपहर के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हज़रत ख़ालिद रज़ि० के पास से गुज़र हुआ। हज़रत ख़ालिद रज़ि० उस वक़्त अपने घर में थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनको सलाम किया। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उनसे कहा, क्या आप चाहते हैं कि मैं आपसे बैअत हो जाऊं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (अपनी तरफ़ मुतवज्जह न किया, बल्कि आम मुसलमानों की ओर मुतवज्जह करते हुए) कहा, जिस समझौते में तमाम मुसलमान दाख़िल हुए हैं, मैं चाहता हूं कि तुम भी उसमें दाख़िल हो जाओ।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, आज शाम का आपसे वायदा है। मैं आपसे शाम को बैअत हो जाऊंगा। चुनांचे शाम को हज़रत ख़ालिद आए, उस वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० मिंबर पर बैठे हुए थे। हज़रत ख़ालिद रज़ि० उनसे बैअत हो गए।

उनके बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय अच्छी थी और हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनकी इज़्ज़त करते थे। चुनांचे जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० शाम की ओर फ़ौज रवाना फ़रमाने लगे तो उन्होंने हज़रत ख़ालिद रज़ि० को मुसलमानों का अमीर बनाकर उन्हें अमारत का झंडा दे दिया। हज़रत ख़ालिद रज़ि० वह झंडा लेकर अपने घर गए।

(जब हज़रत उमर रज़ि० को इसका पता चला तो) हज़रत उमर रज़ि० ने (इस बारे में) अबूबक्र रज़ि० से बातें कीं और कहा कि आप हज़रत ख़ालिद को अमीर बना रहे हैं, हालांकि उन्होंने ही (आपके ख़लीफ़ा बनने के ख़िलाफ़) वह बात कही थी।

हज़रत उमर रज़ि० बार-बार हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अपनी बात

कहते रहे, यहां तक कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (उनकी राय को क़ुबूल कर लिया और हज़रत ख़ालिद रज़ि० को अमारत से हटाने का फ़ैसला कर लिया और इसके लिए) हज़रत अबू अरवा दौसी को (हज़रत ख़ालिद रज़ि० के पास यह पैग़ाम देकर भेजा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा आपसे कह रहे हैं कि हमारा (अमारत वाला) झंडा हमें वापस कर दो।

चुनांचे उन्होंने वह झंडा निकालकर हज़रत अबू अरवा को दे दिया और कहा कि न तुम्हारे अमीर बनाने से हमें कोई ख़ुशी हुई थी और न अब तुम्हारे हटाने से हमें कोई रंज व सदमा हुआ है और मलामत के क़ाबिल आपके अलावा कोई और है। (यह हज़रत उमर रज़ि० की ओर इशारा है)

हज़रत उम्मे ख़ालिद कहती हैं कि अभी कुछ वक़्त न गुज़रा था कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० मेरे वालिद के पास आकर उनसे माज़रत करने लगे और वह उन्हें क़सम देकर कह रहे थे कि वह कभी हज़रत उमर रज़ि० का बुराई से तज़्किरा न करें। चुनांचे मेरे वालिद मरते दम तक हज़रत उमर रज़ि० के लिए भलाई ही की दुआ करते रहे।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मेरे बाप सवारी पर सवार होकर तलवार सौंते हुए ज़िलक़स्सा नामी जगह की ओर निकले। हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि० ने आकर उनकी सवारी की लगाम पकड़ी और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा! आप कहां जा रहे हैं? मैं आज आपसे वही बात कहता हूं जो हुज़ूर सल्ल० ने उहुद की लड़ाई के दिन आपसे फ़रमाई थी कि आप अपनी तलवार को म्यान में रख लें और आप (ज़ख़्मी या शहीद होकर) हमें अपने बारे में परेशान न करें, क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर हमें आप (की मौत) का सदमा पहुंचा, तो फिर आपके बाद कभी भी इस्लाम का निज़ाम बाक़ी नहीं रह सकेगा। चुनांचे मेरे बाप ख़ुद वापस आ गए और फ़ौज को रवाना कर दिया।[1]

1. कंज़, भाग 1, पृ० 143, बिदाया, भाग 6, पृ० 315

ख़िलाफ़त लोगों को वापस करना

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अगर तुम्हारा यह गुमान है कि मैंने तुम्हारी यह ख़िलाफ़त इसलिए ली है कि मुझे इसके लेने का शौक़ था या मैं तुम पर और मुसलमानों पर बरतरी हासिल करना चाहता था, तो ऐसी बात हरगिज़ नहीं है। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैंने यह ख़िलाफ़त न तो अपने शौक़ से ली है और न तुम पर और न किसी मुसलमान पर बरतरी हासिल करने के लिए ली है और (ज़िंदगी भर) न किसी रात में, न किसी दिन में मेरे दिल में उसकी तलब पैदा हुई और न कभी छिपकर और न कभी एलानिया मैंने अल्लाह से उसे मांगा है और मैंने बड़ी भारी ज़िम्मेदारी उठा ली है, जिसकी मुझमें ताक़त नहीं है। हां, अगर अल्लाह मेरी मदद फ़रमाए, (तो और बात है) मैं तो यह चाहता हूं कि हुज़ूर सल्ल० का कोई सहाबी इस ख़िलाफ़त को ले ले, बशर्तेकि वह उसमें इंसाफ़ से काम ले, इसलिए यह ख़िलाफ़त मैं तुम्हें वापस करता हूं और तुम्हारी मुझसे बैअत ख़त्म। तुम जिसे चाहो, उसे ख़िलाफ़त दे दो। मैं तुममें का एक आदमी बनकर रहूंगा।[1]

हज़रत ईसा बिन अतीया कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी बैअत से अगले दिन खड़े होकर लोगों में बयान फ़रमाया, ऐ लोगो! (मेरे ख़लीफ़ा बनाने के बारे में) तुम्हारी जो राय है, वह मैंने तुमको वापस कर दी है, क्योंकि मैं तुम्हारा बेहतरीन आदमी नहीं हूं। तुम अपने बेहतरीन आदमी से बैअत हो जाओ।

तमाम लोगों ने खड़े होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा! अल्लाह की क़सम! आप हमारे बेहतरीन आदमी हैं।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लोगो! लोग इस्लाम में ख़ुशी और नाख़ुशी (दोनों तरह) दाख़िल हुए हैं, लेकिन अब वे सब अल्लाह की पनाह और उसके पड़ोस में हैं, इसलिए तुम इसकी पूरी

1. कंज़, भाग 3, पृ० 131

कोशिश करो कि अल्लाह तुमसे अपनी ज़िम्मेदारी की कुछ भी मांग न करे, (यानी किसी मुसलमान को किसी तरह की तक्लीफ़ न पहुंचाओ।) मेरे साथ भी एक शैतान रहता है। जब तुम देखो कि मुझे ग़ुस्सा आ गया है, तो फिर तुम मुझसे अलग हो जाओ, कहीं मैं तुम्हारे बालों या खालों को तक्लीफ़ न पहुंचा दूं। ऐ लोगो! अपने ग़ुलामों की आमदनी की जांच कर लिया करो (कि हलाल है या हराम) इसलिए कि जिस गोश्त की परवरिश हराम माल से हो, वह जन्नत में दाख़िल होने के लायक़ नहीं है। ग़ौर से सुनो! अपनी निगाहों से मेरी निगरानी करो। अगर मैं सीधा चलूं तो तुम मेरी मदद करो और अगर मैं टेढ़ा चलूं तो तुम मुझे सीधा कर दो। अगर मैं अल्लाह की इताअत करूं तो तुम मेरी बात मानो और अगर मैं अल्लाह की नाफ़रमानी करूं तो तुम मेरी बात न मानो।[1]

हज़रत अबुल हज्जाफ़ कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० से लोगों ने बैअत कर ली, तो उन्होंने तीन दिन तक अपना दरवाज़ा बन्द किए रखा और रोज़ाना बाहर आकर लोगों से कहते थे, ऐ लोगो! मैंने तुमको तुम्हारी बैअत वापस कर दी है। इसलिए अब तुम जिससे चाहो, बैअत हो जाओ। और हर बार हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० खड़े होकर कहते, न हम आपकी बैअत वापस करते हैं और न आपसे बैअत की वापसी की मांग करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने (अपनी ज़िंदगी में मुसलमानों की इमामत के लिए) आपको आगे बढ़ाया था। अब कौन आपको पीछे कर सकता है?[2]

हज़रत ज़ैद बिन अली अपने बड़ों से नक़ल करते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के मिंबर पर खड़े होकर तीन बार फ़रमाया, क्या कोई मेरी बैअत को नापसन्द समझने वाला है, ताकि मैं उसकी बैअत वापस कर दूं? और हर बार हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० खड़े होकर कहते, न हम आपकी बैअत वापस करते

1. कंज़, भाग 3, पृ० 135, हैसमी, भाग 5, पृ० 184
2. कंज़, भाग 3, पृ० 141

है और न आपसे बैअत की वापसी की मांग करते हैं। जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने आपको आगे बढ़ाया है, तो अब आपको कौन पीछे कर सकता है?[1]

किसी दीनी मस्लहत की वजह से ख़िलाफ़त क़ुबूल करना

हज़रत राफ़ेअ बिन अबू राफ़ेअ कहते हैं कि जब लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ख़लीफ़ा बना लिया, तो मैंने कहा, यह तो मेरे वही साथी हैं, जिन्होंने मुझे हुक्म दिया था कि मैं दो आदमियों का भी अमीर न बनूं (और ख़ुद सारे मुसलमानों के अमीर बन गए हैं) चुनांचे मैं (अपने घर से) चलकर मदीना पहुंचा और मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सामने आकर उनसे अर्ज़ किया, ऐ अबूबक्र! क्या आप मुझको पहचानते हैं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हां।

मैंने कहा, क्या आपको वह बात याद है जो आपने मुझसे कही थी कि मैं दो आदमियों का भी अमीर न बनूं? और आप ख़ुद सारी उम्मत के अमीर बन गए हैं (यानी आपने जो कुछ नसीहत की थी, ख़ुद उसके ख़िलाफ़ अमल कर रहे हैं)।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह के रसूल सल्ल० दुनिया से तशरीफ़ ले गए थे और लोगों का ज़माना कुफ़्र से क़रीब था। (कुछ अर्सा पहले ही उन्होंने कुफ़्र छोड़ा था) मुझे इस बात का डर हुआ कि (अगर मैं ख़लीफ़ा न बना तो) लोग मुर्तद हो जाएंगे, और उनमें इख़्तिलाफ़ हो जाएगा। मुझे ख़िलाफ़त नापसन्द थी, लेकिन मैंने (उम्मत के फ़ायदे की वजह से) क़ुबूल कर ली और मेरे साथी बराबर मुझ पर तक़ाज़ा करते रहे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपने उज़्र रखते रहे, यहां तक कि मेरा दिल मान गया कि वाक़ई यह (ख़िलाफ़त के क़ुबूल करने में) माज़ूर हैं।[2]

1. कंज़, भाग 3, पृ० 140
2. कंज़, भाग 3, पृ० 125

ख़िलाफ़त क़ुबूल करने पर ग़मगीन होना

आले रबीआ के एक आदमी कहते हैं कि उनको यह बात पहुंची कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ख़लीफ़ा बनाया गया, तो वह ग़मगीन होकर अपने घर में बैठ गए। हज़रत उमर रज़ि० उनकी ख़िदमत में घर हाज़िर हुए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनको मलामत करने लगे और कहने लगे, तुमने मुझे ख़िलाफ़त क़ुबूल करने पर मजबूर किया था और हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत की वह लोगों के दर्मियान फ़ैसला कैसे करें ?

तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि क्या आपको मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि वली और हाकिम जब (सही तरीक़े से) मेहनत करता है और हक़ तक पहुंच जाता है तो उसे दो अज्र मिलते हैं और अगर (सही तरीक़े से) मेहनत करे, लेकिन हक़ तक न पहुंच सके तो उसे एक अज्र मिलता है। (यह हदीस सुनाकर हज़रत उमर रज़ि० ने गोया हज़रत अबूबक्र रज़ि० का ग़म हलका कर दिया।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने मरज़ुल वफ़ात में उनसे फ़रमाया, मुझे सिर्फ़ इस पर अफ़सोस है कि मैंने तीन काम किए, ऐ काश ! मैं उनको न करता और तीन काम मैंने नहीं किए और ऐ काश ! मैं उन्हें कर लेता और मैं तीन बातें हुज़ूर सल्ल० से पूछ लेता। आगे हदीस बयान की।

फिर यह मज़्मून है, मैं यह चाहता हूं कि मैं ख़िलाफ़त का बोझ सक़ीफ़ा बनी साइदा के दिन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत उमर रज़ि० में से किसी एक के कंधे पर डाल देता। वह अमीर होते और मैं उनका वज़ीर व मुशीर होता और मैं चाहता हूं कि जब मैंने हज़रत ख़ालिद रज़ि० को शाम देश भेजा था तो उस वक़्त मैं हज़रत उमर रज़ि० को इराक़ भेज देता। इस तरह मैं अपने दाएं-बाएं दोनों हाथ अल्लाह के रास्ते में फैला देता और वे तीन बातें जिन्हें हुज़ूर सल्ल० से पूछने की मेरी दिल में तमन्ना रह गई, उनमें से एक यह है कि मैं हुज़ूर

1. कंज़, भाग 3, पृ० 135

सल्ल० से पूछ लेता कि ख़िलाफ़त का यह मामला किन में रहेगा? ताकि ख़िलाफ़त के अह्ल (लायक़ शख़्स) से कोई झगड़ा न कर सकता और मैं चाहता हूं कि हुज़ूर सल्ल० से यह भी पूछ लेता कि क्या इस ख़िलाफ़त में अंसार का भी कुछ हिस्सा है?[1]

अमीर का किसी को अपने बाद ख़लीफ़ा बनाना

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और दूसरे लोग बयान करते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की बीमारी बढ़ गई और उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को बुलाया और उनसे फ़रमाया, मुझे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के बारे में बताओ कि वह कैसे हैं?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप जिस आदमी के बारे में मुझसे पूछ रहे हैं, आप उसको मुझसे ज़्यादा जानते हैं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, चाहे, मैं तुमसे ज़्यादा जानता हूं, लेकिन फिर भी तुम बताओ।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने अर्ज़ किया, जितने आदमियों को आप ख़िलाफ़त का अह्ल समझते हैं, यह हज़रत उमर रज़ि० उन सबसे अफ़ज़ल हैं। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को बुलाया और उनसे फ़रमाया, तुम मुझे हज़रत उमर रज़ि० के बारे में बताओ।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, आप उनको हम सबसे ज़्यादा जानते हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (यह हज़रत उस्मान रज़ि० का उपनाम है) फिर भी?

तब हज़रत उस्मान रज़ि० ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! जहां तक मैं जानता हूं, उनका बातिन उनके ज़ाहिर से बेहतर है और हम में उन जैसा कोई नहीं है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए।

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 135, हैसमी, भाग 5, पृ० 203

अल्लाह की क़सम! अगर मैं उनको छोड़ देता (यानी उनको ख़लीफ़ा न बनाता) तो मैं तुमसे आगे न बढ़ता, (यानी तुमको ख़लीफ़ा बनाता, किसी और को न बनाता)।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इन दो लोगों के अलावा हज़रत सईद बिन ज़ैद अबुल आवर रज़ि० और हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ि० और दूसरे मुहाजिर और अंसार सहाबा से मश्विरा किया।

हज़रत उसैद रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं उनको आपके बाद सबसे बेहतर समझता हूं। जिन कामों से अल्लाह ख़ुश होते हैं, उन्हीं कामों से वह (उमर रज़ि०) भी ख़ुश होते हैं और जिन कामों से अल्लाह नाराज़ होते हैं, उनसे वह भी नाराज़ होते हैं। उनका बातिन उनके ज़ाहिर से ज़्यादा अच्छा है। ख़िलाफ़त के लिए उनसे ज़्यादा ताक़तवर और कोई वाली नहीं हो सकता है।

हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबियों ने यह सुना कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर तंहाई में कुछ बात की है। चुनांचे ये लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनमें से एक साहब ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अर्ज़ किया कि आप हज़रत उमर रज़ि० की सख़्ती को जानते ही हैं और आप उनको हमारा ख़लीफ़ा बना रहे हैं। इस बारे में जब आपका परवरदिगार आपसे पूछेगा, तो आप इसका क्या जवाब देंगे?

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा मुझे बिठा दो। क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? जो तुम्हारे मामले में ज़ुल्म को तोशा बनाकर ले जाए, वह नामुराद हो। मैं अपने पालनहार से कहूंगा, ऐ अल्लाह! जो तेरी मख़्लूक़ में सबसे बेहतरीन था, मैंने उसे मुसलमानों का ख़लीफ़ा बनाया था। मैंने जो बात कही है, वह मेरी तरफ़ से अपने पीछे के तमाम लोगों को पहुंचा देना।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० लेट गए और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को बुलाकर फ़रमाया, लिखो—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'यह वह समझौता है जो अबूबक्र बिन अबी क़हाफ़ा ने दुनिया की ज़िंदगी में दुनिया से विदा होते हुए और आख़िरत के ज़माने के शुरू में दाख़िल होते हुए किया है, जबकि काफ़िर मोमिन हो जाता है और फ़ाजिर को भी यक़ीन आ जाता है और झूठा सच बोलने लगता है। मैंने उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को अपने बाद तुम्हारा ख़लीफ़ा बनाया है, तुम उनकी सुनो और उनकी बात मानो। मैंने अल्लाह और उसके रसूल, उसके दीन और अपनी ज़ात और तुम्हारे साथ भलाई करने में कोई कमी नहीं की है। अगर (ख़लीफ़ा बनकर) उमर रज़ि० ने अदल से काम लिया, तो यही मेरा उनके बारे में गुमान है और इसी का मुझे उनके बारे में इल्म है और अगर वह बदल गए तो हर आदमी जो गुनाह कमाएगा, उसी का बदला पाएगा। मैंने तो भलाई ही का इरादा किया है और मुझे ग़ैब का इल्म नहीं।

وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ

और बहुत जल्द उन लोगों को मालूम हो जाएगा जिन्होंने (अल्लाह के हक़ों वग़ैरह में) ज़ुल्म कर रखा है कि कैसी जगह उनको लौटकर जाना है। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि०'

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुक्म फ़रमाया तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने इस लिखे पर मुहर लगा दी। फिर कुछ रिवायत करने वाले यह भी कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इस लेख का शुरू का हिस्सा लिखवाया, तो हज़रत उमर रज़ि० का ज़िक्र अभी बाक़ी रह गया था और किसी का नाम लिखवाने से पहले हज़रत अबूबक्र रज़ि० बेहोश हो गए थे, तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने अपनी ओर से लिख दिया कि मैंने तुम पर हज़रत उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया है।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० होश में आए, तो फ़रमाया, आपने जो लिखा है, वह मुझे सुनाएं। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० का नाम पढ़कर सुनाया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अल्लाहु अकबर और फ़रमाया कि

मेरा ख़्याल यह है कि (आपने हज़रत उमर रज़ि० का नाम ख़ुद इसलिए लिख दिया कि उनका नाम लिखवाए बग़ैर) अगर इस बेहोशी में मेरी रूह निकल जाती, तो तुम्हें ख़तरा था कि लोगों में (ख़लीफ़ा के बारे में) इख़्तिलाफ़ हो जाता। अल्लाह आपको इस्लाम और इस्लाम वालों की ओर से बेहतरीन बदला अता फ़रमाए। अल्लाह की क़सम! आप भी इस (ख़िलाफ़त) के अह्ल हैं।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० के हुक्म देने पर हज़रत उस्मान रज़ि० उस समझौता नामे पर मोहर लगाकर बाहर निकले और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत उसैद बिन सईद कुरज़ी उनके साथ थे। हज़रत उस्मान रज़ि० ने लोगों से कहा, जिस आदमी का नाम इस समझौता नामा में है, क्या तुम उससे बैअत करोगे?

लोगों ने कहा, जी हां! और कुछ लोगों ने कहा, हमें उस आदमी का नाम मालूम है और वह उमर रज़ि० हैं।

इब्ने साद रज़ि० कहते हैं कि यह बात हज़रत अली रज़ि० ने कही थी। चुनांचे तमाम लोगों ने (हज़रत उमर रज़ि० से बैअत का) इक़रार किया और वे सब इस पर राज़ी थे और सब बैअत हो गए। फिर हज़रत उमर रज़ि० को हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने तंहाई में बुलाया और उनको बहुत-सी वसीयतें कीं। फिर हज़रत उमर रज़ि० उनके पास से चले गए।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! मैंने अपने इस अमल से मुसलमानों के फ़ायदे और भलाई का ही इरादा किया है। मुझे डर था कि (मैं अगर उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा न बनाता तो) मुसलमान मेरे बाद फ़ित्ने में पड़ जाएंगे। (मुसलमानों के फ़ायदे के लिए) मैंने यह काम किया है जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं और सही फ़ैसला करने के लिए मैंने अपनी पूरी कोशिश की है और जो उनमें सबसे बेहतरीन आदमी था, सबसे ज़्यादा ताक़तवर था और मुसलमानों के फ़ायदे को सबसे ज़्यादा चाहने वाला था, उसे मैंने उनका वाली बनाया है और मेरे लिए आपका मुक़र्रर किया हुआ मौत का वक़्त आ चुका है। ऐ अल्लाह! तू इनमें मेरा ख़लीफ़ा हो जा। ये सब तेरे बन्दे हैं, इनकी पेशानियां तेरे हाथ में हैं।

इनके लिए इनके वाली को नेक बना दे और इसे उन राशिद ख़लीफ़ों में से कर दे जो नबी रहमत के तरीक़े की और उनके बाद के भले लोगों के तरीक़े की पैरवी करे और उसके लिए उसकी पब्लिक को नेक बना दे।[1]

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० बहुत ज़्यादा बीमार हो गए और उनको अपने बारे में मौत का यक़ीन हो गया, तो उन्होंने लोगों को अपने पास जमा किया और उनसे फ़रमाया, जो कुछ मेरा हाल है, वह तुम देख रहे हो। मेरा गुमान तो यही है कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ गया है और अल्लाह ने तुम्हारे अह्द व पैमान को मेरी बैअत से उठा लिया है और मेरे बंधन को तुमसे खोल दिया है और तुम्हारी ख़िलाफ़त के मामले को तुम्हारी तरफ़ वापस कर दिया है, अब तुम जिसे चाहो, अपना अमीर बना लो, क्योंकि अगर तुम मेरी ज़िंदगी में अपना अमीर बना लोगे, तो मेरे बाद तुम्हारा आपस में इख़्तिलाफ़ नहीं हो सकेगा।

चुनांचे लोग इस मक़सद के लिए खड़े हो गए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० को तंहाई में छोड़ गए लेकिन इस बारे में कोई बात तै न हो सकी और लोगों ने वापस आकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा! आप ही हमारे लिए अपनी राय से किसी अमीर का फ़ैसला कर दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, शायद तुम मेरे फ़ैसले से इख़्तिलाफ़ करो?

लोगों ने कहा, बिल्कुल नहीं करेंगे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर कहता हूं कि मैं जो फ़ैसला करूंगा, तुम उस पर राज़ी रहना।

तमाम लोगों ने कहा, जी, बिल्कुल राज़ी हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मुझे कुछ मोहलत दो, ताकि मैं सोच लूं कि अल्लाह और उसके दीन और उसके बन्दों का फ़ायदा किस में है? चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० को पैग़ाम देकर बुलाया, और (जब वह

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 199, कंज़, भाग 3, पृ० 145

आ गए तो) उनसे फ़रमाया, मुझे मश्विरा दो कि किस आदमी को अमीर बनाया जाए? वैसे तो अल्लाह की क़सम! मेरे नज़दीक आप भी इस इमारत के अह्ल और हक़दार हैं।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, उमर रज़ि० को बना दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अच्छा लिखो। हज़रत उस्मान रज़ि० लिखने लगे तो जब हज़रत उमर रज़ि० के नाम तक पहुंचे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० बेहोश हो गए, फिर उनको राहत मिली तो फ़रमाया, लिखो, उमर रज़ि०।[1]

हज़रत उस्मान बिन उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलाया और उनसे अपना वसीयतनामा लिखवाया, लेकिन (अमारत के लिए) किसी का नाम लिखवाने से पहले हज़रत अबूबक्र रज़ि० बेहोश हो गए। हज़रत उस्मान रज़ि० ने वहां हज़रत उमर बिन ख़त्ताब का नाम लिख दिया। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० होश में आ गए, तो हज़रत उस्मान रज़ि० से पूछा कि आपने किसी का नाम लिखा है?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मुझे ख़तरा हुआ कि आपका इस बेहोशी में इंतिक़ाल हो जाए और बाद में मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ हो जाए, इसलिए मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का नाम लिख दिया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, अगर आप अपना नाम लिख देते तो आप भी इस अमारत के अह्ल थे। फिर हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, जो लोग मेरे पीछे हैं, मैं उनका क़ासिद बनकर आया हूं, वे कह रहे हैं कि आप जानते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० आपकी ज़िंदगी में हम पर कितनी सख़्ती करते रहे हैं, अब जब आप हमारे मामले उनके हवाले कर देंगे, तो आपके बाद न जाने वह हम पर कितनी सख़्ती करेंगे और अल्लाह आपसे उनके बारे में पूछेंगे, जो आप

1. इब्ने असाकिर व सैफ़,

कह रहे हैं, उसके बारे में आप विचार कर लें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे बिठाओ, क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? जिस आदमी ने तुम्हारे मामले के तै करने में वहम से काम लिया हो, वह नामुराद हो (यानी मैंने हज़रत उमर रज़ि० का नाम इस यक़ीन के साथ तै किया है कि वह तुम्हारे लिए हर तरह बेहतर हैं) जब अल्लाह मुझसे पूछेंगे, तो मैं कह दूंगा कि मैंने तेरी मख़्लूक़ पर इनमें से सबसे बेहतरीन इंसान को अपना ख़लीफ़ा बनाया था। यह बात मेरी ओर से अपने पीछे वाले लोगों को पहुंचा दो।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० को अपना ख़लीफ़ा बनाया। फिर हज़रत अली और हज़रत तलहा रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आए और कहने लगे, आपने किसको ख़लीफ़ा बनाया है?

उन्होंने फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ि० को।

उन दोनों ने कहा, आप अपने रब को क्या जवाब देंगे?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम दोनों मुझे अल्लाह से डराते हो? मैं अल्लाह को और हज़रत उमर रज़ि० को तुम दोनों से ज़्यादा जानता हूं। मैं (अपने रब से) कह दूंगा, मैंने तेरी मख़्लूक़ में से सबसे बेहतरीन इंसान को अपना ख़लीफ़ा बनाया था।[2]

हज़रत ज़ैद बिन हारिस रह० फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने ख़लीफ़ा बनाने के लिए पैग़ाम भेजकर हज़रत उमर रज़ि० को बुलाया। इस पर लोगों ने (हज़रत अबूबक्र रज़ि० से) कहा, आप हम पर हज़रत उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा बना रहे हैं, जो कि कड़वे और सख़्त दिल हैं और वह अगर हमारे वाली बन गए तो और ज़्यादा कड़वे और सख़्त दिल हो जाएंगे। हज़रत उमर

1. अलकाई,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 196, कंज़, भाग 3, पृ० 146, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 149, इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 54

रज़ि० को हम पर ख़लीफ़ा बनाकर जब आप अपने रब को मिलेंगे, तो उनको क्या जवाब देंगे?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम लोग मुझे मेरे रब से डराते हो? मैं कह दूंगा, ऐ अल्लाह! मैंने तेरी मख़्लूक़ में से सबसे बेहतरीन आदमी को उनका ख़लीफ़ा बनाया था।[1]

ख़िलाफ़त के मामले की सलाहियत रखने वालों के लोगों के मश्विरे पर ख़िलाफ़त के मामले को रोके रखना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, जब अबू लूलू ने हज़रत उमर रज़ि० पर नेज़े के दो वार किए तो हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़्याल हुआ कि शायद उनसे लोगों के हक़ों में कोई ऐसी कोताही हुई है, जिसे वह नहीं जानते हैं। चुनांचे उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को बुलाया। हज़रत उमर रज़ि० को उनसे बड़ी मुहब्बत थी। वह उनको अपने क़रीब रखते थे और उनकी बात सुना करते थे और उनसे फ़रमाया, मैं यह चाहता हूं कि तुम यह पता करो कि क्या मेरा यह क़त्ल लोगों के मश्विरे से हुआ है?

चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास बाहर चले गए। वह मुसलमानों की जिस जमाअत के पास से गुज़रते, वे रोते नज़र आते। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में वापस आकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं जिस जमाअत के पास से गुज़रा, उनको रोता हुआ पाया। ऐसे मालूम हो रहा था जैसे आज उनका पहला बच्चा गुम हो गया हो।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, मुझे किसने क़त्ल किया है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० के मजूसी ग़ुलाम अबू लूलू ने।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, (जब हज़रत उमर रज़ि० को पता चला कि उनका क़ातिल मुसलमान नहीं, बल्कि मजूसी है) तो मैंने उनके

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 146

चेहरे पर ख़ुशी के निशान देखे और वह कहने लगे, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरा क़ातिल ऐसे आदमी को नहीं बनाया जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहकर मुझसे हुज्जतबाज़ी कर सके। ग़ौर से सुनो, मैंने तुमको किसी अजमी काफ़िर ग़ुलाम को हमारे यहां लाने से मना किया था, लेकिन तुमने मेरी बात न मानी। फिर फ़रमाया, मेरे भाइयों को बुला लाओ।

लोगों ने पूछा, वे कौन हैं?

उन्होंने फ़रमाया, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि०। इन लोगों के पास आदमी भेजा, फिर अपना सर मेरी गोद में रख दिया।

जब वे लोग आ गए, तो मैंने कहा, ये सब आ गए हैं। तो फ़रमाया, अच्छा, मैंने मुसलमानों के मामले में ग़ौर किया है। मैंने आप छः लोगों को मुसलमानों का सरदार और रहनुमा पाया है और यह ख़िलाफ़त की बात सिर्फ़ तुममें ही होगी। जब तक तुम सीधे रहोगे, उस वक़्त तक लोगों की बात भी ठीक रहेगी। अगर मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ हुआ तो पहले तुममें होगा।

जब मैंने सुना कि हज़रत उमर रज़ि० ने आपस के इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया है, तो मैंने सोचा कि अगरचे हज़रत उमर रज़ि० यों कह रहे हैं कि अगर इख़्तिलाफ़ हुआ, लेकिन यह इख़्तिलाफ़ ज़रूर होकर रहेगा, क्योंकि बहुत कम ऐसा हुआ है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कोई चीज़ कही हो और मैंने उसे न देखा हो।

फिर उनके घावों से बहुत-सा ख़ून निकला जिससे वे कमज़ोर हो गए। वे छः लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करने लगे, यहां तक कि मुझे ख़तरा हुआ कि ये लोग अभी अपने में किसी एक से बैअत हो जाएंगे। इस पर मैंने कहा, अभी अमीरुल मोमिनीन ज़िंदा है और एक वक़्त में दो ख़लीफ़ा नहीं होने चाहिए कि वे दोनों एक दूसरे को देख रहे हों। (अभी किसी को ख़लीफ़ा न बनाओ।)

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे उठाओ। चुनांचे हमने उनको उठाया, फिर उन्होंने फ़रमाया, तुम लोग तीन दिन मश्विरा करो और इस मुद्दत में हज़रत सुहैब रज़ि० लोगों को नमाज़ पढ़ाते रहें।

इन लोगों ने पूछा, हम किनसे मश्विरा करें?

उन्होंने फ़रमाया, मुहाजिरीन और अंसार से और यहां जितनी फ़ौजें हैं, उनके सरदारों से। इसके बाद थोड़ा सा दूध मंगाया और उसे पिया तो दोनों घावों में से दूध की सफ़ेदी बाहर आने लगी, जिससे हज़रत उमर रज़ि० ने समझ लिया कि मौत आने वाली है। फिर फ़रमाया, अब अगर मेरे पास सारी दुनिया हो तो मैं उसे मौत के बाद आने वाले हौलनाक मंज़र की घबराहट के बदले में देने को तैयार हूं, लेकिन मुझे अल्लाह की मेहरबानी से उम्मीद है कि मैं ख़ैर ही देखूंगा।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, आपने जो कुछ फ़रमाया है, उसका बेहतरीन बदला अल्लाह आपको अता फ़रमाए। क्या यह बात नहीं है कि जिस ज़माने में मुसलमान मक्का में ख़ौफ़ की हालत में ज़िंदगी गुज़ार रहे थे, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई थी कि आपको हिदायत देकर अल्लाह दीन को और मुसलमानों को इज़्ज़त अता फ़रमाए। जब आप मुसलमान हुए तो आपका इस्लाम इज़्ज़त का ज़रिया बना और आपके ज़रिए से इस्लाम और हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा खुल्लम खुल्ला सामने आए और आपने मदीना को हिजरत फ़रमाई और आपकी हिजरत फ़त्ह का ज़रिया बनी। फिर जितनी लड़ाइयों में हुज़ूर सल्ल० ने मुश्रिकों से लड़ाई लड़ी, आप किसी से ग़ैर हाज़िर न हुए। फिर हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात इस हाल में हुई कि वह आपसे राज़ी थे।

फिर आपने हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े के मुताबिक़ हुज़ूर सल्ल० के बाद रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा की ख़ूब ज़ोरदार मदद की और मानने वालों को लेकर आपने न मानने वालों का मुक़ाबला किया, यहां तक कि लोग चाहे-अनचाहे इस्लाम में दाख़िल हो गए। (बहुत से लोग ख़ुशी से दाख़िल हुए, कुछ लोग हालात और माहौल से मजबूर होकर दाख़िल हुए) फिर इन ख़लीफ़ा का इस हाल में इंतिक़ाल हुआ कि वह

आपसे राज़ी थे। फिर आपको ख़लीफ़ा बनाया गया और आपने इस ज़िम्मेदारी को अच्छे तरीक़े से अंजाम दिया और अल्लाह ने आपके ज़रिए से बहुत से नए शहर आबाद कराए (जैसे कूफ़ा और बसरा) और (मुसलमानों के लिए रूम व फ़ारस के) सारे माल जमा कर दिए और आपके ज़रिए दुश्मन की जड़ काट दी। अल्लाह ने हर घर में आपके ज़रिए दीन की तरक़्क़ी अता फ़रमाई और रोज़ी में भी फैलाव दिया और फिर अल्लाह ने आपको ख़ात्मे में शहादत का दर्जा दिया। शहादत का यह दर्जा आपको मुबारक हो।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तुम (ऐसी बातें करके) जिसे धोखा दे रहे हो, अगर वह इन बातों को अपने लिए मान जाएगा तो वह वाक़ई धोखा खाने वाला इंसान है। फिर फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! क्या तुम क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने मेरे हक़ में इन तमाम बातों की गवाही दे सकते हो?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, जी हां।

तो फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है (कि मेरी गवाही देने के लिए हुज़ूर सल्ल० के चचेरे भाई तैयार हो गए हैं, फिर फ़रमाया) ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर! मेरे गाल को ज़मीन पर रख दो।

(हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं) मैंने उनका सर अपनी रान से उठाकर अपनी पिंडली पर रख दिया, तो फ़रमाया, नहीं, मेरे गाल को ज़मीन पर रख दो। चुनांचे उन्होंने अपनी दाढ़ी और गाल को उठाकर ज़मीन पर रख दिया और फ़रमाया, ओ उमर! अगर अल्लाह ने तेरी मग़फ़िरत न की, तो फिर ऐ उमर! तेरी भी हलाकत है और तेरी मां की भी हलाकत है। इसके बाद उनकी जान निकल गई। (रहमतुल्लाहि अलैहि)

जब हज़रत उमर रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो इन लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के पास पैग़ाम भेजा। उन्होंने कहा, हज़रत उमर रज़ि० आप लोगों को हुक्म दे गए हैं कि आप लोग मुहाजिरीन और अंसार से और जितनी फ़ौज यहां मौजूद है उनके सरदारों से मश्विरा करें। अगर आप लोग यह काम नहीं करोगे, तो मैं आप लोगों

के पास नहीं आऊंगा।

जब हज़रत हसन बसरी से हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल के वक़्त के अमल का और उनके अपने रब से डरने का ज़िक्र किया गया, तो उन्होंने कहा, मोमिन ऐसे ही किया करता है कि अमल भी अच्छे तरीक़े से करता है और अल्लाह से भी डरता है और मुनाफ़िक़ अमल भी बुरे करता है और अपने बारे में धोखे में पड़ा रहता है। अल्लाह की क़सम! पहले के ज़माने में और मौजूदा ज़माने में मैंने यही पाया कि जो बन्दा अच्छे अमल में तरक़्क़ी करता है, वह अल्लाह से डरने में भी तरक़्क़ी करता है और जो बुरे अमल में तरक़्क़ी करता है, उसका अपने बारे में धोखा भी बढ़ता जाता है।[1]

हज़रत अम्र बिन मैमून हज़रत उमर रज़ि० की शहादत का क़िस्सा ज़िक्र करते हुए बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से कहा, देखो मुझ पर कितना क़र्ज़ है? इसका हिसाब लगाओ।

उन्होंने कहा, छियासी हज़ार।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अगर उमर रज़ि० के ख़ानदान के माल से यह क़र्ज़ा अदा हो जाए तो उनसे माल लेकर मेरा यह क़र्ज़ा अदा कर देना, वरना (मेरी क़ौम) बनू अदी बिन काब से मांगना। अगर उनके माल से मेरा तमाम क़र्ज़ा उतर जाए, तो ठीक है, वरना (मेरे क़बीला) क़ुरैश से मांगना। इनके बाद किसी और से न मांगना और मेरा क़र्ज़ा अदा कर देना और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में जाकर सलाम करो और उनसे कहो, उमर बिन ख़त्ताब अपने दोनों साथियों (हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि०) के साथ (हुजरा मुबारक में) दफ़न होने की इजाज़त मांग रहे हैं। उमर बिन ख़त्ताब कहना, अमीरुल मोमिनीन न कहना, क्योंकि मैं आज अमीरुल मोमिनीन नहीं हूं।

चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० हज़रत आइशा रज़ि० की

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 76

ख़िदमत में गए तो देखा कि वह बैठी हुई रो रही हैं। सलाम करके उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब अपने दोनों साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाहते हैं।

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैंने उस जगह अपने लिए दफ़न होने की नीयत कर रखी थी, लेकिन मैं आज हज़रत उमर रज़ि० को अपने ऊपर तर्जीह दूंगी। (यानी उनको इजाज़त है।)

जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० वापस आए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम क्या जवाब लाए हो?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, उन्होंने आपको इजाज़त दे दी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (इस वक़्त) मेरे नज़दीक इस काम से ज़्यादा ज़रूरी कोई चीज़ नहीं है। फिर फ़रमाया, जब मैं मर जाऊं, तो मेरे जनाज़े को उठाकर (हज़रत आइशा रज़ि० के दरवाज़े के सामने) ले जाना, फिर उनसे दोबारा इजाज़त तलब करना और यों कहना कि उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० (हुजरे में दफ़न होने की) इजाज़त मांग रहे हैं और अगर वह इजाज़त दे दें तो मुझे अन्दर ले जाना (और मुझे उस हुजरे में दफ़न कर देना) और अगर इजाज़त न दें तो मुझे वापस करके मुसलमानों के आम क़ब्रस्तान में दफ़न कर देना।

जब हज़रत उमर रज़ि० के जनाज़े को उठाया गया तो (सबकी चीख़ें निकल गईं और) ऐसे लगा कि जैसे आज ही मुसलमानों पर मुसीबत का पहाड़ टूटा है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने सलाम करके अर्ज़ किया कि उमर बिन ख़त्ताब (अन्दर दफ़न होने की) इजाज़त तलब कर रहे हैं। हज़रत आइशा (रज़ि०) ने इजाज़त दे दी और इस तरह अल्लाह ने हज़रत उमर रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ दफ़न होने का शरफ़ अता फ़रमा दिया।

जब हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो लोगों ने कहा कि आप किसी को अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दें, तो फ़रमाया, मैं (इन छः आदमियों की) इस जमाअत से ज़्यादा किसी को भी ख़िलाफ़त-मामले का हक़दार नहीं पाता हूं कि हुज़ूर सल्ल० का इस

हाल में इंतिक़ाल हुआ था कि वह इन छः से राज़ी थे। ये जिसे भी ख़लीफ़ा बना लें, वही मेरे बाद ख़लीफ़ा होगा। फिर हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और हज़रत साद रज़ि० के नाम लिए। अगर ख़िलाफ़त हज़रत साद रज़ि० को मिले, तो वही इसके हक़दार हैं, वरना इनमें से जिसे भी ख़लीफ़ा बनाया जाए, वह इनसे मदद हासिल करता रहे, क्योंकि मैंने उनको (कूफ़ा की ख़िलाफ़त से) किसी कमज़ोरी या ख़ियानत की वजह से नहीं हटाया था।

और हज़रत उमर रज़ि० ने (अपने बेटे) अब्दुल्लाह के लिए यह तै किया कि ये छः लोग इनसे मश्विरा ले सकते हैं, लेकिन इनका ख़िलाफ़त में कोई हिस्सा न होगा। जब ये छः लोग जमा हुए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा, अपनी राय को तीन आदमियों के हवाले कर दो। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने अपना अख़्तियार हज़रत अली रज़ि० को और हज़रत तलहा रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० को और हज़रत साद रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० को दे दिया।

जब इन तीनों को अख़्तियार मिल गया तो इन तीनों ने इकट्ठा होकर मश्विरा किया और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि फ़ैसला मेरे हवाले कर दो और मैं अल्लाह से इस बात का अह्द करता हूं कि तुममें सबसे अफ़ज़ल आदमी की और मुसलमानों के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद आदमी की खोज में कमी नहीं करूंगा।

दोनों लोगों ने कहा, हम दोनों तैयार हैं। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत अली से तंहाई में बात की और कहा कि आपको हुज़ूर सल्ल० से रिश्तेदारी भी हासिल है और इस्लाम में पहल भी। मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं कि अगर आपको ख़लीफ़ा बना दिया जाए तो क्या आप इंसाफ़ करेंगे? और अगर मैं हज़रत उस्मान रज़ि० को ख़लीफ़ा बना दूं तो क्या आप उनकी बात सुनेंगे और मानेंगे?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, जी हां।

फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से तंहाई में

बात की और उनसे भी यही पूछा।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने जवाब में कहा, जी हां।

फिर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, ऐ उस्मान! आप अपना हाथ बढ़ाएं। चुनांचे उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने उनसे बैअत की, फिर हज़रत अली रज़ि० और बाक़ी लोगों ने की।[1]

हज़रत अम्र रह० से ही यह रिवायत है कि जब हज़रत उमर रज़ि० की मौत का वक़्त क़रीब आया, तो आपने कहा, हज़रत अली, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत उस्मान और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को मेरे पास बुलाकर लाओ। (चुनांचे ये लोग आ गए) इन लोगों में से सिर्फ़ हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० से बातें कीं, चुनांचे हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, ऐ अली! ये लोग आपकी हुज़ूर सल्ल० से रिश्तेदारी को और उनके दामाद होने को भी जानते हैं और अल्लाह ने आपको जो इल्म और समझ दी है, उसे भी जानते हैं, इसलिए आपको अगर ख़लीफ़ा बना दिया जाए, तो अल्लाह से डरते रहना और बनू फ़्लां (यानी बनू हाशिम) को लोगों की गरदनों पर न बिठा देना।

फिर फ़रमाया, हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया, ऐ उस्मान रज़ि०! ये लोग अच्छी तरह जानते हैं कि आप हुज़ूर सल्ल० के दामाद हैं और आपकी उम्र ज़्यादा है और आप बड़ी शराफ़त वाले हैं, इसलिए अगर आपको ख़लीफ़ा बना दिया जाए, तो अल्लाह से डरते रहना और बनू फ़्लां (यानी अपने रिश्तेदारों) को लोगों की गरदनों पर न बिठा देना।

फिर हज़रत सुहैब रज़ि० को मेरे पास बुलाकर ले आओ। (वह आए तो) उनसे फ़रमाया, तुम लोगों को तीन दिन नमाज़ पढ़ाओ। ये (छः) लोग एक घर में जमा रहें। अगर ये लोग किसी एक को ख़लीफ़ा होने पर एक राय हो जाएं, तो जो इनकी मुख़ालफ़त करे, उसकी गरदन उड़ा देना।[2]

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 314, बुख़ारी, नसई,
2. इब्ने अबी शैबा, इब्ने साद,

हज़रत अबू जाफ़र कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने शूरा के लोगों से फ़रमाया, आप लोग अपने ख़िलाफ़त-मामलों के बारे में मश्विरा करें। (और अगर राय में इख़्तिलाफ़ हो और छः लोग) अगर दो और दो और दो हो जाएं, यानी तीन आदमियों को ख़लीफ़ा बनाने की राय बन रही हो, तो फिर दोबारा मश्विरा करना और अगर चार और दो हो जाएं तो ज़्यादा की यानी चार की राय को अख़्तियार कर लेना।

हज़रत अस्लम हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर राय के इख़्तिलाफ़ की वजह से ये लोग तीन और तीन हो जाएं तो जिधर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हों, उधर की राय अख़्तियार कर लेना और इन लोगों के फ़ैसले को सुनना और मानना।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी वफ़ात से थोड़ी देर पहले हज़रत अबू तलहा (अंसारी) रज़ि० को बुलाकर फ़रमाया, ऐ अबू तलहा ! तुम अपनी क़ौम अंसार के पचास आदमी लेकर इन शूरा वालों के साथ रहना, मेरा ख़्याल यह है कि ये अपने में से किसी एक के घर जमा होंगे, तुम उनके दरवाज़े पर अपने साथी लेकर खड़े रहना और किसी को अन्दर न जाने देना और न उनको तीन दिन तक छोड़ना, यहां तक कि ये लोग अपने में से किसी को अमीर मुक़र्रर कर लें। ऐ अल्लाह ! तू इनमें मेरा ख़लीफ़ा है।[2]

---

1. इब्ने साद,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 156, 157

ख़िलाफ़त का बोझ कौन उठाए?

ख़लीफ़ा में किन-किन ख़ूबियों का होना ज़रूरी है?

हज़रत आसिम रह० कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी बीमारी में लोगों को जमा किया, फिर एक आदमी को हुक्म दिया जो आपको उठाकर मिंबर पर ले गया, चुनांचे यह आपका आख़िरी बयान था। आपने अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया—

'ऐ लोगो! दुनिया से बचकर रहो और उस पर भरोसा न करो। यह बहुत धोखेबाज़ है और आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह दो और उससे मुहब्बत करो, क्योंकि इन दोनों में से किसी एक से मुहब्बत करने से ही दूसरे से दूरी पैदा होती है और हमारे तमाम मामले ख़िलाफ़त-मामले के ताबे (अधीन) हैं। इस ख़िलाफ़त-मामले के आख़िरी हिस्से में सुधार इसी तरह होगा, जिस तरीक़े से उसके शुरू के हिस्से का हुआ था। इस ख़िलाफ़त-मामले का बोझ वही उठा सकता है जो तुममें सबसे ज़्यादा ताक़त वाला हो और अपने नफ़्स पर सबसे ज़्यादा क़ाबू पाने वाला हो। सख़्ती के मौक़े पर ख़ूब सख़्त और नर्मी के मौक़े पर ख़ूब नर्म हो और शूरा वालों की राय को ख़ूब जानता हो, बेकार की बातों में न पड़ता हो। जो बात अभी पेश न आई हो, उसकी वजह से ग़मगीन और परेशान न हो, इल्म सीखने से शर्माता न हो, अचानक पेश आ जाने वाले काम से घबराता न हो। माल के संभालने में ख़ूब मज़बूत हो और ग़ुस्से में आकर कमी-ज़्यादती करके माल में ख़ियानत बिल्कुल न करे और आगे पेश आने वाले मामलों की तैयारी रखे और एहतियात और चौकन्नापन और ख़ुदा की इताअत उसके पास हर वक़्त तैयार हो और इन तमाम ख़ूबियों के मालिक हज़रत उमर बिन ख़त्ताब हैं।'

यह बयान फ़रमाकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० मिंबर से तशरीफ़ ले आए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ि० की

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 147

ऐसी ख़िदमत की कि उनके घरवालों में कोई भी वैसी न कर सका और मैंने उनके साथ मुहब्बत का ऐसा मामला किया कि उनके घरवालों में कोई भी वैसा न कर सका।

एक दिन मैं उनके घर में उनके साथ तंहाई में बैठा हुआ था और वह मुझे अपने पास बिठाया करते थे और मेरा बहुत इकराम फ़रमाया करते थे। इतने में उन्होंने इतने ज़ोर से आह भरी कि मुझे ख़्याल हुआ कि उससे उनकी जान निकल जाएगी। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आपने यह आह किसी चीज़ से घबराकर भरी है?

उन्होंने फ़रमाया, हां घबराकर भरी है।

मैंने पूछा, वह क्या चीज़ है?

उन्होंने फ़रमाया, ज़रा नज़दीक आ जाओ। चुनांचे मैं उनके बिल्कुल क़रीब हो गया, तो फ़रमाया, मैं किसी को इस ख़िलाफ़त-मामले का अह्ल नहीं पा रहा हूं।

मैंने कहा, फ़्लां और फ़्लां, फ़्लां और फ़्लां, फ़्लां और फ़्लां के बारे में आपका ख़्याल है? और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उनके सामने छः शूरा वालों के नाम गिनाए। जवाब में हज़रत उमर रज़ि० ने उन छः में से हर एक के बारे में कुछ न कुछ बात फ़रमाई, फिर फ़रमाया, इस ख़िलाफ़त-मामले की सलाहियत सिर्फ़ वही आदमी रखता है जो मज़बूत हो, लेकिन सख़्त और खुरदरा न हो, नर्म हो, लेकिन कमज़ोर न हो, सख़ी हो, लेकिन फ़िज़ूलख़र्च न हो, एहतियात से ख़र्च करने वाला हो, लेकिन कंजूस न हो।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास बैठा हुआ था कि इतने में उन्होंने इतने ज़ोर से सांस लिया कि मैं समझा कि उनकी पसलियां टूट गई हैं। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने किसी बड़ी परेशानी की वजह से इतना लम्बा सांस लिया है?

उन्होंने कहा, हां, किसी बड़ी परेशानी की वजह से लिया है और वह

1. इब्ने साद

यह है कि मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं अपने बाद यह ख़िलाफ़त-मामला किसके सुपुर्द करूं? फिर मेरी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, शायद तुम अपने साथी (हज़रत अली रज़ि०) को इस ख़िलाफ़त-मामला का अह्ल समझते हो।

मैंने कहा, जी हां! बेशक वह इस ख़िलाफ़त-मामले के अह्ल हैं, क्योंकि वह शुरू में मुसलमान हुए थे और बड़े फ़ज़्ल व कमाल वाले हैं।

उन्होंने फ़रमाया, बेशक वह ऐसे ही हैं जैसे तुमने कहा, लेकिन वह ऐसे आदमी हैं कि उनमें दिल्लगी और मज़ाक़ की आदत है। फिर उनका तज़्किरा करते रहे और फिर फ़रमाया, इस ख़िलाफ़त-मामले की सलाहियत सिर्फ़ वह आदमी रखता है, जो मज़बूत हो, लेकिन खुरदरा न हो और नर्म हो, लेकिन कमज़ोर न हो और सख़ी हो, लेकिन फ़िज़ूल ख़र्च न हो और एहतियात से ख़र्च करने वाला हो, लेकिन कंजूस न हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाया करते थे कि ये तमाम ख़ूबियां तो सिर्फ़ हज़रत उमर रज़ि० ही में पाई जाती थीं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत किया करता था, उनसे डरा भी बहुत करता था और उनकी ताज़ीम भी बहुत किया करता था। मैं एक दिन उनकी ख़िदमत में उनके घर हाज़िर हुआ, वह अकेले बैठे हुए थे। उन्होंने इतने ज़ोर से सांस लिया कि मैं समझा कि उनकी जान निकल गई है। फिर उन्होंने आसमान की ओर सर उठाकर बहुत लम्बा सांस लिया। मैंने हिम्मत से काम लिया और कहा, मैं उनसे इस बारे में ज़रूर पूछूंगा।

चुनांचे मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने किसी बड़ी परेशानी की वजह से इतना लम्बा सांस लिया है?

उन्होंने कहा, हां, अल्लाह की क़सम! मुझे सख़्त परेशानी है और वह यह है कि मुझे इस ख़िलाफ़त-मामले का अह्ल कोई भी नहीं मिल रहा है। फिर फ़रमाया, शायद तुम यों कहते हो कि तुम्हारे साथी यानी हज़रत अली रज़ि० इस ख़िलाफ़त-मामले के अह्ल हैं।

---

1. अबू उबैद, ख़तीब,

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! उन्हें हिजरत की सआदत भी हासिल है और वह हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में भी रहे हैं और हुज़ूर सल्ल० के रिश्तेदार भी हैं। क्या वे इन तमाम मामलों की वजह से ख़िलाफ़त के अह्ल नहीं हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम जैसे कह रहे हो, वह ऐसे ही हैं, लेकिन उनमें हंसी-मज़ाक़ की आदत है, फिर वह हज़रत अली रज़ि० का तज़्किरा फ़रमाते रहे, फिर यह फ़रमाया कि ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ वही आदमी उठा सकता है जो नर्म हो, लेकिन कमज़ोर न हो और मज़बूत हो लेकिन सख़्त न हो और सख़ी हो, लेकिन फ़िज़ूलख़र्च न हो और एहतियात से ख़र्च करने वाला हो, लेकिन कंजूस न हो और फिर फ़रमाया, इस ख़िलाफ़त को संभालने की ताक़त सिर्फ़ वही आदमी रखता है जो बदला लेने के लिए दूसरों से अच्छा व्यवहार न करे और धोखेबाज़ों जैसा रवैया न अपनाए और लालच में न पड़े और अल्लाह की ओर से सौंपी हुई ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी की ताक़त सिर्फ़ वही आदमी रखता है जो अपनी ज़ुबान से ऐसी बात न कहे जिसकी वजह से उसे अपना इरादा तोड़ना पड़े और अपनी जमाअत के ख़िलाफ़ भी हक़ का फ़ैसला कर सके।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, इस ख़िलाफ़त-मामले का ज़िम्मेदार उस आदमी को ही बनना चाहिए जिसमें ये चार ख़ूबियां पाई जाती हों। नर्मी हो, लेकिन कमज़ोरी न हो, मज़बूती हो लेकिन खुरदरापन न हो, एहतियात से ख़र्च करता हो, लेकिन कंजूसी न हो और सख़ावत हो, लेकिन फ़िज़ूलख़र्ची न हो। अगर उसमें इनमें से एक ख़ूबी न हुई तो बाक़ी तीनों ख़ूबियां बेकार हो जाएंगी।[2]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह के इस काम को ठीक तरह से वही कर सकता है जो बदला लेने के लिए दूसरों से अच्छा व्यवहार न करे और दिखावा करने वालों जैसा न बने, और लालच में न पड़े। उसमें अपनी इज़्ज़त बनाने का जज़्बा न हो और तेज़ी और गुस्सा के

1. कंज़, भाग 3, पृ० 158, 159
2. अब्दुर्रज़्ज़ाक़,

बावजूद हक़ को न छिपाए।[1]

हज़रत सुफ़ियान बिन अबिल औजा रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने एक बार फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम ! मुझे यह मालूम नहीं है कि मैं ख़लीफ़ा हूं या बादशाह हूं। अगर मैं बादशाह हूं तो यह बड़े (ख़तरे की) बात है।

(मौजूद लोगों में से) एक ने कहा, इन दोनों में तो बड़ा फ़र्क़ है। ख़लीफ़ा तो हर चीज़ हक़ की वजह से लेता है और फिर उसे हक़ में ही ख़र्च करता है और अल्लाह की मेहरबानी से आप ऐसे ही हैं और बादशाह लोगों पर ज़ुल्म करता है, एक से ज़बरदस्ती लेता है और दूसरे को नाहक़ देता है। (यह सुनकर) हज़रत उमर रज़ि० चुप हो गए।[2]

हज़रत सलमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा कि मैं बादशाह हूं या ख़लीफ़ा?

हज़रत सलमान रज़ि० ने उनसे कहा, अगर आपने मुसलमानों की ज़मीन से एक दिरहम या इससे कम-ज़्यादा (ज़ुल्म के तौर पर) लिया है और फिर उसे नाहक़ ख़र्च किया है, तो आप बादशाह हैं, ख़लीफ़ा नहीं हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े।[3]

क़बीला बनू असद के एक आदमी कहते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि० की मज्लिस में मौजूद था। उन्होंने अपने साथियों से पूछा, जिनमें हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत सलमान रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत काब रज़ि० भी थे, फ़रमाया कि मैं तुमसे एक चीज़ के बारे में पूछने लगा हूं। तुम मुझे ग़लत जवाब न देना, वरना मुझे और अपने आपको हलाक कर दोगे। मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं, क्या मैं ख़लीफ़ा हूं या बादशाह?

हज़रत तलहा रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने फ़रमाया, आप हमसे ऐसी बात पूछ रहे हैं, जिसे हम जानते नहीं हैं। हमें मालूम नहीं है कि

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 165
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 221
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 383

ख़लीफ़ा और बादशाह में क्या फ़र्क़ है?

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं पूरे खुले मन के साथ गवाही देता हूं कि आप ख़लीफ़ा हैं और बादशाह नहीं हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम यह बात कह रहे हो तो तुम्हें ऐसे फ़ैसला कर देने वाले अंदाज़ में यह बात कहने का हक़ है, क्योंकि तुम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर उनकी मज्लिस में बैठा करते थे।

फिर हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैंने यह बात इस वजह से कही है कि आप जनता में इंसाफ़ करते हैं और उनमें (हर चीज़) बराबर बांटते हैं और उनके साथ ऐसी मुहब्बत का मामला करते हैं जैसे कोई आदमी अपने घरवालों के साथ करता है और आप हर फ़ैसला अल्लाह की किताब के मुताबिक़ करते हैं।

इस पर हज़रत काब रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा ख़्याल नहीं था कि इस मज्लिस में मेरे अलावा भी कोई आदमी ऐसा है जो ख़लीफ़ा और बादशाह के फ़र्क़ को जानता है, लेकिन अल्लाह ने हज़रत सलमान रज़ि० को हिक्मत और इल्म से भरा हुआ है।

फिर हज़रत काब रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप ख़लीफ़ा हैं और बादशाह नहीं हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप यह गवाही किस बुनियाद पर दे रहे हैं?

हज़रत काब रज़ि० ने कहा, मैं आपका ज़िक्र अल्लाह की किताब (यानी तौरात) में पाता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या इसमें मेरा ज़िक्र मेरे नाम के साथ है?

हज़रत काब रज़ि० ने कहा, नहीं, बल्कि आपका ज़िक्र आपकी ख़ूबियों के साथ है। चुनांचे तौरात में इस तरह है कि पहले नुबूवत होगी, फिर नुबूवत के तरीक़े पर ख़िलाफ़त और रहमत होगी, फिर इसके बाद ऐसी बादशाही होगी, जिसमें कुछ ज़ुल्म भी होगा।[1]

1. कंज़, भाग 4, पृ० 389

ख़लीफ़ा की नर्मी और सख़्ती का बयान

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ि० ख़लीफ़ा बनाए गए, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के मिंबर पर (खड़े होकर) बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया—

'ऐ लोगो! मुझे मालूम है कि तुम लोग मुझमें सख़्ती और खुरदरापन देखते हो, उसकी वजह यह है कि मैं हुज़ूर सल्ल० के साथ होता था। मैं आपका ग़ुलाम और ख़ादिम था और (आपके बारे में) अल्लाह ने जैसा फ़रमाया है—

بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

'ईमान वालों के साथ बड़े ही शफ़ीक़ मेहरबान हैं।'

आप वाक़ई ऐसे ही (यानी बड़े ही शफ़ीक़ और मेहरबान) थे। इसलिए मैं आपके सामने सुती हुई नंगी तलवार की तरह रहता था। अगर आप मुझे म्यान में डाल देते या मुझे किसी काम से रोक देते तो मैं रुक जाता, वरना मैं आपकी नर्मी की वजह से लोगों के साथ सख़्ती से पेश आता।

हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में मेरा यही तरीक़ा रहा, यहां तक कि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को अपने यहां बुला लिया और दुनिया से जाते वक़्त हुज़ूर सल्ल० मुझसे राज़ी थे। मैं इस पर अल्लाह का बहुत शुक्र अदा करता हूं और इसे अपनी बड़ी सआदत समझता हूं।

फिर हुज़ूर सल्ल० के बाद उनके ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ मेरा यही रवैया रहा। आप लोग उनके करम, तवाज़ो और नर्म मिज़ाज़ी को जानते ही हैं। मैं उनका ख़िदमत करने वाला था और उनके सामने सुती हुई तलवार की तरह रहता था। मैं अपनी सख़्ती को उनकी नर्मी के साथ मिला देता था। अगर वह किसी मामले में ख़ुद पहल कर लेते तो मैं रुक जाता, वरना मैं क़दम उठा लेता और उनके साथ मेरा यही रवैया रहा, यहां तक कि अल्लाह ने उनको दुनिया से उठा लिया और दुनिया से जाते वक़्त वह मुझसे राज़ी थे। मैं इस पर अल्लाह का बड़ा शुक्र अदा करता हूं और मैं इसे अपनी बड़ी सआदत समझता हूं।

और आज तुम्हारा मसला मेरी ओर मुंतक़िल हो गया है, (क्योंकि मैं ख़लीफ़ा बना दिया गया हूं) मुझे मालूम है कि कुछ लोग यह कहेंगे कि जब ख़लीफ़ा दूसरे थे (उमर रज़ि० नहीं थे), तो यह हम पर सख़्ती किया करते थे, अब जबकि यह ख़ुद ख़लीफ़ा बन गए हैं, तो अब उनकी सख़्ती का क्या हाल होगा।

तुम पर वाज़ेह (स्पष्ट) हो जाना चाहिए कि तुम्हें मेरे बारे में किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं है, तुम मुझे पहचानते भी हो और तुम लोग मेरा तजुर्बा भी कर चुके हो और अपने नबी की सुन्नत जितनी मैं जानता हूं, उतनी तुम भी जानते हो और हुज़ूर सल्ल० से मैंने हर बात पूछ रखी है। अब मुझे (ज़रूरत की) किसी बात के न पूछने पर शर्म नहीं आती। तुम अच्छी तरह से समझ लो कि अब जबकि मैं ख़लीफ़ा बन गया हूं तो अब मेरी सख़्ती जो तुम देखते थे, वह कई गुना बढ़ गई है, लेकिन यह सख़्ती उस इंसान के ख़िलाफ़ होगी जो ज़ुल्म और ज़्यादती करेगा और यह सख़्ती ताक़तवर मुसलमान से हक़ लेकर कमज़ोर मुसलमान को देने के लिए होगी और मैं अपनी इस सख़्ती के बावजूद अपना गाल तुम्हारे उन लोगों के लिए बिछा दूंगा जो पाक दामन होंगे और ग़लत कामों से रुकेंगे और बात मानेंगे और मुझे इस बात से भी इंकार नहीं है कि अगर मेरे और तुममें से किसी के दर्मियान किसी फ़ैसले के बारे में इख़्तिलाफ़ हो जाए, तो तुम जिसे पसन्द करो, मैं उसके साथ उसके पास चला जाऊंगा और वह (सालिस) मेरे और उसके दर्मियान जो फ़ैसला करेगा, वह मुझे मंज़ूर होगा।

ऐ अल्लाह के बन्दो ! अल्लाह से डरो और अपने बारे में इस तरह मेरी मदद करो कि मेरे पास (इधर-उधर की सारी) बातें न लाओ और मेरे नफ़्स के ख़िलाफ़ मेरी इस तरह मदद करो कि (जब ज़रूरत पेश आए तो) मुझे नेकी का हुक्म करो और मुझे बुराई से रोको और तुम्हारे जिन मामलों का अल्लाह ने मुझे वाली बना दिया है, उनमें तुम मेरे साथ पूरी ख़ैरख़्वाही करो।'

फिर आप मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।[1]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 147

हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० और हज़रत साद रज़ि० जमा हुए और उनमें हज़रत उमर रज़ि० के सामने (बात करने में) सबसे ज़्यादा हिम्मती हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० थे।

चुनांचे इन लोगों ने (उनसे) कहा, ऐ अब्दुर्रहमान ! क्या ही अच्छा हो कि आप लोगों के बारे में अमीरुल मोमिनीन से बात कर लें और उनसे यह कहें कि बहुत से ज़रूरतमंद लोग आते हैं, लेकिन आपके रौब की वजह से आपसे बात नहीं कर पाते हैं और अपनी ज़रूरत पूरी किए बग़ैर ही वापस चले जाते हैं।

चुनांचे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप लोगों के साथ नर्मी अख़्तियार फ़रमाएं, क्योंकि बहुत से ज़रूरतमंद आपके पास आते हैं, लेकिन आपके रौब और डर की वजह से आपसे बात नहीं कर पाते हैं और आपसे अपनी ज़रूरत कहे बग़ैर ही वापस चले जाते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं कि क्या तुम्हें हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत साद रज़ि० ने यह बात करने को कहा है?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, जी हां।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अब्दुर्रहमान ! अल्लाह की क़सम ! मैंने लोगों के साथ इतनी नर्मी अख़्तियार की कि इस नर्मी पर अल्लाह से डरने लगा (कि कहीं वह इस नर्मी पर पकड़ न फ़रमा ले), फिर मैंने लोगों पर इतनी सख़्ती अपनाई कि इस सख़्ती पर अल्लाह से डरने लगा (कि कहीं वह इस सख़्ती पर मेरी पकड़ न फ़रमा ले।) अब तुम ही बताओ कि छुटकारे की क्या शक्ल है?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० वहां से रोते हुए चादर घसीटते हुए उठे और हाथ से इशारा करते हुए कह रहे थे, हाए अफ़सोस ! आपके बाद इनका

क्या बनेगा ? (हाय ! अफ़सोस ! आपके बाद इनका क्या बनेगा ?)[1]

अबू नुऐम अपनी किताब हुलीया में हज़रत शाबी रह० से नक़ल करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मेरा दिल अल्लाह के लिए इतना नर्म हुआ कि मक्खन से भी ज़्यादा नर्म हो गया और (इसी तरह) मेरा दिल अल्लाह के लिए इतना सख़्त हुआ कि पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो गया।

इब्ने असाकिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा बनाया गया, तो उनसे एक साहब ने कहा कि कुछ लोगों ने इस बात की कोशिश की कि आपको यह ख़िलाफ़त न मिले।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह किस वजह से ?

उसने कहा, उनका यह ख़्याल था कि आप बहुत सख़्त हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मेरा दिल लोगों की मुहब्बत से भर दिया और लोगों के दिल में मेरा रौब भर दिया।[2]

जिन लोगों की चलत-फिरत से उम्मत में बिखराव पैदा हो, उन्हें रोके रखना

हज़रत शाबी रह० कहते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० का इंतिक़ाल हुआ तो उस वक़्त क़ुरैश (के कुछ ख़ास लोग) उनसे उकता चुके थे, क्योंकि हज़रत उमर रज़ि० ने उनको मदीना में रोक रखा था और उनके बाहर जाने पर पाबन्दी लगा रखी थी और उन पर ख़ूब ख़र्च करते थे और फ़रमाते थे कि मुझे इस उम्मत के बारे में सबसे ज़्यादा ख़तरा तुम्हारे अलग-अलग शहरों में फैलने से मालूम होता है। (हज़रत उमर रज़ि० ने यह पाबन्दी मुहाजिरों में कुछ ख़ास लोगों पर लगा रखी थी) और मुहाजिरों के इन ख़ास लोगों के अलावा और मक्का वालों पर यह

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 26
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 382

पाबन्दी हज़रत उमर रज़ि० ने नहीं लगाई थी।

चुनांचे जिन मुहाजिरीन को हज़रत उमर रज़ि० ने मदीना रहने का पाबन्द बना रखा था, उनमें से कोई जिहाद में जाने की इजाज़त मांगता, तो उससे फ़रमाते कि तुम हुज़ूर सल्ल० के साथ जो लड़ाइयों के सफ़र कर चुके हो, वह मंज़िले मक़्सूद यानी जन्नत के ऊंचे दर्जों तक पहुंचने के लिए काफ़ी हैं। आज तो लड़ाई में जाने से तुम्हारे लिए यही बेहतर है कि (यहां मदीना ही में रहो) न तुम दुनिया को देखो और न दुनिया तुम्हें देखे। (हज़रत उमर रज़ि० का मक़्सद यह था कि यह कुछ ख़ास लोग अगर अलग-अलग इलाक़ों में चले जाएंगे, तो वहां के मुसलमान उनकी ही सोहबत पर बस कर लेंगे और मदीना नहीं आया करेंगे और यों उनका अमीरुल मोमिनीन से और इस्लामी मर्कज़ से ताल्लुक़ कमज़ोर हो जाएगा।

अगर ये लोग मदीना ही में रहेंगे तो सारी दुनिया के मुसलमान मदीना आया करेंगे और इस तरह उनका अमीरुल मोमिनीन और इस्लामी मर्कज़ से ताल्लुक़ मज़बूत होता रहेगा और यों मुसलमानों में फ़िक्र और मेहनत होगी और सारी तर्तीब एक जैसी रहेगी)।

जब हज़रत उस्मान रज़ि० ख़लीफ़ा बने, तो उन्होंने इन लोगों पर से यह पाबन्दी उठा ली और उन्हें जाने की इजाज़त दे दी। ये लोग अलग-अलग इलाक़ों में फैल गए और वहां के मुसलमानों ने इन लोगों की सोहबत पर ही बस कर लिया।

इस हदीस की रिवायत करने वाले हज़रत मुहम्मद और हज़रत तलहा कहते हैं कि यह सबसे पहली कमज़ोरी थी जो इस्लाम में दाख़िल हुई और यही सबसे पहला फ़ित्ना था, जो आम लोगों में पैदा हुआ (कि स्थानीय लोगों से ताल्लुक़ ज़्यादा हो गया और अमीरुल मोमिनीन और इस्लामी मर्कज़ से ताल्लुक़ कम हो गया।)[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम कहते हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में जिहाद में जाने की इजाज़त लेने के

1. कंज़, भाग 7, पृ० 139, तबरी, भाग 5, पृ० 134

लिए आए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम अपने घर में बैठे रहो, तुम हुज़ूर सल्ल० के साथ बहुत लड़ाइयां लड़ चुके हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० बार-बार कहने लगे। तीसरी या चौथी बार कहने पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अपने घर में बैठ जाओ, क्योंकि अल्लाह की क़सम! मैं देख रहा हूं कि अगर तुम और तुम्हारे साथी निकलकर मदीने के किनारे चले जाओगे तो तुम लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सहाबा के ख़िलाफ़ फ़ित्ना पैदा कर दोगे।[1]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 120

राय वालों से मश्विरा करना

हुज़ूरे अकरम सल्ल० का अपने सहाबा से मश्विरा करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० को अबू सुफ़ियान (की फ़ौज) के आने की ख़बर मिली तो हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० से मश्विरा फ़रमाया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कुछ बात फ़रमाई। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे बचना चाहा, फिर हज़रत उमर रज़ि० ने कुछ बात फ़रमाई। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे भी किनारा किया। आगे हदीस का और मज़्मून भी है जोकि जिहाद के बाब के शुरू में पहले भाग में गुज़र चुका है।[1]

इमाम अहमद और इमाम मुस्लिम बद्र के वाक़िए में हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत करते हैं। इसमें यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० से मश्विरा लिया (कि बद्र के क़ैदियों के साथ क्या किया जाए?) तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये लोग (हमारे) चचा के बेटे, ख़ानदान के लोग और भाई हैं। मेरी राय यह है कि आप उनसे फ़िदया ले लें (और उन्हें छोड़ दें) तो हम उनसे जो फ़िदया लेंगे, वे कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले के लिए हमारी ताक़त का ज़रिया बनेगा और हो सकता है कि अल्लाह उनको हिदायत दे दे, तो फिर यह हमारे दस्त व बाज़ू बन जाएंगे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब ! तुम्हारी क्या राय है?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम ! जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय है, वह मेरी राय नहीं है, बल्कि मेरी राय तो यह है कि फ़्लां आदमी जो मेरा क़रीबी रिश्तेदार है, वह मेरे हवाले कर दें, मैं उसकी गरदन उड़ा दूं और अक़ील को हज़रत अली रज़ि० के हवाले कर दें, वह अक़ील की गरदन उड़ा दें और फ़्लां आदमी जो हज़रत हमज़ा रज़ि० के भाई हैं यानी हज़रत अब्बास रज़ि० वह हज़रत हमज़ा के हवाले कर दें। हज़रत

1. अख़रजहू अहमद

हमज़ा रज़ि० उनकी गरदन उड़ा दें, ताकि अल्लाह को पता चल जाए कि हमारे दिलों में मुश्रिकों के बारे में किसी क़िस्म की नर्मी नहीं है। ये लोग क़ुरैश के सरदार और इमाम और क़ाइद (नेता) हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय को पसन्द फ़रमाया और मेरी राय आपको पसन्द न आई और उन क़ैदियों से फ़िदया ले लिया। अगले दिन मैं हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में गया, तो वे दोनों रो रहे थे।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे बताएं कि आप और आपके साथी क्यों रो रहे हैं? अगर (रोने की वजह मालूम होने पर) मुझे भी रोना आ गया, तो मैं भी रोने लग जाऊंगा और अगर रोना न आया तो आप दोनों के रोने की वजह से मैं भी तकल्लुफ़ के साथ रोने की शक्ल बना लूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं इस वजह से रो रहा हूं कि तुम्हारे साथियों ने इन क़ैदियों से जो फ़िदया लिया है, उसकी वजह से अल्लाह का अज़ाब उस पेड़ से भी ज़्यादा क़रीब आ गया था और अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ أَسْرٰى (انفال آیت ۶۷)

'नबी की शान के लायक़ नहीं कि उनके क़ैदी बाक़ी रहें, (बल्कि क़त्ल कर दिए जाएं) जब तक कि वे ज़मीन में अच्छी तरह ख़ूरेज़ी न कर लें। तुम तो दुनिया का माल व असबाब चाहते हो और अल्लाह आख़िरत (की मस्लहत) को चाहते हैं और अल्लाह बड़े ज़बरदस्त, बड़े हिक्मत वाले हैं।'[1] (अल-अंफ़ाल, आयत 67)

इमाम अहमद हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से बद्र की लड़ाई के मौक़े पर क़ैदियों के बारे में मश्विरा फ़रमाया, तो उनसे फ़रमाया, अल्लाह ने तुम्हें इन लोगों पर क़ाबू दे दिया है (बताओ अब उनके साथ क्या करना चाहिए)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 265

सल्ल० ! इन लोगों की गरदनें उड़ा दें।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० की ओर से चेहरा फेर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह ने तुम्हें इन लोगों पर क़ाबू दे दिया है और ये लोग कल तुम्हारे भाई ही थे। (इसलिए इनके साथ नर्मी का ही बर्ताव होना चाहिए।)

हज़रत उमर रज़ि० ने दोबारा वही राय पेश की। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी तरफ़ से चेहरा फेर लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फिर मुतवज्जह होकर वही बात इर्शाद फ़रमाई। इस बार हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारी राय यह है कि आप उनको माफ़ कर दें और उनसे फ़िदया क़ुबूल फ़रमा लें।

(यह सुनकर) हुज़ूर सल्ल० के मुबारक चेहरे से ग़म और परेशानी का असर दूर हो गया, फिर आपने उनको माफ़ फ़रमा दिया और उनसे फ़िदया लेना क़ुबूल फ़रमा लिया, अल्लाह ने यह आयत फ़रमाई—

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ . (الانفال آیت ۶۸)

'अगर ख़ुदा का लिखा मुक़द्दर न हो चुकता तो जो मामला तुमने अपनाया है, उसके बारे में तुम पर कोई बड़ी सज़ा वाक़े होती।'

(अल-अन्फ़ाल आयत 68)[1]

हुज़ूर सल्ल० का फ़िदया लेने की राय की तरफ़ रुझान सिर्फ़ रिश्ते जोड़ने और रहमदिली दिखाने की वजह से था, अलबत्ता कुछ सहाबा रज़ि० ने सिर्फ़ माली फ़ायदों को सामने रखकर यह राय दी थी और अक्सर सहाबा रज़ि० ने दूसरी दीनी मस्लहतों और अख़्लाक़ी पहलू के साथ माली ज़रूरतों को भी सामने रखते हुए यह राय दी थी और फ़िदया लेकर छोड़ देना उस वक़्त के हालात के एतबार से अल्लाह के यहां ग़लती क़रार दिया गया और यह ग़लती थी तो ऐसी कि उन लोगों को कड़ी सज़ा दी जाती जिन्होंने दुनिया के सामानों का ख़्याल करके ऐसा मश्विरा दिया था, मगर सज़ा देने से यह चीज़ रोक बन रही है जो

1. नस्बुर्राया, भाग 3, प० 403, हैसमी, भाग 6, पृ० 87

अल्लाह पहले से लिख चुका और तै कर चुका है और वे कई बातें हो सकती हैं—

1. इज्तिहाद करने वाले को इस क़िस्म की इज्तिहादी ग़लती पर अज़ाब नहीं होगा,

2. बद्र वालों की ख़ताओं को अल्लाह माफ़ कर चुका है,

3. इन क़ैदियों में से बहुतों की क़िस्मत में इस्लाम लाना लिखा गया था। वग़ैरह

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने (सहाबा से) फ़रमाया तुम इन क़ैदियों के बारे में क्या कहते हो?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ये लोग आपकी क़ौम और आपके ख़ानदान के हैं, इनको (माफ़ फ़रमाकर दुनिया में) बाक़ी रखें और उनके साथ नर्मी का मामला फ़रमाएं, शायद अल्लाह इनको (कुफ़्र व शिर्क से) तौबा की तौफ़ीक़ दे दे और फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उन्होंने आपको (मक्का से) निकाला और आपको झुठलाया, आप उनको अपने पास बुलाएं और उन सबकी गरदनें उड़ा दें और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० ने यह राय पेश की कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप घने पेड़ों वाला बन खोजें, फिर इन लोगों को उस बन में दाख़िल करके ऊपर से आग लगा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने (सबकी राय सुनी और) कोई फ़ैसला न फ़रमाया और (अपने ख़ेमे में) तशरीफ़ ले गए। (लोग आपस में बातें करने लगे) कुछ ने कहा, आप हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय पर अमल करेंगे और कुछ ने कहा, हज़रत उमर रज़ि० की राय पर अमल करेंगे और कुछ ने कहा, आप हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की राय पर अमल करेंगे।

फिर आप लोगों के पास बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि अल्लाह कुछ लोगों के दिलों को अपने बारे में इतना नर्म बना देते हैं कि वे दूध से भी ज़्यादा नर्म हो जाते हैं और कुछ लोगों के दिलों को अपने

बारे में इतना सख़्त फ़रमा देते हैं कि वे पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो जाते हैं और ऐ अबूबक्र रज़ि० ! तुम्हारी मिसाल हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जैसी है, क्योंकि उन्होंने फ़रमाया था—

فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْ وَمَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ - (ابراہیم آیت ۳۶)

'फिर जो आदमी मेरी राय पर चलेगा, वह तो मेरा ही है और जो आदमी (इस बारे में) मेरा न कहना माने, सो आप तो ज़्यादा माफ़ करने वाले, ज़्यादा रहमत वाले हैं।' (इब्राहीम, आयत 36)

और ऐ अबूबक्र ! तुम्हारी मिसाल हज़रत ईसा अलै० जैसी है, क्योंकि उन्होंने फ़रमाया—

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ (المائدہ آیت ۱۱۸)

'और अगर आप उनको सज़ा दें, तो ये आपके बन्दे हैं और आप इनको माफ़ फ़रमा दें तो आप ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।'

(अल-माइदा आयत 118)

और ऐ उमर ! तुम्हारी मिसाल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम जैसी है, क्योंकि उन्होंने फ़रमाया था—رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكَافِرِیْنَ دَیَّارًا - (نوح)

'ऐ रब ! न छोड़ ज़मीन पर इंकारियों का एक घर बसने वाला।'

(नूह आयत 26)

और ऐ उमर ! तुम्हारी मिसाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसी है, क्योंकि उन्होंने फ़रमाया था—

رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰۤى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا یُؤْمِنُوْا حَتّٰى یَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِیْمَ

'ऐ हमारे रब ! इनके मामलों को मिटा दीजिए और इनके दिलों को ज़्यादा सख़्त कर दीजिए (जिससे हलाकत के हक़दार हो जाएं) सो ये ईमान न लाने पाएं, यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब (के हक़दार होकर) उसको देख लें।'

(फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया) चूंकि तुम ज़रूरतमंद हो, इसलिए इन क़ैदियों में से हर क़ैदी या तो फ़िदया देगा, या फिर उसकी गरदन उड़ा दी जाएगी।

हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मस्ऊद) फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! इस हुक्म से सुहैल बिन बैज़ा को अलग कर दिया जाए, क्योंकि मैंने उनको इस्लाम का भलाई के साथ तज़्किरा करते हुए सुना है। (यह सुनकर) हुज़ूर सल्ल० चुप रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस दिन जितना मुझे अपने ऊपर आसमान से पत्थरों के बरसने का डर लगा, उतना मुझे कभी नहीं लगा। (यह इस वजह से था कि कहीं हुज़ूर सल्ल० से नामुनासिब बात की फ़रमाइश न कर दी हो) आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमा ही दिया कि सुहैल बिन बैज़ा को अलग रखा जाता है। फ़रमाते हैं कि फिर अल्लाह ने—

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ

से लेकर दो आयतें उतारीं।[1]

हज़रत ज़ोहरी रह० कहते हैं कि जब मुसलमानों पर (ख़ंदक़ की लड़ाई के मौक़े पर) मुसीबत सख़्त हो गई, तो हुज़ूर सल्ल० ने क़बीला ग़तफ़ान के दो सरदारों उऐना बिन हिस्न और हारिस बिन औफ़ मर्री को बुला भेजा और उनको मदीने का तिहाई फल इस शर्त पर देने का इरादा फ़रमाया कि वे अपने साथियों को आपके और आपके सहाबा के मुक़ाबले से वापस ले जाएं।

चुनांचे आपके और उनके दर्मियान समझौते की बात शुरू हो गई, यहां तक कि उन्होंने समझौता नामा भी लिख दिया, लेकिन अभी तक गवाहियां नहीं लिखी गई थीं और समझौते का मुकम्मल फ़ैसला नहीं हुआ था, सिर्फ़ एक दूसरे को तैयार करने की बातें चल रही थीं। जब आपने इस तरह समझौता करने का पुख़्ता फ़ैसला फ़रमा लिया, तो आपने हज़रत साद बिन मुआज़ और हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० को बुलाकर इस समझौते का उनसे ज़िक्र किया और उन दोनों से इस बारे में मश्विरा किया।

तो इन दोनों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह समझौते का काम आपको पसन्द है, इसलिए आप इसको कर रहे हैं या

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 297

अल्लाह ने आपको इस समझौते का हुक्म दिया है जिस पर अमल करना हमारे लिए ज़रूरी है या यह समझौता हमारे फ़ायदे के लिए कर रहे हैं?

आपने फ़रमाया, मैं यह समझौता तुम्हारे फ़ायदे के लिए कर रहा हूं। अल्लाह की क़सम! मैं यह समझौता इस वजह से करना चाहता हूं, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि सारे अरब वाले एक कमान से तुम पर तीर चला रहे हैं, यानी सारे तुम्हारे ख़िलाफ़ एक हो गए हैं और हर ओर से खुल्लम खुल्ला तुम्हारी दुश्मनी कर रहे हैं, तो मैंने यह सोचा कि (यों समझौता करके) उनकी ताक़त तो कुछ तोड़ दूं।

इस पर हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम और ये लोग पहले अल्लाह के साथ शरीक करने और बुतों की इबादत में इकट्ठे थे। हम अल्लाह की इबादत नहीं करते थे, बल्कि हम अल्लाह को पहचानते भी नहीं थे, तो उस ज़माने में हमारी एक खजूर भी ज़बरदस्ती खा लेने का उनमें हौसला नहीं था, हां हमारे मेहमान बन जाते या हमसे ख़रीद लेते, तो फिर ये हमारी खजूर खा सकते थे, तो अब जबकि अल्लाह ने हमें इस्लाम का शरफ़ अता फ़रमाया और हमें इस्लाम की हिदायत दी और आपके ज़रिए इस्लाम देकर हमें इज़्ज़त अता फ़रमा दी, तो अब हम ख़ुद अपने फल उन्हें दे दें? (यह हरगिज़ नहीं हो सकता) अल्लाह की क़सम! हमें इस समझौते की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह की क़सम! हम उनको तलवार के अलावा और कुछ नहीं देंगे, यहां तक कि अल्लाह ही हमारे और उनके बीच फ़ैसला करेगा।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जानो और तुम्हारा काम। (तुम्हारी राय समझौते की नहीं है, तो हम नहीं करते।) चुनांचे हज़रत साद बिन मुआज़ ने वह समझौता नामा लिया और उसमें जो कुछ लिखा हुआ था, वह मिटा दिया और कहा कि वे हमारे ख़िलाफ़ अपना सारा ज़ोर लगाकर देख लें।[1]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 104

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हारिस हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में (ख़ंदक़ की लड़ाई के मौक़े पर) आकर कहने लगा, हमें मदीना की आधी खजूरें दे दो, वरना मैं आपके ख़िलाफ़ मदीना को सवार और पैदल फ़ौज से भर दूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं हज़रत साद बिन उबादा और हज़रत साद बिन मुआज़ से मश्विरा करके बताता हूं।

(आपने जाकर इन दोनों से मश्विरा किया) इन दोनों ने कहा, नहीं, यह नहीं हो सकता। अल्लाह की क़सम ! हम तो जाहिलियत के ज़माने में कभी ऐसी ज़िल्लत वाली बात पर राज़ी नहीं हुए, तो अब जबकि अल्लाह ने हमें इस्लाम से नवाज़ दिया है, तो इस ज़िल्लत वाली बात पर हम कैसे राज़ी हो सकते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने वापस आकर हारिस को यह जवाब बताया। उसने कहा, ऐ मुहम्मद ! आपने (नऊज़ुबिल्लाह) बद-अह्दी की।[1]

तबरानी ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से नक़ल किया है कि हारिस अतफ़ानी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, हमें मदीना की आधी खजूरें दे दो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, साद नामी लोगों से मश्विरा करके बताता हूं। चुनांचे आपने हज़रत साद बिन मुआज़, हज़रत साद बिन उबादा, हज़रत साद बिन रुबैअ, हज़रत साद बिन ख़ैसमा और हज़रत साद बिन मसऊद रज़ि० को बुलाकर फ़रमाया, मुझे मालूम है, सारे अरब के लोग तुमको एक कमान से तीर मार रहे हैं, यानी वे सब तुम्हारे ख़िलाफ़ एकजुट हो चुके हैं और हारिस तुमसे मदीना की आधी खजूरें मांग रहा है, तो अगर तुम चाहो तो इस साल उसे आधी खजूरें दे दो, आगे तुम देख लेना।

इन लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह आसमान से वह्य आई है? फिर तो हम उसे दिल की गहराइयों से मान रहे हैं या यह आपकी अपनी राय है? तो हम आपकी राय पर अमल

1. बज़्ज़ार,

करेंगे, लेकिन अगर आप हम पर यह मुहब्बत और मेहरबानी से फ़रमा रहे हैं, तो अल्लाह की क़सम! आप देख ही चुके हैं कि हम और ये बराबर हैं। ये हमसे एक खजूर भी ज़बरदस्ती नहीं ले सकते, हां, ख़रीदकर या मेहमान बनकर ले सकते हैं।

(इन लोगों से) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, मैं तो मुहब्बत में कह रहा था (और फिर हारिस से कहा) तुम सुन रहे हो कि ये लोग क्या कह रहे हैं।

हारिस ने कहा, ऐ मुहम्मद! आपने (मआज़ल्लाह!) बद-अह्दी की है।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुसलमानों के इस तरह के मामलों के बारे में रात के वक़्त हज़रत अबूबक्र रज़ि० से (मश्विरा के लिए) बात करते और मैं भी आपके साथ होता।[2]

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का राय देनेवालों से मश्विरा करना

हज़रत क़ासिम रह० फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को कोई ऐसा मसला पेश आता, जिसमें वह राय वालों और फ़िक़ह वालों से मश्विरा करना चाहते तो मुहाजिरीन व अंसार में से कुछ लोगों को बुला लेते और हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०, हज़रत उबई बिन काब रज़ि० और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को भी बुलाते। ये सब लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में फ़त्वा दिया करते थे और लोग भी उन्हीं लोगों से मसअले पूछा करते थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़माने में यही तर्तीब रही। इनके बाद हज़रत उमर रज़ि० ख़लीफ़ा बने, तो वह भी इन्हीं लोगों को (मश्विरा के लिए) बुलाया करते और उनके ज़माने में हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत उबई और हज़रत ज़ैद रज़ि० फ़त्वा का काम किया करते।[3]

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 132
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 45
3. कंज़, भाग 3, पृ० 134

हज़रत उबैदा रह० कहते हैं कि उऐना बिन हिस्न और अक़रअ बिन हाबिस हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आए और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा ! हमारे इलाक़े में एक शोरेली ज़मीन, जिसमें न घास उगती है और न उससे कोई और फ़ायदा हासिल होता है, अगर आप मुनासिब समझें, तो वह हमें जागीर के तौर पर दे दें, ताकि हम उसमें हल चलाएं और खेती करें, शायद वह आबाद हो जाए।

चुनांचे आपने वह ज़मीन उनको जागीर के तौर पर देने का इरादा कर लिया और उनके लिए एक लेख लिखा और यह तै किया कि हज़रत उमर रज़ि० इस फ़ैसले पर गवाह बनें। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० वहां मौजूद नहीं थे।

वे दोनों लेख लेकर हज़रत उमर रज़ि० को उस पर गवाह बनाने के लिए उनके पास गए। जब हज़रत उमर रज़ि० ने उस लेख का विषय सुना तो उन दोनों के हाथ से वह लेख लिया और उस पर थूक कर उसे मिटा दिया। इस पर उन दोनों को ग़ुस्सा आ गया और दोनों ने हज़रत उमर रज़ि० को बुरा-भला कहा।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० तुम दोनों का दिल रखा करते थे (और दिल रखने की वजह से तुम दोनों को ज़मीन दी थी) जबकि उस वक़्त इस्लाम कमज़ोर और इस्लाम वाले थोड़े थे और आज अल्लाह ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमा दिया है। (इसलिए अब तुम्हारे दिल रखने की कोई ज़रूरत नहीं है) तुम दोनों चले जाओ और मेरे ख़िलाफ़ जितना ज़ोर लगा सकते हो, लगा लो और अगर तुम लोग अल्लाह से हिफ़ाज़त मांगो, तो अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त न करे।

ये दोनों ग़ुस्से में भरे हुए हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आए और उनसे कहा, अल्लाह की क़सम ! हमारी समझ में नहीं आ रहा कि आप ख़लीफ़ा हैं या उमर ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अगर वे चाहते तो ख़लीफ़ा बन सकते थे? इतने में हज़रत उमर रज़ि० भी ग़ुस्से में भरे हुए आए और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास खड़े होकर कहने लगे, आप मुझे बताएं

कि आपने यह ज़मीन जो इन आदमियों को जागीर के तौर पर दी है, यह आपकी मिल्कियत है या तमाम मुसलमानों की है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, तमाम मुसलमानों की है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तो फिर आपने सारे मुसलमानों को छोड़कर सिर्फ़ उन दोनों को क्यों दे दी?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया कि मेरे पास जो मुसलमान थे मैंने उनसे मश्विरा किया था। उन सबने मुझे ऐसा करने का मश्विरा दिया था।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपने अपने पास वालों से तो मश्विरा किया, लेकिन क्या आपने तमाम मुसलमानों से मश्विरा करके उनकी रज़ामंदी हासिल की है? (चूंकि यह बात ज़ाहिर थी कि हर मामले में सारे मुसलमानों से मश्विरा नहीं लिया जा सकता। इस वजह से हज़रत अबूबक्र ने इस सवाल का कोई जवाब न दिया, बल्कि) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तो तुमसे पहले ही कहा था कि तुम ख़िलाफ़त के इस मामले (को संभालने) की मुझसे ज़्यादा ताक़त रखते हो, लेकिन तुम मुझ पर ग़ालिब आ गए (और तुमने ज़बरदस्ती ख़लीफ़ा बना दिया।)[1]

हज़रत अतीया बिन बिलाल रह० और हज़रत सह्म बिन मिनजाब रह० कहते हैं कि अक़रअ और ज़िबरिक़ान दोनों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, बहरैन का ख़िराज (टैक्स) हमारे लिए मुक़र्रर फ़रमा दें, हम आपको इस बात की ज़मानत देते हैं कि हमारी क़ौम का कोई आदमी (दीन इस्लाम से) नहीं फिरेगा।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ऐसा करने पर तैयार हो गए और उनके लिए एक लेख लिखा और यह मामला हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० के वास्ते से तै हुआ। इन लोगों ने कुछ गवाह भी मुक़र्रर किए जिनमें हज़रत उमर रज़ि० भी थे।

जब यह लेख हज़रत उमर रज़ि० के पास आया और उन्होंने उसे

1. कंज़, भाग 2, पृ० 189, इसाबा, भाग 3, पृ० 55, भाग 1, पृ० 59, कंज़, भाग 1, पृ० 80,

देखा तो उन्होंने इस पर गवाह बनने से इंकार कर दिया और फ़रमाया नहीं ! अब किसी का दिल रखने की ज़रूरत नहीं है, फिर इस लिखे हुए को मिटाकर उसे फाड़ दिया।

इस पर हज़रत तलहा को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आकर कहा, आप अमीर हैं या उमर?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अमीर तो हज़रत उमर हैं, लेकिन बात मेरी माननी ज़रूरी है। (हज़रत तलहा ने सवाल तो ऐसा किया था जिससे हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० में तोड़ पैदा हो जाए, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जवाब जोड़ वाला दिया, इस वजह से) यह सुनकर हज़रत तलहा रज़ि० ख़ामोश हो गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को यह लिखा कि हुज़ूर सल्ल० लड़ाई के मामलों के बारे में मश्विरा किया करते थे, इसलिए तुम भी मश्विरा करने को अपने लिए ज़रूरी समझो।[2]

इससे पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा की रिवायत में यह बात गुज़र चुकी है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने रूम की लड़ाई के बारे में राय वालों से मश्विरा लिया।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का राय देने वाले लोगों से मश्विरा करना

हज़रत अबू जाफ़र रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० को उनकी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० से निकाह का पैग़ाम भेज दिया तो हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैंने यह तै कर रखा है कि अपनी बेटियों की शादी हज़रत जाफ़र के बेटों से ही करूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अली ! तुम उससे मेरी शादी कर

1. कंज़, भाग 4, पृ० 390
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 319, कंज़, भाग 2, पृ० 163

दो, क्योंकि इस धरती पर कोई ऐसा आदमी नहीं है जो आपकी इस बेटी के साथ अच्छी ज़िंदगी गुज़ारकर वह ऊंची बड़ाई हासिल करना चाहता हो, जो मैं हासिल करना चाहता हूं, (और इस बड़ाई को हज़रत उमर रज़ि० ने आगे जाकर बयान फ़रमाया है।)

इस पर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा, मैंने (उस बेटी से आपका निकाह) कर दिया। मुहाजिरीन में से हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि० और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० (हज़रत उमर रज़ि० के मश्विरे वाले लोग थे और ये लोग हर वक़्त मस्जिदे नबवी में) क़ब्रे नबवी और मिंबर शरीफ़ के दर्मियान बैठे रहते थे। जब दुनिया के किसी हिस्से से कोई बात हज़रत उमर रज़ि० के पास आया करती, तो वे आकर उनको बताया करते और उसके बारे में उनसे मश्विरे किया करते।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने इन लोगों से आकर कहा, मुझे निकाह की मुबारकबाद दो। इन लोगों ने हज़रत उमर रज़ि० को मुबारकबाद दी और पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! (आपने) किससे (निकाह किया है?)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत अली बिन अबी तालिब की बेटी से। फिर उन्हें सारा वाक़िया तफ़्सील से बताने लगे और फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि मेरे ताल्लुक़ और रिश्ते के अलावा हर ताल्लुक़ और रिश्ता क़ियामत के दिन टूट जाएगा। हुज़ूर सल्ल० की सोहबत तो मुझे हासिल है ही। अब मैंने चाहा कि (इस निकाह के ज़रिए हुज़ूर सल्ल० से) मेरे रिश्ते का ताल्लुक़ भी क़ायम हो जाए।[1]

हज़रत अता बिन यसार रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर और उस्मान रज़ि० हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को बुलाया करते थे और बद्र वालों के साथ उनसे भी मश्विरा किया करते थे और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हज़रत उमर और हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़माने से आख़िर तक फ़त्वा का काम अंजाम देते रहे।

हज़रत याक़ूब बिन ज़ैद रह० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० को जब

1. कंज़, भाग 7, पृ० 98, हाकिम, भाग 3, पृ० 142

भी कोई अहम मामला पेश आता, तो वह हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से मश्विरा लेते और फ़रमाते, ऐ ग़ोता लगाने वाले ! (यानी हर मामले की गहराई तक पहुचने वाले !) ग़ोता लगाओ (और इस अहम मामले में अच्छी तरह सोचकर अपनी राय पेश करो ।)

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने ऐसा कोई आदमी नहीं देखा जो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से ज़्यादा हाज़िर दिमाग़, ज़्यादा अक़्लमंद, ज़्यादा इल्म वाला, और ज़्यादा सूझ-बूझ वाला हो। मैंने हज़रत उमर रज़ि० को देखा है कि वह हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से पेचीदा और मुश्किल मामले के पेश आने पर बुलाते और फ़रमाते, यह एक पेचीदा मामला तुम्हारे सामने है। फिर इब्ने अब्बास रज़ि० ही के जवाब पर अमल करते, हालांकि उनके चारों ओर बद्री लोग, मुहाजिरीन और अंसार का मज्मा होता।[1]

हज़रत इब्ने शिहाब रज़ि० कहते हैं कि जब भी हज़रत उमर रज़ि० को कोई मुश्किल मामला पेश आता तो आप नवजवानों को बुलाते और उनकी अक़्ल व समझ की तेज़ी को अख़्तियार करते हुए उनसे मश्विरा लेते।[2]

इमाम बैहक़ी ने हज़रत इब्ने सीरीन से नक़ल किया है कि हज़रत उमर रज़ि० का मिज़ाज मश्विरा करके चलने का था, चुनांचे कभी-कभी औरतों से भी मश्विरा ले लिया करते और उन औरतों की राय में उनको कोई बात अच्छी नज़र आती, तो उस पर अमल कर लेते।[3]

हज़रत मुहम्मद, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ियाद रज़ि० कहते हैं कि (पहली मुहर्रम सन् 14 हि० को) हज़रत उमर रज़ि० फ़ौज लेकर (मदीना से) निकले और एक पानी पर पड़ाव किया, जिसका नाम सिरार था। (यह पानी मदीना से तीन मील की दूरी पर था) और फ़ौज को भी वहां ठहरा लिया।

---

1. इब्ने साद,
2. बैहक़ी, इब्ने सम आनी,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 163,

लोगों को पता नहीं चल रहा था कि हज़रत उमर रज़ि० आगे चलेंगे या (मदीना ही) ठहरेंगे और लोग जब कोई बात हज़रत उमर से पूछना चाहते तो हज़रत उस्मान या हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के वास्ते से पूछते और हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में ही हज़रत उस्मान रज़ि० का लक़ब 'रदीफ़' पड़ गया था। और अरबों की भाषा में रदीफ़ उसे कहते हैं जो किसी आदमी के बाद उसकी जगह पर हो और मौजूद अमीर के बाद उसके अमीर बनने की उम्मीद हो।

और जब ये दोनों लोगों की वह बात हज़रत उमर रज़ि० से पूछने की हिम्मत न पाते, तो फिर लोग हज़रत अब्बास रज़ि० को वास्ता बनाते। चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से पूछा, आपको क्या ख़बर पहुंची है और आपका क्या इरादा है?

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने एलान कराया—

اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ

'ऐ लोगो ! नमाज़ के उन्वान पर जमा हो जाओ।' चुनांचे लोग हज़रत उमर रज़ि० के पास जमा हो गए। उन्होंने लोगों को (सफ़र की) ख़बर दी, फिर देखने लगे कि अब लोग क्या कहते हैं? तो अक्सर लोगों ने कहा, आप भी चलें और हमें भी अपने साथ ले चलें। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों की इस राय से इत्तिफ़ाक़ किया और उनकी राय को यों ही छोड़ देना मुनासिब न समझा, बल्कि यह चाहा कि उनको इस राय से नर्मी और हिक्मते अमली (स्ट्रेटजी) के साथ हटाएंगे। (अगर ज़रूरत पेश आ गई तो) और फ़रमाया, ख़ुद भी तैयार हो जाओ और दूसरों को भी तैयार करो। मैं भी (आप लोगों के साथ) जाऊंगा, लेकिन अगर आप लोगों की राय से ज़्यादा अच्छी राय कोई और आ गई तो फिर नहीं जाऊंगा।

फिर आपने आदमी भेजकर राय देने वालों को बुलाया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के चुने सहाबा और अरब के चोटी के लोग जमा हो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, मेरा ख़्याल है कि मैं भी इस फ़ौज के साथ चला जाऊं। आप लोग इस बारे में अपनी राय मुझे दें। वे सब जमा हो गए और उन सबने यही राय दी कि हज़रत उमर रज़ि० हुज़ूर

सल्ल० के सहाबा में से किसी आदमी को (अपनी जगह) भेज दें और खुद हज़रत उमर रज़ि० यहां (मदीना) ही ठहरे रहें और उस आदमी की मदद के लिए फ़ौज भेजते रहें। फिर अगर मंशा के मुताबिक़ जीत हो गई, तो फिर हज़रत उमर रज़ि० की और लोगों की मुराद पूरी हो जाएगी, वरना हज़रत उमर रज़ि० दूसरे आदमी को भेज देंगे और उसके साथ दूसरी फ़ौज रवाना कर देंगे। इस तरह करने से दुश्मन को ग़ुस्सा आएगा और मुसलमान ग़लती करने से बच जाएंगे और फिर अल्लाह का वायदा पूरा होगा और अल्लाह की मदद आएगी।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एलान कर दिया—

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० के पास मुसलमान जमा हो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने मदीना में अपनी जगह हज़रत अली रज़ि० को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था। उन्हें बुलाने के लिए हज़रत उमर रज़ि० ने आदमी भेजा, वह भी आ गए। हज़रत तलहा रज़ि० को हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौज के अगले हिस्से का सरदार मुक़र्रर फ़रमाया था। उन्हें भी आदमी भेजकर बुलाया, वह भी आ गए। उस फ़ौज के बाएं-दाएं वाले हिस्से पर हज़रत ज़ुबैर और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को मुक़र्रर किया हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर यह बयान किया—

'बेशक अल्लाह ने मुसलमानों को इस्लाम पर जमा किया और उनके दिलों में एक दूसरे की मुहब्बत पैदा की और इस्लाम की वजह से उनको आपस में भाई-भाई बना दिया और मुसलमान आपस में एक जिस्म की तरह हैं। एक अंग को जो पीड़ा पहुंचती है, वह बाक़ी तमाम अंगों को भी पहुंचती है, इसलिए मुसलमानों को एक जिस्म के अंगों की तरह होना चाहिए (कि एक मुसलमान की पीड़ा से सबको पीड़ा हो) और मुसलमानों का हर काम शूरा के मश्विरे से तै होना चाहिए। आम मुसलमान अपने अमीर के ताबे हैं और शूरा वाले जिस चीज़ पर सहमत हो जाएं और उसे पसन्द कर लें, तो तमाम मुसलमानों के लिए उस पर अमल करना ज़रूरी है, और जो मुसलमानों का अमीर बने, वह उन शूरा वालों का ताबे हैं।

इसी तरह लड़ाई की तदबीरों में जो शूरा वालों की राय हो और जिस तदबीर पर शूरा वाले राज़ी हों, उसमें तमाम मुसलमान उसके ताबे हैं। ऐ लोगो ! मैं भी तुममें से एक आदमी था (और मेरा भी तुम्हारे साथ जाने का इरादा था), लेकिन तुम्हारे शूरा के लोगों ने मुझे जाने से रोक दिया है। अब मेरी भी यही राय है कि मैं (मदीना ही) ठहरूं और (अपनी जगह) किसी दूसरे को (अमीर बनाकर) भेज दूं और मैं जिनको आगे भेज चुका था या पीछे (मदीना) छोड़ आया था (और जो यहां मौजूद थे) मैं उन सबसे इस बारे में मश्विरा कर चुका हूं।'

हज़रत उमर रज़ि० पीछे मदीना में हज़रत अली रज़ि० को अपना ख़लीफ़ा बनाकर आए थे और आगे रहने वाली टुकड़ी पर अमीर बनाकर हज़रत तलहा को आगे आवस नामी जगह पर भेज रखा था। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने बुलाकर उन दोनों को भी इस मश्विरा में शरीक किया था।[1]

इब्ने जरीर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से नक़ल करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० को हज़रत अबू उबैद बिन मस्ऊद रज़ि० के शहीद होने की ख़बर मिली और यह पता चला कि फ़ारस वाले किसरा के खानदान के एक आदमी (के अमीर बनाए जाने) पर जमा हो रहे हैं तो हज़रत उमर रज़ि० ने एलान करके मुहाजिर और अंसार सहाबा रज़ि० को जमा फ़रमाया और उनको अपने साथ लेकर (मदीना से) बाहर निकले, यहां तक कि सिरार नामी जगह पर पहुंच गए। आगे छोटी हदीस ज़िक्र की जैसे कि पहले गुज़र चुकी है।

इमाम तबरानी हज़रत मुहम्मद बिन सलाम बींगन्दी रह० से रिवायत करते हैं कि हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब रज़ि० ने जाहिलियत के ज़माने में बहुत से कारनामे किए और उन्होंने इस्लाम का ज़माना भी पाया है, हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वफ़्द के साथ आए थे और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने उनको हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० के पास क़ादसिया भेजा था और वहां उन्होंने अपनी बहादुरी के बड़े जौहर

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 83

दिखाए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत साद रज़ि० को ख़त में यह लिखा था कि मैं तुम्हारी मदद के लिए दो हज़ार आदमी भेज रहा हूं, एक हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब और दूसरे हज़रत तुलैहा बिन ख़ुवैलद असदी रज़ि० हैं (यानी ये दोनों इतने बहादुर हैं कि इनमें से हर एक हज़ार आदमियों के बराबर है) इन दोनों से जंगी मामलों में मश्विरा करते रहना, लेकिन उनको किसी का ज़िम्मेदार न बनाना।[1]

जमाअतों पर किसी को अमीर मुक़र्रर करना

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० मदीना तशरीफ़ लाए तो क़बीला जुहैना के लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया, अब आप हमारे यहां आ गए हैं, इसलिए आप हमें समझौता नामा लिख दें ताकि हम अपनी सारी क़ौम को लेकर आपकी ख़िदमत में आ सकें। चुनांचे आपने उनको समझौता नामा लिखकर दिया और फिर वह क़बीला जुहैना वाले मुसलमान हो गए।

हज़रत साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें रजब के महीनों में भेजा और हमारी तायदाद सौ भी नहीं थी और हुज़ूर सल्ल० ने हमें हुक्म दिया कि हम क़बीला बनू किनाना पर हमला करें। वह क़बीला जुहैना के क़रीब ही आबाद था। चुनांचे हमने उन पर हमला कर दिया। उनकी तायदाद ज़्यादा थी, इसलिए हम पनाह लेने क़बीला जुहैना के पास चले गए। उन्होंने हमें पनाह दे दी। लेकिन उन्होंने कहा, तुम लोग हराम महीनों (यानी एहतराम के क़ाबिल महीनों) में क्यों लड़ाई करते हो? (अरब के लोग शव्वाल, ज़ीक़ादा, ज़िलहिज्जा और रजब को हराम महीने समझते थे और इन महीनों में आपस में लड़ाई नहीं करते थे।

हमने उनसे कहा कि हम तो सिर्फ़ उन लोगों से लड़ रहे हैं जिन्होंने हमें क़ाबिले एहतराम शहर यानी मक्का से हराम महीने में निकाला था। हमारे साथियों ने एक दूसरे से पूछा, क्या राय है? (अब हमें क्या करना

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 319

चाहिए? इस पर हमारा इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो गया।)

कुछ साथियों ने कहा, हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाते हैं और उन्हें सारी बात बताते हैं। कुछ साथियों ने कहा, हम तो यहीं ठहरेंगे। मैंने और मेरे साथियों ने कहा, नहीं, हम तो कुरैश के क़ाफ़िले की तरफ़ चलते हैं और उनके तिजारती सामान पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं।

उस ज़माने का दस्तूर यह था कि काफ़िरों से जो माल बग़ैर लड़ाई के मिलेगा, वह सारे का सारा उन्हीं मुसलमानों का होगा, जिन्होंने वह माल काफ़िरों से लिया होगा। चुनांचे हम तो इस क़ाफ़िले की ओर चले गए और हमारे बाक़ी साथी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस चले गए और जाकर हुज़ूर सल्ल० को पूरी तफ़सील बताई।

आप ग़ुस्से में खड़े हो गए, आपका चेहरा लाल हो गया और आपने फ़रमाया, तुम मेरे पास से इकट्ठे गए थे और अब तुम अलग-अलग होकर वापस आ रहे हो। यों बिखर जाने ने ही तुमसे पहले लोगों को हलाक किया है। अब मैं तुम पर ऐसे आदमी को अमीर बनाकर भेजूंगा, जो तुमसे बेहतर तो नहीं होगा, लेकिन तुमसे ज़्यादा भूख-प्यास बर्दाश्त करने वाला होगा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श असदी रज़ि० को हमारा अमीर बनाकर भेजा। चुनांचे वह सबसे पहले सहाबी हैं जिनको इस्लाम में अमीर बनाया गया।[1]

दस आदमियों का अमीर बनाना

हज़रत हुबैब रह० के वालिद हज़रत शिहाब अंबरी रह० कहते हैं कि तुस्तर शहर के दरवाज़े को सबसे पहले मैंने आग लगाई थी और (उस लड़ाई में) हज़रत अशअरी रज़ि० को तीर लगा था, जिससे वह घायल होकर ज़मीन पर गिर गए थे। जब मुसलमानों ने तुस्तर जीत लिया तो हज़रत अशअरी ने मुझे मेरी क़ौम के दस आदमियों का अमीर बना दिया।[2]

1. कंज़, भाग 7, पृ० 60, इसाबा, भाग 2, पृ० 287, बिदाया, भाग 3, पृ० 248, हैसमी, भाग 6, पृ० 66
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 159,

सफ़र का अमीर बनाना

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब सफ़र में तीन आदमी हों, तो उन्हें चाहिए कि वे अपने में से किसी एक को अपना अमीर बनाएं। इस तरह अमीर बनाने का हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया है।[1]

अमीर होने की ज़िम्मेदारी कौन उठा सकता है?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक जमाअत भेजी, जिनकी तायदाद ज़्यादा थी। उनमें से हर आदमी को जितना क़ुरआन याद था, वह आपने उनसे सुना। चुनांचे सुनते-सुनते आप ऐसे आदमी के पास आए, जो उनमें सबसे कम उम्र था। आपने फ़रमाया, ऐ फ़्लां! तुम्हें कितना क़ुरआन याद है?

उसने कहा, फ़्लां-फ़्लां सूरतें और सूरः बक़रः।

आपने पूछा, क्या तुम्हें सूरः बक़रः याद है?

उसने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, जाओ, तुम इस जमाअत के अमीर हो।

उस जमाअत के सरदारों में से एक आदमी ने कहा, मैंने सूरः बक़रः सिर्फ़ इस वजह से नहीं याद की कि मैं शायद इसे तहज्जुद में न पढ़ सकूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग क़ुरआन सीखो और उसे पढ़ो, क्योंकि जो आदमी क़ुरआन सीखता है और उसे पढ़ता है, उसकी मिसाल उस थैली की-सी है जो मुश्क से भरी हुई हो कि उसकी ख़ुशबू तमाम मकान में फैलती है और जिस आदमी ने क़ुरआन सीखा और फिर सो गया, उसकी मिसाल उस थैली की-सी है जिसका मुंह बन्द कर दिया गया हो।[2]

हज़रत उस्मान रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्ल० ने एक जमाअत यमन भेजी, और उनमें से एक सहाबी को उनका अमीर बना

1. कंज़, भाग 3, पृ० 344
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 12

दिया, जिनकी उम्र सबसे कम थी। वे लोग कई दिन तक वहां ही ठहरे और न जा सके। उस जमाअत के एक आदमी से हुज़ूर सल्ल० की मुलाक़ात हुई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ फ़्लां ! तुम्हें क्या हुआ? तुम अभी तक क्यों नहीं गए?

उसने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे अमीर के पांव में तक्लीफ़ है। चुनांचे उस अमीर के पास तशरीफ़ ले गए और—

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا

सात बार पढ़कर उस आदमी पर दम किया। वह आदमी (उसी वक़्त) ठीक हो गया। एक बूढ़े आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! क्या आप इसको हमारा अमीर बना रहे हैं, हालांकि यह हम सबमें कम उम्र है?

आपने उसके ज़्यादा क़ुरआन पढ़ने का ज़िक्र किया। उस बूढ़े आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मुझे इस बात का डर न होता कि मैं सुस्ती की वजह से सोता रह जाऊंगा और क़ुरआन को तहज्जुद में न पढ़ सकूंगा, तो मैं उसे ज़रूर सीखता। (यानी उसके हिफ़्ज़ को बाक़ी न रख सकूंगा।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क़ुरआन की मिसाल उस थैली जैसी है, जिसे तुमने ख़ूब महकने वाले मुश्क से भर दिया हो। इसी तरह क़ुरआन जब तेरे सीने में हो और तू उसे पढ़े।[1]

हज़रत अबूबक्र बिन मुहम्मद अंसारी कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अर्ज़ किया गया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा ! आप बद्र वालों को अमीर क्यों नहीं बनाते?

आपने फ़रमाया, मैं उनका दर्जा पहचानता हूं, लेकिन मैं इसे अच्छा नहीं समझता कि मैं उनको दुनिया की गन्दगी में डालूं।[2]

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 161
2. कंज़, भाग 1, पृ० 146

हज़रत इम्रान बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि हज़रत उबई बिन काब रज़ि० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से फ़रमाया, क्या हुआ? आप मुझे अमीर नहीं बनाते?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे यह पसन्द नहीं है कि आपका दीन ख़राब हो जाए।[1]

हज़रत हारिसा बिन मुफ़र्रिब रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हमें (कूफ़ा) यह ख़त लिखा—

'अम्माबादु ! मैं तुम्हारी तरफ़ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को अमीर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० को मुअल्लिम (शिक्षक) और वज़ीर बनाकर भेज रहा हूं। ये दोनों हज़रत मुहम्मद सल्ल० के सहाबा में ख़ास ऊंचे दर्जे के लोगों में हैं और बद्र की लड़ाई में शरीक हुए हैं, इसलिए आप लोग इन दोनों से (दीन) सीखो और इन दोनों की पैरवी करो। (मुझे मदीना में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद की बहुत ज़रूरत थी, लेकिन) मैं अपनी ज़रूरत को क़ुर्बान करके हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को आप लोगों के पास भेजा रहा हूं और मैं हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ रज़ि० को इराक़ के देहात (की ज़मीन की नाप करने) के लिए भेज रहा हूं। मैंने इन लोगों के लिए रोज़ाना का वज़ीफ़ा एक बकरी मुक़र्रर किया है। बकरी का आधा हिस्सा और कलेजी गुर्दे वग़ैरह हज़रत अम्मार बिन यासिर को दिए जाएं (क्योंकि वह अमीर हैं, उनके पास मेहमान ज़्यादा होंगे) और बाक़ी आधा इन तीनों को दे दिया जाए। (दो तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० और हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ हैं, तीसरे शायद हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान हैं, जिनको हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उस्मान बिन हुनैफ़ के साथ ज़मीन नापने के लिए भेजा था।)[2]

हज़रत शाबी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आजकल मैं मुसलमानों के एक काम की वजह से बहुत चिंता में हूं।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 60
2. कंज़, भाग 2, पृ० 314, हैसमी, भाग 9, पृ० 291, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 136

बताओ मैं इस काम का अमीर किसे मुक़र्रर करूं?

लोगों ने कहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को मुक़र्रर कर दें।

आपने फ़रमाया, वह कमज़ोर हैं।

लोगों ने कहा, फ़्लां साहब को मुक़र्रर कर दें।

आपने फ़रमाया, मुझे उसकी ज़रूरत नहीं।

लोगों ने पूछा, आप कैसा आदमी चाहते हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे ऐसा आदमी चाहिए कि जब वह अमीर हो, तो ऐसे (नर्म बनकर) रहे, जैसे कि वह लोगों में से एक आम आदमी है और जब वह अमीर न हो तो वह ऐसे (फ़िक्र और ज़िम्मेदारी से) चले कि गोया वह ही अमीर है।

लोगों ने कहा, हमारे इल्म के मुताबिक़ तो ऐसा आदमी रबीअ बिन ज़ियाद के अलावा और कोई नहीं है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम लोगों ने ठीक कहा।[1]

अमीर बनकर कौन आदमी (दोज़ख़ से) निजात पाएगा

हज़रत अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत बिश्र बिन आसिम रज़ि० को हवाज़िन के सदक़े (वसूल करने पर) आमिल (ज़िम्मेदार) मुक़र्रर किया, लेकिन हज़रत बिश्र (हवाज़िन के सदक़े वसूल करने) न गए। उनसे हज़रत उमर रज़ि० की मुलाक़ात हुई। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, तुम (हवाज़िन) क्यों नहीं गए? क्या हमारी बात को सुनना और मानना ज़रूरी नहीं है?

हज़रत बिश्र ने कहा, क्यों नहीं। लेकिन मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिसे मुसलमानों को किसी मामले का ज़िम्मेदार बनाया गया, उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर

1. कंज़, भाग 3, पृ० 164

दिया जाएगा। अगर उसने अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह अदा किया होगा, तो वह नजात पा लेगा और अगर उसने ज़िम्मेदारी सही तरह अदा न की होगी, तो पुल उसे लेकर टूट पड़ेगा और वह सत्तर वर्ष तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा।

(यह सुनकर) हज़रत उमर रज़ि० बहुत परेशान और ग़मगीन हुए और वहां से चले गए। रास्ते में उनकी हज़रत अबूज़र रज़ि० से मुलाक़ात हुई। उन्होंने कहा, क्या बात है? मैं आपको परेशान और ग़मगीन देख रहा हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं क्यों न परेशान और ग़मगीन होऊं जबकि मैं हज़रत बिश्र बिन आसिम से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद सुन चुका हूं कि जिसे मुसलमानों के किसी मामले का ज़िम्मेदार बनाया गया, उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा। अगर उसने अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छी तरह अदा किया होगा, तो वह नजात पा लेगा और अगर उसने ज़िम्मेदारी सही तौर पर अदा न की होगी, तो पुल उसे लेकर टूट पड़ेगा और वह सत्तर वर्ष तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा।

इस पर हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, क्या आपने हुज़ूर सल्ल० से यह हदीस नहीं सुनी है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं।

हज़रत अबूज़र ने कहा, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो किसी मुसलमान को ज़िम्मेदार बनाएगा, उसे क़ियामत के दिन लाकर जहन्नम के पुल पर खड़ा कर दिया जाएगा। अगर वह (इस ज़िम्मेदार बनाने में) ठीक था तो (दोज़ख से) नजात पाएगा और अगर वह इसमें ठीक नहीं था, तो पुल उसे लेकर टूट पड़ेगा और वह सत्तर वर्ष तक जहन्नम में गिरता चला जाएगा और वह जहन्नम काली और अंधेरी है। (आप बताएं कि) इन दोनों हदीसों में से किस हदीस के सुनने से आपके दिल को ज़्यादा तक्लीफ़ हुई है?

आपने फ़रमाया, दोनों के सुनने से मेरे दिल को तक्लीफ़ हुई है

लेकिन जब ख़िलाफ़त में ऐसा ज़बरदस्त ख़तरा है, तो उसे कौन क़ुबूल करेगा?

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, इसे वही क़ुबूल करेगा जिसकी नाक काटने का और उसके गाल को ज़मीन से मिलाने का यानी उसे ज़लील करने का अल्लाह ने इरादा किया हो। बहरहाल हमारे इल्म के मुताबिक़ आपकी ख़िलाफ़त में भलाई ही भलाई है। हां, यह हो सकता है कि आप इस ख़िलाफ़त का ज़िम्मेदार ऐसे आदमी को बना दें जो इसमें इंसाफ़ से काम न ले तो आप भी इसके गुनाह से न बच सकेंगे।[1]

अमीर बनने से इंकार करना

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद को घोड़े सवारों की एक जमाअत का अमीर बनाया। जब यह वापस आए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, तुमने अमारत को कैसा पाया?

उन्होंने कहा, ये लोग मुझे उठाते और बिठाते थे, यानी मेरा ख़ूब इकराम करते थे, जिससे अब मुझे यों लग रहा है कि मैं वह पहले जैसा मिक़्दाद नहीं रहा। (मेरी ख़ाकसारी वाली सूरत में कमी आ गई है।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वाक़ई अमीर बनना ऐसी ही चीज़ है।

हज़रत मिक़्दाद ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, आगे मैं कभी भी किसी काम का ज़िम्मेदार नहीं बनूंगा। चुनांचे इसके बाद लोग उनसे कहा करते थे कि आप आगे तशरीफ़ लाकर हमें नमाज़ पढ़ा दें, तो वह साफ़ इंकार फ़रमा देते, (क्योंकि नमाज़ में इमाम बनना छोटा अमीर बनना है।)[2]

और एक रिवायत में है कि हज़रत मिक़्दाद ने कहा, मुझे सवारी पर बिठाया जाता और सवारी से उतारा जाता, जिससे मुझे यों नज़र आने

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 441, हैसमी, भाग 5, पृ० 205, कंज़, भाग 3, पृ० 163, इसाबा, भाग 1, पृ० 152
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 201, हुलीया, भाग 1, पृ० 184

लगा कि मुझे उन लोगों पर बड़ाई हासिल है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अमीर बनना तो ऐसी ही चीज़ है (अब तुम्हें अख़्तियार है) चाहे उसे आगे क़ुबूल करो या छोड़ दो।

हज़रत मिक़्दाद ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, आगे मैं कभी दो आदमियों का भी अमीर नहीं बनूंगा।[1]

हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक बार मुझे किसी जगह (अमीर बनाकर) भेजा। जब मैं वापस आया, तो आपने मुझसे फ़रमाया, तुम अपने आपको कैसा पाते हो?

मैंने कहा, धीरे-धीरे मेरी हालत यह हो गई कि मुझे अपने तमाम साथी अपनी ख़िदमत करने वाले नज़र आने लगे और अल्लाह की क़सम! इसके बाद मैं कभी भी दो आदमियों का अमीर भी नहीं बनूंगा।[2]

एक साहब बयान करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने एक आदमी को एक जमाअत का अमीर बनाया। जब वह काम करके वापस आए, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, तुमने अमीर बनने को कैसा पाया?

उन्होंने कहा, मैं जमाअत के कुछ लोगों जैसा था। जब मैं सवार होता तो साथी भी सवार हो जाते और जब मैं सवारी से उतरता, तो वह भी उतर जाते।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आम तौर से हर बादशाह ऐसे (ज़ालिमाना) काम करता है जिससे वह अल्लाह की नाराज़ी के दरवाज़े पर पहुंच जाता है, मगर जिस बादशाह को अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त में ले लें, वह इससे बच जाता है (बल्कि वह तो अल्लाह के अर्श का साया पाता है)।

उस आदमी ने कहा, अल्लाह की क़सम! अब मैं न आपकी ओर से और न किसी और की ओर से अमीर बनूंगा। इस पर आप इतना मुस्कराए कि आपके मुबारक दांत नज़र आने लगे।[3]

हज़रत राफ़ेअ ताई कहते हैं, मैं एक लड़ाई में हज़रत अबूबक्र रज़ि०

---

1. मिक़्दाद,
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 201
3. हैसमी, भाग 5, पृ० 201

के साथ था। जब हम वापस आने लगे, तो मैंने कहा, ऐ अबूबक्र ! मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए।

उन्होंने फ़रमाया, फ़र्ज़ नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़ा करो, अपने माल की ज़कात ख़ुशी-ख़ुशी अदा किया करो, रमज़ान के रोज़े रखा करो, बैतुल्लाह का हज किया करो और इस बात का यक़ीन रखो कि इस्लाम में हिजरत बहुत अच्छा अमल है और हिजरत में जिहाद बहुत अच्छा अमल है और तुम अमीर न बनना।

फिर फ़रमाया कि यह अमीर बनना जो आज तुम्हें ठंडा और मज़ेदार नज़र आ रहा है, बहुत जल्द यह फैलकर इतना बढ़ेगा कि ना अह्ल लोग भी उसे हासिल कर लेंगे। (और यह याद रखो कि) जो भी अमीर बनेगा, उसका हिसाब सब लोगों से ज़्यादा लम्बा होगा और उस पर अज़ाब सबसे ज़्यादा सख़्त होगा और जो अमीर नहीं बनेगा, उसका हिसाब सब लोगों से ज़्यादा आसान होगा और उसका अज़ाब सबसे हल्का होगा, क्योंकि अमीरों को मुसलमानों पर ज़ुल्म करने के सबसे ज़्यादा मौक़े मिलते हैं और जो मुसलमानों पर ज़ुल्म करता है, वह अल्लाह के अह्द को तोड़ता है, इसलिए कि ये मुसलमान अल्लाह के पड़ोसी और अल्लाह के बन्दे हैं। अल्लाह की क़सम ! तुममें से किसी के पड़ोसी की बकरी या ऊंट पर कोई मुसीबत आती है, (वह बकरी या ऊंट चोरी हो जाता है या कोई उसे मार दे या सताए तो उस पड़ोसी की हमदर्दी और हिमायत में) ग़ुस्से की वजह से सारी रात उसके पट्ठे फूले रहते हैं और कहता रहता है, मेरे पड़ोसी की बकरी या ऊंट पर फ़्लां मुसीबत आई है। (जब इंसान अपने पड़ोसी की वजह से इतना ग़ुस्से में आता है) तो अल्लाह अपने पड़ोसी की ख़ातिर ग़ुस्से में आने के ज़्यादा हक़दार हैं।[1]

हज़रत राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को ग़ज़वा ज़ातुस्सलासिल की फ़ौज का अमीर बनाकर भेजा और उनके साथ उन फ़ौज में हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और बड़े-बड़े सहाबा किराम को भी भेजा।

1. कंज़, भाग 3, पृ० 162

चुनांचे ये लोग (मदीना मुनव्वरा से) रवाना हुए और चलते-चलते क़बीला तै के दो पहाड़ों पर पड़ाव डाल दिया। हज़रत अम्र ने फ़रमाया, कोई रास्ता बताने वाला खोज लो।

लोगों ने कहा, हमारे इल्म के मुताबिक़ तो राफ़ेअ बिन अम्र के अलावा और कोई आदमी ऐसा नहीं है, क्योंकि वह रबील थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने अपने उस्ताद हज़रत तारिक़ से पूछा कि रबील किसे कहते हैं?

उन्होंने कहा, रबील उस डाकू को कहते हैं जो अकेला ही हमला करके पूरी क़ौम को लूट ले।

राफ़ेअ कहते हैं कि जब हम अपने ग़ज़वे से फ़ारिग़ हो गए और जिस जगह से हम चले थे, वहां वापस पहुंच गए, तो मुझे हज़रत अबूबक्र में बहुत सी ख़ूबियां नज़र आईं, जिनकी वजह से मैंने उनको अपने लिए चुन लिया और मैंने उनकी ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ हलाल रोज़ी खाने वाले! मैंने ख़ूबियों की वजह से आपके साथियों में से आपको अपने लिए चुन लिया है, इसलिए आप मुझे ऐसी चीज़ बताएं कि जिसकी पाबन्दी करने से मैं आप लोगों में गिना जाने लगूं और आप जैसा हो जाऊं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या तुम अपनी पांच उंगलियों को याद रख सकते हो?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करो और अगर तुम्हारे पास माल हो, तो ज़कात अदा करो, बैतुल्लाह का हज करो और रमज़ान के रोज़े रखो, क्या तुम्हें ये बातें याद हो गईं?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, एक बात और भी है और वह यह कि दो आदमियों का भी हरगिज़ कभी अमीर न बनना।

मैंने कहा, क्या यह अमीर बनना अब बद्र वालों के अलावा किसी और के लिए भी हो सकता है?

उन्होंने कहा, बहुत जल्द यह अमीर बनना इतना आम हो जाएगा कि तुम्हें भी मिल जाएगा बल्कि तुमसे कम दर्जे के लोगों को भी मिल जाएगा। अल्लाह ने जब अपने नबी को भेजा तो (उनकी मेहनत पर) लोग इस्लाम में दाख़िल हो गए। बहुत से लोग तो अपनी ख़ुशी से इस्लाम में दाख़िल हुए, उनको अल्लाह ने हिदायत से नवाज़ा था, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जिनको तलवार ने इस्लाम लाने पर मजबूर किया। बहरहाल अब ये तमाम मुसलमान अल्लाह की पनाह में आ गए हैं। ये अल्लाह के पड़ोसी और उसकी ज़िम्मेदारी में हैं। जब कोई आदमी अमीर बनता है और लोग एक दूसरे पर ज़ुल्म करते हैं और यह अमीर ज़ालिम से मज़्लूम का बदला नहीं लेता है, तो फिर ऐसे अमीर से अल्लाह बदला लेता है, जैसे तुममें से किसी आदमी के पड़ोसी की बकरी ज़ुल्म से पकड़ ली जाती है, तो सारा दिन उस पड़ोसी की हिमायत में गुस्से की वजह से उसकी रगें फूली रहती हैं, ऐसे ही अल्लाह भी अपने पड़ोसी की पूरी हिमायत करते हैं?

हज़रत राफ़ेअ कहते हैं कि मैं एक साल (अपने घर) ठहरा रहा। फिर हज़रत अबूबक्र ख़लीफ़ा बन गए। मैं सवारी पर सवार होकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने उनसे कहा, मैं राफ़ेअ हूं और मैं फ़्लां जगह आपका रहबर था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, हां, मैंने तुमको पहचान लिया।

मैंने कहा, आपने मुझे तो दो आदयिमों का भी अमीर बनने से मना किया था और अब ख़ुद मुहम्मद सल्ल० की सारी उम्मत के अमीर बन गए हैं।

उन्होंने फ़रमाया, हां, लेकिन याद रखो, जो आदमी इन मुसलमानों में अल्लाह की किताब वाले हुक्म नहीं चलाएगा, उस पर अल्लाह की लानत होगी।[1]

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 202

हज़रत सईद बिन उमर बिन सईद बिन आस रह० कहते हैं कि उनके चचा हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस और हज़रत अबान बिन सईद बिन आस और हज़रत अम्र बिन सईद बिन आस रज़ि० को जब हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की वफ़ात की ख़बर पहुंची तो (ये लोग अलग-अलग इलाक़ों के अमीर थे, ख़बर मिलते ही) ये लोग अपने-अपने ओहदे छोड़कर (मदीना मुनव्वरा) वापस आ गए। इन लोगों से हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, कोई आदमी हुज़ूर सल्ल० के बनाए हुए अमीरों से ज़्यादा अमीर बनने का हक़दार नहीं है? इसलिए तुम लोग अपने इलाक़ों में अपने ओहदों पर वापस चले जाओ।

इन लोगों ने कहा, अब हम हुज़ूर सल्ल० के बाद किसी की तरफ़ से अमीर बनकर जाने के लिए तैयार नहीं हैं। चुनांचे ये लोग अल्लाह के रास्ते में शामदेश चले गए और वहां ही सबके सब शहीद हो गए। (इन लोगों की तबीयतों में अमीर बनने से परहेज़ था और अल्लाह के रास्ते में जान देने का शौक़ था।)[1]

हज़रत अर्ब्दुहमान बिन सईद बिन यरबूअ रह० कहते हैं कि जब हज़रत अबान बिन सईद रज़ि० (अपने इलाक़े की अमारत छोड़कर) मदीना मुनव्वरा आ गए, तो उनसे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब ने फ़रमाया, तुम्हें यह हक़ हासिल नहीं है कि तुम अपने वक़्त के इमाम की इजाज़त के बग़ैर अपना काम छोड़कर आ जाओ और फिर ख़ास तौर पर इन हालात में (कि चारों ओर इस्लाम छोड़ने का रुझान फैल रहा है और दुश्मनों के मदीना पर हमले की ख़बर आ रही है), लेकिन ऐसा मालूम होता है कि तुम्हें अपने वक़्त के इमाम का डर नहीं रहा, इसलिए तुम निडर हो गए हो।

हज़रत अबान ने कहा, अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० के बाद अब मैं किसी की तरफ़ से अमारत (अमीर बनना) क़ुबूल करने के लिए तैयार नहीं हूं। अगर मैं हुज़ूर सल्ल० के बाद किसी की ओर से अमारत क़ुबूल करता, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ओर से ज़रूर क़ुबूल करता,

1. कंज़, भाग 3, पृ० 126

क्योंकि उन्हें बहुत-सी फ़ज़ीलतें (बड़ाइयां) हासिल हैं और वे सबसे पहले इस्लाम लाए हैं और पुराने मुसलमान हैं, लेकिन मैंने तै कर लिया है कि हुज़ूर सल्ल० के बाद किसी की ओर से अमारत नहीं क़ुबूल करूंगा।

चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपने साथियों से मश्विरा करने लगे कि अब किसे बहरैन भेजा जाए? तो उनसे हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने कहा, आप उस आदमी को भेजें जिसे हुज़ूर सल्ल० ने बहरैन भेजा था और वह बहरैन वालों को मुसलमान और फ़रमांबरदार बनाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाए थे। बहरैन वाले उन्हें अच्छी तरह जानते हैं और वह बहरैन वालों को और उनके इलाक़े को अच्छी तरह जानते हैं और वह हैं हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि०।

हज़रत उमर रज़ि० ने इस राय से इत्तिफ़ाक़ न किया और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से अर्ज़ किया कि आप (बहरैन वापस जाने पर) हज़रत अबान बिन सईद बिन आस को मजबूर करें, क्योंकि वह बहरैन कई बार जा चुके हैं। लेकिन उन्हें मजबूर करके भेजने से हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इंकार कर दिया और फ़रमाया, मैं ऐसा हरगिज़ नहीं करूंगा। जो आदमी कहता है कि मैं हुज़ूर सल्ल० के बाद किसी की तरफ़ से अमीर नहीं बनूंगा, मैं उसे अमीर बनने पर मजबूर नहीं कर सकता और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अला बिन हज़रमी को बहरैन भेजने का फ़ैसला किया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने उनको अमीर बनाने के लिए बुलाया। उन्होंने अमारत क़ुबूल करने से हज़रत उमर रज़ि० को इंकार कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम अमीर बनने को बुरा समझते हो? हालांकि उसे तो उस आदमी ने मांगा था जो तुमसे बेहतर थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, वह कौन?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह हज़रत यूसुफ़ बिन याक़ूब अलै० हैं।

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 133

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, हज़रत यूसुफ़ तो ख़ुद अल्लाह के नबी थे और अल्लाह के नबी के बेटे थे। (उन्हें ऐसा करने का हक़ था) मैं तो उमैमा नामी औरत का बेटा अबू हुरैरह हूं और अमीर बनने में मुझे तीन और दो (कुल पांच) बातों का डर है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, पांच ही क्यों नहीं कह देते?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, (दो बातें तो ये हैं कि) मैं इल्म के बग़ैर कोई बात कह दूं और कोई ग़लत फ़ैसला कर दूं। (अमीर बनकर मुझसे ये दो ग़लतियां हो सकती हैं, जिसके नतीजे में मुझे ये तीन सज़ाएं अमीरुल मोमिनीन की ओर से लग सकती हैं कि) मेरी कमर पर कोड़े मारे जाएं और मेरा माल छीन लिया जाए और मुझे बे-अबारू कर दिया जाए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मौहब रह० कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से फ़रमाया, जाओ और लोगों के क़ाज़ी बन जाओ। उनमें फ़ैसले किया करो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आप मुझे इससे माफ़ रखेंगे?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, मैं तुम्हें क़सम देता हूं, तुम जाकर लोगों के क़ाज़ी ज़रूर बनो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, आप जल्दी न करें। क्या आपने अल्लाह के रसूल सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना कि जिसने अल्लाह की पनाह चाही, वह बहुत बड़ी पनाह में आ गया।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, हां।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, मैं क़ाज़ी बनने से अल्लाह की पनाह मांगता हूं।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, तुम क़ाज़ी क्यों नहीं बनते हो? हालांकि तुम्हारे वालिद तो क़ाज़ी थे।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 380, इसाबा, भाग 4, पृ० 241, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 59

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो क़ाज़ी बना और फिर न जानने की वजह से ग़लत फ़ैसला कर दिया, तो वह दोज़ख़ी है और जो क़ाज़ी आलिम हो और हक़ व इंसाफ़ का फ़ैसला करे, वह भी यह चाहेगा कि वह अल्लाह के यहां जाकर बराबर-सराबर पर छूट जाए। (न इनाम मिले और न कोई सज़ा लगे) अब इस हदीस के सुनने के बाद भी मैं क़ाज़ी बनने की उम्मीद कर सकता हूं?[1]

इमाम अहमद की रिवायत में इसके बाद यह है हज़रत उस्मान रज़ि० ने उनके उज्र को क़ुबूल कर लिया और उनसे फ़रमाया कि तुमको तो माफ़ कर दिया, लेकिन तुम किसी और को यह बात न बताना, (वरना अगर सारे ही इंकार करने लग गए तो फिर मुसलमानों में क़ाज़ी कौन बनेगा? और यह इज्तिमाई ज़रूरत कैसे पूरी होगी?)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि० ने उन्हें क़ाज़ी बनाना चाहा तो उन्होंने माज़रत कर दी और फ़रमाया, मैंने तो अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि क़ाज़ी तीन क़िस्म के हैं, एक नजात पाएगा, दो दोज़ख़ में जाएंगे। जिसने ज़ालिमाना फ़ैसला किया या अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ फ़ैसला किया, वह हलाक होगा और जिसने हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला किया, वह नजात पाएगा।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस दिन हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ि० दूमतुल जन्दल में जमा हुए (शायद यह क़िस्सा हज़रत हसन बिन अली रज़ि० और हज़रत मुआविया रज़ि० का है। रिवायत करने वाले को ग़लतफ़हमी हो गई है) तो उस दिन मुझसे (मेरी बहन) उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने कहा, तुम्हारे लिए यह मुनासिब नहीं है कि तुम ऐसे समझौते से पीछे रहो, जिसके ज़रिए अल्लाह हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उम्मत के बीच समझौता करा दे। तुम हुज़ूर सल्ल० के ससुराल से ताल्लुक़ रखते हो और (अमीरुल-

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 193,
2. हैसमी, भाग 4, पृ० 193, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 108

मोमिनीन) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के बेटे हो।

इसके बाद हज़रत मुआविया रज़ि० एक बड़े बुख़्ती ऊंट पर यानी ख़ुरासानी ऊंट पर आकर कहने लगे, कौन ख़िलाफ़त का लालच और उम्मीद रखता है? और कौन उसके लिए अपनी गरदन उठाता है?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, इससे पहले कभी मेरे दिल में दुनिया का ख़्याल नहीं आया था। मैंने सोचा कि उनसे जाकर यह कहूं कि इस ख़िलाफ़त की उम्मीद और लालच वह आदमी कर रहा है, जिसने आपको और आपके बाप को इस्लाम की वजह से मारा था और (मार-मारकर) तुम दोनों को इस्लाम में दाख़िल किया था (इसमें हज़रत इब्ने उमर रज़ि० अपनी ज़ात मुराद ले रहे हैं) लेकिन फिर मुझे जन्नत और उसकी नेमतें याद आ गईं, तो मैंने उनसे यह बात कहने का इरादा छोड़ दिया।[1]

हज़रत अबू हुसैन कहते हैं कि हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया, ख़िलाफ़त के इस मामले का हमसे ज़्यादा हक़दार कौन है?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, मेरे जी में आई कि मैं कह दूं, ख़िलाफ़त का आपसे ज़्यादा हक़दार वह है, जिसने आपको और आपके बाप को इस्लाम की वजह से मारा था (यानी ख़ुद हज़रत इब्ने उमर रज़ि०) लेकिन मुझे जन्नत की नेमतें याद आ गईं और इस बात का ख़तरा हुआ कि कहीं इस तरह कहने से फ़साद न बरपा हो जाए।[2]

हज़रत ज़ोहरी फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मुआविया रज़ि० जमा हुए, तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने खड़े होकर फ़रमाया, ख़िलाफ़त के इस मामले का मुझसे ज़्यादा हक़दार कौन है?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, मेरा इरादा हुआ कि मैं खड़े होकर कहूं कि इस ख़िलाफ़त का आपसे ज़्यादा हक़दार वह है जिसने आपको और आपके बाप को कुफ़्र की वजह से मारा था (यानी ख़ुद इब्ने उमर रज़ि०) लेकिन मुझे डर हुआ कि मेरे इस तरह कहने से मेरे बारे

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 208, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 134
2. इब्ने साद

में इस चीज़ का गुमान कर लिया जाएगा, जो मुझमें नहीं है (यानी यह समझ लिया जाएगा कि मुझे ख़लीफ़ा बनने का शौक़ है, हालांकि ऐसी कोई बात नहीं है।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित रज़ि० फ़रमाते हैं कि ज़ियाद ने हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० को ख़ुरासान का हाकिम बनाकर भेजना चाहा तो उन्होंने माज़रत कर दी। उनके साथियों ने उनसे कहा, क्या आपने ख़ुरासान की अमारत छोड़ दी?

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मुझे इस बात से कोई ख़ुशी नहीं है कि मुझे तो ख़ुरासान की गर्मी पहुंचे और ज़ियाद और उसके साथियों को उसकी ठंडक यानी में तो वहां अमीर बनकर मशक़्क़त उठाता रहूं और लोग वहां की आमदनी से मज़े उड़ाते रहें। मुझे तो इस बात का डर है कि मैं तो दुश्मन के मुक़ाबले में खड़ा हूं और मेरे पास ज़ियाद का ऐसा ख़त आए कि अगर मैं उस पर अमल करूं तो हलाक हो जाऊं और अगर उस पर अमल न करूं तो (ज़ियाद की तरफ़ से) मेरी गरदन उड़ा दी जाए।

फिर ज़ियाद ने हज़रत हकम बिन अम्र ग़िफ़ारी रज़ि० से ख़ुरासान का अमीर बनने को कहा, जिसे उन्होंने क़ुबूल कर लिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं, यह सुनकर हज़रत इम्रान ने फ़रमाया, कोई है जो हकम को मेरे पास बुला लाए। चुनांचे हज़रत इम्रान का क़ासिद (दूत) गया और उस पर हज़रत हकम हज़रत इम्रान के पास आए, तो हज़रत इम्रान ने उनसे फ़रमाया, क्या आपने अल्लाह के रसूल सल्ल० से यह फ़रमाते हुए सुना कि किसी की ऐसी बात माननी बिल्कुल जायज़ नहीं है, जिसमें ख़ुदा की नाफ़रमानी हो रही हो।

हज़रत हकम ने कहा, जी हां।

इस पर हज़रत इम्रान ने अल-हम्दुलिल्लाह कहकर अल्लाह का शुक्र अदा किया या अल्लाहु अकबर कहकर ख़ुशी ज़ाहिर की।

हज़रत हसन की एक रिवायत में इस तरह है कि ज़ियाद ने हज़रत हकम ग़िफ़ारी रज़ि० को एक फ़ौज का अमीर बनाया तो हज़रत इम्रान

बिन हुसैन रज़ि० उनके पास आए और लोगों की मौजूदगी में उनसे मिले और फ़रमाया, क्या आप जानते हैं कि मैं आपके पास क्यों आया हूं?

हज़रत हकम ने कहा, (आप ही बताएं) आप क्यों आए हैं?

हज़रत इम्रान ने कहा, क्या आपको याद है कि एक आदमी से उसके अमीर ने कहा था कि अपने आपको आग में फेंक दो। (वह आदमी तो आग की तरफ़ चल दिया था, लेकिन दूसरे) लोगों ने जल्दी से उसे पकड़कर आग में छलांग लगाने से रोक दिया था।

यह सारा वाक़िया हुज़ूर सल्ल० को बताया गया तो आपने फ़रमाया, अगर यह आदमी आग में गिर जाता तो यह आदमी भी और इसे हुक्म देने वाला अमीर भी दोनों दोज़ख़ में जाते और अल्लाह की नाफ़रमानी की शक्ल में किसी की बात माननी जायज़ नहीं है।

हज़रत हकम ने कहा, हां (याद है)।

हज़रत इम्रान ने कहा, मैं तो तुम्हें सिर्फ़ यह हदीस याद दिलाना चाहता था।[1]

ख़लीफ़ों और अमीरों का एहतराम करना और उनके हुक्मों को मानना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी को एक फ़ौज का अमीर बनाकर भेजा। उस जमाअत में उनके साथ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० भी थे। चुनांचे ये लोग (मदीना मुनव्वरा से) रवाना हुए और रात के आख़िरी हिस्से में उन्होंने उस क़ौम के क़रीब जाकर पड़ाव डाला जिस पर सुबह हमला करना था।

किसी मुख़बिर ने जाकर उस क़ौम को सहाबा किराम के आने की ख़बर दी, जिस पर वे लोग भाग गए और बचाव वाली जगह पर पहुंच गए, लेकिन उस क़ौम का एक आदमी, जो ख़ुद और उसके घरवाले मुसलमान हो चुके थे, वहीं ठहरा रहा। उसने अपने घरवालों से कहा, तो

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 226

उन्होंने भी सफ़र का सामान बांध लिया। उसने घरवालों से कहा, मेरे वापस आने तक तुम लोग यहां ही ठहरो।

फिर वह हज़रत अम्मार रज़ि० के पास आया और उसने कहा, ऐ अबुल यक़्ज़ान! यानी ऐ जगे आदमी! मैं और मेरे घरवाले मुसलमान हो चुके हैं, तो क्या अगर मैं यहां ठहरा रहूं, तो मेरा यह इस्लाम मुझे काम देगा, क्योंकि मेरी क़ौम वालों ने जब आप लोगों का सुना तो वह भाग गए। हज़रत अम्मार ने उससे कहा, तुम ठहरे रहो, तुम्हें अम्न है। चुनांचे यह आदमी और उसके घरवाले अपनी जगह वापस आ गए।

हज़रत ख़ालिद ने सुबह उस क़ौम पर हमला किया, तो पता चला कि वे लोग तो सब जा चुके। अलबत्ता वह आदमी और उसके घरवाले वहां मिले, जिन्हें हज़रत ख़ालिद के साथियों ने पकड़ लिया। हज़रत अम्मार रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, इस आदमी को आप नहीं पकड़ सकते, क्योंकि यह मुसलमान है।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, आपको इससे क्या मतलब? अमीर तो मैं हूं और मुझसे पूछे बिना क्या आप पनाह दे सकते हैं?

हज़रत अम्मार रज़ि० ने कहा, हां, आप अमीर हैं और मैं आपसे पूछे बग़ैर पनाह दे सकता हूं, क्योंकि यह आदमी ईमान ला चुका है। अगर यह चाहता, तो यहां से यह जा सकता था, जैसे इसके साथी चले गए। चूंकि यह मुसलमान था, इस वजह से मैंने इसे यहां ठहरने को कहा था।

इस पर इन दोनों में बात बढ़ गई और एक दूसरे के बारे में कुछ नामुनासिब शब्द निकल गए। जब ये दोनों मदीना पहुंच गए तो दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, हज़रत अम्मार ने उस आदमी के तमाम हालात सुनाए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अम्मार रज़ि० के अमान देने को दुरुस्त क़रार दिया, लेकिन आगे के लिए अमीर की इजाज़त के बिना पनाह देने से मना कर दिया। इस पर इन दोनों में हुज़ूर सल्ल० के सामने ही तेज़म तेज़ी हो गई।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या आपके सामने यह ग़ुलाम मुझे सख़्त लफ़्ज़ों में कह रहा है?

अल्लाह की क़सम! अगर आप न होते तो यह मुझे कभी ऐसे कड़े लफ़्ज़ न कहता।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद! अम्मार को कुछ न कहो, क्योंकि जो अम्मार से कीना रखेगा, उससे अल्लाह कीना रखेगा और जो अम्मार पर लानत करेगा, उस पर अल्लाह लानत करेगा। फिर हज़रत अम्मार रज़ि० वहां से उठकर चल दिए।

(हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का यह असर हुआ कि) हज़रत ख़ालिद रज़ि० भी हज़रत अम्मार रज़ि० के पीछे चल दिए और उनका कपड़ा पकड़कर उन्हें मनाते रहे, यहां तक कि हज़रत अम्मार रज़ि० उनसे राज़ी हो गए। इस तरह यह आयत उतरी—

أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ

'तुम अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो और तुममें जो लोग हुकूमत में हैं, उनका भी, (हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं) इन हाकिमों से मुराद जमाअतों और फ़ौजों के अमीर हैं।'

فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ

'फिर अगर किसी मामले में तुम आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगो, तो इस मामले को अल्लाह और रसूल की तरफ़ हवाला कर लिया करो।'

(हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, जब तुम अपने झगड़े को अल्लाह और रसूल की ओर ले जाओगे तो) फिर अल्लाह और उसके रसूल ही इस झगड़े का फ़ैसला करेंगे।'

ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا (نساء، ٥٩)

'ये मामले सब बेहतर हैं और इनका अंजाम बहुत अच्छा है।' (निसा 59) अल्लाह फ़रमाते हैं कि इस तरह करने से अंजाम अच्छा होगा।"[1]

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं भी उन मुसलमानों के साथ सफ़र में गया जो ग़ज़्वा मूता में हज़रत ज़ैद बिन

1. कंज़, भाग 1, पृ० 242, भाग 7, पृ० 73, हाकिम, भाग 3, पृ० 390, हैसमी, भाग 9, पृ० 294

हारिसा रज़ि० के साथ थे। यमन से फ़ौज की मदद के लिए आने वाले एक साहब इस सफ़र में मेरे साथी बन गए। इसके पास उसकी तलवार के अलावा और कोई हथियार नहीं था। एक मुसलमान ने एक ऊंट ज़िब्ह किया, मेरे उस साथी ने उस मुसलमान से ऊंट की खाल का एक टुकड़ा मांगा। उन्होंने उसे एक टुकड़ा दे दिया, जिसे लेकर उसने ढाल जैसा बना लिया।

फिर हम वहां से आगे चले। हमारा रूमी फ़ौजों से मुक़ाबला हुआ। इन रूमियों में एक आदमी अपने लाल घोड़े पर सवार था, जिसकी ज़ीन और हथियार पर सोने का पानी चढ़ा हुआ था। वह रूमी मुसलमानों को बड़े ज़ोर-शोर से क़त्ल करने लगा। मदद के लिए आने वाला यमनी साथी उसकी ताक में एक चट्टान के पीछे बैठ गया। वह रूमी ज्योंही उसके पास से गुज़रा, उसने हमला करके उसके घोड़े की टांगें काट दीं। वह रूमी ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके ऊपर चढ़कर यमनी ने उसे क़त्ल कर दिया और उसके घोड़े और हथियार पर क़ब्ज़ा कर लिया।

जब अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दिला दी, तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने (जिनको आख़िर में मुसलमानों ने अमीर बना लिया था) उस यमनी को बुलाकर उससे क़त्ल किए गए रूमी का सारा सामान ले लिया।

हज़रत औफ़ कहते हैं कि मैंने हज़रत ख़ालिद के पास जाकर उनसे कहा, ऐ ख़ालिद ! क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने क़ातिल के लिए मक़्तूल के सामान का फ़ैसला किया था?

हज़रत ख़ालिद ने कहा, मुझे मालूम है, लेकिन मुझे यह सामान बहुत ज़्यादा लग रहा है।

मैंने कहा, या तो आप यह सामान उस यमनी को वापस दे दें, नहीं, तो मैं अल्लाह के रसूल सल्ल० से आपकी शिकायत करूंगा और फिर आपको पता चल जाएगा, लेकिन हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने वह सामान वापस करने से इंकार कर दिया।

(इस सफ़र से वापसी पर) हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में

पहुंचे, तो मैंने उस यमनी का क़िस्सा और जो कुछ हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने किया था, वह सब हुज़ूर सल्ल० को बताया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद ! तुमने ऐसा क्यों किया?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे वह सामान बहुत ज़्यादा मालूम हुआ।

आपने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद ! तुमने उससे जो कुछ लिया है, वह उसे वापस कर दो।

हज़रत औफ़ रज़ि० कहते हैं, इस पर मैंने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, ऐ ख़ालिद ! लो, मैंने तुमसे जो कहा था, वह पूरा कर दिया ना, कि हुज़ूर सल्ल० से शिकायत करके तुम्हें सज़ा दिलाऊंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह क्या बात है?

मैंने आपको सारी तफ़्सील बताई। इस पर हुज़ूर सल्ल० नाराज़ हो गए और आपने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद ! वह सामान वापस न करो (और सहाबा से मुतवज्जह होकर फ़रमाया) क्या तुम मेरी वजह से मेरे अमीरों को छोड़ नहीं देते हो? (कि उनकी बे-इकरामी न किया करो, बल्कि उनका एहतराम किया करो) उनके अच्छे काम तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद हैं और उनके बुरे काम का वबाल उन्हीं पर होगा, यानी अगर वे अच्छे अमल करेंगे तो उनका फ़ायदा तुम्हें भी होगा, और अगर वे ग़लत काम करेंगे तो इसकी सज़ा उनको ही भुगतनी पड़ेगी। तम्हें हर हाल में उनका इकराम करना चाहिए।[1]

हज़रत राशिद बिन साद रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास कुछ माल आया। आप उस माल को लोगों में बांटने लगे। आपके पास लोगों का बड़ा मज्मा हो गया। हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० मज्मा को चीरते हुए उनके पास आ पहुंचे। हज़रत उमर रज़ि० कोड़ा लेकर उन पर खड़े हो गए और फ़रमाया, तुम तो इस तरह आगे आ रहे हो जैसे कि तुम ज़मीन पर अल्लाह के सुलतान से डरते नहीं हो। मैं भी तुम्हें बताना चाहता हूं कि अल्लाह का सुलतान

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 249, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 310

तुमसे नहीं डरता है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को एक फ़ौज का अमीर बनाकर भेजा। उस फ़ौज में हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० भी थे। जब ये लोग लड़ाई की जगह पहुंचे तो हज़रत अम्र रज़ि० ने फ़ौज को हुक्म दिया कि आग बिल्कुल न जलाएं। हज़रत उमर रज़ि० को इस पर ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने जाकर हज़रत अम्र रज़ि० से इस बारे में बात करने का इरादा किया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन्हें ऐसा करने से रोका और फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने उनको तुम्हारा अमीर इस वजह से बनाया है कि वह लड़ाई के सिलसिले की ज़रूरतों को ख़ूब जानते हैं। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ठंडे पड़ गए (और हज़रत अम्र के पास न गए।)[2]

हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत अयाज़ बिन ग़नम अशअरी रज़ि० ने सारा शहर जीत लिए जाने के बाद उसके हाकिम को (कोड़ों से) सज़ा दी। हज़रत हिशाम बिन हकीम रज़ि० उनके पास आए और (हाकिम को सज़ा देने पर) उनको सख़्त बात कही। कुछ दिन गुज़रने के बाद हज़रत हिशाम हज़रत अयाज़ के पास माज़रत के लिए आए और हज़रत अयाज़ से (अपनी सख़्ती की वजह बताते हुए) कहा, क्या आपको मालूम नहीं है कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब उसे होगा जो दुनिया में लोगों को सख़्त अज़ाब देता था।

हज़रत अयाज़ ने उनसे कहा, ऐ हिशाम! हमने भी वह सब कुछ (हुज़ूर सल्ल० से) सुना है जो आपने सुना है और हमने वह सब कुछ देखा है जो आपने देखा है और हम भी उसी ज़ाते अक़्दस की सोहबत में रहे हैं, जिनकी सोहबत में आप रहे हैं। ऐ हिशाम! क्या आपने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए नहीं सुना कि जो किसी बादशाह को

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 206,
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 41, हाकिम, भाग 3, पृ० 42,

नसीहत करना चाहता हो, तो उसे ऐलानिया लोगों के सामने नसीहत न करे, बल्कि उसका हाथ पकड़कर उसे अलग ले जाए (और तंहाई में उसे नसीहत करे) अगर बादशाह उसकी नसीहत क़ुबूल कर ले, तो ठीक, वरना उसने बादशाह का हक़ अदा कर दिया और ऐ हिशाम ! तुम बहुत बेबाक हो और अल्लाह के बादशाह के ख़िलाफ़ दिलेरी करते हो, क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं था कि अल्लाह का सुलतान तुम्हें क़त्ल कर देता और तुम अल्लाह के बादशाह के क़त्ल किए हुए कहलाते ।[1]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रह० कहते हैं, हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के ज़माने में लोगों ने एक अमीर की किसी बात पर एतराज़ किया। एक आदमी सबसे बड़ी जामा मस्जिद में दाख़िल हुआ और लोगों में से गुज़रता हुआ हज़रत हुज़ैफ़ा के पास पहुंच गया। वह एक हलक़े (लोगों के घेरे) में बैठे हुए थे।

वह आदमी उनके सर के क़रीब खड़े होकर कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबी ! क्या आप 'अम्र बिल मारूफ़ और नह्य अनिल मुन्कर' (भलाई का हुक्म करने और बुराइयों को मिटाने का काम) नहीं करते हैं ?

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने अपना सर ऊपर उठाया और वह आदमी जो कुछ चाहता था, उसे समझ गए, तो उससे फ़रमाया, अम्र बिल मारूफ़ व नह्य अनिल मुन्कर वाक़ई बहुत अच्छा काम है, लेकिन यह सुन्नत में से नहीं है कि तुम अपने अमीर पर हथियार उठाओ ।[2]

हज़रत ज़ियाद बिन कुसैब अदवी रह० कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन आमिर बारीक कपड़े पहनकर और बालों में कंघी करके लोगों में बयान करते थे। एक दिन उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और फिर अन्दर चले गए और हज़रत अबूबक्रा रज़ि० मिंबर के पास बैठे हुए थे। मिरदास अबू बिलाल ने कहा, क्या आप लोग देखते नहीं हैं कि लोगों के अमीर बारीक कपड़े

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 290, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 164, मज्मउज़्ज़वाद, भाग 5, पृ० 229, हैसमी, भाग 5, पृ० 229
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 224,

पहनते हैं और नाफ़रमान (फ़ासिक़) लोगों जैसा काम करते हैं?

हज़रत अबूबक्रा ने उनकी बात सुन ली और अपने बेटे उसैलअ से कहा, अबू बिलाल को मेरे पास बुलाकर लाओ। वह उन्हें बुलाकर लाए, तो उनसे हज़रत अबूबक्रा ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, तुमने अभी अमीर के बारे में जो कहा है, वह मैंने सुन लिया है, लेकिन मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जो अल्लाह के सुलतान का इकराम करेगा, अल्लाह उसका इकराम करेंगे और जो अल्लाह के सुलतान की तौहीन करेगा, अल्लाह उसकी तौहीन करेंगे।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंसारी को एक जमाअत का अमीर बनाकर भेजा और उस जमाअत को ताकीद फ़रमाई कि अपने अमीर की बात सुनें और मानें। चुनांचे (उस सफ़र में) अमीर को उनकी किसी बात पर ग़ुस्सा आ गया, तो उसने कहा, मेरे लिए लकड़ियां जमा करो। चुनांचे उन्होंने लकड़ियां जमा कीं, फिर उस अमीर ने कहा, आग जलाओ। इस पर उन लोगों ने आग जलाई। फिर उस अमीर ने कहा, क्या आप लोगों को हुज़ूर सल्ल० ने इस बात का हुक्म नहीं दिया कि आप लोग मेरी बात सुनो और मानो?

लोगों ने कहा, जी हां, हुक्म दिया है।

उस अमीर ने कहा, तो फिर तुम इस आग में दाख़िल हो जाओ। (लोगों को आज़माना था) इस पर लोग एक दूसरे को देखने लगे और यों कहा, हम तो आग से भागकर हुज़ूर सल्ल० के पास आए थे। (इतनी देर में) उस अमीर का ग़ुस्सा ठंडा हो गया और आग भी बुझ गई।

जब ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० से इस क़िस्से का ज़िक्र किया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर ये लोग उस आग में दाख़िल हो जाते तो कभी उससे बाहर न निकल सकते। (यानी यह बात न थी कि अमीर के मानने की वजह से आग उनको न जलाती और यह ज़िंदा आग से बाहर आ जाते,

---

1. बैहक़ी, भाग 5, पृ० 163

बल्कि जलकर मर जाते।) अमीर की इताअत सिर्फ़ नेकी के कामों में ज़रूरी है। (गुनाह के कामों में उसकी इताअत न की जाए)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ सहाबा में बैठे हुए थे। आपने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, क्या तुम्हें यह बात मालूम नहीं है कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं।

सहाबा ने कहा, जी हां, मालूम है। हम इस बात की गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

आपने फ़रमाया, क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि जिसने मेरी इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की। मेरी इताअत हक़ीक़त में अल्लाह की इताअत में शामिल है।

सहाबा ने कहा, जी हां, मालूम है। हम गवाही देते हैं जिसने आपकी इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की और आपकी इताअत अल्लाह की इताअत में शामिल है।

आपने फ़रमाया, अल्लाह की इताअत में यह शामिल है कि तुम मेरी इताअत करो और मेरी इताअत में यह शामिल है कि तुम अपने अमीरों की इताअत करो। अगर वे बैठकर नमाज़ पढ़ाएं तो तुम भी बैठकर नमाज़ पढ़ो।[2]

हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करते थे। जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से फ़ारिग़ हो जाते तो मस्जिद में आ जाया करते। मस्जिद ही उनका घर था, उसी में वह लेट जाया करते थे। एक रात हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो देखा कि हज़रत अबूज़र रज़ि० मस्जिद में ज़मीन पर लेटे हुए सो रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनको अपने पांव से (उठाने के लिए हलकी सी) ठोकर मारी। वह सीधे होकर बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 226, कंज़, भाग 3, पृ० 170, इसाबा, भाग 2, पृ० 296
2. कंज़, भाग 3, पृ० 168

मस्जिद में सोता हुआ नहीं देख रहा हूं?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं और कहां सोऊं? इस मस्जिद के अलावा मेरा और कोई घर नहीं है। फिर हुज़ूर सल्ल० उनके पास बैठ गए और फ़रमाया, जब लोग तुमको (किसी इज्तिमाई ज़रूरत की वजह से) इस मस्जिद से निकालेंगे, तो तुम क्या करोगे?

उन्होंने कहा, मैं शाम देश को चला जाऊंगा, क्योंकि शाम (पहले नबियों की) हिजरत की जगह है और वहां ही हश्र का मैदान होगा और वह नबियों की धरती है। (वहां बहुत नबी हुए) और मैं वहां वालों में से बन जाऊंगा। (यानी वहां रहने लग जाऊंगा।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब लोग तुम्हें शाम देश से भी निकाल देंगे तो फिर क्या करोगे?

उन्होंने कहा, मैं इसी मस्जिद में यानी मदीना वापस आ जाऊंगा। यही मेरा घर और यही मेरी मंज़िल होगी।

आपने फ़रमाया, जब लोग तुम्हें इस मस्जिद से यानी मदीना से दोबारा निकाल देंगे, तो फिर तुम्हारा क्या होगा?

उन्होंने कहा, मैं तलवार लेकर मरते दम तक (उनसे) लड़ता रहूंगा।

हुज़ूर सल्ल० उन्हें देखकर मुस्कराए और उन्हें हाथ से थपकी दी और फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इससे बेहतर बात न बता दूं?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ज़रूर बता दें। मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वे तुम्हें आगे से पकड़कर जिधर ले जाएं, तुम उधर चले जाना और पीछे से तुम्हें जिधर को लाएं तुम उधर को चले जाना (यानी जैसे वे कहें, वैसे करते रहना) यहां तक कि इसी हाल में आकर मुझसे मिल लेना।[1]

इब्ने जरीर ने इस जैसी हदीस ख़ुद हज़रत अबूज़र रज़ि० से नक़ल की है। उसमें यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम्हें (मदीने से

1. कंज़, भाग 3, पृ० 168, हैसमी, भाग 5, पृ० 223

दोबारा निकाला जाएगा तो तुम क्या करोगे ?

हज़रत अबूज़र कहते हैं कि मैंने कहा, मैं तलवार लेकर निकालने वालों को मारूंगा। आपने अपना हाथ मेरे कंधे पर मारा और फ़रमाया, ऐ अबूज़र ! तुम (इन निकालने वालों को) माफ़ कर देना और वे तुम्हें आगे से पकड़कर जहां ले जाएं, वहां चले जाना और पीछे से तुम्हें जिधर को चलाएं, तुम उधर को चले जाना (यानी उनकी बात मानते रहना) चाहे तुमको यह मामला एक काले ग़ुलाम के साथ क्यों न करना पड़े।

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं, जब (अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि० के फ़रमान पर) मैं रब्ज़ा रहने लगा, तो एक बार नमाज़ की इक़ामत हुई और एक काला आदमी जो वहां के सदक़ों के वसूल करने पर मुक़र्रर था, नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ा। जब उसने मुझे देखा तो पीछे हटने लगा और मुझे आगे करने लगा। मैंने कहा, तुम अपनी जगह रहो। मैं हुज़ूर सल्ल० की बात मानूंगा।[1]

अब्दुर्रज़्ज़ाक ने हज़रत ताऊस रह० से यही हदीस नक़ल की है और उसमें यह मज़्मून है कि जब हज़रत अबूज़र रब्ज़ा गए तो उनको वहां हज़रत उस्मान रज़ि० का एक काला ग़ुलाम मिला। उसने अज़ान दी और इक़ामत कही, फिर हज़रत अबूज़र से कहा, ऐ अबूज़र ! (नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ें।)

हज़रत अबूज़र ने कहा, नहीं। मुझे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया है कि मैं अमीर की बात सुनूं और मानूं, चाहे वह काला ग़ुलाम ही क्यों न हो। चुनांचे वह ग़ुलाम आगे बढ़ा और हज़रत अबूज़र ने उसके पीछे नमाज़ पढ़ी।

इब्ने अबी शैबा, इब्ने जरीर, बैहक़ी और नुऐम बिन हम्माद वग़ैरह हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, अपने अमीर की बात सुनो और मानो चाहे तुम पर कान कटा हब्शी ग़ुलाम ही क्यों न अमीर बना दिया गया हो। अगर वह तुम्हें तकलीफ़ पहुंचाए तो उसे बरदाश्त करो और अगर वह तुम्हें किसी काम का हुक्म दे, तो उसे मानो

1. इब्ने जरीर,

और अगर वह तुम्हें कुछ न दे, तो सब्र करो और अगर वह तुम पर ज़ुल्म करे तो भी सब्र करो और अगर वह तुम्हारे दीन में से कम करना चाहे, तो उससे कह दो, जान हाज़िर है, दीन नहीं। (मैं जान दे सकता हूं, लेकिन दीन में कमी बरदाश्त नहीं कर सकता) चाहे कुछ भी हो जाए तय जमाअत से अलग न होना।[1]

हज़रत हसन रह० कहते हैं, हज़रत अलक़मा बिन अलासा रात के वक़्त हज़रत उमर रज़ि० से मिले। हज़रत उमर रज़ि० (शक्ल व सूरत और क़द में) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० से मिलते थे। (हज़रत अलक़मा उनको ख़ालिद समझे) और उनसे कहा, ऐ ख़ालिद! तुम्हें इस आदमी ने (यानी हज़रत उमर ने) अलग कर दिया। उन्होंने तंगनज़री की वजह से ऐसा किया है। मैं और मेरे चचेरे भाई उनसे कुछ मांगने के लिए उनके पास जाना चाहते थे, लेकिन अब जबकि उन्होंने आपको अमारत से हटा दिया है, तो अब मैं उनसे कुछ नहीं मागूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने (उनके आगे के इरादे जानने के लिए हज़रत ख़ालिद रज़ि० जैसी आवाज़ बनाकर) उनसे कहा और कोई बात? फिर अब तुम्हारा क्या इरादा है?

हज़रत अलक़मा ने कहा, हमारे अमीरों का हम पर हक़ है (कि हम हर हाल में उनके फ़रमांबरदार और वफ़ादार रहें) हम उनका हक़ अदा करते रहेंगे और अपना अज्र व सवाब अल्लाह से लेंगे। (सहाबा किराम ने नागवारियों में भी एक दूसरे से जुड़ना सीख रखा था)

जब सुबह हुई (और हज़रत उमर रज़ि० के पास अलक़मा और हज़रत ख़ालिद इकट्ठा हुए तो) हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, आज रात अलक़मा ने तुमको क्या कहा था?

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! उन्होंने मुझे कुछ नहीं कहा।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा, तुम क़सम भी खाते हो। अबू नज़रा की रिवायत में यह भी है कि हज़रत अलक़मा रज़ि० हज़रत

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 167

ख़ालिद रज़ि० से कहने लगे, ऐ ख़ालिद ! छोड़ो (क़सम न खाओ औ इंकार न करो)।

सैफ़ बिन अम्र की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ये दोनों सच्चे हैं। दोनों ने ठीक कहा है।

इब्ने आइज़ की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अलक़मा की फ़रियाद सुनी और उनकी ज़रूरत पूरी कर दी।

ज़ुबैर बिन बक्कार की रिवायत में यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने (रात को) जब यह पूछा था कि तुम्हारा अब इरादा क्या है? तो हज़रत अलक़मा ने कहा था, बात सुनने और मानने के अलावा और कुछ नहीं है। इस रिवायत में यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे पीछे जितने आदमी हैं, वे सब तुम्हारे इन अच्छे जज़्बों पर हों, तो मुझे यह इतने और इतने माल यानी सारी दुनिया के माल से ज़्यादा प्रिय हैं।[1]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० एक कोढ़ी औरत के पास से गुज़रे जोकि बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रही थी। आपने उससे फ़रमाया, ऐ अल्लाह की बन्दी ! लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ। अगर तुम अपने घर बैठी रहो, तो यह ज़्यादा अच्छा है। चुनांचे (उसने बैतुल्लाह के तवाफ़ के लिए हरम शरीफ़ आना छोड़ दिया और) अपने घर बैठ गई।

कुछ दिनों के बाद एक आदमी उस औरत के पास से गुज़रा और उससे कहा, जिस अमीरुल मोमिनीन ने तुम्हें तवाफ़ करने से रोका था, उनका इंतिक़ाल हो गया, इसलिए अब तुम जाकर तवाफ़ कर लो।

उस औरत ने कहा, मैं ऐसी नहीं हूं कि उनकी ज़िंदगी में तो उनकी बात मानूं और उनके मरने के बाद उनकी नाफ़रमानी करूं।[2]

एक साहब कहते हैं, मैं हज़रत अली रज़ि० के ज़माने में (एक इलाक़े का) चौधरी था। हज़रत अली रज़ि० ने हमें एक काम का हुक्म दिया, (कुछ दिनों के बाद) हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तुम्हें जिस का

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 404
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 5, पृ० 192

हुक्म दिया था, क्या तुमने वह काम कर लिया है? हमने कहा, नहीं। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तुम्हें जो हुक्म दिया जाए उसे ज़रूर पूरा करो, नहीं तो तुम्हारी गरदनों पर यहूदी और ईसाई सवार हो जाएंगे।[1]

अमीरों का एक दूसरे की बात मानना

(कई पुराने इकट्ठे हो जाएं तो वे आपस में इख़्तिलाफ़ न करें, बल्कि एक दूसरे की बात मानें)

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को (फ़ौज का अमीर बनाकर) शामदेश की बस्तियों में क़बीला क़ुज़ाआ के क़बीलों बनू बली और बनू अब्दुल्लाह वग़ैरह में भेजा। बनू बली (हज़रत अम्र के बाप) आस बिन वाइल के ननिहाल के लोग थे। जब हज़रत अम्र वहां पहुंचे तो दुश्मन की बड़ी तायदाद देखकर डर गये। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में मदद के लिए आदमी भेजा।

हुज़ूर सल्ल० ने शुरू के मुहाजिरों को (हज़रत अम्र की मदद के लिए जाने की) तर्ग़ीब दी। जिस पर हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० और दूसरे मुहाजिर सरदार तैयार हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को इन मुहाजिरों का अमीर बनाया।

जब ये लोग हज़रत अम्र रज़ि० के पास पहुंचे, तो हज़रत अम्र रज़ि० ने उनसे कहा, मैं आप लोगों का भी अमीर हूं, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आदमी भेजकर आप लोगों को अपनी मदद के लिए बुलाया है।

मुहाजिर सहाबियों ने कहा, नहीं। आप अपने साथियों के अमीर हैं। हज़रत अबू उबैदा मुहाजिरों के अमीर हैं।

हज़रत अम्र ने कहा, आप लोगों को तो मेरी मदद के लिए भेजा गया है (इसलिए असल तो मैं हूं, आप लोग तो मेरे मददगार हैं।)

1. कंज़, भाग 3, पृ० 167

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० अच्छे अख़्लाक़ वाले और नर्म तबियत इंसान थे। जब उन्होंने यह देखा, तो उन्होंने कहा, ऐ अम्र ! आपको यह बात मालूम होनी चाहिए कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने मुझे जो आख़िरी हिदायत दी थी, वह यह थी कि जब तुम अपने साथी के पास पहुंचो, तो तुम दोनों एक दूसरे की इताअत करना। अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं तुम्हारी बात ज़रूर मानूंगा। चुनांचे हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने अमारत हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के हवाले कर दी।[1]

हज़रत ज़ोहरी बयान करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने बनू कल्ब, बनू ग़स्सान और अरब के उन काफ़िरों के पास जो शाम के देहात में रहते थे, दो फ़ौजें भेजीं। एक फ़ौज पर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को और दूसरी फ़ौज पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को अमीर बनाया और हज़रत अबू उबैदा की फ़ौज में हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० भी गए।

जब फ़ौजों के जाने का वक़्त हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू उबैदा और हज़रत अम्र को बुलाकर उनसे फ़रमाया, एक दूसरे की नाफ़रमानी न करना। जब ये दोनों (अपनी फ़ौज लेकर) मदीना से रवाना हुए तो हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने हज़रत अम्र को अलग ले जाकर कहा, हुज़ूर सल्ल० ने मुझे और आपको ख़ास तौर से हिदायत फ़रमाई है कि तुम दोनों एक दूसरे की नाफ़रमानी न करना, इसलिए अब (इस हिदायत पर अमल की शक्ल यह है कि) या तो तुम मेरे फ़रमांबरदार बन जाओ या मैं तुम्हारा फ़रमांबरदार बन जाऊं।

हज़रत अम्र ने कहा, नहीं तुम मेरे फ़रमांबरदार बन जाओ।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, ठीक है मैं बन जाता हूं और यों हज़रत अम्र रज़ि० दोनों फ़ौजों के अमीर बन गए। इस पर हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने (हज़रत अबू उबैदा से) कहा, क्या आप नाबिग़ा (नामी औरत) के बेटे की इताअत अपना रहे हैं और उनको अपना, हज़रत अबूबक्र का और हमारा अमीर बना रहे हैं? यह कैसी

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 273, कंज़, भाग 5, पृ० 310

राय है ? (यानी यह ठीक नहीं है)

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ मेरी मां के बेटे ! यानी ऐ मेरे भाई ! हुज़ूर सल्ल० ने मुझे और उनको ख़ास हिदायत फ़रमाई थी कि तुम एक दूसरे की नाफ़रमानी न करना, तो मुझे यह डर हुआ कि अगर मैंने उनकी इताअत न की, तो मुझसे हुज़ूर सल्ल० की नाफ़रमानी हो जाएगी और मेरे और हुज़ूर सल्ल० के ताल्लुक़ में लोगों का दख़ल हो जाएगा, (यानी लोगों की वजह से मेरे और हुज़ूर सल्ल० के ताल्लुक़ में फ़र्क़ आ जाएगा) और अल्लाह की क़सम ! (मदीना) वापसी तक मैं उनकी बात ज़रूर मानता रहूंगा। जब ये दोनों फ़ौजें (मदीना मुनव्वरा) वापस पहुंचीं, तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से बात की और उनसे (हज़रत अबू उबैदा रज़ि० की) शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आगे मैं तुम मुहाजिरों का अमीर सिर्फ़ तुममें से ही बनाया करूंगा, (किसी और को नहीं बनाऊंगा)[1]।

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 319

जनता पर अमीर के हक़

हज़रत सलमा बिन शहाब अब्दी रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ जनता के लोगो ! हमारे तुम पर कुछ हक़ हैं। हमारी ग़ैर-मौजूदगी में भी तुम हमारे साथ ख़ैरख़्वाही (भला चाहना) का मामला करो (हमारी मौजूदगी में तो करना ही है और भलाई के कामों में हमारी मदद करो और अल्लाह के नज़दीक इमाम की बुर्दबारी और नर्मी से ज़्यादा पसन्दीदा और लोगों के लिए ज़्यादा फ़ायदेमंद कोई चीज़ नहीं है और इमाम के जिहालत वाले रवैए से ज़्यादा नापसन्दीदा अल्लाह के नज़दीक कोई चीज़ नहीं है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उकैम रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह के नज़दीक कोई बुर्दबारी इमाम की बुर्दबारी और नर्मी से ज़्यादा महबूब नहीं है और अल्लाह के नज़दीक कोई जिहालत इमाम की जिहालत से ज़्यादा नापसन्दीदा नहीं है और अपने साथ पेश आने वाले मामलों में जो माफ़ करने और नज़रंदाज़ करने से काम लेगा, उसे सुकून मिलेगा और जो अपनी ज़ात के बारे में लोगों से इंसाफ़ करेगा, उसे अपने काम में कामियाबी मिलेगी और इताअत में ज़िल्लत बरदाश्त करना गुनाहों में ज़ाहिरी इज़्ज़त मिलने से नेकी के ज़्यादा क़रीब है।[2]

अमीरों (ज़िम्मेदारों) को बुरा-भला कहने से रोका गया

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से जो हमारे बड़े थे, उन्होंने हमें (अमीरों के बारे में कुछ बातों से) मना किया (और वे कुछ बातें ये हैं कि) तुम अपने अमीरों को बुरा-भला न कहो और उनको धोखा मत दो और उनकी नाफ़रमानी न करो और अल्लाह से डरते रहो और सब्र करो,

1. कंज़, भाग 3, पृ० 165, तबरी, भाग 5, पृ० 32
2. कंज़, भाग 3, पृ० 165

क्योंकि मौत या क़ियामत बहुत जल्द आने वाली है।[1]

अमीर के सामने ज़ुबान की हिफ़ाज़त करना

हज़रत उर्वः रह० कहते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में आया और मैंने उनसे कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! (यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का उपनाम है) हम अपने उन अमीरों के पास बैठते हैं और वे कोई बात कहते हैं और हमें मालूम है कि (यह बात ग़लत है और) यही बात कुछ और है, लेकिन हम उनकी बात की तस्दीक़ कर देते हैं और वे लोग ज़ुल्म का फ़ैसला करते हैं और हम उनको ताक़त पहुंचाते हैं और उनके इस फ़ैसले को अच्छा बताते हैं, आपका इस बारे में क्या ख़्याल है ?

उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! हम तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में इसे निफ़ाक़ (कपटाचार) समझा करते थे (कि दिल में कुछ और है और ज़ुबान से कुछ और ज़ाहिर कर रहा है), लेकिन मुझे पता नहीं, तुम लोग इसे क्या समझते हो ? (यानी अमीर के सामने हक़ बात न कह सके, तो उसके ग़लत को भी तो सही न कहे)[2]

(हज़रत आसिम के वालिद) हज़रत मुहम्मद रह० कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से कहा, हम अपने बादशाह के पास जाते हैं और हमको उसके सामने (उसकी वजह से) कुछ ऐसी बातें ज़ुबान से कहनी पड़ती हैं कि उसके पास से बाहर आकर उनके ख़िलाफ़ कहते हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, हम इसे निफ़ाक़ कहा करते थे।[3]

इमाम बुख़ारी ने हज़रत मुहम्मद बिन ज़ैद रह० से इस जैसी हदीस रिवायत की है, जिसमें यह मज़्मून भी है कि हम उसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में निफ़ाक़ समझता करते थे।[4]

हज़रत मुजाहिद रह० कहते हैं, एक आदमी हज़रत इब्ने उमर रज़ि०

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 168
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 165
3. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 164
4. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 382

के पास आया, तो उससे हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारा हज़रत अबू अनीस (ज़ह्हाक बिन क़ैस) रह० के साथ कैसा रवैया है?

उसने कहा, जब हम उनसे मिलते हैं, तो हम उनके सामने वह बात कहते हैं जो उनको पसन्द हो और जब उनके पास से चले जाते हैं, तो फिर कुछ और कहते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में तो हम इसे निफ़ाक़ समझा करते थे।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हमने इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हम जब इन (अमीरों) के पास जाते हैं तो यह बात कहते हैं, जो वह चाहते हैं और जब उनके पास से बाहर चले जाते हैं, तो उसके ख़िलाफ़ कहते हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में हम इसे निफ़ाक़ समझा करते थे।[2]

हज़रत अलक़मा बिन वक़्क़ास रह० कहते हैं, एक बेकार आदमी था जो अमीरों के पास जाकर उनको हंसाया करता था। उससे मेरे दादा ने कहा, ऐ फ़्लां! तेरा नाश हो, तुम इन अमीरों के पास जाकर क्यों हंसाते हो? (ऐसा करना छोड़ दो) क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत बिलाल हारिस मुज़नी रज़ि० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कई बार बन्दा अल्लाह की रिज़ा वाला एक बोल ऐसा बोल देता है, जिसका इंसानों पर बहुत ज़्यादा असर होता है और इतना असरदार होने का उसे गुमान भी नहीं होता और इस एक बोल की वजह से अल्लाह उससे राज़ी हो जाते हैं और उससे मुलाक़ात के दिन यानी क़ियामत के दिन तक उससे राज़ी रहते हैं और कभी बन्दा अल्लाह की नाराज़ी वाला एक बोल ऐसा बोल देता है, जिसका इंसानों पर बहुत ज़्यादा असर होता है और उसे इतना असरदार होने का गुमान भी नहीं होता। इस एक बोल की वजह से अल्लाह

1. कंजुल उम्माल, भाग 1, पृ० 93
2. हुलीया, भाग 4, पृ० 332

उससे नाराज़ हो जाते हैं और उससे मुलाक़ात के दिन यानी क़ियामत के दिन तक उससे नाराज़ रहते हैं।[1]

हज़रत अलक़मा रह० कहते हैं, हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, मैंने देखा है कि तुम इन अमीरों के पास बहुत ज़्यादा जाते हो, देख लो, तुम इनसे क्या बातें करते हो? क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि आदमी अल्लाह की रिज़ा वाला एक बोल ऐसा बोल देता है और पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अपने आपको फ़ित्नों की जगहों से बचाओ, किसी ने उनसे पूछा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! फ़ित्नों की जगहें कौन-सी हैं?

उनसे फ़रमाया, अमीरों के दरवाज़े कि तुममें से एक आदमी अमीर के पास जाता है और उसकी ग़लत बात की तस्दीक़ करता है और (उसकी तारीफ़ करते हुए) ऐसी ख़ूबी का तज़्किरा करता है, जो उसमें नहीं है।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझसे मेरे वालिद (हज़रत अब्बास रज़ि०) ने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! मैं देख रहा हूं कि अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उमर रज़ि०) तुम्हें बुलाते हैं और तुम्हें अपने क़रीब बिठाते हैं और हुज़ूर सल्ल० के दूसरे सहाबा के साथ तुमसे भी मश्विरा लेते हैं, इसलिए तुम मेरी तीन बातें याद रखना—

1. अल्लाह से डरते रहना,

2. कभी उनके तजुर्बे में यह बात न आए कि तुमने झूठ बोला है, यानी कभी उनके सामने झूठ न बोलना और उनका कोई रहस्य (राज़) न खोलना,

3. और कभी उनके पास किसी की ग़ीबत न करना।

हज़रत आमिर कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से कहा, इन

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 165
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 165
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 227

तीन बातों में से हर बात एक हज़ार (दिरहम) से बेहतर है।

उन्होंने फ़रमाया, नहीं, इनमें से हर एक दस हज़ार (दिरहम) से बेहतर है।[1]

हज़रत शाबी रह० कहते हैं, हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से फ़रमाया, मैं देख रहा हूं कि यह आदमी यानी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० तुम्हारा बड़ा आदर करते हैं और तुम्हें अपने क़रीब बिठाते हैं और तुम्हें उन लोगों में यानी उन बड़े सहाबा में शामिल कर दिया है कि इन जैसे तुम नहीं हो। मेरी तीन बातें याद रखना—

1. कभी उनके तजुर्बे में यह बात न आए कि तुमने झूठ बोला है,
2. कभी उनका कोई रहस्य न आउट करना,
3. और उनके पास किसी की ग़ीबत बिल्कुल न करना।[2]

अमीर के सामने हक़ बात कहना और जब वह अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई हुक्म दे तो उसके हुक्म को मानने से इंकार कर देना

हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने एक बार हज़रत उबई बिन काब रज़ि० की (पढ़ी हुई) एक आयत का इंकार किया (कि यह क़ुरआन में नहीं है या क़ुरआन में इस तरह नहीं है।)

हज़रत उबई ने कहा, मैंने इस आयत को हुज़ूर सल्ल० से सुना है और तुम तो बक़ीअ बाज़ार में ख़रीदने-बेचने में लगे रहते हो, (इसलिए तुम्हें यह आयत हुज़ूर सल्ल० से सुनने का मौक़ा नहीं मिला।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने ठीक कहा। मैंने तुम्हारी आयत का जान-बूझ कर इंकार तुम्हें आज़माने के लिए किया, ताकि पता चले कि तुममें कोई ऐसा आदमी है जो (अमीर के सामने) हक़ बात कहे

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 318, हैसमी, भाग 4, पृ० 221
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 197

सके। उस अमीर में कोई भलाई नहीं है, जिसके सामने हक़ बात न कही जा सके और न वह ख़ुद हक़ बात कह सके।[1]

हज़रत अबू मिजलज़ रह० कहते हैं, हज़रत उबई बिन काब रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ

तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, तुमने ग़लत पढ़ा।

हज़रत उबई ने कहा, (मैंने ठीक पढ़ा है), आपकी ग़लती ज़्यादा है।

किसी आदमी ने (हज़रत उबई से) कहा, आप अमीरुल मोमिनीन (की बात) को ग़लत कह रहे हैं?

हज़रत उबई ने कहा, मैं तुमसे ज़्यादा अमीरुल मोमिनीन की इज़्ज़त और अदब करने वाला हूं, लेकिन चूंकि उनकी बात क़ुरआन के ख़िलाफ़ थी, इस वजह से मैंने क़ुरआन के मुक़ाबले में उनकी बात को ग़लत कहा है और यह नहीं हो सकता कि मैं क़ुरआन को ग़लत कहूं और अमीरुल मोमिनीन की (ग़लत) बात को ठीक कहूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत उबई ठीक कहते हैं।[2]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० एक मज्लिस में थे और उनके आस-पास मुहाजिर और अंसार सहाबा बैठे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा यह बताना कि अगर मैं किसी काम में ढील बरतूं, तो तुम क्या करोगे? तमाम लोग अदब की वजह से ख़ामोश रहे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपनी बात को दो तीन बार दोहराया, तो हज़रत बशीर बिन साद ने फ़रमाया, अगर आप ऐसा करेंगे, तो हम आपको ऐसा सीधा कर देंगे जैसे तीर को सीधा किया जाता है।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने (ख़ुश होकर) फ़रमाया, फिर तो तुम लोग ही (अमीर की मज्लिस में बैठने के क़ाबिल हो), फिर तो तुम लोग

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 2
2. कंज़, भाग 1, पृ० 285

ही (अमीर की मज्लिस के क़ाबिल हो।)[1]

हज़रत मूसा बिन अबी ईसा रह० कहते हैं, हज़्रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० क़बीला बनू हारिसा की पानी की सबील के लिए आए, वहां उन्हें हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ि० मिले। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मुहम्मद ! मुझे कैसा पाते हो ?

उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं आपको वैसा पाता हूं, जैसा मैं आपको चाहता हूं और जैसा हर वह आदमी चाहता है, जो आपके लिए भला चाहता है। मैं देख रहा हूं कि आप माल जमा करने में ख़ूब ज़ोरदार हैं, लेकिन आप ख़ुद माल से बचते हैं और उसे इंसाफ़ से बांटते हैं। अगर आप टेढ़े हो गए, तो हम आपको ऐसा सीधा कर देंगे जैसे औज़ार से तीर को सीधा किया जाता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने (ख़ुश होकर) फ़रमाया, अच्छा, (तुम मुझे कह रहे हो कि) अगर आप टेढ़े हो गए तो हम आपको ऐसा सीधा कर देंगे जैसे औज़ार से तीर को सीधा किया जाता है। फिर फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है कि उसने मुझे ऐसे लोगों में (अमीर) बनाया कि मैं अगर टेढ़ा हो जाऊं, तो वे मुझे सीधा कर दें।[2]

हज़रत अबू क़बील कहते हैं, हज़रत मुआविया बिन अबू सुफ़ियान रज़ि० जुमा के दिन मिंबर पर चढ़े और अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया, यह (इज्तिमाई) माल हमारा है और ख़िराज (टैक्स) का माल और लड़े बिना मिलने वाला ग़नीमत का माल भी हमारा है, जिसे चाहेंगे देंगे और जिसे चाहेंगे, नहीं देंगे। इस पर किसी ने कुछ नहीं कहा।

अगले जुमा को भी उन्होंने (ख़ुत्बे में) यही बात कही। फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। जब तीसरा जुमा आया, तो उन्होंने ख़ुत्बे में फिर वही बात कही, तो मस्जिद में हाज़िर लोगों में से एक आदमी खड़ा हुआ और उसने कहा, हरगिज़ नहीं। यह (इज्तिमाई) माल हमारा है और यह ख़िराज का माल और ग़नीमत का माल हमारा है। इसलिए जो हमारे

1. कंज़, भाग 3, पृ० 148
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 381

और इसके बीच रोक बनेगा, हम अपनी तलवारों से उसको अल्लाह के फ़ैसले की ओर ले जाएंगे।

हज़रत मुआविया (मिंबर) से नीचे उतर आए और आदमी को बुलाने के लिए पैग़ाम भेज दिया (और जब वह आ गया तो) उसे अंदर बुला लिया। लोग कहने लगे, यह आदमी तो हलाक हो गया। फिर लोग अन्दर गए, तो उन्होंने देखा कि वह आदमी तो हज़रत मुआविया के साथ तख़्त पर बैठा हुआ है।

हज़रत मुआविया ने लोगों से कहा, इस आदमी ने मुझे ज़िंदा कर दिया, अल्लाह इसे ज़िंदा रखे। मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सलम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मेरे बाद ऐसे अमीर होंगे कि अगर वे कोई (ग़लत) बात कहेंगे तो कोई उनका खंडन न कर सकेगा। वे आग में एक दूसरे पर ऐसे अंधाधुंध गिरेंगे, जैसे (किसी पेड़ के ऊपर से) बन्दर एक दूसरे पर छलांग लगाते हैं। चुनांचे मैंने पहले जुमा को यह (ग़लत) बात (जान-बूझ कर) कही थी। किसी ने मेरा खंडन न किया, जिससे मुझे डर लगा कि कहीं मैं (आग में गिरने वाले) उन अमीरों में से न हूं। फिर मैंने दूसरे जुमा को वही बात दोबारा कही, तो फिर मेरा किसी ने खंडन न किया। इस पर मैंने अपने दिल में कहा, मैं तो ज़रूर उन्हीं अमीरों में से हूं। फिर मैंने तीसरे जुमा को यही बात तीसरी बार कही तो इस आदमी ने खड़े होकर मेरा खंडन किया। इस तरह इसने मुझे ज़िंदा कर दिया। अल्लाह इसे ज़िंदा रखे।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन हकीम बिन हिज़ाम रह० कहते हैं, हज़रत अबू उबैदा शामदेश के गवर्नर थे। उन्होंने एक मुक़ामी (स्थानीय) ज़िम्मी (ग़ैर-मुस्लिम) को (जिज़या न देने पर) सज़ा दी। हज़रत ख़ालिद (बिन वलीद) ने खड़े होकर हज़रत उबैदा से (सज़ा देने के बारे में) बात की। लोगों ने ख़ालिद से कहा, आपने तो अमीर को नाराज़ कर दिया।

उन्होंने कहा, मेरा इरादा तो उन्हें नाराज़ करने का नहीं था, बल्कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से इस बारे में एक हदीस सुनी थी। वह हदीस

1. हैसमी, भाग 3, पृ० 236

उन्हें बताना चाहता था और वह यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब उन लोगों को होगा, जो दुनिया में लोगों को सबसे ज़्यादा सज़ा देंगे।[1]

हज़रत हसन रह० कहते हैं, ज़ियाद ने हज़रत हकम बिन अम्र ग़िफ़ारी रज़ि० को (फ़ौज का अमीर बनाकर) ख़ुरासान भेजा। उनको वहां ग़नीमत का बहुत-सा माल मिला। ज़ियाद ने उनको यह ख़त लिखा—

'अम्मा बादु, अमीरुल मोमिनीन (हज़रत मुआविया रज़ि०) ने (मुझे) यह लिखा है कि ग़नीमत के माल में से सारा सोना-चांदी उनके लिए अलग कर लिया जाए। (इसलिए) आप सोना-चांदी मुसलमानों में न बांटें।'

हज़रत हकम ने जवाब में ज़ियाद को यह ख़त लिखा—

'अम्मा बाद! तुमने मुझे ख़त लिखा है, जिसमें तुमने अमीरुल मोमिनीन के ख़त का ज़िक्र किया है, लेकिन मुझे अल्लाह की किताब अमीरुल मोमिनीन के ख़त से पहले मिल चुकी है। (और अमीरुल मोमिनीन का ख़त अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ है। इसलिए मैं उसे नहीं मान सकता) और मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि अगर सारे आसमान और ज़मीन किसी बन्दे पर बन्द हो जाएं और वह आदमी अल्लाह से डरता रहे तो अल्लाह उसके लिए उनके दर्मियान में से निकलने का रास्ता ज़रूर बना देंगे। वस्सलाम!'

और हज़रत हकम ने एक आदमी को हुक्म दिया, उसने मुसलमानों से यह एलान किया कि सुबह ग़नीमत का माल लेने के लिए आ जाओ। (चुनांचे लोग सुबह आए) और उन्होंने मुसलमानों में ग़नीमत का वह सारा माल (सोने-चांदी समेत) बांट दिया।

जब हज़रत मुआविया को पता चला कि हज़रत हकम ने ग़नीमत का माल सारा मुसलमानों में बांट दिया है, तो उन्होंने आदमी भेजे, जिन्होंने हज़रत हकम के पांव में बेड़ियां डालकर क़ैद कर दिया। इसी

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 403, हैसमी, भाग 5, पृ० 234

क़ैद में उनका इंतिक़ाल हुआ और उनको ख़ुरासान ही में दफ़्न किया। उन्होंने यह भी फ़रमाया था कि मैं (इस बारे में मुआविया से अल्लाह के यहां) झगड़ा करूंगा।[1]

इब्ने अब्दुल बर ने इसी जैसी हदीस ज़िक्र की है, लेकिन उसमें यह भी है कि हज़रत हकम ने मुसलमानों में ग़नीमत का माल बांट दिया और अल्लाह से यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! (इन हालात में) अगर तेरे पास मेरे लिए ख़ैर हो तो तू मुझे अपनी ओर बुला ले। चुनांचे उनका इलाक़ा ख़ुरासान के मर्व शहर में इंतिक़ाल हो गया।[2]

इसाबा में यह है कि सही बात यह है कि जब उनके पास ज़ियाद के नाराज़ होने का ख़त आया, तो उन्होंने अपने लिए (मरने की) दुआ की और उनका इंतिक़ाल हो गया।[3]

हज़रत इब्राहीम बिन अता अपने बाप (हज़रत अता) से नक़ल करते हैं कि ज़ियाद या इब्ने ज़ियाद ने हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ि० को सदक़ा वूसल करने के लिए भेजा। जब वह वापस आए तो एक दिरहम भी लेकर न आए, तो उनसे ज़ियाद या इब्ने ज़ियाद ने कहा, माल कहां है?

उन्होंने कहा, क्या तुमने मुझे माल के लिए भेजा था? हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में जैसे हम सदक़े लिया करते थे, वैसे हमने सदक़े लिए और हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में जहां ख़र्च किया करते थे, वहां हमने ख़र्च कर दिए।[4] (यानी वहां के हक़दारों में बांट दिए)

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 442
2. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 316
3. इसाबा, भाग 1, पृ० 347
4. हाकिम, भाग 2, पृ० 471

अमीर पर रियाया (पब्लिक) के हक़

हज़रत अस्वद (बिन यज़ीद) रह० कहते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि० के पास कोई वफ़्द आता तो उनके अमीर के बारे में पूछते कि क्या वह बीमार की बीमारपुर्सी करता है? क्या ग़ुलाम की बात सुनता है? जो ज़रूरतमंद उसके दरवाज़े पर खड़ा होता है, उसके साथ उसका रवैया कैसा होता है? अगर वफ़्द वाले इन बातों में से किसी के जवाब में न कह देते, उस अमीर को हटा दिया जाता।[1]

हज़रत इब्राहीम रह० कहते हैं जब हज़रत उमर रज़ि० किसी को (किसी इलाक़े का) गवर्नर बनाते और उस इलाक़े से उनके पास वफ़्द आता, तो हज़रत उमर रज़ि० उनसे (एक गवर्नर के बारे में) पूछते कि तुम्हारा अमीर कैसा है? क्या वह ग़ुलामों की बीमारपुर्सी करता है? क्या वह जनाज़े के साथ जाता है? उसका दरवाज़ा कैसा है? क्या वह नर्म है? अगर वे कहते कि उसका दरवाज़ा नर्म है (हर एक को अन्दर जाने की इजाज़त है) और ग़ुलामों की बीमारपुर्सी करता है, तब तो उसे गवर्नर रहने देते, वरना आदमी भेजकर उसको गवर्नरी से हटा देते।[2]

हज़रत आसिम बिन अबी नजूद कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० जब अपने गवर्नरों को (अलग-अलग इलाक़ों में गवर्नर बनाकर) भेजा करते, तो उन पर ये शर्तें लगाते कि तुम लोग तुर्की घोड़े पर सवार नहीं हुआ करोगे और छने हुए आटे की चपाती नहीं खाया करोगे और बारीक कपड़ा नहीं पहना करोगे और ज़रूरतमंदों पर अपने दरवाज़े बन्द नहीं करोगे, अगर तुमने इनमें से कोई काम कर लिया, तो सज़ा के हक़दार बन जाओगे, फिर विदा करने के लिए उनके साथ थोड़ी दूर चलते। जब वापस आने लगते तो उनसे फ़रमाते, मैंने तुमको मुसलमानों के ख़ून (बहाने) और उनकी खाल (उधेड़ने) पर और उन्हें बे-आबरू करने पर और उनके माल (छीनने) पर मुसल्लत नहीं किया, बल्कि मैं तुम्हें (उस

1. कंज़, भाग 3, पृ० 66, तबरी, भाग 5, पृ० 33
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 166

इलाक़े में) इसलिए भेज रहा हूं ताकि तुम वहां के मुसलमानों में नमाज़ क़ायम करो और उनमें ग़नीमत का उनका माल बांटो और उनमें इंसाफ़ के फ़ैसले करो और जब तुम्हें कोई ऐसा मामला पेश आ जाए जिसका हुक्म तुम पर साफ़ न हो तो उसे मेरे सामने पेश करो। ज़रा ग़ौर से सुनो ! अरबों को न मारना, इस तरह तुम उनको ज़लील कर दोगे और उनको इस्लामी बार्डर पर जमा करके वतन वापसी से रोक न देना, इस तरह तुम उनको फ़ित्ने में डाल दोगे और उनके ख़िलाफ़ ऐसे जुर्म का दावा न करना जो उन्होंने न किया हो, इस तरह तुम उनको महरूम कर दोगे और कुरआन को (हदीस वग़ैरह से) अलग और मुम्ताज़ करके रखना यानी कुरआन के साथ हदीसें न मिलाना।[1]

हज़रत अबू हुसैन से इसी हदीस जैसे मतलब वाली छोटी-सी हदीस रिवायत की गई है और उसमें आगे यह मज़्मून भी है कि कुरआन को अलग और मुम्ताज़ करके रखो और हज़रत मुहम्मद सल्ल० से रिवायत कम किया करो और इस काम में मैं तुम्हारा शरीक हूं।

और हज़रत उमर रज़ि० अपने गवर्नरों से बदला दिलवाया करते थे। जब उनसे उनके किसी गवर्नर की शिकायत की जाती तो उस गवर्नर को और शिकयत करने वाले को एक जगह जमा करते (और गवर्नर के सामने शिकायत सुनते)। अगर उस गवर्नर के ख़िलाफ़ कोई ऐसी बात साबित हो जाती, जिस पर उसकी पकड़ ज़रूरी होती, तो हज़रत उमर रज़ि० उसकी पकड़ फ़रमाते।[2]

हज़रत अबू ख़ुज़ैमा बिन साबित रह० कहते हैं जब हज़रत उमर रज़ि० किसी को गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाते तो अंसार और दूसरे लोगों की एक जमाअत को उस पर गवाह बनाते और उससे फ़रमाते, मैंने तुमको मुसलमानों का ख़ून बहाने के लिए गवर्नर नहीं बनाया है। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[3]

1. कंज़, भाग 3, पृ० 148
2. तबरी, भाग 5, पृ० 19
3. कंज़, भाग 3, पृ० 48

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साबित रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने आदमी भेजकर हज़रत सईद बिन आमिर जुमही रज़ि० को बुलाया और उनसे फ़रमाया, हम तुम्हें लोगों का अमीर बना रहे हैं। उनको लेकर दुश्मन के इलाक़े में जाओ और उनको लेकर दुश्मन से जिहाद करो।

उन्होंने कहा, ऐ उमर! आप मुझे आज़माइश में न डालें।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। तुम लोग ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी मेरे कंधों पर डालकर मुझे अकेला छोड़कर ख़ुद अलग हो जाना चाहते हो। मैं तुम्हें ऐसे लोगों का अमीर बनाकर भेजा रहा हूं कि तुम उनसे अफ़ज़ल नहीं हो और मैं तुम्हें इसलिए भी नहीं भेज रहा हूं कि तुम मार-मारकर उनकी खाल उधेड़ दो और तुम उनकी बेइज़्ज़ती करो, बल्कि इसलिए भेजा रहा हूं कि तुम उनको लेकर उनके दुश्मन से जिहाद करो और उनका माले ग़नीमत उनमें बांटो।[1]

हज़रत अबू मूसा ने फ़रमाया, (ऐ लोगो!) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने मुझे तुम्हारे पास इसलिए भेजा है, ताकि मैं तुम्हें तुम्हारे रब की किताब और तुम्हारे नबी सल्ल० की सुन्नत सिखाऊं और तुम्हारे लिए तुम्हारे रास्ते साफ़ कर दूं।[2]

अमीर के आम मुसलमानों से अपनी ज़िंदगी का मेयार ऊंचा करने पर और दरबान मुक़र्रर करके ज़रूरतमंदों से छिप जाने पर नकीर

हज़रत अबू सालेह ग़िफ़ारी रह० कहते हैं, हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने (मिस्र से) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को ख़त लिखा कि हमने (यहां) जामा मस्जिद के पास आपके लिए एक मकान की जगह ख़ास कर दी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उसके जवाब में लिखा कि हिजाज़ में रहने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 149
2. कंज़, भाग 3, पृ० 149, हैसमी, भाग 5, पृ० 213

वाले आदमी के लिए मिस्र में घर कैसे हो सकता है? और हज़रत अम्र रज़ि० को हुक्म दिया कि उस जगह को मुसलमानों के लिए बाज़ार बना दें।[1]

हज़रत अबू तमीम जैशानी रज़ि० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को यह ख़त लिखा—

'अम्मा बाद, मुझे यह बात पहुंची है कि तुमने एक मिंबर बनाया है। (जब तुम) उस पर (बयान करते हो, तो) लोगों की गरदनों से बुलन्द हो जाते हो। क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं है कि तुम (ज़मीन पर) खड़े होकर बयान करो। इस तरह मुसलमान तुम्हारी एड़ियों के नीचे होंगे। मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि तुम उसे तोड़ दो।'[2]

हज़रत उस्मान रज़ि० फ़रमाते हैं, हम लोग आज़र बाईजान में थे, वहां हज़रत उमर रज़ि० ने हमें यह ख़त लिखा—

'ऐ उत्बा बिन फ़रक़द! यह मुल्क व माल तुम्हारी मेहनत से नहीं मिला है और न ही तुम्हारे मां-बाप की मेहनत से मिला है, इसलिए तुम अपने घर में जो चीज़ पेट भरकर खाते हो, वही चीज़ सारे मुसलमानों को उनके घरों में पेट भरकर खिलाओ और नाज़ व नेमत की ज़िंदगी से और मुश्रिकों जैसी शक्ल अख़्तियार करने से और रेशम पहनने से बचो।'[3]

हज़रत उर्वः बिन रुवैम रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० लोगों के हालात का जायज़ा ले रहे थे। उनके पास से हम्स के लोग गुज़रे। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, तुम्हारे अमीर (हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त रज़ि०)

उन लोगों ने कहा, बेहतरीन अमीर हैं। बस एक बात है कि उन्होंने एक बालाख़ाना बना लिया है, जिसमें रहते हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उस अमीर को ख़त लिखा और अपना क़ासिद (दूत) भी साथ

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 148
2. कंज़, भाग 3, पृ० 166
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 458

में भेजा और उस क़ासिद को हुक्म दिया कि वहां जाकर उस बालाख़ाने को जला दे।

जब वह क़ासिद वहां पहुंचा तो उसने लकड़ियां जमा करके उस बालाख़ाने के दरवाज़े को आग लगा दी। जब यह बात उस अमीर को बताई गई, तो उसने कहा, इसे कुछ मत कहो, यह अमीरुल मोमिनीन का भेजा हुआ क़ासिद है। फिर उस क़ासिद ने उनको (हज़रत उमर रज़ि० का) ख़त दिया। वह ख़त पढ़ते ही सवार होकर हज़रत उमर रज़ि० की ओर चल दिए।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने उनको देखा, तो उनसे फ़रमाया, (मदीना से बाहर पथरीले मैदान) हर्रा में मेरे पास पहुंच जाओ। हर्रा में सदक़ा के ऊंट थे। (जब वह हर्रा हज़रत उमर के पास पहुंच गए, तो उनसे) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अपने कपड़े उतार दो। (उन्होंने कपड़े उतार दिए) हज़रत उमर रज़ि० ने उनको ऊंट के ऊन की चादर पहनने के लिए दी, (जिसे उन्होंने पहन लिया) फिर उनसे फ़रमाया, (इस कुंएं से) पानी निकालो और इन ऊंटों को पानी पिलाओ। वह यों ही हाथ से कुंएं से पानी निकालते रहे, यहां कि थक गए।

हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, दुनिया में और कितना रहोगे?

उन्होंने कहा, बस थोड़ी सी मुद्दत!

फ़रमाया, बस इस (छोटी-सी ज़िंदगी) के लिए तुमने वह बालाख़ाना बनवाया था, जिसकी वजह से तुम मिस्कीन, बेवा और यतीम इंसानों (की पहुंच) से ऊपर हो गए थे। जाओ, अपने काम पर वापस जाओ और आगे ऐसा न करना।[1]

हज़रत अत्ताब बिन रिफ़ाआ रह० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़बर मिली कि हज़रत साद रज़ि० ने एक महल बनवाया है और उस पर दरवाज़ा भी लगवाया है और यह भी कहा है कि अब (बाज़ार का) शोर आना ख़त्म हो गया है। (यह महल उन्होंने इसी वजह से बनाया था कि बाज़ार की आवाज़ें बहुत आती थीं, जिसकी वजह यह

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 166

सही तरह से काम नहीं कर सकते थे।)

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० को भेजा और जब भी हज़रत उमर रज़ि० को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करवाना होता था, तो उनको ही भेजा करते थे और उनसे फ़रमाया, साद के पास जाओ और उन (के महल) का दरवाज़ा जला दो।

चुनांचे हज़रत मुहम्मद कूफ़ा पहुंच गए और हज़रत साद के दरवाज़े पर पहुंचते ही अपनी चक़माक़ निकाली और उससे आग जलाई, फिर दरवाज़े को आग लगा दी।

लोगों ने आकर हज़रत साद को इसकी ख़बर दी और आग लगाने वाले का हुलिया बयान किया, तो हज़रत साद उनको पहचान गए और उनके पास बाहर आए। हज़रत मुहम्मद ने उनसे कहा, अमीरुल मोमिनीन को आपकी तरफ़ से यह बात पहुंची है कि आपने कहा है कि अब शोर आना ख़त्म हो गया है।

हज़रत साद ने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि उन्होंने यह बात नहीं कही है।

हज़रत मुहम्मद ने कहा, हमें तो जो हुक्म दिया गया है, वह कर रहे हैं और अब आप जो कह रहे हैं, वह आपकी ओर से (अमीरुल मोमिनीन को) पहुंचा देंगे।

हज़रत साद हज़रत मुहम्मद को रास्ते के लिए तोशा पेश करने लगे, लेकिन हज़रत मुहम्मद ने लेने से इंकार कर दिया और अपनी सवारी पर सवार होकर चल दिए और मदीना मुनव्वरा पहुंच गए।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने उनको देखा, तो फ़रमाया, (तुम बड़ी जल्दी वापस आ गए हो) अगर हम तुम्हारे बारे में अच्छी राय न रखते, तो हम यही समझते कि तुमने काम पूरा नहीं किया।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने कहा, मैंने सफ़र बहुत तेज़ी से किया है और आपने जिस काम के लिए भेजा था वह भी मैंने पूरा कर दिया है। और हज़रत साद रज़ि० माज़रत कर रहे थे और क़सम खाकर कह रहे थे कि उन्होंने ये बात नहीं कही है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या हज़रत साद रज़ि० ने तुमको सफ़र के लिए तोशा दिया था?

हज़रत मुहम्मद ने कहा, नहीं, लेकिन आपने मुझे तोशा क्यों नहीं दिया?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने इस बात को बुरा समझा कि तुम्हारे लिए तोशे का हुक्म दूं कि इस तरह तुम्हें तो दुनिया में तोशा मिल जाएगा, लेकिन मेरी आख़िरत में पकड़ हो जाएगी, क्योंकि मेरे आस-पास मदीना वाले हैं जो बेचारे भूख से मर रहे हैं, क्या तुमने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह फ़रमाते हुए नहीं सुना कि यह नहीं हो सकता कि मोमिन ख़ुद तो अपना पेट भर ले और उसका पड़ोसी भूखा हो।[1]

हज़रत अबूबक्र और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० इसी हदीस को थोड़े में नक़ल करते हैं और उसमें यह मज़्मून है कि हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़बर मिली कि हज़रत साद ने अपना दरबान मुक़र्रर कर लिया है और लोगों से अलग रहते हैं और अपना दरवाज़ा बन्द रखते हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० को भेजा था और उनसे फ़रमाया, जब तुम वहां पहुंचो और तुमको हज़रत साद का दरवाज़ा बन्द मिले तो तुम उसको आग लगा देना।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से शामदेश जाने की इजाज़त मांगी। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, सिर्फ़ इस शर्त पर इजाज़त दे सकता हूं कि तुम वहां जाकर किसी शहर के गवर्नर बन जाओ।

हज़रत अबुद्दर्दा ने कहा, मैं गवर्नर बनने के लिए तैयार नहीं हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर मैं इजाज़त नहीं देता।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, मैं वहां जाकर लोगों को उनके नबी सल्ल० की सुन्नत सिखाऊंगा और उन्हें नमाज़ पढ़ाऊंगा। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उनको इजाज़त दे दी और वह शामदेश चले गए।

(इसके कुछ दिनों बाद) हज़रत उमर रज़ि० शाम देश तशरीफ़ ले

1. कंज़, भाग 3, पृ० 165, इसाबा, भाग 3, पृ० 384, हैसमी, भाग 8, पृ० 167
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 168

गए। जब सहाबा किराम के क़रीब पहुंचे, तो हज़रत उमर रज़ि० रुक गए, यहां तक कि शाम हो गई। जब रात का अंधेरा छा गया, तो (अपने दरबान से) फ़रमाया, ऐ यरफ़ा! हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ि० के पास ले चलो और उनको देखो, उनके पास मज्लिस जमी हुई होगी और चिराग़ जल रहा होगा, और मुसलमानों के माले ग़नीमत में से लेकर रेशम और दीबाज बिछा रखा होगा।

(इन लोगों के रेशम को बिछाने की वजह यह थी कि एक तो इन लोगों का शाम देश में क़ियाम वक़्ती था। वहां ठहरने के जो पहले से इंतिज़ाम होंगे, उन्हीं में कुछ दिन ठहरकर उन्हें आगे जाना था। दूसरे हो सकता है, उनका ताना रेशम का हो और बाना सूती वग़ैरह हलाल धागे का हो। तीसरे अगर वह पूरा रेशम ही का था, तो कुछ सहाबा रज़ि० रेशम के बिछाने को जायज़ समझते थे, अलबत्ता रेशम के पहनने के हराम होने में कोई मतभेद न था) तुम उन्हें सलाम करोगे, वे तुम्हारे सलाम का जवाब देंगे, तुम उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगेगे वह पहले यह पूछेंगे, तुम कौन हो, फिर तुमको इजाज़त देंगे।

चुनांचे हम लोग वहां से चले और हज़रत यज़ीद के दरवाज़े पर पहुंचे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अस्सलामु अलैकुम!

हज़रत यज़ीद ने कहा, व अलैकुम अस्सलामु।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं अन्दर आ जाऊं?

उन्होंने कहा, आप कौन हैं?

हज़रत यरफ़ा ने कहा, यह वह हस्ती है, जो तुम्हारे साथ नागवार सुलूक करेगी। यह अमीरुल मोमिनीन हैं। हज़रत यज़ीद ने दरवाज़ा खोला। (हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत यरफ़ा अन्दर दाख़िल हुए।) इन लोगों ने देखा कि मज्लिस जमी हुई है, चिराग़ जल रहा है, रेशम और दीबाज बिछा हुआ है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ यरफ़ा! जल्दी से दरवाज़ा बन्द करो, दरवाज़ा बन्द करो और एक कोड़ा हज़रत यज़ीद की कनपटी पर रसीद किया और सारा सामान समेटकर घर के दर्मियान में रख दिया और उन लोगों से कहा, मेरे वापस आने तक तुममें से कोई भी इस

जगह से न हिले, सब यहीं रहें।

फिर ये दोनों हज़रत यज़ीद के पास से बाहर आए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ यरफ़ा ! आओ चलें, हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के पास चलते हैं और उनको देखते हैं, उनके पास भी महफ़िल जमी हुई होगी और चिराग़ जल रहा होगा और मुसलमानों के माले ग़नीमत में से दीबाज बिछा रखा होगा। तुम उन्हें सलाम करोगे, वे तुम्हारे सलाम का जवाब देंगे, फिर तुम उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगोगे, वे इजाज़त देने से पहले पूछेंगे कि तुम कौन हो ?

चुनांचे हज़रत अम्र के दरवाज़े पर पहुंचे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम !

हज़रत अम्र ने जवाब दिया, व अलैकुम अस्सलाम

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं अन्दर आ जाऊं ?

हज़रत अम्र ने कहा, आप कौन हैं ?

हज़रत यरफ़ा ने कहा, यह वह हस्ती हैं जो तुम्हारे साथ नागवार सुलूक करेगी, यह अमीरुल मोमिनीन हैं। हज़रत अम्र रज़ि० ने दरवाजा खोला, (ये दोनों लोग अन्दर गए) अंदर जाकर उन लोगों को देखा कि मज्लिस लगी हुई है और चिराग़ जल रहा है और रेशम और दीबाज बिछा रखा है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ यरफ़ा ! जल्दी से दरवाज़ा बन्द करो, दरवाज़ा बन्द करो। फिर एक कोड़ा हज़रत अम्र की कनपटी पर रसीद किया, फिर सारा सामान समेटकर घर के दर्मियान रख दिया, फिर उन लोगों से फ़रमाया, मेरे वापस आने तक तुममें से कोई भी अपनी जगह से न हिले। सब यहीं रहें।

फिर ये दोनों हज़रत अम्र के पास से बाहर आए। हज़रत उमर ने फ़रमाया, ऐ यरफ़ा ! आओ चलें, हज़रत अबू मूसा अशअरी के पास चलते हैं और उनको देखते हैं, उनके पास मज्लिस जमी हुई होगी और चिराग़ जल रहा होगा और मुसलमानों के माले ग़नीमत में से ऊनी कपड़ा बिछा रखा होगा। तुम उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगोगे, वह इजाज़त देने से पहले मालूम करेंगे कि तुम कौन हो ?

चुनांचे हम उनके पास गए, तो वहां भी मज्लिस जमी हुई थी, चिराग़ जल रहा था और ऊनी कपड़ा बिछा हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी कनपटी पर एक कोड़ा रसीद किया और फ़रमाया, ऐ अबू मूसा! तुम भी (यहां आकर बदल गए हो और वही कर रहे हो, जो दूसरे कर रहे हैं?)

हज़रत अबू मूसा ने कहा, मैंने तो कम किया है। मेरे साथियों ने जो कुछ कर लिया है, वह आप देख ही चुके हैं (वह मेरे से ज़्यादा है) अल्लाह की क़सम! मुझे भी उतना मिला, जितना मेरे साथियों को मिला।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर यह क्या है?

उन्होंने कहा कि मक़ामी लोग कहते हैं कि इतना करने से ही (अमारत का) काम ठीक चलेगा। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने सारा सामान समेटकर घर के बीच में रख दिया और उन लोगों से फ़रमाया, मेरे वापस आने तक तुममें से कोई भी यहां से बाहर न जाए, सब यहीं रहें। जब हम उनके पास से बाहर आए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ यरफ़ा! आओ, हम अपने भाई (हज़रत अबुद्दर्दा के पास चलें और उनको देखें, न उनके यहां मज्लिस लगी हुई होगी, न चिराग़ होगा और न उनके दरवाज़े को बन्द करने की कोई चीज़ कुंडी वग़ैरह होगी, कंकरियां बिछा रखी होंगी, पालान के नीचे डालने वाले कम्बल को तकिया बना रखा होगा। उन पर पतली चादर होगी जिसमें उन्हें सर्दी लग रही होगी। तुम उन्हें सलाम करोगे, वह तुम्हारे सलाम का जवाब देंगे, फिर तुम उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगोगे, वह यह मालूम किए बग़ैर ही तुमको इजाज़त दे देंगे कि तुम कौन हो? चुनांचे हम दोनों चले, यहां तक कि हज़रत अबुद्दर्दा के दरवाज़े पर पहुंचकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम!

हज़रत अबुद्दर्दा ने कहा, व अलैकस्सलाम।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं अन्दर आ जाऊं?

उन्होंने कहा, आ जाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने दरवाज़े को धक्का दिया, तो उसकी कुंडी नहीं थी। हम अन्दर गए तो कमरे में अंधेरा था।

हज़रत उमर रज़ि० उनको (अंधेरे की वजह से) टटोलने लगे, यहां तक कि उनका हाथ हज़रत अबुद्दर्दा को लग गया। फिर उनके तकिए को टटोला तो वह पालान का कम्बल था, फिर उनके बिछौने को टटोला, तो वे कंकरियां थीं, फिर उनके ऊपर की चादर को टटोला, तो वह पतली सी चादर थी। हज़रत अबुद्दर्दा ने कहा, यह कौन है? क्या यह अमीरुल मोमिनीन हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप बड़ी देर से आए हैं। मैं साल भर से आपका इंतिज़ार कर रहा हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, क्या मैंने आप पर वुसअत नहीं की? और क्या मैंने आप पर फ़्लां-फ़्लां एहसान नहीं किए?

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, ऐ उमर! क्या आपको वह हदीस याद नहीं है जो हुज़ूर सल्ल० ने हमसे बयान की थी?

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, कौन-सी हदीस?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, तुममें से एक आदमी के पास ज़िंदगी गुज़ारने का इतना सामान होना चाहिए जितना सवार के पास सफ़र का तोशा होता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां (याद है)।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, ऐ उमर! हुज़ूर सल्ल० के बाद हमने क्या किया? फिर दोनों एक दूसरे को हुज़ूर सल्ल० की बातें याद दिलाकर सुबह तक रोते रहे।[1]

रियाया के हालात की ख़बर रखना

हज़रत अबू सालेह ग़िफ़ारी रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने ख़िदमत के लिए मदीना के किनारे में रहने वाली एक अंधी बुढ़िया की खोज की, ताकि रात को उसका पानी भर दिया करें

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 77

और उसके काम-काज कर दिया करें, लेकिन जब हज़रत उमर रज़ि० उसके यहां गए, तो उन्होंने देखा कि कोई आदमी उनसे पहले आकर ख़िदमत के सारे काम बुढ़िया की मंशा के मुताबिक़ कर चुका है। हज़रत उमर रज़ि० ने कई बार कोशिश की, लेकिन उस आदमी से पहले न आ सके। वही पहले आकर तमाम काम कर जाता।

आख़िर इसका पता लगाने के लिए हज़रत उमर रज़ि० रास्ते में घात लगाकर बैठ गए। थोड़ी देर में देखा कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० (उस बुढ़िया की ख़िदमत करने) आ रहे हैं और यही वह साहब हैं जो हज़रत उमर रज़ि० से पहले आकर ख़िदमत कर रहे थे, हालांकि वह उस वक़्त ख़लीफ़ा थे। उन्हें देखकर उमर रज़ि० ने कहा, मेरी उम्र की क़सम! आप हैं (जो मुझसे भी पहले आकर इस बुढ़िया की ख़िदमत कर रहे थे।)[1]

हज़रत औज़ाई रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० रात के अंधेरे में बाहर निकले तो हज़रत तलहा रज़ि० की नज़र उन पर पड़ी। उन्होंने देखा कि हज़रत उमर रज़ि० पहले एक घर में दाख़िल हुए, फिर दूसरे घर में। सुबह को हज़रत तलहा रज़ि० उस घर में गए तो देखा कि घर में एक अंधी और अपाहिज (विकलांग) बुढ़िया है। हज़रत तलहा ने पूछा, क्या बात है? यह आदमी तुम्हारे पास किस लिए आता है?

उस बुढ़िया ने कहा, यह इतने अर्से से यानी वर्षों से मेरी देख-भाल कर रहे हैं, मेरी ज़रूरत के काम कर देते हैं और मेरे घर के पाख़ाने वग़ैरह तमाम चीज़ों की सफ़ाई कर देते हैं। इस पर हज़रत तलहा ने कहा, ऐ तलहा! तेरी मां तुझे गुम करे, क्या तुम उमर रज़ि० की लग़्ज़िशों को खोजते हो?[2]

ज़ाहिरी अमल के मुताबिक़ फ़ैसला करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद रह० कहते हैं, मैंने हज़रत

1. कंज़, भाग 4, पृ० 347
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 48

उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को यह फ़रमाते हुए सुना कि हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में लोगों के साथ वह्य के मुताबिक़ मामला किया जाता था, (जिसमें कभी-कभी उनके छिपे हुए कामों के मुताबिक़ अल्लाह फ़ैसला किया करते थे) और अब वह्य का सिलसिला बन्द हो गया है। अब हम तुम्हारे ज़ाहिरी अमलों के मुताबिक़ मामला करेंगे। जो हमारे सामने अच्छे काम करेगा, हम उसे अमीन समझकर अपने क़रीब करेंगे। हमें उसके अन्दरूनी अमल से कोई वास्ता नहीं होगा। उसके अन्दरूनी अमल का अल्लाह ही मुहासबा फ़रमाएंगे और जो हमारे सामने बुरे काम करेगा, न हम उसे अमानतदार समझेंगे और न उसे सच्चा मानेंगे। अगरचे वह यह कहता रहे कि उसका अन्दरून बहुत अच्छा है।[1]

हज़रत हसन रह० कहते हैं, (ख़लीफ़ा बनने के बाद) हज़रत उमर रज़ि० ने सबसे पहले जो बयान फ़रमाया, वह यह था कि अल्लाह की हम्द व सना बयान की। इसके बाद फ़रमाया—

'अम्माबादु (अब मेरा तुमसे वास्ता पड़ गया है)। मेरी आज़माइश तुम्हारे ज़रिए से होगी और तुम्हारी मेरे ज़रिए से और मेरे दोनों साथियों (हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के बाद मुझे तुम लोगों का ख़लीफ़ा बना दिया गया है, जो हमारे पास मौजूद होगा, उससे तो हम ख़ुद मामला कर लेंगे और जो हमसे ग़ायब होगा, उस पर हम ताक़तवर और अमानतदार आदमी को अमीर बनाएंगे, इसलिए अब जो आदमी अच्छी तरह चलेगा, उसके साथ हम अच्छा व्यवहार करेंगे और जो ग़लत चलेगा, उसे हम सज़ा देंगे। अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए।'[2]

अमीर बनाकर उसके अमल पर निगाह रखना

हज़रत ताऊस रह० कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह बताओ, अगर मैं तुम्हारा अमीर ऐसे आदमी को बना दूं, जो इन आदमियों में सबसे अच्छा हो, जिनको मैं जानता हूं। फिर मैं उसे अदल

1. कंज़, भाग 3, पृ० 147, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 201
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 196, कंज़, भाग 3, पृ० 147

व इंसाफ़ से चलने का हुक्म भी दे दूं, तो क्या इस तरह मैं अपनी ज़िम्मेदारी से छुटकारा पा जाऊंगा?

लोगों ने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, नहीं, जब तक मैं यह न देख लूं कि वह मेरे कहने के मुताबिक़ काम कर रहा है या नहीं।[1]

बारी-बारी फ़ौज भेजना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं कि अंसार की एक फ़ौज अपने अमीर के साथ फ़ारस देश में थी। हर साल हज़रत उमर रज़ि० बारी-बारी फ़ौज भेजा करते थे (दूसरी फ़ौज भेजकर पहली फ़ौज को बुला लिया करते थे), लेकिन इस साल हज़रत उमर रज़ि० और कामों में लगे रहे, जिसकी वजह से बाद में दूसरी फ़ौज न भेज सके।

जब तै किया हुआ वक़्त पूरा हो गया तो यह सरहद वाली (अंसार की) फ़ौज वापस आ गयी। (हज़रत उमर ने उनकी जगह पर काम करने वाली फ़ौज अभी भेजी नहीं थी, इसलिए) हज़रत उमर रज़ि० उनसे नाराज़ हुए और उन्हें ख़ूब धमकाया और यह सब हुज़ूर सल्ल० के सहाबा थे, तो उन्होंने कहा, ऐ उमर! आप तो हमें भूल गए और हुज़ूर सल्ल० ने हमारे बारे में आपको यह हुक्म दिया था कि बारी-बारी फ़ौज भेजते रहना। आपने उस पर अमल न किया।[2]

जो तक्लीफ़ आम मुसलमानों पर आए, उसमें अमीर का मुसलमानों की रियायत करना

हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं, जब अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उमर रज़ि०) ने यह सुना कि शाम में लोग प्लेग के शिकार हो रहे हैं, तो उन्होंने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को यह ख़त लिखा, मुझे एक

1. कंज़, भाग 3, पृ० 165
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 148

काम में तुम्हारी ज़रूरत पेश आ गई है, मैं तुम्हारे बग़ैर उस काम को नहीं कर सकता, इसलिए मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि अगर तुम्हें मेरा यह ख़त रात में मिले तो सुबह होने से पहले और अगर दिन में मिले तो शाम होने से पहले तुम सवार होकर मेरी ओर चल पड़ो।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने (ख़त पढ़कर) कहा, अमीरुल मोमिनीन को जो ज़रूरत पेश आई है, मैं उसे समझ गया। जो आदमी अब दुनिया में रहने वाला नहीं है, वह उसे बाक़ी रखना चाहते हैं। (यानी हज़रत उमर रज़ि० चाहते हैं कि मैं प्लेग की वबा वाला इलाक़ा छोड़कर मदीना चला जाऊं और इस तरह मौत से बच जाऊं, लेकिन मैं मौत से बचने वाला नहीं हूं।)

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को जवाब में यह लिखा कि मैं मुसलमानों की एक फ़ौज में हूं। जान बचाने के लिए मैं इन्हें छोड़कर जाने को तैयार नहीं हूं और जो ज़रूरत आपको पेश आई है, मैं उसे समझ गया हूं। आप उसे बाक़ी रखना चाहते हैं जो अब दुनिया में बाक़ी रहने वाला नहीं है। इसलिए जब मेरा यह ख़त आपकी ख़िदमत में पहुंच जाए तो आप मुझे अपनी क़सम के पूरा करने से माफ़ फ़रमा दें और मुझे यहीं ठहरने की इजाज़त दे दें।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने उनका ख़त पढ़ा तो उनकी आंखें डबडबा आईं और रोने लगे, तो मज्लिस में मौजूद लोगों ने कहा, क्या हज़रत अबू उबैदा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, लेकिन यों समझो कि हो गया। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को ख़त लिखा कि जोर्डन का सारा इलाक़ा वबा से मुतास्सिर हो चुका है और जाबिया शहर वबा से बचा हुआ है, इसलिए आप मुसलमानों को लेकर वहां चले जाएं।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने यह ख़त पढ़कर फ़रमाया, अमीरुल मोमिनीन की यह बात तो हम ज़रूर मानेंगे।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने मुझे हुक्म दिया कि मैं सवार होकर लोगों को उनकी क़ियामगाहों में

ठहराऊं। इतने में मेरी बीवी को भी प्लेग हो गया। मैं (हज़रत अबू उबैदा रज़ि०) को बताने के लिए उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ख़ुद जाकर लोगों को उनकी क़ियामगाहों में ठहराने लगे, फिर ख़ुद उनको प्लेग हो गया, जिसमें उनका इंतिक़ाल हो गया और फिर प्लेग की वबा ख़त्म हो गई।

हज़रत अबुल मुवज्जह रज़ि० कहते हैं हज़रत अबू उबैदा रज़ि० के साथ छत्तीस हज़ार की फ़ौज थी, जिनमें से सिर्फ़ छः हज़ार ज़िंदा बचे। (बाक़ी तीस हज़ार का उस प्लेग में इंतिक़ाल हो गया)। हज़रत सुफ़ियान बिन उऐना ने इससे छोटी रिवायत नक़ल की है।[1]

हाकिम ने इसी रिवायत को हज़रत सुफ़ियान के वास्ते से नक़ल किया है, उसमें यह है कि हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने (हज़रत उमर रज़ि० का ख़त पढ़कर) कहा, अल्लाह अमीरुल मोमिनीन पर रहम करे, वह उन लोगों को बचाना चाहते हैं, जो अब बचने वाले नहीं हैं। फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़त लिखा कि मेरे साथ मुसलमानों की एक फ़ौज है, जिनमें प्लेग की बीमारी फैली हुई है। मैं अपनी जान बचाने के लिए उनको छोड़कर नहीं जा सकता।[2]

इब्ने इस्हाक़ ने हज़रत तारिक़ के वास्ते से इसी रिवायत को नक़ल किया है। उसमें यह है कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपको जिस वजह से मेरी ज़रूरत है, वह मैं समझ गया हूं। मेरे साथ मुसलमानों की एक फ़ौज है। मैं अपनी जान बचाने के लिए उनको नहीं छोड़ सकता हूं। इसलिए जब तक अल्लाह मेरे और उनके बारे में फ़ैसला न कर दे, मैं उनसे जुदा नहीं हो सकता, इसलिए ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप अपनी क़सम को पूरा करने से मुझे माफ़ फ़रमाएं और मुझे अपनी फ़ौज में रहने दें।[3]

अमीर का मेहरबान होना

हज़रत अबू जाफ़र कहते हैं, हज़रत अबू उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर

1. कंज़, भाग 2, पृ० 334
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 263
3. बिदाया, भाग 7, पृ० 78, तबरी, भाग 4, पृ० 201

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बहरैन से कुछ क़ैदी लेकर आए। आपने उन क़ैदियों में एक औरत को देखा कि वह रो रही है। आपने उससे पूछा, तुम्हें क्या हुआ?

उसने कहा, उन्होंने यानी हज़रत अबू उसैद रज़ि० ने मेरे बेटे को बेच दिया है। (मैं बेटे की जुदाई में रो रही हूं।)

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू उसैद रज़ि० से पूछा, क्या तुमने उस औरत के बेटे को बेचा है?

उन्होंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, किन लोगों के हाथ बेचा है?

उन्होंने कहा, क़बीला बनू अबस के हाथ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ख़ुद सवार होकर उस क़बीला के पास जाओ और उस बच्चे को लेकर आओ।[1]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि अचानक उन्होंने एक औरत के चीख़ने की आवाज़ सुनी, तो उन्होंने (अपने दरबान से) कहा, ऐ यरफ़ा! देखो, यह आवाज़ कैसी है?

वह देखकर आए तो अर्ज़ किया कि एक क़ुरैशी लड़की की मां बेची जा रही है। (इस वजह से वह लड़की रो रही है।) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जाओ और मुहाजिरीन और अंसार को मेरे पास बुलाकर लाओ। थोड़ी देर नहीं गुज़री थी कि घर और कमरा (हुजरा) (इन लोगों से) भर गया।

अल्लाह की हम्द व सना के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या आप लोग जानते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो दीन लेकर आए थे, उसमें रिश्तों का काटना भी शामिल है? उन लोगों ने फ़रमाया, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन रिश्तों का यह काटना आज आप लोगों में बहुत फैल गया है, फिर यह

1. कंज़, भाग 2, पृ० 229

आयत पढ़ी—

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ

(سورت محمد آیت ۲۲)

'सो अगर तुम अलग-अलग रहो तो क्या तुमको यह डर भी है कि तुम दुनिया में फ़साद मचाओ और आपस में रिश्तों को काटो।'

(सूरः मुहम्मद आयत 22)

फिर फ़रमाया, इससे ज़्यादा सख़्त रिश्तों का काटना और कौन-सा हो सकता है कि एक (आज़ाद) औरत की मां को बेचा जा रहा है, हालांकि अल्लाह ने आप लोगों को अब बहुत फैलाव दे रखा है।

उन लोगों ने कहा, इस बारे में आप जैसा मुनासिब समझें, ज़रूर करें। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उन तमाम इलाक़ों को ख़त लिखा कि किसी आज़ाद इंसान की मां को न बेचा जाए, क्योंकि उसे बेचना रिश्तों का काटना भी है और हलाल भी नहीं है।[1]

हज़रत अबू उस्मान नहदी रह० कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू असद के एक आदमी को एक काम का अमीर मुक़र्रर किया। वह हज़रत उमर रज़ि० का तक़र्रुर नामा लेने आए। इतने में हज़रत उमर रज़ि० का एक बच्चा उनके पास लाया गया। हज़रत उमर रज़ि० ने उस बच्चे का बोसा लिया। उस असदी ने ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप इस बच्चे का बोसा ले रहे हैं? अल्लाह की क़सम! मैंने आज तक कभी किसी बच्चे का बोसा नहीं लिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (जब तुम्हारे दिल में बच्चों के बारे में मुहब्बत नहीं है) फिर तो अल्लाह की क़सम! दूसरे लोगों के बारे में मुहब्बत और कम होगी। लाओ हमारा तक़र्रुर नामा वापस दे दो, आगे तुम मेरी तरफ़ से कभी अमीर न बनना और हज़रत उमर रज़ि० ने उसे अमीर नहीं बनाया।[2]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 226
2. बैहक़ी व हन्नाद, भाग 9, पृ० 41, कंज़, भाग 3, पृ० 165

और इसी वाक़िए को दीनूरी ने मुहम्मद बिन सलाम के वास्ते से नक़ल किया है और इसमें यह मज़्मून है कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम्हारे दिल से मुहब्बत निकाल ली गई है, तो इसमें मेरा क्या गुनाह है? अल्लाह तो अपने बन्दों में से उन्हीं बन्दों पर रहम फ़रमाते हैं जो दूसरों पर मेहरबान होते हैं और हज़रत उमर रज़ि० ने उसे हटा दिया और फ़रमाया, जब तुम अपने बच्चे पर शफ़क़त (मुहब्बत) नहीं करते हो तो दूसरे लोगों पर कैसे कर सकोगे?[1]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 310

हुज़ूरे अकरम सल्ल० और आपके सहाबा किराम रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत उर्वः रह० कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मक्का जीते जाने के मौक़े पर एक औरत ने चोरी की। उस औरत की क़ौम वाले घबराकर हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० के पास गए, ताकि वह हुज़ूर सल्ल० से उस औरत की सिफ़ारिश कर दें (और यों उनकी औरत चोरी की सज़ा से बच जाए।)

जब हज़रत उसामा रज़ि० ने इस बारे में हुज़ूर सल्ल० से बात की तो आपका मुबारक चेहरा (ग़ुस्से की वजह से) बदल गया और फ़रमाया, (ऐ उसामा !) तुम मुझसे अल्लाह की हदों के बारे में (सिफ़ारिश की) बात कर रहे हो? (हज़रत उसामा रज़ि० समझ गए कि सिफ़ारिश करके उन्होंने ग़लती की है, इसलिए फ़ौरन) हज़रत उसामा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मेरे लिए इस्तिग़फ़ार फ़रमाएं।

शाम को हुज़ूर सल्ल० बयान फ़रमाने खड़े हुए। पहले अल्लाह की शान के मुनासिब सना बयान की, फिर फ़रमाया, 'तुमसे पहले लोग सिर्फ़ इसी वजह से हलाक हुए कि जब उनका ताक़तवर और इज़्ज़तदार आदमी चोरी करता, जो उसे छोड़ देते और जब कमज़ोर आदमी चोरी करता, तो उस पर शरई हद क़ायम करते। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करेगी, तो मैं उसका हाथ ज़रूर काटूंगा।'

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया, जिस पर उस औरत का हाथ काटा गया और उसने बहुत अच्छी तौबा की और उसने शादी भी की। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं, इसके बाद वह औरत (मेरे पास) आया करती थी और मैं उसकी ज़रूरत की बात हुज़ूर सल्ल० के सामने

पेश किया करती।[1]

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हम लोग हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुनैन की लड़ाई के मौक़े पर निकले। जब हमारा (दुश्मन से) सामना हुआ, तो अक्सर मुसलमान बिखर गए, (अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० और कुछ सहाबा रज़ि० लड़ाई के मैदान में जमे रहे।) मैंने देखा कि एक मुश्रिक आदमी एक मुसलमान पर चढ़ा हुआ है। मैंने पीछे से उस मुश्रिक के कंधे पर तलवार का वार किया, जिससे उसकी ज़िरह कट गई (और कंधे की रग भी कट गई। वह घायल तो हो गया, लेकिन) वह मुझ पर हमलावर हुआ और मुझे इस ज़ोर से भींचा कि मैं मरने के क़रीब हो गया (लेकिन ज़्यादा ख़ून निकल जाने की वजह से वह कमज़ोर हो गया) आख़िर उस पर मौत की परछाईं साफ़ दिखाई देने लगी और उसने मुझे छोड़ दिया (और फिर वह मर गया)।

मैं हज़रत उमर रज़ि० से मिला। मैंने उनसे कहा, लोगों को क्या हुआ (कि इन मुसलमानों को हार का मुंह देखना पड़ा)?

उन्होंने कहा, अल्लाह का हुक्म ऐसा ही था। (बाद में कुफ़्फ़ार पूरी तरह हारे और मुसलमान जीत गए।) फिर मुसलमान (लड़ाई के मैदान से) वापस आए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे हुए थे। आपने फ़रमाया, जिसने किसी काफ़िर को क़त्ल किया है और उसके पास गवाह भी हैं, तो उस मक़्तूल का सामान उसे ही मिलेगा।

मैंने खड़े होकर कहा, कौन मेरे लिए गवाही देता है? (जब किसी ने जवाब न दिया तो) मैं बैठ गया। फिर आपने इसी तरह इर्शाद फ़रमाया। मैंने फिर कहा, कौन मेरे लिए गवाही देता है? और फिर मैं बैठ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फिर वही इर्शाद फ़रमाया। मैंने फिर कहा, कौन मेरे लिए गवाही देता है? और फिर मैं बैठ गया। आपने फिर वही इर्शाद फ़रमाया। मैं फि खड़ा हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू क़तादा! तुम्हें क्या हुआ?

मैंने आपको सारा क़िस्सा सुनाया, तो एक आदमी ने कहा, यह सब

1. बिदाया, भाग, पृ० 318, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 26

कहते हैं। उस मक़्तूल काफ़िर का सामान मेरे पास है, (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !) आप इनको किसी तरह मुझसे राज़ी फरमा दें (कि यह उस मक़्तूल का सामान मेरे पास रहने दें।)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, नहीं। अल्लाह की क़सम! ऐसे नहीं हो सकता। जब इनकी बात ठीक है तो यह सामान इनको ही मिलना चाहिए। तुम्हें देने का मतलब तो यह होगा कि अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से लड़ने वाले अल्लाह के शेर को मिलने वाला सामान हुज़ूर सल्ल० तुम्हें दे दें।

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, अबूबक्र रज़ि० ठीक कहते हैं, तुम इनको वह सामान दे दो।

चुनांचे उसने मुझे वह सामान दे दिया, जिससे मैंने बनू सलमा के इलाक़े में एक बाग़ ख़रीदा। यह वह पहला माल था, जो मैंने इस्लाम में जमा किया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हदरद अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, उनके ज़िम्मे एक यहूदी के चार दिरहम क़र्ज़ थे। इस यहूदी ने उस क़र्ज़ की वसूली में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मदद लेनी चाही और यों कहा, ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! मेरे इस आदमी के ज़िम्मे चार दिरहम क़र्ज़ हैं यह इन दिरहमों के बारे में मुझ पर ग़ालिब आ चुके हैं। (यानी मैं कई बार इनसे तक़ाज़ा कर चुका हूं, लेकिन यह मुझे देते नहीं हैं।) हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, इसका हक़ इसे दे दो।

उन्होंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, देने की मेरे पास बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसका हक़ इसे दे दो। उन्होंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! देने की बिल्कुल गुंजाइश नहीं है और मैंने इसे बताया था कि आप हमें ख़ैबर भेजेंगे और उम्मीद है कि आप हमें कुछ माले ग़नीमत देंगे, इसलिए वहां से वापसी पर इसका क़र्ज़ अदा कर दूंगा।

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 86, अबू दाऊद, भाग 2, पृ० 16, तिरमिज़ी, भाग 1, पृ० 202, इब्ने माजा, पृ० 209, बैहक़ी, भाग 2, पृ० 50

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसका हक़ अदा कर दो।

आपकी आदते शरीफ़ यह थी कि आप किसी बात को तीन बार से ज़्यादा नहीं फ़रमाते थे। (तीन बार फ़रमा देना पूरे एहतिमाम और ताकीद की निशानी थी) चुनांचे हज़रत इब्ने अबी हदरद बाज़ार गए, उनके सर पर पगड़ी थी और एक चादर बांध रखी थी। उन्होंने सर से पगड़ी उतारकर उसे लुंगी बना लिया और चादर खोलकर उस यहूदी से कहा, तुम मुझसे यह चादर ख़रीद लो। चुनांचे वह चादर उस यहूदी के हाथ चार दिरहम में बेच दी।

इतने में एक बुढ़िया का वहां से गुज़र हुआ। उसने यह हाल देखकर कहा, ऐ हुज़ूर सल्ल० के सहाबी! तुम्हें क्या हुआ? उन्होंने उसे सारा क़िस्सा सुनाया, तो उस बुढ़िया ने अपने ऊपर से चादर उतारकर उन पर डाल दी और कहा, यह चादर ले लो।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, अंसार के दो आदमी किसी ऐसी मीरास का झगड़ा लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, जिसके निशान मिट चुके थे और कोई गवाह भी उनके पास नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग मेरे पास अपने झगड़े लेकर आते हो और जिसके बारे में मुझ पर कोई वह्य नहीं उतरी, मैं उसमें अपनी राय से फ़ैसला करता हूं, इसलिए जिस आदमी की दलील की वजह से मैं उसके हक़ में फ़ैसला कर दूं, जिसकी वजह से वह अपने भाई का हक़ ले रहा है, तो उसे चाहिए कि वह अपने भाई का हक़ हरगिज़ न ले, क्योंकि मैं तो उसे आग का टुकड़ा दे रहा हूं और वह क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि यह टुकड़ा उसके गले का हार बना हुआ होगा।

इस पर वे दोनों रोने लगे और दोनों में से हर एक ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं अपना हक़ इसे देता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुमने यह इरादा कर लिया तो जाओ और हक़ पर चलो और इस मीरास को आपस में बांट लो और बांटने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 181, इसाबा, भाग 5, पृ० 295

के बाद क़ुरआअंदाज़ी कर लो और यह सब कुछ करने के बाद तुम दोनों में से हर एक अपने साथी को अपना हक़ माफ़ कर दे।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आराबी (बद्दू) का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर क़र्ज़ा था। वह आकर हुज़ूर सल्ल० से अपने क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने लगे और उसने हुज़ूर सल्ल० पर बड़ी सख़्ती की, यहां तक कि यह कह दिया कि जब तक आप मेरा क़र्ज़ा अदा नहीं करेंगे, मैं आपको तंग करता रहूंगा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे झिड़का और कहा, तेरा नास हो, तुम जानते हो कि तुम किससे बात कर रहे हो?

उसने कहा, मैं तो अपना हक़ मांग रहा हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने हक़ वाले का साथ क्यों न दिया? और फिर आपने हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस रज़ि० के पास पैग़ाम भेजा कि अगर तुम्हारे पास खजूरें हों, तो हमें उधार दे दो। जब हमारे पास आएंगी, तो हम तुम्हारा क़र्ज़ा अदा कर देंगे।

उन्होंने कहा, ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे क़र्ज़ लेकर उस आराबी का क़र्ज़ अदा कर दिया और जितना उसका क़र्ज़ था, उससे ज़्यादा उसे दिया।

उस आराबी ने कहा, आपने क़र्ज़ा पूरा अदा कर दिया, अल्लाह आपको पूरा बदला दे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हक़ का साथ देनेवाले लोगों में सबसे बेहतरीन लोग हैं और यह उम्मत पाकीज़ा नहीं हो सकती, जिसमें कमज़ोर आदमी बग़ैर किसी तक्लीफ़ और परेशानी के अपना हक़ वसूल न कर सके।[2]

हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० की बीवी हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस रज़ि० फ़रमाती हैं, बनू साइदा के एक आदमी की एक वसक़ खजूरें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे क़र्ज़ थीं। (एक वसक़ लगभग सवा पांच मन का होता है।) उस आदमी ने आकर हुज़ूर

1. कंज़, भाग 3, पृ० 182
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 271

सल्ल० से अपनी खजूरों का तक़ाज़ा किया। हुज़ूर सल्ल० ने एक अंसारी सहाबी से फ़रमाया कि इसका क़र्ज़ अदा कर दो। उन्होंने इसकी खजूरों से घटिया क़िस्म की खजूरें देनी चाहीं। उस आदमी ने लेने से इंकार कर दिया। उन अंसारी ने कहा, क्या तुम अल्लाह के रसूल सल्ल० को उनकी खजूरें वापस करते हो? उस आदमी ने कहा, हां और हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा अद्ल करने का कौन हक़दार है?

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० की आंखें डबडबा आईं और आपने फ़रमाया, यह ठीक कहता है। मुझसे ज़्यादा अद्ल करने का हक़दार कौन हो सकता है? और अल्लाह उस उम्मत को पाक नहीं फ़रमाते जिसका कमज़ोर आदमी ताक़तवर से अपना हक़ न ले सके और न उस पर ज़ोर दे सके, फिर फ़रमाया, ऐ ख़ौला! इसे गिनकर अदा कर दो, क्योंकि जिस मक़रूज़ के पास से क़र्ज़ख़्वाह ख़ुश होकर जाएगा, उसके लिए ज़मीन के जानवर और समुद्रों की मछलियां दुआ करेंगी और जिस मक़रूज़ के पास से क़र्ज़ा की अदाएगी के लिए माल है और वह अदा करने में टाल मटोल करता है तो अल्लाह हर दिन और रात के बदले में उसके लिए एक गुनाह लिखते हैं।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने जुमा के दिन खड़े होकर फ़रमाया, जब सुबह हो, तो तुम सदक़ा के ऊंट हमारे पास ले आओ, हम इन्हें बांटेंगे और हमारे पास इजाज़त के बग़ैर कोई न आए। एक औरत ने अपने शौहर से कहा, यह नकेल ले जाओ, शायद अल्लाह हमें भी कोई ऊंट दे दे। चुनांचे वह आदमी गया। उसने देखा कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० ऊंटों में दाख़िल हो रहे हैं। यह भी उन दोनों के साथ दाख़िल हो गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उसे देखकर फ़रमाया, तुम हमारे पास क्यों

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 380

आ गए? फिर उसके हाथ से नकेल लेकर उसे मारी। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ऊंटों के बांटने से फ़ारिग़ हुए, तो उस आदमी को बुलाया और उसे नकेल दी और फ़रमाया, तुम अपना बदला ले लो। तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, अल्लाह की क़सम! यह आपसे बिल्कुल बदला नहीं लेगा। आप इसे मुस्तक़िल आदत न बनाएं (कि अमीर तंबीह करने के लिए किसी को सज़ा दे, तो उससे बदला लिया जाए।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे क़ियामत के दिन अल्लाह से कौन बचाएगा? (इन लोगों में अल्लाह का डर बहुत ज़्यादा था) हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप (इसे कुछ देकर) राज़ी कर लें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने ग़ुलाम से कहा, तुम मेरे पास एक ऊंट, उसका कजावा और एक कम्बल और पांच दीनार लाओ। चुनांचे यह सब कुछ उस आदमी को देकर उसे राज़ी किया।[1]

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत शाबी रह० कहते हैं हज़रत उमर और हज़रत उबई बिन काब रज़ि० के बीच (खजूर के एक पेड़ के बारे में) झगड़ा हो गया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आओ, हम आपस के फ़ैसले के लिए किसी को सालिस (मध्यस्थ) मुक़र्रर कर लेते हैं। चुनांचे इन दोनों ने हज़रत ज़ैद बिन साबित को अपना सालिस बना लिया। चुनांचे ये लोग हज़रत ज़ैद के पास गए और हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम आपके पास इसलिए आए हैं ताकि आप हमारे बीच फ़ैसला कर दें (और अमीरुल मोमिनीन होकर मैं ख़ुद आपके पास इसलिए आया हूं, क्योंकि क़ायदा यह है कि) फ़ैसला करवाने वाले ख़ुद सालिस के घर आया करते हैं।

जब दोनों हज़रत ज़ैद के पास अन्दर दाख़िल हो गए, तो हज़रत ज़ैद ने हज़रत उमर को अपने बिस्तर के सिरहाने बिठाना चाहा और कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यहां तशरीफ़ रखें।

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 127

हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, यह पहला ज़ुल्म है जो आपने अपने फ़ैसले में किया है। मैं तो अपने मुख़ालिफ़ फ़रीक़ के पास बैठूंगा।

हज़रत उबई ने अपना दावा पेश किया, जिसका हज़रत उमर रज़ि० ने इंकार कर दिया।

हज़रत ज़ैद ने उबई से कहा (क़ायदे के मुताबिक़ इंकार करने पर मुद्दआ अलैहि को क़सम खानी पड़ती है, लेकिन मैं आपसे दरख़्वास्त करता हूं कि) आप अमीरुल मोमिनीन को क़सम खाने की ज़हमत न दें और मैं अमीरुल मोमिनीन के अलावा किसी और के लिए यह दरख़्वास्त नहीं कर सकता। हज़्रत उमर रज़ि० ने (इस रियायत को क़ुबूल न किया, बल्कि) क़सम खाई और उन्होंने क़सम खाकर कहा, हज़रत ज़ैद रज़ि० सही क़ाज़ी तब बन सकते हैं जबकि उनके नज़दीक उमर और एक आम मुसलमान बराबर हो।[1]

इब्ने असाकिर ने इसी क़िस्से को शाबी से नक़ल किया है और उसमें यह है कि खजूर के एक पेड़ काटने में हज़रत उबई बिन काब और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० में झगड़ा हो गया। इस पर हज़रत उबई रज़ि० रो पड़े और फ़रमाया, ऐ उमर ! क्या तुम्हारी ख़िलाफ़त में ऐसा हो रहा है? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आओ, आपस के फ़ैसले के लिए किसी को सालिस मुक़र्रर कर लेते हैं। हज़रत उबई ने कहा, हम ज़ैद रज़ि० को सालिस बना लेते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे भी पसंद है। चुनांचे दोनों गए और हज़रत ज़ैद के पास अन्दर दाख़िल हुए। आगे पीछे जैसी हदीस ज़िक्र की।[2]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रह० कहते हैं, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० का एक घर मदीना मुनव्वरा की मस्जिद (नबवी) के बिल्कुल साथ था। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे मस्जिद में शामिल करना चाहा, तो हज़रत अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, आप यह घर मेरे हाथ बेच

---

1. इब्ने असाकिर और बैहक़ी
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 174 और भाग 3, पृ० 181

दें। हज़रत अब्बास रज़ि० ने इंकार कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप यह घर मुझे हदिया ही कर दें। वह यह भी न माने, फिर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप ख़ुद ही यह घर मस्जिद में शामिल कर दें। उन्होंने इससे भी इंकार कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपको इन तीन कामों में से कोई एक काम तो करना ही पड़ेगा, लेकिन हज़रत अब्बास रज़ि० फिर भी तैयार न हुए। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा फिर किसी को आप सालिस मुक़र्रर कर लें जो हमारा फ़ैसला कर दे। उन्होंने हज़रत उबई बिन काब रज़ि० को मुक़र्रर किया।

ये दोनों अपना मुक़दमा उनके पास ले गए। हज़रत उबई रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, मेरा फ़ैसला यह है कि आप इनकी मर्ज़ी के बग़ैर इनसे यह घर नहीं ले सकते।

हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, आपको यह फ़ैसला अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन में मिला है या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में? उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० की हदीस में। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, वह हदीस क्या है?

हज़रत उबई रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० का यह फ़रमाते हुए सुना है कि हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अलैहि० ने जब बैतुल मक़्दिस को बनाना शुरू किया, तो जब भी वह कोई दीवार बनाते तो सुबह को वह गिरी हुई होती। आख़िर अल्लाह ने उनकी ओर यह वह्य भेजी कि अगर आप किसी की ज़मीन में बनाना चाहते हैं, तो पहले उसे राज़ी कर लें। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्बास रज़ि० को छोड़ दिया। बाद में हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपनी ख़ुशी से इस घर को मस्जिद में शामिल कर दिया।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने इरादा फ़रमाया कि हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब रज़ि० का घर लेकर मस्जिद (नबवी) में शामिल कर दें। हज़रत अब्बास रज़ि० ने उन्हें घर देने से इंकार कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं तो यह घर ज़रूर

1. अब्दुर्रज़्ज़ाक़

लूंगा ? हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, हज़रत उबई बिन काब से फ़ैसला करवा लो। हज़रत उमर ने कहा, ठीक है।

चुनांचे ये दोनों हज़रत उबई के पास गए और उनसे सारा क़िस्सा बयान किया। हज़रत उबई ने फ़रमाया, अल्लाह ने हज़रत सुलैमान बिन दाऊद अलै० की तरफ़ वह्य भेजी कि वे बैतुल मक़्दिस की तामीर करें। वह ज़मीन एक आदमी की थी। हज़रत सुलैमान ने उससे वह ज़मीन ख़रीदी। जब उसे क़ीमत अदा करने लगे, तो उस आदमी ने कहा, जो क़ीमत तुम मुझे दे रहे हो वह ज़्यादा बेहतर है या जो ज़मीन तुम मुझसे ले रहे हो, वह ज़्यादा बेहतर है?

हज़रत सुलैमान ने फ़रमाया, जो ज़मीन मैं तुमसे ले रहा हूं, वह ज़्यादा बेहतर है। इस पर उस आदमी ने कहा, तो फिर मैं इस क़ीमत पर राज़ी नहीं हूं। फिर हज़रत सुलैमान ने उसे पहले से ज़्यादा क़ीमत देकर ख़रीदा।

उस आदमी ने हज़रत सुलैमान के साथ दो तीन बार इसी तरह किया, (एक क़ीमत तै करके फिर उससे ज़्यादा की मांग कर देता।) आख़िर हज़रत सुलैमान ने उस पर यह शर्त लगाई कि तुम जितनी क़ीमत कह रहे हो, मैं उतने में ख़रीदता हूं, लेकिन तुम बाद में यह न पूछना कि ज़मीन और क़ीमत में से कौन सी चीज़ बेहतर है। चुनांचे उसकी बताई हुई क़ीमत पर ख़रीदने लगे तो उसने बारह हज़ार क़िन्तार सोना क़ीमत लगाई। (एक क़िन्तार चार हज़ार दीनार को कहते हैं।) हज़रत सुलैमान को यह क़ीमत बहुत ज़्यादा मालूम हुई तो अल्लाह ने उनकी ओर वह्य भेजी कि अगर तुम उसे यह क़ीमत अपने पास से दे रहे हो, तो फिर तो तुम जानो और अगर तुम हमारे दिए हुए माल में से दे रहे हो, तो फिर उसे इतना दो कि वह राज़ी हो जाए, चुनांचे हज़रत सुलैमान ने ऐसा ही किया और फिर हज़रत उबई ने फ़रमाया कि मेरा फ़ैसला यह है कि हज़रत अब्बास रज़ि० अपने घर के ज़्यादा हक़दार हैं। अगर उनका घर मस्जिद में शामिल करना ही है, तो फिर वह जिस तरह राज़ी हों, उन्हें राज़ी किया जाए।

इस पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, जब आपने मेरे हक़ में फ़ैसला

कर दिया है, तो मैं अब यह घर मुसलमानों के लिए सदक़ा करता हूं।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० की ख़िलाफ़त के ज़माने में मेरे भाई अब्दुर्रहमान ने और उनके साथ अबू सिरवआ उक़्बा बिन हारिस ने नबीज़ पी ली (पानी में खजूरें डाल दी जाती थीं, कुछ देर खजूरें पड़ी रहती थीं, जिससे वह पानी मीठा हो जाता था, उसे नबीज़ कहा जाता था। ज़्यादा देर पड़े रहने से उसमें नशा भी पैदा हो जाता था) जिससे उन्हें नशा हो गया।

सुबह को ये दोनों मिस्र के अमीर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के पास गए और उनसे कहा, (सज़ा देकर) हमें पाक कर दें, क्योंकि हमने एक मशरूब (पेय) पिया था, जिससे हमें नशा हो गया

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझसे मेरे भाई ने कहा, मुझे नशा हो गया था। मैंने उनसे कहा, घर चलो, मैं तुम्हें (सज़ा देकर) पाक कर दूंगा। मुझे यह मालूम नहीं था कि ये दोनों हज़रत अम्र के पास जा चुके हैं। फिर मेरे भाई ने मुझे बताया कि वह मिस्र के अमीर को यह बात बता चुके हैं, तो मैंने कहा, तुम घर चलो, मैं तुम्हारा सर मूंड दूंगा, ताकि तमाम लोगों के सामने तुम्हारा सर न मूंडा जाए। उस ज़माने का चलन यह था कि हद लगाने के साथ सर भी मूंड देते थे। चुनांचे वे दोनों घर चले गए। मैंने अपने भाई का सर अपने हाथ से मूंडा, फिर हज़रत अम्र ने उन पर शराब की हद लगाई।

हज़रत उमर रज़ि० को इस क़िस्से का पता चला तो उन्होंने हज़रत अम्र को ख़त लिखा कि अब्दुर्रहमान को मेरे पास बग़ैर कजावा के ऊंट पर सवार करके भेज दो। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। चुनांचे जब वह हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंचे, तो उन्होंने उसे कोड़े लगाए और अपना बेटा होने की वजह से उसे सज़ा दी, फिर उसे छोड़ दिया। इसके बाद वह एक महीना तो ठीक रहे, फिर तक़्दीरे इलाही ग़ालिब आ गई और उनका इंतिक़ाल हो गया। आम लोग यह समझते हैं कि हज़रत

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 260, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 13, कंज़, भाग 7, पृ० 65, 66

उमर रज़ि० के कोड़े लगाने से उनका इंतिक़ाल हुआ है, हालांकि उनका इंतिक़ाल हज़रत उमर रज़ि० के कोड़े लगाने से नहीं हुआ, (बल्कि फ़ितरी मौत मरे हैं।)[1]

हज़रत हसन रह० कहते हैं, एक औरत का शौहर गायब था। उसके पास किसी का आना-जाना था। हज़रत उमर रज़ि० को उससे खटक हुई। हज़रत उमर रज़ि० ने बुलाने के लिए उसके पास आदमी भेजा। उस आदमी ने उस औरत से कहा, हज़रत उमर रज़ि० के पास चलो, हज़रत उमर रज़ि० तुम्हें बुला रहे हैं। उसने कहा, हाय, मेरी हलाकत, मुझे उमर रज़ि० से क्या वास्ता? वह घर से चली। (वह पेट से थी।) अभी वह रास्ते में ही थी कि वह घबरा गई आज से उसे दर्द शुरू हो गया। वह एक घर में चली गई, जहां उसका बच्चा पैदा हुआ। बच्चा दो बार रोया और मर गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के साथियों से मश्विरा किया (कि मेरे डर की वजह से वह औरत घबरा गई और इस वजह से बच्चा वक़्त से पहले पैदा हो गया, इस वजह से वह बच्चा मर गया तो क्या उस बच्चे के यों मर जाने की वजह से मुझ पर कोई चीज़ शरई तौर पर ज़रूरी होती है?) कुछ सहाबा रज़ि० ने कहा, आप पर कोई चीज़ ज़रूरी नहीं होती, क्योंकि आप मुसलमानों के वाली हैं और (इस वजह से) आपके ज़िम्मे है कि आप उनको अदब सिखाएं, कोई कमी देखें तो उन्हें बुलाकर उन्हें तंबीह करें। हज़रत अली रज़ि० ख़ामोश थे। हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी ओर मुतवज्जह होकर कहा, इस बारे में आप क्या कहते हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अगर इन लोगों ने बग़ैर किसी दलील के सिर्फ़ अपनी राए से कही है तो इनकी राय ग़लत है और अगर इन्होंने आपको ख़ुश करने के लिए यह बात कही है, तो इन्होंने आपका भला नहीं चाहा। मेरी राय यह है कि इस बच्चे की दियत यानी ख़ूनबहा आपको देना होगा, क्योंकि आपके बुलाने की वजह से वह आपसे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 422, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 420

घबराई है, इसलिए यों बच्चे के वक़्त से पहले पैदा हो जाने की वजह आप ही हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि इस बच्चे का ख़ूनबहा सारे क़ुरैश से वसूल करें, इसलिए कि यह क़त्ल उनसे ख़ता के तौर पर वाक़े हुआ है।[1]

हज़रत अता रह० कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० अपने गवर्नरों को हुक्म दिया करते थे कि वे हज के मौक़े पर उनके पास आया करें। जब सारे गवर्नर आ जाते, तो (आम मुसलमानों को जमा करके) फ़रमाते, 'ऐ लोगो! मैंने अपने गवर्नर तुम्हारे यहां इसलिए नहीं भेजे हैं कि वे तुम्हारी खाल उधेड़ें या तुम्हारे माल पर क़ब्ज़ा करें या तुम्हें बेइज़्ज़त करें, बल्कि मैंने तो सिर्फ़ इसलिए इनको भेजा है ताकि तुम्हें एक दूसरे पर ज़ुल्म न करने दें और तुम्हारे बीच माले ग़नीमत बांटें, इसलिए जिसके साथ उसके खिलाफ़ किया गया हो, वह खड़ा हो जाए (और अपनी बात बताए)'

(चुनांचे एक बार उन्होंने गवर्नरों को जमा करके लोगों में यही एलान किया (तो सिर्फ़ एक आदमी खड़ा हुआ और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके फ्लां गवर्नर ने मुझे (ज़ुल्म की वजह से) सौ कोड़े मारे हैं। हज़रत उमर ने (उस गवर्नर से) कहा, तुमने उसे क्यों मारा? (और आदमी से कहा) उठ और इस गवर्नर से बदला ले।

इस पर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने खड़े होकर कहा, अगर आपने इस तरह गवर्नरों से बदला दिलाना शुरू कर दिया, तो फिर आपके पास बहुत ज़्यादा शिकायतें आने लग जाएंगी और यह गवर्नरों से बदला लेना ऐसा चलन बन जाएगा कि जो भी आपके बाद आएगा, उसे यह अपनाना पड़ेगा। (हालांकि अपने गवर्नरों से बदला दिलवाना हर अमीर के बस में नहीं है।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जब मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ज़ाते अक़्दस से बदला दिलवाने के लिए तैयार रहते हुए देखा है, तो मैं (अपने गवर्नर से) क्यों न बदला दिलवाऊं? हज़रत

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 300

अम्र ने कहा, आप हमें उस आदमी को राज़ी करने का मौक़ा दें। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा, चलो, तुम उसे राज़ी कर लो। चुनांचे उस गवर्नर ने हर कोड़े के बदले दो दीनार के हिसाब से दो सौ दीनार उस आदमी को बदले में दिए।[1]

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, मिस्र से एक आदमी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में आया और उसने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझ पर ज़ुल्म हुआ है, मैं आपकी पनाह लेना चाहता हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां, तुम मेरी मज़बूत पनाह में हो, तो उसने कहा, मैंने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के बेटे (मुहम्मद) से दौड़ने में मुक़ाबला किया, तो मैं उनसे आगे निकल गया, तो वह मुझे कोड़े मारने लगे और कहने लगे, मैं बड़े और शरीफ़ लोगों की औलाद हूं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अम्र रज़ि० को ख़त लिखा कि वह ख़ुद भी (मिस्र से मदीना मुनव्वरा) आएं और अपने साथ अपने उस बेटे को भी लाएं।

चुनांचे हज़रत अम्र (मदीना) अपने बेटे के साथ आए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह (शिकायत करने वाला) मिस्री कहां है? जब वह आ गया, तो उससे कहा, कोड़ा लो और इसे मारो। वह मिस्री कोड़े मारे जा रहा था और हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते जा रहे थे, कमीनों के बेटे को मारो।

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, उस मिस्री ने हज़रत अम्र के बेटे को ख़ूब पीटा और हम चाहते थे कि वह इन्हें ख़ूब पीटे और उसको मारना तब छोड़ा, जब हमें भी तक़ाज़ा हो गया कि वह अब और न मारे यानी उसने मारने में कोई कसर न छोड़ी। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उस मिस्री से फ़रमाया, अब हज़रत अम्र रज़ि० की चंदिया पर भी मारो। (हज़रत उमर रज़ि० का मक़सद इस पर तंबीह करना था कि हज़रत अम्र को अपने बेटे की ऐसी तर्बियत करनी चाहिए थी, जिससे उसमें किसी पर भी ज़ुल्म करने की जुर्रात पैदा न होती।)

1. इब्ने साद भाग 3, पृ० 211, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 419

उस मिस्री ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुझे तो इनके बेटे ने मारा था और मैंने इनसे बदला ले लिया है, (इसलिए मैं हज़रत अम्र को नहीं मारूंगा) इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अम्र रज़ि० से फ़रमाया, कब से तुमने लोगों को अपना ग़ुलाम बना रखा है? हालांकि उनकी मांओं ने उनको आज़ाद जना है। हज़रत अम्र ने कहा, मुझे इस क़िस्से का बिल्कुल पता नहीं चला और न यह मिस्री मेरे पास शिकायत लेकर आया (वरना मैं अपने बेटे को ख़ुद सज़ा देता।)[1]

हज़रत यज़ीद बिन अबी मंसूर रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को यह ख़बर मिली कि बहरैन में उनके मुक़र्रर किए हुए गवर्नर हज़रत इब्ने जारूद या इब्ने अबी जारूद के पास एक आदमी लाया गया, जिसका नाम अदिरयास था। उसने मुसलमानों के दुश्मन के साथ ख़ुफ़िया पत्र-व्यवहार कर रखा था और उन दुश्मनों के साथ उनका मिल जाने का इरादा भी था और उसके इन जुर्मों पर गवाह भी मौजूद थे। इस पर उस गवर्नर ने उसे क़त्ल कर दिया। वह आदमी क़त्ल होते हुए कह रहा था, ऐ उमर ! मैं मज़्लूम हूं, मेरी मदद को आएं। ऐ उमर ! मैं मज़्लूम हूं, मेरी मदद को आएं।

हज़रत उमर रज़ि० ने अपने उस गवर्नर को ख़त लिखा कि मेरे पास आओ। चुनांचे वह आ गए। हज़रत उमर रज़ि० उनके इंतिज़ार में बैठे हुए थे और उनके हाथ में एक छोटा नेज़ा था। जब वह हज़रत उमर रज़ि० के पास अन्दर आए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने वह छोटा नेज़ा उसके जबड़ों पर मारना चाहा, (लेकिन मारा नहीं कि हज़रत जारूद ने इज्तिहादी ग़लती की वजह से उस आदमी को क़त्ल किया था इसलिए छोड़ दिया) और हज़रत उमर रज़ि० कहते जा रहे थे, ऐ अदिरयास ! मैं तेरी मदद को हाज़िर हूं, ऐ अदिरयास ! मैं तेरी मदद को हाज़िर हूं और हज़रत जारूद कहने लगे, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इसने मुसलमानों की ख़ुफ़िया बातें दुश्मन को लिखी थीं और दुश्मन से जा मिलने का उसने इरादा भी कर रखा था।

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 42

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, सिर्फ़ बुराई के इरादे पर ही तुमने उसे क़त्ल कर दिया। हम में ऐसा कौन है जिसके दिल में ऐसे बुरे इरादे नहीं आते? अगर गवर्नरों को क़त्ल करके मुस्तक़िल चलन बन जाने का ख़तरा न होता, तो मैं तुम्हें इसके बदले में ज़रूर क़त्ल कर देता।[1]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रह० कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों कानों में उंगलियां डाले हुए बाहर निकले और आप कह रहे थे, या लब्बैकाह! मैं मदद को हाज़िर हूं, मैं मदद को हाज़िर हूं।

लोगों ने उनसे पूछा उन्हें क्या बात पेश आई है? हज़रत उमर रज़ि० ने बताया कि उनके मुक़र्रर किए हुए एक अमीर की ओर से क़ासिद यह ख़बर लाया है कि उनके इलाक़े में मुसलमानों के रास्ते में एक नहर पड़ती थी, जिसे पार करने के लिए मुसलमानों को कोई कश्ती न मिल सकी, तो उनके अमीर ने कहा, कोई ऐसा आदमी खोजो जो नहर की गहराई मालूम करना जानता हो, चुनांचे उनके पास एक बूढ़े को लाया गया। उस बूढ़े ने कहा, मुझे सर्दी से डर लगता है और वह मौसम सर्दी का था, लेकिन उस अमीर ने उन्हें मजबूर करके उस नहर में दाख़िल कर दिया। थोड़ी देर में ही उस पर सर्दी का बहुत ज़्यादा असर हो गया और वह ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा, ऐ उमर! मेरी मदद को आओ और वह बूढ़ा डूब गया। (उस बूढ़े की फ़रियाद के जवाब में हज़रत उमर रज़ि० कानों में उंगलियां डाले हुए या लब्बैकाह कहते हुए निकले थे।)

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उस अमीर को ख़त लिखा, जिस पर वह मदीना मुनव्वरा आ गए। उनको आए हुए कई दिन हो गए, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी तरफ़ कोई तवज्जोह न फ़रमाई और यह हज़रत उमर रज़ि० की आदत थी कि जब उनको किसी पर ग़ुस्सा आता था, तो उससे मुंह फेर लेते थे, उसकी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाते थे। फिर उस अमीर को कहा, जिस आदमी को तुमने मार डाला, उसका क्या बना?

1. कंज़, भाग 7, पृ० 298

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरा इरादा उसे क़त्ल करने का नहीं था। हमें नहर पार करने के लिए कोई चीज़ नहीं मिल रही थी, हम तो सिर्फ़ यह चाहते थे कि यह पता चल जाए कि नहर के पानी की गहराई कितनी है? फिर बाद में हमने अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़्लां-फ़्लां इलाक़े फ़त्ह किए।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम जो कुछ (जीतों वग़ैरह) की ख़बर लेकर आए हो, मुझे एक मुसलमान उससे ज़्यादा महबूब है। अगर मुस्तक़िल चलन बन जाने का ख़तरा न होता, तो मैं तेरी गरदन उड़ा देता। तुम इसके रिश्तेदारों को ख़ून बहा दो और मेरे पास से चले जाओ, आगे तुम्हें कभी न देखूं।[1]

हज़रत जरीर रह० कहते हैं, हज़रत अबू मूसा रज़ि० के साथ (जिहाद में) एक आदमी था। (उस लड़ाई में) मुसलमानों को ग़नीमत का माल मिला। हज़रत अबू मूसा ने उसे ग़नीमत के माल में से उसका हिस्सा तो दिया, लेकिन पूरा न दिया। उसने कहा, लूंगा तो पूरा लूंगा, नहीं तो नहीं लूंगा। हज़रत अबू मूसा ने उसे बीस कोड़े मारे और उसका सर मूंड दिया। वह अपने बाल जमा करके हज़रत उमर रज़ि० के पास ले गया। (वहां जाकर) उसने अपनी जेब से बाल निकाले और हज़रत उमर रज़ि० के सीने पर दे मारे। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम्हें क्या हुआ? उसने अपना सारा क़िस्सा सुनाया। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा को यह ख़त लिखा—

'सलामुन अलैक! अम्माबादु! फ़्लां बिन फ़्लां ने मुझे अपना सारा क़िस्सा इस-इस तरह सुनाया। मैं आपको क़सम देकर कहता हूं, अगर यह काम (इसके बाद) आपने भरे मज्मे में लोगों के सामने किया है, तो आप इसके लिए भरे मज्मे में लोगों के सामने बैठ जाएं और फिर वह आपसे अपना बदला ले और अगर यह काम (उसके साथ आपने तंहाई में किया है, तो आप इसके लिए तंहाई में बैठ जाएं। और फिर वह आपसे अपना बदला ले।)

1. कंज़, भाग 7, पृ० 299

चुनांचे जब हज़रत अबू मूसा को यह ख़त मिला, तो वह बदला देने के लिए (उस आदमी के सामने) बैठ गए। इस पर उस आदमी ने कहा, मैंने इनको अल्लाह के लिए माफ़ कर दिया।[1]

हज़रत हिरमाज़ी रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत फ़ीरोज़ दैलमी रज़ि० को यह ख़त लिखा—

'अम्माबाद, मुझे यह ख़बर मिली है कि आप मैदे की रोटी शहद के साथ खाने लग गए हैं, इसलिए जब आपके पास मेरा यह ख़त पहुंचे तो आप अल्लाह का नाम लेकर मेरे पास आ जाएं और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करें।'

चुनांचे हज़रत फ़ीरोज़ (ख़त मिलते ही मदीना) आ गए। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० के पास अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको इजाज़त दे दी। (वह अन्दर जाने लगे तो) एक क़ुरैशी नवजवान भी अन्दर जाने लगा, जिससे उनका रास्ता तंग हो गया। उन्होंने उस क़ुरैशी की नाक पर इस ज़ोर से थप्पड़ मारा (कि ख़ून निकल आया।) वह क़ुरैशी नवजवान इसी हालत में हज़रत उमर रज़ि० के साथ अन्दर चला गया कि उसकी नाक से ख़ून बह रहा था। हज़रत उमर रज़ि० ने उस नवजवान से पूछा, तुम्हारे साथ यह किसने किया है?

उसने कहा, हज़रत फ़ीरोज़ ने और वह इस वक़्त दरवाज़े ही पर हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत फ़ीरोज़ को अन्दर आने की इजाज़त दी। वह अन्दर आ गए। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ फ़ीरोज़! यह क्या है?

हज़रत फ़ीरोज़ ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमने कुछ दिनों पहले ही बादशाही छोड़ी है, (जिसका असर अभी हमारी तबीयतों में बाक़ी है) बात यह हुई। आपने मुझे ख़त भेजकर बुलवाया, इसे आपने कोई ख़त नहीं लिखा और (इजाज़त मांगने पर) आपने मुझे तो अन्दर आने की इजाज़त दे दी। उसने न इजाज़त मांगी और न आपने उसे इजाज़त दी। (उसने क़ायदे के ख़िलाफ़ करते हुए बे-इजाज़त) मुझसे पहले मेरी इजाज़त से फ़ायदा उठाते हुए अन्दर दाख़िल होना चाहा, (इस पर मुझे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 299

गुस्सा आ गया) इसलिए मुझसे वह हरकत हो गई जो यह आपको बता रहा है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपको बदला देना होगा। हज़रत फ़ीरोज़ ने पूछा, क्या बदला ज़रूर देना पड़ेगा? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां, ज़रूर देना पड़ेगा। हज़रत फ़ीरोज़ घुटनों के बल बदला देने के लिए बैठ गए और वह नवजवान बदला लेने खड़ा हो गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने उससे कहा, ऐ नवजवान! ज़रा ठहरना, मैं तुम्हें वह बात सुनाता हूं जो मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुनी है। एक दिन सुबह के वक़्त मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि झूठे नबी अस्वद अनसी को आज रात क़त्ल कर दिया गया है और उसको अल्लाह के नेक बन्दे फ़ीरोज़ दैलमी ने क़त्ल किया है। जब तुमने इनके बारे में हुज़ूर सल्ल० की यह हदीस सुन ली है, तो क्या इसके बाद भी तुम इनसे बदला लेना चाहते हो?

उस नवजवान ने कहा, जब आपने इनके बारे मुझे हुज़ूर सल्ल० की यह हदीस सुनाई है तो मैंने इनको माफ़ कर दिया है। हज़रत फ़ीरोज़ ने कहा, मैंने अपनी ग़लती का एतराफ़ कर लिया और इसने ख़ुशी-ख़ुशी मुझे माफ़ कर दिया, तो क्या इसके बाद मैं अपनी इस ग़लती पर (अल्लाह की पकड़ से) बच जाऊंगा?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां। इस पर हज़रत फ़ीरोज़ ने कहा, मैं आपको इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मेरी तलवार, मेरा घोड़ा और मेरे माल में से तीस हज़ार इस नवजवान को हदिया हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ क़ुरैशी! तुमने माफ़ करके सवाब भी ले लिया और तुमको इतना माल भी मिल गया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बांदी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में आकर कहा, मेरे आक़ा ने मुझ पर तोहमत लगाई। मुझे आग पर बिठा दिया, जिससे मेरी शर्मगाह जल गई। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा, क्या तुम्हारे आक़ा ने तुमको वह बुरा

1. कंज़, भाग 7, पृ० 83

काम करते हुए देखा था? उस बांदी ने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या तुमने किसी बुराई का उसके सामने इक़रार किया था? उस बांदी ने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उसे मेरे पास लाओ।

(चुनांचे वह आदमी आ गया) जब हज़रत उमर रज़ि० ने उस आदमी को देखा, तो फ़रमाया, क्या तुम इंसानों को वह अज़ाब देते हो जो अल्लाह के साथ ख़ास है? उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे इस पर शुबहा हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा क्या तुमने उसे वह काम करते हुए देखा था? उसने कहा, नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फिर पूछा, क्या इस बांदी ने तुम्हारे सामने इस जुर्म को मान लिया था। उसने कहा नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए न सुना होता कि मालिक से उसके ग़ुलाम को और वालिद से उसके बेटे को बदला नहीं दिलवाया जाएगा, तो मैं तुझसे इस बांदी को बदला दिलवाता। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उस आदमी को सौ कोड़े मारे और उस बांदी से फ़रमाया, तू जा, तू अल्लाह के लिए आज़ाद है। तू अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की आज़ाद की हुई है। मैं गवाही देता हूं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिसे आग में जलाया गया या जिसकी शक्ल आग से जलाकर बिगाड़ी गई, वह आज़ाद है और वह अल्लाह और उसके रसूल का आज़ाद किया हुआ है।[1]

हज़रत मक्हूल कहते हैं, हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि० ने एक देहाती को बुलाया, ताकि वह बैतुलमक़्दिस के पास उसकी सवारी को पकड़कर खड़ा रहे, उसने इंकार कर दिया। इस पर हज़रत उबादा ने उसे मारा, जिससे उसका सर ज़ख़्मी हो गया। उसने उसके ख़िलाफ़ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से मदद तलब की। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, आपने उसके साथ ऐसा क्यों किया?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने उसे कहा कि मेरी सवारी

1. कंज़, भाग 7, पृ० 299

पकड़कर खड़ा रहे, लेकिन उसने इंकार कर दिया और मुझमें ज़रा तेज़ी है, इसलिए मैंने उसे मार दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप बदला देने के लिए बैठ जाएं।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० ने कहा, क्या आप अपने ग़ुलाम को अपने भाई से बदला दिला रहे हैं? हज़रत उमर रज़ि० ने बदला दिलाने का इरादा छोड़ दिया और यह फ़ैसला किया कि हज़रत उबादा उसे उस घाव के बदले में तैशुदा रक़म दें।[1]

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रह० फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ि० शाम देश तशरीफ़ ले गए तो अह्ले किताब में से एक आदमी खड़ा हुआ, जिसका सर ज़ख़्मी था और उसकी पिटाई हो चुकी थी। उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मेरी जो हालत देख रहे हैं, वह सब कुछ एक मुसलमान ने मेरे साथ किया है। इस पर हज़रत उमर रज़ि० को बहुत ज़्यादा ग़ुस्सा आया और हज़रत सुहैब रज़ि० से कहा, जाओ और देखो, किसने इसके साथ ऐसा किया है, उसे मेरे पास लाओ।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने जाकर पता किया तो मालूम हुआ कि यह सब कुछ औफ़ बिन मालिके अशजई रज़ि० ने किया है। हज़रत सुहैब रज़ि० ने उनसे कहा, अमीरुल मोमिनीन को तुम पर बहुत ज़्यादा ग़ुस्सा आया हुआ है। तुम हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाकर उनसे कहो कि वह हज़रत उमर से तुम्हारे बारे में बात करें (और वह तुम्हारे लिए उनसे सिफ़ारिश करें), क्योंकि मुझे डर है कि हज़रत उमर रज़ि० तुम्हें देखते ही फ़ौरन सज़ा देने लग जाएंगे।

चुनांचे जब हज़रत उमर रज़ि० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उन्होंने पूछा, सुहैब कहां हैं? क्या तुम उस आदमी को ले आए हो?

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, जी हां। हज़रत औफ़ जाकर हज़रत मुआज़ रज़ि० को सारा क़िस्सा बता चुके थे और हज़रत मुआज़ उस वक़्त वहां आए हुए थे। चुनांचे हज़रत मुआज़ ने खड़े होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! वह मारने वाले औफ़ बिन मालिक (जैसे भरोसेमंद

1. कंज़, भाग 7, पृ० 303

आदमी) हैं। आप उनकी बात सुन लें और उन्हें सज़ा देने में जल्दी न करें। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत औफ़ से कहा, तुम्हें इस आदमी के साथ क्या बात पेश आई?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने देखा कि एक मुसलमान औरत गधे पर सवार है। यह पीछे से उस गधे को हांक रहा है। इतने में इसने उस औरत को गिराने के लिए उसे लकड़ी से चौका मारा, लेकिन वह न गिरी। फिर इसने उसे हाथ से धक्का दिया, जिससे वह औरत गिर गई और यह उसके ऊपर चढ़ गया (और उसकी आबरू लूट ली। मैं यह मंज़र बरदाश्त न कर सका और मैंने उसके सर पर मार दिया।)

हज़रत उमर रज़ि० ने उससे कहा, तुम उस औरत को लाओ ताकि वह तुम्हारी बात की तस्दीक़ करे। हज़रत औफ़ उस औरत के पास गए, तो उसके बाप और ख़ाविंद ने उससे कहा, तुमने हमारी औरत के साथ क्या करना चाहा? तुमने तो (यह सारा वाक़िया सुनाकर) हमें रुसवा कर दिया, लेकिन उस औरत ने कहा, नहीं, मैं तो इनके साथ (हज़रत उमर रज़ि० को ख़ुद बताने) ज़रूर जाऊंगी, तो उसके बाप और शौहर ने कहा, (तुम ठहरो) हम जाकर तुम्हारी तरफ़ से सारी बात पहुंचा आते हैं। चुनांचे वे दोनों हज़रत उमर रज़ि० के पास आए और बिल्कुल वैसा ही क़िस्सा बताया जैसा हज़रत औफ़ ने बताया था।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० के हुक्म देने पर उस यहूदी को सूली दी गई और हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (ऐ यहूदियो!) हमने तुमसे इस पर सुलह नहीं की थी (कि तुम हमारी औरतों के साथ ज़िना करो और हम कुछ न कहें।) फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अमान के बारे में अल्लाह से डरते रहो, लेकिन इनमें से जो किसी मुसलमान औरत के साथ ज़िना करेगा, उसके लिए कोई अमान नहीं होगी।

हज़रत सुवैद कहते हैं, यह पहला यहूदी है जिसे मैंने इस्लाम में सूली चढ़ते हुए देखा।[1]

1. कंज़, भाग 2, पृ० 299, हैसमी, भाग 6, पृ० 13

हज़रत अब्दुल मलिक बिन याला लैसी कहते हैं, हज़रत बुकैर बिन शद्दाख़ रज़ियल्लाहु अन्हु उन सहाबा रज़ि० में से हैं जो बचपन से ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करते थे। जब ये बालिग़ हुए तो इन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपके घर आता जाता था, लेकिन अब मैं बालिग़ हो गया हूं। हुज़ूर सल्ल० ने (ख़ुश होकर) यह दुआ दी, ऐ अल्लाह ! इसकी बात को सच्चा कर दे और इसे कामियाबी नसीब फ़रमा।

जब हज़रत उमर रज़ि० की ख़िलाफ़त का ज़माना आया, तो एक यहूदी मक़्तूल पाया गया। हज़रत उमर रज़ि० ने इसे बहुत बड़ा हादसा समझा और आप घबरा गए और मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे ख़लीफ़ा बनाया है, तो क्या मेरी ख़िलाफ़त के ज़माने में लोगों को यों अचानक क़त्ल किया जाएगा? जिस आदमी को इस क़त्ल के बारे में कुछ इल्म है, मैं उसे अल्लाह की याद दिलाकर कहता हूं कि वह मुझे ज़रूर बताए।

इस पर हज़रत बुकैर बिन शद्दाख़ ने खड़े होकर कहा, मैंने इसे क़त्ल किया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर ! तुमने इसके क़त्ल का इक़रार कर लिया है, तो अब ऐसी वजह बताओ जिससे तुम सज़ा से बच सको। उन्होंने कहा, हां, मैं बताता हूं, फ्लां मुसलमान अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए गया और अपने घर वालों की देखभाल मेरे ज़िम्मे कर गया। मैं उसके घर गया तो मैंने इस यहूदी को वहां पाया और वह यह शेर (पद) पढ़ रहा था—

وَاَشْعَثَ غَرَّهُ الْاِسْلَامُ حَتّٰی ‏ خَلَوْتُ بِعِرْسِهٖ لَيْلَ التَّمَامِ

'अशअस (उस औरत के शौहर का नाम है) को तो इस्लाम ने धोखे में डाला हुआ है। (वह इस्लामी जज़्बे से घर छोड़कर ख़ुदा के रास्ते में गया हुआ है और मैंने इस धोखे से यह फ़ायदा उठाया कि) मैंने सारी रात उसकी बीवी के साथ तंहाई में गुज़ारी है।'

'मैं तो सारी रात उसकी बीवी के सीने पर गुज़ार रहा हूं और वह ख़ुद छोटे बालों वाली ऊंटनी की पीठ पर शाम गुज़ारता है, जिसका तंग बंधा हुआ है।'

كَأَنَّ مَجَامِعَ الرَّبَلَاتِ مِنْهَا فِئَامٌ يَنْهَضُونَ إِلَى فِئَامِ

'(अरबों को औरत का मोटा होना और मर्द का दुबला होना पसन्द था, इसलिए कह रहा है कि उसकी बीवी इतनी मोटी है कि) उसके रानों के मिलने की जगह यानी सुरीन तह ब तह है, वहां गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़े हैं।'

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत बुकैर की बात को सच्चा मान लिया और उस यहूदी के ख़ून को माफ़ कर दिया (और उनसे बदला या ख़ून बहा न लिया) और हज़रत बुकैर के साथ यह सब कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ की बरकत से हुआ (कि बग़ैर गवाह के उनकी बात सच्ची मान ली गई।)[1]

हज़रत क़ासिम बिन अबी बज़्ज़ा कहते हैं, शाम में एक मुसलमान ने एक ज़िम्मी काफ़िर को क़त्ल कर दिया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० के सामने यह मुक़दमा पेश किया गया, तो उन्होंने यह क़िस्सा लिखकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा। हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में यह लिखा कि यों ज़िम्मियों को क़त्ल करना सही नहीं है। अगर उस मुसलमान की मुस्तक़िल आदत बन गई है, फिर तो उसे आगे करके उसकी गरदन उड़ा दो और अगर वह तैश में आकर अचानक ऐसा कर बैठा है तो उस पर चार हज़ार की दियत का जुर्माना लगा दो।[2]

कूफ़ा के एक साहब बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने एक फ़ौज भेजी थी। उसके अमीर को यह ख़त लिखा कि मुझे पता चला है कि तुम्हारे कुछ साथी मोटे-ताज़े काफ़िर का पीछा कर रहे होते हैं, वह काफ़िर दौड़कर पहाड़ पर चढ़ जाता है और ख़ुद को महफ़ूज़ कर लेता है, तो फिर उससे तुम्हारा साथी (फ़ारसी में) कहता है, 'मतरस' यानी मत

1. कंज़, भाग 7, पृ० 13, इसाबा, भाग 1, पृ० 52
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 298

डरो। (यह कहकर उसे अमान दे देता है। वह काफ़िर ख़ुद को उस मुसलमान के हवाले कर देता है) फिर यह मुसलमान उस काफ़िर को पकड़कर क़त्ल कर देता है। (यह क़त्ल धोखा देकर किया है) उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है ! आगे अगर मुझे किसी के बारे में पता चला कि उसने ऐसा किया है, तो मैं उसकी गरदन उड़ा दूंगा।[1]

हज़रत अबू सलमा रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर तुममें से किसी ने उंगली से आसमान की तरफ़ इशारा करके किसी मुश्रिक को अमान दे दी और वह मुश्रिक इस वजह से उस मुसलमान के पास आ गया और फिर मुसलमान ने उसे क़त्ल कर दिया तो (यों धोखे से क़त्ल करने पर) मैं उस मुसलमान को ज़रूर क़त्ल करूंगा।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने तुस्तर का घेराव किया (आख़िर घेराव और लड़ाई से तंग आकर तुस्तर के हाकिम) हुरमुज़ान ने अपने बारे में हज़रत उमर रज़ि० के फ़ैसले पर उतरना क़ुबूल किया। मैं उसको लेकर हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब हम हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंचे, तो आपने उससे कहा, कहो, क्या कहते हो ?

उसने कहा, ज़िंदा रहने वाले की तरह बात करूं या मर जाने वाले की तरह ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, 'ला बास' यानी तुम अपने बारे में मत डरो, बात करो।

हुरमुज़ान ने कहा, ऐ अरब वालो ! जब तक अल्लाह ख़ुद तुम्हारे साथ न थे, बल्कि अल्लाह ने मामला हमारे और तुम्हारे दर्मियान छोड़ रखा था, उस वक़्त तो हम तुम्हें अपना गुलाम बनाते थे, तुम्हें क़त्ल करते थे और तुमसे सारा माल छीन लिया करते थे, लेकिन जब से अल्लाह तुम्हारे साथ हो गया है, उस वक़्त से हममें तुमसे मुक़ाबले की भी

---

1. मालिक,
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 298

ताक़त बाक़ी नहीं रही।

हज़रत उमर रज़ि० ने (मुझसे) पूछा, (ऐ अनस ! तुम क्या कहते हो ?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं अपने पीछे बड़ी तायदाद में दुश्मन और उनका बड़ा दबदबा छोड़कर आया हूं। अगर आप उसे क़त्ल कर देंगे तो फिर उसकी क़ौम अपनी ज़िंदगी से नाउम्मीद होकर मुसलमानों से लड़ने में और ज़्यादा ज़ोर लगाएगी (इसलिए आप उसको क़त्ल न करें)।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं हज़रत बरा बिन मालिक और हज़रत हजज़ा बिन सौर रज़ि० (जैसे बहादुर सहाबा) के क़ातिल को कैसे ज़िंदा छोड़ दूं (उसने इन दोनों को क़त्ल किया है) ?

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं, जब मुझे ख़तरा हुआ कि हज़रत उमर रज़ि० तो उसे ज़रूर ही क़त्ल कर देंगे, तो मैंने उनसे कहा, आप उसे क़त्ल नहीं कर सकते, क्योंकि आप उससे 'तुम मत डरो और बात करो' कह चुके हैं (और 'तुम मत डरो और बात करो' कहने से जान की अमान मिल जाती है, इसलिए आप तो उसे अमान दे चुके हैं।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मालूम होता है, तुमने उससे कोई रिश्वत ली है और उससे कोई फ़ायदा हासिल किया है ?

हज़रत अनस रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैंने उससे न रिश्वत ली है और न कोई फ़ायदा, (मैं तो एक हक़ बात कह रहा हूं।)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम अपने इस दावे (कि 'मत डरो....' कहने से काफ़िर को अमान मिल जाती है) की तस्दीक़ करने वाला कोई और गवाह अपने अलावा लाओ, वरना मैं तुमसे ही सज़ा की शुरूआत करूंगा। चुनांचे मैं गया, मुझे हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु मिले। मैं उनको लेकर आया। उन्होंने मेरी बात की तस्दीक़ की, जिस पर हज़रत उमर रज़ि० हुरमुज़ान के क़त्ल से रुक गए और हुरमुज़ान मुसलमान हो गया और हज़रत उमर रज़ि० ने उसके लिए बैतुलमाल में से वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया।[1]

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 96, कंज़, भाग 2, पृ० 298, बिदाया, भाग 7, पृ० 87

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद अस्लमी रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हम हज़रत उमर रज़ि० के साथ (दमिश्क़ की बस्ती) जाबिया पहुंचे, तो आपने एक बूढ़े ज़िम्मी को देखा कि वह लोगों से खाना मांग रहा है। हज़रत उमर रज़ि० ने उसके बारे में लोगों से पूछा (कि यह क्यों मांग रहा है?)

किसी ने कहा, यह ज़िम्मी है जो कमज़ोर और बूढ़ा हो गया है। हज़रत उमर रज़ि० ने उसके ज़िम्मे जो जिज़या था, वह माफ़ कर दिया और फ़रमाया, पहले तुमने उस पर जिज़या लगाया (जिसे वह देता रहा) अब जब वह कमज़ोर हो गया है, तो तुमने उसे खाना मांगने के लिए छोड़ दिया है। फिर आपने उसके लिए बैतुलमाल में से दस दिरहम वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया, वह बूढ़ा बाल-बच्चों वाला था।[1]

हज़रत उमर रज़ि० का एक बूढ़े ज़िम्मी पर गुज़र हुआ जो लोगों से मस्जिदों के दरवाज़ों पर मांगता फिर रहा था। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (ऐ ज़िम्मी!) हमने तुमसे इंसाफ़ नहीं किया, जवानी में तो हम तुमसे जिज़या लेते रहे और बुढ़ापे में हमने तुम्हारा कोई ख़्याल न किया। फिर आपने उसके लिए बैतुलमाल में से गुज़ारा भर को वज़ीफ़ा जारी कर दिया।[2]

हज़रत यज़ीद बिन अबी मालिक रह० कहते हैं, मुसलमान जाबिया बस्ती में ठहरे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० भी उनके साथ थे। एक ज़िम्मी ने आकर हज़रत उमर रज़ि० को बताया कि लोग उसके अंगूरों के बाग़ पर टूट पड़े हैं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० बाहर निकले, तो उनकी अपने एक साथी से मुलाक़ात हुई, जिसने अपनी ढाल पर अंगूर उठा रखे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, अरे मियां, तुम भी? उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमें बहुत ज़्यादा भूख लगी हुई है। (खाने का और सामान है नहीं) यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० वापस आ गए और यह हुक्म दिया कि इस ज़िम्मी को इसके अंगूरों की क़ीमत अदा की जाए।[3]

1. इब्ने असाकिर, वक़िदी,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 301, 302
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 2 पृ० 299

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं, एक मुसलमान और यहूदी अपने झगड़े का फ़ैसला कराने के लिए हज़रत उमर रज़ि० के पास आए। आपने देखा कि यहूदी हक़ पर है तो आपने उसके हक़ में फ़ैसला कर दिया। इस पर उस यहूदी ने कहा, अल्लाह की क़सम! आपने हक़ का फ़ैसला किया है। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे (ख़ुशी में हल्का-सा) कोड़ा मारा और फ़रमाया, तुझे किस तरह पता चला (कि हक़ क्या होता है?)

उस यहूदी ने कहा, अल्लाह की क़सम! हमें तौरात में यह लिखा हुआ मिलता है कि जो क़ाज़ी हक़ का फ़ैसला करता है, उसके दाहिनी ओर एक फ़रिश्ता और बाईं ओर एक फ़रिश्ता होता है, जो उसे सही रास्ते पर चलाते हैं और उसे हक़ बात का इलहाम करते हैं, जब तक वह क़ाज़ी हक़ का फ़ैसला करने का इरादा रखता है। जब वह यह इरादा छोड़ देता है, तो दोनों फ़रिश्ते उसे छोड़कर आसमान पर चढ़ जाते हैं।[1]

हज़रत इयास बिन सलमा अपने बाप (हज़रत सलमा) से नक़ल करते हैं कि उन्होंने कहा, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० बाज़ार से गुज़रे। उनके हाथ में कोड़ा भी था। उन्होंने धीरे से वह कोड़ा मुझे मारा, जो मेरे कपड़े के किनारे को लग गया और फ़रमाया, रास्ते से हट जाओ। जब अगला साल आया, तो आपकी मुझसे मुलाक़ात हुई। मुझसे कहा, ऐ सलमा! क्या तुम्हारा हज का इरादा है?

मैंने कहा, जी हां। फिर मेरा हाथ पकड़कर अपने घर ले गए और मुझे छः सौ दिरहम दिए और कहा, इन्हें अपने हज के सफ़र में काम ले आना और ये उस हलके से कोड़े के बदले में हैं जो मैंने तुमको मारा था। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे तो वह कोड़ा याद भी नहीं रहा। फ़रमाया, लेकिन मैं तो उसे नहीं भूला। (यानी मैंने मार तो लिया, लेकिन सारे साल खटकता रहा।)[2]

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 455
2. तबरी, भाग 5, पृ० 32

हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत अबुल फ़ुरात रह० कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ि० का एक गुलाम था। आपने उससे फ़रमाया, मैंने एक बार तुम्हारा कान मरोड़ा था, इसलिए तुम मुझसे बदला ले लो। चुनांचे उसने आपका कान पकड़ लिया, तो आपने उससे फ़रमाया, ज़ोर से मरोड़ो, दुनिया में बदला देना कितना अच्छा है, अब आख़िरत में बदला नहीं देना पड़ेगा।[1]

हज़रत नाफ़ेअ बिन अब्दुल हारिस रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए, तो जुमा के दिन दारुन्नदवा तशरीफ़ ले गए, (जहां कुरैश मश्विरा किया करते थे और बाद में यह जगह मस्जिदे हराम में शामिल कर दी गई।) आपका इरादा यह था कि यहां से मस्जिदे हराम जाना नज़दीक पड़ेगा। आपने वहां कमरे में एक खूंटी पर अपनी चादर लटका दी। उस पर हरम का एक कबूतर आ बैठा। आपने उसे उड़ा दिया, तो एक सांप उसकी ओर लपका और उसे मार डाला। जब आप जुमा की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो मैं और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० उनके पास आए। आपने कहा, आज मुझसे एक काम हो गया है, तुम दोनों इस काम के बारे में मेरे मुताल्लिक़ फ़ैसला करो। आज मैं इस घर में दाख़िल हुआ। मेरा इरादा यह था कि यहां से मस्जिदे हराम जाना नज़दीक पड़ेगा। मैंने अपनी चादर उस खूंटी पर लटका दी, तो उस पर हरम का एक कबूतर आ बैठा। मुझे डर हुआ कि यह बीट करके कहीं चादर को ख़राब न कर दे, इसलिए मैंने उसे उड़ा दिया। वह उड़कर उस दूसरी ख़ूंटी पर आ बैठा। वहां लपककर एक सांप ने उसे पकड़ लिया और उसे मार डाला। अब मेरे दिल में यह ख़्याल आ रहा है कि वह पहली ख़ूंटी पर हिफ़ाज़त से था, वहां से मैंने उसे उड़ा दिया। वह उड़कर उस दूसरी ख़ूंटी पर आ गया, जहां उसे मौत आ गई, यानी मैं ही उसके क़त्ल की वजह बना हूं।

यह सुनकर मैंने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, आपका क्या ख़्याल

1. तबरी, भाग 2, पृ० 111

है, अगर आप अमीरुल मोमिनीन पर दो दांत वाली सफ़ेद बकरी देने का फ़ैसला कर दें? उन्होंने कहा, मेरी भी यही राय है। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने इस तरह की बकरी देने का हुक्म दिया।[1]

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत कुलैब रह० कहते हैं, हज़रत अली रज़ि० के पास इस्बहान से माल आया। आपने उसे सात हिस्सों में बांट दिया। उसमें आपको एक रोटी भी मिली। आपने उसके सात टुकड़े किए और हर हिस्से पर एक टुकड़ा रख दिया, फिर फ़ौज के सातों हिस्सों के अमीरों को बुलाया और उनमें क़ुरआ अन्दाज़ी की, ताकि पता चले कि इनमें से पहले किसको दिया जाए।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह हाशमी अपने बाप से नक़ल करते हैं, हज़रत अली रज़ि० के पास दो औरतें मांगने के लिए आईं। उनमें से एक अरबी थी और दूसरी उसकी आज़ाद की हुई बांदी थी। आपने हुक्म दिया कि इनमें से हर एक को एक कुर (लगभग 63 मन) अनाज और चालीस दिरहम दिए जाएं। उस आज़ाद की हुई लौंडी को जो मिला, वह उसे लेकर चली गई, लेकिन अरबी औरत ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने उसको जितना दिया, मुझे भी उतना ही दिया, हालांकि मैं अरबी हूं और यह आज़ाद की हुई लौंडी है।

उससे हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैंने अल्लाह की किताब में बहुत ध्यान से देखा तो उसमें मुझे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद की हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद पर कोई फ़ज़ीलत नज़र नहीं आई।[3]

हज़रत अली बिन रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत जादा बिन हुबैरा ने हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ

1. मुस्नद इमाम शाफ़ई, पृ० 47
2. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 348, कंज़, भाग 3, पृ० 116, इस्तीआब, भाग 3, पृ० 49
3. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 349

अमीरुल मोमिनीन ! आपके पास दो आदमी आएंगे। उनमें से एक को तो अपनी जान से भी ज़्यादा आपसे मुहब्बत है, या यों कहा, अपने बीवी-बच्चों और माल व दौलत से भी ज़्यादा मुहब्बत है और दूसरे का बस चले, तो आपको ज़िब्ह कर दे। इसलिए आप दूसरे के ख़िलाफ़ पहले के हक़ में फ़ैसला करें।

इस पर हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत जादा के सीने पर मुक्का मारा और फ़रमाया, अगर ये फ़ैसले अपने आपको राज़ी करने के लिए होते, तो मैं ज़रूर ऐसा करता, लेकिन ये फ़ैसले तो अल्लाह को राज़ी करने के लिए होते हैं, (इसलिए मैं तो हक़ के मुताबिक़ फ़ैसला करूंगा। अब वह फ़ैसला जिसके हक़ में चाहे हो जाए।)[1]

हज़रत असबग़ बिन नुबाता रह० कहते हैं, मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के साथ बाज़ार गया। आपने देखा कि बाज़ार वाले अपनी जगह से आगे बढ़ गए हैं। आपने पूछा, यह क्या है ? लोगों ने बताया कि बाज़ार वाले अपनी जगह से आगे बढ़ गए हैं। आपने फ़रमाया, अपनी जगह बढ़ा लेने का उन्हें कोई हक़ नहीं है। मुसलमानों का बाज़ार नमाज़ियों के नमाज़ पढ़ने की जगह यानी मस्जिद की तरह होता है, इसलिए जिस जगह का कोई मालिक नहीं है, वहां पहले आकर जो क़ब्ज़ा कर लेगा, वह जगह उस दिन उसी की होगी, हां, वह ख़ुद उसे छोड़कर कहीं और चला जाए, तो उसकी मर्ज़ी।[2]

एक यहूदी के साथ हज़रत अली रज़ि० का क़िस्सा भाग 1 में सहाबा किराम रज़ि० के उन अख़्लाक़ व आमाल के क़िस्सों में गुज़र चुका है, जिनकी वजह से लोगों को हिदायत मिलती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ख़ैबर के बारे में लम्बी हदीस

1. कंज़, भाग 3, पृ० 166
2. कंज़, भाग 3, पृ० 176

बयान करते हैं। उसमें यह मज़्मून भी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० हर साल ख़ैबर वालों के पास जाकर पेड़ों पर लगी हुई खजूरों और बेलों पर लगे हुए अंगूरों का अन्दाज़ा लगाते कि ये कितने हैं? फिर जितने फल का उनको अन्दाज़ा होता, उसके आधे फल की उन पर ज़िम्मेदारी डाल देते कि इतने का आधा फल तुम्हें देना होगा। ख़ैबर वालों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उनके अन्दाज़ा लगाने में सख़्ती करने की शिकायत की और वे लोग उनको रिश्वत देने लगे तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मनो! मुझे हराम खिलाते हो? अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे पास उस आदमी की ओर से आया हूं जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है और तुम लोग मुझे बन्दरों और ख़िंज़ीरों से भी ज़्यादा बुरे लगते हो, लेकिन तुम्हारी नफ़रत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत मुझे तुम्हारे साथ नाइंसाफ़ी करने पर तैयार नहीं कर सकती। उन लोगों ने कहा, इसी इंसाफ़ की बरकत से ज़मीन-आसमान क़ायम हैं।[1]

हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० का अद्ल व इंसाफ़

हज़रत हारिस बिन सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ि० एक फ़ौज में गए हुए थे। दुश्मन ने उन्हें घेर लिया। फ़ौज के अमीर ने हुक्म दिया कि कोई भी अपनी सवारी चराने के लिए लेकर बाहर न जाए। एक आदमी को अमीर के इस हुक्म का पता न चला, वह अपनी सवारी लेकर चला गया, जिस पर अमीर ने उसे मारा।

वह अमीर के पास से वापस आकर कहने लगा, जो सुलूक आज मेरे साथ हुआ है, ऐसा मैंने कभी नहीं देखा। हज़रत मिक़्दाद रज़ि० उस आदमी के पास से वापस गुज़रे, तो उससे पूछा, तुम्हें क्या हुआ? उसने अपना क़िस्सा सुनाया। इस पर हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने तलवार गले में डाली और उसके साथ चल पड़े और अमीर के पास पहुंचकर उससे

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 199

कहा, (आपने इसे बेवजह मारा है, इसलिए) आप इसे अपनी जान से बदला दिलवाएं।

वह अमीर बदला देने के लिए तैयार हो गए। इस पर उस आदमी ने अमीर को माफ़ कर दिया। हज़रत मिक़्दाद रज़ि० यह कहते हुए वापस आए, मैं इन्शाअल्लाह इस हाल में मरूंगा कि इस्लाम ग़ालिब होगा (कि कमज़ोर को ताक़तवर से बदला दिलाया जा रहा होगा।)[1]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 176

हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-किराम का अल्लाह से डरना

हज़रत ज़ह्हाक रह० कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने एक बार एक परिंदा पेड़ पर बैठा हुए देखा, तो (परिंदे को मुख़ातब करके) कहने लगे, ऐ परिंदे ! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, (तुम किस क़दर मज़े में हो) अल्लाह की क़सम ! मैं चाहता हूं कि मैं भी तुम्हारी तरह होता। तुम पेड़ों पर बैठते हो, फल खाते हो, फिर उड़ जाते हो और (क़ियामत के दिन) न तुम्हारा हिसाब होगा और न तुम पर कोई अज़ाब होगा। अल्लाह की क़सम ! मैं चाहता हूं कि मैं रास्ते के किनारे का एक पेड़ होता, मेरे पास से कोई ऊंट गुज़रता, मुझे पकड़कर अपने मुंह में डाल लेता, फिर वह मुझे चबाता और जल्दी से निगल लेता और मुझे मेंगनी बनाकर निकाल देता और मैं इंसान न होता।[1]

हज़रत ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम रह० कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक चिड़िया को देखा, तो फ़रमाने लगे, ऐ चिड़िया ! तुझे ख़ुशख़बरी हो, तू फल खाती है और पेड़ों पर उड़ती-फिरती है और न तुझे हिसाब देना पड़ेगा और न तुझे अज़ाब होगा। अल्लाह की क़सम ! मैं चाहता हूं कि मैं कोई दुंबा होता, मेरे घरवाले मुझे खिला-पिलाकर मोटा करते और जब मैं ख़ूब मोटा हो जाता, तो वह मुझे ज़िब्ह करते और मेरा कुछ हिस्सा भूनकर और कुछ हिस्से की बोटियां बनाकर खा जाते और फिर मुझे पाख़ाना बनाकर बैतुलख़ला में फेंक देते और मुझे इंसान न बनाया जाता।[2]

इमाम अहमद ने किताब ज़ोह्द में रिवायत किया है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एक बार फ़रमाया, ऐ काश ! मैं किसी मोमिन बन्दे के पहलू में कोई बाल होता।[3]

---

1. इब्ने अबी शैबा, हन्नाद, बैहक़ी
2. वज़्ल,
3. कंज़, भाग 4, पृ० 361

हज़रत ज़हहाक रह० कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, काश, मैं अपने घरवालों का दुंबा होता। वे मुझे कुछ दिनों तक खिला-पिलाकर मोटा करते रहते। जब मैं ख़ूब मोटा हो जाता तो उनका प्रिय दोस्त उनको मिलने आता। वे (उसकी मेहमानी के लिए मुझे ज़िब्ह करते और) मेरे कुछ हिस्से को भूनकर और कुछ हिस्से की बोटियां बनाकर खा जाते और फिर मुझे पाख़ाना बनाकर निकाल देते और मैं इंसान न होता।[1]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ि० कहते हैं, मैंने एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को देखा कि उन्होंने ज़मीन से एक तिनका उठाया और फ़रमाया, ऐ काश! मैं यह तिनका होता, काश, मैं पैदा न होता, काश, मैं कुछ भी न होता, काश, मेरी मां मुझे न जनती और काश, मैं बिल्कुल भूला-बिसरा होता।[2]

हज़रत उमर रज़ि० ने एक बार फ़रमाया, अगर आसमान से कोई मुनादी यह एलान करे कि ऐ लोगो! एक आदमी के अलावा बाक़ी तुम सबके सब जन्नत में जाओ, तो मुझे (अपने अमल की वजह से) डर है कि वह एक आदमी मैं ही हूंगा और अगर कोई मुनादी यह एलान करे कि ऐ लोगो! एक आदमी के अलावा बाक़ी तुम सबके सब दोज़ख़ में जाओगे, तो मुझे (अल्लाह की मेहरबानी से) उम्मीद है कि वह एक आदमी मैं ही हूंगा। (ईमान इसी डर और उम्मीद के बीच की हालत का नाम है।)[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ि० की हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० से मुलाक़ात हुई, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, ऐ अबू मूसा! क्या तुमको यह बात पसन्द है कि तुमने हुज़ूर सल्ल० के साथ रहकर जो अमल किए हैं, वह अमल तो तुम्हारे लिए सही-सालिम और ठीक रहें (कि उनका अच्छा बदला तुम्हें अल्लाह

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 52
2. इब्ने मुबारक, इब्ने असाकिर वग़ैरह,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 53

की ओर से मिले) और तुमने हुज़ूर सल्ल० के बाद (ख़ास तौर पर अमारत के ज़माने में) जो अमल किए हैं, उनसे तुम बराबर-सराबर पर छूट जाओ। उस ज़माने का ख़ैर शर के बदले में और शर ख़ैर के बदले में हो जाए। न किसी नेकी पर तुम्हें सवाब मिले और न किसी गुनाह पर तुम्हारी पकड़ हो।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! नहीं (बाद वाले ज़माने के आमाल से बराबर-सराबर पर छूटने के लिए मैं तैयार नहीं हूं, बल्कि मुझे तो उस ज़माने के अच्छे-अच्छे अमल पर बड़े सवाब की उम्मीद है, क्योंकि) अल्लाह की क़सम ! जब मैं बसरा आया था, तो बसरा वालों में बद-सुलूकी और उजड्डुपन आम था। फिर मैंने उनको क़ुरआन व सुन्नत सिखाया, उनको साथ लेकर अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया। उन तमाम अमल की वजह से मुझे अल्लाह के फ़ज़्ल की उम्मीद है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन मैं तो चाहता हूं कि हुज़ूर सल्ल० के बाद वाले ज़माने (ख़ास तौर से ख़िलाफ़त के ज़माने) के अमल से बराबर-बराबर छूट जाऊं और उस ज़माने का ख़ैर शर के बदले में और शर ख़ैर के बदले में हो जाए, न किसी अमल पर मुझे सवाब मिले और न किसी गुनाह पर सज़ा और हुज़ूर सल्ल० के साथ रहकर मैंने जो अमल किए हैं, वह मेरे लिए सही-सालिम रहें, (उनका अच्छा बदला मिले।)[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ि० पर नेज़े से हमला हुआ और आप घायल हो गए, तो मैं उनके पास गया और मैंने उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपको ख़ुशख़बरी हो, क्योंकि अल्लाह ने आपके ज़रिए कई शहरों को आबाद किया। निफ़ाक़ को ख़त्म किया और आपके ज़रिए अल्लाह ने आम इंसानों के लिए रोज़ी ख़ूब बढ़ाई।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने अब्बास ! क्या अमीर होने के बारे में तुम मेरी तारीफ़ कर रहे हो ?

मैंने कहा, मैं तो दूसरे कामों में भी आपकी तारीफ़ करता हूं।

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 401

इब्ने साद ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यही हदीस एक और सनद से नक़ल की है। इसमें यह मज़्मून है कि मैंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, आपको जन्नत की ख़ुशख़बरी हो। आप हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में रहे और बड़ी लम्बी मुद्दत तक उनकी सोहबत में रहे और फिर आप मुसलमानों के अमीर बनाए गए, तो आपने मुसलमानों को ख़ूब ताक़त पहुंचाई और अमानत सही तौर से अदा की।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने मुझे जन्नत की बशारत दी है, तो उस अल्लाह की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं है! अगर सारी दुनिया और जो कुछ उसमें है, वह सब मुझे मिल जाए, तो इस वक़्त मेरे सामने आख़िरत का भयानक मंज़र (दृश्य) है, उससे बचने के लिए मैं यह सब कुछ, यह जानने से पहले ही फ़िदए में दे दूं कि मेरे साथ क्या होने वाला है? तुमने मुसलमानों का अमीर बनने का भी ज़िक्र किया है, तो अल्लाह की क़सम! मैं यह चाहता हूं कि अमारत बराबर-सराबर रहे, न सवाब मिले और न सज़ा और तुमने हुज़ूर सल्ल० की सोहबत का भी ज़िक्र किया है, तो यह है उम्मीद की चीज़।[1]

और इब्ने साद की एक रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे बिठाओ। जब बैठ गए, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से फ़रमाया, अपनी बात दोबारा कहो। उन्होंने दोबारा कही, तो फ़रमाया, अल्लाह से मुलाक़ात के दिन यानी क़ियामत के दिन, क्या तुम अल्लाह के सामने इन तमाम बातों की गवाही दे दोगे? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, जी हां। इससे हज़रत उमर रज़ि० ख़ुश हो गए और उनको यह बात बहुत पसन्द आई।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, मरज़ुल वफ़ात में हज़रत उमर रज़ि० का सर मेरी रान पर रखा हुआ था, तो मुझसे उन्होंने कहा, मेरा सर ज़मीन पर रख दो। मैंने कहा, आपका सर मेरी रान पर रहे या ज़मीन पर, इसमें आपका क्या हरज है? फ़रमाया, नहीं, ज़मीन पर रख दो।

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 256,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 257

चुनांचे मैंने ज़मीन पर सर रख दिया, तो फ़रमाया, अगर मेरे रब ने मुझ पर रहम न किया तो मेरी भी हलाकत है और मेरी मां की भी हलाकत है।

हज़रत मिश्वर कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नेज़ा मारा गया, तो फ़रमाया, अगर मुझे इतना सोना मिल जाए, जिससे सारी ज़मीन भर जाए, तो मैं अल्लाह के अज़ाब को देखने से पहले ही उससे बचने के लिए वह सारा सोना फ़िदया में दे दूं।[1]

क्या अमीर किसी की मलामत से डरे ?

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से पूछा कि मेरे लिए अल्लाह के रास्ते में किसी की मलामत से न डरना बेहतर है या अपने नफ़्स की इस्लाह की ओर मुतवज्जह रहना बेहतर है ?

आपने फ़रमाया, जो मुसलमानों के किसी काम का ज़िम्मेदार बनाया गया हो, उसे तो अल्लाह के रास्ते में किसी की मलामत से नहीं डरना चाहिए और जो इज्तिमाई ज़िम्मेदारी से फ़ारिग़ हो, उसे अपने नफ़्स की इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहना चाहिए, अलबत्ता अपने अमीर के साथ ख़ैरख़्वाही का मामला रखे।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 52
2. कंज़, भाग 3, पृ० 164

हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-किराम का दूसरे ख़ुलफ़ा व उमरा को वसीयत करना

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हज़रत उमर रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत अग़री बनी मालिक रह० कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को ख़लीफ़ा बनाना चाहा, तो उन्होंने आदमी भेजकर हज़रत उमर रज़ि० को बुलाया। जब वह आ गए तो उनसे फ़रमाया—

'मैं तुम्हें एक ऐसे काम की ओर बुलाने लगा हूं कि जो भी इसकी ज़िम्मेदारी उठाएगा, यह काम उसे थका देगा। इसलिए ऐ उमर! अल्लाह की इताअत के ज़रिए तुम उससे डरो और उससे डरते हुए उसकी इताअत करो, क्योंकि अल्लाह से डरने वाला ही (हर ख़ौफ़ से) अम्न में होता है और (हर शर और मुसीबत से) बचा हुआ होता है। फिर ख़िलाफ़त के इस मामले का हिसाब अल्लाह के सामने पेश करना होगा और इस काम का हक़दार सिर्फ़ वही है जो इसका हक़ अदा कर सके। और जो दूसरों के हक़ का हुक्म दे और ख़ुद बातिल पर अमल करे और नेकी का हुक्म करे और ख़ुद बुराई पर अमल करे, उसकी कोई उम्मीद पूरी न हो सकेगी और उसके तमाम नेक आमाल बर्बाद हो जाएंगे। (वे आमाल आख़िरत में उसके काम न आएंगे) इसलिए अगर तुम पर मुसलमानों की ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी डाल दी जाए, तो फिर तुम अपने हाथों को उनके ख़ून से दूर रख सको और अपने पेट को उनके माल से ख़ाली रख सको और उनकी आबरूरेज़ी से अपनी ज़ुबान को बचा सको तो ज़रूर ऐसे करना और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ अल्लाह ही से मिलती है।'[1]

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो उन्होंने

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 198, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 15

यह वसीयतनामा लिखवाया—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

'यह अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की ओर से वसीयतनामा है (और वह यह वसीयतनामा उस वक़्त कर रहे हैं) जबकि उनका इस दुनिया में आख़िरी वक़्त आ गया है और वह इस दुनिया से जा रहे हैं और उनकी आख़िरत शुरू हो रही है, जिसमें वे दाख़िल हो रहे हैं और यह मौत का वक़्त ऐसा है कि जिस वक़्त काफ़िर भी ग़ैब पर ईमान ले आता है और फ़ासिक़ और फ़ाजिर भी मुत्तक़ी बन जाता है और झूठा आदमी भी सच बोलने लग जाता है। मैंने अपने बाद उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफ़ा बना दिया है। अगर वह अद्ल व इंसाफ़ से काम लें, तो उनके बारे में मेरा गुमान यही है और अगर वह ज़ुल्म करें और बदल जाएं तो (इसका वबाल उन पर ही होगा और उनको ख़लीफ़ा बनाने से) मेरा इरादा ख़ैर का ही था और मुझे ग़ैब का इल्म नहीं। ज़ालिमों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उनके ज़ुल्म का अंजाम क्या होगा और वे किस बुरे ठिकाने की ओर लौटने वाले हैं?'

फिर उन्होंने आदमी भेजकर हज़रत उमर रज़ि० को बुलाया और उनको ज़ुबानी यह वसीयत फ़रमाई—

'ऐ उमर! कुछ लोग तुमसे बुग़्ज़ रखते हैं और कुछ तुमसे मुहब्बत करते हैं। पुराने ज़माने से यह दस्तूर चला आ रहा है कि ख़ैर को बुरा समझा जाता है और शर को पसन्द किया जाता है। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, फिर तो मुझे ख़िलाफ़त की ज़रूरत नहीं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन ख़िलाफ़त को तुम्हारी ज़रूरत है, क्योंकि तुमने हुज़ूर सल्ल० को देखा है और उनके साथ रहे हो और तुमने यह भी देखा है कि हुज़ूर सल्ल० हमें अपनी ज़ात पर तर्जीह दिया करते थे। कभी-कभी हुज़ूर सल्ल० की ओर से हमें जो मिलता था, हम उसे इस्तेमाल करते और उसमें से जो बच जाता, वह हम हुज़ूर सल्ल० के घरवालों को भेज दिया करते थे, (यानी हुज़ूर सल्ल० अपने घरवालों को पहले न देते, बल्कि उन पर तर्जीह देते हुए पहले हमें देते) और फिर तुमने मुझे भी देखा है और मेरे साथ भी रहे हो और मैंने अपने से पहले वाले की

यानी हुज़ूर सल्ल० की पैरवी की है। अल्लाह की क़सम ! यह बात नहीं है कि मैं सो रहा हूं और ख़्वाब में तुमसे बातें कर रहा हूं या किसी वह्म के तौर पर तुम्हारे सामने ये गवाहियां दे रहा हूं और मैंने (सोच-समझ कर) जो रास्ता अपनाया है, उससे इधर-उधर नहीं हटा हूं।'

'ऐ उमर ! इस बात को अच्छी तरह जान लो कि रात में अल्लाह के कुछ हक़ ऐसे हैं, जिन्हें वे दिन में क़ुबूल नहीं करते हैं या दिन में कुछ हक़ अल्लाह के ऐसे हैं जिनको वे रात में क़ुबूल नहीं करते हैं (यानी इंसान दिन में इंसानों पर मेहनत करे और मुसलमानों के इज्तिमाई काम में लगा रहे और रात को कुछ वक़्त अल्लाह की इबादत, ज़िक्र और तिलावत और दुआ में लगा रहे। दिन व रात की यह तर्तीब अल्लाह ने मुक़र्रर फ़रमाई है) और क़ियामत के दिन सिर्फ़ हक़ की पैरवी करने की वजह से ही आमाल का तराज़ू भारी होगा और जिस तराज़ू में सिर्फ़ हक़ ही हो, उसका भारी होना ज़रूरी है और क़ियामत के दिन सिर्फ़ बातिल की पैरवी की वजह से ही तराज़ू हलका होगा और जिस तराज़ू में सिर्फ़ बातिल ही हो उसका हलका होना ज़रूरी है।'

'सबसे पहले मैं तुम्हें तुम्हारे अपने नफ़्स से डराता हूं, फिर लोगों से डराता हूं, क्योंकि लोगों की निगाहें (लालच की वजह से) झांकने लग गई हैं और उनकी नफ़्सानी ख़्वाहिशात फूल गई हैं यानी ज़ोर पकड़ चुकी हैं लेकिन जब इन ख़राबियों की वजह से उन्हें ज़िल्लत उठानी पड़ेगी, तो उस वक़्त वे हैरान व परेशान होंगे, क्योंकि जब तक तुम अल्लाह से डरते रहोगे, उस वक़्त तक वे लोग तुमसे डरते रहेंगे। यह मेरी वसीयत है। मेरी ओर से तुम्हें सलाम हो।'[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साबित, हज़रत ज़ैद बिन ज़ुबैद बिन हारिस और हज़रत मुजाहिद रज़ि० कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० को बुलाकर उनसे यह फ़रमाया—

'ऐ उमर ! अल्लाह से डरते रहना और तुम्हें मालूम होना चाहिए कि

1. कंज़, भाग 3, पृ० 146

अल्लाह की ओर से (इंसानों के ज़िम्मे) दिन में कुछ ऐसे अमल हैं, जिनको वे रात में क़ुबूल नहीं करते और ऐसे ही अल्लाह की ओर से (इंसानों के ज़िम्मे) रात में कुछ ऐसे अमल हैं, जिनको वे दिन में क़ुबूल नहीं करते और जब तक फ़र्ज़ न अदा किया जाए उस वक़्त तक अल्लाह नफ़्ल क़ुबूल नहीं फ़रमाते। दुनिया में हक़ की पैरवी करने और हक़ को बड़ा समझने की वजह से ही क़ियामत के दिन आमाल का तराज़ू भारी होगा। कल जिस तराज़ू में हक़ रखा जाए, उसे भारी होना ही चाहिए और दुनिया में बातिल की पैरवी करने और बातिल को मामूली समझने की वजह से ही क़ियामत के दिन तराज़ू हलका होगा और कल जिस तराज़ू में बातिल रखा जाए, उसे हलका होना ही चाहिए।'

'और अल्लाह ने जहां जन्नत वालों का ज़िक्र किया है, वहां अल्लाह ने उनको उनके सबसे अच्छे आमाल के साथ ज़िक्र किया है और उनके बुरे आमाल से दरगुज़र फ़रमाया है। मैं जब भी जन्नत वालों का ज़िक्र करता हूं, तो कहता हूं, मुझे यह डर है कि शायद मैं उनमें शामिल न हो सकूं और अल्लाह ने जहां दोज़ख़ वालों का ज़िक्र किया है, वहां उनको सबसे बुरे आमाल के साथ ज़िक्र किया है और उनके अच्छे आमाल पर उनको रद्द कर दिया है यानी उनको क़ुबूल नहीं फ़रमाया।'

'मैं जब भी दोज़ख़ वालों का ज़िक्र करता हूं, तो कहता हूं कि मुझे यह डर है कि शायद मैं उन्हीं के साथ हूंगा और अल्लाह ने रहमत की आयत भी ज़िक्र फ़रमायी है और अज़ाब की आयत भी, इसलिए बन्दे को रहमत का शौक़ और अज़ाब का का डर होना चाहिए और अल्लाह से ग़लत उम्मीदें न बांधे (कि अमल तो अच्छे न करे और उम्मीद जन्नत की रखे) और उसकी रहमत से नाउम्मीद भी न हो और अपने हाथों अपने आपको हलाकत में न डाले।'

'अगर तुमने मेरी यह वसीयत याद रखी (और इस पर अच्छी तरह अमल किया) तो कोई ग़ायब चीज़ तुम्हें मौत से ज़्यादा महबूब न होगी और तुम्हें मौत आकर रहेगी और अगर तुमने मेरी वसीयत बर्बाद कर दी और उस पर अमल न किया) तो कोई ग़ायब चीज़ तुम्हें मौत से ज़्यादा

बुरी नहीं लगेगी और वह मौत तुम्हें पकड़कर रहेगी, तुम उससे बच नहीं सकते।"[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० और दूसरे सहाबा किराम रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रज़ि० कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने शाम भेजने के लिए फ़ौजों को जमा करने का इरादा फ़रमाया, (चुनांचे फ़ौजें जमा हो गईं और) उनके मुक़र्रर किए हुए अमीरों में से सबसे पहले हज़रत अम्र बिन आस रवाना हुए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनको हुक्म दिया कि फ़लस्तीन जाने के इरादे से वह ऐला शहर से गुज़रें और हज़रत अम्र रज़ि० की फ़ौज, जो मदीना से चली थी, उसकी तायदाद तीन हज़ार थी, उसमें मुहाजिरीन और अंसार की बड़ी तायदाद थी। (जब यह फ़ौज रवाना हुई तो उनको विदा करने के लिए) हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० की सवारी के साथ चल रहे थे और उनको हिदायतें देते जा रहे थे और फ़रमा रहे थे—

'ऐ अम्र रज़ि० ! अपने हर काम में अल्लाह से डरते रहना चाहिए, चाहे वह काम छिपकर करो या सबके सामने और अल्लाह से शर्म करना, क्योंकि वह तुम्हें और तुम्हारे सारे कामों को देखता है और तुम देख चुके हो कि मैंने तुमको (अमीर बनाकर) उन लोगों से आगे कर दिया है जो तुमसे ज़्यादा पुराने हैं और तुमसे पहले इस्लाम लाए हैं और इस्लाम और मुसलमानों के लिए तुमसे ज़्यादा फ़ायदेमंद हैं। तुम आख़िरत के लिए काम करने वाले बनो और तुम जो काम भी करो, अल्लाह की रिज़ा की नीयत से करो और जो मुसलमान तुम्हारे साथ जा रहे हैं, तुम उनके साथ बाप की तरह मेहरबानी का मामला करना। तुम लोगों की अंदर की बातों को हरगिज़ न खोलना, बल्कि उनके ज़ाहिरी आमाल को काफ़ी समझना और अपने काम में पूरी मेहनत करना और दुश्मन से

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 363

मुक़ाबले के वक़्त जमकर लड़ना और बुज़दिल न बनना और ग़नीमत के माल में अगर ख़ियानत होने लगे तो उस (ख़ियानत को जल्दी से आगे बढ़कर रोक देना और उस पर सज़ा देना और जब तुम अपने साथियों में बयान करो तो थोड़ा करो, तुम अपने आपको ठीक रखो, तो तुम्हारे सारे मामले तुम्हारे साथ ठीक चलेंगे।"[1]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रह० कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अम्र रज़ि० और हज़रत वलीद बिन उक़बा रज़ि० को ख़त लिखा। इन दोनों में से हर एक क़बीला क़ुज़ाआ के आधे सदक़े वसूल करने पर मुक़र्रर था। जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सदक़ों के वसूल करने के लिए इन दोनों को भेजा था तो इन दोनों को विदा करने के लिए उनके साथ बाहर आए थे और इन दोनों को एक ही वसीयत फ़रमाई थी कि—

'ज़ाहिर और बातिन में अल्लाह से डरते रहना, क्योंकि जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए (हर मुश्किल और परेशानी और सख़्ती से) निकलने का रास्ता ज़रूर बना देगा और उसको वहां से रोज़ी देगा जहां से रोज़ी मिलने का गुमान भी न होगा और जो अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसकी बुराइयां दूर कर देगा और उसे बड़ा अज्र देगा। अल्लाह के बन्दे जिन आमाल की एक दूसरे को वसीयत करते हैं, उनमें सबसे बेहतरीन अल्लाह का डर है। तुम इस वक़्त अल्लाह के रास्तों में से एक रास्ते में हो। तुम्हारे इस काम में हक़ की किसी बात पर आंखें चुराने की और किसी काम में कोताही करने की कोई गुंजाइश नहीं है और जिस काम में तुम्हारे दीन की दुरुस्तगी है और तुम्हारे काम की हर तरह हिफ़ाज़त है, उस काम से ग़फ़लत बरतने की भी कोई गुंजाइश नहीं है, इसलिए सुस्त न पड़ना और कोताही न करना।'[2]

हज़रत मुत्तलिब बिन साइब बिन अबी वदाआ रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को यह

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 133, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 129
2. तबरी, भाग 4, पृ० 29, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 132

ख़त लिखा—

'मैंने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को ख़त लिखा है कि वह तुम्हारी मदद के लिए तुम्हारे पास चले जाएं। जब वह तुम्हारे पास आ जाएं, तो तुम उनके साथ अच्छी तरह रहना और उन पर बड़े बनने की कोशिश न करना। चूंकि मैंने तुमको (अमीर बनाकर) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और दूसरे लोगों से आगे कर दिया है, इसलिए तुम उन (के मश्विरे) के बिना किसी काम में फ़ैसला न करना और इन सबसे मश्विरा लेते रहना और उनकी मुख़ालफ़त न करना।'[1]

हज़रत अब्दुल हमीद बिन जाफ़र अपने बाप जाफ़र से नक़ल करते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० से फ़रमाया—

'क़बीला बली, क़बीला उज़रा और क़बीला क़ुज़ाआ की दूसरी शाखाओं के जिन लोगों के पास से तुम गुज़रो और वहां जो अरब आबाद हैं, मैंने तुमको उन सबका अमीर बनाया है। इन सबको अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने की दावत देना और इस पर ख़ूब उभारना, इसलिए इनमें से जो तुम्हारे साथ चल पड़े, उसे सवारी और तोशा देना और उनका आपस में जोड़ क़ायम रखना, हर क़बीले को अलग रखना और हर क़बीले को उसके दर्जे पर रखना।'[2]

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिस तैमी रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ि० को अमारत (अमीर पद) से हटा दिया, तो उन्होंने हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ि० को हज़रत ख़ालिद बिन सईद के बारे में यह वसीयत फ़रमाई और शुरहबील भी (हज़रत अबूबक्र रज़ि० के) एक अमीर थे। चुनांचे उन्होंने फ़रमाया—

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 133
2. कंज़, भाग 3, पृ० 133, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 129

'हज़रत ख़ालिद बिन सईद का हमेशा ख़्याल रखना, उनका अपने ऊपर उसी तरह हक़ पहचानना, जिस तरह उनके अमीर होने की शक्ल में तुम उनसे अपने हक़ के पहचानने को पसन्द करते और तुम उनका इस्लाम में दर्जा पहचान ही चुके हो और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त वह हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से (फ़्लां क़बीला के) गवर्नर थे और मैंने भी उनको अमीर बनाया था। फिर मैंने उनको इस ज़िम्मेदारी से हटाना मुनासिब समझा और शायद यही दीनी एतबार से उनके लिए ज़्यादा बेहतर होगा। मैं किसी की अमारत (अमीर के पद) पर रश्क (डाह) नहीं करता, मैंने उनको फ़ौजों के अमीरों के बारे में अख़्तियार दिया था (कि वह जिस अमीर को चाहें, अपने लिए पसन्द कर लें)। उन्होंने दूसरे अमीर को और अपने चचेरे भाई को छोड़कर तुम्हें अख़्तियार किया है। जब तुम्हें कोई ऐसा काम पेश आए, जिसमें किसी मुत्तक़ी और भला चाहने वाले आदमी की राय की ज़रूरत हो, तो सबसे पहले हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह और हज़रत मुआज़ बिन जबल से मश्विरा लेना और उन दो के बाद तीसरे हज़रत ख़ालिद बिन सईद हों, क्योंकि तुम्हें इन तीनों लोगों के पास ख़ैरख़्वाही और ख़ैर ही मिलेगी और इन लोगों से मश्विरा छोड़कर सिर्फ़ अपनी राय पर अमल न करना और उनसे कुछ भी न छिपाना।'[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० का हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत हारिस बिन फ़ुज़ैल रह० कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ि० को फ़ौज का झंडा दिया, यानी उनको फ़ौज का अमीर बनाया, तो उनसे फ़रमाया—

'ऐ यज़ीद! तुम जवान हो, एक नेक अमल की वजह से तुम्हें भले तौर पर याद किया जाता है, जो लोगों ने तुम्हें करते हुए देखा है, और यह एक निजी अमल है, जो तुमने तंहाई में किया था और मैंने इस बात का इरादा किया है कि मैं तुम्हें (अमीर बनाकर) आज़माऊं और तुम्हें

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 70, कंज़, भाग 3, पृ० 134

घरवालों से निकालकर बाहर भेजूं और देखूं कि तुम कैसे हो? और तुम्हारी अमारत कैसी है? बहरहाल मैं तुम्हें आज़माने लगा हूं। अगर तुमने (अमारत को) अच्छी तरह संभाला, तो तुम्हें तरक़्क़ी दूंगा और अगर तुम ठीक तरह न संभाल सके, तो मैं तुम्हें हटा दूंगा। हज़रत ख़ालिद बिन सईद वाले काम का मैंने तुमको ज़िम्मेदार बना दिया है।'

फिर इस सफ़र में हज़रत यज़ीद को जो कुछ करना था, उसके बारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनको हिदायतें दीं और यों फ़रमाया—

'मैं तुम्हें हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह के साथ भलाई करने की ताकीद करता हूं, क्योंकि तुम जानते हो कि इस्लाम में उनका बड़ा दर्जा है और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हर उम्मत का एक अमीन हुआ करता है और इस उम्मत के अमीन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह हैं। उनके बड़कपन और दीनी पहल का ध्यान रखना और ऐसे ही हज़रत मुआज़ बिन जबल का भी ख़्याल रखना। तुम जानते हो कि वह हुज़ूर सल्ल० के साथ लड़ाइयों में शरीक हुए हैं और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है कि (क़ियामत के दिन) हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० उलेमा के आगे एक ऊंची जगह पर चलते हुए नज़र आएंगे यानी उस दिन इल्मी बड़कपन की वजह से उनकी एक निराली शान होगी। इन दोनों के मश्विरे के बग़ैर किसी काम का फ़ैसला न करना और ये दोनों भी तुम्हारे साथ भलाई करने में हरगिज़ कोई कमी न करेंगे।'

हज़रत यज़ीद ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा! जैसे आपने मुझे इन दोनों के बारे में ताकीद फ़रमाई है, ऐसे ही इन दोनों को मेरे बारे में ताकीद फ़रमा दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इन दोनों को तुम्हारे बारे में ज़रूर ताकीद करूंगा।

हज़रत यज़ीद ने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए और इस्लाम की ओर से आपको बेहतरीन बदला दे।[1]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 132

हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफ़ियान रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझे शाम देश भेजा तो यों फ़रमाया—

'ऐ यज़ीद ! तुम्हारे बहुत से रिश्तेदार हैं। हो सकता है कि तुम अमीर बनाने में उन रिश्तेदारों को दूसरों पर तर्जीह दे दो। मुझे तुमसे सबसे ज़्यादा इसी बात का डर है, लेकिन ध्यान से सुनो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, जो मुसलमानों के किसी काम का ज़िम्मेदार बना और फिर उसने निजी झुकाव की वजह से किसी ग़ैर-हक़दार को मुसलमानों का अमीन बना दिया, तो उस पर अल्लाह की लानत होगी और अल्लाह उससे न कोई नफ़्ल इबादत क़ुबूल फ़रमाएंगे और न फ़र्ज़, बल्कि उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे और जिसने निजी ताल्लुक़ की वजह से किसी ग़ैर-हक़दार को अपने भाई का माल दे दिया, तो उस पर अल्लाह की लानत होगी या फ़रमाया, अल्लाह का ज़िम्मा उससे बरी है। अल्लाह ने लोगों को इस बात की दावत दी है कि वे अल्लाह पर ईमान लाएं, ताकि वे अल्लाह की हिमायत और हिफ़ाज़त में आ जाएं। अब जो अल्लाह की हिमायत और हिफ़ाज़त में आ चुका है, उसको जो नाहक़ बेइज़्ज़त करेगा, उस पर अल्लाह की लानत होगी या फ़रमाया, अल्लाह का ज़िम्मा उससे बरी हो जाएगा।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को वसीयत करना

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया—

'मैं अपने बाद होने वाले ख़लीफ़ा को शुरू के मुहाजिरीन के बारे में वसीयत करता हूं कि वह उनका हक़ पहचाने और उनकी इज़्ज़त व एहतराम की हिफ़ाज़त करे और जो अंसार हिजरत के घर और ईमान के घर यानी मदीना मुनव्वरा में मुहाजिरीन से पहले से रहते थे, उनके बारे में भी उसे वसीयत करता हूं कि वह उनके नेक आदमियों से क़ुबूल करता रहे और उनके बुरों को माफ़ करता रहे। और मैं अपने शहरियों के बारे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 143, हैसमी, भाग 5, पृ० 232

में भी वसीयत करता हूं कि ये लोग इस्लाम के मददगार लोगों से (फ़र्ज़ ज़कात और सदक़ों का) माल जमा करने वाले (और अमीर को लाकर देनेवाले) और दुश्मन के ग़ुस्से की वजह बनने वाले हैं, ऐसे शहरियों से सिर्फ़ (ज़रूरत से) ज़्यादा माल उनकी रज़ामंदी से लिया जाए और मैं उसे देहातियों के बारे में भी भलाई की वसीयत करता हूं, क्योंकि ये लोग अरब की असल और इस्लाम की जड़ हैं। वह ख़लीफ़ा ऐसे देहातियों के जानवरों में सिर्फ़ कम उम्र के जानवर ले और उनसे लेकर उनके फ़क़ीरों में बांट दे और अल्लाह और उसके रसूल की ओर से उनके देहातियों के लिए जो अह्द और ज़िम्मेदारी ख़लीफ़ा पर आती है, वह उसे पूरी तरह से अदा करे और उन देहातियों के बाद वाले इलाक़े में जो (दुश्मन और काफ़िर) रहते हैं, उनसे यह ख़लीफ़ा लड़ाई लड़े और उन देहातियों की ताक़त से ज़्यादा का उनको ज़िम्मेदार न बनाए।[1]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने फ़रमाया—

'मेरे बाद जो ख़िलाफ़त के मामलों का ज़िम्मेदार बने, उसे यह मालूम होना चाहिए कि मेरे बाद बहुत से दूर व नज़दीक के लोग उससे ख़िलाफ़त लेना चाहेंगे (मेरे बाद वाले ज़माने में लोगों में अमारत की तलब पैदा हो जाएगी। मेरे ज़माने में लोगों में यह अमारत की तलब बिल्कुल नहीं है, इसलिए) मैं तो लोगों से इस बात पर बहुत झगड़ता हूं कि वे किसी और को ख़लीफ़ा बनाकर मुझे उससे नजात दे दें (और मैं सिर्फ़ इस वजह से ख़लीफ़ा बना हुआ हूं कि मुझे अपने से ज़्यादा मज़बूती और ताक़त से ख़िलाफ़त के मामले को संभालने वाला कोई नज़र नहीं आता) अगर मुझे कोई ऐसा आदमी मालूम हुआ जो ख़िलाफ़त के मामलों को मुझसे ज़्यादा ताक़त और मज़बूती से संभाल सके तो (मैं एक लम्हे (क्षण) के लिए ख़लीफ़ा न बनूं, बल्कि उसे ही बना दूं, क्योंकि) ऐसे आदमी की मौजूदगी में ख़लीफ़ा बनने से मुझे ज़्यादा यह महबूब है कि आगे करके मेरी गरदन उड़ा दी जाए।'[2]

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 439
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 197, कंज़, भाग 3, पृ० 147

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत सालेह बिन कैसान रह० कहते हैं, ख़लीफ़ा बनने के बाद हज़रत उमर रज़ि० ने पहला ख़त, जो हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को लिखा, जिसमें उन्होंने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को हज़रत ख़ालिद रज़ि० की फ़ौज का अमीर बनाया, उसमें यह मज़्मून था—

'मैं तुम्हें उस अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं जो कि बाक़ी रहेगा और उसके अलावा बाक़ी तमाम चीज़ें फ़ना हो जाएंगी और उसी ने हमें गुमराही से निकालकर हिदायत दी और वही अंधेरों से निकालकर हमें नूर की ओर ले आया। मैंने तुम्हें ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० की फ़ौज का अमीर बना दिया है। चुनांचे मुसलमानों के जो काम तुम्हारे ज़िम्मे हैं, उनको तुम पूरा करो और ग़नीमत के माल की उम्मीद में मुसलमानों को हलाकत की जगह न ले जाओ। किसी जगह पड़ाव करने से पहले आदमी भेजकर मुसलमानों के लिए मुनासिब जगह खोज लो और यह भी मालूम कर लो कि उस जगह पहुंचने का रास्ता कैसा है? और जब भी कोई जमाअत भेजो तो भरपूर जमाअत बनाकर भेजो, (थोड़े आदमी न भेजो) और मुसलमानों को हलाकत में डालने से बचो। अल्लाह तुम्हें मेरे ज़रिए और मुझे तुम्हारे ज़रिए से आज़मा रहे हैं। अपनी आंखें दुनिया से बन्द रखो और अपना दिल उससे हटा लो। इसका ख़्याल रखो कि कहीं दुनिया (की मुहब्बत) तुम्हें हलाक न कर दे जैसा कि तुमसे पहले लोगों को हलाक कर चुकी है और तुम उन लोगों की हलाकत की जगह देख चुके हो।'[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत मुहम्मद और हज़रत तलहा रह० कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि०

1. इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 92

ने पैग़ाम भेजकर हज़रत साद रज़ि० को बुलाया। जब वह आ गए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको इराक़ की लड़ाई का अमीर बनाया और उनको यह वसीयत फ़रमाई—

'ऐ साद ! ऐ क़बीला बनू उहैब के साद ! तुम अल्लाह से इस बात से धोखा में न पड़ जाना कि लोग तुम्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूं और सहाबी कहते है, क्योंकि अल्लाह बुराई को बुराई से नहीं मिटाते, बल्कि बुराई को अच्छाई से मिटाते हैं। अल्लाह की इताअत के अलावा अल्लाह का किसी से कोई रिश्ता नहीं है। अल्लाह के यहां बड़े ख़ानदान के लोग और छोटे ख़ानदान के लोग सब बराबर है। अल्लाह इन सबके रब है और वे सब उसके बंदे है। जो आफ़ियत में एक दूसरे से आगे बढ़ते नज़र आते है, लेकिन ये बन्दे अल्लाह के इनाम इताअत ही से हासिल कर सकते है।'

'तुमने हुज़ूर सल्ल० को नबी बनाए जाने से लेकर हमसे जुदा होने तक जिस काम को करते हुए देखा है, उस काम को ग़ौर से देखना और उसकी पाबन्दी करना, क्योंकि यही असल काम है, यह मेरी तुम्हें ख़ास नसीहत है। अगर तुमने इसे छोड़ दिया और इसकी तरफ़ तवज्जोह न दी, तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे।'

जब हज़रत उमर रज़ि० ने उनको रवाना करने का इरादा फ़रमाया, तो उन्हें बुलाकर फ़रमाया—

'मैंने तुम्हें इराक़ की लड़ाई का अमीर बनाया है, इसलिए तुम मेरी वसीयत याद रखो। तुम ऐसे काम के लिए आगे जा रहे हो जो बहुत कठिन भी है और तबियत के ख़िलाफ़ भी है। हक़ पर चलकर ही तुम उससे ख़लासी पा सकते हो। अपने आपको और अपने साथियों को भलाई का आदी बनाओ और भलाई के ज़रिए ही मदद तलब करो। तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि हर अच्छी आदत हासिल करने के लिए कोई चीज़ ज़रिया बना करती है। भलाई हासिल करने का सबसे बड़ा ज़रिया सब्र है। हर मुसीबत और हर मुश्किल में ज़रूर सब्र करना। इस तरह अल्लाह का डर हासिल होगा और तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह का डर दो बातों से हासिल होता है। एक अल्लाह की इताअत

से, दूसरे उसकी नाफ़रमानी से बचने से।'

'जिसको दुनिया से नफ़रत हो और आख़िरत से मुहब्बत हो, वही अल्लाह की नाफ़रमानी करता है, और दिलों में अल्लाह कुछ हक़ीक़तें पैदा करते हैं, उनमें से कुछ छिपी हुई होती हैं और कुछ ज़ाहिर। एक ज़ाहिरी हक़ीक़त यह है कि हक़ बात के बारे में उसकी तारीफ़ करने वाला और उसे बुरा कहने वाला दोनों उसके नज़दीक बराबर हों (कि हक़ बात पर चलने का मक़्सूद अल्लाह का राज़ी होना है। लोग चाहे बुरा कहें या तारीफ़ करें, उससे कोई असर न ले) और छिपी हुई हक़ीक़तें दो निशानियों से पहचानी जाती हैं—

एक यह है कि हिक्मत व मारफ़त की बातें उसके दिल से उसकी ज़ुबान पर जारी होने लगें।

दूसरी यह कि लोग उससे मुहब्बत करने लगें, इसलिए लोगों के महबूब (प्रिय) बनने में चाव दिखाना न छोड़ो (बल्कि इसे अपने लिए अच्छी चीज़ समझो), क्योंकि नबियों अलै० ने लोगों की मुहब्बत अल्लाह से मांगी है और अल्लाह जब बन्दे से मुहब्बत करते हैं, तो लोगों के दिलों में उसकी मुहब्बत डाल देते हैं और जब किसी बन्दे से नफ़रत करते हैं, तो लोगों के दिलों में उसकी नफ़रत पैदा फ़रमा देते हैं। इसलिए जो लोग तुम्हारे साथ दिन-रात बैठते हैं, उनके दिलों में तुम्हारे बारे में (मुहब्बत या नफ़रत का) जो जज़्बा है, तुम अल्लाह के यहां भी अपने लिए वही समझ लो।'[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत उमैर बिन अब्दुल मलिक रह० कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ि० को बसरा भेजा, तो उनसे फ़रमाया—

'ऐ उत्बा! मैंने तुम्हें हिन्द की ज़मीन का गवर्नर बना दिया है। (चूंकि बसरा खाड़ी के तट पर वाक़े है और यह खाड़ी हिन्द की ज़मीन तक

1. इब्ने जरीर, भाग 3, पृ० 92

पहुंच जाती है, इस वजह से बसरा को हिन्द की ज़मीन कह दिया) यह दुश्मन की सख़्त जगहों में से एक सख़्त जगह है और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह आस-पास के इलाक़े से तुम्हारी किफ़ायत फ़रमाएगा और वहां वालों के ख़िलाफ़ तुम्हारी मदद फ़रमाएगा।'

'मैंने हज़रत अला हज़रमी को ख़त लिखा है कि वह तुम्हारी मदद के लिए हज़रत अरफ़ज़ा बिन हरसमा को भेज दें। यह दुश्मन से ज़बरदस्त लड़ाई लड़ने वाले और उसके ख़िलाफ़ ज़बरदस्त तद्बीरें करने वाले हैं। जब वह तुम्हारे पास आ जाएं, तो तुम उनसे मश्विरा करना और उनको अपने क़रीब करना, फिर (बसरा वालों को) अल्लाह की ओर दावत देना। जो तुम्हारी दावत क़ुबूल कर ले तुम उससे उसके इस्लाम को क़ुबूल कर लेना और जो (इस्लाम की दावत से) इंकार करे तो उसे ज़लील और छोटा बनकर जिज़या अदा करने की दावत देना। अगर वह इसे भी न माने, तो फिर तलवार लेकर उससे लड़ना और उसके साथ नर्मी न बरतना और जिस काम की ज़िम्मेदारी तुम्हें दी गई, उसमें अल्लाह से डरते रहना और इस बात से बचते रहना कि कहीं तुम्हारा नफ़्स तुम्हें तकब्बुर (घमंड) की तरफ़ न ले जाए, क्योंकि तकब्बुर तुम्हारी आख़िरत ख़राब कर देगा।'

'तुम हुज़ूर सल्ल० की सोहबत में रहे हो, तुम ज़लील थे, हुज़ूर सल्ल० की वजह से तुम्हें इज़्ज़त मिली है, तुम कमज़ोर थे, हुज़ूर सल्ल० की वजह से तुम्हें ताक़त मिली है और अब तुम लोगों पर अमीर और उनके बादशाह बन गए हो, जो तुम कहोगे, उसे सुना जाएगा और जो तुम हुक्म दोगे उसे पूरा किया जाएगा। यह अमारत बहुत बड़ी नेमत है, बशर्तेकि अमारत की वजह से तुम अपने आपको अपने दर्जे से ऊंचा न समझने लग जाओ और नीचे वालों पर तुम अकड़ने न लग जाओ, इस नेमत से ऐसे बचो, जैसे तुम गुनाहों से बचते हो और मुझे अमारत की नेमत और गुनाह में से अमारत की नेमत के नुक़्सान का तुम पर ज़्यादा ख़तरा है कि यह धीरे-धीरे तुम्हें धोखा देगी (और तुम्हें घमंड और मुसलमानों को नीचा समझने में फंसा देगी और फिर तुम ऐसे करोगे कि सीधे जहन्नम में चले जाओगे। मैं तुम्हें और अपने आपको अमारत के

इन नुक़्सानों से अल्लाह की पनाह में देता हूं। (यानी मुझे और तुम्हें अल्लाह अमारत के शर से बचाकर रखे।) लोग अल्लाह की ओर तेज़ी से चले, (ख़ूब दीन का काम किया) जब (दीन का काम करने के नतीजे में) दुनिया उनके सामने आई तो उन्होंने उसे ही अपना मक़्सद बना लिया। इसलिए तुम अल्लाह ही को मक़्सद बनाना, दुनिया को न बनाना और ज़ालिमों के गिरने की जगह यानी दोज़ख़ से डरते रहना।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत शाबी रह० कहते हैं, हज़रत अला बिन हज़रमी बहरैन में थे। वहां हज़रत उमर रज़ि० ने उनको यह ख़त लिखा—

'तुम हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान के पास चले जाओ। मैंने तुमको उनके काम का ज़िम्मेदार बनाया है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम ऐसे आदमी के पास जा रहे हो जो उन शुरू के मुहाजिरीन में से है, जिनके लिए अल्लाह की ओर से पहले ही भलाई मुक़द्दर हो चुकी है। मैंने उनको अमारत से इसलिए नहीं हटाया कि वे पाकदामन, मज़बूत और सख़्त लड़ाई लड़ने वाले नहीं थे, (बल्कि ये तमाम ख़ूबियां उनमें हैं) बल्कि मैंने उनको इसलिए हटाया है कि मेरे ख़्याल में तुम उस इलाक़े के मुसलमानों के लिए उनसे ज़्यादा मुफ़ीद रहोगे, इसलिए तुम उनका हक़ पहचानना।'

'तुमसे पहले मैंने एक आदमी को अमीर बनाया था, लेकिन वह वहां पहुंचने से पहले ही इंतिक़ाल कर गया। अगर अल्लाह चाहेंगे तो तुम वहां के अमीर बन सकोगे और अगर अल्लाह यह चाहें कि उत्बा ही अमीर रहे (और तुम्हें मौत आ जाए), तो फिर ऐसा ही होगा, क्योंकि पैदा करना और हुक्म देना अल्लाह रब्बुल आलमीन ही के लिए है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह ही आसमान से कोई फ़ैसला उतारते हैं और फिर अपनी हिफ़ाज़त की सिफ़त से उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं

1. इब्ने जरीर, भाग 4, पृ० 150, बिदाया, भाग 7, पृ० 48

(उसे बर्बाद नहीं होने देते, बल्कि वह फ़ैसला पूरा होकर रहता है) और तुम तो सिर्फ़ उस काम को देखो जिसके लिए तुम पैदा किए गए हो, उसके लिए पूरी मेहनत करो, कोशिश करो और उसके अलावा और तमाम कामों को छोड़ दो, क्योंकि दुनिया के ख़त्म होने का वक़्त मुक़र्रर है और आख़िरत हमेशा रहने वाली है। तुम दुनिया की उन नेमतों में लगकर, जो कि ख़त्म होने वाली है, आख़िरत के उस अज़ाब से ग़ाफ़िल न हो जाना जो बाक़ी रहने वाला है। अल्लाह के ग़ुस्से से भाग कर अल्लाह की तरफ़ आ जाओ और अल्लाह जिसके लिए चाहें, उसके हुक्म और इल्म में पूरी फ़ज़ीलत जमा फ़रमा दें। हम अल्लाह से अपने लिए और तुम्हारे लिए उसकी इताअत करने पर मदद और उसके अज़ाब से नजात मांगते हैं।"[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० का हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० को वसीयत करना

हज़रत ज़ब्बा बिन मिह्सन रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० को यह ख़त लिखा—

'अम्मा बाद, कभी-कभी लोगों को अपने बादशाह से नफ़रत हो जाया करती है। मैं इस बात से अल्लाह की पनाह चाहता हूं कि मेरे और तुम्हारे बारे में लोगों के दिलों में नफ़रत का जज़्बा पैदा हो। (अगर सारा दिन शरीअत की हदें न क़ायम कर सको तो) दिन में एक घड़ी ही हदें क़ायम करो, लेकिन हर दिन ज़रूर क़ायम करो। जब दो काम ऐसे पेश आ जाएं कि उनमें से एक अल्लाह के लिए हो और दूसरा दुनिया के लिए, तो दुनिया वाले काम पर अल्लाह वाले को तर्जीह देना, क्योंकि दुनिया तो ख़त्म हो जाएगी और आख़िरत बाक़ी रहेगी और बदकारों को डराते रहो और उनको एक जगह न रहने दो, बल्कि उन्हें बिखेर दो (वरना इकट्ठे होकर बदकारी के मंसूबे बनाते रहेंगे) बीमार

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 78

मुसलमान की बीमारपुर्सी करो और उनके जनाज़े में शिर्कत करो और अपना दरवाज़ा खुला रखो और मुसलमानों के काम ख़ुद करो क्योंकि तुम भी उनमें से एक हो। बस इतनी सी बात है कि अल्लाह ने तुम पर उनसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी का बोझ डाल दिया है।'

'मुझे यह ख़बर पहुंची है कि तुमने और तुम्हारे घरवालों ने पहनावे, खाने और सवारी में एक ख़ास तरीक़ा अपनाया है जो आम मुसलमानों में नहीं है। ऐ अब्दुल्लाह ! तुम अपने आपको इससे बचाओ कि तुम उस जानवर की तरह से हो जाओ जिसका हरी-भरी घाटी पर गुज़र हो और उसे ज़्यादा से ज़्यादा घास खाकर मोटा हो जाने के अलावा और कोई चिन्ता न हो। वह ज़्यादा खाकर मोटा तो हो गया, लेकिन उसी में मर गया और तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अमीर जब टेढ़ा हो जाएगा, तो उसके मामूर (जिनका वह अमीर है) भी टेढ़े हो जाएंगे और लोगों में सबसे ज़्यादा बदक़िस्मत वह है जिसकी वजह से उसकी जनता बदक़िस्मत हो जाए।'[1]

हज़रत जह्हाक रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा रज़ि० को यह ख़त लिखा—

'अम्माबादु ! अमल में ताक़त और पक्कापन इस तरह पैदा होता है कि तुम आज का काम कल पर न छोड़ो, क्योंकि जब तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे पास बहुत सारे काम जमा हो जाएंगे, फिर तुम्हें पता नहीं चलेगा कि कौन-सा काम करो और कौन-सा न करो और यों बहुत सारे काम रह जाएंगे। अगर तुम्हें दो कामों में अख़्तियार दिया जाए जिनमें से एक काम दुनिया का हो और दूसरा आख़िरत का, तो आख़िरत वाले काम को दुनिया वाले काम पर तर्जीह दो, क्योंकि दुनिया फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी रहने वाली है। अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह की किताब सीखते रहो, क्योंकि उसमें इल्मों के चश्मे और दिलों की बहार है। (यानी क़ुरआन से दिल को राहत मिलती है।)'[2]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 149, कंज़, भाग 8, पृ० 209
2. कंज़, भाग 8, पृ० 208

हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन रज़ि० का वसीयत करना

हज़रत अला बिन फ़ज़्ल की मां कहती हैं, हज़रत उस्मान रज़ि० के शहीद होने के बाद लोगों ने उनके ख़ज़ाने की तलाशी ली, तो उसमें एक सन्दूक़ मिला जिसे ताला लगा हुआ था। जब लोगों ने उसे खोला तो उसमें एक काग़ज़ मिला जिसमें यह वसीयत लिखी हुई थी—

'यह उस्मान की वसीयत है। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० उस्मान बिन अफ़्फ़ान इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है और अल्लाह उस दिन लोगों को क़ब्रों से उठाएंगे जिस दिन के आने में कोई शक नहीं है। बेशक अल्लाह अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। इसी गवाही पर उस्मान ज़िंदा रहा, इसी पर मरेगा और इसी पर इनशाअल्लाह (क़ियामत के दिन) उठाया जाएगा।'[1]

निज़ामुल्क ने भी इस हदीस को बयान किया है और इसमें यह मज़्मून भी है कि लोगों ने उस काग़ज़ के पीछे यह लिखा हुआ देखा—

غِنَى النَّفْسِ يُغْنِي النَّفْسَ حَتَّى يُجِلَّهَا   وَإِنْ عَضَّهَا حَتَّى يَضُرَّ بِهَا الْفَقْرُ

'दिल का ग़िना आदमी को ग़नी बना देता है, यहां तक कि उसे बड़े मर्तबे वाला बना देता है, अगरचे यह ग़िना उसे इतना नुक़्सान पहुंचाए कि फ़क़्र उसे सताने लगे।'

وَمَا عُسْرَةٌ فَاصْبِرْ لَهَا إِنْ لَقِيتَهَا   بِكَائِنَةٍ إِلَّا سَيَتْبَعُهَا يُسْرُ

'अगर तुम्हें कोई मुश्किल पेश आए, तो उस पर सब्र करो, क्योंकि हर मुश्किल के बाद आसानी ज़रूर आती है।'

وَمَنْ لَمْ يُقَاسِ الدَّهْرَ لَمْ يَعْرِفِ الْأَسَى   وَفِي غِيَرِ الْأَيَّامِ مَا وَعَدَ الدَّهْرُ

'जो ज़माने की सख़्तियां बरदाश्त नहीं करता, उसे कभी ग़मख़्वारी के मज़े का पता नहीं चल सकता। ज़माने के हादसों पर ही अल्लाह ने

---

1. राज़ी,

सब कुछ देने का वायदा किया है।"[1]

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० फ़रमाते हैं, जब हज़रत उस्मान रज़ि० के घर का घेराव सख़्त हो गया, तो आपने लोगों की तरफ़ झांक कर फ़रमाया, ऐ अल्लाह के बन्दो! रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० घर से बाहर आ रहे हैं। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा (साफ़ा) बांधा हुआ है। अपनी तलवार गले में डाली हुई है। उनसे आगे मुहाजिरीन और अंसार की एक जमाअत है, जिनमें हज़रत हसन रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० भी हैं। इन लोगों ने बाग़ियों पर हमला करके उन्हें भगा दिया और फिर ये सब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० के पास उनके घर गए तो उनसे हज़रत अली रज़ि० ने अर्ज़ किया, अस्सलामु अलैक या अमीरुल मोमिनीन! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दीन की बुलन्दी और मज़बूती उस वक़्त हासिल हुई जब आपने मानने वालों को साथ लेकर न मानने वालों को मारना शुरू कर दिया और अल्लाह की क़सम! मुझे तो यही नज़र आ रहा है कि ये लोग आपको क़त्ल कर देंगे, इसलिए आप हमें इजाज़त दें ताकि हम इनसे लड़ें।

इस पर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, 'जो आदमी अपने ऊपर अल्लाह का हक़ मानता है और इस बात का इक़रार करता है कि मेरा उस पर हक़ है, उसको मैं क़सम देकर कहता हूं कि वह मेरी वजह से किसी का एक सींगी भर भी ख़ून न बहाए और न अपना ख़ून बहाए।'

हज़रत अली रज़ि० ने अपनी बात दोबारा अर्ज़ की, हज़रत उस्मान रज़ि० ने वही जवाब दिया।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने हज़रत अली रज़ि० को देखा कि वह हज़रत उस्मान रज़ि० के दरवाज़े से निकलते हुए यह फ़रमा रहे थे, ऐ अल्लाह! आप जानते हैं कि हमने अपना सारा ज़ोर लगा लिया है। फिर हज़रत अली रज़ि० मस्जिद में दाख़िल हुए और नमाज़ का वक़्त हो गया। लोगों ने हज़रत अली रज़ि० से कहा, ऐ अबुल हसन! आगे बढ़ें

1. तबरी, भाग 2, पृ० 133

और नमाज़ पढ़ाएं। उन्होंने कहा, इमाम के घर का घेराव किया हुआ है। मैं इस हाल में तुम लोगों को नमाज़ नहीं पढ़ा सकता, मैं तो अकेले नमाज़ पढूंगा। चुनांचे वह अकेले नमाज़ पढ़कर अपने घर चले गए। पीछे से उनके बेटे ने आकर ख़बर दी, ऐ अब्बा जान! अल्लाह की क़सम! वे बाग़ी लोग उनके घर में ज़बरदस्ती घुस गए हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० अल्लाह की क़सम! वे लोग तो उनको क़त्ल कर देंगे। लोगों ने पूछा, ऐ अबुल हसन! शहीद होकर हज़रत उस्मान रज़ि० कहां जाएंगे? उन्होंने कहा, जन्नत में, अल्लाह का ख़ास क़ुर्ब पाएंगे। फिर उन्होंने पूछा, ऐ अबुल हसन! ये क़ातिल लोग कहां जाएंगे? उन्होंने तीन बार कहा, अल्लाह की क़सम! दोज़ख़ में जाएंगे।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रह० कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ि० का बाग़ियों ने घेराव किया हुआ था। इतने में हज़रत क़तादा रज़ि० और एक और साहब उनके साथ हज़रत उस्मान रज़ि० के पास उनके घर गए। दोनों ने हज़रत उस्मान रज़ि० से हज की इजाज़त मांगी। उन्होंने हज की इजाज़त दे दी। उन दोनों ने हज़रत उस्मान रज़ि० से पूछा कि अगर ये बाग़ी ग़ालिब आ गए तो हम किसका साथ दें?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, मुसलमानों की आम जमाअत का साथ देना। उन्होंने पूछा, अगर ग़ालिब आकर ये बाग़ी ही मुसलमानों की जमाअत बना लें, तो फिर हम किसका साथ दें? हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मुसलमानों की आम जमाअत का ही साथ देना, वह जमाअत भले ही किसी की हो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हम बाहर निकलने लगे तो हमें घर के दरवाज़े पर हज़रत हसन बिन अली रज़ि० सामने से आते हुए मिले जो हज़रत उस्मान रज़ि० के पास जा रहे थे, तो हम उनके साथ वापस हो गए कि सुनें कि वह हज़रत उस्मान रज़ि० से क्या कहते हैं? उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि० को सलाम करके कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन!

1. मनाक़िबुल अशरा, भाग 2, पृ० 128

आप जो चाहें मुझे हुक्म दें। इस पर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया—

'ऐ मेरे भतीजे ! वापस चले जाओ और अपने घर बैठ जाओ, यहां तक कि अल्लाह जो चाहें, उसे वजूद में ले आएं।'

चुनांचे हज़रत हसन रज़ि० भी और हम भी हज़रत उस्मान रज़ि० के पास से बाहर आ गए, तो हमें सामने से हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० आते हुए मिले। वह हज़रत उस्मान रज़ि० के पास जा रहे थे, तो हम भी उनके साथ वापस हो गए कि सुनें यह क्या कहते हैं? चुनांचे उन्होंने जाकर हज़रत उस्मान रज़ि० को सलाम किया और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में रहा और उनकी हर बात मानता रहा। फिर मैं हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास रहा और उनकी पूरी तरह फ़रमांबरदारी की, फिर मैं हज़रत उमर रज़ि० के साथ रहा और उनकी हर बात मानता रहा और मैं उनका अपने ऊपर दोहरा हक़ समझता था, एक बाप होने की वजह से और एक ख़लीफ़ा होने की वजह से और अब मैं आपका पूरी तरह फ़रमांबरदार हूं, आप मुझे जो चाहें हुक्म दें। (मैं उसे इनशाअल्लाह पूरा करूंगा।) इस पर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया—

'ऐ आले उमर रज़ि० ! अल्लाह तुम्हें दोगुना भला बदला अता फ़रमाए, मुझे किसी का ख़ून बहाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे किसी का ख़ून बहाने की कोई ज़रूरत नहीं है।'[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि, मैं भी हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ घर में घिरा हुआ था। हमारे एक आदमी को (बाग़ियों की ओर से) तीर मारा गया। इस पर मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! चूंकि उन्होंने हमारा एक आदमी क़त्ल कर दिया है, इसलिए अब उनसे लड़ना हमारे लिए जायज़ हो गया है। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया—

'ऐ अबू हुरैरह ! मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि अपनी तलवार फेंक दो। वे लोग तो मेरी जान लेना चाहते हैं, इसलिए मैं अपनी जान देकर दूसरे मुसलमानों की जान बचाना चाहता हूं।'

1. मनाक़िबुल अशरा, भाग 2, पृ० 169

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, (हज़रत उस्मान रज़ि० के इस फ़रमान पर) मैंने अपनी तलवार फेंक दी और अब तक मुझे ख़बर नहीं कि वह कहां है?[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० का अपने अमीरों को वसीयत करना

हज़रत मुहाजिर आमिरी रह० कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने अपने एक साथी को एक शहर का गवर्नर बना रखा था, उसे यह ख़त लिखा—

'अम्माबादु ! तुम अपनी जनता से ज़्यादा देर ग़ायब न रहो। (जब किसी ज़रूरत की वजह से उनसे अलग होना पड़े, तो उनके पास जल्दी आ जाओ) क्योंकि अमीर के जनता से अलग रहने की वजह से लोग तंग होंगे और ख़ुद अमीर को लोगों के हालात थोड़े मालूम हो सकेंगे, बल्कि जिनसे अलग रहेगा उनके हालात बिल्कुल न मालूम हो सकेंगे। (जब अमीर लोगों के साथ मेल-जोल नहीं रखेगा, बल्कि अलग रहेगा तो उसे सुनी-सुनाई बातों पर ही काम चलाना पड़ेगा, इस तरह सारा दारोमदार सुनाने वालों पर आ जाएगा और सुनाने वालों में ग़लत लोग भी हो सकते हैं, जिसका नतीजा यह निकलेगा कि) फिर उसके सामने बड़ी चीज़ को छोटा और छोटी चीज़ को बड़ा और अच्छी चीज़ को बुरा और बुरी चीज़ को अच्छा बनाकर पेश किया जाएगा और यों हक़ बातिल में ख़लत-मलत हो जाएगा और अमीर भी इंसान ही है। लोग उससे छिपकर जो काम कर रहे हैं, वह उनको नहीं जानता है और इंसान की हर बात पर ऐसी निशानियां नहीं पाई जाती हैं जिनसे पता चल सके कि उसकी यह बात सच्ची है या झूठी, इसलिए अब उसका हल यही है कि अमीर अपने पास लोगों के आने-जाने को आसान और आम रखे। (जब लोग उसके पास ज़्यादा आएंगे तो उसे हालात ज़्यादा मालूम हो सकेंगे और फिर यह फ़ैसला सही कर सकेगा) और इस तरह यह अमीर हर एक को उसका हक़ दे सकेगा और एक का हक़ दूसरे को देने से

1. मनाक़िबुल अशरा, भाग 2, पृ० 129

बचा रहेगा, इसलिए तुम इन दो क़िस्म के आदमियों में से एक क़िस्म के ज़रूर होगे—या तो तुम सख़ी आदमी होगे और हक़ में ख़र्च करने में तुम्हारा हाथ बहुत खुला होगा। अगर तुम ऐसे हो और तुम्हें लोगों को देना ही है और उनसे अच्छे अख़्लाक़ से पेश आना ही है, तो फिर तुम्हें लोगों से अलग रहने की क्या ज़रूरत? अगर तुम कंजूस हो, अपना सब कुछ रोककर रखने की तबियत रखते हो, तो फिर तो लोग कुछ दिन तुम्हारे पास आएंगे और जब उन्हें तुमसे कुछ न मिलेगा, तो वे ख़ुद ही निराश होकर तुम्हारे पास आना छोड़ देंगे। इस हालत में भी तुम्हें उनसे अलग रहने की ज़रूरत नहीं है और वैसे भी लोग तुम्हारे पास अपनी ज़रूरतें ही लेकर आते हैं कि या तो किसी ज़ालिम की शिकायत करेंगे या तुमसे इंसाफ़ चाह रहे होंगे और ये ज़रूरतें ऐसी हैं कि उनके पूरा करने में तुम पर कोई बोझ नहीं पड़ता। (इसलिए लोगों से अलग रहने की ज़रूरत नहीं है) इसलिए जो कुछ मैंने लिखा है उस पर अमल करके उससे फ़ायदा उठाओ और मैं तुम्हें सिर्फ़ वही बातें लिख रहा हूं जिनमें तुम्हारा फ़ायदा है और जिनसे तुम्हें हिदायत मिलेगी इनशाअल्लाह।'[1]

हज़रत मदाइनी रह० कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने अपने एक अमीर को यह ख़त लिखा—

'ठहरो और यों समझो कि तुम ज़िंदगी के आख़िरी किनारे पर पहुंच गए हो। तुम्हारी मौत का वक़्त आ गया है और तुम्हारे आमाल तुम्हारे सामने इस जगह पेश किए जा रहे हैं, जहां दुनिया के धोखे में पड़ा हुआ हाय हसरत पुकारेगा और ज़िंदगी बर्बाद करने वाला तमन्ना करेगा कि काश मैं तौबा कर लेता और ज़ालिम तमन्ना करेगा कि उसे (एक बार दुनिया में) वापस भेज दिया जाए (ताकि वह नेक अमल करके आए और यह जगह हश्र का मैदान है।)'[2]

क़बीला सक़ीफ़ के एक साहब बयान करते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने मुझे उकबरा शहर का गवर्नर बनाया और वहां के

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 58
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 58

मक़ामी लोग जोकि ज़िम्मी थे, वह मेरे पास बैठे हुए थे, तो हज़रत अली रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया—

'इराक़ के देहाती लोग धोखेबाज़ होते हैं। ख़्याल रखना, कहीं तुम्हें धोखा न दे दें, इसलिए इनके ज़िम्मे जो हक़ है, वह उनसे पूरा वसूल करना।'

फिर मुझसे फ़रमाया, शाम को मेरे पास आना, चुनांचे जब मैं शाम को ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मुझसे फ़रमाया—

'मैंने सुबह तुमको जो कहा था, वह उन लोगों को सुनाने के लिए कहा था। रक़म की वसूली के लिए उनमें से किसी को कोड़ा न मारना और न (धूप में) खड़ा करना और उनसे (शरई हक़ के बग़ैर अपने लिए) बकरी और गाय न लेना। हमें तो यह हुक्म दिया गया है कि हम उनसे अफ़्व ले और जानते हो कि अफ़्व किसे कहते हैं, जिसे वह आसानी से दे सके (और वह उसकी ज़रूरत से ज़्यादा हो।)'[1]

और बैहक़ी की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि उनका ग़ल्ला और गर्मी-सर्दी के कपड़े और उनके खेती और ढुलाई में काम आने वाले जानवर न बेचना और पैसों की वसूली के लिए किसी को (धूप में) खड़ा न करना। उस अमीर ने कहा, फिर तो मैं जैसा आपके पास से जा रहा हूं ऐसा ही ख़ाली हाथ वापस आ जाऊंगा। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, (कोई बात नहीं) चाहे तुम जैसे जा रहे हो, वैसे ही वापस आ जाओ, तेरा नाश हो! हमें यही हुक्म दिया गया है कि हम उनसे ज़रूरत से ज़्यादा माल ही लें।[2]

जनता का अपने इमाम को नसीहत करना

हज़रत मक्हूल रह० कहते हैं, हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़्यम जुमही रज़ि०, जो नबी करीम सल्ल० के सहाबा में से हैं, उन्होंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० से कहा, ऐ उमर! मैं आपको कुछ वसीयत

1. कंज़, भाग 3, पृ० 166
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 205

करना चाहता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, ज़रूर वसीयत करो। (अमीर की ग़लती पर मुतनब्बह न करना ख़ियानत है और भरे मज्मे में मुतनब्बह करना गुस्ताख़ी है और तंहाई में मुतवज्जह करना नसीहत है।) उन्होंने फ़रमाया—

'मैं आपको यह वसीयत करता हूं कि आप लोगों के बारे में अल्लाह से डरें और अल्लाह के बारे में लोगों से न डरें और आपकी कथनी-करनी में टकराव नहीं होना चाहिए, क्योंकि बेहतरीन बात वह है जिसकी तस्दीक़ अमल करे। एक ही मामले में दो टकराने वाले फ़ैसले न करना, वरना आपके काम में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा और आपको हक़ से हटना पड़ेगा। दलील वाले पहलू को अख़्तियार करें, इस तरह आपको कामियाबी हासिल होगी और अल्लाह आपकी मदद करेगा और आपके हाथों आपकी जनता की इस्लाह करेगा, और दूर व नज़दीक के जिन मुसलमानों का अल्लाह ने आपको ज़िम्मेदार बनाया है, उनकी ओर अपना पूरा ध्यान रखें और उनके फ़ैसले ख़ुद करें और जो कुछ अपने लिए और अपने घरवालों के लिए पसन्द करते हैं, वह तमाम मुसलमानों के लिए पसन्द करें और जो कुछ अपने लिए और अपने घर वालों के लिए नापसन्द समझते हैं, वह उनके लिए नापसन्द समझें और हक़ तक पहुंचने के लिए मुश्किलों में घुस जाएं (और उनसे न घबराएं) और अल्लाह के बारे में किसी की मलामत से न डरें।'

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह काम कौन कर सकता है?

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, आप जैसे लोग कर सकते हैं जिनको अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उम्मत का ज़िम्मेदार बनाया है और (वे ऐसे बहादुर हैं कि) उनके और अल्लाह के बीच कोई रुकावट न बन सका।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने एक वफ़्द के आने पर लोगों को जमा फ़रमाना चाहा, तो अपने

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 390

इजाज़त देने वाले इब्ने अरक़म रह० से फ़रमाया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को ख़ास तौर से देखो और उन्हें दूसरे लोगों से पहले अन्दर आने की इजाज़त दो, फिर उनके बाद वाले लोगों (यानी ताबिईन) को इजाज़त दो।

चुनांचे ये लोग अन्दर आए और उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० के सामने सफ़ें बना लीं। हज़रत उमर रज़ि० ने उन लोगों को देखा तो उन्हें एक साहब भारी-भरकम नज़र आए, जिन्होंने कढ़ी चादरें ओढ़ी हुई थीं। हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी ओर इशारा किया, जिस पर वह हज़रत उमर रज़ि० के पास आए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे तीन बार कहा, तुम मुझे कुछ बात कहो। उन्होंने भी तीन बार यह कहा, नहीं, आप कुछ फ़रमाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने (कुछ नागवारी ज़ाहिर करते हुए) फ़रमाया, ओहो ! आप खड़े हो जाएं। चुनांचे वह खड़े होकर चले गए।

हज़रत उमर रज़ि० ने दोबारा हाज़िर लोगों पर नज़र डाली तो उन्हें एक अशअरी नज़र आए जिनका रंग सफ़ेद, जिस्म हल्का, क़द छोटा और हाल कमज़ोर था। हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी ओर इशारा किया, जिस पर वह हज़रत उमर रज़ि० के पास आ गए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, आप मुझसे कुछ बात करें। उस अशअरी ने कहा, नहीं, आप कुछ फ़रमाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप कुछ बात करें। उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप पहले कुछ बात शुरू करें, बाद में हम भी कुछ कह लेंगे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ओहो, आप भी खड़े हो जाएं। (मैं तो बकरियां चराने वाला इंसान हूं) बकरियां चराने वाले (की बात) से आपको क्या फ़ायदा हो सकता है ? (चुनांचे वह चले गए।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फिर नज़र डाली, तो उन्हें एक सफ़ेद और हलके जिस्म वाला आदमी नज़र आया। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे इशारे से बुलाया। वह आ गए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, आप मुझे कुछ कहें। उन्होंने फ़ौरन खड़े होकर अल्लाह की हम्द व सना बयान की और ख़ूब अल्लाह से डराया और फिर कहा—

'आपको इस उम्मत का ज़िम्मेदार बनाया गया है, इसलिए आपको इस उम्मत के जिन मामलों का ज़िम्मेदार बनाया गया है, उनमें और

अपनी जनता के बारे में, ख़ास तौर से अपने ज़ात के बारे में अल्लाह से डरें, क्योंकि (क़ियामत के दिन) आपसे (इन सबका) हिसाब लिया जाएगा और आपसे पूछा जाएगा और आपको अमीन बनाया गया है, इसलिए आप पर यह ज़रूरी है कि आप अमानत की इस ज़िम्मेदारी को पूरे एहतिमाम से अदा करें और आपको आपके अमल के मुताबिक़ (अल्लाह की ओर से) अज्र दिया जाएगा।'

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जब से मैं ख़लीफ़ा बना हूं, तुम्हारे अलावा किसी ने भी मुझे ऐसी साफ़ और सही बात नहीं कही है, तुम कौन हो?

उन्होंने कहा, मैं रबीअ बिन ज़ियाद हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हज़रत मुहाजिर बिन ज़ियाद के भाई?

उन्होंने कहा, जी हां।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एक फ़ौज तैयार की और हज़रत (अबू मूसा) अशअरी रज़ि० को उसका अमीर बनाया और उनसे फ़रमाया कि रबीअ बिन ज़ियाद को एहतिमाम से देखना। अगर यह अपनी बातों में सच्चा निकला (इस पर ख़ुद भी अमल किया) तो वह इस अमारत की ज़िम्मेदारियों में तुम्हारी ख़ूब मदद करेगा, इसलिए इन्हें (ज़रूरत पड़ने पर किसी जमाअत का) अमीर बना देना, फिर हर दस दिन के बाद उनके काम की देख-भाल करते रहना और उनके काम करने के तरीक़े को मुझे इस तफ़्सील से लिखना कि मुझे यों लगे कि जैसे मैंने ख़ुद इनको अमीर बनाया हो। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें नसीहत की थी और फ़रमाया था—

'मुझे अपने बाद तुम पर सबसे ज़्यादा डर उस मुनाफ़िक़ का है जो बातें करने का ख़ूब माहिर हो (यानी दिल तो खोटा हो, लेकिन ज़ुबान से बड़ी अच्छी बातें ख़ूब बनाता हो।)'[1]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 36,

हज़रत मुहम्मद बिन सूक़ा रह० कहते हैं, मैं हज़रत नुऐम बिन अबी हिन्द रह० के पास आया, उन्होंने एक परचा निकालकर मुझे दिया, जिसमें यह लिखा हुआ था—

'अबू उबैदा बिन जर्राह और मुआज़ बिन जबल की ओर से उमर बिन ख़त्ताब के नाम, सलामुन अलैक! अम्माबादु! हम तो शुरू से ही आपको देख रहे हैं कि आपको अपने नफ़्स की इस्लाह का बहुत एहतिमाम है और अब तो आप पर काले और गोरे यानी अरब व अजम, उम्मत के तमाम लोगों की ज़िम्मेदारी डाल दी गई है। आपकी मज्लिस में बड़े मर्तबे वाले और कम मर्तबे वाले, दोस्त-दुश्मन हर तरह के लोग आते हैं। इनमें से हर एक को अद्ल में से उसका हिस्सा मिलना चाहिए। ऐ उमर रज़ि०! आप देख लें कि आप उनके साथ कैसे चल रहे हैं? हम आपको उस दिन से डराते हैं जिस दिन तमाम चेहरे झुके हुए होंगे और दिल (डर के मारे) सूख जाएंगे और उस बादशाह की दलील के सामने तमाम (इंसानों की) दलीलें फ़ेल हो जाएंगी, जो अपनी किब्रियाई की वजह से उन पर ग़ालिब और ज़ोरावर होगा और सारी मख़्लूक़ उसके सामने ज़लील होगी। सब उसकी रहमत की उम्मीद कर रहे होंगे और उसकी सज़ा से डर रहे होंगे। हम आपस में यह हदीस बयान किया करते थे कि इस उम्मत का आख़िर ज़माने में इतना बुरा हाल हो जाएगा कि लोग ऊपर से दोस्त होंगे और अन्दर से दुश्मन। हम इस बात से अल्लाह की पनाह चाहते हैं कि हमने आपको यह ख़त जिस दिली हमदर्दी के साथ लिखा, आप इसके अलावा कुछ और समझें, क्योंकि हमने यह ख़त सिर्फ़ आपकी ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से लिखा है, वस्सलामु अलैक।

जवाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों को यह ख़त लिखा—

'उमर बिन ख़त्ताब की ओर से अबू उबैदा और मुआज़ के नाम, सलामुन अलैकुम। अम्मा बादु! मुझे आप दोनों का ख़त मिला, जिसमें आपने लिखा कि आप दोनों मुझे शुरू से देख रहे हैं कि मुझे अपने नफ़्स की इस्लाह का बहुत एहतमाम है और अब मुझ पर काले और

गोरे यानी अरब व अजम, उम्मत के तमाम लोगों की ज़िम्मेदारी डाल दी गई है। मेरी मज्लिस में बड़े मर्तबे वाले और कम मर्तबे वाले दोस्त-दुश्मन हर तरह के लोग आते हैं। उनमें से हर एक को अदल में से उसका हिस्सा मिलना चाहिए।'

'आप दोनों ने यह भी लिखा कि ऐ उमर! आप देख लें कि आप उनके साथ कैसे चल रहे हैं? और सच तो यह है कि अल्लाह की मदद से ही उमर रज़ि० सही चल सकता है और ग़लत से बच सकता है और आप दोनों मुझे उस दिन से डरा रहे हैं जिस दिन से हमसे पहले की तमाम उम्मतें डराई गई हैं और बहुत पहले से यह बात चली आ रही है कि दिन रात का बदलते रहना और दिन रात में मुक़र्रर वक़्त के आने पर लोगों का दुनिया से जाते रहना हर दूर को नज़दीक कर रहा है और हर नए को पुराना कर रहा है और हर वायदे को ला रहा है और यह सिलसिला यों ही चलता रहेगा, यहां तक कि सारे लोग जन्नत और दोज़ख़ में अपनी-अपनी जगह पहुंच जाएंगे। आप दोनों ने लिखा कि आप दोनों मुझे इस बात से डरा रहे हैं कि इस उम्मत का आख़िरी ज़माने में इतना बुरा हाल हो जाएगा कि लोग ऊपर से दोस्त होंगे और अन्दर से दुश्मन, लेकिन न तो आप उन बुरे लोगों में से हैं और न यह वह बुरा ज़माना है और यह तो उस ज़माने में होगा, जिसमें लोगों में शौक़ और ख़ौफ़ तो ख़ूब होगा, लेकिन एक दूसरे से मिलने का शौक़ सिर्फ़ दुन्यावी ग़रज़ों की वजह से होगा।'

'आप दोनों ने मुझे लिखा कि आप दोनों मुझे इस बात से अल्लाह की पनाह में देते हैं कि आप दोनों ने मुझे यह ख़त जिस दिली हमदर्दी के साथ लिखा है, मैं उसके अलावा कुछ और समझूं और यह किआप दोनों ने यह ख़त सिर्फ़ मेरी ख़ैरख़्वाही के जज़्बे से लिखा है, आप दोनों ने यह बात ठीक लिखी है, इसलिए मुझे ख़त लिखना न छोड़ें, क्योंकि मैं आप दोनों (की नसीहतों) का मुहताज हूं, आप लोगों से अलग नहीं हो सकता। वस्सलामु अलैकुमा।'[1]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 238, कंज़, भाग 8, पृ० 209, मज्मा, भाग 5, पृ० 214

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० का वसीयत करना

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं, जब हज़रत अबू उबैदा रज़ि० जार्डन में प्लेग के शिकार हुए, तो जितने मुसलमान वहां थे, उनको बुलाकर उनसे फ़रमाया—

'मैं तुम्हें एक वसीयत कर रहा हूं। अगर तुमने उसे मान लिया तो हमेशा ख़ैर पर रहोगे और वह यह कि नमाज़ क़ायम करो, रमज़ान महीने के रोज़े रखो, ज़कात अदा करो, हज और उमरा करो, आपस में एक दूसरे को (नेकी की) ताकीद करते रहो और अपने अमीरों के साथ ख़ैरख़्वाही करो और उनको धोखा मत दो और दुनिया तुम्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल न करने पाए, क्योंकि अगर इंसान की उम्र हज़ार साल भी हो जाए, तो भी उसे (एक न एक दिन) उस ठिकाने यानी मौत की ओर आना पड़ेगा, जिसे तुम देख रहे हो। अल्लाह ने तमाम बनी आदम के लिए मरना तै कर दिया है, इसलिए वे सब ज़रूर मरेंगे और बनी आदम में सबसे ज़्यादा समझदार वह है जो अपने रब की सबसे ज़्यादा इताअत करे और अपनी आख़िरत के लिए सबसे ज़्यादा अमल करे, वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि० ऐ मुआज़ बिन जबल! आप लोगों को (मेरी जगह) नमाज़ पढ़ाओ।'

इसके बाद हज़रत अबू उबैदा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया। फिर हज़रत मुअज़ रज़ि० ने लोगों में खड़े होकर यह बयान किया—

'ऐ लोगो! तुम अल्लाह के आगे अपने गुनाहों से तौबा करो, क्योंकि जो बन्दा भी अपने गुनाहों से तौबा करके (क़ियामत के दिन) अल्लाह से मिलेगा तो अल्लाह के ज़िम्मे उसका हक़ होगा कि अल्लाह उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दें और जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ा है, उसे चाहिए कि वह अपना क़र्ज़ा अदा करे, क्योंकि बन्दा अपने क़र्ज़े की वजह से बंधा रहेगा (कि जब तक उसे अदा नहीं करेगा, अल्लाह के यहां उसे छूट नहीं मिलेगी) और जिस किसी ने अपने (मुसलमान) भाई से ताल्लुक़ तोड़ रखा हो, उसे चाहिए कि वह उससे मिलकर सुलह कर ले।'

'ऐ मुसलमानो! तुम्हें एक ऐसे आदमी की मौत का सदमा पहुंचा है जिसके बारे में मुझे यक़ीन है कि उनसे ज़्यादा नेक दिल, उनसे ज़्यादा शर व फ़साद से दूर रहने वाला, उनसे ज़्यादा आम लोगों से मुहब्बत करने वाला और उनसे ज़्यादा ख़ैरख़्वाही करने वाला मैंने कोई नहीं देखा, इसलिए उनके लिए रहमत उतरने की दुआ करो और उनकी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करो।'[1]

---

1. तबरी, भाग 2, पृ० 317

हज़रात ख़ुलफ़ा व उमरा का ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा

हज़रत इब्ने उमर, हज़रत आइशा और हज़रत इब्ने मुसय्यिब रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है, लेकिन इनकी हदीसें आपस में मिल गई हैं, बहरहाल ये लोग फ़रमाते हैं, हिजरत के ग्यारहवें साल 12 रबीउल अव्वल को पीर के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, उसी दिन लोग हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० से बैअत हुए।

आपका क़ियाम अपनी बीवी हज़रत हबीबा बिन्त ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन अबी ज़ुहैर के यहां सुख़ मुहल्ले में था, जोकि क़बीला बनू हारिस बिन ख़ज़रज में से थीं। अपने लिए बालों का एक ख़ेमा डाल रखा था, उसमें उन्होंने कुछ नहीं बढ़ाया, यहां तक कि अपने मदीना वाले घर मुंतक़िल हो गए। बैअत के बाद छः माह तक सुख़ ही में ठहरे रहे। अक्सर सुबह पैदल मदीना मुनव्वरा जाते, कभी अपने घोड़े पर सवार होकर जाते और उनके जिस्म पर एक लुंगी और गेरुवे रंग से रंगी हुई एक चादर होती। चुनांचे मदीना आते और लोगों को नमाज़ें पढ़ाते, जब इशा की नमाज़ पढ़ा लेते, तो सुख़ अपने घरवालों के पास वापस आते।

जब हज़रत अबूबक्र ख़ुद (मदीना में) होते तो, ख़ुद लोगों को नमाज़ पढ़ाते। जब ख़ुद न होते तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० नमाज़ पढ़ाते। जुमा के दिन, दिन के शुरू में सुख़ ही रहते। अपने सर और दाढ़ी पर मेंहदी लगाते, फिर जुमा के वक़्त तशरीफ़ ले जाते और लोगों को जुमा पढ़ाते। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ताजिर (व्यापारी) आदमी थे, हर दिन सुबह बाज़ार जाकर ख़रीद-फ़रोख़्त करते। इनका बकरियों का एक रेवड़ भी था। जो शाम को उनके पास वापस आता, कभी उनको चराने ख़ुद जाते और कभी कोई और चराने जाता। अपने मुहल्ले वालों की बकरियों का दूध निकाल दिया करते। जब यह ख़लीफ़ा बने तो मुहल्ले की एक लड़की ने कहा, (अब तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा बन

गए हैं, इसलिए) हमारे घर की बकरियों का दूध अब तो कोई नहीं निकाला करेगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुनकर फ़रमाया, नहीं, मेरी उम्र की क़सम! मैं आप लोगों के लिए दूध ज़रूर निकाला करूंगा और मुझे उम्मीद है कि ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी जो मैंने उठाई है, यह मुझे उन भले अख़्लाक़ से नहीं हटाएगी जो पहले से मुझमें हैं। चुनांचे ख़िलाफ़त के बाद भी मुहल्ले वालों का दूध निकाला करते और कभी-कभी मज़ाक़ के तौर पर लड़की से कहते, ऐ लड़की! तुम कैसा दूध निकलवाना चाहती हो? झाग वाला निकालूं या बग़ैर झाग वाला? वह कहती, झाग वाला और कभी कहती, बग़ैर झाग के। बहरहाल जैसे वह कहती, वैसे यह कर देते।

चुनांचे सुख़ मुहल्ले में छः माह ऐसे ही ठहरे रहे, फिर मदीना आ गए और वहां मुस्तक़िल क़ियाम कर लिया, फिर अपनी ख़िलाफ़त के बारे में ग़ौर किया, तो फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तिजारत में लगे रहने से तो लोगों के काम ठीक तरह से नहीं हो सकेंगे। उनके काम तो तब ही ठीक हो सकेंगे, जबकि मैं तिजारत से फ़ारिग़ होकर मुसलमानों के काम में पूरे तौर से लग जाऊं और उनकी देख-भाल करूं, लेकिन मेरे घर-ख़ानदान के लिए गुज़ारे के क़ाबिल ख़र्चा होना भी ज़रूरी है, यह सोचकर उन्होंने तिजारत छोड़ दी और मुसलमानों के बैतुलमाल में से रोज़ाना इतना वज़ीफ़ा लेने लगे, जिससे उनका और उनके घरवालों का एक दिन का गुज़ारा हो जाए और इस वज़ीफ़े से हज और उमरा भी कर सकें। चुनांचे शूरा वालों ने उनकी इन तमाम ज़रूरतों के लिए सालाना छः हज़ार दिरहम मुक़र्रर किए।

जब उनके इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया, तो फ़रमाया, हमारे पास मुसलमानों के बैतुलमाल में से जो कुछ (बचा हुआ) है, वह वापस कर दो, क्योंकि मैं इस माल से फ़ायदा नहीं उठाना चाहता और मैं मुसलमानों का जितना माल इस्तेमाल कर चुका हूं, उसके बदले में मैंने अपनी फ़्लां इलाक़े वाली ज़मीन मुसलमानों (के बैतुल माल) को दे दी, चुनांचे उनकी वफ़ात के बादवह ज़मीन और एक दूध वाली ऊंटनी और तलवारों को तेज़ करने वाला ग़ुलाम और एक चादर जिसकी क़ीमत

पांच दिरहम थी, हज़रत उमर रज़ि० को ये सब चीज़ें दे दी गईं, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह अपने बाद वालों को मुश्किल में डाल गए (कि उनकी तरह कौन कर सकेगा कि सारी ज़िंदगी अपना सारा माल और सारी जान इस्लाम पर लगाई और जब मजबूरी में लेना पड़ा तो कम से कम लिया और दुनिया से जाते वक़्त वह भी वापस कर गए।)

और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सन् 11 हि० में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब को अमीरे हज बनाकर भेजा, फिर जब रजब सन् 12 हि० में ख़ुद उमरे के लिए तशरीफ़ ले गए, चाश्त के वक़्त मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए और अपने घर तशरीफ़ ले गए। (हज़रत अबूबक्र रज़ि० के वालिद) हज़रत अबू क़ुहाफ़ा रज़ि० अपने घर के दरवाज़े पर बैठे हुए थे। उनके पास कुछ नवजवान बैठे हुए थे, जिनसे वे बातें कर रहे थे। किसी ने उनको बताया कि यह आपके बेटे आ गए हैं, तो वह खड़े हो गए, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० ऊंटनी बिठाए बग़ैर जल्दी से ऊंटनी से नीचे उतर गए और कहने लगे, ऐ अब्बा जान ! आप खड़े न हों, फिर उनसे मिलकर उनसे चिमट गए और उनकी पेशानी चूमी और बड़े मियां यानी हज़रत अबू क़ुहाफ़ा रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के आने की ख़ुशी में रो पड़े।

मक्का के ज़िम्मेदार और सरदार हज़रात हज़रत अत्ताब बिन असीद सुहैल बिन अम्र, हज़रत इक्रिमा बिन अबी जहल, हज़रत हारिस बिन हिशाम रज़ियल्लाहु अन्हुम मिलने आए और उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सलाम किया और यों कहा, सलामुन अलैक, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा ! और सबने उनसे मुसाफ़ा किया। फिर जब उन्होंने हुज़ूर सल्ल० का तज़्किरा शुरू किया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० रोने लगे।

फिर सबने हज़रत अबू क़ुहाफ़ा को सलाम किया। हज़रत अबू क़ुहाफ़ा रज़ि० ने (हज़रत अबूबक्र रज़ि० का नाम लेकर) कहा, ऐ अतीक़ ! ये लोग मक्का के सरदार हैं। इनके साथ अच्छा सुलूक करते रहना।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अब्बा जान ! अल्लाह की मदद से ही इंसान नेकी कर सकता है और बुराई से बच सकता है और मुझ पर

(ख़िलाफ़त के) बहुत बड़े काम की ज़िम्मेदारी डाल दी गई है जिसे अदा करने की मुझमें बिल्कुल ताक़त नहीं है। हां, अल्लाह मदद फ़रमाए तो फिर यह ज़िम्मेदारी अदा हो सकती है। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० घर गए और ग़ुस्ल किया और बाहर आए। आपके साथी आपके पीछे चलने लगे। आपने उनको हटा दिया और फ़रमाया, आराम से चलो। (मेरे पीछे भीड़ करने की ज़रूरत नहीं है।)

रास्ते में लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० को मिलते, उनके साथ चलते और उनसे हुज़ूर सल्ल० की ताज़ियत (पुरसा) करते और हज़रत अबूबक्र रज़ि० रोते जा रहे थे, यहां तक कि बैतुल्लाह तक पहुंच गए। फिर आपने तवाफ़ के लिए इज़्तिबाअ किया (यानी दाएं कंधे के नीचे से एहराम की चादर निकालकर उसके दोनों किनारे बाएं कंधे पर डाल दिए)। फिर हजरे अस्वद का बोसा लेकर सात चक्कर लगाए, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, फिर अपने घर वापस आ गए। जब ज़ुहर का वक़्त हुआ तो घर से बाहर आए और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, फिर दारुन्नदवः के क़रीब बैठ गए और फ़रमाया, कोई आदमी ऐसा है जो किसी ज़ुल्म की शिकायत लाया हो या किसी हक़ की मांग कर रहा हो?

इस पर कोई न आया, तो लोगों ने अपने अमीर (हज़रत अत्ताब बिन असीद) की तारीफ़ की, फिर अस्र की नमाज़ पढ़ाई और बैठ गए। फिर लोगों ने उनको रुख़्सत किया और यह मदीना मुनव्वरा को वापस हो गए। सन् 12 हि० में लोगों के साथ हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ख़ुद हज किया और सिर्फ़ हज का एहराम बांधा, जिसे इफ़राद कहा जाता है और मदीना में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० को अपना नायब बनाया।[1]

हज़रत उमैर बिन साद अंसारी रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत अन्तरा रह० कहते हैं, हज़रत उमैर बिन साद अंसारी रज़ि० को हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हिम्स का गवर्नर बनाकर भेजा। यह वहां एक साल रहे, लेकिन इस अर्से में उनकी कोई ख़बर न आई।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 131,

हज़रत उमर रज़ि० ने अपने कातिब से फ़रमाया, उमैर को ख़त लिखो, अल्लाह की क़सम ! मेरा तो यही ख़्याल है कि उमैर रज़ि० ने हमसे ख़ियानत की है। (ख़त का मज़्मून यह था)

'ज्यों ही मेरा यह ख़त तुम्हें मिले, मेरे पास आ जाओ और मेरा ख़त पढ़ते ही तुम वह माल साथ लेकर आओ जो तुमने मुसलमानों के माले ग़नीमत में से जमा कर रखा है।'

(ख़त पढ़ते ही हज़रत उमैर रज़ि० चल पड़े और) हज़रत उमैर रज़ि० ने अपना चमड़े का थैला लिया और उसमें अपना तोशा और प्याला रखा और अपना चमड़े का लोटा (शायद थैले से बांधकर) लटका लिया और अपनी लाठी ली और हिम्स से पैदल चलकर मदीना मुनव्वरा पहुंचे। जब वहां पहुंचे तो रंग बदला हुआ था, चेहरा धूल से अटा हुआ था और बाल लम्बे हो चुके थे।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में गए और कहा, अस्सलामु अलैक या अमीरुल मोमिनीन ! हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपका क्या हाल है ? हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, आप मेरा क्या हाल देख रहे हैं ? क्या आप देख नहीं रहे हैं कि मैं सेहतमंद पाक ख़ून वाला हूं और मेरे साथ दुनिया है, जिसकी बाग पकड़कर मैं उसे खींच कर लाया हूं।

हज़रत उमर रज़ि० समझे कि यह बहुत-सा माल लाए होंगे, इसलिए पूछा तुम्हारे साथ क्या है ?

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, मेरे साथ मेरा थैला है जिसमें अपना तोशा और प्याला रखता हूं। प्याले में खा भी लेता हूं और उसी में अपना सर और अपने कपड़े धो लेता हूं और एक लोटा है जिसमें वुज़ू और पीने का पानी रखता हूं और मेरी एक लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूं और अगर कोई दुश्मन सामने आ जाए तो उसी से उसका मुक़ाबला करता हूं। अल्लाह की क़सम ! दुनिया मेरे इस सामान के पीछे है, (यानी मेरी सारी ज़रूरतें इसी सामान से पूरी हो जाती हैं) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम वहां से पैदल चलकर आए हो ?

उन्होंने कहा, हां। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या तुम्हारा वहां

(ताल्लुक़ वाला) कोई आदमी ऐसा नहीं था जो तुम्हें सवारी के लिए कोई जानवर दे देता?

उन्होंने कहा, वहां वालों ने मुझे सवारी दी नहीं और मैंने उनसे मांगी नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वे बुरे मुसलमान हैं जिनके पास से तुम आए हो (कि उन्होंने अपने गवर्नर का तनिक भी ख़्याल नहीं किया)।

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, ऐ उमर! आप अल्लाह से डरें। अल्लाह ने आपको ग़ीबत से मना किया है और मैंने उनको देखा है कि वे सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे (और जो सुबह की नमाज़ पढ़ ले, वह अल्लाह की ज़िम्मेदारी में आ जाता है।)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैंने तुम्हें कहां भेजा था? और तबरानी की रिवायत में यों है, मैंने तुमको जिस चीज़ की वसूली के लिए भेजा था, वह कहां है? और वहां तुमने क्या किया?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप क्या पूछ रहे हैं? (मैं समझ नहीं सका।)

हज़रत उमर रज़ि० ने (ताज्जुब से) कहा, सुब्हानल्लाह! (सवाल तो बहुत साफ़ है।)

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, अगर यह डर न होता कि न बताने से आप ग़मगीन हो जाएंगे तो मैं आपको न बताता। आपने मुझे वहां भेजा। वहां पहुंचकर मैंने वहां के नेक लोगों को जमा किया और मुसलमानों से माले ग़नीमत जमा करने का उनको ज़िम्मेदार बनाया जब वह जमा करके ले आए, तो मैंने वह सारा माल सही मसरफ़ पर ख़र्च कर दिया। अगर उसमें शरअन आपका हिस्सा भी होता तो मैं वह आपके पास ज़रूर लेकर आता।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तो क्या तुम हमारे पास कुछ नहीं लाए?

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (यह तो बहुत अच्छे गवर्नर हैं, कुछ लेकर नहीं आए हैं) उमैर रज़ि० के लिए (हम्स की गवर्नरी का) अह्द नामा फिर लिख दो।

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, अब मैं न आपकी तरफ़ से गवर्नर बनने के लिए तैयार हूं और न आपके बाद किसी और की ओर से, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! मैं (इस गवर्नरी में ख़राबी से) बच न सका। मैंने एक ईसाई से (अमीर बनने के एहसास के साथ) कहा था, ऐ फ़्लाने ! अल्लाह तुझे रुसवा करे (और ज़िम्मी को तक्लीफ़ पहुंचाना बुरा काम है) ऐ उमर रज़ि० ! आपने मुझे गवर्नर बनाकर ऐसी ख़राबियों में पड़ जाने के ख़तरे में डाल दिया है। ऐ उमर ! मेरी ज़िंदगी के सबसे बुरे दिन वे हैं, जिनमें मैं आपके साथ पीछे रह गया (और दुनिया से चला नहीं गया) फिर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से इजाज़त मांगी। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको इजाज़त दे दी। वह अपने घर वापस आ गए। उनका घर मदीना से कुछ मील की दूरी पर था।

जब हज़रत उमैर रज़ि० चले गए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा तो यही विचार है कि उमैर रज़ि० ने हमसे ख़ियानत की है। (यह हिम्स से ज़रूर माल लेकर आए हैं, जिसे अपने साथ मेरे पास नहीं लाए, बल्कि सीधे अपने घर भेज दिया है।) हारिस नामी एक आदमी को सौ दीनार देकर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह दीनार ले जाओ, जाकर उमैर के यहां अनजाने मेहमान बनकर ठहरो। अगर उनके घर में फ़रावानी देखो, तो ऐसे ही मेरे पास वापस आ जाओ और अगर तंगी की सख़्त हालत देखो, तो उन्हें यह सौ दीनार दे देना।

हज़रत हारिस गए। वहां जाकर देखा कि हज़रत उमैर रज़ि० दीवार के साथ एक कोने में बैठे अपनी क़मीज़ से जुएं निकाल रहे हैं। उन्होंने जाकर हज़रत उमैर रज़ि० को सलाम किया। हज़रत उमैर रज़ि० ने (सलाम का जवाब दिया और) कहा, अल्लाह आप पर रहम करे। आ जाओ, हमारे मेहमान बन जाओ। चुनांचे वह सवारी से उतरकर उनके यहां ठहर गए। फिर हज़रत उमैर रज़ि० ने उनसे पूछा, आप कहां से आए हो ?

उन्होंने कहा, मदीना से।

हज़रत उमैर रज़ि० ने पूछा, अमीरुल मोमिनीन को किस हाल में छोड़ा ?

उन्होंने कहा, अच्छे हाल में थे।

हज़रत उमैर रज़ि० ने पूछा, मुसलमानों को किस हाल में छोड़ा?

उन्होंने कहा, वे भी ठीक थे।

हज़रत उमैर रज़ि० ने पूछा, क्या अमीरुल मोमिनीन शरई हदें क़ायम नहीं करते हैं?

उन्होंने कहा, करते हैं। उनके बेटे से एक बड़ा गुनाह हो गया था। हज़रत उमर रज़ि० ने उस पर शरई हद क़ायम की थी और उसे कोड़े लगाए थे, जिससे उसका इंतिक़ाल हो गया था। (लेकिन सही रिवायत यह है कि इस वाक़िए के एक महीने बाद तबई (प्राकृतिक) मौत से उनका इंतिक़ाल हुआ।

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह! उमर रज़ि० की मदद फ़रमा, जहां तक मैं जानता हूं वह आपसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत करने वाले हैं। चुनांचे वह हज़रत उमैर रज़ि० के यहां तीन दिन मेहमान रहे। उनके यहां सिर्फ़ जौ की एक रोटी होती थी जिसे वह हज़रत हारिस को खिला दिया करते थे और ख़ुद भूखे रहते। आख़िर जब फ़ाक़ा (उपवास) बहुत ज़्यादा हो गया, तो उन्होंने हज़रत हारिस से कहा, तुम्हारी वजह से हम लोगों पर फ़ाक़े पर फ़ाक़े आ गए, अगर तुम मुनासिब समझो तो कहीं और चले जाओ। इस पर हज़रत हारिस ने वे दीनार निकालकर उनको दिए और कहा, अमीरुल मोमिनीन ने ये दीनार आपके लिए भेजे हैं। आप इन्हें अपने काम में लाएं। बस दीनार देखते ही उनकी चीख़ निकल गई और उन्होंने कहा, मुझे इनकी कोई ज़रूरत नहीं है, इन्हें वापस ले जाओ।

उनकी बीवी ने कहा, वापस न करो, ले लो। आपको ज़रूरत पड़ गई, तो इसमें से ख़र्च कर लेना, वरना मुनासिब जगह ख़र्च कर देना। (ज़रूरतमंदों को दे देना) हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरे पास तो कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिसमें मैं उनको रखं लूं। इस पर उनकी बीवी ने अपनी क़मीज़ के नीचे का दामन फाड़ कर उन्हें एक टुकड़ा दिया जिसमें उन्होंने वे दीनार रख लिए और फ़ौरन घर से बाहर गए और ग़रीबों और फ़क़ीरों में सब बांट दिए, और घर वापस आ गए।

हज़रत उमर रज़ि० के दूत यानी हज़रत हारिस का ख़्याल था कि हज़रत उमैर रज़ि० उनको भी उन दीनारों में से कुछ देंगे, (लेकिन उनको कुछ न दिया) और उनसे कहा, अमीरुल मोमिनीन को मेरा सलाम कहना। चुनांचे हज़रत हारिस हज़रत उमर रज़ि० के पास वापस आए। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुमने क्या देखा?

हज़रत हारिस रज़ि० ने कहा, मैंने बड़ा सख़्त हाल देखा।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, उन्होंने उन दीनारों का क्या किया?

हज़रत हारिस ने कहा, मुझे पता नहीं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उमैर रज़ि० को ख़त लिखा कि ज्योंही तुम्हें मेरा यह ख़त मिले, मिलते ही ख़त रखने से पहले ही मेरी तरफ़ चले आओ। चुनांचे वह हज़रत उमर रज़ि० के पास आए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, आपने उन दीनारों का क्या किया?

उन्होंने कहा, मैंने जो मर्ज़ी आई, आप उन दीनारों के बारे में क्यों पूछ रहे हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि तुम मुझे ज़रूर बताओ कि तुमने उनका क्या किया है?

हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, मैंने उनको अपने लिए अगली दुनिया में भेज दिया है (यानी ज़रूरतमंदों में बांट दिए हैं।)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए और हुक्म दिया कि हज़रत उमैर रज़ि० को एक वसक़ (यानी पांच मन दस सेर) ग़ल्ला और दो कपड़े दिए जाएं। हज़रत उमैर रज़ि० ने कहा, ग़ल्ले की मुझे ज़रूरत नहीं है, क्योंकि मैं घर में सात साअ (यानी सात सेर) जौ छोड़कर आया हूं और इन दो साअ के खाने से पहले ही अल्लाह और रोज़ी पहुंचा देंगे। चुनांचे ग़ल्ला तो लिया नहीं, अलबत्ता दोनों कपड़े ले लिए और यों कहा, फ़लानी, उम्मे फ़लां के पास कपड़े नहीं हैं (उसे दे दूंगा) और अपने घर वापस आ गए और थोड़े ही दिनों बाद उनका इंतिक़ाल हो गया। अल्लाह उन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।

जब हज़रत उमर रज़ि० को उनके इंतिक़ाल की ख़बर मिली, तो

उनको बहुत रंज व सदमा हुआ और उनके लिए रहमत व मग़िफ़रत की ख़ूब दुआ की। फिर (उनको दफ़न करने) हज़रत उमर रज़ि० पैदल (मदीना के क़ब्रस्तान) जन्नतुल बक़ीअ गए और आपके साथ और लोग भी पैदल चल रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने साथियों से फ़रमाया, तुममें से हर आदमी अपनी आरज़ू और तमन्ना ज़ाहिर करे। चुनांचे एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरा दिल चाहता है कि मेरे पास बहुत-सा माल हो और मैं उससे ख़रीद-ख़रीदकर इतने-इतने ग़ुलाम अल्लाह के लिए आज़ाद कर दूं। दूसरे ने कहा, मेरा दिल चाहता है कि मेरे पास बहुत-सा माल हो जिसे मैं अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं। तीसरे ने कहा, मेरा दिल चाहता है कि मुझे इतनी जिस्मानी ताक़त मिल जाए कि मैं ख़ुद ज़मज़म से डोल निकालकर बैतुल्लाह के हाजियों को ज़मज़म पिलाऊं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा दिल चाहता है कि मेरे पास उमैर बिन साद जैसा आदमी हो जिसे मैं मुसलमानों के अलग-अलग कामों में इत्मीनान से लगा सकूं।[1]

हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़यम जुमही रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत ख़ालिद बिन मादान रह० कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़यम जुमही रज़ि० को हिम्स पर हमारा गवर्नर बनाया। जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब हिम्स तशरीफ़ लाए, तो फ़रमाया, ऐ हिम्स वालो ! तुमने अपने गवर्नर को कैसा पाया? इस पर उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से अपने गवर्नर की शिकायतें कीं। चूंकि हिम्स वाले भी अपने गवर्नर की हमेशा शिकायत किया करते थे, इस वजह से हिम्स को छोटा कूफ़ा कहा जाता था। उन्होंने कहा, हमें इनसे चार शिकायतें हैं—

पहली तो यह है कि जब तक अच्छी तरह दिन नहीं चढ़ जाता, उस वक़्त तक ये हमारे पास घर से बाहर नहीं आते। हज़रत उमर रज़ि० ने

1 हलीया, भाग 1, पृ० 247, हैसमी, भाग 9, पृ० 384, कंज़, भाग 7, पृ० 79

फ़रमाया, वाक़ई यह तो बहुत बड़ी शिकायत है। इसके अलावा और क्या? उन्होंने कहा, यह रात को किसी की बात नहीं सुनते? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह भी बड़ी शिकायत है। इसके अलावा और क्या? उन्होंने कहा, महीने में एक दिन घर में ही रहते हैं। हमारे पास बाहर आते ही नहीं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह भी बड़ी शिकायत है। इसके अलावा, और क्या? उन्होंने कहा, कभी-कभी उनको मौत जैसी बेहोशी का दौरा पड़ता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने हिम्स वालों को और उनके गवर्नर को एक जगह जमा किया और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! सईद बिन आमिर के बारे में (अच्छे होने का) मेरा जो अन्दाज़ा था, आज उसे ग़लत न होने दे। इसके बाद हिम्स वालों से फ़रमाया, तुम्हें इनसे क्या शिकायत है?

उन्होंने कहा, जब तक अच्छी तरह दिन नहीं चढ़ जाता, उस वक़्त तक यह घर से हमारे पास बाहर नहीं आते। हज़रत सईद ने कहा, अल्लाह की क़सम! इसकी वजह बताना मुझे पसन्द नहीं थी, लेकिन अब मैं मजबूरन बताता हूं। बात यह है कि मेरे घरवालों का कोई सेवक नहीं है। इसलिए मैं ख़ुद आटा गूंधता हूं, फिर इस इन्तिज़ार में बैठता हूं कि आटे में ख़मीर पैदा हो जाए, फिर मैं रोटी पकाता हूं, फिर वुज़ू करके घर के बाहर इन लोगों के पास आता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें इनसे और क्या शिकायत है? उन्होंने कहा, यह रात को किसी की बात नहीं सुनते। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, (ऐ सईद!) आप इस बारे में क्या कहते हैं?

हज़रत सईद ने कहा, इसकी वजह भी बताना मुझे पसन्द नहीं है। बात यह है कि मैंने दिन और रात को बांट रखा है। दिन इन लोगों को दिया है और रात अल्लाह को।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें इनसे और क्या शिकायत है? उन्होंने कहा, महीने में एक दिन यह हमारे पास बाहर नहीं आते। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप इस बारे में क्या कहते हैं?

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, न तो मेरे पास कोई सेवक है, जो मेरे

कपड़े धो दे और न मेरे पास और कपड़े हैं जिन्हें पहनकर मैं बाहर आ सकूं। इसलिए मैं महीने में एक दिन अपने कपड़े धोता हूं फिर इनके सूखने का इन्तिज़ार करता हूं। जब सूख जाते हैं तो वे मोटे होने की वजह से कड़े हो जाते हैं, इसलिए मैं उनको रगड़-रगड़ कर नर्म करता हूं। सारा दिन इसी में गुज़र जाता है। फिर इन्हें पहनकर शाम को इन लोगों के पास बाहर आता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम्हें इनसे और क्या शिकायत है? उन्होंने कहा, इन्हें कभी-कभी बेहोशी का दौरा पड़ जाता है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस बारे में आप क्या कहते हैं?

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, हज़रत ख़ुबैब अंसारी रज़ि० की शहादत के वक़्त मैं मक्का में मौजूद था। पहले क़ुरैश ने उनके गोश्त को जगह-जगह से काटा, फिर उनको सूली पर लटकाया और कहा, क्या तुम यह पसन्द करते हो कि तुम्हारी जगह मुहम्मद (सल्ल०) हों (यानी तुम्हारी जगह उनको सूली दे दी जाए) हज़रत ख़ुबैब रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मैं अपने बीवी-बच्चों में हूं और (इसके बदले में) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक कांटा चुभे और फिर (हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत के जोश में आकर) ज़ोर से पुकारा, या मुहम्मद ! जब भी मुझे वह दिन याद आता है और यह ख़्याल आता है कि मैंने इस हालत में उनकी मदद नहीं की और मैं उस वक़्त मुश्रिक था, अल्लाह पर ईमान नहीं लाया था, तो मेरे दिल में ज़ोर से यह ख़्याल पैदा हो जाता है कि अल्लाह मेरे इस गुनाह को कभी माफ़ नहीं फ़रमाएंगे, बस इस ख़्याल से मुझे बेहोशी का वह दौरा पड़ जाता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने ये जवाब सुनकर फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी समझ को ग़लत नहीं होने दिया। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उनके पास हज़ार दीनार भेजे और फ़रमाया, इन्हें अपने काम में ले आओ। इस पर उनकी बीवी ने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें आपकी ख़िदमत से बेनियाज़ कर दिया।

हज़रत सईद ने कहा, क्या तुम इससे बेहतर बात चाहती हो कि हम ये दीनार उसे दे दें जो हमें सख़्त ज़रूरत के वक़्त दे दे? उन्होंने कहा,

ठीक है। चुनांचे उन्होंने अपने घरवालों में से एक आदमी को बुलाया, जिस पर उन्हें भरोसा था और इन दीनारों को बहुत-सी थैलियों में डालकर उससे कहा, जाकर ये दीनार फ़्लां ख़ानदान की बेवाओं, फ़्लां ख़ानदान के यतीमों, फ़्लां ख़ानदान के मिस्कीनों और फ़्लां ख़ानदान के मुसीबत के मारों को दे आओ। थोड़े से दीनार बच गए तो अपनी बीवी से कहा, लो यह ख़र्च कर लो। फिर अपनी गवर्नरी के काम में लग गए।

कुछ दिनों के बाद उनकी बीवी ने कहा, क्या आप हमारे लिए कोई सेवक नहीं ख़रीद देंगे? उस माल का क्या हुआ? हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, वह माल तुम्हें सख़्त ज़रूरत के वक़्त मिलेगा।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० का क़िस्सा

हज़रत सालबा बिन अबी मालिक कुरज़ी रह० कहते हैं, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० मर्वान की जगह मदीना के गवर्नर थे। एक दिन लकड़ियों का गठ्ठर उठाए हुए बाज़ार में आए और हंसी-मज़ाक़ में फ़रमाया, ऐ इब्ने अबी मालिक! अमीर के लिए रास्ता बड़ा बनाओ। मैंने उनसे कहा, यह रास्ता तो अमीर के लिए काफ़ी है।

उन्होंने कहा, अरे, अमीर के सर पर लकड़ियों का गठ्ठर भी है, इसलिए उनके लिए यह रास्ता काफ़ी नहीं है, इसलिए अमीर के लिए रास्ता बड़ा बना दो।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 245
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 385

नबी करीम सल्ल० और आपके सहाबा किराम रज़ि० किस तरह अल्लाह के रास्ते में और अल्लाह की रज़ामंदी की जगहों में माल को और अल्लाह की दी हुई हर नेमत को ख़र्च किया करते थे और यह ख़र्च उनको किस तरह अपने ऊपर ख़र्च करने से ज़्यादा महबूब था, चुनांचे ये लोग फ़ाक़े के बावजूद दूसरों को अपने ऊपर तर्जीह देते थे

नबी करीम सल्ल० का ख़र्च करने पर उभारना

हज़रत जरीर रज़ि० फ़रमाते हैं, हम लोग दिन के शुरू हिस्से में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि इतने में कुछ लोग आए जो नंगे बदन और नंगे पांव और धारीदार ऊनी चादरें और इबा पहने हुए थे और तलवारें गरदनों में लटका रखी थीं। इनमें से अक्सर लोग क़बीला मुज़र के थे, बल्कि सारे ही लोग मुज़र के थे।

उनके फ़ाक़े की हालत देखकर आपका मुबारक चेहरा बदल गया, फिर आप घर तशरीफ़ ले गए (कि शायद वहां उनके लिए कुछ मिल जाए, लेकिन वहां भी कुछ न मिला या आप नमाज़ की तैयारी करने गए होंगे) फिर बाहर तशरीफ़ लाकर हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म फ़रमाया। उन्होंने पहले अज़ान दी, (ज़ुहर या जुमा की नमाज़ थी) फिर इक़ामत कही। आपने नमाज़ पढ़ाई, फिर बयान फ़रमाया और यह आयत तिलावत फ़रमाई—

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا (سورت نساء آیت : ۱)

'ऐ लोगो ! अपने परवरदिगार से डरो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया और उस जानदार से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैलाईं और तुम अल्लाह से डरो, जिसके नाम से एक दूसरे से मांग किया करते हो और क़राबत से भी डरो। यक़ीनन अल्लाह तुम सबकी ख़बर रखते हैं।' (सूर: निसा, आयत 1)

और सूर: हश्र में है—

اِتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۔ (سورت حشر آیت : ۱۸)

'और अल्लाह से डरते रहो और हर आदमी देखभाल ले कि कल (क़ियामत) के वास्ते उसने क्या भंडार भेजा है।' (सूर: हश्र, आयत 18)

आदमी को चाहिए कि अपने दीनार, दिरहम, कपड़े, एक साअ गेहूं और एक साअ खजूर में से कुछ ज़रूर सदक़ा करे, यहां तक कि आपने फ़रमाया, अगरचे खजूर का एक टुकड़ा ही हो तो उसे ही सदक़ा कर दे। (यानी यह ज़रूरी नहीं है कि जिसके पास ज़्यादा हो, सिर्फ़ वही सदक़ा करे, बल्कि जिसके पास थोड़ा है, वह भी उसमें से ख़र्च करे।)

रिवायत करने वाले कहते हैं, चुनांचे एक अंसारी एक थैली लेकर आए, (वह इतनी भारी थी कि) उनका हाथ उसे उठाने से आजिज़ होने लगा, बल्कि आजिज़ हो ही गया था, फिर तो लोगों का तांता बंध गया (और लोग बहुत सामान लाए) यहां तक कि मैंने ग़ल्ला और कपड़े (और दिरहम व दीनार) के दो बड़े ढेर देखे, यहां तक कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चमकता चेहरा (ख़ुशी से) ऐसा चमक रहा था कि गोया आपके चेहरे पर सोने का पानी फेरा हुआ है।

(इस काम की फ़ज़ीलत सुनाते हुए) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो आदमी इस्लाम में अच्छा तरीक़ा जारी करता है, तो उसे अपना अज्र मिलेगा और उसके बाद जितने लोग उस तरीक़े पर अमल करेंगे, उन सबके बराबर उसे अज्र मिलेगा और उनके अज्र में से कुछ कम नहीं होगा और जो इस्लाम में बुरा तरीक़ा जारी करता है तो उसे अपना

गुनाह मिलेगा और इसके बाद जितने लोग इस तरीक़े पर अमल करेंगे, उन सबके बराबर गुनाह उसे मिलेगा और उनके गुनाह में कुछ भी कम नहीं होगा।[1] और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बढ़ावा देने की हदीस गुज़र चुकी है।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० बुध के दिन क़बीला बनी अम्र बिन औफ़ के पास तशरीफ़ ले गए। फिर उन्होंने और आगे हदीस ज़िक्र की। इसके बाद यह मज़्मून है कि आपने फ़रमाया, ऐ अंसार गिरोह! उन्होंने अर्ज़ किया, लब्बैक ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने फ़रमाया, जाहिलियत के ज़माने में तुम लोग अल्लाह की इबादत नहीं किया करते थे, लेकिन उस ज़माने में तुममें ये ख़ूबियां थीं कि तुम यतीमों का बोझ उठाते थे, अपना माल दूसरों पर ख़र्च करते थे और मुसाफ़िरों की हर तरह की ख़िदमत करते थे, यहां तक कि जब अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम की दौलत देकर और अपने नबी भेजकर तुम पर बहुत बड़ा एहसान किया, तो अब तुम अपने माल संभाल कर रखने लग गए हो। (हालांकि मुसलमान होने के बाद और ज़्यादा ख़र्च करना चाहिए था, क्योंकि इस्लाम तो दूसरों पर ख़र्च करने पर उभारता है) इसलिए इंसान जो कुछ खाता है, उस पर अज्र मिलता है, बल्कि दरिंदे और परिंदे जो कुछ (बाग़ों-खेतों वग़ैरह में से) खा जाते हैं, उस पर भी उसे अज्र मिलता है। (बस यह फ़ज़ीलत सुनने की देर थी कि) वे अंसार एकदम (अपने बाग़ों को) वापस गए और हर एक ने अपने बाग़ की दीवार में तीस-तीस दरवाज़े खोल दिए।[2] (ताकि हर एक आए और खाए)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबसे पहले जो बयान फ़रमाया, उसकी शक्ल यह हुई कि आप मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फ़रमाया—

'ऐ लोगो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन के तौर पर

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 53
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 156,

पसन्द फ़रमाया है, इसलिए इस्लाम में सख़ावत और अच्छे अख़्लाक़ के साथ अच्छी ज़िंदगी गुज़ारो। ध्यान से सुनो ! सख़ावत जन्नत का एक पेड़ है और उसकी टहनियां दुनिया में झुकी हुई हैं, इसलिए तुममें से जो आदमी सख़ी होगा, वह उस पेड़ की एक टहनी को मज़बूती से पकड़ने वाला होगा और वह यों ही उसे पकड़े रहेगा, यहां तक कि अल्लाह उसे जन्नत में पहुंचा देंगे। ग़ौर से सुनो ! कंजूसी दोज़ख़ का एक पेड़ है और उसकी टहनियां दुनिया में झुकी हुई हैं, इसलिए तुममें से जो आदमी कंजूस होगा, वह उस पेड़ की एक टहनी को मज़बूती से पकड़ने वाला होगा और वह यों ही उसे पकड़े रहेगा, यहां तक कि अल्लाह उसे दोज़ख़ में पहुंचा देंगे। फिर आपने दो बार फ़रमाया, तुम लोग अल्लाह की वजह से सख़ावत को अपनाओ। अल्लाह की वजह से सख़ावत को अपनाओ।'[1]

नबी करीम सल्ल० और आपके सहाबा किराम रज़ि० का माल ख़र्च करने का शौक़

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर सवाल किया कि आप उसे कुछ दे दें। आपने फ़रमाया, तुम्हें देने के लिए इस वक़्त मेरे पास कोई चीज़ नहीं है। तुम ऐसा करो कि मेरी ओर से कोई चीज़ उधार पर ख़रीद लो। जब मेरे पास कुछ आएगा, तो मैं वह उधार अदा कर दूंगा। (इससे मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० को दूसरों को देने का बहुत ज़्यादा शौक़ था।)

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने (मारे मुहब्बत के) कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इसे पहले दे चुके हैं। (अब और देने के लिए क्यों इसका उधार अपने ज़िम्मे ले रहे हैं) जो आपके बस में नहीं है। इसका अल्लाह ने आपको ज़िम्मेदार नहीं बनाया। आपको हज़रत उमर रज़ि० की यह बात पसन्द न आई। एक अंसारी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ख़र्च करें और अर्श वाले से कमी का डर न रखें।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 310

इस पर हुज़ूर सल्ल० मुस्कराए। अंसारी की इस बात पर ख़ुशी और मुस्कराहट की निशानियां हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर नज़र आने लगीं और हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसी का मुझे (अल्लाह की ओर से) हुक्म दिया गया है।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं, एक आदमी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और उसने हुज़ूर सल्ल० से मांगा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे दे दिया। फिर एक और आदमी ने आकर हुज़ूर सल्ल० से मांगा। हुज़ूर सल्ल० ने उससे वायदा फ़रमा लिया, (क्योंकि देने के लिए हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ था भी नहीं।) इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर (मारे मुहब्बत के) अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपसे फ़्लां ने मांगा, आपने उसे दिया, फिर फ़्लां ने मांगा, आपने उसे भी दिया, (फिर देने को कुछ न रहा) फिर फ़्लां ने मांगा, आपने उससे देने का वायदा फ़रमा लिया। फिर फ़्लां ने मांगा, आपने उससे भी वायदा फ़रमा लिया। (मतलब यह था कि आपके पास हुआ करे तो ज़रूर दिया करें और न हुआ करे तो इंकार फ़रमा दिया करें, उससे आगे देने का वायदा न करें) ऐसा मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल० को हज़रत उमर रज़ि० की यह बात अच्छी न लगी। फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ख़र्च करें और अर्श वाले से कमी का डर न रखें। आपने फ़रमाया, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० हज़रत बिलाल रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गए, तो आपने देखा कि उनके पास खजूर के कुछ ढेर हैं। आपने पूछा, ऐ बिलाल ! यह क्या है ?

उन्होंने अर्ज़ किया, आपके मेहमानों के लिए यह इन्तिज़ाम किया है (कि जब भी वे आएं, तो उनके खिलाने का सामान पहले से मौजूद हो) आपने फ़रमाया, क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं है कि दोज़ख़ की आग

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 56, कंज़, भाग 4, पृ० 42, हैसमी, भाग 1, पृ० 242
2. कंज़, भाग 3, पृ० 311

का धुवां तुम तक पहुंच जाए? (यानी अगर तुम उनके ख़र्च करने से पहले ही मर गए, तो फिर उनके बारे में अल्लाह के यहां सवाल होगा) ऐ बिलाल ! ख़र्च करो और अर्श वाले से कमी का डर न रखो।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० के पास तीन परिंदे हदिए में आए। आपने एक परिंदा अपनी दासी को दिया। अगले दिन वह परिंदा लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आयी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैंने तुझे मना नहीं किया था कि अगले दिन के लिए कुछ न रखा करो। जब अगला दिन आएगा, तो उस दिन की रोज़ी भी अल्लाह पहुंचाएगा (इसलिए आज जो कुछ पास है, वह सारा ही आज ख़र्च कर दिया करो[2], आने वाले दिनों के लिए भंडार करके रखना जायज़ है, लेकिन जो कुछ पास है, उसे तुरन्त ख़र्च कर देना और आगे के लिए अल्लाह पर भरोसा करना कमाल दर्जा है)

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों से कहा, हमारे पास उस माल में से कुछ बच गया है (मैं उसे कहां ख़र्च करूं?) लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप हमारे इज्तिमाई कामों में हर वक़्त लगे रहते हैं, जिसकी वजह से आपको अपने बाल-बच्चों को देखने का और अपने पेशे और कारोबार में लगने का मौक़ा नहीं मिलता, इसलिए यह माल आप ले लें। हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे कहा, आप क्या कहते हो?

मैंने कहा, लोगों ने आपको मश्विरा दे ही दिया है। उन्होंने कहा, नहीं, अपने दिल की बात कहें। इस पर मैंने कहा, आप अपने यक़ीन को गुमान में क्यों बदलते हैं? (आपको यक़ीन है कि यह माल आपका नहीं है, तो फिर आप क्यों लोगों से मश्विरा लेकर और मुसलमानों का यह माल ख़ुद लेकर अपने यक़ीन को गुमान में बदल रहे हैं?) हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप जो कह रहे हैं, आपको इसकी दलील देनी होगी। मैंने कहा, हां, मैं इसकी दलील ज़रूर दूंगा। क्या आपको याद है कि

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 149, तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 174
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 241

हुज़ूर सल्ल० ने आपको लोगों से ज़कात लेने के लिए भेजा था? जब आप हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० के पास ज़कात लेने गए थे तो उन्होंने आपको ज़कात देने से इंकार कर दिया था, जिस पर आप दोनों में कुछ बात हुई थी। फिर आपने मुझसे कहा था, मेरे साथ हुज़ूर सल्ल० के पास चलो, ताकि हम हुज़ूर सल्ल० को बताएं कि हज़रत अब्बास रज़ि० ने ऐसे किया है। चुनांचे हम दोनों हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए तो हमने देखा आपकी तबियत बोझिल है, हम वापस आ गए।

अगले दिन हम फिर आपकी ख़िदमत में गए तो आप हश्शाश-बश्शाश थे। आपने हुज़ूर सल्ल० को बताया कि हज़रत अब्बास रज़ि० ने इस तरह किया है। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने आपको कहा था, क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि आदमी का चचा उसके बाप की तरह होता है? और हमने हुज़ूर सल्ल० को बताया कि हम पहले दिन आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए थे तो आपकी तबियत पर बोझ था और अगले दिन हाज़िर हुए तो आप हश्शाश-बश्शाश थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम पहले दिन जब मेरे पास आए थे, तो मेरे पास सदक़ा के दो दीनार बचे हुए थे, इस वजह से तुम्हें मेरी तबियत पर बोझ नज़र आया और अगले दिन जब तुम मेरे पास आए तो मैं वह दीनार ख़र्च कर चुका था, इस वजह से तुमने हश्शाश-बश्शाश पाया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, (ऐ अली रज़ि० !) तुमने ठीक कहा, अल्लाह की क़सम! तुमने पहले मुझे कहा, अपने यक़ीन को गुमान में क्यों बदलते हो? और फिर मुझे यह सारा क़िस्सा सुनाया। मैं इन दोनों बातों पर तुम्हारा शुक्रिया अदा करता हूं।[1]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० के पास माल आया, आपने उसे मुसलमानों में बांट दिया, लेकिन उसमें से कुछ माल बच गया। आपने उसके बारे में लोगों से मश्विरा लिया। लोगों ने कहा, अगर आप उसे आगे पेश आने वाली ज़रूरत के लिए

1. कंज़, भाग 4, पृ० 39, हुलीया, भाग 4, पृ० 382, हैसमी, भाग 10, पृ० 238

रख लें तो ज़्यादा बेहतर होगा। हज़रत अली रज़ि० बिल्कुल ख़ामोश थे। उन्होंने कुछ न कहा। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबुल हसन! क्या हुआ आप इस बारे में कुछ नहीं कह रहे हैं? उन्होंने कहा, लोगों ने अपनी राय बता तो दी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं, आपको भी अपना मश्विरा ज़रूर देना होगा। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अल्लाह (कुरआन मजीद में ख़र्च करने की जगहें बताकर) इस माल की तक़्सीम (बताने) से फ़ारिग़ हो चुके हैं। (आपको यह बचा हुआ माल भी वहां ही ख़र्च करना चाहिए) फिर हज़रत अली रज़ि० ने यह क़िस्सा बयान किया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के पास बहरैन से माल आया था (हुज़ूर सल्ल० ने उसे बांटना शुरू किया, लेकिन) अभी उसके बांटे जाने से फ़ारिग़ नहीं हुए थे कि रात आ गई, (तो आपने वह रात मस्जिद में गुज़ारी और) सारी नमाज़ें मस्जिद में पढ़ाईं। (यानी सारा दिन मस्जिद में बैठकर बांटते रहे, घर न गए) मैंने देखा, जब तक आपने यह सारा माल बांट नहीं लिया, आपके चेहरे पर परेशानी और चिन्ता के निशान रहे। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अब तो यह बाक़ी माल आपको ही बांटना होगा। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उसे बांटा। हज़रत तलहा रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझे उसमें से आठ सौ दिरहम मिले।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० मेरे पास तश्रीफ़ लाए, तो आपके मुबारक चेहरे का रंग बदला हुआ था। मुझे डर हुआ कि कहीं यह किसी दर्द की वजह से न हो। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपको क्या हुआ? आपके चेहरे का रंग बदला हुआ है? आपने फ़रमाया, उन सात दीनार की वजह से जो कल हमारे पास आए हैं और आज शाम हो गई है और वे अभी तक बिस्तरे के किनारे पर पड़े हुए हैं। एक रिवायत में यह है कि वे सात दीनार हमारे पास आए और हम अभी तक उनको ख़र्च नहीं कर सके।[2]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 239
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 238

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० के पास सात दीनार थे, जो आपने हज़रत आइशा रज़ि० के पास रखवाए थे। जब आप ज़्यादा बीमार हुए तो आपने फ़रमाया, ऐ आइशा ! यह सोना अली के पास भिजवा दो। इसके बाद आप बेहोश हो गए तो हज़रत आइशा रज़ि० आपके संभालने में ऐसी लगी रहीं कि वह दीनार भिजवा न सकीं। यह बात हुज़ूर सल्ल० ने कई बार इर्शाद फ़रमाई लेकिन हर बार आप फ़रमाने के बाद बेहोश हो जाते और हज़रत आइशा रज़ि० आपके संभालने में लग जातीं और वह दीनार न भिजवा पातीं। आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने वे दीनार ख़ुद हज़रत अली रज़ि० को भिजवाए और उन्होंने उन्हें सदक़ा कर दिया।

पीर की रात को शाम के वक़्त हुज़ूर सल्ल० पर नज़ाअ की कैफ़ियत छाने लगी, तो हज़रत आइशा रज़ि० ने अपना चिराग़ अपने पड़ोस की एक औरत के पास भेजा (जो कि हुज़ूर सल्ल० की बीवी थीं) और उनसे कहा, हमारे इस चिराग़ में अपने घी के डिब्बे में से कुछ घी डाल दो, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० पर निज़ाअ की कैफ़ियत (मरणासन्न स्थिति) छा चुकी है।[1]

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्ल० ने अपने मरज़ुल वफ़ात में मुझे हुक्म दिया कि जो सोना हमारे पास है, मैं उसे सदक़ा कर दूं। (लेकिन मैं हुज़ूर सल्ल० की सेवा में लगी रही और सदक़ा न कर सकी) फिर आपको सुकून हुआ। आपने फ़रमाया, तुमने उस सोने का क्या किया? मैंने कहा, मैंने देखा कि आप बहुत ज़्यादा बीमार हो गए हैं, इसलिए मैं आपकी सेवा में ऐसी लगी कि भूल गई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह सोना ले आओ। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सात या नौ दीनार लाईं। अबू हाज़िम रिवायत करने वाले को शक हुआ कि दीनार कितने थे? जब हज़रत आइशा रज़ि० ले आईं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर मुहम्मद (सल्ल०) की अल्लाह से मुलाक़ात इस हाल में होती (यानी

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 178

अगर उनका इन्तिक़ाल इस हाल में होता) कि ये दीनार उनके पास होते तो मुहम्मद (सल्ल०) क्या गुमान कर सकते? (यानी उनको बहुत नदामत होती) अगर मुहम्मद की अल्लाह से मुलाक़ात इस हाल में होती कि ये दीनार उनके पास होते तो ये दीनार मुहम्मद के भरोसे को अल्लाह पर न रहने देते।[1]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, मुझसे हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! मैं हुज़ूरे अक़्दस के साथ आपका मुबारक हाथ पकड़े हुए था। आपने मुझसे फ़रमाया, ऐ अबूज़र! मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि मुझे उहुद पहाड़ के बराबर सोना और चांदी मिल जाए और मैं उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं और मरते वक़्त मेरे पास उसमें से एक क़ीरात (दीनार का बीसवां हिस्सा) ही बचा हुआ हो (यानी मैं चाहता हूं कि मरते दम मेरे पास दीनार और दिरहम में से कुछ भी न हो) मैंने कहा, आप क़ीरात फ़रमा रहे हैं या क़िन्तार (यानी चार हज़ार दीनार) आपने फ़रमाया, मैं कम मात्रा कहना चाहता हूं और तुम ज़्यादा कह रहे हो। मैं आख़िरत चाहता हूं और तुम दुनिया। एक क़ीरात (यानी क़िन्तार नहीं, बल्कि क़ीरात) यह बात आपने मुझसे तीन बार फ़रमाई।[2]

हज़रत अबूज़र रज़ि० हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० के पास आए (और उन्होंने अन्दर आने की इजाज़त मांगी) हज़रत उस्मान रज़ि० ने उनको इजाज़त दी। (वह अन्दर आ गए) उनके हाथ में लाठी थी। हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, ऐ काब! हज़रत अब्दुर्रहमान (बिन औफ़ रज़ि०) का इंतिक़ाल हुआ है और वह बहुत-सा माल छोड़कर गए हैं, आपका इस बारे में क्या ख़्याल है?

हज़रत काब रज़ि० ने कहा, अगर वह इस माल के बारे में अल्लाह का हक़ यानी ज़कात अदा करते रहे हैं, तो उनकी पकड़ नहीं होगी। यह सुनकर हज़रत अबूज़र ने अपनी लाठी उठाकर हज़रत काब को

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 240, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 356
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 239

मारी और कहा, मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि इस पहाड़ के बराबर मुझे सोना मिल जाए और मैं उसे ख़र्च कर दूं और वह ख़र्च करना अल्लाह के यहां क़ुबूल भी हो जाए और मैं अपने पीछे छः ऊक़िया यानी दो सौ चालीस दिरहम छोड़ जाऊं, फिर उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि० को मुख़ातब करके तीन बार फ़रमाया, मैं तुझे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं कि क्या आपने यह हदीस हुज़ूर सल्ल० से सुनी है? उन्होंने कहा, जी हां, सुनी है।[1]

हज़रत ग़ज़वान बिन अबी हातिम से भी यह वाक़िया बहुत लम्बा नक़ल किया गया है और उसमें यह मज़्मून है कि हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत काब रह० से फ़रमाया, ऐ अबू इस्हाक़! आप तनिक यह बताएं कि जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाए (और वह माल आदमी के पास हो, दूसरों पर ख़र्च न किया गया हो, तो क्या) उस माल वाले पर उस माल के बारे में जुर्माने और सज़ा का ख़तरा है? हज़रत काब रज़ि० ने कहा, नहीं। हज़रत अबूज़र रज़ि० के पास एक लाठी थी। उन्होंने खड़े होकर वह लाठी हज़रत काब के दोनों कानों के दर्मियान सर पर मारी और फ़रमाया, ऐ यहूदी औरत के बेटे! आप यह समझते हैं कि जब उसने ज़कात अदा कर दी तो अब उसके माल में किसी का कोई हक़ बाक़ी न रहा, हालांकि अल्लाह फ़रमाते हैं—

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ - (سورة حشر آيت ۹)

'और अपने से मुक़द्दम रखते हैं अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो।'

(सूरः हश्र, आयत 9)

और दूसरी जगह फ़रमाते हैं—

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا - (سورة دهر آيت ۸)

'और वे लोग सिर्फ़ ख़ुदा की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं।'

(सूरः दह्र, आयत 8)

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 239

और तीसरी जगह अल्लाह फ़रमाते हैं—

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ (سورۃ معارج آیت ۲۴ و ۲۵)

'और जिनके मालों में सवाली और बे-सवाली सबका हक़ है।'

(सूर: मआरिज, आयत 25)

इसी तरह की और आयतों का हज़रत अबूज़र ज़िक्र करते रहे।[1]

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने हमें (अल्लाह के रास्ते में) सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया। उस दिन मेरे पास काफ़ी माल था। मैंने अपने दिल में कहा, अगर मैं (नेकी में) हज़रत अबूबक्र रज़ि० से आगे बढ़ सकता हूं तो आज के दिन ही बढ़ सकता हूं। (यानी मैं उनसे आगे बढ़ने की कोशिश तो बहुत बार कर चुका हूं, लेकिन कभी उनसे आगे नहीं बढ़ सका, आज बढ़ सकता हूं।) चुनांचे मैंने अपना आधा माल लाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम अपने घरवालों के लिए क्या छोड़कर आए हो? मैंने कहा, मैं उनके लिए भी कुछ छोड़ आया हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, उनके लिए क्या छोड़ा है? मैंने कहा, जितना मैं लाया हूं उतना ही घरवालों के लिए छोड़कर आया हूं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास (घर में) जो कुछ था, वह सब कुछ ले आए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, ऐ अबूबक्र! तुम अपने घरवालों के लिए क्या छोड़कर आए हो? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं उनके लिए अल्लाह और रसूल सल्ल० (की रज़ामंदी) छोड़कर आया हूं। यह जवाब सुनकर मैंने (यानी हज़रत उमर रज़ि० ने) अपने दिल में कहा, मैं कभी भी किसी चीज़ में हज़रत अबूबक्र रज़ि० से आगे नहीं बढ़ सकता।[2]

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, ऐ माल वालो! नेकियां तो तुम ले गए हो कि तुम लोग सदक़ा करते हो, ग़ुलामों को आज़ाद करते हो, हज करते हो, और अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च करते हो। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, और तुम

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 310
2. मंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 347,

लोग हम पर रश्क करते हो। उस आदमी ने कहा, हम लोग आप लोगों पर रश्क करते हैं। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! कोई आदमी तंगदस्ती की हालत में एक दिरहम ख़र्च करे, वह हम मालदारों के दस हज़ार से बेहतर है, क्योंकि हम बहुत ज़्यादा में से थोड़ा-सा दे रहे हैं।[1]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन मुहम्मद बिन आइशा रह० कहते हैं, एक मांगने वाला अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ि० के पास आकर खड़ा हुआ। हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत हसन रज़ि० या हज़रत हुसैन रज़ि० से कहा, अपनी मां के पास जाओ और उनसे कहो, मैंने आपके पास छः दिरहम रखाए थे, उनमें से एक दिरहम दे दो। वह गए और उन्होंने वापस आकर कहा, अम्मी जान कह रही हैं, वे छः दिरहम तो आपने आटा के लिए रखाए थे। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, किसी भी बन्दे का ईमान उस वक़्त तक सच्चा साबित नहीं हो सकता, जब तक कि उसको जो चीज़ उसके पास है, उससे ज़्यादा भरोसा उस चीज़ पर न हो जाए जो अल्लाह के ख़ज़ानों में है। अपनी मां से कहो कि छः दिरहम भेज दें। चुनांचे उन्होंने छः दिरहम हज़रत अली रज़ि० को भिजवा दिए, जो हज़रत अली रज़ि० ने उस मांगने वाले को दे दिए।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत अली रज़ि० ने अपनी जगह भी नहीं बदली थी कि इतने में एक आदमी उनके पास से एक ऊंट लिए गुज़रा जिसे वह बेचना चाहता था। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, यह ऊंट कितने में दोगे?

उसने कहा, एक सौ चालीस दिरहम में।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, इसे यहां बांध दो। अलबत्ता इसकी क़ीमत कुछ दिनों में देंगे। वह आदमी ऊंट वहां बांधकर चला गया। थोड़ी ही देर में एक आदमी आया, और उसने कहा, यह ऊंट किसका है? हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मेरा।

उस आदमी ने कहा, क्या आप इसे बेचेंगे? हज़रत अली रज़ि० ने

---

1. कंज, भाग 3, पृ० 320

कहा, हां। उस आदमी ने कहा, कितने में? हज़रत अली रज़ि० ने कहा, दो सौ दिरहम में। उसने कहा, मैंने इस क़ीमत में यह ऊंट ख़रीद लिया और हज़रत अली रज़ि० को दो सौ दिरहम देकर वह ऊंट ले गया। हज़रत अली रज़ि० ने जिस आदमी से ऊंट उधार ख़रीदा था, उसे एक सौ चालीस दिरहम दिए और बाक़ी साठ दिरहम लाकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को दे दिए।

उन्होंने पूछा, यह क्या है?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, यह वह है जिसका अल्लाह अपने नबी की ज़ुबानी हमसे वायदा किया है—

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا - (سورہ انعام آیت ۱۶۰)

'जो आदमी नेक काम करेगा उसको उसके दस हिस्से मिलेंगे।'[1]

(अनआम, आयत 160)

हज़रत उबई रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने मुझे ज़कात वसूल करने भेजा। मैं एक आदमी के पास से गुज़रा। जब उसने अपने सारे जानवर जमा कर दिए तो मैंने देखा कि उन जानवरों में उस पर सिर्फ़ एक साला ऊंटनी वाजिब होती है, मैंने कहा, तुम एक साला ऊंटनी दे दो, क्योंकि ज़कात तुम पर उतनी ही बनती है।

उस आदमी ने कहा, यह कम उम्र ऊंटनी न तो दूध दे सकती है और न सवारी के काम आ सकती है, अलबत्ता यह ऊंटनी जवान और ख़ूब मोटी-ताज़ी है, तुम इसे ले लो। मैंने कहा, जिस जानवर के लेने का मुझे हुक्म नहीं मिला, मैं उसे नहीं ले सकता हूं। अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० तुम्हारे क़रीब ही हैं, अगर तुम मुनासिब समझो तो तुम मुझे जो देना चाहते हो, वह ख़ुद जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दो, अगर वह क़ुबूल फ़रमा लेंगे तो मैं भी क़ुबूल कर लूंगा। अगर उन्होंने क़ुबूल न फ़रमाया, तो फिर मैं नहीं ले सकता।

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 311

उसने कहा, चलो ऐसा कर लेता हूं। चुनांचे वह मेरे साथ चल पड़ा और अपने साथ वह ऊंटनी भी ले ली जो मुझे पेश की थी, फिर हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच गए। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका क़ासिद मुझसे मेरे जानवरों की ज़कात लेने आया था और अल्लाह की क़सम ! इससे पहले न तो हुज़ूर सल्ल० (मेरे जानवरों की ज़कात लेने) आए और न हुज़ूर सल्ल० का क़ासिद। चुनांचे आपके क़ासिद के सामने मैंने अपने सारे जानवर जमा कर दिए। आपके क़ासिद ने बताया कि मुझ पर ज़कात में सिर्फ़ एक साला ऊंटनी वाजिब है जो कि न दूध देती है और न सवारी के काम आ सकती है, इसलिए मैंने आपके क़ासिद के सामने एक जवान मोटी ताज़ी ऊंटनी पेश की कि उसे ले लो, लेकिन उन्होंने उसे लेने से इंकार कर दिया, ऐ अल्लाह के रसूल! वह ऊंटनी यह है, मैं इसे लेकर आपकी ख़िदमत में लाया हूं। तो हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, वाजिब तो तुम पर वही एक साला ऊंटनी है, तुम अपनी मर्ज़ी से उससे बेहतर जानवर देना चाहते हो, तो अल्लाह तुम्हें इसका बेहतर बदला दे, हम इसे क़ुबूल करते हैं।

उसने (ख़ुशी में) दोबारा कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह ऊंटनी यह है, मैं आपके पास उसे लाया हूं आप उसे ले लें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उसे लेने का हुक्म फ़रमा दिया और उसके लिए उसके जानवरों में बरकत की दुआ फ़रमाई।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत अस्मा रज़ि० से ज़्यादा सख़ी कोई औरत नहीं देखी, अलबत्ता इन दोनों की सख़ावत का तरीक़ा अलग-अलग था। हज़रत आइशा रज़ि० थोड़ी-थोड़ी चीज़ जमा करती रहतीं। जब काफ़ी चीज़ें जमा हो जातीं तो फिर उनको बांट देतीं और हज़रत अस्मा रज़ि० तो अगले दिन के लिए कोई चीज़ न रखतीं, यानी जो कुछ थोड़ा बहुत आता, उसी दिन बांट देतीं।[2]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 309
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 43,

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन काब रह० कहते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० बहुत सख़ी, नवजवान, और बहुत ख़ूबसूरत थे और अपनी क़ौम के नवजवानों में सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले थे, वह कोई चीज़ बचाकर नहीं रखते थे, चुनांचे वह क़र्ज़ लेते रहे (और दूसरों पर ख़र्च करते रहे) यहां तक कि सारा माल क़र्ज़ों में घिर गया, इस पर वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि वह क़र्ज़ख़्वाहों से कहें कि वह मेरा क़र्ज़ माफ़ कर दें। (चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनकी सिफ़ारिश फ़रमाई) लेकिन क़र्ज़ख़्वाहों ने इंकार कर दिया। अगर ये क़र्ज़ख़्वाह किसी के कहने की वजह से किसी का क़र्ज़ा माफ़ करने वाले होते, तो हुज़ूर सल्ल० की वजह से ज़रूर माफ़ कर देते। आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने उनका क़र्ज़ अदा करने के लिए उनका सारा माल बेच दिया, यहां तक हज़रत मुआज़ रज़ि० वहां से ख़ाली हाथ उठे, उनके पास कोई चीज़ न बची। जब मक्का की जीत का साल आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको यमन के एक हिस्से का गवर्नर बनाकर भेज दिया, ताकि उनके नुक़्सान की पूर्ति हो सके।

हज़रत मुआज़ यमन में गवर्नर बनकर ठहरे रहे और वह सबसे पहले आदमी हैं, जिन्होंने अल्लाह के माल से यानी ज़कात के माल से तिजारत की, चुनांचे यह यमन में ठहरकर तिजारत करते रहे, यहां तक कि उनके पास माल जमा हो गया और इतने दिनों में हुज़ूर सल्ल० का भी इंतिक़ाल हो गया। जब यह (मदीना) वापस आए तो हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, इस आदमी यानी हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास क़ासिद भेजें और जितने माल से उनका गुज़र हो सके, उतना माल उनके पास रहने दें, बाक़ी सारा माल उनसे ले लें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने उनको (यमन) भेजा ही इसलिए था ताकि उनका नुक़्सान पूरा किया जा सके, इसलिए मैं तो उनसे ख़ुद से कुछ न लूंगा। हां, अगर वह ख़ुद कुछ दें, तो ले लूंगा।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की बात न मानी, तो हज़रत उमर रज़ि० हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास ख़ुद चले गए। उनसे अपनी इस बात का ज़िक्र किया। हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा,

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे तो अपने नुक़्सान की भरपाई के लिए ही भेजा था, इसलिए मैं तो आपकी बात मानने के लिए तैयार नहीं हूं। (ज़कात का माल लेकर उन्होंने तिजारत की थी, उससे जो नफ़ा हुआ था, वह उन्होंने रख लिया और असल ज़कात का माल वापस कर दिया, इसलिए कि यह नफ़ा उनका ही था, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० का मतलब यह था चूंकि इज्तिमाई माल इस नफ़ा का ज़रिया बना है, इसलिए सारा नफ़ा न रखें, बल्कि ज़रूरत भर ले लें बाक़ी नफ़ा बैतुल माल में जमा करा दें।

(यह फ़ज़ीलत की बात थी, कुछ दिनों के बाद) हज़रत मुआज़ रज़ि० की हज़रत उमर रज़ि० से मुलाक़ात हुई, तो उनसे हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, मैंने आपकी बात मान ली, जैसे आप कह रहे हैं, वैसे मैं कर लेता हूं। मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं बहुत ज़्यादा पानी में हूं और डूबने से डर रहा हूं और ऐ उमर रज़ि० ! फिर आपने मुझे डूबने से बचाया।

फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आए और उनको सारा क़िस्सा सुनाया, (और अपना सारा माल लाकर उनको दे दिया) और क़सम खाकर उनसे कहा कि उन्होंने उनसे कुछ नहीं छिपाया। चुनांचे अपना कोड़ा भी लाकर रख दिया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तुमसे यह माल नहीं लूंगा। मैंने तुमको यह हदिया कर दिया है। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अब हज़रत मुआज़ रज़ि० का यह माल लेना ठीक है, क्योंकि उन्होंने तो यह सारा माल बैतुलमाल को दे दिया, जिससे यह माल उनके लिए हलाल और पाकीज़ा हो गया। इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनको हदिया किया है। इसके बाद हज़रत मुआज़ रज़ि० शाम देश चले गए।[1]

हज़रत इब्ने काब बिन मालिक रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० एक जवान, बहुत ख़ूबसूरत, बहुत सख़ी आदमी थे। अपनी क़ौम के बेहतरीन नवजवानों में से थे, जो आदमी भी उनसे कोई चीज़ मांगता, वह तुरन्त उसे दे देते, इसी वजह से कि वह (क़र्ज़ा लेकर दूसरों

1. कंज़, भाग 3, पृ० 126,

को दे देते) उन पर इतना क़र्ज़ा हो गया कि उनका सारा माल क़र्ज़ा में घिर गया। आगे पिछली हदीस जैसी ज़िक्र की।[1]

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरे वाले, सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाले और सबसे ज़्यादा खुले हाथ वाले यानी सख़ी थे। इसी सख़ावत के लिए बहुत-सा क़र्ज़ा उठा लिया, (चूंकि सारा दूसरों पर ख़र्च कर देते थे, इसलिए क़र्ज़ अदा करने के लिए उनके पास कुछ था ही नहीं) आख़िर क़र्ज़ देनेवाले उनके पीछे पड़ गए, तो यह उनसे छिपकर कई दिन अपने घर बैठे रहे। (थक हारकर) उनके क़र्ज़ देनेवाले मदद लेने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने क़ासिद भेजकर हज़रत मुआज़ रज़ि० को बुलवाया।

हज़रत मुआज़ रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास आए, तो वे क़र्ज़ देनेवाले भी उनके साथ आ गए और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें इनसे हमारा हक़ दिलवा दें। हुज़ूर सल्ल० ने (क़र्ज़ माफ़ करने पर उभारते हुए) फ़रमाया, जो मुआज़ रज़ि० का क़र्ज़ा माफ़ करे, अल्लाह उस पर रहम फ़रमाए।

यह दुआ सुनकर कुछ क़र्ज़ देने वालों ने क़र्ज़ा माफ़ कर दिया, लेकिन बाक़ी क़र्ज़ देने वालों ने माफ़ करने से इन्कार कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! इन (का क़र्ज़ा अदा करने) के लिए तुम सब्र से काम लो, यानी सारा माल भी देना पड़े तो तुम दे दो और सब्र से काम लो।

आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० का सारा माल लेकर उनके क़र्ज़ देनेवालों को दे दिया। उन्होंने आपस में बांट लिया तो हर एक को उसके सात हिस्सों में से पांच हिस्से मिले। इस पर उन क़र्ज़ देनेवालों ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, (हमारा बाक़ी क़र्ज़ा अदा करने के लिए) उन्हें (ग़ुलाम बनाकर) बेच दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब इन्हें छोड़ दो, अब इनसे बाक़ी क़र्ज़ा

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 231,

वसूल करने के लिए तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं रहा। इसके बाद हज़रत मुआज़ बनू सलिमा के यहां चले गए। वहां उनसे एक सहाबी ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! चूंकि तुम बिल्कुल फ़क़ीर हो गए हो, इसलिए तुम जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुछ मांग लो। उन्होंने कहा, मैं हुज़ूर सल्ल० से कुछ नहीं मांगूंगा।

हज़रत मुआज़ रज़ि० कुछ दिन इसी तरह रहे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनको बुलाकर यमन भेज दिया और फ़रमाया, हो सकता है कि अल्लाह तुम्हारे नुक़्सान की पूर्ति कर दे और तुम्हारे क़र्ज़ को अदा करा दे। चुनांचे हज़रत मुआज़ रज़ि० यमन चले गए और वहीं रहे, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया। जिस साल हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीरे हज बनाकर भेजा, उस साल हज़रत मुआज़ रज़ि० भी हज के लिए आए। आठ ज़िलहिज्जा को दोनों की हज पर मुलाक़ात हुई, दोनों एक दूसरे से गले मिले, फिर दोनों ने एक दूसरे से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में ताज़ियत की, फिर दोनों ज़मीन पर बैठकर आपस में बातें करने लगे और फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास कुछ ग़ुलाम देखे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया और लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बना लिया और हुज़ूर सल्ल० ने (अपनी ज़िंदगी में) हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन भेजा, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को अमीरे हज बनाकर भेजा।

[1]वहां मक्का में हज़रत उमर रज़ि० की हज़रत मुआज़ रज़ि० से मुलाक़ात हो गई। हज़रत मुआज़ रज़ि० के साथ बहुत से ग़ुलाम थे। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, ये लोग कौन हैं?

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, यह तो यमन वालों ने मुझे हदिया

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 123,

किए हैं और ये हज़रत अबूबक्र रज़ि० के लिए हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, तुम्हारे लिए मेरी राय यह है कि तुम इन सब ग़ुलामों को हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास ले जाओ।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत मुआज़ रज़ि० की अगले दिन हज़रत उमर रज़ि० से फिर मुलाक़ात हुई, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ इब्नुल ख़त्ताब! आज रात मैंने ख़्वाब देखा कि मैं आग में कूदना चाहता हूं और आप मुझे कमर से पकड़े हुए हैं, इसलिए अब तो मेरी राय यही है कि मैं आपकी बात मान लूं।

चुनांचे इन ग़ुलामों को लेकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनसे कहा, ये ग़ुलाम तो मुझे हदिए में मिले हैं और ये ग़ुलाम आपके लिए हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हम तुम्हारे हदिए की तुम्हारे लिए मंज़ूरी देते हैं और फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० वहां से नमाज़ के लिए बाहर निकले और (और उन्होंने नमाज़ पढ़ाई) तो उन्होंने देखा कि वे सब उनके पीछे नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत मुआज़ रज़ि०ने पूछा, तुम किसलिए नमाज़ पढ़ते हो?

उन्होंने कहा, अल्लाह के लिए। इस पर हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, अब तो तुम लोग भी अल्लाह के हो गए हो और यह कहकर उन सबको आज़ाद कर दिया।[1]

अपनी प्यारी चीज़ों को ख़र्च करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ि० को ख़ैबर में एक ज़मीन मिली। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मुझे एक ऐसी ज़मीन मिली है कि उससे ज़्यादा उम्दा माल मुझे कभी नहीं मिला, आपकी क्या राय है कि मैं उसके बारे में क्या करूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहो तो ज़मीन को वक़्फ़ कर

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 272,

दो और उसकी आमदनी को सदक़ा कर दो। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने इन शर्तों पर उस ज़मीन की आमदनी को सदक़ा किया कि न तो यह ज़मीन बेची जा सकेगी, न किसी को हदिया की जा सकेगी और न किसी से विरासत में मिल सकेगी और इसकी आमदनी फ़क़ीरों, रिश्तेदारों, ग़ुलामों को आज़ाद कराने, अल्लाह के रास्ते में किए जा रहे जिहाद में और मेहमानों पर ख़र्च की जाएगी और जो इस ज़मीन का मुतवल्ली बने उसे इजाज़त है कि वह आम दस्तूर के मुताबिक़ उसकी आमदनी में से ख़ुद खा ले और अपने दोस्त को खिला दे, लेकिन उसे अपने लिए उसमें से माल जमा करने की इजाज़त नहीं है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लहु अन्हु को ख़त लिखा कि वह उनके लिए जलूला (ख़ुरासान के रास्ते में एक शहर है, सन् 16 हि० में मुसलमानों ने उसे जीता था) के क़ैदियों में से एक बांदी ख़रीद लें। (चुनांचे उन्होंने एक बांदी ख़रीदकर हज़रत उमर रज़ि० के पास भेज दी। वह हज़रत उमर रज़ि० को बहुत अच्छी लगी) हज़रत उमर रज़ि० ने उस बांदी को बुलाया और फ़रमाया, अल्लाह फ़रमाते हैं—

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (سورت آلِ عمران آیت ۹۲)

'तुम पूरे ख़ैर को कभी हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि अपनी प्यारी चीज़ को ख़र्च न करो।' (आले इम्रान, आयत 92)

और उस बांदी को आज़ाद कर दिया।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रह० कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की एक बांदी थी। जब वह (अपने अख़्लाक़, आदत और हुस्न व जमाल की वजह से) उन्हें ज़्यादा पसन्द आने लगी, तो उसे आज़ाद करके अपने एक आज़ाद किए हुए ग़ुलाम से उसकी शादी कर दी। फिर उसका लड़का पैदा हुआ, तो हज़रत नाफ़ेअ कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को देखा कि वह उस बच्चे को उठाकर उसका बोसा लेते और

1. नस्बुर्राया, भाग 3, पृ० 476,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 314,

कहते, वाह ! वाह ! फ़्लानी की कितनी अच्छी ख़ुशबू इसमें से आ रही है। उनकी मुराद वही आज़ाद की हुई बांदी थी।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मुझे एक बार—

لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ

वाली आयत याद आई। (आयत का तर्जुमा दो हदीस पहले गुज़र चुका है) तो मैंने उन तमाम चीज़ों में ग़ौर किया, जो अल्लाह ने मुझे दे रखी थीं (कि इनमें से कौन-सी चीज़ मुझे सबसे ज़्यादा प्यारी लगती है) तो अपनी रूमी बांदी मरजाना से कोई चीज़ ज़्यादा प्यारी नज़र न आई। इसलिए मैंने कहा, यह मरजाना अल्लाह के लिए आज़ाद है। (आज़ाद करने के बाद भी दिल में उससे ताल्लुक़ बाक़ी रहा, जिसकी वजह से मैं यह कहता हूं) कि अल्लाह को देने के बाद चीज़ को वापस लेना लाज़िम न आता, तो मैं ज़रूर उससे शादी कर लेता।[2]

हाकिम की रिवायत में इसके बाद यह मज़्मून है कि फिर मैंने उसकी शादी नाफ़ेअ से कर दी। चुनांचे वह अब नाफ़ेअ की औलाद की मां है।[3]

अबू नुऐम ने हुलीया में बयान किया है कि हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की यह आदत थी कि जब उन्हें अपने माल में से कोई चीज़ ज़्यादा पसन्द आने लगती तो उसे फ़ौरन अल्लाह के नाम पर ख़र्च कर देते और यों अल्लाह का क़ुर्ब हासिल कर लेते और उनके ग़ुलाम भी उनकी इस आदत को जान गए थे, चुनांचे कभी-कभी उनके कुछ ग़ुलाम नेक कामों में ख़ूब ज़ोर दिखाते और हर वक़्त मस्जिद में अमल में लगे रहते। जब हज़रत इब्ने उमर रज़ि० उनको इस अच्छी हालत पर देखते तो उनको आज़ाद कर देते। इस पर उनके साथी उनसे कहते, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! अल्लाह की क़सम ! ये लोग तो इस तरह आपको धोखा दे जाते हैं (इन्हें मस्जिद से और मस्जिद वाले अमल से दिली लगाव कोई नहीं है, सिर्फ़

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 123,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 326,
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 561, हुलीया, भाग 1, पृ० 295,

आपको दिखाने के लिए ये करते हैं, ताकि आप ख़ुश होकर उन्हें आज़ाद कर दें) तो यह जवाब देते कि हमें जो अल्लाह के अमल में लगकर धोखा देगा, हम अल्लाह के लिए उससे धोखा खा जाएंगे।

चुनांचे मैंने एक दिन शाम को देखा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक अच्छे ऊंट पर जा रहे हैं, जिसे उन्होंने बहुत ज़्यादा क़ीमत देकर ख़रीदा था। चलते-चलते उन्हें उसकी चाल बड़ी पसन्द आई, वहीं ऊंट को बिठाया और उससे नीचे उतरकर फ़रमाया, ऐ नाफ़ेअ! इसकी नकेल निकाल दो और इसका कजावा उतार दो और इस पर झूल डाल दो और इसके कोहान के एक तरफ़ घाव कर दो। (उस ज़माने में यह घाव इस बात की निशानी थी कि यह जानवर अल्लाह के नाम पर कुरबान किया जाएगा) और फिर इसे क़ुरबानी के जानवरों में शामिल कर दो।[1]

अबू नुऐम की एक और रिवायत में यह है कि हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी ऊंटनी पर जा रहे थे कि वह ऊंटनी उन्हें अच्छी लगने लगी, तो तुरन्त उसे (बिठाने के लिए) फ़रमाया, 'इख़-इख़'। (उस ज़माने में अरब इस आवाज़ से ऊंट को बिठाया करते थे) और उसे बिठाकर फ़रमाया, ऐ नाफ़ेअ! इससे कजावा उतार लो।

मैं यह समझा कि वह मुझे कजावा उतारने को जो फ़रमा रहे हैं, या तो अपनी कोई ज़रूरत उस कजावे से पूरी करना चाहते हैं या आपको उस ऊंटनी के बारे में कोई शक गुज़रा है (कि कहीं उसको कोई तक्लीफ़ तो नहीं हो रही है) चुनांचे मैंने उससे कजावा उतार दिया, तो मुझसे फ़रमाया, देखो, उस पर जो सामान है, क्या उससे दूसरी ऊंटनी ख़रीदी जा सकती है? (यानी इसे तो अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान कर दिया जाए, क्योंकि यह पसन्द आ गई है और पसंदीदा माल अल्लाह के नाम पर क़ुरबान कर देना चाहिए और उसके सामान को बेचकर इससे सफ़र के लिए दूसरी ऊंटनी ख़रीद ली जाए)

मैंने कहा, मैं आपको क़सम देकर कहता हूं कि अगर आप चाहें तो

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 294,

इसे बेचकर इसकी क़ीमत से दूसरी ऊंटनी ख़रीद सकते हैं। चुनांचे उन्होंने उस ऊंटनी को झूल पहनाई और उसकी गरदन में जूते का हार डाला। (यह हारभी इस बात की निशानी थी कि इस जानवर को हरम शरीफ़ में ले जाकर कुरबान किया जाएगा) और उसे अपने क़ुरबानी के ऊंटों में शामिल कर दिया और उनको जब भी अपनी कोई चीज़ अच्छी लगने लगती तो उसे फ़ौरन आगे भेज देते (यानी अल्लाह के नाम पर ख़र्च कर देते, ताकि कल क़ियामत को काम आए।)

अबू नुऐम की एक और रिवायत में यह है कि हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का मुस्तक़िल तरीक़ा यह था कि जब भी उन्हें अपने माल में से कोई चीज़ पसन्द आ जाती तो फ़ौरन उसे अल्लाह के नाम पर ख़र्च कर देते और उसकी मिल्कियत से हाथ उठा लेते और कभी-कभी एक ही मज्लिस में तीस हज़ार अल्लाह के लिए दे देते और दो बार उनको इब्ने आमिर ने तीस हज़ार दिए तो उन्होंने (मुझसे) फ़रमाया, ऐ नाफ़ेअ ! मैं डरता हूं कि कहीं इब्ने आमिर के दिरहम मुझे फ़िल्ने में न डाल दें, जा, तू आज़ाद है। सफ़र और रमज़ान शरीफ़ के अलावा कभी भी पूरे महीने बराबर गोश्त नहीं खाते थे। कभी-कभी तो पूरा महीना गुज़र जाता और गोश्त का एक टुकड़ा भी न चखते।[1]

हज़रत सईद बिन अबी हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने जोहफ़ा नामी जगह पर क़ियाम फ़रमाया और वह बीमार भी थे। उन्होंने कहा, मछली खाने को मेरा दिल चाह रहा है। उनके साथियों ने बहुत तलाश किया, बस सिर्फ़ एक मछली मिली। उनकी बीवी हजरत सफ़ीया बिन्त अबी उबैद ने उस मछली को लिया और उसे तैयार करके उनके सामने रख दिया।

इतने में एक मिस्कीन उनके पास आकर खड़ा हो गया। उन्होंने उस मिस्कीन से कहा, तुम यह मछली ले लो। इस पर उनकी बीवी ने कहा, सुब्हानल्लाह ! हमने आपके लिए बड़ी मशक़्क़त उठाकर यह मछली

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 294, मज्मा, भाग 9, पृ० 247, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 132

ख़ास तौर पर आपके लिए तैयार की है (इसलिए इसे तो आप ख़ुद खाएं) हमारे पास सफ़र का सामान है, उनमें से इस मिस्कीन को दे देंगे। उन्होंने (अपना नाम लेकर) कहा, अब्दुल्लाह को यह मछली बहुत पसन्द आ रही है, (इसलिए इस मिस्कीन को यही मछली देनी है)[1]

इब्ने साद ने इस जैसी रिवायत ज़िक्र की है। उसमें यह है कि उनकी बीवी ने कहा, हम इस मिस्कीन को एक दिरहम दे देते हैं, यह दिरहम इस मछली से ज़्यादा इसके काम आएगा। आप यह मछली खाएं और अपनी चाहत पूरी कर लें। उन्होंने कहा, मेरी चाहत वही है, जो मैं कह रहा हूं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मदीना मुनव्वरा में अंसार में सबसे ज़्यादा खजूरों के बाग़ हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थे और उन्हें अपने बाग़ों में से सबसे ज़्यादा महबूब बैरुहा बाग़ था, जो कि बिल्कुल मस्जिदे नबवी के सामने था। उसका पानी बहुत उम्दा था। हुज़ूर सल्लल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी अक्सर उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका पानी पीते। जब—

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ. (سورت آلِ عمران آیت ۹۲)

आयत उतरी, जिसका तर्जुमा इस तरह है—

'तुम पूरे ख़ैर को कभी हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि अपनी प्यारी चीज़ को ख़र्च न कर दो।'

तो हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह फ़रमाते हैं कि जब तक तुम अपनी प्यारी चीज़ ख़र्च न करोगे, उस वक़्त तक तुम नेकी के कमाल को नहीं पहुंच सकते हो और मुझे अपने सारे माल में से सबसे ज़्यादा महबूब बैरुहा बाग़ है। मैं उसे अल्लाह के लिए सदक़ा करता हूं और मुझे उम्मीद है कि अल्लाह इस नेकी पर मुझे जन्नत अता फ़रमाएंगे और इसके अज्र को मेरे लिए

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 297,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 122,

ज़ख़ीरा (भंडारा) बनाकर रखेंगे जो मुझे क़ियामत के दिन काम आएगा। ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप जहां मुनासिब समझें उसे ख़र्च फ़रमा दें।

आपने ख़ुश होकर फ़रमाया, वाह, वाह, यह बड़े नफ़ा वाला माल है, यह बड़े नफ़ा वाला माला है।[1]

बुख़ारी में इसके बाद यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने तुम्हारी बात सुन ली है। मेरी राय यह है कि तुम इसे अपने रिश्तेदारों में बांट दो। हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ऐसे ही करूंगा। चुनांचे हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने वह बाग़ अपने रिश्तेदारों और चचेरे भाइयों में बांट दिया।

हज़रत मुहम्मद बिन मुंकदिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब यह आयत—

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ

नाज़िल हुई तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी एक घोड़ी लेकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, जिसका नाम शिबला था और उन्हें अपने माल में से कोई चीज़ उस घोड़ी से ज़्यादा महबूब नहीं थी और अर्ज़ किया कि यह घोड़ी अल्लाह के लिए सदक़ा है। हुज़ूर सल्ल० ने उसे क़ुबूल फ़रमाकर उनके बेटे हज़रत उसामा रज़ि० बिन जैद को सवारी के लिए दे दी।

(हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० को यह अच्छा न लगा कि उनकी सदक़ा की हुई घोड़ी उनके ही बेटे को मिल गई, यों सदक़ा की हुई चीज़ अपने ही घर वापस आ गई)

हुज़ूर सल्ल० ने इस नागवारी का असर उनके चेहरे में महसूस फ़रमाया, तो इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारे इस सदक़े को क़ुबूल कर चुके हैं (इसलिए अब यह घोड़ी जिसे भी मिल जाए, तुम्हारे अज्र में कमी न आएगी।)[2]

---

1. तर्गीब, भाग 2, पृ० 40,

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हर माल में तीन शरीक होते हैं—

एक तो तक़्दीर है, जो माल के हलाक होने और जानवरों के मर जाने की शक्ल में तेरा माल ले जाती है और तुझसे पूछती भी नहीं है कि वह तेरा अच्छा माल ले जाए या घटिया।

दूसरा शरीक वारिस है जो इसका इन्तिज़ार कर रहा है कि तू (क़ब्र में) रखे, यानी तू मर जाए और वह तेरा माल ले जाए। वह तेरा माल भी ले जाएगा और तू उसकी निगाह में बुरा भी होगा।

और तीसरा शरीक तू ख़ुद है। इसलिए तुम इस बात की पूरी कोशिश करो कि तुम इन तीनों शरीकों में से सबसे कमज़ोर शरीक न बनो। (यानी तुम इन दोनों से ज़्यादा माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर लो।) अल्लाह का इर्शाद है—

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ۔

ग़ौर से सुनो! यह ऊंट मुझे अपने माल में से बहुत अच्छा लगता है, इसलिए मैंने चाहा कि मैं इसे अपने (काम आने के) लिए आगे (आख़िरत में) भेज दूं।[1]

अपनी ज़रूरत के बावजूद माल दूसरों पर ख़र्च करना

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक औरत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक चादर लेकर आई जो कि बुनी हुई थी और उसका किनारा भी उसी के साथ बुना हुआ था (यानी वह चादर किसी और कपड़े से काटकर नहीं बनाई गई थी, बल्कि किनारे समेत चादर के तौर पर ही वह बुनी गई थी।) और उस औरत ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं यह चादर इसलिए लाई हूं ताकि आप इसे पहन लें। आपने उस औरत से चादर ले ली और चूंकि आपको उस चादर की वाक़ई ज़रूरत थी,

---

4. दुर्रे मंसूर, भाग 2, पृ० 50
1. हुलीया, भाग 1, पृ० 163,

इसलिए आपने उसे पहन लिया।

आपके सहाबा में से एक सहाबी ने हुज़ूर सल्ल० पर वह चादर देखी, तो अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो बहुत अच्छी चादर है, यह तो आप मुझे पहनने को दे दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत अच्छा ! (और यह कहकर चादर उन्हें दे दी, हालांकि आपको ख़ुद उसकी ज़रूरत थी)

जब हुज़ूर सल्ल० वहां से खड़े होकर तशरीफ़ ले गए, आपके सहाबा रज़ि० ने इन साहब को बहुत मलामत की और यों कहा कि तुमने अच्छा नहीं किया, तुम ख़ुद देख रहे हो कि हुज़ूर सल्ल० को ख़ुद इस चादर की ज़रूरत थी, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० ने उसे लेकर पहन लिया था, फिर भी तुमने हुज़ूर सल्ल० से वह चादर मांग ली और तुम्हें मालूम है कि हुज़ूर सल्ल० से जब भी कोई चीज़ मांगी जाए, तो आप उसका इंकार नहीं फ़रमाते, बल्कि दे देते हैं।

उन सहाबी ने कहा, मैंने तो सिर्फ़ इसलिए मांगी है कि हुज़ूर सल्ल० के पहनने से यह चादर बरकत वाली हो गई है। मैं हुज़ूर सल्ल० से लेकर इसे हमेशा अपने साथ संभाल कर रखूंगा, ताकि मुझे उसमें दफ़न किया जाए।[1]

हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक धारीदार ऊनी काले रंग का जोड़ा बुनकर तैयार किया गया। उसका किनारा सफ़ेद रखा गया। हुज़ूर सल्ल० उसे पहनकर सहाबा रज़ि० के पास बाहर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी रान पर (ख़ुशी की वजह से) हाथ मारकर फ़रमाया, क्या तुम देखते नहीं, यह जोड़ा कितना अच्छा है !

एक आराबी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, यह तो आप मुझे दे दें। आपकी आदत यह थी कि जब भी आपसे कोई चीज़ मांगी जाती थी, आप इसके जवाब में 'नहीं' नहीं फ़रमाते थे। आपने फ़रमाया, बहुत अच्छा, तुम ले लो और यह

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 163,

कहकर वह जोड़ा उसे दे दिया और अपने पुराने दो कपड़े मंगवाकर पहन लिए और फिर आपने उसी तरह का जोड़ा बनाने का हुक्म दिया। चुनांचे वह जोड़ा बनना शुरू हो गया, लेकिन अभी वह बन ही रहा था और खड्डी पर चढ़ा हुआ था कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत अबू अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़र्च करने का क़िस्सा

हज़रत अबू अक़ील रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं, वह सारी रात दो साअ (सात सेर) खजूरों के बदले अपनी कमर पर रस्सी बांधकर कुंएं में से पानी निकालते रहे, फिर एक साअ खजूर लाकर अपने घरवालों को दी, ताकि वे उसे अपने काम में लाएं और दूसरा साअ अल्लाह का क़ुर्ब हासिल करने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया और हुज़ूर सल्ल० को बता दिया कि यह साअ मेहनत करके हासिल किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे सदक़े के माल में रख दो। (चूंकि यह ख़ुद ग़रीब और मुहताज थे और इस एक साअ खजूर की ख़ुद उनको ज़रूरत थी, इस वजह से) मुनाफ़िक़ों ने उनका मज़ाक़ उड़ाते हुए उनके बारे में कहा, अल्लाह को इसके साअ की क्या ज़रूरत थी, यह तो ख़ुद इस साअ का मुहताज था। इस पर अल्लाह ने ये आयतें उतारीं—

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

(سورة توبه آيت ٧٩)

'ये (मुनाफ़िक़) ऐसे हैं कि नफ़ली सदक़ा देनेवाले मुसलमानों पर सदक़ों के बारे में तान करते हैं और (ख़ास तौर पर) उन लोगों पर (और ज़्यादा) जिनको मेहनत मज़दूरी की आमदनी के अलावा कुछ नहीं मिलता' यानी उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं। अल्लाह उनको इस मज़ाक़ का (तो ख़ास) बदला देगा और (ताने का तो यह बदला मिलेगा ही,) उनके लिए आख़िरत में दर्दनाक सज़ा होगी।[2] (सूरः तौबा आयत 79)

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 42.

हज़रत अबू सलमा और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया, सदक़ा करो, क्योंकि मैं एक जमाअत भेजना चाहता हूं। इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे पास चार हज़ार दिरहम हैं। इनमें से दो हज़ार तो मैं अपने रब को उधार दे रहा हूं। (अल्लाह के उधार देने का मतलब यह है कि अब मैं यह माल ज़रूरतमंदों पर ख़र्च कर देता हूं और आख़िरत में इसका बदला लूंगा।) और दो हज़ार मैं अपने बाल-बच्चों को दे रहा हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने (ख़ुश होकर) उनको दुआ दी। अल्लाह उसमें भी बरकत दे जो तुम दे रहे हो और उसमें भी बरकत दे जो तुम (घरवालों के लिए) रख रहे हो और एक अंसारी ने रात भर मज़दूरी करके दो साअ खजूरें भी जमा कीं। उन्होंने ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! मैंने (मज़दूरी करके) दो साअ खजूरें जमा की हैं, एक साअ मैं अपने रब को दे रहा हूं और एक साअ मैं अपने बाल-बच्चों के लिए रख रहा हूं।

इस पर मुनाफ़िक़ों ने (ज़्यादा देनेवाले और कम देनेवाले) दोनों क़िस्म के लोगों में ऐब निकालने शुरू कर दिए और कहने लगे, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जैसे ज़्यादा ख़र्च करने वाले तो सिर्फ़ दिखावे की वजह से इतना ख़र्च कर रहे हैं और यह ग़रीब और ज़रूरतमंद आदमी जो एक साअ के लिए खजूर दे रहा है, अल्लाह और रसूल सल्ल० को उसकी साअ की ज़रूरत नहीं है। इस पर अल्लाह ने 'अल्लज़ी-न यल मिज़ू-न' वाली आयत उतारी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि० के ख़र्च करने का क़िस्सा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन अब्दि रब्बिही रज़ियल्लाहु अन्हुमा,

---

4. हैसमी, भाग 7, पृ० 33,
1. हैसमी, भाग 7, पृ० 32,

जिन्होंने ख़्वाब में (फ़रिश्ते को) अज़ान (देते हुए) देखा था, वह फ़रमाते हैं कि उन्होंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सलम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरा यह बाग़ सदक़ा है। मैं अल्लाह और उसके रसूल को दे रहा हूं, वह जहां चाहें ख़र्च कर दें। जब उनके मां-बाप को मालूम हुआ तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारा गुज़ारा तो इसी बाग़ पर हो रहा था। (हमारे बेटे ने उसे सदक़ा कर दिया) हुज़ूर सल्ल० ने वह बाग़ उन दोनों को दे दिया।

फिर जब इन दोनों का इंतिक़ाल हो गया, तो फिर वह बाग़ उनके बेटे (हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद) को विरासत में मिल गया (और वारिस बनकर उस बाग़ के मालिक हो गए।)[1]

एक अंसारी के ख़र्च करने का क़िस्सा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मुझे भूख ने परेशान कर रखा है। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी पाक बीवियों में से एक के पास आदमी भेजा (कि अगर कुछ खाने को है तो भेज दें।) उन्होंने जवाब दिया कि घर में खाने को कुछ नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है ! मेरे पास पानी के अलावा और कुछ नहीं। फिर आपने दूसरी बीवियों के पास बारी-बारी पैग़ाम भेजा तो सबने यही जवाब दिया कि घर में खाने को कुछ नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मेरे पास पानी के अलावा और कुछ नहीं।

फिर आपने (सहाबा रज़ि० से) फ़रमाया, इसे आज रात कौन अपना मेहमान बनाता है? अल्लाह उस पर अपनी रहमत भेजे।

एक अंसारी ने खड़े होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं तैयार हूं। चुनांचे वह उस आदमी को अपने घर ले गए और अपनी

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 336.

बीवी से पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है?

उसने कहा, और तो कुछ नहीं, सिर्फ़ बच्चों के लिए कुछ खाने को है।

उस अंसारी ने कहा, बच्चों को किसी चीज़ से बहला देना और जब वे खाना मांगें तो उन्हें सुला देना और जब हमारा मेहमान अन्दर आए तो चिराग़ बुझा देना और उसके सामने ऐसे ज़ाहिर करना कि जैसे हम भी खा रहे हैं और एक रिवायत में यह है कि जब यह मेहमान खाना खाने लगे तो तू खड़ी होकर (ठीक करने के बहाने से) चिराग़ बुझा देना।

चुनांचे वे सब खाने के लिए बैठे, लेकिन सिर्फ़ मेहमान ने खाया और अंसारी और उनकी बीवी दोनों ने भूखे ही रात गुज़ार दी।

जब वह सुबह को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम दोनों ने आज रात अपने मेहमान के साथ जो सुलूक किया है, वह अल्लाह को बहुत पसन्द आया है और एक रिवायत में यह है कि इस पर यह आयत उतरी—

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ (سورت الحشر آيت ۹)

'और अपने से मुक़द्दम रखते हैं, अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो।'

(सूरः हश्र, आयत 9)[1]

सात घरों का क़िस्सा

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, बकरी की एक सिरी सात घरों में घूमती रही। हर एक दूसरे को अपने पर तर्जीह देता रहा, हालांकि उनमें से हर एक को इस सिरी की ज़रूरत थी, यहां तक कि सात घरों का चक्कर काट कर आख़िर वह सिरी उसी पहले घर में वापस आ गई, जहां से वह चली थी।[2]

अल्लाह को क़र्ज़े हसना देने वाले

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हुज़ूर

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 147, इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 338, फ़त्ह, भाग 8, पृ० 446,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 176,

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां आदमी का खजूर का एक पेड़ है और मुझे अपनी दीवार को ठीक करने के लिए उसकी ज़रूरत है। आप उसे हुक्म फ़रमा दें कि वह यह पेड़ मुझे दे दे, ताकि मैं अपनी दीवार को उसके ज़रिए ठीक कर सकूं। हुज़ूर सल्ल० ने उस आदमी को फ़रमाया, तुम खजूर का यह पेड़ उसे दे दो, तुम्हें इसके बदले में जन्नत में खजूर का पेड़ मिलेगा। उस आदमी ने इंकार कर दिया।

(हज़रत अबुद्दहदाह रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला कि हुज़ूर सल्ल० उस आदमी से खजूर का यह पेड़ जन्नत के खजूर के पेड़ के बदले में लेकर उस दूसरे आदमी को देना चाहते हैं, तो) हज़रत अबुद्दहदाह रज़ि० उस खजूर वाले के पास गए और उनसे कहा, तुम मेरे इस बाग़ के बदले में अपना खजूर का पेड़ मेरे हाथ बेच दो। वह राज़ी हो गया।

फिर हज़रत अबुद्दहदाह रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपना बाग़ देकर खजूर का वह पेड़ ख़रीद लिया है और अब आपको दे रहा हूं। आप उस आदमी को वह पेड़ दे दें। हुज़ूर सल्ल० ने (ख़ुश होकर) कई बार फ़रमाया, अबुद्दहदाह रज़ि० को जन्नत में खजूर के फलदार और बड़े-बड़े पेड़ बहुत-से मिलेंगे।

फिर उन्होंने अपनी बीवी से आकर कहा, ऐ उम्मे दहदाह ! तुम इस बाग़ से बाहर आ जाओ। मैंने इसे जन्नत के खजूर के एक पेड़ के बदले में बेच दिया है। उनकी बीवी (भी उनकी तरह जन्नत की तलब रखती थीं, इसलिए उन्हों) ने कहा, बड़े नफ़ा का सौदा किया या इस जैसा वाक्य कहा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब यह आयत उतरी—

مَنْ ذَا الَّذِی یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا (سورۃ بقرہ آیت ۲۴۵)

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 59, हैसमी, भाग 9, पृ० 324,

'कौन आदमी है ऐसा जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छे तौर पर क़र्ज़ देना, फिर अल्लाह उस (के सवाब) को बढ़ाकर बहुत से हिस्से कर दे',

(सूर: बक़र: आयत, 245)

तो हज़रत अबुद्दहदाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या वाक़ई अल्लाह हमसे क़र्ज़ लेना चाहते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां।

हज़रत अबुद्दहदाह रज़ि० ने कहा, आप अपना हाथ ज़रा मुझे इनायत फ़रमाएं। आपने मुबारक हाथ उनकी ओर बढ़ा दिया। उन्होंने (हुज़ूर सल्ल० का मुबारक हाथ पकड़कर) अर्ज़ किया, मेरा एक बाग़ है, जिसमें खजूर के छः सौ पेड़ हैं। मैंने यह बाग़ अपने रब को क़र्ज़ के तौर पर दे दिया।

फिर वहां से चलकर अपने बाग़ में पहुंचे। उनकी बीवी हज़रत उम्मे दहदाह और उनके बच्चे उस बाग़ में थे। उन्होंने आवाज़ दी, ऐ उम्मे दहदाह!

उनकी बीवी ने कहा, लब्बैक।

उन्होंने कहा, बाग़ से बाहर आ जाओ, क्योंकि मैंने यह बाग़ अल्लाह के क़र्ज़ दे दिया है।[1]

और पीछे गुज़र चुका है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे पास चार हज़ार दिरहम हैं, इनमें से दो हज़ार तो मैं अपने रब को उधार दे रहा हूं।

लोगों में इस्लाम का शौक़ पैदा करने के लिए माल ख़र्च करना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्लाम (में दाख़िल करने और उस पर जमाने) के लिए कोई चीज़ मांगी जाती तो हुज़ूर सल्ल० वह चीज़ ज़रूर

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 324, मजमा, भाग 3, पृ० 113, इसाबा, भाग 4, पृ० 59, इब्ने कसीर, भाग 1, पृ० 299, मजमा, भाग 3, पृ० 113,

देते।

चुनांचे आपकी ख़िदमत में एक आदमी आया। आपने हुक्म दिया कि इसे सदक़ा की बकरियों में से इतनी ज़्यादा बकरियां दी जाएं जो दो पहाड़ों के बीच की सारी घाटी को भर दें। वह बकरियां लेकर अपनी क़ौम के पास वापस गया और उनसे कहा, ऐ मेरी क़ौम! तुम इस्लाम ले आओ, क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतना ज़्यादा देते हैं कि उन्हें अपने ऊपर फ़ाक़े का कोई डर ही नहीं है।

और एक रिवायत में यह है कि कभी-कभी कोई आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सिर्फ़ दुनिया लेने के ही इरादे से आता, लेकिन शाम होने से पहले ही उसका ईमान (हुज़ूर सल्ल० की सोहबत और अच्छी तर्बियत और आप वाली मेहनत की बरकत से) इतना मज़बूत हो जाता कि हुज़ूर सल्ल० का दीन उसकी निगाह में दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब और अज़ीज़ हो जाता।[1]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक अरबी आदमी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर आपसे दो पहाड़ों के बीच की ज़मीन मांगी। आपने वह ज़मीन उसके नाम लिख दी, इस पर वह मुसलमान हो गया।

फिर उसने अपनी क़ौम को जाकर कहा, तुम इस्लाम ले आओ, मैं तुम्हारे पास उस आदमी के यहां से आ रहा हूं जो उस आदमी की तरह दिल खोलकर देता है जिसे फ़ाक़े का कोई डर न हो।[2]

सफ़वान बिन उमैया के इस्लाम लाने के क़िस्से में गुज़र चुका है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चल फिरकर माले ग़नीमत देख रहे थे। सफ़वान बिन उमैया भी आपके साथ थे। सफ़वान बिन उमैया ने भी देखना शुरू किया कि जिअिर्राना की तमाम घाटी जानवरों, बकरियों और चरवाहों से भरी हुई है और बड़ी देर तक ग़ौर से देखते रहे। हुज़ूर

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 42, मुस्लिम, भाग 2, पृ० 253,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 13

सल्ल० भी उनको कनखियों से देखते रहे।

आपने फ़रमाया, ऐ अबू वह्ब ! (यह सफ़वान का उपनाम है) क्या यह (माले ग़नीमत से भरी हुई) घाटी तुम्हें पसन्द है ?

उन्होंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, यह सारी घाटी तुम्हारी है और इसमें जितना माले ग़नीमत है, वह भी तुम्हारा है। यह सुनकर सफ़वान ने कहा, इतनी बड़ी सख़ावत की हिम्मत सिर्फ़ नबी ही कर सकता है और कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

पढ़कर वहीं मुसलमान हो गए।[1]

1. कंज़, भाग 5, पृ० 294

अल्लाह के रास्ते के जिहाद में माल ख़र्च करना

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का माल ख़र्च करना

हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मक्का से हिजरत के लिए) रवाना हुए और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी आपके साथ रवाना हुए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने साथ सारा माल, पांच हज़ार या छः हज़ार दिरहम जितना भी था, सारा ले लिया और लेकर हुज़ूर सल्ल० के साथ चले गए।

फिर हमारे दादा हज़रत अबू क़ुहाफ़ा रज़ि० हमारे घर आए, उनकी आंखों की रोशनी जा चुकी थी। उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरे ख़्याल में तो अबूबक्र रज़ि० तुम लोगों को जाने के सदमे के साथ माल का सदमा भी पहुंचा गए हैं, यानी ख़ुद तो वह गए ही हैं, मेरा ख़्याल यह है कि वह माल भी सारा ले गए हैं और तुम्हारे लिए कुछ नहीं छोड़ा है।

मैंने कहा, दादा जान! हरगिज़ नहीं। वह तो हमारे लिए बहुत कुछ छोड़कर गए हैं और मैंने (छोटी-छोटी) पथरियां लेकर घर के उस ताक़ में रख दीं, जिसमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपना माल रखा करते थे। (उस ज़माने में दिरहम व दीनार छोटी पथरियों की तरह हुआ करते थे, इसलिए दिरहम व दीनार के साइज़ की पथरियां रखी होंगी।) फिर मैंने उन पथरियों पर एक कपड़ा डाल दिया। फिर मैंने अपने दादा जान का हाथ पकड़कर उनसे कहा, ऐ दादा जान! अपना हाथ इस माल पर रखें।

चुनांचे उन्होंने अपना हाथ उस पर रखा। (वह यह समझे कि ये दिरहम व दीनार ही हैं) तो उन्होंने कहा, कोई बात नहीं। अगर वह तुम्हारे लिए इतना माल छोड़ गए हैं, तो उन्होंने अच्छा किया, इससे तुम्हारा गुज़ारा हो जाएगा।

हज़रत अस्मा रज़ि० कहती हैं, अल्लाह की क़सम! उन्होंने हमारे

लिए कुछ नहीं छोड़ा था, लेकिन मैंने यह काम बड़े मियां (दादा जान) की तसल्ली के लिए किया था।[1] और यह पहले गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने तबूक कीं लड़ाई में अपना सारा माल, जो कि चार हज़ार दिरहम था, ख़र्च किया था।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० का माल ख़र्च करना

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ब्बाब सलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाया और जैशे उसरा (तबूक की लड़ाई में जाने वाली फ़ौज) पर ख़र्च करने पर उभारा, तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने कहा, कजावे और पालान समेट सौ ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं, यानी मैं दूंगा।

फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर एक सीढ़ी नीचे तशरीफ़ लाए और फिर (ख़र्च करने पर उभारा) तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने फिर कहा, कजावे और पालान समेत और सौ ऊंट मेरे ज़िम्मे हैं।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा कि (हज़रत उस्मान रज़ि० के इतने ज़्यादा ख़र्च करने पर बहुत ख़ुश हैं और ख़ुशी की वजह से) हाथ को ऐसे हिला रहे हैं जैसे ताज्जुब और हैरानी में इंसान हिलाया करता है। इस मौक़े पर अब्दुस्समद रिवायत करने वाले ने समझाने के लिए अपना हाथ बाहर निकालकर हिला कर दिखाया और हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे हैं, अगर इतना ज़्यादा ख़र्च करने के बाद उस्मान रज़ि० कोई भी (नफ़्ल) अमल न करें तो उनका कोई नुक़्सान नहीं होगा।

बैहक़ी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने इस पर तीन बार उभारा और हज़रत उस्मान रज़ि० के कजावे और पालान समेत तीन सौ ऊंट अपने ज़िम्मे लिए।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं, मैं उस वक़्त मौजूद था, जब हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर यह फ़रमा रहे थे, इतना ख़र्च करने के बाद या

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 179, हैसमी, भाग 6, पृ० 59

फ़रमाया आज के बाद उस्मान रज़ि० को किसी गुनाह से नुक़्सान नहीं होगा।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैशे उसरा (यानी तबूक की लड़ाई की फ़ौज) को तैयार कर रहे थे, तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के पास एक हज़ार दीनार लेकर आए और लाकर हुज़ूर सल्ल० की झोली में डाल दिए। हुज़ूर सल्ल० उन दीनारों को उलटते-पलटते जा रहे थे और यह कहते जा रहे थे, आज के बाद उस्मान रज़ि० जो भी (छोटे गुनाहा या हल्के) काम करेंगे तो उससे उनका नुक़्सान नहीं होगा। यह बात आपने कई बार फ़रमाई।[2]

अबू नुऐम ने यही रिवायत हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से नक़ल की है। उसमें यह मज़्मून है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! उस्मान रज़ि० के इस कारनामे को न भूलना और इसके बाद उस्मान रज़ि० कोई नेकी का काम न करें, तो इससे उनका नुक़्सान नहीं होगा।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जैशे उसरा की मदद करने के लिए पैग़ाम भेजा, तो हज़रत उस्मान रज़ि० ने दस हज़ार दीनार हुज़ूर सल्ल० के पास भेजे। लाने वाले ने वे दीनार हुज़ूर सल्ल० के सामने डाल दिए।

हुज़ूर सल्ल० अपने सामने उन दीवारों को ऊपर नीचे उलटने-पलटने लगे और हज़रत उस्मान रज़ि० के लिए दुआ करने लगे, ऐ उस्मान रज़ि०! अल्लाह तेरी मग़्फ़िरत फ़रमाए और जो गुनाह तुमने छिपकर और एलानिया किए और जो गुनाह तुमसे क़ियामत तक होंगे अल्लाह उन सबको माफ़ फ़रमाए। इस अमल के बाद उस्मान रज़ि० कोई भी नेक अमल न करें, तो कोई परवाह नहीं।[3] (इंसान जब मरता है, तो उसकी क़ियामत

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 4, हुलीया, भाग 1, पृ० 59
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 102, हुलीया, भाग 1, पृ० 59
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 13

क़ायम हो जाती है, इसलिए मतलब यह है कि उस्मान रज़ि० से मरते दम तक जितने गुनाह हों, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जैशे उसरा की तैयारी के लिए सामान दिया और सात सौ ऊक़िया सोना लाकर दिया, उस वक़्त मैं भी वहां मौजूद था।[1]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उस्मान रज़ि० ने तबूक की लड़ाई में हज़ार सवारियां दीं, जिनमें पचास घोड़े थे।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, तबूक की लड़ाई में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने साढ़े नौ सौ ऊंटनियां और पचास घोड़े दिए थे या यह कहा नौ सौ सत्तर ऊंटनियां और तीस घोड़ दिए थे।[3]

और यह पहले गुज़र चुका है कि तबूक की लड़ाई में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक तिहाई फ़ौज को उनकी ज़रूरत का सामान दिया था, यहां तक कि कहा जाता था कि एक तिहाई फ़ौज की ज़रूरत की हर चीज़ उन्होंने जमा कर रखी थी।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का माल ख़र्च करना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में थीं कि उन्होंने मदीने में एक शोर सुना, उन्होंने पूछा, यह क्या है?

लोगों ने बताया कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का तिजारती क़ाफ़िला शाम देश से ज़रूरत की हर चीज़ लेकर आ रहा है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, (उस क़ाफ़िले में) सात सौ ऊंट थे और सारा मदीना उस शोर की आवाज़ से गूंज उठा। इस पर हज़रत

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 85
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 59
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 13

आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मैंने देखा है कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० घुटनों के बल घसिटते हुए जन्नत में दाख़िल हो रहे हैं।

यह बात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को पहुंची, तो उन्होंने कहा, मैं पूरी कोशिश करूंगा कि मैं जन्नत में (क़दमों पर) चलकर दाख़िल हूं और यह कहकर अपना सारा क़ाफ़िला मय तिजारत के सामान और कजावों के, अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दिया।[1]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अपना आधा माल चार हज़ार दिरहम अल्लाह के रास्ते में सदक़ा किए, फिर चालीस हज़ार सदक़ा किए, फिर चालीस हज़ार सदक़ा किए, फिर पांच सौ घोड़े अल्लाह के रास्ते में दिए, फिर डेढ़ हज़ार अल्लाह के रास्ते में दिए। उनका अक्सर माल तिजारत के ज़रिए कमाया हुआ था।[2]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अपना आधा माल सदक़ा किया, फिर बाद में चालीस हज़ार सदक़ा किए, फिर पांच सौ घोड़े और पांच सौ ऊंट सदक़ा किए। उनका अक्सर माल तिजारत के ज़रिए कमाया हुआ था।[3]

'हयातुस्सहाबा' भाग 1 में यह गुज़र चुका है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने तबूक की लड़ाई में दो सौ ऊक़िया सदक़ा किए।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० का माल ख़र्च करना

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमने मदीना में किसी के बारे में यह नहीं सुना कि उसने हज़रत हकीम बिन हिज़ाम

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 98, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 93, बिदाया, भाग 7, पृ० 164,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 99, बिदाया, भाग 7, पृ० 163,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 416,

रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा सवारियां अल्लाह के रास्ते में दी हों। एक बार दो देहाती आदमी मदीना आकर यह सवाल करने लगे कि कौन अल्लाह के रास्ते में सवारी देगा?

लोगों ने उनको हकीम बिन हिज़ाम के बारे में बताया कि वह सवारी का इन्तिज़ाम कर देंगे।

वे दोनों हज़रत हकीम के पास उनके घर आ गए। हज़रत हकीम रज़ि० ने उन दोनों से पूछा कि वे दोनों क्या चाहते हैं? जो वह चाहते थे, वह उन्होंने हज़रत हकीम रज़ि० को बता दिया। हज़रत हकीम रज़ि० ने उन दोनों से कहा, तुम जल्दी न करो। (कुछ देर ठहरो) मैं अभी तुम दोनों के पास बाहर आता हूं। (जब हज़रत हकीम रज़ि० बाहर आए तो) हज़रत हकीम रज़ि० वह कपड़ा पहने हुए थे, जो मिस्र से लाया गया था और जाल की तरह पतला और सस्ता था और उसकी क़ीमत चार दिरहम थी। हाथ में लाठी पकड़ी हुई थी और उनके साथ उनके ग़ुलाम भी बाहर आए (और दोनों देहातियों को लेकर बाज़ार की तरफ़ चल दिए।)

चलते-चलते जब वे किसी कूड़े-करकट के पास से गुज़रते और उसमें उनको कपड़े का कोई ऐसा टुकड़ा नज़र आता, जो अल्लाह के रास्ते में दिए जाने वाले ऊंटों के सामान की मरम्मत में काम आ सकता हो, तो उसे अपनी लाठी के किनारे से उठाते और उसे झाड़ते, फिर अपने ग़ुलामों से कहते, ऊंटों के सामान की मरम्मत के लिए उसे रख लो। हज़रत हकीम इस तरह एक कपड़ा उठा रहे थे कि उनमें से एक देहाती ने अपने साथी से कहा, तेरा नास हो, इनसे हमारी जान छुड़ाओ। अल्लाह की क़सम! इनके पास तो सिर्फ़ कूड़े से उठाए हुए चीथड़े ही हैं। (यह हमें सवारी के जानवर कैसे दे सकेंगे?)

उसके साथी ने कहा, अरे मियां, जल्दी न करो। अभी ज़रा और देखते हैं। फिर हज़रत हकीम रज़ि० उन दोनों को बाज़ार ले गए। वहां उन्हें दो मोटी ताज़ी, ख़ूब बड़ी और गाभिन ऊंटनियां नज़र आईं। उन्होंने उन दोनों को ख़रीदा और उनका सामान भी ख़रीदा, फिर अपने ग़ुलामों से कहा, जिस सामान की मरम्मत की ज़रूरत हो, उसकी मरम्मत कपड़े के इन टुकड़ों से कर लो। फिर दोनों ऊंटनियों पर खाना, गेहूं और चर्बी

रख दी और उन दोनों देहातियों को ख़र्च भी दिया, फिर उनको वे दोनों ऊंटनियां दे दीं। (जब इतना कुछ हज़रत हकीम रज़ि० ने दिया तो) एक देहाती ने अपने साथी से कहा, मैंने आज इनसे बेहतर (सख़ी) कोई कपड़े के टुकड़े उठाने वाला नहीं देखा।[1]

हज़रत हकीम हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना घर हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ साठ हज़ार में बेचा। लोगों ने हज़रत हकीम रज़ि० से कहा, अल्लाह की क़सम! हज़रत मुआविया रज़ि० ने (सस्ता ख़रीद कर) आपको क़ीमत में नुक़्सान पहुंचाया है। हज़रत हकीम रज़ि० ने कहा, (कोई बात नहीं) अल्लाह की क़सम! मैंने भी यह घर जाहिलियत के ज़माने में सिर्फ़ एक मशक शराब में (सस्ते दामों) ख़रीदा था। (इस हिसाब से तो मुझे बहुत ज़्यादा क़ीमत मिल गई है।) मैं आप लोगों को गवाह बनाता हूं कि इसकी सारी क़ीमत अल्लाह के रास्ते में, मिस्कीनों की मदद में और ग़ुलामों के आज़ाद कराने में ही ख़र्च होगी। अब बताओ हम दोनों में से कौन घाटे में रहा?

और एक रिवायत में यह है कि उन्होंने वह घर एक लाख में बेचा था।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और दूसरे सहाबा किराम रज़ि० का माल ख़र्च करना

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अपनी एक ज़मीन दो सौ ऊंटनियों के बदले में बेची। फिर उनमें से सौ ऊंटनियां अल्लाह के रास्ते में जाने वालों को दे दीं और उनको इस बात का पाबन्द किया कि वे लोग क़ुरा घाटी से गुज़रने से पहले इनमें से कोई भी ऊंटनी न बेचें।[3]

भाग 1 में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिहाद पर और

---

1. मजमउज़्ज़वाइद, भाग 9, पृ० 384,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 384,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 296

माल ख़र्च करने पर उभारने के बाब में गुज़र चुका है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने तबूक की लड़ाई के मौक़े पर एक सौऊक़िया यानी चार हज़ार दिरहम दिए और हज़रत आसिम बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नव्वे वसक़ (लगभग पौने पांच सौ मन) खजूर दी और हज़रत अब्बास, हज़रत तलहा, हज़रत साद बिन उबादा और हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूर सल्ल० को बहुत ज़्यादा मालामाल कर दिया और भाग 1 में गुज़र चुका है कि एक सहाबी ने एक ऊंटनी अल्लाह के रास्ते में दी थी और हज़रत क़ैस बिन सलअ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिहाद में बहुत-सा माल ख़र्च किया था।

हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा और दूसरी सहाबी औरतों का माल ख़र्च करना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (अपनी पवित्र बीवियों से) फ़रमाया कि (मेरे दुनिया से जाने के बाद) तुममें से सबसे जल्दी मुझे वह मिलेगी जिसका हाथ सबसे ज़्यादा लम्बा होगा।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, इसके बाद पाक बीवियां आपस में मुक़ाबला किया करतीं कि किसका हाथ सबसे लम्बा है। (हम तो हाथ की लम्बाई ही समझती रहीं, लेकिन हाथ के लम्बे होने से हुज़ूर सल्ल० की मुराद सख़ावत और ज़्यादा माल ख़र्च करना था, इस वजह से) इसमें सबसे ज़्यादा लम्बे हाथ वाली हज़रत ज़ैनब रज़ि० निकलीं, क्योंकि वह अपने हाथ से काम किया करती थीं और (उसकी आमदनी) सदक़ा कर दिया करती थीं।

दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हम जब अपने में से किसी के घर जमा हो जातीं तो अपने हाथ दीवार के साथ लम्बे करके नापा करती थीं कि किसका हाथ लम्बा है? हम ऐसा ही करती रहीं। यहां तक कि (सबसे पहले) हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ। हज़रत ज़ैनब रज़ि० छोटे क़द की औरत थीं और

हममें सबसे लम्बी नहीं थीं। हज़रत ज़ैनब रज़ि० के सबसे पहले वफ़ात पाने से हमें पता चला कि हाथ की लम्बाई से हुज़ूर सल्ल० की मुराद (ज़्यादा से ज़्यादा) सदक़ा करना है। हज़रत ज़ैनब दस्तकारी और हाथों के हुनर की माहिर थीं। वह खाल रंगा करतीं और खाल सिया करतीं। (सी कर बेच देतीं और उसकी क़ीमत) अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दिया करतीं।[1]

तबरानी की रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत ज़ैनब रज़ि० सूत काता करती थीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फ़ौजों को दे दिया करती थीं। वे लोग उस सूत से सिया करते और अपने सफ़र में दूसरे कामों में लाते।[2]

पहले भाग में यह मज़्मून गुज़र चुका है कि तूबक की लड़ाई की तैयारी में मुसलमानों की मदद के लिए औरतों ने कंगन, बाज़ूबन्द पाज़ेब, बालियां और अंगूठियां भेजीं।

फ़क़ीरों, मिस्कीनों और ज़रूरतमंदों पर ख़र्च करना

हज़रत उमैर बिन सलमा दुवली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दोपहर को एक पेड़ के साए में सो रहे थे। एक देहाती औरत मदीना आई और लोगों को बड़े ग़ौर से देखती रही (कि इनमें से कौन मेरा काम करा सकता है) और देखते-देखते वह हज़रत उमर रज़ि० तक पहुंच गई। (उन्हें देखकर उसे यह इत्मीनान हुआ कि यह आदमी मेरा काम करा देगा।)

उसने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, मैं एक मिस्कीन औरत हूं और मेरे बहुत से बच्चे हैं और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु को (हमारे इलाक़े से) सदक़ों को वसूल करने के लिए भेजा था। (वह सदक़े वसूल करके वापस आ गए) और उन्होंने हमें कुछ न दिया। अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए।

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 314
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 289

आप हमारी उनसे सिफ़ारिश कर दें। (शायद वह आपकी बात मान लें।)

तो हज़रत उमर रज़ि० ने (अपने दरबान) यरफ़ा को पुकारकर कहा, हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा को बुलाकर मेरे पास लाओ।

उस औरत ने कहा, मेरी ज़रूरत के पूरा होने की ज़्यादा बेहतर शक्ल यह है कि आप मेरे साथ उनके पास जाएं। (उस औरत को मालूम नहीं था कि वह जिनसे बात कर रही हैं, वह ख़ुद अमीरुल मोमिनीन हैं)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, (मेरे बुलाने पर) इनशाअल्लाह, वह तुम्हारा काम कर देगा।

हज़रत यरफ़ा ने जाकर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा से कहा, चलें, आपको अमीरुल मोमिनीन बुला रहे हैं।

चुनांचे हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा आए और उन्होंने कहा, अस्सलामु अलैक या अमीरुल मोमिनीन! अब इस औरत को पता चला कि यह अमीरुल मोमिनीन हैं तो वह बहुत शर्मिंदा हुई।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० से फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं तो तुममें से बेहतरीन आदमी के चुनने में कोई कमी नहीं करता। जब अल्लाह तुमसे इस औरत के बारे में पूछेंगे, तो तुम क्या कहोगे? यह सुनकर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ि० की आंखों में आंसू आ गए।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमारे पास भेजा, हमने उनकी तस्दीक़ की और उनकी पैरवी की। अल्लाह हुज़ूर सल्ल० को जो हुक्म देते, हुज़ूर सल्ल० उस पर अमल करते। हुज़ूर सल्ल० सदक़े (वसूल करके) उसके हक़दार मिस्कीनों को दिया करते और हुज़ूर सल्ल० का अमल यों ही चलता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने उनको अपने पास बुला लिया। फिर अल्लाह ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्ल० का ख़लीफ़ा बनाया, तो वह भी हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े ही पर अमल करते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने उनको भी अपने पास बुला लिया। फिर

अल्लाह ने मुझे उनका ख़लीफ़ा बनाया और मैंने तुम में से सबसे बेहतर आदमी चुनने में कभी कोई कमी नहीं की। अब अगर मैं तुम्हें भेजूं तो इस औरत को इस साल का और पिछले साल का इसका हिस्सा (सदक़ों में से) दे देना और मुझे मालमू नहीं, शायद अब मैं तुम्हें (सदक़ों के वसूल करने के लिए) न भेजूं।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उस औरत के लिए एक ऊंट मंगवाया और उस औरत को आटा और तेल दिया और फ़रमाया, यह ले लो। फिर हमारे पास ख़ैबर आ जाना, क्योंकि अब हमारा ख़ैबर जाने का इरादा है।

चुनांचे वह औरत ख़ैबर हज़रत उमर रज़ि० के पास आई और हज़रत उमर रज़ि० ने दो ऊंट और मंगवाए और उस औरत से कहा, यह ले लो। हज़रत मुहम्मद रज़ि० के तुम्हारे यहां आने तक यह तुम्हारे लिए काफ़ी हो जाएंगे और मैंने हज़रत मुहम्मद रज़ि० को हुक्म कर दिया है कि वह तुम्हें तुम्हारा इस साल का और पिछले साल का हिस्सा दे दें।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बाज़ार गया। हज़रत उमर रज़ि० को एक जवान औरत मिली और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरा शौहर मर गया है और उसने अपने पीछे छोटे-छोटे बच्चे छोड़े हैं और कहा, अल्लाह की क़सम ! (फ़क़्र व फ़ाक़ा की वजह से पाए भी नहीं पका सकते। (अरब देश में पाए मुफ़्त मिला करते थे, बिका नहीं करते थे।) न उनके पास कोई खेती है और न कोई दूध का जानवर और मुझे डर है कि अकाल में कहीं वे मर न जाएं और मैं हजरत ख़ुफ़ाफ़ बिन ईमा ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बेटी हूं। मेरे बाप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुदैबिया में शरीक हुए थे।

हज़रत उमर रज़ि० उस औरत के पास खड़े (बातें सुनते) रहे और आगे नहीं गए, फिर फ़रमाया, ख़ुश आमदीद हो, क़रीबी रिश्तेदारी निकल आई। (यानी तुम्हारे क़बीला ग़िफ़ार का हमारे क़बीला क़ुरैश से

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 319,

क़रीबी रिश्ता है, या तुम एक मशहूर सहाबी के ख़ानदान में से हो) फिर हज़रत उमर रज़ि० वहां से घर वापस गए। उनके घर में एक ख़ूब बोझ उठाने वाला ऊंट बंधा हुआ था। दो बोरे ग़ल्ले से भरकर उस पर रख दिए और उन दोनों बोरों के बीच ख़र्चे के पैसे और कपड़े रख दिए और फिर उस ऊंट की नकेल उस औरत को पकड़ा कर कहा, यह ऊंट ले जाओ। इनशाअल्लाह इन चीज़ों के ख़त्म होने से पहले ही अल्लाह तुम्हारे लिए बेहतर इंतिज़ाम फ़रमा देंगे।

एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने इस औरत को बहुत ज़्यादा दिया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तेरी मां तुझे गुम करे। इस औरत का बाप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हुदैबिया में शरीक हुआ था और अल्लाह की क़सम! मैंने इस औरत के बाप और भाई को देखा है कि एक समय तक उन्होंने एक क़िले का घेराव किए रखा, फिर उस क़िले को उन्होंने जीत लिया और हम उसमें से अपने हिस्से ख़ूब वसूल कर रहे हैं। (चूंकि यह बहुत ज़्यादा दीनी फ़ज़ाइल वाले ख़ानदान की औरत है, इस वजह से मैंने उसे ज़्यादा दिया है।[1]

हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़यम जुमही रज़ि० का माल ख़र्च करना

हज़रत हस्सान बिन अतीया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को शाम देश की गवर्नरी से अलग किया तो उनकी जगह हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़यम रज़ियल्लाहु को भेजा। वह अपनी नवजवान बीवी को भी साथ ले गए, जिसका चेहरा बहुत ख़ूबसूरत था और वह क़ुरैश क़बीला की थी।

थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि फ़ाक़ा और सख़्त तंगी का दौर शुरू हो गया। हज़रत उमर रज़ि० को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने उनके पास

1. कंज़, भाग 3, पृ० 147,

एक हज़ार दीनार भेजे। वह हज़ार दीनार लेकर अपनी बीवी के पास घर गए और उससे कहा, तुम जो यह दीनार देख रही हो, यह हज़रत उमर रज़ि० ने भेजे हैं।

उसने कहा, मेरा दिल यह चाहता है कि आप हमारे लिए सालन का सामान और ग़ल्ला ख़रीद लें और बाक़ी दीनार संभाल कर रख लें, आगे काम आएंगे।

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हें इससे बेहतर शक्ल बता दूं कि हम यह माल एक व्यापारी को दे देते हैं जो उससे हमारे लिए व्यापार करता रहे। हम उसका नफ़ा खाते रहें और हमारी उस पूंजी की ज़िम्मेदारी भी उस पर होगी।

उनकी बीवी ने कहा, फिर तो यह ठीक है। चुनांचे उन्होंने सालन का सामान और ग़ल्ला ख़रीदा और दो ऊंट और दो ग़ुलाम ख़रीदे। ग़ुलामों ने उन ऊंटों पर ज़रूरत का सारा सामान इकट्ठा कर लिया और उन्होंने यह सब कुछ मिस्कीनों और ज़रूरतमंदों में बांट दिया।

कुछ ही दिनों के बाद उनकी बीवी ने उनसे कहा, खाने-पीने का सामान ख़त्म हो गया है। आप उस व्यापारी के पास जाएं और जो नफ़ा हुआ है, उसमें से कुछ लेकर हमारे लिए खाने-पीने का सामान ख़रीद लें। हज़रत सईद रज़ि० चुप रहे।

उसने दोबारा कहा, यह फिर चुप रहे। आख़िर उसने तंग आकर उनको सताना शुरू किया। इस पर उन्होंने दिन में घर आना छोड़ दिया, सिर्फ़ रात को घर आते। उनके घरवालों में एक आदमी था जो उनके साथ घर आया करता था। उसने उनकी बीवी से कहा, तुम क्या कर रही हो? तुम उनको बहुत तक्लीफ़ पहुंचा चुकी हो, वह तो सारा माल सदक़ा कर चुके हैं। यह सुनकर हज़रत सईद रज़ि० की बीवी को सारे माल के सदक़ा करने पर इतना अफ़सोस हुआ कि वह रोने लगी।

एक दिन हज़रत सईद रज़ि० अपनी बीवी के पास घर आए और उससे कहा, ऐसे ही आराम से बैठी रहो। मेरे कुछ साथी थे जो थोड़े दिनों पहले मुझसे जुदा हो गए हैं, (इस दुनिया से चले गए हैं) अगर मुझे सारी

दुनिया भी मिल जाए, तो भी मुझे उनका रास्ता छोड़ना पसन्द नहीं है। अगर जन्नत की ख़ूबसूरत हूरों में से एक हूर आसमाने दुनिया से झांक ले, तो सारी ज़मीन उसके नूर से रोशन हो जाए और उसके चेहरे का नूर चांद व सूरज पर ग़ालिब आ जाए और जो दोपट्टा उसे पहनाया जाता है, वह दुनिया और उसकी चीज़ों से ज़्यादा क़ीमती है। अब मेरे लिए यह तो आसान है कि इन हूरों के लिए तुझे छोड़ दूं, लेकिन तेरे लिए उनको नहीं छोड़ सकता। यह सुनकर वह नर्म पड़ गई और राज़ी हो गई।[1]

अबू नुऐम ने ही इस वाक़िए को हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साबित जुमही रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल किया है और उसमें यह मज़्मून है कि जब हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि० को तंख़ाह मिलती तो घरवालों के गुज़ारे का सामान ख़रीद लेते और बाक़ी को सदक़ा कर देते तो उनकी बीवी उनसे कहती, आपकी बाक़ी तंख़ाह कहां है?

वह कहते, मैंने वह क़र्ज़ दे दी है। (उनका यह तरीक़ा देखकर) कुछ लोग उनके पास आए और उनसे उन्होंने कहा, आपके घरवालों का आप पर हक़ है, आपके ससुराल वालों का आप पर हक़ है।

तो हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, मैंने उनके हक़ों के अदा करने में कभी किसी को उन पर तर्जीह नहीं दी है। मैं मोटी आंखों वाली हूरें हासिल करना चाहता हूं, तो मैं किसी भी इंसान को इस तरह ख़ुश करना नहीं चाहता कि उससे हूरों के मिलने में कमी आए या वे न मिल सकें, क्योंकि अगर जन्नत की एक हूर भी झांक ले तो उसकी वजह से सारी ज़मीन चमकने लगेगी जैसे सूरज चमकता है। मैं जन्नत में सबसे पहले जाने वाली जमाअत से पीछे रह जाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हूं, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि—

अल्लाह क़ियामत के दिन तमाम लोगों को हिसाब के लिए जमा फ़रमाएंगे, तो ग़रीब मोमिन जन्नत की ओर ऐसी तेज़ी से जाएंगे जैसे कबूतर अपने घोंसले की ओर तेज़ी से पर फैला कर उतरता है।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 244,

फ़रिश्ते उनसे कहेंगे, ठहरो, हिसाब देकर जाओ।

वे कहेंगे, हमारे पास हिसाब के लिए कुछ है ही नहीं। हमें दिया ही क्या था जिसका हम हिसाब दें।

इस पर उनका रब फ़रमाएगा, मेरे बन्दे ठीक कह रहे हैं। फिर उनके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और वे लोगों से सत्तर साल पहले जन्नत में चले जाएंगे।

इसी दूसरे भाग में इन्हीं हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि० का यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि उन्होंने अपनी बीवी से कहा, क्या तुम इससे बेहतर बात चाहती हो कि हम यह दीनार उसे दे देते हैं जो हमें सख़्त ज़रूरत के वक़्त दे दे?

उनकी बीवी ने कहा, ठीक है। चुनांचे उन्होंने अपने घरवालों में से एक आदमी को बुलाया, जिस पर उन्हें भरोसा था और उन दीनारों को बहुत-सी थैलियों में डालकर उससे कहा, जाकर यह दीनार फ़्लां ख़ानदान की बेवाओं, फ़्लां ख़ानदान के यतीमों, फ़्लां ख़ानदान के मिस्कीनों और फ़्लां ख़ानदान के मुसीबत के मारों को दे आओ, थोड़े से दीनार बच गए तो अपनी बीवी से कहा, लो यह ख़र्च कर लो। फिर अपनी गवर्नरी के काम में लग गए।

कुछ दिनों के बाद उनकी बीवी ने कहा, क्या आप हमारे लिए कोई ख़ादिम नहीं ख़रीद लेते? उस माल का क्या हुआ?

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, यह माल तुम्हें सख़्त ज़रूरत के वक़्त मिलेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल ख़र्च करना

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बीमार हो गए। उनके लिए एक दिरहम में अंगूर का एक ख़ोशा ख़रीदा गया। (जब वह ख़ोशा

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 245,

उनके सामने रखा गया तो) तो उस वक़्त एक मिस्कीन ने आकर सवाल किया (यानी मांगा)। उन्होंने कहा, यह ख़ोशा इसे दे दो।

(घरवालों ने वह ख़ोशा उस मिस्कीन को दे दिया, वह लेकर चल दिया) घर के एक आदमी ने जाकर उस मिस्कीन से वह ख़ोशा एक दिरहम में ख़रीद लिया (क्योंकि बाज़ार में उस वक़्त अंगूर नहीं मिल रहा था। इसलिए उससे ख़रीदा) और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की ख़िदमत में पेश किया।

उस मिस्कीन ने आकर फिर सवाल किया (यानी मांगा)। आपने फ़रमाया, यह उसे दे दो। (घरवालों ने उसे दे दिया, वह लेकर चल दिया।) घर के एक आदमी ने जाकर उस मिस्कीन से वह ख़ोशा फिर एक दिरहम में ख़रीद लिया और लाकर फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की ख़िदमत में पेश कर दिया।

उस मिस्कीन ने आकर फिर सवाल किया। आपने फ़रमाया, यह उसे दे दो। (घरवालों ने उसे दे दिया, वह लेकर चल दिया।) फिर घर के एक आदमी ने जाकर उस मिस्कीन से वह ख़ोशा एक दिरहम में ख़रीद लिया (और लाकर उनकी ख़िदमत में पेश कर दिया।)

उस मिस्कीन ने फिर वापस आकर मांगने का इरादा किया, तो घरवालों ने उसे रोक दिया, लेकिन अगर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को मालूम हो जाता कि वह ख़ोशा उस मिस्कीन से ख़रीदा गया है और उसे सवाल करने से भी रोका गया है, तो वह उसे बिल्कुल न चखते।[1]

अबू नुऐम ने ही यह क़िस्सा एक और सनद से नक़ल किया है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक बार बीमार हुए, उनका अंगूर खाने को दिल चाहा। मैंने उनके लिए अंगूर का एक ख़ोशा एक दिरहम में ख़रीदा और लाकर मैंने वह ख़ोशा उनके हाथ में दे दिया।

आगे हदीस का मज़्मून पिछली हदीस की तरह है और उसके आख़िर में यह है कि वह मांगने वाला बार-बार आता और वह हर बार

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 297,

उसे ख़ोशा देने का हुक्म फ़रमा देते (और हम उसे दे देते और फिर उससे ख़रीदकर ले आते) यहां तक कि मैंने मांगने वाले को तीसरी या चौथी बार में कहा, तेरा नास हो। तुझे शर्म नहीं आती। (हर बार वापस आकर फिर मांग लेता है)

चुनांचे मैंने उससे एक दिरहम में ख़रीदकर उनकी ख़िदमत में पेश कर दिया (और वह मांगने वाला मना कर देने पर उस बार न आया) तो आख़िर उन्होंने वह ख़ोशा खा लिया।[1]

हज़रत उस्मान बिन अबिलआस रज़ियल्लाहु अन्हु का माल ख़र्च करना

हज़रत अबू नज़रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं ज़िलहिज्जा के पहले दहे में हज़रत उस्मान बिन अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उन्होंने एक कमरा (मेहमानों से) बात-चीत के लिए ख़ाली रखा हुआ था। एक आदमी उनके पास से मेंढा लेकर गुज़रा। उन्होंने मेंढे वाले से पूछा कि तुमने यह मेंढा कितने में ख़रीदा है?

उसने कहा, बारह दिरहम में। मैंने (दिल में) कहा, काश, कि मेरे पास भी बारह दिरहम होते तो मैं भी एक मेंढा ख़रीदकर (ईद पर) क़ुरबान करता और अपने बाल-बच्चों को खिलाता। जब मैं उनके पास से खड़ा होकर अपने घर आया, तो उन्होंने मेरे पीछे एक थैली भेजी, जिसमें पचास दिरहम थे। मैंने उनसे ज़्यादा बरकत वाले दिरहम कभी नहीं देखे। उन्होंने मुझे वे दिरहम सवाब की नीयत से दिए और मुझे उन दिनों इन दिरहमों की बहुत ज़्यादा ज़रूरत थी।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का माल ख़र्च करना

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि ने मुअत्ता में नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 248, मज्मा, भाग 9, पृ० 347, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 117,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 371,

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रोज़ा रखा हुआ था, उनसे एक मिस्कीन ने सवाल किया। उनके घर में सिर्फ़ एक रोटी थी। उन्होंने अपनी बांदी से कहा, यह रोटी उस मिस्कीन को दे दो।

बांदी ने उनसे कहा,'(इस रोटी के अलावा) आपकी इफ़्तारी के लिए और कुछ नहीं है।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, (कोई बात नहीं) तुम फिर भी उसे यह रोटी दे दो। चुनांचे बांदी कहती है कि मैंने उस मिस्कीन को वह रोटी दे दी। जब शाम हुई तो एक ऐसे घरवाले ने या एक ऐसे आदमी ने, जोकि हमें हदिया नहीं दिया करता था, हमें एक (पकी हुई) बकरी और उसके साथ बहुत-सी रोटियां हदिए में भेजीं।

हज़रत आइशा रज़ि० ने मुझे बुलाकर फ़रमाया, इसमें से खाओ, यह तुम्हारी (रोटी की) टिकिया से बेहतर है।[1]

इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि एक मिस्कीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से खाना मांगा। हज़रत आइशा रज़ि० के सामने अंगूर रखे हुए थे। उन्होंने एक आदमी से कहा, अंगूर का एक दाना लेकर इसे दे दो।

वह हज़रत आइशा रज़ि० की तरफ़ (या उस दाने की तरफ़) ताज्जुब से देखने लगा, तो हज़रत आइशा (रज़ि०) ने कहा, क्या तुम्हें ताज्जुब हो रहा है? इस दाने में तुम्हें कितने ज़र्रे नज़र आ रहे हैं? (यह फ़रमाकर उन्होंने इस आयत की तरफ़ इशारा फ़रमाया है—

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ

'सो जो आदमी दुनिया में ज़र्रा बराबर नेकी करेगा, वह वहां उसको देख लेगा।'

अपने हाथ से मिस्कीन को देना

हज़रत उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हारिसा बिन

1. मुअत्ता, पृ० 390

नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीनाई (आंख की रोशनी) जा चुकी है। उन्होंने अपनी नमाज़ की जगह से लेकर अपने कमरे के दरवाज़े तक एक रस्सी बांध रखी थी। जब दरवाज़े पर कोई मिस्कीन आता, तो अपने टोकरे में से कुछ लेते और रस्सी को पकड़कर (दरवाज़े तक जाते और) ख़ुद अपने हाथ से उस मिस्कीन को देते। घरवाले उनसे कहते, आपकी जगह हम जाकर मिस्कीन को दे आते हैं।

वह फ़रमाते हैं, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि मिस्कीन को अपने हाथ से देना बुरी मौत से बचाता है ?[1]

हज़रत अम्र लैसी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थे। उनके पास एक मांगने वाला आया। उन्होंने रोटी का एक टुकड़ा लिया, उस पर एक पैसा रखा और ख़ुद जाकर रोटी का वह टुकड़ा उसके हाथ पर रखा। मैंने उनसे कहा, ऐ अबुल असक़अ ! क्या आपके घर में कोई ऐसा आदमी नहीं है जो आपकी जगह यह काम कर दे ?

उन्होंने कहा, आदमी तो है, लेकिन जब कोई आदमी मिस्कीन को सदक़ा देने के लिए चलकर जाए तो उसके हर क़दम के बदले में एक गुनाह माफ़ कर दिया जाता है और जब जाकर वह चीज़ उस मिस्कीन के हाथ में रख दे तो हर क़दम के बदले में दस गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रोज़ाना रात को अपने घरवालों को जमा करते और सब उनके बड़े प्याले में से खाते (खाने के दौरान) कभी-कभी वह किसी मिस्कीन की आवाज़ सुनते तो अपने हिस्से का गोश्त और रोटी जाकर उसे दे देते। जितनी देर में वह मिस्कीन को लेकर वापस आते तो इतनी देर में घरवाले प्याला ख़त्म कर चुके होते, अगर मुझे इस प्याले में कुछ

---

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 299, हुलीया, भाग 1, पृ० 356, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 52
2. कंज़, भाग 3, पृ० 315,

मिल जाता तो उनको भी मिल जाता। फिर इसी हाल में हज़रत इब्ने उमर रज़ि० सुबह रोज़ा रख लेते।[1]

मांगने वालों पर माल ख़र्च करना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए। आपके ऊपर नजरान (यमन का एक शहर) की बनी हुई एक चादर थी, जिसका किनारा मोटा था। आपके पीछे से एक देहाती आया। उसने आपकी चादर का किनारा पकड़कर इस ज़ोर से खींचा कि आपकी मुबारक गरदन पर उस मोटे किनारे का निशान पड़ गया और उसने कहा, ऐ मुहम्मद सल्ल० ! अल्लाह का जो माल आपके पास है, उसमें से हमें भी दो।

हुज़ूर सल्ल० उसकी ओर देखते हुए मुस्कराए और फ़रमाया, इसे कुछ ज़रूर दो।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सुबह को मस्जिद में बैठे रहते थे। जब हुज़ूर सल्ल० घर जाने के लिए खड़े होते तो हम लोग आपके घर दाख़िल होने तक खड़े रहते।

चुनांचे एक दिन हुज़ूर सल्ल० घर जाने के लिए खड़े हुए। जब आप मस्जिद के दर्मियान में पहुंचे तो एक देहाती आपके पास पहुंचा और उसने इस ज़ोर से आपकी चादर खींची कि आपकी मुबारक गरदन लाल हो गई और उसने कहा, ऐ मुहम्मद ! मुझे दो ऊंट दें, क्योंकि ये दो ऊंट न तो आप अपने माल में से देंगे और न अपने बाप के माल में से।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, मैं तो अल्लाह की मग़फ़िरत चाहता हूं, जब तक तुम मुझे उसका बदला नहीं दोगे, मैं तुम्हें ऊंट नहीं दूंगा। यह बात हुज़ूर सल्ल० ने तीन बार फ़रमाई। (फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसे माफ़ कर दिया, बल्कि उसके साथ अच्छा व्यवहार भी फ़रमाया) और फिर एक

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 122,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 43,

आदमी को बुलाकर कहा, इसे दो ऊंट दे दो। एक ऊंट जौ का, दूसरा खजूर का।[1]

हज़रत नोमान बिन मुक़रिन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम क़बीला मुज़ैना के चार सौ आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने हमें अपने दीन के हुक्म बताए (जब हम हुज़ूर सल्ल० से फ़ारिग़ होकर वापस जाने लगे, तो) एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! रास्ते के लिए हमारे पास कोई चीज़ नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, इन्हें रास्ते के लिए तोशा दे दो।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरे पास तो बस थोड़ी-सी बची हुई खजूरें हैं। मेरे ख़्याल में तो वे खजूरें उनकी कुछ भी ज़रूरत पूरी नहीं कर सकेंगी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ और इन्हें रास्ते के लिए तोशा दे दो। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० हमें एक बालाख़ाने में ले गए। वहां एक ख़ाकी जवान ऊंट जितनी खजूरें रखी हुई थीं (यानी बैठे हुए एक ऊंट जितनी खजूरों का एक ढेर था।) हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप लोग ये खजूरें ले लें।

हमारे तमाम क़ाफ़िले वालों ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ खजूरें ले लीं और मैं सबसे आख़िर में लेने गया। मैंने देखा तो नज़र आया कि (खजूरें शुरू में जितनी थीं, अब भी उतनी ही हैं) उनमें से एक खजूर भी कम न हुई थी, हालांकि उस ढेर में से चार सौ आदमी खजूरें ले चुके थे। (यह हुज़ूर सल्ल० के फ़रमान की बरकत थी।)[2]

हज़रत दुकैन बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम चार सौ चालीस आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास (सफ़र के लिए) खाने की कोई चीज़ मांगने गए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 47, बिदाया, भाग 6, पृ० 38
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 304,

रज़ि० को फ़रमाया, जाओ और उन्हें सफ़र के लिए कुछ दो।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरे पास तो सिर्फ़ इतना है जिससे मेरे और मेरे बच्चों के गर्मी के चार महीने गुज़र सकें। (इससे उनका काम नहीं चल सकेगा)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, जाओ और जो है उन्हें दे दो।

हज़रत उमर रजि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बहुत अच्छा, जैसे आप फ़रमाएं। मैं तो आपकी हर बात सुनूंगा और मानूंगा।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० वहां से खड़े हुए और हम भी उनके साथ खड़े हुए। हज़रत उमर रज़ि० हमें ऊपर अपने एक बालाख़ाने में ले गए और अपने नेफ़े में से चाबी निकालकर बालाख़ाने का दरवाज़ा खोला तो बालाख़ाने में बैठे हुए ऊंट के बच्चे के बराबर खजूरों का एक ढेर था। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप लोग इसमें से जितना चाहें ले लें।

चुनांचे हममें से हर आदमी ने अपनी ज़रूरत के लिए खजूरें अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ लीं। मैं सबसे आख़िर में लेने गया, तो मैंने देखा कि ऐसा लग रहा था कि जैसे हमने उस ढेर में से एक खजूर न ली हो।[1]

हज़रत दुकैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम चार सौ सवार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास खाने की कोई चीज़ मांगने आए। फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और उस हदीस में यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, मेरे पास तो सिर्फ़ कुछ साअ खजूरें हैं जो शायद मुझे और मेरे बाल-बच्चों को गर्मियों के लिए काफ़ी न हों। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, अरे, हुज़ूर सल्ल० की बात सुनो और मानो। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं हुज़ूर सल्ल० की बात सुनता और मानता हूं।[2]

हज़रत अफ़लह बिन कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा किसी भी मांगने वाले को वापस नहीं किया करते थे, यहां तक कि कोढ़ी आदमी भी उनके साथ उनके प्याले में

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 304,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 365,

खाना खाता था और उसकी उंगलियों में से ख़ून टपक रहा होता था।[1]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का सदक़ा करना

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अपना सदक़ा लाए और चुपके से हुज़ूर सल्ल० को दिया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह मेरी ओर से सदक़ा है और आगे जब भी अल्लाह मांग करेंगे, मैं ज़रूर सदक़ा करूंगा।

फिर हज़रत उमर रज़ि० अपना सदक़ा लाए और लोगों के सामने ज़ाहिर करके हुज़ूर सल्ल० को दिया और अर्ज़ किया, यह मेरी तरफ़ से सदक़ा है और मुझे अल्लाह के यहां लौटकर जाना है। (मैं वहां अल्लाह से इसका बदला ले लूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने अपनी कमान में तांत के अलावा कुछ और लगा दिया। (यानी तुम अबूबक्र रज़ि० के पीछे रह गए कि उनका जज़्बा अल्लाह को और देने का है और तुम्हारा जज़्बा अल्लाह से बदला लेने का है। अबूबक्र रज़ि० का जज़्बा आला व अफ़ज़ल है।) जो तुम दोनों के बोलों में फ़र्क़ है, वही तुम दोनों के सदक़ों में फ़र्क़ है। (क़ुबूल तो दोनों हुए, लेकिन अबूबक्र रज़ि० का सदक़ा ज़्यादा इख़्लास और क़ुर्बानी वाला है कि उनकी तवज्जोह अल्लाह को और देने की तरफ़ है।)[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कौन है जो बेरे रूमा (मदीने के एक कुंएं का नाम) ख़रीदकर मुसलमानों के लिए सदक़ा कर दे? क़ियामत के दिन सख़्त प्यास के वक़्त अल्लाह उसको पानी पिलाएंगे। चुनांचे यह फ़ज़ीलत सुनकर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह कुंवां ख़रीदकर मुसलमानों के लिए सदक़ा कर दिया।[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 300,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 32, मुंतख़ब, भाग 4. पृ० 348
3. इब्ने अदी व इब्ने असाकिर

हज़रत बशीर अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब मुहाजिर मदीना आए तो उनको यहां का पानी मुवाफ़िक़ न आया। बनू ग़िफ़ार के एक आदमी का कुंवां था, जिसका नाम रूमा था। वह उस कुंएं के पानी की एक मशक एक मुद (लगभग 14 छटांक) में बेचता था। हुज़ूर सल्ल० ने उस कुंएं वाले से फ़रमाया, तुम मेरे हाथ यह कुंवां बेच दो। तुम्हें इसके बदले में जन्नत में एक चश्मा मिलेगा।

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे और मेरे बाल-बच्चों के लिए इसके अलावा आमदनी का और कोई ज़रिया नहीं है, इसलिए मैं नहीं दे सकता। यह बात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची, तो उन्होंने वह कुंवां पैंतीस हज़ार दिहरम में ख़रीद लिया, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जैसे आपने उससे जन्नत के चश्मे का वायदा फ़रमाया, तो क्या अगर मैं उस कुंएं को ख़रीद लूं, तो मुझे भी जन्नत में वह चश्मा मिलेगा ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां बिल्कुल मिलेगा।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने वह कुंवां ख़रीदकर मुसलमानों के लिए सदक़ा कर दिया है ?[1]

हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हजरत सोदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक लाख दिरहम सदक़ा किए। फिर उस दिन उनको मस्जिद में जाने से सिर्फ़ इस वजह से देर हो गई कि मैंने उनके कपड़े के दोनों किनारों को मिलाकर सिया (लाख दिरहम सब दूसरों को दे दिए, अपने पर कुछ न लगाया)[2]

और पीछे गुज़र चुका है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अपना आधा माल चार हज़ार (दिरहम) सदक़ा किए, फिर चालीस हज़ार सदक़ा किए, फिर चालीस हज़ार दीनार सदक़ा किए।

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 11,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 88.

हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब अल्लाह ने मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमाई (उनसे ग़ज़्वा बनू क़ुरैज़ा या ग़ज़्वा तबूक के वक़्त ग़लती हो गई थी) तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपनी क़ौम का वह घर छोड़ना चाहता हूं जिसमें मुझसे यह गुनाह हुआ है और मैं अपना सारा माल अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए सदक़ा करना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू लुबाबा ! तिहाई माल का सदक़ा तुम्हारे लिए काफ़ी है। चुनांचे मैंने तिहाई माल सदक़ा कर दिया।[1]

हज़रत नोमान बिन हुमैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अपने मामूं के साथ मदाइन शहर में हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया। वह खजूर के पत्तों से कुछ बना रहे थे। मैंने उनको यह फ़रमाते हुए सुना कि मैं एक दिरहम के खजूर के पत्ते ख़रीदता हूं, फिर उनका कुछ बनाकर तीन दिरहम में बेच देता हूं और फिर एक दिरहम के दोबारा पत्ते ख़रीदता हूं और एक दिरहम अपने बाल-बच्चों पर ख़र्च कर देता हूं और एक दिरहम सदक़ा कर देता हूं। अगर (अमीरुल मोमिनीन) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु भी मुझे इससे रोकेंगे, तो मैं नहीं रुकूंगा। (हज़रत सलमान हज़रत उमर रज़ि० की ओर से मदाइन के गवर्नर थे)[2]

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का हदिया देना

हज़रत अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक ग़ज़्वे में थे। लोगों को (सख़्त भूख की) मशक़्क़त उठानी पड़ी, (जिसकी वजह से) मैंने मुसलमानों के चेहरों पर ग़म और परेशानी के निशान और मुनाफ़िक़ों के चेहरों पर ख़ुशी की निशानियां देखीं।

जब हुज़ूर सल्ल० ने भी यह बात देखी, तो आपने फ़रमाया, अल्लाह

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 632
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 64,

की क़सम ! सूरज डूबने से पहले ही अल्लाह आप लोगों के लिए रोज़ी भेज देंगे।

जब हज़रत उस्मान रज़ि० ने यह सुना तो उन्हें यक़ीन हो गया कि अल्लाह और रसूल सल्ल० की बात ज़रूर पूरी होगी, चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने चौदह ऊंटनियां खाने से लदी हुई ख़रीदीं और उनमें से नौ ऊंटनियां हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेज दीं। जब हुज़ूर सल्ल० ने ये ऊंटनियां देखीं तो फ़रमाया, यह क्या है?

अर्ज़ किया गया, यह हज़रत उस्मान रज़ि० ने आपको हदिए में भेजी हैं।

इस पर हुज़ूर सल्ल० इतने ज़्यादा ख़ुश हुए कि ख़ुशी के निशान आपके चेहरे पर महसूस होने लगे और मुनाफ़िक़ों के चेहरों पर ग़म और परेशानी के निशान ज़ाहिर होने लगे। मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा कि आपने दुआ के लिए हाथ इतने ऊपर उठाए कि आपके बग़लों की सफ़ेदी नज़र आने लगी और हज़रत उस्मान रज़ि० के लिए ऐसी ज़बरदस्त दुआ की कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को न इससे पहले और न इसके बाद किसी के लिए ऐसी दुआ करते हुए सुना—

'ऐ अल्लाह ! उस्मान रज़ि० को (यह और यह) अता फ़रमा और उस्मान रज़ि० के साथ (ऐसा और ऐसा) मामला फ़रमा।'[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं एक महीना या एक हफ़्ता या जितना अल्लाह चाहें, उस वक़्त तक मुसलमानों के किसी एक घराने की ज़िंदगी की ज़रूरतें पूरी करूं यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं हज पर हज करूं और एक, वानिक़ (यानी दिरहम के छठे हिस्से) का तबाक़ (ख़रीद कर) अल्लाह की निस्बत पर ताल्लुक़ रखने वाले अपने भाई को हदिया कर दूं, वह मुझे एक दीनार अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से ज़्यादा पसन्द है, (हालांकि एक दीनार एक वानिक़ से बहुत ज़्यादा होता है।)[2]

---

1 हैसमी, भाग 1, पृ० 328,

2 हुलीया, भाग 1, पृ० 328,

खाना खिलाना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अपने कुछ साथियों को एक साअ खाने पर जमा कर लूं, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि बाज़ार जाऊं और एक ग़ुलाम ख़रीदकर आज़ाद कर दूं, (हालांकि एक ग़ुलाम की क़ीमत एक साअ खाने से बहुत ज़्यादा है।)[1]

हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ऐमन अपने बाप हज़रत ऐमन रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां कुछ मेहमान आए। हज़रत जाबिर उनके लिए रोटी और सिरका लेकर आए और फ़रमाया खाओ, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि सिरका बेहतरीन सालन है। मेहमानों के सामने जो कुछ पेश किया जाए, वे उसे हक़ीर समझें, इससे वे मेहमान तबाह व बर्बाद हो जाएंगे और मेज़बान घर में जो कुछ है, उसे मेहमानों के सामने पेश करने में हक़ारत समझे, तो इससे यह मेज़बान तबाह व बर्बाद हो जाएगा।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार बीमार हुए, तो कुछ लोग उनकी बीमारपुर्सी के लिए आए। उन्होंने (अपनी बांदी से) कहा, ऐ बांदी ! हमारे साथियों के लिए कुछ लाओ, चाहे रोटी के टुकड़े ही हों, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अच्छे अख़्लाक़ जन्नत के कामों में से हैं।[3]

हज़रत शक़ीक़ बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं और मेरा एक साथी हम दोनों हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए। उन्होंने फ़रमाया, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मेहमान के लिए खाने में) तकल्लुफ़ करने से मना न किया होता, तो मैं आप लोगों के लिए ज़रूर तकल्लुफ़ करता और फिर रोटी और नमक ले

1. कंज़, भाग 5, पृ० 65
2. कंज़, भाग 5, पृ० 66, हैसमी, भाग 8, पृ० 180
3. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 152, हैसमी, भाग 8, पृ० 177, इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 438

आए (घर में और कुछ था भी नहीं)।

मेरे साथी ने कहा, अगर नमक के साथ पोदीना हो जाए (तो बेहतर है)।

(चूंकि हज़रत सलमान रज़ि० के पास पोदीना ख़रीदने के लिए भी पैसे नहीं थे, इसलिए) उन्होंने अपना लोटा भेजकर गिरवी रखवाया और इसके बदले में पोदीना लेकर आए। जब हम खाना खा चुके, तो मेरे साथी ने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमें दी हुई रोज़ी पर क़नाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

यह सुनकर हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, अगर दी हुई रोज़ी पर क़नाअत करते, तो मेरा लोटा गिरवी रखा हुआ न होता।[1]

तबरानी की एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इस बात से मना फ़रमाया, कि हम मेहमान के लिए उस चीज़ का तकल्लुफ़ करें जो हमारे पास न हो।

हज़रत हमज़ा बिन सुहैब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु (लोगों को) बहुत ज़्यादा खाना खिलाया करते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया, ऐ सुहैब! तुम बहुत ज़्यादा खाना खिलाते हो, हालांकि यह माल की फ़िज़ूलख़र्ची है।

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे, तुममें से बेहतरीन आमदी वह है जो खाना खिलाए और सलाम का जवाब दे। हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान की वजह से मैं लोगों को ख़ूब खाना खिलाता हूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का खाना खिलाना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं एक बार घर में बैठा हुआ था, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास से गुज़रे, तो आपने मुझे इशारा किया, मैं उठकर आपके पास चला गया। आपने मेरा हाथ पकड़ लिया, फिर हम दोनों चलने लगे, यहां तक कि आप अपनी एक मोहतरम बीवी के हुजरे तक पहुंच गए और ख़ुद हुजरे में तशरीफ़ ले

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 179,

गए और फिर मुझे अन्दर आने की इजाज़त दी। मैं अन्दर परदे वाले हिस्से में दाख़िल हो गया।

(देखने में तो हुज़ूर सल्ल० की मोहतरम बीवी उनसे परदे में थीं और यह हुजरे के उस परदे वाले हिस्से में चले गए थे, जहां आम लोग इजाज़त से ही अन्दर आ सकते थे) फिर आपने फ़रमाया, दोपहर का खाना है?

घरवालों ने कहा, हां है। चुनांचे रोटी की तीन टिकियां आपके पास लाई गईं, जिनको (एक ऊंची जगह पर या) खजूर के पत्तों के दस्तरख़्वान पर रख दिया गया। हुज़ूर सल्ल० ने एक टिकिया उठाकर अपने सामने रख ली और दूसरी टिकिया उठाकर मेरे सामने रख दी, फिर तीसरी टिकिया उठाकर उसके दो हिस्से किए और फिर आधी टिकिया अपने सामने रखी और आधी मेरे सामने।

फिर (घरवालों से) फ़रमाया, कोई सालन है?

तो घरवालों ने कहा और तो कुछ है नहीं, बस थोड़ा-सा सिरका है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यही सिरका ले आओ, क्योंकि सिरका तो बेहतरीन सालन है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऊंटनी लेकर आ रहे हैं, जिस पर आटा, घी और शहद है। आपने फ़रमाया, ऊंटनी को बिठाओ।

चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० ने ऊंटनी बिठा दी। फिर आपने पत्थर की एक हांडी मंगवाई और उसमें कुछ घी, शहद और आटा डाला। फिर आपने हुक्म दिया तो उसके नीचे आग जलाई गई, यहां तक कि वह पक गया। फिर आपने (सहाबा रज़ि० से) फ़रमाया, खाओ, और आपने ख़ुद भी उसमें से खाया, फिर आपने फ़रमाया, इसे फ़ारस वाले ख़बीस कहते हैं।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इतना बड़ा प्याला था, जिसे

---

1. मुस्लिम, भाग 1, पृ० 182, जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 295,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 297, हैसमी, भाग 5, पृ० 38,

चार आदमी उठाते थे और उसको ग़र्रा कहा जाता था। जब चाश्त का वक़्त हो जाता और सहाबा किराम चाश्त की नमाज़ पढ़ लेते तो वह प्याला लाया जाता, उसमें सरीद बनी हुई होती, सब उस पर जमा हो जाते। जब लोग ज़्यादा हो जाते तो हुज़ूर सल्ल० घुटनों के बल बैठ जाते। (चुनांचे एक बार आप घुटनों के बल बैठे, तो) एक देहाती ने कहा, यह कैसा बैठना है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे मुतवाज़े, ग़ुलाम और सख़ी आदमी बनाया है, (और इस तरह बैठना तवाज़ो के ज़्यादा क़रीब है) और मुझे घमंडी और जान-बूझ कर हक़ से ज़िद रखने वाला नहीं बनाया।

फिर आपने फ़रमाया, प्याले के किनारों से खाओ, दर्मियान को छोड़ दो, इस पर बरकत नाज़िल होती है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हमारे यहां कुछ मेहमान आए। मेरे बाप रात देर तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें करते रहते थे। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में चले गए और जाते वक़्त कह गए, ऐ अब्दुर्रहमान! अपने मेहमानों को खाना वग़ैरह खिलाकर फ़ारिग़ हो जाना (और मेरा इन्तिज़ार न करना)।

जब शाम हो गई, तो हम मेहमानों के लिए खाना ले आए। उन्होंने खाने से इंकार कर दिया और कहा, जब तक घर के मालिक यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि० आकर हमारे साथ खाना न खाएं (उस वक़्त तक हम भी नहीं खाएंगे)।

मैंने कहा, वह बहुत ग़ुस्से वाले आदमी हैं। अगर आप लोग नहीं खाएंगे, तो मुझे ख़तरा है कि वह मुझसे सख़्त नाराज़ होंगे। वे लोग फिर भी न माने।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० आए तो सबसे पहले उन्होंने मेहमानों के बारे में पूछा कि क्या आप लोग अपने मेहमानों से फ़ारिग़ हो चुके हैं?

घरवालों ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! हम तो उनसे अभी

1. मिश्कात, पृ० 361,

फ़ारिग़ नहीं हुए हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या मैंने अब्दुर्रहमान को नहीं कहा था (कि मेहमानों से फ़ारिग़ हो जाना)? इस पर मैं उनसे छिप गया।

उन्होंने कहा, 'ऐ अब्दुर्रहमान !' मैं और ज़्यादा छिप गया।

उन्होंने कहा, ऐ ग़ुनसर! यानी ऐ बेवक़ूफ़! मैं तुम्हें क़सम देकर कहता हूं कि अगर तुम मेरी आवाज़ सुन रहे हो, तो ज़रूर मेरे पास आओ। चुनांचे मैं आ गया और मैंने कहा, मेरा कोई क़ुसूर नहीं है। यह आपके मेहमान हैं, आप इनसे पूछ लें। मैं इनके पास खाना लेकर गया था, लेकिन इन्होंने इंकार कर दिया कि जब तक आप नहीं आ जाते, वह खाना नहीं खाते।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन मेहमानों से कहा, आप लोगों को क्या हुआ, आप लोग हमारी मेहमानी क्यों नहीं क़ुबूल करते? अल्लाह की क़सम! आज रात मैं खाना नहीं खाऊंगा। (ग़ुस्से में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने क़सम खा ली)।

इस पर मेहमानों ने कहा, अल्लाह की क़सम! जब तक आप खाना नहीं खाएंगे, हम भी खाना नहीं खाएंगे। (मेहमानों ने भी क़सम खा ली।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, आज रात जैसा शर तो मैंने कभी नहीं देखा, आप लोगों का भला हो। आप लोगों को क्या हो गया है कि आप लोग हमारी मेहमानी क़ुबूल नहीं करते हैं?

फिर (जब ग़ुस्सा ठंडा हुआ तो) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, पहली क़सम, यानी मेरी क़सम तो शैतान की तरफ़ से थी, आओ अपनी मेहमानी खाओ। चुनांचे खाना लाया गया और आपने बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरू किया तो मेहमानों ने भी खा लिया।

जब सुबह हुई तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे मेहमानों की क़सम तो पूरी हो गई है, लेकिन मेरी क़सम न पूरी हो सकी और रात का सारा वाक़िया हुज़ूर सल्ल० को बताया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बल्कि तुम उनसे ज़्यादा क़सम पूरी करने

वाले हो और उनसे ज़्यादा अच्छे हो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मुझ तक यह बात नहीं पहुंची कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (क़सम न पूरी होने का) कफ़्फ़ारा दिया या नहीं। (हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कफ़्फ़ारा ज़रूर दिया होगा, क्योंकि इस शक्ल में कफ़्फ़ारा ज़रूरी हो जाता है, तमाम विद्वानों की यही राय है।)[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत असलम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, सवारी और माल ढोने वाले ऊंटों में एक अंधी ऊंटनी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह ऊंटनी किसी को दे दो, वह उससे फ़ायदा उठाता रहेगा।

मैंने कहा, वह तो अंधी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, वह उसे ऊंटों के क़तार में बांध लेंगे, (उनके साथ फिरती रहेगी।)

मैंने कहा, वह ज़मीन से (घास वग़ैरह) कैसे खाएगी?

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, वह जिज़या के जानवरों में से है या सदक़ा के? (यह इस वजह से पूछा कि जिज़या का जानवर मालदार और फ़क़ीर दोनों खा सकते हैं और सदक़ा का जानवर सिर्फ़ फ़क़ीर ही खा सकता है।)

मैंने कहा, नहीं, वह तो जिज़या के जानवरों में से है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! आप लोगों ने तो उसे खाने का इरादा कर रखा है।

मैंने कहा, (मैं ऐसे नहीं कह रहा हूं, बल्कि) इस पर जिज़्या के जानवरों की निशानी लगी हुई है। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 186,

ज़िब्ह करने का हुक्म दिया। चुनांचे उसे ज़िब्ह किया गया। हज़रत उमर रज़ि० के पास नौ चौड़े प्याले थे (हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियां चूंकि नौ थीं, इस वजह से उनकी तायदाद के मुताबिक़ प्याले भी नौ बना रखे थे, ताकि उन सबको चीज़ हदिया में भेजी जा सके) जब भी हज़रत उमर रज़ि० के पास कोई फल या कोई नादिर और पसन्दीदा मेवा आता, तो उसे उन प्यालों में डालकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के पास भेज देते और अपनी बेटी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास सबसे आख़िर में भेजते, ताकि अगर कमी आए, तो हज़रत हफ़सा रज़ि० के हिस्से में आए।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उस ऊंटनी का गोश्त इन प्यालों में डाला और फिर हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियों के पास भेज दिया और ऊंटनी का जो गोश्त बच गया, उसे पकाने का हुक्म दे दिया।

जब वह पक गया तो मुहाजिर और अंसार सहाबा किराम रज़ि० को बुलाकर उन्हें खिला दिया।[1]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत सलमा बिन अक्वअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहाड़ के किनारे एक कुंवां खरीदा और (उसकी ख़ुशी में) लोगों को खाना खिलाया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ तलहा! तुम बड़े फ़ैयाज़ और बहुत सख़ी आदमी हो।[2]

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत जाफ़र

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 296
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 67

बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ग़रीबों-मिस्कीनों के हक़ में सबसे अच्छे आदमी थे। वह हमें (अपने घर) ले जाते और जो कुछ घर में होता, वह हमें खिला देते, यहां तक कि कभी-कभी तो घी की ख़ाली कुप्पी हमारे पास ले आते जिसमें कुछ भी न होता, वह उसे झाड़ देते और जो कुछ उसमें होता, उसे हम चाट लेते।[1]

हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कुछ खाना तैयार किया। मैं आपके पास आया। आप कुछ लोगों में बैठे हुए थे। मैं आपके सामने जाकर खड़ा हो गया और मैंने आपको इशारा किया (कि खाने के लिए तशरीफ़ ले चलें) तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इशारा करके पूछा कि ये लोग भी (खाने के लिए साथ चलें ?) मैंने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश हो गए। मैं अपनी जगह खड़ा रहा।

हुज़ूर सल्ल० ने जब दोबारा मुझे देखा तो मैंने हुज़ूर सल्ल० से इशारा किया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, और ये लोग भी? मैंने कहा, नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने इस तरह दो या तीन बार फ़रमाया, तो मैंने कहा, अच्छा, ये लोग भी (आ जाएं)। वह थोड़ा-सा खाना था, जिसे मैंने हुज़ूर सल्ल० के लिए तैयार किया था, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० भी तशरीफ़ लाए और आपके साथ वे लोग भी आए और उन सब ने खाया। (अल्लाह ने इतनी बरकत अता फ़रमाई कि) खाना फिर भी बच गया।[2]

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत मुहम्मद बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 41,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 154,

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० सिर्फ़ ग़रीबों के साथ खाना खाया करते थे (और उनका खाना अक्सर ग़रीब लोग ही खा जाया करते और यह भूखे रह जाते) इसकी वजह से उनका जिस्म कमज़ोर हो गया था, तो उनकी बीवी ने उनके लिए खजूरों का कोई शरबत तैयार किया। जब यह खाने से फ़ारिग़ हो जाते तो उनको यह शरबत पिला देतीं।

हज़रत अबूबक्र बिन हफ़्स रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा खाना तब खाते, जब उनके दस्तरख़्वान पर कोई यतीम होता।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब भी दोपहर का या रात का खाना खाते, तो अपने आस-पास के यतीमों को बुला लेते। एक दिन दोपहर का खाना खाने लगे तो एक यतीम को बुलाने के लिए आदमी भेजा, लेकन वह यतीम मिला नहीं। (इसलिए यतीम के बग़ैर खाना शुरू कर दिया।)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए मीठे सत्तू तैयार किए जाते थे, जिसे वह खाने के बाद पिया करते थे। चुनांचे वह यतीम आ गया और ये लोग खाने से फ़ारिग़ हो चुके थे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने अपने हाथ में पीने के लिए सत्तू (का प्याला) पकड़ा हुआ था, तो वह प्याला उस यतीम को दे दिया और फ़रमाया, यह लो। मेरा ख़्याल है कि तुम नुक़्सान में नहीं रहे।

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बीवी पर कुछ लोग हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के बारे में नाराज़ हुए और उनसे कहा कि क्या तुम इन बड़े मियां पर तरस नहीं खाती हो कि यह कमज़ोर होते जा रहे हैं, (इन्हें कुछ खिलाया-पिलाया करो।) तो उन्होंने कहा, मैं इनका क्या करूं? जब भी हम इनके लिए खाना तैयार करते हैं तो वह ज़रूर और लोगों को बुला लेते हैं जो सारा खाना खा जाते हैं। (यों दूसरों को खिला देते हैं, ख़ुद खाते नहीं)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० जब मस्जिद से निकलते तो कुछ ग़रीब लोग

---

1. अबू नुऐम [illegible] भाग 1, पृ० 298.

उनके रास्ते में बैठ जाते थे, (जिनको हज़रत इब्ने उमर रज़ि० साथ घर ले आते और उनको अपने खाने में शरीक कर लेते।) उनकी बीवी ने उन ग़रीबों के पास मुस्तक़िल खाना पहले से भेज दिया और उनसे कहला भेजा कि तुम यह खाना खा लो और चले जाओ और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के रास्ते में न बैठो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० मस्जिद से घर आ गए। (उन्हें रास्ते में कोई ग़रीब बैठा हुआ न मिला) तो फ़रमाया, फ़्लां और फ़्लां के पास आदमी भेजो (ताकि वे खाने के लिए आ जाएं। आदमी उनको बुलाने गए, लेकिन उनमें से कोई न आया, क्योंकि) उनकी बीवी ने उन ग़रीबों को खाने के साथ यह पैग़ाम भी भेजा था कि अगर तुम्हें हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बुलाएं, तो मत आना। (जब कोई न आया) तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, तुम लोग चाहते हो कि मैं आज रात खाना न खाऊं, चुनांचे उस रात खाना न खाया।[1]

हज़रत अबू जाफ़र क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे मेरे मालिक (अब्दुल्लाह बिन अय्याश बिन अबी रबीअतुल मख़्ज़ूमी) ने कहा, तुम हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ सफ़र में जाओ और उनकी ख़िदमत करो। (चुनांचे मैं उनके साथ सफ़र में गया) वह जब भी किसी चश्मे पर पड़ाव डालते, तो चश्मे वालों को अपने साथ खाने के लिए बुलाते और उनके बड़े बेटे भी उनके पास आकर खाना खाते (तो खाना कम और आदमी ज़्यादा होने की वजह से) हर आदमी को दो या तीन लुक़्मे मिलते थे।

चुनांचे जुह्फ़ा नामी जगह पर उनका क़ियाम हुआ, (यानी ठहरे) तो वहां के लोग भी (उनके बुलाने पर) खाने के लिए आ गए। इतनेमें काले रंग का एक नंगा लड़का भी आ गया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसको भी बुलाया। उसने कहा, मुझे तो बैठने की जगह नज़र नहीं आ रही है। ये सब लोग बहुत मिल-मिलकर बैठे हुए हैं।

हज़रत अबू जाफ़र रह० कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत इब्ने उमर

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 298, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 122,

रज़ि० अपनी जगह से थोड़ा-सा हट गए और उस लड़के को अपने सीने से लगाकर बिठा लिया।[1]

हज़रत अबू जाफ़र क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमाके साथ मक्का से मदीना को चला। उनके पास बहुत बड़ा प्याला था, जिसमें सरीद तैयार किया जाता था, फिर उनके बेटे, उनके साथी और जो भी वहां आ जाता वे सब इकट्ठे होकर उस प्याले में से खाते और कभी-कभी इतने आदमी इकट्ठे हो जाते कि कुछ आदमियों को खड़े होकर खाना पड़ता।

उनके साथ उनका एक ऊंट था, जिस पर नबीज़ (वह पानी, जिसमें खजूर कुछ देर डालकर उसे मीठा बना लिया जाए) और सादा पानी से भरे हुए दो मश्केज़े होते थे। खाने के बाद हर आदमी को सत्तू और नबीज़ से भरा हुआ एक प्याला मिलता जिसके पीने से ख़ूब अच्छी तरह पेट भर जाता।[2]

हज़रत मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब खाना तैयार कर लेते और उनके पास से कोई अच्छे रख-रखाव वाला आदमी गुज़रता तो हज़रत उमर रज़ि० उसे न बुलाते, लेकिन उनके बेटे या भतीजे उनको बुला लेते और जब ग़रीब आदमी गुज़रता, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० उसे बुला लेते, लेकिन उनके बेटे या भतीजे उसे न बुलाते, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते, जो खाना नहीं खाना चाहता, उसे ये लोग बुलाते हैं और जो खाना चाहता है, उसे छोड़ देते हैं।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा का खाना खिलाना

हज़रत सुलैमान बिन रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि

1. अबू नुऐम, भाग 4, पृ० 19, हुलीया, भाग 1, पृ० 302
   इब्ने साद, भाग 4, पृ० 109
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 109

उन्होंने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हज किया। उनके साथ बसरा के उलेमा की एक जमाअत भी थी जिनमें मुन्तसिर बिन हारिस ज़ब्बी भी थे। इन लोगोंने कहा, अल्लाह की क़सम ! जब तक हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से किसी ऐसे मशहूर और पसन्दीदा सहाबी से न मिल लें जो हमें हदीसें सुनाए, उस वक़्त तक हम लोग (बसरा) वापस नहीं जाएंगे।

चुनांचे हम लोगों से पूछते रहे, तो हमें बताया गया कि मशहूर सहाबा रज़ि० में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का के निचले हिस्से में ठहरे हुए हैं। चुनांचे हम उनके पास गए तो हमने देखा कि बहुत बड़ी मिक़्दार में सामान लेकर लोग जा रहे हैं। तीन सौ ऊंटों का काफ़िला है, जिनमें सौ ऊंट तो सवारी के लिए हैं और दो सौ ऊंटों पर सामान लदा हुआ है।

हमने पूछा, यह सामान किसका है?

लोगों ने बताया कि यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र का है।

हमने हैरान होकर कहा, क्या यह सारा उन्हीं का है? हमें तो यह बताया गया था कि वह लोगों में सबसे मुतवाज़े इंसान हैं (और यहां नक़्शा और ही तरह का नज़र आ रहा था।)

लोगों ने बताया कि (यह सारा सामान है तो उनका ही, लेकिन अपने ऊपर ख़र्च करने के लिए नहीं है, बल्कि दूसरों पर ख़र्च करने के लिए है।) ये सौ ऊंट तो उनके मुसलमान भाइयों के लिए हैं जिनको यह सवारी के लिए देंगे और इन दो सौ ऊंटों का सामान उनके पास अलग-अलग शहरों से आने वाले मेहमानों के लिए है।

यह सुनकर हमें बहुत ज़्यादा ताज्जुब हुआ।

लोगों ने कहा, तुम ताज्जुब न करो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० मालदार आदमी हैं और वह अपने पास आने वाले हर मेहमान (की मेहमानी भी करते हैं और जाते वक़्त उसे) रास्ते का खाना देना अपने ज़िम्मे मुस्तक़िल हक़ समझते हैं।

हमने कहा, हमें बताओ, वह कहां हैं?

लोगों ने बताया, वह इस वक़्त मस्जिदे हराम में हैं, चुनांचे हम उन्हें ढूंढने गए, तो देखा कि काबा के पीछे बैठे हुए हैं, छोटे क़द के हैं, आंखों में नमी है, दो चादरें ओढ़ी हुई हैं और सर पर पगड़ी बंधी हुई है और उन पर क़मीज़ नहीं है और अपने दोनों जूते बाईं तरफ़ लटकाए हुए हैं।[1]

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

एक बार हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु मग़्ज़ (भेजा) से भरा हुआ एक बड़ा प्याला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाए। हुज़ूर सल्ल० ने मालूम किया, ऐ अबू साबित! यह क्या है?

उन्होंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मैंने चालीस ऊंट ज़िब्ह किए थे, तो मेरा दिल चाहा कि मैं आपको पेट भर कर भेजा खिलाऊं। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उसे खाया और हज़रत साद रज़ि० के लिए भलाई की दुआ की।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को (अपने घर आने की) दावत दी। (जब हुज़ूर सल्ल० उनके घर तशरीफ़ ले आए तो) वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में खजूरें और कुछ रोटी के टुकड़े लाए जिन्हें हुज़ूर सल्ल० ने खाया, फिर दूध का एक प्याला लाए, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने भी पी लिया और फिर उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, तुम्हारा खाना नेक आदमी खाएं, और रोज़ेदार तुम्हारे यहां इफ़्तार करें और फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करें। ऐ अल्लाह! साद बिन उबादा रज़ि० की औलाद पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा।[3]

दूसरी लम्बी हदीस में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 291, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 12,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 40,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 66

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० के सामने कुछ तिल और कुछ खजूरें पेश कीं।[1]

हज़रत उर्व: रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह अपने क़िले पर खड़े हुए यह एलान कर रहे हैं कि जो चर्बी या गोश्त खाना चाहते हैं, वह साद बिन उबादा रज़ि० के यहां आ जाए। फिर मैंने (उनके इंतिक़ाल के बाद) उनके बेटेको इसी तरह एलान करते हुए देखा।

(फिर इन दोनों बाप-बेटे के इंतिक़ाल के बाद) एक दिन मैं मदीना के रास्ते पर जा रहा था। उस वक़्त मैं नवजवान था कि इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा आलिया मुहल्ले में अपनी ज़मीन पर जाते हुए मेरे पास से गुज़रे, तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया, ऐ जवान! जाओ और देखकर आओ कि साद बिन उबादा रज़ि० के क़िले पर क्या कोई आदमी खाने पर बुलाने के लिए एलान कर रहा है?

मैंने देखकर उन्हें बताया कि कोई नहीं है, तो उन्होंने फ़रमाया, तुमने सच कहा, (इतनी ज़्यादा सख़ावत तो उन बाप बेटे ही की ख़ुसूसियत थी। अब वह बात न रही।)[2]

हज़्रत अबू शुऐब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है कि हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अंसार में एक आदमी थे जिनको अबू शुऐब रज़ियल्लाहु अन्हु कहा जाता था। उनका एक ग़ुलाम गोश्त बनाने का माहिर था। उन्होंने उस ग़ुलाम से कहा, तुम मेरे लिए खाना तैयार करो। मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आपके अलावा चार आदमियों को बुलाना चाहता हूं। चुनांचे उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को चार और आदमियों के साथ खाना खाने की दावत दी।

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 66,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 142

हुज़ूर सल्ल० चार और आदमियों को साथ लेकर चले तो एक आदमी ख़ुद ही उन लोगों के पीछे-पीछे आने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू शुऐब रज़ि० से कहा, तुमने हम पांच आदमियों को दावत दी थी, यह आदमी ख़ुद से हमारे पीछे आ रहा है। अब अगर तुम चाहो तो इसे भी इजाज़त दे दो, वरना रहने दो।

हज़रत शुऐब रज़ि० ने कहा, नहीं इसे भी इजाज़त है।

इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से ऐसी ही रिवायत नक़ल की है और उसमें यह है कि हज़रत अबू शुऐब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा तो महसूस किया कि हुज़ूर सल्ल० के मुबारक चेहरे पर भूख की निशानी है, तो अपने गुलाम से कहा, तुम्हारा भला हो, तुम हमारे लिए पांच आदमियों का खाना तैयार करो।

आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[1]

एक दर्ज़ी का खाना खिलाना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दर्ज़ी ने खाना तैयार करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खाने के लिए बुलाया। मैं भी हुज़ूर सल्ल० के साथ उस दावत में चला गया, तो उसने हुज़ूर सल्ल० के सामने जौ की रोटी और शोरबा पेश किया, जिसमें कद्दू और गोश्त की बोटियां थीं। मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० प्याले के किनारों से कद्दू तलाश कर रहे थे। उस दिन से मुझे भी कद्दू बहुत पसंदीदा हो गया है।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा का खाना खिलाना

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग ख़ंदक़ खोद रहे थे कि इतने में एक कड़ी चट्टान ज़ाहिर हुई (जो सहाबा रज़ि० से टूट

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 176,
2. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 180, बुख़ारी

न सकी) सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि यह खंदक़ में एक कड़ी चट्टान ज़ाहिर हुई है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं ख़ुद उतरता हूं। फिर आप खड़े हुए तो आपके मुबारक पेट पर (भूख की वजह से) पत्थर बंधा हुआ था, क्योंकि तीन दिन से हम लोगों ने कोई चीज़ नहीं चखी थी। फिर आपने कुदाल लेकर इस ज़ोर से उस चट्टान पर मारी कि वह रेत के ढेर की तरह रेज़ा-रेज़ा हो गई। फिर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे घर जाने की इजाज़त दें। (आपने इजाज़त दे दी)

मैंने घर जाकर अपनी बीवी से कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० की तेज़ भूख की ऐसी हालत देखी है कि जिसके बाद मैं रह नहीं सका, क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है?

उसने कहा, जौ और बकरी का एक बच्चा है।

मैंने बकरी का वह बच्चा ज़िब्ह किया और उसका गोश्त तैयार किया। उसने जौ पीस कर उसका आटा गूंधा। फिर हमने गोश्त हांडी में डालकर चूल्हे पर चढ़ा दिया। इतने में आटा भी ख़मीर होकर रोटी पकने के क़ाबिल हो गया और हांडी भी चूल्हे पर पकने वाली हो गई।

फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, मैंने थोड़ा-सा खाना तैयार किया है, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप तशरीफ़ ले चलें और एक दो और आदमी भी साथ हो जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, खाना कितना है? मैंने आपको बता दिया।

आपने फ़रमाया, बड़ा उम्दा खाना है और बहुत ज़्यादा है और अपनी बीवी से कह दो कि जब तक मैं आ न जाऊं, न वह हांडी चूल्हे से उतारे और न रोटी तनूर से निकाले। फिर आपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, उठो, (खाने के लिए चलो)। चुनांचे मुहाजिरीन और अंसार खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० के साथ चल पड़े।

मैं जब घर पहुंचा तो मैंने बीवी से कहा, तेरा भला हो। हुज़ूर सल्ल० अपने साथ मुहाजिरीन और अंसार और दूसरे लोगों को लेकर तशरीफ़ ला रहे हैं।

मेरी बीवी ने कहा, क्या तुमसे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा था (कि खाना कितनां है ?)

मैंने कहा, हां। (फिर हुज़ूर सल्ल० सबको ला रहे हैं तो अब वह ही सबके खाने का इंतिज़ाम करेंगे।)

(जब हुज़ूर सल्ल० उनके घर पहुंच गए तो सहाबा रज़ि० से) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अन्दर आ जाओ और भीड़ न करो और हुज़ूर सल्ल० रोटी के टुकड़े करके उस पर गोश्त रखकर सहाबा रज़ि० को देते जाते। हुज़ूर सल्ल० जब हांड़ी से गोश्त और तनूर से रोटी लेते, तो उन्हें ढांक देते।

इसी तरह आप सहाबा रज़ि० को गोश्त हांडी से निकालकर और रोटी तोड़-तोड़ कर देते रहे, यहां तक कि सब सेर हो गए और खाना फिर भी बच गया और (मेरी बीवी से) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब तुम भी खा लो और दूसरों के घरों में भी भेज दो, क्योंकि तमाम लोगों को भूख लगी हुई है।[1]

इमाम बैहक़ी ने दलाइल में हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से यही हदीस इससे ज़्यादा मुकम्मल तौर पर नक़ल की है। इसमें मज़्मून इस तरह है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खाने की मिक़्दार का इल्म हुआ तो तमाम मुसलमानों को कहा, उठो और जाबिर के यहां चलो।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का यह एलान सुनकर अल्लाह ही जानता है कि मुझे कितनी शर्म आई और मैंने दिल में चाहा कि मैंने तो सिर्फ़ एक साअ जौ और एक बकरी के बच्चे से खाने का इन्तिज़ाम किया है और हुज़ूर सल्ल० हमारे यहां इतनी सारी मख़्लूक़ को लेकर आ रहे हैं।

फिर मैंने जाकर बीवी से कहा, आज तो तुम रुसवा हो जाओगी, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० तमाम ख़ंदक़ वालों को लेकर आ रहे हैं।

1. बुख़ारी,

मेरी बीवी ने कहा, तुमसे हुज़ूर सल्ल० ने पूछा था कि खाना कितना है?

मैंने कहा, हां।

मेरी बीवी ने कहा, अब तो अल्लाह और उसके रसूल ही जानें। (हमें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं।) बीवी की इस बात से मेरी बड़ी परेशानी दूर हो गई।

फिर हुज़ूर सल्ल० घर तशरीफ़ ले आए और आपने फ़रमाया, तुम काम करती रहो और गोश्त मेरे हवाले कर दो। हुज़ूर सल्ल० रोटी का सरीद बनाकर उस पर गोश्त डालते जाते और उसे भी ढांक देते और उसे भी (यानी रोटियों और गोश्त दोनों को ढांक देते) आप इसी तरह लोगों के सामने रखते रहे, यहां तक कि तमाम लोगों ने पेट भर कर खा लिया और तनूर और हांडी अब भी पूरे भरे हुए थे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने मेरी बीवी से फ़रमाया, अब तुम ख़ुद भी खाओ और दूसरे घरों में भी भेजो। चुनांचे वह ख़ुद भी खाती रही और सारा दिन घरों में भेजती रही।

इब्ने अबी शैबा ने इस रिवायत को और ज़्यादा तफ़्सील से नक़ल किया है और उसके आख़िर में यह है कि रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत जाबिर रज़ि० ने मुझे बताया कि खाना खाने वालों की तायदाद आठ सौ थी या फ़रमाया तीन सौ थी।[1]

इमाम बुख़ारी ने एक और सनद से इसी तरह की हदीस हज़रत जाबिर रज़ि० से नक़ल की है, जिसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊंची आवाज़ से यह एलान फ़रमाया कि ऐ ख़ंदक़ वालो! जाबिर ने दावत का खाना तैयार किया है, इसलिए तुम जल्दी से चलो और हुज़ूर सल्ल० ने (मुझसे) फ़रमाया, जब तक मैं न आऊं, तुम अपनी हांडी को (चूल्हे से) न उतारना और न अपने आटे की रोटियां पकाना शुरू करना।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 97,

चुनांचे मैं (ख़ंदक़ से) घर आया और (थोड़ी ही देर बाद) हुज़ूर सल्ल० भी तशरीफ़ ले आए। आप लोगों से आगे-आगे तशरीफ़ ला रहे थे, यहां तक कि घर पहुंचकर मैंने बीवी को बतलाया कि हुज़ूर सल्ल० सब ख़ंदक़ वालों को ला रहे हैं। उसने मुझे बहुत कुछ कहा कि आज तो तुम रुसवा हो जाओगे और सब तुम्हें बुरा कहेंगे (कि खाना तो थोड़ा है और खाने वाले बहुत ज़्यादा हैं। जब सबको खाना नहीं मिलेगा तो रुसवाई और शर्मिंदगी होगी।) मैंने उससे कहा, तुमने जो कहा था, मैंने वैसे ही किया।

हुज़ूर सल्ल० के तशरीफ़ लाने पर मेरी बीवी ने हुज़ूर सल्ल० के सामने आटा रखा, हुज़ूर सल्ल० ने उसमें मुबारक लुआब डाला और बरकत की दुआ फ़रमाई। फिर आप हमारी हांडी के पास तशरीफ़ ले गए और उसमें भी मुबारक लुआब डालकर बरकत की दुआ फ़रमाई, फिर फ़रमाया, एक और रोटी पकाने वाली को बुलाओ ताकि वह तुम्हारे साथ रोटी पकाए और अपनी हांडी से प्याले भर-भरकर देती जाओ, लेकिन उसे चूल्हे से मत उतारना।

(पिछली हदीस में यह गुज़रा है कि हुज़ूर सल्ल० हांडी से गोश्त निकाल रहे थे, इसलिए ज़ाहिर में तो यह भी हुज़ूर सल्ल० के साथ निकाल रही होंगी) यह खाने के लिए आने वाले एक हज़ार थे। मैं अल्लाह की क़सम खाकर कहता हूं कि ये लोग खाना खाकर वापस चले गये और खाना बचा हुआ था और हमारी हांडी उसी तरह जोश खा रही थी और आटे की उसी तरह रोटियां पक रही थीं।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरी मां ने एक बार खाना तैयार किया और मुझसे कहा, जाओ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खाने के लिए बुला लाओ। चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर चुपके से अर्ज़ किया कि मेरी मां ने कुछ खाना तैयार किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, खड़े हो जाओ। चुनांचे

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 178,

आपके साथ पचास आदमी खड़े होकर चल पड़े। (आप हमारे घर तशरीफ़ ले आए) और आप दरवाज़े पर बैठ गए और मुझसे फ़रमाया, दस-दस को अन्दर भेजते जाओ।

चुनांचे सबने पेट भरकर खाया और खाना जितना पहले था, उतना ही बच गया। (दस का इसलिए फ़रमाया कि अन्दर उससे ज़्यादा के बैठने की जगह न होगी।)[1]

हज़रत अबू तलहा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ को सुना, बहुत कमज़ोर हो रही थी और साफ़ पता चल रहा था कि यह कमज़ोरी भूख की वजह से है। क्या तुम्हारे पास कुछ है?

उन्होंने कहा, हां है। फिर उन्होंने जौ की कुछ रोटियां निकालीं और अपनी ओढ़नी के एक हिस्से में लपेटकर मेरे कपड़े के नीचे छिपा दीं और ओढ़नी का बाक़ी हिस्सा मुझे ओढ़ा दिया। फिर मुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया।

मैं यह लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचा। मैंने आपको मस्जिद में बैठा हुआ पाया। आपके पास और लोग भी बैठे हुए थे। मैं उन लोगों के पास आकर खड़ा हो गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें अबू तलहा रज़ि० ने भेजा है?

आपने फ़रमाया, क्या खाने के लिए भेजा है। मैंने कहा, जी हां।

(ये तमाम बातें हुज़ूर सल्ल० को अल्लाह ने बताई थीं।) आपने अपने पास बैठे लोगों से फ़रमाया, चलो, उठो, फिर आप (उन तमाम सहाबा को लेकर) चल पड़े। मैं उन लोगों के आगे-आगे चल रहा था। मैंने जल्दी से घर पहुंचकर हज़रत अबू तलहा रज़ि० को बताया (कि हुज़ूर सल्ल० सहाबा

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 308,

रज़ि० को साथ लेकर खाने के लिए तशरीफ़ ला रहे हैं।)

हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने कहा, ऐ उम्मे सुलैम ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को लेकर तशरीफ़ ला रहे हैं और हमारे पास उन्हें खिलाने के लिए कुछ नहीं है।

उन्होंने कहा, (जब हुज़ूर सल्ल० को पता है कि हमारे पास कितना खाना है और फिर इतने सारे लोगों को लेकर आ रहे हैं, तो अब तो) अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ही जानें। (हमें परेशान होने और चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं।)

चुनांचे हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने आगे बढ़कर हुज़ूर सल्ल० का रास्ते ही में इस्तक़बाल किया, फिर हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबू तलहा रज़ि० के साथ घर के अन्दर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, ऐ उम्मे सुलैम ! तुम्हारे पास जो कुछ है वह ले आओ। चुनांचे वह जौ की रोटियां ले आईं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके टुकड़े करने का हुक्म दिया तो उनके छोटे-छोटे टुकड़े कर दिए। फिर हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने उन पर कुप्पी से घी निचोड़ कर सालन बनाया, फिर हुज़ूर सल्ल० उस खाने पर थोड़ी देर कुछ पढ़ते रहे। (यानी बरकत की दुआ फ़रमाई)। फिर फ़रमाया, दस आदमियों को अन्दर आने की इजाज़त दे दो।

चुनांचे हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने दस आदमियों को अन्दर आने की इजाज़त दी। जब उन्होंने ख़ूब पेट भरकर खा लिया और बाहर चले गए तो आपने फ़रमाया, अब और दस आदमियों को इजाज़त दे दो। उन्होंने दस को इजाज़त दे दी।

जब इन दस आदमियों ने भी ख़ूब पेट भरकर खा लिया और बाहर चले गए, तो आपने फ़रमाया, अब और दस आदमियों को इजाज़त दे दो। इस तरह सबने पेट भरकर खाना खा लिया। इन लोगों की तायदाद सत्तर या अस्सी थी।

तबरानी की एक रिवायत में यह है कि ये लोग सौ के क़रीब थे।[1]

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 178, बिदाया, भाग 9, पृ० 105, मज्मा, भाग 8, पृ० 306

हज़रत अशअस बिन क़ैस किंदी रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अशअस रज़ियल्लाहु अन्हु (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद मुर्तद (विधर्मी) हो गए थे और बाद में फिर मुसलमान हो गए थे और उनको क़ैद करके हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाया गया, तो उन्होंने उनकी बेड़ियां खोल दीं (और उन्हें इस्लाम ले आने की वजह से आज़ाद कर दिया) और अपनी बहन से उनकी शादी कर दी। यह अपनी तलवार सौंत कर ऊंटों के बाज़ार में दाख़िल हो गए और जिस ऊंट या ऊंटनी पर नज़र पड़ती, उसकी कूंचें काट डाले। लोगों ने शोर मचा दिया कि अशअस तो काफ़िर हो गया।

जब यह फ़ारिग़ हुए तो अपनी तलवार फेंककर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैंने कुफ़्र नहीं अपनाया, लेकिन उस आदमी ने यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी बहन से मेरी शादी की है। अगर हम अपने इलाक़े में होते, तो हमारा वलीमा कुछ और तरह का होता यानी बहुत अच्छा होता। ऐ मदीना वालो! तुम इन तमाम ऊंटों को ज़िब्ह करके खा लो, और ऐ ऊंटों वालो! आओ और ऊंटों की क़ीमत ले लो।[1]

हज़रत अबू बरज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना खिलाना

हज़रत हसन बिन हकीम रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी मां से नक़ल करते हैं कि हज़रत अबू बरज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां सुबह व शाम सरीद का एक बड़ा प्याला बेवाओं, यतीमों और मिस्कीनों के लिए तैयार किया जाता था।[2]

---

1. इसाबा, भाग 1, पृ० 51, मज्मा, भाग 9, पृ० 415
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 35,

मदीना तैयिबा में आने वाले मेहमानों की मेहमानी का बयान

हज़रत तलहा बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब भी कोई आदमी मदीना मुनव्वरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आता और मदीना में कोई जानने वाला होता तो वह उसका मेहमान बन जाता और अगर कोई जानने वाला न होता, तो वह सुफ़्फ़ा वालों के साथ ठहर जाता। चुनांचे मैं भी सुफ़्फ़ा में ठहरा हुआ था और मैंने वहां एक आदमी के साथ जोड़ी बना ली थी।

हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से रोज़ाना दो आदमियों को एक मुद्द यानी चौदह छटांक खजूरें मिला करती थीं। (इस तरह फ़ी कस (प्रति व्यक्ति) सात छटांक खजूरें मिला करतीं।)

एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ से सलाम फेरा, तो इन सुफ़्फ़ा वालों में से एक आदमी ने पुकार कर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन खजूरों ने हमारे पेट जला डाले और हमारी चादरें फट गईं। यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० मिंबर की तरफ़ चले और उस पर चढ़कर अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर आपने अपनी क़ौम क़ुरैश की ओर से जो तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं, उनका तज़्किरा फ़रमाया। फिर आपने यह भी फ़रमाया कि एक बार मुझ पर और मेरे साथी पर दस से ज़्यादा रातें ऐसी गुज़रीं कि हमारे पास पीलू के फल के अलावा खाने को कुछ नहीं था। फिर हम हिजरत करके अपने अंसारी भाइयों के पास आए, उनके यहां आम खाना खजूर है और वही ज़्यादा खाई जाती है। चुनांचे ये खजूरें खिला करके ही हमारा ग़म ग़लत करते हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर मेरे पास रोटी और गोश्त होता, तो मैं तुम्हें ज़रूर खिलाता। (आज तुम तंगी से गुज़ारा कर रहे हो) लेकिन एक ज़माना ऐसा आएगा कि तुम काबा के परदों जैसे क़ीमती कपड़े पहनोगे और सुबह और शाम तुम्हारे सामने खाने के

बड़े-बड़े प्याले लाए जाएंगे।[1]

हज़रत फ़ज़ाला लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में (मदीना मुनव्वरा) हाज़िर हुए। वहां का दस्तूर यह था कि जिस आने वाले का वहां कोई जानने वाला होता, वह उसका मेहमान बन जाता और उसके यहां ठहर जाता और जिसका कोई जानने वाला न होता, तो वह सुफ़्फ़े में ठहर जाता। चूंकि मेरा कोई जानने वाला न था, इसलिए मैं सुफ़्फ़े में ठहर गया। (सुफ़्फ़ा में और मुहाजिरीन भी थे।)

एक बार जुमा के दिन एक आदमी ने पुकार कर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! खजूरों ने हमारे पेट जला डाले।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बहुत जल्द ऐसा ज़माना आएगा कि तुममें से जो ज़िंदा रहा, उसके सामने खाने के बड़े-बड़े प्याले लाए जाएंगे, जैसे काबे पर परदे डाले जाते हैं, ऐसे क़ीमती कपड़े तुम पहनोगे।[2]

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ि० को नमाज़ पढ़ाते और नमाज़ से फ़ारिग़ होकर अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाते, हर आदमी के पास जितने खाने का इन्तिज़ाम है, उतने मेहमान अपने साथ ले जाए। चुनांचे कोई आदमी एक मेहमान ले जाता, कोई दो और कोई तीन और जितने मेहमान बच जाते, उनको हुज़ूर सल्ल० अपने साथ ले जाते।[3]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब शाम हो जाती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुफ़्फ़ा वालों को अपने सहाबा में बांट देते। कोई एक आदमी ले जाता, कोई दो और कोई तीन, यहां तक कि कोई आदमी दस मेहमान ले जाता और हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु हर रात अपने घर अस्सी मेहमान ले जाते और

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 374, हैसमी, भाग 10, पृ० 323, कंज़, भाग 4, पृ० 41, इसाबा, भाग 2, पृ० 231,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 323,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 65,

उन्हें खाना खिलाते ।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मेरे पास से गुज़र हुआ, आपने फ़रमाया, ऐ अबू हिर !

मैंने अर्ज़ किया, लब्बैक, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, जाओ, सुफ़्फ़ा वालों को बुला लाओ। सुफ़्फ़ा वाले इस्लाम के मेहमान थे, न उनके बाल-बच्चे थे और न उनके पास माल था। जब हुज़ूर सल्ल० के पास सदक़ा आता तो वह सारा उनके पास भेज देते और उसमें से ख़ुद कुछ भी इस्तेमाल न करते और जब आपके पास हदिया आता तो उसे ख़ुद भी इस्तेमाल फ़रमाते और उनको भी उसमें अपने साथ शरीक फ़रमा लेते और हदिया में से कुछ उनके पास भी भेज देते ।[2]

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं सुफ़्फ़ा वालों में से था। जब शाम होती तो हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर हाज़िर हो जाते। आप सहाबा किराम रज़ि० को फ़रमाते तो हर आदमी अपने साथ हममें से एक आदमी अपने घर ले जाता। आख़िर में सुफ़्फ़ा वालों में से दस या उससे कम या ज़्यादा आदमी बच जाते। फिर हुज़ूर सल्ल० का रात का खाना आता तो हम (बाक़ी बच जाने वाले) हुज़ूर सल्ल० के साथ खाना खाते। जब हम खाने से फ़ारिग़ हो जाते तो हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते, जाओ मस्जिद (नबवी) में सो जाओ।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० मेरे पास से गुज़रे। मैं चेहरे के बल सो रहा था। आपने मुझे ठोकर मार कर फ़रमाया, ऐ जुन्दुब ! यह कैसे लेटे हो? इस तरह तो शैतान लेटता है ?[3]

हज़रत तिख़फ़ा बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० से (सुफ़्फ़ा

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 341, मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 190
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 338,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 352

वालों को अपने साथ ले जाने के बारे में) फ़रमाया। कोई एक आदमी ले गया और कोई दो। आख़िर में हम पांच आदमी बच गए। मेरे अलावा चार आदमी और थे। हुज़ूर सल्ल० ने हमसे फ़रमाया, चलो।

चुनांचे हम हुज़ूर सल्ल० के साथ हज़रत आइशा रज़ि० के यहां गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! हमें खिलाओ और पिलाओ। तो हज़रत आइशा रज़ि० गेहूं का गोश्त वाला दलिया ले आईं। हमने वह खा लिया, तो फिर खजूर का हलवा ले आईं जिसका रंग फ़ाख़्ता जैसा था। हमने वह भी खा लिया, तो आपने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! हमें कुछ पिलाओ, तो हज़रत आइशा रज़ि० दूध का एक छोटा प्याला ले आईं। हमने वह दूध भी पी लिया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहो, तो यहां ही रात गुज़ार लो और अगर चाहो, तो मस्जिद में चले जाओ।

हमने कहा, हम मस्जिद जाना चाहते हैं। (चुनांचे हम लोग मस्जिद जाकर सो गए।) मैं मस्जिद में पेट के बल लेटा हुआ था कि एक आदमी ने मुझे पांव से हटाया और कहा कि इस तरह से लेटना तो अल्लाह को पसन्द नहीं है। मैंने देखा तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे।[1]

हज़रत जहजाह ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ (मदीना मुनव्वरा) आया। हमारा इरादा इस्लाम लाने का था। हम लोगों ने मग़रिब की नमाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पढ़ी। सलाम फेरने के बाद आपने फ़रमाया, हर आदमी अपने साथ बैठने वाले का हाथ पकड़ ले (और उसे अपने घर खाने के लिए ले जाए। चुनांचे तमाम लोगों को सहाबा रज़ि० ले गए) और मस्जिद में मेरे और हुज़ूर सल्ल० के अलावा और कोई न बचा।

चूंकि मैं लम्बा-तड़ंगा आदमी था, इसलिए मुझे कोई न ले गया और हुज़ूर सल्ल० मुझे अपने घर ले गए। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे लिए एक बकरी का दूध निकालकर लाए। मैं वह दूध सारा

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 347

पी गया, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० सात बकरियों का दूध निकालकर लाए और मैं वह सारा पी गया। फिर हुज़ूर सल्ल० पत्थर की एक हंडिया में सालन लाए, मैं वह भी सारा खा गया।

यह देखकर हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, (यह आदमी तो सब कुछ खा-पी गया, हुज़ूर सल्ल० भूखे रह गए, इसलिए) जो आज रात हुज़ूर सल्ल० के भूखे रह जाने का ज़रिया बना है, अल्लाह उसे भूखा रखे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे ऐमन ! ख़ामोश रहो। उसने अपनी रोज़ी खाई है और हमारी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। सुबह को हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० और ये बाहर से आए हुए मेहमान सब इकट्ठे हो गए और हर मेहमान के साथ रात जो खाना लाया गया, वह बताने लगा।

मैंने कहा, मुझे सात बकरियों का दूध लाकर दिया गया, मैं वह सारा पी गया। फिर एक हंडिया में सालन लाया गया, मैं वह भी सारा खा गया।

इन सबने फिर हुज़ूर सल्ल० के साथ मग़िरब की नमाज़ पढ़ी। (नमाज़ के बाद) फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर आदमी अपने साथ बैठने वाले का हाथ पकड़ ले (और अपने घर ले जाकर खाना खिला दे) आज भी मस्जिद में मेरे और हुज़ूर सल्ल० के अलावा और कोई न बचा। मैं लंबा-तड़ंगा आदमी था, इसलिए मुझे कोई न ले गया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० मुझे ले गए। और एक बकरी का दूध निकालकर दिया। आज मेरा उसी से पेट भर गया।

यह देखकर हज़रत उम्मे ऐमन ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह हमारा कल वाला मेहमान नहीं है?

आपने फ़रमाया, हां, वही है, लेकिन आज रात उसने मोमिन की आंत में खाया और इससे पहले वह काफ़िर की आंत में खाता था। काफ़िर सात आंतों में खाता है और मोमिन एक आंत में खाता है (यानी मोमिन को ज़्यादा खाने-पीने का फ़िक्र और शौक़ नहीं होता और काफ़िर को होता है।)[1]

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 93, इसाबा, भाग 1, पृ० 253, मज्मा, भाग 5, पृ० 31

हज़रत वासिला बिन अस्क़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम अह्ले सुफ़्फ़ा में थे। रमज़ान का महीना आ गया। हमने रोज़े रखने शुरू कर दिए। जब हम इफ़्तार कर लेते तो जिन लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की हुई थी, वे लोग आते और इनमें से हर आदमी हम में से एक आदमी को अपने साथ ले जाता और उसे रात का खाना खिलाता।

एक रात हमें लेने कोई न आया, फिर सुबह हो गई, फिर अगली रात आ गई और हमें लेने कोई न आया, फिर हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी हालत हुज़ूर सल्ल० को बताई। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी पाक बीवियों में से हर एक के पास आदमी भेजा कि उनसे पूछ कर आए कि उनके पास कुछ है?

तो उनमें से हर एक ने क़सम खाकर यही जवाब भेजा कि उसके घर में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे कोई जानदार खा सके।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सुफ़्फ़ा वालों से फ़रमाया, तुम सब जमा हो जाओ। जब वे लोग जमा हो गए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा फ़ज़्ल और तेरी रहमत मांगता हूं, इसलिए कि तेरी रहमत तेरे ही क़ब्ज़े में है। तेरे अलावा और कोई उसका मालिक नहीं है।

अभी आपने यह दुआ मांगी ही थी कि एक आदमी ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी। (आपने उसे इजाज़त दे दी) तो वह एक भुनी हुई बकरी और रोटियां लेकर आया। हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर वह बकरी हमारे सामने रख दी गई। हमने उसमें से खाया और ख़ूब पेट भरकर खाया, तो हुज़ूर सल्ल० ने हमसे फ़रमाया, हमने अल्लाह से उसकी मेहरबानी और उसकी रहमत मांगी थी, तो यह खाना अल्लाह का फ़ज़्ल (मेहरबानी) है और अल्लाह ने अपनी रहमत हमारे लिए जमा करके (आख़िरत के लिए) रख ली है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं,

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 120

सुफ़्फ़ा वाले ग़रीब फ़क़ीर लोग थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार एलान फ़रमाया, जिसके पास दो आदमियों का खाना है, तो वह (सुफ़्फ़ा वालों में से) तीसरे को ले जाए और जिसके पास चार आदमियों का खाना है, वह पांचवें या छठे को ले जाए। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ख़ुद दस आदमियों को ले गए और (मेरे बाप) हज़रत अबूबक्र रज़ि० तीन आदमी घर लाए और घर में ख़ुद मैं था और मेरे मां-बाप थे।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मुझे यह मालूम नहीं है कि यह भी कहा था कि और मेरी बीवी थी और इनके अलावा एक नौकर था जो हमारे और हज़रत अबूबक्र रज़ि० दोनों के घरों में काम करता था। (घर के लोग कुल चार या पांच थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि चार हों तो एक या दो ले जाना, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि० शौक़ में तीन आदमी ले आए।) ख़ुद हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के यहां रात का खाना खाया और फिर इशा तक वहीं ठहरे रहे, फिर इशा की नमाज़ के बाद और ठहर गए, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० ने खा लिया।

रात का काफ़ी हिस्सा गुज़रने के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० घर आए। (वह समझे कि मेहमानों ने खाना खा लिया होगा) उनकी बीवी ने उनसे कहा, आप अपने मेहमानों के पास क्यों नहीं आए?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या तुमने उन मेहमानों को खाना नहीं खिलाया?

उन्होंने कहा, हमने तो इनसे कहा था कि खाना खा लो, लेकिन इन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि जब अबूबक्र रज़ि० आएंगे, तब खाएंगे। हमने बहुत ज़ोर लगाया, लेकिन बिल्कुल न माने और हम पर ग़ालिब आ गए, मैं यह सुनकर अन्दर जाकर छिप गया (कि मुझसे नाराज़ होंगे।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझे नाराज़ होते हुए कहा, ओ बेवक़ूफ़! (तुमने इनको खाना क्यों नहीं खिलाया?) और मुझे खूब बुरा-भला कहा। (फिर अबूबक्र रज़ि० ने ग़ुस्से में क़सम खा ली कि वह खाना नहीं खाएंगे) और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मेहमानों से कहा, तुम खाना

खाओ, मैं यह खाना कभी नहीं खाऊंगा। (इस पर मेहमानों ने भी क़सम खा ली कि अगर अबूबक्र रज़ि० नहीं खाएंगे, तो वह भी नहीं खाएंगे।)

(आख़िर हज़रत अबूबक्र रज़ि० का ग़ुस्सा ठंडा हुआ, उन्होंने अपनी क़सम तोड़ी और मेहमानों के साथ खाना शुरू कर दिया। इस पर) हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० कहते हैं, हम खाना खा रहे थे। अल्लाह की क़सम! हम जो लुक़्मा भी उठाते, उसके नीचे खाना उससे भी ज़्यादा बढ़ जाता, यहां तक कि सब मेहमानों ने पेट भरकर खा लिया और खाना भी पहले से ज़्यादा हो गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने जब देखा कि खाना पहले से भी ज़्यादा हो गया है, तो अपनी बीवी से कहा, ऐ क़बीला बनू फ़िरास वाली ख़ातून! (देखो, यह क्या हो रहा है?)

बीवी ने कहा, कोई बात नहीं, मेरी आंखों की ठंडक की क़सम! यह खाना तो पहले से तीन गुना हो गया है। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने भी वह खाना खाया और कहा, मेरी (न खाने की) क़सम तो शैतान की तरफ़ से थी। फिर उन्होंने उसमें से एक लुक़्मा और खाया, फिर वह उठाकर यह खाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए।

हम मुसलमानों का एक क़ौम से समझौता हुआ था, जिसकी मुद्दत ख़त्म हो गई थी, इस वजह से हम मुसलमानों ने उनकी तरफ़ भेजने के लिए एक फ़ौज तैयार की थी, जिसमें बारह आदमियों को ज़िम्मेदार बनाकर हर एक के साथ बहुत से मुसलमान कर दिए थे। ज़िम्मेदारों की तायदाद तो मालूम है कि बारह थी, लेकिन हर एक के साथ कितने मुसलमान थे, यह तायदाद अल्लाह ही जानते हैं। बहरहाल उस सारी फ़ौज ने उस खाने में से खाया था।

कुछ रिवायत करने वालों ने बारह ज़िम्मेदार बनाने के बजाए बारह जमाअतें बनाने का तज़्किरा किया है।[1]

हज़रत यह्या बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साल हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु लड़ाई में जाते और एक

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 112.

साल उनके बेटे हज़रत क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु जाते। चुनांचे एक बार हज़रत साद रज़ि० मुसलमानों के साथ लड़ाई में गए हुए थे, उनके पीछे मदीने में बहुत से मुसलमान मेहमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आ गए।

हज़रत साद रज़ि० को वहां फ़ौज में यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा, अगर क़ैस मेरा बेटा हुआ तो वह (मेरे ग़ुलाम निस्तास से) कहेगा, ऐ निस्तास ! चाबियां लाओ, ताकि मैं हुज़ूर सल्ल० के लिए उनकी ज़रूरत की चीज़ें (अपने बाप के गोदाम में से) निकाल लूं। इस पर निस्तास कहेगा, अपने वालिद की ओर से इजाज़त की कोई तहरीर लाओ, तो मेरा बेटा क़ैस मार कर उसकी नाक तोड़ देगा और उससे ज़बरदस्ती चाबियां लेकर हुज़ूर सल्ल० की ज़रूरत का सामान निकाल लेगा।

चुनांचे मदीने में ऐसे ही हुआ और हज़रत क़ैस ने हुज़ूर सल्ल० को सौ वसक़ (लगभग पांच सौ पचीस मन) लाकर दिए।[1]

हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक साल अकाल पड़ा तो देहाती लोग मदीना मुनव्वरा आने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमाने पर हर सहाबी उनमें से एक आदमी का हाथ पकड़कर ले जाता और उसे अपना मेहमान बना लेता और उसे रात का खाना खिलाता।

चुनांचे एक रात एक देहाती आया। (उसे हुज़ूर सल्ल० अपने यहां ले आए।) हुज़ूर सल्ल० के पास थोड़ा-सा खाना और कुछ दूध था। वह देहाती यह सब कुछ खा-पी गया और उसने हुज़ूर सल्ल० के लिए कुछ न छोड़ा। हुज़ूर सल्ल० एक या दो रातें और उसको साथ लाते रहे और वह हर दिन सब कुछ खा जाता। इस पर मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह ! इस देहाती में बरकत न कर, क्योंकि यह हुज़ूर सल्ल० का सारा खाना खा जाता है और हुज़ूर सल्ल० के लिए कुछ नहीं छोड़ता।

---

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 553,

फिर वह मुसलमान हो गया और उसे फिर हुज़ूर सल्ल० एक रात साथ लेकर आए। उस रात उसने थोड़ा-सा खाना खाया। मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, क्या यह वही आदमी है? (जो पहले सारा खाना खा लिया करता था।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (हां, यह वही आदमी है, लेकिन पहले काफ़िर था, अब मुसलमान हो गया है।) काफ़िर सात आंतों में खाता है और मोमिन एक आंत में खाता है।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में) ज़बरदस्त अकाल पड़ा, जिसे आमुर्रमादा कहा जाता है (रमादा के मानी हलाकत के हैं या राख यानी हलाकत का साल या वह साल जिसमें लोगों के रंग क़हत की वजह से राख जैसे हो गए थे) तो हर तरफ़ से अरब खिंचकर मदीना मुनव्वरा आ गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ लोगों को उनके इन्तिज़ाम और उनमें खाना और सालन बांटने के लिए मुक़र्रर किया। इन लोगों में हज़रत यज़ीद बिन उख़्ते नमिर, हज़रत मस्वर बिन मख़्रमा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दे क़ारी और अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम थे। शाम को ये लोग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जमा होते और दिन भर की सारी कारगुज़ारी सुनाते।

इनमें से हर एक आदमी मदीना के एक किनारे पर मुक़र्रर था और ये देहाती लोग सनीयतुल वदाअ के शुरू से लेकर राइज क़िला, बनू हारिसा, बनू अब्दुल अशह्ल, बक़ीअ और बनू क़ुरैज़ा तक ठहरे हुए थे और इनमें से कुछ बनू सलिमा के इलाक़े में भी ठहरे हुए थे। बहरहाल ये लोग मदीना मुनव्वरा के बाहर चारों ओर ठहरे हुए थे।

एक दिन जब ये देहाती लोग हज़रत उमर रज़ि० के यहां खाना खा चुके, तो मैंने हज़रत उमर रज़ि० को यह फ़रमाते हुए सुना कि हमारे यहां जो रात का खाना खाते हैं, उनकी गिनती करो। चुनांचे अगली रात

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 33,

गिनती की तो उनकी तायदाद सात हज़ार थी।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वे घराने जो यहां नहीं आते हैं, उनकी और बीमारों और बच्चों की भी गिनती करो। उनको गिना तो उनकी तायदाद चालीस हज़ार थी।

फिर कुछ रातें और गुज़रीं, तो लोग और ज़्यादा हो गए तो हज़रत उमर रज़ि० के फ़रमाने पर दोबारा गिना गया, तो जिन लोगों ने हज़रत उमर रज़ि० के यहां रात का खाना खाया था, वह दस हज़ार थे और दूसरे लोग पचास हज़ार थे। यह सिलसिला यों ही चलता रहा, यहां तक कि अल्लाह ने बारिश भेज दी और क़हत दूर फ़रमा दिया।

जब ख़ूब बारिश हो गई, तो मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन इन्तिज़ामी लोगों में से हर एक की क़ौम के ज़िम्मे यह काम लगाया कि इन आने वाले लोगों में से जो उनके इलाक़े में ठहरे हुए हैं, उनको उनके देहात की तरफ़ वापस भेज दें और उन्हें रास्ते का खाना और देहात तक जाने के लिए सवारियां भी दीं और मैंने देखा कि ख़ुद हज़रत उमर रज़ि० भी उन्हें भेजने में लगे हुए थे। इन क़हत वाले इलाक़ों में मौतें भी बहुत हुई थीं। मेरे ख़्याल में इनमें से दो तिहाई लोग मर गए होंगे और एक तिहाई बचे होंगे।

हज़रत उमर रज़ि० की बहुत सारी देगें थीं। पकाने वाले लोग सुबह तहज्जुद में उठकर इन देगों में कुरकूर (एक क़िस्म का दलिया) पकाते, फिर सुबह यह दलिया बीमारों को खिला देते, फिर आटे में घी मिलाकर एक क़िस्म का खाना पकाते। हज़रत उमर रज़ि० के कहने पर बड़ी-बड़ी देगों में तेल डालकर आग पर इतना जोश दिया जाता कि तेल की गर्मी और तेज़ी, चली जाती। फिर रोटी का सरीद बनाकर उसमें यह तेल सालन के तौर पर डाल दिया जाता। (चूंकि अरब तेल इस्तेमाल करने के आदी नहीं थे) इसलिए तेल इस्तेमाल करने से उनको बुख़ार हो जाता था।

अकाल के इस पूरे ज़माने में हज़रत उमर रज़ि० ने न अपने किसी बेटे के यहां खाना खाया और न अपनी किसी बीवी के यहां, बल्कि इन अकाल के मारे लोगों के साथ ही रात का खाना खाते रहे, यहां तक कि

अल्लाह ने (बारिश भेजकर) इंसानों को ज़िंदगी अता फ़रमाई ।[1]

हज़रत फ़िरास वैलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिस्र से जो ऊंट भेजे थे, उनमें से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रोज़ाना बीस ऊंट ज़िब्ह करके अपने दस्तरख़्वान पर (लोगों को) खिलाते थे ।[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु एक रात गश्त कर रहे थे, तो वह एक औरत के पास से गुज़रे जो अपने घर के दर्मियान में बैठी हुई थी और उसके आस-पास में बच्चे रो रहे थे और एक देगची पानी से भरकर आग पर रखी हुई थी। हज़रत उमर रज़ि० ने दरवाज़े के क़रीब आकर कहा, ऐ अल्लाह की बन्दी ! ये बच्चे क्यों रो रहे हैं ?

उस औरत ने कहा, भूख की वजह से रो रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह देगची आग पर कैसे रखी हुई है ?

उस औरत ने कहा, बच्चों को बहलाने के लिए पानी भरकर रखी हुई है, ताकि बच्चे सो जाएं और मैंने बच्चों से कह रखा है कि इसमें कुछ है।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे, फिर जिस घर में सदक़े का माल रखा हुआ था, वहां आए और एक बोरा लेकर उसमें कुछ आटा, चर्बी, घी, खजूरें, कुछ कपड़े और दिरहम डाले, यहां तक कि वह पूरा भर गया, फिर कहा, ऐ अस्लम ! यह बोरा उठाकर मेरे ऊपर रख दो। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपकी जगह मैं उठा लेता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे कहा, ऐ अस्लम ! तेरी मां मरे, मैं ही इसे उठाऊंगा, क्योंकि आख़िरत में इनके बारे में मुझसे ही पूछा जाएगा। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ख़ुद ही उसे उठाकर उस औरत के घर लाए और देगची लेकर उसमें आटा और चर्बी और खजूरें डालीं, फिर (आग पर उसे रखकर) ख़ुद ही उसे अपने हाथ से हिलाने लग गए और देगची

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 316,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 387

के नीचे (आग को) फूंक मारने लग गए। मैं कितनी देर देखता रहा कि धुंवा हज़रत उमर रज़ि० की दाढ़ी के दर्मियान से निकल रहा है, यहां तक कि उनके लिए खाना पक गया। फिर अपने हाथ से खाना डालकर इन बच्चों को खिलाने लगे, यहां तक कि बच्चों का पेट भर गया। फिर घर से बाहर आकर घुटनों के बल नर्मी के साथ बैठ गए, लेकिन मुझ पर ऐसा रौब छा गया कि मैं डर के मारे उनसे बात न कर सका।

हज़रत उमर रज़ि० ऐसे ही बैठे रहे, यहां तक कि बच्चे खेल-कूद में लगकर हंसने लगे, तो हज़रत उमर रज़ि० उठे और कहने लगे, ऐ अस्लम! तुम जानते हो, मैं बच्चों के सामने क्यों बैठा?

मैंने कहा, नहीं। उन्होंने कहा, मैंने उनको रोते हुए देखा था, मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि इन बच्चों को हंसते हुए देखे बग़ैर ही छोड़कर चला जाऊं। जब वे हंसने लगे, तो मेरा दिल ख़ुश हो गया।[1]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक रात मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हर्रा-वाक़िम (मदीना के एक इलाक़े का नाम है) की ओर निकला। जब हम सिरार नामी जगह पर पहुंचे तो हमें आग जलती हुई नज़र आई, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अस्लम! यह कोई क़ाफ़िला है जो रात हो जाने की वजह से यहीं ठहर गया है, चलो इनके पास चलते हैं। हम उनके पास गए तो हमने देखा कि एक औरत है, जिसके पास उसके बच्चे भी हैं। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[2]

खाना बांटना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं (दूमतुल जन्दल नामी जगह के बादशाह) उकैदिर ने हलवे का भरा हुआ एक घड़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदया भेजा। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप लोगों के पास से गुज़रे और आप उनमें से हर एक

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 415,
2. बिदाया, भाग 7, पृ० 136, तबरी, भाग 5, पृ० 20

को हलवे का टुकड़ा देते जा रहे थे, चुनांचे हज़रत जाबिर रज़ि० को भी एक टुकड़ा दिया। फिर उनके पास वापस आकर उनको एक और टुकड़ा दिया। हज़रत जाबिर रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप मुझे एक बार तो दे चुके हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दूसरा टुकड़ा हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की बेटियों यानी तुम्हारी बहनों के लिए दिया है।[1]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, दूमतुल जन्दल के बादशाह उगैदिर ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हलवे का एक घड़ा हदया में भेजा, जिसे तुमने देखा था, और अल्लाह की क़सम! उस दिन ख़ुद हुज़ूर सल्ल० को और आपके घरवालों को उस घड़े की ज़रूरत थी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आपने एक आदमी से फ़रमाया तो वह उस घड़े को लेकर सहाबा रज़ि० के पास गया।

वह जिस आदमी के पास पहुंचता, वह घड़े में हाथ डालकर उसमें से हलवा निकाल लेता और फिर उसे खा लेता। चुनांचे वह हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के पास पहुंचा, तो उन्होंने हाथ डाला (और उसमें से दो बार लिया) और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! और लोगों ने तो एक बार लिया है और मैंने दो बार लिया है। आपने फ़रमाया (कोई बात नहीं) तुम ख़ुद भी खा लो और अपने घरवालों को भी खिलाओ।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० में खजूरें बांटीं और हर एक को सात-सात खजूरें दीं, जिनमें एक बग़ैर गुठली वाली घटिया खजूर भी थी जो मुझे उन तमाम खजूरों से ज़्यादा अच्छी लगी, क्योंकि वह सख़्त थी, इसलिए उसके चबाने में देर लगी और मैं उसे काफ़ी देर तक चबाता रहा।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 397, हैसमी, भाग 5, पृ० 44,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 47
3. बुख़ारी

न सल्लम की ख़िदमत में कुछ खजूरें लाई गईं। आप इन्हें सहाबा रज़ि० में बांटने लगे और आप इस तरह बैठकर वे खजूरें जल्दी-जल्दी खा रहे थे, जैसे कि अभी उठने वाले हों (किसी ज़रूरी काम से कहीं जाना होगा, इसलिए इत्मीनान से बैठकर न खाईं।)[1]

हज़रत लैस बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में रमादा वाले साल में मदीना मुनव्वरा में लोगों को ज़बरदस्त अकाल की वजह से बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ी, चुनांचे उन्होंने मिस्र हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

'अल्लाह के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की ओर से नाफ़रमान की तरफ़ जो आस के बेटे हैं, सलाम हो, अम्मा बादु ! ऐ अम्र ! मेरी जान की क़सम ! जब तुम खुद और तुम्हारे साथी पेट भरकर खा रहे हों, तो फिर तुम्हें इसकी क्या परवाह कि मैं और मेरे साथी हलाक हो रहे हैं। हमारी मदद करो, हमारी मदद करो।' (चूंकि हज़रत उमर रज़ि० का लेहजा तंबीह और इताब का है, इसलिए हज़रत अम्र को नाफ़रमान से ख़िताब किया और अपनी जान की क़सम खाने का अरबों में आम रिवाज था, लेकिन इससे क़सम मुराद नहीं होती थी, बल्कि ताकीद मक़्सूद होती थी।)

हज़रत उमर रज़ि० अपने आख़िरी जुम्ले को बार-बार दोहराते रहे। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने जवाब में यह मज़्मून लिखा—

'अल्लाह के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में अम्र बिन आस की तरफ़ से। अम्मा बादु मैं मदद के लिए हाज़िर हूं। मैं मदद के लिए हाज़िर हूं। मैं आपकी ख़िदमत में ग़ल्ले का इतना बड़ा क़ाफ़िला भेज रहा हूं जिसका पहला ऊंट आपके पास मदीना में होगा और उसका आख़िरी ऊंट मेरे पास मिस्र में होगा। वस्सलामु अलैक रहमतुल्लाहि व बरकातूहू०

चुनांचे हज़रत अम्र रज़ि० ने बहुत बड़ा क़ाफ़िला भेजा, जिसका

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 180

पहला ऊंट मदीना में था और आख़िरी मिस्र में और ऊंट के पीछे ऊंट चल रहा था। जब यह क़ाफ़िला हज़रत उमर रज़ि० के पास पहुंचा तो आपने ख़ूब दिल खोलकर लोगों में बांट दिया और यह तै किया कि मदीना मुनव्वरा और उसके आस-पास के हर घर में एक ऊंट मय उस पर लदे हुए सारे अनाज के दिया जाए और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० को लोगों में सामान बांटने के लिए भेजा।

चुनांचे इन लोगों ने हर घर में एक ऊंट मय उस पर लदे हुए ग़ल्ले के दिया, ताकि वह ग़ल्ला भी इस्तेमाल करें और ऊंट ज़िब्ह करके उसका गोश्त खाएं और उसकी चर्बी का सालन बना लें और उसकी खाल से जूते बना लें और जिस बोरी में ग़ल्ला है, उसे अपनी ज़रूरत पर लिहाफ़ वग़ैरह बनाकर इस्तेमाल करें। इस तरह अल्लाह ने ख़ूब वुसअत अता फ़रमाई।

इसके बाद रिवायत करने वाले ने और लम्बी हदीस बयान की है, जिसमें यह मज़्मून है कि मदीना मुनव्वरा और मक्का मुकर्रमा तक ग़ल्ला पहुंचाने के लिए नील नदी से लाल सागर तक एक नहर खोदी गई।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि इसी वाक़िए को इस तरह बयान करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने रमादा वाले (अकाल के) साल में हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा।

फिर क़िस्से को बयान करने के बाद हज़रत अस्लम रज़ि० कहते हैं, जब इस क़ाफ़िले का पहला हिस्सा मदीना मुनव्वरा पहुंचा तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर फ़रमाया, यह ऊंट लेकर तुम नज्द चले जाओ और वहां के रहने वालों में से जितनों को तुम मेरे पास सवारी पर ला सको, उनको मेरे पास ले आओ और जिनको न ला सको, उनमें हर घर को एक ऊंट मय उस पर लदे हुए अनाज के दे दो और

---

1. इब्ने अब्दुल हकम

उनसे कह दो कि दो चादरें तो पहन लें और ऊंट को ज़िब्ह करके उसकी चर्बी को पिघला कर तेल बना लें और गोश्त को काट कर सुखा लें और उसकी खाल से जूती बना लें और कुछ गोश्त, कुछ चर्बी, कुछ और मुट्ठी भर आटा लेकर उसे पका लें और उसे खा लें। इस तरह गुज़ारा करते रहें, यहां तक कि अल्लाह उनके लिए और रोज़ी का इन्तिज़ाम फ़रमा दें, लेकिन हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने इस काम के लिए जाने से माज़रत कर दी (यानी मना कर दिया)।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तुमको फिर मौत तक इतने बड़े सवाब वाले काम का मौक़ा नहीं मिल सकेगा। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एक और आदमी शायद हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया, लेकिन उन्होंने भी जाने से इंकार कर दिया।

फिर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। (वह जाने के लिए तैयार हो गए) और चले गए।

आगे उन्होंने हदीस ज़िक्र की जिसमें यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को हज़ार दीनार दिए जो उन्होंने वापस कर दिए, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० के कुछ कहने पर आख़िर हज़रत अबू उबैदह ने क़ुबूल कर लिए।[1]

अंसार सहाबियों के इकराम और ख़िदमत के बाब में यह गुज़र चुका है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अंसार में और बनू ज़ुफ़र में अनाज बंटवाया।

जोड़े पहनाना और उनको बांटना

हज़रत हिब्बान बिन जज़ी सुलमी अपने बाप हज़रत जज़ी सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल करते हैं कि वह इस (सहाबी) क़ैदी को लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए (जिसे उनकी क़ौम ने क़ैद कर रखा था) हज़रत जज़ी वहां हुज़ूर सल्ल० के यहां मुसलमान हो गए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको दो चादरें पहनाने का इरादा

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 396,

फ़रमाया तो उनसे फ़रमाया कि तुम आइशा रज़ि० के पास जाओ, जो चादरें उनके पास हैं, उनमें से वह तुमको दो चादरें दे देंगी।

चुनांचे उन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह आपको हरा-भरा रखे। आपके पास जो चादरें हैं, उनमें से दो चादरें पसन्द करके मुझे दे दें, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने उनमें से दो चादरें मुझे देने का हुक्म फ़रमाया है।

हज़रत आइशा रज़ि० ने पीलू की लम्बी मिस्वाक बढ़ाते हुए फ़रमाया, यह और यह ले लो और अरब औरतें नज़र नहीं आती थीं, (क्योंकि वे परदा करती थीं और इसी वजह से हज़रत आइशा रज़ि० ने मिस्वाक से इशारा किया।)[1]

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद अपने बाप हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास यमन से जोड़े आए जो उन्होंने लोगों को पहना दिए। शाम को लोग वे जोड़े पहनकर आए, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० क़ब्रे अतहर और मिंबर शरीफ़ के दर्मियान बैठे हुए थे। लोग उनके पास आकर उनको सलाम करते और उनको दुआएं देते।

इतने में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी मां हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर से निकले और लोगों को फलांगते हुए आगे बढ़ रहे थे और उनके जिस्म पर इन जोड़ों में से कोई जोड़ा नहीं था। यह देखकर आप ग़मगीन और परेशान हो गए और आपकी पेशानी पर बल पड़ गए और फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! तुम लोगों को जोड़े पहनाकर मुझे ख़ुशी नहीं हुई (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० के नवासों को तो पहना नहीं सका)।

लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने अपनी रियाया को जोड़े पहनाकर अच्छा किया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं इस वजह से परेशान हूं कि ये दो

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 153,

लड़के लोगों को फलांगते हुए आ रहे थे और उनके जिस्म पर इन जोड़ों में से कोई जोड़ा नहीं है। ये जोड़े इन दोनों से बड़े हैं और ये दोनों उन जोड़ों से छोटे हैं। (इस वजह से उनको जोड़े नहीं दिए), फिर उन्होंने यमन के गर्वनर को ख़त लिखा कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन के लिए जल्दी से दो जोड़े भेजो। चुनांचे उन्होंने दो जोड़े भेजे जो हज़रत उमर रज़ि० ने इन दोनों को पहना दिए।[1]

और अंसार के इकराम के बाद में लोगों में जोड़े बांटने के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्सा गुज़र चुका है और औरतों के लड़ाई करने के बाब में यह भी गुज़र चुका है कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा को इसलिए एक बड़ी चादर दी थी कि उन्होंने उहुद की लड़ाई के दिन लड़ाई की थी।

हज़रत मुहम्मद बिन सलाम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत शिफ़ा बिन्त अब्दुल्लाह अदवीया रज़ियल्लाहु अन्हा को पैग़ाम भेजा कि सुबह के वक़्त मेरे पास आना। वह फ़रमाती हैं, मैं सुबह के वक़्त हज़रत उमर रज़ि० के यहां गई, तो मुझे उनके दरवाज़े पर हज़रत आतिका बिन्त असीद बिन अबिल ऐस रज़ियल्लाहु अन्हा मिलीं। फिर हम दोनों अन्दर गईं। वहां हमने कुछ देर बात की। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एक चादर मंगवाकर हज़रत आतिका रज़ि० को दी, फिर एक और चादर मंगवाई जो पहली से कम दर्जे की थी, वह मुझे दी।

मैंने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! मैं इनसे पहले इस्लाम लाई हूं और मैं आपकी चचेरी बहन हूं और यह नहीं हैं और आपने मुझे पैग़ाम भेजकर बुलाया है और यह ख़ुद आई हैं। (इन तमाम बातों की वजह से बढ़िया चादर मुझे मिलनी चाहिए)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने यह चादर तुम्हारे लिए ही उठाकर

1 कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 106,

रखी थी, लेकिन जब तुम दोनों इकट्ठी हुईं तो मुझे यह याद आया कि उनकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिश्तेदारी तुमसे ज़्यादा क़रीब की है (और हुज़ूर सल्ल० की रिश्तेदारी मेरी रिश्तेदारी से ज़्यादा दर्जा रखती है, इसलिए मैंने उन्हें बढ़िया चादर दी।)[1]

हज़रत अस्बग़ बिन नुबाता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे आपसे एक काम है, जिसे मैं आपके सामने पेश करने से पहले अल्लाह के सामने पेश कर चुका हूं। अगर आप मेरा वह काम कर देंगे, तो मैं अल्लाह की भी तारीफ़ करूंगा और आपका भी शुक्रिया अदा करूंगा और अगर आपने वह काम न किया तो भी मैं अल्लाह की तारीफ़ करूंगा, और आपको माज़ूर समझूंगा, यह काम आपके बस में नहीं है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तुम अपना काम ज़मीन पर लिखकर मुझे बता दो, क्योंकि ज़ुबान से मांगने की ज़िल्लत मैं तुम्हारे चेहरे पर देखना पसन्द नहीं करता। चुनांचे उसने ज़मीन पर लिखा, मैं ज़रूरतमंद हूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, एक जोड़ा मेरे पास लाओ। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने वह जोड़ा उस आदमी को दे दिया।

उस आदमी ने लेकर वह जोड़ा पहन लिया, फिर वह हज़रत अली रज़ि० की तारीफ़ में ये शेर पढ़ने लगा—

كَسَوْتَنِيْ حُلَّةً تَبْلَى مَحَاسِنُهَا   فَسَوْفَ أَكْسُوْكَ مِنْ حُسْنِ الثَّنَا حُلَلاً

'आपने तो मुझे एक ऐसा जोड़ा पहनाया है, जिसकी ख़ूबियां पुरानी होकर ख़त्म हो जाएंगी, और मैं आपको अच्छी तारीफ़ के (ऐसे) जोड़े पहनाऊंगा, (जिनकी ख़ूबियां खत्म न होंगी।)

إِنْ نِلْتَ حُسْنَ ثَنَائِيْ نِلْتَ مَكْرُمَةً   وَلَسْتَ تَبْغِيْ بِمَا قَدْ قُلْتُهُ بَدَلاً

'आपको मेरी अच्छी तारीफ़ से बड़ी इज़्ज़त हासिल होगी और मैंने

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 356,

जो कुछ कहा है, आप उसके बदले में कुछ नहीं चाहते हैं।'

إِنَّ الثَّنَاءَ لَيُحْيِيْ ذِكْرَ صَاحِبِهِ   كَالْغَيْثِ يُحْيِيْ نَدَاهُ السَّهْلَ وَالْجَبَلَا

'तारीफ़ तारीफ़ वाले के ज़िक्र को इस तरह ज़िंदा रखती है जिस तरह वर्षा की नमी मैदानी और पहाड़ी इलाक़ों को ज़िंदा करती है।'

'जिस भलाई के काम की अल्लाह तुम्हें तौफ़ीक़ दे, तुम ज़िंदगी भर उसे करते रहो और बे-रग़बती से उसे मत छोड़ो, क्योंकि हर बन्दे को अपने किए हुए कामों का बदला मिलेगा।'

(ये शेर सुनकर) हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे पास दीनार लाओ। चुनांचे आपके पास सौ अशरफ़ियां लाई गईं। आपने वे अशरफ़ियां उस आदमी को दे दीं। हज़रत असबग़ कहते हैं, मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप इसे एक जोड़ा और सौ दीनार दे रहे हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हां, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि लोगों के पास उनके दर्जे के मुताबिक़ मामला करो और इस आदमी का मेरे नज़दीक यही दर्जा है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक मांगने वाला आया (और उसने कुछ मांगा।) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उससे कहा, क्या तुम इस बात की गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं?

उसने कहा, जी हां।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने पूछा, रमज़ान के रोज़े रखते हो?

उसने कहा, जी हां।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, तुमने मांगा है और मांगने वाले का हक़ होता है और यह हम पर हक़ है कि हम तुम्हारे साथ एहसान करें। फिर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उसे एक कपड़ा दिया और फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुसलमान भी किसी

1. कंज़, भाग 3, पृ० 324.

मुसलमान को कपड़ा पहनाता है, तो जब तक उसके जिस्म पर उस कपड़े का एक टुकड़ा रहेगा, उस वक़्त तक वह पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेगा।[1]

मुजाहिदों को खाना खिलाना

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक फ़ौज रवाना की, जिसके अमीर हज़रत क़ैस बिन साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुमा थे। सफ़र में इन लोगों को फ़ाक़ा की नौबत आ गई, तो हज़रत क़ैस ने अपने साथियों के लिए नौ ऊंट ज़िब्ह कर दिए।

जब ये लोग मदीना मुनव्वरा वापस आए तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को यह क़िस्सा सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सख़ावत तो इस घराने की ख़ास ख़ूबी है।[2]

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज फ़रमाते हैं, (जब हज़रत क़ैस बिन साद रज़ि० नौ ऊंट ज़िब्ह करने लगे, तो) हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर हज़रत क़ैस के पास आए और उनसे कहा, मैं आपको क़सम देकर कहता हूं कि आप ऊंट ज़िब्ह न करें। (इससे ऊंट कम हो जाएंगे और सफ़र में परेशानी होगी) लेकिन फिर भी उन्होंने ज़िब्ह कर दिए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सारा क़िस्सा मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया, अरे यह तो सख़ी घर का आदमी है और यह ग़ज़वा ख़बत का वाक़िया है जिसमें सहाबा ने ख़बत यानी पेड़ों के पत्ते खाए थे।[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक बार हज़रत क़ैस बिन साद बिन उबाद

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 147,
2. इब्ने असाकिर
3. मिंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 260,

रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रे। उस वक़्त हमें सख़्त भूख लगी हुई थी। उन्होंने हमारे लिए सात ऊंट ज़िब्ह किए। (फिर हमने सफ़र किया) और समुद्र के किनारे हमने पड़ाव डाला। वहां हमें एक बहुत बड़ी मछली मिली। हम तीन दिन तक उसका गोश्त खाते रहे। हमने उसमें से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बहुत सारी चर्बी निकाली और अपने मश्कीज़ों और बोरियों में भर ली और हम वहां से चलकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे और आपको यह क़िस्सा सुनाया और यह भी साथियों ने कहा, अगर हमें यक़ीन होता कि मछली का गोश्त हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचने तक ख़राब नहीं होगा तो हम अपने साथ ज़रूर लाते।[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम देश तशरीफ़ ले गए, तो उनके पास हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० के पास फ़ौजों के अमीर बैठे हुए थे, तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! ऐ उमर रज़ि० !

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह उमर रज़ि० हाज़िर है। (कहो, क्या कहते हो ?)

हज़रत बिलाल रज़ि० ने कहा, आप इन लोगों और अल्लाह के दर्मियान वास्ता हैं, लेकिन आपके और अल्लाह के दर्मियान कोई नहीं है। आपके सामने और दाएं-बाएं जितने लोग बैठे हुए हैं, आप इनको अच्छी तरह देखें, क्योंकि अल्लाह की क़सम, ये सब जितने आपके पास आए हुए हैं, ये सब परिंदों का गोश्त खाते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुमने ठीक कहा है और जब तक ये लोग मुझे 'इस बात की ज़मानत नहीं देंगे कि वे (अपनी फ़ौज के) हर मुसलमान को दो-मुद्द (पौने दो सेर) गेहूं और उसके मुनासिब मिक़्दार में सिरका और तेल दिया करेंगे, उस वक़्त तक मैं इस जगह से नहीं उठूंगा।

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 37

सबने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हम इसकी ज़मानत देते हैं, यह हमारे ज़िम्मे है, क्योंकि अल्लाह ने माल में बड़ी कसरत और वुस्अत अता फ़रमा रखी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा फिर ठीक है। (अब मैं मज्लिस से उठता हूं और आप लोग जा सकते हैं।)[1]

नबी करीम सल्ल० के ख़र्च-इख़राजात की क्या सूरत थी?

हज़रत अब्दुल्लाह हौज़नी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुअज़्ज़िन हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से हलब में मेरी मुलाक़ात हुई। मैंने अर्ज़ किया, ऐ बिलाल! आप ज़रा मुझे यह बताएं कि हुज़ूर सल्ल० के ख़र्चे की क्या सूरत थी?

उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के पास कुछ होता तो था नहीं। आपके भेजे जाने से लेकर आपकी वफ़ात तक यह ख़िदमत मेरे सुपुर्द रही, जिसकी सूरत यह थी कि जब कोई मुसलमान आपके पास आता और आप उसे ज़रूरतमंद समझते तो आप इर्शाद फ़रमा देते, मैं जाकर कहीं से क़र्ज़ लेकर चादर और खाने की कोई चीज़ ख़रीद लाता और चादर उसे पहना देता और खाना खिला देता।

एक बार एक मुश्रिक मुझे सामने से आता हुआ मिला। उसने कहा, ऐ बिलाल! मुझे ख़ूब वुसअत हासिल है, तुम किसी से क़र्ज़ न लिया करो, जब ज़रूरत हो, मुझसे ही लिया करो। मैंने उसी से क़र्ज़ लेना शुरू कर दिया।

एक दिन मैं वुज़ू करके अज़ान देने के लिए खड़ा ही हुआ था कि वह मुश्रिक ताजिरों की एक जमाअत के साथ आया और मुझे देखकर कहने लगा, ओ हबशी!

मैंने कहा, मैं हाज़िर हूं, (क्या कहते हो?)

वह बड़ी कड़ुवाहट के साथ मिला और बहुत बुरा-भला कहने लगा।

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 318, हैसमी, भाग 5, पृ० 213,

कहने लगा तुम्हें मालूम है कि महीने में कितने दिन बाक़ी हैं?

उसने कहा, बहुत जल्द ख़त्म होने वाला है।

उसने कहा, चार दिन बाक़ी हैं। अगर तूने इस मुद्दत में क़र्ज़ा अदा न किया, तो मैं तुझे इसके बदले में ग़ुलाम बना लूंगा। मैंने तुमको यह जो क़र्ज़ा दिया है, वह तुम्हारी या तुम्हारे साथी की बुज़ुर्गी की वजह से नहीं दिया है, बल्कि इसलिए दिया है ताकि तुम मेरे ग़ुलाम बन जाओ। फिर तुम पहले जिस तरह बकरियां चराते थे, उसी तरह तुम्हें बकरियां चराने में लगा दूं।

(यह कहकर वह तो चला गया) और ऐसी बातें सुनकर लोगों के दिलों में जो ख़्याल पैदा होते हैं, वे सब मेरे दिल में भी पैदा हुए। फिर मैंने जाकर अज़ान दी। जब मैं इशा की नमाज़ पढ़ चुका और हुज़ूर सल्ल० भी अपने घर तशरीफ़ ले गए, तो मैंने अन्दर हाज़िर होने की इजाज़त मांगी। आपने इजाज़त दे दी।

मैंने अन्दर जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, जिस मुश्रिक का मैंने आपसे तज़्किरा किया था कि मैं उससे क़र्ज़ा लेता रहता हूं, आज उसने आकर मुझे बहुत बुरा-भला कहा है और इस वक़्त न आपके पास उसके क़र्ज़े का फ़ौरी इन्तिज़ाम है और न मेरे पास है और वह मुझे ज़रूर रुसवा करेगा, इसलिए आप मुझे इजाज़त दे दें। मैं इन मुसलमान क़बीलों में से किसी क़बीले में चला जाता हूं। जब अल्लाह अपने रसूल सल्ल० को इतना दे देंगे जिससे यह मेरा क़र्ज़ा अदा हो सके, तो मैं फिर आ जाऊंगा।

यह अर्ज़ करके मैं अपने घर आया और अपनी तलवार, थैला, नेज़ा और जूती अपने सिरहाने रखकर पूरब की ओर मुंह करके सुबह के इन्तिज़ार में लेट गया। थोड़ी देर नींद आती फिर फ़िक्र की वजह से मेरी आंख खुल जाती, लेकिन जब मैं देखता कि अभी रात बाक़ी है, तो मैं दोबारा सो जाता।

जब सुबह काज़िब हो गई, तो मैंने जाने का इरादा किया ही था कि इतने में एक साहब ने आकर आवाज़ दी, ऐ बिलाल! हुज़ूर सल्ल० की

ख़िदमत में जल्दी चलो। मैं फ़ौरन चल पड़ा। वहां पहुंचकर देखा कि चार ऊंटनियां सामान से लदी हुई बैठी हैं।

मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी की इजाज़त मांगी, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, ख़ुश हो जाओ। अल्लाह ने तुम्हारे क़र्ज़े की अदाएगी का इन्तिज़ाम कर दिया है। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

फिर आपने फ़रमाया, क्या तुम्हारा गुज़र बैठी हुई चार ऊंटनियों पर नहीं हुआ है?

मैंने कहा, जी हुआ है।

आपने फ़रमाया, वह सामान समेत तुम्हारे हवाले हैं, तुम यह ले लो और अपना क़र्ज़ा अदा कर लो। मैंने देखा तो उन पर कपड़ा और अनाज लदा हुआ था, जो फ़दक के रईस ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हदया में भेजा था। चुनांचे मैंने वे ऊंटनियां लीं और उनका सारा सामान उतारा और उनके सामने चारा डाला। फिर मैंने फ़ज्र की अज़ान दी।

जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो मैं बक़ीअ चला गया और वहां जाकर दोनों कानों में उंगलियां डालकर ऊंची आवाज़ से यह एलान किया कि जिसका भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे क़र्ज़ा है, वह आ जाए। चुनांचे वह कपड़ा और ग़ल्ला ख़रीदारों के सामने पेश करता और उसे बेचकर क़र्ज़ा अदा करता रहा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० पर धरती में कुछ भी क़र्ज़ा बाक़ी न रहा, बल्कि दो या डेढ़ ऊक़िया चांदी बच गई, यानी अस्सी या साठ दिरहम। इसी में दिन का अक्सर हिस्सा गुज़र चुका था।

फिर मैं मस्जिद गया, तो आप वहां अकेले बैठे हुए थे। मैंने आपको सलाम किया। आपने मुझसे पूछा, जो काम तुम्हारे ज़िम्मे था, उसका क्या हुआ?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल के ज़िम्मे जितना क़र्ज़ था, वह सब अल्लाह ने उतरवा दिया, अब कुछ बाक़ी नहीं रहा।

आपने फ़रमाया, उसमें से कुछ बचा है?

मैंने कहा, जी हां, दो दीनार बचे हैं। (क़र्ज़ अदा करने के बाद दो या डेढ़ ऊक़िया चांदी बची थी, लेकिन वहां से मस्जिद आते-आते हज़रत बिलाल रज़ि० लोगों को देते चले आए होंगे, इसलिए जब मस्जिद में पहुंचे, तो सिर्फ़ दो दीनार बाक़ी रह गए।)

आपने फ़रमाया, उन्हें भी बांट दो, ताकि मुझे राहत हासिल हो। जब तक तुम उन्हें ख़र्च करके मुझे राहत नहीं पहुंचा देते, मैं उस वक़्त तक अपने किसी घर नहीं जाऊंगा। चुनांचे उस दिन हमारे पास कोई नहीं आया (और वह ख़र्च न हो सके) तो हुज़ूर सल्ल० ने वह रात मस्जिद में गुज़ारी और अगला दिन भी सारा मस्जिद ही में गुज़ारा। शाम को दो सवार आए। मैं उन दोनों को ले गया और उन दोनों को कपड़े पहनाए और ग़ल्ला भी दिया। जब आप इशा से फ़ारिग़ हुए तो आपने मुझे बुलाया और फ़रमाया, जो तुम्हारे पास था उसका क्या बना?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह ने उसके ख़र्च करने की सूरत बनाकर आपकी राहत की शक्ल पैदा कर दी है।

आपने ख़ुश होकर फ़रमाया, अल्लाहु अकबर और अल्लाह का शुक्र अदा किया। आपको यह डर था कि कहीं ऐसा न हो कि आपको मौत आ जाए और यह बचा हुआ सामान आपके पास ही हो।

फिर वहां से आप चले और मैं भी आपके पीछे-पीछे चला। आप अपनी पाक बीवियों में से एक बीवी के पास गए और हर एक को अलग-अलग सलाम किया और फिर जिस घर में रात गुज़ारनी थी, वहां तशरीफ़ ले गए। यह थी हुज़ूर सल्ल० के ख़र्च-इख़राजात की सूरत जिसके बारे में तुमने पूछा था।[1]

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 55, कंज़, भाग 4, पृ० 39

माल के बांट देने का बयान

नबी करीम सल्ल० के ख़ुद माल बांट देने का और बांटने की शक्ल का बयान

हज़रत उम्मे सलिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फरमाती हैं, मैं ख़ूब जानती हूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल की मुबारक ज़िंदगी में (आपके घर में) सबसे ज़्यादा माल कब आया? एक बार रात के पहले हिस्से में आपके पास एक थैली आई जिसमें आठ सौ दिरहम और एक परचा था। वह थैली आपके पास भेज दी। उस रात मेरी बारी थी। आप इशा के बाद घर वापस तशरीफ़ लाए और हुजरा शरीफ़ में अपनी नमाज़ की जगह में नमाज़ शुरू कर दी।

मैंने आपके लिए और अपने लिए बिस्तर बिछाया हुआ था। मैं आपका इन्तिज़ार करने लगी, लेकिन आप बहुत देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। नमाज़ के बाद आप अपनी नमाज़ की जगह से बाहर तशरीफ़ लाए और फिर वहीं वापस चले गए और नमाज़ शुरू कर दी। इसी तरह बार-बार फ़रमाते रहे, यहां तक कि फ़ज्र की अज़ान हो गई। आपने मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ाई और फिर घर वापस तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, वह थैली कहां है जिसने आज सारी रात मुझे परेशान किए रखा? चुनांचे वह थैली मंगवाई और उसमें जो कुछ था, वह सब बांट दिया।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज रात आपने ऐसा काम किया जो आप कभी नहीं किया करते थे।

आपने फ़रमाया, मैं नमाज़ पढ़ता था, तो फिर मुझे उस थैली का ख़्याल आ जाता। मैं जाकर उसे देखता और फिर वापस आकर नमाज़ शुरू कर देता। (सारी रात इस वजह से न सो सका कि इतना ज़्यादा माल मेरे पास है तो मैं कैसे सो जाऊं। जब माल बंट गया, तब मुझे चैन आया।)[1]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अला

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 325

बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहरैन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अस्सी हज़ार भेजे। आपके पास इससे ज़्यादा माल न इससे पहले कभी आया और न कभी इसके बाद। आपने इर्शाद फ़रमाया, तो वे अस्सी हज़ार चटाई पर फैला दिए गए। इसके बाद नमाज़ के लिए अज़ान हो गई। (नमाज़ से फ़ारिग होकर) आप उस माल के पास झुककर खड़े हो गए। लोग आने लगे और हुज़ूर सल्ल० उनको देने लगे। उस दिन न आप गिनकर दे रहे थे और न तौल कर, बल्कि मुट्ठियां भरकर दे रहे थे।

इतनें में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने बद्र की लड़ाई के दिन अपना फ़िदया भी दिया था और अक़ील का भी दिया था, क्योंकि उस दिन अक़ील के पास कुछ माल नहीं था, इसलिए आप मुझे इस माल में से कुछ इनायत फ़रमाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ले लो। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० पर काले रंग की बेल-बूटे वाली चादर थी। उन्होंने उसे बिछाया और ख़ूब लप भर उसमें माल डाला, फिर उठाकर ले जाने लगे तो उठा न सके, तो उन्होंने सर उठाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह उठाकर मुझ पर रख दें। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कराए, यहां तक कि आपके मुबारक दांत नज़र आने लगे। आपने फ़रमाया, तुमने जितना माल लिया है, उसमें से कुछ वापस कर दो, जितना उठा सकते हो उतना ले लो।

चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया और जितना माल उठा सकते थे, उतना ले गए और जाते हुए फ़रमा रहे थे कि अल्लाह ने दो वायदे फ़रमाए थे। उनमें से एक तो अल्लाह ने पूरा फ़रमा दिया और दूसरे वायदे का मुझे पता नहीं कि क्या होगा और अल्लाह के वायदों का ज़िक्र क़ुरआन पाक की इस आयत में है— قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ (سورت انفال آيت ٧٠)

'आपके क़ब्ज़े में जो क़ैदी हैं, आप उनसे फ़रमा दीजिए कि अगर अल्लाह को तुम्हारे दिल में ईमान मालूम होगा तो जो कुछ (फ़िदए में) तुमसे लिया गया है, (दुनिया में) उससे बेहतर तुमको दे देगा और (आख़िरत में) तुमको बख़्श देगा और वाक़ई यह माल उस माल से बेहतर है जो (बद्र के मौक़े पर) मुझसे (फ़िदए में) लिया गया था, लेकिन मुझे यह मालूम नहीं कि अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत का क्या करेंगे।'[1]

(सूरः अंफ़ाल, आयत 70)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना और सबको बराबर-बराबर देना

हज़रत सह्ल अबी हस्मा रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे लोग फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का बैतुल माल (मदीना के मुहल्ला) सुख़ में था जोकि लोगों में मशहूर था और कोई आदमी उसका पहरा नहीं दिया करता था, तो उनसे अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा! क्या आप बैतुलमाल के पहरे के लिए किसी को मुक़र्रर नहीं फ़रमाते?

उन्होंने फ़रमाया, बैतुलमाल के बारे में किसी क़िस्म का ख़तरा नहीं है, (इसलिए पहरेदार मुक़र्रर करने की ज़रूरत नहीं।)

मैंने कहा, क्यों?

उन्होंने फ़रमाया, उसे ताला लगा हुआ है।

उनका तरीक़ा यह था कि जो कुछ उस बैतुलमाल में आता, वह सारा लोगों को दे देते, यहां तक कि बैतुलमाल में कुछ न बचता। फिर जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० सुख़ मुहल्ले से मदीना मुनव्वरा चले गए तो उन्होंने वहां उस घर में अपना बैतुलमाल भी मुंतक़िल कर लिया, जिसमें वह रहा करते थे। उनके पास क़बलीया वादियों की खानों से और क़बीला जुहैना की खानों से बहुत माल आया करते थे और उनकी ख़िलाफ़त के ज़माने में क़बीला बनू सुलैम की खान भी खुल गई थी,

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 329, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 9

वहां से भी ज़कात का माल आने लग गया था। यह सब कुछ बैतुलमाल में रखा जाता था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० सोने-चांदी के टुकड़े करवा कर लोगों में बांट दिया करते थे।

हर सौ आदमियों को एक मिक़्दार दिया करते थे, (जिसे वे आपस में बांट लिया करते) तमाम लोगों में वह माल बराबर-बराबर देते। आज़ाद, ग़ुलाम, मर्द, औरत, छोटे और बड़े सबको बराबर हिस्सा मिला करत था और कभी-कभी उस माल से ऊंट, घोड़े और हथियार ख़रीदकर अल्लाह के रास्ते में जाने वालों को दे दिया करते।

एक साल गर्म ऊनी चादरें खरीदी थीं, जो देहात से लाई गई थीं और सर्दी के मौसम में मदीना की बेवा औरतों में उन्होंने ये चादरें बांटी थीं।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया और वह दफ़न हो गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के मुक़र्रर किए हुए बैतुलमाल के निगरानों को बुलाया और उनको लेकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बैतुलमाल में गए। उनके साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हुमा और दूसरे लोग भी थे। इन लोगों ने जाकर बैतुलमाल को खोला तो उसमें न कोई दीनार मिला और न कोई दिरहम, अलबत्ता माल रखने का एक मोटा खुरदरा कपड़ा मिला, उसे झाड़ा तो उसमें से एक दिरहम मिला। यह देखकर इन लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के लिए यह दुआ फ़रमाई कि अल्लाह इन पर रहमत नाज़िल फ़रमाए।

मदीना मुनव्वरा में दिरहम व दीनार तौलने वाला एक आदमी था जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में तौलने का काम किया करता था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास जो माल आता था, वह उसे भी तौलता था। उससे पूछा गया कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास जो माल आता था, उसकी कुल मिक़्दार कितनी होगी?

उसने कहा, दो लाख।[1]

1. कंज़, भाग 3, पृ० 131,

हज़रत इस्माईल बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एक बार कुछ माल लोगों में बांटा और सबको बराबर हिस्सा दिया, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा ! आप बद्र वालों और दूसरे लोगों को बराबर रख रहे हैं ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, दुनिया तो गुज़ारे की चीज़ है और बेहतरीन गुज़ारे की चीज़ वह है जो दर्मियानी दर्जे की हो। (इसलिए इस दुनिया में तो मैंने सबको बराबर रखा है) और बद्र वालों को दूसरे लोगों पर जो फ़ज़ीलत हासिल है, उसका असर अज्र व सवाब में ज़ाहिर होगा (कि आख़िरत में उनका अज्र व सवाब बराबर नहीं होगा, बल्कि बद्र वालों का अज्र व सवाब दूसरों से ज़्यादा होगा।)[1]

हज़रत इब्ने अबी हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि और दूसरे लोग कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि वह (सब में माल बराबर-बराबर न बांटें, बल्कि) माल बांटने में लोगों में दर्जे मुक़र्रर करें (और जिसकी दीनी फ़ज़ीलतें जितनी ज़्यादा हों, उनको उतना ज़्यादा माल दें।)

इस पर उन्होंने फ़रमाया, लोगों की दीनी फ़ज़ीलतों का बदला तो अल्लाह (क़ियामत के दिन) अता फ़रमाएंगे। दुनिया की ज़रूरतों में सबके बीच बराबरी करना ही बेहतर है।[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाया गया तो उन्होंने लोगों में माल बराबर-बराबर बांट दिया, तो उनसे कुछ सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा ! अगर आप मुहाजिर व अंसार सहाबा किराम को दूसरों पर फ़ज़ीलत दें (और उनको दूसरों से ज़्यादा दें) तो यह ज़्यादा अच्छा होगा।

उन्होंने फ़रमाया, तुम लोग चाहते हो कि माल ज़्यादा देकर उनकी

1. अहमद,
2. कंज़, भाग 2, पृ०300

दीनी फ़ज़ीलतें उनसे ख़रीद लूं, (यह हरगिज़ मुनासिब नहीं है) माल के बंटवारे में इन सबको बराबर रखना एक को दूसरे पर तर्जीह देने से बेहतर है।

हज़रत ग़ुफ़रा रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत उमर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पहली बार माल बांटने लगे, तो उनसे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, शुरू के मुहाजिरीन और इस्लाम में बाज़ी ले जाने वालों को ज़्यादा दें, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं उनसे उनके इस्लाम में पहल करने की नेकी को (दुनिया के बदले में) ख़रीद लूं? (नहीं, ऐसे नहीं हो सकता) चुनांचे उन्होंने माल बांटा और सबको बराबर दिया।[1]

हज़रत ग़ुफ़रा रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत उमर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया तो बहरैन से माल आया तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने एलान फ़रमाया कि जिस आदमी का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िम्मे क़र्ज़ हो या हुज़ूर सल्ल० ने उसे कुछ देने का वायदा फ़रमा रखा हो, वह खड़ा होकर ले ले।

चुनांचे हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर कहा, हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया था, अगर मेरे पास बहरैन से माल आएगा, तो मैं तुम्हें तीन बार इतना दूंगा और दोनों हाथों से लप भरकर इशारा फ़रमाया था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, उठो और ख़ुद अपने हाथ से ले लो। चुनांचे उन्होंने एक बार लप भरकर लिया, उसे गिना गया तो वे पांच सौ दिरहम थे।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उन्हें और एक हज़ार गिनकर दे दो। (ताकि तीन लपें हो जाएं) इसके बाद लोगों में दस-दस दिरहम बांटे और फ़रमाया, यह तो वे वायदे पूरे हो रहे हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से किए थे। अगले साल इससे भी ज़्यादा

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 348,

माल आया, तो लोगों में बीस-बीस दिरहम बांटे और फिर भी कुछ माल बच गया, तो ग़ुलामों में पांच-पांच दिरहम बांटे और फ़रमाया, ये तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारी ख़िदमत करते हैं और तुम्हारे काम करते हैं, इसलिए हमने उनको भी कुछ दे दिया है।

इस पर लोगों ने अर्ज़ किया, अगर आप हज़रात मुहाजिर और अंसार सहाबा किराम को दूसरों से ज़्यादा दें तो यह ज़्यादा बेहतर होगा, क्योंकि ये पुराने हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां इन लोगों का ख़ास दर्जा था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, इन लोगों ने जो कुछ किया है, इसका बदला तो अल्लाह ही इनको देंगे। यह माल व मता तो बस गुज़ारे की चीज़ है। इसे बराबर-बराबर बांट देना कम-ज़्यादा देने से बेहतर है। आपने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में इसी पर अमल फ़रमाया। आगे उसी तरह की हदीस ज़िक्र की जैसे आगे आएगी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का अद्ल व इंसाफ़ और बराबर बांटना गुज़र चुका है। उसमें यह भी गुज़र चुका है कि हज़रत अली रज़ि० ने एक अरबी औरत और एक आज़ाद की हुई बांदी को बराबर कर दिया। इस पर उस अरबी औरत ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने उसको जितना दिया है, मुझे भी उतना ही दिया है, हालांकि मैं अरबी हूं और यह आज़ाद की हुई बांदी है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने अल्लाह की किताब में बहुत ग़ौर से देखा तो उसमें मुझे इस्माईल अलैहि० की औलाद को इस्हाक़ अलैहि० पर कोई फ़ज़ीलत नज़र नहीं आई।[1]

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना और पुरानों और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रिश्तेदारों को ज़्यादा देना

हज़रत ग़ुफ़रा रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत उमर रहमतुल्लाहि अलैहि पिछली हदीस जैसा मज़्मून बयान

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 127,

करते हैं और उसमें आगे यह भी है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा बनाया गया और अल्लाह ने उनके लिए जीतों के बड़े दरवाज़े खोले और उनके पास हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़माने से भी ज़्यादा माल आया, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस माल के बंटवारे में हज़रत अबूबक्र रज़ि० की और राय थी और मेरी और राय है और वह यह है कि जिसने (कुफ़्र की हालत में) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लड़ाई की और जिसने हुज़ूर सल्ल० का साथ देकर (काफ़िरों से) लड़ाई की, उन दोनों को मैं बराबर नहीं कर सकता।

चुनांचे उन्होंने अंसार और मुहाजिरीन को दूसरों से ज़्यादा देने का फ़ैसला किया और जो सहाबा बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे, उनके लिए पांच-पांच हज़ार मुक़र्रर किए और जो बद्री सहाबा से पहले इस्लाम लाए (लेकिन बद्र की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके) उनके लिए चार-चार हज़ार मुक़र्रर किए और हज़रत सफ़िया रज़ि० और हज़रत जुवैरिया रज़ि० के अलावा बाक़ी तमाम पाक बीवियों के लिए बारह-बारह हज़ार मुक़र्रर किए और इन दोनों के लिए छः छः हज़ार मुक़र्रर किए, (क्योंकि बाक़ी तमाम पाक बीवियां तो हमेशा आज़ाद ही रहीं, कभी बांदी न बनना पड़ा और इन दोनों को कुछ दिनों के लिए बांदी बनना पड़ा था।) इन दोनों ने छः-छः हज़ार लेने से इंकार कर दिया तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने बाक़ी पाक बीवियों के लिए बारह-बारह हज़ार इसलिए मुक़र्रर किए हैं कि इन सबने हिजरत की है (और आप दोनों ने नहीं की है।)

इन दोनों ने कहा, नहीं। आपने उनके लिए हिजरत की वजह से मुक़र्रर नहीं किए हैं, बल्कि उनके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ताल्लुक़ की वजह से इतने मुक़र्रर किए हैं और हमारा भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन जैसा ही ताल्लुक़ है।

हज़रत उमर रज़ि० ने इन दोनों की बात को मंज़ूर फ़रमा लिया और तमाम बीवियों को बराबर कर दिया। (यानी इन दोनों के लिए भी बारह-बारह हज़ार मुक़र्रर कर दिए) और हज़रत अब्बास बिन अब्दुल

मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास रिश्तेदारी थी, इस वजह से उनके लिए बारह हज़ार मुक़र्रर किए। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० के लिए चार हज़ार और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए पांच-पांच हजार मुक़र्रर किए। हुज़ूर सल्ल० (के नवासा होने) की रिश्तेदारी की वजह से हज़रत उमर रज़ि० ने इन दोनों को उन के वालिद (हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु) के बराबर दिया और (अपने बेटे) हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए तीन हज़ार मुक़र्रर किए।

उन्होंने अर्ज़ किया, अब्बा जान! आपने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० के लिए चार हज़ार मुक़र्रर किए हैं और मेरे लिए तीन हज़ार, हालांकि इनके वालिद (हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ियल्लाहु अन्हु) को ऐसी कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं है जो आपको हासिल न हो और ख़ुद उनको भी ऐसी कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं है जो मुझे हासिल न हो (इसलिए मुझे भी उनके बराबर दें।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, (उसे और उसके वालिद को) ऐसी फ़ज़ीलत है जो तुझे और तेरे वालिद को हासिल नहीं है और वह यह है कि) उसके वालिद तेरे वालिद से ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० के महबूब थे और वह ख़ुद तुमसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० के महबूब थे।

और जो मुहाजिरीन बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे, उनके बेटों के लिए दो-दो हज़ार मुक़र्रर किए। हज़रत उमर रज़ि० के पास से हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा गुज़रे तो फ़रमाया, इन्हें एक हज़ार और दे दो तो हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (बिन जह्श) रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अर्ज़ किया, आप इन्हें हमसे ज़्यादा क्यों देने लगे हैं? जो फ़ज़ीलत हमारे वालिदों को हासिल है, वही इनके वालिद को हासिल है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने इनके लिए दो हज़ार तो (इनके वालिद) हज़रत अबू सलमा रज़ि० की वजह से मुक़र्रर किए हैं और एक हज़ार इनको (इनकी मां) हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की वजह से देना चाहता हूं (क्योंकि वह बाद में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहतरम बीवी बन गई थीं) अगर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि०

जैसी तेरी मां है तो तुम्हें भी एक हज़ार और दे दूंगा।

हज़रत उस्मान बिन उबैदुल्लाह बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए आठ सौ मुक़र्रर किए। यह हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई हैं और हज़रत नज्र बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दो हज़ार मुक़र्रर किए तो हज़रत उमर से हज़रत तलहा ने कहा, कि आपके पास इसी जैसे हज़रत (उस्मान बिन उबैदुल्लाह रज़ि०) बिन उस्मान रज़ि० आए तो उसके लिए आपने आठ सौ मुक़र्रर किए और आपके पास अंसार का एक लड़का यानी हज़रत नज्र बिन अनस आया। उसके लिए आपने दो हज़ार मुक़र्रर कर दिए।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस लड़के यानी हज़रत नज्र के वालिद से मेरी मुलाक़ात उहुद की लड़ाई के दिन हुई। उन्होंने मुझसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में पूछा।

मैंने कहा, मेरा तो ख़्याल यही है कि हुज़ूर सल्ल० को (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) शहीद कर दिया गया है। यह सुनते ही उन्होंने अपने बाज़ू चढ़ाए और अपनी तलवार सौंत ली और कहा, अगर हुज़ूर सल्ल० को शहीद कर दिया गया है, तो क्या बात है, अल्लाह तो ज़िंदा है, उन पर तो मौत तारी नहीं हो सकती। (और हम जो कुछ कर रहे थे, वह अल्लाह की वजह से कर रहे थे) यह कहकर उन्होंने लड़ाई शुरू कर दी, यहां तक कि वह शहीद हो गए और यह यानी हज़रत उस्मान बिन उबैदुल्लाह के वालिद हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि० उस वक़्त बकरियां चरा रहे थे, तो तुम चाहते हो कि मैं दोनों को बराबर कर दूं? हज़रत उमर रज़ि० ने ज़िंदगी भर इसी उसूल पर अमल किया। आगे और मज़्मून ज़िक्र किया, जिसमें से कुछ मज़्मून बहुत जल्द आगे आएगा।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत इब्ने मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुहाजिरीन को पांच हज़ार वालों में और अंसार को चार हज़ार वालों में लिखा और मुहाजिरीन के जो बेटे बद्र की लड़ाई में

1. मज्मा, भाग 6, पृ० 4

शरीक नहीं हो सके उनको चार हज़ार वालों में लिखा। इनमें हज़रत उमर बिन अबी सलमा बिन अब्दुल असद मख़्ज़ूमी, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि०, हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जहश असदी और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, हज़रत इब्ने उमर रज़ि० उनमें से नहीं हैं और उनके ये-ये फ़ज़ाइल हैं। (यह उन सबसे पहले इस्लाम लाए हैं और यह उनसे अफ़ज़ल हैं, इसलिए उनको इनसे ज़्यादा दिया जाए।)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, अगर मेरा हक़ बनता है, तो मुझे दें, वरना न दें।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हज़रत इब्ने औफ़ रज़ि० से कहा, इब्ने उमर रज़ि० को पांच हज़ार वालों में लिख दो और मुझे चार हज़ार वालों में। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, मेरा मतलब यह नहीं था।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं और तुम दोनों पांच हज़ार वालों में इकट्ठे नहीं हो सकते।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों के लिए वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हुमा के लिए दो हज़ार वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया, फिर हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने भतीजे को हज़रत उमर रज़ि० के पास लाए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उसके लिए उससे कम वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया। हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने उस अंसारी के लिए मेरे भतीजे से ज़्यादा वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया है और यों उस अंसारी को मेरे भतीजे पर फ़ज़ीलत दे दी? (हालांकि मेरा भतीजा तो मुहाजिरों में से है।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, क्योंकि मैंने उस अंसारी के वालिद (हज़रत हंज़ला) को देखा है कि वह उहुद की लड़ाई के दिन अपनी तलवार से ही अपना बचाव कर रहे थे और तलवार दाएं-बाएं,

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 350, कंज़, भाग 2, पृ० 315

ऊपर-नीचे इस तरह तेज़ी से हिला रहे थे जैसे ऊंट अपनी दुम हिलाता है। (उनके पास बचाव के लिए ढाल भी न थी, तलवार ही से ढाल का काम ले रहे थे।)[1]

हज़रत नाशिरा बिन सुमइ यज़नी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जाबिया के दिन मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को लोगों में यह बयान करते हुए सुना कि अल्लाह ने मुझे उस माल का ख़ज़ानची और उसे बांटने वाला बनाया है बल्कि असल में तो ख़ुद अल्लाह ही बांटने वाले हैं। (अब माल बांटने में मेरे ज़ेहन में यह तर्तीब है कि) मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों से बांटना शुरू करूंगा और फिर उनके बाद लोगों में जो ज़्यादा बुज़ुर्ग हैं, उनको दूंगा।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत जुवैरिया रज़ि०, हज़रत सफ़िया रज़ि० और हज़रत मैमूना रज़ि० के अलावा बाक़ी तमाम पाक बीवियों के लिए दस-दस हज़ार मुक़र्रर किए, इस पर हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० हम पाक बीवियों के बीच हर चीज़ में बराबरी किया करते थे, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने तमाम पाक बीवियों का वज़ीफ़ा एक जैसा कर दिया, फिर फ़रमाया कि इनके बाद मैं अपने पहले के मुहाजिरीन साथियों को दे दूंगा, क्योंकि हमें अपने घरों से ज़ुल्म के साथ और ज़बरदस्ती निकाला गया है, फिर इनके बाद जो ज़्यादा बुज़ुर्ग होंगे, उनको दूंगा।

चुनांचे मुहाजिरीन में से जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए, उनके लिए पांच हज़ार मुक़र्रर किए और जो अंसारी बद्र की लड़ाई में शरीक हुए, उनके लिए चार हज़ार मुक़र्रर किए और उहुद की लड़ाई में शरीक होने वालों के लिए तीन हज़ार मुक़र्रर किए और फ़रमाया, जिसने पहले हिजरत की, उसे पहले दूंगा और जिसने बाद में हिजरत की, उसे बाद में दूंगा (इसलिए जिसे बाद में मिले, वह देनेवाले को मलामत न करे, बल्कि) अपने आपको इस बात पर मलामत करे कि उसने अपनी सवारी क्यों बिठाए रखी (और जल्दी हिजरत क्यों न की)?

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 319,

और मैं तुम्हें हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को माज़ूल करने (अलग करने) की वजहें बताना चाहता हूं। मैंने उनसे कहा था कि वह माल सिर्फ़ कमज़ोर मुहाजिरीन को दें, लेकिन उन्होंने ताक़तवर, हैसियत वालों और ज़्यादा बातें करने वालों को सारा माल दे दिया, इसलिए मैंने उन्हें हटाकर उनकी जगह हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर बना दिया है।

इस पर हज़रत अबू अम्र बिन हफ़्स रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अल्लह की क़सम ! ऐ उमर बिन ख़त्ताब ! आपने हटाने की जो वजह बताई है, वह ठीक नहीं है। आपने उस आदमी को हटाया है जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अमीर बनाया था और आपने उस तलवार को म्यान में रख दिया जिसे हुज़ूर सल्ल० ने सौंता था और आपने वह झंडा उतार दिया जिसे हुज़ूर सल्ल० ने गाड़ा था और आपके दिल में चचेरे भाई से जलन पैदा हो गई है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारी उनसे क़रीबी रिश्तेदारी है और अभी तुम नवउम्र हो और अपने चचेरे भाई की ख़ातिर नाराज़ हो रहे हो।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का लोगों को वज़ीफ़े देने के लिए रजिस्टर बनाना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां से आठ लाख दिरहम लेकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे पूछा, क्या लेकर आए हो ?

मैंने कहा, आठ लाख दिरहम।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तेरा भला हो, क्या यह पाकीज़ा माल है ?

मैंने कहा, जी हां। हज़रत उमर रज़ि० ने वह सारी रात जाग कर गुज़ारी। जब फ़ज्र की अज़ान हो गई तो उनसे उनकी बीवी ने कहा,

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 3, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 349,

आप आज रात क्यों नहीं सोए?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उमर बिन ख़त्ताब कैसे सो सकता है, जबकि उसके पास लोगों के लिए इतना ज़्यादा माल आया है कि इस्लाम की शुरूआत से लेकर आज तक कभी इतना नहीं आया। अगर उमर रज़ि० को इस हाल में मौत आ जाए कि यह माल उसके पास रखा हुआ हो और उसने उसे सही जगह खर्च न किया हो, तो वह कैसे अल्लाह की पकड़ से बच सकता है?

जब आप सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो आपके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० जमा हुए। आपने उनसे फ़रमाया, आज रात लोगों के लिए इतना ज़्यादा माल आया है कि शुरू इस्लाम से लेकर आज तक कभी इतना नहीं आया। इस माल के बांटने के बारे में एक बात मेरे ज़ेहन में आई है, आप लोग भी मुझे इस बारे में मश्विरा दें। मेरा ख़्याल है कि मैं लोगों में नाप कर बांटूं।

उन लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! ऐसा न करें, क्योंकि लोग इस्लाम में दाख़िल होते रहेंगे और आने वाला माल धीरे-धीरे ज़्यादा होता जाएगा (इसलिए यह याद रखना मुश्किल होगा कि किसको दिया है और किसको नहीं दिया है) बल्कि आप एक रजिस्टर में लोगों के नाम लिख लें और उसके मुताबिक़ लोगों को माल देते रहें, फिर जब भी लोगों की तायदाद बढ़ी और माल की मिक़्दार भी ज़्यादा हुई तो आप उस रजिस्टर के मुताबिक़ लोगों को देते रहना।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया (अच्छा चलो, रजिस्टर बना लेते हैं, लेकिन) इसका मश्विरा दो कि किससे देना शुरू करूं?

इन लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप अपने आपसे शुरू करें, क्योंकि आप ही ख़लीफ़ा और मुतवल्ली हैं और इनमें से कुछ लोगों ने कहा, अमीरुल मोमिनीन हमसे बेहतर जानते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं, ऐसे नहीं, बल्कि मैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शुरू करूंगा, फिर जो हुज़ूर सल्ल० के सबसे ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार हैं, उनको दूंगा, फिर उनके बाद जो

रिश्तेदार हैं, उनको दूंगा। चुनांचे उन्होंने इसी तर्तीब पर रजिस्टर बनवाया, पहले बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के नाम लिखवाए और उन सबको दिया, फिर बनू अब्दे शम्स को दिया, फिर नौफ़ुल बिन अब्दे मुनाफ़ को दिया, बनू अब्दे शम्स को पहले इसलिए दिया, क्योंकि अब्दे शम्स हाशिम के मां-जाए भाई थे। (नौफ़ुल नहीं था, इसलिए अब्दे शम्स ज़्यादा क़रीबी हुआ)[1]

हज़रत जुबैर बिन हुवैरिस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुसलमानों से रजिस्टर बनाने के बारे में मश्विरा किया तो उनसे हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, (आप रजिस्टर न बनाएं, बल्कि) हर साल जितना माल इकट्ठा हो जाया करे, वह सारा मुसलमानों में बांट दिया करें और उसमें से कुछ न बचाया करें।

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि बहुत ज़्यादा माल आ रहा है जो तमाम लोगों को दिया जा सकता है, अगर लेनेवालों की तायदाद को गिना नहीं जाएगा, तो आपको पता नहीं चलेगा कि किसने लिया और किसने नहीं लिया और मुझे डर है कि इस तरह बांटने का मामला बेक़ाबू हो जाएगा।

हज़रत वलीद बिन हिशाम बिन मुग़ीरह रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, मैं शाम देश गया हूं। मैंने वहां के बादशाहें को देखा है, उन्होंने रजिस्टर भी बनाए हुए हैं और अपनी फ़ौज भी मुरत्तब व मुनज़्ज़म बना रखी है। आप भी रजिस्टर बना लें और बाक़ायदा फ़ौज तैयार कर लें। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत वलीद रज़ि० की इस राय को क़ुबूल फ़रमा लिया और हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब, हज़रत मख़रमा बिन नौफ़ल और हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हुम को हज़रत उमर रज़ि० ने बुलाकर उनसे फ़रमाया, रजिस्टर में लोगों के नाम उनके दर्जों के मुताबिक़ लिख दो।

ये तीनों क़ुरैश के ख़ानदान को अच्छी तरह जानते थे, चुनांचे उन्होंने

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 216, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 350, कंज़, भाग 2, पृ० 315,

रजिस्टर में नाम लिखने शुरू किए। पहले बनू हाशिम का नाम लिखा, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उनकी क़ौम का नाम लिखा, इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० और उनकी क़ौम का नाम लिखा। उन्होंने ख़िलाफ़त की तर्तीब का ख़्याल करते हुए ऐसा किया।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने रजिस्टर देखा, तो फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! दिल तो मेरा भी यही चाहता है कि तर्तीब यही होती, लेकिन तुम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रिश्तेदारों से शुरू करो और जो रिश्ते में हुज़ूर सल्ल० से जितना ज़्यादा क़रीब हो, उसका नाम उतने पहले लिखो। बस इस रिश्तेदारी के लिहाज़ से तुम लोग नाम लिखते जाओ, उसमें जहां उमर का नाम आ जाए, वहां उसका नाम भी लिख दो।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं (जब तीनों लोगों ने बनू हाशिम के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० और उनकी क़ौम और फिर हज़त उमर रज़ि० और उनकी क़ौम के नाम रजिस्टर में लिखे और उस पर हज़रत उमर रज़ि० ने इंकार फ़रमाया तो हज़रत उमर रज़ि० की क़ौम के लोग (बनू अदी) हज़रत उमर रज़ि० के पास आए और कहने लगे, आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि यों कहो कि आप अबूबक्र रज़ि० के ख़लीफ़ा हैं और अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के ख़लीफ़ा हैं।

बनू अदी ने कहा, अच्छा यों ही सही, लेकिन आप अपना नाम वहां ही रहने दें, जहां इन तीनों ने लिखा है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वाह ! वाह ! ऐ बनू अदी ! तुम यह चाहते हो कि मेरी पीठ पर सवार होकर (दूसरों से पहले) खा लो और यों मैं अपनी नेकियां तुम लोगोंकी वजह से बर्बाद कर लूं, नहीं, अल्लाह की क़सम ! ऐसे नहीं होगा (बल्कि हुज़ूर सल्ल० की रिश्तेदारी को बुनियाद बनाकर माल बांटा जाएगा) चाहे तुम्हारे नाम लिखने की बारी रजिस्टर में

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 212, तबरी, भाग 3, पृ० 278, कंज़ुल-जदीद, भाग 4, पृ० 363

सबसे आख़िर में आए। मेरे दो साथी (यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु) एक रास्ते पर चले हैं, अगर मैं उनका रास्ता छोड़ूंगा तो मैं उन दोनों की मंज़िल पर नहीं पहुंच सकूंगा, (आख़िरत में वह कहीं और होंगे और मैं कहीं और) अल्लाह की क़सम ! हमें दुनिया में जो इज़्ज़त मिली है और आख़िरत में हमें अपने आमाल पर अल्लाह से सवाब मिलने की जो उम्मीद है, यह सब कुछ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बरकत से है, वही हमारे लिए शरफ़ की वजह हैं।

आपकी क़ौम तमाम अरब में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाली है। फिर आपके बाद जो रिश्ते में आपसे जितना ज़्यादा क़रीब है, वह उतना ही ज़्यादा इज़्ज़त वाला है और हुज़ूर सल्ल० ही की बरकत से आज तमाम अरबों को इज़्ज़त मिली है। अब अगर हम में से किसी का रिश्ता बहुत-सी पीढ़ियों के बाद आपसे मिले और इस मिलने में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक कुछ पीढ़ियां बाक़ी रह जाएं तो भी उसी की रियायत की जाएगी, लेकिन इस ख़ानदानी शराफ़त और हुज़ूर सल्ल० के रिश्ते की वजह से इस दुन्यवी एज़ाज़ के बावजूद अल्लाह की क़सम ! अगर आज भी लोग क़ियामत के दिन नेक आमाल लेकर आएं और हम नेक आमाल के बिना पहुंचे तो वे अजमी लोग हमसे ज़्यादा हुज़ूर सल्ल० के क़रीब होंगे, इसलिए कोई भी आदमी सिर्फ़ रिश्तेदारी पर निगाह न रखे, बल्कि अल्लाह के यहां जो अज्र और दर्जे हैं, उन्हें हासिल करने के लिए नेक अमल करे, क्योंकि जो अपने अमल में पीछे रह गया, वह अपने ख़ानदान की वजह से आगे नहीं बढ़ सकेगा।[1]

माल के बांटने में हज़रत उमर रज़ि० का हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० की राय की ओर रुजू करना

हज़रत ग़ुफ़रा रहमतुल्लाहि अलैहि के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 212, तबरी, भाग 3, पृ० 278

हज़रत उमर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बहरैन से माल आया, फिर आगे लम्बी हदीस बयान की जैसे कि पहले गुज़र चुकी है, इसमें यह मज़्मून भी है कि जुमा के दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर तश्रीफ़ लाए और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, मुझे पता चला है कि तुममें से किसी ने यह बात कही है कि जब उमर रज़ि० का इन्तिक़ाल हो जाएगा (या यों कहा जब अमीरुल मोमिनीन का इंतिक़ाल हो जाएगा), तो हम फ़्लां को खड़ा करके उससे एकदम अचानक बैअत हो जाएंगे। आख़िर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की (बैअत) ख़िलाफ़त भी तो अचानक ही हुई थी।

हां, अल्लाह की क़सम, यह ठीक है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० की (बैअत) ख़िलाफ़त अचानक ही हुई थी, लेकिन अब हमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० जैसा आदमी कहां से मिल सकता है जिसका एहतराम और जिसकी इताअत हम इस तरह करते हों जिस तरह अबूबक्र रज़ि० की करते थे और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय यह थी कि माल तमाम मुसलमानों में बराबर बांट दिया जाए और मेरी राय यह थी कि दीनी फ़ज़ाइल के हिसाब से मुसलमानों को माल कम या ज़्यादा दिया जाए। (मैंने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में इसी पर अमल किया, लेकिन अब) अगर मैं अगले साल तक ज़िंदा रहा, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय पर अमल करूंगा (और सबको बराबर माल दूंगा।) उनकी राय मेरी राय से बेहतर थी। आगे और भी हदीस ज़िक्र की है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का माल देना

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में माल बांटा तो बैतुलमाल में थोड़ा-सा माल बच गया। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ि० और दूसरे लोगों से कहा, ज़रा मुझे यह बताओ कि अगर तुम लोगों में

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 6,

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चचा होते तो क्या तुम उनका इकराम करते?

सबने कहा, जी हां, करते।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, मैं इकराम का उनसे ज़्यादा हक़दार हूं, क्योंकि मैं तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों से (हज़रत अब्बास रज़ि० को यह बचा हुआ माल देने के बारे में) बात की। सबने राज़ी होकर वह माल हज़रत अब्बास रज़ि० को दे दिया।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक ज़नाना इत्रदान हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। आपके साथी उसे देखने लगे कि यह किसे दिया जाए?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या आप लोग इजाज़त देते हैं कि मैं यह इत्रदान हज़रत आइशा रज़ि० के पास भिजवा दूं, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनसे बहुत मुहब्बत थी।

सबने कहा, जी हां, इजाज़त है। चुनांचे जब वह इत्रदान हज़रत आइशा रज़ि० के पास पहुंचा, तो उन्होंने उसे खोला और उन्हें बताया गया कि यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने आपके लिए भेजा है।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद (हज़रत उमर) बिन ख़त्ताब रज़ि० पर कितनी ज़्यादा जीतें हो रही हैं? ऐ अल्लाह! मुझे हज़रत उमर रज़ि० के तोहफ़ों के लिए अगले साल तक ज़िंदा न रखियो।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे सदक़े वसूल करने के लिए आमिल (अधिकारी) बनाकर एक इलाक़े में भेजा। जब मैं वापस आया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० इन्तिक़ाल फ़रमा चुके थे। हज़रत उमर रज़ि० ने

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 20,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 6,

फ़रमाया, ऐ अनस ! क्या तुम हमारे पास (सदक़ों के) जानवर लाए हो?

मैंने कहा, जी हां।

आपने फ़रमाया, वह जानवर तो हमारे पास ले आओ और (जो) माल (तुम लाए हो, वह) तुम्हारा है।

मैंने कहा, वह माल तो बहुत ज़्यादा है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, चाहे बहुत ज़्यादा हो, वह तुम्हारा है और वह चार हज़ार थे। चुनांचे मैंने वह माल ले लिया और इस तरह मैं मदीने वालों में सबसे ज़्यादा मालदार हो गया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार लोग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने अताया ले रहे थे। (अताया वह माल है जिसकी न मात्रा तै हो और न उसके देने का वक़्त)। इतने में हज़रत उमर रज़ि० ने अपना सर उठाया तो उनकी नज़र एक आदमी पर पड़ी जिसके चेहरे पर तलवार के घाव का निशान था। हज़रत उमर रज़ि० ने उस निशान के बारे में उससे पूछा तो उसने बताया कि वह एक लड़ाई में गया था, वहां उसे दुश्मन की तलवार से यह घाव लगा था।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इसे एक हज़ार गिनकर दे दो। चुनांचे उसे एक हज़ार दिरहम दे दिए गए। फिर हज़रत उमर रज़ि० उस माल को थोड़ी देर उलटते-पलटते रहे, इसके बाद फ़रमाया, इसे एक हज़ार दिरहम और गिनकर दे दो। चुनांचे उस आदमी को एक हज़ार दिरहम और दे दिए गए। यह बात हज़रत उमर रज़ि० ने चार बार फ़रमाई और हर बार उसे एक हज़ार दिए गए।

हज़रत उमर रज़ि० के इस ज़्यादा देने की वजह से उस आदमी को ऐसी शर्म आई कि वह बाहर चला गया। हज़रत उमर रज़ि० ने उसके बारे में पूछा (कि वह क्यों चला गया?) तो लोगों ने बताया कि हमारा ख़्याल यह है कि वह ज़्यादा देने के ही वजह से शर्मा कर चला गया।

---

1. कंज़, भाग 6, पृ० 148,

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर वह ठहरा रहता, तो जब तक एक दिरहम बाक़ी रहता, मैं उसे देता ही रहता, क्योंकि यह एक ऐसा आदमी है जिसे अल्लाह के रास्ते में तलवार का ऐसा वार लगा है जिससे उसके चेहरे पर काला निशान पड़ गया है।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक साल तीन बार लोगों में माल बांटा। इसके बाद उनके पास इस्बहान से और माल आ गया, तो आपने एलान फ़रमाया, (ऐ लोगो !) सुबह-सुबह आकर चौथी बार माल फिर ले जाओ। मैं तुम्हारा ख़ज़ानची नहीं हूं (कि वह माल जमा करके रखूं) चुनांचे वह सारा माल बांट दिया, यहां तक कि रस्सियां भी बांट दीं। कुछ लोगों ने तो रस्सियां ले लीं और कुछ ने वापस कर दीं।[2]

हज़रत उमर और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का बैतुलमाल का सारा माल बांटना

हज़रत सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने (बैतुलमाल के ख़ज़ानची) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया, हर महीने एक बार बैतुलमाल का सारा माल मुसलमानों में बांट दिया करो। (इसके कुछ दिनों बाद फ़रमाया), नहीं, हर सप्ताह बैतुलमाल का सारा माल मुसलमानों में बांट दिया करो। इसके कुछ दिनों बाद फ़रमाया, हर दिन बैतुलमाल का सारा माल बांट दिया करो।

इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप बैतुलमाल में कुछ माल रहने दें तो अच्छा है, मुसलमानों को अचानक कोई ज़रूरत पेश आ जाती है, उसमें काम आ जाएगा या बाहर वाले

1. हुलीया, भाग 3, पृ० 355,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 320

किसी वक़्त मदद मांग लेते हैं, तो उनको दिया जा सकता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उससे फ़रमाया, तुम्हारी ज़ुबान पर यह शैतान बोल रहा है और उसका जवाब अल्लाह मुझे सिखा रहा है और इसके शर से मुझे बचा रहा है और वह यह है कि मैंने इन तमाम ज़रूरतों के लिए वही सब कुछ तैयार किया हुआ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयार किया हुआ था और वह है अल्लाह की और उसके रसूल की इताअत। (हर मुसीबत का इलाज और हर ज़रूरत का इन्तिज़ाम अल्लाह और रसूल की मानना है।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इराक़ से माल आया। हज़रत उमर रज़ि० उसे बांटने लगे। एक आदमी ने खड़े होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हो सकता है कभी दुश्मन हमलावर हो जाए या मुसलमानों पर कोई अचानक मुसीबत टूट पड़े तो उन ज़रूरतों के लिए अगर आप इस माल में से कुछ बचाकर रख लें तो अच्छा है।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें क्या हो गया? अल्लाह तुम्हें मारे! यह बात तुम्हारी ज़ुबान से शैतान ने कहलाई है और अल्लाह ने इसका जवाब मुझे बताया है। अल्लाह की क़सम! कल को पेश आने वाली ज़रूरत के लिए मैं आज अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं कर सकता। नहीं! (मैं माल जमा करके नहीं रख सकता, बल्कि) मैं तो मुसलमानों (की ज़रूरतों) के लिए वह कुछ तैयार करके रखूंगा, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तैयार किया था (और वह है अल्लाह और रसूल सल्ल० की इताअत और तक़्वा और तक़्वा माल जमा करना नहीं है, बल्कि माल दूसरों पर ख़र्च करना है।)[2]

हज़रत सलमा बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बहुत-सा माल लाया गया, तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु ने खड़े होकर कहा,

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 357,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 45,

ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुसलमानों पर कोई अचानक मुसीबत आ जाती है या अचानक कोई ज़रूरत पेश आ जाती है, इसके लिए इस माल में से कुछ बचाकर आप बैतुलमाल में रख लें, तो बहुत अच्छा होगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने ऐसी बात कही है, जो शैतान ही सामने ला सकता है, अल्लाह ने मुझे इसका जवाब समझाया है और इसके फ़िले से बचा लिया है। आगे के माल (की ज़रूरतों) के डर से मैं इस साल अल्लाह की नाफ़रमानी करूं। मैंने मुसलमानों (की ज़रूरतों) के लिए अल्लाह का तक़्वा तैयार किया हुआ है। अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(سورت طلاق آیت ۲ و ۳)

'और जो आदमी अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए (नुक़्सानों से) निजात पाने की शक्ल निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है, जहां उसका गुमान भी नहीं होता।'

(अत-तलाक़, आयत 2-3)

अलबत्ता शैतान की यह बात मेरे बाद वालों के लिए फ़िला बन जाएगी।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

'अम्मा बादु ! मैं यह चाहता हूं कि साल में एक दिन ऐसा भी हो कि बैतुलमाल में एक दिरहम भी बाक़ी रहे और उसमें से सारा माल निकालकर बांट दिया जाए, ताकि अल्लाह के सामने यह बात खुलकर आ जाए कि मैंने हर हक़ वाले को उसका हक़ दे दिया है।'[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह लिखा कि लोगों को

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 391,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 218, कंज़, भाग 2, पृ० 217

उनको अताया और उनके मुक़र्रर किए वज़ीफ़े सब दे दो।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने जवाब में लिखा, हम सब कुछ दे चुके हैं, लेकिन फिर भी बहुत-सा माल बचा हुआ है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें जवाब में लिखा, ग़नीमत का यह माल मुसलमानों का है, जो अल्लाह ने उनको दिया है, यह उमर या उसकी आल-औलाद का नहीं है, इसलिए इसे भी मुसलमानों ही में बांट दो।[1]

हज़रत अली बिन रबीआ वालिबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, इब्ने नब्बाज ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुसलमानों का बैतुलमाल सोने-चांदी से भर गया है।

यह सुनकर हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अल्लाहु अकबर! और इब्ने नब्बाज पर टेक लगाकर खड़े हुए और मुसलमानों के बैतुलमाल पर पहुंचे और यह शेर पढ़ा—

هَذَا جَنَايَ وَخِيَارُهُ فِيهِ   وَكُلُّ جَانٍ يَدُهُ إِلَى فِيهِ

'ये मेरे चुने हुए फल हैं और जो फल अच्छे थे, वे इन्हीं में हैं। (मैंने इन्हें नहीं खाया, और मेरे अलावा) हर फल चुनने वाले का हाथ उसके मुंह की ओर जा रहा था, यानी मैंने इस बैतुलमाल में से कुछ नहीं लिया है।'

फिर कहा, ऐ इब्ने नब्बाज! कूफ़ा वालों को मेरे पास ले आओ। चुनांचे लोगों को एलान करके बुलाया गया। (जब लोग आ गए तो) हज़रत अली रज़ि० ने बैतुलमाल का सारा माल लोगों में बांट दिया और बांटते हुए वह यों फ़रमा रहे थे, ऐ सोने! ऐ चांदी! मेरे अलावा किसी और को धोखा दो (और लोगों से कह रहे थे) ले लो, ले लो और यों ही बांटते रहे, यहां तक कि न कोई दीनार बचा और न ही कोई दिरहम। फिर इब्ने नब्बाज से फ़रमाया, इस बैतुलमाल में पानी छिड़क दो। (उसने पानी छिड़क दिया) फिर आपने उसमें दो रक्अत नमाज़ पढ़ी।[2]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 215
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 81,

हज़रत मुजम्मेअ तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुलमाल (का सारा माल बांट करके उस) में झाड़ू दिया करते और उसमें नमाज़ पढ़ा करते और वहां सज्दा इसलिए किया करते, ताकि यह बैतुलमाल क़ियामत के दिन आपके हक़ में गवाही दे।[1]

हज़रत अला के वालिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना, मैंने ग़नीमत के तुम्हारे माल में से खजूरों के इस बरतन के अलावा और कुछ नहीं लिया और यह भी मुझे देहात के एक चौधरी ने हदिए में दिया था, फिर हज़रत अली रज़ि० बैतुलमाल तशरीफ़ ले गए और जितना माल उसमें था, वह सारा बांट दिया और फिर वह यह शेर पढ़ने लगे—

أَفْلَحَ مَنْ كَانَتْ لَهُ قَوْصَرَهْ   يَأْكُلُ مِنْهَا كُلَّ يَوْمٍ مَرَّهْ

'वह आदमी कामियाब हो गया जिसके पास एक टोकरा हो, जिसमें से वह हर दिन एक बार खा ले।' (कामियाबी के लिए थोड़ी दुनिया भी काफ़ी है।)

हज़रत अन्तरा शैबानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हर सनत वाले से उसकी सनतकारी और दस्तकारी में से जिज़या और ख़िराज वसूल किया करते थे, यहां तक कि सूई वालों से सूईयां, सूए, धागे और रस्सियां लिया करते थे, फिर उसे लोगों में बांट दिया करते थे और हर दिन बैतुलमाल का सारा माल शाम तक बांट दिया करते और रात को उसमें कुछ न होता। अलबत्ता अगर किसी ज़रूरी काम में मश्ग़ूल हो जाते और माल बांटने की उस दिन फ़ुर्सत न मिलती, तो फिर वह माल बैतुलमाल में रात भर रह जाता, लेकिन अगले दिन सुबह-सुबह जाकर उसे बांट देते और फ़रमाया करते, ऐ दुनिया! मुझे धोखा न दे, जा किसी और को जाकर धोखा दे और यह शेर पढ़ा करते—

هَذَا جَنَايَ وَخِيَارُهُ فِيهْ   وَكُلُّ جَانٍ يَدُهُ إِلَى فِيهْ

1. इस्तीआब, भाग 3, पृ० 49,

'ये मेरे चुने हुए फल हैं और जो अच्छे फल थे, वे इन ही में हैं। (मेरे अलावा) हर फल चुनने वाले का हाथ उसके मुंह की ओर जा रहा था।'

हज़रत अन्तरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। थोड़ी देर में उनका ग़ुलाम क़ंबर आया और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप (सारा ही बांट देते हैं और) कुछ भी बाक़ी नहीं छोड़ते, हालांकि उस माल में आपके घरवालों का भी हिस्सा है, इसलिए मैंने आपके लिए कुछ बहुत अच्छा माल छुपा कर रखा है।

हज़रत अली रज़ि० ने पूछा, वह क्या है?

क़ंबर ने कहा, आप चलकर ख़ुद ही देख लें कि वह क्या है?

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० चले और क़ंबर उनको एक कमरे में ले गया। वहां एक बड़ा बरतन रखा था, जिस पर सोने का पानी चढ़ा हुआ था और वह सोने-चांदी के बरतनों से भरा हुआ था।

जब हज़रत अली रज़ि० ने उसे देखा, तो फ़रमाया, तेरी मां मुझे गुम करे। तुम मेरे घर में बड़ी आग दाख़िल करना चाहते हो। फिर हज़रत अली रज़ि० ने तौल-तौल कर हर क़ौम के सरदार को उसके हिस्से के मुताबिक़ देना शुरू किया और फिर यह शेर पढ़ा, जिसका तर्जुमा अभी गुज़रा है—

هٰذَا جَنَايَ وَخِيَارُهُ فِيْهِ   وَكُلُّ جَانٍ يَدُهُ اِلٰى فِيْهِ

और फ़रमाया (ऐ दुनिया!) मुझे धोखा मत दे, जा, किसी और को जाकर धोखा दे।[1]

मुसलमानों के माली हक़ों के बारे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की राय

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि उस माल के बारे में

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 57, हुलीया, (कंज़ ही से) भाग 5, पृ० 57

मश्विरा करने के लिए जमा हो जाओ और ग़ौर करो कि यह माल किन लोगों में बांटा जाए। (जब बुलाए गए लोग जमा हो गए, तो) फ़रमाया, मैंने आप लोगों को इसलिए जमा किया है, ताकि उस माल के बारे में मश्विरा कर लिया जाए और ग़ौर कर लिया जाए कि यह माल किन लोगों में बांटा जाए। मैंने अल्लाह की किताब (क़ुरआन मजीद) की कुछ आयतें पढ़ी हैं। मैंने अल्लाह को यह फ़रमाते सुना है—

(1) مَا أَفَاءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ أَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا آتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ.

(سورت حشر آیت ۷، ۸)

1. 'जो कुछ अल्लाह (इस तौर पर) अपने रसूल सल्ल० को दूसरी बस्तियों के (काफ़िर) लोगों से दिलवा दे (जैसे फ़िदक और एक हिस्सा ख़ैबर का) सो वह भी अल्लाह का हक़ है और रसूल सल्ल० का और (आपके) रिश्तेदारों का और यतीमों का और ग़रीबों का और मुसाफ़िरों का ताकि वह (फ़ै का माल) तुम्हारे तवंगरों के क़ब्ज़े में न आ जाए और रसूल सल्ल० तुमको जो कुछ दे दिया करें, वह ले लिया करो और जिस चीज़ (के लेने) से तुमको रोक दें (और आम लफ़्ज़ होने की वजह से यही हुक्म है कामों और हुक्मों में भी) तुम रुक जाया करो और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह (मुख़ालफ़त करने पर) कड़ी सज़ा देनेवाला है और उन ज़रूरतमंद मुहाजिरों का (ख़ास तौर से) हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से (जब्र और ज़ुल्म की शक्ल में) अलग कर दिए गए। वे अल्लाह की मेहरबानी (यानी जन्नत) और रज़ामंदी को तलग रखने वाले हैं और वे अल्लाह और उसके रसूल (के दीन) की मदद करते हैं (और) यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं।' (सूरः हश्र, आयत 7-8)

अल्लाह की क़सम ! यह माल सिर्फ़ इन्हीं लोगों के लिए नहीं है। फिर अल्लाह ने फ़रमाया है—

(२) وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُا الدَّارَ وَالْإِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰى أَنْفُسِهِمْ الآية

(سورت حشر آیت ۹)

2. 'और (साथ ही) उन लोगों का (भी हक़ है) जो दारुल इस्लाम (यानी मदीना) में उन (मुहाजिरों) के (आने के) पहले क़रार पकड़े हुए हैं। जो उनके पास हिजरत करके आता है, उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ मिलता है, उससे ये (अंसार) अपने दिलों में कोई रश्क नहीं पाते और अपने से मुक़द्दम रखते हैं, अगरचे उन पर फ़ाक़ा ही हो और (वाक़ई) जो आदमी अपनी तबियत की कंजूसी से बचा हुआ रखा जावे, ऐसे ही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।' (सूरः हश्र, आयत 9)

अल्लाह की क़सम ! यह माल सिर्फ़ इन्हीं लोगों के लिए नहीं है। फिर अल्लाह ने फ़रमाया है—

(३) وَالَّذِيْنَ جَاءُوْا مِنْ بَعْدِهِمْ الآية - (سورت حشر آیت ۱۰)

3. 'और उन लोगों का (भी उस फ़ै के माल में हक़ है) जो इनके बाद आए, जो (उन ज़िक्र किए गए के हक़ में) दुआ करते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार ! हमको बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को (भी) जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों की ओर से कीना न होने दीजिए। ऐ हमारे रब ! आप बड़े शफ़ीक़ (और) रहीम हैं।'

(सूरः हश्र, आयत 10)

फिर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! इस माल में हर मुसलमान का हक़ मालूम होता है चाहे वह अदन में बकरियां चरा रहा हो। यह अलग बात है कि उसे माल दिया जाए या न दिया जाए।'[1]

हज़रत मालिक बिन औस बिन अदनान रज़ियल्लाहु अन्हु इसी क़िस्से को बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत आख़िर तक पढ़ी—

(४) إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِيْنِ (سورت توبہ آیت ۶۰)

---

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 351,

4. 'सदक़ा तो सिर्फ़ हक़ है ग़रीबों का और मुहताजों का और जो कारकुन इन सदक़ों पर लगाए गए हैं और जिनके दिल का रखना (मंज़ूर) है और गुलामों की गरदन छुड़ाने में और क़र्ज़दारों के क़र्ज़े में और जिहाद में और मुसाफ़िरों में। यह हुक्म अल्लाह की ओर से मुक़र्रर है और अल्लाह बड़े इल्म वाले, बड़ी हिक्मत वाले हैं।' (सूरः तौबा, आयत 60)

और फ़रमाया कि ये ज़कात और सदक़े तो इन्हीं लोगों के लिए हैं, (जिनका इस आयत में ज़िक्र है) फिर यह आयत आख़िर तक पढ़ी—

٥ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ.

(سورۃ انفال آیت ۴۱)

5. 'और इस बात को जान लो कि जो चीज़ (कुफ़्फ़ार से) ग़नीमत के तौर पर तुमको हासिल हो तो इसका हुक्म यह है कि कुल का पांचवां हिस्सा अल्लाह का और उसके रसूल सल्ल० का है और (एक हिस्सा) आपके क़राबत वालों का है और (एक हिस्सा) यतीमों का है और (एक हिस्सा) ग़रीबों का है और (एक हिस्सा) मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर यक़ीन रखते हो और उस चीज़ पर जिसको हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर फ़ैसले के दिन यानी जिस दिन कि दोनों जमाअतें (ईमान वालों की और काफ़िरों की) आपस में टकराई थीं, उतारा था और अल्लाह (ही) हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं।' (सूरः अंफ़ाल, आयत 41)

फिर फ़रमाया, ग़नीमत का यह माल उन्हीं लोगों के लिए है, (जिनका इस आयत में ज़िक्र है)

फिर यह आयत आख़िर तक पढ़ी... 'लिल फ़ुक़राइल मुहाजिरीन', जिसका अनुवाद पहली आयत में गुज़र चुका है और फ़रमाया, ये मुहाजिरीन लोग हैं, फिर यह आयत आख़िर तक पढ़ी— 'वल्लज़ी-न त-ब-व व उद-दा-र वल ईमा-न मिन क़ब्लिहिम' जिसका अनुवाद दूसरे नम्बर पर गुज़र गया है और फ़रमाया इस आयत में जिन लोगों का ज़िक्र है, वह अंसार हैं, फिर यह आयत आख़िर तक पढ़ी—

'वल्लज़ी-न जाऊ . . . स-ब-क़ूना बिल ईमानि' जिसका अनुवाद तीसरे नम्बर पर गुज़र गया है और फ़रमाया। इस आयत में तो सब

लोग आ गए, इसलिए हर मुसलमान का इस माल में हक़ है अलबत्ता तुम्हारे ग़ुलामों का इस माल में कोई हक़ नहीं। अगर मैं ज़िंदा रहा तो इनशाअल्लाह हर मुसलमान को उसका हक़ पहुंच जाएगा, यहां तक कि हिमयर घाटी (जोकि यमन में है) के ऊपरी हिस्से के चरवाहे को भी उसका हिस्सा पहुंचकर रहेगा और उस माल को हासिल करने में उसकी पेशानी पर ज़र्रा बराबर पसीना नहीं आएगा यानी उसके लिए उसे कुछ भी नहीं करना पड़ेगा।[1]

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांट देना

हज़रत सोदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक दिन मैं हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गई तो मैंने उनकी तबीयत पर बोझ महसूस किया। मैंने उनसे कहा, आपको क्या हुआ? क्या हमारी ओर से आपको कोई नागवार बात पेश आई है? अगर ऐसा है तो फिर इस नागवार बात को दूर करके आपको राज़ी करेंगे।

हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, नहीं। ऐसी कोई बात नहीं है, तुम तो मुसलमान मर्द की बहुत अच्छी बीवी हो। मैं इस वजह से परेशान हूं कि मेरे पास माल जमा हो गया है और मुझे समझ में नहीं आ रहा कि उसका क्या करूं?

मैंने कहा, इसमें परेशान होने की क्या बात है? आप अपनी क़ौम को बुला लें और यह माल उनमें बांट दें।

हज़रत तलहा रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लड़के! मेरी क़ौम को मेरे पास ले आओ, (चुनांचे उनकी क़ौम वाले आ गए तो सारा माल उनमें बांट दिया।)

मैंने ख़ज़ानची से पूछा कि उन्होंने कितना माल बांटा?

ख़ज़ानची ने कहा, चार लाख।[2]

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 352, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 340
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 176, हैसमी, भाग 9, पृ० 148, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 157, अबू नुऐम भाग 1, पृ० 88

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी एक ज़मीन सात लाख में बेची, तो यह रक़म एक रात उनके पास रह गई, तो उन्होंने वह सारी रात उस माल के डर से जाग कर गुज़ारी। सुबह होते ही वह सारी रक़म बांट दी।[1]

हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत सोदा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक दिन हज़रत तलहा रज़ि० मेरे पास आए, वह मुझे बड़े ग़मगीन नज़र आए। मैंने कहा, क्या बात है, मुझे आपका चेहरा बड़ा परेशान नज़र आ रहा है? क्या हमारी तरफ़ से कोई नागवार बात पेश आई है?

उन्होंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! तुम्हारी ओर से कोई नागवार बात पेश नहीं आई है। तुम तो बहुत अच्छी बीवी हो। मैं इस वजह से ग़मगीन व परेशान हूं कि मेरे पास बहुत-सा जमा हो गया है।

मैंने कहा, आप आदमी भेजकर अपने रिश्तेदारों और अपनी क़ौम को बुला लें और उनमें यह माल बांट दें। चुनांचे उन्होंने बुलाकर उनमें सारा माल बांट दिया। फिर मैंने ख़ज़ानची से पूछा कि उन्होंने कितना माल बांटा है?

उसने बताया, चार लाख। उनकी हर दिन की आमदनी एक हज़ार वाफ़ी थी। (एक वाफ़ी) एक दिरहम और चार वानिक़ का होता है और एक दिरहम में छः वानिक़ होते हैं, इसलिए हजार वाफ़ी के एक हज़ार छः सौ छियासठ दिरहम और चार वानिक़ हुए।

इसी सख़ावत की वजह से उन्हें तलहा फ़य्याज़ कहा जाता था, यानी बहुत ज़्यादा सख़ी।[2]

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना

हज़रत सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं,

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 89, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 157
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 378,

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के हज़ार ग़ुलाम थे जो उन्हें कमा कर माल दिया करते थे। वह हर दिन शाम को उनसे माल लेकर रात ही को सारा माल बांट देते और जब घर वापस जाते तो उसमें से कुछ भी बचा हुआ न होता।[1]

हज़रत मुग़ीस बिन सुमै रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक हज़ार ग़ुलाम थे जो उन्हें कमा कर माल दिया करते थे। वह उन ग़ुलामों की आमदनी में से एक दिरहम भी घर नहीं ले जाते थे, (बल्कि सारी आमदनी दूसरों में बांट देते थे।)[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जुमल की लड़ाई के दिन (मेरे वालिद) हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए, तो मुझे बुलाया। मैं उनके पहलू में आकर खड़ा हो गया, तो उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे! आज जो भी क़त्ल होगा, उसे मुख़ालिफ़ फ़रीक़ ज़ालिम समझेगा और वह ख़ुद अपने आपको मज़लूम समझेगा और मुझे ऐसा नज़र आ रहा है कि मैं भी ज़ुलमन क़त्ल हो जाऊंगा और मुझे सबसे ज़्यादा फ़िक्र अपने क़र्ज़े की है। तुम्हारा क्या ख़्याल है, क़र्ज़ा अदा करने के बाद हमारे माल में से कुछ बचेगा? ऐ मेरे बेटे! हमारा माल बेचकर क़र्ज़ा अदा कर देना।

फिर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने यह वसीयत फ़रमाई कि क़र्ज़ा अदा करने के बाद जो माल बचे, उसका एक तिहाई (वारिसों के अलावा) दूसरों को दे दिया जाए और उस एक तिहाई का एक तिहाई (यानी बचे हुए माल का नौवां हिस्सा) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० की औलाद को दे दिया जाए (क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह के बच्चे बड़े थे, बल्कि उनकी शादियां भी हो चुकी थीं।) चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के कुछ बेटे हज़रत ख़ुबैब और हज़रत अब्बाद (उम्र में या माल के हिस्से में) हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के कुछ बेटों के बराबर थे और ख़ुद हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के नौ बेटे और नौ बेटियां थीं।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 90,
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 9, इसाबा, भाग 1, पृ० 546,

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने मुझे अपने क़र्ज़ के बारे में वसीयत करते हुए फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! अगर मेरे क़र्ज़ की अदाएगी में कुछ मुश्किल पेश आए तो मेरे मौला से मदद ले लेना।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! मैं समझ न सका कि मौला से उनकी मुराद कौन है? इसलिए मैंने पूछा, अब्बा जान ! आपके मौला कौन हैं?

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह !

चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं, जब भी मुझे उनके क़र्ज़ के बारे में कोई मुश्किल पेश आती, तो मैं कहता, ऐ ज़ुबैर रज़ि० के मौला ! ज़ुबैर रज़ि० का क़र्ज़ा अदा कर दे। अल्लाह फ़ौरन उसका इन्तिज़ाम फ़रमा देते। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर रज़ि० उस दिन शहीद हो गए। उन्होंने तर्के में कोई दीनार या दिरहम न छोड़ा, अलबत्ता कुछ ज़मीनें, मदीना में ग्यारह घर, बसरा में दो घर, कूफ़ा में एक घर और मिस्र में एक घर छोड़ा। उन कुछ ज़मीनों में से एक ज़मीन (मदीना से कुल मील दूर) ग़ाबा की थी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० पर इतना क़र्ज़ा इस वजह से हुआ कि उनके पास जो आदमी अपना माल अमान के तौर पर रखवाने आता, उससे फ़रमाते, मेरे पास अमानत न रखवाओ, मुझे डर है कि कहीं ख़त्म न हो जाए, इसलिए मुझे क़र्ज़ दे दो। (जब ज़रूरत हो, ले लेना और लोगों से लेकर दूसरों पर ख़र्च कर देते।)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० न कभी अमीर बने और न कभी ख़िराज, ज़कात वग़ैरह वसूल करने की ज़िम्मेदारी ली, अलबत्ता हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० के साथ लड़ाइयों में शरीक होते रहे (और इन लड़ाइयों में ग़नीमत का माल मिला, उससे उनकी इतनी जायदाद हो गई थी।)

बहरहाल मैंने अपने वालिद के क़र्ज़ का हिसाब लगाया, तो वह बाईस लाख निकला। एक दिन हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु मुझसे मिले। उन्होंने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! मेरे भाई (हज़रत ज़ुबैर

रज़ि०) पर कितना क़र्ज़ है?

मैंने छुपाते हुए कहा, एक लाख। (जितना बताया, उसमें तो सच्चे हैं)

हज़रत हकीम ने कहा, अल्लाह की क़सम! मेरे ख़्याल में तो तुम्हारा सारा माल इस क़र्ज़े की अदाएगीके लिए काफ़ी नहीं होगा।

मैंने कहा, अगर बाईस लाख क़र्ज़ हो तो फिर?

उन्होंने कहा, मेरे ख़्याल में तो तुम इसे अदा नहीं कर सकते, इसलिए अगर तुम्हें क़र्ज़े की अदाएगी में कोई मुश्किल पेश आए, तो मुझसे मदद ले लेना।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने ग़ाबा की ज़मीन एक लाख सत्तर हज़ार में ख़रीदी थी। मैंने उसकी क़ीमत लगवाई तो सोलह लाख क़ीमत लगी। (मैंने उस ज़मीन के सोलह हिस्से बनाए थे। एक हिस्से की क़ीमत एक लाख लगी)। फिर मैंने खड़े होकर एलान किया, जिसका हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के ज़िम्मे कोई हक़ हो, वह हमें ग़ाबा में आकर मिल ले।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के ज़िम्मे चार लाख दिरहम थे, उन्होंने मुझसे आकर कहा, अगर तुम कहो तो मैं तुम्हारे लिए यह क़र्ज़ा छोड़ देता हूं!

मैंने कहा, नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं है।

फिर उन्होंने कहा, अगर तुम चाहो तो मेरा क़र्ज़ा आख़िर में अदा कर देना।

मैंने कहा, नहीं। आप अभी ले लें।

उन्होंने कहा, अच्छा, फिर मुझे इस ज़मीन में से मेरे क़र्ज़े जितना टुकड़ा दे दो।

मैंने कहा, यहां से लेकर वहां तक आपकी ज़मीन है। चुनांचे ग़ाबा की ज़मीन (और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के घरों को बेच-बेचकर मैं क़र्ज़ा अदा करता रहा, यहां तक कि सारा क़र्ज़ा अदा हो गया और ग़ाबा की ज़मीन (के सोलह हिस्सों) में से साढ़े चार हिस्से बच गए। मैं बाद में हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु (की ख़िलाफ़त के ज़माने में) उनके पास गया। उस वक़्त उनके पास हज़रत अम्र बिन उस्मान रज़ि०, हज़रत

मुंज़िर बिन ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत इब्ने ज़मआ रज़ि० भी थे। हज़रत मुआविया रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, तुमने ग़ाबा की ज़मीन की क्या क़ीमत लगाई?

मैंने कहा (उसके सोलह हिस्से किए थे और) हर हिस्सा एक लाख का बना था।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने पूछा, अब कितने हिस्से बाक़ी हैं?

मैंने कहा, साढ़े चार हिस्से।

हज़रत मुंज़िर बिन ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, एक हिस्सा मैंने एक लाख में ख़रीद लिया, फिर हज़रत उमर बिन उस्मान रज़ि० ने कहा, एक हिस्सा मैंने एक लाख में ख़रीद लिया, फिर हज़रत इब्ने ज़मआ रज़ि० ने कहा, एक हिस्सा मैंने एक लाख में ख़रीद लिया। हज़रत मुआविया रज़ि० ने पूछा, अब कितने हिस्से रह गए?

मैंने कहा, डेढ़।

उन्होंने कहा, डेढ़ लाख में मैंने उसे ख़रीद लिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने अपना हिस्सा हज़रत मुआविया रज़ि० के हाथ छः लाख में बेचा। जब मैं हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के क़र्ज़ों की अदाएगी से फ़ारिग़ हुआ, तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की औलाद यानी मेरे बहन-भाइयों ने कहा, अब मीरास हमारे बीच बांट दें।

मैंने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं तुम लोगों में मीरास उस वक़्त तक नहीं बांटूंगा जब तक मैं चार साल हज के मौसम में यह एलान नहीं कर लेता कि जिसका हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के ज़िम्मे कोई क़र्ज़ा हो, वह हमारे पास आ जाए, हम उसका क़र्ज़ा अदा कर देंगे। चुनांचे मैं हर साल हज के मौसम में यह एलान करता रहा।

जब चार साल गुज़र गए, तो फिर मैंने उनके बीच मीरास बांटी। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की चार बीवियां थीं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने एक तिहाई माल की वसीयत की थी। वह तिहाई माल देने के बाद हर बीवी को बारह लाख मिले। इसलिए उनका सारा माल पांच करोड़ दो लाख हुआ।[1]

1. बुख़ारी,

अल-बिदाया में अल्लामा इब्ने कसीर ने फ़रमाया है कि वारिसों में जो माल बंटा, वह तीन करोड़ चौरासी लाख था और एक तिहाई की जो वसीयत की थी, वह एक करोड़ बानवे लाख था। इसलिए यह मीरास और एक तिहाई मिलकर पांच करोड़ छिहत्तर लाख हुआ और पहले जो क़र्ज़ा अदा किया गया, वह बाईस लाख था। इस हिसाब से क़र्ज़ एक तिहाई और मीरास मिलकर कुल माल पांच करोड़ अठानवे लाख हुआ।

यह तफ़्सील हमने इसलिए बताई है कि बुख़ारी में जो माल की तफ़्सील है, उसमें इश्काल है, इसलिए उसकी तफ़्सील बताना मुनासिब नज़र आया।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना

हज़रत उम्मे बक्र बिन्त मिस्वर रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी एक ज़मीन चालीस हज़ार दीनार में बेची और यह सारी रक़म क़बीला बनू ज़ोहरा, ग़रीब मुसलमानों, मुहाजिरों और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों में बांट दी। इसमें से कुछ रक़म हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में भेजी। उन्होंने पूछा, यह माल किसने भेजा है?

मैंने कहा, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने। फिर माल ले जाने वाले ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के ज़मीन बेचने और उसकी क़ीमत सारी बांट देने का क़िस्सा बयान किया। इस पर हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था कि मेरे बाद तुम पाक बीवियों के साथ शफ़क़त का मामला सिर्फ़ सब्र करने वाले लोग ही करेंगे। (फिर हज़रत आइशा रज़ि० ने दुआ दी) अल्लाह अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को जन्नत के सलसबील चश्मे से पिलाए।[2]

हज़रत जाफ़र बिन बुर्क़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 250
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 310, हुलीया, भाग 1, पृ० 98, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 94,

बात पहुंची है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने तीस हज़ार घराने आज़ाद किए।[1] (एक रिवायत यह है कि तीस हज़ार बांदियां आज़ाद कीं।)

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत मुआज़ बिन जबल और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम का माल बांटना

हज़रत मालिकुद्दार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने चार सौ दीनार लेकर एक थैली में डाले और ग़ुलाम से कहा, यह हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास ले जाओ और उन्हें देने के बाद घर में थोड़ी देर के लिए किसी काम में मशग़ूल हो जाना और देखना कि वह इन दीनारों का क्या करते हैं।

चुनांचे वह ग़ुलाम उस थैली को उनके पास ले गया और उनसे अर्ज़ किया कि अमीरुल मोमिनीन आपसे फ़रमा रहे हैं कि आप यह दीनार अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लें।

हज़र अबू उबैदा रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह उन्हें इसका बदला दे और उन पर रहम फ़रमाए, फिर फ़रमाया, ऐ बांदी! इधर आओ। यह सात दीनार फ़्लां के पास ले जाओ, यह पांच दीनार फ़्लां के पास और ये पांच दीनार फ़्लां के पास ले जाओ। इस तरह उन्होंने सारे दीनार ख़त्म कर दिए। इस ग़ुलाम ने वापस जाकर हज़रत उमर रज़ि० को सारी बात बताई।

हज़रत उमर रज़ि० ने उतने ही दीनार तैयार करके हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० के लिए रखे हुए थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उस ग़ुलाम से फ़रमाया, ये दीनार हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास ले जाओ और उन्हें देने के बाद घर में किसी काम में लग जाना और देखना कि वह इन दीनारों का क्या करते हैं।

चुनांचे वह ग़ुलाम दीनार लेकर हज़रत मुआज़ रज़ि० की ख़िदमत में पहुंचा और उनसे अर्ज़ किया कि अमीरुल मोमिनीन फ़रमा रहे हैं कि आप ये दीनार अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लें।

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 308, हुलीया, भाग 1, पृ० 99

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए और उन्हें इसका बदला दे, फिर फ़रमाया, ऐ बांदी ! इधर आओ, फ़्लां के घर में इतने ले जाओ, फ़्लां के घर में इतने और फ़्लां के घर में इतने ले जाओ। इतने में उनकी बीवी आ गई और उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! हम भी मिस्कीन हैं, हमें भी कुछ दें। थैली में दो दीनार बचे हुए थे। हज़रत मुआज़ ने वे दो दीनार उनकी ओर लुढ़का दिए।

ग़ुलाम ने वापस आकर हज़रत मुआज़ रज़ि० के बांटने का सारा क़िस्सा सुनाया, इससे हज़रत उमर रज़ि० बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया, ये सब आपस में भाई-भाई हैं और (दूसरों पर सारा माल ख़र्च करने में) ये सब एक जैसे मिज़ाज के हैं।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने साथियों से फ़रमाया, अपनी-अपनी तमन्ना ज़ाहिर करो। एक साहब ने कहा, मेरी दिली तमन्ना यह है कि यह घर दिरहमों से भर जाए और मैं इन सबको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फिर फ़रमाया, अपनी-अपनी तमन्ना ज़ाहिर करो, तो दूसरे साहब ने कहा, मेरी दिली तमन्ना यह है कि यह घर सोने से भरा हुआ मुझे मिल जाए और मैं इसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फिर फ़रमाया, अपनी-अपनी तमन्ना ज़ाहिर करो, इस पर तीसरे साहब ने कहा, मेरी दिली तमन्ना यह है कि यह घर जवाहर से भरा हुआ हो और मैं इन सबको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फिर फ़रमाया, अपनी-अपनी तमन्ना ज़ाहिर करो। लोगों ने कहा, इतनी बड़ी तमन्नाओं के बाद और तमन्ना क्या हो सकती है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरी दिली तमन्ना यह है कि यह घर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि०, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० जैसे आदमियों से भरा

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 177, हैसमी, भाग 3, पृ० 125, इसाबा, भाग 3, पृ० 484, हुलीया, भाग 1, पृ० 237, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 300

हुआ हो और मैं उन्हें अल्लाह की इताअत के अलग-अलग कामों में इस्तेमाल करूं। (काम के आदमियों की ज़्यादा ज़रूरत है)

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने (इन सब लोगों की मौजूदगी में) कुछ माल हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के पास भेजा और (ले ज़ाने वाले से) फ़रमाया, देखना वह इस माल का क्या करते हैं। जब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० के पास वह माल पहुंचा तो उन्होंने सारा माल बांट दिया।

फिर हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० के पास कुछ माल भेजा, उन्होंने उसे बांट दिया, फिर हज़रत अबू उबैदा रज़ि० के पास कुछ माल भेजा और (ले जाने वाले से) फ़रमाया, देखना, वह इस माल का क्या करते हैं। (उन्होंने भी सारा बांट दिया) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तुमसे पहले कह दिया था (कि ये तीनों काम के आदमी हैं और इनकी एक ख़ूबी यह है कि माल दूसरों पर ख़र्च करते हैं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल बांटना

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक मज्लिस में बाईस हज़ार दिरहम आए। उन्होंने उस मज्लिस से उठनेसे पहले ही सारे बांट दिए।

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक लाख भेजे। साल बीतने से पहले ही उन्होंने सारे ख़र्च कर दिए और उनमें से कुछ बाक़ी न रहा।

हज़रत अय्यूब बिन वाईल रासबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदीना मुनव्वरा आया तो मुझे हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के एक पड़ोसी ने यह क़िस्सा सुनाया कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के पास हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से चार हज़ार, एक और आदमी की ओर से चार हज़ार और एक और आदमी की ओर से दो

1. तारीख़े सग़ीर, पृ० 29

हज़ार (कुल दस हज़ार) और एक झालर वाली चादर आई। फिर वह बाज़ार गए और अपनी सवारी के लिए एक दिरहम का चारा उधार खरीदा। मुझे मालूम था कि उनके पास इतना माल आया है, (इसलिए मैं बड़ा हैरान हुआ कि इनके पास इतना माल आया है और यह एक दिरहम का चारा उधार ख़रीद रहे हैं, इसलिए) मैं उनकी बांदी के पास गया और मैंने उससे कहा, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं, तुम सच-सच बताना। क्या हज़रत अबू अब्दुर्रहमान (यह हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का उपनाम है) के पास हज़रत मुआविया रज़ि० की ओर से चार हज़ार और एक और आदमी की ओर से चार हज़ार और एक और आदमी की ओर से दो हज़ार और एक चादर नहीं आई है?

उसने कहा, हां, आई है।

मैंने कहा, मैंने उन्हें देखा है कि वह एक दिरहम का उधार चारा ख़रीद रहे थे (तो यह क्या बात है? इतने माल के होते हुए वह उधार क्यों ख़रीद रहे थे?)

उस बांदी ने कहा, रात सोने से पहले ही उन्होंने वह दस हज़ार बांट दिए थे और फिर वह चादर अपनी कमर पर डालकर बाहर चले गए थे और वह भी किसी को दे दी, फिर घर वापस आए।

चुनांचे मैंने (बाज़ार में जाकर) एलान किया, ऐ व्यापारियों की जमाअत! तुम इतनी दुनिया कमा कर क्या करोगे? (हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की तरह दूसरों पर सारा माल ख़र्च कर दो) कल रात हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के पास दस हज़ार खरे दिरहम आए थे, वह उन्होंने रात ही सारे ख़र्च कर दिए, इसलिए) आज अपनी सवारी के लिए वह एक दिरहम का चारा उधार ख़रीद रहे थे।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास एक मज्लिस में बीस हज़ार से ज़्यादा दिरहम आए तो उन्होंने उस मज्लिस से उठने से पहले ही वे सब बांट दिए और इसके अलावा उनके पास जो पहले से थे, वे भी सब दे दिए

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 196,

और जो कुछ पास था, वह सब ख़त्म कर दिया, तो एक साहब आए जिनको देने का उनका पुराना तरीक़ा था। (अब अपने पास से देने के लिए कुछ बचा नहीं था, इसलिए) जिनको दिया था, उनमें से एक आदमी से उधार लेकर उन साहब को दिए।

हज़रत मैमून कहते हैं, कुछ लोग यह कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कंजूस हैं। ये लोग ग़लत कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! जहां ख़र्च करने से (आख़िरत का) नफ़ा होता है वहां ख़र्च करने में वह बिल्कुल कंजूस नहीं हैं। (हां, अपने ऊपर ख़र्च नहीं करते और ख़ामख़ाह नहीं देते)[1]

हज़रत अशअस बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु का माल बांटना

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, क़बीला किन्दा के एक आदमी पर मेरा क़र्ज़ था, मैं उसके पास (क़र्ज़ वसूल करने के लिए) फ़ज्र से पहले आख़िर रात में जाया करता था। एक दिन मैं हज़रत अशअस बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु की मस्जिद के पास से गुज़र रहा था कि फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त हो गया। मैंने वहीं नमाज़ पढ़ी।

जब इमाम ने सलाम फेरा तो इमाम ने हर आदमी के सामने कपड़ों का एक जोड़ा, जूती का एक जोड़ा और पांच सौ दिरहम रखे।

मैंने कहा, मैं इस मस्जिद वालों में से नहीं हूं। (इसलिए मुझे न दो) फिर मैंने पूछा, यह क्या है? (यह लोगों को क्यों दे रहे हैं?)

लोगों ने बताया, हज़रत अशअस बिन क़ैस मक्का मुकर्रमा से आए हैं। (इस ख़ुशी में वह हर नमाज़ी को दे रहे हैं।)[2]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा का माल बांटना

हज़रत उम्मे ज़र्रा रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, हज़रत आइशा

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 109
2. हैसमी, भाग 9, पृ० ४15

रज़ियल्लाहु अन्हा के पास एक लाख आए। उन्होंने उसी वक़्त वे सारे बांट दिए। उस दिन उनका रोज़ा था, मैंने उनसे कहा, आपने इतना ख़र्च किया है तो क्या आप अपने लिए इतना भी नहीं कर सकतीं कि इफ़्तार के लिए एक दिरहम का गोश्त मंगा लेतीं!

उन्होंने कहा, (मुझे तो याद ही नहीं रहा कि मेरा रोज़ा है) अगर तू मुझे पहले याद करा देती तो मैं गोश्त मंगा लेती।[1]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा का माल बांटना

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास दिरहमों से भरा हुआ थैला भेजा। हज़रत सौदा रज़ि० ने पूछा, यह क्या है?

लाने वालों ने बताया, ये दिरहम हैं तो (हैरान होकर ताज्जुब से) फ़रमाया, अरे, खजूरों की तरह थैले में दिरहम? (यानी इतने बड़े थैले में तो खजूरें डाली जाती हैं, दिरहम तो थोड़े हुआ करते हैं। हज़रत उमर रज़ि० ने बहुत ज़्यादा दिरहम भेज दिए हैं) और फिर उन्होंने वे सारे दिरहम बांट दिए।[2]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का माल बांटना

हज़रत बर्रा बिन्त राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, जब हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों में अताया बांटे, तो हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के पास उनका हिस्सा भेजा। जब वह माल उनके पास पहुंचा, तो फ़रमाने लगीं, अल्लाह हज़रत उमर रज़ि० की मग़फ़िरत फ़रमाए। मेरी दूसरी बहनें इस माल को मुझसे ज़्यादा अच्छे तरीक़े से बांट सकती हैं, (इसलिए उनके पास ले जाओ)

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 350,
2. इसाबा, भाग 4, पृ० 339,

लाने वालों ने कहा, यह सारा माल आपका ही है।

फ़रमाने लगीं, सुब्हानल्लाह! और एक कपड़े से परदा कर लिया और फ़रमाया, अच्छा रख दो और उस पर कपड़ा डाल दो। फिर मुझसे फ़रमाया, इस कपड़े में हाथ डालकर एक मुट्ठी भर कर बनू फ़्लां को और बनू फ़्लां को दे आओ। ये सब उनके रिश्तेदार थे और यतीम थे, यों ही बांटती रहीं, यहां तक कि कपड़े के नीचे थोड़े से दिरहम बच गए तो मैंने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ उम्मुल मोमिनीन! अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए। अल्लाह की क़सम! इस माल में हमारा भी तो हक़ है।

फ़रमाया, अच्छा कपड़े के नीचे जितने दिरहम हैं, वे सब तुम्हारे। हमें कपड़े के नीचे पचासी दिरहम मिले। इसके बाद आसमान की तरफ़ हाथ उठाकर हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! इस साल के बाद मुझे हज़रत उमर रज़ि० की अता न मिले। चुनांचे (उनकी दुआ कुबूल हो गई और उनका इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन काब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा का सालाना वज़ीफ़ा बारह हज़ार था और वह भी उन्होंने सिर्फ़ एक साल लिया और लेने के बाद यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह! अगले साल यह माल मुझे न मिले, क्योंकि यह फ़ित्ना ही है। (अगले साल से पहले ही मुझे उठा ले) फिर अपने रिश्तेदारों और ज़रूरतमंदों में सारा माल बांट दिया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला कि उन्होंने सारा माल ख़र्च कर दिया है, तो उन्होंने फ़रमाया, यह ऐसी (ऊंचे दर्जे की) ख़ातून हैं जिनके साथ अल्लाह ने भलाई ही का इरादा किया है। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० गए और उनके दरवाज़े पर खड़े होकर अन्दर सलाम भिजवाया और कहा, मुझे पता चला है कि आपने सारा माल बांट दिया है। यह मैं एक हज़ार और भेज रहा हूं, इसे आप अपने पास रखें (एकदम न ख़र्च कर दें) लेकिन जब ये एक हज़ार दिरहम उनके पास

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 300,

पहुंचे तो उन्होंने उनको भी पहले की तरह बांट दिया।[1]

दूध पीते बच्चों के लिए वज़ीफ़ा मुक़र्रर करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक तिजारती क़ाफ़िला मदीना मुनव्वरा आया और उन्होंने ईदगाह में क़ियाम किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, क्या तुम इस बात के लिए तैयार हो कि हम दोनों इस क़ाफ़िले का चोरों से पहरा दें? (उन्होंने कहा, ठीक है)

चुनांचे ये दोनों रात भर क़ाफ़िले का पहरा भी देते रहे और बारी-बारी नमाज़ भी पढ़ते रहे। हज़रत उमर रज़ि० ने एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो उन्होंने जाकर उसकी मां से कहा, अल्लाह से डर और अपने बच्चे का ख़्याल कर और फिर हज़रत उमर रज़ि० अपनी जगह वापस आ गए। फिर बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो हज़रत उमर रज़ि० ने जाकर दोबारा उसकी मां को वही बात कही और अपनी जगह वापस आ गए।

जब आख़िर रात हुई तो फिर उन्होंने इस बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो जाकर उसकी मां से कहा, तेरा भला हो! मेरा ख़्याल है कि तू बच्चे के हक़ में बुरी मां है, क्या बात है कि तेरा बेटा आज सारी रात आराम न कर सका?

उस औरत ने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! आज रात तो (बार-बार आ-आकर) तुमने मुझे तंग कर दिया। मैं बहला-फुसलाकर उसका दूध छुड़ाना चाहती हूं, लेकिन वह मानता नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम उसका दूध क्यों छुड़ाना चाहती हो?

उस औरत ने कहा, क्योंकि हज़रत उमर रज़ि० सिर्फ़ उस बच्चे का वज़ीफ़ा मुक़र्रर करते हैं जो दूध छोड़ चुका हो।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, इस बच्चे की उम्र क्या है?

उस औरत ने कहा, इतने महीने का है।

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 314,

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तेरा भला हो ! इसका दूध छुड़ाने में जल्दी न कर। (फिर आप वहां वापस आए) और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ में बहुत रोए, ज़्यादा रोने की वजह से उनका क़ुरआन लोगों की समझ में नहीं आ रहा था। सलाम फेरने के बाद आपने लोगों से कहा, उमर रज़ि० के लिए हलाकत हो। उसने मुसलमानों के कितने बच्चे मार डाले (कि उमर रज़ि० ने) उसूल यह बनाया है कि दूध छुड़ाने के बाद बच्चे को वज़ीफ़ा मिलेगा, इसलिए न मालूम कितने बच्चों का दूध वक़्त से पहले छुड़ाया गया होगा और बच्चों को तक्लीफ़ हुई होगी।)

फिर आपने मुनादी को हुक्म दिया कि वह यह एलान करे कि ख़बरदार ! तुम अपने बच्चों का जल्दी दूध न छुड़ाओ, क्योंकि हम दूध पीते मुसलमान बच्चे का भी वज़ीफ़ा मुक़र्रर करेंगे और तमाम इलाक़ों में भी (अपने गर्वनरों को) यह लिखवा भेजा कि हम हर दूध पीते मुसलमान बच्चे का भी वज़ीफ़ा मुक़र्रर करेंगे।[1]

बैतुलमाल में से अपने ऊपर और अपने रिश्तेदारों पर ख़र्च करने में एहतियात से काम लेना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं अल्लाह के माल को (यानी मुसलमानों के इज्तिमाई माल को जो बैतुलमाल में होता है) अपने लिए यतीम के माल की तरह समझता हूं। अगर मुझे ज़रूरत न हो तो मैं उसके इस्तेमाल से बचता हूं और अगर मुझे ज़रूरत हो तो ज़रूरत के मुताबिक़ मुनासिब मिक़्दार में उससे लेता हूं।

दूसरी रिवायत में यह है कि मैं अल्लाह के माल को अपने लिए यतीम के माल की तरह समझता हूं। अल्लाह ने यतीम के माल के बारे में क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है—

مَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ

(سورة نساء آيت ٦)

'और जो आदमी बेनियाज़ हो सो वह तो अपने को बिल्कुल बचाए

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 217, कंज़, भाग 2, पृ० 317

और जो आदमी ज़रूरतमंद हो तो वह मुनासिब मिक़्दार से खा ले।[1]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इस इज्तिमाई माल में से मुझे सिर्फ़ इतना लेना जायज़ है, जितना मैं अपनी निजी कमाई में से ख़र्च करता (यह नहीं कि बैतुलमाल में बे-एहतियाती और फ़िज़ूलख़र्ची करूं)[2]

हज़रत इम्रान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़रूरत पेश आती तो बैतुलमाल के निगरां के पास आते और उससे उधार ले लेते। कभी-कभी आप तंगदस्त होते (और क़र्ज़ वापस करने का वक़्त आ जाता) तो बैतुलमाल का निगरां आकर उनसे क़र्ज़ अदा करने का तक़ाज़ा करता और उनके पीछे पड़ जाता। आख़िर हज़रत उमर रज़ि० क़र्ज़ की अदाएगी की कहीं से कोई शक्ल बनाते। कभी-कभी ऐसा होता कि आपको वज़ीफ़ा मिलता तो उससे क़र्ज़ अदा करते।[3]

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में भी तिजारत किया करते थे। चुनांचे एक बार आपने एक तिजारती क़ाफ़िला शामदेश भेजने का इरादा किया तो उन्होंने चार हज़ार क़र्ज़ लेने के लिए हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आदमी भेजा। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने उस क़ासिद से कहा, जाकर अमीरुल मोमिनीन से कह दो कि वह अब बैतुलमाल से चार हज़ार उधार ले लें। बाद में बैतुलमाल में वापस कर दें।

जब क़ासिद ने वापस आकर हज़रत उमर रज़ि० को उनका जवाब बताया, तो हज़रत उमर रज़ि० को इससे बड़ा बोझ हुआ।

फिर जब हज़रत उमर रज़ि० की हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० से मुलाक़ात हुई तो उनसे कहा, तुमने ही कहा था कि उमर रज़ि० चार

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 198,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 418
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 198,

हज़ार बैतुलमाल से उधार ले ले। अगर (मैं बैतुलमाल से उधार लेकर तिजारती क़ाफ़िले के साथ भेज दूं और फिर) तिजारती क़ाफ़िले की वापसी से पहले मैं मर जाऊं तो तुम लोग कहोगे कि अमीरुल मोमिनीन ने चार हज़ार लिए थे, अब उनका इंतिक़ाल हो गया है, इसलिए ये उनके चार हज़ार छोड़ दो। (तुम लोग तो छोड़ दोगे) और मैं उनके बदले क़ियामत के दिन पकड़ा जाऊंगा। नहीं, मैं बैतुलमाल से बिल्कुल नहीं लूंगा, बल्कि मैं चाहता हूं कि तुम जैसे लालची और कंजूस आदमी से उधार लूं, ताकि अगर मैं मर जाऊं तो वह मेरे माल में से अपना उधार वसूल कर ले।[1]

हज़रत बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार बीमार हुए। उनके लिए इलाज में शहद तज्वीज़ किया गया और उस वक़्त बैतुलमाल में शहद की एक कुप्पी मौजूद थी। (उन्होंने ख़ुद उस शहद को न लिया, बल्कि) मस्जिद जाकर मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, मुझे इलाज के लिए शहद की ज़रूरत है और शहद बैतुलमाल में मौजूद है। अगर आप लोग इजाज़त दें तो मैं उसे ले लूं वरना वह मेरे लिए हराम है। चुनांचे लोगों ने ख़ुशी से उनको इजाज़त दे दी।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक बार कहीं से माल आया, तो उनकी बेटी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को इसकी ख़बर मिली। उन्होंने आ करके हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह ने रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक का हुक्म दिया है, इसलिए इस माल में आपके रिश्तेदारों का भी हक़ है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, ऐ मेरी बिटिया ! मेरे रिश्तेदारों का हक़ मेरे माल में है और यह तो मुसलमानों का माले ग़नीमत है। तुम अपने बाप को धोखा देना चाहती हो, जाओ तशरीफ़ ले जाओ।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 199, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 418,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 418,

चुनांचे हज़रत हफ़सा रज़ि० खड़ी हुई और चादर का दामन घसीटती हुई वापस चली गईं।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु को देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमारे पास जलूला शहर में (माले ग़नीमत के) कुछ ज़ेवर और कुछ चांदी के बर्तन हैं, आप देख लें। जिस दिन आप फ़ारिग़ हों, उस दिन आप इन ज़ेवरों और बरतनों को देख लें और फिर उनके बारे में आप जो इर्शाद फ़रमाएं, हम वैसे करेंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जिस दिन तुम मुझे फ़ारिग़ देखो, याद करा देना। चुनांचे एक दिन हज़रत अब्दुल्लह बिन अरक़म रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया, आज आप फ़ारिग़ नज़र आ रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां। मेरे सामने चमड़े का दस्तरख़्वान बिछाकर उन पर वे ज़ेवर और चांदी के बरतन डाल दो।

चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म ने दस्तरख़्वान बिछाकर वह सारा माल उस पर डाल दिया।

फिर हज़रत उमर रज़ि० उस माल के पास आकर खड़े हो गए और फ़रमाया, ऐ अल्लाह! आपने इस माल का तज़्किरा करते हुए फ़रमाया है और यह आयत आख़िर तक तिलावत फ़रमाई—

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ . (سورة آل عمران : آیت ۱۴)

'ख़ुशनुमा मालूम होती (अक्सर) लोगों को मुहब्बत मर्ग़ूब चीज़ों की (जैसे) औरतें हुईं, बेटे हुए, लगे हुए ढेर सोने और चांदी के, नम्बर (यानी निशान) लगे हुए घोड़े हुए (या दूसरे) मवेशी हुए और खेती हुई (लेकिन) ये सब इस्तेमाली चीज़ें हैं दुनिया की ज़िंदगी की और अंजामेकार की ख़ूबी तो अल्लाह ही के पास है। (सूरः आले इम्रान, आयत 14)

और (ऐ अल्लाह!) आपने यह भी फ़रमाया है—

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَا آتَاكُمْ . (سورة حديد : آیت ۲۳)——

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 412,

'ताकि जो चीज़ तुमसे जाती रहे तुम उस पर रंज (इतना) न करो और ताकि जो चीज़ तुमको अता फ़रमाई है, उस पर इतराओ नहीं।'

(सूर: अल-हदीद, आयत 23)

(ऐ अल्लाह !) जिन मर्ग़ूब चीज़ों की मुहब्बत हमारे दिलों में भली और ख़ुशनुमा कर दी गई है, उनसे ख़ुश होने को छोड़ना हमारे बस में नहीं है। ऐ अल्लाह ! हमें इन चीज़ों को हक़ में सही जगह ख़र्च करने वाला बना और मैं उनके शर से तेरी पनाह मांगता हूं।

इतने में एक साहब हज़रत उमर रज़ि० के बेटे अब्दुर्रहमान बिन बुहैया को उठाकर लाए। (बुहैया हज़रत उमर रज़ि० की बांदी थीं, जिनसे अब्दुर्रहमान पैदा हुए थे। कुछ लोग इस बांदी का नाम लुहैया बताते हैं।)

उस बच्चे ने कहा, अब्बा जान ! मुझे एक अंगूठी दे दें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जा, अपनी मां के पास। वह तुझे सत्तू पिलाएगी।

रिवायत करने वाले कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! हज़रत उमर रज़ि० ने अपने बेटे को कुछ नहीं दिया।[1]

हज़रत इस्माईल बिन मुहम्मद बिन साद बिन अबी वक़्क़ास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बहरैन से मुश्क और अंबर आया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैं चाहता हूं कि मुझे कोई ऐसी औरत मिल जाए जो तौलना अच्छी तरह जानती हो और वह मुझे यह ख़ुशबू तौल दे, ताकि मैं इसे मुसलमानों में बांट सकूं।

उनकी बीवी हज़रत आतिका बिन्त ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा, मैं तौलने में बड़ी माहिर हूं, लाइए मैं तौल देती हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, तुमसे नहीं तुलवाता।

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 412,

उन्होंने कहा, क्यों?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे डर है कि तू उसे अपने हाथों से तराज़ू में रखेगी (यों कुछ न कुछ ख़ुशबू तेरे हाथों को लग जाएगी और कनपटी और गरदन की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया) और यों तू अपनी कनपटी और गरदन पर अपने हाथ फेरेगी, इस तरह तुझे मुसलमानों से कुछ ज़्यादा ख़ुशबू मिल जाएगी।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक लड़की को देखा जो कमज़ोरी की वजह से लड़खड़ा कर चल रही थी। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह लड़की कौन है?

तो (उनके बेटे) हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, यह आपकी बेटी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह मेरी कौन-सी बेटी है?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, यह मेरी बेटी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह इतनी कमज़ोर क्यों है?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, आपकी वजह से, क्योंकि आप इसे कुछ नहीं देते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ आदमी! अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में धोखे में नहीं रखना चाहता। (ख़ुद कमा कर) तुम अपनी औलाद पर ख़ूब ख़र्च करो। (मैं बैतुलमाल में से नहीं दूंगा)[2]

हज़रत आसिम बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी शादी की तो एक महीने तक अल्लाह के माल में से (यानी बैतुलमाल में से) मुझे ख़र्च देते रहे। फिर इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ने (अपने दरबान) यरफ़ा को मुझे बुलाने भेजा। मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 413,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 418

उन्होंने फ़रमाया, मैं ख़लीफ़ा बनने से पहले भी यही समझता था कि मेरे बैतुलमाल से अपने हक़ से ज़्यादा लेना जायज़ नहीं और अब ख़लीफ़ा बनने के बाद यह माल मेरे लिए और ज़्यादा हराम हो गया है, क्योंकि अब यह मेरे पास अमानत के तौर पर है और मैं तुझे अल्लाह के माल में से एक महीना ख़र्च दे चुका हूं। अब तुम्हें इसमें से और नहीं दे सकता हूं। हां, मैं तुम्हारी मदद इस तरह कर सकता हूं कि ग़ाबा में मेरी जायदाद है, तुम उसका फल काट कर बेच दो, फिर (उसके पैसे लेकर) अपनी क़ौम के किसी ताजिर के पास जाकर खड़े हो जाओ और देखो, जब वह कोई चीज़ ख़रीदने लगे तो तुम उसके साथ साझा कर लो। (इससे जो नफ़ा हो, उससे) ख़र्चा लेकर अपने घरवालों पर ख़र्च करते रहो।[1]

हज़रत मालिक बिन औस बिन हदसान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रूम के बादशाह का क़ासिद आया। हज़रत उमर रज़ि० की बीवी ने एक दीनार उधार लेकर इत्र खरीदा और शीशियों में डालकर वह इत्र इस क़ासिद के हाथ रूम के बादशाह की बीवी को हदिए में भेज दिया।

जब यह क़ासिद बादशाह की बीवी के पास पहुंचा और उसे वह इत्र दिया तो उसने वे शीशियां ख़ाली करके जवाहरात से भर दीं और क़ासिद से कहा, जाओ, यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की बीवी को दे आओ। जब ये शीशियां हज़रत उमर रज़ि० की बीवी के पास पहुंचीं, तो उन्होंने शीशियों से वे जवाहरात निकालकर एक बिछौने पर रख दिए।

इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० घर आ गए और उन्होंने पूछा, यह क्या है? उनकी बीवी ने उनको सारा क़िस्सा सुनाया। हज़रत उमर रज़ि० ने वे तमाम जवाहरात लेकर बेच दिए और उनकी क़ीमत में से सिर्फ़ एक दीनार अपनी बीवी को दिया और बाक़ी सारी रक़म मुसलमानों के लिए बैतुलमाल में जमा करा दी।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार मैंने कुछ

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 418,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 422,

ऊंट खरीदे और उनको बैतुलमाल की चरागाह में छोड़ आया। जब वे खूब मोटे हो गए तो मैं उन्हें (बेचने के लिए बाज़ार) ले आया। इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी बाज़ार तश्रीफ़ ले आए और उन्हें मोटे-मोटे ऊंट नज़र आए, तो उन्होंने पूछा, ये ऊंट किसके हैं?

लोगों ने उन्हें बताया कि ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के हैं, तो फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ! वाह वाह ! अमीरुल मोमिनीन के बेटे के क्या कहने।

मैं दौड़ता हुआ आया और मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या बात है? आपने फ़रमाया, ये ऊंट कैसे हैं?

मैंने अर्ज़ किया, मैंने ये ऊंट ख़रीदे थे और बैतुलमाल की चरागाह में चरने के लिए भेजे थे (अब मैं उनको बाज़ार ले आया हूं) ताकि मैं दूसरे मुसलमानों की तरह उन्हें बेचकर नफ़ा हासिल करूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां। बैतुलमाल की चरागाह में लोग एक दूसरे को कहते होंगे, अमीरुल मोमिनीन के बेटे के ऊंटों को चराओ और अमीरुल मोमिनीन के बेटे के ऊंटों को पानी पिलाओ। (मेरे बेटे होने की वजह से तुम्हारे ऊंटों की ज़्यादा रियायत की होगी, इसलिए) ऐ अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ! इन ऊंटों को बेचो और तुमने जितनी रक़म में ख़रीदे थे, वह तो तुम ले लो और बाक़ी बची रक़म मुसलमानों के बैतुलमाल में जमा करा दो।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ससुराल वालों में से एक साहब आए और उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से इशारों-इशारों में यह बात कही कि हज़रत उमर रज़ि० उनको बैतुलमाल में से कुछ दे दें, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें डांट दिया और फ़रमाया, तुम चाहते हो कि मैं अल्लाह के सामने ख़ियानत करने वाला बादशाह बनकर पेश हूं और उसके बाद उन्हें अपने निजी माल में से दस हज़ार दिरहम दिए।[2]

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 419,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 219, कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 317

हज़रत अन्तरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं (कूफ़ा के मुहल्ले) ख़वरनक़ में हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने एक पुरानी चादर ओढ़ रखी थी और आप सर्दी की वजह से कांप रहे थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ने (बैतुलमाल के) इस माल में आपका और आपके बाल-बच्चों का भी हिस्सा रखा है, (फिर भी आपके पास सर्दी से बचने का कोई इंतिज़ाम नहीं है) और आप सर्दी से कांप रहे हैं, तो उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे माल में से कुछ नहीं लेना चाहता हूं और यह पुरानी चादर भी वह है जो मैं अपने घर मदीना मुनव्वरा से लाया था।[1]

---

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 3, हुलीया, भाग 1, पृ० 82,

माल वापस करना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस माल को क़ुबूल न करना जो आपको पेश किया गया

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार अल्लाह ने एक फ़रिश्ता अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा। इस फ़रिश्ते के साथ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम भी थे। इस फ़रिश्ते ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया। अल्लाह आपको दो बातों में अख़्तियार दे रहे हैं, चाहे बन्दगी वाली नुबूवत अख़्तियार फ़रमाएं, चाहे बादशाहत वाली।

हुज़ूर सल्ल० हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की तरफ़ इस तरह मुतवज्जह हुए, गोया कि आप उनसे मश्विरा कर रहे हैं तो उन्होंने तवाज़ो अख़्तियार करने का मश्विरा किया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तो बन्दगी वाली नुबूवत चाहता हूं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते है, इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने वफ़ात तक कभी टेक लगाकर खाना नहीं खाया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम सफ़ा पहाड़ी पर थे। आपने फ़रमाया, ऐ जिब्रील! उस ज़ात की क़सम, जिसने तुम्हें हक़ देकर भेजा है। शाम को मुहम्मद सल्ल० के घरवालों के पास न एक फनकी आटा था और न एक मुट्ठी सत्तू। आपकी बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि आपने आसमान से धमाके की ऐसी ज़ोरदार आवाज सुनी जिससे आप घबरा गए। आपने हज़रत जिब्रील से पूछा, क्या अल्लाह ने क़ियामत क़ायम होने का हुक्म दे दिया है?

हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया, नहीं, बल्कि अल्लाह ने आपकी बात सुनते ही इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया और वह उतरकर

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 48,

आपके पास आए हैं, चुनांचे हज़रत इसराफ़ील अलै० ने ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, आपने जो बात हज़रत जिब्रील से कही, वह अल्लाह ने सुनी और अल्लाह ने मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियां देकर आपके पास भेजा है और मुझे यह हुक्म दिया है कि मैं आपकी ख़िदमत में यह पेश करूं कि अगर आप कहें तो मैं तहामा के पहाड़ों को ज़मुर्रद, याक़ूत, सोने और चांदी का बना दूं, और ये पहाड़ आपके साथ चला करें। अब आप फ़रमाएं, आप बादशाहत वाली नुबूवत चाहते हैं या बन्दगी वाली।

हज़रत जिब्रील अलै० ने आपको तवाज़ो अपनाने का इशारा किया तो आपने तीन बार फ़रमाया, नहीं, मैं बन्दगी वाली नुबूवत चाहता हूं।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे रब ने मुझ पर यह बात पेश फ़रमाई कि मेरे लिए मक्का के पथरीले मैदान को सोने का बना दिया जाए। मैंने अर्ज़ किया, नहीं, ऐ मेरे रब ! नहीं। मैं तो यह चाहता हूं कि एक दिन पेट भरकर खाऊं और एक दिन भूखा रहूं। आपने दो-तीन बार यही बातें कहीं, ताकि जब भूख लगे तो मैं आपके सामने आजिज़ी करूं और आपको याद करूं और जब पेट भरकर खाऊं तो आपका शुक्र अदा करूं और आपकी तारीफ़ करूं।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे पास एक फ़रिश्ता आया और उसने कहा, ऐ मुहम्मद ! आपके रब आपको सलाम कह रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि अगर आप चाहें तो मैं मक्का के पथरीले मैदान आपके लिए सोने के बना दूं।

हज़रत अली रज़ि० कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने आसमान की ओर मुंह उठाकर अर्ज़ किया, नहीं, ऐ मेरे रब ! मैं यह नहीं चाहता। मैं यह चाहता हूं कि एक दिन पेट भरकर खाऊं, ताकि आपकी तारीफ़ करूं और एक

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 157, हैसमी, भाग 10, पृ० 315,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 150

दिन भूखा रहूं ताकि आपसे मांगूं।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, अहज़ाब की लड़ाई (यानी ख़ंदक़ की लड़ाई) में एक मुश्रिक मारा गया तो मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह पैग़ाम भेजा कि उसकी लाश हमें दे दें, हम आपको इसके बदले में बारह हज़ार देंगे।

आपने फ़रमाया, न इसकी लाश में ख़ैर है और न इसकी क़ीमत में, (इसलिए इसकी लाश कुछ दिए बग़ैर ही दे दो।)

इमाम अहमद ने इस रिवायत में ये लफ़्ज़ नक़ल किए हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसकी लाश उन मुश्रिकों को वैसे ही दे दो, इसलिए कि इसकी लाश भी नापाक है और इसकी क़ीमत भी नापाक है। चुनांचे आपने उनसे कुछ नहीं लिया (और लाश उनको वैसे ही दे दी)[2]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन नौफ़ुल या इब्ने नौफ़ुल अपने घोड़े पर सवार था। वह घोड़ा गिर पड़ा जिससे नौफ़ुल मर गया तो (काफ़िरों के सरदार) अबू सुफ़ियान ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उसकी लाश के बदले में सौ ऊंट भेजे। आपने इंकार फ़रमा दिया और फ़रमाया, इसकी लाश ले जाओ। उसका बदला भी नापाक है और वह ख़ुद भी नापाक है।[3]

हज़रत उर्वः रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु यमन गए और उन्होंने वहां (हिमयर के नवाब) ज़ूयज़न का जोड़ा ख़रीदा और उसे लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मदीना आए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हदिए के तौर पर पेश किया।

हुज़ूर सल्ल० ने लेने से इंकार कर दिया और फ़रमाया, हम किसी मुश्रिक का हदिया क़ुबूल नहीं करते। (उस वक़्त तक हज़रत हकीम मुसलमान नहीं हुए थे) चुनांचे हज़रत हकीम उसे बेचने लगे तो हुज़ूर

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 39
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 107
3. कंज़, भाग 5, पृ० 281,

सल्ल० ने उसे ख़रीद लेने का हुक्म फ़रमाया तो वह जोड़ा आपके लिए ख़रीदा गया। आप उसे पहनकर मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए।

हज़रत हकीम फ़रमाते हैं, उस जोड़े में हुज़ूर सल्ल० बहुत ख़ूबसूरत नज़र आ रहे थे और मैंने उस जोड़े में हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा ख़ूबसूरत आदमी कभी नहीं देखा। आप ऐसे लग रहे थे जैसे चौदहवीं का चांद। देखते ही बे-अख़्तियार ये शेर मेरी ज़ुबान पर आ गए।

مَا يَنْظُرُ الْحُكَّامُ بِالْحُكْمِ بَعْدَمَا　　بَدَا وَاضِحٌ ذُوْ غُرَّةٍ وَحُجُوْلٍ

'जब एक रोशन और चमकदार ऐसी हस्ती (यानी अल्लाह के रसूल सल्ल० जैसी हस्ती) ज़ाहिर हो गई है जिसका चेहरा, हाथ और पैर सभी चमक रहे हैं, तो अब उसके बाद हुक्काम हुक्म देने के बारे में सोचकर क्या करेंगे? (यानी अब तो हुज़ूर सल्ल० की मानी जाएगी, इन हाकिमों की नहीं।)'

إِذَا قَايَسُوْهُ الْمَجْدَ أَرْبَى عَلَيْهِمُ　　كَمُسْتَفْرِغٍ مَاءَ الذِّنَابِ سَجِيْلٍ

'जब ये हाकिम बुज़ुर्गी और शराफ़त में उनका मुक़ाबला करेंगे, तो यह उनसे बढ़ जाएंगे, क्योंकि उन पर बुज़ुर्गी और शराफ़त ऐसे कसरत से बहाई गई है, जैसे किसी पर पानी से भरे हुए बड़े-बड़े डोल डाले गए हों।'

यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्कराने लगे।[1]

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जाहिलियत के ज़माने में ही मुझे हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी। फिर आपने जब नुबूवत का दावा किया और मदीना तशरीफ़ ले गए तो मैं हज के मौसम में यमन गया, वहां मुझे (हिमयर के नवाब) ज़ी यज़न का जोड़ा पचास दिरहम में बिकता हुआ नज़र आया। मैंने उसे हुज़ूर सल्ल० को हदिया देने की नीयत से ख़रीद लिया।

मैं वह जोड़ा लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में (मदीना मुनव्वरा) हाज़िर हुआ और मैंने बहुत कोशिश की कि आप उसे ले लें, लेकिन आपने इंकार कर दिया और आपने फ़रमाया, हम मुश्रिकों से कुछ नहीं

1. कंज़, भाग 3, पृ० 177, मज्मा, भाग 8, पृ० 278,

लेते (और तुम मुश्रिक हो) लेकिन अगर तुम चाहो तो हम क़ीमत देकर तुमसे यह ख़रीद लेते हैं। चुनांचे मैंने क़ीमत लेकर वह जोड़ा हुज़ूर सल्ल० को दे दिया।

फिर मैंने एक दिन देखा कि आप मिंबर पर तशरीफ़ रखते हैं और आपने वह ज़ोड़ा पहन रखा है। आप उस जोड़े में इतने हसीन नज़र आ रहे थे कि मैंने इतना हसीन कभी किसी को नहीं देखा। फिर आपने वह जोड़ा हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा को दे दिया। मैंने वह जोड़ा उसामा रज़ि० को पहने हुए देखा, तो मैंने कहा, ऐ उसामा रज़ि० ! तुमने ज़ीयज़न (नवाब) का जोड़ा पहन रखा है?

उन्होंने कहा, हां, मैं ज़ीयज़न से बेहतर हूं और मेरा बाप उसके बाप से और मेरी मां उसकी मां से बेहतर है।

फिर मैं मक्का मुकर्रमा आ गया और उन्हें हज़रत उसामा रज़ि० की बात सुनाई, जिससे वे सब बड़े हैरान हुए (कि ग़ुलाम का बेटा होकर भी ख़ुद को और अपने मां-बाप को इस्लाम की वजह से नवाबों से ज़्यादा क़ीमती समझता है।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे चचा आमिर बिन तुफ़ैल आमरी ने मुझे यह क़िस्सा सुनाया कि आमिर बिन मालिक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक घोड़ा हदिए में भेजा और यह लिखा कि मेरे पेट में एक फोड़ा है, अपने पास से उसकी दवा भेज दें।

आमिर बिन तुफ़ैल कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने घोड़ा वापस कर दिया, क्योंकि आमिर बिन मालिक मुसलमान नहीं थे और उनको हदिए में शहद की कुप्पी भेजी और फ़रमाया, इससे अपना इलाज कर लो।[2]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुलाअिबुल असिन्ना (नेज़ों का खिलाड़ी, वह आमिर बिन मालिक का लक़ब है) हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में कुछ हदिया लेकर आया। हुज़ूर

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 484
2. इब्ने असाकिर

सल्ल० ने उस पर इस्लाम पेश किया, लेकिन उसने मुसलमान होने से इंकार कर दिया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं किसी मुश्रिक का हदिया क़ुबूल नहीं कर सकता।[1]

हज़रत अय्याज़ बिन हिमार मुजाशिई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उन्होंने ऊंटनी या कोई और जानवर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदिए के तौर पर पेश किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम मुसलमान हो चुके हो?

उन्होंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने मुश्रिकों का हदिया लेने से मना फ़रमाया है।[2]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों में बयान फ़रमाया और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, सबसे बड़ी अक़्लमंदी तक़्वा अख़्तियार करना है। फिर आगे और हदीस ज़िक्र की, जिसमें यह मज़्मून भी है कि अगले दिन सुबह को हज़रत अबूबक्र रज़ि० बाज़ार जाने लगे, तो उनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, आप कहां जा रहे हैं?

उन्होंने फ़रमाया, बाज़ार!

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जब आप पर इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी (ख़िलाफ़त की वजह से) आ गई है कि जिससे अब आप बाज़ार नहीं जा सकते। (सारा वक़्त ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियों में लगाएंगे, तो फिर ये ज़िम्मेदारियां कैसे पूरी हो सकेंगी।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, सुब्हानल्लाह! इतना लगना पड़ेगा कि बाल-बच्चों के लिए कमाने का वक़्त न बचे, (तो फिर उन्हें

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 177
2. कंज़, भाग 3, पृ० 177,

कहां से खिलाऊंगा?)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हम (आपके लिए और आपके बाल-बच्चों के लिए बैतुलमाल में से) मुनासिब मिक़्दार में वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर देते हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उमर रज़ि० का नास हो! मुझे डर है कि कहीं उस माल में से कुछ लेने की गुंजाइश न हो। चुनांचे (मश्विरे से उनका वज़ीफ़ा मुक़र्रर हुआ और) उन्होंने दो साल से ज़्यादा (ख़िलाफ़त की) मुद्दत में आठ हज़ार दिरहम लिए। जब उनकी मौत का वक़्त आया, तो फ़रमाया, मैंने उमर रज़ि० से कहा था, मुझे डर है कि मुझे उस माल में से लेने की गुंजाइश बिल्कुल नहीं है, लेकिन उमर रज़ि० उस वक़्त मुझ पर ग़ालिब आ गए और मुझे उनकी बात मानकर बैतुलमाल में से वज़ीफ़ा लेना पड़ा, इसलिए जब मैं मर जाऊं, तो मेरे माल में से आठ हज़ार लेकर बैतुलमाल में वापस कर देना।

चुनांचे जब वे आठ हज़ार (हज़रत अबूबक्र रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद) हज़रत उमर रज़ि० के पास लाए गए तो आपने फ़रमाया, अल्लाह अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़रमाए। उन्होंने अपने बाद वालों को मुश्किल में डाल दिया (कि अपनी सारी जान और सारा माल दीन पर लगा दे और दुनिया में कुछ न ले।)[1]

हज़रत अबूबक्र बिन हफ़्स बिन उमर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आईं। उस वक़्त आपको नज़्अ (मौत का वक़्त क़रीब होने) की तक्लीफ़ हो रही थी और आपका सांस सीने में था। यह हालत देखकर हज़रत आइशा रज़ि० ने यह शेर पढ़ा—

لَعَمْرُكَ مَا يُغْنِي الثَّرَاءُ عَنِ الْفَتَى   إِذَا حَشْرَجَتْ يَوْمًا وَضَاقَ بِهَا الصَّدْرُ

'तेरी जान की क़सम! माल और क़ौम की ज़्यादती नवजवान को उस दिन कोई फ़ायदा नहीं दे सकती, जिस दिन सांस उखड़ने लगे और सीना घुटने लगे।'

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 353,

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० की तरफ़ ग़ुस्से से देखा और फ़रमाया, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! यह बात नहीं है, यह तो वह हालत है जिसका ज़िक्र अल्लाह ने क़ुरआन में किया है—

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ.

(سورت ق، آیت ۱۹)

'और मौत की सख़्ती (क़रीब) आ पहुंची। यह (मौत) वह चीज़ है जिससे तू बिदकता था।' (सूरः क़ाफ़, आयत 19)

मैंने तुम्हें एक बाग़ दिया था, लेकिन मेरा दिल उससे मुतमइन नहीं, इसलिए तुम उसे मेरी मीरास में वापस कर दो।

मैंने कहा, बहुत अच्छा, और फिर मैंने वह बाग़ वापस कर दिया।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, हम जब से मुसलमानों के ख़लीफ़ा बने हैं, हमने मुसलमानों का न कोई दीनार खाया है और न कोई दिरहम। अलबत्ता उनका मोटा-झोटा खाना ज़रूर खाया है और ऐसे ही उनके मोटे और खुरदरे कपड़े ज़रूर पहने हैं और इस वक़्त हमारे पास मुसलमानों के माले ग़नीमत में से और तो कुछ नहीं हैं, अलबत्ता ये तीन चीज़ें हैं—1. एक हब्शी ग़ुलाम, 2. दूसरा पानी वाला ऊंट और 3. तीसरे पुरानी ऊनी चादर। जब मैं मर जाऊं, तो ये तीनों चीज़ें हज़रत उमर रज़ि० के पास भेज देना और इनकी ज़िम्मेदारी से मुझे फ़ारिग़ कर देना। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० ने ऐसा ही किया।

जब क़ासिद ये चीज़ें लेकर हज़रत उमर रज़ि० के पास आया तो वह रोने लगे और इतने रोए कि उनके आंसू ज़मीन पर गिरने लगे और वह फ़रमा रहे थे, अल्लाह अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़रमाए, उन्होंने अपने बाद वालों को मुश्किल में डाल दिया है। (दुनिया में कुछ न लेने का ऐसा ऊंचा मेयार क़ायम किया है कि बाद वालों के लिए उसे अख़्तियार करना बहुत मुश्किल है।) ऐ ग़ुलाम ! इन चीज़ों को उठाकर रख लो।

इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, सुब्हानल्लाह ! आप हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घरवालों से हब्शी ग़ुलाम,

पानी वाला ऊंट और पुरानी ऊनी चादर जिसकी क़ीमत पांच दिरहम है छीन रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप क्या चाहते हैं?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, आप ये चीज़ें अबूबक्र रज़ि० के घरवालों को वापस कर दें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, उस ज़ात की क़सम, जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर भेजा है, यह मेरी ख़िलाफ़त के ज़माने में नहीं होगा, नहीं होगा। हज़रत अबूबक्र रज़ि० तो मौत के वक़्त इन चीज़ों से जान छुड़ा कर गए और मैं ये चीज़ें उनके घरवालों को वापस कर दूं। और मौत इससे भी ज़्यादा क़रीब है (यानी मैं वापस कर दूंगा, तो ये तो ख़ुश हो जाएंगे, लेकिन अल्लाह नाराज़ हो जाएंगे, इसलिए मैं यह काम नहीं कर सकता। मुझे भी दुनिया से जाना है, तो वहां जाकर अबूबक्र रज़ि० को क्या मुंह दिखाऊंगा।)[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत अता बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक तोहफ़ा भेजा। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे वापस कर दिया। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, तुमने यह क्यों वापस किया?

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, आपने हमें बताया है कि हमारे लिए बेहतर यह है कि हम किसी से कुछ न लें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरा मक़सद यह था कि मांगकर न लिया जाए और जो बग़ैर मांगे मिल रहा हो, तो वह अल्लाह का दिया हुआ रिज़्क़ (रोज़ी) है, उसे ले लेना चाहिए।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, आज के बाद मैं कभी किसी से कुछ न मांगूंगा और जो

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 196,

बग़ैर मांगे आएगा, उसे ज़रूर लूंगा।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी हज़रत आतिका बिन्त ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हुमा को एक बिछौना हदिए में भेजा। मेरा ख़्याल यह है कि वह एक हाथ लंबा और एक बालिश्त चौड़ा होगा। हज़रत उमर रज़ि० उनके पास आए और वह बिछौना देखा तो पूछा, यह तुम्हें कहां से मिला है?

उन्होंने कहा, यह मुझे हज़रत अबू मूसा अशअरी ने हदिया किया है। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे उठाया और इस ज़ोर से उनके सर पर मारा कि उनके सर के बाल खुल गए और फिर फ़रमाया कि अबू मूसा को फ़ौरन जल्दी से मेरे पास लाओ। (यानी दौड़ाते हुए इतनी जल्दी लाओ कि वह थक जाएं।) चुनांचे वह बड़ी तेज़ी से चलते हुए हज़रत उमर रज़ि० के पास आए और आते ही उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मेरे बारे में जल्दी न करें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम मेरी औरतों को हदिया क्यों देते हो? फिर वह बिछौना उठाकर उनके सर पर मारा और फ़रमाया, इसे ले जाओ, हमें इसकी ज़रूरत नहीं।[2]

हज़रत लैस बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं (स्कन्दरीया के बादशाह) मुक़ौक़िस ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि वह मुक़त्तम पहाड़ का दामन सत्तर हज़ार दीनार में उसे बेच दें। इतनी ज़्यादा क़ीमत सुनकर हज़रत अम्र रज़ि० बहुत हैरान हुए और मुक़ौक़िस से कहा, मैं इस बारे में अमीरुल मोमिनीन को ख़त लिखकर पूछूंगा। चुनांचे हज़रत अम्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को इस बारे में ख़त लिखा।

हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में यह लिखा कि उससे पूछो, वह तुम्हें इतनी ज़्यादा क़ीमत क्यों दे रहा है, हालांकि वह ज़मीन न खेती के

---

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 118,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 383,

क़ाबिल है और न उससे पानी निकाला जा सकता है और न वह किसी और काम आ सकती है?

हज़रत अम्र रज़ि० ने मुक़ौक़िस से पूछा, तो उसने कहा, हमें अपनी आसमानी किताबों में उस जगह की यह फ़ज़ीलत मिली है कि उसमें जन्नत के पेड़ हैं। हज़रत अम्र रज़ि० ने यह बात हज़रत उमर रज़ि० को लिखी।

हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें जवाब में लिखा, हम तो सिर्फ़ यही जानते हैं कि जन्नत के पेड़ सिर्फ़ ईमान वालों को मिलेंगे, इसलिए तुम उस ज़मीन में अपने यहां के मुसलमानों को दफ़ना दिया करो और उसे क़ब्रस्तान बना लो और किसी क़ीमत पर उसे मत बेचो।[1]

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, रमादा वाले साल (सन् 18 हिजरी में हिजाज़ में ज़बरदस्त अकाल पड़ा था, जो नौ महीने रहा था। इसीलिए इस साल को आमुर्रमादा यानी राख वाला साल कहा जाता है। बारिश न होने की वजह से मिट्टी राख की तरह हो गई थी, रंग भी ऐसा हो गया था और राख की तरह उड़ती थी) अरबों का सारा इलाक़ा अकाल की लपेट में आ गया था। उस वक़्त हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा।

आगे और हदीस है जिसमें यह मज़्मून भी है कि फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और अकाल पीड़ित लोगों में अनाज वग़ैरह बांटने के लिए भेजा। जब वह अपने काम से फ़ारिग़ होकर वापस आए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनके पास एक हज़ार दीनार भेजे। हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, ऐ इब्नुल ख़त्ताब! मैंने आपके लिए यह काम नहीं किया था, बल्कि सिर्फ़

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 152,

अल्लाह के लिए किया था और मैं इस काम पर कुछ नहीं लूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० हमें बहुत से कामों के लिए भेजा करते थे और वापसी पर हमें कुछ दिया करते थे, तो हमारा लेने को बिल्कुल दिल नहीं चाहता था, हुज़ूर सल्ल० हमें फ़रमाते, इंकार न करो, ऐ आदमी ! इसे ले लो और इसे अपने दीनी या दुनियावी कामों में ख़र्च कर लोगे।

यह सुनकर हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने वह हज़ार दिरहम ले लिए।[1]

हज़रत सईद बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लहु अन्हु ने हज़रत सईद बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु को एक हज़ार दीनार देने चाहे, तो हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि० ने कहा, मुझे इनकी ज़रूरत नहीं, जो मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमंद हो, उसे दे दें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा ठहरो तो सहो। (इंकार में जल्दी न करो) मैं तुम्हें इस मामले में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक इर्शाद सुनाता हूं, पहले उसे सुन लो, फिर दिल चाहे तो ले लेना, वरना न लेना। हुज़ूर सल्ल० ने एक बार मुझे कोई चीज़ इनायत फ़रमाई, तो मैंने इंकार में वही बात कही, जो तुम अब कह रहे हो, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसे कोई चीज़ बग़ैर सवाल और लालच के मिले, तो यह अल्लाह की अता है, उसे चाहिए कि उसे ले ले और वापस न करे।

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, क्या आपने यह बात ख़ुद हुज़ूर सल्ल० से सुनी है ?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां। तो फिर हज़रत सईद रज़ि० ने ये दीनार ले लिए।[2]

---

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 354, मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 396,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 325,

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सईद बिन आमिर बिन हिज़यम रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, क्या बात है, शामवाले तुमसे बड़ी मुहब्बत करते हैं? (यह हज़रत सईद रज़ि० शाम में गर्वनर रहे थे)।

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, मैं उनके हक़ों का ख़्याल रखता हूं और उनके ग़म में शरीक रहता हूं। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने उनको दस हज़ार दिए। उन्होंने वह वापस कर दिए और यों कहा, मेरे पास बहुत से ग़ुलाम और घोड़े हैं और मेरी हालत अच्छी है और मैं चाहता हूं कि मैं (गवर्नरी का) जो काम कर रहा हूं, यह सब मुसलमानों पर सदक़ा हो यानी इस काम के करने के बाद मुसलमानों के बैतुलमाल में से कुछ न लूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम ऐसा न करो, क्योंकि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे दस हज़ार से कम माल दिया था तो मैंने भी हुज़ूर सल्ल० को वैसी बात कही थी, जैसी तुम मुझे अब कह रहे हो, तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, जब अल्लाह तुम्हें बग़ैर सवाल और तलब के दे रहे हैं, तो उसे ले लो, क्योंकि यह अल्लाह की तरफ़से अता है, जो वह तुम्हें दे रहे हैं।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साहब शामवालों को बहुत पसन्द करते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे पूछा, शामवाले तुमसे क्यों मुहब्बत करते हैं?

उन्होंने कहा, मैं उन्हें साथ लेकर लड़ाई में जाता हूं और उनके ग़म में शरीक रहता हूं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उनको दस हज़ार पेश किए और फ़रमाया, यह ले लो और इनको अपनी लड़ाई में काम ले आना।

उन्होंने कहा, मुझे इनकी ज़रूरत नहीं और आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 286,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 325

हज़रत अब्दुल्लाह बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मुझसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे लोगों ने बताया कि तुम पर मुसलमानों के बहुत से इज्तिमाई कामों की ज़िम्मेदारियां डाली जाती हैं, तुम वह काम कर देते हो, लेकिन बाद में इन कामों पर जब तुम्हें कुछ दिया जाता है तो तुम बुरा मनाते हो और नहीं लेते हो। क्या यह ठीक है?

मैंने कहा, ठीक है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, न लेने से तुम्हारा मक़सद क्या है?

मैंने कहा, मेरे पास बहुत-से घोड़े और ग़ुलाम हैं और मेरी माली हालत अच्छी है। इसलिए मैं चाहता हूं कि मेरी ख़िदमतों का मुआवज़ा मुसलमानों पर सदक़ा हो और मैं उनके माल में से कुछ न लूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसा मत करो, क्योंकि शुरू में मेरी भी यही नीयत थी, जो तुमने कर रखी है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे कुछ अता फ़रमाया करते तो मैं कह दिया करता, मुझसे ज़्यादा ज़रूरमंद को दे दें। चुनांचे एक बार हुज़ूर सल्ल० ने मुझे कुछ देना चाहा, मैंने अपने मामूल के मुताबिक़ कह दिया, मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमंद को दे दें, तो आपने फ़रमाया, अरे मियां! यह ले लो, फिर चाहे अपने पास रख लेना या सदक़ा कर देना, क्योंकि जो माल अपने आप आए, न तुमने उसे मांगा हो और न तबियत में उसकी तलब हो, तो उसे लिया करो और अगर ऐसी शक्ल न हो तो अपने आपको उसके पीछे न लगाओ। (यानी ज़ुबान से मांगो मत और दिल में उसकी तलब हो और वह आए तो उसे लो मत।)[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत

1. अहमद, दारमी, मुस्लिम, नसई,

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे सदक़ा वसूल करने पर मुक़र्रर किया। मैंने सदक़े वसूल करके हज़रत उमर रज़ि० को दे दिए, तो उन्होंने मेरी इस ख़िदमत का मुआवज़ा देना चाहा। इस पर मैंने कहा, मैंने तो यह काम सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया है और इसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, जो मैं तुम्हें दे रहा हूं, उसे ले लो, क्योंकि मैंने भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में इन सदक़ों के वसूल करने का काम किया था, तो आपने उस पर मुझे कुछ देना चाहा। मैंने भी वही बात कही थी जो तुम कह रहे हो, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, जब मैं तुम्हें कोई चीज़ मांगे बिना दिया करूं, तो उसे लेकर या ख़ुद खा लिया करो या दूसरों पर सदक़ा कर दिया करो, (जमा न किया करो)।[1]

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम का माल वापस करना

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुनैन की लड़ाई के दिन हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु को कुछ अता फ़रमाया। उन्होंने उसे कम समझा (और हुज़ूर सल्ल० से और मांगा) हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें और दे दिया। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने मुझे दो बार दिया है, इन दोनों में से कौन-सा ज़्यादा बेहतर है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पहला, (जो बिन मांगे मिला था) ऐ हकीम बिन हिज़ाम ! यह माल मीठी और हरी-भरी चीज़ है, (जो देखने में ख़ुशनुमा और खाने में मज़ेदार लगती है) जो उसे दिल की सख़ावत के साथ लेगा (यानी देनेवाला भी दिल की ख़ुशी के साथ दे और लेनेवाला भी लेकर जमा करने की तबियत वाला न हो, बल्कि दूसरों को देने का मिज़ाज रखता हो और इस्तिग़ना वाल हो) और उसे अच्छे तरीक़े से इस्तेमाल करेगा, उसके लिए उस माल में बरकत दी जाएगी और जो दिल की लालच के साथ लेगा और उसे बुरी तरह इस्तेमाल करेगा,

1. कंज़, भाग 3, पृ० 325,

उसके लिए उस माल में बरकत नहीं होगी और यह उस आदमी की तरह हो जाएगा जो बराबर खाता जा रहा है और उसका पेट नहीं भरता। ऊपर वाला हाथ (यानी देनेवाला हाथ) नीचे वाले हाथ (यानी लेनेवाले हाथ) से बेहतर है।

हज़रत हकीम रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपसे मांगने में भी यही बात है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। मुझसे मांगने में भी।

हज़रत हकीम रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अब आपके बाद कभी भी किसी से कुछ नहीं लूंगा।

रिवायत करने वाले कहते हैं, उसके बाद हज़रत हकीम रज़ि० ने न तो मुक़र्रर किया हुआ वज़ीफ़ा कुबूल किया और न अतीया, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया और (जब वह न लिया करते तो) हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाया करते, ऐ अल्लाह! मैं तुझे इस बात पर गवाह बनाता हूं कि हकीम बिन हिज़ाम रज़ि० को बुलाता हूं ताकि इस माल में से अपना हिस्सा ले लें, लेकिन वह हमेशा इंकार कर देते हैं।

हज़रत हकीम रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० को यही कहा करते, अल्लाह की क़सम ! मुझे न आपसे कुछ लेना है और न आपके अलावा किसी और से।[1]

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने अता फ़रमा दिया। मैंने फिर मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने फिर अता फ़रमाया। मैंने फिर तीसरी बार मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने फिर अता फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया, ऐ हकीम! यह माल हरी-भरी और मीठी चीज़ है। फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।

इसके बाद यह मज़्मून है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हकीम रज़ि० को कुछ देने के लिए बुलाया करते, तो वह इंकार

1. कंज़, भाग 3, पृ० 322,

कर देते। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हकीम रज़ि० को कुछ देने के लिए बुलाया तो उन्होंने लेने से इंकार कर दिया, इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मुसलमानों की जमाअत! मैं इस बात पर आप लोगों को गवाह बनाता हूं कि अल्लाह ने ग़नीमत के इस माल में हज़रत हकीम रज़ि० का जो हिस्सा तै किया है, वह हिस्सा मैंने उनको पेश किया है, लेकिन उन्होंने लेने से इंकार कर दिया है। चुनांचे हज़रत हकीम रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद अपनी वफ़ात तक कभी भी किसी से कुछ नहीं लिया।[1]

हज़रत उर्व: रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से उनकी वफ़ात तक कुछ क़ुबूल नहीं किया और ऐसे ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु से उकनी वफ़ात तक कुछ क़ुबूल नहीं किया और न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कुछ लिया और न हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से, यहां तक कि उनका इसी हाल पर इंतिक़ाल हो गया।[2]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़मीन वापस करना

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आराबी (देहाती) आदमी हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु का मेहमान बना। उन्होंने उसका ख़ूब सत्कार किया और इज़्ज़त से रखा और उनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से (सिफ़ारिश की) बात भी की।

वह आदमी (हुज़ूर सल्ल० के पास से) हज़रत आमिर रज़ि० के पास आया और कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से एक ऐसी घाटी जागीर के तौर पर मांगी थी कि पूरे अरब में उससे अच्छी घाटी नहीं है। (हुज़ूर सल्ल० ने वह मुझे दे दी है) अब मैं चाहता हूं कि इस घाटी का एक टुकड़ा आपको दे दूं

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 101,
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 483,

जो आपकी ज़िंदगी में आपका हो और आपके बाद आपकी औलाद का।

हज़रत आमिर रज़ि० ने कहा, मुझे तुम्हारे इस टुकड़े की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि आज एक सूर: उतरी है जिसने हमें दुनिया ही भुला दी है और वह सूर: यह है—

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۔(سورت انبیاء آیت ۱)

'इन (इंकार करने वाले) लोगों से इनके हिसाब (का वक़्त) नज़दीक आ पहुंचा और ये (अभी) ग़फ़लत (ही) में (पड़े हैं और एराज़) किए हुए हैं।'[1]

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु के भतीजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं अपने चचा (हज़रत अबूज़र रज़ि०) के साथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मेरे चचा ने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, मुझे रब्ज़ा बस्ती में रहने की इजाज़त दे दें।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, ठीक है, इजाज़त है और हम आपके लिए सदक़े के कुछ ऊंट मुक़र्रर किए देते हैं जो सुबह-शाम आपके पास आ जाया करेंगे। (आप उनका दूध इस्तेमाल कर लिया करें।)

मेरे चचा ने कहा, मुझे उनकी ज़रूरत नहीं। अबूज़र (रज़ि०) को उसके ऊंटों की छोटी-सी तायदाद ही काफ़ी है। फिर खड़े हो गए और यह कहा, तुम अपनी दुनिया में ख़ूब लगे रहो और हमें अपने रब और दीन के लिए छोड़ दो।

उस वक़्त ये लोग हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मीरास बांट रहे थे और हज़रत उस्मान रज़ि० के पास हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु भी बैठे हुए थे। हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत काब रज़ि० से पूछा कि आप उस आदमी के बारे में क्या कहते हैं जिसने इतना माल जमा किया? यह (अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०) उसमें से ज़कात

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 179,

भी दिया करते थे और नेकी के तमाम कामों में भी ख़र्च किया करते थे।

हज़रत काब रज़ि० ने कहा, मुझे तो उस आदमी के बारे में भलाई ही की उम्मीद है।

यह सुनते ही हज़रत अबूज़र रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने हज़रत काब पर लाठी उठाकर कहा, ओ यहूदी औरत के बेटे! तुझे क्या ख़बर? इस माल वाला क़ियामत के दिन इस बात की ज़रूर तमन्ना करेगा कि काश, दुनिया में बिच्छू उसके दिल के सबसे नाज़ुक हिस्से को डंक मार देते (और यह माल पीछे छोड़कर न मरता, बल्कि सारा माल सदक़ा कर देता।)[1]

हज़रत अबू शोबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उन्होंने कुछ ख़र्चा देना चाहा।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया, हमारे पास कुछ बकरियां हैं जिनका दूध निकालकर हम इस्तेमाल कर लेते हैं और सवारी और माल-बरदारी के लिए कुछ गधे हैं और एक आज़ाद की हुई बांदी है जो हमारी ख़िदमत करती है और कपड़ों में ज़रूरत से ज़्यादा एक चोग़ा भी है। मुझे डर है कि ज़रूरत से ज़्यादा रखने पर कहीं मुझसे उसका हिसाब न लिया जाए।[2]

शाम के गवर्नर हज़रत हबीब बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में तीन सौ दीनार भेजे और यों कहा कि इन्हें अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लें। हज़रत अबूज़र रज़ि० ने लाने वाले से कहा, यह उन्हीं के पास वापस ले जाओ, क्या उन्हें हमारे अलावा कोई और न मिला जो अल्लाह के बारे में हमसे ज़्यादा धोखे में पड़ा हुआ हो (जो अल्लाह के हुक्मों को छोड़कर उसके अज़ाब से बे-ख़ौफ़ होकर उसकी नाफ़रमानियों में लगा हुआ हो। (हज़रत अबूज़र रज़ि० ज़रूरत से ज़्यादा माल रखने को भी ग़लत

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 160,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 163

समझते थे) हमारे पास साए में बैठने के लिए एक मकान है और बकरियों का एक रेवड़ है जो शाम को आ जाता है और आज़ाद की हुई लौंडी है जो मुफ़्त में हमारी ख़िदमत कर देती है। बस यही चीज़ें हमारे पास हैं और कुछ नहीं, लेकिन फिर भी मुझे ज़रूरत से ज़्यादा रखने का डर लगा रहता है।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हारिस क़ुरैशी जो कि शाम में रहा करते थे, उनको यह ख़बर पहुंची कि हज़रत अबूज़र बड़ी तंगदस्ती में हैं, तो उन्होंने हज़रत अबूज़र रज़ि० की ख़िदमत में तीन सौ दीनार भेज दिए।

इसे देखकर हज़रत अबूज़र ने फ़रमाया, उसे कोई ऐसा अल्लाह का बन्दा नहीं मिला जो उसके नज़दीक मुझसे ज़्यादा बे-क़ीमत होता। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिसके पास चालीस दिरहम हैं और फिर वह मांगे तो वह लोगों से चिमट कर सवाल करने वाला है (और इससे अल्लाह और रसूल सल्ल० ने मना फ़रमाया है) और अबूज़र रज़ि० के पास चालीस बकरियां, चालीस दिरहम और दो ख़ादिम हैं।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु का माल वापस करना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू राफ़ेअ! तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा, जब तुम फ़क़ीर हो जाओगे।

मैंने कहा, तो मैं अभी सदक़ा करके अपनी आख़िरत के लिए आगे न भेज दूं? (बाद में तो फ़क़ीर हो जाऊंगा, सदक़ा करने के लिए कुछ

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 161,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 331,

पास न होगा)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़रूर! लेकिन आजकल तुम्हारे पास कितना माल है?

मैंने कहा, चालीस हज़ार और मैं वह सारे अल्लाह के लिए सदक़ा करना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सारे नहीं, कुछ सदक़ा कर दो, कुछ अपने पास रख लो और अपनी औलाद के साथ अच्छा व्यवहार करो।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या उनका भी हम पर उसी तरह हक़ है, जिस तरह हमारा उन पर है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां। बाप पर बच्चे का यह हक़ है कि वह उसे अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन मजीद सिखाए और तीरंदाज़ी और तैरना भी सिखाए और जब दुनिया से जाए तो उनके लिए हलाल और पाक माल छोड़कर जाए।

मैंने पूछा, मैं किस ज़माने में फ़क़ीर हो जाऊंगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे बाद।

अबू सुलैम रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने उन्हें देखा कि वे हुज़ूर सल्ल० के बाद इतने फ़क़ीर हो गए थे कि वह बैठे हुए कहा करते थे, कोई है जो अंधे बूढ़े पर सदक़ा करे, कोई है जो उस आदमी पर सदक़ा करे जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया था कि वह उनके बाद फ़क़ीर हो जाएगा, कोई है जो सदक़ा करे, क्योंकि अल्लाह का हाथ सबसे ऊपर है और देनेवाले का हाथ बीच में है, और लेनेवाले का हाथ सबसे नीचे है और जो मालदार होते हुए बग़ैर ज़रूरत के सवाल करेगा, तो उसके जिस्म पर एक बदनुमा दाग़ होगा जिससे वह क़ियामत के दिन पहचाना जाएगा और मालदार और ताक़तवर इंसान को जिसके जिस्म के अंग ठीक हों, सदक़ा लेना जायज़ नहीं है।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने देखा कि एक आदमी ने उनको चार दिरहम दिए, तो उन्होंने उनमें से एक दिरहम उन्हें वापस कर दिया, तो उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरा सदक़ा वापस न करो।

उन्होंने फ़रमाया, मैंने इसलिए एक दिरहम वापस किया है कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे ज़रूरत से ज़्यादा माल रखने से मना फ़रमाया है (और मुझे ज़रूरत तीन की है)।

अबू सुलैम रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने देखा कि वह बाद में इतने मालदार हो गए थे कि उश्र वसूल करने वाला उनके पास भी आया करता था, लेकिन वह फ़रमाया करते थे, काश, अबू राफ़ेअ रज़ि० फ़क़ीरी की हालत में मर जाता, (दोबारा मालदार न बनता) और ग़ुलाम को जितने में ख़रीदते उतने में ही उसे मुकातब बना देते।[1]

(ग़ुलाम को मुकातब बनाने की सूरत यह है कि मालिक अपने ग़ुलाम से यों कहे कि तुम मुझे इतना माल कमा कर ला दो तो तुम आज़ाद हो जाओगे।)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन उमर बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने यज़ीद बिन मुआविया की बैअत से इंकार कर दिया, तो हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके पास एक लाख दिरहम भेजे तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने उन्हें वापस कर दिया और लेने से इंकार कर दिया और फ़रमाया, क्या मैं अपना दीन दुनिया के बदले में बेच दूं? और यह कहकर मक्का मुकर्रमा चले गए और वहीं उनका इंतिक़ाल हो गया।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 184,
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 476, इसाबा, भाग 2, पृ० 408

रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को चुपके से इस टोह में लगाया कि वह यह पता लगाएं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दिल में क्या इरादा है? क्या वह (यज़ीद की बैअत न करने और ख़ुद ख़लीफ़ा बनने के लिए) लड़ाई लड़ना चाहते हैं? या कुछ और सोचते हैं?

तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान रज़ि० ! (यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का उपनाम है) आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी और अमीरुल मोमिनीन (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) के साहबज़ादे हैं और आप ख़िलाफ़त के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं। आप वक़्त के ख़लीफ़ा के ख़िलाफ़ क्यों उठ खड़े नहीं होते? अगर आप ऐसा करें तो हम आपसे बैअत होने को तैयार हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने पूछा, क्या आपकी इस राय से तमाम लोगों को इत्तिफ़ाक़ है?

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, हां। थोड़े से आदमियों के अलावा बाक़ी सबको इत्तिफ़ाक़ है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, अगर सब मुसलमान इस राय से इत्तिफ़ाक़ कर लें, लेकिन हजर नामी जगह के तीन आदमी इत्तिफ़ाक़ न करें, तो भी मुझे इस ख़िलाफ़त की ज़रूरत नहीं है। इससे हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० समझ गए कि उनका लड़ने का इरादा नहीं है।

फिर हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने पूछा, क्या आप उस आदमी से बैअत होने के लिए तैयार हैं, जिसकी बैअत पर तमाम लोग इत्तिफ़ाक़ करने ही वाले हैं और वह आदमी आपके नाम उतनी ज़मीन और उतना माल लिख देगा कि फिर आपको और आपकी औलाद को और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं रहेगी?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, आप पर सख़्त हैरत है, आप मेरे पास से तशरीफ़ ले जाएं और आगे कभी (इस काम के लिए) मेरे पास न आएं। आपका भला हो। मेरा दीन आप लोगों के दीनार व दिरहम की

वजह से नहीं है। मैं चाहता हूं कि मैं इस दुनिया से इस तरह जाऊं कि मेरा हाथ (दुनिया की गन्दगियों से) बिल्कुल पाक-साफ़ हो।[1]

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपने एक गुलाम को मुकातब बनाया (यानी उससे फ़रमाया कि इतनी रक़म दे दोगे तो तुम आज़ाद हो जाओगे) और माल की अदाएगी की क़िस्तें मुक़र्रर कर दीं। जब पहली क़िस्त की अदाएगी का वक़्त आया, तो वह गुलाम वह क़िस्त उनके पास ले आया। उन्होंने उससे पूछा, यह माल तुमने कहां से हासिल किया है?

उसने कहा, कुछ मज़दूरी करके कमाया है और कुछ लोगों से मांग कर लाया हूं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम मुझे लोगों का मैल-कुचैल खिलाना चाहते हो? जाओ, तुम अल्लाह के लिए आज़ाद हो और माल जो तुम लेकर आए हो, वह भी तुम्हारा ही है।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, इराक़ के देहात के एक चौधरी ने हज़रत इब्ने जाफ़र अन्हुमा से कहा कि वह इसकी ज़रूरत के बारे में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से सिफ़ारिश कर दें। चुनांचे उन्होंने हज़रत अली से उसकी सिफ़ारिश कर दी। हज़रत अली रज़ि० ने उसकी वह ज़रूरत पूरी कर दी।

इस पर उस चौधरी ने हज़रत इब्ने जाफ़र रज़ि० के पास चालीस हज़ार भेजे। लोगों ने बताया कि यह उस चौधरी ने भेजे हैं, तो उन्हें वापस कर दिया और फ़रमाया, हम नेकी बेचा नहीं करते।[3]

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 121
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 301,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 290,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत अम्र बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बैतुलमाल का ज़िम्मेदार और निगरां मुक़र्रर किया और उन्हें तीन लाख इस ख़िदमत के बदले में देना चाहा, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म ने लेने से इंकार कर दिया और हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा को तीस हज़ार मुआवज़े के तौर पर देने चाहे, लेकिन लेने से इंकार कर दिया और कहा कि मैंने तो अल्लाह के लिए काम किया था।[1]

हज़रत अम्र बिन नोमान बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अम्र बिन नोमान बिन मुक़र्रिन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहां ठहरा हुआ था। जब रमज़ान शरीफ़ का महीना आया, तो एक आदमी दिरहमों की थैली लेकर उनके पास आया और कहा, अमीर हज़रत मुस्अब बिन ज़ुबैर रज़ि० आपको सलाम कहते हैं और कहते हैं, हर क़ुरआन पढ़ने वाले की ख़िदमत में हमारी ओर से अतीया ज़रूर पहुंच गया है। (इसलिए आपकी ख़िदमत में भी भेजा है) ये दिरहम अपनी ज़रूरत में ख़र्च कर लें, तो हज़रत अम्र बिन नोमान ने लाने वाले से कहा, जाकर उनसे कह देना, अल्लाह की क़सम! हमने क़ुरआन दुनिया हासिल करने के लिए नहीं पढ़ा और वह थैली उनको वापस कर दी।[2]

---

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 274,
2. इसाबा, भाग 3, पृ० 21

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की साहबज़ादियों रज़ियल्लाहु अन्हुमा का माल वापस करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, क़ुतैला बिन्त अब्दुल उज़्ज़ा बिन अब्दे असअद जो कि बनू मालिक बिन हिस्ल क़बीले में से थीं, वह अभी मुश्रिक ही थीं कि वह गोह, रोटियां और घी हदिया में लेकर अपनी बेटी हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आई तो हज़रत अस्मा रज़ि० ने उनका हदिया लेने से इंकार कर दिया और अपने घर आने से रोक दिया।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, तो अल्लाह ने यह आयत उतारी—

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ (سورت ممتحنہ آیت ۸)

'और अल्लाह तुमको उन लोगों के साथ एहसान और इंसाफ़ का बर्ताव करने से मना नहीं करता जो तुमसे दीन के बारे में नहीं लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला।' (सूरः मुम्तहिना, आयत 8)

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अस्मा रज़ि० को कहा कि वह अपनी मां का हदिया क़ुबूल कर लें और उन्हें अपने घर आने दें।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक मिस्कीन औरत मेरे पास आई। वह मुझे थोड़ी-सी चीज़ हदिया करना चाहती थी। मुझे उसकी ग़रीबी पर तरस आया, इसलिए मुझे हदिया लेना अच्छा न लगा।

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने ऐसा क्यों न किया कि तुम उससे हदिया क़ुबूल कर लेतीं और फिर उसे हदिए के बदले में कुछ दे देतीं। मेरा ख़्याल है कि तुमने उस औरत को हक़ीर समझा है। ऐ आइशा (रज़ि०)! तवाज़ो अख़्तियार करो, क्योंकि अल्लाह तवाज़ो अख़्तियार करने वालों को पसन्द करते हैं और घमंड करने वालों को पसन्द नहीं करते हैं।[2]

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 123,
2. हुलीया, भाग 4, पृ० 24

सवाल करने से बचना

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हम लोग बहुत ज़्यादा मुहताज और बदहाल हो गए, तो मुझे मेरे घरवालों ने कहा कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर कुछ मांग लूं।

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। वहां मैंने हुज़ूर सल्ल० से सबसे पहली जो बात सुनी, वह यह थी कि आप फ़रमा रहे थे; जो अल्लाह से ग़िना तलब करेगा (ग़िना यह कि दिल में दुनिया की तलब और लालच न रहे) उसे अल्लाह ग़िना अता फ़रमा देंगे और जो इफ़्फ़त तलब करेगा, (इफ़्फ़त यह है कि आदमी अल्लाह की तमाम मना की हुई चीज़ों से और मांगने से रुके और पाक दामन हो) अल्लाह उसे इफ़्फ़त अता फ़रमाएंगे और जो हमसे कोई चीज़ मांगेगा और वह चीज़ हमारे पास मौजूद हुई तो हम उसे अपने लिए बचाकर नहीं रखेंगे, बल्कि हम उसे वह चीज़ दे देंगे।

यह सुनकर मैंने हुज़ूर सल्ल० से कुछ न मांगा और वैसे ही वापस आ गया। (हमने फ़क़्र व फ़ाक़ा और तक्लीफ़ों के साथ दीन की मेहनत की, जिसके नतीजे में) बाद में दुनिया हम पर टूट पड़ी।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन मैं सुबह को भूख की ज़्यादती की वजह से पेट पर पत्थर बांधे हुआ था, तो मेरी बीवी या बांदी ने मुझसे कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाओ और उनसे कुछ मांग लो। फ़्लां आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर मांगा था, हुज़ूर सल्ल० ने उसे अता फ़रमाया है। चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया तो आप बयान फ़रमा रहे थे।

आपने अपने बयान में यह भी बयान फ़रमाया, जो अल्लाह से पाकदामनी और इफ़्फ़त तलब करेगा, अल्लाह उसे इफ़्फ़त और

1. इब्ने जरीर

पाकदामनी अता फ़रमाएंगे और जो अल्लाह से ग़िना तलब करेगा, अल्लाह उसे ग़नी बना देंगे और जो हमसे मांगेगा हम या तो उसे दे देंगे या उसके ग़म में हिस्सा लेंगे और जो हमसे ग़िना बरतता है और हमसे मांगता नहीं है, वह हमें मांगनेवाले से ज़्यादा महबूब है।

यह सुनकर मैं वापस आ गया और हुज़ूर सल्ल० से कुछ न मांगा (जब मैंने हुज़ूर सल्ल० की बात पर अमल किया और मांगा नहीं और फ़ाक़े पर सब्र किया और फिर भी दीन की मेहनत पूरी तरह करता रहा, तो अल्लाह ने क़ुर्बानियों के साथ दीन की मेहनत करने पर जो बरकत व रहमत का वायदा फ़रमा रखा है, वह पूरा फ़रमाया) और फिर अल्लाह हमें देते रहे, यहां तक कि अब मेरी जानकारी के मुताबिक़ अंसार में कोई घराना हमसे ज़्यादा मालदार नहीं है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे कुछ वायदा फ़रमा रखा था। जब बनू क़ुरैज़ा यहूदियों का इलाक़ा जीत लिया गया, तो मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, ताकि आप अपना वायदा पूरा फ़रमाएं और मुझे अता फ़रमाएं।

उस वक़्त मैंने सुना कि आप फ़रमा रहे थे, जो अल्लाह से ग़िना को तलब करेगा, अल्लाह उसे ग़नी बना देंगे और जो क़नाअत अख़्तियार करेगा, अल्लाह उसे क़नाअत अता फ़रमा देंगे। (क़नाअत यह है कि इंसान को थोड़ी-बहुत जितनी दुनिया मिले उसी पर राज़ी हो जाए)

जब मैंने यह सुना तो मैंने अपने दिल में कहा, ऐसी बात है तो फिर मैं हुज़ूर सल्ल० से कुछ नहीं मांगूंगा।[2]

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी मुझे इस बात की ज़मानत दे कि वह लोगों से कुछ नहीं मांगेगा, मैं उसके लिए जन्नत का ज़मानतदार बनता हूं।

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 322
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 104

मैंने अर्ज़ किया, मैं इस बात की ज़मानत देता हूं।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत सौबान कभी-भी किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।[1]

इब्ने माजा की रिवायत यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, लोगों से कुछ न मांगा करो। चुनांचे हज़रत सौबान रज़ि॰ सवारी पर सवार होते और उनके हाथ से उनका कोड़ा गिर जाता तो किसी से न कहते कि वह मुझे पकड़ा दो, बल्कि ख़ुद सवारी से नीचे उतरकर उठाते।[2] और इस्लाम के आमाल पर बैअत होने के बाब में हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में गुज़रा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात पर बैअत किया कि वह किसी से कुछ नहीं मांगेगे।

हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ कहते हैं कि मैंने हज़रत सौबान रज़ि॰ को मक्का मुकर्रमा में भरे मज्मा में देखा कि वह सवारी पर सवार होते थे, उनका कोड़ा गिर जाता और कभी-कभी वह कोड़ा किसी के कंधे पर गिर जाता और वह आदमी कोड़ा उनको पकड़ाना चाहता तो वह उससे कोड़ा न लेते, बल्कि ख़ुद सवारी से नीचे उतरकर उस कोड़े को उठाते।[3]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कभी-कभी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ से ऊंटनी की नकेल छूट कर ज़मीन पर गिर जाती, तो वह ऊंटनी की अगली टांग पर मारकर उसे बिठाते और नकेल को ख़ुद उठाते।

लोग उनसे कहते आप हमें (ऊंटनी के ऊपर से) फ़रमा देते, हम आपको नकेल पकड़ा देते, तो फ़रमाते, मेरे महबूब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे हुक्म फ़रमाया था कि मैं लोगों से कुछ भी न मांगूं।[4]

---

1. अहमद, नसई, इब्ने माजा, अबू दाऊद
2. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ॰ 101,
3. तबरानी, अहमद, नसई,
4. कंज़, भाग 3, पृ॰ 321,

दुनिया के फैलाव और ज़्यादा होने से डरना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का डर

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाह अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आठ साल बाद उहुद के शहीदों पर इस तरह जनाज़े की नमाज़ पढ़ी, गोया कि आप ज़िंदा और मुर्दा लोगों को रुख़्सत फ़रमा रहे हैं। (यानी आपको अन्दाज़ा था कि दुनिया से जाने का वक़्त क़रीब आ गया है) इसलिए ज़िंदा लोगों को ख़ास-ख़ास बातों की वसीयत और ताकीद फ़रमा रहे थे और मुर्दा लोगों के लिए बड़े एहतिमाम से दुआ व इस्तग़फ़ार फ़रमा रहे थे कि फिर इसका मौक़ा तो रहेगा नहीं।)

फिर आप मिंबर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, मैं तुम लोगों से पहले आगे जा रहा हूं और मैं तुम्हारे हक़ में गवाह बनूंगा और तुमसे वायदा है कि हौज़े कौसर पर तुमसे मुलाक़ात होगी और मैं अपनी उस जगह से इस वक़्त हौज़े कौसर को देख रहा हूं (क्योंकि अल्लाह ने बीच के तमाम पर्दे हटा दिए हैं)। मुझे तुम्हारे बारे में इस बात का डर नहीं है कि तुम शिर्क करने लगो, बल्कि इस बात का डर है कि तुम लोग दुनिया के हासिल करने में एक दूसरे से आगे बढ़ने लगो।

हज़रत उक़्बा रज़ि० कहते हैं, यह हुज़ूर सल्ल० की ज़ियारत का मेरे लिए आख़िरी मौक़ा था।[1]

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन बाहर तशरीफ़ ले गए और उहुद वालों की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, फिर पिछली हदीस वाला मज़्मून बयान फ़रमाया।

इस हदीस में यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह

1. बुख़ारी, पृ० 578,

की क़सम ! मैं इस वक़्त अपने हौज़ को देख रहा हूं और मुझे ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की चाबियां दे दी गई हैं (जिसकी वजह से हुज़ूर सल्ल० के बाद क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने सहाबा रज़ि० कों मिले और कई देश जीत लिए गए) और अल्लाह की क़सम ! मुझे इस बात का डर है कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे, बल्कि इस बात का डर है कि तुम दुनिया हासिल करने के शौक़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने लगोगे।[1]

हज़रत अम्र बिन औफ़ अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरैन जिज़या लेने के लिए भेजा। चुनांचे वह बहरैन से बहुत-सा माल (एक लाख अस्सी हज़ार या दो लाख दिरहम) लेकर आए।

अंसार के लोगों ने जब हज़रत अबू उबैदा रज़ि० के वापस आने की ख़बर सुनी तो उन्होंने फ़ज्र की नमाज़ हुज़ूर सल्ल० के साथ पढ़ी। जब हुज़ूर सल्ल० नमाज़ के बाद उनकी ओर मुतवज्जह हुए, तो ये सब लोग आपके सामने आकर बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० उन्हें देखकर मुस्कराए और फ़रमाया, मेरा ख़्याल है कि तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदा बहरैन से कुछ लेकर आए हैं।

उन्होंने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (अपनी इस बात को छिपाया नहीं)

आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं और ख़ुशी हासिल होने की उम्मीद रखो। (यानी अबू उबैदा जो माल लाए हैं, उसमें से ज़रूर तुम्हें कुछ मिलेगा) अल्लाह की क़सम ! मुझे तुम पर फ़क़्र का डर नहीं है, बल्कि इस बात का डर है कि तुम पर दुनिया इस तरह फैला दी जाएगी जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर फैला दी गई थी और तुम भी उसके पाने में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगोगे, जैसे पहलों ने की थी, फिर यह दुनिया तुम्हें उसी तरह हलाक कर देगी जैसे उसने उनको हलाक किया था।[2]

1. बुख़ारी, बाब रिक़ाक़
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 141,

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बयान फ़रमा रहे थे कि इतने में एक देहाती खड़ा हुआ जिसकी तबियत में उजड्डपना था और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमें तो क़हत (अकाल) ने मार डाला।

आपने फ़रमाया, मुझे तुम पर क़हत का इतना डर नहीं है जितना इस बात का है कि दुनिया तुम पर ख़ूब फैला दी जाएगी। काश, मेरी उम्मत सोना न पहनती।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु एक हदीस में फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मिंबर पर बैठे। हम भी आपके आस-पास बैठ गए, फिर आपने फ़रमाया, मुझे जिन बातों का तुम पर डर है, उनमें से एक यह है कि अल्लाह तुम्हारे लिए दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और सरसब्ज़ी और शादाबी खोल देंगे। (क्योंकि दुनिया की मुहब्बत हर गुनाह की जड़ है।)[2]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुझे तुम पर फ़क़्र व फ़ाक़ा और बदहाली की आज़माइश से ज़्यादा डर ख़ुशहाली और फ़रावानी की आज़माइश का है। अल्लाह तुमको फ़क़्र व फ़ाक़ा और बदहाली के ज़रिए आज़मा चुके हैं। इसमें तुमने सब्र से काम लिया (और कामियाब हो गए) और दुनिया मीठी और हरी-भरी है। पता नहीं, इस आज़माइश में कामियाब होते हो या नहीं।[3]

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार अपने सहाबा रज़ि० में खड़े होकर फ़रमाया, तुम फ़क़्र व फ़ाक़ा से डरते हो या तुम्हें दुनिया का फ़िक्र व ग़म लगा हुआ है? अल्लाह फ़ारस और रूम पर तुम्हें जीत दे देंगे और तुम पर दुनिया की बहुत ज़्यादा फ़रावानी होगी और इस दुनिया

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 144,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 144,
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 145,

की वजह से ही तुम लोग सही रास्ते से हट जाओगे।[1]

दुनिया के फैलाव से हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का डरना और रोना

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास क़ादसिया का कुछ मालेग़नीमत आया। आप उसका जायज़ा ले रहे थे और उसे देख रहे थे और रो रहे थे।

उनके साथ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह तो ख़ुशी का दिन है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां, लेकिन जिन लोगों के पास यह माल आता है, इसकी वजह से आपस में बुग़्ज़ और अदावत भी ज़रूर पैदा हो जाती है।[2]

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास किसरा के ख़ज़ाने आए, तो उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अरक़म ज़ोहरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, आप इसे बैतुलमाल में क्यों नहीं रख देते?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। हम इसे बैतुलमाल में नहीं रखेंगे, बल्कि बांट देंगे, यह कहकर हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े, तो उनसे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप क्यों रो रहे हैं? अल्लाह की क़सम! यह तो अल्लाह का शुक्र अदा करने और ख़ुशी मनाने का दिन है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह ने जिस क़ौम को भी यह माल दिया है, उस माल ने उनमें बुग़्ज़ व अदावत ज़रूर पैदा की है।[3]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, किसरा का ताज हज़रत

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 142,
2. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 358, कंज़, भाग 2, पृ० 321
3. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 358, कंज़, भाग 2, पृ० 321, 146,

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में लाया गया और उनके सामने रखा गया। (ताज के साथ किसरा की ज़ेब व ज़ीनत का सामान भी था। उस वक़्त वहां लोगों में हज़रत सुराक़ा बिन मालिक बिन जोसम रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत उमर रज़ि० ने किसरा बिन हुरमुज़ के दोनों कंगन उनके सामने रख दिए।

हज़रत सुराक़ा रज़ि० ने दोनों कंगन अपने हाथों में डाले, तो उनके कंधों तक पहुंच गए। जब हज़रत उमर रज़ि० ने दोनों कंगन उनके हाथों में देखे, तो फ़रमाया अलहम्दु लिल्लाह! अल्लाह की क़ुदरत देखो कि किसरा बिन हुरमुज़ के दो कंगन इस वक़्त बनू मुदलिज के एक देहाती सुराक़ा बिन मालिक बिन जोसम के दो हाथों में हैं।

फिर फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मुझे मालूम है कि तेरे रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह चाहते थे कि उन्हें कहीं से माल मिले और वह उसे तेरे रास्ते में और तेरे बन्दों पर ख़र्च करें, लेकिन तूने उन पर शफ़क़त फ़रमाते हुए और उनके लिए ज़्यादा ख़ैर वाली शक्ल अपनाते हुए उनसे माल को दूर रखा और ऐ अल्लाह! मुझे मालूम है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु यह चाहते थे कि उन्हें कहीं से माल मिले और वह उसे तेरे रास्ते में और तेरे बन्दों पर ख़र्च कर दें, लेकिन तूने उन पर शफ़क़त करते हुए और उनके लिए ज़्यादा बेहतर शक्ल अख़्तियार करते हुए उनसे माल को दूर रखा (और अब मेरे ज़माने में यह माल बहुत ज़्यादा आ रहा है), ऐ अल्लाह! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि यह माल का ज़्यादा आना कहीं तेरी तरफ़ उमर के ख़िलाफ़ दाव न हो। (यानी कहीं इससे उमर के दीन और आख़िरत का नुक़्सान न हो।)

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने यह आयत पढ़ी—

اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ۔ (سورت مؤمنون آیت ۵۵، ۵۶)

'क्या ये लोग यों गुमान कर रहे हैं कि हम उनको जो कुछ माल और औलाद देते चले जाते हैं, तो हम उनको जल्दी-जल्दी फ़ायदा पहुंचा

रहे हैं। (यह बात हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग (उसकी वजह) नहीं जानते।' (सूरः मूमिनून, आयत 55-56)[1]

हज़रत अबू सिनान दुवली रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया। उनके पास शुरू के मुहाजिरों की एक जमाअत बैठी हुई थी। आपने ख़ुशबू वग़ैरह रखने का थैला यानी जामादान लाने के लिए एक आदमी भेजा। वह थैला टोकरी या बोरी जैसा था। यह थैला इराक़ के एक क़िले से हज़रत उमर रज़ि० के पास लाया गया था। उसमें एक अंगूठी भी थी, जिसे हज़रत उमर रज़ि० के एक बच्चे ने लेकर मुंह में डाल दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने उससे वह अंगूठी ले ली और फिर रो पड़े।

पास बैठे हुए लोगों ने उनसे कहा, आप क्यों रो रहे हैं, जबकि अल्लाह ने आपको इतनी जीतें दे रखी हैं और आपको आपके दुश्मन पर ग़ालिब कर दिया है और आपकी आंखें (ख़ुशियां देकर) ठंडी कर दी हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिन लोगों पर दुनिया की जीतें होने लगती हैं और उन्हें दुनिया मिल जाती है, तो उनमें ऐसी बुग़्ज़ व अदावत पैदा हो जाती है जो क़ियामत तक चलती रहती है। मुझे इसका डर लग रहा है, (इसलिए रो रहा हूं)[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का मामूल (आदत) यह था कि वह जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाते तो लोगों के लिए बैठ जाते, जिसकी कोई ज़रूरत होती तो वह उनसे बात कर लेता और अगर किसी को कोई ज़रूरत न होती, तो खड़े हो जाते।

एक बार उन्होंने लोगों को बहुत-सी नमाज़ें पढ़ाईं, लेकिन किसी नमाज़ के बाद बैठे नहीं। मैंने (उनके दरबान से) कहा, ऐ यरफ़ा! क्या

---

1. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 358, मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 412,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 144,

अमीरुल मोमिनीन को कोई तक्लीफ़ या बीमारी है ?

उसने कहा, नहीं। अमीरुल मोमिनीन को कोई तक्लीफ़ या बीमारी नहीं है। मैं वहीं बैठ गया। इतने में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु भी तशरीफ़ लाए। वह भी आकर बैठ गए। थोड़ी देर में यरफ़ा बाहर आया और उसने कहा, ऐ इब्ने अफ़्फ़ान रज़ि० ! ऐ इब्ने अब्बास रज़ि० ! आप दोनों अन्दर तशरीफ़ ले चलें।

चुनांचे हम दोनों हज़रत उमर रज़ि० के पास अन्दर गए। वहां हमने देखा कि हज़रत उमर रज़ि० के सामने माल के बहुत-से ढेर रखे हुए हैं और हर ढेर पर कंधे की हड्डी रखी हुई थी (जिस पर कुछ लिखा हुआ था। उस ज़माने में काग़ज़ की कमी की वजह से हड्डियों पर भी लिखा जाता था) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तमाम मदीना वालों पर निगाह डाली, तो तुम दोनों ही मुझे मदीना में सबसे बड़े ख़ानदान वाले नज़र आए हो। यह माल ले जाओ और आपस में बांट लो और जो बच जाए, वह वापस कर देना।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने तो लप भरकर लेना शुरू कर दिया, लेकिन मैंने घुटनों के बल बैठकर अर्ज़ किया कि अगर कम पड़ गया तो आप हमें और देंगे ?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, है ना पहाड़ का एक टुकड़ा यानी है ना अपने बाप अब्बास रज़ि० का बेटा (कि उनकी ही तरह बहादुर, समझदार और होशियार है) क्या यह माल उस वक़्त अल्लाह के पास नहीं था, जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा रज़ि० (फ़क़्र व फ़ाक़ा की वजह से) खाल खाया करते थे ?

मैंने कहा, था, अल्लाह की क़सम ! जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िंदा थे तो यह सब कुछ अल्लाह के पास था, लेकिन अगर उनको यह सब कुछ देते तो वह किसी और तरह बांट देते, जिस तरह आप करते हैं, उस तरह न करते।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया और फ़रमाया, अच्छा, किस तरह बांटते ?

मैंने कहा, ख़ुद भी खाते और हमें भी खिलाते।

यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ि० ऊंची आवाज़ से रोने लग पड़े, जिससे उनकी पसलियां ज़ोर-ज़ोर से चलने लगीं, फिर फ़रमाया, मैं यह चाहता हूं कि मैं इस ख़िलाफ़त से बराबर-सराबर छूट जाऊं, न इस पर मुझे कोई इनाम मिले और न मेरी पकड़ हो।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बुलाया, मैं उनकी ख़िदमत में गया। मैंने देखा कि उनके सामने चमड़े के दस्तरख़्वान पर सोना बिखरा हुआ पड़ा है ।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आओ और यह सोना अपनी क़ौम में बांट दो। अल्लाह ने यह सोना और माल अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से दूर रखा और मुझे दे रहे हैं। अब अल्लाह ही ज़्यादा जानते हैं कि मुझे यह माल ख़ैर की वजह से दिया जा रहा है या शर की वजह से।

फिर फ़रमाया, नहीं। अल्लाह ने अपने नबी और हज़रत अबूबक्र रज़ि० से यह माल इस वजह से दूर नहीं रखा कि इन दोनों के साथ शर का इरादा था और मुझे इस वजह से नहीं दे रहे हैं कि मेरे साथ ख़ैर का इरादा है, (बल्कि मामला इसके बिल्कुल उलट मालूम होता है।)[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने बुलाने के लिए मेरे पास एक आदमी भेजा। मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब मैं दरवाज़े के क़रीब पहुंचा, तो मैंने अन्दर से उनके ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनी। मैंने घबराकर कहा—

'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन०'

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 207, बैहक़ी, भाग 6, पृ० 358, कंज़, भाग 2, पृ० 320, हैसमी, भाग 11, पृ० 242
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 218, कंज़, भाग 2, पृ० 317,

अल्लाह की क़सम ! अमीरुल मोमिनीन को कोई ज़बरदस्त हादसा पेश आया है, (जिसकी वजह से इतने ज़ोर से रो रहे हैं।)

मैंने अन्दर जाकर उनका कंधा पकड़कर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! परेशान होने की कोई बात नहीं।

उन्होंने कहा, नहीं ! परेशान होने की बहुत बड़ी बात है और मेरा हाथ पकड़कर दरवाज़े के अन्दर ले गए। मैंने वहां जाकर देखा कि ऊपर नीचे बहुत-से थैले रखे हुए हैं।

उन्होंने फ़रमाया, अब ख़त्ताब की औलाद की अल्लाह के यहां कोई क़ीमत नहीं रही। अगर अल्लाह चाहते तो मेरे दोनों साथियों यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को भी यह माल देते और वे दोनों इसे ख़र्च करने में जो तरीक़ा अख़्तियार करते, मैं भी उसे अख़्तियार करता।

मैंने कहा, आइए, बैठकर सोचते हैं कि इसे कैसे ख़र्च करना है? चुनांचे हम लोगों ने उम्मत की मांओं (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों) के लिए चार-चार हज़ार और मुहाजिरों के लिए चार-चार हज़ार और बाक़ी लोगों के लिए दो-दो हजार दिरहम तज्वीज किए और यों वह सारा माल बांट दिया।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का दुनिया के फैलाव से डरना और रोना

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने रोज़ा रखा हुआ था। (रोज़ा खोलने के लिए) उनके पास खाना लाया गया तो उसे देखकर फ़रमाया, हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मुझसे बेहतर थे, उन्हें शहीद किया और फिर ऐसी चादर में कफ़न दिया गया जो इतनी छोटी थी कि अगर उनका सर ढक दिया जाता, तो उनके पैर खुल जाते और अगर पैर ढके जाते तो उनका सर खुल जाता। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मुझसे

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 318,

बेहतर थे। उनको भी शहीद किया गया।

फिर दुनिया का हम पर बहुत फैलाव हो गया और हमें अल्लाह की ओर से दुनिया बहुत ज़्यादा दी गई। अब हमें डर है कि कहीं हमारी नेकियों का बदला दुनिया ही में तो नहीं दे दिया गया, फिर रोना शुरू कर दिया, जिसकी वजह से वह खाना खा न सके।[1]

हज़रत नौफ़ल बिन इयास हुज़ली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे साथी थे और बड़े अच्छे साथी थे। एक दिन हमें अपने घर ले गए। हम उनके घर में दाख़िल हो गए। फिर वह अन्दर गए और ग़ुस्ल करके बाहर आए और हमारे साथ बैठ गए।

फिर अन्दर से एक प्याला आया, जिसमें रोटी और गोश्त था। जब वह प्याला सामने रखा गया, तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० रो पड़े। हम लोगों ने उनसे कहा, ऐ अबू मुहम्मद रज़ि० ! (यह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का उपनाम है) आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से इस हाल में तशरीफ़ ले गए कि आपने और आपके घरवालों ने कभी जौ की रोटी पेट भरकर नहीं खाई, इसलिए मेरे ख़्याल में यह नहीं हो सकता कि अल्लाह ने हमें जो दुनिया में ज़िंदा रखा है और दुनिया का जो फैलाव हमें दिया है, हमारी यह हालत हुज़ूर सल्ल० की हालत से बेहतर हो और हमारे लिए उसमें ख़ैर ज़्यादा हो।[2]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए और उन्होंने कहा, ऐ अम्मा जान ! मुझे डर है कि मेरा माल मुझे हलाक कर देगा, क्योंकि मैं क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मालदार हूं।

मैंने कहा, ऐ मेरे बेटे ! तुम (अपना माल दूसरों पर) ख़ूब ख़र्च करो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना

1. बुख़ारी, पृ० 579, हुलीया, भाग 1, पृ० 100,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 99, इसाबा, भाग 2, पृ० 417

हैं मेरे कुछ साथी ऐसे हैं जो जुदा होने के बाद मुझे देख नहीं सकेंगे।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० वहां से चले गए और उनकी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० को मेरी वाली हदीस सुनाई। हदीस सुनकर हज़रत उमर रज़ि० मेरे पास आए और फ़रमाया, मैं ख़ुदा का वास्ता देकर पूछता हूं कि क्या मैं उनमें से हूं?

मैंने कहा, नहीं। आप उनमें से नहीं हैं और आपके इस सवाल का तो मैंने जवाब दे दिया, लेकिन आगे आपके बाद किसी को नहीं बताऊंगी कि वह उनमें से नहीं हैं।[1]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ियल्लाहु अन्हु का दुनिया के फैलाव और ज़्यादती से डरना और रोना

हज़रत यह्या बिन जादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु का पूछना करने आए। उन्होंने उनसे कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! आपको ख़ुशख़बरी हो, आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हौज़े कौसर पर जाएंगे, तो उन्होंने घर के ऊपर और नीचे वाले हिस्से की ओर इशारा करते हुए फ़रमाया, इस घर के होते हुए मैं कैसे (हौज़े कौसर पर जा सकता हूं?) हालांकि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, तुम्हें इतनी दुनिया काफ़ी है, जितना एक सवार के पास सवारी पर तोशा होता है (और मेरे पास तोशे से कहीं ज़्यादा है।)[2]

हज़रत तारिक़ बिन शहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु का पूछना करने गए, तो उन्होंने हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० से कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (यह हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० का उपनाम है) आपको ख़ुशख़बरी हो। कल आप (इंतिक़ाल के बाद) अपने भाइयों के

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 72
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 184,

पास पहुंच जाएंगे।

यह सुनकर हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० रो पड़े और फ़रमाया, मुझे मौत से घबराहट नहीं है, लेकिन तुमने मेरे भाइयों का नाम लेकर मुझे उन लोगों की याद ताज़ा करा दी है जो अपने नेक अमल और दीनी मेहनत का सारा अज्र व सवाब साथ लेकर आगे चले गए (और दुनिया में उन्हें कुछ नहीं मिला) और मुझे इस बात का डर है कि उनके जाने के बाद हमें अल्लाह ने जो माल व दौलत दुनिया में दी है, वह कहीं हमारे उन आमाल का बदला न हो जिनका तुम ज़िक्र कर रहे हो।[1]

हज़रत हारिसा बिन मुज़र्रिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु के पास गए। उन्होंने (उस ज़माने के दस्तूर के मुताबिक़ इलाज के लिए) अपने पेट पर गर्म लोहे से सात दाग़ लगवा रखे थे। उन्होंने कहा, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद न होता कि तुममें से कोई भी हरगिज़ मौत की तमन्ना न करे, तो मैं ज़रूर मौत की तमन्ना करता।

एक साथी ने अर्ज़ किया (आप ऐसा क्यों फ़रमा रहे हैं?) आप ज़रा ख़्याल फ़रमाएं दुनिया में आपको नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल रही और अगर अल्लाह ने चाहा तो (मरने के बाद) आप हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंच जाएंगे।

उन्होंने कहा, अब जो मेरे पास इतनी दुनिया जमा हो गई है, उसकी वजह से मुझे डर है कि शायद मैं उनकी ख़िदमत में न पहुंच सकूं। देखो, यह घर में चालीस हज़ार दिरहम पड़े हुए हैं।[2]

हज़रत हारिसा रज़ि० की एक रिवायत में यह है कि हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मैंने अपने आपको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस हाल में देखा कि मैं एक दिरहम का भी मालिक नहीं था और आज मेरे घर के एक कोने में चालीस हज़ार दिरहम पड़े हुए हैं।

फिर उनके लिए जब कफ़न लाया गया तो उसे देखकर रो पड़े और

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 145, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 118,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 144,

फ़रमाया, (मुझे तो ऐसा और मुकम्मल कफ़न मिल रहा है) और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के कफ़न की तो सिर्फ़ एक धारीदार चादर थी और वह भी इतनी छोटी कि उसे सर पर डाला जाता तो पांव नंगे हो जाते और अगर पांव ढांके जते तो सर नंगा हो जाता। आख़िर सर ढक कर पैरों पर इज़ख़र घास डाल दी गई।[1]

हज़रत अबू वाइल शक़ीक़ बिन सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार थे। हम लोग उनका पूछना करने गए तो उन्होंने फ़रमाया, इस सन्दूक़ में अस्सी हज़ार दिरहम रखे हुए हैं और अल्लाह की क़सम! (ये खुले रखे हुए हैं) मैंने उन्हें किसी थैली में डालकर उसका मुंह बन्द नहीं किया। (इन्हें जमा करके रखने का मेरा इरादा नहीं है) और न मैंने किसी मांगने वाले से इन्हें बचाकर रखा है (जो भी मांगने वाला आया है, उसे ज़रूर दिया है, मैं तो इन्हें ख़र्च करने की पूरी कोशिश करता रहा, लेकिन ये फिर भी इतने बच गए) और इसके बाद रो दिए।

हमने अर्ज़ किया, आप क्यों रोते हैं?

उन्होंने फ़रमाया, मैं इस वजह से रोता हूं कि मेरे साथी इस दुनिया से इस हाल में गए कि (दीन के ज़िंदा करने की मेहनत उन्होंने ख़ूब क़ुरबानियों और मुजाहदों के साथ की और) उन्हें दुनिया कुछ न मिली (यों ही फ़क्र व फ़ाक़ा में यहां से चले गए, इसलिए उनकी मेहनत और अमल का सारा बदला उन्हें अगली दुनिया में मिलेगा) और हम उनके बाद यहां दुनिया में रह गए और हमें माल व दौलत ख़ूब मिली, जो हमने सारी मिट्टी-गारे में यानी तामीरात में लगा दी।[2]

और हज़रत अबू उसामा रज़ि० ने जो रिवायत हज़रत इदरीस रज़ि० से की है, उसमें यह है कि हज़रत ख़ब्बाब ने यह भी फ़रमाया, मेरा दिल चाहता है कि यह दुनिया तो मेंगनी वग़ैरह होती।[3]

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 145, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 117
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 145,
3. अबू नुऐम

हज़रत क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, फिर हज़रत ख़ब्बाब रज़ि० ने फ़रमाया, हमसे पहले बहुत से ऐसे लोग आगे चले गए हैं जिन्हें दुनिया कुछ नहीं मिली और हम उनके बाद इस दुनिया में रह गए और हमें बहुत ज़्यादा दुनिया मिली है जिसे तामीरात में ख़र्च करने के अलावा हमें और कोई ख़र्च भी नज़र नहीं आ रहा और मुसलमान को हर जगह ख़र्च करने का सवाब मिलता है और (बे-ज़रूरत) तामीर में ख़र्च करने का सवाब नहीं मिलता।[1]

हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह की रिज़ा के लिए हिजरत की। इसका अज्र अल्लाह हमें ज़रूर अता फ़रमाएंगे। अब हमारे कुछ साथी तो इस दुनिया से चले गए और उन्होंने अपने आमाल और अपनी मेहनत का बदला दुनिया में कुछ नहीं लिया। उनमें से एक हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो उहुद की लड़ाई के दिन शहीद हुए। वह सिर्फ़ एक धारीदार चादर ही छोड़कर गए थे और वह इतनी छोटी थी कि जब हम उससे उनका सर ढांकते तो उनके पांव खुल जाते और जब उससे उनके पांव ढांके जाते तो सर खुल जाता। आख़िर हमें हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस चादर से उनका सर ढांक दो और उनके पांवों पर इज़ख़र घास डाल दो और हमारे कुछ साथियों के फल पक चुके हैं, जिन्हें वे चुन रहे हैं यानी अब उनको दुनिया की माल व दौलत ख़ूब मिल गई है।[2]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का बहुतेरी दुनिया से डरना और रोना

क़बीला बनू अबस के एक साहब कहते हैं, मैं हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की सोहबत में रहा। एक बार उन्होंने किसरा के उन ख़ज़ानों का ज़िक्र किया जो अल्लाह ने मुसलमानों को जीतों में दिए थे

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 246,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 85, कंज़, भाग 7, पृ० 86

और फ़रमाया, जिस अल्लाह ने तुम्हें ये ख़ज़ाने दिए और तुम्हें ये जीतें दीं, उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में ये सारे ख़ज़ाने रोक रखे थे। (हालांकि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को तमाम ख़ैरात व बरकात अता फ़रमाई थी) और सहाबा रज़ि० इस हाल में सुबह करते कि उनके पास न दिरहम व दीनार होता और न एक मुद्द (14 छटांक) अनाज, ऐ क़बीला बनू अबस वाले! फिर इसके बाद अब यह सूरतेहाल है।

फिर हमारा कुछ खलिहानों पर गुज़र हुआ जहां उड़ा कर दानों से भूसा अलग किया जा रहा था, उसे देखकर फ़रमाया, जिस अल्लाह ने तुम्हें यह सब कुछ दिया है और तुम्हें ये जीतें अता फ़रमाई हैं, उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में ये तमाम ख़ज़ाने रोक रखे थे और सहाबा इस हाल में सुबह करते कि उनके पास न दीनार व दिरहम होता और न एक मुद्द ग़ल्ला। ऐ अबसी भाई! फिर इसके बाद अब (फ़रावानी की) यह सूरतेहाल है।[1]

क़बीला बनू अबू अबस के एक साहब कहते हैं, मैं एक बार हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ दजला नदी के किनारे पर चला जा रहा था, तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ क़बीला बनू अबस वाले! उतरकर पानी पी लो। चुनांचे मैंने उतरकर पानी पी लिया।

फिर उन्होंने पूछा, तुम्हारे इस पीने से क्या दजला में कोई कमी आई है?

मैंने कहा, मेरे ख़्याल से तो कोई कमी नहीं आई है।

उन्होंने फ़रमाया, इल्म भी इसी तरह से है, इसमें से जितना भी ले लिया जाए वह कम नहीं होता। फिर फ़रमाया, सवार हो जाओ।

चुनांचे मैं सवार हो गया। फिर गेहूं और जौ के खलिहानों पर हमारा गुज़र हुआ। उन्हें देखकर फ़रमाया, तुम्हारा क्या ख़्याल है, अल्लाह ने हमें ये जीतें दे रखी हैं और अल्लाह ने यह सब कुछ हज़रत

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 199

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० से रोके रखा, तो क्या ये जीतें हमें इसलिए दीं कि हमारे पास ख़ैर का इरादा है और उनसे इसलिए रोके रखीं कि उनके साथ शर का इरादा था।

मैंने कहा, मुझे मालूम नहीं।

उन्होंने फ़रमाया, मैं जानता हूं, हमारे साथ शर का इरादा है और उनके साथ ख़ैर का इरादा था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी दम तक कभी तीन दिन लगातार पेट भरकर खाना नहीं खाया।[1]

हज़रत अबू सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि अपने उस्तादों से नक़ल करते हैं कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार थे। हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु उनका पूछना करने गए तो हज़रत सलमान रज़ि० रोने लग पड़े।

हज़रत साद रज़ि० ने उनसे कहा, आप क्यों रो रहे हैं? आप तो (इंतिक़ाल के बाद) अपने साथियों से जा मिलेंगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम के पास हौज़े कौसर पर जाएंगे और हुज़ूर सल्ल० का इस हाल में इंतिक़ाल हुा कि वह आपसे राज़ी थे।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं न तो मौत से घबराकर रो रहा हूं और न दुनिया के लालच की वजह से रो रहा हूं, बल्कि इस वजह से रो रहा हूं कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें यह वसीयत फ़रमाई थी कि गुज़ारे के लिए तुम्हारे पास इतनी दुनिया होनी चाहिए, जितना कि सवार के पास तोशा होता है और (मैं इस वसीयत के मुताबिक़ अमल नहीं कर सका, क्योंकि) मेरे आसपास ये बहुत से काले सांप हैं, यानी दुनिया का बहुत-सा सामान है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि वह सामान क्या था? बस एक लोटा और कपड़े धोने का बरतन और इसी तरह की कुछ और चीज़ें थीं।

हज़रत साद रज़ि० ने उनसे कहा, आप हमें कोई वसीयत फ़रमा दें,

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 324,

जिस पर आपके बाद भी अमल करें।

उन्होंने हज़रत साद रज़ि० से फ़रमाया, जब आप किसी काम के करने का इरादा करने लगें, और कोई फ़ैसला करने लगें और जब आप अपने हाथ से कोई चीज़ बांटने लगें, तो उस वक़्त अपने रब को याद कर लिया करें यानी कोई भी काम करने लगें तो अल्लाह का ज़िक्र ज़रूर करें।[1]

और हाकिम की रिवायत में यह है कि उस वक़्त उनके चारों ओर (सिर्फ़ तीन बरतन) कपड़े धोने का बरतन, एक लगन और एक लोटा था।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार हुए तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पूछना के लिए गए, तो उन्होंने देखा कि हज़रत सलमान रज़ि० रो रहे हैं। हज़रत साद रज़ि० ने उनसे पूछा, ऐ मेरे भाई! आप क्यों रो रहे हैं? क्या आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में नहीं रहे? क्या फ़्लां फ़ज़ीलत और फ़्लां फ़ज़ीलत आपको हासिल नहीं?

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं इन दो बातों में से किसी पर नहीं रो रहा, न तो दुनिया के लालच की वजह से और न आख़िरत को बुरा और नागवार समझने की वजह से, बल्कि इस वजह से रो रहा हूं कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें एक वसीयत फ़रमाई थी। मेरा ख़्याल यह है कि मैं इस वसीयत की पाबन्दी नहीं कर सका।

हज़रत साद रज़ि० ने पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने आपको क्या वसीयत फ़रमाई थी?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने हमें यह वसीयत फ़रमाई थी कि तुममें से हर एक को इतनी दुनिया काफ़ी है जितना सवार का तोशा होता है और मेरा ख़्याल यह है कि मैं हुज़ूर सल्ल० की मुक़र्रर की हुई इस हद से आगे बढ़ चुका हूं (और सवार के तोशा से ज़्यादा सामान मेरे पास है)

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 195, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 127, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 65, कंज़, भाग 2, पृ० 147,

और ऐ साद रज़ि० ! जब तुम फ़ैसला करने लगो और जब तुम बांटने लगो और जब तुम किसी काम का पक्का इरादा करने लगो तो इन तीनों वक़्तों में अल्लाह से डरते रहना।

हज़रत साबित कहते हैं, मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत सलमान रज़ि० ने तर्के में बीस से कुछ ऊपर दिरहम और थोड़ा-सा ख़र्चा छोड़ा था।[1]

हज़रत आमिर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत सलमान अल-ख़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु (मदीना में शुरू ज़माने में इस्लाम लाने की वजह से यह अल-ख़ैर कहलाते थे) की मौत का वक़्त क़रीब आया, तो लोगों ने उन पर कुछ घबराहट महसूस की, तो उन्होंने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! (यह हज़रत सलमान रज़ि० का उपनाम है) आप क्यों घबरा रहे हैं? आको इस्लाम लाने में दूसरों पर सबक़त हासिल है और आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अच्छी-अच्छी लड़ाइयों में और बड़ी-बड़ी जंगों में शरीक हुए हैं।

उन्होंने कहा, मैं इस वजह से घबरा रहा हूं कि हमारे हबीब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया से जाते वक़्त हमें यह वसीयत की थी कि तुममें से हर आदमी को सवार के तोशे जितना सामान काफ़ी होना चाहिए। (मैं वसीयत की पाबन्दी नहीं कर सका) इस वजह से घबरा रहा हूं।

हज़रत सलमान रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद जब उनका माल जमा किया गया तो उसकी क़ीमत पन्द्रह दिरहम थी।

इब्ने असाकिर में यह है कि पन्द्रह दीनार थी।

अबू नुऐम ने हज़रत अली बिन बज़ीमा से यों रिवायत की है कि हज़रत सलमान रज़ि० के तर्के का सामान बेचा गया तो वह चौदह दिरहम में बिका।[2]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 128,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 184, कंज़, भाग 7, पृ० 45, हुलीया, भाग 1, पृ० 197, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 186,

हज़रत अबू हाशिम बिन उत्बा बिन रबीआ क़ुरशी रज़ियल्लाहु अन्हु का डर

हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू हाशिम बिन उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार थे। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु उनका पूछना करने आए, तो देखा कि वह रो रहे हैं, तो उनसे पूछा, ऐ मामूं जान! आप क्यों रो रहे हैं? क्या किसी दर्द ने आपको बेचैन कर रखा है? या दुनिया के लालच में रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, यह बात बिल्कुल नहीं है, बल्कि मैं इस वजह से रो रहा हूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक वसीयत फ़रमाई थी, हम उस पर अमल नहीं कर सके।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने पूछा, वह क्या वसीयत थी?

हज़रत अबू हाशिम रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि आदमी ने माल जमा करना ही है, तो एक ख़ादिम और अल्लाह के रास्ते के जिहाद के लिए एक सवारी काफ़ी है और मैं देख रहा हूं कि मैंने आज (उससे ज़्यादा) माल जमा कर रखा है।

इब्ने माजा की रिवायत में यों है कि हज़रत समुरा बिन सह्म की क़ौम के एक साहब कहते हैं कि मैं हज़रत अबू हाशिम बिन उत्बा रज़ि० का मेहमान बना तो उनके पास हज़रत मुआविया रज़ि० आए।

इब्ने हिब्बान की रिवायत में है कि हज़रत समुरा बिन सह्म कहते हैं, मैं हज़रत अबू हाशिम बिन उत्बा रज़ि० का मेहमान बना तो वह प्लेग की बीमारी के शिकार थे, फिर उनके पास हज़रत मुआविया रज़ि० आए और रज़ीन की रिवायत में यह है कि जब हज़रत अबू हाशिम रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो उनके तर्के का हिसाब किया गया तो उसकी क़ीमत तीस दिरहम बनी थी और उसमें वह प्याला भी शामिल था जिसमें वह आटा गूंधा करते थे और उसी में वह खाते थे।[1]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 184, इसाबा, भाग 4, पृ० 210, हाकिम, भाग 3, पृ० 638, कंज़, भाग 2, पृ० 149,

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु का दुनिया की ज़्यादती और फैलाव पर डरना और रोना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू हस्ना मुस्लिम बिन अकयस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक साहब हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गए तो उन्होंने देखा कि वह रो रहे हैं।

तो उन्होंने पूछा, ऐ अबू उबैदा रज़ि० ! आप क्यों रो रहे हैं?

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, इस वजह से रो रहा हूं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन जीतों और ग़नीमत के मालों का ज़िक्र किया जो अल्लाह मुसलमानों को अता फ़रमाएंगे।

उसमें शामदेश के जीते जाने का भी ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया, ऐ अबू उबैदा रज़ि० ! अगर तुम (इन जीतों तक) ज़िंदा रहे तो तुम्हें तीन ख़िदमत करने वाले काफ़ी हैं।

एक तुम्हारी रोज़मर्रा की ख़िदमत के लिए और **दूसरा** तुम्हारे साथ सफ़र करने के लिए, और **तीसरा** तुम्हारे घरवालों की ख़िदमत के लिए, जो उनके काम करता रहे और तीन सवारियां तुम्हें काफ़ी हैं—

एक सवारी तुम्हारे घर के लिए,

दूसरी सवारी तुम्हारे इधर-उधर आने-जाने के लिए,

तीसरी सवारी, तुम्हारे ग़ुलाम के लिए। (अब हुज़ूर सल्ल० ने तो तीन नौकर और तीन सवारियां रखने को फ़रमाया था) और मैं अपने घर को देखता हूं तो वह ग़ुलामों से भरा हुआ है और अस्तबल को देखता हूं तो वह घोड़ों और जानवरों से भरा हुआ है। अब मैं इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किस मुंह से मुलाक़ात करूंगा। जबकि आपने हमें यह ताकीद फ़रमाई थी कि तुममें से मुझे सबसे ज़्यादा महबूब और मेरे सबसे ज़्यादा क़रीब वह आदमी होगा जो (क़ियामत के दिन) मुझे उसी हाल में मिले जिस हाल में मुझसे जुदा हुआ था।[1]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 253, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 73,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ि० का दुनिया से बे-रग़बती अख़्तियार करना और दुनिया को इस्तेमाल किए बग़ैर इस दुनिया से चले जाना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ोहद (बे-रग़बती)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना यह क़िस्सा सुनाया और फ़रमाया, मैं एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आप चटाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं अन्दर जाकर बैठ गया, तो मैंने देखा कि आपने सिर्फ़ लुंगी बांधी हुई है और उसके अलावा जिस्म पर और कोई कपड़ा नहीं है। इस वजह से आपके पाक जिस्म पर चटाई के निशान पड़े हुए हैं और मुट्ठी भर एक साअ (साढ़े तीन सेर) जौ और कीकर के पत्ते (जो खाल रंगने के काम आते हैं) एक कोने में पड़े हुए हैं और एक बग़ैर रंगी हुई खाल लटकी हुई है। (इतना कम सामान देखकर) मेरी आंखों में बे-अख़्तियार आंसू आ गए।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, क्यों रोते हो? ऐ इब्नुल ख़त्ताब!

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! मैं क्यों न रोऊं, जबकि मैं देख रहा हूं कि चटाई के निशान आपके पाक जिस्म पर पड़े हुए हैं और घर की कुल कायनात यह है जो मुझे नज़र आ रही है। इधर क़ैसर व किसरा तो फलों और नहरों (दुनिया की फ़रावानी) में हों और आप अल्लाह के नबी और बेहतरीन बन्दे होकर भी आपकी यह हालत।

आपने फ़रमाया, ऐ इब्नुल ख़त्ताब! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं

हो कि हमारे लिए आख़िरत हो और उनके लिए दुनिया ।[1]

और हाकिम ने इस रिवायत को इन लफ़्ज़ों के साथ बयान किया है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इजाज़त लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बालाख़ाने में हाज़िर हुआ तो देखा कि आप एक बोरिए पर लेटे हुए हैं और आपके मुबारक जिस्म का कुछ हिस्सा मिट्टी पर है और आपके सिरहाने एक तकिया है, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई है और आपके सिरहाने एक बग़ैर रंगी हुई खाल लटकी हुई है और एक कोने में कीकर के पत्ते पड़े हुए हैं।

चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० को सलाम करके बैठ गया और मैंने अर्ज़ किया, आप अल्लाह के नबी और उसके ख़ास बन्दे (और आपका यह हाल) और किसरा और क़ैसर सोने के तख़्तों पर रेशम व दीबाज के बिछौनों पर हों।

आपने फ़रमाया, उन लोगों को मज़ेदार और अच्छी चीज़ें दुनिया में जल्दी दे दी गईं हैं और यह दुनिया जल्द ख़त्म हो जाने वाली है और हमें बाद में आख़िरत में मज़ेदार और अच्छी चीज़ें दी जाएंगी।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए तो देखा कि हुज़ूर सल्ल० एक चटाई पर लेटे हुए हैं, जिसकी वजह से आपके पहलू पर चटाई के निशान पड़े हुए हैं, तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप इससे ज़्यादा नर्म बिस्तर ले लेते तो अच्छा था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे इस दुनिया से क्या वास्ता। मेरी और दुनिया की मिसाल उस सवार की-सी है जो सख़्त गर्म दिन में चला। फिर उसने थोड़ी देर एक पेड़ के नीचे आराम किया, फिर उस पेड़ को छोड़कर चल दिया।[3]

---

1. इब्ने माजा, हाकिम, मुस्लिम
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 161, हैसमी, भाग 10, पृ० 326,
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 159, 160, 162, मज्मा, भाग १०, पृ० 327,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक अंसारी औरत मेरे पास आई, उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक बिस्तर देखा कि एक चादर है, जिसे दोहरा कर बिछाया हुआ है, (फिर वह चली गई) और उसने मेरे पास एक बिस्तर भेजा, जिसके अन्दर ऊन भरी हुई थी।

जब आप मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उसे देखकर फ़रमाया, ऐ आइशा ! यह क्या है ?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां अंसारी औरत मेरे पास आई थी। उसने आपका बिस्तर देखा था, फिर उसने वापस जाकर मेरे पास यह बिस्तर भेजा है।

आपने फ़रमाया, ऐ आइशा ! यह वापस कर दो। अल्लाह की क़सम ! अगर मैं चाहता तो अल्लाह मेरे साथ सोने और चांदी के पहाड़ चला देता।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊन का कपड़ा पहना और पैवन्द वाला जूता इस्तेमाल फ़रमाया और खुरदरे टाट के कपड़े पहने और बशिअ खाना खाया।

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा गया कि बशिअ खाना कौन-सा होता है ?

उन्होंने बताया कि मोटे पिसे हुए जौ, जिन्हें हुज़ूर सल्ल० पानी के घूंट के ज़रिए ही निगला करते थे।[2]

हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने आटा छानकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक चपाती पकाई (और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश की)। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, यह क्या है ?

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 163
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 163,

मैंने कहा, यह खाने की एक क़िस्म है जिसे हम अपने इलाक़े (हब्शा) में पकाया करते हैं, तो मेरा दिल चाहा कि मैं उसमें से आपके लिए एक चपाती बनाऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं छान बोरे को उसी आटे में वापस मिलाकर गूंधो (और फिर उससे मेरे लिए रोटी बनाओ)।[1]

हज़रत अबू राफ़ेअ की बीवी हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, हज़रत हसन बिन अली रज़ि० हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० मेरे पास आए और कहने लगे, आप हमारे लिए वह खाना तैयार करें, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसन्द था।

मैंने कहा, ऐ मेरे बेटो! मैं पका तो दूंगी, लेकिन आज तुम्हें वह खाना अच्छा नहीं लगेगा। (ख़ैर, तुम लोगों का इसरार है तो मैं पका देती हूं।) चुनांचे मैं उठी और जौ लेकर उन्हें पीसा और फूंक मारकर मोटी-मोटी भूसी उड़ा दी और फिर उसकी एक रोटी तैयार की और फिर उस रोटी पर तेल लगाया और उस पर काली मिर्च छिड़की और फिर उसे उनके सामने रखा और मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० को यह खाना पसन्द था।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बाहर निकले। आप अंसार के एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और ज़मीन से खजूरें चुनकर खाने लगे और मुझसे फ़रमाया, ऐ इब्ने उमर रज़ि० ! क्या हुआ तुम्हें, तुम क्यों नहीं खाते?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! इन खजूरों के खाने को मेरा दिल नहीं चाह रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन मेरा दिल तो चाह रहा है और यह चौथी सुबह है जो मैंने कुछ नहीं खाया। अगर मैं चाहता तो मैं अपने रब से दुआ करता तो वह मुझे किसरा और क़ैसर जैसा मुल्क दे देता।

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 154
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 325, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 159

ऐ इब्ने उमर रज़ि० ! तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा, जब तुम ऐसे लोगों में रह जाओगे जो एक साल की रोज़ी जमा करके रखेंगे और यक़ीन कमज़ोर हो जाएगा ?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! हम अभी वहां ही थे कि यह आयत उतरी—

وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

(سورۃ عنکبوت آیت ۶۰)

'और बहुत-से जानवर ऐसे है जो अपनी रोज़ी उठाकर नहीं रखते। अल्लाह ही उनको (मुक़द्दर की) रोज़ी पहुंचाता है और तुमको भी, और वह सब कुछ सुनता और सब कुछ जानता है।' (सूर: अंकबूत, आयत 60)

फिर आपने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे न तो दुनिया जमा करने का और न ख़्वाहिशों के पीछे चलने का हुक्म दिया, इसलिए जो आदमी इस इरादे से दुनिया जमा करता है कि बाक़ी ज़िंदगी में काम आएगी, तो उसे समझ लेना चाहिए कि ज़िंदगी तो अल्लाह के हाथ में है। (न जाने कितने दिन बाक़ी हैं) ग़ौर से सुनो। मैं दीनार व दिरहम भी जमा नहीं करता, और न कल के लिए कुछ छिपाकर रखता हूं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक प्याला लाया गया, जिसमें दूध और शहद था, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, पीने की दो चीज़ों को एक बना दिया और एक प्याले में दो सालन जमा कर दिए। (यानी दूध और शहद में से हर एक पीने और सालन के काम आ सकता है।) मुझे इसकी ज़रूरत नहीं। ग़ौर से सुनो ! मैं यह नहीं कहता कि यह हराम है, लेकिन मैं यह पसन्द नहीं करता कि अल्लाह मुझसे क़ियामत के दिन ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ों के बारे में पूछे। मैं तो अल्लाह के लिए तवाज़ोअ अख़्तियार करता हूं, क्योंकि जो भी अल्लाह के लिए तवाज़ोअ अख़्तियार करेगा, अल्लाह उसे बुलन्द करेंगे और जो तकब्बुर करेगा, अल्लाह उसे गिराएंगे

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 149, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 420

और जो (ख़र्च करने में बीच का रास्ता अपनाएगा, अल्लाह उसे ग़नी करेंगे और जो मौत को ज़्यादा से ज़्यादा याद करेगा, अल्लाह उससे मुहब्बत करेंगे।[1]

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोह्द (बेरग़बती)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। आपने पीने के लिए पानी मांगा, तो आपकी ख़िदमत में शहद मिला हुआ पानी पेश किया गया। जब आपने उसे हाथ में लिया तो रोने लगे और हिचकियां मार-मारकर रोना शुरू कर दिया, जिससे हम समझे कि उन्हें कुछ हो गया है, लेकिन (रौब की वजह से) हमने उनसे कुछ न पूछा।

जब आप चुप हो गए तो हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा! आप इतना ज़्यादा क्यों रोए?

उन्होंने फ़रमाया (शहद मिला हुआ पानी देखकर मुझे एक वाक़िया याद आ गया था, उसकी वजह से रोया था और वह वाक़िया यह है कि) मैं एक बार हुज़ूर सल्ल० के साथ था। इतने में मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० किसी चीज़ को अपने से दूर कर रहे हैं, लेकिन मुझे कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही थी।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह क्या चीज़ है जिसे आप दूर कर रहे हैं, मुझे तो कोई चीज़ नज़र नहीं आ रही है?

आपने इर्शाद फ़रमाया, दुनिया मेरी ओर बढ़ी, तो मैंने उससे कहा, दूर हो जा, तो उसने कहा, आप तो मुझे लेने वाले नहीं हैं। (यानी यह तो मुझे यक़ीन है कि आप मुझे नहीं लेंगे, मैं वैसे ही ज़ोर लगा रही हूं।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, (इस वाक़िए के याद आने से मैं रोया था) और शहद मिला हुआ पानी पीना मेरे लिए मुश्किल हो गया और मुझे डर लगा कि उसे पीकर कहीं मैं हुज़ूर सल्ल० के तरीक़े से हट

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 138, हैसमी, भाग 10, पृ० 325,

न जाऊं और दुनिया मुझसे चिमट न जाए।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पीने के लिए पानी मांगा, तो उनकी ख़िदमत में एक बरतन लाया गया, जिसमें शहद और पानी था। जब उसे अपने मुंह के क़रीब ले गए, तो रो पड़े और इतना रोए कि आस-पास वाले भी रोने लग गए। आख़िर वह तो ख़ामोश हो गए, लेकिन आस-पास वाले ख़ामोश न हो सके। फिर उसे दोबारा मुंह के क़रीब ले गए तो फिर रोने लगे और इतना ज़्यादा रोए कि उनसे रोने की वजह पूछने की किसी में हिम्मत न हुई। आख़िर जब उनकी तबियत हलकी हो गई और उन्होंने अपना मुंह पोंछा, तो लोगों ने उनसे पूछा, आप इतना ज़्यादा क्यों रोए?

इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया और उसमें यह भी है कि हुज़ूर के दूर करने से दुनिया एक तरफ़ को होकर कहने लगी, अल्लाह की क़सम! अगर आप मेरे हाथ से छूट गए हैं तो (कोई बात नहीं) आपके बाद वाले मेरे हाथ से नहीं छूट सकेंगे।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने इंतिक़ाल पर कोई दीनार व दिरहम तर्के में न छोड़ा, बल्कि उन्होंने तो इंतिक़ाल से पहले ही अपना सारा माल बैतुलमाल में जमा करा दिया था।

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा बनने के बाद अपने तमाम दीनार और दिरहम बैतुलमाल में जमा करा दिए थे और फ़रमाया, मैं अपने इस माल में से तिजारत किया करता था और रोज़ी खोजा करता था। अब मुसलमानों का ख़लीफ़ा बन जाने की वजह से तिजारत और रोज़ी की तलब की फ़ुर्सत न रही।[3]

हज़रत अत्ता बिन साइब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मुसलमान

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 254, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 168,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 30, कंज़, भाग 4, पृ० 37,
3. कंज़, भाग 3, पृ० 132,

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से बैअत हो गए, तो वह आदत के मुताबिक़ सुबह को बाज़ू पर चादरें डालकर बाज़ार जाने लगे। उनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, कहां का इरादा है?

फ़रमाया, बाज़ार जा रहा हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, आप पर ख़िलाफ़त की वजह से मुसलमानों की ज़िम्मेदारी आ चुकी है, उसका क्या करेंगे?

फ़रमाया, फिर बाल-बच्चों को कहां से खिलाऊं?

हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चलें, वह आपके लिए बैतुलमाल से कुछ तै कर देंगे। दोनों उनके पास तशरीफ़ ले गए तो उन्होंने एक मुहाजिरी को अवसतन जो मिलता था, न कम, न ज़्यादा, वह मुक़र्रर कर दिया और यह भी तै किया कि एक जोड़ा सर्दी में मिला करेगा और एक गर्मी में, लेकिन पुराना जोड़ा वापस करेंगे तो नया मिलेगा और हर दिन आधी बकरी का गोश्त मिलेगा, जिसमें सिरी, कलेजी, दिल, गुर्दे वग़ैरह नहीं होंगे।[1]

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बनाए गए, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० ने कहा, अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा के लिए इतना वज़ीफ़ा मुक़र्रर करो जो उनके लिए काफ़ी हो।

चुनांचे मुक़र्रर करने वालों ने कहा, हां ठीक है। एक तो उनको (बैतुलमाल से) पहनने के लिए दो चादरें मिला करेंगी। जब वे पुरानी हो जाया करें तो उन्हें वापस करके उन जैसी और दो नई चादरें ले लिया करें और दूसरे, सफ़र के लिए उनको सवारी मिला करेगी और तीसरे, ख़लीफ़ा बनने से पहले यह अपने घरवालों को जितना ख़र्चा दिया करते थे, उतना ख़र्चा उनको मिला करेगा।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इस पर राज़ी हूं।[2]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 129
2. कंज़, भाग 3, पृ० 130,

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु वाले उसी वज़ीफ़ा को काफ़ी समझा, जो सहाबा रज़ि० ने उनके लिए मुक़र्रर किया था।

चुनांचे वह कुछ दिनों तक उतना ही लेते रहे, लेकिन वह उनकी ज़रूरत से कम था, इसलिए उनके गुज़र में तंगी होने लगी तो मुहाजिरीन की एक जमाअत इकट्ठी हुई, जिनमें हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० भी थे।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, अगर हम हज़रत उमर रज़ि० से कहें कि हम आपके वज़ीफ़े में बढ़ाना चाहते हैं, तो यह कैसा रहेगा?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, हम तो पहले ही से उनका वज़ीफ़ा बढ़ाना चाहते हैं, चलो चलते हैं।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, यह हज़रत उमर रज़ि० हैं, पहले हमें इधर-उधर से इनकी राय मालूम करनी चाहिए। (फिर उनसे सीधे-सीधे बात करनी चाहिए।) मेरा ख़्याल यह है कि हम उम्मुलमोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास जाते हैं और उनके ज़रिए से हज़रत उमर रज़ि० की राय मालूम करते हैं और उनसे कह देंगे कि वह हज़रत उमर रज़ि० को हम लोगों के नाम न बताएं।

चुनांचे ये लोग हज़रत हफ़सा रज़ि० के पास गए और उनसे कहा कि आप यह बात एक जमाअत की ओर से हज़रत उमर रज़ि० से करें और उन्हें किसी का नाम न बताएं। लेकिन अगर वह यह बात मान लें तो फिर नाम बताने में हरज नहीं है। यह बात कहकर वे लोग हज़रत हफ़सा रज़ि० के पास से चले आए।

फिर हज़रत हफ़सा रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में गईं और नाम लिए बग़ैर उनकी ख़िदमत में यह बात पेश की तो हज़रत उमर रज़ि० के चेहरे पर ग़ुस्से के निशान ज़ाहिर हो गए और उन्होंने पूछा कि तुम्हें यह बात किन लोगों ने कही है?

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने अर्ज़ किया, पहले आपकी राय मालूम हो जाए, फिर मैं आपको उनके नाम बता सकती हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर मुझे उनके नाम मालूम हो जाते तो मैं उन्हें ऐसी कड़ी सज़ा देता, जिससे उनके चेहरों पर निशान पड़ जाते। तुम ही मेरे और उनके दर्मियान वास्ता बनी हो, इसलिए मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं कि तुम यह बताओ कि तुम्हारे घर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सबसे अच्छा लिबास कौन-सा था?

उन्होंने कहा, गेरुवे रंग के दो कपड़े, जिन्हें किसी वफ़्द के आने पर और जुमा के ख़ुत्बे के लिए पहना करते थे।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हारे यहां सबसे अच्छा खाना कौन-सा खाया?

उन्होंने कहा, एक बार हमने जौ की एक रोटी पकाई, फिर उस गरम-गरम रोटी पर घी के डिब्बे की तलछट उलट कर उसे चुपड़ दिया, जिससे वह रोटी ख़ूब चिकनी-चुपड़ी और नर्म हो गई, फिर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ूब मज़े लेकर उसे खाया और वह रोटी आपको बहुत अच्छी लग रही थी।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, हुज़ूर सल्ल० का तुम्हारे यहां सबसे ज़्यादा नर्म बिस्तर कौन-सा था?

उन्होंने कहा, हमारा एक मोटा-सा कपड़ा था, गर्मी में उसको चोहरा करके बिछा लेते थे और सर्दी में आधे को बिछा लेते और आधे को ओढ़ लेते।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ हफ़सा! उन लोगों तक यह बात पहुंचा दो कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने तौर-तरीक़ों से हर चीज़ में एक अन्दाज़ा मुक़र्रर फ़रमाया है और ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ों को अपनी-अपनी जगहों में रखा है (और उनमें नहीं लगे) और कम से कम पर गुज़ारा किया है। मैंने भी हर चीज़ का अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है और अल्लाह की क़सम! ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ों को उनकी जगहों में रखूंगा

और मैं भी कम से कम पर गुज़ारा करूंगा।

मेरी और मेरे दो साथियों की मिसाल उन तीन आदमियों की-सी है जो एक रास्ते पर चले, उनमें से पहला आदमी तोशा लेकर चला और मंज़िल तक पहुंच गया। फिर दूसरे ने भी उसी की पैरवी की और उसी के रास्ते पर चला तो वह भी उसी मंज़िल तक पहुंच गया। फिर तीसरे आदमी ने भी उसी पहले की पैरवी की। अगर वह इन दोनों के रास्ते का ख़ुद को पाबन्द बनाएगा और उन जैसा तोशा रखेगा तो उनके साथ जा मिलेगा और उनके साथ रहा करेगा और अगर वह इन दोनों के रास्ते को छोड़क' किसी और रास्ते पर चलेगा तो कभी भी उनके साथ नहीं मिल सके ।[1]

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बसरा की जामा मस्जिद में एक मज्लिस लगी हुई थी। मैं उनके क़रीब पहुंचा तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलम के कुछ सहाबा हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० के ज़ोह्द, अच्छी सीरत, इस्लाम और उन दीनी फ़ज़ीलतों का तज़्किरा कर रहे हैं जो अल्लाह ने उन्हें अता फ़रमाई थीं।

मैं उन लोगों के बिल्कुल क़रीब चला गया, तो मैंने देखा कि हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस तमीमी रज़ियल्लाहु अन्हु भी उन लोगों में बैठे हुए हैं। मैंने सुना, वह अपना क़िस्सा यों बयान कर रहे थे कि हमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक जमाअत के साथ इराक़ भेजा। अल्लाह ने हमें इराक़ और फ़ारस के अलग-अलग शहरों पर जीत दिलाई। इन इलाक़ों में हमें फ़ारस और ख़ुरासान के उजले कपड़े मिले, वे कपड़े हमने साथ रख लिए और उनको पहनना शुरू कर दिया। (हम लोग वापस मदीना मुनव्वरा पहुंचे।)

जब हम लोग हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में पहुंचे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने हमसे चेहरा फेर लिया और हमसे कोई बात न की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो सहाबा रज़ि० हमारे साथ थे, उन्हें हज़रत उमर रज़ि० के इस रवैए से बड़ी परेशानी हुई। फिर हम लोग

1. तबरी, भाग 4, पृ० 164, मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 408,

हज़रत उमर रज़ि० के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में गए और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की बे-रुख़ी और कड़े रवैए की उनसे शिकायत की।

उन्होंने कहा, अमीरुल मोमिनीन ने तुम लोगों से बे-रुख़ी इस वजह से की है कि उन्होंने तुम लोगों पर ऐसा लिबास देखा है जो उन्होंने न हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहने हुए देखा और न उनके बाद उनके ख़लीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पहने हुए देखा।

यह सुनते ही हम लोग अपने घर गए और वे कपड़े उतार दिए और वे कपड़े पहने, जो पहले से हम लोग हज़रत उमर रज़ि० के सामने पहना करते थे और उनकी ख़िदमत में दोबारा हाज़िर हुए। इस बार वह हमारे स्वागत के लिए खड़े हो गए और एक-एक आदमी को अलग-अलग सलाम किया और हर एक से गले मिले और ऐसे गर्मजोशी से मिले कि गोया इससे पहले उन्होंने हमें देखा ही नहीं था।

फिर हमने माले ग़नीमत आपकी ख़िदमत में पेश किया, जिसे आपने हमारे बीच बराबर-बराबर बांट दिया। फिर उस माले ग़नीमत में खजूर और घी के लाल और पीले रंग के हलवे के टोकरे आपके सामने पेश किए गए, इस हलवे को हज़रत उमर रज़ि० ने चखा, तो वह उन्हें ख़ूब मज़ेदार और ख़ुशबूदार लगा।

फिर हम लोगों की ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ मुहाजिरों और अंसार की जमाअत! अल्लाह की क़सम! मुझे नज़र आ रहा है कि इस खाने की वजह से तुममें से बेटा अपने बाप को और भाई अपने भाई को ज़रूर क़त्ल करेगा। फिर आपने उसे बांटने का हुक्म दिया और उसे उन मुहाजिरीन और अंसार की औलाद में बांट दिया गया जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने शहीद हुए थे।

फिर हज़रत उमर रज़ि० खड़े होकर वापस चल पड़े। हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० आपके पीछे चल पड़े और कहने लगे, ऐ मुहाजिरीन व अंसार की जमाअत! तुम लोग इन लोगों के ज़ोह्द और इनकी ज़ाहिरी हालत को नहीं देखते हो? हमें तो इनकी वजह से बड़ी शर्मिंदगी उठानी

पड़ती है, क्योंकि अल्लाह ने इनके हाथों किसरा और क़ैसर के मुल्क और पूरब व पश्चिम के इलाक़े जितवाए हैं और अरब व अज्म के वफ़्द इनके पास आते हैं तो वे इन पर यह जुब्बा देखते हैं, जिसमें उन्होंने बारह पैवन्द लगा रखे हैं, इसलिए ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की जमाअत ! आप लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में शरीक होने वालों में से बड़े दर्जे के हैं और मुहाजिरीन व अंसार में से शुरू ज़माने के हैं। अगर आप लोग इनसे यह मांग करें कि यह जुब्बा पहनना छोड़ दें और इसके बजाए किसी नर्म कपड़े का अच्छा जुब्बा बना लें जिसके देखने से लोगों पर रौब पड़े और सुबह व शाम उनके सामने खाने के बड़े-बड़े प्याले लाए जाएं जिनमें से ख़ुद भी खाएं और मुहाजिरीन और अंसार में से जो हाज़िर हों, उनको भी खिलाएं, तो बहुत अच्छा होगा।

सब लोगों ने कहा, हज़रत उमर रज़ि० से यह बात सिर्फ़ दो आदमी कर सकते हैं, या तो हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु कर सकते हैं, क्योंकि वह हज़रत उमर रज़ि० के सामने सबसे ज़्यादा जुर्रात से बात करते हैं और फिर वह हज़रत उमर रज़ि० के ससुर भी हैं या फिर उनकी साहबज़ादी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा कर सकती हैं, क्योंकि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहतरमा ज़ौजा हैं और इसी नबवी निस्बत की वजह से हज़रत उमर रज़ि० उनका बहुत एहतराम करते हैं। चुनांचे इन लोगों ने हज़रत अली रज़ि० से बात की।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैं हज़रत उमर रज़ि० से यह बात नहीं कर सकता। आप लोग हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियों के पास जाओ, क्योंकि वे तमाम मुसलमानों की मांएं हैं। वह हज़रत उमर रज़ि० के सामने जुर्रात से बात कर सकती हैं। चुनांचे एक मौक़े पर हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ि० इकट्ठी बैठी हुई थीं। इन लोगों ने जाकर इन दोनों की ख़िदमत में अपनी दरख़्वास्त पेश की (कि हज़रत उमर रज़ि० से यह बात करें।)

इस पर हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, मैं उनकी ख़िदमत में यह मांग रखती हूं।

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने कहा, मेरे ख़्याल में तो हज़रत उमर रज़ि० कभी ऐसा नहीं करेंगे, आप उनसे बात करके देख लें, आपको पता चल जाएगा।

चुनांचे दोनों अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में गईं, तो उन्होंने इन दोनों को अपने क़रीब बिठाया। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर इजाज़त हो तो मैं आपसे कुछ बात करूं ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! ज़रूर करो।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रास्ते पर चलते रहे और आख़िरकार अल्लाह की जन्नत और ख़ुश्नूदी उनको हासिल हो गई, न आप दुनिया हासिल करना चाहते थे और न ही दुनिया आपके पास आई और फिर इसी तरह उनके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० उनके रास्ते पर चले और उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की सुन्नतों को ज़िंदा किया और झुठलाने वालों को ख़त्म किया और बातिल वालों की तमाम दलीलों का मुंहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने तमाम रियाया में इंसाफ़ किया और माल सब में बराबर बांट दिया और मख़्लूक़ के रब को राज़ी किया।

फिर अल्लाह ने इनको अपनी रहमत और ख़ुश्नूदी की ओर उठा लिया और रफ़ीक़े आला में अपने नबी के पास पहुंचा दिया। (रफ़ीक़े आला से मुराद हज़रात अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम की जमाअत है जो आला इल्लीयीन में रहते हैं) न वह दुनिया हासिल करना चाहते थे और न ही दुनिया उनके पास आई।

लेकिन अब अल्लाह ने आपके हाथों किसरा और क़ैसर के ख़ज़ाने और मुल्क जितवाए हैं और इन दोनों के ख़ज़ाने वहां से आपकी ख़िदमत में पहुंचा दिए गए हैं और पूरब व पश्चिम के आख़िरी इलाक़े भी आपके मातहत हो गए हैं, बल्कि हमें तो अल्लाह से उम्मीद है कि वह इस सिलसिले को और बढ़ाएंगे और इस्लाम को और ज़्यादा मज़बूत फ़रमाएंगे।

अब अजमी बादशाहों के क़ासिद और अरब के वफ़्द आपके पास आते हैं और आपने यह जुब्बा पहन रखा है, जिसमें आपने बारह पैवंद

लगा रखे हैं। अगर आप मुनासिब समझें तो इसे उतार दें और इसकी जगह नर्म कपड़े का अच्छा जुब्बा पहन लें, जिसके देखने से लोगों पर रौब पड़े और सुबह व शाम आपके सामने खाने के बड़े-बड़े प्याले लाए जाएं, जिनमें से आप भी खाएं और मुहाजिरीन और अंसार में से जो हाज़िर हों, उनको भी खिलाएं।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० बहुत रोए, फिर फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं, क्या तुम्हें मालूम है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात तक लगातार दस दिन या पांच दिन या तीन दिन गेहूं की रोटी पेट भरकर खाई हो या किसी दिन दोपहर का ख़ाना भी खाया हो और रात का भी?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, नहीं।

फिर उनकी ओर मुतवज्जह होकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम है कि कभी हुज़ूर सल्ल० के सामने ज़मीन से एक बालिश्त ऊंचे दस्तरख़्वान पर खाना रखा गया हो? बल्कि आपके फ़रमाने पर खाना ज़मीन पर रखा जाता था और फ़ारिग़ होने के बाद दस्तरख़्वान उठा लिया जाता था।

हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ि० दोनों ने कहा, हां, ऐसे ही होता था।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने इन दोनों से फ़रमाया, तुम दोनों हुज़ूर सल्ल० की बीवियां हो और तमाम मुसलमानों की मांएं हो। तुम दोनों का तमाम मुसलमानों पर आम तौर से और मुझ पर ख़ास तौर से बड़ा हक़ है। तुम दोनों मुझे दुनिया की तर्ग़ीब देने आई हो, हालांकि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि एक बार हुज़ूर सल्ल० ने ऊन का जुब्बा पहना था, वह बहुत खुरदरा और सख़्त था, जिसकी रगड़ की वजह से उनके जिस्म में खुजली होने लग गई थी। क्या तुम्हें भी यह बात मालूम है?

दोनों ने कहा, जी हां, मालूम है।

फिर फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इकहरे चुन्ने पर सोया करते थे और ऐ आइशा! तुम्हारे घर एक

बोरिया था, जिसे हुज़ूर सल्ल० दिन में बिछौना और रात को बिस्तर बना लिया करते थे। जब हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते तो आपके जिस्म पर उस बोरिए के निशान हमें नज़र आया करते थे और ऐ हफ़्सा रज़ि० ! अब तुम सुनो, तुमने ही मुझे एक बार बताया था कि तुमने हुज़ूर सल्ल० के लिए एक रात बिस्तर दोहरा करके बिछा दिया था जो आपको नर्म महसूस हुआ। आप उस पर सो गए और ऐसे सोए कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़ान पर आपकी आंख खुली तो आपने तुमसे फ़रमाया था, ऐ हफ़्सा ! यह तुमने क्या किया? आज रात तुमने मेरा बिस्तर दोहरा करके बिछाया था, जिसकी वजह से मैं सुबह सादिक़ तक सोता रहा। मुझे दुनिया से क्या वास्ता? तुमने नर्म बिस्तर में मुझे लगा दिया (जिसकी वजह से मैं तहज्जुद में न उठ सका)

ऐ हफ़्सा ! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल० के अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो चुके थे, लेकिन फिर भी आप दिन भर भूखे रहते और रात का अक्सर हिस्सा सज्दे में गुज़ारते और सारी उम्र यों ही रुकूअ और सज्दे में रोने-धोने और गिड़गिड़ाने में गुज़ार दी, यहां तक कि अल्लाह ने उनको अपनी रहमत और ख़ुश्नूदी की ओर उठा लिया।

उमर रज़ि० कभी अच्छा खाना नहीं खाएगा और कभी नर्म कपड़ा नहीं पहनेगा, वह अपने दोनों साथियों के नक़्शे क़दम (पद-चिह्नों) पर चलेगा और कभी दो सालन एक वक़्त में नहीं खाएगा, अलबत्ता नमक और तेल भी दो सालन हैं लेकिन इनको एक वक़्त में इस्तेमाल कर लेगा और महीने में सिर्फ़ एक दिन गोश्त खाएगा, ताकि उसका महीना भी आप लोगों की तरह गुज़रे।

फिर हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़्सा रज़ि० दोनों हज़रत उमर रज़ि० के घर से निकलीं और उनकी सारी बात उन्होंने हुज़ूर सल्ल० के सहाबा को बताई। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने लिबास और खाने वग़ैरह का मेयार न बदला, बल्कि उसी ज़ोहद के साथ ज़िंदगी गुज़ार दी, यहां तक कि अल्लाह से जा मिले।[1]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 408,

हज़रत इक्रिमा बिन ख़ालिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हफ़सा रज़ि०, हज़रत इब्ने मुतीअ रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह बात की कि अगर आप अच्छा खाना खाया करें, तो इससे आपको हक़ पर चलने में ज़्यादा ताक़त हासिल होगी।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे मालूम है, तुममें से हर आदमी मेरा भला चाहता है, लेकिन मैंने अपने दोनों साथियों, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को एक रास्ते पर चलते हुए छोड़ा। अगर मैं इन दोनों का रास्ता छोड़ देता हूं, तो मंज़िले मक़्सूद में उनसे नहीं मिल सकूंगा, यानी उनकी वाली मंज़िल तक नहीं पहुंच सकूंगा।[1]

हज़रत अबू उमामा बिन सह्ल बिन हुनैफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक ज़माने तक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैतुलमाल से कुछ न लिया (और मुसलमानों के इज्तिमाई कामों में मश्गूली की वजह से तिजारत में लगने की फ़ुर्सत न मिली) इस वजह से उन पर तंगी और फ़क़्र व फ़ाक़ा की नौबत आ गई, तो उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को बुलाया और उनसे मश्विरा लिया कि मैं ख़िलाफ़त के कामों में बहुत मश्ग़ूल हो गया हूं (कारोबार की फ़ुर्सत नहीं मिलती) तो मेरे लिए बैतुलमाल से कितना लेना मुनासिब है?

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, आप बैतुलमाल में से ख़ुद भी खाएं और दूसरों को भी खिलाएं। यही बात हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कही।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा कि इस बारे में आप क्या कहते हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, आप दोपहर और रात का दो वक़्त का खाना ले लिया करें। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि०

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 411

के मश्विरे पर अमल किया।[1]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमें यह बताया गया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, अगर मैं चाहता तो तुम सबसे ज़्यादा उम्दा खाना खाता, और तुम सबसे ज़्यादा नर्म कपड़े पहनता, लेकिन मैं अपनी नेकियों का बदला यहां नहीं लेना चाहता, बल्कि आख़िरत में लेना चाहता हूं और हमें यह भी बताया गया है कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० शामदेश आए तो उनके लिए ऐसा अच्छा खाना तैयार किया गया कि उन्होंने उस जैसा खाना इससे पहले कभी नहीं देखा था, तो उसे देखकर फ़रमाया, हमें तो यह खाना मिल गया, लेकिन वे मुसलमान फ़क़ीर, जिनका इस हाल में इंतिक़ाल हुआ कि उनको पेट भरकर जौ की रोटी भी न मिलती थी, उनको क्या मिलेगा? इस पर हज़रत उमर बिन वलीद रज़ि० ने कहा, इन्हें जन्नत मिलेगी।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० की आंखें डबडबा आईं और फ़रमाया, अगर हमारे हिस्से में दुनिया का यह माल व मता है और वे जन्नत ले जाएं तो वे हमसे बहुत आगे निकल गए और बड़ी बड़ाई हासिल कर ली।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं घर में अपने दस्तरख़्वान पर खाना खा रहा था कि इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए। मैंने उनके लिए बीच मज्लिस में जगह ख़ाली कर दी, (वह वहां बैठ गए।) फिर उन्होंने बिस्मिल्लाह पढ़कर अपना हाथ बढ़ाया और एक लुक़्मा लिया और फिर दूसरा लिया, फिर फ़रमाया, मुझे इस सालन में चिकनाई महसूस हो रही है जो कि गोश्त की अपनी नहीं है, बल्कि अलग से डाली गई है।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं आज बाज़ार (दो दिरहम लेकर) गया था। मेरा ख़्याल था कि मैं अच्छा और चर्बी वाला गोश्त ख़रीदूंगा, लेकिन वह महंगा था, इसलिए मैंने एक दिरहम का कमज़ोर जानवर का

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 411
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 406,

घटिया गोश्त ख़रीद लिया और एक दिरहम का घी ख़रीद कर उसमें डाल दिया। (मैंने अपना ख़र्चा नहीं बढ़ाया) मैंने सोचा इस तरह मेरे बीवी-बच्चों में से हर एक को एक-एक हड्डी तो मिल जाएगी।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, जब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने गोश्त और घी दोनों आ जाते तो एक को खा लेते और दूसरे को सदक़ा कर देते, (दोनों को न खाते, इसलिए मैं भी यह सालन नहीं खा सकता, इसमें गोश्त भी है और घी भी।)

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस वक़्त तो आप यह सालन खा लें, आगे जब भी गोश्त और घी मुझे मिलेगा, मैं यही करूंगा (कि एक को खा लूंगा और दूसरे को सदक़ा कर दूंगा, दोनों को मिलाकर एक सालन नहीं बनाऊंगा।)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं इस सालन को खाने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हूं।[1]

हज़रत अबू हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बेटी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां गए। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० के सामने ठंडा शोरबा और रोटी रखी और शोरबे पर तेल डाल दिया तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, एक बरतन में दो सालन? (एक शोरबा और दूसरा तेल), मैं मरते दम तक ऐसे सालन को नहीं चख सकता।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब का यह मामूल (आदत, चलन) देखा कि उनके सामने एक साअ (साढ़े तीन सेर) खजूर रखी जाती तो उसमें से खाते रहते, यहां तक कि उसमें जो रद्दी क़िस्म की होती, उसे भी खा लेते।

हज़रत साइब बिन यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने कई बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां रात का खाना खाया। वह गोश्त-रोटी खाते और फिर अपने हाथ को अपने पांव पर

1. कंज़, भाग 2, पृ० 146,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 230,

फेरकर साफ़ कर लेते और फ़रमाते, यह उमर रज़ि० और आले उमर रज़ि० के हाथ साफ़ करने का तौलिया है।[1]

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के यहां एक बार खाना खाया। जब हज़रत जारूद खाना खा चुके, तो उन्होंने कहा, ऐ बांदी! ज़रा तौलिया ले आना। वह उससे हाथ साफ़ करना चाहते थे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अपने सुरीन से अपना हाथ साफ़ कर लो।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इराक़ से कुछ लोग आए। (हज़रत उमर रज़ि० ने उनको खाना खिलाया, तो) हज़रत उमर रज़ि० को ऐसे लगा कि जैसे उन्होंने कम खाया हो। (वे लोग अच्छा खाना खाने के आदी थे और हज़रत उमर रज़ि० का खाना मोटा-झोटा और सादा था।)

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ इराक़ वालो! अगर मैं चाहता तो मेरे लिए भी अच्छे और नर्म खाने तैयार किए जाते, जैसे तुम्हारे लिए किए जाते हैं, लेकिन हम दुनिया की चीज़ें कम से कम इस्तेमाल करना चाहते हैं, ताकि हमें ज़्यादा से ज़्यादा नेकियों का बदला आख़िरत में मिल सके। क्या तुमने सुना नहीं कि अल्लाह ने क़ुरआन मजीद के बारे में यह फ़रमाया है कि इनसे क़ियामत के दिन यह कहा जाएगा—

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا - (سورت احقاف آیت ۲۰)

'तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनिया की ज़िंदगी में हासिल कर चुके।'[3] (सूरः अहक़ाफ़, आयत 20)

हज़रत हबीब बिन अबी साबित रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक साथी से रिवायत करते थे कि इराक़ के कुछ लोग हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए, उसमें हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत उमर रज़ि० उनके लिए एक बड़ा प्याला

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 230,
2. दैनूरी,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 49

लाए, जिसमें रोटी और तेल था और उनसे कहा, खाओ, तो उन्होंने थोड़ा-सा खाया। (हज़रत उमर रज़ि० समझ गए कि उनको यह सादा खाना पसन्द नहीं आया है।)

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, तुम जो कर रहे हो, वह मैं देख रहा हूं, तुम लोग क्या चाहते हो? यही चाहते हो ना कि रंग-बिरंगे, खट्टे-मीठे, गरम और ठंडे खाने हों और उन सबको पेट में ठूंस लिया जाए। (और मैं ऐसा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं हूं।)[1]

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत हफ़्स बिन अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हु खाने के वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां हाज़िर थे, लेकिन उनका खाना न खाया। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे पूछा, तुम हमारा खाना क्यों नहीं खाते?

उन्होंने कहा, आपका खाना सख़्त और मोटा-झोटा है। (मैं उसे खा नहीं सकता) मेरे लिए अच्छा और नर्म खाना पकाया गया है, मैं वापस जाकर वह खाऊंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि वह मेरे बस में नहीं है कि मैं अपने आदमियों को हुक्म दूं, तो वे बकरी के बाल साफ़ करके उसे भून लें और वह आटे को कपड़े में छान कर उसकी पतली चपातियां पका लें और वह एक साअ किशमिश डोल में डालकर उस पर पानी डाल दें, जिससे हिरन के ख़ून की तरह लाल पेय (पीने की चीज़) तैयार हो जाए?

हज़रत हफ़्स ने कहा, आपकी यह बात सुनकर तो पता चला कि आप अच्छी ज़िंदगी के तरीक़ों और खाने-पीने की क़िस्मों को अच्छी तरह जानते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, मैं जानता हूं, लेकिन उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैं क़ियामत के दिन अपनी नेकियों के बदले में कमी को बुरा न समझता तो मैं भी तुम्हारे

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 49,

साथ इस ज़िंदगी के मज़ों में ज़रूर शरीक हो जाता।[1]

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे, अल्लाह की क़सम ! हमें इस दुनिया की लज़्ज़तों की कोई परवाह नहीं है। हमारे कहने पर लज़्ज़तों के ये सामान तैयार हो सकते हैं। जवान बकरों के बाल साफ़ करके उनको भून लिया जाए और मैदे की अच्छी रोटियां पका ली जाएं और डोल में किशमिश को पानी डालकर इतनी देर रखा जाए कि चकोर की आंख जैसे रंग का साफ़-सुथरा पेय तैयार हो जाए और फिर हम उन तमाम चीज़ों को खा पी जाएं। हम यह सब कुछ कर सकते हैं, लेकिन इस वजह से नहीं करते हैं कि हम चाहते हैं कि हमारी नेकियों का बदला आख़िरत में मिले, यहां न मिले, क्योंकि हमने अल्लाह का इर्शाद सुन रखा है—

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا

(तर्जुमा गुज़र चुका)[2]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं बसरा वालों के वफ़्द के साथ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आया, हम उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ करते थे। (हमने देखा कि) उनके लिए हर दिन एक रोटी तोड़ कर लाई जाती है और वह कभी उसे घी से, कभी तेल से और कभी दूध से खा लेते हैं। कभी धूप में सुखाए हुए गोश्त के टुकड़े भी लाए जाते, जो पानी में उबले हुए होते थे। कभी हमने ताज़ा गोश्त भी उनके सामने देखा, लेकिन बहुत कम। (वह हमें यही खाना खिलाया करते थे, तो) एक दिन हज़रत उमर रज़ि० ने हमसे फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैं देख रहा हूं कि तुम लोग मेरे खाने को घटिया समझते हो और अच्छा नहीं समझते हो। अल्लाह की क़सम ! अगर मैं चाहता तो मैं तुम सबसे ज़्यादा अच्छा खाने वाला और तुम सबसे ज़्यादा नाज़ व नेमत की ज़िंदगी गुज़ारने वाला होता। ग़ौर से

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 403,
2. हुलीया, भाग १, पृ० ४९

सुनो ! अल्लाह की क़सम ! मैं ऊंट के सीने और कोहान के गोश्त (इन दो जगहों का गोश्त सबसे अच्छा समझा जाता है) से भुने हुए गोश्त से चपातियों और राई की चटनी को न जानने वाला नहीं हूं, लेकिन (मैं इन्हें जान-बूझ कर इस्तेमाल नहीं करता, क्योंकि) मैंने अल्लाह का इर्शाद सुना है कि वह एक क़ौम को उनके किए हुए एक ग़लत काम पर शर्म दिलाते हुए फ़रमाते हैं—

اَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا۔

'तुम अपनी लज़्ज़त की चीज़ें अपनी दुनिया की ज़िंदगी में हासिल कर चुके और उनको ख़ूब बरत चुके।'

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने अपने साथियों से कहा, अगर तुम लोग अमीरुल मोमिनीन से बात कर लो कि वह तुम्हारे लिए बैतुलमाल से कुछ खाना मुक़र्रर कर दें, जिससे तुम खा लिया करो तो यह बेहतर होगा। चुनांचे उन लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से बात की।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम लोग अपने लिए वह खाना पसन्द नहीं करते जो मैं अपने लिए पसन्द करता हूं ?

उन लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मदीना मुनव्वरा ऐसा शहर है जहां (हमारे लिए) ज़िंदगी गुज़ारना बड़ा मुश्किल काम है और आपका खाना ऐसा अच्छा और मज़ेदार नहीं है, जिसे खाने के लिए कोई आए। हम लोग हरे-भरे इलाक़े के रहने वाले हैं। हमारे अमीर ऐसे हैं कि लोग शौक़ से उनके पास आते हैं और उनका खाना ऐसा अच्छा होता है कि ख़ूब खाया जाता है।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने थोड़ी देर अपना सर झुकाए रखा, फिर सर उठाया और फ़रमाया, मैं तुम लोगों के लिए बैतुलमाल से हर दिन दो बकरियां और दो बोरियां मुक़र्रर कर देता हूं। सुबह को एक बकरी और एक बोरी पका लिया करो, फिर ख़ुद भी खाओ और अपने साथियों को भी खिलाओ और फिर हलाल पेय मंगा कर पहले ख़ुद पियो, फिर अपने दाएं तरफ़ वाले को पिलाओ, फिर उसके साथ वाले को, फिर अपने काम के लिए खड़े हो जाओ और ऐसे ही शाम को

दूसरी बकरी और दसरी बोरी पकाओ, ख़ुद भी खाओ और अपने साथियों को भी खिलाओ।

ग़ौर से सुनो! तुम लोग आम लोगों के घरों में इतना भेजो कि उनका पेट भर जाए और उनके बाल-बच्चों को खिलाओ, क्योंकि अगर तुम लोगों से बद-अख़्लाक़ी से पेश आओगे तो इससे उन लोगों के अख़्लाक़ अच्छे नहीं हो सकेंगे और उनके भूखों के खाने का इन्तिज़ाम नहीं हो सकेगा।

अल्लाह की क़सम! इस सबके बावजूद मेरा ख़्याल यह है कि जिस गांव से हर दिन दो बकरियां और दो बोरियां ली जाएंगी, वह जल्द उजड़ जाएगा।[1]

हज़रत उत्बा बिन फ़रक़द रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं खजूर और घी के हलवे के टोकरे लेकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आया। उन्होंने पूछा, यह क्या है?

मैंने कहा, यह कुछ खाने की चीज़ है जिसे मैं इस वजह से आपकी ख़िदमत में लाया हूं कि आप दिन के शुरू में लोगों की ज़रूरतों में लगे रहते हैं, तो मेरा दिल चाहा कि जब आप इससे फ़ारिग़ होकर घर जाया करें तो उसमें से कुछ खा लिया करें, इससे इनशाअल्लाह आपको ताक़त हासिल हो जाया करेगी।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने एक टोकरे को खोलकर देखा और फ़रमाया, ऐ उत्बा! मैं तुम्हें क़सम देकर पूछता हूं कि क्या तुमने हर मुसलमान को ऐसा एक टोकरा हलवे का दे दिया है?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं अगर क़बीला क़ैस का सारा माल भी ख़र्च कर दूं तो भी यह नहीं हो सकता (कि हर मुसलमान को हलवे का एक टोकरा दे दूं)।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, फिर तो मुझे तुम्हारे इस हलवे की ज़रूरत नहीं। फिर उन्होंने एक बड़ा प्याला मंगवाया, जिसमें सख़्त रोटी और

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 402,

सख़्त गोश्त के टुकड़ों से बना हुआ सरीद था। (हम दोनों उसमें से खाने लगे।)

हज़रत उमर रज़ि० मेरे साथ उसे बड़े चाव से खा रहे थे। मैं कोहान की चर्बी समझकर एक सफ़ेद टुकड़े की तरफ़ हाथ बढ़ाता, तो उसे उठाने के बाद पता चलता कि यह तो पट्ठे का टुकड़ा है और मैं गोश्त के टुकड़े को चबाता रहता, लेकिन वह इतना सख़्त होता कि मैं उसे निगल न सकता। आख़िर जब हज़रत उमर रज़ि० की तवज्जोह इधर-उधर हो जाती, तो मैं गोश्त के उस टुकड़े को मुंह से निकालकर प्याले और दस्तरख़्वान के दर्मियान छिपा देता।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने नबीज़ (खजूर या किशमिश का शरबत) एक बड़े प्याले में मंगाया, जो सिरका बनने वाला था (और मज़ेदार नहीं था)। उन्होंने मुझसे फ़रमाया, पी लो। मैं उसे लेकर पीने लगा, लेकिन हलक़ से नीचे बड़ी मुश्किल से उतारा। फिर उन्होंने वह प्याला मुझसे लिया और उसे पी गए, फिर फ़रमाया—

ऐ उत्बा! सुनो हम हर दिन एक ऊंट ज़िब्ह करते हैं और उसकी चर्बी और अच्छा गोश्त बाहर से आने वाले मुसलमानों को खिला देते हैं। उसकी गरदन आले उमर को मिलती है, वे यह सख़्त गोश्त खाते हैं और यह बासी नबीज़ इसी लिए पीते हैं, ताकि यह नबीज़ पेट में जाकर इस गोश्त के टुकड़े-टुकड़े करके हज़्म कर दे और यह सख़्त गोश्त हमें तक्लीफ़ न दे सके।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक आदमी के घर तशरीफ़ ले गए। आपको प्यास लगी हुई थी। आपने उस आदमी से पानी मांगा, वह शहद ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह क्या है?

उसने कहा, शहद है।

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! (शहद पीना इंसान की बुनियादी

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 404,

ज़रूरतों में से नहीं है, बल्कि यह तो मज़े लेने की चीज़ है, इसलिए) शहद उन चीज़ों में से नहीं होगा जिनका मुझसे क़ियामत के दिन हिसाब लिया जाएगा।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने पीने का पानी मांगा। एक साहब पानी में शहद मिलाकर ले आए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह है तो बड़ा मज़ेदार, लेकिन मैं सुन रहा हूं कि अल्लाह एक क़ौम की यह बुराई बता रहे हैं कि वह अपनी ख़्वाहिशों को पूरा करने में लग गए, चुनांचे अल्लाह फ़रमा रहे हैं—

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا

चुनांचे मुझे इस बात का डर है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारी नेकियों का बदला हमें दुनिया ही में दे दिया जाए और उस पानी को न पिया।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ऐला शहर तशरीफ़ ले गए और उनके साथ मुहाजिरीन और अंसार भी थे, हज़रत उमर रज़ि० मदीना से काफ़ी लम्बा सफ़र करके आए थे, इसलिए लगातार बैठने की वजह से उनका खुरदरे कपड़े वाला कुरता पीछे से फट गया था। हज़रत उमर रज़ि० ने वह कुरता पादरी को दिया और फ़रमाया, इसे धो भी दो और इसमें पैवन्द भी लगा दो।

वह पादरी कुरता ले गया और उसे धोकर उसमें पैवन्द भी लगा लाया और उस जैसा एक और कुरता सी कर हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में ले आया। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह क्या है?

उस पादरी ने कहा, यह आपका कुरता है, जिसे धोकर मैंने पैवन्द लगा दिया है और यह दूसरा कुरता मेरी तरफ़ से आपकी ख़िदमत में हदिया है।

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 230, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 404,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 168,

हज़रत उमर रज़ि० ने नए कुरते को देखा और उस पर हाथ फेरा (वह नर्म और बारीक था) फिर अपना कुरता पहन लिया और उसका वापस कर दिया और फ़रमाया, यह (पुराना) कुरता उससे ज़्यादा पसीना सोखता है, (क्योंकि यह मोटा है ।)[1]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में ऐसा ऊनी जुब्बा पहनते, जिसमें चमड़े के पैवन्द भी लगे होते और कंधे पर कोड़ा रखकर लोगों को अदब और सलीक़ा सिखाने के लिए बाज़ारों में चक्कर लगाया करते थे और गिरे-पड़े टूटे हुए धागे और रस्सियां और गुठलियां ज़मीन से उठाकर लोगों के घरों में डाल देते, ताकि लोग उन्हें अपने काम में ले आएं ।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में लोगों में बयान कर रहे थे और उन्होंने एक लुंगी बांध रखी थी जिसमें बारह पैवन्द थे ।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं, मैंने एक बार ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि उन्होंने अपने दोनों कंधों के दर्मियान ऊपर नीचे पैवन्द लगा रखे थे ।[4]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने और अपने घरवालों के लिए गुज़ारे के क़ाबिल ख़ूराक लिया करते थे, गर्मियों में एक जोड़ा पहनते, कभी-कभी उनकी लुंगी फट जाती, तो उसे पैवन्द लगा लेते, लेकिन (नया जोड़ा लेने का) वक़्त आने से पहले उसकी जगह बैतुलमाल से और लुंगी न लेते, उसी से काम चलाते रहते और जिस साल माल ज़्यादा आता, उस साल उनका जोड़ा पिछले साल से और घटिया हो जाता ।

हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनसे इस बारे में बात की तो

1. तबरी, भाग 4, पृ० 203, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 402
2. दैनूरी, इब्ने असाकिर,
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 405,
4. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 396,

फ़रमाया, मैं मुसलमानों के माल में से पहनने के जोड़े लेता हूं और यह मेरी ज़रूरत के लिए काफ़ी हैं।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हर दिन बैतुलमाल से अपने और अपने घरवालों के लिए दो दिरहम ख़र्चा लिया करते थे।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अब्दुल मलिक बिन शद्दाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने जुमा के दिन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर देखा कि उन पर अदन की बनी हुई मोटी लुंगी थी, जिसकी क़ीमत चार या पांच दिरहम थी और गेरुवे रंग की एक कूफ़ी चादर थी।

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि से उन लोगों के बारे में पूछा गया जो मस्जिद में क़ैलूला (दोपहर के खाने के बाद का आराम) करते हैं तो उन्होंने कहा, मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में एक दिन मस्जिद में क़ैलूला फ़रमा रहे थे और जब वह सो कर उठे तो उनके जिस्म पर कंकड़ियों के निशान थे (मस्जिद में कंकड़ियां बिछी हुई थीं और लोग (उनकी इस सादा और बेतकल्लुफ़ ज़िंदगी पर हैरान होकर) कह रहे थे, यह अमीरुल मोमिनीन हैं, यह अमीरुल मोमिनीन हैं।[3]

हज़रत शुरहबील बिन मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को ख़िलाफ़त वाला अच्छा खाना खिलाते और ख़ुद जाकर सिरका और तेल यानी सादा खाना खाते।

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

क़बीला सक़ीफ़ के एक साहब बयान करते हैं, हज़रत अली

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 411,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 411,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 60, सिफ़तुस्सफ़्वा, भाग 1, पृ० 116,

रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे अकबरा क़स्बे का हाकिम बनाया और इराक़ के उन देहातों में मुसलमान नहीं रहा करते थे। मुझसे हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ज़ुहर के वक़्त मेरे पास आना।

मैं आपकी ख़िदमत में गया। मुझे वहां कोई रोकने वाला दरबान न मिला। हज़रत अली रज़ि० बैठे हुए थे और उनके पास प्याला और पानी का एक कूज़ा रखा हुआ था। उन्होंने एक छोटा थैला मंगवाया। मैंने अपने दिल में कहा, यह मुझे अमानतदार समझते हैं, इसलिए मुझे इस थैले में से कोई क़ीमती पत्थर निकालकर देंगे। मुझे पता नहीं था कि उस थैले में क्या है? उस थैले पर मुहर लगी हुई थी। उन्होंने उस मोहर को तोड़ा और थैले को खोला तो उसमें सत्तू थे।

चुनांचे उसमें से सत्तू निकालकर प्याले में डाले और उसमें पानी डाला और ख़ुद भी पिया और मुझे भी पिलाए। मैं इतनी सादगी देखकर रह न सका और मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप इराक़ में रहकर यह खा रहे हैं, हालांकि इराक़ में तो इससे बहुत ज़्यादा खाने की चीज़ें हैं। (इराक़ में रहकर सिर्फ़ सत्तू खाना बड़े ताज्जुब और हैरानी की बात है।)

उन्होंने कहा, हां, अल्लाह की क़सम ! मैं कंजूसी की वजह से उस पर मोहर नहीं लगाता हूं, बल्कि मैं अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ सत्तू ख़रीदता हूं (और मदीना से मंगवाता हूं) ऐसे ही खुला रहने दूं तो मुझे डर है कि (इधर-उधर गिर न जाएं और उड़ न जाएं और यों) ये ख़त्म न हो जाएं, तो मुझे इराक़ के सत्तू बनाने पड़ेंगे। इस वजह से मैं इन सत्तुओं को इतना संभाल कर रखता हूं और मैं अपने पेट में पाक चीज़ ही डालना चाहता हूं।

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को दोपहर का और रात का खाना ख़ूब खिलाया करते थे और ख़ुद सिर्फ़ वही चीज़ खाया करते थे जो उनके पास मदीना मुनव्वरा से आया करती थी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शुरैक रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा बयान

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 82,

करते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक बार फ़ालूदा लाया गया और उनके सामने रखा गया तो फ़ालूदे को मुख़ातब करके फ़रमाया, ऐ फ़ालूदे ! तेरी ख़ुशबू बहुत अच्छी है और रंग बहुत ख़ूबसूरत है और स्वाद बहुत अच्छा है, लेकिन मुझे यह पसन्द नहीं है कि मुझे जिस चीज़ की आदत नहीं है, मैं ख़ुद को उसका आदी बनाऊं।[1]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे पास बाहर आए और उन्होंने एक चादर ओढ़ी हुई थी और लुंगी बांधी हुई थी, जिस पर पैवन्द लगा रखा था। किसी ने उनसे इतने सादा कपड़े पहनने के बारे में कुछ कहा, तो फ़रमाया, मैं ये दो सादा कपड़े इसलिए पहनता हूं कि मैं इनकी वजह से अकड़ से बचा रहूंगा और इनमें नमाज़ भी बेहतर होगी और मोमिन बन्दे के लिए ये सुन्नत भी हैं (या आम मुसलमान भी ऐसे सादा कपड़े पहनने लग जाएंगे।)[2]

एक साहब बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर एक मोटी लुंगी देखी। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने इसे पांच दिरहम में ख़रीदा है। मुझे जो आदमी इसमें एक दिरहम नफ़ा देगा, मैं उसे उसके हाथ बेच दूंगा।[3]

हज़रत मुजम्मेअ बिन समआन तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी तलवार लेकर बाज़ार गए और फ़रमाया, मुझसे मेरी यह तलवार ख़रीदने के लिए कौन तैयार है? अगर लुंगी ख़रीदने के लिए मेरे पास चार दिरहम होते तो मैं यह तलवार न बेचता।[4]

हज़रत सालेह बिन अबिल अस्वद रहमतुल्लाहि अलैहि एक साहब

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 81, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 58,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 58,
3. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 58,
4. बिदाया, भाग 8, पृ० 3

से नक़ल करते हैं कि उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लहु अन्हु को देखा कि वह एक गधे पर सवार हैं और उन्होंने अपने दोनों पांव एक ओर लटका रखे हैं और फ़रमा रहे हैं, मैं ही वह आदमी हूं जिसने दुनिया की तौहीन कर रखी है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुरैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं ईदुल अज़्हा के दिन हज़रत अली बिन अबी तालिब की ख़िदमत में गया। उन्होंने हमारे सामने भूसी और गोश्त का हरीरा रखा। हमने कहा, अल्लाह आपको ठीक-ठाक रखे, अगर हमें यह बत्तख़ खिलाते तो ज़्यादा अच्छा था, क्योंकि अब तो अल्लाह ने माल बहुत दे रखा है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ इब्ने ज़ुरैर! मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि वक़्त के ख़लीफ़ा के लिए अल्लाह के माल में से सिर्फ़ दो बड़े प्याले लेने हलाल हैं, एक प्याला अपने और अपने घरवालों के लिए और दूसरा प्याला आने वाले लोगों के सामने रखने के लिए।[2]

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां गए, तो वह कजावे की चादर पर लेटे हुए थे और घोड़े को दाना खिलाने वाले थैले को तकिया बनाया हुआ था। उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आपके साथियों ने जो मकान और सामान बना लिए, वह आपने क्यों नहीं बना लिए?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क़ब्र तक पहुंचने के लिए यह सामान भी काफ़ी है।

और रिवायत करने वाले हज़रत मामर की हदीस में यह है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शामदेश तशरीफ़ ले गए तो लोगों ने और

1. बिदाया, भाग 8, पृ० 5
2. बिदाया, भाग 8, पृ० 3,

वहां के सरदारों ने हज़रत उमर रज़ि० का स्वागत किया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा भाई कहां है?

लोगों ने पूछा, वह कौन है?

उन्होंने फ़रमाया, हज़रत अबू उबैदा रज़ि० !

लोगों ने कहा, वह अभी आपके पास आ जाएंगे। चुनांचे जब हज़रत अबू उबैदा रज़ि० आए तो सवारी से नीचे उतरकर हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें गले लगाया, फिर उनके घर तशरीफ़ ले गए और उन्हें घर में सिर्फ़ ये चीज़ें नज़र आईं—एक तलवार, एक ढाल और एक कजावा। फिर पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं सर्दी के मौसम में सुबह के वक़्त अपने घर से निकला। भूख भी लगी हुई थी। भूख के मारे बुरा हाल था, सर्दी भी बहुत तंग कर रही थी। हमारे यहां बग़ैर रंगी हुई खाल पड़ी हुई थी, जिसमें से कुछ बू भी आ रही थी, उसे मैंने काट कर अपने गले में डाल दिया और अपने सीने से बांध लिया, ताकि उसके ज़रिए से कुछ तो गर्मी हासिल हो। अल्लाह की क़सम! घर में मेरे खाने की कोई चीज़ न थी और अगर हुज़ूर सल्ल० के घर में भी कोई चीज़ होती, तो वह मुझे मिल जाती, (वहां भी कुछ नहीं था।)

मैं मदीना मुनव्वरा की एक तरफ़ को चल पड़ा। वहां एक यहूदी अपने बाग़ में था। मैंने दीवार के सूराख़ से उसकी ओर झांका, उसने कहा, ऐ आराबी! क्या बात है? (मज़दूरी पर काम करोगे?) एक डोल पानी निकालने पर एक खजूर लेने को तैयार हो?

मैंने कहा, हां, बाग़ का दरवाज़ा खोलो। उसने दरवाज़ा खोल दिया।

मैं अन्दर गया और डोल निकालने लगा और वह मुझे हर डोल पर एक खजूर देता रहा, यहां तक कि मेरी मुट्ठी खजूरों से भर गई और मैंने

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ०101, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ०143, इसाबा, भाग 2, पृ० 253,

कहा, अब मुझे इतनी खजूरें काफ़ी हैं। फिर मैंने वे खजूरें खाईं और बहते पानी से मुंह लगाकर पिया। मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और मस्जिद में आपके पास बैठ गया।

हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा रज़ि० की एक जमाअत में तशरीफ़ फ़रमा थे। इतने में हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पैवन्द वाली चादर ओढ़े हुए आए। जब हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखा तो उनका नाज़ व नेमत वाला ज़माना आ गया और अब उनकी मौजूदा हालत (फ़क़्र व फ़ाक़ा वाली हालत) भी नज़र आ रही थी, इस पर हुज़ूर सल्ल० की आंखों से आंसू बह पड़े और आप रोने लगे।

फिर आपने फ़रमाया, (आज तो फ़क़्र व फ़ाक़ा और तंगी का ज़माना है, लेकिन) तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल होगा जब तुममें का हर आदमी सुबह एक जोड़ा पहनेगा और शाम को दूसरा और तुम्हारे घरों पर ऐसे परदे लटकाए जाएंगे, जैसे काबे पर लटकाए जाते हैं।

हमने कहा, फिर तो हम उस ज़माने में ज़्यादा बेहतर होंगे। ज़रूरत के कामों में दूसरे लगा करेंगे, हमें लगना नहीं पड़ेगा और हम इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। आज तुम उस दिन से ज़्यादा बेहतर हो (कि दीन का काम तुम तक्लीफ़ों और मशक़्क़तों के साथ कर रहे हो)[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को सामने से आते हुए देखा, उन्होंने दुंबे की खाल को अपनी कमर पर बांध रखा था, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस आदमी की ओर देखो जिसके दिल को अल्लाह ने नूरानी बना रखा है। मैंने उनका वह ज़माना भी देखा है जिस ज़माने में उनके मां-बाप उनको सबसे अच्छा खाना और सबसे बेहतर पेय पिलाया करते थे और मैंने उन पर वह जोड़ा भी देखा है, जो उन्होंने दो सौ दिरहम में ख़रीदा था। अब अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत ने उनका फ़क़्र व फ़ाक़ा वाला वह हाल कर

1. कंज़, भाग 3, पृ० 321, हैसमी, भाग 10, पृ० 314

दिया जो तुम लोग देख रहे हो।[1]

हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुबा में बैठे हुए थे और आपके साथ कुछ सहाबा रज़ि० भी थे। इतने में हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु आते हुई दिखाई दिए। उन्होंने इतनी छोटी चादर ओढ़ी हुई थी जो उनके सतर को पूरी तरह ढांप नहीं रही थी। तमाम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सर झुका लिए।

पास आकर हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० ने सलाम किया। सहाबा रज़ि० ने उन्हें सलाम का जवाब दिया। हुज़ूर सल्ल० ने ख़ूब उनकी तारीफ़ की और फ़रमाया, मैंने मक्का मुकर्रमा में देखा है कि उनके मां-बाप उनका ख़ूब इकराम करते थे, उनको हर तरह की नेमतें दिया करते थे और क़ुरैश का कोई जवान उन जैसा नहीं था, लेकिन फिर उन्होंने अल्लाह की रज़ामंदी हासिल करने और उसके रसूल सल्ल० की मदद करने के लिए यह सब कुछ छोड़ दिया।

ग़ौर से सुनो! थोड़ी मुद्दत ही गुज़रेगी कि अल्लाह तुम्हें जिता कर फ़ारस और रूम दे देंगे और दुनिया में इतनी बहुतात हो जाएगी कि तुममें से हर आदमी एक जोड़ा सुबह पहनेगा और एक जोड़ा शाम को और सुबह बड़ा प्याला खाने का तुम्हारे सामने आएगा और शाम को भी खाने का बड़ा प्याला आएगा।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम आज बेहतर हैं या उस दिन बेहतर होंगे?

आपने फ़रमाया, नहीं! आज तुम लोग बेहतर हो। ग़ौर से सुनो, तुम लोग दुनिया के बारे में वह जान लो जो मैं जानता हूं तो तुम्हारी तबीयतें दुनिया से बिल्कुल सर्द हो जाएं।[2]

हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत मुसअब रज़ि० ने अपनी शहादत पर सिर्फ़ एक कपड़ा छोड़ा था जो इतना छोटा था कि

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 395, कंज़, भाग 7, पृ० 86, हुलीया, भाग 1, पृ० 108
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 628,

जब उससे उनका सर ढांकते थे, तो उनके पांव खुल जाते थे और जब पांव ढांकते थे, तो उनका सर खुल जाता था, आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनके पैरों पर इज़्ख़र घास डाल दो।[1]

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि, एक दिन हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में दाख़िल हुए। उन्होंने एक चादर ओढ़ी हुई थी जो कई जगह से फटी हुई थी, जिस पर उन्होंने ग़ाल का पैवन्द लगा रखा था। यह देखकर हुज़ूर सल्ल० को उन पर बड़ा तरस आया और आप रोने लगे और आपकी वजह से सहाबा रज़ि० भी रोने लगे।

फिर आपने फ़रमाया, उस दिन तुम लोगों का क्या हाल होगा जिस दिन तुममें से हर आदमी एक जोड़ा सुबह पहनेगा और एक जोड़ा शाम को और खाने का एक बड़ा प्याला उसके सामने रखा जाएगा और एक उठाया जाएगा और तुम घरों पर ऐसे परदे लटकाओगे जैसे काबे पर लटकाए जाते हैं।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हम तो चाहते हैं कि ऐसा हो जाए और हमें भी वुसअत और आसानी के दिन मिल जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसा ज़रूर होकर रहेगा, लेकिन आज तुम लोग उस दिन से बेहतर हो (कि दीन का काम मुजाहिदों के साथ कर रहे हो।)[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जिस दिन हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, उस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गए और हज़रत उस्मान रज़ि० पर ऐसे झुके कि गोया उनको वसीयत फ़रमा रहे हैं। फिर आपने सर उठाया तो सहाबा रज़ि० ने आपकी आंखों में

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 421,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 105,

रोने का असर देखा।

आप दोबारा उन पर झुके, फिर आपने सर उठाया, तो इस बार आप रोते हुए नज़र आए। फिर आप उन पर तीसरी बार झुके, फिर आपने सर उठाया, तो इस बार आप सिसकियां ले रहे थे, जिससे सहाबा रज़ि० समझे कि उनका इंतिक़ाल हो गया है, इस पर सहाबा रज़ि० भी रोने लग गए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ठहरो। यह आवाज़ से रोना शैतान की तरफ़ से है। अल्लाह से इस्तग़फ़ार करो।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० को ख़िताब करते हुए फ़रमाया, ऐ अबुस्साइब ! तुम ग़म न करो, तुम दुनिया से चले गए और तुमने दुनिया से कुछ न लिया।[1]

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद उनको ख़िताब करते हुए फ़रमाया, ऐ उस्मान ! अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए, न तो तुमने दुनिया से कोई फ़ायदा उठाया और न ही दुनिया तुम्हारे पास आई।[2]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अतीया बिन आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने एक बार हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह खाना खा रहे थे। उनसे और खाना खाने का इसरार किया गया, तो उन्होंने कहा, मेरे लिए यही काफ़ी है, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि दुनिया में ज़्यादा पेट भरकर खाने वाले क़ियामत के दिन ज़्यादा भूखे होंगे, ऐ सलमान रज़ि० ! दुनिया मोमिन के लिए जेलख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत (कि मोमिन अल्लाह के हुक्मों का ख़ुद को पाबन्द करके चलता है और काफ़िर अपनी मर्ज़ी पर चलता है।)[3]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 303, हुलीया, भाग 1, पृ० 105, इस्तीआब, भाग 3, पृ० 87
2. अबू नुऐम,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 198, कंज़, भाग 7, पृ० 45,

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को बैतुलमाल से पांच हज़ार वज़ीफ़ा मिलता था और वह लगभग तीस हज़ार मुसलमानों के अमीर थे। उनका एक चुग़ा था जिसके कुछ हिस्से को नीचे बिछाकर बाक़ी को ऊपर ओढ़ लिया करते थे और उसी चुग़ा को पहनकर लोगों में बयान किया करते थे। जब उन्हें वज़ीफ़ा मिलता तो उसे उसी वक़्त आगे ख़र्च कर दिया करते, उसमें से अपने पास कुछ नहीं रखते थे और अपने हाथ से खजूर के पत्तों की टोकरियां बनाते थे और उसकी कमाई से गुज़ारा करते थे।[1]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने लोगों को यह क़िस्सा बयान करते हुए सुना कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाया, ऐ अबू अब्दुल्लाह! (यह हज़रत सलमान का उपनाम है) क्या मैं तुम्हारे लिए एक कमरा बना दूं?

हज़रत सलमान रज़ि० को यह बात बुरी लगी, तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, ज़रा ठहरो तो सही, सुन तो लो, मैं तुम्हारे लिए कैसा कमरा बनाना चाहता हूं? मैं तुम्हारे लिए ऐसा कमरा बनाना चाहता हूं कि जब तुम उसमें लेटो तो तुम्हारा सर एक दीवार को लगे और पांव दूसरी दीवार को और जब तुम खड़े हो तो तुम्हारा सर छत को लगे।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, ऐसा मालूम होता है कि तुम तो मेरे दिल में रहते हो यानी अब तुमने मेरे दिल की बात कही है।[2]

हज़रत मालिक बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु (किसी पेड़ के) साए में बैठा करते थे (और मुसलमान के इज्तिमाई कामों को अंजाम दिया करते थे) और साया घूम कर जिधर जाता, ख़ुद भी खिसक कर उधर हो जाते, इस काम के लिए उनका कोई घर न था।

उनसे एक आदमी ने कहा, क्या मैं आपको एक कमरा न बना दूं कि गर्मियों में उसके साए में रहा करें और सर्दियों में उसमें रहकर सर्दी से

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 197, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 62,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 202,

बचाव कर लिया करें?

हज़रत सलमान रज़ि० ने उससे फ़रमाया, हां, बना दो। जब वह आदमी पीठ फेरकर चल पड़ा तो हज़रत सलमान रज़ि० ने उसे ज़ोर से आवाज़ देकर कहा, कैसा कमरा बनाओगे?

उस आदमी ने कहा, ऐसा कमरा बनाऊंगा कि अगर आप उसमें खड़े हों तो आपका सर छत को लगे और अगर आप उसमें लेटें तो आपके पांव दीवार को लगें।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, फिर ठीक है।[1]

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अबू अस्मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया। उस वक़्त वह रब्ज़ा बस्ती में थे। उनके पास एक काली औरत बैठी हुई थी, जिसके बाल बिखरे हुए थे। उस पर न ख़ूबसूरती का कोई असर था और न ही ख़ुशबू का।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, क्या तुम लोग देखते नहीं हो कि यह काली-कलूटी मुझे क्या कह रही है? मुझे यह कह रही है कि इराक़ चला जाऊं (और वहां रहा करूं)। मैं जब इराक़ चला जाऊंगा, तो वहां के लोग अपनी दुनिया लेकर मुझ पर टूट पड़ेंगे, (क्योंकि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बड़े सहाबा रज़ि० में से हूं, इसलिए वहां वाले मुझे ख़ूब हदिया देंगे और यों मेरे पास दुनिया ज़्यादा हो जाएगी और उनके काम भी करने पड़ेंगे, जिसकी वजह से इबादत और आमाल का वक़्त कम हो जाएगा) और मेरे गहरे दोस्त (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे यह अह्द लिया है कि पुले सिरात से पहले एक फिसलन वाला रास्ता है, जब हम उससे गुज़रें, तो हमारा बोझ इतना हल्का हो और ऐसा सिमटा हुआ हो कि हम उसे उठा सकें, यह हमारी निजात के लिए ज़्यादा बेहतर है, इसके मुक़ाबले में कि हम उस रास्ते पर से गुज़रें और हमारा

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 63,

बोझ बहुत ज़्यादा हो।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़िराश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को रब्ज़ा बस्ती में देखा कि वह अपने एक काले छप्पर के नीचे बैठे हुए हैं और उसी छप्पर के नीचे उनकी काली औरत बैठी हुई है और वह बोरी के एक टुकड़े पर बैठे हुए हैं।

उनसे अर्ज़ किया गया कि आपकी औलाद ज़िंदा क्यों नहीं रहती?

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह का शुक्र है कि वह उन्हें इस फ़ानी घर में ले लेता है और हमेशा बाक़ी रहने वाले घर में ज़रूरत पड़ने पर हमें वापस कर देगा और वे बच्चे वहां काम आएंगे।

फिर साथियों ने अर्ज़ किया, आप इस औरत के अलावा कोई और (ख़ूबसूरत) औरत ले लेते, तो अच्छा था।

फ़रमाया, मैं ऐसी औरत से शादी करूं, जिससे मुझमें तवाज़ोअ पैदा हो, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मैं ऐसी औरत से शादी करूं जिससे मुझमें बड़ाई पैदा हो।

फिर साथियों ने कहा, आप इससे ज़्यादा नर्म बिस्तर ले लेते?

फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मग़फ़िरत फ़रमा और जो तूने दिया है, उसमें से जितना जी चाहे ले ले।[2]

हज़रत इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि के मोहतरम बाप कहते हैं, हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने कहा, जैसे फ़्लां-फ़्लां आदमियों ने जायदाद बनाई है, आप भी इस तरह जायदाद क्यों नहीं बना लेते?

फ़रमाया, मैं अमीर बनकर क्या करूंगा? मुझे तो हर दिन पानी या दूध का एक घूंट और हर हफ़्ते गेहूं एक क़फ़ीज़ (एक पैमाने का नाम है, जिसकी मिक़्दार हर इलाक़े में अलग-अलग होती है। मिस्र में क़फ़ीज़ सोलह किलो ग्राम का होता है) काफ़ी है।

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 93, हुलीया, भाग 1, पृ० 161, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 174,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 160, हैसमी, भाग 9, पृ० 331

अबू नुऐम की एक रिवायत में है कि हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मेरी रोज़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक साअ थी। मैं मरते दम तक इससे ज़्यादा नहीं कर सकता।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाए जाने से पहले मैं ताजिर (व्यापारी) था। जब हुज़ूर सल्ल० पैग़म्बर हुए तो मैंने तिजारत और इबादत को जमा करना चाहा, लेकिन ऐसा ठीक तौर से न हो सका, इसलिए मैंने तिजारत छोड़ दी और इबादत की ओर मुतवज्जह हो गया।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से पिछली हदीस जैसी हदीस रिवायत की गई है और उसमें इतना और भी है कि उन्होंने यह भी फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! आज मुझे यह बात भी पसन्द नहीं है कि मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी एक दुकान हो और मस्जिद में जमाअत से एक भी नमाज़ फ़ौत न हो और मुझे उस दुकान से हर दिन चालीस दीनार नफ़ा हो, जो सब मैं अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर दूं।

उनसे किसी ने पूछा कि आपको यह क्यों नापसन्द है?

फ़रमाया, हिसाब की सख़्ती की वजह से।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे इस बात से ख़ुशी नहीं हो सकती कि मैं मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर ख़रीदूं-बेचूं और हर दिन मुझे तीन सौ दिरहम उससे नफ़ा हो और मैं तमाम नमाज़ें मस्जिद में जमाअत से अदा करूं। मैं यह नहीं कहता कि अल्लाह ने बेचने को हलाल नहीं किया और सूद को हराम किया है, बल्कि मैं चाहता हूं कि मैं उन लोगों में से हो जाऊं, जिन्हें तिजारत और बेचना

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 162,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 367
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 209, कंज़, भाग 2, पृ० 149

अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं कर सकता।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन हुदैर अस्लमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया। उनके नीचे खाल या ऊन का बिस्तर था और उनके ऊपर ऊनी चादर थी और खाल के जूते थे और वह बीमार थे और उन्हें ख़ूब पसीना आया हुआ था। मैंने उनसे कहा, अगर आप चाहते तो अपने बिस्तर पर चांदी वाला ग़िलाफ़ चढ़ा लेते और ज़ाफ़रानी चादर ओढ़ते, जो कि अमीरुल मोमिनीन आपके पास भेजा करते हैं।

उन्होंने फ़रमाया, हमारा एक घर है, जहां हम जा रहे हैं और उसी के लिए हम अमल कर रहे हैं (कि जितना माल आता है, सब दूसरों को दे देते हैं, ताकि अगले घर यानी आख़िरत में काम आए।)

हज़रत हस्सान बिन अतीया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के कुछ साथी उनके मेहमान बने। चुनांचे उन्होंने उनको ख़िलाया-पिलाया और उनकी मेहमानी की, लेकिन (घर में सामान और बिस्तरे वग़ैरह कम थे, जिसकी वजह से) कुछ साथियों ने घोड़े की पीठ पर काठी के नीचे जो चादर डाली जाती है, उस पर रात गुज़ारी और कुछ अपने कपड़े पर जैसे थे, वैसे ही लेटे रहे।

जब सुबह को हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० उनके पास आए, तो उन्होंने महसूस किया कि उनके ये मेहमान बिस्तरों के न होने की वजह से कुछ महसूस कर रहे हैं, तो फ़रमाया, हमारा एक घर है, हम उसी के लिए जमा कर रहे हैं और हमें लौट कर वहीं जाना है, (इसलिए जितना माल आता है, सब दूसरों पर ख़र्च कर देते हैं, अपना कुछ नहीं बनाते हैं।)[2]

हज़रत मुहम्मद बिन काब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, कुछ लोग सख़्त सर्दी की रात में हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के मेहमान बने। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने उनके पास गर्म खाना तो भेजा, लेकिन लिहाफ़ न भेजे।

1. अबू नुऐम,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 222,

उनमें से एक आदमी ने कहा, उन्होंने हमारे लिए खाना तो भेजा, लेकिन (सर्दी दूर करने का इन्तिज़ाम नहीं किया, इस वजह से) इस सख़्त सर्दी में हमें खाना खाने का मज़ा न आया, मैं तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को यह बात ज़रूर बताऊंगा।

दूसरे ने कहा, छोड़ो, न बताओ। लेकिन वह न माना और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० के पास चला गया। जब वह दरवाज़े पर जाकर खड़ा हो गया, तो उसने देखा कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० बैठे हुए हैं और उनकी बीवी के जिस्म पर न ज़िक्र करने लायक़ कपड़े हैं।

यह देखकर उसने वापस जाने का इरादा किया और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० से कहा, मेरा ख़्याल है, यह रात आपने भी हमारी तरह (लिहाफ़ के बग़ैर) ही गुज़ारी है।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, हमारा एक घर है, जहां हम सबको जाना है। हमने अपने सारे बिस्तर और लिहाफ़ वहां पहले से भेज दिए हैं। अगर इनमें से कोई चीज़ तुम्हें यहां मिलती, तो हम उसे तुम्हारे पास ज़रूर भेज देते। हमारे सामने एक बहुत सख़्त घाटी है जिस पर चढ़ना बड़ा मुश्किल है। हलका बोझ लेकर उसमें से गुज़रने वाला ज़्यादा बोझ वाले से बेहतर है। समझ गए, मैं तुम्हें क्या कह रहा हूं?

उसने कहा, जी हां, समझ गया हूं।[1]

अमीर की ज़िंदगी के स्टैंडर्ड के बुलन्द करने पर नकीर के बाब में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां जाने लगे, तो हज़रत उमर रज़ि० ने दरवाज़े को धक्का दिया, तो उसकी कुंडी नहीं थी।

हम अन्दर गए तो कमरे में अंधेरा था। हज़रत उमर रज़ि० उनको (अंधेरे की वजह से) टटोलने लगे, यहां तक कि उनका हाथ अबुद्दर्दा रज़ि० को लग गया, फिर उनके तकिये को टटोला तो वह पालान का कम्बल था, फिर उनके बिछौने को टटोला तो वह कंकरियां थीं, फिर

1. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 263

उनके ऊपर के कपड़े को टटोला, तो वह बारीक-सी चादर थी।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, क्या मैंने आप पर फैलाव नहीं किया? और क्या मैंने आपके साथ फ़्लां-फ़्लां एहसान नहीं किए?

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! क्या आपको वह हदीस याद नहीं है, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमसे बयान की थी?

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, कौन-सी हदीस?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुममें से एक आदमी के पास ज़िंदगी गुज़ारने का इतना सामान होना चाहिए, जितना सवार के पास सफ़र का तोशा होता है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, (याद है।)

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, ऐ उमर रज़ि० ! हुज़ूर सल्ल० के बाद हमने क्या किया? फिर दोनों एक दूसरे को हुज़ूर सल्ल० की बातें याद दिला कर सुबह तक रोते रहे।

हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत अफ़लह रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुक्म देकर बद्र वालों के लिए ख़ास तौर से बड़े अच्छे जोड़ों का कपड़ा तैयार करवाते थे। फिर उससे जोड़े बनाकर बद्र वालों को भेजा करते थे। चुनांचे उन्होंने हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हु को उनमें से एक जोड़ा भेजा।

ज़रत मुआज़ रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ अफ़लह ! यह जोड़ा बेच दो।

मैंने वह जोड़ा डेढ़ हज़ार दिरहम में बेचा, तो उन्होंने फ़रमाया, इस डेढ़ हज़ार दिरहम के मेरे लिए ग़ुलाम ख़रीद लाओ।

मैं पांच ग़ुलाम ख़रीद लाया, उन्हें देखकर फ़रमाया, जो आदमी डेढ़

हज़ार दिरहम के पांच ग़ुलाम ख़रीद कर उन्हें आज़ाद कर सकता है। वह इस रक़म के दो छिलके (लुंगी और चादर के) पहन ले, वाक़ई वह बहुत बेवक़ूफ़ है। (ऐ ग़ुलामो !) जाओ तुम सब आज़ाद हो।

हज़रत उमर रज़ि० को यह ख़बर पहुंची कि हज़रत उमर रज़ि० हज़रत मुआज़ रज़ि० के पास जो जोड़ें भेजते हैं, हज़रत मुआज़ रज़ि० उन्हें पहनते नहीं हैं, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनके लिए सौ दिरहम का एक मोटा जोड़ा बनवा कर उनके पास भेज दिया।

जब क़ासिद वह जोड़ा लेकर उनके पास आया, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा ख़्याल यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ने यह जोड़ा देकर तुम्हें मेरे पास नहीं भेजा।

उस क़ासिद नें कहा, नहीं, आपके पास ही भेजा है। उन्होंने वह जोड़ा लिया और लेकर हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में आए और कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या आपने यह जोड़ा मेरे पास भेजा है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, मैंने भेजा है। हम पहले तुम्हारे पास इन (क़ीमती) जोड़ों में से भिजवाया करते थे, जो तुम्हें और तुम्हारे (बद्री) भाइयों के लिए भिजवाया करते थे, लेकिन मुझे पता चला कि तुम उसे पहनते नहीं हो, (इसलिए इस बार मैंने तुम्हारे पास यह मामूली जोड़ा भेज दिया।)

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं अगरचे वह जोड़ा पहनता नहीं, लेकिन मैं यह चाहता हूं कि आपके पास जो बेहतरीन चीज़ है, मुझे उसमें से मिले। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने पहले की तरह वही अच्छा जोड़ा दे दिया।[1]

हज़रत लजलाज ग़तफ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत लजलाज ग़तफ़ानी रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं जबसे मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर मुसलमान हुआ हूं, कभी मैंने पेट भरकर खाना भी नहीं खाया, बस ज़रूरत भर खाता और पीता हूं।

1. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 188,

इमाम बैहक़ी ने इतना और बढ़ाकर रिवायत किया है कि वह एक सौ बीस साल तक ज़िंदा रहे। पचास साल जाहिलीयत में और सत्तर साल इस्लाम में।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का ज़ोहद

हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा उस वक़्त खाना खाते, जब साथ खाने वाला कोई और भी होता और जब खाते, तो चाहे खाना कितना ज़्यादा होता, पेट भरकर न खाते।

चुनांचे एक बार हज़रत इब्ने मुतीअ रहमतुल्लाहि अलैहि उनका पूछना करने आए तो उन्होंने देखा कि उनका जिस्म बहुत दुबला हो चुका है, तो उन्होंने (उनकी बीवी) हज़रत सफ़िया रहमतुल्लाहि अलैहा से कहा, क्या तुम उनकी अच्छी तरह देख-भाल नहीं करती हो? अगर तुम उनकी देख-भाल ठीक तरह से करो तो हो सकता है कि वह दुबलापन ख़त्म हो जाए और कुछ तो इनका जिस्म बन जाए, इसलिए इनके लिए अच्छा खाना ख़ास तौर से एहतमाम से तैयार करो।

हज़रत सफ़िया ने कहा, हम तो ऐसा करते हैं, लेकिन यह अपने खाने पर तमाम घरवालों को और (बाहर के) तमाम मौजूद लोगों को बुला लेते हैं (और सारा खाना दूसरों को खिला देते हैं, ख़ुद बहुत कम खाते हैं) इसलिए आप ही उनसे इस बारे में बात करें।

इस पर हज़रत इब्ने मुतीअ ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! (यह उनका उपनाम है) अगर आप कुछ अच्छा खाना खा लिया करें, तो इससे आपकी जिस्मानी कमज़ोरी दूर हो जाएगी, तो उन्होंने फ़रमाया, आठ साल लगातार ऐसे गुज़रे हैं कि मैंने कभी पेट भरकर नहीं खाया या सिर्फ़ एक बार ही पेट भरकर खाया होगा, अब तुम चाहते हो कि मैं पेट भरकर खाया करूं, जबकि गधे की प्यास जितनी (थोड़ी-सी) ज़िंदगी रह गई है।[2]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 423, इसाबा, भाग 2, पृ० 328, कंज़, भाग 7, पृ० 86,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 298,

हज़रत उमर बिन हमज़ा बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं अपने वालिद के साथ बैठा हुआ था कि इतने में एक आदमी गुज़रा और उसने कहा, आप मुझे बताएं कि जिस दिन मैंने आपको हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से जुरुफ़ नामी जगह पर बात करते हुए देखा था, आपने उनको क्या कहा था?

उन्होंने कहा, मैंने उनसे कहा था, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! आपका जिस्म बहुत दुबला हो गया और उम्र बहुत ज़्यादा हो गई। आपकी मज्लिस में बैठने वाले न आपका हक़ पहचानते हैं और न आपका रुत्बा। आप यहां से घर वापस जाकर घरवालों से कहें कि वे आपके लिए ख़ास तौर से अच्छा सा खाना तैयार कर दिया करें।

उन्होंने कहा, तेरा भला हो, अल्लाह की क़सम! मैंने ग्यारह साल से बल्कि बारह साल से, बल्कि तेरह साल से, बल्कि चौदह साल से एक बार भी पेट भरकर नहीं खाया, अब तो गधे की प्यास जितनी (थोड़ी-सी) ज़िंदगी रह गई, अब यह कैसे हो सकता है?[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अदी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम थे, वह इराक़ से आए और उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अर्ज़ किया, मैं आपके लिए हदिया लाया हूं।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने पूछा, क्या है?

उन्होंने कहा, जवारिश है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि०ने पूछा, जवारिश क्या चीज़ होती है?

उन्होंने कहा, इससे खाना हज़्म होता है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने चालीस साल से कभी पेट भरकर नहीं खाया, मैं इस जवारिश का क्या करूंगा?[2]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने

---

1. अबू नुऐम,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 300

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, क्या मैं आपके लिए जवारिश तैयार कर दूं?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने पूछा, जवारिश क्या चीज़ होती है?

उस आदमी ने कहा, अगर आप किसी दिन खाना इतना ज़्यादा खा लें कि सांस लेना भी मुश्किल हो जाए और फिर इस जवारिश को इस्तेमाल कर लें तो इससे उस खाने को हज़म करना आसान हो जाएगा।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने तो चार माह से कभी पेट भरकर खाना नहीं खाया, और यह इस वजह से नहीं है कि मुझे खाना मिलता नहीं है। खाना तो बहुत है, लेकिन मैं ऐसे लोगों के साथ रहा हूं जो एक वक़्त पेट भरकर खाते थे और दूसरे वक़्त भूखे रहते थे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, मैंने न ईंट पर ईंट रखी (यानी कोई तामीर नहीं की) और न ही कोई खजूर का पौधा लगाया है।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अलावा हममें से जिसने भी दुनिया पाई, दुनिया उसकी ओर झुकी और वह दुनिया की ओर झुक गया।[3]

हज़रत सुद्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने सहाबा की एक जमाअत को देखो, जो यह समझते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा को (दुनिया की चीज़ोंके इस्तेमाल में) जिस हालत पर छोड़ गए थे, उस हालत पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अलावा और कोई नहीं रहा।[4]

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़ोहद

हज़रत साइदा बिन साद बिन हुज़ैफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं,

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 110
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 303, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 125
3. अबू सईद इब्नुल आराबी,
4. इसाबा, भाग 2, पृ० 347

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि सबसे ज़्यादा मेरी आंखों की ठंडक की वजह और मेरे जी को सबसे ज़्यादा महबूब वह दिन है जिस दिन मैं अपने बाल-बच्चों के पास जाऊं और मुझे उनके पास खाने की कोई चीज़ न मिले और वह यों कहें कि आज हमारे पास खिलाने के लिए कुछ है ही नहीं। इसकी वजह यह है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मरीज़ को उसके घरवाले जितना खाने से बचाते हैं, अल्लाह मोमिन को उससे ज़्यादा दुनिया से बचाते हैं और बाप अपनी औलाद के लिए जितनी फ़िक्र करता है, अल्लाह उससे ज़्यादा मोमिन की आज़माइश का एहतिमाम करते हैं।[1]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 277, हैसमी, भाग 10, पृ० 285

जो दुनिया से बे-रग़बती अख़्तियार न करे और उसकी लज़्ज़तों में मशग़ूल हो जाए उस पर नकीर करना और दुनिया से बचने की ताकीद करना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे देखा कि मैंने एक दिन में दो बार खाना खाया है, तो मुझसे फ़रमाया, ऐ आइशा! क्या यह तुम चाहती हो कि सिर्फ़ पेट भरना ही तुम्हारा मशग़ला हो? एक दिन में दो बार खाना फ़िज़ूल ख़र्ची है और फ़िज़ूल ख़र्च करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं फ़रमाते हैं।

एक रिवायत में यह है कि आपने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! क्या तुम्हें इस दुनिया में बस पेट भरने की ही चिन्ता है और किसी चीज़ की चिन्ता नहीं है? एक दिन में एक बार से ज़्यादा खाना फ़िज़ूल ख़र्ची है और फ़िज़ूल ख़र्ची करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं फ़रमाते।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठी हुई रो रही थी। आपने फ़रमाया, तुम क्यों रो रही हो? अगर तुम मुझसे (जन्नत में) मिलना चाहती हो, तो तुम्हें दुनिया का इतना सामान काफ़ी होना चाहिए, जितना सवार का रास्ते का सामान होता है और मालदारों से मेल-जोल न रखना।[2]

तिर्मिज़ी, हाकिम और बैहक़ी की रिवायत में कुछ और लफ़्ज़ भी हैं, वह ये कि और जब तक कपड़े पर पैवन्द न लगा लो, उसे पुराना न समझना।

रज़ीन की रिवायत में इतना मज़्मून और ज़्यादा है कि हज़रत उर्व: ने

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 423,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 150

कहा कि जब तक हज़रत आइशा रज़ि० अपने कपड़े पर पैवन्द न लगा लेतीं और उसे उलट न लेतीं, उस वक़्त तक नया कपड़ा न पहनतीं। एक दिन उनके पास अस्सी हज़ार दिरहम हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से आए, तो शाम तक उनके पास अस्सी हज़ार में से एक दिरहम भी न बचा।

उनकी बांदी ने कहा, आपने हमारे लिए एक दिरहम का गोश्त क्यों नहीं ख़रीद लिया? तो फ़रमाया, अगर तू मुझे पहले याद करा देती, तो मैं ख़रीद लेती, (मुझे तो गोश्त ख़रीदना याद ही न रहा।)[1]

हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने एक दिन चर्बी वाले मांस का सरीद खाया, फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मुझे डकार आ रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू जुहैफ़ा रज़ि० ! हमारे सामने डकार न लो, क्योंकि जो दुनिया में ज़्यादा पेट भरकर खाएंगे, उन्हें क़ियामत के दिन ज़्यादा भूख बरदाश्त करनी पड़ेगी, चुनांचे उसके बाद हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० ने आख़िरी दम तक कभी पेट भरकर खाना न खाया। जब दोपहर को खा लेते थे, तो रात को न खाते और जब रात को खा लेते तो दिन को न खाते।[2]

हज़रत जादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बड़े पेट वाला आदमी देखा, तो आपने उसके पेट में उंगली मारकर फ़रमाया, अगर यह खाना इस पेट के अलावा किसी और (फ़क़ीर या ज़रूरतमंद) के पेट में होता, तो तुम्हारे लिए बेहतर था।

एक रिवायत में यह है कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में सपना देखा। हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर उसे बुलाया। चुनांचे उसने ख़िदमत में हाज़िर होकर, हुज़ूर सल्ल० को वह सारा सपना सुनाया।

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 126,
2. हैसमी, भाग 5, पृ० 31, इस्तीआब, भाग 4, पृ० 37, हैसमी, भाग 10, पृ० 323, हुलीया, भाग 7, पृ० 256,

उस आदमी का पेट बड़ा था। हुज़ूर सल्ल० ने उसके पेट में उंगली मारकर फ़रमाया, अगर यह खाना इस पेट के अलावा किसी और के पेट में होता, तो तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर था।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु रास्ते में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मिले। उनके साथ एक आदमी गोश्त उठाए हुए था (यानी वह गोश्त ख़रीदकर अपने घर ले जा रहे थे)।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुममें से कोई आदमी भी यह नहीं चाहता कि अपने पड़ोसी और चचेरे भाई की वजह से अपने आपको भूखा रखे? (यानी ख़ुद न खाए और सारा दसरों को खिला दे) यह आयत—

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا - (سورة احقاف آيت ٢٠)

तुम लोगों से कहां चली गई है?[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं एक दिरहम का गोश्त ख़रीदकर ले जा रहा था। रास्ते में मुझे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिले। उन्होंने पूछा, ऐ जाबिर रज़ि०! यह क्या है?

मैंने कहा, मेरे घरवालों का गोश्त खाने को बहुत दिल चाह रहा था, इसलिए मैंने उनके लिए एक दिरहम का गोश्त ख़रीदा है। हज़रत उमर रज़ि० मेरा यह जुम्ला बार-बार दोहराते रहे, मेरे घरवालों का गोश्त खाने को बहुत दिल चाह रहा था। इतनी बार दोहराया कि मुझे यह तमन्ना होने लगी कि काश, यह दिरहम मेरे पास से कहीं गिर जाता और हज़रत उमर रज़ि० से मेरी मुलाक़ात न होती।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा के हाथ में एक दिरहम देखा, तो उनसे पूछा, यह दिरहम क्या है?

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 31
2. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 424
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 424, मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 407

हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा, मैं इसका अपने घरवालों के लिए गोश्त ख़रीदना चाहता हूं, उनका दिल गोश्त खाने को बहुत चाह रहा था।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या जिस चीज़ को तुम लोगों का दिल चाहेगा, उसे तुम ज़रूर ख़रीद लोगे? 'अज़्-हब्तुम तय्यिबातिकुम' वाली आयत तुम लोगों से कहां चली गई?[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां गए। उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के सामने गोश्त रखा हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, यह गोश्त कैसा है?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, मेरा गोश्त खाने को दिल चाह रहा था, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारा जिस चीज़ को दिल चाहेगा, क्या तुम उसे ज़रूर खाओगे? आदमी के फ़िज़ूल ख़र्च के लिए यह काफ़ी है कि उसका जिस चीज़ को दिल चाहे, वह उसे ज़रूर खाए।[2]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को यह ख़बर पहुंची कि हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा अलग-अलग क़िस्म के खाने खाते हैं, तो हज़रत उमर रज़ि० ने अपने ग़ुलाम यरफ़ा से फ़रमाया, जब तुम्हें पता चल जाए कि उनका रात का खाना तैयार हो गया है तो मुझे ख़बर कर देना।

चुनांचे जब हज़रत यज़ीद का रात का खाना तैयार हो गया, तो हज़रत यरफ़ा ने हज़रत उमर रज़ि० को ख़बर की। हज़रत उमर तशरीफ़ ले गए और हज़रत यज़ीद के यहां पहुंचकर उन्हें सलाम किया उनसे अन्दर आने की इजाज़त मांगी, उन्होंने इजाज़त दी। हज़रत उमर रज़ि० अन्दर तशरीफ़ ले गए तो हज़रत यज़ीद का रात का खाना लाया गया और वह सरीद और गोश्त लेकर आए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनके साथ खाना खाया।

---

1. मुंतख़ब, भाग 6, पृ० 406,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 401

फिर भुना हुआ गोश्त दस्तरख़्वान पर लाया गया। हज़रत यज़ीद ने तो उस गोश्त की ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० ने अपना हाथ रोक लिया और फ़रमाया, ऐ यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान! हाय अल्लाह! क्या एक खाने के बाद दूसरा खाना? उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! अगर तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके सहाबा रज़ि० की ज़िंदगी के तरीक़े से हट जाओगे, तो तुम्हें भी उनके रास्ते से हटा दिया जाएगा, (जो कि जन्नत के आला दर्जों को जाता है।)[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक कूड़ी के पास से गुज़रे तो उसके पास रुक गए। जब आपने महसूस किया कि आपके साथियों को उसकी गन्दगी से नागवारी हो रही है, तो फ़रमाया, यह है तुम्हारी वह दुनिया जिसका तुम लालच करते हो या फ़रमाया, जिस पर तुम भरोसा करते हो।[2]

हज़रत सलमा बिन कुलसूम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दमिश्क़ में एक ऊंचा मकान बनाया। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना मुनव्वरा में इसकी ख़बर मिली तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को यह ख़त लिखा—

'ऐ उवैमिर बिन उम्मे उवैमिर! क्या तुम्हें रोम और फ़ारस की इमारतें काफ़ी नहीं हैं कि तुम और नई इमारतें बनाने लग गए हो? और ऐ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ि०! (हर काम सोच-समझकर किया करो, क्योंकि) तुम दूसरों के लिए नमूना हो (लोग तुम्हें जैसा करते हुए देखेंगे, वैसा ही करने लग जाएंगे)।[3]

हज़रत राशिद बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर मिली कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हिम्स में दरवाज़े पर एक छज्जा बनाया है, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 401,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 48
3. इब्ने असाकिर

यह ख़त लिखा, ऐ उवैमिर ! रूम वालों ने जो तामीरें की हैं, क्या वे दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत के लिए तुम्हें काफ़ी नहीं थीं? हालांकि अल्लाह ने तो दुनिया को उजाड़ने का यानी सादगी का हुक्म दे रखा है।[1]

अबू नुऐम की रिवायत में आगे यह भी है कि रूम वालों ने जो तामीरात की हैं, क्या वे दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और नई इमारतें बनाने के लिए काफ़ी नहीं थीं? हालांकि अल्लाह ने तो दुनिया का वीरान होना बताया है। जब तुम्हें मेरा यह ख़त मिले, फ़ौरन हिम्स से दमिश्क़ चले जाना।

हज़रत सुफ़ियान रिवायत करने वाले यह कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने उनको यह हुक्म सज़ा के तौर पर दिया था।[2]

हज़रत यज़ीद बिन अबी हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मिस्र में सबसे पहले हज़रत ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बालाख़ाना बनाया था। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को जब इसकी ख़बर मिली, तो उन्होंने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा—

'सलाम हो, अम्मा बादु, मुझे यह ख़बर मिली है कि हज़रत ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा ने बालाख़ाना बनाया है। हज़रत ख़ारिजा अपने पड़ोसियों के परदे की चीज़ों पर झांकना चाहते हैं, इसलिए ज्यों ही तुम्हें मेरा यह ख़त मिले, इस बालाख़ाने को गिरा दो। फ़क़त वस्सलाम'[3]

हज़रत अब्दुल्लाह रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत उम्मे तलक़ रज़ियल्लाहु अन्हा के घर उनकी ख़िदमत में गया, तो मैंने देखा कि इनके घर की छत नीची है। मैंने कहा, ऐ उम्मे तलक़ ! आपके घर की छत बहुत ही नीची है।

उन्होंने कहा, ऐ मेरे बेटे ! हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने गवर्नरों को यह ख़त लिखा कि तुम अपनी इमारतें ऊंची न बनाओ, क्योंकि तुम्हारा सबसे बुरा दिन वह होगा जिस दिन तुम लोग

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 62
2. हुलीया, भाग 7, पृ० 305,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 63,

ऊंची इमारतें बनाओगे।[1]

हज़रत सुफ़ियान बिन उऐना रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा के गवर्नर थे। उन्होंने ख़त लिखकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से रहने के लिए घर बनाने की इजाज़त मांगी।

हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें जवाब में लिखा कि ऐसा घर बनाओ जिससे तुम्हारी धूप और बारिश से बचने की ज़रूरत पूरी हो जाए, क्योंकि दुनिया तो गुज़ारा करने की जगह है।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु मिस्र के गवर्नर थे। उन्हें हज़रत उमर रज़ि० ने यह लिखा कि तुम अपने साथ अपने अमीर का जैसा रवैया पसन्द करते हो, तुम वैसा ही रवैया अपनी रियाया के साथ अख़्तियार करो।[2]

हज़रत सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर मिली कि एक आदमी ने पक्की ईंटों से मकान बनाया है, तो फ़रमाया, मेरा ख़्याल नहीं था कि इस उम्मत में भी फ़िरऔन जैसे लोग होंगे।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० फ़िरऔन के इस जुम्ले की ओर इशारा फ़रमा रहे थे—

فَأَوْقِدْ لِي يَا هَامَانُ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا (सूरः क़सस आयत ३८)

'तो ऐ हामान ! तुम हमारे लिए मिट्टी (की ईंटें बनवाकर उन) को आग में (पज़ावा लगाकर) पकवाओ। फिर (इन पक्की ईंटों से) मेरे वास्ते एक ऊंची इमारत बनवाओ।'[3]

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे वालिद के ज़माने में मेरी शादी हुई। मेरे वालिद ने लोगों को (खाने के

1. कंज़, भाग 8, पृ० 63
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 406,
3. हुलीया, भाग 7, पृ० 304

लिए) बुलाया और उनमें हज़रत अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु को भी बुलाया था। घरवालों ने कमरे की दीवारों पर हरे परदे लटका दिए। हज़रत अय्यूब रज़ि० तशरीफ़ लाए। उन्होंने सर झुका कर (ग़ौर से) देखा तो कमरे पर परदे लटके हुए थे।

उन्होंने (मेरे वालिद से) फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह ! तुम लोग दीवारों पर परदे लटकाते हो ?

मेरे वालिद ने शर्मिंदा होकर कहा, ऐ अबू अय्यूब ! औरतें हम पर ग़ालिब आ गईं।

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने फ़रमाया, दूसरों के बारे में तो मुझे डर था कि उन पर औरतें ग़ालिब आ जाएंगी, लेकिन तुम्हारे बारे में मुझे यह डर बिल्कुल नहीं था कि तुम पर भी ग़ालिब आ जाएंगी। न मैं तुम्हारे घर में दाख़िल हूंगा और न तुम्हारा खाना खाऊंगा।[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, मुझे कुछ नसीहत कर दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ सलमान रज़ि० ! अल्लाह से डरते रहो और तुम्हें मालूम होना चाहिए कि बहुत जल्द बहुत-सी जीतें होंगी। उनमें से तुम्हारा हिस्सा सिर्फ़ इतना होना चाहिए कि ज़रूरत भर खाना अपने पेट में डाल लो और ज़रूरत भर कपड़ा अपनी पीठ पर डाल लो (अपनी ज़रूरत में कम से कम लगाकर बाक़ी सारा दूसरों पर ख़र्च कर देना) और तुम यह भी जान लो कि जो आदमी पांच नमाज़ें पढ़ता है, वह सुबह व शाम हर वक़्त अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है, इसलिए तुम अल्लाह वालों में से किसी को हरगिज़ क़त्ल न करना, क्योंकि तुम इस तरह अल्लाह की ज़िम्मेदारी को तोड़ दोगे और फिर अल्लाह तुमको औंधे मुंह (जहन्नम की) आग में डाल देंगे।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान फ़ारसी

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 63,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 137, कंज़, भाग 8, पृ० 233,

रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनके मरज़ुल वफ़ात में गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा रज़ि० ! मुझे कुछ वसीयत कर दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम लोगों के लिए सारी दुनिया को जिता देंगे (और ख़ूब ग़नीमत का माल आएगा) तुममें से हर आदमी इन जीतों में से सिर्फ़ गुज़ारे भर ही ले।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास उनके मरज़ुल वफ़ात में गया और उन्हें सलाम किया। उन्होंने फ़रमाया, मैं देख रहा हूं कि दुनिया सामने से आ रही है, अगरचे अभी तक आई नहीं है, लेकिन वह बस आने ही वाली है और आप लोग रेशम के परदे और दीबाज के तकिए बनाओगे और आज़र बाईजान के बने हुए ऊनी बिस्तरों (जो कि अच्छे गिने जाते हैं) पर ऐसे तक्लीफ़ महसूस करोगे जैसे गोया कि तुम सादान (बूटी) के कांटों पर हो, अल्लाह की क़सम ! तुममें से किसी एक को आगे करके बग़ैर जुर्म के उसकी गरदन को उड़ा दिया जाए, यह उसके लिए इससे बेहतर है कि वह दुनिया की गहराइयों में तैरता रहे।[2]

हज़रत अली बिन रिबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना है कि तुम लोग उस चीज़ में चाव रखने लगे हो, जिससे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाव नहीं दिखाया करते थे, तुम दुनिया में चाव रखने लगे हो और हुज़ूर सल्ल० उससे कोई चाव नहीं रखते थे। अल्लाह की क़सम, उनकी ज़िंदगी की तो रात भी उन पर आती थी, तो इसमें उन पर क़र्ज़ा उनके माल से हमेशा ज़्यादा हुआ करता था।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा रज़ि० ने कहा, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़र्ज़ लेते हुए देखा है।[3]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 146,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 34, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 362,
3. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 166

इमाम अहमद ने हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत नक़ल की है कि उन्होंने फ़रमाया, तुम्हारा तरीक़ा तुम्हारे नबी सल्ल० के तरीक़े से कितना दूर हो गया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो लोगों में दुनिया से सबसे ज़्यादा बे-रग़बती (बे-चाव) वाले थे और तमाम लोगों में तुम लोग दुनिया की सबसे ज़्यादा रग़बत (चाव) रखने वाले हो।[1]

हज़रत मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के एक नवजवान बेटे ने आपसे लुंगी मांगी और कहा, मेरी लुंगी फट गई है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, लुंगी जहां से फटी है, वहां से काट दो और बाक़ी को सी कर पहन लो।

उस नवजवान को यह बात अच्छी न लगी, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने उससे कहा, तेरा भला हो, अल्लाह से डरो और उन लोगों में से हरगिज़ न बनो जो अल्लाह की रोज़ी को अपने पेटों में और अपनी पीठों पर डाल देते हैं यानी अपना सारा माल खाने पर और पहनावे पर ख़र्च कर देते हैं।[2]

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे। वह अपना घर बना रहे थे। हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, तुमने बड़े-बड़े पत्थर लोगों के कंधों पर लाद दिए हैं।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, मैं तो घर बना रहा हूं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फिर वही जुम्ला दोहराया।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, ऐ मेरे भाई! शायद मेरे इस काम की वजह से आप मुझसे नाराज़ हो गए हैं।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, अगर मैं आपके पास से गुज़रता और

---

1. हैसमी, भाग 1, पृ० 315, कंज़, भाग २, पृ० 148,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 301,

आप अपने घरवालों के पाख़ाने में लगे होते, तो यह मुझे इस काम से ज़्यादा महबूब था, जिसमें आप अब लगे हुए हैं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने एक बार अपनी एक नई क़मीज़ पहनी। मैं उसे देखकर ख़ुश होने लगी, वह मुझे बहुत अच्छी लग रही थी। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या देख रही हो? इस वक़्त अल्लाह तुम्हें (रहमत की नज़र से) नहीं देख रहे हैं।

मैंने कहा, यह क्यों?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि जब दुनिया की ज़ीनत की वजह से बन्दे में उज्ब (ख़ुद को अच्छा समझना) पैदा हो जाता है, तो जब तक बन्दा वह ज़ीनत छोड़ नहीं देता, उस वक़्त तक उसका रब उससे नाराज़ रहता है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, मैंने वह क़मीज़ उतार कर उसी वक़्त सदक़ा कर दी, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, शायद यह सदक़ा तुम्हारे उस उज्ब के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाए।[2]

हज़रत हबीब बिन हमज़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बेटे की वफ़ात का वक़्त जब क़रीब आया तो वह जवान कनखियों से एक तकिए की तरफ़ देखने लगा। जब उसका इन्तिक़ाल हो गया तो लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, आपका बेटा कनखियों से उसको देख रहा था।

जब लोगों ने उनके बेटे को उस तकिए से उठाया, तो उस तकिए के नीचे पांच या छः दीनार मिले। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपना एक हाथ दूसरे पर मारा और वह बार-बार 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' पढ़ते रहे और फ़रमाया, मेरे ख़्याल में तो तुम्हारी खाल इन दीनारों की सज़ा बरदाश्त नहीं कर सकती (कि तुमने उनको जमा करके रखा और ख़र्च न किया।)[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 163,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 37
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 37

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हुज़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना घर बनाया, तो हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, आओ, जो घर मैंने बनाया, वह देख लो।

चुनांचे हज़रत अम्मार रज़ि० उनके साथ गए और घर देखकर कहने लगे, आपने बड़ा मज़बूत घर बनाया है और बड़ी लम्बी और दूर की उम्मीदें लगाई हैं, हालांकि आप जल्द ही दुनिया से चले जाएंगे।[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु को एक वलीमा की दावत दी गई। (वह उसमें तशरीफ़ ले गए) और मैं भी उनके साथ था, वहां उन्होंने रंग-बिरंगे खाने देखे तो फ़रमाया, क्या आप लोगों को मालूम नहीं है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब दोपहर को खाना खा लिया करते थे तो रात को खाना नहीं खाते थे और जब रात को खा लिया करते थे, तो दोपहर को नहीं खाते थे।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 142,
2. हुलीया, भाग 3, पृ० 323

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने बाप-बेटों, भाइयों, बीवियों, ख़ानदानों, मालों, तिजारतों और घरों के बारे में किस तरह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशें और ज़ाती जज़्बे बिल्कुल ख़त्म कर दिए थे और किस तरह अल्लाह, उसके रसूल सल्ल० और हर उस मुसलमान की मुहब्बत को मज़बूती से पकड़ लिया था, जिसे अल्लाह व रसूल सल्ल० की निस्बत हासिल थी और उन्होंने किस तरह हर उस इंसान का ख़ूब इकराम किया जिसे निस्बते मुहम्मदी हासिल हो गई थी।

इस्लाम के ताल्लुक़ात को मज़बूत करने के लिए जाहिलीयत के ताल्लुक़ात को बिल्कुल ख़त्म कर देना

हज़रत इब्ने शौज़ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, बद्र की लड़ाई के दिन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद उनके सामने आते, यह उनके सामने से हट जाते, लेकिन जब उनके वालिद बार-बार उनके सामने आए तो उन्होंने भी उनको क़त्ल करने का इरादा कर लिया और आख़िर उन्हें क़त्ल कर ही दिया। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ (سورت مجادلہ، آیت ۲۲)

'जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर (पूरा-पूरा) ईमान रखते हैं, आप उनको न देखेंगे कि वे ऐसे लोगों से दोस्ती रखते हैं जो

अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के मुख़ालिफ़ हैं, भले ही वे उनके बाप या बेटे या भाई या कुंबे के लोग ही क्यों न हों, इन लोगों के दिलों में अल्लाह ने ईमान बिठा दिया है।'[1] (सूरः मुजादला, आयत 22)

हज़रत मालिक बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाहिलीयत का ज़माना भी देखा है। वह फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मैंने दुश्मन के लश्कर का मुक़ाबला किया। उस लश्कर में मेरा बाप भी था। मैंने उससे आपके बारे में बड़ी सख़्त बात सुनी, मुझसे न रहा गया और मैंने नेज़ा मार कर उसे क़त्ल कर दिया।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे। फिर एक और आदमी ने आकर अर्ज़ किया कि लड़ाई में मेरा बाप मेरे सामने आ गया था, लेकिन मैंने उसे छोड़ दिया। मैं यह चाहता था कि कोई और उसे क़त्ल करे। यह सुनकर भी हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ एक क़िले के साए में बैठा हुआ था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके पास से गुज़रे, तो उसने कहा, इब्ने अबी कब्शा (अबू कब्शा या तो हुज़ूर सल्ल० के नाना का उपनाम है या हज़रत हलीमा सादिया के शौहर का उपनाम है, इसलिए इब्ने अबी कब्शा से हुज़ूर सल्ल० मुराद हैं) ने हमारे ऊपर गर्द व गुबार डाल दिया है।

इस पर उसके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको बुज़ुर्गी अता फ़रमाई है! अगर आप चाहें तो मैं उसका सर आपकी ख़िदमत में ले आऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि तुम अपने बाप के साथ अच्छे बर्ताव का मामला करो और उसके साथ अच्छी तरह पेश आओ।[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 101, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 27, हाकिम, भाग 3, पृ० 265, इसाबा, भाग 2, पृ० 253,
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 27
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 318

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने बाप को क़त्ल करने की इजाज़त मांगी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने बाप को मत क़त्ल करो।[1]

हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबई बिन सलूल रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे यह ख़बर पहुंची है कि आपको मेरे बाप की ओर से जो ना-ज़ेबा बातें पहुंची हैं, उनकी वजह से आप चाहते हैं कि मेरा बाप अब्दुल्लाह बिन उबई क़त्ल कर दिया जाए। अगर आप ऐसा चाहते हैं तो आप इसका मुझे हुक्म फ़रमाएं, मैं उसका सर काट कर आपके पास ले आऊंगा। अल्लाह की क़सम ! तमाम क़बीला ख़ज़रज को मालूम है कि इस क़बीले में कोई आदमी मुझसे ज़्यादा अपने बाप के साथ अच्छा व्यवहार करने वाला नहीं था, इसलिए अब मुझे यह डर है कि आप किसी और को मेरे बाप के क़त्ल करने का हुक्म देंगे और वह मेरे बाप को क़त्ल करेगा, फिर वह मुझे लोगों में चलता हुआ नज़र आएगा, तो कहीं ऐसा न हो कि मेरा नफ़्स ज़ोर में आ जाए और मैं उसे क़त्ल कर डालूं। इस तरह मैं काफ़िर के बदले मुसलमान को क़त्ल कर बैठूं और यों मैं दोज़ख़ की आग में दाख़िल हो जाऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, हम तो उनके साथ नर्मी बरतेंगे और वह जब तक हमारे साथ रहेगा, हम उसके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।[2]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ज़वा बनी मुस्तलिक़ से वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत इब्ने अब्दुल्लाह बिन उबई रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बाप (उनका बाप मुनाफ़िक़ों का सरदार था) पर तलवार सौंत कर

---

1. तबरानी
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 158,

खड़े हो गए और उससे कहा, मैं अल्लाह के लिए अपने पर यह लाज़िम करता हूं कि यह तलवार उस वक़्त म्यान में डालूंगा, जब तुम कहोगे कि मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ज़्यादा इज़्ज़त वाले हैं और मैं ज़्यादा ज़िल्लत वाला हूं।

आख़िर उनके बाप ने ज़ुबान से कहा, तेरा नास हो, मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ज़्यादा इज़्ज़त वाले हैं और मैं ज़्यादा ज़िल्लत वाला हूं।

जब हुज़ूर सल्ल० को इस वाक़िया की ख़बर पहुंची तो आपको यह बहुत पसन्द आया और आपने उनकी तारीफ़ की।[1]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत हंज़ला बिन अबी आमिर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपने-अपने बापों को क़त्ल करने की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इजाज़त मांगी, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़रमा दिया।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने (बाद में अपने बाप) हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मैंने उहुद की लड़ाई के दिन आपको देख लिया था, लेकिन मैंने आपसे अपना मुंह फेर लिया था, (बाप समझकर छोड़ दिया था)।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, लेकिन अगर मैं तुम्हें देख लेता तो मैं तुमसे मुंह न फेरता, बल्कि अल्लाह का दुश्मन समझकर क़त्ल कर देता, उस वक़्त तक हज़रत अब्दुर्रहमान मुसलमान न हुए थे।[3]

हज़रत वाक़दी रहमतुल्लाहि अलैहि बयान करते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु ने बद्र की लड़ाई के दिन मुक़ाबले के लिए ललकारा (उस दिन यह काफ़िरों के साथ थे) तो उनके मुक़ाबले के लिए उनके वालिद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 318,
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 361,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 274, हाकिम, भाग 3, पृ० 475

फ़रमाया, (तुम मुक़ाबले के लिए न जाओ) हमें अभी तुमसे बहुत काम लेने हैं।[1]

हज़रत अबू उबैदा और लड़ाइयों के ख़ूब जानने वाले और दूसरे लोगों का बयान है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे, तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे दिल में कुछ है। मेरे ख़्याल में तुम यह समझते हो कि मैंने तुम्हारे बाप (आस) को क़त्ल किया है, अगर मैंने उसे क़त्ल किया होता तो मैं उस पर तुम्हारे सामने कोई माज़रत पेश न करता। मैंने तो अपने मामूं आस बिन हिशाम बिन मुग़ीरह को क़त्ल किया था। मैं तुम्हारे बाप के पास से गुज़रा था, वह (घायल होकर) ज़मीन पर पड़ा हुआ था और ज़मीन पर ऐसे सर मार रहा था जैसे (गुस्से में आकर) बैल ज़मीन पर सींग मारता है। बहरहाल मैं उससे कतरा कर आगे चला गया और उसे उसके चचेरे भाई हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल किया है।[2]

और इस्तीआब और इसाबा में इसके बाद यह भी है कि हज़रत सईद बिन आस रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, अगर आप इसे क़त्ल कर देते तो (ठीक था, क्योंकि) आप हक़ पर थे और वह बातिल पर था।

हज़रत उमर रज़ि० को उनकी यह बात बहुत अच्छी लगी।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, बद्र की लड़ाई के दिन क़त्ल होने वाले काफ़िरों के बारे में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि उनको घसीट कर कुंएं में डाल दिया जाए, चुनांचे उन्हें उस कुंएं में फेंक दिया गया।

फिर हुज़ूर सल्ल०ने (उस कुएं के किनारे पर) खड़े होकर फ़रमाया, ऐ कुएं वालो! क्या तुमने अपने रब के वायदे को सच्चा पाया? मुझसे तो मेरे रब ने जो वायदा किया था, मैंने तो उसे सच्चा पाया।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 186,
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 290,

मुर्दा लोगों से बात कर रहे हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अब उनको मालूम हो गया है कि उनके रब ने उनसे जो वायदा किया था, वह सच्चा था।

जब हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि उनके बाप को घसीट कर कुएं में डाला जा रहा है, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके चेहरे में नागवारी के असरात महसूस किए और फ़रमाया, ऐ अबू हुज़ैफ़ा! ऐसा मालूम होता है कि तुमने अपने बाप के बारे में जो मंज़र देखा है, इससे तुम्हें नागवारी हो रही है।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरा बाप सरदार आदमी था, मुझे उम्मीद थी कि अल्लाह उसे ज़रूर इस्लाम की हिदायत देंगे, लेकिन जब उसका अंजाम यह हुआ (कि कुफ़्र पर ज़िल्लत के साथ मारा गया) तो मुझे इसका रंज हो रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई।[1]

हज़रत अबुज़्ज़नाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे और उन्होंने अपने बाप उत्बा के मुक़ाबले में लड़ने की दावत दी थी। आगे उन शेरों (पदों) का ज़िक्र किया है, जो उनकी बहन हज़रत हिंद बिन्त उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस बारे में कहे थे।[2]

बनू अब्दुद्दार क़बीला के हज़रत नुबैह बिन वह्ब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र के क़ैदियों को लेकर आए और उन्हें अपने सहाबा रज़ि० में बांट दिया, तो फ़रमाया, मैं तुम्हें ज़ोरदार ताकीद करता हूं कि इन क़ैदियों के साथ अच्छा सुलूक करना।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के सगे भाई अबू अज़ीज़ बिन उमैर बिन हाशिम भी क़ैदियों में थे। हज़रत अबू अज़ीज़

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 269, हाकिम, भाग 3, पृ० 224, बिदाया, भाग 3, पृ० 294,
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 223, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 186,

ही बयान करते हैं कि एक अंसारी आदमी मुझे क़ैद कर रहे थे कि इतने में मेरे भाई मुसअब बिन उमैर रज़ि० मेरे पास से गुज़रे, तो उस अंसारी से कहने लगे, दोनों हाथों से इसे मज़बूती से पकड़े रहना, क्योंकि इसकी मां बहुत मालदार है, वह तुम्हें इसके फ़िदए में ख़ूब देगी।

हज़रत अबू अज़ीज़ कहते हैं, सहाबा जब मुझे बद्र से लेकर चले तो मैं अंसार की एक जमाअत में था, जब भी वह दिन को या रात को खाना अपने सामने रखते, तो रोटी मुझे खिला देते और ख़ुद खजूर खा लेते, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें हमारे बारे में ताकीद फ़रमा रखी थी। उनमें से जिसे भी रोटी का टुकड़ा मिलता, वह मुझे दे देता। मुझे शर्म आ जाती और वह टुकड़ा वापस कर देता, लेकिन वह अंसारी उसे हाथ लगाए बिना फिर मुझे वापस कर देता।

हज़रत अबुल यसर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू अज़ीज़ को क़ैद किया था। जब उनसे हज़रत मुसअब रज़ि० ने यह बात कही थी (कि इसे मज़बूत पकड़ो, इसकी मां बहुत मालदार है) तो हज़रत मुसअब रज़ि० से हज़रत अबू अज़ीज़ ने कहा था, आप (भाई होकर) मेरे बारे में यह ताकीद कर रहे हैं?

तो हज़रत मुस्अब रज़ि० ने उनसे कहा, यह (अंसारी अबुल यसर) मेरे भाई हैं, तुम नहीं हो।

हज़रत अबू अज़ीज़ की मां ने पूछा कि इन क़ुरैशी क़ैदियों का फ़िदया सबसे ज़्यादा क्या दिया गया है? तो उसे बताया गया कि चार हज़ार दिरहम, चुनांचे उसने हज़रत अबू अज़ीज़ के फ़िदए में चार हज़ार दिरहम भेजे।[1]

हज़रत अय्यूब बिन नोमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के सगे भाई हज़रत अबू अज़ीज़ बिन उमैर बद्र की लड़ाई के दिन क़ैद हुए थे और यह हज़रत मुहरिज़ बिन नज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ आए थे, तो हज़रत मुसअब रज़ि०ने हज़रत मुहरिज़ से कहा, इसे दोनों हाथों से मज़बूती से पकड़े

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 307

रखना, क्योंकि इसकी मां मक्का में रहती है और वह बहुत मालदार है।

इस पर हज़रत अबू अज़ीज़ ने हज़रत मुसअब रज़ि० से कहा, ऐ मेरे भाई ! तुम मेरे बारे में यह ताकीद कर रहे हो ?

हज़रत मुस्अब रज़ि० ने कहा, मुहरिज़ मेरा भाई है, तुम नहीं हो। चुनांचे उनकी मां ने उनके फ़िदए में चार हज़ार भेजे।[1]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (क़ुरैश की बद-अह्दी की वजह से) मक्का पर चढ़ाई करना चाहते थे। उन दिनों हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना मुनव्वरा आए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्ल० से हुदैबिया समझौते की मुद्दत बढ़ाने की बात की। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी ओर कोई तवज्जोह न की।

हज़रत अबू सुफ़ियान वहां से खड़े होकर अपनी बेटी हज़रत उम्मे हबीब रज़ियल्लाहु अन्हा के घर गए और जब हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर बैठने लगे तो हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने उसे लपेट दिया। इस पर उन्होंने कहा, ऐ बिटिया ! क्या तुम मुझे इस बिस्तर के क़ाबिल नहीं समझती हो या इस बिस्तर को मेरे क़ाबिल नहीं समझती हो ?

उन्होंने कहा, यह हुज़ूर सल्ल० का बिस्तर है और आप नापाक मुश्रिक इंसान हैं। (आप इस बिस्तर के क़ाबिल नहीं हैं।)

हज़रत अबू सुफ़ियान ने कहा, ऐ बिटिया ! मेरे बाद तुम्हारे अख़्लाक़ बिगड़ गए हैं।[2]

इसके बाद इब्ने इस्हाक़ ने यह ज़िक्र किया है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने कहा, मैं नहीं चाहती कि आप हुज़ूर सल्ल० के बिस्तर पर बैठें।

हज़रत अबुल अह्वस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनके पास दीनार जैसे ख़ूबसूरत तीन बेटे बैठे हुए थे। हम इन तीनों को देखने लगे,

---

1. नस्बुर्राया, भाग 3, पृ० 403,
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 70, बिदाया, भाग 4, पृ० 280

तो वह समझ गए और फ़रमाया, शायद तुम इन बेटों की वजह से मुझ पर रश्क कर रहे हो (कि तुम्हारे भी ऐसे बेटे हों।)

हमने अर्ज़ किया कि ऐसे ही बेटे तो आदमी के लिए रश्क के क़ाबिल हुआ करते हैं।

इस पर उन्होंने अपने कमरे की छत की ओर सर उठाया जो बहुत नीची थी, जिसमें ख़ुत्ताफ़ (अबाबील जैसे परिंदों) ने घोंसला बना रखा था, तो फ़रमाया, मैं इन बेटों को दफ़न करके उनकी क़ब्रों की मिट्टी से अपने हाथों को झाड़ूं, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि इस परिंदे का अंडा गिरकर टूट जाए।

हज़रत अबू उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं कूफ़ा में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की मज्लिस में बैठा करता था। एक दिन वह अपने चबूतरे पर बैठे हुए थे और फ़्लां-फ़्लां औरतें उनकी बीवियां थीं जो बड़े मंसब व जमाल वाली थीं और उनकी इन दोनों से बड़ी ख़ूबसूरत औलाद थी कि इतने में उनके सर के ऊपर एक चिड़िया बोलने लगी और उसने उनके सर पर बीट कर दी।

उन्होंने अपने हाथ से बीट फेंक दी और फ़रमाया, अब्दुल्लाह के सारे बच्चे मर जाएं और इनके बाद मैं भी मर जाऊं, यह मुझे इस चिड़िया के मरने से ज़्यादा पसन्द है।[1]

(सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के दिलों में मख़्लूक़े ख़ुदा के लिए इतनी मुहब्बत थी कि उन्हें जानवर भी अपने बच्चों से ज़्यादा प्यारे लगते थे।)

राय वाले लोगों से मश्विरा के उन्वान के ज़ेल में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़रमान गुज़र चुका है कि अल्लाह की क़सम! (बद्र के क़ैदियों के बारे में) जो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की राय है, वह मेरी नहीं है, बल्कि मेरी राय तो यह है कि फ़्लां आदमी जो मेरा क़रीबी रिश्तेदार है, वह मेरे हवाले कर दें, मैं उसकी गरदन उड़ा दूं और अक़ील को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले कर दें। वह

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 133,

अक़ील की गरदन उड़ा दें।

फ़्लां आदमी जो हज़रत हमज़ा रज़ि० के भाई हैं यानी हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के हवाले कर दें। हज़रत हमज़ा रज़ि० उनकी गरदन उड़ा दें, ताकि अल्लाह को पता चल जाए कि हमारे दिलों में मुश्रिकों के बारे में किसी क़िस्म की नर्मी नहीं है।

अंसार सहाबा किराम रज़ि० के ऐसे ही क़िस्से (पहले भाग में) अंसार के (इस्लाम के ताल्लुक़ात को मजबूत करने के लिए) जाहिलीयत के ताल्लुक़ात को क़ुरबान करने के बाब में गुज़र चुके हैं।

हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दिलों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! क्या हम आपके लिए एक छप्पर न बना दें, जिसमें आप रहें और आपकी सवारियां तैयार करके आपके पास खड़ी कर दें, फिर हम दुश्मन से लड़ने चले जाएं। अगर अल्लाह ने हमें इज़्ज़त दे दी और हमें दुश्मन पर ग़ालिब कर दिया तो फिर तो यह वह बात होगी जो हमें पसन्द है और अगर ख़ुदा न करे, दूसरी शक्ल हो गई (यानी हम हार जाएं) तो आप सवारियों पर बैठकर हमारी क़ौम के उन लोगों के पास चले जाएं जो मदीना मुनव्वरा में पीछे रह गए हैं, क्योंकि मदीना मुनव्वरा में ऐसे बहुत से लोग रह गए हैं कि हमें उनसे ज़्यादा आपसे मुहब्बत नहीं है, (बल्कि हमारे बराबर ही है।) अगर उन्हें ज़रा भी अन्दाज़ा होता कि आपको लड़ाई लड़नी पड़ेगी, तो वे हरगिज़ मदीना में पीछे न रहते। अल्लाह उनके ज़रिए आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाएंगे, वे आपके साथ ख़ैरख़्वाही का मामला करेंगे और आपके साथ अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेंगे।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद रज़ि० की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई और उनके लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई और फिर हुज़ूर सल्ल० के लिए एक छप्पर बनाया गया, जिसमें आप रहे।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे आपसे अपनी जान से और अपनी औलाद से भी ज़्यादा मुहब्बत है। मैं कभी-कभी घर में होता हूं, आप मुझे याद आ जाते हैं, तो फिर जब तक ख़िदमत में हाज़िर होकर आपकी

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 268,

ज़ियारत न कर लूं, मुझे चैन नहीं आता।

अब मुझे यह ख़्याल आया है कि मेरा भी इन्तिक़ाल हो जाएगा, आप भी दुनिया से तशरीफ़ ले जाएंगे और आप तो नबियों के साथ सबसे ऊपर की जन्नत में चले जाएंगे और मैं नीचे की जन्नत में रह जाऊंगा, तो मुझे डर है कि मैं वहां आपकी ज़ियारत न कर सकूंगा (तो फिर मेरा जन्नत में दिल कैसे लगेगा ?)

अभी हुज़ूर सल्ल० ने इसका कुछ जवाब नहीं दिया था कि इतने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम यह आयत लेकर आए—

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ
وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ (سورت نساء آيت ٦٩)

'और जो आदमी अल्लाह और रसूल का कहना मान लेगा, तो ऐसे लोग भी उन लोगों के साथ होंगे, जिन पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है, यानी नबी और सिद्दीक़ और शहीद और नेक और भले लोग।'[1]

(सूरः निसा, आयत 69)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे आपसे इतनी ज़्यादा मुहब्बत है कि जब आप मुझे याद आ जाते हैं, तो अगर मैं आकर आपकी ज़ियारत न कर लूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मेरी जान निकल जाएगी। अब मुझे यह ख़्याल आया कि अगर मैं जन्नत में गया भी तो मुझे आपसे नीचे की जन्नत मिलेगी (और मैं वहां से आपकी ज़ियारत न कर सकूंगा) तो मुझे जन्नत में बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ेगी, इसलिए मैं चाहता हूं कि जन्नत के दर्जे में मैं आपके साथ हो जाऊं (ताकि जब दिल चाहे, आपकी ज़ियारत कर लिया करूं।)

हुज़ूर सल्ल० ने कुछ जवाब न दिया। इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी— وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 7, हुलीया, भाग 4, पृ० 240.

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उस आदमी को बुलाया और यह आयत पढ़कर सुनाई।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम में यह हदीस है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने आकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि क़ियामत कब आएगी?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है?

उसने कहा, और तो कुछ नहीं, बस यह है कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत है।

आपने फ़रमाया, तुम उसी के साथ होगे जिससे तुम्हें यहां मुहब्बत होगी।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने जो यह फ़रमाया कि तुम उसी के साथ होगे जिससे तुम्हें मुहब्बत होगी, इससे हमें जितनी ख़ुशी हुई, उतनी ख़ुशी और किसी चीज़ से नहीं हुई और मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुहब्बत है और चूंकि मुझे इन लोगों से मुहब्बत है, इस वजह से मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं इन्हीं लोगों के साथ हूंगा।

बुख़ारी की एक रिवायत में यह है कि एक देहाती आदमी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क़ियामत कब क़ायम होगी?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तेरा भला हो, तुमने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है?

उसने कहा, और तो कुछ नहीं तैयार कर रखा है। बस इतनी बात ज़रूर है कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत है।

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 7

आपने फ़रमाया, तुम्हें जिससे मुहब्बत होगी, तुम उसी के साथ होगे।

हज़रत अनस रज़ि० ने पूछा, यह ख़ुशख़बरी हमारे लिए भी है (या सिर्फ़ इस देहाती के लिए है?)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, तुम्हारे लिए भी है। इस पर उस दिन हमें बहुत ज़्यादा ख़ुशी हुई।

तिर्मिज़ी की रिवायत में इसके बाद यह है हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० को इससे ज़्यादा किसी और चीज़ से ख़ुश होते हुए नहीं देखा।

एक आदमी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! एक आदमी दूसरे से इस वजह से मुहब्बत करता है कि वह नेक अमल करता है, लेकिन यह ख़ुद वह नेक अमल नहीं करता (तो क्या यह भी मुहब्बत की वजह से उसके साथ होगा?)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आदमी जिससे मुहब्बत करता है, उसी के साथ होगा।

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! एक आदमी एक क़ौम से मुहब्बत करता है, लेकिन इन जैसे अमल नहीं कर सकता (क्या वह भी उनके साथ होगा?)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबूज़र रज़ि०! तुम उसी के साथ होगे जिससे तुम मुहब्बत करोगे।

मैंने कहा, मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जिससे मुहब्बत करोगे, उसी के साथ होगे।

मैंने अपना जुम्ला (वाक्य) फिर दोहराया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फिर यही इर्शाद फ़रमाया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त फ़ाक़ा की नौबत आ

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 429, 431, 433,

गई, जिसकी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी तरह ख़बर हो गई। वह किसी काम की खोज में निकले ताकि खाने की किसी चीज़ का इन्तिज़ाम हो जाए और वह उसे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर सकें।

चुनांचे वह एक यहूदी के बाग़ में गये और पानी के सत्तरह डोल निकाले। हर डोल के बदले एक खजूर तै हुई थी। यहूदी ने अपनी तमाम क़िस्म की खजूरें हज़रत अली रज़ि० के सामने रख दीं कि जिसमें से चाहें ले लें। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने सत्तरह अज्वा खजूरें ले लीं और जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दीं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, ऐ अबुल हसन ! तुम्हें यह खजूरें कहां से मिल गईं ?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मुझे आपके सख़्त फ़ाक़े की ख़बर मिली, तो मैं किसी काम की खोज में गया, ताकि आपके लिए खाने की कोई चीज़ हासिल कर सकूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने ऐसा अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से किया है ?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो बन्दा भी अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है, फ़क़्र व फ़ाक़ा उसकी ओर उससे भी ज़्यादा तेज़ी से आता है जितनी तेज़ी से पानी की बाढ़ निचान की ओर जाती है, इसलिए जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करे उसे चाहिए कि वह बला और आज़माइश के लिए ढाल (यानी सब्र, ज़ोह्द व क़नाअत) तैयार न कर ले।[1]

हज़रत काब बिन उज्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने देखा कि आपका रंग बदला हुआ है। मैंने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 321

क़ुर्बान हों, क्या बात है, मुझे आपका रंग बदला हुआ नज़र आ रहा है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तीन दिन से मेरे पेट में ऐसी कोई चीज़ नहीं गई जो किसी जानदार के पेट में जा सकती है।

यह सुनते ही मैं वहां से चला गया तो मैंने देखा कि एक यहूदी (कुंएं से पानी निकालकर) अपने ऊंटों को पिलाना चाहता है। मैंने एक डोल के बदले में एक खजूर मज़दूरी पर उसके ऊंटों को पानी पिलाना शुरू किया, आख़िरकार कुछ खजूरें जमा हो गईं, जो मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर पेश कर दीं।

आपने पूछा, ऐ काब! तुम्हें ये खजूरें कहां से मिल गईं? मैंने आपको सारी बात बता दी।

आपने फ़रमाया, ऐ काब रज़ि० ! क्या तुम्हें मुझसे मुहब्बत है?

मैंने कहा, जी हां। मेरा बाप आप पर क़ुर्बान हो।

आपने फ़रमाया, जो मुझसे मुहब्बत करता है, उसकी ओर फ़क़्र उससे भी ज़्यादा तेज़ी से आता है, जितनी तेज़ी से बाढ़ निचान की तरफ़ जाती है। अब तुम पर अल्लाह की ओर से आज़माइश आएगी, इसके लिए ढाल तैयार कर लो। (इसके बाद मैं बीमार हो गया और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में न जा सका तो) जब हुज़ूर सल्ल० ने मुझे कुछ दिनों तक न देखा, तो सहाबा रज़ि० से पूछा, काब को क्या हुआ? (नज़र नहीं आ रहा)

सहाबा रज़ि० ने बताया कि वह बीमार हैं।

यह सुनकर आप पैदल चलकर मेरे घर तश्रीफ़ लाए, और फ़रमाया, ऐ काब! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो।

मेरी मां ने कहा, ऐ काब! तुम्हें जन्नत में जाना मुबारक हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अल्लाह पर क़सम खाने वाली औरत कौन है?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह मेरी मां है।

हुज़ूर सल्ल० ने (मेरी मां को) फ़रमाया, ऐ उम्मे काब रज़ि० ! तुम्हें क्या मालूम? शायद काब ने कोई बे-फ़ायदा बात कही हो और (मांगने

वाले ज़रूरतमंद को) ऐसी चीज़ न दी हो जिसकी ख़ुद काब रज़ि० को ज़रूरत न हो।[1]

कंज़ की रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं, शायद काब रज़ि० ने बे-मतलब की बात कही हो या ऐसी चीज़ न दी हो, जिसकी ख़ुद उसे ज़रूरत न हो।

हज़रत हुसैन बिन दहवह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत तलहा बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मिलने गए तो वह हुज़ूर सल्ल० से चिमटने लगे और आपके मुबारक पांवों का बोसा देने लगे और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे जो चाहें हुक्म दें, मैं आपके किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।

हज़रत तलहा रज़ि० नवउम्र लड़के थे, इसलिए उनकी इस बात पर हुज़ूर सल्ल० को बड़ा ताज्जुब हुआ। इस पर आपने उनसे फ़रमाया, जाओ और जाकर अपने बाप को क़त्ल कर दो।

वह अपने बाप को क़त्ल करने के इरादे से चल पड़े, तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बुलाया और फ़रमाया, इधर आ जाओ। मुझे रिश्ते तोड़ने के लिए नहीं भेजा गया है।

इसके बाद हज़रत तलहा रज़ि० बीमार हो गए। हुज़ूर सल्ल० उनका पूछना करने उनके घर गए। सर्दी का ज़माना था, ख़ूब सर्दी पड़ रही थी और बादल भी थे। जब आप वापस आने लगे तो हज़रत तलहा रज़ि० के घरवालों से आपने कहा, मुझे तो हज़रत तलहा रज़ि० पर मौत के निशान दिखाई पड़ रहे हैं। जब इनका इंतिक़ाल हो तो मुझे ख़बर कर देना, ताकि मैं इनकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ सकूं और इनके नहलाने और कफ़न देने में जल्दी करना।

हुज़ूर सल्ल० अभी क़बीला बनू सालिम बिन औफ़ तक नहीं पहुंचे थे कि हज़रत तलहा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया और रात का वक़्त हो गया था। हज़रत तलहा रज़ि० ने इंतिक़ाल से पहले जो बातें कीं, उनमें

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 314, तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 153, कंज़, भाग 3, पृ० 320,

यह वसीयत भी थी कि मुझे जल्दी से दफ़न करके मुझे मेरे रब के पास पहुंचा देना और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न बुलाना, क्योंकि मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो हुज़ूर सल्ल० मेरी वजह से रात ही को तशरीफ़ लाएं और रास्ते में यहूदी हुज़ूर सल्ल० को कोई तक्लीफ़ पहुंचा दें।

चुनांचे (रात को हुज़ूर सल्ल० को ख़बर दिए बग़ैर जनाज़े की नमाज़ पढ़कर उनके घरवालों ने उनको दफ़ना दिया और) सुबह को जब हुज़ूर सल्ल० को इसकी ख़बर हुई तो आप हज़रत तलहा रज़ि० की क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और आप उनकी क़ब्र पर खड़े हो गए और लोग भी आपके साथ लाइन बनाकर खड़े हो गए और आपने दोनों हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! तेरी मुलाक़ात तलहा रज़ि० से इस हाल में हो कि तू उसे देखकर हंस रहा हो और वह तुझे देखकर हंस रहा हो।[1]

हज़रत तलहा बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने अर्ज़ किया, आप अपना हाथ बढ़ाएं, ताकि मैं आपसे बैअत हो जाऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर मैं तुम्हें अपने मां-बाप से ताल्लुक़ तोड़ने को कहूं, तो भी तुम बैअत होने को तैयार हो?

मैंने कहा, नहीं। मैंने दोबारा हाज़िर होकर अर्ज़ किया, आप अपना हाथ बढ़ाएं, ताकि मैं आपसे बैअत हो जाऊं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किस बात पर बैअत होना चाहते हैं?

मैंने कहा, इस्लाम पर।

आपने फ़रमाया, और अगर मैं तुम्हें मां-बाप से ताल्लुक़ तोड़ने को कहूं तो फिर?

मैंने कहा, नहीं। मैंने फिर तीसरी बार हाज़िर होकर बैअत की दरख़्वास्त की, मेरी मां ज़िंदा थीं और मैं उनके साथ औरों से ज़्यादा अच्छा व्यवहार करता था।

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 50, इसाबा, भाग 3, पृ० 227, हैसमी, भाग 9, पृ० 365

हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ तलहा रज़ि० ! हमारे दीन में रिश्ता तोड़ना नहीं है, लेकिन मैंने चाहा कि तुम्हारे दीन में किसी तरह का शक न रहे।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हज़रत तलहा रज़ि० मुसलमान हो गए और बड़े अच्छे मुसलमान बने। इसके बाद यह बीमार हो गए। हुज़ूर सल्ल० उनका पूछना करने के लिए उनके घर गए। जब हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए तो यह बेहोश थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे तो यही नज़र आ रहा है कि आज रात ही इनका इंतिक़ाल हो जाएगा, लेकिन अगर इन्हें फ़ायदा हो तो तुम मुझे पैग़ाम भिजवा देना।

आधी रात को कहीं वह होश में आए तो पूछा, क्या हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरा पूछना करने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए?

घरवालों ने कहा, आए थे और यह फ़रमा गए थे कि जब तुम्हें होश आए तो हम उन्हें पैग़ाम भेज दें।

हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा, अब उन्हें पैग़ाम न भेजो, क्योंकि रात का वक़्त है, कोई जानवर उन्हें काट लेगा या उन्हें कोई तक्लीफ़ पहुंच जाएगी। जब मैं मर जाऊं तो हुज़ूर सल्ल० को मेरा सलाम कह देना और उनसे अर्ज़ कर देना कि वह मेरे लिए इस्तग़फ़ार फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० जब सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो उनके बारे में पूछा। लोगों ने बताया कि उनका इंतिक़ाल हो गया है और इंतिक़ाल से पहले उन्होंने कहा था कि आपको न बताया जाए। हुज़ूर सल्ल० ने उसी वक़्त हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! उससे तेरी मुलाक़ात इस हाल में हो कि तू उसे देखकर हंस रहा हो और वह तुझे देखकर हंस रहा हो।[1]

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 365, इसाबा, भाग 3, पृ० 227

रज़ियल्लाहु अन्हु की यह शिकायत बयान की गई कि वह मज़ाक़ बहुत करते हैं और बेकार बातें करते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे छोड़ दो। उसमें एक छिपी हुई ख़ूबी है और वह यह है कि वह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है।[1]

हज़रत अदरअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं एक रात आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहरा देने लग गया, तो वहां एक आदमी ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ रहा था। हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह (ऊंची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने वाला) रियाकार (पाखंडी) है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (नहीं) यह तो अब्दुल्लाह ज़ुलबिजादैन रज़ियल्लाहु अन्हु है। फिर उनका मदीना में इंतिक़ाल हो गया। जब सहाबा रज़ि० उनका जनाज़ा तैयार करके उन्हें उठाकर ले चले, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनके साथ नर्मी करो, अल्लाह ने उनके साथ नर्मी का मामला किया है। यह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत किया करते थे।

जब हुज़ूर सल्ल० क़ब्रस्तान पहुंचे, तो क़ब्र खोदी जा रही थी। आपने फ़रमाया, उनकी क़ब्र ख़ूब खुली और कुशादा बनाओ। अल्लाह ने उनके साथ कुशादगी का मामला किया है।

एक सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको इनके मरने का बड़ा ग़म है ?

आपने फ़रमाया, हां, क्योंकि यह अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करते थे।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास था, उनका पांव सो गया।

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 223,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 322,

मैंने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! आपके पांव को क्या हुआ ?

उन्होंने कहा, यहां से उसका पट्ठा इकट्ठा हो गया है।

मैंने कहा, आपको जिससे सबसे ज़्यादा मुहब्बत है, उसका नाम लेकर पुकारें (इनशाअल्लाह पांव ठीक हो जाएगा) उन्होंने कहा, 'ऐ मुहम्मद सल्ल० ! और यह कहते ही उनका पांव ठीक हो गया, और उन्होंने उसे फैला लिया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० के अल्लाह के रास्ते में शहीद होने के शौक़ के बाब में गुज़र चुका है कि हज़रत ज़ैद बिन दसिना रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल करते वक़्त उनसे हज़रत अबू सुफ़ियान (यह उस वक़्त तक इस्लाम नहीं लाए थे) ने कहा, ऐ ज़ैद ! मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं, क्या तुमको यह पसन्द है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इस वक़्त हमारे पास हों और हम तुम्हारी जगह उनकी गरदन मार दें और तुम अपने बाल-बच्चों में रहो ?

तो हज़रत ज़ैद रज़ि० ने जवाब में कहा, अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस वक़्त जहां हैं, वहां ही उनको एक कांटा चुभे और इस तक्लीफ़ के बदले में मैं अपने बाल-बच्चों में बैठा हुआ हूं।

अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते हुए नहीं देखा, जितनी मुहब्बत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा रज़ि० को मुहम्मद सल्ल० से है और यह भी गुज़र चुका है कि काफ़िर हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को सूली पर चढ़ा कर ऊंची आवाज़ से क़सम देकर पूछ रहे थे, क्या तुम यह पसन्द करते हो कि (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी जगह हों (और उनको सूली दे दी जाए ?)

हज़रत ख़ुबैब रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, अज़ीम (महान) अल्लाह की क़सम ! मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मेरे बदले में उनके पांव में एक कांटा भी चुभे।

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 154,

सहाबा किराम रज़ि० का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत पर मुक़द्दम रखना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू कुहाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने के क़िस्से में बयान करते हैं, जब हज़रत अबू कुहाफ़ा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० रो पड़े।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों रोते हो?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, अगर इस वक़्त मेरे वालिद के हाथ की जगह आपके चचा का हाथ (बैअत होने के लिए) होता और वह मुसलमान होते और अल्लाह उनके इस्लाम से आपकी आंख ठंडी कर देते, तो यह मेरे लिए मेरे बाप के मुसलमान होने से ज़्यादा ख़ुशी की वजह होता और मुझे ज़्यादा पसन्द होता (क्योंकि आपको चचा के इस्लाम लाने से ज़्यादा ख़ुशी होती)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद हज़रब अबू कुहाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को मक्का की जीत के दिन हाथ पकड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लेकर आए, क्योंकि वह बूढ़े भी थे और अंधे भी। हुज़ूर सल्ल० ने हुज़ूर अबूबक्र रज़ि० से फ़रमाया, अरे, तुमने इन बड़े मियां को घर ही क्यों न रहने दिया, हम इनके पास चले जाते? हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने चाहा कि अल्लाह इनको (ख़ुद चलकर ख़िदमत में हाज़िर होने का) अज्र अता फ़रमाए। मुझे अपने वालिद के इस्लाम लाने से जितनी ख़ुशी हो रही है, (आपके चचा) अबू तालिब के इस्लाम लाने से इससे ज़्यादा ख़ुशी होती, क्योंकि इससे आपकी आंखें ठंडी होतीं और आपकी आंखों को ठंडा करना ही मेरी ज़िंदगी का हासिल है।

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 116.

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम ठीक कह रहे हो, (तुम्हारे दिल में यही बात है।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, बद्र की लड़ाई के दिन दूसरे क़ैदियों के साथ हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी क़ैद हुए थे। उन्हें एक अंसारी आदमी ने क़ैद किया था। अंसार ने उन्हें क़त्ल करने की धमकी दी थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी ख़बर पहुंची, तो आपने फ़रमाया, आज रात मैं अपने चचा अब्बास की वजह से सो नहीं सका, क्योंकि अंसार कह चुके हैं कि वे अब्बास को क़त्ल कर देंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, क्या मैं अंसार के पास जाऊं? (और उनसे अब्बास को ले आऊं)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, जाओ। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने जाकर अंसार से कहा, अब्बास को छोड़ दो।

अंसार ने कहा, नहीं। अल्लाह की क़सम! हम इन्हें नहीं छोड़ेंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अगर इनके छोड़ने से अल्लाह के रसूल सल्ल० राज़ी और ख़ुश हों, तो फिर?

अंसार ने कहा, अगर इनके छोड़ने से अल्लाह के रसूल सल्ल० राज़ी और ख़ुश हैं, तो फिर तुम उनको ले लो। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने अंसार से हज़रत अब्बास रज़ि० को ले लिया।

जब वह हज़रत उमर रज़ि० के हाथ में आ गए, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, ऐ अब्बास! मुसलमान हो जाओ। अल्लाह की क़सम, तुम्हारा मुसलमान होना मुझे (अपने बाप ख़त्ताब) के मुसलमान होने से ज़्यादा पसन्दीदा है और इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि मैंने देखा है कि हुज़ूर सल्ल० को तुम्हारा मुसलमान होना बहुत ज़्यादा पसन्द है।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत उमर

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 174,
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 298

रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, इस्लाम ले आओ। तुम्हारा इस्लाम लाना मुझे (अपने बाप) ख़त्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा महबूब है और इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि मैंने देखा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह चाहते हैं कि तुम्हें इस्लाम लाने में सबक़त हासिल हो जाए।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने किसी काम के करवाने के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर बहुत ज़्यादा तक़ाज़ा किया और उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ज़रा यह बताएं कि अगर आपके पास हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चचा मुसलमान होकर आ जाते तो आप उनके साथ क्या करते ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम, मैं उनके साथ बहुत अच्छा सुलूक करता।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, मैं नबी करीम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का चचा हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! (यह हज़रत अब्बास रज़ि० का उपनाम है) आपका क्या ख़्याल है? अल्लाह की क़सम ! आपके बाप मुझे अपने बाप से ज़्यादा पसन्दीदा हैं।

हज़रत अब्बास ने कहा, वाक़ई, अल्लाह की क़सम !

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां, अल्लाह की क़सम ! क्योंकि मुझे मालूम है कि आपके बाप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेरे बाप से ज़्यादा महबूब हैं और मैं हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत पर तर्जीह देता हूं।[2]

हज़रत अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और उनसे कहा, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 69
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 20

बहरैन का इलाक़ा जागीर के तौर पर दे दिया था। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, इस बात का और किस को इल्म है?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० हज़रत मुग़ीरह रज़ि० को ले आए और हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने उनके हक़ में गवाही दी, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्बास रज़ि० के हक़ में फ़ैसला न किया, गोया कि उन्होंने हज़रत मुग़ीरह रज़ि० की गवाही को क़ुबूल न किया, इस पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० को सख़्त बात कह दी।

हज़रत उमर रज़ि० ने (हज़रत अब्बास रज़ि० के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० से) कहा, ऐ अब्दुल्लाह! अपने वालिद का हाथ पकड़ लो। अल्लाह की क़सम! ऐ अबुल फ़ज़्ल! अगर मेरे बाप ख़त्ताब मुसलमान हो जाते, तो उनके इस्लाम लाने पर मुझे जितनी ख़ुशी होती, मुझे आपके इस्लाम लाने पर इससे ज़्यादा ख़ुशी हुई थी, क्योंकि आपका इस्लाम हुज़ूर सल्ल० की ख़ुशी की वजह थी।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो शुरू में हमारा चलन यह था कि जब हममें से किसी का इन्तिक़ाल होने लगता, हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़बर करते। हुज़ूर सल्ल० उसके पास तशरीफ़ ले जाते और उसके लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाते, यहां तक कि जब उसका इन्तिक़ाल हो जाता, तो हुज़ूर सल्ल० अपने साथियों के साथ वापस तशरीफ़ ले आते और कभी उसके दफ़नाने तक वहीं तशरीफ़ रखते, इस तरह आपको कभी-कभी वहां बड़ी देर लग जाती।

जब हम लोगों ने महसूस किया कि इस तरह हुज़ूर सल्ल० को बड़ी मशक़्क़त होती है, तो हमने आपस में एक दूसरे से कहा कि हम हुज़ूर सल्ल० को इन्तिक़ाल हो जाने के बाद ख़बर किया करें, तो उससे हुज़ूर सल्ल० को ज़्यादा ठहरने की मशक़्क़त न होगी; चुनांचे फिर हम लोग ऐसे ही करने लग गए और हुज़ूर सल्ल० को साथी के इन्तिक़ाल के बाद

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 14

ख़बर करते, आप तशरीफ़ लाकर उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ते। उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते, कभी जनाज़े की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप वापस तशरीफ़ ले जाते और कभी दफ़न तक ठहरे रहते।

एक अर्से तक हमारा यही चलन रहा, फिर हमने आपस में कहा, अल्लाह की क़सम ! अगर हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तशरीफ़ लाने का कष्ट न दिया करें, बल्कि हम जनाज़े को उठाकर हुज़ूर सल्ल० के घर के पास ले जाया करें, फिर हुज़ूर सल्ल० को ख़बर किया करें और हुज़ूर सल्ल० अपने घर के पास ही उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ा दिया करें, तो उसमें हुज़ूर सल्ल० को ज़्यादा आसानी होगी, चुनांचे हमने फिर ऐसा करना शुरू कर दिया।

हज़रत मुहम्मद बिन उमर रज़ि० कहते हैं, इस वजह से उस जगह को जनाज़ागाह कहा जाता है, क्योंकि जनाज़े उठा कर वहां लाए जाते थे और फिर इसके बाद से आज तक यही सिलसिला चला आ रहा है कि लोग अपने जनाज़े वहां से लाते हैं और वहां उन पर जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाती है।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा रज़ि० ! अल्लाह की क़सम ! मैंने ऐसा कोई नहीं देखा, जिससे हुज़ूर सल्ल० को आपसे ज़्यादा मुहब्बत हो। अल्लाह की क़सम ! आपके वालिद के बाद आपसे ज़्यादा मुझे किसी से मुहब्बत नहीं है।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़्ज़त और ताज़ीम करना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, सहाबा किराम रज़ि० मुहाजिरीन और अंसार बैठे हुए थे और उनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि० और

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 257
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 111

हज़रत उमर रज़ि० भी होते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ ले आते, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० के अलावा और कोई भी हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ (बड़कपन की वजह से) निगाह न उठाता।

ये दोनों आपकी तरफ़ देखते और आप उन दोनों की ओर देखते। दोनों हुज़ूर सल्ल० को देखकर मुस्कराते और हुज़ूर सल्ल० उन्हें देखकर मुस्कराते, (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० को इन दोनों से बहुत ताल्लुक़ और बहुत ज़्यादा मुनासबत थी।)[1]

हज़रत उसामा बिन शरीक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ऐसे सुकून से बैठे हुए थे कि गोया हमारे सरों पर परिंदे बैठे हुए हैं, यानी बिल्कुल हरकत नहीं कर रहे थे, क्योंकि परिंदा ज़रा-सी हरकत से उड़ जाता है।

हममें से कोई आदमी बात नहीं कर रहा था कि इतने में कुछ लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने पूछा, अल्लाह के बन्दों में से कौन अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इनमें से सबसे अच्छे अख़्लाक़ वाला।[2]

हज़रत उसामा बिन शरीक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आपके सहाबा आपके चारों ओर ऐसे सुकून से बैठे हुए थे कि जैसे उनके सरों पर परिंदे बैठे हुए हों।[3]

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं किसी चीज़ के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछने का इरादा करता, लेकिन हुज़ूर सल्ल० के रौब की वजह से दो साल बग़ैर पूछे गुज़ार देता।[4]

---

1. शिफ़ा, भाग 2, पृ० 33
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 187
3. तर्जुमानुस्सुन्नः, भाग 1, पृ० 367
4. तर्जुमानुस्सुन्नः, भाग 1, पृ० 370

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे एक भरोसेमंद अंसारी ने यह बयान किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब वुज़ू फ़रमाते या खंखारते तो सहाबा रज़ि० झपट कर वुज़ू का पानी और खंखार ले लेते और उसे अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेते।

एक बार हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हम इससे बरकत हासिल करना चाहते हैं। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० का महबूब बनना चाहता है, उसे चाहिए कि वह बात सच्ची करे, अमानत अदा करे और अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ न पहुंचाए।[1]

इमाम बुख़ारी ने हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा और मरवान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हुदैबिया समझौते की जो हदीस बयान की है, वह भाग 1 में गुज़र चुकी है कि फिर हज़रत उर्व: हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० को बड़े ग़ौर से देखने लगे।

वह कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी थूकते, तो उसे कोई न कोई सहाबी अपने हाथ पर ले लेता और उसको अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब उन्हें किसी काम के करने का हुक्म देते, तो सहाबा रज़ि० उसे फ़ौरन करते और जब आप वुज़ू फ़रमाते तो आपके वुज़ू के पानी को लेने के लिए सहाबा रज़ि० एक दूसरे पर टूट पड़ते और लड़ने के क़रीब हो जाते और जब आप बातें करते तो सहाबा रज़ि० आपके सामने अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते और सहाबा रज़ि० के दिल में आपकी इतनी अज़्मत थी कि वे आपको नज़र भरकर नहीं देख सकते थे।

चुनांचे उर्व: अपने साथियों के पास वापस गए और उनसे यह कहा कि मैं बड़े-बड़े बादशाहों के दरबार में गया हूं, क़ैसर व किसरा और नजाशी के दरबार में गया हूं, अल्लाह की क़सम! मैंने ऐसा कोई बादशाह नहीं देखा जिसकी ताज़ीम उसके दरबारी इतनी करते हों जितनी मुहम्मद

1. कंज़, भाग 8, पृ० 228,

सल्ल० के सहाबा मुहम्मद की करते हैं।

हज़रत अबू क़ुराद सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। आपने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया। फिर आपने उसमें हाथ डालकर वुज़ू करना शुरू किया। हम हुज़ूर सल्ल० के वुज़ू के पानी को हाथों में लेकर पीते जाते। यह देखकर आपने फ़रमाया, तुम इस तरह क्यों कर रहे हो?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की मुहब्बत की वजह से।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० भी तुमसे मुहब्बत करने लगें तो जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए और रखने वाला मांग करे तो तुम वह अमानत अदा करो और जब तुम बात करो तो सच बोलो और जो तुम्हारा पड़ोसी बन जाए, उसके साथ अच्छा व्यवहार करो।[1]

हज़रत आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उनके बाप (हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि०) ने उन्हें यह क़िस्सा सुनाया कि वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए। हुज़ूर सल्ल० उस वक़्त पछने लगवा रहे थे। फ़ारिग़ होने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! यह ख़ून ले जाओ और ऐसी जगह डालकर आओ जहां तुम्हें कोई न देखे। हुज़ूर सल्ल० के घर से बाहर आकर मेरे वालिद ने वह ख़ून पी लिया।

जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, ऐ अब्दुल्लाह! तुमने ख़ून का क्या किया?

उन्होंने कहा, ऐसी छिपी हुई जगह में डालकर आया हूं कि मुझे यक़ीन है कि लोगों में से किसी को पता न चल सकेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, शायद तुमने उसे पी लिया है?

उन्होंने कहा, जी हां।

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 271,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ख़ून क्यों पिया? लोगों को तुमसे हलाकत हो और तुम्हें लोगों से। (मर्वान और अब्दुल मलिक की तरफ़ से जो फ़ित्ना पेश आया, उसकी ओर इशारा है)

हज़रत अबू मूसा कहते हैं, हज़रत अबू आसिम ने फ़रमाया कि लोगों का ख़्याल यह था कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० में जो इतनी ज़्यादा ताक़त थी, वह उस ख़ून की बरकत से थी।[1]

एक रिवायत में यह है, लोगों का यह ख़्याल है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लहु अन्हुमा में जो बहुत ज़्यादा ताक़त थी, वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ून की ताक़त की वजह से थी। (हुज़ूर सल्ल० के फ़ुज़्लात और ख़ून सब पाक थे।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ग़ुलाम हज़रत कैसान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के पास एक तसला है जिसमें से कुछ पी रहे हैं। उसे पीकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, काम से फ़ारिग़ हो गए?

उन्होंने कहा, जी हां।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या काम था?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने अपने पछने का धोवन उसे गिराने के लिए दिया था।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम ! जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, उन्होंने तो उसे पी लिया है।

हुज़ूर सल्ल ने फ़रमाया, तुमने उसे पी लिया है?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, जी हां।

---

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 310, हाकिम, भाग 3, पृ० 554, हैसमी, भाग 8, पृ० 270, कंज़, भाग 7, पृ० 57

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों ?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, मैंने चाहा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक ख़ून मेरे पेट में चला जाए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत (अब्दुल्लाह) बिन ज़ुबैर रजि० के सर पर हाथ फेरकर इर्शाद फ़रमाया, तुम्हें लोगों से हलाकत हो और लोगों को तुमसे। तुम्हें आग नहीं छुएगी सिर्फ़ अल्लाह की क़सम पूरी करने के लिए पुले सिरात से गुज़रना पड़ेगा।[1]

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पछने लगवाए और फ़रमाया, यह ख़ून ले जाओ और इसे ऐसी जगह दफ़न कर दो जहां जानवरों, परिंदों और इंसानों से बचा रहे।

मैं ख़ून ले गया और छुपकर उसे पी लिया, फिर आकर मैंने हुज़ूर सल्ल० को बताया, तो आप हंस पड़े।[2]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब उहुद की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक चेहरा घायल हो गया, तो मेरे बाप हज़रत मालिक बिन सिनान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० के ख़ून को चूस कर निगल लिया। लोगों ने उनसे कहा, अरे मियां ! क्या तुम ख़ून पी रहे हो ?

उन्होंने कहा, हां ! मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक ख़ून पी रहा हूं। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनके ख़ून के साथ मेरा ख़ून मिल गया है, इसलिए इन्हें जहन्नम की आग नहीं छुएगी।[3]

हज़रत हुकैमा बिन्त उमैमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपनी मां से नक़ल करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक लकड़ी का प्याला था, जिसे आप अपने तख़्त के नीचे रखते थे और कभी (रात को) उसमें पेशाब कर लिया करते थे। एक बार आपने खड़े होकर उसे

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 330, कंज़, भाग 7, पृ० 56,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 270
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 271

खोजा, वह प्याला न मिला। आपने पूछा कि प्याला कहां है?

घरवालों ने बताया कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की नौकरानी हज़रत सुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हा, जो उनके साथ हब्शा से आई है, उसने (उस प्याले का पेशाब) पी लिया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसने जहन्नम की आग से बड़ी मज़बूत आड़ बना ली है।[1]

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए, तो हुज़ूर सल्ल० मेरे यहां ठहरे। हुज़ूर सल्ल० नीचे ठहरे थे और मैं (बाल-बच्चों सहित) ऊपर की मंज़िल में।

जब रात हो गई तो मुझे ख़्याल आया कि मैं उस कमरे की छत पर हूं, जिसके नीचे हुज़ूर सल्ल० हैं और मैं हुज़ूर सल्ल० के और वह्य के बीच रोक बन रहा हूं, इसलिए सारी रात मुझे नींद न आई कि कहीं ऐसा न हो कि सोने की हालत में हम कुछ हिलें-जुलें और उससे धूल हुज़ूर सल्ल० पर गिरे, जिससे हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ हो।

सुबह को मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज सारी रात न मुझे नींद आई और न मेरी बीवी उम्मे अय्यूब को।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू अय्यूब ! क्यों?

मैंने अर्ज़ किया, मुझे यह ख़्याल आ गया कि मैं इस कमरे की छत पर हूं, जिसमें आप मुझसे नीचे हैं। मैं कुछ हिलूंगा, तो इससे धूल आप पर गिरेगी, जिससे आपको तक्लीफ़ होगी और दूसरी बात यह है कि मैं आपके और वह्य के बीच रोक बन रहा हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबू अय्यूब ! ऐसा न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमे न सिखा दूं कि जब तुम उन्हें सुबह व शाम दस-दस बार कहोगे, तो तुम्हें दस नेकियां मिलेंगी और तुम्हारे दस गुनाह मिटा

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 271.

दिए जाएंगे और उनकी वजह से तुम्हारे दस दर्जे ऊंचे कर दिए जाएंगे और क़ियामत के दिन तुम्हें दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और वे कलिमे ये हैं—[1]

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا شَرِيْكَ لَهُ

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे मेहमान बने, तो मैंने अर्ज़ किया, मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, मुझे यह अच्छा नहीं मालूम होता कि मैं ऊपर रहूं और आप नीचे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आसानी इसी में है कि हम नीचे रहें, क्योंकि हमारे पास लोग आते रहते हैं।

मैंने एक रात देखा कि हमारा घड़ा टूट गया और उसका पानी फ़र्श पर फैल गया। मैं और उम्मे अय्यूब दोनों अपना कम्बल लेकर खड़े हो गए और उस कम्बल से वह पानी सुखाने लगे। हमें यह डर था कि हमारी ओर से कोई ऐसी बात न हो जाए जिससे हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ हो, यानी छत से पानी कहीं हुज़ूर सल्ल० पर टपकने न लग जाए। उस कम्बल के अलावा हमारे पास कोई और लिहाफ़ भी नहीं था। (वह कम्बल गीला हो गया और हमने सारी रात जाग कर गुज़ारी।)

हम खाना तैयार करके हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया करते। जब आप बचा हुआ खाना वापस करते तो हम उस जगह से ख़ास तौर से खाना खाते, जहां आपकी मुबारक उंगलियां लगी होतीं, यों हम हुज़ूर सल्ल० की बरकत हासिल करना चाहते।

एक रात आपने खाना वापस किया। हमने उसमें लहसुन या प्याज़ डाला था। हमें उसमें हुज़ूर सल्ल० की उंगलियों का कोई निशान नज़र न आया। मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि हम आपकी उंगलियों वाली जगह से बरकत के लिए खाना खाया करते थे, लेकिन आज आपने खाना वैसे ही वापस कर दिया, उसमें से कुछ नहीं खाया।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 294,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे उस खाने से लहसुन या प्याज़ की बू महसूस हुई और मैं अल्लाह से मुनाजात करता हूं और फ़रिश्तों से भी बात करता हूं, इसलिए मैं नहीं चाहता कि मेरे मुंह से किसी तरह की बू आए, लेकिन आप लोग यह खाना खा लो।[1]

अबू नुऐम और इब्ने असाकिर की रिवायत में यह मज़्मून यों है कि—

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह किसी तरह मुनासिब नहीं है कि मैं आपके ऊपर रहूं। आप बाला ख़ाने में तशरीफ़ ले चलें। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरा सामान मुंतक़िल कर दो। चुनांचे आपका सामान मुंतक़िल कर दिया गया और आपका सामान बहुत थोड़ा-सा था।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का परनाला हज़रत उमर रज़ि० के रास्ते पर गिरता था। एक बार जुमा के दिन हज़रत उमर रज़ि० ने नए कपड़े पहने। उस दिन हज़रत अब्बास रज़ि० के लिए दो चूज़े ज़िब्ह किए गए थे।

जब हज़रत उमर रज़ि० परनाले के पास पहुंचे तो उन चूज़ों का ख़ून उस परनाले से फेंका गया जो हज़रत उमर रज़ि० पर गिरा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस परनाले को उखाड़ दिया जाए और घर वापस जाकर वे कपड़े उतार दिए और दूसरे पहने, फिर मस्जिद में आकर लोगों को नमाज़ पढ़ाई।

इसके बाद हज़रत अब्बास रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० के पास आए और उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! यही वह जगह है जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह परनाला लगाया था।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्बास रज़ि० से कहा, मैं आपको क़सम देकर कहता हूं कि आप मेरी कमर पर चढ़कर यह परनाला वहां

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 50, हाकिम, भाग 3, पृ० 461,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 50, इसाबा, भाग 1, पृ० 405,

ही लगाएं जहां हुज़ूर सल्ल० ने लगाया था। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० ने ऐसा ही किया।[1]

इब्ने साद रज़ि० की रिवायत में यह बढ़ा हुआ भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्बास रज़ि० को अपनी गरदन पर उठाया और हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के कंधों पर अपने दोनों पांव रखकर परनाला जहां था, वहां दोबारा लगा दिया।[2]

हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपना हाथ मिंबर पर उस जगह रखा, जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठा करते थे, फिर उसे अपने चेहरे पर रख लिया।[3]

हज़रत यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन क़ुसैत रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुत से सहाबा रज़ि० को देखा कि जब मस्जिद ख़ाली हो जाती तो हुज़ूर की क़ब्रे अतहर की ओर मिंबर की जो चमकदार और चिकनी मुट्ठी है, उसे दाएं हाथ से पकड़कर क़िबले की ओर मुंह करके दुआ करते थे।[4]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक जिस्म का बोसा लेना

हज़रत अबू लैला रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े नेक, हंसमुख और ख़ूबसूरत आदमी थे। एक बार वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए बातें करके लोगों को हंसा रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० ने उनके पहलू में उंगली मारी। उन्होंने कहा, आपके मारने से मुझे दर्द हो गया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बदला ले लो।

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 12, कंज़, भाग 7, पृ० 66,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 13, मज्मा, भाग 4, पृ० 206
3. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 254,
4. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 254,

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने तो क़मीज़ पहनी हुई है और मेरे जिस्म पर कोई क़मीज़ नहीं थी। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी क़मीज़ ऊपर उठा ली। (यह बदला लेने के बजाए) हुज़ूर सल्ल०से चिमट गए और हुज़ूर सल्ल० के पहलू के बोसे लेने शुरू कर दिए और फिर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों, मेरा मक़्सद तो यह था, (बदला लेने का तज़्किरा तो मैंने वैसे ही किया था, मक़्सद आपका बोसा लेना था।)[1]

हज़रत हब्बान बिन वासेअ रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी क़ौम के कुछ उम्र को पहुंचे लोगों से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद्र की लड़ाई के दिन अपने सहाबा रज़ि० की सफ़ों को सीधा किया। आपके हाथ में बग़ैर नोक और पर का एक तीर था, जिससे आप लोगों को बराबर कर रहे थे।

आप हज़रत सवाद बिन ग़ुज़ैया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे। यह बनू अदी बिन नज्जार क़बीला के हलीफ़ थे और सफ़ से बाहर निकले हुए थे। हुज़ूर सल्ल० ने उनके पेट में वह तीर चुभो कर फ़रमाया, ऐ सवाद ! सीधे खड़े हो जाओ।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके तीर चुभोने से मुझे दर्द हो गया और अल्लाह ने आपको हक़ और इंसाफ़ देकर भेजा है, इसलिए आप मुझे बदला दें। इस पर आपने अपने पेट से कपड़ा हटाकर फ़रमाया, लो, बदला ले लो। वह हुज़ूर सल्ल० से चिमट गए और हुज़ूर सल्ल० के पेट के बोसे लेने लगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ सवाद ! तुमने ऐसा क्यों किया?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप देख ही रहे हैं कि लड़ाई का मौक़ा आ गया है, (शायद मैं इसमें शहीद हो जाऊं) तो मैंने चाहा कि मेरी आपसे आख़िरी मुलाक़ात इस तरह हो कि मेरी खाल आपकी खाल से मिल जाए। इस पर आपने उनके लिए दुआ-ए-ख़ैर फ़रमाई।[2]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 288, कंज़, भाग 7, पृ० 301, कंज़, भाग 3, पृ० 43

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक आदमी से मुलाक़ात हुई, जिसने (कपड़ों पर) पीला रंग लगा रखा था। हुज़ूर सल्ल० के हाथ में खजूर की एक टहनी थी, हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, यह वर्स रंग उतार दो। (वर्स यमन की पीले रंग की एक बूंटी का नाम है)

फिर आपने वह टहनी उस आदमी के पेट में चुभो कर फ़रमाया, क्या मैंने तुमको इससे रोका नहीं था?

टहनी चुभाने से उसके पेट पर निशान पड़ गया, लेकिन ख़ून नहीं निकला। उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बदला देना होगा।

लोगों ने कहा, तुम अल्लाह के रसूल से बदला लोगे। उसने कहा, किसी की खाल मेरी खाल से बढ़िया नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने पेट से कपड़ा हटाकर फ़रमाया, लो, बदला ले लो। उस आदमी ने हुज़ूर सल्ल० के पेट का बोसा लिया और कहा, मैं अपना बदला छोड़ देता हूं, ताकि आप क़ियामत के दिन मेरी सिफ़ारिश फ़रमाएं।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सवाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि उन्होंने ख़लूक़ ख़ुश्बू लगा रखी है। (ख़लूक़ एक क़िस्म की ख़ुश्बू है जिसका बड़ा भाग ज़ाफ़रान होता है) तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस वर्स को उतार दो। फिर आपने उसके पेट में लकड़ी या मिस्वाक चुभोई और उसे पेट पर ज़रा हिलाया, जिससे उनके पेट पर निशान पड़ गया और आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं एक अंसारी आदमी इतनी ज़्यादा ख़लूक़ ख़ुश्बू लगाया करते थे कि वह खजूर के ख़ोशे की टहनी

---

5. बिदाया, भाग 3, पृ० 271.
1. कंज़, भाग 7, पृ० 302
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 72.

की तरह पीले दिखाई पड़ते थे। उन्हें सवाद बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु कहा जाता था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन्हें देखते तो ख़ुश्बू उनके कपड़ों से झाड़ते।

चुनांचे एक दिन वह ख़लूक़ ख़ुश्बू लगाए हुए आए। हुज़ूर सल्ल० के हाथ में एक छड़ी थी। आपने वह छड़ी हल्की-सी मारी, जिससे कुछ चोट आ गई, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बदला देना होगा। हुज़ूर सल्ल० ने वह छड़ी उनको दी और ख़ुद हुज़ूर सल्ल० के जिस्म पर दो कुरते थे। हुज़ूर सल्ल० उन्हें ऊपर उठाने लगे। इस पर लोगों ने उन्हें डांटा और बदला लेने से रोका।

लेकिन जब हुज़ूर सल्ल० के मुबारक जिस्म का वह हिस्सा नज़र आया, जहां ख़ुद उनको घाव लगा हुआ था, तो छड़ी फेंक कर हुज़ूर सल्ल० को चिमट गए और हुज़ूर सल्ल० को चूमने लग गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मैं अपना बदला छोड़ देता हूं, ताकि आप मेरी क़ियामत के दिन सिफ़ारिश फ़रमाएं।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहाबा किराम रज़ि० की मुहब्बत के ज़ेल में हज़रत हुसैन बिन दहवह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत गुज़र चुकी है कि हज़रत तलहा बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलते, तो आपसे चिमट जाते और आपके दोनों क़दमों के बोसे लेने शुरू कर देते और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आपकी पेशानी का बोसा लेने का ज़िक्र बहुत जल्द आएगा।

1. कंज़, भाग 7, पृ० 302, इसाबा, भाग 2, पृ० 96

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शहीद हो जाने की ख़बर के मशहूर होने पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रोना और आपको बचाने के लिए उनसे जो कारनामे ज़ाहिर हुए उनका बयान

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन मदीना वालों की हार हो गई, तो लोगों ने कहा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़त्ल हो गए हैं। (यह ख़बर सुनकर सब मर्दों और औरतों ने रोना शुरू कर दिया) और मदीना के कोने-कोने से रोने वाली औरतों की आवाज़ें बहुत आने लगीं।

चुनांचे एक अंसारी औरत परदे में मदीने से निकली और (लड़ाई के मैदान की ओर चल पड़ी।) उनके बाप, बेटे, ख़ाविंद और भाई चारों उस लड़ाई में शहीद हो चुके थे, यह उनके पास से गुज़रीं।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मुझे यह मालूम नहीं है कि इनमें से पहले किसके पास से गुज़रीं? जब भी इनमें से किसी एक के पास से गुज़रतीं तो पूछतीं, यह कौन है?

लोग बताते कि यह तुम्हारे बाप हैं, भाई हैं, ख़ाविंद हैं, बेटे हैं, वह जवाब में यही कहतीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का क्या हुआ? लोग कहते, हुज़ूर सल्ल० आगे हैं, यहां तक कि वह हुज़ूर सल्ल० तक पहुंच गईं और हुज़ूर सल्ल० के कपड़े के एक कोने को पकड़कर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुर्बान हों ! जब आप सही-सालिम हैं, तो मुझे अपने मर जाने वालों की कोई परवाह नहीं।[1]

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 115,

हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीना में रहा, उस दिन हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० में से कोई भी मदीना मुनव्वरा में नहीं रहा था। (सारे ही लड़ाई में शरीक थे, लड़ाई बहुत सख़्त थी) और शहीदों की तायदाद बढ़ती जा रही थी। इतने में एक आदमी ने चीख़ कर कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शहीद हो गए हैं। (यह सुनकर) औरतें रोने लग गईं।

एक औरत ने कहा, रोने में जल्दी न करो, मैं देखकर आती हूं। चुनांचे वह औरत पैदल चल पड़ी और उसको सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० ही का ग़म था और वह सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल० के बारे में पूछ रही थी।[1]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला बनू दीनार की एक औरत के पास से गुज़रे, उसका शौहर, भाई और बाप हुज़ूर सल्ल० के साथ उहुद की लड़ाई में शहीद हो चुके थे, जब लोगों ने उसे इन तीनों की शहादत की ख़बर दी तो (उसे हुज़ूर सल्ल० की ख़ैरियत मालूम करने की फ़िक्र इतनी ज़्यादा थी कि इस ख़बर का उस पर कोई असर न हुआ, बल्कि) उसने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या हुआ? (हुज़ूर सल्ल० मुझे नज़र नहीं आ रहे हैं।)

लोगों ने कहा, ऐ उम्मे फ़्लां! हुज़ूर सल्ल० ख़ैरियत से हैं और अलहम्दु लिल्लाहि! हुज़ूर सल्ल० वैसे ही हैं, जैसा तुम चाहती हो।

उस औरत ने कहा, हुज़ूर सल्ल० को मुझे दिखाओ, ताकि मैं उन्हें (अपनी आंखों से) देख लूं।

लोगों ने इस औरत को हुज़ूर सल्ल० की ओर इशारा करके बताया कि वह हैं। जब उसने हुज़ूर सल्ल० को देख लिया, तो उसने कहा, आप (को सही-सालिम देख लेने) के बाद अब हर मुसीबत हल्की और आसान है।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, उहुद की लड़ाई के दिन

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 115,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 47

हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खड़े होकर (दुश्मन पर) तीर चला रहे थे और हुज़ूर सल्ल० इनके पीछे थे और वह हुज़ूर सल्ल० के लिए ढाल बने हुए थे और वह बड़े माहिर तीरंदाज़ थे। जब वह तीर चलाते, हुज़ूर सल्ल० ऊपर होकर देखते कि तीर कहां गिरा है और हज़रत अबू तलहा रज़ि० अपना सीना ऊपर करके कहते, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान हों, आप ऐसे ही नीचे रहें, कहीं आपको कोई तीर न लग जाए, मेरा सीना आपके सीने की हिफ़ाज़त के लिए हाज़िर है।

हज़रत अबू तलहा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सामने ख़ुद को ढाल बनाए हुए थे और आपकी हिफ़ाज़त के लिए ख़ुद को शहीद होने के लिए पेश कर रहे थे और कह रहे थे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं बहुत मज़बूत और ताक़तवर हूं, आप मुझे अपनी तमाम ज़रूरतों में इस्तेमाल फ़रमाएं और जो चाहें मुझे हुक्म दें।[1]

पहले भाग में हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी के बाब में तबरानी की रिवायत से यह हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत क़तादा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिए में एक कमान मिली। आपने वह कमान उहुद के दिन मुझे दे दी। मैं इस कमान को लेकर हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर ख़ूब तीर चलाता रहा, यहां तक कि उसका सिरा टूट गया।

मैं बराबर हुज़ूर सल्ल० के चेहरे के सामने खड़ा रहा और मैं अपने चेहरे पर तीरों को लेता रहा। जब भी कोई तीर आपके चेहरे की ओर मुड़ जाता, तो मैं अपने सर को घुमा कर तीर के सामने ले आता और हुज़ूर सल्ल० के चेहरे को बचा लेता, (चूंकि मेरी कमान टूट चुकी थी, इसलिए) मैं तीर तो चला नहीं सकता था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई के याद आ जाने पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रोना

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 27, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 65,

अलैहि व सल्लम मरज़ुल वफ़ात में एक दिन हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए। हम लोग मस्जिद में थे। आपने सर पर पट्टी बांध रखी थी। आप सीधे मिंबर की ओर तशरीफ़ ले गए और मिंबर पर बैठ गए।

हम भी आपके पीछे-पीछे चलकर आपके पास बैठ गए और आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मैं इस वक़्त हौज़ (कौसर) पर खड़ा हुआ हूं और यह भी फ़रमाया कि एक बन्दे पर दुनिया और उसकी ज़ीनत पेश की गई, लेकिन उसने आख़िरत को अख़्तियार कर लिया है और तो कोई न समझ सका (कि उस बन्दे से कौन मुराद है?) अलबत्ता हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु समझ गए (कि इससे मुराद ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं) और उनकी दोनों आंखों में आंसू भर आए और वह रो पड़े और यों कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हो, हम अपने मां-बाप और अपना माल और जान सब आप पर क़ुरबान करते हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० (मिंबर से) नीचे तशरीफ़ लए और फिर इंतिक़ाल तक मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा न हुए।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब—

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ

सूरः नाज़िल हुई (और उसमें बता दिया गया कि आप जिस काम के लिए आए थे, वह पूरा हो गया) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाकर फ़रमाया, मुझे (इस सूरः में) अपनी वफ़ात की ख़बर दी गई है। यह सुनकर वह रो पड़ीं।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, मत रोओ, क्योंकि मेरे ख़ानदान में से तुम सबसे पहले मुझसे मिलोगी। यह सुनकर वह हंसने लगीं।

हुज़ूर सल्ल० की एक ज़ौजा मोहतरमा यह मंज़र देख रही थीं। उन्होंने (बाद में) हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से पूछा, मैंने तुम्हें पहले रोते हुए देखा, फिर हंसते हुए (इसकी क्या वजह है?)

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने बताया, पहले हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 58, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 46,

फ़रमाया, मुझे अपनी वफ़ात की ख़बर दी गई है, यह सुनकर मैं रो पड़ी थी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मत रो, क्योंकि मेरे ख़ानदान में से तुम सबसे पहले मुझसे मिलोगी, तो मैं हंस पड़ी थी।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपने मरज़ुल वफ़ात में बुलाया और उनके कान में कोई बात कही, जिस पर वह रो पड़ीं। हुज़ूर सल्ल० ने फिर उन्हें बुलाकर उनके कान में कोई बात कही, जिस पर वह हंस पड़ीं।

मैंने उनसे इस बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने पहले मुझे बताया कि इस बीमारी में उनका इंतिक़ाल हो जाएगा, तो मैं रो पड़ी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने बताया कि मैं उनके ख़ानदान में से सबसे पहले उनसे जाकर मिलूंगी तो मैं हंस पड़ी।[2]

इब्ने साद ने इसी जैसी हदीस हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी नक़ल की है और उसमें यह है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से उनके पहले रोने और फिर हंसने की वजह पूछी, तो उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने पहले मुझे बताया कि बहुत जल्द उनका इंतिक़ाल होने वाला है, फिर यह बताया कि मैं हज़रत मरयम बिन्त इम्रान अलैहस्सलाम के बाद जन्नत की औरतों की सरदार हूं, इस वजह से मैं हंसी थी।

हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा रोने लगीं। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ मेरी बिटिया ! मत रोओ। जब मेरा इंतिक़ाल हो जाए तो—

'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ना, क्योंकि इन्ना लिल्लाहि पढ़ लेने से इंसान को हर मुसीबत का बदला मिल जाता है।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 23
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 39

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका बदल भी मिल जाएगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरा बदल भी मिल जाएगा।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें यमन भेजा तो हुज़ूर सल्ल० उनको हिदायतें देने के लिए उनके साथ ख़ुद भी (शहर से) बाहर निकले। हज़रत मुआज़ रज़ि० सवारी पर थे और हुज़ूर सल्ल० उनकी सवारी के साथ पैदल चल रहे थे। जब हुज़ूर सल्ल० हिदायतों से फ़ारिग़ हो गए, तो फ़रमाया, ऐ मुआज़ ! शायद इस साल के बाद आगे तुम मुझसे न मिल सको और शायद तुम मेरी इस मस्जिद में और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रो।

यह सुनकर हज़रत मुआज़ रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की जुदाई के ग़म में फूट-फूटकर रोने लगे, फिर हुज़ूर सल्ल० उनकी ओर मुतवज्जह हुए और मदीना की ओर मुंह करके फ़रमाया, (क़ियामत के दिन) लोगों में से मेरे सबसे ज़्यादा क़रीब तक़्वा वाले लोग होंगे, जो भी हों और जहां भी हों। (इसके लिए किसी ख़ास क़ौम में से होना या मेरे शहर में रहना ज़रूरी नहीं)[2]

इमाम अहमद ने इसी हदीस को आसिम बिन हुमैद रिवायत करने वाले से नक़ल किया है, इसमें यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फ़रमाया, ऐ मुआज़ रज़ि० ! मत रोओ, क्योंकि (फूट-फूटकर) रोना शैतान की ओर से है (असल रज़ा बर क़ज़ा है)।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के डर से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रोना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 312,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 22

किया कि अंसार के मर्द और औरतें मस्जिद में बैठे हुए रो रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, वे क्यों रो रहे हैं?

उसने कहा कि इस डर से रो रहे हैं कि कहीं आपका इंतिक़ाल न हो जाए।

चुनांचे इस पर हुज़ूर सल्ल० हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए और अपने मिंबर पर बैठ गए। आप एक कपड़ा ओढ़े हुए थे, जिसके दोनों किनारे अपने कंधों पर डाल रखे थे और आप सर पर एक मैली पट्टी बांधे हुए थे। हम्द व सना के बाद आपने फ़रमाया—

'अम्मा बादु ! ऐ लोगो ! आगे लोग ज़्यादा होते जाएंगे और अंसार कम होते जाएंगे, यहां तक कि अंसार लोगों में ऐसे हो जाएंगे जैसे खाने में नमक। इसलिए जो भी अंसार के किसी काम का ज़िम्मेदार बने, उसे चाहिए कि उनके भला करने वाले की भलाई को क़ुबूल करे और उनके बुरे से दर गुज़र करे।'[1]

हज़रत उम्मे फ़ज़्ल बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरज़ुल वफ़ात में हुज़ूर की ख़िदमत में आई और मैं रोने लगी। हुज़ूर सल्ल० ने सर उठाकर फ़रमाया, क्यों रो रही हो?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके इंतिक़ाल के डर से और इस वजह से कि पता नहीं, आपके बाद हमें लोगों की ओर से कैसा रवैया बरदाश्त करना पड़ेगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें मेरे बाद कमज़ोर समझा जाएगा।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का (सहाबा किराम और उम्मत को) अल-विदाअ कहना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमारे महबूब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (मेरे वालिद और मेरी

1. मज्मा, भाग 10, पृ० 37, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 252,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 34

जान उन पर क़ुर्बान हो) के इंतिक़ाल से छः दिन पहले हमें उनके इंतिक़ाल की ख़बर हो गई थी। जब जुदाई का वक़्त क़रीब आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने हमें अम्मी जान हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में जमा फ़रमाया।

हमारे ऊपर आपकी नज़र पड़ी तो आपकी आंखों से आंसू बह पड़े और फ़रमाया, मरहबा, तुम्हें स्वागत हो, अल्लाह तुम्हारी उम्र बड़ी करे, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त फ़रमाए, अल्लाह तुम्हें ठिकाना दे, अल्लाह तुम्हारी मदद फ़रमाए, अल्लाह तुम्हें बुलन्द फ़रमाए, अल्लाह तुम्हें हिदायत दे, अल्लाह तुम्हें रोज़ी दे, अल्लाह तुम्हें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, अल्लाह तुम्हें सलामत रखे, अल्लाह तुम्हें क़ुबूल फ़रमाए! मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि अल्लाह से डरते रहना और अल्लाह से दरख़्वास्त करता हूं कि वह तुम्हारा ख़्याल रखे और तुम्हारे काम उसी के सुपुर्द करता हूं। मैं तुम्हें इस बात से खुलकर डराता हूं कि अल्लाह के मुक़ाबले में उसके बन्दों के बारे में उसकी ज़मीन पर घमंड न करना, क्योंकि अल्लाह ने मुझसे और तुमसे फ़रमाया—

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ (سورت قصص آیت ۸۳)

'यह आख़िरत की दुनिया उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न बिगाड़ पैदा करना और नेक नतीजा मुत्तक़ी लोगों को मिलता है।' (सूरः क़सस, आयत 83)

और अल्लाह ने फ़रमाया है—

اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ (سورت زمر آیت ۶۰)

'क्या इन घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं है?'

(सूरः ज़ुमर, आयत 60)

फिर आपने फ़रमाया, अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ वक़्त, और सिदरतुल मुंतहा, (सातवें आसमान पर बेरी का एक पेड़ है। फ़रिश्तों के पहुंचने की सीमा वहीं तक है और यह एक सेन्ट्रल जगह है। अर्शे इलाही से हुक्म यहीं पहुंचते हैं।) जन्नतुल मावा, (मुत्तक़ियों की आरामगाह वाली

जन्नत) भरे प्याले और सबसे ऊंचा रफ़ीक़ (यानी अल्लाह) की तरफ़ वापस जाने का वक़्त बिल्कुल क़रीब आ गया है।

हमने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस वक़्त आपको ग़ुस्ल कौन दे ?

आपने फ़रमाया, मेरे ख़ानदान के मर्द, सबसे ज़्यादा क़रीब के रिश्ते वाला, फिर उसके बाद वाला दर्जा-ब-दर्जा।

फिर हमने पूछा, हम आपको किसमें कफ़न दें।

आपने फ़रमाया, अगर तुम चाहो तो मेरे इन्हीं कपड़ों में कफ़न दे देना या यमनी जोड़े में या मिस्री कपड़ों में कफ़न दे देना।

फिर हमने कहा, हममें से कौन आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाए? यह कहकर हम भी रो पड़े और हुज़ूर भी।

आपने फ़रमाया, ज़रा ठहरो, अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए और तुम्हें तुम्हारे नबी की तरफ़ से बेहतरीन बदला दे। जब तुम मुझे ग़ुस्ल दे चुको और मेरे जनाज़े को मेरे इस कमरे में क़ब्र के किनारे पर रख दो तो फिर तुम सब थोड़ी देर बाहर चले जाना, क्योंकि सबसे पहले मेरे दोस्त और साथी हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे। फिर हज़रत मीकाईल, फिर हज़रत इसराईल, फिर मलकुल मौत अलैहिमुस्सलाम, अपनी पूरी फ़ौज के साथ, फिर सारे फ़रिश्ते नमाज़े जनाज़ा पढ़ेंगे, फिर तुम एक-एक जमाअत बनकर अन्दर आ जाना और मुझ पर सलात व सलाम पढ़ना और किसी औरत को नौहा करके न रोने देना और न शोर मचाने देना और न ऊंची आवाज़ से रोने देना, वरना मुझे तक्लीफ़ होगी, पहले मेरे ख़ानदान के मर्द अन्दर आकर सलात व सलाम पढ़ें, फिर तुम लोग। तुम मेरी ओर से अपने लिए सलाम क़ुबूल कर लो और जितने मेरे भाई इस वक़्त ग़ायब हैं, उन्हें मेरा सलाम कह देना और मैं तुम्हें इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मेरे बाद जो भी तुम्हारे दीन में दाख़िल हो, मैं उसे भी सलाम कह रहा हूं। और आज से लेकर क़ियामत तक जो भी मेरे दीन की पैरवी करेगा, मैं उसे भी सलाम कह रहा हूं।

फिर हमने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हममें से कौन आपको क़ब्र में उतारे ?

आपने फ़रमाया, मेरे ख़ानदान के मर्द और उनके साथ बहुत-से फ़रिश्ते होंगे, वे फ़रिश्ते तो तुम्हें देख रहे होंगे, लेकिन तुम उन्हें न देख सकोगे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक विसाल

हज़रत यज़ीद बिन बाबनूस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं अपने एक साथी के साथ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में गया। हमने उनकी ख़िदमत में अन्दर आने की इजाज़त चाही। उन्होंने हमारे लिए एक तकिया रख दिया और दर्मियान में अपनी ओर परदा खींच लिया (और हमें अन्दर आने की इजाज़त दे दी, अन्दर जाकर) मेरे साथी ने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! आप अराक के बारे में क्या फ़रमाती हैं ?

उन्होंने कहा, अराक क्या होता है ?

मैंने अपने साथी के कंधे पर हाथ मारा। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, ऐसे न करो, तुमने अपने भाई को तक्लीफ़ पहुंचाई है, अच्छा अराक क्या होता है ? अराक हैज़ को कहते हैं ? (यानी तुम हैज़ की हालत में बीवी के जिस्म को हाथ और जिस्म लगाने के बारे में पूछ रहे हो ?) अल्लाह ने जो कुछ हैज़ के बारे में फ़रमाया है, तुम उसी पर अमल करो (और इस बारे में मैं अपना क़िस्सा सुनाती हूं।) मैं हैज़ (माहवारी) की हालत में होती थी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझसे लिपटते थे और मेरे सर का बोसा ले लेते थे, लेकिन मेरे और आपके जिस्म के दर्मियान एक कपड़ा होता था। हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा यह था कि आप जब मेरे दरवाज़े के पास से गुज़रते तो अक्सर ऐसी कोई बात इर्शाद फ़रमा जाते, जिससे मुझे फ़ायदा होता।

---

1 हैसमी, भाग 9, पृ० 25, हुलीया, भाग 4, पृ० 168, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 256

एक दिन आप मेरे दरवाज़े के पास से गुज़रे, लेकिन आपने कुछ न फ़रमाया, इसके बाद दो तीन बार और गुज़रे, लेकिन कुछ न फ़रमाया, मैंने नौकरानी से कहा, ऐ लड़की ! मेरे लिए दरवाज़े पर तकिया रख दो और मैंने सर पर पट्टी बांध ली (और हुज़ूर सल्ल० को मुतवज्जह करने के लिए बीमार बनकर तकिया पर टेक लगा ली ।)

इतने में हुज़ूर सल्ल० मेरे पास से गुज़रे, तो फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुम्हें क्या हो गया ?

मैंने कहा, सर में दर्द हो रहा है ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हाय ! मेरे सर में भी दर्द है । फिर आप तशरीफ़ ले गए। अभी थोड़ी देर ही गुज़री थी कि आपको एक कम्बल में उठाकर लाया गया। आप मेरे पास तशरीफ़ ले आए और पाक बीवियों को यह पैग़ाम भेजा कि मैं बीमार हो गया हूं और मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं बारी-बारी तुम्हारे यहां जाऊं। तुम मुझे इजाज़त दे दो, ताकि मैं आइशा रज़ि० के पास ठहर जाऊं ।

चुनांचे मैं आपकी तीमारदारी (देखभाल) करने लगी । इससे पहले मैंने कभी किसी की तीमारदारी नहीं की थी । एक दिन हुज़ूर सल्ल० का सर मेरे कंधे पर रखा हुआ था कि इतने में हुज़ूर सल्ल० का सर मेरे सर की ओर झुक गया। मैं समझी कि हुज़ूर सल्ल० मेरे सर का बोसा वग़ैरह लेना चाहते हैं कि इतने में आपके मुबारक मुंह से एक ठंडी बूंद निकलकर मेरी हंसुली के गढ़े में गिरी तो इससे मेरे सारे जिस्म के रौंगटे खड़े हो गए। मैं यह समझी कि आप बेहोश हो गए हैं। मैंने आप पर एक चादर डाल दी ।

फिर हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए और उन्होंने अन्दर आने की इजाज़त चाही । मैंने दोनों को इजाज़त दे दी और अपनी ओर परदा खींच लिया । हज़रत उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को देखकर कहा, हाय बेहोशी ! हुज़ूर सल्ल० की बेहोशी कितनी ज़्यादा है। फिर दोनों खड़े होकर चल दिए। जब दरवाज़े के क़रीब पहुंचे तो हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं, तुम ग़लत कहते हो और तुम हमेशा फ़िल्ने वाली बात करते हो, जब तक अल्लाह मुनाफ़िक़ों को बिल्कुल खत्म नहीं कर देंगे, हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल नहीं होगा।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए। मैंने वह परदा हटा दिया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को देखकर कहा—

'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया। फिर हुज़ूर सल्ल० के सर की तरफ़ उन्होंने अपना मुंह झुकाया और हुज़ूर सल्ल० की पेशानी का बोसा लेकर कहा, हाय, अल्लाह के नबी सल्ल० ! फिर अपने सर को ऊपर उठाया, फिर मुंह को झुक कर दोबारा पेशानी का बोसा लिया और कहा, हाय, मेरे ख़ास दोस्त ! फिर सर को ऊपर उठाया, फिर मुंह को झुका कर बाहर पेशानी का बोसा लिया और कहा, हाय, मेरे जिगरी दोस्त ! हुज़ूर सल्ल० का इन्तिक़ाल हो गया है और फिर वह मस्जिद चले गए।

वहां हज़रत उमर रज़ि० लोगों में बयान कर रहे थे और कह रहे थे कि जब तक अल्लाह मुनाफ़िक़ों को बिल्कुल ख़त्म नहीं कर देगा, अल्लाह के रसूल सल्ल० का इन्तिक़ाल नहीं होगा, (हज़रत अबूबक्र रज़ि० के आने पर हज़रत उमर रज़ि० रुक गए और) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अल्लाह की हम्द व सना के बाद यह बयान किया कि अल्लाह (क़ुरआन मजीद में) फ़रमाते हैं,

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَّإِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (سورت زمر آيت ٣٠)

'आपको भी मरना है और उनको भी मरना है।'

(सूरः ज़ुमर, आयत 30)

और यह आयत पूरी पढ़ी और अल्लाह यह भी फ़रमाते हैं—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ
عَلٰى أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ (سورت آل عمران آيت ١٤٤)

'और मुहम्मद निरे रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और भी बहुत से रसूल सल्ल० गुज़र चुके हैं, सो अगर आपका इन्तिक़ाल हो जावे या आप शहीद हों तो, क्या तुम उलटे फिर जाओगे और जो आदमी उलटा फिर भी जावेगा तो वह अल्लाह का कोई नुक़्सान न करेगा।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 144)

यह आयत भी पूरी पढ़ी। इसके बाद फ़रमाया, जो अल्लाह को माबूद समझता था, तो वह समझ ले कि अल्लाह ज़िंदा हैं, उन पर मौत नहीं आ सकती और जो आदमी मुहम्मद सल्ल० को माबूद समझता था, तो वह सुन ले कि मुहम्मद सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया है।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अच्छा, क्या ये आयतें अल्लाह की किताब (क़ुरआन मजीद) में हैं? (मुझे ये आयतें याद ही नहीं रहीं। अब हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पढ़ने से याद आई हैं। इनमें हुज़ूर सल्ल० के इन्तिक़ाल करने का ज़िक्र है।) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ लोगो! यह अबूबक्र रज़ि० हैं और यह मुसलमानों में बड़े अच्छे और ऊंचे कारनामे वाले हैं, इसलिए इनसे बैअत हो जाओ। चुनांचे उनसे लोग बैअत हो गए।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कफ़न-दफ़न

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कफ़न-दफ़न की तैयारी करने लगे, तो बाहर लोग बहुत थे, इसलिए हमने दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया। इस पर अंसार ने पुकारकर कहा, हम हुज़ूर सल्ल० के मामूं हैं। (हुज़ूर सल्ल० की मां मदीना की थीं) और हमें इस्लाम में नुमायां मर्तबा हासिल है और क़ुरैश ने पुकारकर कहा, हम हुज़ूर सल्ल० के वालिद के ख़ानदान के लोग हैं (यानी अंसार और क़ुरैश के लोग सब ही अन्दर जाकर ग़ुस्ल वग़ैरह देने में शरीक होना चाहते थे)

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 241, हैसमी, भाग 9, पृ० 33, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 267

मुसलमानो ! हर ख़ानदान और क़रीबी रिश्तेदार अपने जनाज़े के दूसरों से ज़्यादा हक़दार होते हैं (इसलिए हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ि० और चचेरे भाई ज़्यादा हक़दार हैं) इसलिए हम तुम्हें ख़ुदा का वास्ता देकर कहते हैं कि (तुम अन्दर न आओ, क्योंकि) अगर तुम सब अन्दर आओगे तो जो हक़दार हैं, वे पीछे रह जाएंगे। अल्लाह की क़सम ! अन्दर सिर्फ़ वही आएगा जिसे बुलाया जाएगा।

हज़रत अली बिन हुसैन रज़ि० फ़रमाते हैं, अंसार ने पुकार कर कहा (हुज़ूर सल्ल० के कफ़न-दफ़न में) हमारा भी हक़ है, हुज़ूर सल्ल० हमारे भांजे हैं और इस्लाम में हमारा दर्जा बड़ा है और उन्होंने यह मांग हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सामने रखी, तो उन्होंने फ़रमाया, क़रीबी रिश्तेदार और ख़ानदान वाले इस काम के ज़्यादा हक़दार हैं, इसलिए तुम यह मांग हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० के सामने पेश करो, क्योंकि उनके पास अन्दर वही जाएगा जिसे ये लोग चाहेंगे।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी बढ़ गई तो आपके पास हज़रत आइशा और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा थीं। इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दाख़िल हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखकर सर उठाया और फ़रमाया, मेरे क़रीब आ जाओ, मेरे क़रीब आ जाओ।

हज़रत अली रज़ि० ने क़रीब जाकर हुज़ूर सल्ल० को अपने सहारे से बिठा लिया और हुज़ूर सल्ल० के विसाल तक उन्हीं के पास रहे। जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत अली रज़ि० ने खड़े होकर अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया। हज़रत अब्बास रज़ि० और बनू अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० (हुज़ूर सल्ल० के दादा के ख़ानदान वाले) रज़ियल्लाहु अन्हुम आकर दरवाज़े के बाहर खड़े हो गए।

हज़रत अली रज़ि० कहने लगे, मेरे वालिद आप पर क़ुरबान हों, आप ज़िंदगी में भी पाक थे और इंतिक़ाल के बाद भी पाक हैं और हुज़ूर सल्ल० के जिस्म से ऐसी अच्छी ख़ुश्बू महक रही थी कि लोगों ने

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 61,

वैसी ख़ुश्बू कभी देखी नहीं थी। फिर हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, औरतों की तरह रोना छोड़ दो और अपने हज़रत के कफ़न-दफ़न की ओर मुतवज्जह हो जाओ।

इस पर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को अन्दर मेरे पास भेज दो।

अंसार ने कहा, हम तुम्हें अल्लाह का और हुज़ूर सल्ल० से अपने ताल्लुक का वास्ता देकर कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के कफ़न और ग़ुस्ल में हमारा भी हिस्सा हो (इस पर हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अपना एक आदमी अन्दर भेज दो) चुनांचे अंसार ने अपना एक आदमी अन्दर भेजा, जिसका नाम औस बिन ख़ौली रज़ियल्लाहु अन्हु था। वह एक हाथ में घड़ा भी उठाए हुए थे।

ये लोग अभी अन्दर ही थे, ग़ुस्ल शुरू नहीं किया था कि उन्हें यह आवाज़ सुनाई दी कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कपड़े मत उतारो और वह जैसे हैं, वैसे ही उन्हें उनके क़मीज़ में ग़ुस्ल दे दो। (अल्लाह ने फ़रिश्ते के ज़रिए इन लोगों की इस मौक़े पर रहनुमाई फ़रमाई) चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को ग़ुस्ल दिया। वह क़मीज़ के नीचे हाथ डालकर जिस्म को नहलाते थे और हज़रत फ़ज़्ल (परदे के लिए) चादर थामे हुए थे और वह अंसारी पानी ला रहे थे और हज़रत अली रज़ि० ने अपने हाथ पर कपड़ा बांधा हुआ था।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नमाज़े जनाज़ा पढ़े जाने की कैफ़ियत

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया, तो पहले मर्दों को जमाअतों की शक्ल में अन्दर भेजा गया और उन्होंने इमाम के बग़ैर ही हुज़ूर सल्ल० की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। वह नमाज़ पढ़कर बाहर आ गए, फिर औरतों को अन्दर भेजा गया और उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। फिर

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 36, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 63

बच्चों को अन्दर दाख़िल किया गया और उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।[1] फिर ग़ुलामों को जमाअतों की शक्ल में अन्दर भेजा गया और उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। हुज़ूर सल्ल० की नमाज़े जनाज़ा में इन सब लोगों का इमाम कोई नहीं था।

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कफ़न पहना दिया गया तो आपको चारपाई पर रखा गया और फिर वह चारपाई हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र के किनारे पर रख दी गई, फिर लोग अपने साथियों के साथ अन्दर आते और अकेले-अकेले बग़ैर इमाम के नमाज़ पढ़ते।

हज़रत मूसा बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे अपने वालिद की लिखी हुई यह तहरीर मिली कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कफ़न पहना दिया गया और उन्हें चारपाई पर रख दिया गया तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा अन्दर तशरीफ़ लाए और उनके साथ इतने मुहाजिर और अंसार भी थे जो इस कमरे में आ सकते थे।

इन दोनों ने कहा,

'अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'

फिर इन्हीं लफ़्ज़ों के साथ मुहाजिरों और अंसार ने सलाम किया, फिर इन सबने सफ़ें बना लीं और इमाम कोई न बना। हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० पहली सफ़ में हुज़ूर सल्ल० के सामने थे, इन दोनों ने कहा, ऐ अल्लाह! हम इस बात की गवाही देते हैं कि हुज़ूर सल्ल० पर जो कुछ आसमान से उतरा था, हुज़ूर सल्ल० ने वह पहुंचा दिया और उन्होंने अपनी उम्मत के साथ पूरी ख़ैर-ख़्वाही की और अल्लाह के रास्ते में उन्होंने ख़ूब मेहनत की और जिहाद किया, यहां तक कि अल्लाह ने अपने दीन को इज़्ज़त अता फ़रमा दी और अल्लाह का कलिमा यानी दीन इस्लाम पूरा हो गया और लोग अल्लाह वहदहू ला

---

1. इब्ने इस्हाक़,

शरी-क लहू पर ईमान ले आए।

ऐ हमारे माबूद ! हमें उन लोगों में से बना जो इस बात पर अमल करते हैं जो उन पर उतारी गई और हमें आख़िरत में हुज़ूर सल्ल० के साथ जमा फ़रमा और हमारा उनसे परिचय करा देना और उनका परिचय हमसे, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ईमान वालों के लिए बड़े मेहरबान थे। हम हुज़ूर सल्ल० पर ईमान लाने का दुनिया में बदला नहीं चाहते और न इस ईमान को किसी क़ीमत पर बेचेंगे।

लोग उनकी दुआ पर आमीन कहते जाते। इस तरह लोग फ़ारिग़ होकर निकलते जाते और दूसरे अन्दर आ जाते, यहां तक कि तमाम मर्दों ने नमाज़ पढ़ी, फिर औरतों ने, फिर बच्चों ने पढ़ी।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चारपाई पर रख दिया गया, तो मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० की नमाज़े जनाज़ा का कोई इमाम नहीं बनेगा, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० जैसे ज़िंदगी में तुम्हारे इमाम हैं, ऐसे ही इंतिक़ाल के बाद भी तुम्हारे इमाम हैं, इस पर लोग जमाअतों की शक्ल में दाख़िल होते और सफ़ें बनाकर तक्बीरें कहते और उनका कोई इमाम न होता और मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने खड़े होकर यह कहता जाता—

'अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू'

ऐ अल्लाह ! हम इस बात की गवाही देते हैं कि जो उन पर उतारा गया था, वह उन्होंने सारा पहुंचा दिया और अपनी उम्मत की पूरी ख़ैरख़्वाही की और अल्लाह के रास्ते में ख़ूब मेहनत की और जिहाद किया, यहां तक कि अल्लाह ने अपने दीन को इज़्ज़त अता फ़रमाई और अल्लाह का कलिमा पूरा हो गयो। ऐ अल्लाह ! हमें उन लोगों में से बना जो इस वह्य की पैरवी करते हैं जो उन पर उतारी गई थी और आपके बाद हमारे क़दम जमा और आख़िरत में हमें उनके साथ जमा फ़रमा और लोग आमीन कहते जाते।

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 265, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 69

पहले मर्दों ने नमाज़ पढ़ी फिर औरतों ने, फिर बच्चों ने।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर सहाबा किराम की हालत और उनका हुज़ूर सल्ल० की जुदाई पर रोना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि लोग आपस में चुपके-चुपके बातें कर रहे हैं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपने ग़ुलाम से फ़रमाया, जाओ और सुनो कि लोग चुपके-चुपके क्या बातें कर रहे हैं, फिर मुझे आकर बताओ। उसने वापस आकर बताया कि लोग कह रहे हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० यह सुनते ही तेज़ी से चले और वह फ़रमा रहे थे कि हाय ! मेरी कमर टूट रही है। उन्हें इतना ज़्यादा ग़म था कि लोग यही समझ रहे थे कि यह मस्जिद तक नहीं पहुंच सकेंगे। बहरहाल वह हिम्मत करके किसी तरह मस्जिद में पहुंच ही गए।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया से परदा फ़रमा लिया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के हुजरे से मस्जिद में तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० मस्जिद में लोगों से बयान कर रहे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ उमर ! बैठ जाओ (इस पर हज़रत उमर रज़ि० बैठ गए)।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अल्लह की हम्द व सना और कलिमा शहादत के बाद फ़रमाया—

अम्मा बादु ! तुममें से जो आदमी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इबादत करता था, उसे मालूम हो जाना चाहिए कि हज़रत

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 70, कंज़, भाग 4, पृ० 55
2. कंज़, भाग 4, पृ० 48,

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया और जो अल्लाह की इबादत करता था, उसे यक़ीन होना चाहिए कि अल्लाह हमेशा ज़िंदा रहेंगे, उनको मौत नहीं आ सकती और अल्लाह ने क़ुरआन मजीद में फ़रमाया है—

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ . آخر تک (سورت آل عمران آیت ۱۴۴)

'और मुहम्मद निरे रसूल ही तो हैं, आपसे पहले और बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं सो अगर आपका इंतिक़ाल हो जावे या आप शहीद ही हो जावें, तो क्या तुम लोग उलटे फिर जाओगे।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 144)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम! ऐसा मालूम हो रहा था, गोया कि लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि० की तिलावत से पहले इस आयत को जानते ही नहीं थे कि यह भी उतरी है। तमाम लोगों ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से इस आयत को एकदम ले लिया और हर आदमी उसे पढ़ने लगा और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! ज्यों ही मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को यह आयत पढ़ते हुए सुना तो मैं तो दहशत के मारे कांपने लग गया और मैं ज़मीन पर गिर गया और जब मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की यह आयत पढ़ते हुए सुना तब मुझे पता चला कि हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया है।[1]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० को इसका इतना ज़्यादा रंज व सदमा हुआ कि कुछ सहाबा रज़ि० को तो (यह वस्वसा भी आने लग गया कि अब इस्लाम मिट जाएगा) मैं भी उन्हीं लोगों में था।

एक दिन मैं मदीना की एक हवेली में बैठा हुआ था और हज़रत

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 48

अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत हो चुकी थी कि इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास से गुज़रे, लेकिन ज़्यादा दुखी होने की वजह से मुझे उनके गुज़रने का बिल्कुल पता न चला।

हज़रत उमर रज़ि॰ सीधे हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ के पास गए और उनसे कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल॰ के ख़लीफ़ा! क्या मैं आपको एक अजीब बात न बताऊं! मैं हज़रत उस्मान रज़ि॰ के पास से गुज़रा और मैंने उन्हें सलाम किया, लेकिन उन्होंने मेरे सलाम का जवाब न दिया। आगे और हदीस भी है, जैसा कि सलाम के बाब में आएगी।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सईद बिन यरबूअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उन्होंने सर पर कपड़ा डाला हुआ था और बहुत दुखी थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया, क्या बात है? बड़े दुखी नज़र आ रहे हो?

हज़रत अली रज़ि॰ ने कहा, मुझे वह ज़बरदस्त ग़म पेश आया है, जो आपको नहीं आया है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने फ़रमाया, सुनो यह क्या कह रहे हैं। मैं तुम्हें अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं, क्या तुम्हारे ख़्याल में कोई आदमी ऐसा है, जिसे मुझसे ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़म हुआ हो?[2]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (का इंतिक़ाल हो चुका था और उन) का जनाज़ा हमारे घरों में रखा हुआ था। हम सब पाक बीवियां जमा थीं और रो रही थी और उस रात हम बिल्कुल न सोई थीं। हम आपको चारपाई पर देखकर ख़ुद को तसल्ली दे रही थीं कि इतने में रात के आख़िरी हिस्से में हुज़ूर सल्ल॰ को दफ़न कर दिया गया, और क़ब्र पर मिट्टी डालने के लिए

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ॰ 128,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ॰ 84,

हमने फावड़ों के चलने की आवाज़ सुनी, तो हमारी भी चीख़ निकल गई और मस्जिद वालों की भी और सारा मदीना उस चीख़ से गूंज उठा।

इसके बाद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ज्र की अज़ान दी, तो जब उन्होंने हुज़ूर सल्ल० का नाम लिया, यानी

'अश्हदु अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह' कहा तो ज़ोर-ज़ोर से रो पड़े और इससे हमारा ग़म और बढ़ गया। तमाम लोग आपकी क़ब्र की ज़ियारत के लिए अन्दर जाने की कोशिश करने लगे, इसलिए दरवाज़ा अन्दर से बन्द करना पड़ा। हाय! वह कितनी बड़ी मुसीबत थी। इसके बाद जो भी मुसीबत हमारे ऊपर आई तो हुज़ूर सल्ल० (के जाने) की मुसीबत को याद करने से वह मुसीबत हलकी हो गई।[1]

हज़रत अबू ज़ुवैब हुज़ली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मदीना मुनव्वरा आया, तो मैंने देखा कि मदीना वाले ऊंची आवाज़ से ऐसे ज़ोर-ज़ोर से रो रहे हैं, जैसे कि सारे हाजी एहराम की हालत में ज़ोर से लब्बैक कह रहे हों। मैंने पूछा, क्या हुआ?

लोगों ने बताया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया है। (इस वजह से सब लोग रो रहे हैं।)[2]

हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त मक्का मुकर्रमा और उसके आस-पास के इलाक़े के अमीर हज़रत अत्ताब बिन उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु थे। जब मक्का वालों को हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल की ख़बर मिली, तो मस्जिदे हराम में बैठे हुए सारे मुसलमान ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गए और ग़म के ज़्यादा होने की वजह से हज़रत अत्ताब रज़ि० तो मक्का मुकर्रमा से बाहर एक घाटी में चले गए (ताकि तंहाई में बैठकर रोते रहें)।

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 271, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 221
2. कंज़, भाग 4, पृ० 58

हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर हज़रत अत्ताब को कहा, (तंहाई छोड़ो और) खड़े होकर लोगों में बात करो।

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल की वजह से मुझमें बात करने की हिम्मत नहीं।

हज़रत सुहैल ने कहा, आप मेरे साथ चलें, आपकी जगह मैं बात कर लूंगा। चुनांचे दोनों घाटी से निकलकर मस्जिदे हराम आए और हज़रत सुहैल रज़ि० ने खड़े होकर बयान किया। उन्होंने अल्लाह की हम्द व सना के बाद अपने बयान में वे तमाम बातें कह दीं जो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना में फ़रमाई थीं। उनमें से एक बात भी तो न छोड़ी (और अल्लाह ने उनको मक्का वालों के संभालने का ज़रिया बना लिया।)

बद्र की लड़ाई के मौक़े पर हज़रत सुहैल बिन अम्र भी काफ़िर क़ैदियों में थे। हज़रत उमर रज़ि० उनके आगे के दांत निकालना चाहते थे, तो उनसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, ऐ उमर रज़ि० ! तुम क्यों उनके आगे के दांत निकालने लगे हो? उन्हें छोड़ दो। हो सकता है अल्लाह उन्हें (अपने दीन की ख़िदमत के लिए) खड़े होने का ऐसा ज़बरदस्त मौक़ा दें, जिससे तुम्हें बहुत ज़्यादा ख़ुशी हो।

चुनांचे यह वही मौक़ा था, जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़बर दी थी और उनके इस बयान का बहुत असर हुआ और मक्का मुकर्रमा और उसके आस-पास के सारे इलाक़े के मुसलमान संभल गए और हज़रत अत्ताब की सरदारी और मज़बूत हो गई।[1]

हज़रत अबू जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (के इंतिक़ाल) के बाद कभी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को हंसते हुए नहीं देखा, हां, सिर्फ़ थोड़ा-सा मुस्करा लेतीं, जिससे चेहरे का एक किनारा ज़रा लंबा हो जाता।[2]

1. कंज़, भाग 4, पृ० 46,
2. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 84

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने क्या कहा?

हज़रत इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, आज हम वह्य से और अल्लाह के पास से आने वाले कलाम से महरूम हो गए।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, तो हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा रोने लगीं, तो किसी ने उनसे पूछा कि आप हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल पर क्यों रो रही हैं? तो उन्होंने फ़रमाया, (मैं हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल पर नहीं रो रही हूं) क्योंकि मुझे यक़ीन था कि हुज़ूर सल्ल० का बहुत जल्द इंतिक़ाल हो जाएगा। मैं तो इस पर रो रही हूं कि वह्य का सिलसिला अब बन्द हो गया।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, आओ, हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़ियारत करने चलते हैं (मैं भी इन दोनों के साथ गया)। जब हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० के पास पहुंचे, तो वह रोने लगीं। इन लोगों ने उनसे फ़रमाया, आप क्यों रोती हैं? अल्लाह के यहां जाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को जो कुछ मिला है, वह उनके लिए यहां से (हज़ारों गुना) बेहतर है।

हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम, मैं इसलिए नहीं रो रही कि मुझे यह मालूम नहीं है कि अल्लाह के यहां जाकर अल्लाह के रसूल सल्ल० को जो कुछ मिला है, वह उनके लिए यहां से (हज़ारों गुना) बेहतर है, बल्कि मैं तो इस वजह से रो रही हूं कि अब आसमान से

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 50
2. अहमद,

वह्य आने का सिलसिला रुक गया है। यह बात ऐसी असरदार थी कि उसे सुनकर वे दोनों भी रोने लग पड़े।[1]

हज़रत तारिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा रोने लगीं। किसी ने उनसे कहा, ऐ उम्मे ऐमन ! आप क्यों रोती हैं ?

उन्होंने फ़रमाया, मैं इस बात पर रो रही हूं कि अब आसमान की ख़बरें हमारे पास आनी बन्द हो गई हैं।[2]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत उम्मे ऐमन ने फ़रमाया, मैं इस बात पर रो रही हूं कि दिन रात हमारे पास आसमान की ख़बरें ताज़ा-ब-ताज़ा आया करती थीं, यह सिलसिला अब बन्द हो गया है, मैं इस पर रो रही हूं। हज़रत उम्मे ऐमन की इस बात पर लोगों को बहुत ताज्जुब हुआ।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल पर लोग रोने लगे और कहने लगे, अल्लाह की क़सम ! हमारी तमन्ना यह थी कि हम हुज़ूर सल्ल० से पहले मर जाते, क्योंकि अब हमें ख़तरा है कि आपके बाद कहीं हम फ़ित्नों में न फंस जाएं, इस पर हज़रत मान बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लेकिन अल्लाह की क़सम, मेरी तमन्ना तो यह नहीं थी कि मैं हुज़ूर सल्ल० से पहले मर जाता, बल्कि मैं तो यह चाहता हूं कि जैसे मैंने हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में हुज़ूर सल्ल० को सच्चा माना और उनकी तस्दीक़ की, ऐसे ही उनके इंतिक़ाल के बाद उनकी तस्दीक़ करूं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी और बढ़ गई और आप बहुत ज़्यादा बेचैन हो गए, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, हाय अब्बा जान की बेचैनी !

---

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 274, कंज़, भाग 4, पृ० 48, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 164,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 60, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 164,
3. बिदाया, भाग 6, पृ०339, इस्तीआब, भाग 3, पृ०446, इसाबा, भाग 3, पृ० 450, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 465

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, आज के बाद तुम्हारे वालिद पर कभी बेचैनी नहीं आएगी। फिर जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने फ़रमाया, हाय! मेरे अब्बा जान ने रब की दावत क़ुबूल कर ली। हाय मेरे अब्बा जान का ठिकाना जन्नतुल फ़िरदौस बन गया। हाय मेरे अब्बा जान! उनकी मौत पर हम हज़रत जिब्रील से ताज़ियत करते हैं।

फिर जब हुज़ूर सल्ल० दफ़न हो गए तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अनस रज़ि०! तुम्हारे दिल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मिट्टी डालने के लिए कैसे तैयार हो गए।[1]

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, ऐ अनस! तुम्हारे दिल कैसे तैयार हो गए कि तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिट्टी में दफ़न कर वापस आ गए?

हज़रत हम्माद कहते हैं जब हज़रत साबित रज़ि० यह हदीस बयान करते तो इतना रोते कि पसलियां हिलने लगतीं।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी) हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर कुछ शेर कहे, जिनका तर्जुमा यह है—

1. मेरा दिल ग़मगीन है और मैंने रात उस आदमी की तरह गुज़ारी जिसका सब कुछ छिन गया हो, और मैंने इन्तिज़ार में उस आदमी की तरह सारी रात जाग कर गुज़ारी जो लुट गया हो और उसके पास कुछ न बचा हो।

2. और यह सब कुछ उन ग़मों और परेशानियों की वजह से है जिन्होंने मेरी नींद उड़ा रखी है, काश कि मुझे मौत का जाम उस वक़्त पिला दिया जाता।

---

1. बुख़ारी,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 273, कंज़, भाग 4, पृ० 57, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 83,

3. जबकि लोगों ने कहा, मुक़द्दर में लिखी हुई मौत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर आ गई है।

4. जब हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवालों के पास गए, तो हमारी गरदन के बाल ग़म की वजह से सफ़ेद हो गए।

5. तब हमने आपके घरों को देखा कि अब वे वहशतनाक हो गए हैं और मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद अब उनमें कोई नहीं रहा।

6. तो इससे मुझ पर बड़ा ग़म छा गया जो बहुत देर तक रहेगा जो मेरे दिल में ऐसा घुसा कि वह दिल रौब खाया हो गया और ये शेर भी हज़रत सफ़िया रज़ि० ने कहे, जिनका तर्जुमा यह है—

1. ग़ौर से सुनो, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप हमारे साथ आसानी का मामला करने वाले थे, आप हमारे साथ अच्छा व्यवहार करते थे और सख़्त मामला करने वाले न थे।

2. आप हमारे साथ बड़ा अच्छा सुलूक करने वाले और निहायत मेहरबान और हमारे नबी को और हर रोने वाले को आज आप पर रो लेना चाहिए।

3. मेरी ज़िंदगी की क़सम ! मैं नबी करीम की मौत की वजह से नहीं रो रही हूं, बल्कि आपके बाद आने वाले फ़ित्नों और इख़्तिलाफ़ों की वजह से रो रही हूं।

4. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तशरीफ़ ले जाने और उनकी मुहब्बत की वजह से मेरे दिल पर गर्म लोहे से दाग़ लगे हुए हैं।

5. ऐ फ़ातिमा रज़ि० ! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रब अल्लाह उस क़ब्र पर रहमत भेजे जो यसरिब में आपका ठिकाना बनी है।

6. मैं हज़रत हसन रज़ि० को देख रही हूं कि आपने उसे यतीम कर दिया और उसे इस हाल में छोड़ दिया कि वह रो-रो कर दूर चले जाने वाले अपने नाना को पुकार रहा है।

7. मेरी मां, ख़ाला, चचा और मेरी जान और मेरी आल औलाद सब अल्लाह के रसूल सल्ल० पर क़ुर्बान हैं।

8. आपने सब्र फ़रमाया और इंतिहाई सच्चाई के साथ आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया और आपका इंतिक़ाल इस हाल में हुआ कि आप दीन में मज़बूत और आपकी मिल्लत वाज़ेह और आपका दीन बिल्कुल साफ़-सुथरा है।

9. अगर अर्श का मालिक आपको हममें बाक़ी रखता, तो हम बड़े ख़ुश-क़िस्मत होते, लेकिन (आपके इंतिक़ाल फ़रमाने का) अल्लाह का फ़ैसला पूरा होकर रहा।

10. अल्लाह की ओर से आप पर सलाम और तहीया हो और आपको ख़ुशी-ख़ुशी जन्नाते अद्न में दाख़िल किया जाए।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा (हुज़ूर सल्ल० के सामने) अपनी चादर से इशारा करके यह शेर पढ़ रही थीं, जिसका तर्जुमा यह है—

'आपके बाद परेशानी में डालने वाले हालात और सख़्त मुसीबतें पेश आ गई हैं, अगर आप इस मौक़े पर तशरीफ़ फ़रमा होते तो ये हालात और मुसीबतें इतनी ज़्यादा न होतीं।'[2]

हज़रत ग़ुनैम बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो मैंने तो अपने बाप को सुना कि वह यह शेर पढ़ रहे थे, जिनका तर्जुमा यह है—

1. होश से सुनो! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तशरीफ़ ले जाने की वजह से मैं हलाक हो गया। हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में मेरा ख़ास ठिकाना था।

2. जहां मैं सारी रात सुबह तक अम्न व चैन से गुज़ारता था।[3]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 39
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 39
3. इसाबा, भाग 3, पृ० 264, हैसमी, भाग 9, पृ० 39, इब्ने ज़ियाद, भाग 7, पृ० 89

सहाबा किराम रज़ि० का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद करके रोना

हज़रत ज़ैद बिन असलम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक रात हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु देख-भाल करने निकले, तो उन्होंने एक घर में चिराग़ जलते हुए देखा। वह उस घर के क़रीब गये तो देखा कि एक बुढ़िया कातने के लिए अपना ऊन तीर से धुन रही है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को याद करके ये शेर (पद) पढ़ रही है, जिनका तर्जुमा यह है—

1. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नेक लोगों का दरूद हो। (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !) आप पर चुने हुए बेहतरीन लोग दरूद भेजें।

2. आप रातों को ख़ूब इबादत करने वाले और सुबह सेहरी के वक़्त (अल्लाह के सामने) बहुत ज़्यादा रोने वाले थे। मौत के आने के बहुत से रास्ते हैं।

3. और काश मैं जान लेती कि क्या मैं और मेरे हबीब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) किसी घर में कभी इकट्ठे हो सकेंगे?

ये (मुहब्बत भरे शेर) सुनकर हज़रत उमर रज़ि० बैठकर रोने लगे और बड़ी देर तक रोते रहे। आख़िर उन्होंने उस औरत का दरवाज़ा खटखटाया। उस बुढ़िया ने कहा, कौन है?

उन्होंने कहा, उमर बिन ख़त्ताब।

उस बुढ़िया ने कहा, मुझे उमर रज़ि० से क्या वास्ता और उमर रज़ि० इस वक़्त यहां किस वजह से आए हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए! तुम दरवाज़ा खोलो, तुम्हारे लिए कोई ऐसी ख़तरे की बात नहीं है। चुनांचे उस बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला। हज़रत उमर रज़ि० अन्दर गए और फ़रमाया, अभी तुम जो शेर पढ़ रही थीं, ज़रा मुझे दोबारा सुनाना। चुनांचे उसने वे शेर दोबारा हज़रत उमर रज़ि० के सामने पढ़े।

जब वह आख़िरी शेर पर पहुंची, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उससे कहा, तुमने आख़िरी शेर में अपना और हुज़ूर सल्ल० का तज़्किरा किया है, किसी तरह तुम मुझे भी अपने दोनों के साथ शामिल कर लो।

उसने यह शेर पढ़ा—

وَعُمَرُ فَاغْفِرْ لَهُ يَا غَفَّارُ

यानी ऐ ग़फ़्फ़ार! उमर रज़ि० की भी मग़्फ़िरत फ़रमा।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ख़ुश हो गए और वापस आ गए।[1]

हज़रत आसिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने बाप से नक़ल करते हैं, जब भी हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तज़्किरा करते तो एकदम बे-अख़्तियार उनकी आंखों से आंसू बह पड़ते।[2]

हज़रत मुसन्ना बिन सईद फ़ारेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि हर रात अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखता हूं और यह फ़रमा कर रोने लग गए।[3]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी करने वाले को सहाबा किराम रज़ि० का मारना

हज़रत काब बिन अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ग़रफ़ा बिन हारिस किन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सोहबत पाए हुए सहाबी हैं। उन्होंने सुना कि एक नसरानी (ईसाई) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरा-भला कह रहा है। तो उन्होंने उसे ऐसा मारा कि उसकी नाक टूट गई।

यह मामला हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश हुआ। हज़रत अम्र रज़ि० ने हज़रत ग़रफ़ा से फ़रमाया, हम तो उनसे

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 381,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 168,
3. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 20,

अम्न देने का समझौता कर चुके हैं।

हज़रत ग़रफ़ा ने कहा, अल्लाह की पनाह ! ये लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरा भला कहें और हम उनके समझौते का फिर भी ख़्याल रखें? हमने तो इन शर्तों पर इनसे समझौता किया है कि हम इनके इबादतख़ानों को कुछ नहीं कहेंगे। ये अपने इबादतख़ानों में जो चाहें, कहें, और हम इनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ इन पर नहीं डालेंगे और अगर कोई दुश्मन इन पर हमला करेगा तो हम इनकी तरफ़ से लड़ेंगे और इनके हुक्मों में हम कोई दख़ल नहीं देंगे। हां, अगर ये हमारे हुक्मों पर राज़ी होकर हमारे पास फ़ैसला कराने आएंगे तो हम अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के हुक्मों के मुताबिक़ उनके बारे में फ़ैसला करेंगे और अगर ये अपने मामलों के बारे में हमसे अलग-थलग रहेंगे, तो हम इन्हें कुछ नहीं कहेंगे।

इस पर हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, ठीक कह रहे हो।[1]

हज़रत ग़रफ़ा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल थी और उन्होंने हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ इस्लाम से फिरने वालों के ख़िलाफ़ लड़ाई भी लड़ी थी। वह मिस्र के एक नसरानी के पास से गुज़रे जिसको मुन्दक़ून कहा जाता था।

हज़रत ग़रफ़ा ने उसे इस्लाम की दावत दी तो उस नसरानी ने हुज़ूर सल्ल० का ज़िक्र बुरे अन्दाज़ में किया, उन्होंने उसे मारा। फिर यह मामला हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश हुआ। हज़रत अम्र रज़ि० ने उन्हें बुलाकर कहा, हम तो उनसे अम्न देने का समझौता कर चुके हैं और फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[2]

हज़रत काब बिन अलक़मा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हज़रत ग़रफ़ा बिन हारिस किन्दी रज़ियल्लाहु अन्हु को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि

1. इस्तीआब, भाग 3, पृ० 193, इसाबा, भाग 3, पृ० 195
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 13, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 200

व सल्लम की सोहबत हासिल थी। यह एक आदमी के पास से गुज़रे जिसके साथ अम्न देने का समझौता हुआ था। हज़रत ग़रफ़ा ने उसे इस्लाम की दावत दी।

उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरा-भला कह दिया। उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया। हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा, ये लोग समझौते की पाबन्दी की वजह से हमसे मुतमइन थे, (तुमने क़त्ल करके समझौता तोड़ दिया।)

हज़रत ग़रफ़ा रज़ि० ने कहा, हमने उनसे इस बात पर समझौता नहीं किया कि ये अल्लाह और रसूल सल्ल० के बारे में (बुरा-भला कहकर) हमें तक्लीफ़ पहुंचाएं।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म पूरा करना

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु को (बतने) नख़ला नामी जगह पर भेजा और उनसे फ़रमाया, तुम वहां जाओ और क़ुरैश के बारे में कुछ ख़बर लेकर आओ।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें लड़ने का हुक्म नहीं दिया और यह हराम महीनों (यानी जिन महीनों में काफ़िर लोग आपस में लड़ा नहीं करते थे, उन महीनों) का वाक़िया है। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें यह नहीं बताया था कि उन्हें कहां जाना है, बल्कि उन्हें एक ख़त लिखकर दिया था (जो कि बन्द था) और उनसे फ़रमाया था, तुम अपने साथियों को लेकर जाओ और जब चलते-चलते दो दिन हो जाएं, तो यह ख़त खोलकर देख लेना और उसमें मैंने तुम्हें जिस चीज़ का हुक्म दिया हो, उस पर अमल कर लेना। (ख़त पढ़ने के बाद) अपने किसी साथी को अपने साथ जाने पर मजबूर न करना।

दो दिन सफ़र करने के बाद उन्होंने वह ख़त खोला और उसे पढ़ा तो उसमें लिखा हुआ था कि यहां से चलकर नख़ला नामी जगह पर पहुंचो

1. इब्ने असाकिर

और क़ुरैश के बारे में जो ख़बरें तुम्हें पहुंचें, वह लेकर हमारे पास आओ।

ख़त पढ़कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श ने अपने साथियों से कहा, मैं तो अल्लाह के रसूल सल्ल० की बात सुनूंगा भी और मानूंगा भी। तुममें से जिसे शहादत का शौक़ हो, वह तो मेरे साथ चले। मैं तो वहां जा रहा हूं और हुज़ूर सल्ल० के हुक्म को पूरा करूंगा और जिसे शौक़ न हो, वह वापस चला जाए, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मजबूर करके साथ ले जाने से मुझे मना किया है, लेकिन वे तमाम सहाबा रज़ि० उनके साथ आगे नख़ला गए (उनमें से कोई वापस न हुआ)।

जब ये लोग बहरान पहुंचे तो हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उत्बा बिन ग़ज़वान रज़ियल्लाहु अन्हु का ऊंट गुम हो गया, जिस पर ये दोनों बारी-बारी सवार होते थे। ये लोग ऊंट ढूंढने के लिए पीछे रह गए और बाक़ी लोग चलकर नख़ला नामी जगह पर पहुंच गए।

अम्र बिन हज़रमी, हकम बिन कैसान, उस्मान बिन अब्दुल्लाह और मुग़ीरह बिन अब्दुल्लाह उनके पास से गुज़रे। ये लोग अपना तिजारती सामान कपड़ा और किशमिश तायफ़ से लेकर आ रहे थे।

जब सहाबा रज़ि० ने उन कुफ़्फ़ार को देखा, तो हज़रत वाक़िद बिन अब्दुल्लाह के सर के बाल मुंडे हुए थे। उन्होंने उन कुफ़्फ़ार की ओर झांका। जब कुफ़्फ़ार ने देखा कि उनका सर मुंडा हुआ है, तो उन्होंने कहा, यह उमरा करके आ रहे हैं। इसलिए तुम्हें इनसे कोई ख़तरा नहीं है। (ये लड़ने नहीं आए।)

यह रजब का आख़िरी दिन था (और रजब हराम महीनों में दाख़िल है। यह भी उन चार महीनों में से है, जिनमें अरब के कुफ़्फ़ार आपस में लड़ते नहीं थे।)

इसलिए हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० ने आपस में इन कुफ़्फ़ार के बारे में मश्विरा किया कि अगर तुम इन काफ़िरों को आज क़त्ल करोगे, तो हराम शहर यानी रजब में क़त्ल करोगे। (जो कि तमाम अरबों के चलन के ख़िलाफ़ होगा) और अगर इन्हें छोड़ दोगे तो यह आज हरम में

दाख़िल होकर महफ़ूज़ हो जाएंगे, (कि हरम की हदों के अन्दर किसी को क़त्ल करना जायज़ नहीं है) इसलिए हज़रात सहाबा किराम इस पर एक राय हो गए कि उन्हें आज ही क़त्ल कर दिया जाए।

चुनांचे हज़रत वाक़िद बिन अब्दुल्लाह ने अम्र बिन हज़रमी को तीर मारकर क़त्ल कर दिया और उस्मान बिन अब्दुल्लाह और हकम बिन कैसान को गिरफ़्तार कर लिया, मुग़ीरह भाग गया, ये लोग उसे पकड़ न सके। इन काफ़िरों के तिजारती क़ाफ़िले पर भी इन लोगों ने क़ब्ज़ा कर लिया और दो क़ैदियों और इस तिजारती सामान को लेकर ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैंने तो तुम्हें हराम शहर में लड़ने का हुक्म नहीं दिया था। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों क़ैदियों और उस तिजारती सामान को रोक दिया और उसमें से कोई चीज़ न ली।

हुज़ूर सल्ल० का यह फ़रमान सुनकर इन लोगों को बहुत ही ज़्यादा शर्मिन्दगी हुई और वे यों समझे कि हम तो अब हलाक हो गए और उनको मुसलमान भाइयों ने सख़्ती से डांटा और जब क़ुरैश को इस वाक़िए की ख़बर मिली, तो उन्होंने कहा, मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) ने हराम शहर में ख़ून बहाया है और इस महीने में माल पर क़ब्ज़ा किया है और हमारे आदमियों को क़ैद किया है और हराम महीने की बेहुर्मती की है और उसे दूसरे महीनों की तरह आम महीना बना दिया है। इस पर अल्लाह ने इस बारे में यह आयत उतारी—

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ (سورت بقره آيت ٢١٧)

'लोग आपसे हराम महीने में लड़ने के बारे में पूछते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि इसमें ख़ास तौर पर (यानी जान-बूझकर) लड़ाई लड़ना बड़ा जुर्म है और अल्लाह की राह से रोक-टोक करना और अल्लाह के साथ कुफ़्र करना और मस्जिद हराम (काबा) के साथ और जो लोग मस्जिदे

हराम के लायक़ थे, उनको इससे निकाल देना बड़े जुर्म हैं अल्लाह के नज़दीक और फ़िला फैलाना इस ख़ास क़त्ल से कई दर्जे बढ़कर है।'

(सूरः बक़रः आयत 217)

अल्लाह फ़रमा रहे हैं, अल्लाह को न मानना क़त्ल से भी बड़ा गुनाह है, जब यह आयत उतरी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तिजारती सामान तो ले लिया, लेकिन क़ैदियों को फ़िदया लेकर छोड़ दिया। (नख़ला जाने वाले) मुसलमानों ने कहा, (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !) क्या आपको उम्मीद है कि हमें इस लड़ाई पर सवाब मिलेगा? तो अल्लाह ने इस बारे में यह आयत उतारी—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا

से लेकर

أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ आख़िर आयत तक।

'हक़ीक़त में जो लोग ईमान लाए हों और जिन लोगों ने ख़ुदा के रास्ते में वतन छोड़ा हो और जिहाद किया हो, ऐसे लोग तो अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हुआ करते हैं और अल्लाह (इस ग़लती) को माफ़ कर देंगे और तुम पर रहमत करेंगे।' (सूरः बक़रः आयत 218)

इस लड़ाई में जाने वाले आठ आदमी थे और उनके अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु नवें आदमी थे।[1]

हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जमाअत भेजी और उनका अमीर हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाया।

जब हज़रत उबैदा रज़ि० चलने लगे, तो हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत के ग़लबे में (जुदाई की वजह से) रोने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी जगह दूसरे को भेज दिया, जिनका नाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु था और उन्हें एक ख़त लिखकर दिया और हुज़ूर

1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 58, इसाबा, भाग 3, पृ० 278,

सल्ल० ने उन्हें हुक्म दिया कि मदीना में फ़्लां जगह जाएं और वहां जाकर यह ख़त खोलकर पढ़ें और फिर इसमें जहां जाने को लिखा है, वहां चले जाएं और उस जगह पहुंचने से पहले यह ख़त न पढ़ें और यह भी फ़रमाया, अपने साथ किसी को आगे जाने पर मजबूर न करना।

चुनांचे जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि० उस जगह पहुंचे तो उन्होंने यह ख़त पढ़ा, और ख़त पढ़कर—

'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०' पढ़ा और यह कहा, मैं तो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की बात सुनूंगा और मानूंगा। उनके साथियों में से दो साथी वापस चले गए। और बाक़ी सब उनके साथ आगे गए। इन लोगों को इब्नुल हज़रमी मिला तो इन्होंने उसे क़त्ल कर दिया, लेकिन यह न मालूम हो सका कि यह वाक़िया रजब का है या जुमादुस्सानी का।

मुश्रिकों ने कहा, मुसलमानों ने हराम महीने यानी रजब में क़त्ल किया है। इस पर यह आयत उतरी—

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ

से लेकर

وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ

तक

इस पर कुछ मुसलमानों ने कहा, अगरचे इस जमाअत वालों ने काम तो अच्छा किया है, लेकिन इन्हें सवाब नहीं मिलेगा। इस पर यह आयत उतरी[1]—

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ंदक़ की लड़ाई के मौक़े पर फ़रमाया, कोई भी

---

8 1. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 11, बिदाया, भाग 3, पृ० 251,

रास्ते में अस्र की नमाज़ न पढ़े, बल्कि सब बनू क़ुरैज़ा पहुंचकर नमाज़ पढ़ें। (चुनांचे सहाबा किराम रज़ि० बनू क़ुरैज़ा की ओर चल पड़े) कुछ सहाबा रज़ि० अभी रास्ते ही में थे कि नमाज़ का वक़्त हो गया, तो कुछ लोगों ने कहा, हम तो अस्र की नमाज़ वहां बनू क़ुरैज़ा पहुंचकर ही पढ़ेंगे और कुछ लोगों ने कहा, हम तो यहां रास्ते ही में नमाज़ पढ़ लेंगे, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० का मक़सद (यह था कि हम तेज़ चलें,) यह नहीं था कि रास्ते में चाहे वक़्त हो जाए, फिर भी हम नमाज़ न पढ़ें। इसका हुज़ूर सल्ल० से ज़िक्र किया गया। हुज़ूर सल्ल० ने इन दोनों क़िस्म के लोगों में से किसी को भी कुछ न कहा।[1]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ की लड़ाई से वापस हुए, तो आपने (हथियार उतार दिए थे, फिर) दोबारा हथियार लगा लिए और तहारत फ़रमाई।

दुहैम रिवायत करने वाले की हदीस में यह है कि (हुज़ूर सल्ल० ने ख़ंदक़ की लड़ाई से वापस आकर हथियार उतार दिए थे) फिर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आसमान से ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, आप लड़ने वाले दुश्मन (बनू क़ुरैज़ा) के ख़िलाफ़ अपने मददगार जमा कर लें। क्या बात है? मैं देख रहा हूं कि आपने हथियार उतार दिए हैं, हालांकि हम (फ़रिश्तों) ने अभी तक हथियार नहीं उतारे।

यह सुनते ही हुज़ूर सल्ल० घबरा कर उठे और लोगों को बड़ी ताकीद से यह हुक्म दिया कि वे सब बनू क़ुरैज़ा पहुंचकर ही अस्र की नमाज़ पढ़ें।

चुनांचे सहाबा रज़ि० हथियार लगाकर चल पड़े और बनू क़ुरैज़ा पहुंचने से पहले ही सूरज डूबने लगा। इस पर सहाबा रज़ि० में अस्र के बारे में मतभेद हो गया। कुछ लोगों ने कहा कि नमाज़ पढ़ लो। हुज़ूर सल्ल० का यह मक़सद नहीं था कि तुम नमाज़ (वक़्त पर पढ़ना) छोड़ दो और कुछ लोगों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने हमें बहुत ज़ोर से यह

1. बुख़ारी, मुस्लिम,

ताकीद फ़रमाई थी कि हम बनू क़ुरैज़ा पहुंचकर ही नमाज़ पढ़ें, इसलिए हम हुज़ूर सल्ल० का हुक्म मानकर नमाज़ नहीं पढ़ रहे हैं, इसलिए हमें कोई गुनाह नहीं होगा।

चुनांचे एक जमाअत ने रास्ते में अस्त्र की नमाज़ ईमान के साथ सवाब की उम्मीद में पढ़ ली और दूसरी जमाअत ने न पढ़ी, बल्कि बनू क़ुरैज़ा पहुंचकर सूरज डूबने के बाद ईमान के साथ सवाब की उम्मीद में पढ़ ली। हुज़ूर सल्ल० ने (मालूम होने पर) दोनों जमाअतों में से किसी को कुछ नहीं कहा।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुनैन की लड़ाई के दिन देखा कि सहाबा किराम रज़ि० मैदान छोड़कर जा रहे हैं, तो फ़रमाया, ऐ अब्बास रज़ि० ! ज़ोर से यह आवाज़ लगाओ कि ऐ अंसार की जमाअत ! ऐ हुदैबिया में पेड़ के नीचे बैअत होने वालो ! (चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० ने ज़ोर से यह आवाज़ लगाई) जिस पर अंसार ने तुरन्त जवाब में कहा, लब्बैक (हाज़िर हैं), लब्बैक (हाज़िर हैं) (और आवाज़ की ओर आने लगे।)

कुछ सहाबा रज़ि० ने अपनी सवारी को आवाज़ की ओर मोड़ना चाहा, लेकिन घबराहट और परेशानी की वजह से वह सवारी न मुड़ सकी, तो वे उस सवारी से उतर गए और सवारी को वैसे ही छोड़ दिया और ज़िरह को उतार फेंका और तलवार और ढाल को लेकर उस आवाज़ की ओर तेज़ी से चल पड़े।

इस तरह हुज़ूर सल्ल० के पास उनमें से सौ आदमी जमा हो गए, तो आपने दुश्मन के हालात का अन्दाज़ा लगाए बग़ैर ही उनसे लड़ाई शुरू कर दी और बड़े घमासान की लड़ाई हुई। पहली आवाज़ तो अंसार के लिए लगवाई थी। आख़िर में क़बीला ख़ज़रज के लिए आवाज़ लगवाई, क्योंकि ये लोग जमकर लड़ने वाले थे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपनी सवारियों की ओर झांका, तो आपकी नज़र उस जगह पर पड़ी, जहां ख़ूब ज़ोर-शोर से तलवारें चल रही थीं।

---

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 140, बिदाया, भाग 4, पृ० 117

इस पर आपने फ़रमाया, अब तन्दूर गर्म हुआ है यानी ख़ूब घमासान का रन पड़ा है।

हज़रत जाबिर रज़ि० कहते हैं, (उन सौ आदमियों ने लड़ाई लड़ी और अल्लाह ने तुरन्त जीत दिला दी) अल्लाह की क़सम ! भाग कर जाने वाले सहाबा रज़ि० अभी वापस नहीं आए थे कि काफ़िर क़ैदी हुज़ूर सल्ल० के पास गिरफ़्तार होकर पहुंच चुके थे। इन क़ैदियों के हाथ पीछे रस्सियों से बंधे हुए थे। क़ाफ़िरों में बहुत से क़त्ल हुए और बाक़ी सब हार कर भाग गए और इन काफ़िरों का सारा माल, सामान, आल-औलाद अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल० को ग़नीमत के माल के तौर पर दे दिया।[1]

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु इसी हदीस को इस तरह ज़िक्र करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मुझसे) फ़रमाया, ऐ अब्बास रज़ि० ! कीकर (के पेड़ के नीचे बैअत होने) वालों को आवाज़ लगाकर बुलाओ, (चुनांचे मैंने आवाज़ लगाई तो) वह मेरी आवाज़ सुनकर इस तेज़ी से मुड़े जैसे गाए अपने बछड़े की ओर पलटती है और वे सब या लब्बैकाह, या लब्बैकाह कह रहे थे।[2]

हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (हुदैबिया में) मक्का वालों से समझौता किया तो क़बीला ख़ुज़ाआ वाले जाहिलियत के ज़माने से ही हुज़ूर सल्ल० के हलीफ़ चले आ रहे थे और क़बीला बनू बक्र वाले क़ुरैश के हलीफ़ थे। इसलिए हुज़ूर सल्ल० के समझौते के अन्दर क़बीला ख़ुज़ाआ वाले भी आ गए और क़ुरैश के समझौते में बनू बक्र दाख़िल हो गए।

क़बीला ख़ुज़ाआ और बनू बक्र के दर्मियान पहले से लड़ाई चली आ रही थी। इस समझौते के बाद क़ुरैश ने हथियार और ग़ल्ले से बनू बक्र की मद की और बनू बक्र ने ख़ुज़ाआ पर अचानक चढ़ाई कर दी और उन पर ग़ालिब आकर उनके कुछ आदमी क़त्ल कर दिए। इस पर क़ुरैश को यह डर हुआ कि वे समझौता तोड़ चुके हैं, इसलिए उन्होंने

1. बैहक़ी
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 331, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 11

अबू सुफ़ियान से कहा, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जाओ और पूरा ज़ोर लगाओ कि यह समझौता बाक़ी रहे।

अबू सुफ़ियान मक्का से चले और मदीना पहुंचे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू सुफ़ियान तुम्हारे पास आया है, उसका काम बनेगा तो नहीं, लेकिन यह ख़ुश होकर वापस जाएगा। चुनांचे अबू सुफ़ियान हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आए और उनसे कहा, ऐ अबूबक्र! आप इस समझौते को बरक़रार और सुलह को बाक़ी रखें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, इसका अख़्तियार मुझे नहीं, बल्कि इसका अख़्तियार तो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को है। फिर वह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए और उनसे उन्होंने वही बात कही जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कही थी। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुमने तो ख़ुद ही समझौता तोड़ा है और अब जो समझौता नया हो, उसे ख़ुदा पुराना करे और जो समझौता सख़्त और पुराना हो, उसे ख़ुदा तोड़ दे।

इस पर अबू सुफ़ियान ने कहा, मैंने तुम जैसा अपने क़बीले का दुश्मन कोई नहीं देखा। फिर वह हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए और उनसे कहा, ऐ फ़ातिमा! क्या तुम ऐसा काम करने को ख़ुशी के साथ तैयार हो, जिससे तुम अपनी क़ौम की औरतों की सरदार बन जाओ। फिर उनसे वही बात कही जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कही थी।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, इसका अख़्तियार मुझे नहीं है, बल्कि इसका अख़्तियार तो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को है। फिर उन्होंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जाकर वही बात कही, जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कही थी।

हज़रत अली रज़ि० ने उनसे कहा, मैंने तुमसे ज़्यादा भटका हुआ आदमी कभी नहीं देखा। तुम तो ख़ुद अपने क़बीले के सरदार हो, इसलिए तुम इस समझौते को बरक़रार रखो और इस सुलह को बाक़ी रखो, (किसी को मत तोड़ने दो) इस पर अबू सुफ़ियान ने अपना एक हाथ दूसरे पर मारकर कहा, मैंने लोगों को एक दूसरे से पनाह दी। फिर

मक्का वापस चला गया और वहां वालों को सारा हाल बताया।

उन्होंने कहा, आप जैसा क़ौम का नुमाइन्दा आज तक नहीं देखा। अल्लाह की क़सम! आप न तो लड़ाई की ख़बर लाए हैं कि हम चौकन्ने होकर उसकी तैयारी करते और न समझौते की ख़बर लाए हैं कि हम लड़ाई से मुतमइन होकर आराम से बैठ जाते। इसके बाद आगे मक्का-जीत का क़िस्सा बयान किया।[1]

हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई हज़रत अबू अज़ीज़ बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं बद्र की लड़ाई के दिन काफ़िर क़ैदियों में था। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को फ़रमाया, तुम इन क़ैदियों के साथ अच्छा व्यवहार करो, इसकी मेरी ओर से तुमको पूरी ताकीद है। मैं अंसार की जमाअत में था। वह जब भी दिन को या रात को खाना सामने रखते तो हुज़ूर सल्ल० की ताकीद की वजह से मुझे गेहूं की रोटी खिलाते और ख़ुद खजूर खाते।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर ख़ुत्बा दे रहे थे। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने सुना कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे हैं, बैठ जाओ।

यह वहीं मस्जिद से बाहर उसी जगह बैठ गए और ख़ुत्बा ख़त्म होने तक वहीं बैठे रहे। जब हुज़ूर सल्ल० को यह पता चला तो आपने उनसे फ़रमाया, अल्लाह अपनी और अपने रसूल सल्ल० की इताअत का शौक़ तुम्हें और ज़्यादा नसीब फ़रमाए।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, सब बैठ जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 162,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 86,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 52, इसाबा, भाग 2, पृ० 306

अन्हु ने मस्जिद के बाहर से ही हुज़ूर सल्ल० का यह फ़रमान सुना कि सब बैठ जाओ और वहीं क़बीला बनू ग़नम के मुहल्ले में ही बैठ गए।

किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने आपको बैठ जाओ फ़रमाते हुए सुना तो वहीं अपनी जगह बैठ गए।[1]

हज़रत अता रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार ख़ुत्बा दे रहे थे। आपने लोगों से फ़रमाया, बैठ जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० उस वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंच चुके थे, यह सुनते ही वहीं बैठ गए। आपने उनसे फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह ! अन्दर आ जाओ।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार जुमा के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मिंबर पर बैठ गए, तो आपने फ़रमाया, बैठ जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि० यह सुनते ही मस्जिद के दरवाज़े के पास बैठ गए। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखा कि वह दरवाज़े के पास बैठे हुए हैं, तो उनसे फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ! अन्दर आ जाओ।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए। हम भी आपके साथ थे। आपने एक ऊंचा क़ुब्बा देखा, तो पूछा, यह किसका है ?

आपके सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, फ़्लां अंसारी का है। हुज़ूर सल्ल० सुनकर ख़ामोश हो रहे और आपने दिल में यह बात रखी। किसी दूसरे वक़्त वह अंसारी ख़िदमत में हाज़िर हुए और लोगों की मौजूदगी में उन्होंने सलाम किया। हुज़ूर सल्ल० ने मुंह फेर लिया (और सलाम का जवाब भी न दिया), कई बार ऐसे ही हुआ (कि वह सलाम करते, हुज़ूर सल्ल० मुंह फेर लेते), आख़िर वह समझ गए कि हुज़ूर

1. कंज़, भाग 7, पृ० 51, हैसमी, भाग 9, पृ० 316, इसाबा, भाग 2, पृ० 306
2. कंज़, भाग 7, पृ० 56,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 55,

सल्ल० नाराज़ हैं, इसलिए मुंह फेर रहे हैं।

उन्होंने सहाबा रज़ि० से इसकी वजह पूछी और यों कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं आज अल्लाह के रसूल सल्ल० की नज़रों को फिरा हुआ पाता हूं, ख़ैर तो है।

सहाबा रज़ि० ने बताया, हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए थे, तो तुम्हारा कुब्बा देखा था। यह सुनकर वह अंसारी फ़ौरन गए और कुब्बे को गिराकर बिल्कुल ज़मीन के बराबर कर दिया कि नाम व निशान भी न रहा। (फिर आकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ भी न किया)

एक दिन हुज़ूर सल्ल० का उस जगह गुज़र हुआ तो आपको वहां वह कुब्बा नज़र न आया। आपने पूछा, उस कुब्बे का क्या हुआ ?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, कुब्बे वाले अंसारी ने आपके मुंह फेर लेने का हमसे ज़िक्र किया था, हमने उसे बता दिया था। उन्होंने उसे आकर बिल्कुल गिरा दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर तामीर आदमी पर वबाल है, मगर वह तामीर जो सख़्त ज़रूरी और मजबूरी की हो।

यह रिवायत अबू दाऊद की है और इब्ने माजा में यह रिवायत थोड़ी कम है और उसमें यह है कि इसके बाद किसी मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० का वहां से गुज़र हुआ। हुज़ूर सल्ल० को यह कुब्बा वहां नज़र न आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसके बारे में पूछा, तो सहाबा रज़ि० ने बताया कि जब इन अंसारी को पता चला तो उन्होंने इस कुब्बे को गिरा दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह उस पर रहम करे, अल्लाह उस पर रहम करे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अक़बा अज़ाख़िर गया। (यह मक्का और मदीना के बीच एक जगह का नाम है) मेरे ऊपर लाल रंग की एक चादर थी। हुज़ूर सल्ल० ने मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, यह कैसा कपड़ा है ?

मैं समझ गया कि हुज़ूर सल्ल० को यह चादर पसन्द नहीं आई। मैं

अपने घर वापस आया, घरवाले तनूर में आग जला रहे थे। मैंने वह चादर उसमें डाल दी, फिर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। आपने पूछा, उस चादर का क्या हुआ?

मैंने कहा, मैंने उसे तनूर में डाल दिया है।

आपने फ़रमाया, अपने घरवालों में से किसी को क्यों न दे दी? (औरतों के लिए उस रंग के कपड़े पहनने में कोई हरज नहीं है।)[1]

हज़रत सह्ल बिन हनज़लीया अबशमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, ख़ुरैम असदी बहुत अच्छा आदमी है। अगर उसमें दो बातें न हों, एक तो उसके सर के बाल बहुत बड़े हैं, दूसरे वह लुंगी टख़नों के नीचे बांधता है।

हज़रत ख़ुरैम रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद पहुंचा तो तुरन्त चाक़ू लेकर बाल कानों के नीचे से काट दिए और लुंगी आधी पिंडुली तक बांधना शुरू कर दी।[2]

हज़रत जस्सामा बिन मुसाहिक़ बिन रबीअ बिन क़ैस किनानी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से हिरक़्ल के पास क़ासिद बनकर गए थे, वह फ़रमाते हैं, मैं हिरक़्ल के पास जाकर बैठ गया। मैंने ख़्याल न किया कि मेरे नीचे क्या है? मैं किस पर बैठ रहा हूं? वह सोने की कुर्सी थी। जब मैंने उसे देखा तो मैं तुरन्त उससे उठकर नीचे बैठ गया, तो हिरक़्ल हंस पड़ा और उसने मुझसे पूछा, हमने यह कुर्सी तुम्हारे इकराम के लिए रखी थी, तुम उससे उठ क्यों गए?

मैंने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस जैसी चीज़ों से मना करते सुना है?[3]

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन मेरे मामूं जान मेरे पास आए और उन्होंने कहा, हमें आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक काम से मना फ़रमाया है जो तुम्हारे नफ़ा का

1. कन्ज़, भाग 2, पृ० 44,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 59
3. कंज़, भाग 7, पृ० 15, इसाबा, भाग 1, पृ० 227

था, लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की बात मानने में हमारा तुम्हारा ज़्यादा नफ़ा है। फिर आगे ज़मीन उजरत पर देने के बारे में हदीस बयान फ़रमाई।[1]

क़बीला बनू हारिस बिन ख़ज़रज के हज़रत मुहम्मद बिन असलम बिन बजरा रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ी उम्र वाले बड़े मियां थे। वह अपना क़िस्सा ख़ुद बयान करते हैं कि कभी-कभी वह (अपने गांव से) मदीना मुनव्वरा किसी काम से जाते और बाज़ार में अपना काम पूरा करके अपने गांव वापस आ जाते। जब अपनी चादर उतार कर रख देते तो उन्हें याद आता कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ी, तो यों फ़रमाते—

'मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में दो रक्अत नमाज़ नहीं पढ़ी है, हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमसे फ़रमाया था, (ऐ क़रीब के देहात वालो !) तुममें से जो इस बस्ती (यानी मदीना मुनव्वरा) में आए, वह जब तक इस मस्जिद (नबवी) में दो रक्अत नमाज़ न पढ़ ले, उसे अपने गांव में नहीं जाना चाहिए। चुनांचे वह अपनी चादर लेते और मदीना वापस जाते और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में दो रक्अत नमाज़ पढ़ते।[2]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अंसार की एक लड़की से मंगनी की और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका तज़्किरा किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने उसे देखा है?

मैंने कहा, नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे देख लो। इससे तुम दोनों के दर्मियान मुहब्बत और जोड़ बढ़ेगा। मैंने उस लड़की के घर जाकर उसके मां-बाप से इसका ज़िक्र किया। वे दोनों (हैरान होकर) एक दूसरे को देखने लगे (और लड़की दिखाने में शर्म महसूस करने लगे), इसलिए मैं खड़ा होकर

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 73
2. कंज़, भाग 3, पृ० 346, इसाबा, भाग 3, पृ० 414,

घर से बाहर आ गया।

इस पर उस लड़की ने कहा, इस आदमी को मेरे पास लाओ और वह ख़ुद परदे के एक तरफ़ खड़ी हो गई और उसने कहा, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको इस बात का हुक्म दिया है कि आप मुझे देखें तो ज़रूर देख लें, वरना मेरी तरफ़ से देखने की बिल्कुल इजाज़त नहीं है।

चुनांचे मैंने उसे देखा और फिर मैंने उससे शादी की। मैंने जितनी औरतों से शादी की, उनमें से सबसे ज़्यादा मुझे उसी से मुहब्बत थी और उसकी क़द्र मेरी निगाह में सबसे ज़्यादा थी, हालांकि मैंने सत्तर औरतों से शादी की है। (एक वक़्त में चार से ज़्यादा बीवियां नहीं होती थीं।)[1]

अबू दाऊद में यह रिवायत है कि हज़रत मारूर बिन सुवैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने रबज़ा बस्ती में हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि उनके जिस्म पर एक मोटी चादर थी और उनके ग़ुलाम के जिस्म पर वैसी ही मोटी चादर थी। लोगों ने कहा, ऐ अबूज़र ! अगर आप अपने ग़ुलाम वाली चादर लेकर अपनी इस चादर के साथ मिलाकर ख़ुद पहन लेते तो आपका जोड़ा पूरा हो जाता और अपने ग़ुलाम को कोई और कपड़ा पहनने को दे देते।

तो हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया, एक बार मैंने एक आदमी को गाली दी और उसकी मां अजमी थी। मैंने उसे मां के नाम से शर्म दिलाई (यह दूसरे आदमी हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु थे, तो उनसे कह दिया कि है ना हबशिन का बेटा) उसने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरी शिकायत कर दी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूज़र रज़ि० ! तुम्हारे अन्दर अभी तक जाहिलियत वाली बातें हैं। ये ग़ुलाम तेरे भाई हैं। अल्लाह ने तुम्हें इन पर फ़ज़ीलत दी है, इसलिए जिस ग़ुलाम से तुम्हारी तबीयत का जोड़ न बैठे, तुम उसे बेच दो और अल्लाह की मख़्लूक़ को मत सताओ।

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 288,

बुख़ारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ये ग़ुलाम तुम्हारे भाई हैं। अल्लाह ने इन्हें तुम्हारा मातहत बनाया है तो अल्लाह जिसके भाई को इसका मातहत बनाएं तो उसे चाहिए कि जो वह ख़ुद खाता है, उसी में से अपने मातहत भाई को खिलाए और जो वह ख़ुद पहनता है, उसी में से अपने भाई को पहनाए और उसे ऐसा काम न कहे जो उसकी ताक़त से ज़्यादा हो और अगर उसे ऐसा काम कह दे तो फिर उसकी उस काम में मदद करे।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के ख़िलाफ़ करने वाले पर सहाबा किराम रज़ि० की सख़्ती

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, (मेरे वालिद) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे जुएं बहुत पड़ जाती हैं, इसलिए क्या आप मुझे रेशम का कुरता पहनने की इजाज़त देते हैं? हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इजाज़त दे दी।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बन गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान अपने बेटे अबू सलमा को लेकर सामने से आए। उनके बेटे ने रेशम का कुरता पहना हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह क्या है? और अपना हाथ कुरते के गरेबान में डालकर उसे नीचे तक फाड़ दिया।

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने उनसे कहा, क्या आपको मालूम नहीं है कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे रेशम की इजाज़त दे दी थी?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० ने तुम्हें इसलिए इजाज़त दी थी कि तुमने हुज़ूर सल्ल० से जुओं की शिकायत की थी।

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 495, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 437

अब यह इजाज़त सिर्फ़ तुम्हारे लिए है, तुम्हारे अलावा और किसी के लिए नहीं है।[1]

हज़रत अबू सलमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। उनके साथ उनका बेटा मुहम्मद भी था, जिसने रेशम का कुरता पहन रखा था। हज़रत उमर रज़ि० ने खड़े होकर उसके कुरते के गरेबान को पकड़ा और उसे फाड़ डाला।

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए, आपने तो बच्चे को डरा दिया और उसका दिल उड़ा दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप बच्चों को रेशम पहनाते हैं?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, हां, इसलिए कि मैं ख़ुद रेशम पहनता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या ये बच्चे आपकी तरह (जुओं के ज़्यादा होने का शिकार) हैं?[2]

इब्ने असाकिर और इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहिमा बयान करते हैं कि एक बार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने रेशम का कुरता पहना हुआ था। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़माया, ऐ ख़ालिद! यह क्या पहन रखा है?

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इसमें क्या हरज है? क्या इब्ने औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु रेशम नहीं पहनते हैं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम भी इब्ने औफ़ रज़ि० की तरह (जुओं के ज़्यादा होने के शिकार) हो और तुम्हें भी वे फ़ज़ीलतें हासिल हैं जो इब्ने औफ़ को हासिल हैं? इस वक़्त इस घर में जितने आदमी हैं, मैं उन सबको क़सम देकर कहता हूं कि जिसके सामने उस

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 93,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 57

कुरते का जो-सा भी हिस्सा है, वह उसे पकड़कर फाड़ डाले। चुनांचे सबने उस कुरते को इस तरह फाड़ डाला कि हज़रत ख़ालिद रज़ि० के जिस्म पर उसका एक टुकड़ा भी न बचा।[1]

'हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का ख़िलाफ़त के मामले में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मुक़द्दम समझना' शीर्षक के तहत हज़रत सख़ रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस गुज़र चुकी है जिसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल के एक माह बाद हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु (मदीना मुनव्वरा) आए। उन्होंने दीबाज का रेशमी जुब्बा पहन रखा था, उनकी हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई।

हज़रत उमर रज़ि० ने आस-पास के लोगों को ऊंची आवाज़ से कहा, इसके जुब्बे को फाड़ दो, क्या यह रेशम पहन रहा है, हालांकि अम्न के ज़माने में हमारे मर्दों के लिए इसका इस्तेमाल ठीक नहीं है? चुनांचे लोगों ने उनका जुब्बा फाड़ दिया।

हज़रत अब्दा बिन लुबाबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यह रिवायत पहुंची है कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिदे नबवी में से गुज़र रहे थे। मस्जिद में एक साहब खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, जिन्होंने हरे रंग की एक चादर पहन रखी थी, जिसकी घुंडियां रेशम की थीं। आप उसके पहलू में खड़े हो गए और उससे फ़रमाया, अरे मियां! जितनी चाहो, लम्बी नमाज़ पढ़ लो, जब तक तुम्हारी नमाज़ ख़त्म नहीं हो जाएगी मैं यहां से नहीं जाऊंगा।

जब उस आदमी ने यह देखा, तो नमाज़ से फ़ारिग़ होकर हज़रत उमर रज़ि० के पास आया तो हज़रत उमर रज़ि० ने उससे फ़रमाया, ज़रा अपना यह कपड़ा मुझे दिखाओ और फिर वह कपड़ा पकड़ कर उसकी रेशम वाली तमाम घुंडियां काट दीं। फिर फ़रमाया, लो, अपना कपड़ा ले लो।[2]

हज़रत सईद बिन सुफ़ियासन क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 57
2. कंज़, भाग 8, पृ० 57

मेरे भाई का इंतिक़ाल हुआ और उसने वसीयत की कि सौ दीनार अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएं। मैं हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उनके पास एक साहब बैठे हुए थे। मैंने एक क़बा पहन रखी थी जिसके गरेबान और कालर पर रेशम की किनारी सिली हुई थी। ज्यों ही उन साहब ने मुझे देखा, तो फाड़ने के लिए मुझसे क़बा खींचने लगे।

जब हज़रत उस्मान रज़ि० ने यह मंज़र देखा, तो फ़रमाया, इस आदमी को छोड़ दो। इस पर उन्होंने मुझे छोड़ दिया। फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, तुम लोगों ने (क़बा खींच कर) जल्दी की (या तुम लोगों ने दुनिया में रेशम इस्तेमाल करके जल्दी की)।

फिर हज़रत उस्मान रज़ि० से मैंने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरे भाई का इंतिक़ाल हो गया और उसने वसीयत की कि अल्लाह के रास्ते में सौ दीनार ख़र्च किए जाएं। आप फ़रमाएं कि मैं उसकी वसीयत किस तरह पूरी करूं?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने मुझसे पहले किसी और से यह बात पूछी है?

मैंने कहा, नहीं।

तो उन्होंने फ़रमाया, अगर तुम मुझसे पहले किसी और से यह बात पूछते और वह यह जवाब न देता, जो मैं देने लगा हूं, तो मैं तुम्हारी गरदन उड़ा देता (कि तुमने उस जाहिल से क्यों पूछा?) अल्लाह ने हमें इस्लाम का हुक्म दिया तो हम सब इस्लाम ले आए और (अल्लाह का शुक्र है कि) हम सब मुसलमान हैं। फिर अल्लाह ने हमें हिजरत का हुक्म दिया तो हमने हिजरत की, चुनांचे हम मदीना वाले मुहाजिर हैं। फिर अल्लाह ने हमें जिहाद का हुक्म दिया तो (उस ज़माने में) तुमने जिहाद किया तो तुम शाम वाले मुजाहिद हो। तुम यह सौ दीनार अपने ऊपर, अपने घरवालों पर और आस-पास के ज़रूरतमंदों पर ख़र्च कर लो, क्योंकि अगर तुम एक दिरहम लेकर घर से निकलो और फिर उसका गोश्त ख़रीदो और फिर उसे तुम भी खा लो और तुम्हारे घरवाले भी खा लें, तो तुम्हारे लिए सात सौ दिरहम का सवाब लिखा जाएगा

(ज़रूरत के वक़्त घरवालों पर ख़र्च करने पर सदक़े का सवाब मिलता है, फ़िज़ूलख़र्ची पर पकड़ होगी।)

फिर मैंने हज़रत उस्मान रज़ि० के पास से बाहर आकर लोगों से पूछा कि वह आदमी जो मेरा जुब्बा खींच रहा था, वह कौन था?

लोगों ने बताया, वह हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

मैं उनके घर उनकी ख़िदमत में गया और मैंने अर्ज़ किया, आपने मुझमें क्या देखा था?

उन्होंने फ़रमाया, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि बहुत जल्द मेरी उम्मत औरतों की शर्मगाहों को (यानी ज़िना को) और रेशम को हलाल समझने लग जाएगी और यह पहला रेशम है जो मैंने किसी मुसलमान पर देखा है। फिर मैंने उनके पास से बाहर आकर उस क़बा को बेच दिया।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत क़ुदामा बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु को बहरैन का गवर्नर बनाया। यह हज़रत उमर रज़ि० की लड़की हज़रत हफ़सा रज़ि० और उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मामूं थे।

बहरैन से क़बीला अब्दुल क़ैस के सरदार हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ि० की ख़िदमत में आये और कहा, ऐ अमीरुल-मोमिनीन! हज़रत क़ुदामा ने कुछ पी लिया जिससे उन्हें नशा हो गया। मैंने ऐसा काम देखा है जिस पर अल्लाह की हद लाज़िम आती है, उसे आप तक पहुंचाना मैं अपने ज़िम्मे समझता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे साथ और कौन गवाह है?

उन्होंने कहा, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि०।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को बुलाया

1. इब्ने असाकिर, भाग 1, पृ० 53,

और उनसे फ़रमाया, तुम क्या गवाही देते हो?

उन्होंने कहा, मैंने इनको पीते हुए तो नहीं देखा, अलबत्ता नशे में देखा कि क़ै कर रहे थे।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आपने गवाही देने में बहुत बारीकी से काम लिया है। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने ख़त लिखकर हज़रत क़ुदामा को बहरैन से मदीना बुलाया। चुनांचे वह मदीना आ गए तो हज़रत जारूद ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, इन पर अल्लाह की किताब का हुक्म जारी करें।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप मुद्दई हैं या गवाह?

हज़रत जारूद ने कहा, गवाह हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तो आप गवाही दे चुके हैं, (इसलिए सज़ा देने की मांग आप नहीं कर सकते हैं।)

इस पर हज़रत जारूद ख़ामोश हो गए, लेकिन अगले दिन सुबह को हज़रत उमर रज़ि० के पास आकर फिर उनसे कहा, इन पर अल्लाह की हद जारी करें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (आप बार-बार सज़ा का तक़ाज़ा कर रहे हैं, इसलिए) मेरे ख़्याल में आप ख़ुद मुद्दई हैं। (गवाह नहीं हैं) और आपके साथ सिर्फ़ एक ही गवाह है, यानी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० (और एक गवाह से आपका दावा साबित नहीं हो सकता।)

हज़रत जारूद ने कहा, मैं आपको अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं (कि इन पर हद क़ायम करें)।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप अपनी ज़ुबान रोक कर रखें, नहीं तो (मार-मारकर) आपका बुरा हाल कर दूंगा।

हज़रत जारूद ने कहा, ऐ उमर रज़ि०! यह तो ठीक नहीं है कि शराब को तो आपका चचेरा भाई पिए और आप सज़ा मुझे दें।

इस पर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर आपको हमारी गवाही में शक है तो आप हज़रत क़ुदामा की बीवी हज़रत बिन्तुल वलीद रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आदमी भेजकर उससे पूछ लें।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत हिन्द बिन्त वलीद रज़ि० के पास आदमी भेजा और क़सम देकर उन्हें कहा कि वह ठीक-ठीक बताएं। चुनांचे उन्होंने अपने ख़ाविंद के ख़िलाफ़ गवाही दी।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत क़ुदामा से कहा, अब तो मैं आप पर हद ज़रूर जारी करूंगा।

हज़रत क़ुदामा ने कहा, अगर मैंने पी भी है तो भी आप लोग मुझ पर हद जारी नहीं कर सकते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्यों?

हज़रत क़ुदामा ने कहा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْا

(سورت مائدہ آیت ۹۳)

'ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं, जिसको वे खाते-पीते हों, जबकि वे लोग परहेज़ रखते हों और ईमान रखते हों और नेक काम करते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ईमान रखते हों, फिर परहेज़ करने लगते हों और ख़ूब नेक अमल करते हों और अल्लाह ऐसे नेकों से मुहब्बत रखते हैं।'

(सूरः माइदा, आयत 93)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आप इस आयत का मतलब ग़लत समझते हैं। (इस आयत का मतलब तो यह है कि शराब हराम होने से पहले मुसलमानों ने जो शराब पी है, उसमें गुनाह नहीं है, क्योंकि उस ज़माने में शराब हलाल थी, लेकिन अब तो शराब हराम हो चुकी है, इसलिए) अगर आप अल्लाह से डरते तो उसकी हराम की हुई चीज़ यानी शराब से बचते।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछा, क़ुदामा को कोड़े लगाने के बारे में आप लोगों का क्या ख़्याल है?

लोगों ने कहा, हमारी राय यह है कि जब तक यह बीमार हैं, इन्हें कोड़े न लगाए जाएं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने कुछ दिन चुप्पी रखी, फिर एक दिन हज़रत उमर रज़ि० ने उनको कोड़े लगाने का पक्का इरादा

कर लिया, तो फिर लोगों से पूछा कि अब क़ुदामा को कोड़े लगाने के बारे में आप लोगों का क्या ख़्याल है?

लोगों ने कहा, हमारी राय अब भी यही है कि जब तक यह बीमार हैं, इन्हें कोड़े न लगाए जाएं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इन कोड़ों के लगाने से अगर यह मर जाएं तो यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्दीदा है कि मुझे इस हाल में मौत आए कि यह हद मेरी गरदन में पड़ी हो। मेरे पास पूरा और मज़बूत कोड़ा लाओ। (चुनांचे कोड़ा लाया गया) और हज़रत उमर रज़ि० के फ़रमान के मुताबिक़ हज़रत क़ुदामा को कोड़े मारे गए। इस पर हज़रत क़ुदामा हज़रत उमर रज़ि० से नाराज़ हो गए और उनसे बात-चीत छोड़ दी।

फिर हज़रत उमर रज़ि० हज को गए और हज़रत क़ुदामा भी उस हज में थे और वह हज़रत उमर रज़ि० से नाराज़ ही थे। ये दोनों जब हज से वापस हुए और हज़रत उमर रज़ि० सुक़या मंज़िल पर उतरे तो वहां उन्होंने आराम फ़रमाया। जब नींद से उठे तो फ़रमाया, क़ुदामा को जल्दी से मेरे पास लाओ। अल्लाह की क़सम! मैंने ख़्वाब में एक आदमी को देखा जो मुझसे कह रहा है, क़ुदामा से सुलह कर लो, क्योंकि वह आपके भाई हैं, इसलिए उन्हें जल्दी से मेरे पास लाओ।

जब लोग उन्हें बुलाने गए, तो उन्होंने आने से इंकार कर दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह जैसे भी आते हैं, उन्हें लेकर आओ। (चुनांचे वह आए तो) हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे बात-चीत की (उन्हें राज़ी किया) और उनके लिए इस्तग़फ़ार किया।[1]

हज़रत यज़ीद बिन उबैदुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि अपने कुछ साथियों से नक़ल करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को देखा कि वह जनाज़े के साथ जा भी रहा है और हंस भी रहा है, तो फ़रमाया कि तुम जनाज़े के साथ चलते हुए भी हंस रहे हो? अल्लाह की क़सम! मैं तुमसे कभी बात नहीं करूंगा।[2]

1. इसाबा, भाग 3, पृ० 229,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 116,

नबी सल्ल० के इर्शाद के ख़िलाफ़ सरज़द हो जाने पर सहाबा किराम रज़ि० का ख़ौफ़ व हरास (भय और आतंक)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद्र की लड़ाई के दिन अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, मुझे यह मालूम हुआ है कि बनू हाशिम और कुछ दूसरे क़बीले के लोगों को यहां ज़बरदस्ती लाया गया है, वह हमसे लड़ना नहीं चाहते, इसलिए तुममें से जिसके सामने बनू हाशिम का कोई आदमी आ जाए, तो वह उसे क़त्ल न करे और जिसके सामने अबुल बख़्तरी बिन हिशाम बिन हारिस बिन असद आ जाए, वह उसे क़त्ल न करे और जिसके सामने अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब हुज़ूर सल्ल० के चचा आ जाएं, वह उन्हें क़त्ल न करे, क्योंकि वह भी मजबूरन आए हैं।

इस पर हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, हम तो अपने बाप और बेटों को क़त्ल करें और अब्बास रज़ि० को छोड़ दें? अल्लाह की क़सम! अगर अब्बास मेरे सामने आ गए, तो मैं तो तलवार से उनके टुकड़े कर दूंगा।

हुज़ूर सल्ल० को जब यह बात पहुंची तो आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ अबू हफ़्स रज़ि० !

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम! यह पहला दिन था जिस दिन हुज़ूर सल्ल० ने मेरा उपनाम अबू हफ़्स रखा।

(उपनाम से पुकारने के बाद आपने फ़रमाया,) क्या अल्लाह के रसूल के चचा के चेहरे पर तलवार का वार किया जाएगा?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे इजाज़त दें, मैं तलवार से अबू हुज़ैफ़ा की गरदन उड़ा दूं। अल्लाह की क़सम! वह तो मुनाफ़िक़ हो गया है।

(उस वक़्त जोश में हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ि० यह बात कह बैठे, लेकिन बाद में) हज़रत अबू हुज़ैफ़ा ने कहा, मैं उस दिन जो (ग़लत) बात

कह बैठा था, मैं अब तक अपने को (ख़ुदा के अज़ाब के) ख़तरे में महसूस कर रहा हूं और मुझे डर लग रहा है और मेरे इस गुनाह का कफ़्फ़ारा सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते की शहादत ही हो सकती है। चुनांचे वह यमामा की लड़ाई में शहीद हो गए।[1]

हज़रत माबद बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू क़ुरैज़ा (के यहूदियों) का पचीस दिन तक घेराव किया, यहां तक कि उस घेराव से वे सख़्त परेशान हो गए और अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया तो उनके सरदार काब बिन असद ने बनू क़ुरैज़ा पर तीन बातें पेश कीं, या तो ईमान ले आओ या अपनी औरतों और बच्चों को क़त्ल करके अपनी मौत की खोज में क़िले से बाहर निकलकर मुसलमानों से लड़ाई के मैदान में लड़ो या सनीचर की रात में मुसलमानों पर शबख़ून मारो।

बनू क़ुरैज़ा ने (सरदार की तीनों बातों से इन्कार करते हुए) कहा, हम ईमान भी नहीं ला सकते और (चूंकि सनीचर की रात में दुश्मन पर हमला करना हमारी शरीअत में हराम है, इसलिए) हम सनीचर की रात में लड़ाई को हलाल नहीं क़रार दे सकते और अपने बच्चों और औरतों को ख़ुद क़त्ल कर देने के बाद हमारी क्या ज़िंदगी होगी?

ये यहूदी (जाहिलियत के ज़माने में) हज़रत अबू लुबादा बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु के मित्र थे, इसलिए उन्होंने उनके पास आदमी भेजकर उनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ैसले पर उतरने के बारे में मश्विरा मांगा। उन्होंने अपने हलक़ की ओर इशारा करते हुए बताया कि हुज़ूर सल्ल० तुम्हारे ज़िब्ह करने का फ़ैसला करेंगे। (उस वक़्त तो वह हुज़ूर सल्ल० की बात बता गए, लेकिन) बाद में उनको शर्मिंदगी हुई, जिस पर वह हुज़ूर सल्ल० की मस्जिदे नबवी में गए। अपने आपको मस्जिद (के स्तून) से बांध दिया, यहां तक कि अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल फ़रमा ली।[2]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 284, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 5, हाकिम, भाग 3, पृ० 223,
2. फ़त्हुल बारी, भाग 7, पृ० 291,

एक रिवायत में यह है कि बनू क़ुरैज़ा ने कहा, ऐ अबू लुबाबा ! यह आपकी क्या राय है ? हम क्या करें ? क्योंकि (हुज़ूर सल्ल० से) लड़ाई लड़ने की तो हममें ताक़त नहीं है।

तो हज़रत लुबाबा ने अपने हलक़ की तरफ़ इशारा किया और हलक़ पर उंगलियां फेरकर उन्हें बता दिया कि मुसलमान उन्हें क़त्ल करना चाहते हैं।

(उस वक़्त तो वह हुज़ूर सल्ल० का राज़ बता गए, लेकिन) जब हज़रत अबू लुबाबा वहां से वापस हुए तो उन्हें बहुत शर्मिंदगी हुई और वह समझ गए कि वह बड़ी आज़माइश में आ गए, इसलिए उन्होंने कहा, मैं उस वक़्त तक हुज़ूर सल्ल० के चमकते चेहरे की ज़ियारत नहीं करूंगा, जब तक मैं अल्लाह के सामने ऐसी सच्ची तौबा न कर लूं कि अल्लाह भी फ़रमा दें कि वाक़ई यह दिल से तौबा कर रहा है और मदीना वापस जाकर अपने आपको मस्जिद के एक स्तून से बांध दिया।

लोग बताते हैं कि वह लगभग बीस दिन तक बंधे रहे। जब हज़रत अबू लुबाबा हुज़ूर सल्ल० को कुछ दिनों तक नज़र न आए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या अबू लुबाबा अभी तक अपने मित्रों (के मश्विरे) से फ़ारिग़ नहीं हुए ?

इस पर लोगों ने बताया कि उन्होंने तो सज़ा के तौर पर ख़ुद को मस्जिद के स्तून से बांध रखा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह तो मेरे बाद आज़माइश में आ गए। अगर यह (ग़लती हो जाने के बाद) मेरे पास आ जाते तो मैं उनके लिए (अल्लाह से) इस्तग़फ़ार करता, लेकिन जब वह ख़ुद को सज़ा के तौर पर स्तून से बांध चुके हैं, तो अब मैं भी उन्हें नहीं खोल सकता। अल्लाह ही उनके बारे में फ़ैसला करेंगे।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 119

अन्हु को कुछ दिनों तक न देखा, तो उनके बारे में मालूम किया (कि वह कहां हैं?)

एक सहाबी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अभी इसका पता करके आता हूं। चुनांचे वह सहाबी हज़रत साबित के पास गए तो देखा कि अपने घर में सर झुकाए बैठे हुए हैं। उन्होंने पूछा, क्या बात है?

उन्होंने कहा, बुरा हाल है, क्योंकि मुझे ऊंची आवाज़ से बोलने की आदत है और मेरी आवाज़ हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ से ऊंची हो जाती थी (और अब इस बारे में क़ुरआन की आयतें नाज़िल हो चुकी हैं, जिनके मुताबिक़) मेरे पहले तमाम आमाल बर्बाद हो चुके हैं और मैं दोज़ख़ वालों में से हो गया हूं।

उन सहाबी ने ख़िदमत में हाज़िर होकर हुज़ूर सल्ल० को बताया कि वह यह कह रहे हैं।

हज़रत मूसा बिन अनस रिवायत करने वाले कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० ने उन सहाबी से फ़रमाया, जाकर हज़रत साबित से कह दो कि तुम जहन्नम वालों में से नहीं हो, बल्कि जन्नत वालों में से हो। चुनांचे उन्होंने जाकर हज़रत साबित को यह ज़बरदस्त ख़ुशख़बरी सुनाई।[1]

हज़रत बिन्त साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, मैंने अपने वालिद (हज़रत साबित) को यह फ़रमाते हुए सुना कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतरी—

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ (سورة لقمان آيت ١٨)

'बेशक अल्लाह किसी घमंड करने वाले और अपने को बड़ा समझने वाले को पसन्द नहीं करते।' (सूरः लुक़मान, आयत 18)

तो इस आयत के मज़्मून की वजह से वह सख़्त परेशान हो गए और दरवाज़ा बन्द करके रोने लगे। जब हुज़ूर सल्ल० को इसका पता चला तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके पास आदमी भेजकर उसकी वजह पूछी।

---

1. बुख़ारी,

उन्होंने कहा कि इस आयत में यह बताया गया है कि घमंड करने वाले और अपने को बड़ा समझने वाले को अल्लाह पसन्द नहीं फ़रमाते (और ये ख़राबियां मुझमें हैं, क्योंकि) मुझे ख़ूबसूरती और जमाल पसन्द है और मैं चाहता हूं कि मैं अपनी क़ौम का सरदार बनूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम उन लोगों में से नहीं हो (जिनको अल्लाह पसन्द नहीं करते, बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी भी अच्छी होगी और तुम्हें मौत भी अच्छी हालत पर आएगी और तुम्हें अल्लाह जन्नत में दाख़िल करेगा और जब अल्लाह ने अपने रसूल पर यह आयत उतारी—

يَآأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ۔ (سورت الحجرات آیت ۲)

'ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से बुलन्द न किया करो और न उनसे ऐसे खुलकर बोला करो जैसे तुम आपस में एक दूसरे से खुलकर बोला करते हो, कभी तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुमको ख़बर भी न हो।' (सूरः हुजुरात, आयत 2)

तो फिर यह पहले की तरह बहुत परेशान हुए और दरवाज़ा बन्द करके रोने लग गए। जब हुज़ूर सल्ल० को इसका पता चला, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके पास आदमी भेजकर उसकी वजह पूछी, तो उन्होंने बताया कि उनकी आवाज़ ऊंची है और उन्हें इस आयत की वजह से डर है कि कहीं उनके आमाल बर्बाद न हो गए हों।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। तुम्हारी ज़िंदगी तारीफ़ के क़ाबिल होगी और तुम्हें शहादत का दर्जा मिलेगा और अल्लाह तुम्हें जन्नत में दाख़िल करेगा।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे डर है कि मैं कहीं हलाक न हो गया हूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्यों ?

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 322, हाकिम, भाग 3, पृ० 235,

उन्होंने कहा, इस वजह से कि अल्लाह ने हमें इस बात से रोका है कि जो काम हमने नहीं किए, उन पर तारीफ़ किए जाने को हम पसन्द करें और मेरा हाल यह है कि मैं अपनी तारीफ़ को बहुत पसन्द करता हूं और अल्लाह ने हमें घमंड और अपने को बड़ा समझने से मना फ़रमाया है और मेरा हाल यह है कि मुझे ख़ूबसूरती बहुत पसन्द है और अल्लाह ने हमें आपकी आवाज़ से अपनी आवाज़ को ऊंचा करने से रोका है और मेरी आवाज़ बहुत ऊंची है (जो आपकी आवाज़ से ऊंची हो जाती है।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ साबित! क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो कि तारीफ़ के क़ाबिल ज़िंदगी गुज़ारो और तुम्हें शहादत का दर्जा मिले और अल्लाह तुम्हें जन्नत में दाख़िल करे?

उन्होंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०!

हज़रत मुहम्मद बिन साबित कहते हैं, हुज़ूर सल्ल० का फ़रमान पूरा हुआ और हज़रत साबित रज़ि० ने वाक़ई तारीफ़ के क़ाबिल ज़िंदगी गुज़ारी और मुसैलमा कज़्ज़ाब से लड़ाई में शहादत का दर्जा पाया।[1]

सहाबा किराम रज़ि० का नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी करना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक बोरिया था, जिसका रात को हुजरा-सा बनाकर उसमें आप नमाज़ पढ़ा करते और दिन को उसे बिछाकर उस पर बैठ जाते। धीरे-धीरे लोग भी हुज़ूर सल्ल० के पास आकर आपकी पैरवी में नमाज़ पढ़ने लगे। (यह तरावीह की नमाज़ थी)

जब लोग ज़्यादा हो गए, तो आपने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ लोगो! तुम उतने अमल अख़्तियार करो, जितने अमल की पाबन्दी तुम्हारे बस में है, क्योंकि जब तक तुम (अमल करने से) नहीं उकताओगे, उस वक़्त तक अल्लाह (सवाब देने का सिलसिला) नहीं रोकेंगे और अल्लाह को सबसे ज़्यादा प्यारा वह अमल है जो हमेशा हो,

1. बुख़ारी, मुस्लिम

चाहे थोड़ा हो।

और एक रिवायत में यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवाले और ख़ास ताल्लुक़ वाले जब कोई अमल शुरू करते, तो पूरी पाबन्दी और एहतिमाम से उसे करते।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में एक दिन चांदी की अंगूठी देखी (और दूसरे लोगों ने भी देखी) तो लोगों ने अंगूठियां बनवा कर पहन लीं। बाद में हुज़ूर सल्ल० ने वह अंगूठी उतार दी, तो लोगों ने उतार दीं।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सोने की अंगूठी पहना करते थे। एक दिन आपने वह उतार दी और फ़रमाया, आगे यह अंगूठी मैं कभी नहीं पहनूंगा। यह देखकर लोगों ने भी अंगूठियां उतार दीं।[3]

हज़रत सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (हुदैबिया के समझौते के मौक़े पर) क़ुरैश ने ख़ारिजा बिन कुर्ज़ को मुसलमानों की जासूसी करने के लिए भेजा तो उसने वापस आकर मुसलमानों की बड़ी तारीफ़ की। इस पर क़ुरैश ने कहा, तुम देहाती आदमी हो, मुसलमानों ने तुम्हारे सामने अपने हथियारों को ज़रा ज़ोर से हिलाया, जिनकी आवाज़ से तुम्हारा दिल हिल गया। (यानी मर्अूब हो गया) तो फिर मुसलमानों ने तुमसे क्या कहा और तुमने उनको क्या कहा, इस सबका तुमको पता ही न चल सका।

फिर क़ुरैश ने उर्वः बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा (जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे) उन्होंने आकर कहा, ऐ मुहम्मद सल्ल०! यह क्या बात है? आप अल्लाह की ज़ात की तरफ़ दावत देते हो और अलग-अलग क़बीलों के गिरे-पड़े लोगों को लेकर अपनी क़ौम के पास आए हो और आप उनमें से बहुतों को जानते हो और बहुतों को

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 89
2. अबू दाऊद, बुख़ारी,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 3

नहीं जानते हो और आप उन लोगों के ज़रिए अपनी क़ौम से ताल्लुक़ तोड़ना चाहते हो और उनकी बेइज़्ज़ती करके उनका ख़ून बहाना चाहते हो और उनके माल पर क़ब्ज़ा करना चाहते हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तो अपनी क़ौम के साथ सिर्फ़ ताल्लुक़ जोड़ने आया हूं ताकि अल्लाह उनके दीन से बेहतर दीन और उनकी ज़िंदगी से बेहतर ज़िंदगी उनको अता फ़रमाए। चुनांचे उन्होंने वापस जाकर क़ुरैश के सामने मुसलमानों की बड़ी तारीफ़ की, तो मुश्रिकों के हाथों में जो मुसलमान क़ैदी थे, उन्हें मुश्रिकों ने और ज़्यादा तक्लीफ़ें पहुंचानी शुरू कर दीं।

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर फ़रमाया, ऐ उमर रज़ि० ! क्या (मक्का जाकर) तुम अपने मुसलमान क़ैदी भाइयों को मेरा पैग़ाम पहुंचाने के लिए तैयार हो?

उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्योंकि अल्लाह की क़सम ! मक्का में अब मेरे ख़ानदान का कोई आदमी बाक़ी नहीं रहा। इस मज्मे में और बहुत से साथी ऐसे हैं, जिनका मक्का में काफ़ी बड़ा ख़ानदान मौजूद है (और ख़ानदान वाले अपने आदमी की हिफ़ाज़त व हिमायत करेंगे।)

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर मक्का मुकर्रमा भेज दिया। हज़रत उस्मान रज़ि० अपनी सवारी पर सवार होकर चले और मुश्रिकों के लश्कर में पहुंच गए। मुश्रिकों ने उनका खेल बनाया और उनको बुरी बातें कहीं। फिर हज़रत उस्मान रज़ि० के चचेरे भाई अबान बिन सईद बिन आस ने उनको अपनी पनाह में ले लिया और अपने पीछे ज़ीन पर बिठा लिया।

जब हज़रत उस्मान रज़ि० उनके पास पहुंचे तो अबान ने उनसे कहा, ऐ मेरे चचेरे भाई ! यह क्या बात है? आप मुझे बहुत तवाज़ो और इन्किसारी वाली शक्ल व सूरत के आदमी नज़र आ रहे हो, ज़रा लुंगी टख़नों से नीचे लटकाओ (ताकि कुछ बड़ों वाली शान पैदा हो), उन्होंने आधी पिंडलियों तक लुंगी बांध रखी थी।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, मैं लुंगी नीचे नहीं कर सकता, क्योंकि हमारे हज़रत का लुंगी बांधने का यही तरीक़ा है। चुनांचे उन्होंने मक्का में जाकर हर मुसलमान क़ैदी को हुज़ूर सल्ल० का पैग़ाम पहुंचाया।

इधर हम लोग (हुदैबिया में) दोपहर को क़ैलूला कर रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० के मुनादी ने ज़ोर से एलान किया कि बैअत होने के लिए आ जाओ ! बैअत होने के लिए आ जाओ। रूहुल क़ुदुस (हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम) आसमान से तशरीफ़ लाए हैं।

चुनांचे हम सब लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। उस वक़्त आप कीकर के पेड़ के नीचे थे और हम आपसे बैअत हुए। अल्लाह ने इस आयत में इसी घटना का उल्लेख किया है—

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ (سورت فتح : آيت ۱۸)

'तह्क़ीक़ यह कि अल्लाह उन मुसलमानों से ख़ुश हुआ, जबकि ये लोग आपसे पेड़ (समुरा) के नीचे बैअत कर रहे थे।'

(सूर: फ़त्ह, आयत 18)

चूंकि उस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ि० मक्का में थे और यहां मौजूद नहीं थे, इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने उनकी बैअत के लिए अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर रखा कि यह उस्मान रज़ि० की बैअत हो गई। इस पर लोगों ने कहा, (हज़रत उस्मान रज़ि०) अबू अब्दुल्लाह रज़ि० को मुबारक हो (कि उनके बिना ही उनकी बैअत हो गई और उधर) वह बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे हैं और हम यहां हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, हरगिज़ नहीं, चाहे कितने साल गुज़र जाएं, जब तक मैं तवाफ़ नहीं करूंगा, उस्मान रज़ि० हरगिज़ तवाफ़ नहीं करेगा।[1]

इब्ने साद की रिवायत में यह है कि अबान ने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, ऐ मेरे चचेरे भाई ! आपने बहुत तवाज़ो वाली शक्ल बना रखी

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 84, भाग 8, पृ० 56, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 461,

है, ज़रा लुंगी टख़नों से नीचे लटकाओ, जैसे कि आपकी क़ौम का तरीक़ा है।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। हमारे हज़रत इसी तरह आधी पिंडलियों तक लुंगी बांधते हैं।

अबान ने कहा, ऐ मेरे चचेरे भाई! बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लो।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, जब तक हमारे हज़रत कोई काम न कर लें, उस वक़्त तक हम वह काम नहीं करते। हम तो उनके नक़्शे क़दम (पद-चिह्न) पर चलते हैं। (इस लिए मैं तवाफ़ नहीं करूंगा।)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, यमामा की लड़ाई में मुसैलमा कज़्ज़ाब मारा गया और उसका क़िला और उसकी फ़ौज ख़त्म हो गई, लेकिन इस लड़ाई में सहाबा किराम रज़ि० बड़ी तायदाद में शहीद हो गए, ख़ास तौर से क़ुरआन पाक के हाफ़िज़ों की एक बड़ी तायदाद शहीद हो गई, तो इस लड़ाई के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बुलाया। उनकी ख़िदमत में गया, तो वहां उनके पास हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, यह (यानी हज़रत उमर रज़ि०) मेरे पास आए और यों कहा, इस यमामा की लड़ाई में क़ुरआन के हाफ़िज़ बहुत ज़्यादा तायदाद में शहीद हो गए हैं। (एक रिवायत के मुताबिक़ इस लड़ाई में चौदह सौ सहाबा रज़ि० शहीद हुए, जिनमें सात सौ सहाबा हाफ़िज़ थे) मुझे यह डर हो रहा है कि अगर आगे लड़ाइयों में यों ही क़ुरआन के हाफ़िज़ बड़ी तायदाद में शहीद होते रहे, तो फिर क़ुरआन मजीद का अक्सर हिस्सा जाता रहेगा, इसलिए मेरा ख़्याल यह है कि आप सारा क़ुरआन एक जगह लिखवा कर महफ़ूज़ कर लें। (इससे पहले सारा क़ुरआन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक जगह लिखा हुआ नहीं था, बल्कि अलग-अलग सहाबा रज़ि० के पास थोड़ा-थोड़ा करके लिखा हुआ था)।

मैंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, हम उस काम की जुर्रात कैसे करें, जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं किया है?

हज़रत उमर रज़ि० ने मुझसे कहा, यह काम सरासर ख़ैर ही ख़ैर है।

हज़रत उमर रज़ि० मुझ पर इसरार करते रहे और ज़रूरत ज़ाहिर करते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने इस काम के लिए मेरा भी सीना खोल दिया, जिसके लिए हज़रत उमर रज़ि० का सीना खोला था और मेरी राय भी हज़रत उमर रज़ि० के मुवाफ़िक़ हो गई।

हज़रत ज़ैद कहते हैं, उस वक़्त हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास ख़ामोश बैठे हुए थे, कुछ बात नहीं फ़रमा रहे थे।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम जवान हो, समझदार हो, तुमसे किसी क़िस्म की बदगुमानी भी हमें नहीं और तुम हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर वह्य लिखा करते थे, इसलिए तुम ही सारे क़ुरआन को एक जगह जमा कर दो।

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम! अगर हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुझे किसी पहाड़ के पत्थर इधर-उधर मुंतक़िल करने का हुक्म देते तो यह काम मेरे लिए क़ुरआन एक जगह जमा करने से ज़्यादा भारी और मुश्किल न होता। मैंने अर्ज़ किया, आप लोग ऐसा काम किस तरह कर रहे हैं जिसे हुज़ूर सल्ल० ने नहीं किया?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, यह काम सरासर ख़ैर ही ख़ैर है और हज़रत अबूबक्र रज़ि० बार-बार मुझे फ़रमाते रहे, यहां तक कि अल्लाह ने मेरा भी इस बारे में सीना खोल दिया, जिस बारे में हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ि० का फ़रमाया था और मेरी राय भी इन दोनों के मुवाफ़िक़ हो गई। फिर मैंने क़ुरआन को खोजना शुरू किया और काग़ज़ों पर, सफ़ेद पत्थरों पर, चौड़ी हड्डियों पर और खजूर की टहनियों पर जो क़ुरआन लिखा हुआ था और जो क़ुरआन सहाबा किराम रज़ि० के सीनों में महफ़ूज़ था, उस सबको जमा कर दिया, यहां तक कि—

'ल-क़द जा अकुम रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अलैहि' से लेकर सूर: बरात के आख़िर तक की आयतें मुझे सिर्फ़ हज़रत ख़ुज़ैमा बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लिखी हुई मिलीं, और किसी के पास न मिल सकीं। (ये आयतें ज़ुबानी तो बहुत से सहाबा रज़ि० को याद

थीं, लेकिन लिखी हुई किसी और के पास नहीं थीं। बाक़ी क़ुरआन की हर आयत कई सहाबा रज़ि० के पास लिखी हुई मिली।) फिर ये सहीफ़े जिनमें सारा क़ुरआन एक जगह लिखा गया था हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ज़िंदगी में उनके पास रहे, फिर उनकी वफ़ात के बाद ये सहीफ़े हज़रत उमर रज़ि० के पास उनकी ज़िंदगी में रहे, फिर उनकी वफ़ात के बाद हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास रहे।[1]

पहले हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़रमान गुज़र चुका है कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जिस चीज़ पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़ाई लड़ी है, मैं उसे छोड़ दूं, इससे ज़्यादा मुझे यह महबूब है कि मैं आसमान से (ज़मीन पर) गिर पड़ूं, इसलिए मैं तो इस चीज़ पर ज़रूर लड़ूंगा। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने (ज़कात न देने पर) अरबों से लड़ाई लड़ी, यहां तक कि वे पूरे इस्लाम की ओर वापस आ गए।[2]

बुख़ारी, मुस्लिम, और मुस्नद अहमद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में इस तरह है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जो आदमी नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ करेगा (यानी नमाज़ पढ़े और ज़कात न दे) मैं उससे ज़रूर लड़ाई लड़ूंगा, क्योंकि ज़कात माल का हक़ है (जैसे कि नमाज़ जान का हक़ है) अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग एक रस्सी हुज़ूर सल्ल० को दिया करते थे और अब मुझे नहीं देंगे, तो मैं इस रस्सी की वजह से भी उनसे लड़ूंगा, (दीन में एक रस्सी की कमी भी बरदाश्त नहीं कर सकता)

और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का यह इर्शाद भी गुज़र चुका है कि उस ज़ात की क़सम जिसके अलावा कोई माबूद नहीं! अगर कुत्ते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों की टांगों को घसीटते फिरें तो भी मैं उस फ़ौज को वापस न बुलाऊंगा, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने रवाना फ़रमाया था और मैं उस झंडे को नहीं खोल सकता

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1 पृ० 279,
2. अदनी अन उमर रज़ि

जिसे हुज़ूर सल्ल० ने बांधा है। चुनांचे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उसामा रज़ि० की फ़ौज रवाना फ़रमाई।[1]

हज़रत उर्व: की रिवायत में यह भी गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मुझे यक़ीन हो जाए कि दरिंदे मुझे उठा ले जाएंगे, तो भी मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ उसामा रज़ि० की फ़ौज को ज़रूर रवाना करूंगा, चाहे आबादी में मेरे सिवा कोई बाक़ी न रहे, तो भी मैं उस फ़ौज को रवाना करके रहूंगा।

और एक रिवायत में इब्ने असाकिर ने हज़रत उर्व: से नक़ल किया है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या मैं उस फ़ौज को रोक लूं जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा था? अगर मैं ऐसा करूं तो यह मेरी बहुत बड़ी जुर्रत होगी। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, सारे अरब मुझ पर टूट पड़ें, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं उस फ़ौज को जाने से रोक दूं, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने रवाना फ़रमाया था। ऐ उसामा रज़ि० ! तुम अपनी फ़ौज को लेकर वहां जाओ जहां जाने का तुम्हें हुक्म हुआ था, वहां जाकर मूता वालों से लड़ो, तुम जिन्हें यहां छोड़कर जा रहे हो, अल्लाह उनके लिए काफ़ी है।

हज़रत सैफ़ ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया है कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० की दाढ़ी पकड़ कर कहा, ऐ इब्ने ख़त्ताब ! तेरी मां तुझे गुम करे, हुज़ूर सल्ल० ने तो उन्हें अमीर बनाया है और तुम मुझे कह रहे हो कि मैं उनको हटा दूं। ये सब रिवायतें (पहले भाग में) तफ़्सील से गुज़र चुकी हैं।

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या ही अच्छा होता, अगर आप अपने इन (खुरदरे) कपड़ों से ज़्यादा नर्म कपड़े पहनते और अपने उस खाने से ज़्यादा अच्छा खाना खाते, क्योंकि अल्लाह ने रोज़ी में बड़ा फैलाव दिया है और माल

1. बैहक़ी अन अबू हुरैरह

भी पहले से ज़्यादा अता फ़रमा दिया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे ख़िलाफ़ दलील तुमसे ही मुहय्या करता हूं। क्या तुम्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मशक़्क़त और सख़्ती वाली ज़िंदगी याद नहीं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० उनको हुज़ूर सल्ल० के खाने-पीने के वाक़िए याद दिलाते रहे, यहां तक कि वह रोने लगीं, फिर उनसे फ़रमाया, तुमने मुझे यह कहा है, लेकिन मेरा फ़ैसला यह है कि जहां तक मेरा बस चलेगा, मैं मशक़्क़त और तंगी वाली हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों जैसी ज़िंदगी गुज़ारूंगा, ताकि मुझे आख़िरत में नेमतों और राहतों वाली इन दोनों जैसी ज़िंदगी मिल सके।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ोह्द के बाब में इस बारे में बहुत-सी मुख़्तसर और लंबी रिवायतें गुज़र चुकी हैं।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने साथियों में बैठे हुए थे कि एक खुरदरा कुरता पहनने लगे। ज्यों ही वह कुरता हंसली की हड्डी से नीचे हुआ तो उन्होंने तुरन्त यह दुआ पढ़ी—

'अल-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व अ-त-जम्मलु बिही फ़ीहयाती'।

फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, क्या आप लोग जानते हैं कि मैंने यह दुआ क्यों पढ़ी?

साथियों ने कहा, नहीं। आप बताएं तो हमें पता चले।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था। आपके पास नए कपड़े लाए गए, जिन्हें आपने पहना, फिर यह दुआ पढ़ी—

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 48, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 199

'अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी कसानी मा उवारी बिही औरती व अ-त-ज़म्मलु बिही फ़ी हयाती।'

फिर फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम! जिसने मुझे हक़ देकर भेजा, जिस मुसलमान बन्दे को अल्लाह नए कपड़े पहनाएं और वह अपने पुराने कपड़े किसी मिस्कीन मुसलमान बन्दे को सिर्फ़ अल्लाह के लिए पहना दे तो जब तक उस मिस्कीन बन्दे पर इन कपड़ों का एक धागा भी बाक़ी रहेगा, उस वक़्त तक यह पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त, पनाह और ज़मानत में रहेगा, चाहे ज़िंदा हो या मर कर क़ब्र में पहुंच जाए। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अपने कुरते को फैला कर देखा तो आस्तीन उंगलियों से लम्बी थी, तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! ज़रा चौड़ी छुरी लाना। वह खड़े हुए और छुरी ले आए।

हज़रत उमर रज़ि० ने आस्तीन को अपनी उंगलियों पर फैलाकर देखा तो जो हिस्सा उंगलियों से आगे था, उसे उस छुरी से काट दिया। हमने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या हम कोई दरज़ी न ले आएं जो आस्तीन का किनारा सी दे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं।

हज़रत अबू उमामा कहते हैं, बाद में मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ि० की इस आस्तीन के धागे उनकी उंगलियों पर बिखरे हुए थे और वह उन्हें रोक नहीं रहे थे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नया कुरता पहना, फिर मुझसे छुरी मंगवा कर फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! मेरे कुरते की आस्तीन को फैलाओ और मेरी उंगलियों के किनारे पर दोनों हाथ रखकर जो उंगलियों से ज़्यादा कपड़ा है, उसे काट दो। चुनांचे मैंने छुरी से दोनों आस्तीनों का ज़्यादा कपड़ा काट दिया। (वह छुरी से सीधा न कट सका, इसलिए) आस्तीन का किनारा ना-हमवार ऊंचा-नीचा हो गया। मैंने उनसे अर्ज़ किया, ऐ अब्बा जान! अगर आप इजाज़त दें तो मैं क़ैंची से बराबर कर दूं।

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 55

उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे ! ऐसे ही रहने दो। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे ही करते देखा है। चुनांचे वह कुरता हज़रत उमर रज़ि० के बदन पर इसी तरह रहा, यहां तक कि वह फट गया और मैंने कई बार देखा कि उसके धागे पांव पर गिर रहे होते थे।[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हजरे अस्वद को मुख़ातब करते हुए फ़रमाया, सुन ले अल्लाह की क़सम ! मुझे मालूम है कि तू एक पत्थर है, न नुक़सान दे सकता है और न नफ़ा। अगर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुम्हें चूमते हुए न देखा होता, तो मैं तुम्हें न चूमता। (चूमना यह है कि हजरे अस्वद को आदमी चूमे या उसे हाथ या लकड़ी लगा कर उसे चूमे।)

फिर हजरे अस्वद चूमा, इसके बाद फ़रमाया, हमें रमल से क्या लेना? (रमल तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में अकड़ कर चलने को कहते हैं।) हमने तो रमल मुश्रिकों को (अपनी ताक़त) दिखाने के लिए किया था। अब अल्लाह ने उनको हलाक कर दिया (इसलिए अब ज़ाहिर में ज़रूरत नहीं है) फिर फ़रमाया, रमल एक ऐसा काम है जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया, इसलिए हम इसे छोड़ना नहीं चाहते।[2]

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरे अस्वद के पास खड़े हुए फ़रमा रहे हैं, मुझे यह मालूम है कि तुम एक पत्थर हो, न नुक़्सान दे सकते हो और न नफ़ा और फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसका बोसा लिया। फिर (हुज़ूर सल्ल० के बाद) हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज किया और हजरे अस्वद के सामने खड़े हुए और उन्होंने फ़रमाया, मुझे यह मालूम है कि तुम तो एक पत्थर हो, न नुक़्सान दे सकते हो और न नफ़ा। अगर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुम्हारा बोसा लेते हुए न

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 45,
2. बिदाया, भाग 5, पृ० 153,

देखा होता, तो मैं तुम्हारा बोसा न लेता।[1]

हज़रत याला बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ तवाफ़ किया तो हमने हजरे अस्वद को चूमा। मैं बैतुल्लाह के साथ-साथ चल रहा था, जब हम मग़्रिबी रुक्न यानी रुक्ने इराक़ी के क़रीब पहुंचे जो कि हजरे अस्वद के बाद आता है, तो मैंने उनका हाथ खींचा, ताकि वह रुक्ने इराक़ी को चूमें तो उन्होंने फ़रमाया, तुम्हें क्या हो गया है? (मेरा हाथ क्यों खींच रहे हो?)

मैंने कहा, क्या आप उस रुक्न को नहीं चूमेंगे?

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तवाफ़ नहीं किया था?

मैंने कहा, हां किया था।

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुमने इन्हें इन दोनों मग़्रिबी रुक्नों यानी रुक्ने इराक़ी और रुक्ने शामी को चूमते हुए देखा था?

मैंने कहा, नहीं।

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम हुज़ूर की पैरवी नहीं करते?

मैंने कहा, करता हूं, तो फिर फ़रमाया, उसका चूमना छोड़ दो और आगे चलो।[2]

हज़रत बक्र बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक देहाती ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा, यह क्या बात है? आले मुआविया पानी में शहद मिलाकर पिलाते हैं और आले फ़्लां दूध पिलाते हैं और आप लोग नबीज़ (पानी में कुछ देर खजूर या किशमिश पड़ी रहे तो उसे नबीज़ कहते हैं) पिलाते हैं, क्या आप लोग कंजूस हैं? (अल्लाह ने तो बहुत दे रखा है, लेकिन कंजूसी की वजह से नबीज़ पिलाते हैं, जो कि सस्ती चीज़ है) या सचमुच आप लोग ज़रूरतमंद (और ग़रीब) हैं?

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 34,
2. अहमद, भाग 1, पृ० 70

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, हम लोग न कंजूस हैं और न ज़रूरतमंद और न ग़रीब, बल्कि नबीज़ पिलाने की वजह यह है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए। सवारी पर आपके पीछे हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा बैठे हुए थे। आपने पानी मांगा तो हमने इस सबील की नबीज़ आपकी ख़िदमत में पेश की, जिसे आपने पी लिया और फ़रमाया, तुमने बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया है, ऐसे ही करते रहना।[1]

हज़रत जाफ़र बिन तम्माम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने आकर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, ज़रा यह बताएं कि आप लोग जो लोगों को किशमिश की नबीज़ पिलाते हैं, क्या यह सुन्नत है जिसकी आप लोग पैरवी कर रहे हैं या आपको इसमें दूध और शहद से ज़्यादा आसानी है?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मेरे वालिद हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत अब्बास रज़ि० लोगों को पिला रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे भी पिलाओ। हज़रत अब्बास रज़ि० ने नबीज़ के कुछ प्याले मंगवाए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किए।

हुज़ूर सल्ल० ने उनमें से एक प्याला लेकर उसे पिया, फिर फ़रमाया, तुम लोगों ने अच्छा इंतिज़ाम कर रखा है, ऐसे ही करते रहना। चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने (नबीज़ के इन्तिज़ाम को पसन्द फ़रमाया और फ़रमाया, तुमने अच्छा इन्तिज़ाम कर रखा है, ऐसे ही करते रहना, तो अब हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान की वजह से नबीज़ के बजाए दूध और शहद की सबील का होना मेरे लिए ख़ुशी की बात नहीं है।[2]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं अरफ़ात के मैदान में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ था। जब वह ठहरने की जगह से चले, तो मैं भी उनके साथ चला। वह हज के इमाम

1. अहमद
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 16,

की जगह पर पहुंचे और उसके साथ ज़ुहर और अस्र की नमाज़ अदा की, फिर उन्होंने जबले रहमत पर वकूफ़ फ़रमाया। मैं और मेरे साथी भी उनके साथ थे, यहां तक कि (सूरज डूबने के बाद) जब इमाम अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा की तरफ़ रवाना हुआ, तो हम भी हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के साथ वहां से चल पड़े। जब हज़रत इब्ने उमर रज़ि० माज़मैन नामी जगह से पहले एक तंग जगह पर पहुंचे, तो उन्होंने अपनी सवारी बिठाई, तो हमने भी सवारियां बिठा दीं। हमारा ख़्याल था यह नमाज़ पढ़ना चाहते हैं, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के ग़ुलाम ने जो उनकी सवारी को थामे हुए थे, उसने कहा, नहीं, यह नमाज़ नहीं पढ़ना चाहते, बल्कि इन्हें याद आ गया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब इस जगह पहुंचे थे, तो आप हाजत पूरी करने के लिए रुके थे, इसलिए यह भी यहां ज़रूरत पूरी करना चाहते हैं।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का और मदीना के दर्मियान एक पेड़ के पास जब पहुंचते तो उसके नीचे दोपहर को आराम फ़रमाते और इसकी वजह यह बताया करते कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पेड़ के नीचे दोपहर को आराम फ़रमाया था।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निशानियों की बहुत ज़्यादा पाबन्दी किया करते थे। चुनांचे जिस जगह हुज़ूर सल्ल० ने (सफ़र के दौरान) कोई नमाज़ पढ़ी होती, वहां हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ज़रूर नमाज़ पढ़ा करते थे। हुज़ूर सल्ल० के निशानियों का उन्हें इतना ज़्यादा एहतिमाम था कि एक सफ़र में हुज़ूर सल्ल० एक पेड़ के नीचे ठहरे थे तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० उस पेड़ का बहुत ख़्याल रखते और उसकी जड़ में पानी डालते, ताकि वह सूख न जाए।[3]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम एक सफ़र में

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 47,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 46, हैसमी, भाग 1, पृ० 175,
3. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 59,

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ थे। चलते-चलते जब वह एक जगह के पास से गुज़रे, तो रास्ता छोड़कर एक ओर को हो गए। साथियों ने इनसे पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया? (रास्ता क्यों छोड़ा?

उन्होंने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यहां ऐसा ही करते देखा था, इसलिए मैंने भी ऐसा ही किया।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मक्का मुकर्रमा के रास्ते में (सीधा नहीं चलते थे, बल्कि कभी रास्ते के दाहिनी तरफ़) सवारी को मोड़ लिया करते थे (और कभी बाईं तरफ़) और फ़रमाया करते थे, मैं इसलिए करता हूं ताकि मेरी सवारी का पांव हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सवारी के पांव (वाली जगह) पर पड़ जाए।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिस वक़्त हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम के निशानों पर पांव रखकर चला करते थे, अगर उस वक़्त तुम उन्हें देख लेते, तो कहते, यह तो मजनूं हैं।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सफ़रों में जिन जगहों पर ठहरे, उनको जिस तरह हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा तलाश करते हैं, उस तरह कोई भी तलाश नहीं करता।[4]

हज़रत आसिम अह्वल रहमतुल्लाहि अलैहि अपने उस्ताद से नक़ल करते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहां सुन्नत की पैरवी का इतना ज़्यादा एहतिमाम था कि जब उनको कोई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दम के निशानों को तलाश करता हुआ देख लेता तो वह यही समझता कि उन पर (जुनून का) कुछ असर है!

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 46,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 310,
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 561
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 107

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, अगर किसी ऊंटनी का बच्चा किसी वीरान जंगल में गुम हो जाए, तो वह अपने बच्चे को उतना ज़्यादा नहीं तलाश कर सकती जितना ज़्यादा हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के क़दम के निशान तलाश किया करते थे।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उमैया बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि क़ुरआन में ख़ौफ़ की नमाज़ और मुक़ीम की नमाज़ का ज़िक्र तो हमें मिलता है, लेकिन मुसाफ़िर की नमाज़ का कोई ज़िक्र नहीं मिलता?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम अरब वाले तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा उजड्ड और कम इल्म थे। फिर अल्लाह ने अपने नबी को भेजा, तो हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जैसे करते हुए देखा तो हम भी वैसे ही करने लगे। (चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुसाफ़िर वाली नमाज़ पढ़ी है, तो हम भी पढ़ेंगे, मतलब यह है कि हर हुक्म का क़ुरआन में ज़िक्र होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि बहुत से हुक्म हुज़ूर सल्ल० की हदीस से साबित होते हैं।)[2]

हज़रत उमैया बिन अब्दुल्लाह बिन ख़ालिद बिन उसैद रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि ख़ौफ़ की नमाज़ को क़स्र करने का हुक्म तो हमें अल्लाह की किताब में मिलता है, लेकिन सफ़र की नमाज़ को क़स्र करने का हुक्म नहीं मिलता?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, हमने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो काम भी करते हुए देखा है हम तो इसे ज़रूर करेंगे। (इसका क़ुरआन में ज़िक्र करना ज़रूरी नहीं है।)[3]

हज़रत वारिद बिन अबी आसिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मिना में मेरी मुलाक़ात हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से हुई। मैंने

1. अबी नुऐम, भाग 1, पृ० 310,
2. अब्दुर्रज़्ज़ाक,
3. इब्ने जरीर,

उनसे पूछा, सफ़र की नमाज़ की कितनी रक्अतें होती हैं?

उन्होंने कहा, दो रक्अतें?

मैंने कहा, इस वक़्त हम लोग मिना में हैं। (हमारी तायदाद भी बहुत है और हर तरह का अम्न भी है तो क्या यहां भी दो ही रक्अतें पढ़ी जाएंगी?) इसके बारे में आपका क्या ख़्याल है?

मेरे इस सवाल से उन्हें बड़ी गरानी हुई और फ़रमाया, तेरा नाश हो, क्या तुमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कुछ सुना है?

मैंने कहा, जी हां, सुना है और मैं उन पर ईमान भी लाया हूं। इस पर उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र में तशरीफ़ ले जाया करते, तो दो रक्अत नमाज़ पढ़ा करते। अब तुम्हारी मर्ज़ी है चाहे दो रक्अत नमाज़ पढ़ो, चाहे छोड़ दो।[1]

हज़रत अबूग़ीब जुरशी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि अल्लाह ने क़ुरआन में फ़रमाया है—

إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ (سورة نساء: آيت ١٠١)

'और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुमको इसमें कोई गुनाह न होगा कि तुम नमाज़ को कम कर दो। अगर तुमको यह अंदेशा हो कि तुमको काफ़िर लोग परेशान करेंगे।' (सूर: निसा, आयत 101)

(अब अल्लाह ने नमाज़ क़स्र करने के लिए यह शर्त लगाई है कि काफ़िरों के सताने का डर हो और) यहां मिना में इस वक़्त हम लोग बड़े अम्न से हैं, किसी क़िस्म का ख़ौफ़ और डर नहीं है, तो क्या यहां भी हम नमाज़ को क़स्र करें?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारे लिए पैरवी करने लायक़ नमूना हैं। (इसलिए जब उन्होंने मिना में दो रक्अत नमाज़ पढ़ी है तो तुम भी दो रक्अत ही पढ़ो।)[2]

1. इब्ने जरीर,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 240,

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहे हैं और उनके कुरते की घुंडियां खुली हुई हैं। (नमाज़ के बाद) मैंने उनसे इस बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे ही नमाज़ पढ़ते हुए देखा है।[1]

हज़रत क़ुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं क़बीला मुज़ैना की एक जमाअत के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हम आपसे बैअत हुए। जब हम आपसे बैअत हुए, उस वक़्त आपकी घुंडियां खुली हुई थीं। मैंने आपके कुरते के गरेबान में हाथ डालकर मुहरे नुबूवत को छुआ।

हज़रत उर्वः रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने देखा कि (हज़रत क़ुर्रा के साहबज़ादे) हज़रत मुआविया की और हज़रत मुआविया के बेटे की घुंडियां गर्मी-सर्दी हर मौसम में हमेशा खुली रहती थीं।[2]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 46,
2. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 45, इसाबा, भाग 3, पृ० 233, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 460,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सहाबा रज़ि०, घरवालों, ख़ानदान वालों और अपनी उम्मत से जो निस्बत हासिल है, उस निस्बत का ख़्याल रखना

हज़रत काब बिन उजरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हम लोग मस्जिदे नबवी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (के हुजरे) के सामने एक जमाअत में बैठे हुए थे। उस जमाअत में कुछ हम अंसारी, कुछ मुहाजिर और कुछ बनी हाशिम के लोग थे, हमारी आपस में इस बात पर बहस हो गई कि हममें से कौन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़्यादा क़रीब और ज़्यादा महबूब है?

हमने कहा, हम जमाअत अंसार हुज़ूर सल्ल० पर ईमान लाएं हैं और हमने आपकी पैरवी की है और हमने आपके साथ होकर कई बार (काफ़िरों से) लड़ाई की है। हम हुज़ूर सल्ल० के दुश्मन के मुक़ाबले में हुज़ूर सल्ल० की फ़ौज का दस्ता हैं, इसलिए हम हुज़ूर सल्ल० के ज़्यादा क़रीब और ज़्यादा महबूब हैं और हमारे मुहाजिर भाइयों ने कहा, हमने अल्लाह और रसूल सल्ल० के साथ हिजरत की और हमने अपने ख़ानदानों, घरवालों और माल व दौलत को (हिजरत के लिए) छोड़ा। (यह हमारी ख़ास सिफ़त और ख़ुसूसी क़ुरबानी है जो आप अंसार को हासिल नहीं है) और हम उन तमाम जगहों पर हाज़िर थे, जहां आप लोग हाज़िर थे और उन तमाम लड़ाइयों में शरीक हुए, जिनमें आप लोग शरीक हुए, इसलिए हम हुज़ूर सल्ल० के ज़्यादा क़रीब और ज़्यादा महबूब हैं।

और हमारे हाशमी भाइयों ने कहा, (हमारी ख़ास ख़ूबी यह है कि) हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ानदान के लोग हैं और हम उन तमाम जगहों पर हाज़िर थे, जहां आप लोग हाज़िर थे और उन

तमाम लड़ाइयों में शरीक हुए, जिनमें आप लोग शरीक हुए, इसलिए हम लोग हुज़ूर सल्ल० के ज़्यादा क़रीब और ज़्यादा महबूब हैं।

इतने में हुज़ूर सल्ल० हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए और हमारी ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुम लोग आपस में कुछ बातें कर रहे थे।

हमने हुज़ूर सल्ल० के सामने अपनी बात अर्ज़ की, हुज़ूर सल्ल० ने हम अंसार से कहा, तुमने ठीक कहा, तुम्हारी इस बात का कौन इंकार कर सकता है। फिर हमने हुज़ूर सल्ल० को अपने मुहाजिरी भाइयों की बात बताई, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह भी ठीक कहते हैं, उनकी इस बात का कौन इंकार कर सकता है। फिर हमने हुज़ूर सल्ल० को अपने हाशमी भाइयों की बात बताई, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह भी ठीक कहते हैं, उनकी इस बात का कौन इंकार कर सकता है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम लोगों का फ़ैसला न कर दूं?

हम लोगों ने कहा, ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हमारे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम ऐ जमाअत अंसार! तो मैं तुम्हारा भाई हूं। इस पर अंसार ने कहा, अल्लाहु अक्बर! रब्बे काबा की क़सम! हम हुज़ूर सल्ल० को ले उड़े और तुम ऐ मुहाजिरीन की जमाअत! मैं तुममें से हूं।

इस पर मुहाजिरीन ने कहा, अल्लाहु अक्बर! रब्बे काबा की क़सम! हम हुज़ूर सल्ल० को ले उड़े और तुम ऐ बनू हाशिम! तुम मेरे हो और मेरे सुपुर्द हो। इस पर हम सब राज़ी होकर खड़े हुए और हममें से हर एक हुज़ूर सल्ल० से ख़ास ताल्लुक़ होने की वजह से बड़ा ख़ुश हो रहा था।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ ख़ालिद! बद्र की लड़ाई में

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 14,

शरीक होने वालों में से किसी को तक्लीफ़ न पहुंचाओ (और यह अब्दुर्रहमान भी बद्री हैं) क्योंकि अगर तुम उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च कर दो, तो भी उनके अमल को नहीं पहुंच सकते हो।

इस पर हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, लोग मुझे बुरा-भला कहते हैं, मैं उन्हें वैसा ही जवाब दे देता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने (सहाबा रज़ि०) से फ़रमाया, ख़ालिद को तक्लीफ़ न पहुंचाओ, क्योंकि यह अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार है, जिसे अल्लाह ने कुफ़्फ़ार पर सूँता है।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दर्मियान तू-तू, मैं-मैं हो गई, तो हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कह दिया, ऐ इब्ने औफ़! आप मेरे सामने इस बात की वजह से फ़ख़्र न करें कि आप मुझसे एक दिन पहले इस्लाम में दाख़िल हुए हैं।

जब यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंची, तो आपने फ़रमाया, मेरी वजह से मेरे (बदरी) सहाबा रज़ि० को छोड़े रखो (उन्हें कोई तक्लीफ़ न पहुंचाओ), क्योंकि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! तुम (ग़ैर बदरी सहाबा रज़ि०) में से कोई भी उहुद पहाड़ जितना सोना ख़र्च कर दे, तो उनके आधे मुद्द के सवाब को नहीं पहुंच सकता। (आधा मुद्द सात छटांक यानी आधा किलो से कम होता है।)

इसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु में कोई तेज़ बात हो गई, तो हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! आपने मुझे हज़रत अब्दुर्रहमान से (झगड़ने से) रोका था और यह हज़रत ज़ुबैर रज़ि० उनको बुरा-भला कह रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये दोनों बदरी हैं (दर्जे में बराबर हैं, तुम्हारा दर्जा कम था) इसलिए ये आपस में एक दूसरे को कुछ कह सकते हैं,

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 349, कंज़, भाग 1, पृ० 138, इस्तीआब, भाग 1, पृ० 409

इसमें कोई हरज नहीं है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बीच ऐसी बात हो गई, जैसी लोगों में हो जाया करती है, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी वजह से मेरे (बदरी) सहाबा रज़ि० को छोड़े रखो, क्योंकि अगर तुममें से कोई आदमी उहुद पहाड़ जितना सोना ख़र्च कर दे, तो इन (बदरी सहाबा रज़ि०) में से किसी एक के एक मुद्द, बल्कि आधे मुद्द के सवाब को नहीं पहुंच सकता।[2]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने नबियों और रसूलों के अलावा बाक़ी तमाम जहान वालों पर मेरे सहाबा रज़ि० को फ़ज़ीलत अता फ़रमाई और फिर मेरे लिए मेरे सहाबा रज़ि० में से चार अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, उस्मान रज़ि० और अली रज़ि० को चुना और उन्हें मेरा ख़ास सहाबी बनाया।

वैसे तो मेरे तमाम सहाबा रज़ि० में ख़ैर है और अल्लाह ने मेरी उम्मत को तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है और मेरी उम्मत में से चार ज़माने वालों को चुना। पहला ज़माना (ख़ुद हुज़ूर सल्ल० का) दूसरा ज़माना (हज़रात सहाबा किराम रज़ि० का) तीसरा ज़माना (हज़रात ताबिईन का) चौथा ज़माना (हज़रात तबअ ताबिईन का)।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने का वक़्त क़रीब आया, तो हज़रात सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! हमें कुछ वसीयत फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुहाजिरीन में से जो शुरू के लोग हैं, मैं

1. कंज़, भाग 7, पृ० 138, हैसमी, भाग 10, पृ० 15,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 15,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 16,

तुम्हें उनके साथ और उनके बाद उनके बेटों के साथ अच्छे व्यवहार की वसीयत करता हूं। अगर तुम इस वसीयत पर अमल नहीं करोगे, तो न तुम्हारा नफ़्ली अमल क़ुबूल किया जाएगा और न फ़र्ज़।[1]

बज़्ज़ार की रिवायत में यह है कि शुरू के सहाबा के साथ, उनके बाद उनके बेटों के साथ और उनके बाद उनके बेटों के बेटों के साथ अच्छे व्यवहार की वसीयत करता हूं।[2]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बता दिया कि अब उनके दुनिया से तशरीफ़ ले जाने का वक़्त क़रीब आ गया है, तो आप पुराने कपड़ों में लिपटे हुए बाहर तशरीफ़ लाए और मिंबर पर बैठ गए। लोगों ने और बाज़ार वालों ने जब आपके बारे में सुना (कि मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं) तो वे सब मस्जिद में आ गए।

आपने अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! इस क़बीला अंसार से मुझे जो ताल्लुक़ है, उसकी हमेशा रियायत रखो, क्योंकि ये लोग मेरे लिए मेदे की तरह हैं, जिसमें मैं खाता हूं और ये मेरा संदूक़ हैं यानी इनसे मुझे ख़ास ताल्लुक़ है, मेरे बहुत से भेद इनके पास हैं। ये मेरे ख़ास भरोसे के लोग हैं, इसलिए तुम इनके नेक आदमी के नेक अमल को क़ुबूल करो और इनके बुरे को माफ़ करो।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने एक बार हज़रत मालिक बिन दुख़शैन रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र हुआ, तो कुछ लोगों ने उन्हें बुरा-भला कहा और यह भी कह दिया कि यह तो मुनाफ़िक़ों का सरदार है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे सहाबा को छोड़े रखो, मेरे सहाबा को बुरा-भला मत कहो।[4]

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 17
2. बज़्ज़ार
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 36
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 21,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो मेरे सहाबा रज़ि० को बुरा-भला कहेगा, उस पर अल्लाह, फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लानत होगी।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे सहाबा रज़ि० को बुरा-भला मत कहो, जो मेरे सहाबा रज़ि० को बुरा-भला कहे, अल्लाह उस पर लानत करे।[2]

हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तुम लोग मुझे अपने साथियों को बुरा-भला कहने का हुक्म दे रहे हो, हालांकि अल्लाह उन पर रहमत फ़रमा चुका और उनकी मग़फ़िरत फ़रमा चुका है। (इसलिए मैं उन्हें हरगिज़ बुरा नहीं कहूंगा।)[3]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का बुराई से तज़्किरा करने से हमेशा बचते रहना क्योंकि तुम्हें मालूम नहीं है कि वे क्या कारनामे अंजाम देकर गए हैं।[4]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी बात यह फ़रमाई कि तुम लोग मेरे घर वालों के बारे में मेरी नियाबत करना यानी मेरे बाद मेरी तरह उनका ख़्याल रखना।[5]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा एक

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 21,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 21
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 21
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 22
5. हैसमी, भाग 9, पृ० 163.

बार हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को गोद में उठाए हुए हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आईं। उनके एक हाथ में एक हांडी थी, जिसमें हज़रत हसन रज़ि० के लिए गरम-गरम खाना था।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने जब वह हांडी हुज़ूर सल्ल० के सामने रख दी, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू हसन यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहां हैं?

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, घर में हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बुला लिया। (जब वह आ गए तो) हुज़ूर सल्ल०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फ़ातिमा रज़ि०, हज़रत हसन और हुसैन रज़ि० (पांचों मिलकर) खाने लगे और हुज़ूर सल्ल० ने मुझे खाने के लिए न बुलाया, हालांकि इससे पहले जब भी हुज़ूर सल्ल० खाना खाते, तो मुझे ज़रूर बुलाते। खाने से फ़ारिग़ होकर आपने इन सब पर अपनी चादर डाल दी और फ़रमाया, ऐ अल्लाह! जो इनसे दुश्मनी करे, तू उससे दुश्मनी कर और जो इनसे दोस्ती करे, तो उससे दोस्ती कर।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ बनू अब्दुल मुत्तलिब! मैंने तुम्हारे लिए अल्लाह से तीन चीज़ें मांगी हैं, तुममें से जो (दीन पर) क़ायम है, अल्लाह उसे उस पर पुख़्तगी अता फ़रमाए और तुम्हारे जाहिल को इल्म अता फ़रमाए और तुम्हारे बे-राह को सीधी राह पर डाल दे और मैंने अल्लाह से यह भी मांगा है कि वह तुम्हें ख़ूब सख़ी और रहमदिल बनाए। अगर कोई आदमी हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी के दर्मियान खड़ा होकर इबादत करे और नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे, (ज़िंदगी भर इतनी बेहतरीन इबादत करता रहे) लेकिन मरते वक़्त उसके दिल में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घरवालों से बुग़्ज़ हो तो वह (दोज़ख़ की आग में दाखिल होगा।)[2]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 167
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 171

व सल्लम ने फ़रमाया कि जिसने अब्दुल मुत्तलिब की औलाद में से किसी के साथ एहसान किया और वह उसके एहसान का बदला दुनिया में नहीं दे सका, तो उसका बदला मेरे ज़िम्मे है, कल (क़ियामत के दिन) जब मुझसे मिले तो ले ले।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी से शादी कर ली, तो मैंने सुना कि वह लोगों को फ़रमा रहे हैं, तुम मुझे मुबारकबाद क्यों नहीं देते? मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि क़ियामत के दिन मेरे ससुराली रिश्ते और मेरे नसब के अलावा हर ससुराली रिश्ता और हर नसब टूट जाएगा (और इस शादी से मुझे हुज़ूर सल्ल० का ससुराली रिश्ता हासिल हो गया है, इसलिए मुझे मुबारकबाद दो।)[2]

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत क़तादा बिन नोमान ज़फ़री रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार क़ुरैश की निन्दा की और उनके ख़िलाफ़ बे-इकरामी के बोल बोल दिए, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अबू क़तादा! क़ुरैश को बुरा-भला मत कहो, क्योंकि तुम्हें उनमें ऐसे आदमी भी नज़र आएंगे, जिनके कामों के सामने तुम्हें अपने अमल हक़ीर नज़र आएंगे। जब तुम उनको देखोगे, तो उन पर रश्क करोगे। अगर मुझे क़ुरैश के सरकश हो जाने का ख़तरा न होता, तो अल्लाह के यहां उनकी जो जगह है, मैं वह उनको बता देता।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो इर्शाद मालूम हैं, उनमें से एक यह भी है कि क़ुरैश को आगे रखो, उनसे आगे न बढ़ो। अगर मुझे क़ुरैश के इतराने का डर न होता, तो अल्लाह के यहां उन्हें जो कुछ मिलेगा, वह मैं उन्हें

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 173,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 173,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 23

बता देता।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, अगर मुझे कुरैश के अकड़ने का डर न होता, तो अल्लाह के यहां उन्हें जो कुछ मिलेगा, वह मैं उन्हें बता देता।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अमानतदारी को कुरैश में तलाश करो, क्योंकि कुरैश के अमानतदार आदमी को दूसरों के अमानतदार पर एक फ़ज़ीलत हासिल है और कुरैश के ताक़तवर आदमी को दूसरों के ताक़तवर आदमी पर दो फ़ज़ीलतें हासिल हैं।[3]

हज़रत रिफ़ाआ बिन राफ़ेअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, अपनी क़ौम को जमा करो, मैं उन्हें कुछ कहना चाहता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें हुज़ूर सल्ल० के घर के पास जमा फ़रमाया और अन्दर ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इन्हें अन्दर आपकी ख़िदमत में ले आऊं या आप बाहर इनके पास तशरीफ़ ले आएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं इनके पास बाहर आऊंगा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उनके पास बाहर तशरीफ़ लाए और उनसे फ़रमाया, क्या तुम्हारे इस मज्मे में दूसरी क़ौम का भी कोई आदमी है?

उन्होंने कहा, जी हां, है। इस मज्मे में हमारे अलावा हमारे मित्र, हमारे भांजे और हमारे ग़ुलाम भी हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हमारे मित्र, हमारे भांजे और ग़ुलाम, ये सब हममें से ही हैं। तुम लोग अल्लाह का यह इर्शाद क्यों नहीं सुनते कि इस (मस्जिदे हराम) के मुतवल्ली बनने के लायक़ सिर्फ़ मुत्तक़ी लोग हैं।

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 25
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 25
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 26,

अगर तुम लोग मुत्तक़ी हो, फिर तो ठीक है, वरना तुम लोग सोच लो, ग़ौर कर लो, ऐसा न हो कि कल क़ियामत के दिन और लोग अमल लेकर आएं और तुम लोग गुनाहों का बोझ लेकर आओ और फिर मुझे (तुम्हारे गुनाह देखकर) मुंह दूसरी ओर करना पड़ जाए।

फिर आपने अपने दोनों हाथ उठाकर फ़रमाया, ऐ लोगो ! क़ुरैश अमानतदार लोग हैं, इसलिए जो भी उनकी कमियां और क़ुसूर तलाश करेगा, अल्लाह उसे नथनों के बल दोज़ख़ में डालेंगे। यह जुम्ला (वाक्य) आपने तीन बार इर्शाद फ़रमाया।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बनू हाशिम और अंसार से बुग़्ज़ रखना कुफ़्र है और अरब से बुग़्ज़ रखना निफ़ाक़ है।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास अन्दर तशरीफ़ लाए, आप फ़रमा रहे थे, ऐ आइशा रज़ि० ! तुम्हारी क़ौम मेरी उम्मत में सबसे पहले मुझसे आ मिलेगी। जब आप बैठ गए तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह मुझे आप पर क़ुरबान करे। आप अन्दर आते हुए ऐसी बात फ़रमा रहे थे, जिसे सुनकर तो मैं डर गई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह क्या है ?

मैंने कहा, आप फ़रमा रहे थे कि मेरी क़ौम आपकी उम्मत में से सबसे पहले आपसे आ मिलेगी।

आपने फ़रमया, हां, मैंने यह बात कही थी।

मैंने कहा, ऐसा किस वजह से होगा ?

आपने फ़रमाया, मौत उनको हलाक करती जाएगी और उस ज़माने के लोग उनसे हसद करेंगे।

मैंने कहा, उनके बाद बाक़ी लोगों का क्या हाल होगा ?

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 26,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 27

आपने फ़रमाया, वे लोग छोटी टिड्डी की तरह होंगे। ताक़तवर कमज़ोर को खा जाएगा, यहां तक कि उन्हीं पर क़ियामत क़ायम होगी।

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! लोगों में से सबसे पहले तुम्हारी क़ौम हलाक होगी।

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह मुझे आप पर क़ुर्बान करे, क्या वे सब ज़हर खाने से हलाक होंगे?

आपने फ़रमाया, नहीं, यह मौत उन्हें हलाक करती जाएगी और उस ज़माने के लोग उनसे हसद करेंगे। वे लोगों में सबसे पहले हलाक होंगे।

मैंने पूछा, इनके बाद लोग कितने दिन दुनिया में रहेंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये लोग तमाम लोगों के लिए रीढ़ की हड्डी की हैसियत रखते हैं। जब ये हलाक हो जाएंगे, तो फिर बाक़ी तमाम लोग भी (जल्द) हलाक हो जाएंगे।[1]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था, इतने में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बताओ, ईमान वालों में सबसे बेहतर ईमान वाला कौन है?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, फ़रिश्ते। आपने फ़रमाया, वह तो हैं ही ऐसे और उन्हें इस तरह होना ही चाहिए और अल्लाह ने उनको जो दर्जा दे रखा है, क्या उसके लिहाज़ से उनके लिए इसमें कोई रुकावट है? फ़रिश्तों के अलावा (बताओ)।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़रिश्तों के बाद नबी हैं, जिन्हें अल्लाह ने रिसालत और नुबूवत से नवाज़ा।

आपने फ़रमाया, वे तो हैं ही ऐसे और उन्हें इस तरह होना ही चाहिए और अल्लाह ने इन्हें जो रुत्बा दे रखा है, क्या उसे देखते हुए इनके लिए उसमें कोई रुकावट है?

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 28,

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! (इनके बाद तो) वे शहीद हैं जिन्हें नबियों के साथ शहादत का दर्जा मिला।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वे तो हैं ही ऐसे और इन्हें इसी तरह होना ही चाहिए और जब उन्हें अल्लाह ने शहादत का दर्जा अता फ़रमाया है, तो क्या इसके लिहाज़ से उनके लिए इसमें कोई रुकावट है? सबसे बेहतर ईमान वाले तो इनके अलावा और लोग हैं?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे कौन लोग हैं?

आपने फ़रमाया, ये वह लोग हैं जो इस वक़्त अपने बाप-दादा की पीठों में हैं। मेरे बाद इस दुनिया में आएंगे और मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे और मेरी तस्दीक़ करेंगे, क़ुरआन के सिपारों को लटका हुआ पाएंगे और इस क़ुरआन पर अमल करेंगे। ये लोग ईमान वालों में सबसे बेहतर ईमान वाले हैं। (बाद में ईमान लाने वालों को फ़ज़ीलत सिर्फ़ इस एतबार से है कि ये हुज़ूर सल्ल० को देखे बग़ैर ईमान ले आए, इसलिए उनका ग़ैब पर ईमान ज़्यादा है, वरना इस पर इज्मा (सबका इत्तिफ़ाक़) है कि सहाबा किराम रज़ि० उम्मत में सबसे अफ़ज़ल हैं।)[1]

हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बताओ क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे बड़ा मर्तबा मख़्लूक़ में किसका होगा?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, फ़रिश्तों का।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। अल्लाह के इतना क़रीब होते हुए इससे उनके लिए कौन कौन सी चीज़ रोक है? इनके अलावा बताओ।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, नबियों का।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब उन पर वह्य उतरती है, तो उनके लिए इस दर्जे के हासिल होने में कौन-सी चीज़ रुकावट है? इनके अलावा बताओ।

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 65

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ही हमें बता दें।

आपने फ़रमाया, ये वह लोग हैं जो तुम्हारे बाद आएंगे और देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे। वह क़ुरआन के सीपारे लटके हुए पाएंगे और उस पर वे ईमान लाएंगे। ये हैं वे लोग जिनका दर्जा क़ियामत के दिन अल्लाह के यहां सारी मख़्लूक़ में सबसे बड़ा होगा।[1]

हज़रत अबू जुमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दोपहर का खाना खाया। हमारे साथ अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपके साथ मुसलमान हुए और हमने आपके साथ जिहाद किया, क्या कोई हमसे भी अफ़ज़ल हो सकता है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, वे लोग जो मेरे बाद होंगे और मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक बार ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जिसने मुझे देखा और फिर मुझ पर ईमान लाया और सात बार ख़ुशख़बरी हो उस आदमी के लिए जिसने मुझे देखा नहीं और मुझ पर ईमान लाया।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे बाद ऐसे लोग आएंगे, जिनमें से हर एक इस बात की तमन्ना करेगा कि मेरी ज़ियारत के बदले में अपने घरवालों को और माल व दौलत को फ़िदए में दे दे।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी बड़ी तमन्ना है कि काश मैं अपने उन भाइयों

1. हैसमी,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 66,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 67,
4. हैसमी, भाग 10, पृ० 66,

को देख लेता जो देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाएंगे।[1]

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी अपने भाइयों से मुलाक़ात कब होगी?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, क्या हम आपके भाई नहीं हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग तो मेरे सहाबी (साथी) भी हो (और भाई भी हो) मेरे भाई तो वे लोग हैं जो मुझे देखे बिना मुझ पर ईमान लाएंगे।[2]

हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत की मिसाल बारिश की तरह है, जिसका पता नहीं चलता कि पहले हिस्से में ख़ैर है या आख़िरी हिस्से में।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं जो ज़मीन पर चलते-फिरते रहते हैं और मेरी उम्मत की तरफ़ से मुझे सलाम पहुंचाते रहते हैं। मेरी ज़िंदगी तुम्हारे लिए ख़ैर है, तुम मुझसे बातें करते हो (और मुझसे शरई हुक्म पूछते रहते हो) मैं (तुम्हारे सवालों का जवाब देने के लिए) तुमसे बात करता हूं और मेरी वफ़ात भी तुम्हारे लिए ख़ैर होगी (और वह इस तरह से कि) तुम्हारे अमल मुझ पर पेश किए जाते रहेंगे और उन अमलों में जो अच्छे अमल मुझे नज़र आएंगे उन पर अल्लाह की तारीफ़ करूंगा (कि उसकी तौफ़ीक़ से हुए) और जो बुरे अमल देखूंगा, उन पर तुम्हारे लिए अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करूंगा।[4]

हज़रत अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं इब्ने ज़ियाद के पास बैठा हुआ था। उसके पास हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 66,
2. तबरानी, हैसमी,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 68, मज्मा, भाग १०, पृ० 68, मुनादी, भाग 5, पृ० 517,
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 24,

अन्हुमा भी मौजूद थे। उसके पास ख़ारजियों के सर काट कर लाए जाने लगे। जब वह कोई सर लेकर गुज़रते, तो मैं कहता, यह दोज़ख़ की आग में जाएगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! ऐसे न कहो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है, इस उम्मत (के गुनाहों) का अज़ाब दुनिया में होगा (यानी हो सकता है कि यह ख़ारजी जो क़त्ल हो रहे हैं, इस दुनिया की सज़ा के बाद उनको आख़िरत में अज़ाब न हो।)[1]

हज़रत अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास से बाहर निकला तो मैंने देखा कि वह (ख़ारजियों को) बहुत सख़्त सज़ा दे रहा है, तो मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी के पास बैठ गया। उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, इस उम्मत की सज़ा (दुनिया में) तलवार से (क़त्ल किए जाने जैसी) होगी।[2]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 85,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 225,

मुसलमानों के माल और जान का एहतराम करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी क़त्ल हो गया और उसके क़ातिल का पता न चला। (यह ख़बर सुनकर) हुज़ूर सल्ल० अपने मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! यह क्या बात है? मैं तुम लोगों में मौजूद हूं और एक आदमी क़त्ल हो गया और उसके क़ातिल का पता नहीं चल रहा है। अगर तमाम आसमान वाले और ज़मीन वाले मिलकर एक मुसलमान को क़त्ल कर दें, तो भी अल्लाह उन्हें बेहद व हिसाब अज़ाब देगा।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी क़त्ल हो गया, हुज़ूर सल्ल० बयान के लिए मिंबर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए। फिर आपने तीन बार पूछा, क्या तुम लोग जानते हो कि तुम सबकी मौजूदगी में किसने इसे क़त्ल किया है?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, नहीं।

आपने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, अगर तमाम आसमानों वाले और तमाम ज़मीन वाले मिलकर एक मोमिन को क़त्ल कर दें, तो भी अल्लाह उन सबको जहन्नम में दाख़िल करेगा और हमसे यानी हमारे घरवालों से जो भी बुग़्ज़ रखेगा, उसे अल्लाह औंधे मुंह आग में दाख़िल करेगा।[2]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें क़बीला जुहैना की शाख़ा बनू हुरक़ा की ओर भेजा, हमने उन पर सुबह-सुबह हमला किया, उसमें एक

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 297,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 296,

आदमी ऐसा था कि जब वे लोग हमारी ओर बढ़ते, तो वह सबसे ज़्यादा सख़्त हमला करता और जब वे पीछे हटते, तो यह उनकी हिफ़ाज़त करता। मैंने और एक और अंसारी ने उसे घेर लिया। जब वह क़ाबू में आ गया, तो उसने कहा—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' यह सुनकर अंसारी तो रुक गया, लेकिन मैंने उसे क़त्ल कर दिया।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस वाक़िए की ख़बर मिली, तो आपने फ़रमाया, ऐ उसामा रज़ि० ! क्या तुमने इसे—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने के बाद क़त्ल कर दिया?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने तो क़त्ल से बचने के लिए कहा था (मुसलमान होने के लिए नहीं कहा था), लेकिन हुज़ूर सल्ल० अपने जुम्ले को बार-बार दोहराते रहे, यहां तक कि मुझे इस बात की तमन्ना होने लगी कि मैं आज ही मुसलमान होता (और इस्लाम लाने से यह गुनाह भी माफ़ हो जाता।[1]

इब्ने इस्हाक़ की रिवायत में यह है कि जब हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वापस पहुंचे, तो हमने आपको यह बात भी बताई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उसामा ! जब तुमसे इस—

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

के बार में पूछा जाएगा, तो उस वक़्त कौन तुम्हारा मददगार होगा?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने तो यह कलिमा सिर्फ़ क़त्ल से बचने के लिए कहा था।

आपने फ़रमाया, जब तुमसे इस—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के बारे में पूछा जाएगा, तो उस वक़्त तुम्हारा

1. अहमद, बुख़ारी, मुस्लिम,

कौन मददगार होगा? उस ज़ात की क़सम, जिसने हुज़ूर सल्ल० को हक़ देकर भेजा। हुज़ूर सल्ल० ने इस जुम्ले (वाक्य) को इतनी बार दोहराया कि मैं तमन्ना करने लगा कि मैं आज से पहले मुसलमान ही न हुआ होता, बल्कि मैं आज ही मुसलमान हुआ होता या मैं उसे क़त्ल न करता।

मैंने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह से अह्द करता हूं कि—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने वाले किसी इंसान को कभी क़त्ल नहीं करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उसामा! मेरे बाद भी?

मैंने अर्ज़ किया, आपके बाद भी।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने और एक अंसारी आदमी ने मिरदास बिन नहीक पर क़ाबू पा लिया। जब हमने उस पर तलवार सूँत ली तो उसने कहा—

'अशहदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु' यह सुनकर हम रुके नहीं, बल्कि उसे क़त्ल कर दिया। आगे इब्ने इस्हाक़ जैसी रिवायत ज़िक्र की है।[2]

एक रिवायत में यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसने—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहा और तुमने उसे क़त्ल कर दिया?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उसने तो कलिमा सिर्फ़ हथियार के डर से पढ़ा था।

आपने फ़रमाया, तुमने उसका दिल चीर कर क्यों नहीं देख लिया जिससे तुम्हें पता चल जाता कि उसने हथियार के डर से कलिमा पढ़ा था या नहीं। क़ियामत के दिन जब 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' के बारे में

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 222
2. इब्ने असाकिर

पूछा जाएगा तो उस वक़्त तुम्हारा मददगार कौन होगा?

हुज़ूर सल्ल० अपने जुम्ले को बार-बार दोहराते रहे, यहां तक कि मुझे यह तमन्ना होने लगी कि मैं आज ही मुसलमान हुआ होता।[1]

हज़रत बक्र बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जमाअत भेजी। मैं भी उसमें गया। हमारी और मुश्रिकों की लड़ाई हुई। मैंने एक मुश्रिक पर हमला किया तो उसने इस्लाम का इज़्हार करके जान बचानी चाही, मैंने उसे फिर भी क़त्ल कर दिया। जब हुज़ूर सल्ल० को यह ख़बर पहुंची तो आप नाराज़ हुए और मुझे अपने से दूर कर दिया। फिर अल्लाह ने यह आयत वह्य में भेजी—

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً (سورت نساء آیت ۹۲)

'और किसी मोमिन की शान नहीं कि वह किसी मोमिन को क़त्ल करे, लेकिन ग़लती से।' (सूरः निसा, आयत 92)

(चूंकि मैंने उसे ग़लती से क़त्ल किया था, इस वजह से) हुज़ूर सल्ल० मुझसे राज़ी हो गए और मुझे अपने क़रीब कर लिया।[2]

हज़रत उक़्बा बिन ख़ालिद लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जमाअत भेजी, जिसने एक काफ़िर क़ौम पर छापा मारा। एक काफ़िर आदमी ने ज़ोर से हमला किया तो एक मुसलमान आदमी सूँती हुई तलवार लेकर उसके पीछे लग गया। जब वह मुसलमान उस काफ़िर को मारने लगा, तो उस काफ़िर ने कहा, मैं मुसलमान हूं। मैं मुसलमान हूं।

इस मुसलमान ने उसकी बात में कुछ ग़ौर न किया, बल्कि तलवार मारकर उसे क़त्ल कर दिया। होते-होते यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुंच गई। हुज़ूर सल्ल० ने उस क़ातिल मुसलमान के बारे में सख़्त बात फ़रमाई जो उस क़ातिल तक पहुंच गई। एक दिन हुज़ूर सल्ल० ख़ुत्बा दे रहे थे कि इतने में उस क़ातिल

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 78, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 192,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 316,

मुसलमान ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! उसने तो सिर्फ़ क़त्ल से बचने के लिए कहा था कि मैं मुसलमान हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने उस मुसलमान से और उस ओर के तमाम लोगों से मुंह फेर लिया और ख़ुत्बा देते रहे। उस मुसलमान ने दोबारा कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! उसने तो सिर्फ़ क़त्ल से बचने के लिए कहा था कि मैं मुसलमान हूं। हुज़ूर सल्ल० ने उस मुसलमान से और उस ओर के तमाम लोगों से मुंह फेर लिया और ख़ुत्बा देते रहे। लेकिन उस मुसलमान से सब्र न हो सका और उसने तीसरी बार वही बात कही, तो इस बार हुज़ूर सल्ल० उसकी ओर मुतवज्जह हुए और आपके चेहरे पर नागवारी साफ़ महसूस हो रही थी। आपने तीन बार फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे किसी मोमिन के क़त्ल करने से मना फ़रमाया है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक जमाअत भेजी, जिसमें हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। जब ये लोग काफ़िरों तक पहुंचे तो देखा कि वे सब इधर-उधर बिखरे हुए हैं, अलबत्ता एक आदमी वहीं बैठा हुआ है। वह अपनी जगह से नहीं हिला और उसके पास बहुत-सा माल था। (मुसलमानों को देखकर) वह कहने लगा—

'अश्हदु अल-ला इला-ह इल्लल्लाहु'

हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने उसे आगे बढ़कर क़त्ल कर दिया। उनसे उनके एक साथी ने कहा, क्या आपने ऐसे आदमी को क़त्ल कर दिया जो कलिमा शहादत—

पढ़ रहा था? मैं यह बात हुज़ूर सल्ल० को ज़रूर बताऊंगा। जब ये लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस पहुंचे, तो उन्होंने कहा, ऐ

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 293, इसाबा, भाग 2, पृ० 291, कंज़, भाग 1, पृ० 79, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 116, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 48,

अल्लाह के रसूल सल्ल० ! एक आदमी ने कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

पढ़ा, लेकिन उसे हज़रत मिक़्दाद ने क़त्ल कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मिक़्दाद को बुलाकर मेरे पास लाओ। (जब हज़रत मिक़्दाद रज़ि० आए तो) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मिक़्दाद ! क्या तुमने ऐसे आदमी को क़त्ल कर दिया जो

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कह रहा था तो कल को—

ला इला-ह की मांग के वक़्त तुम क्या करोगे? इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ (سورت نساء آيت ٩٤)

'ऐ ईमान वालो ! जब तुम अल्लाह की राह में सफ़र किया करो, तो हर काम को जांच करके किया करो और ऐसे आदमी को जो कि तुम्हारे सामने इताअत ज़ाहिर करे दुनियावी ज़िंदगी के सामान की ख़्वाहिश में यों मत कह दिया करो कि तू मुसलमान नहीं है, क्योंकि ख़ुदा के पास बहुत ग़नीमत के माल हैं, पहले तुम भी ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर एहसान किया, सो ग़ौर करो। बेशक अल्लाह तुम्हारे अमल की पूरी ख़बर रखते हैं।' (सूरः निसा, आयत 94)

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मिक़्दाद से फ़रमाया, वह एक मोमिन आदमी था जिसने अपना ईमान छिपा रखा था, लेकिन वह काफ़िरों के साथ रहता था। उसने तुम्हारे सामने अपना ईमान ज़ाहिर किया, तुमने उसे क़त्ल कर दिया और तुम भी तो पहले मक्का में अपना ईमान छिपाकर रखा करते थे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं,

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 9

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें मुसलमानों की एक जमाअत के साथ इज़म नामी जगह की ओर भेजा, उस जमाअत में हज़रत अबू क़तादा हारिस बिन रिबई और मुहल्लिम बिन जस्सामा रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी थे। चुनांचे हम लोग मदीना मुनव्वरा से चले और इज़म नामी जगह के भीतरी हिस्से में पहुंच गए। वहां हमारे पास से आमिर बिन अज़बत अशजई गुज़रे। वह अपने ऊंट पर सवार थे। उनके साथ थोड़ा-सा सामान और दूध का एक मश्केज़ा भी था।

उन्होंने हमें इस्लाम वाला सलाम किया। हम तो सलाम सुनकर उन पर हमला करने से रुक गए, लेकिन हज़रत मुहल्लिम बिन जस्सामा ने उन पर हमला करके इस दुश्मनी की वजह से उसे क़त्ल कर दिया जो उन दोनों के दर्मियान पहले से थी। जब हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो हमने हुज़ूर सल्ल० को सारी कारगुज़ारी सुनाई। इस पर हमारे बारे में क़ुरआन की यह आयत उतरी—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَىٰ إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ كَذَٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا۔

(سورت نساء آیت ۹۴)

(अनुवाद ऊपर अभी गुज़रा है।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहल्लिम बिन जस्सामा रज़ियल्लाहु अन्हु को एक जमाअत में भेजा। आमिर बिन अज़बत उन लोगों से मिले और इन्होंने उनको इस्लाम वाला सलाम किया। आमिर और हज़रत मुहल्लिम रज़ि० के बीच जाहिलियत के ज़माने में दुश्मनी थी। हज़रत मुहल्लिम रज़ि० ने तीर मारकर आमिर को क़त्ल कर दिया।

यह ख़बर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंची तो हज़रत उऐना रज़ियल्लाहु

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 224, हैसमी, भाग 7, पृ० 8, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 115, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 282

अन्हु ने (आमिर की हिमायत में) और हज़रत अक़रअ रज़ियल्लाहु अन्हु ने (हज़रत मुहल्लिम की हिमायत में) हुज़ूर सल्ल० से बात की। चुनांचे हज़रत अक़रअ ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज तो आप (हज़रत मुहल्लिम को) माफ़ फ़रमा दें, आगे न फ़रमाएं।

हज़रत उऐना रज़ि० ने कहा, नहीं, नहीं। अल्लाह की क़सम ! (बिल्कुल न माफ़ फ़रमाएं, बल्कि हज़रत मुहल्लिम रज़ि० से बदला लें) ताकि मेरी औरतों पर (आमिर के क़त्ल होने से) जो रंज व सदमा आया है, वही हज़रत मुहल्लिम की औरतों पर भी आए।

इतने में हज़रत मुहल्लिम रज़ि० दो चादरों में लिपटे हुए आए और हुज़ूर सल्ल० के सामने बैठ गए, ताकि हुज़ूर सल्ल० उनके लिए इस्तग़फ़ार फ़रमा दें, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत न फ़रमाए। (वह यह सुनकर रोने लग पड़े और) वह अपनी चादरों से अपने आंसू पोंछते हुए वहां से खड़े हुए और सात दिन नहीं गुज़रे थे कि उनका इंतिक़ाल हो गया।

सहाबा किराम रज़ि० ने उनको दफ़न कर दिया, लेकिन ज़मीन ने उन्हें बाहर फेंक दिया। सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर यह क़िस्सा सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़मीन तो इनसे भी ज़्यादा बुरे को क़ुबूल कर लेती है, लेकिन अल्लाह ने इस क़िस्से को दिखाकर यह चाहा कि मुसलमान के एहतिराम के बारे में तुम्हें पक्की नसीहत हासिल हो, फिर सहाबा रज़ि० ने उनकी लाश को एक पहाड़ के दो किनारों के दर्मियान रख दिया और (छिपाने के लिए) उन पर पत्थर डाल दिए और यह आयत उतरी[1]—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا

हज़रत क़बीसा बिन ज़ुवैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी रज़ि० ने काफ़िरों की एक जमाअत पर छापा मारा। इस जमाअत को हार का मुंह देखना पड़ा। इन सहाबी ने हार खाकर भागते हुए एक आदमी का पीछा किया और उस

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 225,

तक जा पहुंचे। जब उस पर तलवार का वार करना चाहा, तो उस आदमी ने कहा—

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' लेकिन वह सहाबी न रुके और उसे क़त्ल कर दिया।

(वह सहाबी क़त्ल तो कर बैठे, लेकिन) बाद में उन सहाबी को इसका बड़ा सदमा हुआ। उन्होंने अपनी सारी बात जाकर हुज़ूर सल्ल० को बता दी और यह अर्ज़ किया, उसने सिर्फ़ अपनी जान बचाने के लिए कलिमा पढ़ा था।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने उसका दिल चीर कर क्यों नहीं देखा? क्योंकि दिल की तर्जुमानी ज़ुबान से ही की जाती है।

थोड़े ही दिनों में उन क़त्ल करने वाले साहब का (ग़म और सदमे की वजह से) इंतिक़ाल हो गया। जब उन्हें दफ़न किया गया, तो सुबह के वक़्त ज़मीन पर पड़े हुए मिले। (ज़मीन ने उन्हें बाहर फेंक दिया), उनके घरवालों ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर उसका तज़्किरा किया। आपने फ़रमाया, उन्हें दोबारा दफ़न कर दो।

दोबारा दफ़न किया गया तो फिर सुबह के वक़्त ज़मीन के ऊपर पड़े हुए मिले। उनके घरवालों ने हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़मीन ने उनको क़ुबूल करने से इंकार कर दिया है। इसलिए उन्हें किसी ग़ार में डाल दो।[1]

हज़रत अबू जाफ़र मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब मक्का जीत लिया गया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को दावत देने के लिए भेजा और उन्हें लड़ने नहीं भेजा। उनके साथ क़बीला सुलैम बिन मंसूर, क़बीला मुदलिज बिन मुर्रा और बहुत-से दूसरे क़बीले थे।

जब ये लोग क़बीला बनू जज़ीमा बिन आमिर बिन अब्दे मनात

1. कंज़, भाग 7, पृ० 316,

बिन किनाना के पास पहुंचे और उन्होंने इन लोगों को देख लिया तो उन्होंने अपने हथियार उठा लिए। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उनसे कहा, आप लोग हथियार रख दें, क्योंकि सारे लोग मुसलमान हो चुके हैं, (आप लोग सारे मुसलमानों का मुक़ाबला नहीं कर सकोगे।) जब उन्होंने हथियार रख दिए तो हज़रत ख़ालिद रज़ि० के कहने पर उनकी मुश्कें कस ली गईं (और मोंढों के पीछे हाथ बांध दिए गए) फिर उनमें से बहुतों को क़त्ल कर दिया।

जब यह ख़बर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंची, तो आपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने जो कुछ किया है, मैं उससे बरी हूं। फिर आपने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर फ़रमाया, ऐ अली रज़ि० ! इन लोगों के पास जाओ और इनके मामले में ग़ौर करो और जाहिलियत की बातें अपने दोनों क़दमों के नीचे (ज़मीन में दफ़न) कर दो।

हज़रत अली रज़ि० अपने साथ बहुत-सा माल लेकर उन लोगों के पास गए। यह माल हुज़ूर सल्ल० ने उनको दिया था। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उनके तमाम क़त्ल होने वाले लोगों का ख़ूनबहा अदा किया और उनका जितना माल लिया गया था, उसका बदला भी दिया, यहां तक कि कुत्ते के पानी पीने के बरतन का बदला भी दिया, यहां तक कि उस क़बीले की तरफ़ से न ख़ून की मांग रही और न किसी क़िस्म के माल की। हज़रत अली रज़ि० के पास माल बच गया। फ़ारिग़ होकर हज़रत अली रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, क्या ऐसा जानी या माली नुक़्सान रह गया है, जिसका बदला तुम लोगों को न मिला हो ?

उन लोगों ने कहा, नहीं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, हो सकता है कि ऐसा माली या जानी नुक़्सान अभी बाक़ी हो, जिसे न तुम जानते हो और न अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, इसलिए यह जितना माल बाक़ी रह गया है, यह सारा माल मैं आप लोगों को एहतियात के तौर पर दे देता हूं। चुनांचे उन्होंने सारा माल भी उन्हें दे दिया और वापस पहुंचकर हुज़ूर सल्ल० को सारी कारगुज़ारी सुनाई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ठीक किया और अच्छा किया। फिर हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए, क़िबले की ओर मुंह किया और अपने दोनों हाथों को इतना ऊंचा उठाया कि बग़लों के नीचे का हिस्सा नज़र आने लगा और आपने तीन बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० ने जो कुछ किया है, मैं उससे बरी हूं।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को क़बीला बनू जज़ीमा की ओर भेजा। हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने उन लोगों को इस्लाम की दावत दी। (वे मुसलमान तो हो गए, लेकिन) अस्लमना (हम मुसलमान हो गए) न कहा, 'सबाना-सबाना' (हमने दीन बदल लिया, हमने दीन बदल दिया) कहने लगे।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने सबको गिरफ़्तार करके हममें से हर एक को एक-एक क़ैदी दे दिया। एक दिन जब सुबह हुई, हज़रत ख़ालिद ने हुक्म दिया कि हममें से हर आदमी अपने क़ैदी को क़त्ल कर दे। मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! न मैं अपने क़ैदी को क़त्ल करूंगा और न मेरे साथियों में से कोई करेगा।

साथियों ने वापस पहुंचकर हुज़ूर सल्ल० से हज़रत ख़ालिद के इस काम का ज़िक्र किया। हुज़ूर सल्ल० ने अपने दोनों हाथ उठाकर दो बार फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! जो कुछ ख़ालिद ने किया है, मैं उससे बरी हूं।[2]

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं, जो रिवायत मुझे पहुंची है, उसमें यह है कि हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की आपस में इस बारे में तेज़ बातें भी हुई थीं। चुनांचे अब्दुर्रहमान रज़ि० ने हज़रत ख़ालिद रज़ि० से कहा, तुम इस्लाम में जाहिलियत वाला काम कर रहे हो।

हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने कहा, मैंने आपके बाप (के क़त्ल का) बदला लिया है।

---

1. इब्ने इस्हाक़,
2. अहमद, बुख़ारी, नसई.

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, ग़लत कहते हो। अपने बाप के क़ातिल को तो मैंने ख़ुद क़त्ल किया था, तुमने तो अपने चचा फ़ाकेह बिन मुग़ीरह का बदला लिया है। इस पर दोनों में बात बढ़ गई। जब हुज़ूर सल्ल० को इसका पता चला, तो फ़रमाया, ऐ ख़ालिद ! नर्मी से बात करो। मेरे (पुराने) सहाबा रज़ि० को छोड़े रखो। अल्लाह की क़सम ! अगर तुम्हें उहुद के पहाड़ के बराबर सोना मिल जाए, और फिर तुम उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दो, तब भी तुम मेरे (पुराने) सहाबा रज़ि० में से किसी एक की एक सुबह या एक शाम (के अज्र) को नहीं पहुंच सकते हो।[1]

हज़रत सख़्र अहमसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला बनू सक़ीफ़ से ग़ज़्वे के लिए तशरीफ़ ले चले, तो जब हज़रत सख़्र ने यह ख़बर सुनी तो वह हुज़ूर सल्ल० की मदद करने के लिए घुड़सवारों की जमाअत लेकर चले। जब वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० वापस मदीना तशरीफ़ ले जा चुके थे और बनू सक़ीफ़ का क़िला और महल अभी तक जीता नहीं गया था।

हज़रत सख़्र ने अह्द किया कि मैं उस वक़्त तक क़िला और महल को नहीं छोड़ूंगा जब तक इस क़बीले वाले हुज़ूर सल्ल० के फ़ैसले पर नहीं उतर आते। चुनांचे वह वहीं ठहर गए और उन्होंने उस वक़्त उस क़िले और महल को छोड़ा जब वे लोग हुज़ूर सल्ल० के फ़ैसले पर उतर आए और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में यह ख़त लिखा—

अम्मा बादु, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क़बीला बनू सक़ीफ़ ने आपके फ़ैसले पर उतरना क़ुबूल कर लिया है। मैं उन्हें लेकर आ रहा हूं। वे मेरे घुड़सवारों के साथ हैं। हुज़ूर सल्ल० ने (जमा करने के लिए) 'अस्सलातु जामिअतुन' एलान करा दिया (कि नमाज़ में सब आ जाएं, कोई अहम काम है), फिर हुज़ूर सल्ल० ने (हज़रत सख़्र के क़बीले) अहमस के लिए दस बार यह दुआ की, ऐ अल्लाह ! क़बीला अहमस के

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 313,

सवारों और पैदल लोगों में बरकत फ़रमा दे।

जब ये लोग आ गए तो हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० से बात की और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत सख़्र ने मेरी फूफी को गिरफ़्तार किया हुआ है, हालांकि वह भी इस दीन में दाख़िल हो चुकी हैं, जिसमें बाक़ी तमाम मुसलमान दाख़िल हैं। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत सख़्र को बुलाकर फ़रमाया, ऐ सख़्र ! जब कोई क़ौम मुसलमान हो जाती है तो (इस्लाम लाने की वजह से) उनकी जान और माल सब महफ़ूज़ हो जाते हैं, इसलिए तुम मुग़ीरह को उनकी फूफी दे दो।

उन्होंने हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० को उनकी फूफी दे दी और हज़रत सख़्र ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि क़बीला बनू सुलैम एक पानी यानी एक चश्मे पर रहा करते थे, वह इस्लाम नहीं लाए और वह पानी छोड़कर भाग गए हैं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह पानी मुझे और मेरी क़ौम को दे दें, हम लोग वहां रहा करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ठीक है और वह पानी हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें दे दिया। फिर क़बीला बनू सुलैम मुसलमान हो गया। उन्होंने आकर हज़रत सख़्र से अपने पानी की मांग की। हज़रत सख़्र ने उन्हें पानी देने से इंकार कर दिया। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम मुसलमान हो गए थे, फिर हम हज़रत सख़्र के पास गए थे, ताकि वह हमें हमारा पानी दे दें, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ सख़्र ! जब कोई क़ौम मुसलमान हो जाती है, तो उनका माल और जान सब कुछ महफ़ूज़ हो जाता है इसलिए उनका पानी उन्हें वापस कर दो। हज़रत सख़्र रज़ि० ने कहा, बहुत अच्छा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० !

हज़रत सख़्र रज़ि० फ़रमाते हैं, पहले हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे हज़रत मुग़ीरह रज़ि० को उनकी फूफी वापस दिलवाई और अब बनू सुलैम को उनका पानी वापस दिलवा रहे थे, तो इस वजह से हुज़ूर सल्ल० को

बहुत शर्म आ रही थी, मैंने देखा शर्म की वजह से हुज़ूर सल्ल० का चेहरा सुर्ख़ी में बदल रहा था।[1]

मुसलमान को क़त्ल करने से बचना और मुल्क की वजह से लड़ने का नापसंदीदा होना

हज़रत औस बिन औस सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग मदीना मुनव्वरा में मस्जिदे नबवी के अन्दर एक ख़ेमे में ठहरे हुए थे। एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए। इतने में एक आदमी आकर हुज़ूर सल्ल० से चुपके-चुपके बात करने लग गया। हमें पता न चला कि वह क्या कह रहा है। आपने फ़रमाया, जाओ और उनसे कह दो कि वह उसे क़त्ल कर दें।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बुलाकर फ़रमाया, शायद यह कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

पढ़ता है?

उस आदमी ने कहा, जी हां, (वह पढ़ता है।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ और उनसे कह दो कि उसे छोड़ दें, क्योंकि मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है मैं लोगों से लड़ूं, यहां तक कि वे इस बात की गवाही दे दें कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं अल्लाह का रसूल हूं। जब वह यह कलिमा शहादत पढ़ लें तो फिर उनका ख़ून और माल लेना मेरे लिए हराम हो जाता है। हां, उनमें से कोई शरई हक़ बनता है, तो उसका लेना जायज़ है और उनका हिसाब अल्लाह ख़ुद लेंगे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अदी अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों के दर्मियान

---

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 351, नस्बुर्राया, भाग 3, पृ० 412, इसाबा, भाग 2, पृ० 180, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 114,
2. अहमद, दारमी, तहावी, तयालसी

तशरीफ़ रखते थे कि इतने में एक आदमी एक मुनाफ़िक़ को क़त्ल करने के बारे में चुपके से बात करने की हुज़ूर सल्ल० से इजाज़त मांगने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने उससे ऊंची आवाज़ से फ़रमाया, क्या वह ला इला-ह इल्लल्लाहु की गवाही नहीं देता?

उस आदमी ने कहा, गवाही देता है, लेकिन उसकी गवाही का एतबार नहीं है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या वह मेरे रसूलुल्लाह होने की गवाही नहीं देता?

उसने कहा, देता है, लेकिन उसकी गवाही का एतबार नहीं है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या वह नमाज़ नहीं पढ़ता है?

उसने कहा, पढ़ता है, लेकिन उसकी नमाज़ का एतबार नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन्हीं लोगों को (क़त्ल करने) से मुझे रोका गया है?[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरे पास मेरे किसी सहाबी को बुलाओ।

मैंने कहा, हज़रत अबूबक्र रज़ि० को?

आपने कहा, नहीं। मैंने कहा, हज़रत उमर को? आपने फ़रमाया, नहीं। मैंने कहा, आपके चचेरे भाई हज़रत अली रज़ि० को? आपने फ़रमाया, नहीं। मैंने कहा, हज़रत उस्मान रज़ि० को? आपने फ़रमाया, हां। जब वह आ गए, तो आपने मुझसे फ़रमाया, तनिक एक ओर को हट जाओ।

फिर आपने हज़रत उस्मान रज़ि० से कान में बात करनी शुरू कर दी और हज़रत उस्मान रज़ि० का रंग बदल रहा था। जब यौमुद्दार आया (जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ि० के घर का घेराव किया गया) और हज़रत उस्मान रज़ि० घर में घेर लिए गए, तो हमने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आप (बाग़ियों से) लड़ाई नहीं करेंगे?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे एक

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 78

वायदा लिया था, मैं उस वायदे पर पक्का रहूंगा और जमा रहूंगा।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का जिस वक़्त घेराव कर लिया गया था, उस वक़्त उन्होंने झांक कर अपने साथियों से पूछा, आप लोग मुझे क्यों क़त्ल करते हो? क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि किसी आदमी का ख़ून बहाना सिर्फ़ तीन बातों की वजह से हलाल होता है, या तो वह शादी के बाद ज़िना करे, इस शक्ल में उसे रज्म किया जाएगा, यानी पत्थर मार-मारकर मार दिया जाएगा या वह किसी को जान-बूझ कर क़त्ल करे, इस शक्ल में उसे भी बदले में क़त्ल कर दिया जाएगा या इस्लाम लाने के बाद, 'नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक' मुर्तद हो जाए। (अगर समझाने से इस्लाम में वापस न आया तो) उसे मुर्तद होने की सज़ा में क़त्ल किया जाएगा। अल्लाह की क़सम! न मैंने कभी जाहिलियत में ज़िना किया और न इस्लाम लाने के बाद, और न मैंने किसी को क़त्ल किया है कि जिसके बदले में मुझे क़त्ल किया जाए और न इस्लाम लाने के बाद मैं मुर्तद हुआ हूं। (मैं तो अब भी मुसलमान हूं।)—

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का घर में घेराव हो गया था, मैं भी आपके साथ घर में था। घर में एक जगह ऐसी थी कि जब हम उसमें दाख़िल होते, तो वहां से बलात नामी जगह पर बैठे हुए लोगों की तमाम बातें सुन लेते। एक दिन हज़रत उस्मान रज़ि० किसी ज़रूरत से उसमें गए, जब वहां से बाहर आए, तो उनका रंग बदला हुआ था। उन्होंने फ़रमाया, वे लोग तो अब मुझे क़त्ल की धमकी दे रहे हैं।

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 181, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 46,
2. बिदाया, भाग 7, पृ० 179,

हमने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह उनसे आपकी किफ़ायत फ़रमाएंगे। फिर उन्होंने फ़रमाया, ये लोग मुझे क्यों क़त्ल करना चाहते हैं? क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि मुसलमानों का ख़ून बहाना सिर्फ़ तीन बातों की वजह से हलाल होता है, या तो आदमी मुसलमान होने के बाद काफ़िर हो जाए या शादी के बाद ज़िना करे या नाहक़ किसी को क़त्ल कर दे। (मैंने तीनों में से कोई काम नहीं किया है।) अल्लाह की क़सम ! न मैंने जाहिलियत के ज़माने में कभी ज़िना किया है और न इस्लाम लाने के बाद और जब से अल्लाह ने मुझे इस्लाम की हिदायत दी है, कभी भी मेरे दिल में इस दीन को छोड़कर किसी और दीन को अख़्तियार करने की तमन्ना पैदा नहीं हुई है और न मैंने नाहक़ किसी को क़त्ल किया है, तो अब ये लोग मुझे किस वजह से क़त्ल करना चाहते हैं?[1]

हज़रत अबू लैला किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिन दिनों हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में घिरे हुए थे, मैं भी उन दिनों वहां ही था। एक दिन हज़रत उस्मान रज़ि० ने दरीचे से बाहर झांक कर (बाग़ियों से) फ़रमाया—

'ऐ लोगो ! मुझे क़त्ल न करो (अगर मुझसे कोई ग़लती हो गई है तो) मुझसे तौबा करा लो। अल्लाह की क़सम ! अगर तुम मुझे क़त्ल करोगे, तो फिर कभी भी तुम इकट्ठे नमाज़ न पढ़ सकोगे और न दुश्मन से जिहाद कर सकोगे और तुम लोगों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा।'

फिर दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में दाखिल करके फ़रमाया, तुम्हारा हाल भी ऐसा हो जाएगा, फिर यह आयत पढ़ी—

يَا قَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَن يُصِيبَكُم مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ
أَوْ قَوْمَ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنكُم بِبَعِيدٍ (سورت هود آیت ۸۹)

'ऐ मेरी क़ौम ! मेरी ज़िद तुम्हारे लिए इसकी वजह न हो जाए कि

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 179, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 461

तुम पर भी इसी तरह की मुसीबतें आ पड़ें, जैसी नूह की क़ौम, या हूद की क़ौम, या सालेह की क़ौम पर पड़ी थीं और लूत की क़ौम तो (अभी) तुमसे (बहुत) दूर (ज़माने में) नहीं हुई।' (सूरः हूद, आयत 89)

हज़रत उस्मान रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आदमी भेजकर पूछा कि आपकी क्या राय है?

उन्होंने जवाब दिया कि आप अपना हाथ (इन बाग़ियों से रोक कर रखें, इससे आपकी दलील ज़्यादा मज़बूत होगी, (क़ियामत के दिन)[1]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जिन दिनों हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु घर में घिरे हुए थे, मैं उनकी ख़िदमत में गया और मैंने उनसे कहा, आप तमाम लोगों के इमाम हैं और यह मुसीबत जो आप पर आई है, वह आप देख रहे हैं, मैं आपके सामने तीन तज्वीज़ें पेश करता हूं, इनमें से आप जो-सी चाहें, अख़्तियार फ़रमा लें—

या तो आप घर से बाहर आकर इन बाग़ियों से लड़ें, क्योंकि आपके साथ मुसलमानों की बहुत बड़ी तायदाद और बहुत ज़्यादा ताक़त है और फिर आप हक़ पर हैं और ये बाग़ी लोग बातिल पर हैं।

या आप अपने इस घर से बाहर निकलने के लिए पीछे की ओर एक नया दरवाज़ा खोल लें, क्योंकि पुराने दरवाज़े पर तो ये बाग़ी लोग बैठे हुए हैं और इस नये दरवाज़े से (चुपके से) बाहर निकलकर अपनी सवारी पर बैठकर मक्का चले जाएं, क्योंकि ये बाग़ी लोग मक्के में आपका ख़ून बहाना हलाल नहीं समझेंगे,

या फिर आप शामदेश चले जाएं, वहां शाम वाले भी हैं और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं। हज़रत उस्मान रज़ि० ने (एक भी तज्वीज़ क़ुबूल न फ़रमाई और) फ़रमाया, मैं घर से बाहर निकलकर इन बाग़ियों से लड़ूं, यह नहीं हो सकता। मैं नहीं चाहता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आपकी उम्मत में सबसे पहले (मुसलमानों का) ख़ून बहाने वाला मैं बनूं।

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 49

बाक़ी रही यह तज्वीज़ कि मैं मक्का चला जाऊं, वहां ये बाग़ी मेरा ख़ून बहाना हलाल नहीं समझेंगे तो मैं इसे भी अख़्तियार नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि क़ुरैश का एक आदमी मक्का में बे-दीनी के फैलने का ज़रिया बनेगा, इसलिए उस पर सारी दुनिया का आधा अज़ाब होगा। मैं नहीं चाहता कि मैं वह आदमी बनूं और तीसरी तज्वीज़ कि मैं शाम देश चला जाऊं, वहां शाम वाले भी हैं और हज़रत मुआविया रज़ि० भी हैं, सो मैं अपने हिजरत वाले वतन और हुज़ूर सल्ल० के पड़ोस को हरगिज़ नहीं छोड़ सकता।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु घर में घिरे हुए थे, मैं उनकी ख़िदमत में गया और अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अब तो आपके लिए इन बाग़ियों से लड़ना बिल्कुल हलाल हो चुका है, (इसलिए आप इनसे लड़ें और इन्हें भगा दें।)

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें इस बात से ख़ुशी हो सकती है कि तुम तमाम लोगों को क़त्ल कर दो और मुझे भी?

मैंने कहा, नहीं। फ़रमाया, अगर तुम एक आदमी को क़त्ल करोगे, तो गोया तुमने तमाम लोगों को क़त्ल कर दिया (जैसे कि सूर: माइदा, आयत 32 में उसका तज़्किरा है)। यह सुनकर मैं वापस आ गया और लड़ाई का इरादा छोड़ दिया।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके साथ इस घर में ऐसी जमाअत है जो (अपनी ख़ूबियों के एतबार से) अल्लाह की मदद की हर तरह हक़दार है। इनसे कम तायदाद पर अल्लाह मदद फ़रमा दिया करते हैं। आप मुझे इजाज़त दे दें ताकि मैं उनसे लड़ाई करूं।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, मैं अल्लाह का वास्ता देकर कहता

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 211, हैसमी, भाग 7, पृ० 230
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 48, मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 25,

हूं कि कोई आदमी मेरी वजह से न अपना ख़ून बहाए और न किसी और का।[1]

इब्ने साद की एक रिवायत में यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जिस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में घेर लिए गए थे, उस वक़्त मैंने उनसे कहा, आप इन बाग़ियों से लड़ाई करें, अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने इनसे लड़ना आपके लिए हलाल कर दिया है।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, अल्लाह की क़सम! नहीं, मैं इनसे कभी न लड़ूंगा। आगे और हदीस ज़िक्र की है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, घेराव के ज़माने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुममें से मेरे सबसे ज़्यादा काम आने वाला वह आदमी है जो अपने हाथ और हथियार को रोक ले (और बाग़ियों पर न उठाए।)[2]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ये अंसार दरवाज़े पर हाज़िर हैं और कह रहे हैं, अगर आप फ़रमा दें तो हम दो बार अल्लाह के अंसार बनकर दिखा दें। (एक बार तो जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना हिजरत फ़रमाई थी, दूसरी बार आज इन बाग़ियों से लड़ाई लड़ करके)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, लड़ना तो बिल्कुल नहीं है।[3]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, घेराव के ज़माने में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उनके घर में ऐसे सात सौ लोग थे कि अगर हज़रत उस्मान रज़ि० उनको इजाज़त दे देते तो वे लोग

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 49
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 48
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 48,

मार-मारकर बाग़ियों को मदीना से बाहर निकाल देते। इन लोगों में हज़रत इब्ने उमर, हज़रत हसन बिन अली और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन साइदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप कब तक हमारे हाथों को रोके रखेंगे? हमें तो ये बाग़ी लोग खा गए। कोई हम पर तीर चलाता है, कोई हमें पत्थर मारता है, किसी ने तलवार सूँती हुई है, इसलिए आप हमें (उनसे लड़ने का) हुक्म दें।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मेरा तो इनसे लड़ने का बिल्कुल इरादा नहीं। अगर मैं इनसे लड़ूं, तो मैं यक़ीनी तौर पर इनसे बच जाऊंगा, लेकिन मैं इन्हें भी और इन्हें मेरे ख़िलाफ़ जमा करके लाने वालों को भी अल्लाह के हवाले करता हूं, क्योंकि हम सबको अपने रब के पास जमा होना है। तुम्हें इनसे लड़ने का हुक्म मैं किसी सूरत में नहीं दे सकता।

हज़रत सईद रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! आपके बारे में कभी किसी से नहीं पूछूंगा (यानी बाग़ियों से लड़ाई लड़ कर के मैं शहीद हो जाऊंगा, ज़िंदा नहीं रहूंगा), चुनांचे हज़रत सईद रज़ि० ने बाहर जाकर उनसे लड़ाई लड़ी, यहां तक कि उनका सर घायल हो गया।[2]

हज़रत उमर बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे हज़रत आमिर रज़ि० ने आकर हज़रत साद रज़ि० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अब्बा जान ! लोग तो दुनिया पर लड़ रहे हैं और आप यहां बैठे हुए हैं।

हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम मुझे यह कह रहे हो कि मैं इस फ़ित्ने में सरदार बन जाऊं, नहीं अल्लाह की क़सम ! नहीं मैं इस लड़ाई में नहीं शरीक हो सकता, अलबत्ता लड़ाई में शरीक होने की सिर्फ़

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 49,
2. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 23,

एक शक्ल है कि मुझे एक ऐसी तलवार मिल जाए कि मैं वह तलवार अगर किसी मोमिन को मारूं तो वह उचट जाए और उसे घायल न करे और अगर किसी काफ़िर को मारूं तो उसे क़त्ल कर दे। (ऐसी तलवार चूंकि मेरे पास है नहीं, इसलिए मैं छुपकर बैठ हुआ हूं, क्योंकि) मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह उस मालदार को पसन्द फ़रमाते हैं जो कि छुपा हुआ हो और तक़्वे वाला हो।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, आप अह्ले शूरा में से हैं और इस मामले (ख़िलाफ़त) के दूसरों से ज़्यादा हक़दार हैं, तो आप क्यों नहीं लड़ाई करते हैं?

उन्होंने फ़रमाया, मैं सिर्फ़ एक शक्ल में लड़ाई लड़ सकता हूं जबकि लोग मुझे ऐसी तलवार लाकर दें, जिसकी दो आंखें, एक ज़ुबान और दो होंठ हों और वह तलवार मोमिन और काफ़िर को पहचानती हो (और काफ़िर को तो मारती हो लेकिन मोमिन पर असर न करती हो) मैंने ख़ूब जिहाद किया (जबकि काफ़िरों के ख़िलाफ़ था और बिल्कुल सही तरीक़े पर था, आज तो मुसलमानों से लड़ा जा रहा है और वह भी दुनिया हासिल करने के लिए) और मैं ख़ूब अच्छी तरह जिहाद को जानता हूं।[2]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने, जिनका पेट बढ़ गया था, फ़रमाया, मैं उस आदमी से कभी लड़ाई नहीं लडूंगा जो 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहता हो। हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं भी अल्लाह की क़सम! उस आदमी से कभी नहीं लडूंगा जो ला इला-ह इल्लल्लाहु कहता हो। لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ

इस पर एक आदमी ने कहा, क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया—

وَقَاتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَّيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلّٰهِ -

(سورت انفال آیت ۳۹)

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 283,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 299, हुलीया, भाग १, पृ० ९४, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 101

'और तुम अरब के उन (कुफ़्फ़ार) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अक़ीदे का बिगाड़ (यानी शिर्क) न रहे और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो जाए।' (सूरः अंफ़ाल, आयत 39)

इन दोनों ने फ़रमाया, (हम इस आयत पर अमल कर चुके हैं) हमने लड़ाई लड़ी थी, यहां तक कि अक़ीदे का बिगाड़ और फ़ित्ना कुछ बाक़ी न रहा था और दीन (ख़ालिस) अल्लाह ही का हो गया था। (झूठे मज़हब सारे ख़त्म हो गए थे। आज की लड़ाई फ़ित्ना ख़त्म करने और अल्लाह के दीन के लिए नहीं है।)[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के घेराव के ज़माने में दो आदमियों ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में आकर कहा, लोग बर्बाद हो रहे हैं और आप हज़रत उमर रज़ि० के बेटे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं, आप यहां बैठे हुए हैं, आपको बाहर निकलकर इस लड़ाई में शरीक होने में क्या चीज़ रुकावट बन रही है?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह बात रुकावट है कि अल्लाह ने मेरे मुसलमान भाई का ख़ून हराम क़रार दिया है। इन दोनों आदमियों ने कहा, क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया—

وَقَاتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ

(तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हमने लड़ाई की थी, यहां तक कि फ़ित्ना वग़ैरह कुछ बाक़ी नहीं रहा था और दीन सिर्फ़ अल्लाह ही का हो गया था और तुम लोग इसलिए लड़ना चाहते हो, ताकि फ़ित्ना बरपा हो और अल्लाह के अलावा दूसरों का दीन चल पड़े।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ अबू

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 48, तफ़्सीर, इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 309
2. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 48,

अब्दुर्रहमान ! क्या बात है? आप एक साल हज करते हैं और एक साल उमरा। आपने अल्लाह के रास्ते का जिहाद छोड़ दिया है, हालांकि आप जानते हैं कि अल्लाह ने जिहाद पर कितना उभारा है?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है। अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना, पांच नमाज़ें पढ़ना, रमज़ान के रोज़े रखना, ज़कात अदा करना और अल्लाह के घर का हज करना। (और मैं ये सारे काम कर रहा हूं। मेरा दीन इस्लाम पूरा क़ायम है।)

उस आदमी ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! क्या आपने अल्लाह का यह इर्शाद नहीं सुना जो क़ुरआन में है? وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا - إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ (سورت الحجرات آيت ۹) وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ (سورت انفال آيت ۳۹)

'और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें, तो उनके बीच सुलह करा दो। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है, यहां तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रुजू हो जाए।' (सूरः हुजुरात, आयत 9)

और दूसरी आयत का तर्जुमा यह है कि—

'तुम अरब के उन (कुफ़्फ़ार) से इस हद तक लड़ो कि उनमें अक़ीदे का बिगाड़ (यानी शिर्क) न रहे।'

आपने फ़रमाया, हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में इस आयत पर अमल किया था। इस्लाम वाले थोड़े थे और हर मुसलमान को दीन की वजह से बहुत ज़्यादा मुसीबतें उठानी पड़ती थीं। काफ़िर या उसे क़त्ल कर देते या उसे तरह-तरह का अज़ाब देते। हम लोग लड़ाई वाले ज़्यादा हो गए और फ़ित्ना व फ़साद यानी शिर्क व कुफ़्र बिल्कुल ख़त्म हो गया।

इस आदमी ने कहा, आप हज़रत उस्मान, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में क्या फ़रमाते हैं? (देखने में यह आदमी ख़ारिजी था)

उन्होंने फ़रमाया, हज़रत उस्मान रज़ि० (से उहुद की लड़ाई के दिन

दूसरे सहाबा के साथ कुछ ख़ता हुई थी, लेकिन उन) को माफ़ फ़रमा दिया, जैसे कि अल्लाह का फ़रमान है कि—

وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ (سورت آل عمران آیت ۱۵۲)

'और अल्लाह ने उनको जो माफ़ फ़रमाया है, तुम उसे बुरा समझते हो।' (सूरः आले इम्रान, आयत 152)

हज़रत अली रज़ि० तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचेरे भाई और उनके दामाद हैं और फिर हाथ से इशारा करके फ़रमाया और वह देखो हुज़ूर सल्ल० के घरों के बीच में हज़रत अली रज़ि० का घर है (यानी हज़रत अली रिश्ते में भी हुज़ूर सल्ल० से क़रीब थे और उनका घर भी हुज़ूर सल्ल० के घर से क़रीब था।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि, एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अल्लाह ने क़ुरआन में जो फ़रमाया है, वह आपने नहीं सुना—

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا

तो जैसे अल्लाह फ़रमा रहे हैं, आप लड़ाई क्यों नहीं करते हैं?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! मैं (मुसलमानों से) लड़ाई न करूं और यह पिछली आयत सुनाकर मुझे क़ुरआन पर अमल न करने की ग़ैरत दिलाई जाए, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्दीदा है कि मैं मुसलमानों से लड़ाई करके उन्हें क़त्ल करूं और मुझे दूसरी आयत पर अमल न करने की ग़ैरत दिलाई जाए और वह दूसरी आयत यह है—

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا (سورت نساء آیت ۹۳)

'और जो आदमी किसी मुसलमान को जान-बूझ कर क़त्ल कर डाले तो उसकी सज़ा जहन्नम है कि हमेशा-हमेशा को उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह ग़ज़बनाक होगा और उसको अपनी रहमत से दूर करेंगे और उसके लिए बड़ी सज़ा का सामान करेंगे।' (सूरः निसा, आयत 93)

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 192, हुलीया, भाग 1, पृ० 292,

उस आदमी ने कहा, अल्लाह फ़रमाते हैं—

"وَقَاتِلُوهُمْ حَتّٰى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ"

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हम इस आयत पर अमल कर चुके हैं, फिर आगे पिछली हदीस जैसी हदीस ज़िक्र की।[1]

हज़रत सईद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, फिर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि फ़ित्ना किसे कहते हैं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुश्रिकों से लड़ाई करते थे और इन मुश्रिकों से लड़ने जाना बड़ी सख़्त आज़माइश की चीज़ है और वह लड़ाई तुम्हारी इस लड़ाई की तरह मुल्क हासिल करने के लिए नहीं थी।[2]

हज़रत अबुल आलिया बरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हुम एक दिन हतीम में बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हुए इन दोनों के पास से गुज़रे। इन दोनों में से एक ने दूसरे से कहा, आपका क्या ख़्याल है, क्या धरती पर इनसे ज़्यादा बेहतर आदमी बाक़ी रह गया है?

फिर उन्होंने एक आदमी से कहा, जब ये अपना तवाफ़ ख़त्म कर लें, तो उन्हें हमारे पास बुला लाओ। जब उनका तवाफ़ पूरा हो गया और उन्होंने (तवाफ़ के) दो रक्अत नफ़्ल पढ़ लिए, तो इन लोगों के क़ासिद ने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सफ़वान रज़ि० आपको बुला रहे हैं। वह इन दोनों के पास आए, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन सफ़वान रज़ि० ने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! अमीरुल मोमिनीन हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से बैअत होने से आपको कौन-सी चीज़ रोक रही है? क्योंकि मक्का, मदीना, यमन और इराक़ वाले सब और अक्सर शाम वाले उनसे बैअत हो चुके हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जब तक

1. बुख़ारी,
2. तफ़्सीर, इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 308,

तुम लोगों ने तलवारें अपने कंधों से रखी हुई हैं और तुम्हारे हाथ मुसलमानों के ख़ून से रंगे हुए हैं, उस वक़्त तक मैं तुमसे बैअत नहीं हो सकता।[1]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब लोग फ़ित्ने में परेशान हो गए तो उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, आप लोगों के सरदार हैं और सरदार के बेटे हैं और तमाम लोग आप पर राज़ी हैं। आप बाहर तशरीफ़ लाएं हम आपसे बैअत होना चाहते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हरगिज़ नहीं। अल्लाह की क़सम! जब तक मेरी जान में जान है, उस वक़्त तक मैं अपनी जगह से एक सिंगी भर ख़ून भी नहीं बहने दूंगा। फिर कुछ लोगों ने आकर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को डराया और यों कहा, या तो आप बाहर तशरीफ़ ले चलें, वरना उसी बिस्तर पर आपको क़त्ल कर दिया जाएगा, तो उन्होंने उसका कुछ असर न लिया और वही पहला जवाब दिया और बाहर आने से इंकार कर दिया।

हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं, अल्लाह की क़सम! लोग उनकी वफ़ात तक उन्हें बैअत करने पर बिल्कुल तैयार न कर सके।[2]

हज़रत ख़ालिद बिन सुमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, लोगों ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, क्या ही अच्छा हो, अगर आप लोगों के ख़िलाफ़त के मामले को संभाल लें, क्योंकि तमाम लोग आप (के ख़लीफ़ा बनने) पर राज़ी हैं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा यह बताएं कि पूरब में किसी एक आदमी ने मेरे ख़लीफ़ा बनने की मुख़ालफ़त की तो? उन्होंने कहा, अगर एक आदमी ने मुख़ालफ़त की, तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा और उम्मत के मामले को सुधारने के लिए एक आदमी को क़त्ल करना पड़े तो यह कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है।

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 195,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 293, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 111,

उन्होंने फ़रमाया, मैं तो यह भी पसन्द नहीं करता कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत नेज़े का दस्ता पकड़े और मैं उस नेज़े का भाला पकडूं और फिर एक मुसलमान को क़त्ल किया जाए और उसके बदले में मुझे दुनिया और उसमें पाई जाने वाली चीज़ें मिल जाएं।[1]

हज़रत क़तन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए आपसे ज़्यादा कोई बुरा नहीं है।

उन्होंने फ़रमाया, क्यों? अल्लाह की क़सम! मैंने न तो उनका ख़ून बहाया है और उन उनमें फूट डाली है और न उनकी जमाअत से अलग हुआ हूं।

उस आदमी ने कहा, अगर आप (ख़लीफ़ा बनना) चाहें तो आपके बारे में दो आदमी भी इख़्तिलाफ़ न करेंगे।

उन्होंने फ़रमाया, मुझे तो यह भी पसन्द नहीं है कि मुझे ख़िलाफ़त अपने आप मिले और एक आदमी कहे नहीं और दूसरा कहे हां। (यानी अगर एक आदमी भी इख़्तिलाफ़ करे तो मुझे मंज़ूर नहीं है।)[2]

हज़रत क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, लोगों ने पहले फ़ित्ना (जो कि हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दर्मियान वाक़े हुआ था) के ज़माने में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, क्या आप बाहर आकर लड़ाई में हिस्सा नहीं ले सकते?

फ़रमाया, मैंने उस वक़्त लड़ाई लड़ी थी जबकि बुत हजरे अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दर्मियान रखे हुए थे, यहां तक कि अल्लाह ने बुतों को अरब की धरती से निकाल दिया। अब मैं इस बात को बहुत बुरा समझता हूं कि मैं—

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 111,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 111

'ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने वाले से लड़ाई लडूं।

उन लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम! आपके दिल में यह राय नहीं है। (सिर्फ़ कहने को है) बल्कि आप यह चाहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा एक दूसरे को ख़त्म कर दें। फिर आपके अलावा जब कोई बचेगा नहीं, तो लोग ख़ुद ही कहने लगेंगे, अमीरुल मोमिनीन बनाने के लिए अब्दुल्लाह बिन उमर से बैअत हो जाओ।

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! यह बात बिल्कुल मेरे दिल में नहीं है, बल्कि मेरे दिल में यह है कि जब तुम लोग कहोगे, आओ नमाज़ की तरफ़, तो मैं तुम्हारी बात मानूंगा, और जब तुम कहोगे, आओ कामियाबी की तरफ़, तो मैं तुम्हारी मानूंगा और जब तुम अलग-अलग हो जाओगे तो मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूंगा और जब तुम इकट्ठे हो जाओगे तो मैं तुमसे अलग नहीं हूंगा।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जिन दिनों इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से ख़िलाफ़त के लिए कोशिश चल रही थी और ख़वारिज और (शीओं के) फ़िरक़ा ख़शबीया का ज़ोर था, उन दिनों किसी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, आप उनके साथ भी नमाज़ पढ़ लेते हैं और इनके साथ भी, हालांकि ये तो एक दूसरे को क़त्ल कर रहे हैं, इसकी क्या वजह है?

उन्होंने फ़रमाया, जो कहेगा आओ नमाज़ की तरफ़, मैं उसकी बात मान लूंगा और जो कहेगा, आओ कामियाबी की तरफ़, मैं उसकी बात मान लूंगा और जो कहेगा आओ अपने मुसलमान भाई को क़त्ल करके उसका माल लेने की तरफ़, मैं कह दूंगा, मैं नहीं आता।[2]

हज़रत अबुल ग़रीफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की आगे की फ़ौज में बारह हज़ार

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 294,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 125,

आदमी थे। शाम वालों से लड़ाई लड़ने का इतना ज़्यादा जज़्बा था कि लगता था कि हमारी तलवारों से ख़ून टपकने लग जाएगा (या ग़ुस्से की वजह से हमारी तलवारें गिर जाएंगी)।

हमारी फ़ौज के अमीर अबुल उमर ताहा थे। जब हमें ख़बर मिली कि हज़रत हसन और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा में सुलह हो गई तो ग़ुस्से के मारे हमारी कमर टूट गई। जब हज़रत हसन बिन अली रज़ि० कूफ़ा आए तो अबू आमिर सुफ़ियान बिन लैल नामी आदमी ने खड़े होकर उनसे कहा, अस्सलामु अलैक ! ऐ मुसलमानों को ज़लील करने वाले !

हज़रत हसन रज़ि० ने कहा, ऐ अबू आमिर ! यह न कहो कि मैंने मुसलमानों को ज़लील किया, बल्कि मैं मुल्क तलब करने की वजह से मुसलमानों को क़त्ल करना पसन्द नहीं करता।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत हसन बिन अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुम में सुलह हो गई तो हज़रत मुआविया रज़ि० ने हज़रत हसन रज़ि० से कहा, आप खड़े होकर लोगों में बयान करें और अपना ख़्याल उन्हें बताएं। चुनांचे हज़रत हसन रज़ि० ने खड़े होकर बयान फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया—

'तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमारे (बड़ों के) ज़रिए से तुम्हारे पहले लोगों को हिदायत नसीब फ़रमाई और हमारे ज़रिए से तुम्हारे बाद वालों के ख़ून की हिफ़ाज़त फ़रमाई। ग़ौर से सुनो, सबसे ज़्यादा अक़्लमंद वह है जो तक़्वा अपनाए और सबसे ज़्यादा आजिज़ वह है जो फ़िस्क़ व फ़ुजूर में पड़ा रहे। ख़िलाफ़त के मामले में मेरा और हज़रत मुआविया रज़ि० का इख़्तिलाफ़ हुआ था। अब या तो हज़रत मुआविया रज़ि० ख़िलाफ़त के मुझसे ज़्यादा हक़दार थे या वाक़ई मेरा हक़ बनता था, बहरहाल जो भी शक्ल थी, हमने अपना हक़ अल्लाह के लिए छोड़ दिया है, ताकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत का काम ठीक रहे और उनके ख़ून महफ़ूज़ रहें।'

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 175, इस्तीआब, भाग 1, पृ० 372, बिदाया, भाग 8, पृ० 19

फिर हज़रत हसन रज़ि० ने हज़रत मुआविया रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया और—

وَإِنْ أَدْرِي لَعَلَّهُ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ (سورت انبیاء آیت ۱۱۱)

क़ुरआन की यह आयत तिलावत फ़रमाई—

'और मैं (यक़ीनी तौर पर) नहीं जानता (कि क्या मस्लहत है?) शायद यह (अज़ाब में देर) तुम्हारे लिए (शक्ल के एतबार से) इम्तिहान हो और एक वक़्त (यानी मौत) तक (ज़िंदगी से) फ़ायदा पहुंचाना हो।'

(सूरः अंबिया, आयत 111)

फिर आप नीचे उतर आए तो हज़रत अम्र रज़ि० ने हज़रत मुआविया रज़ि० से कहा, तुम यही चाहते थे (कि हज़रत हसन दस्त बरदारी का एलान कर दें और वह उन्होंने कर दिया।)[1]

हज़रत ज़ुबैर बिन नुफ़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, लोग यह कहते हैं कि आप ख़लीफ़ा बनना चाहते हैं, क्या यह सही है?

हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया, अरब के बड़े सरदार मेरे हाथ में थे जिससे मैं लड़ता था, वे उससे लड़ते थे और मैं जिससे सुलह करता था, वे उससे सुलह करते थे, लेकिन मैंने ख़िलाफ़त को छोड़ दिया ताकि अल्लाह ख़ुश हो जाएं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के ख़ून की हिफ़ाज़त हो जाए, तो क्या मैं हिजाज़ वालों के मेंढों यानी कमज़ोर लोगों के ज़रिए ख़िलाफ़त के ज़बरदस्ती छीनने का अब इरादा कर सकता हूं? (जब मेरे साथ बड़े और ताक़तवर लोग थे उस वक़्त तो मैं ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो गया, अब तो मेरे साथ कमज़ोर लोग हैं, अब ख़िलाफ़त लेने का इरादा कैसे कर सकता हूं।)[2]

हज़रत आमिर शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब मरवान की ज़ह्हाक बिन क़ैस से लड़ाई हुई तो मरवान ने हज़रत ऐमन बिन ख़ुरैम

1. इस्तीआब, भाग 1, पृ० 374, हाकिम, भाग 3, पृ० 175, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 173
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 170

असदी रज़ियल्लाहु अन्हुमा को आदमी भेजकर बुलाया और कहा कि हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ मिलकर लड़ें।

हज़रत ऐमन ने फ़रमाया, मेरे वालिद (बाप) और मेरे चचा बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे, दोनों ने मुझसे यह अह्द लिया था कि जो आदमी ला इला-ह इल्लल्लाहु की गवाही दे, मैं उससे न लडूं। अगर तुम (लड़ाई लड़ने पर) आग से छुटकारे का परवाना ला दो, तो मैं तुम्हारे साथ मिलकर लड़ाई कर सकता हूं।

मरवान ने कहा, आप दूर हो जाओ और उन्हें बुरा-भला भी कहा। इस पर हज़रत ऐमन ने ये शेर पढ़े—

وَلَسْتُ مُقَاتِلاً رَجُلاً يُصَلِّي عَلَى سُلْطَانِ آخَرَ مِنْ قُرَيْشٍ

'किसी दूसरे क़ुरैशी के हुकूमत हासिल करने के लिए मैं उस आदमी से नहीं लड़ सकता जो नमाज़ पढ़ता हो।'

أَأَقْتُلُ مُسْلِمًا فِي غَيْرِ شَيْءٍ فَلَيْسَ بِنَافِعِي مَا عِشْتُ عَيْشِي

'मैं बग़ैर किसी बात के मुसलमान से लडूं, इससे मुझे ज़िंदगी भर कुछ फ़ायदा नहीं होगा।'

لَهُ سُلْطَانُهُ وَعَلَيَّ إِثْمِي مَعَاذَ اللهِ مِنْ جَهْلٍ وَطَيْشٍ

'मेरी लड़ाई से उस बादशाह का राज्य मज़बूत हो और मुझे गुनाह हो, ऐसी जिहालत और ग़ुस्से से अल्लाह की पनाह।'[1]

हज़रत इब्ने हकम बिन अम्र ग़िफ़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरे दादा ने मुझसे बयान किया कि मैं हज़रत हकम बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में उनके पास हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ासिद आया और उसने कहा, ख़िलाफ़त के इस मामले में आप हमारी मदद करने के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं।

हज़रत हकम रज़ि० ने कहा, मैंने अपने ख़ास दोस्त, आपके चचेरे भाई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जब हालात

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 296, बैहक़ी, भाग 8, पृ० 193

ऐसे हो जाएं (यानी खिलाफ़त पर मुसलमान आपस में लड़ पड़ें) तो उस वक़्त लकड़ी की तलवार बना लेना (यानी लड़ाई में हिस्सा न लेना) चुनांचे मैंने लकड़ी की तलवार बना ली है।[1]

हज़रत अबुल अशअस सनआनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे यज़ीद बिन मुआविया ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेजा। उनके पास हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुत-से सहाबा रज़ि० बैठे हुए थे। मैंने कहा, आप लोग इस वक़्त लोगों को क्या करने का हुक्म देते हैं?

हज़रत इब्ने अबी औफ़ा ने फ़रमाया, हज़रत अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यह वसीयत फ़रमाई थी कि अगर मैं (मुसलमानों में आपस में लड़ने के लिए) ऐसे हालात कुछ भी पाऊं, तो मैं उहुद पहाड़ पर जाकर अपनी तलवार तोड़ दूं और अपने घर बैठ जाऊं।

मैंने अर्ज़ किया, अगर कोई मेरे घर में घुस आए (तो कहां जाऊं?)

आपने फ़रमाया, अन्दर वाली कोठरी में बैठ जाना। अगर वहां भी (तुम्हें क़त्ल करने) कोई तुम्हारे पास आ जाए तो फिर अपने घुटनों के बल बैठ जाना, (क़त्ल होने के लिए तैयार हो जाना) और उसे कहना (मुझे क़त्ल करके) अपना गुनाह और मेरा गुनाह अपने सर ले ले और दोज़ख़ियों में शामिल हो जा और ज़ालिमों की यह सज़ा है, इसलिए कि मैं अपनी तलवार तोड़ चुका हूं (और बैठ चुका हूं।) जब कोई मेरे घर में घुस आएगा, तो मैं अपने अन्दर वाली कोठरी में चला जाऊंगा और जब वहां भी कोई आ जाएगा, तो मैं घुटनों के बल बैठकर वही कह दूंगा, जो हुज़ूर सल्ल० ने बताया था।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुम देखो कि लोग दुनिया पर लड़ रहे हैं, तो तुम अपनी तलवार लेकर पथरीले मैदान में चले जाना और वहां सबसे बड़ी चट्टान पर अपनी तलवार मार-मारकर

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 301
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 300

तोड़ देना, फिर अपने घर आकर बैठ जाना, यहां तक कि या तो (नाहक़ क़त्ल करने वाला) ख़ताकार हाथ तुम्हें क़त्ल कर दे या फ़ितरी मौत तुम्हारा फ़ैसला कर दे। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे जिस बात का हुक्म दिया, मैं वह कर चुका हूं।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे एक तलवार दी और फ़रमाया, ऐ मुहम्मद बिन मस्लमा! इस तलवार को लेकर अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहो और जब तुम देखो कि मुसलमानों की दो जमाअतें आपस में लड़ने लगी हैं, तो यह तलवार पत्थर पर मारकर तोड़ देना और फिर अपनी ज़ुबान और हाथ को रोके रखना, यहां तक कि मौत आकर फ़ैसला कर दे या ख़ताकार हाथ तुम्हें क़त्ल कर दे।

चुनांचे जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद कर दिए गए और लोगों में आपस में लड़ाई शुरू हो गई, तो हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा अपने घर के सेहन में रखी हुई चट्टान के पास गए और उस पर मारकर वह तलवार तोड़ दी।[2]

हज़रत रिबई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के जनाज़े में एक आदमी को यह कहते हुए सुना कि मैंने इस चारपाई वाले (यानी हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से) सुना है कि फ़रमा रहे थे कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह हदीस सुनी है और इस सुनने में मुझे कोई शक या तरद्दुद नहीं है और अगर तुम आपस में लड़ोगे तो मैं अपने घर के अन्दर चला जाऊंगा। फिर अगर मेरे घर के अन्दर कोई मेरे पास आ गया, तो मैं उससे कहूंगा, ले (मुझे क़त्ल कर ले और) मेरा और अपना गुनाह अपने सर पर रख ले।[3]

हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना हिजरत फ़रमाने की ख़बर

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 301,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 20,.
3. हैसमी, भाग 7, पृ० 301

पहुंची, तो मैं अपनी क़ौम का नुमाइन्दा बनकर चला, यहां तक कि मदीना चला गया और हुज़ूर सल्ल० की मुलाक़ात से पहले आपके सहाबा रज़ि० से मेरी मुलाक़ात हुई और उन्होंने मुझे बताया कि तुम्हारे आने से तीन दिन पहले हुज़ूर सल्ल० ने हमें तुम्हारी ख़ुशख़बरी दी थी और फ़रमाया था कि तुम्हारे पास वाइल बिन हुज्र आ रहे हैं।

फिर आपसे मुलाक़ात हुई तो आपने मेरा स्वागत किया और मुझे अपने क़रीब जगह दी और अपनी चादर बिछा कर मुझे उस पर बिठाया, फिर लोगों को बुलाया। चुनांचे सब लोग जमा हो गए। फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर तशरीफ़ लाए और मुझे अपने साथ मिंबर पर ले गए। मैं मिंबर पर आपसे नीचे था, फिर आपने हम्द व सना बयान फ़रमाई और फ़रमाया—

'ऐ लोगो! यह वाइल बिन हुज्र हैं और बहुत दूर के इलाक़े हज़र मौत से तुम्हारे पास आए हैं, अपनी ख़ुशी से आए हैं, किसी ने इन्हें मजबूर नहीं किया है और वहां शहज़ादों में से यही बाक़ी रह गए हैं। ऐ वाइल बिन हुज्र! अल्लाह तुममें और तुम्हारी औलाद में बरकत नसीब फ़रमाए।'

फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर से नीचे तशरीफ़ लाए और मदीना से दूर मुझे एक जगह ठहराया और हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से फ़रमाया कि वह मुझे साथ ले जाकर उस जगह ठहरा दें। चुनांचे मैं (मस्जिद से) चला और हज़रत मुआविया रज़ि० भी मेरे साथ चले।

रास्ते में हज़रत मुआविया ने कहा, ऐ वाइल! इस गर्म ज़मीन ने मेरे पांवों के तलवे जला दिए, मुझे अपने पीछे बिठा लो।

मैंने कहा, मैं तुम्हें इस ऊंटनी पर बिठाने में बुख़्ल न करता, लेकिन तुम शहज़ादे नहीं हो, इसलिए तुम्हें साथ बिठाने पर लोग मुझे ताना देंगे (कि क्या मामूली आदमी को साथ बिठा रखा है) और यह मुझे पसन्द नहीं है।

फिर हज़रत मुआविया ने कहा, अच्छा अपनी जूती उतार कर मुझे दे

दो। उसे पहन कर ही मैं सूरज की गर्मी से ख़ुद को बचा लूं।

मैंने कहा, ये दो चमड़े तुम्हें देने में बुख़्ल न करता, लेकिन तुम उन लोगों में से नहीं हो, जो बादशाहों का लिबास पहनते हों, इसलिए जूती देने पर लोग मुझे ताना देंगे और यह मुझे पसन्द नहीं है। आगे और हदीस ज़िक्र की है। इसके बाद यह है कि जब हज़रत मुआविया रज़ि० बादशाह बन गए, तो उन्होंने कुरैश के हज़रत बुस्र बिन अरतात रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा और उनसे कहा, मैंने इन कूफ़े वालों को तो अपने साथ इकट्ठा कर लिया है। (ये सब तो मुझसे बैअत हो गए हैं) तुम अपनी फ़ौज लेकर चलो। जब तुम शाम की हदों से आगे चले जाओ तो अपनी तलवार सूँत लेना और जो मेरी बैअत से इंकार करे उसे क़त्ल कर देना और अगर तुम्हें हज़रत वाइल बिन हुज्र ज़िंदा मिलें तो उन्हें मेरे पास ले आना।

चुनांचे हज़रत बुस्र ने ऐसे ही किया और वह जब मुझ तक पहुंच गए तो मुझे हज़रत मुआविया रज़ि० के पास ले गए। हज़रत मुआविया रज़ि० ने मेरी शान के मुताबिक़ स्वागत का हुक्म दिया और मुझे अपने दरबार में आने की इजाज़त दी और मुझे अपने साथ अपने तख़्त पर बिठाया और मुझसे कहा, क्या यह मेरा तख़्त बेहतर है या ऊंटनी की पीठ?

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं कुफ़्र व जाहिलियत छोड़कर नया-नया इस्लाम में दाख़िल हुआ था और जाहिलियत वाले तौर-तरीक़े अभी ख़त्म नहीं हुए थे और मैंने सवारी पर बिठाने से और जूती देने से जो इंकार किया, यह सब जाहिलियत का असर था। अल्लाह हमारे पास पूरा इस्लाम ले आए हैं। उस इस्लाम ने उन तमाम कामों पर परदा डाल दिया है जो मैंने किए हैं।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, हमारी मदद करने से आपको कौन-सी चीज़ रोकती है? हालांकि हज़रत उस्मान रज़ि० ने आप पर बहुत भरोसा किया था और आपको अपना दामाद बनाया था।

मैंने कहा, (मैं इस वजह से आपकी मदद नहीं कर रहा हूं) क्योंकि आपने उस शख़्सियत से लड़ाई लड़ी है जो आपसे ज़्यादा हज़रत उस्मान

रज़ि० के हक़दार हैं।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, मैं नसब में हज़रत उस्मान रज़ि० के ज़्यादा क़रीब हूं तो वह हज़रत उस्मान रज़ि० के मुझसे ज़्यादा हक़दार कैसे हो सकते हैं?

मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० के दर्मियान भाईचारा कराया था (और आप उनके चचेरे भाई हैं) और भाई चचेरे भाई से ज़्यादा हक़दार हुआ करता है और दूसरी बात यह भी है कि मैं मुहाजिरीन से लड़ना नहीं चाहता।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, क्या हम मुहाजिरीन नहीं हैं?

मैंने कहा, ज़रूर हैं, लेकिन क्या हम दोनों जमाअतों से अलग नहीं हैं? और एक और दलील यह है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मैं हाज़िर था और बहुत से लोग भी वहां थे और हुज़ूर सल्ल० ने पूरब की ओर सर उठा रखा था (और निगाह भी पूरब की ओर थी। हुज़ूर सल्ल० ने हमें देखा) फिर अपनी निगाह पूरब की ओर ले गए और आपने फ़रमाया, अंधेरी काली रात के टुकड़ों जैसे फ़िल्ने तुम्हारे ऊपर आएंगे। फिर आपने बताया कि वे फ़िल्ने बहुत सख़्त होंगे और वे जल्दी आने वाले हैं और वे बहुत बुरे होंगे।

उन लोगों में से मैंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे फ़िल्ने क्या हैं?

आपने फ़रमाया, ऐ वाइल ! जब मुसलमानों में दो तलवारें टकराने लगें (मुसलमानों की दो जमाअतें आपस में लड़ पड़ें) तो तुम इन दोनों से अलग रहना।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, क्या आप शीआ हो गए हो? (यानी हज़रत अली रज़ि० के तरफ़दार और मददगार हो गए हो?

मैंने कहा, नहीं। मैं तो तमाम मुसलमानों का भला चाहता हूं।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, अगर मैंने आपकी ये बातें पहले सुनी होतीं और मुझे मालूम होतीं तो मैं आपको यहां न बुलवाता?

मैंने कहा, क्या आपको मालूम नहीं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु

अन्हु की शहादत पर हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा ने क्या किया था? उन्होंने चट्टान पर मार-मारकर अपनी तलवार तोड़ दी थी।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, ये अंसार ही तो हैं, ऐसे लोग कि उनकी ऐसी बातें सहन कर ली जाएंगी।

मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान का हम क्या करें कि जिसने अंसार से मुहब्बत की, उसने मेरी मुहब्बत की वजह से उनसे मुहब्बत की और जिसने अंसार से बुग़्ज़ रखा, उसने मेरे बुग़्ज़ की वजह से उनसे बुग़्ज़ रखा, फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, आप जो-सा शहर चाहो, अपने लिए पसन्द कर लो, क्योंकि अब आप हज़रमौत (एक जगह) वापस नहीं जा सकते हैं।

मैंने कहा, मेरा क़बीला शाम देश में है और मेरे घरवाले कूफ़ा में हैं।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, आपके घरवालों में से एक आदमी क़बीला के दस आदमियों से बेहतर होगा (इसलिए आप कूफ़ा चले जाएं)।

मैंने कहा, मैं हज़र मौत वापस गया था, लेकिन वहां वापस जाने से मुझे कोई ख़ुशी नहीं थी, क्योंकि इंसान जहां से हिजरत करके चला जाए, उसे वहां ज़बरदस्त मजबूरी के बग़ैर वापस नहीं जाना चाहिए।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, आपको क्या मजबूरी थी?

मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़ित्नों के बारे में जो फ़रमाया था, जिसका मैं अभी ज़िक्र कर चुका हूं उसकी वजह से हज़र मौत चला गया था, इसलिए जब आप लोगों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा तो हम आप लोगों से अलगाव अपना लेंगे और जब आप लोग इकट्ठे हो जाएंगे, तो हम आप लोगों के पास आ जाएंगे।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, मैंने आपको कूफ़ा का गवर्नर बना दिया, आप वहां चले जाएं।

मैंने कहा, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद किसी की तरफ़ से विलायत क़ुबूल नहीं कर सकता। आपने देखा नहीं कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझे गवर्नर बनाना चाहा था, लेकिन मैंने इंकार

कर दिया था, फिर हज़रत उमर रज़ि० ने बनाना चाहा था, लेकिन मैंने इंकार कर दिया था, फिर हज़रत उस्मान रज़ि० ने बनाना चाहा था, लेकिन मैंने इंकार कर दिया था और इन लोगों की बैअत भी मैंने नहीं छोड़ी थी।

जब हमारे इलाक़े में लोग मुर्तद हो गए थे तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० का मेरे पास ख़त आया था, जिसकी वजह से मैं मेहनत करने खड़ा हो गया था और सारे इलाक़े में ज़ोर लगाया और गवर्नरी के बग़ैर ही अल्लाह ने मेरे ज़रिए से तमाम इलाक़े वालों को इस्लाम में वापस फ़रमा दिया था, फिर हज़रत मुआविया रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उम्मे हकम रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाकर कहा, तुम कूफ़ा चले जाओ, मैंने तुमको वहां का गर्वनर बन दिया है और हज़रत वाइल को साथ ले जाओ, इनका इकराम करना और इनकी तमाम ज़रूरतों को पूरा करना।

इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, आपने मेरे साथ बदगुमानी से काम लिया। आप मुझे उस इंसान के इकराम का हुक्म दे रहे हैं, जिसका इकराम करते हुए मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि अलैहि व सल्लम, हज़रत अबूबक्र रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० और ख़ुद आपको देखा है, (इसलिए आप न भी ताकीद करें, तो भी मैं उनका इकराम करूंगा) उनकी इस बात से हज़रत मुआविया रज़ि० बहुत ख़ुश हुए। मैं उनके साथ कूफ़ा आया।

रिवायत करने वाले कहते हैं, कूफ़ा आने के थोड़े दिनों बाद ही हज़रत वाइल का इंतिक़ाल हो गया।[1]

हज़रत अबू मिनहाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब इब्ने ज़ियाद को (बसरा से) निकाल दिया गया, तो शाम में मरवान ख़िलाफ़त का दावा लेकर खड़ा हो गया और मक्का मुकर्रमा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने ख़िलाफ़त का दावा कर दिया और बसरा में इन (ख़ारिजी) लोगों ने ख़िलाफ़त का दावा कर दिया, जिनको क़ारी कहा जाता था। इससे मेरे वालिद साहब को बहुत ज़्यादा ग़म हुआ। उन्होंने मुझसे कहा, तेरा बाप न रहे। आओ हुज़ूर सल्ल० के सहाबी

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 376.

हज़रत अबू बरज़ा असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चलते हैं।

चुनांचे मैं वालिद साहब के साथ गया और हम लोग हज़रत अबू बरज़ा रज़ि० की ख़िदमत में उनके घर हाज़िर हुए। वह बांस के बने हुए बालाख़ाने के साए में बैठे हुए थे। उस दिन कड़ी गर्मी पड़ रही थी। हम उनके पास जाकर बैठ गए। मेरे वालिद उनसे इधर-उधर की बातें करने लगे, ताकि वह भी अपने दिल की बातें कहने लगें। चुनांचे मेरे वालिद अर्ज़ करते, ऐ अबू बरज़ा! क्या आप नहीं देख रहे हैं? (कि लोग यों कर रहे हैं) क्या आप नहीं देख रहे हैं (कि फ़्लां यह कर रहा है)?

हज़रत अबू बरज़ा ने सबसे पहले यह बात कही कि आज सुबह से मुझे क़ुरैश के ख़ानदानों पर गुस्सा आ रहा है और मुझे उम्मीद है, इस गुस्से पर मुझे अल्लाह सवाब अता फ़रमाएंगे। ऐ छोटे अरबों की जमाअत! तुम जानते हो कि जाहिलियत के ज़माने के अरब में तुम लोगों की क्या हालत थी? तायदाद थोड़ी थी, लोगों की निगाह में तुम्हारी कोई इज़्ज़त नहीं थी और तुम लोग गुमराह थे। फिर अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए दीने इस्लाम देकर तुम लोगों को बुलन्द किया और आज दुनिया में तुम्हारी बहुत इज़्ज़त है, जैसे तुम देख रहे हो।

लेकिन अब दुनिया ने तुम्हें बिगाड़ना शुरू कर दिया है और यह जो शाम देश में मरवान है, यह भी अल्लाह की क़सम! सिर्फ़ दुनिया के लिए लड़ रहा है और यह जो मक्का में है यानी हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० यह भी अल्लाह की क़सम! सिर्फ़ दुनिया के लिए लड़ रहे हैं और ये लोग जो तुम्हारे इर्द-गिर्द हैं, जिन्हें तुम क़ारी कहते हो, यह भी अल्लाह की क़सम! सिर्फ़ दुनिया के लिए लड़ रहे हैं।

जब उन्होंने किसी को न छोड़ा तो उनसे मेरे वालिद ने पूछा, फिर इन हालात में आप हमें क्या करने का हुक्म देते हैं?

उन्होंने कहा, मेरे ख़्याल में आज लोगों में सबसे बेहतरीन वह जमाअत है जिसने ख़ुद को ज़मीन से चिमटा रखा हो, (गुमनामी का कोना अख़्तियार कर लिया हो।) यह फ़रमाते हुए वह हाथ से ज़मीन की

तरफ़ इशारा कर रहे थे। उनके पेट लोगों के माल से बिल्कुल ख़ाली हों और किसी के ख़ून का उनकी कमर पर बोझ न हो।[1]

हज़रत शिम्र बिन अतीया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी से कहा, क्या तुम्हें इस बात से ख़ुशी होगी कि तुम सबसे बड़े बदकार आदमी को क़त्ल कर दो। उनसे कहा, हां, होगी।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने कहा, (इसे क़त्ल करके) तुम इससे ज़्यादा बड़े बदकार हो जाओगे।[2]

मुसलमान की जान ख़त्म करने से बचना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे पूछा, जब तुम किसी शहर का घेराव करते हो तो क्या करते हो?

मैंने कहा, हम शहर की तरफ़ खाल की मज़बूत ढाल देकर किसी आदमी को भेजते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ज़रा यह बताओ, अगर शहर वाले उसे पत्थर मारें तो उसका क्या बनेगा?

मैंने कहा, वह तो क़त्ल हो जाएगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसा न किया करो। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! मुझे इस बात से बिल्कुल ख़ुशी नहीं होगी कि तुम लोग एक मुसलमान की जान ख़त्म करके ऐसा शहर जीत लो जिसमें चार हज़ार योद्धा जवान हों।[3]

मुसलमान को काफ़िरों के हाथ से छुड़ाना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं एक मुसलमान को

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 193, फ़त्हुल बारी, भाग 13, पृ० 57,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 280,
3. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 42, कंज़, भाग 3, पृ० 165

काफ़िरों के हाथ से छुड़ा लूं यह मुझे सारे अरब प्रायद्वीप (के मिल जाने) से ज़्यादा महबूब है।[1]

मुसलमान को डराना, परेशान करना

हज़रत अबुल हसन रज़ियल्लाहु अन्हु अक़बा की बैअत में भी शरीक हुए थे और बद्र की लड़ाई में भी, वह फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। एक आदमी खड़ा होकर कहीं चला गया और अपनी जूतियां वहां ही भूल गया। एक आदमी ने वह जूतियां उठाकर अपने नीचे रख लीं। वह आदमी वापस आकर कहने लगा, मेरी जूतियां (कहां हैं?)

लोगों ने कहा, हमने तो नहीं देखीं। (थोड़ी देर तक वह परेशान होकर ढूंढता रहा) फिर उसके बाद जिस आदमी ने छिपाई थीं, उसने कहा, जूतियां ये हैं।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मोमिन को परेशान करने का क्या जवाब दोगे?

उस आदमी ने कहा, मैंने तो मज़ाक़ में छिपाई थीं। हुज़ूर सल्ल० ने दो या तीन बार यही फ़रमाया, मोमिन को परेशान करने का क्या जवाब दोगे?[2]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने दूसरे आदमी की जूती लेकर मज़ाक़ में ग़ायब कर दी। किसी ने इसका तज़्किरा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी मुसलमान को परेशान मत करो, क्योंकि मुसलमान को परेशान करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।[3]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र में चल रहे थे, एक

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 312,
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 263, हैसमी, भाग 6, पृ० 253, इसाबा, भाग 4, पृ० 43
3. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 263, हैसमी, भाग 6, पृ० 253,

आदमी को अपनी सवारी पर ऊंघ आ गई। दूसरे ने उसके तिरकश में से एक तीर निकाल लिया, जिससे वह आदमी चौंक गया और डर गया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी के लिए यह हलाल नहीं है कि वह किसी मुसलमान को डराए।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा रज़ि० ने यह क़िस्सा सुनाया कि एक बार सहाबा किराम रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के साथ चल रहे थे कि उनमें से एक आदमी को नींद आ गई। दूसरे आदमी ने जाकर उसकी रस्सी ले ली और उसे छिपा दिया।

जब उस सोने वाले की आंख खुली और उसे अपनी रस्सी नज़र न आई तो वह परेशान हो गया, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किसी मुसलमान के लिए यह हलाल नहीं है कि वह किसी मुसलमान को परेशान करे।[2]

हज़रत सुलैमान बिन सुरद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक देहाती ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी, उसके पास एक रस्सी भी थी, जो किसी ने ले ली। जब हुज़ूर सल्ल० ने सलाम फेरा, तो उस देहाती ने कहा, मेरी रस्सी पता नहीं कहां चली गई?

यह सुनकर कुछ लोग हंसने लगे, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो आदमी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि वह किसी मुसलमान को हरगिज़ परेशान न करे।[3]

मुसलमान को हल्का और हक़ीर समझना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ठोकर खाकर दरवाज़े की चौखट पर गिर गए, जिससे उनकी पेशानी पर चोट लग गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

---

1. तबरानी
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 262
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 254,

फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! इसका ख़ून साफ़ कर दो। मुझे इनसे ज़रा घिन आई।

इस पर हुज़ूर सल्ल० उनकी चोट से ख़ून चूस कर फेंकने लगे और फ़रमाने लगे, अगर उसामा रज़ि० लड़की होता तो मैं उसे ऐसे कपड़े पहनाता और ऐसे ज़ेवर पहनाता, फिर मैं उसकी शादी कर देता।[1]

हज़रत अता बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब शुरू में मदीना आए, तो उनको चेचक निकल आई और वह उस वक़्त इतने छोटे थे कि उनकी रेंट उनके मुंह पर बहती रहती थी। हज़रत आइशा रज़ि० को इनसे घिन आती थी।

एक दिन हुज़ूर सल्ल० घर तशरीफ़ लाए और हज़रत उसामा रज़ि० का मुंह धोने लगे और उन्हें चूमने लगे। इस पर हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! हुज़ूर सल्ल० के इस रवैए को देखने के बाद अब मैं कभी भी उनको अपने से दूर नहीं करूंगी।[2]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के इन्तिज़ार में अरफ़ात से (मुज़्दलफ़ा की) रवानगी को पीछे डाल दिया। जब हज़रत उसामा रज़ि० आए तो लोगों ने देखा कि नव-उम्र लड़के हैं, नाक बैठी हुई है और रंग काला है। इस पर यमन वालों ने कहा, इस (लड़के) की वजह से हमें इतनी देर रोका गया।

हज़रत उर्वः फ़रमाते हैं, इसी वजह से यमन वाले कुफ़्र में मुब्तला हुए।

हज़रत इब्ने साद रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने हज़रत यज़ीद बिन हारून से पूछा कि हज़रत उर्वः जो यह फ़रमा रहे हैं, इसी वजह से यमन वाले कुफ़्र में पड़े, इसका क्या मतलब है?

उन्होंने कहा, इसका मतलब यह है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में यमन वाले जो मुर्तद हुए, वे हुज़ूर सल्ल० के इस रवैए

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 43, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 135,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136,

को हलका समझने की सज़ा में हुए।

इब्ने असाकिर की रिवायत में यह है कि हज़रत उर्वः ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात के बाद यमन वाले हज़रत उसामा रज़ि० (को हल्का समझने) की वजह से ही कुफ़्र में पड़े थे।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास कुछ लोग आए। उनमें से जो अरब थे, उनको तो हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने दिया और जो अजमी गुलाम थे, उनको न दिया। हज़रत उमर रज़ि० (को इसका पता चला तो उन्हों) ने हज़रत अबू मूसा रज़ि० को यह लिखा, तुमने इन सबको बराबर क्यों न दिया? आदमी के बुरा होने के लिए यह काफ़ी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे।[2]

मुसलमान को ग़ुस्सा दिलाना

हज़रत आइज़ बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु (अभी काफ़िर थे, वह) हज़रत सलमान, हज़रत सुहैब और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुम के पास आए। ये लोग सहाबा की जमाअत में बैठे हुए थे, इन लोगों ने कहा, अल्लाह की तलवारों ने अल्लाह के दुश्मन की गरदन में अपनी जगह अभी तक नहीं बनाई (यानी अभी तक हज़रत अबू सुफ़ियान को क्यों नहीं क़त्ल किया गया?

इस पर हजरत अबूबक्र रज़ि० ने इन लोगों से कहा, तुम लोग यह बात क़ुरैश के बुज़ुर्ग और उनके सरदार के बारे में कर रहे हो? और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह बात बताई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र! ऐसा मालूम होता है कि शायद तुमने यह बात कहकर उनको ग़ुस्सा दिलाया है। अगर तुमने उनको ग़ुस्सा दिलाया है, तो फिर तुमने अपने रब को ग़ुस्सा दिलाया है।

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 44, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 135
2. कंज़, भाग 2, पृ० 172.

हज़रत अबूबक्र रज़ि०. इन लोगों के पास आए और इनसे पूछा, ऐ भाइयो ! क्या मैंने तुमको ग़ुस्सा दिलाया है?

इन लोगों ने फ़रमाया, नहीं। ऐ भाई ! अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए।[1]

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मस्जिद में बैठा हुआ था। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपना एक क़ैदी लेकर मेरे पास से गुज़रे। वह इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पनाह लेना चाहते थे। मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से पूछा, यह आपके साथ कौन है?

उन्होंने फ़रमाया, यह मेरा मुश्रिक क़ैदी है। मैं इसके लिए हुज़ूर सल्ल० से अमान लेना चाहता हूं।

मैंने कहा, इसकी गरदन में तो तलवार के लिए बहुत अच्छी जगह है। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखा, तो फ़रमाया क्या बात है? तुम बड़े ग़ुस्से में नज़र आ रहे हो?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं अपना यह क़ैदी लेकर हज़रत सुहैब के पास से गुज़रा, तो उन्होंने कहा, इसकी गरदन में तो तलवार के लिए बहुत अच्छी जगह है। (उनकी इस बात से मुझे ग़ुस्सा आया हुआ है।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, शायद तुमने उनको कोई तक्लीफ़ पहुंचाई है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, नहीं, अल्लाह की क़सम ! नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुमने उनको सताया है, तो फिर तुमने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को सताया है।[2]

मुसलमान पर लानत करना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी थे, जिनका नाम अब्दुल्लाह था और

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ०304, हुलीया, भाग 1, पृ०346, इस्तीआब, भाग 2, पृ०181,
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 49

उनका लक़ब हिमार था। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हंसाया करते थे। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें शराब पीने की वजह से कोड़े भी लगाए थे। चुनांचे उन्हें एक दिन लाया गया। (उन्होंने शराब पी रखी थी)

हुज़ूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि इन्हें कोड़े लगाए जाएं। चुनांचे उन्हें कोड़े लगाए गए। इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह! इस पर लानत भेज। इसे (शराब पीने के जुर्म में) कितना ज़्यादा लाया जाता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे लानत न करो। अल्लाह की क़सम! जहां तक मैं जानता हूं यह अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मुहब्बत करता है।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी का लक़ब हिमार था। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी की कुप्पी और शहद की कुप्पी हदिया में दिया करते थे। जब घी और शहद वाला उनसे क़ीमत लेने आता, तो उसे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले आते और अर्ज़ करते, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इसे इसके सामान की क़ीमत दे दें।

इस पर हुज़ूर सल्ल० सिर्फ़ मुस्कराते और कुछ न फ़रमाते और फिर आपके फ़रमाने पर क़ीमत उसको दे दी जाती। एक दिन उनको हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाया गया। उन्होंने शराब पी रखी थी। इस पर एक आदमी ने कहा, आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।[2]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इब्ने नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु को (शराब पीने की वजह से) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया। आपने उनको कोड़े लगाए और चार-पांच बार ऐसे ही हुआ। (इसी जुर्म में पकड़कर उन्हें लाया जाता, हुज़ूर सल्ल० उनको कोड़े लगाते) आख़िर एक आदमी ने कह दिया, ऐ अल्लाह! इस पर लानत भेज, यह कितनी शराब पीता है और इसे कितनी बार कोड़े लगाए जा चुके हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस पर लानत न भेजो, क्योंकि यह

1. बुख़ारी, इब्ने जरीर, बैहक़ी,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 107

अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी लाया गया, जिसने शराब पी रखी थी। हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर सहाबा रज़ि० ने उसे मारा। किसी ने उसे अपनी जूती से मारा, किसी ने हाथ से और किसी ने कपड़े (का कोड़ा बनाकर उस) से मारा। फिर आपने फ़रमाया, अब बस करो।

फिर हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर सहाबा रज़ि० ने उसे मलामत की और उससे कहा, तुम्हें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शर्म नहीं आती, तुम यह (बुरा) काम करते हो? फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसे छोड़ दिया। फिर वह पीठ फेरकर चला गया, लोग उसे बद-दुआ देने लगे और उसे बुरा-भला कहने लगे। किसी ने यहां तक कह दिया ऐ अल्लाह! इसे रुसवा फ़रमा! ऐ अल्लाह! इस पर लानत भेज।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसे न कहो और अपने भाई के ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बनो, बल्कि यह दुआ करो, ऐ अल्लाह! इसकी मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ अल्लाह! इसे हिदायत दे।

एक रिवायत में यह है कि तुम ऐसे न कहो, शैतान की मदद न करो, बल्कि यह कहो, अल्लाह तुम पर दया करे।[2]

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम देखते हैं कि कोई आदमी दूसरे को लानत कर रहा है, तो हम यही समझते हैं कि यह बड़े गुनाहों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुंच गया है, यानी उसने बड़ा गुनाह किया है।[3]

मुसलमान को गाली देना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक आदमी आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने बैठ गया, फिर उसने अर्ज़

1. कंज़, भाग 3, पृ० 108, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 56,
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 3, पृ० 105
3. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 251,

किया, मेरे कुछ ग़ुलाम हैं जो मुझसे झूठ बोलते हैं और मेरे साथ ख़ियानत करते हैं और मेरी नाफ़रमानी करते हैं, इस पर मैं उन्हें गाली देता हूं और उन्हे मारता हूं तो मेरा उनके साथ यह रवैया कैसा है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब क़ियामत का दिन होगा तो उन्होंने जो तुझसे ख़ियानत की और तेरी नाफ़रमानी की और तुझसे झूठ बोला, उसका हिसाब किया जाएगा और तुमने उसको जो सज़ा दी, उसका भी हिसाब किया जाएगा। अगर तुम्हारी सज़ा उनके जुर्म के बराबर होगी, तो मामला बराबर-सराबर हो जाएगा, न तुम्हें इनाम मिलेगा और न सज़ा और अगर तुम्हारी सज़ा उनके जुर्म से कम होगी, तो तुम्हें उन पर फ़ज़ीलत हो जाएगी और अगर तुम्हारी सज़ा उनके जुर्म से ज़्यादा होगी, तो उसकी ज़्यादा सज़ा का तुमसे बदला लिया जाएगा।

वह आदमी यह सुनकर एक ओर होकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गया। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह का यह इर्शाद नहीं पढ़ते—

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَىٰ بِنَا حَاسِبِينَ. (سورت انبیاء آیت ۴۷)

'और (वहां) क़ियामत के दिन हम अद्ल की मीज़ान क़ायम करेंगे (और सबके अमल का वज़न करेंगे), सो किसी पर असल में ज़ुल्म न होगा और अगर (किसी का) अमल राई के दाने के बराबर भी होगा, तो हम उसको (वहां) हाज़िर कर देंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।'

(सूरः अंबिया, आयत 47)

तो उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे अपने लिए और इन ग़ुलामों के लिए इससे बेहतर शक्ल नज़र नहीं आ रही है कि मैं इनसे अलग हो जाऊं। इसलिए मैं आपको गवाह बनाता हूं कि ये सब ग़ुलाम आज़ाद हैं।[1]

1. तर्ग़ीब, भाग 3, पृ० 499, भाग 5, पृ० 464,

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कह रहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी वहां तश्रीफ़ रखते थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ का जवाब न देना हुज़ूर सल्ल॰ को पसन्द आ रहा था और हुज़ूर सल्ल॰ मुस्करा रहे थे।

जब वह आदमी बहुत ज़्यादा बुरा-भला कहने लगा, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने भी उसकी किसी बात का जवाब दे दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल॰ नाराज़ होकर वहां से खड़े होकर चल दिए। हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ भी पीछे चल पड़े और जाकर हुज़ूर सल्ल॰ से कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ! वह मुझे बुरा-भला कह रहा था, आप बैठे रहे। जब मैंने उसकी किसी बात का जवाब न दिया तो आपको ग़ुस्सा आ गया और आप खड़े हो गए।

हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, पहले तुम्हारे साथ एक फ़रिश्ता था, जो तुम्हारी ओर से जवाब दे रहा था। जब तुमने उसकी किसी बात का जवाब दे दिया, तो शैतान बीच में आ कूदा (और फ़रिश्ता चला गया) और मैं शैतान के साथ नहीं बैठ सकता। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तीन बातें ऐसी हैं जो बिल्कुल हक़ हैं। जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म किया जाए और वह अल्लाह की रिज़ा की ख़ातिर इस ज़ुल्म (का बदला लेने) से आंखें चुरा जाए, तो अल्लाह उसकी ज़ोरदार मदद करेंगे और जो आदमी जोड़ पैदा करने के लिए हदिया देने का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह उसके माल को ख़ूब बढ़ाते हैं और जो माल बढ़ाने की नीयत से मांगने का दरवाज़ा खोलता है अल्लाह उसके माल को और कम कर देते हैं।[1]

हज़रत बही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मिक़दाद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कह दिया, तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, अगर मैं अब्दुल्लाह की ज़ुबान न काटूं, तो मेरे ऊपर नज़्र वाजिब है। लोगों ने हज़रत उमर रज़ि॰

1. हैसमी, भाग 8, पृ॰ 150

से इस बारे में बात की और उनसे माफ़ी की दरख़्वास्त की।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मुझे उसकी ज़ुबान काटने दो, ताकि आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी सहाबी को गाली न दे सके।[1]

हज़रत बही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हुम के बीच ज़रा बात बढ़ गई और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने हज़रत मिक़्दाद रज़ि० को गाली दे दी। हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह को उनके बाप हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत लगा दी, तो हज़रत उमर रज़ि० ने नज़्र मान ली कि वह हज़रत अब्दुल्लाह की ज़ुबान ज़रूर काटेंगे।

जब हज़रत अब्दुल्लाह को अपने वालिद से ख़तरा हुआ तो उन्होंने कुछ लोगों को अपने वालिद के पास सिफ़ारिश के लिए भेजा। (उनकी बात सुनकर) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे उसकी ज़ुबान काटने दो, ताकि यह मुस्तक़िल क़ानून बन जाए, जिस पर मेरे बाद भी अमल होता रहेगा कि जो आदमी भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी सहाबी को गाली देता हुआ पाया जाएगा, उसकी ज़ुबान ज़रूर काटी जाएगी।[2]

मुसलमान की बुराई बयान करना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी ने दूसरे आदमी की बुराई की। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, यहां से उठ जा, तेरे कलिमा-शहादत का एतबार नहीं। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आगे ऐसा नहीं करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम क़ुरआन का मज़ाक़ उड़ा रहे हो, जो क़ुरआन के हराम किए हुए कामों को हलाल समझे, वह क़ुरआन पर

1. अहमद, इब्ने असाकिर
2. मुंतख़ब कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 424

ईमान नहीं लाया। (क़ुरआन में मुसलमान की ग़ीबत को हराम क़रार दिया गया है और तुम ग़ीबत कर रहे हो)[1]

हज़रत तारिक़ शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत ख़ालिद और साद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बीच कुछ तेज बात हो गई। हज़रत साद रज़ि० के पास बैठकर एक आदमी हज़रत ख़ालिद रज़ि० की बुराइयां बयान करने लगा।

हज़रत साद रज़ि० ने कहा, चुप रहो। हमारे बीच जो बात हुई थी, वह (वहीं ख़त्म हो गई थी, वह आगे बढ़कर) हमारे दीन तक नहीं पहुंच सकती (कि इस झगड़े की वजह से हम एक दूसरे की बुराइयां बयान करके दीन का नुक़्सान कर लें।)[2]

मुसलमान की ग़ीबत करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत (माइज़ बिन मालिक) अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने चार बार अपने बारे में इस बात का इक़रार किया कि उन्होंने एक औरत से हरामकारी की है। हर बार हुज़ूर सल्ल० दूसरी ओर मुंह फेर लेते थे।

फिर आगे हदीस का मज़्मून और भी है, जिसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० के फ़रमान पर उनको रजम किया गया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपने दो सहाबा रज़ि० को सुना कि उनमें से एक दूसरे को कह रहा था, इस आदमी को देखो, अल्लाह ने तो इसके जुर्म पर परदा डाला था, लेकिन यह ख़ुद अपने पीछे पड़ गया, जिसकी वजह से इसे कुत्ते की तरह पत्थर मारे गए।

हुज़ूर सल्ल० यह सुनकर ख़ामोश हो गए, फिर थोड़ी देर चलने के बाद आपका गुज़र एक मुरदार गधे के पास से हुआ जिसका पांव फूलने की वजह से ऊपर उठा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फ़्लां और

1. कंज़, भाग 1, पृ० 231,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 94, हैसमी, भाग 7, पृ० 223,

फ़्लां दोनों कहां हैं?

उन दोनों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लह के रसूल सल्ल० ! हम दोनों यह हैं।

आपने फ़रमाया, तुम दोनों नीचे उतरो और इस मुरदार गधे का गोश्त खाओ।

उन दोनों ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! अल्लाह आपकी मग़िफ़रत फ़रमाए, इसको कौन खा सकता है?

आपने फ़रमाया, अभी तुम दोनों ने अपने भाई की (पीठ पीछे) बेइज़्ज़ती की है, वह मुरदार खाने से ज़्यादा सख़्त है। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, वह इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है।[1]

हज़रत इब्ने मुन्कदिर रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक औरत को रजम किया जिसके बारे में एक मुसलमान ने कहा, उस औरत के तमाम नेक अमल बर्बाद हो गए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि इस रजम ने तो इसके बुरे अमल को मिटा दिया और तुमने जो (उसकी ग़ीबत का बुरा) अमल किया है, उसका तुझसे हिसाब लिया जाएगा।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा, हज़रत सफ़िया रज़ि० की तरफ़ से आपके लिए इतनी बात काफ़ी है कि वह ऐसी है और ऐसी है यानी छोटे क़द वाली है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ऐसी बात कही है कि अगर उसे समुद्र के पानी में मिलाया जाए, तो यह बात उसके पानी का मज़ा खराब कर दे।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, मैंने एक बार हुज़ूर सल्ल० के

1. कंज़, भाग 3, पृ०93, तर्ग़ीब, भाग 4, पृ०288, अदबुल मुफ़रद, पृ० 108, फ़त्ह, भाग 10, पृ० 361,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 93,

सामने किसी आदमी की नक़ल उतार दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं है कि मुझे इतनां और इतना माल मिल जाए और तुम मेरे सामने किसी इंसान की नक़ल उतारो।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत सफ़िया बिन्त हुई रज़ियल्लाहु अन्हा का ऊंट बीमार हो गया। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के पास ज़्यादा ऊंट था। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ज़ैनब से कहा, तुम सफ़िया को एक ऊंट दे दो।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, मैं और इस यहूदिन औरत को ऊंट दूं?

हुज़ूर सल्ल० यह सुनकर नाराज़ हो गए और ज़ुलहिज्जा, मुहर्रम और सफ़र के कुछ दिनों तक हज़रत ज़ैनब रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने छोड़े रखा। (उनके यहां न जाते थे) यहां तक कि वह हुज़ूर सल्ल० से मायूस हो गई थीं।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैं एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल के पास बैठी हुई थी। मैंने एक औरत के बारे में कहा कि यह तो लम्बे दामन वाली हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, थूको-थूको, (जो कुछ मुंह में है, उसे बाहर थूक दो) चुनांचे मैंने थूका तो गोश्त का एक टुकड़ा निकला।[3]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मरज़ुल वफ़ात (वह मरज़ जिसमें मौत हुई) में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियां हुज़ूर सल्ल० के पास जमा हुईं। हज़रत सफ़िया बिन्त हुई रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, अल्लाह की क़सम, मेरी दिली तमन्ना है कि आपको जो बीमारी है, वह मुझे होती।

इस पर दूसरी पाक बीवियों ने (उनकी इस बात को सच्चा न समझा और इस वजह से उन्होंने) आंखों से इशारा किया जिसे हुज़ूर सल्ल० ने

1. अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, बैहक़ी
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 284, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 128
3. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 284,

देख लिया तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम सब कुल्ली करो।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! किस चीज़ से कुल्ली करें?

आपने फ़रमाया, तुमने अभी जो अपनी सौत (हज़रत सफ़िया रज़ि०) के बारे में एक दूसरे को आंख से इशारा किया है, उसकी वजह से (तुमने मुरदार गोश्त खा लिया है, इसलिए) कुल्ली करो। अल्लाह की क़सम ! यह अपनी बात में बिल्कुल सच्ची है।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में एक आदमी खड़ा हुआ (और चला गया)।

सहाबा रज़ि० ने कहा, यह आदमी किस क़दर आजिज़ है? किस क़दर कमज़ोर है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने अपने साथी की ग़ीबत की और उसका गोश्त खाया है।

तबरानी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से एक आदमी खड़ा हुआ। लोगों को उसके खड़े होने में कमज़ोरी नज़र आई, तो उन्होंने कहा, फ़्लां आदमी किस क़दर कमज़ोर है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने अपने भाई की ग़ीबत करके उसका गोश्त खा लिया है।[2]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने पिछली हदीस जैसी हदीस रिवायत की है और उसमें आगे मज़्मून भी है। लोगों ने अर्ज़ किया, हमने वही बात कही है, जो इसमें मौजूद है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (तभी तो यह ग़ीबत है)। अगर तुम वह बात कहो जो इसमें न हो, फिर तो तुम उस पर बोहतान लगाने वाले बन जाओगे।[3]

---

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 128, इसाबा, भाग 4, पृ० 348, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 313
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 285, हैसमी, भाग 8, पृ० 94
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 94,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लोगों ने एक आदमी का ज़िक्र किया और कहा, कोई दूसरा उसके खाने का इन्तिज़ाम करे तो यह खाता है और कोई दूसरा इसको सवारी पर कजावा कस कर दे, तो फिर यह उस पर सवार होता है। (यह बहुत सुस्त है, अपने काम ख़ुद नहीं कर सकता।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम उसकी ग़ीबत कर रहे हो।

उन लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने वही बात कही है, जो उसमें मौजूद है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ग़ीबत होने के लिए यही काफ़ी है कि तुम अपने भाई का वह ऐब बयान करो जो उसमें मौजूद है।[1]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। एक आदमी उठकर चला गया। उसके जाने के बाद एक आदमी उसके ऐब बयान करने लग गया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तौबा करो। उस आदमी ने कहा, किस चीज़ से तौबा करूं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ग़ीबत करके) तुमने अपने भाई का गोश्त खाया है।[2]

हैसमी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने उस आदमी से कहा, तुम ख़लाल (दांत खोद कर फंसी हुई चीज़ निकालना) करो। उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं किस वजह से ख़लाल करूं? मैंने गोश्त तो खाया नहीं।[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म दिया और फ़रमाया, मुझसे इजाज़त लिए बग़ैर कोई भी रोज़ा न खोले।

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 285,
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 285,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 94,

चुनांचे तमाम लोगों ने रोज़ा रख लिया। शाम को लोग आकर रोज़ा खोलने की इजाज़त मांगने लगे। आदमी आकर इजाज़त मांगता और कहता, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने आज सारा दिन रोज़ा रखा। आप अब मुझे इजाज़त दे दें, ताकि मैं रोज़ा खोल दूं।

इतने में एक आदमी ने आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके घर की दो नवजवान औरतों ने आज सारा दिन रोज़ा रखा और उन दोनों को ख़ुद आकर आपसे इजाज़त लेने में शर्म आ रही है। आप उन्हें भी इजाज़त दे दें ताकि वे भी रोज़ा खोल लें।

आपने उस आदमी से मुंह फेर लिया। उसने सामने आकर फिर अपनी बात पेश की, हुज़ूर सल्ल० ने फिर मुंह फेर लिया। उसने तीसरी बार अपनी बात पेश की। हुज़ूर सल्ल० ने फिर मुंह फेर लिया। उसने चौथी बार बात पेश की, तो उससे मुंह फेरकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन दोनों ने रोज़ा नहीं रखा और इस आदमी का रोज़ा कैसे हो सकता है जो सारा दिन लोगों का गोश्त खाता रहा हो ? जाओ और दोनों से कहो कि अगर इन दोनों का रोज़ा है, तो वे क़ै करें।

उस आदमी ने जाकर उन दोनों औरतों को हुज़ूर सल्ल० की बात बताई, तो इन दोनों ने क़ै की। तो वाक़ई हर एक की क़ै में ख़ून का जमा हुआ टुकड़ा निकला। उस आदमी ने आकर हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर ख़ून के ये टुकड़े उनके पेट में रह जाते, तो दोनों को आग खाती।[1]

इमाम अहमद की रिवायत में इस तरह है कि हुज़ूर सल्ल० ने उन दोनों औरतों में से एक से फ़रमाया, क़ै करो। उसने क़ै की तो पीप, ख़ून, ख़ून मिली पीप और गोश्त निकला, जिससे आधा प्याला भर गया। फिर आपने दूसरी से फ़रमाया, तुम क़ै करो, उसने क़ै की तो पीप, ख़ून, ख़ून मिली पीप और ताज़ा गोश्त निकला, जिससे पूरा प्याला भर गया।

फिर आपने दूसरी से फ़रमाया, इन दोनों ने रोज़ा तो उन चीज़ों से

1. अबू दाऊद, बैहक़ी, अहमद

रखा था जो अल्लाह ने उनके लिए हलाल की थीं, लेकिन उस चीज़ से खोल लिया जो अल्लाह ने उन पर हराम की थी। दोनों एक दूसरे के पास बैठकर लोगों के गोश्त खाने लग गई थीं।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अरब के लोग सफ़रों में एक दूसरे की ख़िदमत किया करते थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक आदमी हुआ करता था, जो इन दोनों की ख़िदमत किया करता था। एक बार ये दोनों सो गए (और उसके ज़िम्मे खाना पकाना था, वह भी सो गया था।)

जब ये दोनों उठे तो देखा कि वह खाना तैयार नहीं कर सका, (बल्कि सो रहा है) तो इन दोनों लोगों ने कहा कि यह तो सोऊ है। इन लोगों ने उसे जगा कर कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाकर अर्ज़ करो कि अबूबक्र व उमर रज़ि० आपकी ख़िदमत में सलाम अर्ज़ कर रहे हैं और आपसे सालन मांग रहे हैं। (उसने जाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वे दोनों तो सालन से रोटी खा चुके हैं। (उसने जाकर इन दोनों को हुज़ूर सल्ल० का जवाब बताया, इस पर) इन दोनों लोगों ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमने कौन-से सालन से रोटी खाई है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने भाई के गोश्त से। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! मैं उसका गोश्त तुम दोनों के सामने वाले दांतों में देख रहा हूं।

उन दोनों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे लिए इस्तग़फ़ार फ़रमा दीजिए।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उससे कहो, वह तुम दोनों के लिए इस्तग़फ़ार करे।[2]

---

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 286,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 216,

मुसलमानों की छिपी बातों को तलाश करना

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक रात हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मदीना मुनव्वरा का पहरा दिया। ये लोग चले जा रहे थे कि उन्हें एक घर में चिराग़ की रोशनी नज़र आई। ये लोग उस घर की ओर चल पड़े। जब उस घर के क़रीब पहुंचे तो देखा कि दरवाज़ा भिड़ा हुआ है और अन्दर कुछ लोग ऊंचा-ऊंचा बोल रहे हैं और शोर मचा रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का हाथ पकड़कर पूछा, क्या तुम जानते हो, यह किसका घर है?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह हज़रत रबीआ बिन उमैया बिन ख़ल्फ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का घर है और ये सब लोग इस वक़्त शराब पिए हुए हैं। आपका क्या ख़्याल है? (हमें क्या करना चाहिए?)

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, मेरा ख़्याल यह है कि हम तो वह काम कर बैठे हैं जिससे अल्लाह ने हमें रोका है। अल्लाह ने फ़रमाया है—

'और सुराग़ मत लगाओ' (सूर: हुजुरात, आयत 12)

और हम इन घरवालों के सुराग़ लगाने में लग गए हैं। हज़रत उमर रज़ि० उन्हें इसी हाल में छोड़कर वापस चले गए।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक साथी को कई दिन तक न देखा, तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, आओ फ़्लां के घर जाकर देखते हैं (कि वह किस काम में लगा हुआ है)।

चुनांचे ये लोग उसके घर गए तो देखा कि उसका दरवाज़ा खुला

1. अब्दुर्रज़्ज़ाक़, अब्द बिन हुमैद ख़राइती,

हुआ है और वह बैठा हुआ है और उसकी बीवी बरतन में डाल-डालकर उसे दे रही है।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० से कहा, इस काम में लग कर उसने हमारे पास आना छोड़ा हुआ है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, आपको कैसे पता चला कि इस बरतन में क्या है?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, क्या आपको यह ख़तरा है कि हम सुराग़ लगा रहे हैं? (जिससे अल्लाह ने रोका है।)

हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, बिल्कुल यह यक़ीनन सुराग़ लगाना है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अब इस गुनाह से तौबा का क्या तरीक़ा है?

हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ने कहा, आपको इसकी जो बात मालूम हुई है, वह इसे न बताएं, और आप इसे अपने दिल से बेहतर ही समझें। फिर वे दोनों वापस चले गए।[1]

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कुछ मुसाफ़िरों ने मदीना के एक कोने में आकर पड़ाव डाला। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु एक रात उनका पहरा देने तशरीफ़ ले गए। जब रात का कुछ हिस्सा गुज़र गया, तो हज़रत उमर रज़ि० का एक घर पर गुज़र हुआ जिसमें बैठे हुए कुछ लोग पी रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने उनको पुकारकर कहा, क्या अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही है? क्या अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही है?

उनमें से एक आदमी ने कहा, जी हां! क्या अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही है? क्या अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही है? लेकिन अल्लाह ने आपको ऐसा करने से (घरों के अन्दरूनी हालात मालूम करने से) मना किया है।

1. कंज़, भाग 2, पृ० 167

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० उनको इसी हाल में छोड़कर वापस चले गए।[1]

हज़रत सौर किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु रात को मदीना में पहरे के लिए गश्त करते थे। एक रात उन्होंने एक आदमी की आवाज़ सुनी जो घर में गाना गा रहा था। हज़रत उमर रज़ि० दीवार फांद कर अन्दर उसके पास चले गए और यों कहा, ऐ अल्लाह के दुश्मन! क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि तुम अल्लाह की नाफ़रमानी करते रहोगे? और अल्लाह तुम पर परदा डाले रखेंगे?

उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मेरे बारे में जल्दी न करें। अगर मैंने अल्लाह की एक नाफ़रमानी की है, तो आपने अल्लाह की तीन नाफ़रमानियां की हैं—

पहली यह है कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَلَا تَجَسَّسُوْا

'तुम सुराग़ मत लगाओ' और आपने सुराग़ लगाया है।

दूसरी यह है कि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ اَبْوَابِهَا (سورۃ بقرہ آیت ۱۸۹)

'और घरों में उनके दरवाज़े से आओ।' (सूरः बक़रः आयत 189) और आप दीवार फांद कर मेरे पास आए हैं,

तीसरी यह है कि आप बग़ैर इजाज़त के आए हैं, हालांकि अल्लाह ने फ़रमाया है— وَلَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا

غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهَا (سورت نور آیت ۲۷)

'तुम अपने ख़ास घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल मत हो, जब तक कि (उनसे) इजाज़त हासिल न कर लो और (इजाज़त लेने से पहले) उनके रहने वालों को सलाम न कर लो।' (सूरः नूर, आयत 27)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर मैं तुम्हें माफ़ कर दूं तो क्या

1. कंज़, भाग 2, पृ० 141,

तुम्हारा ख़ुद को ख़ैर में लगाने का इरादा है?

उसने कहा, जी हां। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे माफ़ कर दिया और उसे छोड़कर बाहर आ गए।[1]

हज़रत सुद्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर तशरीफ़ ले गए। उनके साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। उन्हें एक जगह आग की रोशनी नज़र आई। यह उस रोशनी की तरफ़ चल पड़े, यहां तक कि एक घर में दाख़िल हो गए। यह आधी रात का वक़्त था।

अन्दर जाकर देखा कि घर में चिराग़ जल रहा है। वहां एक बूढ़े मियां बैठे हुए हैं और उनके सामने कोई पीने की चीज़ रखी हुई है और एक लौंडी उन्हें गाना सुना रही है। उन बूढ़े मियां को उस वक़्त पता चला जब हज़रत उमर रज़ि० उसके पास पहुंच गए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आज रात जैसा बुरा मंज़र मैंने कभी नहीं देखा कि एक बूढ़ा अपनी मौत का इन्तिज़ार कर रहा है (और वह यह बुरा काम कर रहा है।)

उस बूढ़े ने सर उठाकर कहा, आपकी बात ठीक है, लेकिन ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपने जो किया है, वह इससे भी ज़्यादा बुरा है। आपने घर में घुसकर जासूसी की है, हालांकि अल्लाह ने जासूसी से मना किया है और आप इजाज़त के बग़ैर घर के अन्दर आ गए हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप ठीक कह रहे हैं और फिर हज़रत उमर रज़ि० दांत से कपड़ा पकड़ कर रोते हुए उस घर से बाहर निकले और फ़रमाया, अगर उमर रज़ि० को उसके रब ने माफ़ न किया तो उसे उसकी मां गुम करे।

इधर यह बूढ़ा समझता था कि वह अपने घरवालों से छुपकर यह काम करता है। अब तो उमर रज़ि० ने मुझे यह काम करते हुए देख लिया है, इसलिए अब वह बे-झिझक यह काम करता रहेगा। उस बूढ़े ने एक ज़माने तक हज़रत उमर रज़ि० की मज्लिस में आना छोड़ दिया।

1. कंज़, भाग 2, पृ० 167,

एक दिन हज़रत उमर रज़ि० बैठे हुए थे, वह बूढ़ा ज़रा छुपता हुआ आया और लोगों के पीछे बैठ गया। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे देख लिया, तो फ़रमाया, उस बूढ़े को मेरे पास लाओ। एक आदमी ने आकर उस बूढ़े को कहा, जाओ, अमीरुल मोमिनीन बुला रहे हैं। वह बूढ़ा खड़ा हुआ। उसका ख़्याल था कि हज़रत उमर रज़ि० ने उस रात जो मंज़र देखा था, आज उसकी सज़ा देंगे।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे क़रीब आ जाओ। हज़रत उमर रज़ि० उसे अपने क़रीब करते रहे, यहां तक कि उसे अपने पहलू में बिठा लिया, फिर फ़रमाया, ज़रा अपना कान मेरे नज़दीक करो।

हज़रत उमर रज़ि० ने उसके कान के साथ मुंह लगाकर कहा, ग़ौर से सुनो, उस ज़ात की क़सम, जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर और रसूल बनाकर भेजा है। मैंने उस रात तुम्हें जो कुछ करते हुए देखा था, वह मैंने किसी को नहीं बताया, यहां तक कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० उस रात मेरे साथ थे, लेकिन मैंने उनको भी नहीं बताया।

उस बूढ़े ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! ज़रा अपना कान मेरे क़रीब करें, फिर उस बूढ़े ने हज़रत उमर रज़ि० के कान के साथ मुंह लगाकर कहा, उस ज़ात की क़सम जिसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ देकर रसूल बनाकर भेजा है, मैंने भी वह काम अब तक दोबारा नहीं किया।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ज़ोर-ज़ोर से अल्लाहु अकबर कहने लगे और लोगों को पता नहीं था कि हज़रत उमर रज़ि० किस वजह से अल्लाहु अकबर कह रहे हैं।[1]

हज़रत अबू क़िलाबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी ने बताया कि हज़रत अबू मिहजन सक़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर अपने साथियों को साथ लेकर शराब पीते हैं। हज़रत उमर रज़ि० तशरीफ़ ले गए, यहां तक कि हज़रत अबू मिहजन

1. कंज़, भाग 2, पृ० 141

रज़ि० के पास उनके घर में चले गए तो वहां उनके पास सिर्फ़ एक आदमी था।

हज़रत अबू मिहजन रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यह (घर में इजाज़त के बग़ैर जासूसी के लिए दाख़िल होना) आपके लिए जायज़ नहीं है। अल्लाह ने आपको जासूसी से मना फ़रमाया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह आदमी क्या कह रहा है?

हज़रत ज़ैद बिन साबित और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यह ठीक कह रहे हैं। आपका इस तरह अन्दर जाना वाक़ई जासूसी है। हज़रत उमर रज़ि० उन्हें छोड़कर बाहर आ गए।[1]

मुसलमान के ऐब को छिपाना

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने आकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मेरी एक बेटी थी, जिसे मैंने जाहिलियत के ज़माने में एक बार तो ज़िंदा क़ब्र में दफ़न कर दिया था, लेकिन फिर मरने से पहले इसे बाहर निकाल लिया था, फिर उसने हमारे साथ इस्लाम का ज़माना पाया और मुसलमान हो गई।

फिर उससे ऐसा गुनाह हो गया, जिस पर शरई सज़ा लाज़िम आती है। उसने बड़ी छुरी से ख़ुद को ज़िब्ह करने की कोशिश की। हम लोग मौक़े पर पहुंच गए और उसे बचा लिया, लेकिन उसके गले की कुछ रगें कट गई थीं। फिर हमने उसका इलाज किया और वह ठीक हो गई। इसके बाद उसने तौबा की और उसकी दीनी हालत बहुत अच्छी हो गई। अब एक क़ौम के लोग उसकी शादी का पैग़ाम दे रहे हैं। मैं उन्हें इसकी सारी बात बता दूं?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह ने तो उसका ऐब छिपाया था, तुम उसे ज़ाहिर करना चाहते हो। अल्लाह की क़सम ! अगर तुमने

1. कंज़, भाग 2, पृ० 141,

किसी को उस लड़की की कोई बात बताई तो मैं तुम्हें ऐसी सज़ा दूंगा जिससे तमाम शहरों को सबक़ मिलेगा, बल्कि उसकी शादी इस तरह करो, जिस तरह एक पाकदामन मुसलमान औरत की की जाती है।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक लड़की से बुरा काम हो गया, जिसकी उसे शरई सज़ा मिल गई। फिर उसकी क़ौम वाले हिजरत करके आए और उस लड़की ने तौबा कर ली और उसकी दीनी हालत अच्छी हो गई। उस लड़की की शादी का पैग़ाम उसके चचा के पास आया, तो उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे। उसकी बात बताए बग़ैर शादी कर दे, तो यह भी ठीक नहीं, अमानतदारी के ख़िलाफ़ है और अगर बता दे तो यह भी ठीक नहीं। मुसलमान के ऐब छिपाने के ख़िलाफ़ है।

उसके चचा ने यह बात हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को बताई तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, (बिल्कुल न बताओ और) उसकी ऐसी शादी करो जैसे तुम अपनी नेक भली लड़कियों की करते हो।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक औरत ने आकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मुझे एक बच्चा मिला और उसके साथ एक मिस्री सफ़ेद कपड़ा मिला जिसमें सौ दीनार थे। मैंने दोनों को उठा लिया (और घर ले आई) और उस बच्चे के लिए दूध पिलाने वाली औरत का उजरत पर इन्तिज़ाम किया। अब मेरे पास चार औरतें आती हैं और वे चारों उसे चूमती हैं। मुझे पता नहीं चलता कि इन चारों में से कौन उस बच्चे की मां है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अब जब वे औरतें आएं, तो मुझे बता देना।

(वे औरतें आईं, तो) उस औरत ने हज़रत उमर रज़ि० को पता दे दिया। (हज़रत उमर रज़ि० उसके घर गए और) उनमें से एक औरत से

1. कंज़, भाग 2, पृ० 150
2. कंज़, भाग 2, पृ० 296,

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुममें से कौन इस बच्चे की मां है ?

उस औरत ने कहा, अल्लाह की क़सम ! आपने (मालूम करने का) अच्छा अन्दाज़ा नहीं अख़्तियार किया। अल्लाह ने एक औरत के ऐब पर परदा डाला है, आप उसका परदा खोलना चाहते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने ठीक कहा है। फिर उस पहली औरत से कहा, आगे जब ये औरतें तुम्हारे पास आएं, तो उनसे कुछ न पूछना और उनके बच्चे के साथ अच्छा व्यवहार करती रहना और फिर हज़रत उमर रज़ि० वापस तशरीफ़ ले गए।[1]

हज़रत सालेह बिन कुर्ज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरी एक बांदी ज़िना की शिकार हो गई। मैं उसे लेकर हज़रत हकम बिन अय्यूब रहमतुल्लाहि अलैहि के पास गया। मैं वहां बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले आए और बैठ गए और फ़रमाया, ऐ सालेह ! यह तुम्हारे साथ बांदी क्यों है ?

मैंने कहा, मेरी यह बांदी ज़िना की शिकार हो गई है। अब मैं इसका मामला इमाम के सामने ले जाना चाहता हूं ताकि वह इसे शरई सज़ा दे।

हज़रत अनस रज़ि० ने कहा, ऐसे न करो, अपनी बांदी को वापस ले जाओ और अल्लाह से डरो और उसके ऐब पर परदा डालो। मैंने कहा, नहीं मैं ऐसे नहीं करूंगा। हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसे न करो और मेरी बात मानो। वह बार-बार मुझसे कहते रहे, यहां तक कि मैं बांदी को वापस घर ले गया।[2]

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु के मुंशी हज़रत दुख़ैन अबुल हैसम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० से कहा, हमारे कुछ पड़ोसी शराब पीते हैं, मैं उनके लिए पुलिस को बुलाना चाहता हूं, ताकि वे उनको पकड़ लें।

हज़रत उक़बा रज़ि० ने कहा, ऐसे न करो, बल्कि उसको समझाओ-

1. कंज़, भाग 7, पृ० 329,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 94,

बुझाओ और उनको डराओ। मैंने कहा, उन्हें रोका था, लेकिन वे रुके नहीं, इसलिए मैं तो अब उनके लिए पुलिस को बुलाना चाहता हूं ताकि वे उनको पकड़ लें।

हज़रत अक़बा रज़ि० ने कहा, तुम्हारा नाश हो, ऐसे न करो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने किसी (मुसलमान के) ऐब को छिपाया तो गोया उसने क़ब्र में गाड़ी हुई ज़िंदा लड़की को ज़िंदा किया है।[1]

हज़रत बिलाल बिन साद अशअरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में लिखा कि दमिश्क़ के बदमाशों के नाम ख़त लेकर मेरे पास भेजो, तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा दमिश्क़ के बदमाशों से क्या ताल्लुक़ है? और मुझे उनका पता कहां से चलेगा? इस पर उनके बेटे हज़रत बिलाल ने कहा, मैं इनके नाम लिख देता हूं और उनके नाम लिखकर दे दिए।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हें इनका पता कहां से चला? तुम्हें इनका पता इस वजह से चला है कि तुम भी इनमें से हो, इसलिए इनके नामों की सूची अपने नाम से शुरू करो और उनके नाम हज़रत मुआविया रज़ि० को न भेजे।[2]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु एक घर में थे। उनके साथ हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। (इतने में किसी की हवा निकली, जिसकी) बदबू हज़रत उमर रज़ि० ने महसूस की, तो फ़रमाया, मैं ताकीद करता हूं कि जिस आदमी की हवा निकली है, वह खड़ा हो और जाकर वुज़ू करे।

इस पर हज़रत जरीर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या तमाम लोग वुज़ू न कर लें? इससे मक़सद भी हासिल हो जाएगा और

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 17
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 188,

जिसकी हवा निकली, उसके ऐब पर परदा भी पड़ा रहेगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए। आप जाहिलियत में भी बहुत अच्छे सरदार थे और इस्लाम में भी बहुत अच्छे सरदार हैं। (परदा डालने की कैसी तर्कीब आपने बताई।)[1]

मुसलमान से दरगुज़र करना और उसे माफ़ करना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे हज़रत ज़ुबैर और हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हुम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा और फ़रमाया, तुम लोग यहां से चलो, और रौज़ा ख़ाख़ (जो मक्का और मदीना के दर्मियान मदीने से बारह मील दूरी पर एक जगह है) पहुंच जाओ। वहां एक हौदा नशीन औरत मिलेगी, उसके पास एक ख़त है, वह उससे ले आओ।

चुनांचे हम लोग वहां से चले और हमारे घोड़े एक दूसरे से मुक़ाबले में ख़ूब तेज़ दौड़ रहे थे। जब हम रौज़ा पहुंचे तो हमें वहां एक हौदा नशीन औरत मिली। हमने उससे कहा, ख़त निकाल दे।

उसने कहा, मेरे पास कोई ख़त नहीं है। हमने कहा, ख़त निकाल दे, नहीं तो तेरे सारे कपड़े उतार देंगे। (और तेरी तलाशी लेंगे, क्योंकि जासूस से मुसलमानों के राज़ का ख़त लेने के लिए उसकी आबरू लेना दुरुस्त है) चुनांचे उसने अपने सर के जूड़े में से वह ख़त निकालकर दे दिया। वह ख़त लेकर हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए, तो वह ख़त हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से मक्का के कुछ मुश्रिक लोगों के नाम था, जिसमें उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की राज़ की बात लिखी थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ हातिब! यह क्या है?

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप मेरे बारे में जल्दी न फ़रमाएं। मैं क़बीला क़ुरैश में से नहीं हूं, बल्कि उनका दोस्त हूं और आपके साथ जो मक्का के मुहाजिरीन हैं, उन सबकी मक्का के

1. कंज़, भाग 2, पृ० 151,

मुश्रिकों से रिश्तेदारी है। इस रिश्तेदारी की वजह से वे मुश्रिक, मुसलमानों के जो घरवाले और माल व दौलत मक्का में है, उन सबकी हिफ़ाज़त करते हैं। (मेरे भी रिश्तेदार मक्का में हैं) मैंने सोचा कि क़ुरैश से मेरा नसबी रिश्ता तो है नहीं, इसलिए मैं (आपका राज़ बताकर) उन पर एहसान कर देता हूं, इस वजह से वे मेरे रितश्ेदारों की हिफ़ाज़त करेंगे। मैंने यह काम इस वजह से नहीं किया है कि मैं अपने दीन से मुर्तद हो गया हूं या इस्लाम के बाद अब मुझे कुफ़्र पसन्द आ गया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो। यह बात तुमसे सच्ची कह रहे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मुझे इजाज़त दें, मैं इस मुनाफ़िक़ की गरदन उड़ा दूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, यह बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे, तुम्हें क्या ख़बर, शायद अल्लाह ने बद्र वालों की ओर झांक कर फ़रमा दिया हो, तुम जो चाहे करो, मैंने तुम्हें बख़्श दिया है। फिर अल्लाह ने यह सूरः उतारी—

يَآ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَآءَ

فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (سورت ممتحنه آيت ١)

'ऐ ईमान वालो ! तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ कि उनसे दोस्ती का इज़्हार करने लगो, हालांकि तुम्हारे पास जो दीने हक़ आ चुका है, वे इसके इंकारी हैं। रसूल सल्ल० को और तुमको इस बुनियाद पर कि तुम अपने पालनहार अल्लाह पर ईमान ला चुके हो, शहर निकाला दे चुके हैं, अगर तुम मेरे रास्ते पर जिहाद करने की ग़रज़ से और मेरी रज़ामंदी ढूंढने की ग़रज़ से (अपने घरों से) निकले हो। तुम इनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बात करते हो, हालांकि मुझे सब चीज़ों का इल्म है, तुम जो कुछ छिपा कर करते हो और ज़ाहिर करते हो और (आगे इस पर धमकी है कि) जो आदमी तुममें से ऐसा करेगा, वह सीधे रास्ते से भटकेगा।'[1]

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 284,

इमाम अहमद ने यही हदीस हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की है, उसमें यह है कि हज़रत हातिब रज़ि० ने अर्ज़ किया कि मैंने यह काम न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धोखा देने के लिए किया है और न मुनाफ़िक़ होने की वजह से किया है। मुझे यक़ीन था कि अल्लाह अपने रसूल सल्ल० को ग़ालिब फ़रमाएंगे और हुज़ूर सल्ल० के दीन को कमाल तक पहुंचाएंगे। (मैं हुज़ूर सल्ल० का राज़ मक्का के काफ़िरों को बता दूंगा, इससे हुज़ूर सल्ल० को कोई नुक़्सान न होगा।) असल बात यह थी कि मैं क़ुरैश में अनजाना बाहर का आदमी हूं और मेरी मां उनके साथ रहती है, तो मैंने चाहा कि मैं उन पर एहसान कर दूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, क्या मैं इसका सर न उड़ा दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम बद्र वालों में से एक आदमी को क़त्ल करोगे? तुम्हें क्या ख़बर कि बद्र वालों की तरफ़ झांक कर फ़रमा दिया हो कि तुम जो चाहो करो।[1]

हज़रत अबू मतर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक आदमी लाया गया और लोगों ने बताया कि उस आदमी ने ऊंट चोरी किया है। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मेरे ख़्याल में तो तुमने चोरी नहीं की है। उसने कहा, नहीं मैंने चोरी की है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, शायद तुम्हें शुबहा हो गया हो (कि तुम्हारा ऊंट है या किसी और का?) उसने कहा, नहीं मैंने तो चोरी की है।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ क़ंबर! इसे ले जाओ, इसकी उंगली बांध दो, आग जला लो और जल्लाद को हाथ काटने के लिए बुला लो और मेरे वापस आने का इन्तिज़ार करो।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 284, हैसमी, भाग 9, पृ० 303, कंज़, भाग 7, पृ० 137, हैसमी, भाग 9, पृ० 304

जब हज़रत अली रज़ि० वापस आए, तो उस आदमी से कहा, क्या तुमने चोरी की है? उसने कहा, नहीं। हज़रत अली रज़ि० ने उसे छोड़ दिया।

इस पर लोगों ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! जब वह एक बार आपके सामने इक़रार कर चुका है, तो आपने उसे क्यों छोड़ दिया?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने उसी की बात पर उसे पकड़ा था और उसी की बात पर उसे छोड़ा है, फिर हज़रत अली रज़ि०ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी लाया गया जिसने चोरी की थी। हुज़ूर सल्ल० के हुक्म फ़रमाने पर उसका हाथ काटा जाने लगा, तो हुज़ूर सल्ल० रो पड़े।

मैंने अर्ज़ किया, आप क्यों रोते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं क्यों न रोऊं, जबकि मेरे उम्मती का हाथ तुम सबकी मौजूदगी में काटा जा रहा है।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, आपने उसे माफ़ न कर दिया?

आपने फ़रमाया, वह बहुत बुरा हाकिम है जो शरई सज़ा को माफ़ कर दे, हां, तुम लोग आपस में ये जुर्म एक दूसरे को माफ़ कर दिया करो।[1] (शरई तौर पर साबित होने के बाद हाकिम माफ़ नहीं कर सकता।)

हज़रत अबू माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के पास अपने भतीजे को लेकर आया। उसका भतीजा नशे में पड़ा हुआ था। उस आदमी ने कहा, मैंने उसे नशे में पड़ा पाया।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, इसे ख़ूब अच्छी तरह हिलाओ और झिड़झिड़ाओ और इसके मुंह से बू सूंघो। लोगों ने उसे ख़ूब हिलाया और सूंघा तो उसके मुंह से शराब की बू आ रही थी। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने हुक्म दिया तो उसे जेलख़ाना में डाल दिया गया। अगले दिन उसे जेल से बाहर निकाला और फ़रमाया, कोड़े की

1. कंज़, भाग 3, पृ० 117

गांठ को कूट दो ताकि चाबुक जैसा हो जाए। चुनांचे उसे कूट दिया गया, फिर जल्लाद से फ़रमाया, इसे मारो, लेकिन हाथ इतना न उठाओ कि बग़ल नज़र आने लगे और हर अंग को उसका हक़ दो।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने उसे इस तरह कोड़े लगवाए जो ज़्यादा सख़्त न थे और जल्लाद का हाथ भी ज़्यादा ऊपर नहीं उठता था। कोड़े लगवाने के वक़्त उस आदमी ने जुब्बा और शलवार पहनी हुई थी। फिर हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! यह आदमी यतीम का बहुत बुरा सरपरस्त है। (ऐ फ़्लाने) तुमने उसे तमीज़ न सिखाई और न उसे अच्छी तरह अदब और सलीक़ा सिखाया। उसने रुसवाई वाला काम कर लिया था, लेकिन तुमने उस पर परदा न डाला।

फिर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाले हैं और माफ़ करने को पसन्द करते हैं और जब किसी हाकिम के सामने किसी का जुर्म शरई तौर पर साबित हो जाए तो अब उस हाकिम पर लाज़िम है कि वह उस मुजरिम को शरई सज़ा दे।

फिर हज़रत अब्दुल्लाह सुनाने लगे कि मुसलमानों में सबसे पहले जिसका हाथ काटा गया, वह एक अंसारी आदमी था। जब उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो ग़म के मारे हुज़ूर सल्ल० का बुरा हाल हो गया। ऐसे लग रहा था कि जैसे हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर राख छिड़की गई हो।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपको इस आदमी के लाए जाने से बड़ा बोझ लग रहा है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे बोझ क्यों न हो जबकि तुम लोग अपने भाई के ख़िलाफ़ शैतान के मददगार बने हुए हो? (तुम्हें वहीं उसे माफ़ कर देना चाहिए था) अल्लाह माफ़ फ़रमाने वाले हैं और वह माफ़ करने को पसन्द फ़रमाते हैं। (मैं माफ़ नहीं कर सकता, क्योंकि) जब हाकिम के सामने कोई जुर्म शरई तौर पर साबित हो जाए, तो ज़रूरी है कि वह इस जुर्म की शरई सज़ा लागू करे। फिर आपने यह आयत पढ़ी—

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا۔ (سورت نور آیت ۲۲)

'और चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र करें।'[1]

(सूर: नूर, आयत 42)

हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इस्लाम में सबसे पहले जो शरई हद क़ायम की गई, उसकी शक्ल यह हुई कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लाया गया, फिर उसके ख़िलाफ़ गवाहों ने गवाही दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसका हाथ क़ाट दिया जाए। जब उस आदमी का हाथ काटा जाने लगा, तो लोगों ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० का चेहरा ग़म की वजह से ऐसा लग रहा है कि जैसे उस पर राख छिड़क दी गई हो।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको इसके हाथ क़टने से सख़्त सदमा हो रहा है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे सदमा क्यों न हो, जबकि तुम लोग अपने भाई के ख़िलाफ़ शैतान के मददगार बने हुए हो?

सहाबा रज़ि० ने कहा, आप छोड़ देते (और हाथ काटने का हुक्म न देते)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे पास लाने से पहले तुम लोगों ने उसे क्यों न छोड़ दिया, (मैं नहीं छोड़ सकता, क्योंकि) इमाम के सामने जब शरई हद साबित हो जाए, तो वह इसे रोक नहीं सकता।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हज या उमरा में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था, हमने एक सवार आते हुए देखा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा ख़्याल यह है कि यह हमें खोज रहा है। उस आदमी ने आकर रोना शुरू कर दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या बात है? अगर तुम क़र्ज़ वाले हो तो हम तुम्हारी मदद करेंगे और तुम्हें किसी का डर है, तो हम तुम्हें अम्न देंगे, लेकिन अगर तुमने किसी को नाहक़ क़त्ल किया है तो फिर तुम्हें भी उसके बदले में क़त्ल किया जाएगा और अगर तुम्हें किसी क़ौम के पड़ोस में रहना पसन्द नहीं है, तो हम तुम्हें वहां से किसी और जगह ले जाएंगे।

---

1. तबरानी, हाकिम, बैहक़ी,
2. कंज़, भाग 3, पृ० 83, 69,

उसने कहा, मैं क़बीला बनू तैम का आदमी हूं, मैंने शराब पी थी, जिस पर हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे कोड़े भी लगवाए और मेरे सर के बाल भी मुंडवाए और मेरा मुंह काला करके लोगों में मेरा चक्कर भी लगवाया और लोगों में यह एलान कराया कि तुम लोग न उसके पास बैठो और न उसके साथ खाना खाओ, इस पर मेरे दिल में तीन बातें आई हैं—

1. या तो मैं तलवार लेकर हज़रत अबू मूसा को क़त्ल कर दूं,

2. या मैं आपके पास आ जाऊं, और मेरी जगह बदल दें और मुझे शामदेश भेज दें, क्योंकि शामदेश वाले मुझे जानते नहीं हैं, (इसलिए वहां रहना मेरे लिए आसान होगा)

3. या मैं दुश्मन के साथ जा मिलूं और उनके साथ खाऊं और पियूं।

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े और फ़रमाया, तुम दुश्मन से जा मिलो और मुझे बे-इंतिहा माल मिल जाए, तब भी मुझे इससे ज़र्रा बराबर ख़ुशी नहीं होगी और मैं तो जाहिलियत के ज़माने में सबसे ज़्यादा शराब पीने वाला था और यह शराब ज़िना जैसा (जुर्म) नहीं है और हज़रत अबू मूसा को यह ख़त लिखवाया—

'सलामुन अलैक, अम्मा बाद, क़बीला बनू तैम के फ़्लां बिन फ़्लां ने मुझसे इस तरह बयान किया है। अल्लाह की क़सम ! अगर आगे तुम इस तरह दोबारा करोगे, तो मैं तुम्हारा मुंह काला करके लोगों में तुमको फिराऊंगा, जो मैं तुमसे कह रहा हूं अगर तुम उसके हक़ होने को जानना चाहते हो, तो यह हरकत दोबारा करके देखो, इसलिए लोगों में यह एलान कराओ कि लोग उसके साथ बैठा करें और उसके साथ खाया करें और अगर वह (आगे शराब पीने से) तौबा कर ले तो तुम उसकी गवाही क़ुबूल करो।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उसे सवारी भी दी और दो सौ दिरहम भी दिए।[1]

1. कंज़, भाग 3, पृ० 107,

मुसलमान के नामुनासिब काम के भी अच्छे मानी पहनाना

हज़रत अबू औन वग़ैरह लोग कहते हैं, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह दावा किया कि उन्हें जो बात हज़रत मालिक बिन नुवैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर से पहुंची है, उसकी बुनियाद पर वह मुर्तद हो गए हैं।

हज़रत मालिक ने इस दावे का इंकार किया और कहा, मैं इस्लाम पर हूं। मैंने अपना दीन नहीं बदला।

हज़रत अबू क़तादा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हज़रत मालिक के हक़ में गवाही दी, लेकिन हज़रत ख़ालिद अपने फ़ैसले पर बरक़रार रहे और उन्होंने हज़रत मालिक को आगे किया और हज़रत ज़िरार बिन अज़वर को हुक्म दिया, जिस पर हज़रत ज़िरार ने हज़रत मालिक को क़त्ल कर दिया।

(इद्दत गुज़रने के बाद) हज़रत ख़ालिद ने हज़रत मालिक की बीवी उम्मे मुतम्मिम को क़ब्ज़े में लेकर उससे शादी कर ली। जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़बर पहुंची कि हज़रत ख़ालिद ने हज़रत मालिक को ख़त्म करके उनकी बीवी से शादी कर ली है, तो उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि हज़रत ख़ालिद ने ज़िना किया है, आप उसे रजम करें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैं रजम नहीं नहीं कर सकता, क्योंकि उन्होंने इज्तिहाद किया है, जिसमें उनसे ग़लती हो गई है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उन्होंने नाहक़ क़त्ल किया है, इसलिए बदले में आप उन्हें क़त्ल करें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इन्हें क़त्ल भी नहीं करूंगा, क्योंकि इन्होंने इज्तिहाद किया है, जिसमें उनसे ग़लती हो गई है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तो फिर उन्हें हटा ही दें!

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, जो तलवार अल्लाह के काफ़िरों

पर सूंती है, मैं उसे कभी भी म्यान में नहीं कर सकता।[1]

गुनाह से नफ़रत करना, गुनाह करने वाले से नफ़रत न करना

हज़रत अबू क़लाबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु एक आदमी के पास से गुज़रे, जिससे कोई गुनाह हो गया था और लोग उसे बुरा-भला कह रहे थे। हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने लोगों से कहा, ज़रा यह तो बताओ, अगर तुम्हें यह आदमी किसी कुंएं में गिरा हुआ मिलता, तो क्या तुम इसे न निकालते?

लोगों ने कहा, ज़रूर निकालते।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, तुम इसे बुरा-भला न कहो और अल्लाह का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हें इस गुनाह से बचा रखा है।

लोगों ने कहा, क्या आपको इस आदमी से नफ़रत नहीं है?

उन्होंने फ़रमाया, मुझे इसके बुरे अमल से नफ़रत है, जब यह इसे छोड़ देगा, तो फिर यह मेरा भाई है।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब तुम देखो कि तुम्हारे भाई से कोई गुनाह हो गया है, तो उसके ख़िलाफ़ शैतान के मददगार न बन जाओ कि यह बद-दुआएं करने लग जाओ कि ऐ अल्लाह! इसे रुसवा फ़रमा, ऐ अल्लाह! इस पर लानत भेज, बल्कि अल्लाह से इसके लिए और अपने लिए आफ़ियत मांगो। हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० उस वक़्त तक किसी आदमी के बारे में कोई बात नहीं कहते थे, जब तक हमें यह न मालूम हो जाता कि उसकी मौत किस हालत पर हुई है। अगर उसका ख़ात्मा बिलख़ैर होता, तो हम यक़ीन कर लेते कि उसे बड़ी ख़ैर हासिल हुई है और अगर उसका ख़ात्मा बुरा होता, तो हम उसके बारे में डरते रहते।[3]

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 132,
2. कंज़, भाग 3, पृ०, 174, हुलीया, भाग 1, पृ० 225,
3. अबु नुऐम, भाग 4, पृ० 205,

सीने को खोट और जलन से पाक-साफ़ रखना

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में आपने फ़रमाया, अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आएगा, तो इतने में एक अंसारी आए जिनकी दाढ़ी से वुज़ू के पानी के क़तरे गिर रहे थे और उन्होंने बाएं हाथ में जूतियां लटका रखी थीं।

अगले दिन फिर हुज़ूर सल्ल० ने वही बात फ़रमाई, तो फिर वही अंसारी उसी तरह आए, जिस तरह पहली बार आए थे। तीसरे दिन फिर हुज़ूर सल्ल० ने वैसी ही बात फ़रमाई और वही अंसारी उसी हाल में आए।

जब हुज़ूर सल्ल० उस मज्लिस में से उठे, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा उस अंसारी के पीछे गए और उनसे कहा, मेरा वालिद साहब से झगड़ा हो गया है, जिसकी वजह से मैंने क़सम खा ली है कि मैं तीन दिन तक उनके पास नहीं जाऊंगा। अगर आप मुनासिब समझें तो आप मुझे अपने यहां तीन दिन ठहरा लें। उन्होंने कहा, ज़रूर।

फिर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बयान करते थे कि मैंने उनके पास तीन रातें गुज़ारीं, लेकिन मैंने उनको रात में ज़्यादा इबादत करते हुए न देखा। अलबत्ता जब रात में उनकी आंख खुल जाती, तो बिस्तर पर अपनी करवट बदलते और थोड़ा-सा अल्लाह का ज़िक्र करते और अल्लाहु अक्बर कहते और फ़ज्र की नमाज़ के लिए बिस्तर से उठते। हां जब बात करते तो ख़ैर ही की बात करते।

जब तीन रातें गुज़र गईं और मुझे उनके तमाम काम आम मामूल के ही नज़र आए (और मैं हैरान हुआ कि हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए बशारत तो इतनी बड़ी दी और उनका कोई ख़ास अमल तो है नहीं) तो मैंने उनसे कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! मेरा वालिद साहब से कोई झगड़ा नहीं हुआ, न कोई नाराज़ी हुई और न उन्हें छोड़ने की क़सम खाई, बल्कि क़िस्सा यह हुआ कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आपके

बारे में तीन बार यह फ़रमाते हुए सुना कि अभी तुम्हारे पास एक जन्नती आदमी आने वाला है और तीनों बार आप ही आए। इस पर मैंने सोचा कि मैं आपके यहां रहकर आपका ख़ास अमल देखूं और फिर उस अमल में आपकी पैरवी करूं। मैंने आपको कोई बड़ा काम करते तो देखा नहीं, तो अब आप बताएं कि आपका वह कौन-सा ख़ास अमल है जिसकी वजह से आप उस दर्जे को पहुंच गए जो हुज़ूर सल्ल० ने बताया?

उन्होंने कहा, मेरा तो ख़ास अमल है नहीं, वही अमल है जो तुमने देखे हैं। मैं यह सुनकर चल पड़ा। जब मैंने पीठ फेरी, तो उन्होंने मुझे बुलाया और कहा, मेरे अमल तो वही हैं, जो तुमने देखे हैं, अलबत्ता यह एक ख़ास अमल है कि मेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में कोई खोट नहीं है और किसी को अल्लाह ने कोई ख़ास नेमत अता फ़रमा रखी हो तो मैं उस पर उससे जलता नहीं।

मैंने कहा, इसी चीज़ ने आपको इतने बड़े दर्जे तक पहुंचाया है।[1]

बज़्ज़ार की रिवायत में उन सहाबी का नाम हज़रत साद रज़ि० बताया गया है और रिवायत के आख़िर में यह है कि हज़रत साद ने हज़रत अब्दुल्लाह से कहा, ऐ मेरे भतीजे! मेरे अमल तो वही हैं जो तुमने देखे हैं, अलबत्ता एक अमल यह है कि मैं जब रात को सोता हूं, तो मेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में कपट वग़ैरह नहीं होता या इस जैसी बात इर्शाद फ़रमाई।

नसई, बैहक़ी और अस्बहानी की रिवायत में यह है कि इस पर हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, इसी चीज़ ने आपको इस बड़े दर्जे तक पहुंचाया है और यह हमारे बस में नहीं है।[2]

इब्ने असाकिर की रिवायत में यह है कि उन साहब का नाम हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु था और उस रिवायत के

1. अहमद, नसई
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 328, हैसमी, भाग 8, पृ० 79, तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 338

आख़िर में यह है कि हज़रत साद रज़ि० ने कहा, मेरे अमल तो वही हैं जो तुमने देखे हैं, अलबत्ता एक अमल यह है कि मेरे दिल में किसी मुसलमान के लिए बुरा जज़्बा नहीं और न मैं ज़ुबान से बुरा बोल निकालता हूं।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, इसी चीज़ ने आपको इस बड़े दर्जे तक पहुंचाया है, यह मेरे बस में तो है नहीं।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कुछ लोग हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आए, वह बीमार थे, लेकिन उनका चेहरा चमक रहा था, तो किसी ने पूछा कि आपका चेहरा क्यों चमक रहा है?

उन्होंने फ़रमाया, मुझे अपने अमलों में से दो अमलों पर सबसे ज़्यादा भरोसा है—

एक तो यह है कि मैं कोई बेमतलब बात नहीं करता था,

दूसरे यह कि मेरा दिल तमाम मुसलमानों से बिल्कुल साफ़ था।[2]

मुसलमानों की अच्छी हालत पर ख़ुश होना

हज़रत इब्ने बुरैदा अस्लमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा-भला कहा।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, तुम मुझे बुरा-भला क्यों कहते हो? हालांकि मुझमें तीन अच्छी ख़ूबियां पाई जाती हैं—

पहली यह कि जब मैं क़ुरआन की किसी आयत को पढ़ता हूं तो मेरा दिल चाहता है कि उस आयत के बारे में जो कुछ मुझे मालूम है, वह तमाम लोगों को मालूम हो जाए और दूसरी यह कि जब मैं मुसलमानों के हाकिम के बारे में सुनता हूं कि वह इंसाफ़ वाले फ़ैसले करता है, तो इससे मुझे ख़ुशी होती है, हालांकि हो सकता है कि मुझे कभी भी अपना मुक़दमा उसके पास फ़ैसले के लिए ले जाना ही पड़े, और तीसरी यह कि जब मैं यह सुनता हूं कि मुसलमानों के फ़्लां इलाक़े

1. कंज़, भाग 7, पृ० 43,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 103,

में बारिश हुई है, तो इससे मुझे ख़ुशी होती है, हालांकि उस इलाक़े में मेरा कोई चरने वाला जानवर नहीं होता।[1]

लोगों के साथ नर्मी बरतना कि टूट न जाएं

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने ख़ानदान का बुरा आदमी है। (आपने इजाज़त दे दी) जब वह ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप सल्ल० ने बहुत ख़ुशी ज़ाहिर की। फिर वह आदमी चला गया।

फिर एक और आदमी ने इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अपने ख़ानदान का अच्छा आदमी है। जब वह अन्दर आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने कुछ ज़्यादा ख़ुशी ज़ाहिर न की। जब वह चला गया तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां ने इजाज़त मांगी तो आपने उसके बारे में फ़रमाया कि वह बुरा आदमी है, लेकिन जब वह अन्दर आया, तो आपने उसके सामने बड़ी ख़ुशी ज़ाहिर की, फिर दूसरे ने इजाज़त मांगी, आपने उसके बारे में अच्छे कलिमे कहे, लेकिन जब वह अन्दर आया तो आपको उसके साथ वैसा सुलूक करते हुए मैंने नहीं देखा, जैसा आपने पहले के साथ किया था?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा ! लोगों में सबसे बुरा आदमी वह है, जिसके शर की वजह से लोग उससे बचते हों।[2]

हज़रत सफ़वान बिन अस्साल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे। सामने से एक आदमी आया। जब हुज़ूर सल्ल० ने उसे देखा तो फ़रमाया, यह अपने ख़ानदान का बुरा आदमी है। जब वह करीब आया तो आपने उसे अपने पास बिठाया।

जब वह उठकर चला गया, तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 284, इसाबा, भाग 2, पृ० 234, हुलीया, भाग 1, पृ० 322,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 17, अदबुल मुफ़्रद, पृ० 190,

के रसूल सल्ल० ! जब आपने उसे देखा, तो आपने फ़रमाया, वह अपने ख़ानदान का बुरा आदमी है, लेकिन जब वह आया, तो उसे आपने अपने क़रीब बिठाया ?

आपने फ़रमाया, यह मुनाफ़िक़ है। मैं इसके निफ़ाक़ की वजह से इसके साथ नर्मी बरत रहा था, क्योंकि मुझे ख़तरा था कि यह दूसरों को मेरा मुख़ालिफ़ बना देगा और इन्हें बिगाड़ देगा।[1]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे थे कि इतने में क़ुरैश का एक आदमी सामने से आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे क़रीब बिठाया। जब वह उठकर चला गया, तो आपने फ़रमाया, ऐ बुरैदा ! तुम इसे जानते हो ?

मैंने कहा, जी हां, यह क़ुरैश के ऊंचे ख़ानदान का आदमी है और उनमें सबसे ज़्यादा मालदार है। आपने तीन बार पूछा, मैंने तीनों बार यही जवाब दिया। आख़िर में मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने अपनी जानकारी के मुताबिक़ आपको बताया है, वैसे आप मुझसे ज़्यादा जानते हैं।

आपने फ़रमाया, यह उन लोगों में से है जिन (के नेक कामों का) अल्लाह क़ियामत के दिन कोई वज़न नहीं क़ायम फ़रमाएंगे, (क्योंकि उनके पास नेक अमल हैं ही नहीं।)[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कभी-कभी हम लोग कुछ लोगों के सामने मुस्करा रहे होते हैं, लेकिन हमारे दिल उन्हें लानत कर रहे होते हैं।[3]

मुसलमान को राज़ी करना

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत

---

1. हुलीया, भाग 4, पृ० 191
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 17
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 222, फ़त्हुल बारी, भाग 2, पृ० 403, कंज़, भाग 2, पृ० 162

अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उन्होंने अपना कपड़ा पकड़ रखा था, जिससे उनके घुटने नंगे हो रहे थे और इसका उन्हें एहसास नहीं था। उन्हें देखकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे ये साथी झगड़ा करके आ रहे हैं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने आकर सलाम किया और अर्ज़ किया, मेरे और इब्ने ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के दर्मियान कुछ बात हो गई थी। जल्दी में मैं उनको नामुनासिब बात कह बैठा, लेकिन फिर मुझे शर्मिंदगी हुई, जिस पर मैंने उनसे माफ़ी मांगी, लेकिन उन्होंने माफ़ करने से इंकार कर दिया, तो मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो गया हूं, (अब आप जैसा फ़रमाएं)।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! अल्लाह तुम्हें माफ़ फ़रमाए।

इधर कुछ देर के बाद हज़रत उमर रज़ि० को शर्मिंदगी आई तो उन्होंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घर आकर पूछा, क्या यहां अबूबक्र हैं? घरवालों ने कहा, नहीं, तो वह भी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आ गए। उन्हें देखकर हुज़ूर सल्ल० का चेहरा (ग़ुस्से की वजह से) बदलने लगा, जिससे हज़रत अबूबक्र रज़ि० डर गए और उन्होंने घुटनों के बल बैठकर दो बार अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! अल्लाह की क़सम ! क़ुसूर मेरा ज़्यादा है।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे तुम लोगों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा था, तो तुम सबने कहा था, तुम ग़लत कहते हो, लेकिन उस वक़्त अबूबक्र रज़ि० ने कहा था, आप ठीक कहते हैं और उन्होंने अपने माल और जान के साथ मेरा साथ दिया। फिर आपने दो बार फ़रमाया, क्या तुम मेरे इस साथी को मेरी वजह से छोड़ दोगे?

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के इस फ़रमान के बाद किसी ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को कोई तक्लीफ़ न पहुंचाई ?[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र

1. सिफ़तुस्सफ़व:, भाग 1, पृ० 92.

रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ि० को कुछ बुरा-भला कह दिया, फिर अबूबक्र रज़ि० ने कहा, (मुझसे ग़लती हो गई, इसलिए) ऐ मेरे भाई! आप मेरे लिए अल्लाह से इस्तग़फ़ार करें।

हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आया हुआ था, इसलिए वह ख़ामोश रहे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह बात कई बार कही, लेकिन हज़रत उमर रज़ि० का ग़ुस्सा ठंडा न हुआ। लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और वहां जाकर बैठ गए और सारी बात हुज़ूर सल्ल० को बता दी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ उमर रज़ि० !) तुमसे तुम्हारा भाई इस्तग़फ़ार की मांग कर रहा है और तुम इसके लिए इस्तग़फ़ार नहीं कर रहे, यह क्या बात है?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर नबी बनाकर भेजा है, यह जितनी बार मुझसे इस्तग़फ़ार की मांग करते रहे, मैं हर बार (चुपके से) उनके लिए इस्तग़फ़ार करता था और आपके बाद अल्लाह की मख़्लूक़ में मुझे उनसे ज़्यादा महबूब कोई चीज़ नहीं है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है! आपके बाद मुझे भी इनसे ज़्यादा महबूब कोई नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे साथी के बारे में मुझे तक्लीफ़ न पहुंचाया करो, क्योंकि अल्लाह ने मुझे हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा था, तो तुम सबने कहा था कि तुम ग़लत कहते हो और अबूबक्र रज़ि० ने कहा था, आप ठीक कह रहे हैं, अगर अल्लाह ने (क़ुरआन में) उनका नाम साथी न रखा होता तो मैं उन्हें ख़लील (ख़ास दोस्त) बना लेता। बहरहाल वे मेरे दीनी भाई तो हैं ही और यह भाईचारा अल्लाह की वजह से है। ग़ौर से सुनो! (मस्जिद नबवी की ओर खुलने वाली) हर खिड़की बन्द कर दो, लेकिन (अबूबक्र रज़ि०) बिन अबी क़ुहाफ़ा की खिड़की खुली रहने दो।[1]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 45,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजा मोहतरमा हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने मुझे इंतिक़ाल के वक़्त बुलाया, (मैं उनके पास गई, तो मुझसे) कहा, हमारे दर्मियान कोई बात हो जाया करती थी, जैसे सौकनों में हुआ करती है, तो जो कुछ हुआ है, अल्लाह मुझे भी माफ़ करे और आपको भी।

मैंने कहा, अल्लाह आपकी ऐसी सारी बातें माफ़ फ़रमाए और उनसे दरगुज़र फ़रमाए और इन बातों की सज़ा से आपको बचाए।

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने कहा, आपने मुझे ख़ुश किया, अल्लाह आपको ख़ुश फ़रमाए, फिर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने पैग़ाम भेजकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाया और उनसे भी यही कहा।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार हो गईं, तो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास आए और अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ फ़ातिमा रज़ि० ! यह हज़रत अबूबक्र रज़ि० आपसे अन्दर आने की इजाज़त मांग रहे हैं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, क्या आप इसे पसन्द करते हैं कि मैं उनको इजाज़त दे दूं?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, हां। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने इजाज़त दी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० अन्दर आकर हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को राज़ी करने लगे और यों कहा, अल्लाह की क़सम ! मैंने घर-बार, माल व दौलत, बाल-बच्चे और ख़ानदान को सिर्फ़ इसलिए छोड़ा था ताकि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० राज़ी हो जाएं और (हुज़ूर सल्ल० के) अहले बैत यानी आप लोग (यानी घरवाले) राज़ी हो जाएं। बहरहाल हज़रत अबूबक्र रज़ि० उन्हें राज़ी करते रहे, यहां तक कि वे राज़ी हो गईं।[2]

---

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 100
2. बैहक़ी, भाग 6, पृ० 301, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 27

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मुझे फ़्लां आदमी से नफ़रत है। किसी ने आकर उस आदमी से कहा, क्या बात है? हज़रत उमर रज़ि० तुमसे क्यों नफ़रत करते हैं?

जब बहुत से लोगों ने घर आकर उस आदमी को यह बात कही, तो उस आदमी ने आकर हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ उमर रज़ि० ! क्या मैंने (मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ पैदा करके) इस्लाम में कोई दराड़ डाली है? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं।

फिर उसने कहा, क्या मैंने किसी इंसान पर ज़्यादती की है? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं।

फिर उसने कहा, क्या मैंने इस्लाम में कोई नई चीज़ चलने दी है? (जो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो) हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं।

फिर उस आदमी ने कहा, तो फिर आप किस वजह से मुझसे नफ़रत करते हैं? हालांकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا۔ (سورت احزاب آیت ۵۸)

'और जो लोग ईमान वाले मर्दों को और ईमान वाली औरतों को, अलावा इसके कि उन्होंने कुछ किया हो, पीड़ा पहुंचाते हैं, तो वे लोग बोहतान और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं।' (सूरः अहज़ाब, आयत 58)

और आपने (यह जुम्ला कहकर) पीड़ा पहुंचाई है, अल्लाह आपको बिल्कुल माफ़ न करे।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह आदमी बिल्कुल ठीक कह रहा है। अल्लाह की क़सम! इसने न तो दराड़ डाली है और न कुछ और किया है (वाक़ई मुझसे ग़लती हो गई है) ऐ अल्लाह! मेरी यह ग़लती माफ़ फ़रमा और हज़रत उमर रज़ि० उससे माफ़ी मांगते रहे, यहां तक कि उसने माफ़ कर दिया।[1]

---

1. कंज़, भाग 1, पृ० 260

हज़रत रजा बिन रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, मैं मदीना मुनव्वरा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में एक हलक़े में बैठा हुआ था। उस हलक़े में हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी थे कि इतने में उस हलक़े पर हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का गुज़र हुआ। उन्होंने सलाम किया, सब हलक़े वालों ने जवाब दिया, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० ख़ामोश रहे, बल्कि कुछ देर के बाद वह हज़रत हसन रज़ि० के पीछे गए और जाकर कहा, 'व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि' फिर (हज़रत अबू सईद साथ थे, उनसे) कहा, यह वह इंसान है जो तमाम ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब है। अल्लाह की क़सम! सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के बाद से आज तक मैंने उनसे बात नहीं की, तो हज़रत अबू सईद रज़ि० ने कहा, आप उनके पास जाकर अपना उज़्र क्यों नहीं बयान कर देते?

उन्होंने कहा, बहुत अच्छा, (मैं तैयार हूं, इतने में हज़रत हसन रज़ि० अपने घर में अन्दर जा चुके थे) हज़रत अब्दुल्लाह वहां खड़े हो गए और हज़रत अबू सईद रज़ि० ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत हसन रज़ि० ने इजाज़त दे दी। फिर अन्दर जाकर हज़रत अबू सईद रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० के लिए इजाज़त मांगी। (उनको भी इजाज़त मिल गई) और वह अन्दर चले गए।

हज़रत अबू सईद रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० से कहा, हज़रत हसन रज़ि० के गुज़रने पर आपने जो बात हमसे कही थी, वह ज़रा अब फिर कह दें।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, बहुत अच्छा। मैंने यह कहा था कि यह तमाम ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब हैं। इस पर हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम्हें मालूम है कि मैं तमाम ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब हूं, तो फिर तुमने सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन हमसे लड़ाई क्यों की? या तुमने हमारे मुख़ालिफ़ों की तायदाद में बढ़ोत्तरी क्यों की?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, अल्लाह की क़सम, न तो मैंने फ़ौज की

तायदाद में बढ़ौत्तरी की और न मैंने उनके साथ होकर तलवार चलाई, अलबत्ता मैं अपने वालिद के साथ गया था। हज़रत हसन रज़ि० ने कहा, क्या आपको मालूम नहीं कि जिस काम से अल्लाह की नाफ़रमानी हो रही हो, उस काम में मख़्लूक़ की बात नहीं माननी चाहिए?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, जी मालूम है, लेकिन मैं वालिद साहब के साथ इसलिए गया था कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में लगातार रोज़े रखा करता था। मेरे वालिद ने हुज़ूर सल्ल० से इस बारे में मेरी शिकायत की और यों कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! अब्दुल्लाह बिन अम्र दिन भर रोज़े रखता है और रात भर इबादत करता है।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, कभी रोज़े रखा करो, कभी इफ़्तार किया करो और रात को कभी नमाज़ पढ़ा करो और कभी सोया करो, क्योंकि मैं नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं और रोज़े भी रखता हूं और इफ़्तार भी करता हूं और हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे यह भी फ़रमाया था, ऐ अब्दुल्लाह! अपने वालिद की बात माना करो, (चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने वालिद की बात मानने की मुझे बहुत ताकीद की थी, इसलिए) जब वह सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में शरीक हुए तो मुझे उनके साथ जाना पड़ा।[1]

हज़रत रजा बिन रबीआ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में था, (वहां और लोग भी थे) कि इतने में हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा वहां से गुज़रे। उन्होंने सलाम किया। लोगों ने सलाम का जवाब दिया, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा (भी वहां थे, वह) ख़ामोश रहे। जब लोग ख़ामोश हो गए, तो फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने ऊंची आवाज़ से कहा, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, मैं तुम्हें वह आदमी न बताऊं जो ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब है?

लोगों ने कहा, ज़रूर बताएं।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 177

उन्होंने कहा, यही हज़रत हैं जो अभी यहां से गुज़र गए हैं। अल्लाह की क़सम! सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के बाद से अब तक न मैं इनसे बात कर सका हूं और न इन्होंने मुझसे बात की है और अल्लाह की क़सम! इनका मुझसे राज़ी हो जाना मुझे उहुद पहाड़ जितना माल मिलने से ज़्यादा महबूब है।

हज़रत अबू सईद ने उनसे कहा, तुम उनके पास चले क्यों नहीं जाते?

उन्होंने कहा, मैं जाने को तैयार हूं। चुनांचे दोनों ने तै किया कि अगले दिन सुबह उनके पास जाएंगे। (वे दोनों अगले दिन सुबह उनके पास गए) मैं भी उन दोनों के साथ गया। हज़रत अबू सईद ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत हुसैन रज़ि० ने इजाज़त दे दी। मैं और हज़रत अबू सईद रज़ि० अन्दर चले गए।

हज़रत अबू सईद रज़ि० ने हज़रत इब्ने अम्र रज़ि० के लिए इजाज़त मांगी, लेकिन हज़रत हुसैन रज़ि० ने इजाज़त न दी, लेकिन हज़रत अबू सईद रज़ि० इजाज़त मांगते रहे। आख़िर हज़रत हुसैन रज़ि० ने इजाज़त दे दी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० अन्दर आए। उन्हें देखकर हज़रत अबू सईद अपनी जगह से हटने लगे। वह हज़रत हुसैन रज़ि० के पहलू में बैठे हुए थे, तो हज़रत हुसैन रज़ि० ने हज़रत अबू सईद को अपनी तरफ़ खींच लिया। हज़रत इब्ने अम्र रज़ि० खड़े रहे, बैठे नहीं। जब हज़रत हुसैन रज़ि० ने यह मंज़र देखा तो उन्होंने हज़रत अबू सईद रज़ि० को ज़रा परे करके बैठने की जगह बना दी। वहां आकर हज़रत अब्दुल्लाह दोनों के बीच में बैठ गये।

फिर हज़रत अबू सईद ने सारा क़िस्सा सुनाया, तो हज़रत हुसैन रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने अम्र! क्या ऐसी ही बात है? क्या आप यह समझते हैं कि मैं तमाम ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब हूं?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, जी हां बिल्कुल, रब्बे काबा की क़सम! आप तमाम ज़मीन वालों में से आसमान वालों को सबसे ज़्यादा महबूब हैं।

हज़रत हुसैन रज़ि० ने कहा, तो फिर आपने सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन मुझसे और मेरे वालिद से क्यों लड़ाई की? अल्लाह की क़सम! मेरे वालिद तो मुझसे बेहतर थे।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, बिल्कुल आपके वालिद आपसे भी बेहतर हैं। लेकिन बात यह है कि हज़रत अम्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरी यह शिकायत की थी कि अब्दुल्लाह दिन भर रोज़े रखता है और रात भर इबादत करता है। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, रात को नमाज़ भी पढ़ा करो और सोया भी करो और दिन में रोज़े भी रखा करो और इफ़्तार भी किया करो और (अपने वालिद) अम्र की बात माना करो। सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के मौक़े पर उन्होंने मुझे क़सम देकर कहा था कि इसमें शिर्कत करो। अल्लाह की क़सम! मैंने न तो उनकी फ़ौज में बढ़ोत्तरी की और मैंने तलवार सूँती और न नेज़ा किसी का मारा, न तीर चलाया।

हज़रत हुसैन रज़ि० ने कहा, क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि जिस काम से ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) की नाफ़रमानी हो रही हो, उसमें मख़्लूक़ (जीव) की नहीं माननी चाहिए?

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, मालूम है। हज़रत अब्दुल्लाह अपना उज़्र बार-बार बयान करते रहे, जिस पर आख़िर में हज़रत हुसैन रज़ि० ने उनके उज़्र को क़ुबूल कर लिया।[1]

मुसलमान की ज़रूरत पूरी करना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे मालूम नहीं कि अल्लाह ने इन दो नेमतों में से कौन-सी नेमत नवाज़ कर मुझ पर बड़ा एहसान किया है—

एक यह कि एक आदमी यह उम्मीद लगाकर मेरी ओर ख़ुलूस भरे चेहरे के साथ आता है कि उसकी ज़रूरत मुझसे पूरी होगी, दूसरी यह कि अल्लाह मेरे हाथों उसकी ज़रूरत आसानी से पूरी कर देते हैं। (अब

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 187

यह उसका मुझसे अपनी उम्मीद लगाना, यह अल्लाह की बड़ी नेमत है या मेरा उसकी ज़रूरत को पूरा करना बड़ी नेमत है) और मैं किसी मुसलमान की एक ज़रूरत पूरी कर दूं, यह मुझे ज़मीन पर सोना-चांदी मिलने से ज़्यादा महबूब है।[1]

मुसलमान की ज़रूरत के लिए खड़ा होना

हज़रत अबू यज़ीद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा लोगों के साथ चली जा रही थीं कि उनसे हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात हुई। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से रुकने को कहा। हज़रत उमर रज़ि० रुक गए और उनके क़रीब आ गए और उनकी तरफ़ सर झुका लिया और अपने दोनों हाथ उनके कंधों पर रखकर उनकी बात सुनने लगे। (चूंकि बहुत बूढ़ी थीं, इसलिए हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें संभालने के लिए उनके कंधे पर हाथ रखे) और यों ही खड़े रहे, यहां तक कि हज़रत ख़ौला रज़ि० ने अपनी बात पूरी कर ली और वापस चली गईं।

इस पर एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस बुढ़िया की वजह से आपने क़ुरैश के बड़े-बड़े मर्दों को रोके रखा?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तेरा नास हो, तू जानता है, यह औरत कौन है?

उसने कहा, नहीं, मैं नहीं जानता।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह वह औरत है जिसकी शिकायत अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर से सुनी थी। यह हज़रत ख़ौला बिन्त सालबा हैं। अल्लाह की क़सम! अगर यह रात तक मेरे पास से न हटतीं, तो मैं भी उनकी बात के पूरा होने तक यों ही खड़ा रहता।[2]

हज़रत सुमामा बिन हज़्न रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार

---

1. कंज़, भाग 3, पृ० 317
2. इब्ने अबी हातिम, दारमी, बैहक़ी,

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अपने गधे पर चले जा रहे थे कि उन्हें एक औरत मिली। उस औरत ने कहा, ठहरिए ऐ उमर रज़ि०! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु ठहर गए। उस औरत ने हज़रत उमर रज़ि० से बड़ी सख़्ती से बात की। इस पर एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने आज जैसा मंज़र तो कभी देखा नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मैं उस औरत की बात क्यों न सुनूं, जबकि यह वह औरत है, जिसकी बात को अल्लाह ने सुना और इसी औरत के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी—

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِیْ تُجَادِلُكَ فِیْ زَوْجِهَا (سورت مُجَادَلَه آيت ۱)

'बेशक अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली, जो आपसे अपने शौहर के मामले में झगड़ती थी।' (सूरः मुजादला, आयत 1)

मुसलमान की ज़रूरत के लिए चलकर जाना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में एतकाफ़ कर रहे थे। आपके पास एक आदमी आया और सलाम करके (चुपचाप) बैठ गया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने उससे फ़रमाया कि मैं तुम्हें ग़मज़दा और परेशान देख रहा हूं, क्या बात है?

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल के चचा के बेटे रज़ि०! मैं बेशक परेशान हूं कि फ़्लां का मुझ पर हक़ है और (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक क़ब्र की तरफ़ इशारा करके कहा कि) इस क़ब्र वाले की इज़्ज़त की क़सम! मैं इस हक़ के अदा करने पर क़ुदरत नहीं रखता।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, अच्छा क्या मैं उससे तुम्हारी सिफ़ारिश करूं?

उसने अर्ज़ किया, अगर आप मुनासिब समझें तो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० यह सुनकर जूता पहनकर मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाए। उस आदमी ने अर्ज़ किया, आप अपना एतकाफ़ भूल गए?

फ़रमाया, भूला नहीं हूं, बल्कि मैंने इस क़ब्र वाले (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुना है और अभी ज़माना कुछ ज़्यादा नहीं गुज़रा, (यह लफ़्ज़ कहते हुए) इब्ने अब्बास रज़ि० की आंखों से आंसू बहने लगे कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे थे कि जो आदमी अपने भाई के काम के लिए चले और उस काम में कामियाब हो जाए, तो उसके लिए यह दस साल के एतकाफ़ से अफ़ज़ल है और जो आदमी एक दिन का एतकाफ़ भी अल्लाह की रिज़ा के वास्ते करता है तो अल्लाह उसके और जहन्नम के दर्मियान तीन ख़ंदक़ें आड़ फ़रमा देते हैं, जिसकी दूरी, आसमान, ज़मीन की दूरी से भी ज़्यादा है (और जब एक दिन के एतकाफ़ की यह फ़ज़ीलत है तो दस बरस के एतकाफ़ की क्या कुछ होगी।)[1]

मुसलमान की ज़ियारत करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुसूसी तौर पर भी और आम तौर पर भी अंसार को मिलने बहुत जाया करते थे। जब किसी से ख़ास मुलाक़ात करनी होती, तो उसके घर तशरीफ़ ले जाते और जब आम मुलाक़ात करनी होती तो उनकी मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते। (वहां सबसे मुलाक़ात हो जाती।)[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंसार के एक घराने से मिलने तशरीफ़ ले गए, आपने उनके पास खाना भी खाया। जब आप वहां से बाहर आने लगे तो आपने कमरे में नमाज़ पढ़ने के लिए जगह बनाने का हुक्म दिया, तो उन लोगों ने आपके लिए एक चटाई बिछाकर उस पर पानी छिड़क दिया (ताकि नर्म हो जाए) फिर आपने उस पर नमाज़ पढ़ी और उनके लिए दुआ फ़रमाई।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

1. तर्ग़ीब, भाग 2, पृ० 272,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 173,
3. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 53

व सल्लम अपने दो सहाबा रज़ि० के दर्मियान भाईचारा करा देते थे (तो उनमें आपस में इतनी मुहब्बत हो जाती थी) कि जब तक उनमें से एक दूसरे से मिल न लेता था, उस वक़्त तक उसे वह रात बहुत लम्बी मालूम होती थी।

चुनांचे वह अपने भाई से बड़ी मुहब्बत और नर्मी से मिलता और पूछता, आप मेरे बाद कैसे रहे? और दूसरे लोगों का (जिनमें भाईचारा न होता था) यह हाल था कि तीन दिन के अन्दर हर एक दूसरे से मिलकर उसका सारा हाल मालूम कर लिया करता था।[1]

हज़रत औन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथी (कूफ़ा से मदीना) उनके पास आए, तो उनसे हज़रत अब्दुल्लाह ने पूछा, क्या तुम एक दूसरे के पास बैठते रहते हो?

उन लोगों ने कहा, (जी हां) यह काम हम नहीं छोड़ सकते। फिर पूछा, क्या तुम लोग आपस में एक दूसरे से मिलते रहते हो?

उन लोगों ने कहा, जी हां, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! (हमारी तो यह हालत है कि) हम में से किसी को उसका भाई नहीं मिलता, तो उसे पैदल ढूंढता हुआ कूफ़ा के आख़िरी किनारे तक चला जाता है और उससे मिलकर ही वापस आता है।

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, जब तक तुम यह काम करते रहोगे, तुम लोग ख़ैर पर रहोगे।[2]

हज़रत[1] उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हमें मिलने के लिए मदाइन से पैदल चलकर शामदेश आए। उस वक़्त उन्होंने घुटनों तक की शलवार पहनी हुई थी।[3]

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 174
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 144,
3. अबदुल मुफ़रद, पृ० 52

मुसलमानों का इक्राम

मिलने के लिए आने वालों का इक्राम करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने (इक्राम के लिए) मेरी तरफ़ एक तकिया कर दिया, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी, लेकिन मैं (अदब की वजह से) उस पर न बैठा और वह तकिया यों ही मेरे और हुज़ूर सल्ल० के बीच में पड़ा रहा।[1]

हज़रत उम्मे साद बिन्त साद बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गई। उन्होंने मेरे लिए अपना कपड़ा बिछा दिया, जिस पर मैं बैठ गई। इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी अन्दर आ गए, उन्होंने पूछा (कि यह औरत कौन है जिसका यह इक्राम हो रहा है ?)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, यह उस आदमी की बेटी हैं जो मुझसे भी बेहतर था और आपसे भी।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा रज़ि० ! वह आदमी कौन है ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, यह उस आदमी की बेटी है, जिसका हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में इंतिक़ाल हो गया और उन्हें जन्नत में ठिकाना मिल गया। अब पीछे मैं और आप रह गए हैं।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत उमर रज़ि० तकिए पर टेक लगाए हुए थे। हज़रत सलमान रज़ि० को देखकर उन्होंने वह तकिया हज़रत सलमान रज़ि० के लिए रख दिया। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, अल्लाह और

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 174,
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 27, हैसमी, भाग 9, पृ० 310, हाकिम, भाग 3, पृ० 607,

उसके रसूल सल्ल० ने सच फ़रमाया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! अल्लाह और रसूल सल्ल० का वह फ़रमान ज़रा हमें भी सुनाएं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप एक तकिए पर टेक लगाए हुए थे। आपने वह तकिया मेरे लिए रख दिया, फिर मुझसे फ़रमाया, ऐ सलमान! जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई के पास जाता है और वह मेज़बान उसके इकराम के लिए तकिया रख देता है, अल्लाह उसकी मग़्फ़िरत ज़रूर फ़रमाएंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए, वह एक तकिया पर टेक लगाए हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने वह तकिया हज़रत सलमान रज़ि० के लिए रख दिया, फिर कहा, ऐ सलमान रज़ि०! जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई के पास जाता है और वह मेज़बान उसके इकराम में तकिया रख देता है, तो अल्लाह उसकी मग़्फ़िरत ज़रूर फ़रमाते हैं।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० के पास गए। हज़रत सलमान रज़ि० ने उनके लिए एक तकिया रख दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! यह क्या है?

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जिस मुसलमान के पास उसका मुसलमान भाई जाता है, वह उसके इकराम व ताज़ीम के लिए एक तकिया रख देता है, तो अल्लाह उसकी मग़्फ़िरत ज़रूर फ़रमा देते हैं।[3]

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 599,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 174,
3. तबरानी,

हज़रत इब्राहीम बिन नशीत रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़ ज़ुबैदी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया। उनके नीचे एक तकिया था। उन्होंने उसे उठाकर मेरी तरफ़ फेंका और फ़रमाया, जो आदमी अपने साथी का इक्राम न करे, उसका हज़रत अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कोई ताल्लुक़ नहीं है।[1]

मेहमान का इक्राम करना

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत अबू उसैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी शादी (के वलीमा) में बुलाया और उस दिन उनकी बीवी उन मेहमानों की ख़िदमत कर रही थी और वह दुल्हन थी। उनकी बीवी ने कहा, क्या तुम लोगों को पता है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० के लिए क्या भिगोया था? मैंने तांबे या पत्थर के छोटे बरतन में रात को हुज़ूर सल्ल० के लिए खजूरें भिगोई थीं,(ताकि हुज़ूर सल्ल० शरबत पी सकें।)[2]

एक साहब बयान करते हैं कि दो आदमी हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़ ज़ुबैदी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए। वह एक तकिया पर टेक लगाए हुए थे। उन्होंने उसे उठाकर उन दोनों के लिए रख दिया। उन दोनों आदमियों ने कहा, हम तो यह नहीं चाहते, हम तो कुछ सुनने आए थे, ताकि हमें इससे फ़ायदा हो।

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, जो अपने मेहमान का इकराम नहीं करता, उसका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कोई ताल्लुक़ नहीं। ख़ुशहाली और नेक अंजामी है उस आदमी के लिए जो अपने घोड़े की रस्सी अल्लाह के रास्ते में पकड़े हुए है और रोटी के एक टुकड़े और ठंडे पानी पर इफ़्तार कर लेता है और बड़ी ख़राबी है उन लोगों के लिए जो गाय और बैल

---

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 146,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 110,

की तरह (अलग-अलग मज़ेदार खाने के लिए) अपनी ज़ुबान घुमाते हैं और अपने नौकर से कहते हैं, फ़्लां चीज़ उठा ले और फ़्लां चीज़ रख दे और खाने में ऐसे लगते हैं कि अल्लाह का ज़िक्र बिल्कुल नहीं करते।[1]

क़ौम के बड़े और मोहतरम आदमी का इक्राम करना

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बज़ली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० एक घर में थे जो सहाबा किराम से भरा हुआ था। हज़रत जरीर दरवाज़े पर खड़े हो गए, उन्हें देखकर हुज़ूर सल्ल० ने दाएं-बाएं तरफ़ देखा, आपको बैठने की कोई जगह नज़र न आई। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी चादर उठाई और उसे लपेट कर हज़रत जरीर की तरफ़ फेंक दिया और फ़रमाया, इस पर बैठ जाओ।

हज़रत जरीर रज़ि० ने चादर लेकर अपने सीने से लगा ली और उसे चूमकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वापस कर दिया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह आपका ऐसा इकराम फ़रमाए जैसे आपने मेरा इकराम फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का इज़्ज़तदार आदमी आए, तो तुम उसका इकराम करो।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में) घर में हाज़िर हुए। घर सहाबा किराम रज़ि० से भरा हुआ था, उन्हें बैठने की कोई जगह न मिली। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी चादर उनकी ओर फेंकी और फ़रमाया, इस पर बैठ जाओ। हज़रत जरीर रज़ि० ने उसे लिया और सीने से लगाकर उसे चूमा और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह आपका ऐसे इकराम फ़रमाए जैसे आपने मेरा इक्राम फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का बड़ा और

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 66,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 15,

मोहतरम आदमी आए, तो तुम उसका इक्राम करो।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उऐना बिन हिस्न रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा भी थे, और ये सब लोग ज़मीन पर बैठे हुए थे। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उऐना के लिए गधा मंगवाया और उन्हें उस पर बिठाया और फ़रमाया, जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का बड़ा और इज़्ज़तदार आदमी आए तो तुम उसका इकराम करो।[2]

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए एक तकिया रख दिया, लेकिन यह ज़मीन पर ही बैठे और अर्ज़ किया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप धरती पर न तो बरतरी चाहते हैं और न फ़साद बरपा करना चाहते हैं और मुसलमान हो गए।

सहाबा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! आज हमने (अदी के लिए) आपकी तरफ़ से इकराम का जो मंज़र देखा है, यह कभी भी किसी के लिए नहीं देखा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ठीक कहते हो, यह एक क़ौम का बड़ा और मोहतरम आदमी है और जब किसी क़ौम का बड़ा और मोहतरम आदमी तुम्हारे पास आए तो तुम उसका इकराम करो।[3]

हज़रत अबू राशिद अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं अपनी क़ौम के सौ आदमियों के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, जब हम हुज़ूर सल्ल० के क़रीब पहुंच गए तो हम रुक गए और मेरे साथियों ने मुझसे कहा, ऐ अबू मुआविया ! तुम आगे बढ़ो (और हालात देखो) अगर तुम्हें अच्छे हालात नज़र आएं तो वापस आकर हमें बताना, तो हम भी उनकी ख़िदमत में

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 16,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 16,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 55,

हाज़िर हो जाएंगे और अगर तुम्हें कुछ अच्छे हालात नज़र न आएं, तो फिर वापस आकर बताना, हम अपने इलाक़े को लौट जाएंगे।

मैं उमर में उन सबसे छोटा था। मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर (जाहिलियत के तरीक़े पर सलाम किया और) कहा, ऐ मुहम्मद ! आपकी सुबह अच्छी हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुसलमान इस तरह एक दूसरे को सलाम नहीं करते।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुसलमान एक दूसरे के किस तरह सलाम करते हैं ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम किसी मुसलमान क़ौम के पास पहुंचो, तो यों कहो, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

मैंने कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलल्लाहि व बरकातुहू।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। फिर आपने फ़रमाया, तुम्हारा नाम क्या है ? और तुम कौन हो ?

मैंने कहा, मैं अबू मुग़वीया अब्दुल्लाति वल उज़्ज़ा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया (यह कुन्नियत और नाम ठीक नहीं है) बल्कि अबू राशिद अब्दुर्रहमान हो। हुज़ूर सल्ल० ने मेरा इक्राम फ़रमाया और मुझे अपने पास बिठाया और मुझे अपनी चादर पहनाई और अपनी जूती और लाठी मुझे अता फ़रमाई। फिर मैं मुसलमान हो गया। पास बैठे हुए कुछ लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम देख रहे हैं, आप इस आदमी का बहुत इक्राम फ़रमा रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अपनी क़ौम का सरदार और इज़्ज़त वाला आदमी है (इसलिए मैंने इतना इक्राम किया है) जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का सरदार आए तो तुम उसका इक्राम करो। आगे और हदीस भी है।[1]

---

1. कुन्नी, भाग 1, पृ० 31, इसाबा, भाग 2, पृ० 409, कंज़, भाग 5, पृ० 216,

क़ौम के सरदार का दिल रखना

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, तुम जुऐल को कैसा समझते हो?

मैंने कहा, मुझे तो वह और लोगों की तरह मिस्कीन नज़र आते हैं। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम फ़्लां को कैसा समझते हो? मैंने कहा, वह तो सरदार लोगों में से एक सरदार है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर इन जैसों से सारी ज़मीन भर जाए तो एक जुऐल इन सबसे बेहतर है।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! फ़्लां है तो ऐसा, लेकिन आप उसका बहुत इक्राम करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अपनी क़ौम का सरदार है। मैं दिल रखने के लिए उसका इतना इक्राम करता हूं।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने हज़रत उऐना बिन हिस्न और हज़रत अक़रअ बिन हाबिस को सौ-सौ (ऊंट) दिए हैं और हज़रत जुऐल को आपने छोड़ दिया, (उन्हें कुछ नहीं दिया।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर उऐना और अक़रअ से सारी ज़मीन भर जाए, तो जुऐल बिन सुराक़ा इन सबसे बेहतर है, लेकिन मैं इन दोनों का दिल रख रहा हूं और जुऐल को उनके ईमान के सुपुर्द करता हूं (कि अल्लाह उनकी मदद करेंगे।)[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवालों का इक्राम करना

हज़रत यज़ीद बिन हय्यान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत हुसैन बिन सबरा और हज़रत अम्र बिन मुस्लिम, तीनों हज़रत ज़ैद

---

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 353, कंज़, भाग 3, पृ० 320
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 239, हुलीया, भाग 1, पृ० 253.

बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गए, जब हम उनके पास बैठ गए, तो हज़रत हुसैन ने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ हज़रत ज़ैद ! आपने बहुत ज़्यादा ख़ैर की बातें देखी हैं। आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है, उनकी हदीस को सुना है, उनके साथ ग़ज़वों (लड़ाइयों) में शरीक हुए हैं, उनके पीछे नमाज़ें पढ़ी हैं, ऐ हज़रत ज़ैद ! आपने बहुत ज़्यादा ख़ैर की बातें देखी हैं। ऐ हज़रत ज़ैद ! हुज़ूर सल्ल० से सुनी हुई कोई हदीस हमें भी सुना दें।

हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! अल्लाह की क़सम, मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है और बड़ी मुद्दत गुज़र गई है, हुज़ूर सल्ल० की जो बातें मैंने याद की थीं और समझी थीं, उनमें से कुछ मुझे भूल गई हैं, इसलिए जो हदीस मैं तुम्हें सुनाऊं, वह तो तुम सुन लो और जो मैं तुम्हें सुना न सकूं, उस पर तुम मुझे मजबूर न करो।

फिर उन्होंने फ़रमाया, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का और मदीना के दर्मियान ख़ुम नामी चश्मे के पास हम लोगों में खड़े होकर बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर वाज़ व नसीहत फ़रमाई, फिर फ़रमाया—

'ऐ लोगो ! ग़ौर से सुनो, मैं एक इंसान ही हूं। बहुत जल्द मेरे रब का क़ासिद (मौत का फ़रिश्ता) मुझे बुलाने आएगा, जिस पर मैं चला जाऊंगा। मैं तुममें दो भारी चीज़ें छोड़कर जा रहा हूं, एक अल्लाह की किताब (यानी क़ुरआन मजीद) है, इसमें हिदायत और नूर है, इसलिए अल्लाह की किताब को लो और उसे मज़बूती से पकड़ो। फिर आपने क़ुरआन के बारे में ख़ूब तर्ग़ीब दी, फिर फ़रमाया, दूसरी चीज़ मेरे घरवाले हैं। मैं तुम्हें अपने घरवालों के बारे में अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं। मैं तुम्हें अपने घरवालों के बारे में अल्लाह से डरने की वसीयत करता हूं।'

हज़रत हुसैन ने पूछा, ऐ हज़रत ज़ैद ! हुज़ूर सल्ल० के घरवाले कौन हैं? क्या हुज़ूर सल्ल० की बीवियां हुज़ूर सल्ल० के घरवालों में से नहीं हैं?

उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० की बीवियां हुज़ूर सल्ल० के घरवालों में से हैं, लेकिन हुज़ूर सल्ल० के असल घरवाले वे हैं जिनको हुज़ूर सल्ल० के बाद ज़कात-सदक़ा लेना हराम है।

हज़रत हुसैन ने पूछा, वे कौन हैं?

हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया, आले अली रज़ि०, आले अक़ील रज़ि०, आले जाफ़र रज़ि० और आले अब्बास रज़ि० हैं।

हज़रत हुसैन ने पूछा, क्या इन सबको ज़कात-सदक़ा लेना हराम है? उन्होंने कहा, हां।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवालों के बारे में हुज़ूर सल्ल० की निस्बत का ख़्याल रखो।[2]

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा रज़ि० के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। आपके पहलू में हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु सामने से आए। उनको देखकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने बैठने की जगह बना ली। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० के और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के सामने बैठ गए।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से फ़रमाया, फ़ज़ीलत वालों की फ़ज़ीलत को फ़ज़ीलत वाले ही जानते हैं। फिर हज़रत अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से बात करने लगे, तो हुज़ूर सल्ल० ने अपनी आवाज़ को बहुत ही ज़्यादा पस्त कर लिया।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, ऐसा मालूम होता है कि हुज़ूर सल्ल० को अचानक सख़्त बीमारी पेश आ गई है, (जिसकी वजह से हुज़ूर सल्ल० ऊंची आवाज़ नहीं कर पा रहे हैं।)

1. कंज़, भाग 5, पृ० 95
2. कंज़, भाग 5, पृ० 94

मेरे दिल में इस बीमारी से सख़्त परेशानी है। हज़रत अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास बैठे बातें करते रहे और जब काम पूरा हो गया, तो वह वापस चले गए।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपको अभी कोई बीमारी पेश आ गई थी ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने देखा कि आपने अपनी आवाज़ बहुत पस्त कर ली थी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हज़रत जिब्रील ने मुझे हुक्म दिया है कि जब हज़रत अब्बास रज़ि० आया करें, तो मैं अपनी आवाज़ पस्त कर लिया करूं, जैसे हज़रत जिब्रील अलै० ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम मेरे सामने अपनी आवाज़ पस्त कर लिया करो।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए बैठने की एक ख़ास जगह थी। वहां से वह सिर्फ़ हज़रत अब्बास रज़ि० के लिए उठा करते थे। हज़रत अब्बास रज़ि० के इस इक्राम से हुज़ूर सल्ल० को बहुत ख़ुशी होती थी।

एक दिन हज़रत अब्बास रज़ि० सामने से आए, उन्हें देखकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० अपनी जगह से हट गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनको फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके चचा सामने से आ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० की तरफ़ देखा, फिर मुस्कराते हुए हज़रत अबूबक्र रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, यह अब्बास रज़ि० सामने आ रहे हैं। उन्होंने सफ़ेद कपड़े पहन रखे हैं, लेकिन उनके बाद उनकी औलाद काले कपड़े पहनेगी और उनकी औलाद में से बारह आदमी बादशाह बनेंगे। जब हज़रत अब्बास रज़ि० पहुंच गए तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने अबूबक्र रज़ि० को कुछ फ़रमाया है ?

1. कंज़, भाग 4, पृ० 68,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने उनको ख़ैर की ही बात कही है।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप ठीक फ़रमा रहे हैं। आप हमेशा ख़ैर ही की बात फ़रमाया करते हैं, (लेकिन ज़रा मुझे बता दें कि आपने क्या फ़रमाया है?)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने कहा था, मेरे चचा अब्बास रज़ि० आ रहे हैं, उन्होंने सफ़ेद कपड़े पहन रखे हैं और उनकी औलाद उनके बाद काले कपड़े पहनेगी और उनमें से बारह आदमी बादशाह बनेंगे।[1]

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा (जो कि सहाबी हैं) रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज्लिस में तशरीफ़ फ़रमा होते तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के दाएं तरफ़, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के बाएं तरफ़ और हज़रत उस्मान रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सामने बैठते और हज़रत उस्मान रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के राज़ की बातें लिखा करते थे। जब हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु आते तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अपनी जगह से हट जाते और वहां हज़रत अब्बास रज़ि० बैठ जाते।[2]

हज़रत मुत्तलिब बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए। हज़रत अब्बास रज़ि० गुस्से में थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात पेश आई?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम बनू हाशिम का और क़ुरैश का क्या बनेगा?

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुम्हें इनकी तरफ़ से क्या बात पेश आई है?

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, जब वे आपस में एक दूसरे से मिलते हैं, तो बड़ी ख़ुशी से खुलकर मिलते हैं और हमसे मिलते वक़्त उनकी यह हालत नहीं होती है। यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० को इतना गुस्सा आ

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 270, कंज़, भाग 5, पृ० 211,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 214,

गया कि आपकी दोनों आंखों के बीच की नस फूल गई। जब आपका गुस्सा कम हुआ तो आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है, किसी आदमी के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नहीं हो सकता, जब तक वह तुम (बनू हाशिम) से अल्लाह और रसूल की वजह से मुहब्बत न करे। फिर आपने फ़रमाया, उन लोगों को क्या हो गया है कि मुझे अब्बास रज़ि० के बारे में तक्लीफ़ देते हैं। आदमी का चचा उसके बाप जैसा होता है।[1]

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये क़ुरैशी लोग आपस में हंसमुख और अच्छे चेहरे के साथ मिलते हैं और हमसे ऐसे अजनबी चेहरों के साथ मिलते हैं कि जैसे हम उनको जानते न हों। हुज़ूर सल्ल० को यह सुनकर बहुत ज़्यादा गुस्सा आ गया और आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद की जान है ! आदमी के दिल में ईमान उसी वक़्त दाख़िल होगा, जब वह तुम (बनू हाशिम) से अल्लाह और रसूल की वजह से मुहब्बत करेगा।[2]

हज़रत इस्मा रज़ियल्लाहु अन्हु रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक दिन हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में गए, तो उन्हें लोगों के चेहरे में नागवारी नज़र आई। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में घर वापस आ गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! न मालूम मुझसे क्या क़ुसूर हो गया है, जब भी मस्जिद में जाता हूं, मुझे लोगों के चेहरों में नागवारी नज़र आती है। आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! जब तक तुम अब्बास रज़ि० से मुहब्बत नहीं करोगे, उस वक़्त तक तुम मोमिन नहीं बन सकोगे।[3]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. हाकिम
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 333,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 269

अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को लोगों से ज़कात वसूल करने के लिए भेजा। उनकी सबसे पहले हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई, तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! अपने माल की ज़कात दे दें।

हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, अगर तू ऐसा होता, ऐसा होता और उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० को सख़्त बातें कह दीं। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, अगर अल्लाह का डर न होता और आपका हुज़ूर सल्ल० के यहां जो दर्जा है, अगर उसका ख़्याल न होता, तो मैं भी आपकी कुछ बातों का वैसा ही जवाब देता। फिर ये दोनों एक दूसरे से अलग हो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने अपना रास्ता लिया और हज़रत अब्बास रज़ि० ने अपना।

हज़रत उमर रज़ि० चलते-चलते हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंच गए और उन्हें जाकर सारी बात बताई। हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० का हाथ पकड़ा और (दोनों चल पड़े और) दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, फिर हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने मुझे लोगों से ज़कात वसूल करने के लिए भेजा। मेरी सबसे पहली मुलाक़ात आपके चचा हज़रत अब्बास रज़ि० से हुई। मैंने उनसे कहा, ऐ अबुल फ़ज़्ल ! अपने माल की ज़कात दे दें। इस पर उन्होंने मुझे ऐसा और ऐसा कहा और खूब डांटा और मुझे सख़्त बातें कहीं। मैंने उनसे कहा, अगर अल्लाह का डर न होता और हुज़ूर सल्ल० के यहां जो आपका दर्जा है, उसका ख़्याल न होता, तो मैं भी आपकी कुछ बातों का वैसा ही जवाब देता।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने उनका इकराम किया है, अल्लाह तुम्हारा इकराम फ़रमाए। क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि आदमी का चचा बाप की तरह होता है। अब्बास से ज़कात के बारे में बात न करो, क्योंकि हम उनसे दो साल की ज़कात पहले ही ले चुके हैं।[1]

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 214, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 27

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अब्बास रज़ि० के वालिद (अब्दुल मुत्तलिब) का ज़िक्र किया और उनके वालिद की बेइज़्ज़ती की। इस पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने उस आदमी को थप्पड़ मार दिया। लोग जमा हो गए और कुछ लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम! जैसे हज़रत अब्बास रज़ि० ने उसे थप्पड़ मारा है, ऐसे ही हम हज़रत अब्बास रज़ि० को ज़रूर थप्पड़ मारेंगे।

जब हुज़ूर सल्ल० को इस क़िस्से का पता चला तो आपने लोगों में बयान फ़रमाया और लोगों से पूछा, बताओ, अल्लाह के यहां लोगों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार आदमी कौन है?

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो, अब्बास मुझमें से है और मैं अब्बास रज़ि० में से हूं। (हम दोनों का आपस में बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ है) हमारे ख़ानदान के जो लोग मर चुके हैं, उन्हें बुरा-भला मत कहो, इससे हमारे ख़ानदान के ज़िंदा लोगों को तक्लीफ़ होती है।[1]

इब्ने असाकिर ने ऐसी ही हदीस हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की है, इसमें यह मज़्मून भी है, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपके ग़ुस्से से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। आप हमारे लिए अल्लाह से इस्तग़फ़ार करें (हम से ग़लती हो गई है) चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिए अल्लाह से इस्तग़फ़ार फ़रमाया।[2]

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी-अपनी ख़िलाफ़त के दौर में यह तरीक़ा था कि जब ये लोग सवारी पर सवार होकर कहीं जा रहे होते और रास्ते में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हो जाती तो ये लोग (उनके इक्राम में) सवारी से नीचे उतर जाते और सवारी की लगाम पकड़कर हज़रत अब्बास रज़ि० के

---

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 389
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 211, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 24,

साथ पैदल चलते रहते और उन्हें उनके घर या बैठक पहुंचाकर फिर उनसे अलग होते।[1]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो बहुत से नए क़ानून बनाए, उनमें से एक क़ानून यह भी था कि एक आदमी ने एक झगड़े में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हिक़ारत के साथ मामला किया। इस पर हज़रत उस्मान रज़ि० ने उसकी पिटाई की। किसी ने इस पर एतराज़ किया, तो उससे फ़रमाया, क्या यह हो सकता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो अपने चचा की ताज़ीम फ़रमाएं और मैं उनको हक़ीर समझने की इजाज़त दे दूं? उस आदमी की इस गुस्ताख़ी को जो अच्छा समझ रहा है, वह भी हुज़ूर सल्ल० की मुख़ालफ़त कर रहा है।

चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि० के इस नए क़ानून को तमाम सहाबा रज़ि० ने पसन्द किया (कि हुज़ूर सल्ल० के चचा के गुस्ताख़ की पिटाई होगी।)[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और सहाबा किराम आपके चारों ओर बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सामने से आए। उन्होंने आकर सलाम किया और खड़े होकर अपनी बैठक की जगह देखने लगे। हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा किराम रज़ि० के चेहरों को देखने लगे कि इनमें से कौन हज़रत अली रज़ि० को जगह देता है।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के दाएं जानिब बैठे हुए थे। उन्होंने अपनी जगह से ज़रा हटकर कहा, ऐ अबुल हसन रज़ि० ! यहां आ जाओ। इस पर हज़रत अली रज़ि० आगे आए और उस जगह हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के दर्मियान बैठ गए। हमें एकदम हुज़ूर सल्ल० के चमकते चेहरे पर ख़ुशी की निशानी नज़र आई।

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 69
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 213,

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ओर मुतवज्जह होकर फ़रमाया, फ़ज़ीलत वाले के दर्जे को फ़ज़ीलत वाला ही जानता है।[1]

हज़रत रिबाह बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, (कूफ़ा के मुहल्ले) रहबा में एक जमाअत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आई और उन्होंने कहा, अस्सलामु अलैक या मौलाना (ऐ हमारे आक़ा !)

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, तुम लोग तो अरब हो, मैं तुम्हारा आक़ा कैसे बन सकता हूं। (अजमी लोग ग़ुलाम हुआ करते हैं, अरब नहीं)

उन्होंने कहा, हमने ग़दीरे ख़ुम के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मैं जिसका आक़ा और दोस्त हूं, यह (अली रज़ि०) भी उसका आक़ा और दोस्त है। (हुज़ूर सल्ल० हमारे आक़ा थे, इसलिए आप भी हमारे आक़ा हुए।)

हज़रत रिबाह कहते हैं, ये लोग चले गए तो मैं उनके पीछे गया। मैंने पूछा, ये लोग कौन हैं? तो लोगों ने बताया कि ये अंसार के कुछ लोग हैं जिनमें हज़रत अबू अय्यूब अंसारी भी हैं।[2]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें एक फ़ौज में भेजा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को हमारा अमीर बनाया। जब हम सफ़र से वापस आए तो हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुमने अपने अमीर को कैसा पाया? तो मैंने या किसी और ने हज़रत अली रज़ि० की कोई शिकायत हुज़ूर सल्ल० से कर दी।

मेरी आदत अक्सर ज़मीन की ओर देखने की थी। मैंने सर उठाया तो देखा कि हुज़ूर सल्ल० का चमकता चेहरा (गुस्से की वजह से) लाल हो चुका है और हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे हैं, मैं जिसका दोस्त हूं, अली रज़ि० भी उसके दोस्त हैं।

मैंने अर्ज़ किया, आगे मैं आपको कभी भी हज़रत अली रज़ि० के

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 359,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 104,

बारे में तक्लीफ़ नहीं पहुंचाऊंगा।[1]

हज़रत अम्र बिन शास रज़ियल्लाहु अन्हु हुदैबिया के समझौते में शरीक हुए थे, वह फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को घुड़सवारों की एक जमाअत के साथ यमन भेजा, मैं भी उनके साथ गया। हज़रत अली रज़ि० ने मुझसे सफ़र में कुछ बेनियाज़ी बरती, जिससे मुझे दिल ही दिल में उन पर ग़ुस्सा आ गया। जब मैं मदीना वापस आया, तो मदीना की अलग-अलग मज्लिसों में हज़रत अली रज़ि० की शिकायत की और जो मिलता उससे उनकी शिकायत कर देता। एक दिन मैं सामने से आया, हुज़ूर सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे।

जब आपने मुझे देखा कि मैं आपकी आंखों की तरफ़ देख रहा हूं तो आप मुझे देखते रहे, यहां तक कि मैं आपके पास आकर बैठ गया। फिर आपने फ़रमाया, ऐ अम्र ! ग़ौर से सुनो ! अल्लाह की क़सम, तुमने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई है।

मैंने कहा, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० मैं इस बात से अल्लाह और इस्लाम की पनाह चाहता हूं कि मैं अल्लाह के रसूल को तक्लीफ़ पहुंचाऊं।

आपने फ़रमाया, जिसने अली रज़ि० को तक्लीफ़ पहुंचाई, उसने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई।[2]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मस्जिद में बैठा हुआ था, मेरे साथ दो आदमी और थे। हम सबने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में नामुनासिब बात कह दी। इतने में सामने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए। आपके चमकते चेहरे पर साफ़ ग़ुस्सा नज़र आ रहा था। मैं हुज़ूर सल्ल० के ग़ुस्से से अल्लाह की पनाह चाहने लग गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोगों को क्या हुआ कि मुझे तक्लीफ़ पहुंचाते हो। जिसने अली

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 108,
2. बिदाया, भाग 7, पृ० 346, हैसमी, भाग 9, पृ० 129

को तक्लीफ़ पहुंचाई, उसने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई है।[1]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ि० की मौजूदगी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की बुराई का ज़िक्र किया। हज़रत उमर रज़ि० ने (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ओर इशारा करते हुए) कहा, तुम इस क़ब्र वाले को जानते हो? यह हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं और वह अली बिन अबू तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं। (हज़रत अली रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के चचेरे भाई हैं) हमेशा हज़रत अली रज़ि० का ज़िक्र ख़ैर के साथ किया करो, क्योंकि अगर तुम उनको तक्लीफ़ पहुंचाओगे तो इस ज़ाते अक़्दस को क़ब्र में तक्लीफ़ पहुंचाओगे।[2]

हज़रत अबूबक्र बिन ख़ालिद बिन उरफ़ुता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने उनसे पूछा कि मुझे यह ख़बर मिली है कि आप लोगों को कूफ़ा में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कहने पर मजबूर किया जाता है, तो क्या आपने उनको कभी बुरा-भला कहा है?

हज़रत साद ने फ़रमाया, अल्लाह की पनाह! उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में साद की जान है, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की शान के बारे में कुछ ऐसी फ़ज़ीलतें सुनी हैं कि अगर मेरे सर की मांग पर आरा भी रख दिया जाए तो भी मैं हज़रत अली रज़ि० को बुरा-भला नहीं कहूंगा।[3]

हज़रत आमिर बिन साद बिन अबी वक़्क़ास रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे मेरे वालिद हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह क़िस्सा सुनाया कि हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियासन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे हुक्म दिया और यों कहा, आप अबू तुराब (हज़रत अली रज़ि०) को बुरा-भला क्यों नहीं कहते?

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 347, हैसमी, भाग 9, पृ० 129
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 46
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 130

मैंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० के बारे में तीन ऐसी बातें इर्शाद फ़रमाई हैं कि अगर मुझे इनमें से एक बात भी मिल जाती, तो मुझे लाल ऊंटों से ज़्यादा महबूब होती और ये तीन बातें मुझे अब तक याद हैं। मैं उनको बुरा-भला नहीं कह सकता। एक लड़ाई में (यानी तबूक की लड़ाई में) जाते हुए हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को मदीना में अपनी जगह पीछे छोड़ना चाहा, तो हज़रत अली रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप मुझे औरतों और बच्चों के साथ पीछे छोड़कर जा रहे हैं ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम मेरे लिए ऐसे हो जाओ जैसे हज़रत हारून (अलैहिस्सलाम) हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के लिए थे। हां, इतनी बात है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा और ख़ैबर की लड़ाई में मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि आज मैं झंडा उस आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० उससे मुहब्बत करते हैं।

यह फ़ज़ीलत सुनकर मुझे बहुत शौक़ हुआ कि यह झंडा मुझे मिल जाए और इस शौक़ में मैं बार-बार अपना सर उठाता (कि शायद अब हुज़ूर सल्ल० मुझे बुलाकर झंडा दे दें।) लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अली रज़ि० को बुलाकर मेरे पास लाओ। हज़रत अली रज़ि० आए तो उनकी आंखें दुख रही थीं। आपने उनकी आंखों पर मुबारक लुआब लगाया और फिर झंडा उन्हें दिया। और अल्लाह ने उनके हाथों मुसलमानों को जीत दिलाई और जब यह आयत उतरी—

فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ۔

(سورت آل عمران آیت ۶۱)

'तो आप फ़रमा दीजिए कि आ जाओ हम (और तुम) बुला लें अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को और ख़ुद अपने तनों को, फिर हम (सब मिलकर) ख़ूब दिल से दुआ करें इस तौर पर कि अल्लाह की लानत भेजें उन पर जो (इस

बहस में) नाहक़ पर हों।' (सूरः आले इम्रान, आयत 61)

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फ़ातिमा रज़ि०, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को बुलाया और फ़रमाया, ऐ अल्लाह! ये मेरे घरवाले हैं।[1]

हज़रत अबू नुजैह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हज को आए तो उन्होंने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़कर कहा, ऐ अबू इस्हाक़! लड़ाइयों की मशग़ूली की वजह से कई सालों से हम लोग हज न कर सके, जिसकी वजह से हम हज की बहुत-सी सुन्नतें भूलते जा रहे हैं, इसलिए आप तवाफ़ करें, हम भी आपके साथ तवाफ़ करें। तवाफ़ के बाद हज़रत मुआविया उनको अपने साथ दारुन्नदवा ले गए और उन्हें अपने साथ अपने तख़्त पर बिठाया, फिर हज़रत अली रज़ि० का ज़िक्र शुरू कर दिया और हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० के बारे में नामुनासिब बातें कहने लगे।

हज़रत साद रज़ि० ने फ़रमाया, आपने मुझे अपने घर में लाकर अपने तख़्त पर बिठाया, फिर आप हज़रत अली रज़ि० को बुरा-भला कहने लगे। अल्लाह की क़सम! हज़रत अली रज़ि० में तीन ऐसी बातें पाई जाती हैं कि अगर उनमें से एक भी मुझे मिल जाए तो यह मुझे सारी दुनिया के मिल जाने से भी ज़्यादा महबूब है—

पहली बात यह है कि तबूक की लड़ाई में जाते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को फ़रमाया था, तुम मेरे लिए ऐसे हो, जैसे हज़रत हारून हज़रत मूसा के लिए थे। हां, इतनी बात ज़रूर है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा। अगर हुज़ूर सल्ल० मुझे यह फ़रमा देते, तो यह मुझे सारी दुनिया के मिल जाने से भी ज़्यादा महबूब होता।

दूसरी बात यह है कि ख़ैबर की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० के बारे में फ़रमाया, मैं आज झंडा ऐसे आदमी को दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० से मुहब्बत करता है और

---

1. अहमद, मुस्लिम, तिर्मिज़ी

अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० उससे मुहब्बत करते हैं। अल्लाह उसके हाथों जीत दिलाएंगे और वह मैदान से भागने वाला आदमी नहीं। अगर हुज़ूर सल्ल० मेरे बारे में ये कलिमे फ़रमा देते, तो यह मुझे सारी दुनिया के मिल जाने से ज़्यादा महबूब होता।

तीसरी बात यह है (कि वह हुज़ूर सल्ल० के दामाद हैं) अगर मैं हुज़ूर सल्ल० का दामाद होता और मेरी शादी उनकी बेटी से होती और हज़रत अली रज़ि० की तरह मेरे उनसे बेटे होते तो यह मुझे सारी दुनिया के मिल जाने से ज़्यादा महबूब होता। मैं आज के बाद कभी तुम्हारे घर नहीं आऊंगा। यह फ़रमा कर हज़रत साद रज़ि० ने चादर झाड़ी और बाहर तशरीफ़ ले गए।[1]

हज़रत अबू अब्दुल्लाह जदली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया, क्या तुम सबके बीच में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरा-भला कहा जाता है?

मैंने कहा, अल्लाह की पनाह, सुब्हानल्लाह या इस जैसा और कलिमा मैंने कहा।

उन्होंने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि जिसने अली रज़ि० को बुरा-भला कहा, उसने मुझे बुरा-भला कहा।[2]

हज़रत अबू अब्दुल्लाह जदली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझसे हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, क्या तुम सबके बीच में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुरा-भला नहीं कहा जाता? मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० को कैसे बुरा-भला कहा जा सकता है? उन्होंने फ़रमाया, क्या हज़रत अली रज़ि० को और उनसे मुहब्बत करने वालों को बुरा-भला नहीं कहा जाता, हालांकि हुज़ूर सल्ल० उनसे मुहब्बत फ़रमाते थे।[3]

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 340, 341,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 130,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 46,

हज़रत अबू सादिक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ानदान था, वही मेरा ख़ानदान है, जो हुज़ूर सल्ल० का दीन था, वही मेरा दीन है, इसलिए जो मेरी बेइज़्ज़ती कर रहा है, वह हक़ीक़त में हुज़ूर सल्ल० की बेइज़्ज़ती कर रहा है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिंबर पर थे कि इतने में हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए। (यह अभी कम उम्र बच्चे थे) उन्होंने कहा, आप मेरे नाना अब्बा के मिंबर से नीचे उतर आएं।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, तुम ठीक कह रहे हो। यह तुम्हारे नाना अब्बा के बैठने की जगह है और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन्हें अपनी गोद में बिठा लिया और रो पड़े। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम ! यह बच्चा मेरे कहने की वजह से नहीं कह रहा, (बल्कि यह अपनी तरफ़ से कह रहा है।)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, आप ठीक कह रहे हैं, अल्लाह की क़सम ! मुझे आप पर कोई शुबहा नहीं।[2]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु कहते हैं, एक दिन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर ख़ुत्बा दे रहे थे कि इतने में हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने मिंबर पर चढ़कर कहा, आप मेरे नाना अब्बा के मिंबर से नीचे उतर आएं। इस पर हज़रत अली रज़ि० ने कहा, यह बात हमारे मश्विरे के बग़ैर हुई है।[3]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर बयान फ़रमा रहे थे कि इतने में हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने खड़े होकर कहा

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 46,
2. अबू नुऐम, ज़ाबिरी,
3. कंज़, भाग 3, पृ० 32

कि आप मेरे नाना अब्बा के मिंबर से नीचे उतर आएं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, बेशक यह तेरे नाना अब्बा का मिंबर है, मेरे बाप का नहीं है, लेकिन ऐसा करने को तुम्हें किसने कहा?

इस पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े होकर कहा, इसे किसी ने नहीं कहा। (फिर हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत हुसैन रज़ि० को मुख़ातब होकर फ़रमाया) ओ धोखेबाज़! मैं तेरी ख़ूब पिटाई करूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरे भतीजे को कुछ न कहना। यह ठीक कह रहा है, यह इसके नाना अब्बा का मिंबर है।[1]

हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं मिंबर पर चढ़कर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया और मैंने उनसे कहा, मेरे नाना अब्बा के मिंबर से आप नीचे उतर जाएं और अपने वालिद के मिंबर पर तशरीफ़ ले जाएं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, मेरे बाप का तो कोई मिंबर नहीं, यह कहकर हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे अपने पास बिठा लिया। फिर वह मिंबर से उतरकर मुझे अपने घर ले गए और मुझसे फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! तुम्हें यह किसने सिखाया था?

मैंने कहा, किसी ने नहीं। उन्होंने फ़रमाया, अगर तुम हमारे पास आ जाया करो, तो बहुत अच्छा होगा। चुनांचे मैं एक दिन उनके यहां गया तो वह हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से तंहाई में बात कर रहे थे और मैंने देखा कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा दरवाज़े पर खड़े हैं, उन्हें भी इजाज़त नहीं मिली है। यह देखकर मैं वापस आ गया।

इसके बाद जब उनसे मुलाक़ात हुई, तो उन्होंने मुझसे फ़रमाया, ऐ मेरे बेटे! तुम हमारे पास आते क्यों नहीं?

मैंने कहा, मैं एक दिन आया था। आप हज़रत मुआविया रज़ि० से तंहाई में बात कर रहे थे और आपके बेटे हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को भी इजाज़त नहीं मिली थी, तो मैंने देखा, कि वह वापस चले गए, इसलिए मैं भी वापस आ गया।

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 105,

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, तुम अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से ज़्यादा इजाज़त मिलने के हक़दार हो, क्योंकि हमारे सरों पर यह जो शराफ़त का ताज आज नज़र आ रहा है, यह सब कुछ अल्लाह ने आपके घराने की बरकत से दिया है और फिर मेरे सर पर हज़रत उमर रज़ि० ने शफ़क़त से हाथ रखा।[1]

हज़रत उक़्बा बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के कुछ दिनों के बाद मैं अस्र की नमाज़ पढ़कर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मस्जिद से बाहर निकला। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबूबक्र रज़ि० के साथ चल रहे थे कि इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० का हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास से गुज़र हुआ। वह बच्चों के साथ खेल रहे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनको अपने कंधे पर बिठा लिया और यह शेर पढ़ने लगे—

بِأَبِيْ شَبِيْهٌ بِالنَّبِيْ لَيْسَ شَبِيْهًا بِعَلِيْ

'इस बच्चे पर मेरा बाप क़ुरबान हो, इसकी शक्ल व सूरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलती-जुलती है, हज़रत अली रज़ि० से नहीं मिलती।'

हज़रत अली रज़ि० यह सुनकर हंस रहे थे।[2]

हज़रत उमैर बिन इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मुलाक़ात हुई, तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा, आप अपने पेट की उस जगह से कपड़ा हटा दें जिस जगह का बोसा लेते हुए मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा था। चुनांचे हज़रत हसन रज़ि० ने अपने पेट से कपड़ा हटाया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उनके पेट का बोसा लिया।

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उनकी नाफ़

1. कंज़, भाग 7, पृ० 105, इसाबा, भाग 1, पृ० 223,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 103,

का बोसा लिया।[1]

हज़रत मक़्बुरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा वहां से गुज़रे। उन्होंने सलाम किया, लोगों ने सलाम का जवाब दिया। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हमारे साथ थे, लेकिन उन्हें हज़रत हसन रज़ि० के गुज़रने और सलाम करने का पता नहीं चला।

किसी ने उनसे कहा, यह सलाम हज़रत हसन बिन अली रज़ि० ने किया था। वह फ़ौरन उनके पीछे गए और उनसे कहा, ऐ मेरे सरदार! व अलैकुमुस्सलाम। किसी ने उनसे पूछा, आप इन्हें ऐ मेरे सरदार! कह रहे हैं। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि यह सरदार हैं।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० के पास उनकी वफ़ात वाली बीमारी में मरवान आया और उसने कहा, जब से हम आपके साथ रह रहे हैं, उस वक़्त से आज तक मुझे आपकी किसी बात पर गुस्सा नहीं आया, बस इस बात पर गुस्सा आया है कि आप हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बहुत मुहब्बत करते हैं।

यह सुनते ही हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० सिमट कर बैठ गए और फ़रमाया, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि हम लोग एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गए। रास्ते में एक जगह हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हसन रज़ि० और हज़रत हुसैन रज़ि० के रोने की आवाज़ सुनी। वे दोनों अपनी वालिदा के साथ थे। हुज़ूर सल्ल० तेज़ी से चलकर उनके पास पहुंचे और फ़रमाया, मेरे बेटों को क्या हुआ? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, प्यास की वजह से रो रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने पीछे मश्कीज़ा की तरफ़ हाथ बढ़ाकर पानी देखा, (लेकिन उसमें पानी नहीं था) उस दिन पानी बहुत कम था, लोगों

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 177, कंज़, भाग 7, पृ० 104,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 178, कंज़, भाग 7, पृ० 104, हाकिम, भाग 3, पृ० 169

को थोड़ा-थोड़ा पानी मिल रहा था, लोग भी पानी खोज रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने एलान फ़रमाया, किसी के पास पानी है? इस एलान पर हर आदमी ने अपने पीछे अपने मश्कीज़े को हाथ लगाकर देखा कि उसमें पानी है या नहीं, लेकिन किसी को भी पानी का एक क़तरा न मिला। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ऐ फ़ातिमा !) एक बच्चा मुझे दे दो।

उन्होंने परदे के नीचे से हुज़ूर सल्ल० को एक बच्चा दे दिया। बच्चा देते हुए हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के बाज़ुओं की सफ़ेदी मुझे नज़र आई। हुज़ूर सल्ल० ने बच्चे को लेकर अपने सीने से लगाया। वह बच्चा रो रहा था, चुप नहीं हो रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी मुबारक ज़ुबान निकाली, तो वह बच्चा उसे चूसने लग गया और चूसते-चूसते चुप हो गया और मुझे उसके रोने की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। (उसने रोना छोड़ दिया था)

दूसरा बच्चा वैसे ही रो रहा था, चुप नहीं हो रहा था, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दूसरा भी मुझे दे दो। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने दूसरा बच्चा भी हुज़ूर सल्ल० को दे दिया। हुज़ूर सल्ल० ने लेकर उसके साथ भी वैसे ही किया, वह भी चुप हो गया और मुझे किसी के रोने की आवाज़ नहीं आ रही थी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चलो। चुनांचे औरतों की वजह से हम इधर-उधर चले गए, (ताकि हुज़ूर सल्ल० की औरतों के साथ हमारा मिलना न हो। हम लोग वहां से चल दिए और) रास्ते के दर्मियानी हिस्से में हुज़ूर सल्ल० से दोबारा जा मिले।

जब मैंने हुज़ूर सल्ल० का हज़रत हसन रज़ि० और हज़रत हुसैन रज़ि० के साथ यह मुहब्बत भरा रवैया देखा है, तो मैं इन दोनों से क्यों न मुहब्बत करूं ?[1]

उलेमा किराम, बड़ों और दीनी फ़ज़ीलतों वालों का इक्राम करना

हज़रत अम्मार बिन अबी अम्मार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 181

दिन हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० सवार होने लगे, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनकी रिकाब हाथ से पकड़ ली। इस पर हज़रत ज़ैद ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा के बेटे! आप एक ओर हो जाएं, (मेरी रिकाब न पकड़ें)।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने अर्ज़ किया, हमें इसी का हुक्म दिया गया है कि हम अपने उलेमा और बड़ों के साथ ऐसे ही (इक्राम का मामला) करें। हज़रत ज़ैद ने कहा, आप मुझे ज़रा अपना हाथ दिखाएं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने अपना हाथ निकाला। हज़रत ज़ैद ने उसे चूमा और फ़रमाया, हमें अपने नबी के घरवालों के साथ ऐसे इकराम करने का हुक्म दिया गया है।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु सवार होने लगे, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उनकी रिकाब पकड़ ली। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के चचा के बेटे! आप एक तरफ़ हो जाएं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहा, नहीं, हम उलेमा के साथ और बड़ों के साथ ऐसे ही (इक्राम का मामला) किया करते हैं।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० और सहाबी की एक जमाअत के पास बैठे हुए थे। आपके पास एक प्याला लाया गया, जिसमें पीने की कोई चीज़ थी। हुज़ूर सल्ल० ने वह प्याला हज़रत अबू उबैदा रज़ि० को दिया।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! आपका इस प्याले पर मुझसे ज़्यादा हक़ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम ले लो। उन्होंने लेकर पीने से पहले फिर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह

1. कंज़, भाग 7, पृ० 37,
2. इसाबा, भाग 1, पृ० 561, हैसमी, भाग 9, पृ० 345, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 175, हाकिम, भाग 3, पृ० 423, इसाबा, भाग 3, पृ० 332,

के नबी सल्ल० ! आप ले लें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम पियो, क्योंकि बरकत हमारे बड़ों के साथ है। जो हमारे छोटों से मुहब्बत न करे और हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे, वह हम में से नहीं है।[1]

हज़रत राफ़ेअ बिन ख़दीज और हज़रत सह्ल बिन अबी हसमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सह्ल और हज़रत मुहय्यिसा बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ैबर गए और खजूरों के एक बाग़ में एक दूसरे से अलग हो गए। किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सह्ल को क़त्ल कर दिया तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन सह्ल, हज़रत हुवय्यिसा बिन मसऊद और हज़रत मुहय्यिसा बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और अपने क़त्ल किए गए साथी के बारे में हुज़ूर सल्ल० से बात करने लगे तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने बात शुरू की। यह इन सब में छोटे थे, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बड़ों की बड़ाई क़ायम करो।

यह्या रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० का मतलब यह था कि जो उम्र में बड़ा है, वह बात करे। चुनांचे इन लोगों ने अपने क़त्ल किए गए साथी के बारे में बात की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम लोगों के क़बीले के पचास आदमी क़सम खा लें तो तुम अपने क़त्ल किए गए आदमी के क़िसास (बदले) के हक़दार बन सकते हो।

उन्होंने अर्ज़ किया, यह ऐसा वाक़िया है जिसे हमने देखा नहीं है, (इसलिए हम क़सम नहीं खा सकते हैं।) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो फिर यहूदियों के पचास आदमी क़सम खा लें तो उनके ज़िम्मे क़िसास नहीं आएगा।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये तो काफ़िर लोग हैं (ये तो झूठी क़सम खा लेंगे) इस पर हुज़ूर सल्ल० ने (झगड़ा ख़त्म करने के लिए) अपने पास से उनको दियत यानी ख़ून बहा दिया।[2]

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 15
2. बुख़ारी,

हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (हज़्र मौत में) हमारी बड़ी हुकूमत थी वहां के तमाम लोग हमारी बात मानते थे। हमें वहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नुबूवत के एलान की ख़बर मिली, तो मैं यह सब कुछ छोड़कर अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के शौक़ में वहां से चल पड़ा। मेरे पहुंचने से पहले ही हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा रज़ि० को मेरे आने की ख़ुशख़बरी सुना चुके थे।

जब मैं आपकी ख़िदमत में पहुंचा, तो मैंने आपको सलाम किया। आपने सलाम का जवाब दिया और अपनीचादर बिछाकर मुझे इस पर बिठाया, फिर आप अपने मिंबर पर तशरीफ़ ले गए और मुझे भी अपने साथ मिंबर पर बिठाया। आपने दोनों हाथ उठाकर पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान की और तमाम नबियों पर दरूद भेजा। इतने में तमाम लोग आपके पास जमा हो चुके थे।

आपने फ़रमाया, ऐ लोगो! यह वाइल बिन हुज्र तुम्हारे पास बहुत दूर के इलाक़े हज़र मौत से अपनी ख़ुशी से आए हैं। किसी ने इनको आने पर मजबूर नहीं किया और यह अल्लाह, उसके रसूल सल्ल० और उसके दीन के शौक़ में आए हैं।

मैंने कहा, (ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०) आप ठीक फ़रमा रहे हैं।[1]

हज़रत वाइल बिन हुज्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचा तो आपने (सहाबा किराम रज़ि० से) फ़रमाया, यह वाइल बिन हुज्र न तो तुम लोगों के शौक़ में आए हैं और न तुम लोगों से डर कर आए हैं, बल्कि ये तो अल्लाह और रसूल सल्ल० की मुहब्बत में आए हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने अपनी चादर बिछा कर मुझे उस पर अपने पहलू में बिठाया और मुझे अपने सीने से लगाया और अपने साथ मिंबर पर बिठाया और लोगों में बयान फ़रमाया और फ़रमाया, इनके साथ नर्मी से पेश आओ, क्योंकि यह अभी अपनी हुकूमत छोड़कर नए-नए आए हैं।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 373,

मैंने अर्ज़ किया, मेरे ख़ानदान वालों ने जो कुछ मेरा था, वह सब मुझसे छीन लिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जितना उन्होंने लिया है, वह भी तुम्हें दूंगा और उसका दोगुना भी दे दूंगा। आगे और भी हदीस ज़िक्र की है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ का घाव हरा हो गया और उसमें से ख़ून बहने लगा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े होकर उनके पास गए और उन्हें अपने गले लगा लिया और उनके ख़ून के छींटे हुज़ूर सल्ल० के चेहरे और दाढ़ी पर पड़ रहे थे। जो भी हुज़ूर सल्ल० को ख़ून से बचाने की कोशिश करता, हुज़ूर सल्ल० उतने ही हज़रत साद रज़ि० के और क़रीब हो जाते, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया।[2]

अंसार के एक साहब बयान करते हैं, जब हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू क़ुरैज़ा के बारे में अपना फ़ैसला सुना दिया और वापस आ गए, तो उनका घाव फट गया। (और उसमें से ख़ून बहने लग गया।)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसका पता चला तो आप उनके पास तशरीफ़ ले गए और उनका सर लेकर अपनी गोद में रख लिया। हज़रत साद रज़ि० के जिस्म को एक सफ़ेद कपड़े से ढांक दिया गया, लेकिन वह कपड़ा इतना छोटा था कि जब उसे चेहरे पर डाला गया तो उनके दोनों पांव खुल जाते।

हज़रत साद रज़ि० गोरे-चिट्टे और भारी-भरकम आदमी थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! साद रज़ि० ने तेरे रास्ते में ख़ूब जिहाद किया है और तेरे रसूल सल्ल० को सच्चा माना है और जो काम उनके ज़िम्मे लगा था, वह काम उन्होंने अच्छे तरीक़े से पूरा कर दिया है, इसलिए तू उनकी रूह को अपने दरबार में इस तरह क़ुबूल फ़रमा, जिस तरह तू बेहतरीन से बेहतरीन रूह को क़ुबूल फ़रमाता है।

जब हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की यह दुआ सुनी तो आंखें

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 374,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 426,

खोलकर कहा, अस्सलामु अलैकम ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ग़ौर से सुनिए। मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के रसूल सल्ल० हैं।

जब हज़रत साद रज़ि० के घरवालों ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत साद रज़ि० के सर को अपनी गोद में रख लिया है तो वह घबरा गए तो किसी ने आकर हुज़ूर सल्ल० को बताया कि हज़रत साद रज़ि० के घरवालों ने जब यह देखा कि आपने उनका सर अपनी गोद में रख लिया है तो वह घबरा गए हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (अब यह तो दुनिया से जाने वाले हैं और) इस वक़्त तुम उस घर में जितने हो उतने फ़रिश्तों ने अल्लाह से साद रज़ि० की वफ़ात पर हाज़िर होने की इजाज़त मांगी है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत साद रज़ि० की मां रो-रोकर यह शेर पढ़ने लगीं—

وَيْلُ اُمِّكَ سَعْدًا   حَزَامَةً وَجِدًّا

'ऐ साद ! तेरी मां के लिए हलाकत हो तू तो ऐसा था कि हर काम पूरी एहतियात से अच्छी तरह किया करता था और पूरी मेहनत करता था।'

किसी ने उनकी मां से कहा, क्या आप हज़रत साद रज़ि० का मर्सिया कह रही हैं ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे छोड़ो। यह सच्चे शेर कह रही है। दूसरे लोग झूठे शेर कहते हैं।

हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए रात का खाना रखा गया, ताकि आप लोगों के साथ खाना खा लें। आप बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत मुऐक़ीब बिन अबी फ़ातिमा दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल थी। वह हबशा हिजरत करके गए थे।

उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क़रीब आकर यहां बैठ जाओ। अल्लाह की क़सम ! अगर तुम्हारे अलावा किसी और को कोढ़ की यह

बीमारी होती तो यह मुझसे एक नेज़े की मिक़्दार दूर बैठता, उससे क़रीब न बैठता।[1]

हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को दोपहर के खाने के लिए बुलाया, लोग डर गए। लोगों में हज़रत मुऐक़ीब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। उन्हें कोढ़ की बीमारी थी। उन्होंने भी लोगों के साथ खाना शुरू किया तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, तुम अपने सामने और अपने क़रीब से खाओ। अगर तुम्हारे अलावा कोई और होता तो वह मेरे साथ इस प्याले में न खाता, बल्कि मेरे और उनके दर्मियान एक नेज़े का फ़ासला होता।[2]

हज़रत अब्दुल वाहिद बिन अबी औन दौसी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु क़बीला बनी दौस से वापस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए और फिर हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात तक मदीना में हुज़ूर सल्ल० के साथ रहे। (हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात पर) जब अरब के लोग मुर्तद हो गए, तो वह मुसलमानों के साथ गए और मुर्तद लोगों के साथ ख़ूब जिहाद किया। तुलैहा और नज्द के सारे इलाक़े के मुर्तद्दों से फ़ारिग़ होकर ये लोग यमामा चले गए। उनके साथ उनके बेटे हज़रत अम्र बिन तुफ़ैल भी थे, ख़ुद हज़रत तुफ़ैल यमामा की लड़ाई में शहीद हो गए और उनके बेटे हज़रत अम्र घायल हो गए और उनका एक हाथ कट गया।

एक बार यह हज़रत अम्र रज़ि० हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठे हुए थे कि इतने में खाना लाया गया। हज़रत अम्र रज़ि० एक तरफ़ को हो गए। हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, क्या बात है? शायद तुम अपने कटे हुए (घायल) हाथ की वजह से एक तरफ़ हो गए हो। उन्होंने कहा, जी हां।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं अल्लाह की क़सम! मैं उस

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 87
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 87.

वक़्त तक इस खाने को नहीं चखूंगा जब तक तुम अपने हाथ से खाने को आपस में नहीं मिलाओगे, क्योंकि अल्लाह की क़सम ! इस वक़्त यहां जितने लोग हैं, उनमें से एक भी तुम्हारे अलावा ऐसा नहीं है, जिसके जिस्म का कुछ हिस्सा जन्नत में हो। (ऐसे तो सिर्फ़ तुम ही हो) फिर हज़रत अम्र रज़ि० मुसलमानों के साथ यर्मूक की लड़ाई में गए और वहां शहीद हो गए।[1]

हज़रत हसन रहमतुतल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त में यह लिखा कि मुझे पता चला है कि तुम लोगों के सारे मज्मे को एकदम इजाज़त दे देते हो। (ऐसे न करो, बल्कि) जब तुम्हें मेरा यह ख़त मिल जाए, तो फिर तुम यह तर्तीब बनाओ कि पहले फ़ज़ीलत और शराफ़त वाले चुनींदा लोगों को इजाज़त दो। जब ये लोग बैठ जाया करें, फिर आम लोगों को इजाज़त दो।[2]

बड़ों को सरदार बनाना

हज़रत हकीम बिन क़ैस बिन आसिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि उनके वालिद हज़रत क़ैस बिन आसिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने इंतिक़ाल के वक़्त अपने बेटों को यह वसीयत फ़रमाई—

'अल्लाह से डरते रहना और अपने बड़े को सरदार बनाना, क्योंकि जब कोई क़ौम अपने बड़े को सरदार बनाती है तो वह अपने बाप-दादों की ठीक तरह जानशीं बनती है और जब वह अपने सबसे छोटे को सरदार बनाती है, तो इससे उनका दर्जा बराबर वालों की निगाह में कम हो जाता है। अपने पास माल रखो और उसे हासिल करो, क्योंकि माल से करीम और सख़ी आदमी को शराफ़त मिलती है या उसी के ज़रिए से इंसान कमीने और कंजूस आदमी का ज़रूरतमंद नहीं रहता और लोगों से कुछ न मांगना, क्योंकि यह इंसान के लिए कमाई का सबसे मामूली

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 78,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 55,

और घटिया ज़रिया है, (जिसे सख़्त मजबूरी ही में अख़्तियार करना चाहिए।) जब मैं मर जाऊं तो मुझ पर नौहा न करना, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किसी ने नौहा नहीं किया था और जब मैं मर जाऊं तो मुझे किसी ऐसी जगह दफ़न करना जिसका क़बीला बनू बक्र बिन वाइल को पता न चल सके, (ताकि वह मेरी क़ब्र के साथ कोई नामुनासिब हरकत न कर सकें।) क्योंकि मैं जाहिलियत के ज़माने में उनको ग़ाफ़िल देखकर उन पर छापे मारा करता था।[1]

राय और अमल में इख़्तिलाफ़ के बावजूद एक दूसरे का इक्राम करना

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने चचा से नक़ल करते हैं कि उनके चचा फ़रमाते हैं कि जब हम जुमल की लड़ाई में खड़े हो गए और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमारी सफ़ों को तर्तीब दे दी, तो उन्होंने लोगों में यह एलान कराया कि (चूंकि हमारे मुक़ाबले पर मुसलमानों की ही एक जमाअत है, इसलिए) कोई आदमी न तीर चलाए और न नेज़ा मारे और न तलवार चलाए और उन लोगों से ख़ुद लड़ाई न शुरू करो और उनके साथ बहुत नर्म बात करो, क्योंकि यह ऐसी जगह है कि जो इसमें कामियाब हो गया, वह क़ियामत के दिन भी कामियाब हो गया।

चुनांचे हम लोग यों ही खड़े रहे, यहां तक कि जब दिन ऊंचा हो गया तो (फ़ौज के सामने) तमाम लोगों ने ऊंची आवाज़ से कहा, ऐ उस्मान रज़ि० के ख़ून के बदले की मांग करने वालो! (हमले के लिए तैयार हो जाओ)।

हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीया रहमतुल्लाहि अलैहि हमारे आगे झंडा लिए खड़े थे, तो उनसे हज़रत अली रज़ि० ने पुकारकर पूछा, ऐ इब्ने हनफ़ीया! ये लोग क्या कह रहे हैं?

उन्होंने हमारी ओर मुतवज्जह होकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन!

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 54, इसाबा, भाग 3, पृ० 253, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 26.

(उन्होंने कहा) ऐ हज़रत उस्मान रज़ि० के ख़ून के बदले की मांग करने वालो ! इस पर हज़रत अली रज़ि० ने हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! उस्मान के क़ातिलों को मुंह के बल गिरा दे।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन अली बिन अबू तालिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहले ऊंट वालों को तीन दिन दावत दी, फिर उनसे लड़े। जब तीसरा दिन हुआ तो हज़रत हसन, हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हज़रत अली रज़ि० के पास आकर कहा, उन्होंने हमें बहुत ज़्यादा घायल किया है।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, ऐ मेरे भतीजे ! मुझे लोगों के सारे हालात मालूम हैं, मैं उनसे अनजाना नहीं हूं। फिर हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, पानी डालकर लाओ। चुनांचे पानी आया तो उससे वुज़ू करके हज़रत अली रज़ि० ने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उन्होंने हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ मांगी, फिर उनसे फ़रमाया, अगर तुम इन लोगों पर ग़ालिब आ जाओगे तो भागने वाले का पीछा न करना और किसी घायल का काम तमाम न करना और ये लोग लड़ाई के मैदान में जो हथियार लाए हैं, उन पर तुम क़ब्ज़ा कर लेना। इसके अलावा जितना सामान या हथियार है, वे सब मरने वाले के वारिसों के हैं।

इमाम बैहक़ी फ़रमाते हैं, यह हदीस मुन्क़ता है। सही यह है कि हज़रत अली रज़ि० ने कुछ नहीं लिया और किसी मरने वाले के हथियार भी नहीं लिए।[2]

हज़रत अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं मरवान बिन हकम के पास गया, तो उसने कहा, मैंने आपके वालिद से ज़्यादा अच्छी तरह ग़लबा पाने वाला कोई नहीं देखा। ऊंटों की लड़ाई के दिन ज्यों ही हम लोग हार खाकर भागे, तो उनके आदमी ने ज़ोर से एलान

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 180,
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 181,

किया कि किसी भागने वाले को क़त्ल न किया जाए और किसी ज़ख़्मी का काम तमाम न किया जाए।[1]

हज़रत अब्द ख़ैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, किसी ने हज़रत अली रज़ि० से ऊंटों वाले (यानी जो ऊंटों की लड़ाई में हज़रत अली रज़ि० के मुख़ालिफ़ थे, उन) के बारे में पूछा, तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ये हमारे भाई हैं जिन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की थी, इसलिए हमने उनसे लड़ाई की थी, अब उन्होंने बग़ावत से तौबा कर ली है, जिसे हमने क़ुबूल कर लिया है।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन उमर बिन अली बिन अबी तालिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊंटों की लड़ाई के दिन फ़रमाया, हम इन मुख़ालिफ़ों पर कलिमा शहादत की वजह से एहसान करेंगे। (यानी उन्हें क़त्ल नहीं करेंगे) और जो क़त्ल हो जाएंगे उनके सामान और हथियार का वारिस उनके बेटों को बनाएंगे। (हम नहीं लेंगे)

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से ऊंट वालों के बारे में पूछा गया कि क्या वे मुश्रिक हैं? फ़रमाया, शिर्क से तो वे भाग कर आए हैं।

फिर पूछा गया, क्या वे मुनाफ़िक़ हैं? तो फ़रमाया, मुनाफ़िक़ तो अल्लाह का बहुत कम ज़िक्र करते हैं (और ये लोग तो अल्लाह का बहुत ज़िक्र करते हैं, इसलिए मुनाफ़िक़ नहीं हैं।)

फिर पूछा गया, फिर ये क्या है? फ़रमाया, ये हमारे भाई हैं, इन्होंने हमारे ख़िलाफ़ बग़ावत की थी?[3]

हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु के गुलाम हज़रत अबू हबीबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऊंटों वालों से फ़ारिग़ हुए (और इस लड़ाई में हज़रत तलहा रज़ि० हज़रत अली रज़ि० की मुख़ालिफ़ जमाअत में थे और वह शहीद हुए थे) तो मैं

---

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 181,
2. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 182,
3. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 173,

हज़रत तलहा रज़ि० के बेटे हज़रत इम्रान रज़ि० के साथ हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में गया, तो उन्होंने हज़रत इम्रान रज़ि० को ख़ूब ख़ुश आमदीद कहा और उन्हें अपने क़रीब बिठाकर कहा, मुझे यक़ीन है कि अल्लाह मुझे और आपके वालिद को उन लोगों में शामिल कर देंगे, जिसके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ

(سورة الحجر آيت ٤٧)

'और उनके दिलों में जो कीना था, हम वह सब दूर कर देंगे कि सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, तख़्तों पर आमने-सामने बैठा करेंगे।'

(सूरः हिज्र, आयत 47)

फिर फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! फ़्लां औरत का क्या हाल है? और फ़्लां औरत का क्या हाल है? उनके वालिद (हज़रत तलहा रज़ि०) की औलाद की माओं (यानी उनकी बीवियों) के बारे में पूछा, फिर फ़रमाया, हमने इन सालों में तुम्हारी ज़मीन पर इसलिए क़ब्ज़ा किए रखा, ताकि लोग तुमसे छीन न लें।

फिर फ़रमाया, ऐ फ़्लाने! इन्हें लेकर इब्ने क़रज़ा के पास जाओ और उससे कहो कि वह इन पिछले सालों की तमाम आमदनी उन्हें दे दे और उनकी ज़मीन भी उन्हें दे दे। एक कोने में दो आदमी बैठे हुए थे। उनमें एक हारिस आवर था। इन दोनों ने कहा, अल्लाह (हज़रत अली रज़ि० से ज़्यादा) बेहतर फ़ैसला करने वाले हैं। हम इन्हें क़त्ल कर रहे हैं और वे जन्नत में हमारे भाई बनें (यह कैसे हो सकता है?)

इस पर हज़रत अली रज़ि० ने (नाराज़ होकर) फ़रमाया, तुम दोनों यहां से उठकर अल्लाह की ज़मीन के सबसे दूर वाले इलाक़े में चले जाओ। अगर मैं और हज़रत तलहा रज़ि० इस आयत का मिस्दाक़ नहीं हैं, तो फिर कौन होगा? ऐ मेरे भतीजे! जब तुम्हें कोई ज़रूरत हुआ करे तो तुम हमारे पास आ जाया करो।'

1. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 173, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 224

इब्ने साद ने हज़रत रिबई बिन जराश रहमतुल्लाहि अलैहि से पिछली हदीस जैसी हदीस नक़ल की है। उसके आखिर में यह है कि इन दोनों की बात सुनकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ोर से एक चीख़ मारी, जिससे सारा महल दहल गया और फिर फ़रमाया, जब हम इस आयत के मिस्दाक़ नहीं होंगे, तो फिर कौन होगा?

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, इब्ने जुरमूज़ ने आकर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। (इब्ने जुरमूज़ ने ऊंटों की लड़ाई में हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया था।) हज़रत अली रज़ि० ने बड़ी देर के बाद इजाज़त दी तो उसने अन्दर आकर कहा, जिन लोगों ने ख़ूब ज़ोर-शोर से लड़ाई लड़ी थी, आप उनके साथ ऐसा रवैया अख़्तियार करते हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तेरे मुंह में ख़ाक हो। मुझे यक़ीन है कि मैं, हज़रत तलहा रज़ि० और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम उन लोगों में से होंगे, जिनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है[1]—

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद अपने वालिद हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़ल करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुझे यक़ीन है कि मैं, हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम उन लोगों में होंगे, जिनके बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है और फिर पिछली आयत तिलावत फ़रमाई।

हज़रत अम्र बिन ग़ालिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुना कि एक आदमी उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में ना-मुनासिब बातें कह रहा है, तो उसे डांटकर फ़रमाया, बकवास बन्द करो, चुप रहो, ख़ुदा तुझे ख़ैर से दूर करे और गालियां देने वाले तुझ पर मुसल्लत करे, मैं इस बात की गवाही देता हूं कि वह जन्नत में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 113,

सल्लम की बीवी होंगी।[1]

तिर्मिज़ी की हदीस में यह है कि हज़रत अम्मार रज़ि० ने फ़रमाया, दफ़ा हो जा। ख़ुदा तुझे ख़ैर से दूर करे। क्या तू हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महबूब बीवी को तक्लीफ़ पहुंचा रहा है।[2]

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हमारी अम्मा जान हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपना एक रास्ता अपनाया है (जो कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ है) और हमें मालूम है कि वह दुनिया और आख़िरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी हैं, लेकिन अल्लाह उनके ज़रिए से हमारा इम्तिहान लेना चाहते हैं कि हम अल्लाह की बात मानते हैं या उनकी।[3]

हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुम को कूफ़ा भेजा, ताकि वह कूफ़ा वालों को (हज़रत अली रज़ि० की मदद के लिए) तैयार करके ले आएं, तो हज़रत अम्मार रज़ि० ने यह बयान फ़रमाया कि मैं जानता हूं कि वह (हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुनिया और आख़िरत में बीवी हैं। लेकिन अल्लाह उनके ज़रिए से तुम्हारा इम्तिहान लेना चाहते हैं, देखना चाहते हैं कि तुम लोग अल्लाह के पीछे चलते हो या उनके।[4]

अपनी राय के ख़िलाफ़ बड़ों के पीछे चलने का हुक्म

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अल्लाह की किताब (क़ुरआन मजीद) की एक आयत पढ़ने गया। उन्होंने मुझे वह आयत पढ़ा दी।

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 116, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 65,
2. इसाबा, भाग 4, पृ० 360,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 116,
4. बैहक़ी, भाग 8, पृ० 174,

मैंने अर्ज़ किया कि आपने यह आयत मुझे जिस तरह पढ़ाई है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो मुझे इसके ख़िलाफ़ और तरह से पढ़ाई थी। इस पर वह रोने लगे और इतना रोए कि मुझे उनके आंसू कंकरियों में गिरे हुए नज़र आ रहे थे। फिर फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ि० ने जैसे तुम्हें पढ़ाया है, तुम वैसे ही पढ़ो, क्योंकि अल्लाह की क़सम! उनकी क़िरात सैलहीन शहर (यह बग़दाद शहर के क़रीब एक मशहूर शहर का) के रास्ते से भी ज़्यादा साफ़ है।

हज़रत उमर रज़ि० इस्लाम का एक मज़बूत क़िला थे, जिसमें इस्लाम दाख़िल होता था, उसमें से निकलता नहीं था और जब हज़रत उमर रज़ि० शहीद हो गए तो इस क़िले में दराड़ पड़ गया है और इस्लाम अब इस क़िले से बाहर आ रहा है, इसके अन्दर नहीं जा रहा है।[1]

अपने बड़ों की वजह से नाराज़ होना

हज़रत शुरैह बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ क़ारी लोगो! (ऐ उलेमा की जमाअत!) तुम्हें क्या हुआ, तुम हमसे ज़्यादा बुज़दिल हो और जब तुमसे कुछ मांगा जाए तो तुम बहुत ज़्यादा कंजूस बन जाते हो और जब तुम खाते हो तो सबसे बड़े लुक़्मे लेते हो।

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने उससे ऐराज़ फ़रमा लिया और उसे कोई जवाब न दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस क़िस्से का पता चला तो उन्होंने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० से उसके बारे में पूछा, तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने कहा, अल्लाह उसे माफ़ फ़रमाए। क्या यह ज़रूरी है कि हम इनसे जो बात भी सुनें, हर बात पर उनकी पकड़ करें?

जिस आदमी ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को ये बातें कहीं थीं, हज़रत उमर रज़ि० उसके पास गए और उसका गरेबान पकड़ कर उसका गला घोंटा और उसे खींच कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले आए।

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 371

उस आदमी ने कहा, हम तो सिर्फ़ मशग़ला और ख़ुशतबई कर रहे थे। इस पर अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० पर यह आयत वह्य में भेजी—

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۔

(سورت توبہ آیت ٦٥)

'और अगर आप इनसे पूछिए, तो कह देंगे कि हम तो सिर्फ़ मशग़ला और ख़ुशतबई कर रहे थे।'[1] (सूरः तौबा, आयत 65)

हज़रत ज़ुबैर बिन नुफ़ैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कुछ लोगों ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हमने आपसे ज़्यादा इंसाफ़ का फ़ैसला करने वाला और हक़ बात कहने वाला और मुनाफ़िक़ों पर आपसे ज़्यादा सख़्त आदमी कोई नहीं देखा, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप तमाम लोगों से ज़्यादा बेहतर हैं।

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, तुम लोग ग़लत कह रहे हो। हमने वह आदमी देखा है जो हुज़ूर सल्ल० के बाद हज़रत उमर रज़ि० से भी ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, ऐ औफ़ ! वह कौन है ?

उन्होंने कहा, हज़रत अबूबक्र !

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत औफ़ रज़ि० ठीक कह रहे हैं, तुम सब ग़लत कह रहे हो, अल्लाह की क़सम ! हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुश्क से ज़्यादा पाकीज़ा ख़ुश्बू वाले थे और मैं तो अपने घरवालों के ऊंट से ज़्यादा बिचला हुआ हूं।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० ने लोगों में अपने जासूस छोड़ रखे थे। एक बार उन्होंने आकर हज़रत उमर रज़ि० को बताया कि कुछ लोग फ़्लां जगह जमा हैं और वह आपको हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से अफ़ज़ल बता रहे हैं।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 210,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 210, कंज़, भाग 4, पृ० 350

हज़रत उमर रज़ि० को बहुत ग़ुस्सा आया और आदमी भेजकर उन सबको बुलाया। जब वे सब आ गए, तो उनसे फ़रमाया, ऐ सबसे बुरे लोगो! ऐ क़बीले के शरीरो! ऐ पाक दामन औरतों को बिगाड़ने वालो!

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप हमें ऐसा क्यों कह रहे हैं? हमसे क्या ग़लती हो गई है?

हज़रत उमर रज़ि० ने तीन बार ये सख़्त बातें कहीं, फिर फ़रमाया, तुम लोगों ने मुझमें और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ में क्यों फ़र्क़ डाला? (और मुझे उनसे बेहतर क्यों बताया?) उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मेरी दिली तमन्ना है कि मुझे जन्नत में ऐसी जगह मिले जहां से मुझे हज़रत अबूबक्र रज़ि०, जहां तक नज़र जाए, वहां तक नज़र आते रहें।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, इस उम्मत के नबी के बाद इनमें सबसे अफ़ज़ल हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, इसलिए जो भी मेरी इस बात के बाद कोई और बात कहेगा, वह बुहतान बांधने वाला जाना जाएगा और उसे बुहतान बांधने वाले की सज़ा मिलेगी।[2]

हज़रत ज़ियाद बिन इलाक़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि एक आदमी कह रहा है, यह (यानी हज़रत उमर रज़ि०) हमारे नबी सल्ल० के बाद इस उम्मत में सबसे बेहतरीन हैं। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० उसे कोड़े से मारने लगे और फ़रमाने लगे, यह मनहूस ग़लत कह रहा है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुझसे, मेरे बाप से, तुझसे और तेरे बाप से बेहतर हैं।[3]

हज़रत अबू ज़नाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अली रज़ि० से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या बात है कि मुहाजिरीन और अंसार ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को आगे कर दिया,

1. असद बिन मूसा।
2. अल-कानी
3. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 350,

हालांकि आप उनसे ज़्यादा फ़ज़ीलतों वाले और उनसे पहले इस्लाम लाने वाले हैं और आपको बड़ी सबक़त हासिल है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तू क़ुरैश क़बीले का है, तो मेरे ख़्याल में तू क़ुरैश क़बीले की शाख़ आइज़ा का है। उसने कहा, जी हां।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अगर मोमिन अल्लाह की पनाह में न होता तो मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर देता और अगर तू ज़िंदा रहा तो तुझे इस तरह डराऊंगा कि तुझे उससे बच निकलने का रास्ता नहीं मिलेगा। तेरा नास हो! हज़रत अबूबक्र रज़ि० को चार बातों में मुझ पर सबक़त हासिल है—

एक यह कि उन्हें हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में इमाम बनाया गया,

दूसरी यह कि उन्होंने मुझसे पहले हिजरत की,

तीसरी यह कि हिजरत के मौक़े पर वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ ग़ार में थे,

और चौथी यह कि उन्होंने मुझसे पहले अपने इस्लाम को ज़ाहिर किया। तेरा नास हो। अल्लाह ने क़ुरआन में तमाम लोगों की निन्दा की है और हज़रत अबूबक्र रज़ि० की तारीफ़ बयान की है। अल्लाह ने फ़रमाया है—

إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ (سورة توبه آيت ۴۰)

'अगर तुम लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद न करोगे तो अल्लाह आपकी मदद उस वक़्त कर चुका है, जबकि आपको काफ़िरों ने देश निकाला दे दिया था, जबकि दो आदमियों में एक आप थे, जिस वक़्त कि दोनों ग़ार में थे, जबकि आप अपने साथी से फ़रमा रहे थे कि तुम (कुछ) ग़म न करो, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है।' (सूरः तौबा, आयत 40)[1]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में उनकी

---

0 1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 355, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 447

ख़िदमत में एक घोड़ा पेश किया गया। इस पर एक आदमी ने कहा, यह घोड़ा मुझे सवारी के लिए दे दें।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैं यह घोड़ा ऐसे लड़के को सवारी के लिए दे दूं जिसे नातजुर्बेकारी के बावजूद घोड़ों पर सवार किया गया हो, यह मुझे तुम्हें देने से ज़्यादा महबूब है। उस आदमी को ग़ुस्सा आ गया और उसने कहा, मैं आपसे भी और आपके बाप से भी ज़्यादा अच्छा घुड़सवार हूं।

जब उस आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा की शान में गुस्ताख़ी के ये कलिमे कहे तो मुझे ग़ुस्सा आ गया और मैंने खड़े होकर उसका सर पकड़ा और नाक के बल उसे घसीटा जिससे उसकी नाक से ऐसे ख़ून बहने लग गया कि जैसे किसी बड़े मश्कीज़े का मुंह खुल गया हो (चूंकि वह अंसारी था, इसलिए) अंसार ने मुझसे उसका बदला लेना चाहा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० को जब इसका पता चला, तो फ़रमाया, ये लोग यह समझते हैं कि मैं तुम्हें हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा से बदला दिलवाऊंगा। मैं उन्हें उनके घरों से निकाल दूं, यह मुझे इससे ज़्यादा बेहतर मालूम होता है कि उन्हें ऐसे लोगों से बदला दिलवाऊं जो अल्लाह के लिए, अल्लाह के बन्दों को बुराइयों से रोकते हैं।[1]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को देखा कि उसने अपनी लुंगी टख़ने से नीचे लटका रखी है, तो उससे फ़रमाया, अपनी लुंगी ऊपर कर लो। (हज़रत इब्ने मस्ऊद की लुंगी नीचे थी) उस आदमी ने कहा, ऐ इब्ने मस्ऊद! आप भी अपनी लुंगी ऊपर कर लें।

हज़रत अब्दुल्लाह (इब्ने मस्ऊद रज़ि०) ने उससे फ़रमाया, मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूं, मेरी पिंडुलियां पतली हैं और मैं लोगों का इमाम बनता हूं? (मैं लुंगी नीचे करके लोगों से अपनी पिंडुलियां छिपाता हूं ताकि उनके दिल में मुझसे नफ़रत पैदा न हो)

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 361,

किसी तरह से यह बात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुंच गई, तो हज़रत उमर रज़ि० उस आदमी को मारने लगे और फ़रमाने लगे, क्या तुम इब्ने मसऊद रज़ि० की बात का जवाब देते हो?[1]

हज़रत अला रहमतुल्लाहि अलैहि अपने उस्तादों से यह क़िस्सा नक़ल करते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के घर पर खड़े हुए, उस घर की इमारत को देख रहे थे। एक क़ुरैशी आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह काम आपके अलावा कोई और कर न लेगा?

हज़रत उमर रज़ि० ने एक ईंट लेकर उसे मारी और फ़रमाया, क्या तुम मुझमें हज़रत अब्दुल्लाह से नफ़रत पैदा करना चाहते हो?[2]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी का हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा पर कोई हक़ था। उसने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० की मुख़ालफ़त पर क़सम खा ली, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे ऐसे तीस कोड़े लगवाए कि उसकी खाल फट गई और सूज गई।[3]

हज़रत उम्मे मूसा रहमतुल्लाहि अलैहा फ़रमाती हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु को यह ख़बर मिली कि इब्ने सबा उन्हें हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से अफ़ज़ल क़रार देता है, तो हज़रत अली रज़ि० ने उसे क़त्ल करने का इरादा किया, तो लोगों ने उनसे कहा, क्या आप ऐसे आदमी को क़त्ल करना चाहते हैं, जो आपकी ताज़ीम करता है और आपको दूसरों से अफ़ज़ल क़रार देता है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा इतनी सज़ा तो ज़रूरी है कि मैं जिस शहर में रहता हूं, वह उसमें नहीं रह सकता।[4]

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली

1. कंज़, भाग 7, पृ० 55,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 55,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 120,
4. हुलीया, भाग 8, पृ० 253,

रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला कि अब्दुल्लाह बिन अस्वद हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के दर्जे को कम बताता है तो उन्होंने तलवार मंगा ली और उसे क़त्ल करने का इरादा कर लिया।

लोगों ने हज़रत अली रज़ि० से उसकी सिफ़ारिश की तो फ़रमाया, जिस शहर में मैं रहता हूं वह उसमें नहीं रह सकता, चुनांचे उसे देश-निकाला दे करके शामदेश भेज दिया।[1]

हज़रत कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने कहा, आप तमाम इंसानों से बेहतर हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने पूछा, क्या तूने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है? उसने कहा, नहीं। फिर हज़रत अली रज़ि० ने पूछा, क्या तूने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं देखा? उसने कहा, नहीं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम यह कहते हो कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा है, तो फिर तो मैं तुम्हें क़त्ल कर देता और अगर तुम कहते कि मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि० व हज़रत उमर रज़ि० को देखा है, तो मैं तुम पर शरई सज़ा जारी कर देता, (क्योंकि तुम ने जो कहा है वह बुहतान है, और मैं बुहतान बांधने की सज़ा देता।)[2]

हज़रत अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हम लोगों में बयान फ़रमाया, पहले अल्लाह की हम्द व सना बयान फ़रमाई, फिर फ़रमाया, मुझे यह ख़बर मिली है कि कुछ लोग मुझे हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से अफ़ज़ल क़रार देते हैं, अगर मैं इस काम से खुले तौर पर पहले मना कर चुका होता तो आज मैं इस पर उनको सज़ा ज़रूर देता, क्योंकि मैं इसे पसन्द नहीं करता कि मैंने जिस काम से अभी रोका न हो, उस पर किसी को सज़ा दूं, इसलिए मेरे आज के इस एलान के बाद अगर किसी

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 447,
2. हसन बिन कसीर,

ने ऐसी बात कही, तो वह बुहतान बांधने वाला समझा जाएगा और उसे बुहतान बांधने वाले की सज़ा मिलेगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में सबसे बेहतरीन हज़रत अबूबक्र रज़ि० हैं, फिर हज़रत उमर रज़ि० हैं। इनके बाद तो हमने कई नए काम ऐसे शुरू कर दिए हैं, जिनके बारे में अल्लाह ही फ़ैसला करेगा (कि वे सही हैं या ग़लत।)[1]

हज़रत सुवैद बिन ग़फ़ला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं कुछ लोगों के पास से गुज़रा, जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० का तज़्किरा कर रहे थे और इन दोनों के दर्जे को घटा रहे थे। मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर यह सारी बात बताई।

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह उस पर लानत करे जो अपने दिल में इन दोनों लोगों के बारे में अच्छे और नेक जज़्बों के अलावा कुछ और रखे। ये दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के भाई और उनके वज़ीर थे और फिर मिंबर पर तशरीफ़ ले जाकर ज़बरदस्त बयान फ़रमाया और उसमें यह फ़रमाया—

'लोगों को क्या हो गया है कि वे क़ुरैश के दो सरदारों और मुसलमानों के दो (इज़्ज़तदार और मोहतरम) बापों के बारे में ऐसी बातें कहते हैं, जिनसे मैं बेज़ार और बरी हूं, बल्कि उन्होंने जो ग़लत बातें कही हैं, उन पर सज़ा दूंगा? उस ज़ात की क़सम, जिसने दाने को फाड़ा और जान को पैदा फ़रमाया, इन दोनों से सिर्फ़ वही मुहब्बत करेगा जो ईमान वाला और तक़्वे वाला होगा और इन दोनों से वही बुग़्ज़ रखेगा, जो बदकार और ख़राब होगा।

ये दोनों हज़रात सच्चाई और वफ़ादारी के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में रहे। दोनों हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में नेकी का हुक्म फ़रमाया करते थे और बुराई से रोका करते थे और सज़ा दिया करते थे। जो कुछ भी करते थे उसमें हुज़ूर सल्ल० की मुबारक

1. इब्ने असाकिर

राय के कुछ भी ख़िलाफ़ नहीं किया करते थे और हुज़ूर सल्ल० भी किसी की राय को इन दोनों हज़रात की राय जैसा वज़नी न समझते थे और हुज़ूर सल्ल० को इन दोनों से जितनी मुहब्बत थी, उतनी किसी और से न थी।

हुज़ूर सल्ल० दुनिया से तशरीफ़ ले गए और वह इन दोनों से बिल्कुल राज़ी थे और (उस ज़माने के) तमाम लोग भी उनसे राज़ी थे। फिर (हुज़ूर सल्ल० की आख़िर ज़िंदगी में) हज़रत अबूबक्र रज़ि० को नमाज़ की ज़िम्मेदारी दी गई। फिर जब अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० को दुनिया से उठा लिया तो मुसलमानों ने उन पर नमाज़ की ज़िम्मेदारी को बरक़रार रखा, बल्कि उन पर ज़कात की ज़िम्मेदारी भी डाल दी, क्योंकि क़ुरआन में नमाज़ और ज़कात का ज़िक्र हमेशा इकट्ठा ही आता है।

बनू अब्दुल मुत्तलिब में से मैं सबसे पहले उनका नाम (ख़िलाफ़त के लिए) पेश करने वाला था। उन्हें तो ख़लीफ़ा बनना सबसे ज़्यादा नागवार था, बल्कि वे तो चाहते थे कि इनमें से कोई और उनकी जगह ख़लीफ़ा बन जाए। अल्लाह की क़सम! (हुज़ूर सल्ल० के बाद) जितने आदमी बाक़ी रह गए थे, वे इनमें सबसे बेहतरीन थे। सबसे ज़्यादा शफ़ीक़, सबसे ज़्यादा रहमदिल और बड़े अक़्लमंद और मुत्तक़ी इंसान और सबसे पहले इस्लाम लाने वाले थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको शफ़क़त और रहमदिली में हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम के साथ और माफ़ करने और वक़ार से चलने में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ तशबीह दी थी। वह (ख़लीफ़ा बनकर) बिल्कुल हुज़ूर सल्ल० की सीरत पर चलते रहे, यहां तक कि उनका इंतिक़ाल हो गया। अल्लाह इन पर रहम फ़रमाए।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने लोगों से मश्विरा करके अपने बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अमीर बनाया, कुछ लोग उनकी ख़िलाफ़त पर राज़ी थे, कुछ राज़ी नहीं थे। मैं उनमें से था, जो उनकी ख़िलाफ़त पर राज़ी थे, लेकिन अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ि० ने ऐसे उम्दा तरीक़े से ख़िलाफ़त का काम संभाला कि उनके दुनिया से जाने से पहले वे सब लोग भी उनकी ख़िलाफ़त पर राज़ी हो चुके थे, जो शुरू में राज़ी

नहीं थे और वह ख़िलाफ़त के मामले को बिल्कुल हुज़ूर सल्ल० के और हुज़ूर सल्ल० के साथी यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि० के तरीक़े पर लेकर चले और वे इन दोनों हज़रात के क़दमों के निशान पर इस तरह चले, जिस तरह ऊंट का बच्चा अपनी मां के क़दमों के निशानों पर चलता है और वह अल्लाह की क़सम! हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बाद रह जाने वालों में सबसे बेहतरीन थे और बड़े मेहरबान और रहमदिल थे, ज़ालिम के ख़िलाफ़ मज़्लूम की मदद किया करते थे।

फिर अल्लाह ने हक़ को उनकी ज़ुबान पर इस तरह जारी कर दिया था कि हमें नज़र आता था कि फ़रिश्ता उनकी ज़ुबान पर बोल रहा है। उनके इस्लाम के ज़रिए अल्लाह ने इस्लाम को इज़्ज़त अता फ़रमाई और उनकी हिजरत को दीन के क़ायम होने का ज़रिया बनाया और अल्लाह ने ईमान वालों के दिल में उनकी मुहब्बत और मुनाफ़िक़ों के दिल में उनका रौब डाला हुआ था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको दुश्मनों के बारे में सख़्त दिल और सख़्त कलाम होने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के साथ और काफ़िरों पर दांत पीसने और सख़्त नाराज़ होने में हज़रत नूह के साथ तश्बीह दी थी।

अब बताओ, तुम्हें कौन इन दोनों जैसा लाकर दे सकता है? इन दोनों के दर्जे को वही पहुंच सकता है जो इनसे मुहब्बत करेगा और इन दोनों की पैरवी करेगा। जो इन दोनों से मुहब्बत करेगा वह मुझसे मुहब्बत करने वाला है और जो इनसे बुग़्ज़ रखेगा, वह मुझसे बुग़्ज़ रखने वाला है और मैं उससे बरी हूं।

अगर इन दोनों हज़रात के बारे में मैं ये बातें पहले कह चुका होता, तो मैं उनके ख़िलाफ़ बोलने वालों को आज सबसे सख़्त सज़ा देता, इसलिए मेरे आज के इस बयान के बाद जो इस जुर्म में पकड़कर मेरे पास लाया जाएगा, उसको वह सज़ा मिलेगी जो बुहतान बांधने वाले की सज़ा होती है।

ग़ौर से सुन लो, इस उम्मत के नबी के बाद इस उम्मत में सबसे बेहतरीन हज़रत अबूबक्र रज़ि० हैं, फिर हज़रत उमर हैं, फिर अल्लाह ही जानते हैं कि ख़ैर और बेहतरी कहां है। मैं अपनी यह बात कहता हूं,

अल्लाह मेरी और तुम सब लोगों की मग़फ़िरत फ़रमाए।[1]

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आग में हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, तुम्हें इसका कहां से पता चला?

उस आदमी ने कहा, क्योंकि उन्होंने बहुत से नए काम किए हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने उससे पूछा, तुम्हारा क्या ख़्याल है? अगर तुम्हारी कोई बेटी हो, तो क्या तुम उसकी शादी बग़ैर मश्विरे के कर दोगे?

उसने कहा, नहीं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपनी दो बेटियों (की शादी) के बारे में जो राय थी, क्या उससे बेहतर कोई राय हो सकती है? ज़रा मुझे यह बताओ कि हुज़ूर सल्ल० जब किसी काम का इरादा फ़रमाते थे, उसके बारे में अल्लाह से इस्तिख़ारा करते थे या नहीं?

उसने कहा, क्यों नहीं, हुज़ूर सल्ल० इस्तिख़ारा करते थे।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के इस्तिख़ारा करने पर अल्लाह हुज़ूर सल्ल० के लिए ख़ैर और बेहतर शक्ल को चुनते थे या नहीं?

उसने कहा, करते थे।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, अच्छा यह बताओ कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से अपनी दो बेटियों की जो शादी की थी उसमें भी अल्लाह ने उनके लिए ख़ैर का चुनाव किया था या नहीं? मैंने तुम्हारी गरदन उड़ा देने के बारे में ग़ौर किया था, लेकिन अभी अल्लाह को यह मंज़ूर नहीं था। ग़ौर से सुनो, अगर तुम इसके अलावा कुछ और कहोगे, तो मैं तुम्हारी गरदन उड़ा दूंगा।[2]

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 4, पृ० 446,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 18,

हज़रत सालिम के वालिद कहते हैं, मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी मिले, जिनकी ज़ुबान में कुछ कमज़ोरी थी, जिसकी वजह से उनकी बात साफ़ ज़ाहिर नहीं होती थी। उन्होंने (शिकायत के अंदाज़ में) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का तज़्किरा किया।

इस पर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि आप क्या कह रहे हैं? ऐ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की जमाअत! यह तो आप सब जानते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, और उस्मान रज़ि० कहा करते थे (यानी तीनों का नाम इकट्ठा लिया करते थे, क्योंकि तमाम सहाबा रज़ि० तीनों की ताज़ीम किया करते थे)। अब तो माल ही मक़्सूद हो गया है कि हज़रत उस्मान रज़ि० अगर उसे माल दे दें, फिर तो हज़रत उस्मान रज़ि० उसे पसन्द हैं।[1]

हज़रत आमिर बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु पैदल जा रहे थे कि उनका गुज़र एक आदमी पर हुआ जो हज़रत अली रज़ि०, हज़रत तलहा रज़ि०, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की शान में नामुनासिब बातें कह रहा था, हज़रत साद रज़ि० ने कहा, तुम ऐसे लोगों को बुरा कह रहे हो जिन्हें अल्लाह की ओर से बहुत-सी फ़ज़ीलतें और इनाम मिल चुके हैं। अल्लाह की क़सम! या तो तुम इन्हें बुरा कहना छोड़ दो, नहीं तो मैं तुम्हारे लिए बद-दुआ करूंगा।

उसने जवाब में कहा, यह तो मुझे ऐसे डरा रहे हैं जैसे कि यह नबी हों।

हज़रत साद रज़ि० ने यह बद-दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! अगर यह उन लोगों को बुरा कह रहा है, जिन्हें तेरी ओर से बड़ी फ़ज़ीलतें और इनाम मिल चुके हैं, तो तू उसे सबक़ भरी सज़ा दे। चुनांचे एक बुख़्ती ऊंटनी तेज़ी से आई। लोग उसे देखकर इधर-उधर हट गए। उस ऊंटनी

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 235,

ने उस आदमी को रौंद डाला (और उसे मार डाला।)

मैंने देखा कि लोग हज़रत साद के पीछे-पीछे जा रहे थे और कह रहे थे, ऐ अबू इस्हाक़ ! अल्लाह ने आपकी दुआ क़ुबूल कर ली।[1]

हज़रत मुस्अब बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा कहा, तो हज़रत साद बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके लिए बद-दुआ फ़रमाई। चुनांचे एक ऊंट या ऊंटनी ने आकर उसे मार डाला। इस पर हज़रत साद ने एक ग़ुलाम आज़ाद किया और यह क़सम खा ली कि आगे किसी के लिए बद-दुआ नहीं करेंगे।[2]

हज़रत क़ैस बिन हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदीना के एक बाज़ार में चला जा रहा था। जब मैं अहजारुज़्ज़ैत नामी जगह पर पहुंचा तो मैंने देखा कि बहुत से लोग जमा हैं और एक आदमी अपनी सवारी पर बैठा हुआ हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कह रहा है। लोग उसके चारों ओर खड़े हैं। इतने में हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु आकर वहां खड़े हो गए और पूछा कि यह क्या है?

लोगों ने बताया कि एक आदमी हज़रत अली बिन अबी तालिब को बुरा-भला कह रहा है। हज़रत साद आगे बढ़े, लोगों ने उन्हें रास्ता दिया। उन्होंने उस आदमी के पास खड़े होकर कहा, ऐ फ़लाने ! तू किस वजह से हज़रत अली बिन अबी तालिब को बुरा-भला कह रहा है? क्या वह सबसे पहले मुसलमान नहीं हुए? क्या उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी? क्या वह लोगों में सबसे बड़े ज़ाहिद और सबसे बड़े आलिम नहीं थे? उनकी और बहुत-सी फ़ज़ीलतें ज़िक्र कीं और यह भी कहा, क्या वह हुज़ूर सल्ल० के दामाद नहीं थे? क्या लड़ाइयों में हुज़ूर सल्ल० का झंडा उनके पास नहीं होता था?

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 154
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 499

फिर क़िब्ले की ओर मुंह करके अपने हाथ उठाए और यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! अगर यह आदमी तेरे एक दोस्त को बुरा-भला कह रहा है, तो इन लोगों के बिखरने से पहले उसको अपनी क़ुदरत दिखा। चुनांचे हमारे बिखरने से पहले ही अल्लाह की क़ुदरत ज़ाहिर हुई। उसकी सवारी के पांव ज़मीन में धंसने लगे, जिससे वह सर के बल उन पत्थरों पर ज़ोर से गिरा, जिससे उसका सर फट गया और उसका भेजा बाहर निकल आया और वह वहीं मर गया।[1]

हज़रत रबाह बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मुग़ीरह रज़ि० बड़ी जामा मस्जिद में तशरीफ़ रखते थे और कूफ़ा वाले उनके दाएं-बाएं बैठे हुए थे। हज़रत सईद बिन ज़ैद नामी एक सहाबी तशरीफ़ लाए। हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने उन्हें सलाम किया और तख़्त पर अपने पैरों के क़रीब उन्हें बिठाया, इतने में कूफ़े का एक आदमी आया और बुरा-भला कहने लग गया।

हज़रत सईद ने पूछा, ऐ मुग़ीरह ! यह किसे बुरा-भला कह रहा है?

उन्होंने कहा, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को।

हज़रत सईद ने कहा, ऐ मुग़ीरह बिन शोबा ! ऐ मुग़ीरह बिन शोबा ! ऐ मुग़ीरह बिन शोबा ! क्या मैं सुन नहीं रहा कि हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा को आपके सामने बुरा-भला कहा जा रहा है और आप न उसका इंकार कर रहे हैं और न उसे बदलने की कोशिश कर रहे हैं? मैं गवाही देता हूं कि यह बात मेरे कानों ने हुज़ूर सल्ल० से सुनी है और मेरे दिल ने उसे महफ़ूज़ किया है और मैं हुज़ूर सल्ल० से ग़लत बात नक़ल नहीं कर सकता, क्योंकि मैं ग़लत बात नक़ल करूंगा, तो कल क़ियामत के दिन जब आपसे मेरी मुलाक़ात होगी, तो हुज़ूर सल्ल० मुझसे उस ग़लत बात के बारे में पूछेंगे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया है, अबूबक्र रज़ि० जन्नत में जाएंगे, उमर रज़ि० जन्नत में जाएंगे, उस्मान रज़ि० जन्नत में जाएंगे, अली रज़ि० जन्नत में जाएंगे, तलहा रज़ि० जन्नत में जाएंगे, ज़ुबैर रज़ि० जन्नत में जाएंगे, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 500, दलाइल, पृ० 206,

जन्नत में जाएंगे, साद बिन मालिक रज़ि० जन्नत में जाएंगे और नवें नम्बर पर इस्लाम लाने वाला जन्नत में जाएगा। अगर मैं उसका नाम लेना चाहता, तो ले सकता था।

इस पर मस्जिद वालों ने शोर मचा दिया और क़सम देकर पूछने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबी रज़ि० ! वह नवां आदमी कौन है ?

उन्होंने फ़रमाया, तुम मुझे अल्लाह की क़सम देकर पूछ रहे हो और अल्लाह बहुत बड़े हैं। नवां मुसलमान मैं हूं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दसवें हैं।

फिर उन्होंने एक और क़सम खाकर कहा, एक आदमी किसी मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० के साथ रहा हो, जिसमें उसका चेहरा धूल से अटा हुआ हो और तुम्हें हज़रत नूह की उम्र मिल जाए, तो भी यह अमल तुम्हारी ज़िंदगी के तमाम अमलों से ज़्यादा अफ़ज़ल होगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ालिम माज़नी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु कूफ़ा से जाने लगे तो हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु को कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। हज़रत मुग़ीरह रज़ि० ने ख़तीब लोगों को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बुरा-भला कहने में लगा दिया।

मैं हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु के पहलू में बैठा हुआ था। यह देखकर हज़रत सईद रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने खड़े होकर मेरा हाथ पकड़ा। मैं उनके पीछे चल दिया।

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम इस आदमी को देखते नहीं जो अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा है और एक जन्नती आदमी को बुरा कहने का हुक्म दे रहा है ? मैं नौ आदमियों के बारे में गवाही देता हूं कि वे जन्नत में जाएंगे। (उनमें से एक हज़रत अली रज़ि० हैं।) अगर मैं दसवें के बारे में भी गवाही दे दूं तो गुनाहगार नहीं हूंगा।[2]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 95,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 96, मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 79.

बड़ों की वफ़ात पर रोना

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नेज़ा मारा गया तो उनकी ख़िदमत में पीने की कोई चीज़ लाई गई। (उन्होंने उसे पिया) तो वह घाव के रास्ते से बाहर आ गई, (और सबको पता चल गया कि अब बचने की उम्मीद नहीं है।)

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे, हाय उमर रज़ि० ! हाय मेरे भाई ! आपके बाद हमारा कौन होगा ?

हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ मेरे भाई ! ऐसे न कहो, क्या आप जानते नहीं कि जिसके मरने पर ऊंची आवाज़ से रोया जाएगा, उसे अज़ाब दिया जाएगा, (बशर्तेकि वह मरते वक़्त उसकी वसीयत करके गया हो।)[1]

हज़रत अबू बुरदा के वालिद कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नेज़ा मारा गया, तो हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ऊंची आवाज़ से रोते हुए आए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मुझ पर ?

हज़रत सुहैब रज़ि० ने कहा, जी हां। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमया, क्या आपको मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिस आदमी के मरने पर रोया जाएगा, उसे अज़ाब दिया जाएगा।

हज़रत मिक़्दाम बिन मादी कर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु घायल हो गए, तो हज़रत हफ़्सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा उनकी ख़िदमत में आईं और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के सहाबी रज़ि० ! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ससुर ! और ऐ अमीरुल मोमिनीन !

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० रज़ियल्लाहु अन्हुमा से

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 362,

फ़रमाया, ऐ अब्दुल्लाह! मुझे बिठा दो, मैं यह सब कुछ सुनकर अब और आगे सब्र नहीं कर सकता। चुनांचे हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उन्हें अपने सीने से लगाकर बिठा लिया और हज़रत हफ़्सा रज़ि० से कहा, तुम्हारे ऊपर जो मेरे हक़ हैं, उनका वास्ता देकर मैं तुम्हें इस बात से मना करता हूं कि तुम आज के बाद मुझ पर नौहा करो। तुम्हारी आंखों पर तो मैं कोई पाबन्दी नहीं लगा सकता (क्योंकि आंसू से रोने में कोई हरज नहीं है) लेकिन यह याद रखो कि जिस मैयत पर नौहा किया जाएगा और जो सिफ़तें उसमें नहीं हैं, वे बयान की जाएंगे, तो फ़रिश्ते उसे लिख लेंगे।

हज़रत ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु रो रहे थे किसी ने उनसे पूछा कि ऐ अबुल आवर! आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने कहा, मैं इस्लाम (के नुक़सान) पर रो रहा हूं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात से इस्लाम में ऐसी दराड़ पैदा हो गई है, जो क़ियामत तक नहीं भर सकेगी।

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर हमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने की ख़बर दी। उस दिन मैंने लोगों को जितना ग़मगीन और जितना रोते हुए देखा, उतना और किसी दिन नहीं देखा।

फिर हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! अगर मुझे पता चल जाता था कि हज़रत उमर रज़ि० फ़्लां कुत्ते से मुहब्बत करते हैं, तो मैं भी उससे मुहब्बत करने लग जाता था। अल्लाह की क़सम! मुझे यक़ीन है कि कांटेदार झाड़ियों को भी हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल का ग़म महसूस हुआ है।[1]

हज़रत अबू उस्मान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि जब उन्हें हज़रत नोमान रज़ियल्लाहु

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 372

अन्हु की वफ़ात की ख़बर मिली तो वह अपने सर पर हाथ रखकर रोने लगे।[1]

हज़रत अबू अशअस सनआनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, सनआ के गवर्नर जिनका नाम हज़रत सुमामा बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु था, उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत व शरफ़ हासिल था, जब उन्हें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल की ख़बर मिली तो रोने लगे और फ़रमाया, अब हमसे नुबूवत के तरीक़े पर चलने वाली ख़िलाफ़त छीन ली गई है और बादशाहत और ज़बरदस्ती लेने का दौर आ गया है और जो आदमी ज़ोर लगाकर जिस चीज़ पर ग़लबा पालेगा, वह उसे खा जाएगा।[2]

हज़रत ज़ैद बिन अली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के घर का घेराव करके उन्हें शहीद कर दिया गया, उस दिन हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु उनकी शहादत पर रो रहे थे।

हज़रत अबू सालेह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु उन ज़ुल्मों का ज़िक्र करते जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर ढाए गए थे, तो रोने लग जाते और उनका हाय-हाय करके ज़ोर से रोना मुझे ऐसे याद है कि जैसे मैं अब सुन रहा हूं।

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु उन सहाबा रज़ि० में से थे जो बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद कर दिया गया, तो हज़रत अबू हुमैद रज़ि० ने यह नज़्र मानी कि ऐ अल्लाह! मैं नज़्र मानता हूं कि अब आगे फ़्लां और फ़्लां काम नहीं किया करूंगा और तेरी मुलाक़ात तक यानी मौत तक कभी नहीं हंसूगा।[3]

1. कंज़, भाग 8, पृ० 117,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 27, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 80
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 81

बड़ों की मौत पर दिलों की हालत को बदला हुआ महसूस करना

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अभी हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को (दफ़न करके और) मिट्टी में छिपाकर हटे ही थे कि हमें अपने दिल बदले हुए महसूस होने लग गए थे।[1]

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, तो हम सबके चेहरे एक तरफ़ थे, लेकिन जब आप हमें दुनिया में छोड़कर आगे तशरीफ़ ले गए, तो हमारे चेहरे दाएं-बाएं अलग-अलग दिशाओं में हो गए।

दूसरी रिवायत में इस तरह है कि जब हम अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, तो हम सबका रुख़ एक तरफ़ था, जब अल्लाह ने आपको उठा लिया, तो हम इधर-उधर देखने लगे।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब वह दिन आया, जिस दिन अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया से उठा लिया, तो उस दिन मदीना की हर चीज़ अंधेरी हो गई थी और अभी हमने हुज़ूर सल्ल० से फ़ारिग़ होकर हाथ नहीं झाड़े थे कि हमें अपने दिल बदले हुए महसूस होने लगे।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हिजरत का क़िस्सा बयान करते हुए फ़रमाते हैं, मैं उस दिन भी मौजूद था, जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास मदीना तशरीफ़ लाए और उस दिन से ज़्यादा अच्छा और ज़्यादा रोशन दिन मैंने कोई नहीं देखा और मैं उस दिन भी मौजूद था, जिस दिन हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ और मैंने उस दिन से ज़्यादा बुरा और ज़्यादा अंधेरा दिन कोई नहीं देखा।[4]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 38,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 254
3. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 274,
4. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 234,

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब शूरा के लोग (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद) एक जगह जमा हुए और हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका रवैया देखा (कि हर एक यह चाहता है कि दूसरा ख़लीफ़ा बन जाए) तो फ़रमाया कि (अब उम्मत के हालात ऐसे हैं कि) अगर तुम सब अमारत के तलब करने वाले बन जाओ, तो मुझे इसमें कम ख़तरा महसूस हो रहा है और अगर तुम सब अमारत को एक दसूरे पर डालने लगो, तो मुझे इसमें ज़्यादा ख़तरा नज़र आ रहा है, अल्लाह की क़सम ! हज़रत उमर रज़ि० के इंतिक़ाल की वजह से हर मुसलमान घराने के दीन और दुनिया में कमी आई है।[1]

कमज़ोर और फ़क़ीर मुसलमानों का इकराम करना

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम छः आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे—मैं, हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि०, क़बीला हुज़ैल के एक साहब, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुम और दो आदमी और भी थे। रिवायत करने वाले कहते हैं, मैं उन दोनों के नाम भूल गया, तो मुश्रिकों ने हुज़ूर सल्ल० से कहा कि हम इन (छः आदमियों) को अपनी मज्लिस से बाहर भेज दें। ये ऐसे और ऐसे (यानी कमज़ोर-मिस्कीन क़िस्म के) लोग हैं (और हम बड़े मालदार और सरदार लोग हैं, इन ग़रीबों के साथ नहीं बैठ सकते हैं।)

इस पर हुज़ूर सल्ल० के दिल में ऐसा करने का ख़्याल आ गया, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۔

(سورت انعام آیت ۵۲)

'और इन लोगों को न निकालिए जो सुबह व शाम अपने पालनहार की इबादत करते हैं जिससे ख़ास उसकी रिज़ा ही का इरादा रखते हैं।'[2]

(सूरः अनआम, आयत 52)

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 374,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 346, हाकिम, भाग 3, पृ० 319

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुरैश के कुछ सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से गुज़रे। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास हज़रत सुहैब रज़ि०, हज़रत बिलाल रज़ि०, हज़रत ख़ब्बाब और हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हुम और इन जैसे कुछ और कमज़ोर और ग़रीब मुसलमान बैठे हुए थे। इन सरदारों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! (मज़ाक़ के तौर पर हुज़ूर सल्ल० को ऐ अल्लाह के रसूल कहकर पुकारा) क्या आपको अपनी क़ौम में से यही लोग पसन्द आए? क्या इन लोगों का मातहत बनकर चलना पड़ेगा? क्या यही वे लोग हैं, जिन पर अल्लाह ने एहसान फ़रमाया है? इन लोगों को आप अपने पास से दूर कर दें, तो फिर शायद हम आपकी पैरवी करें।

इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ

فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

तक, यानी 'और इस क़ुरआन के ज़रिए से उन लोगों को डराइए जो इस बात से अंदेशा रखते हैं कि अपने रब के पास ऐसी हालत में जमा किए जाएंगे कि जितने ग़ैर-अल्लाह हैं, न उनका मददगार होगा और न कोई सिफ़ारिशी होगा इस उम्मीद पर कि वे डर जावें और उन लोगों को न निकालिए जो सुबह व शाम अपने पालनहार की इबादत करते हैं जिससे ख़ास उसकी रिज़ा का ही इरादा रखते हैं। इनका हिसाब ज़रा भी आपसे मुताल्लिक़ नहीं और आपका हिसाब ज़रा भी इनसे मुताल्लिक़ नहीं कि आप उनको निकाल दें, वरना आप नामुनासिब काम करने वालों में से हो जाएंगे।'[1] (सूरः अनआम, आयत 51)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के फ़रमान 'अ-ब-स व-त-वल्ला' के बारे में फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० (मक्का सरदार) उबई बिन ख़ल्फ़ से (दावत की) बात

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 346, हैसमी, भाग 7, पृ० 21,

कर रहे थे, इसलिए हुज़ूर सल्ल० उनकी ओर मुतवज्जह न हुए, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ـ (سورت عبس آیت ۱)

'पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पेशानी पर बल पड़ गए और मुतवज्जह न हुए इस बात से कि उनके पास अंधा आया।' (सूरः अ-ब-स, आयत 1)

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० हमेशा उनका इकराम फ़रमाया करते थे।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि 'अ-ब-स व त वल्ल ना-बीना (अंधे) हज़रत इब्ने मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में उतरी हुई है। इसका क़िस्सा यह हुआ कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे, आप मुझे सीधा रास्ता बता दें, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के पास मुश्रिकों का एक बड़ा आदमी बैठा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी ओर तवज्जोह न फ़रमाई, बल्कि उसी दूसरे की ओर ही मुतवज्जह रहे और हुज़ूर सल्ल० ने उस मुश्रिक से फ़रमाया, तुम्हें मेरी बात में कोई हरज नज़र आता है?

उसने कहा, नहीं। इस पर 'अ-ब-स व त-वल्ला' उतरी।[2]

हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अक़रअ बिन हाबिस तमीमी और उऐना बिन हिस्न फ़ज़ारी आए तो उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत अम्मार, हज़रत बिलाल, हज़रत ख़ब्बाब बिन अरत्त रज़ियल्लाहु अन्हुम और दूसरे कमज़ोर नादार मुसलमानों के साथ बैठे हुए पाया। इन दोनों को ये लोग हक़ीर (तुच्छ) नज़र आए, इसलिए दोनों ने हुज़ूर सल्ल० को अलग ले जाकर तंहाई में यह कहा कि आपके पास अरब के वफ़्द आते हैं, लेकिन हमें इस बात से शर्म आ रही है कि (हम लोग बड़े आदमी हैं) हमें जब अरब के लोग इन ग़ुलामों के साथ बैठा हुआ देखेंगे तो क्या कहेंगे, इसलिए जब हम आपके पास आया करें तो आप इन्हें उठाकर भेज दिया करें।

---

1. अबू याला,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 470

आपने कहा, ठीक है।

फिर इन दोनों ने कहा, आप हमें यह बात लिखकर दे दें। आपने एक काग़ज़ मंगवाया और लिखने के लिए हज़रत अली रज़ि० को बुलाया। हम लोग एक कोने में बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत जिब्रील अलै० ये आयतें लेकर आ गए—

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهٗ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظّٰلِمِينَ ○ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنِنَا اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِينَ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاٰيٰتِنَا۔ (سورت انعام آیت ۵۰)

(पहली आयत का तर्जुमा गुज़र चुका है, दूसरी आयत का तर्जुमा पेश है)

'और इसी तौर पर हमने एक को दूसरे के ज़रिए से आज़माइश में डाल रखा है, ताकि ये लोग कहा करें, क्या ये लोग हैं कि हम में से इन पर अल्लाह ने मेहरबानी की है, क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह हक़ पहचानने वालों को ख़ूब जानता है और ये लोग जब आपके पास आवें जो कि हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो यों कह दीजिए कि तुम पर सलामती हो।' (सूर: अनआम, आयत 54)

इस पर आपने वह काग़ज़ फ़ेंक दिया और हमें बुला लिया। हम आपके पास गए। आपने फ़रमाया 'सलामुन अलैकुम'। फिर हम हुज़ूर सल्ल० के इतने क़रीब हुए कि हमारे घुटने हुज़ूर सल्ल० के घुटनों से जा मिले और फिर हुज़ूर सल्ल० का यह मामूल था कि जब हमारे पास बैठे होते और उठना चाहते तो हमें यों ही बैठा हुआ छोड़कर खड़े हो जाते, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ (سورت کہف آیت ۲۸)

'और आप अपने आपको उन लोगों के साथ बांधे रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ़ उसकी रिज़ा

हासिल करने के लिए करते हैं और दुनिया की ज़िंदगी की रौनक़ के ख़्याल से आपकी आंखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएं।'

(सूरः कहफ़, आयत 28)

इसके बाद हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बैठे होते थे और जब हुज़ूर सल्ल० के उठकर जाने का वक़्त आ जाता तो हम हुज़ूर सल्ल० को बैठा हुआ छोड़कर खड़े हो जाते और जब तक हम खड़े न हो जाते, आप बैठे ही रहते।[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, उऐना बिन हिस्न और अक़रअ बिन हाबिस और उन जैसे और मुअल्लफ़तुल क़ुलूब लोगों ने (यानी वे नव-मुस्लिम जिनका हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दिल रखा करते थे) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप मस्जिद के अगले हिस्से में बैठ जाएं और हज़रत अबूज़र और हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हुमा और दूसरे मुसलमान फ़क़ीरों को और उनके जुब्बों की बदबू को हमसे दूर कर दें, तो हम आपके पास बैठकर ख़ुलूस और मुहब्बत की बातें कर लें और आपसे (क़ुरआन व हदीस) ले लें।

ये ग़रीब लोग ऊन जुब्बे पहना करते थे। दूसरे सूती कपड़े उनके पास नहीं होते थे। (उन जुब्बों से उनकी बू आती थी) इस पर अल्लाह ने ये आयतें उतारीं—

وَاتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ

نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا

तक, जिनमें अल्लाह ने इन्हें दोज़ख़ की धमकी दी।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 146, बिदाया, भाग 6, पृ० 56, कंज़ुल उम्माल, भाग 1, पृ० 245,

तर्जुमा—'और आपके पास जो आपके रब की किताब वह्य के ज़रिए से आई है, (लोगों के सामने) पढ़ दिया कीजिए, उसकी बातों को (यानी वायदों को) कोई बदल नहीं सकता और आप ख़ुदा के सिवा और कोई पनाहगाह न पावेंगे और आप अपने आपको उन लोगों को बांध रखा कीजिए जो सुबह व शाम (यानी हमेशा) अपने रब की इबादत सिर्फ़ उसकी रज़ा हासिल करने के लिए करते हैं और दुनिया की ज़िंदगी की रौनक़ के ख़्याल से आपकी आंखें (यानी तवज्जोह) उनसे हटने न पाएं और ऐसे आदमी की बात न मानिए जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर रखा है और वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पर चलता है और उसका (यह) हाल हद से गुज़र गया है और आप कह दीजिए कि (यह दीन) हक़ तुम्हारे रब की ओर से (आया) है, सो जिसका जी चाहे, ईमान ले आवे और जिसका जी चाहे, काफ़िर रहे। बेशक हमने ऐसे ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है कि उस आग की क़नातें उसको घेरे होंगी।' (सूरः कह्फ़, आयत 28, 29)

इस पर हुज़ूर सल्ल० उठे और उन ग़रीब मुसलमानों को खोजने लगे तो हुज़ूर सल्ल० को वे मस्जिद के आख़िरी हिस्से में बैठे हुए अल्लाह का ज़िक्र करते हुए मिल गए। फिर आपने फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे वफ़ात से पहले ख़ुद ही इस बात का हुक्म दिया कि मैं अपनी उम्मत के उन लोगों के साथ ही रहा करूं।

फिर आपने फ़रमाया, मेरा मरना और जीना सब तुम्हारे साथ होगा।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि क़ैस बिन मतातीया एक हलक़े के पास आया। उस हलक़े में हज़रत सलमान फ़ारसी, हज़रत सुहैब रूमी और हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हुम तशरीफ़ फ़रमा थे। क़ैस ने कहा, ये औस व ख़ज़रज (अरब हैं और बड़े लोग हैं ये) इस आदमी की मदद के लिए खड़े हुए हैं, (यह बात तो समझ में आती है), लेकिन इन अजमी ग़रीब व फ़क़ीर बे-हैसियत लोगों को क्या हुआ? (कि ये भी मदद के लिए खड़े हो गए,

1. अबी नुऐम, भाग 1, पृ० 345,

इनकी मदद से फ़ायदा क्या?)

हज़रत मुआज़ ने खड़े होकर क़ैस का गरेबान पकड़ा और उसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले गए और जाकर हुज़ूर सल्ल० को उसकी बात बताई। इस पर हुज़ूर सल्ल० गुस्से में (जल्दी की वजह से) चादर घसीटते हुए खड़े हुए और मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और हुज़ूर सल्ल० ने एलान के लिए आदमी भेजा, जिसने 'अस्सलातु जामिअतुन' कहकर लोगों में एलान किया।

(लोग जमा हो गए, फिर हुज़ूर सल्ल० ने बयान फ़रमाया) और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो! बेशक रब एक है (यानी अल्लाह) और बाप भी एक है (यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) और दीन भी एक है (यानी इस्लाम) ग़ौर से सुनो, यह अरबियत न तुम्हारी मां है और न तुम्हारा बाप, यह तो एक ज़ुबान है, इसलिए जो भी अरबी ज़ुबान में बात करने लग जाए, वह ख़ुद अरबी समझा जाएगा।

क़ैस का गरेबान पकड़े हुए हज़रत मुआज़ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप इस मुनाफ़िक़ के बारे में क्या फ़रमाते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे छोड़ दो, यह दोज़ख़ में जाएगा। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के बाद यह क़ैस मुर्तद हो गया और इसी हालत में मारा गया।[1]

मां-बाप का इक्राम करना

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं अपनी मां को सख़्त गर्म और पथरीली ज़मीन में अपने कंधों पर उठाकर दो फ़रसख़ यानी छः मील ले गया। वह इतनी गर्म थी कि मैं अगर उसमें गोश्त का एक टुकड़ा डाल देता, तो वह पक जाता, तो क्या मैंने उसके एहसानों का बदला अदा कर दिया?

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 46,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, शायद दर्जेज़ेह (प्रसव-पीड़ा) की एक टीस का बदला हो गया हो (लेकिन उसके एहसान तो इसके अलावा और बहुत हैं।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक आदमी आया, उसके साथ एक बड़े मियां भी थे। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, ऐ फ़्लाने ! यह तुम्हारे साथ कौन है ?

उसने कहा, यह मेरे वालिद हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनके आगे न चलो और उनसे पहले न बैठो और उनका नाम लेकर न पुकारो और उनको गाली दिए जाने का ज़रिया न बनो (कि तुम किसी के बाप को गाली दो, वह जवाब में तुम्हारे बाप को गाली दे दे)[2]

हज़रत अबू ग़स्सान ज़ब्बी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं अपने वालिद साहब के साथ (मदीना मुनव्वरा के) पथरीले मैदान में चला जा रहा था कि इतने में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने मुझसे पूछा कि यह कौन है ?

मैंने कहा, यह मेरे वालिद हैं। उन्होंने फ़रमाया, उनके आगे मत चला करो, बल्कि इनके पीछे या इनके साथ पहलू में चला करो और किसी को अपने और इनके बीच आने न दो और अपने वालिद के मकान की ऐसी छत पर न चलो, जिसकी मुंडेर न हो, क्योंकि इससे उनके दिल में (छत से तुम्हारे नीचे गिर जाने का) ख़तरा पैदा होगा (और वह इससे परेशान होंगे) और गोश्त वाली हड्डी पर तुम्हारे वालिद की निगाह पड़ चुकी हो, तो तुम उसे न खाओ। हो सकता है, वह इसे खाना चाहते हों।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिहाद में

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 137
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 137
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 137

आने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे मां-बाप ज़िंदा हैं? उसने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम इन दोनों की सेवा करो। (इनके ख़िदमत के मुहताज होने की वजह से) तुम्हारा जिहाद यही है।[1]

मुस्लिम की एक रिवायत में यह है कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, मैं आपसे हिजरत और जिहाद पर बैअत होना चाहता हूं और अल्लाह से उसका बदला लेना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम्हारे मां-बाप में से कोई ज़िंदा है?

उसने कहा, जी हां, दोनों ज़िंदा हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अल्लाह से बदला लेना चाहते हो? उसने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने मां-बाप के पास वापस चले जाओ और उनकी अच्छी तरह ख़िदमत करो।

अबू दाऊद की एक रिवायत में यह है कि उस आदमी ने कहा, मैं आपकी ख़िदमत में हिजरत पर बैअत होने आ गया हूं, लेकिन मैं अपने मां-बाप को रोता हुआ छोड़कर आ रहा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उन दोनों के पास वापस जाओ और उन्हें (ख़ुश करके) ऐसे ही हंसाओ जैसे तुम इन्हें (परेशान करके) रुला कर आए हो।

अबू दाऊद की एक रिवायत में हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं, यमन का एक आदमी हिजरत करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम्हारा यमन में कोई है? उसने कहा, मेरे मां-बाप हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या इन दोनों ने तुम्हें यहां आने की इजाज़त दी थी? उसने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम इन दोनों के पास वापस जाओ और उनसे इजाज़त मांगो। अगर वे तुम्हें

---

1. इब्ने माजा

इजाज़त दे दें, फिर तो तुम जिहाद में जाओ, वरना उन्हीं की ख़िदमत करते रहो।

अबू याला और तबरानी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, मैं जिहाद में जाना चाहता हूं, लेकिन मुझमें (जिहाद में जाने की) ताक़त नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे मां-बाप में से कोई ज़िंदा है? उसने कहा, मेरी मां ज़िंदा हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपनी मां की ख़िदमत करते हुए अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाओ। (यानी मरते दम तक तुम उसकी ख़िदमत करते रहो) जब तुम यह करोगे तो गोया तुमने हज, उमरा और जिहाद सभी कुछ कर लिया।[1]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एलान फ़रमाया, तुम उस बस्ती में जाने की तैयारी कर लो, जिसके रहने वाले बड़े ज़ालिम हैं। इनशाअल्लाह अल्लाह वह बस्ती जीत कर के तुम्हें दे देंगे। हुज़ूर सल्ल० का मक़सद ख़ैबर जाना था और आपने यह भी फ़रमाया, मेरे साथ अड़ियल सवारी वाला और कमज़ोर सवारी वाला हरगिज़ न जाए।

यह सुनकर हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने जाकर अपनी मां से कहा, मेरे सफ़र का सामान तैयार कर दो, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने ग़ज़वे की तैयारी का हुक्म फ़रमाया है।

उनकी मां ने कहा, तुम जा रहे हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारे बग़ैर अन्दर आ जा नहीं सकती। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, मैं हुज़ूर सल्ल० से पीछे नहीं रह सकता। उनकी मां ने अपना पिस्तान निकालकर अपने दूध का वास्ता दिया, (लेकिन हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० न माने) तो उनकी मां ने चुपके से हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर सारी बात

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 93,

हुज़ूर सल्ल० को बता दी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जाओ, तुम्हारा काम तुम्हारे बग़ैर ही हो जाएगा। इसके बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए तो हुज़ूर सल्ल० ने दूसरी ओर मुंह फेर लिया, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं देख रहा हूं कि आप मुझसे मुंह फेर रहे हैं, ज़रूर मेरी ओर से आपको कोई बात पहुंची है, जिसकी वजह से आप ऐसा फ़रमा रहे हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारी मां ने अपना पिस्तान निकालकर तुम्हें अपने दूध का वास्ता दिया, लेकिन तुमने फिर भी उसकी बात को न माना, क्या तुम यह समझते हो कि तुम अपने दोनों मां-बाप के पास या दोनों में से एक के पास रहोगे, तो तुम अल्लाह के रास्ते में नहीं हो? आदमी जब मां-बाप के पास रहकर उनकी ख़िदमत अच्छी तरह करता है और उनसे अच्छा व्यवहार करके उनका हक़ अदा करता है, तो वह भी अल्लाह के रास्ते में ही होता है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं, उसके दो साल बाद मेरी मां का इंतिक़ाल हो गया, तो मैं उनके इंतिक़ाल तक किसी लड़ाई में नहीं गया। आगे और भी हदीस है।[1]

तबरानी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी पिलाने की जगह पर खड़े थे, (जहां क़ुरैश हाजियों को पानी पिलाया करते थे) कि इतने में एक औरत अपना बेटा लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आई और उसने अर्ज़ किया, मेरा यह बेटा लड़ाई में जाना चाहता है, लेकिन मैं इसे रोक रही हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने उसके बेटे से फ़रमाया, जब तक तुम्हारी मां तुम्हें इजाज़त न दे या उसका इंतिक़ाल न हो जाए, उस वक़्त तक तुम उसकी ख़िदमत में रहो, इसमें ज़्यादा सवाब मिलेगा।

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 323,

तबरानी की दूसरी रिवायत में यह है कि एक आदमी और उसकी मां दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए। वह आदमी जिहाद में जाना चाहता था और उसकी मां उसे रोक रही थी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपनी मां के पास ठहरे रहो। तुम्हें उनकी ख़िदमत में रहने पर उतना ही बदला मिलेगा जितना जिहाद में जाने से मिलेगा।[1]

हज़रत तलहा बिन मुआविया सुलमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिए जाना चाहता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारी मां ज़िंदा है? मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मां के पैरों से चिमट जाओ, तुम्हारी जन्नत वही है।[2]

हज़रत जाहिमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं जिहाद में जाने के बारे में मश्विरा करने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे मां-बाप हैं? मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दोनों की ख़िदमत में लगे रहो, क्योंकि तुम्हारी जन्नत इन दोनों के क़दमों के नीचे है।[3]

हज़रत मुआविया बिन जाहिमा सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत जाहिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं लड़ाई में जाना चाहता हूं। मैं इस बारे में आपसे मश्विरा करने आया हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, क्या तुम्हारी मां हैं? उन्होंने कहा, हैं।

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 322,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 138,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 138

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनकी ख़िदमत में लगे रहो, क्योंकि तुम्हारी जन्नत उनके क़दमों के नीचे है।

हज़रत जाहिमा रज़ि० दूसरी-तीसरी बार अलग-अलग मज्लिसों में जाकर हुज़ूर सल्ल० से यही पूछते रहे। हुज़ूर सल्ल० यही जवाब देते रहे।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत नुऐम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज करने गए। चलते-चलते वह मक्का और मदीना के दर्मियान एक पेड़ के नीचे पहुंचे तो उसे पहचान लिया और उसके नीचे बैठ गए। फिर फ़रमाया, मैंने देखा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पेड़ के नीचे बैठे हुए थे कि इतने में उस घाटी से एक आदमी आया और हुज़ूर सल्ल० के पास आकर खड़ा हो गया।

फिर उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसलिए आया हूं ताकि मैं आपके साथ अल्लाह के रास्ते में जिहाद करूं और मेरी नीयत सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने और आख़िरत अच्छी बनाने की है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हारे मां-बाप ज़िंदा हैं? उसने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वापस जाकर उनकी ख़िदमत करो और उनसे अच्छा सुलूक करो। वह आदमी यह सुनकर जहां से आया था, वहां ही वापस चला गया।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मे कुलसूम से शादी का पैग़ाम (उनके वालिद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को) दिया, हज़रत अली रज़ि० ने उनसे कहा, अभी तो वह छोटी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 17
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 138,

को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मेरे ताल्लुक़ और रिश्ते के अलावा हर ताल्लुक़ और रिश्ता क़ियामत के दिन टूट जाएगा। अब मैं चाहता हूं कि (इस निकाह के ज़रिए से) मेरा हुज़ूर सल्ल० से ताल्लुक़ और रिश्ता क़ायम हो जाए।

हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से फ़रमाया, तुम अपने चचा की शादी (अपनी बहन से) कर दो। इन लोगों ने कहा, वह भी औरतों में से एक मुस्तक़िल औरत है, उसे अपना अख़्तियार है।

हज़रत अली रज़ि० ग़ुस्से में वहां से खड़े हो गए तो हज़रत हसन रज़ि० ने उनका कपड़ा पकड़कर अर्ज़ किया, ऐ अब्बा जान! मैं आपके छूटने को नहीं सह सकता। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, तो फिर तुम दोनों हज़रत उमर रज़ि० से उसकी शादी कर दो।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में खजूर के एक पेड़ की क़ीमत हज़ार दिरहम तक पहुंच गई। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने (पेड़ के बेचने के बजाए) अन्दर से खोद कर खजूर के पेड़ को खोखला कर दिया और उसका गूदा निकालकर अपनी मां को खिला दिया। लोगों ने उनसे कहा, आपने ऐसा क्यों किया, हालांकि आप देख रहे हैं कि एक खजूर की क़ीमत हज़ार दिरहम तक पहुंच चुकी है?

उन्होंने कहा, मेरी वालिदा ने खजूर का गूदा मुझसे मांगा था और मेरी आदत यह है कि जब मेरी मां मुझसे कुछ मांगती हैं और उनका देना मेरे बस में हो तो मैं वह चीज़ ज़रूर उनको देता हूं।[2]

बच्चों के साथ शफ़क़त करना और उन सबके साथ बराबर का सुलूक करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैंने

1. कंज़, भाग 8, पृ० 296
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 49,

एक बार देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर पर बैठे हुए लोगों में बयान फ़रमा रहे थे कि इतने में हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा घर से निकले। उनके गले में कपड़े का एक टुकड़ा था, जो लटक रहा था और ज़मीन पर घसिट रहा था कि उसमें उनका पांव उलझ गया, और वह ज़मीन पर चेहरे के बल गिर गए।

हुज़ूर सल्ल० उन्हें उठाने के इरादे से मिंबर से नीचे उतरने लगे। सहाबा किराम रज़ि० ने जब हज़रत हुसैन को गिरते हुए देखा तो उन्हें उठाकर हुज़ूर सल्ल० के पास ले आए, हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें लेकर उठा लिया और फ़रमाया, शैतान को अल्लाह मारे, औलाद तो बस फ़ित्ना और आज़माइश ही है। अल्लाह की क़सम ! मुझे तो पता ही न चला कि मैं मिंबर से कब नीचे उतर आया। मुझे तो बस उसी वक़्त पता चला, जब लोग इस बच्चे को मेरे पास ले आए।[1]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में थे कि हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा आकर आपकी मुबारक पीठ पर सवार हो गए। फिर हुज़ूर सल्ल० उन्हें हाथ से पकड़ कर खड़े हो गए, फिर जब हुज़ूर सल्ल० रुकूअ में गए तो वह हुज़ूर सल्ल० की पीठ पर खड़े हो गए, फिर हुज़ूर सल्ल० ने उठाकर उन्हें छोड़ दिया, तो वह चले गए।[2]

हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने एक बार देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में हैं कि इतने में हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा आकर हुज़ूर सल्ल० की मुबारक पीठ पर सवार हो गए। आपने उन्हें नीचे न उतारा (बल्कि यों ही आप सज्दे में रहे), यहां तक कि वही ख़ुद नीचे उतरे और कभी आप उनके लिए दोनों टांगें खोल दिया करते और वह एक तरफ़ से आकर हुज़ूर सल्ल० के नीचे से गुज़रकर दूसरी ओर से निकल जाते।[3]

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 155,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 175,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 175,

हज़रत बही रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि आप मुझे बताएं कि लोगों में से किसकी शक्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सबसे ज़्यादा मिलती थी। उन्होंने कहा, हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शक्ल हुज़ूर सल्ल० से सबसे ज़्यादा मिलती थी और हुज़ूर सल्ल० को उनसे सबसे ज़्यादा मुहब्बत थी। कभी-कभी हुज़ूर सल्ल० सज्दे में होते, यह आकर हुज़ूर सल्ल० की मुबारक पीठ पर चढ़ जाते, और जब तक यह अलग न हो जाते, हुज़ूर सल्ल० सज्दे से न उठते। कभी-कभी यह हुज़ूर सल्ल० के पेट के नीचे दाख़िल हो जाते, तो आप उनके लिए अपने पांव खोल देते, तो वह उनके बीच से निकल जाते।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी-कभी नमाज़ पढ़ रहे होते थे, जब आप सज्दे में जाते तो हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा कूद कर आपकी पीठ पर बैठ जाया करते। जब लोग इन दोनों को रोकना चाहते, तो हुज़ूर सल्ल० उन्हें इशारा फ़रमा देते कि इन्हें छोड़ दो (जो करते हैं, इन्हें करने दो) और नमाज़ पूरी करके इन्हें (सीने से लगाते और फिर) अपनी गोद में बिठा लेते और इर्शाद फ़रमाते कि जिसे मुझसे मुहब्बत है, उसे इन दोनों से भी मुहब्बत करनी चाहिए।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कभी-कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सज्दे में होते। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा में से कोई एक आकर हुज़ूर सल्ल० की मुबारक पीठ पर सवार हो जाते। हुज़ूर सल्ल० उनकी वजह से सज्दा लम्बा कर देते। बाद में लोग कहा करते, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! आपने बड़ा लम्बा सज्दा किया?

आप फ़रामते, मेरे बेटे ने मुझे सवारी बना लिया था, इसलिए कुछ

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 176,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 179

जल्दी उठना अच्छा न लगा।[1]

हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर हमारे पास तशरीफ़ लाए। आपके कंधे पर (आपकी नवासी) हज़रत उमामा बिन्त अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा बैठी हुई थीं। आपने उसी तरह नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी जब रुकूअ में जाते तो उन्हें नीचे उतार देते और जब (सज्दे से) सर उठाते तो फिर उठाकर बिठा लेते।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए। आपके एक कंधे पर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे, और दूसरे कंधे पर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे। आप कभी उसे चूमते, कभी उसे। आप यों ही चलते-चलते हमारे पास पहुंच गए, तो एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको इन दोनों से मुहब्बत है ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिसने इन दोनों से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इन दोनों से बुग़्ज़ रखा, उसने मुझसे बुग़्ज़ रखा।[3]

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ज़ुबान और होंठ को चूस रहे थे और जिस ज़ुबान और होंठ को हुज़ूर सल्ल० ने चूसा हो, उसे कभी अज़ाब नहीं हो सकता।[4]

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया तो हज़रत अक़रअ बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, मेरे तो दस बच्चे पैदा हुए, मैंने तो उनमें से एक का भी बोसा नहीं लिया।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 181,
2. बुखारी, भाग 2, पृ० 887, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 39
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 179
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 177

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो लोगों पर दया नहीं करता, अल्लाह उस पर रहम नहीं फ़रमाते।[1]

हज़रत अस्वद बिन ख़लफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पकड़कर हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का बोसा लिया। फिर लोगों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, आदमी औलाद की वजह से कंजूसी करता है और नादानी वाले काम करता है, (बच्चों की वजह से लड़ पड़ता है) और औलाद की वजह से आदमी बुज़दिली अख़्तियार कर लेता है (कि मैं मर गया तो मेरे बाद बच्चों का क्या होगा?)[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने बाल-बच्चों के साथ सब लोगों से ज़्यादा शफ़क़त करते थे। हुज़ूर सल्ल० के एक साहबज़ादे थे, जो मदीना के किनारे के मुहल्ले में किसी औरत का दूध पिया करते थे। उस औरत का ख़ाविंद लोहार था। हम उससे मिलने जाया करते तो उस लोहार का सारा घर भट्टी में इज़ख़र घास जलाने की वजह से धुएं से भरा हुआ होता था। हुज़ूर सल्ल० अपने इस बेटे को चूमा करते थे और नाक लगाकर उसे सूंघा करते।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक औरत अपनी दो बेटियां लेकर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आई। हज़रत आइशा रज़ि० ने उसे तीन खजूरें दीं। उसने हर बेटी को एक खजूर दी और एक ख़जूर अपने मुंह में रखने लगी। वे दोनों बच्चियां उसे देखने लगीं। इस पर उसने (उस खजूर को न खाया, बल्कि) उस खजूर के दो टुकड़े करके हर एक को एक-एक टुकड़ा दे दिया और चली गई।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए, तो उस औरत का यह क़िस्सा उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह अपने इस (मुहब्बत भरे रवैए की) वजह से जन्नत में

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 156, बुख़ारी, भाग 5, पृ० 887
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 155,
3. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 56, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 87

दाख़िल हो गई है।[1]

हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक औरत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आई। उसके साथ उसके दो बेटे थे। उसने हुज़ूर सल्ल० से कुछ मांगा, हुज़ूर सल्ल० ने उसे तीन खजूरें दे दीं। हर एक के लिए एक खजूर। उस औरत ने हर एक को एक-एक खजूर दे दी। वे दोनों बच्चे अपने हिस्से की खजूर खाकर मां को देखने लग गए। इस पर उस औरत ने अपने हिस्से की उस तीसरी खजूर के दो टुकड़े करके हर एक को आधी खजूर दे दी।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, चूंकि उस औरत ने अपने बेटों पर रहम किया है, इस वजह से अल्लाह ने उस पर रहम फ़रमा दिया है।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया। उसके साथ एक बच्चा भी था, जिसे वह (मुहब्बत की वजह से) अपने साथ चिमटाने लगा।

हुज़ूर सल्ल० नें पूछा, क्या तुम उस बच्चे पर रहम कर रहे हो? उसने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम उस पर जितना रहम खा रहे हो, अल्लाह उससे ज़्यादा तुम पर रहम फ़रमा रहे हैं, वह तो तमाम रहम करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले हैं।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में उसका एक बेटा आया, उसने उसे चूम कर अपनी रान पर बिठा लिया। फिर उदसकी बेटी आ गई। उसने उसे अपने सामने बिठा लिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने दोनों से एक जैसा बराबर का सुलूक क्यों नहीं किया? (बेटी को न चूमा और न उसे रान पर बिठाया।)[4]

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 158,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 155,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 56,
4. हैसमी, भाग 8, पृ० 156,

पड़ोसी का इक्राम करना

हज़रत मुआविया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे पड़ोसी का क्या हक़ है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर वह बीमार हो जाए तो तुम उसकी देखभाल करो और उसका इंतिक़ाल हो जाए तो तुम उसके जनाज़े में जाओ और अगर वह तुमसे क़र्ज़ मांगे, तो तुम उसे क़र्ज़ा दे दो और अगर वह फ़क़ीर और बदहाल हो जाए तो तुम उस पर परदा डालो (कि ऐसे चुपके से उसकी मदद करो कि किसी को उसका पता न चले) और अगर उसे कोई अच्छी चीज़ हासिल हो जाए तो तुम उसे मुबारकबाद दो और अगर उस पर कोई मुसीबत आए तो तुम उसको तसल्ली दो और अपनी अमारत उसकी इमारत से ऊंची न बनाओ, इससे उसकी हवा बन्द हो जाएगी और जब भी तुम हंडिया में कोई सालन पकाओ, तो चमचा भरकर उसमें से उसे भी दे दो, वरना तुम्हारे सालन की ख़ुश्बू से उसे बेचैनी और तक्लीफ़ होगी (क्योंकि उसके घर में कुछ नहीं है और तुम्हारे यहां है ।)[1]

बैहक़ी ने शोबुल ईमान में ऐसी ही रिवायत हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल की है। उसमें यह भी है कि अगर वह नंगा हो, तो तुम उसे पहनाओ ।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरे पड़ोसी ने मुझे परेशान किया हुआ है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सब्र करो ।

कुछ दिनों के बाद मैंने दोबारा जाकर अर्ज़ किया कि मेरे पड़ोसी ने मुझे बहुत तक्लीफ़ फ़रमाई है ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सब्र करो ।

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 165,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 44,

मैंने तीसरी बार अर्ज़ किया, मेरे पड़ोसी ने तो मुझे तंग कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने घर का सारा सामान उठाकर गली में डाल लो और तुम्हारे पास जो आए, उसे यह बताते रहना कि मेरे पड़ोसी ने मुझे बहुत परेशान किया हुआ है। इस तरह सब उस पर लानत भेजने लग जाएंगे। (फिर आपने फ़रमाया) जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे अपने पड़ोसी का इक्राम करना चाहिए और जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे अपने मेहमान का इकराम करना चाहिए और जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि या तो वह ख़ैर की बात कहे या चुप रहे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक ग़ज़वे में तशरीफ़ ले जाने लगे, तो फ़रमाया, आज हमारे साथ वह न आए जिसने अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ पहुंचाई हो। इस पर एक आदमी ने कहा, मैंने अपने पड़ोसी की दीवार की जड़ में पेशाब किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम आज हमारे साथ मत जाओ।[2]

हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, ज़िना के बारे में आप लोग क्या कहते हैं? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ज़िना तो हराम है। अल्लाह और रसूल सल्ल० ने उसे हराम क़रार दिया है। यह क़ियामत तक हराम रहेगा।

आपने फ़रमाया, आदमी दस औरतों से ज़िना कर ले, इसका गुनाह पड़ोसी की बीवी से ज़िना करने से कम है। फिर आपने फ़रमाया, आप लोग चोरी के बारे में क्या कहते हैं?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, चूंकि अल्लाह और रसूल सल्ल० ने उसे हराम क़रार दिया है, इसलिए यह हराम है।

1. कंज़, भाग 5, पृ० 44,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 170

आपने फ़रमाया, आदमी दस घरों से चोरी कर ले, उसका गुनाह पड़ोसी के घर से चोरी करने से कम है।[1]

हज़रत मुतर्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे लोगों के वास्ते से हज़रत अबूज़र रज़ि० की एक हदीस पहुंची थी। मैं चाहता था कि ख़ुद उनसे मेरी मुलाक़ात हो जाए, (ताकि वह हदीस उनसे सीधे-सीधे सुन लूं। चुनांचे एक बार मेरी उनसे मुलाक़ात हो गई, तो मैंने उनसे कहा, ऐ अबूज़र ! मुझे आपकी तरफ़ से एक हदीस पहुंची है। मैं (उस हदीस को सीधे-सीधे आपसे सुनने के लिए) आपसे मिलना चाहता था।

उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तेरे बाप का भला करे। अब तो तुम्हारी मुझसे मुलाक़ात हो गई है, बताओ (वह कौन-सी हदीस है?)

मैंने कहा, मुझे यह हदीस पहुंची है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपसे फ़रमाया था कि अल्लाह तीन आदमियों को पसन्द करता है और तीन आदमियों से बुग़्ज़ रखता है।

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, मेरे ख़्याल में भी यह बात नहीं आ सकती कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से झूठ बयान करूं।

मैंने कहा, वे तीन आदमी कौन से हैं जिनको अल्लाह पसन्द करते हैं।

उन्होंने कहा, एक तो वह आदमी है जो अल्लाह के रास्ते में जमकर सवाब की उम्मीद में लड़ाई लड़े और ज़ोरदार लड़ाई लड़े और आख़िरकार वह शहीद हो जाए और उस आदमी का तज़्किरा तुम्हें अपने पास अल्लाह की किताब में मिल जाएगा, फिर उन्होंने यह आयत तिलावत फ़रमाई—

إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ۔

(سورت صف آیت ۴)

'अल्लाह तो उन लोगों को (ख़ास तौर पर) पसन्द करता है जो उसके

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 168,

रास्ते में इस तरह से मिलकर लड़ते है कि गोया वह एक इमारत है जिसमें सीसा पिलाया गया है।' (सूरः सफ़्फ़, आयत 4)

मैंने कहा, दूसरा कौन है ?

उन्होंने फ़रमाया, दूसरा वह आदमी है, जिसका पड़ोसी बुरा आदमी है, जो उसे तक्लीफ़ पहुंचाता रहता है और वह उसकी तक्लीफ़ों पर बराबर सब्र करता रहे, यहां तक कि अल्लाह (उस पड़ोसी को) सुधार कर उसे और ज़िंदगी दे दे या उसे दुनिया से उठा ले। आगे और हदीस भी ज़िक्र की है।[1]

हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु अपने बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे, तो वह अपने पड़ोसी से झगड़ रहे थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, अपने पड़ोसी से झगड़ा न करो, क्योंकि पड़ोसी तो यहां ही रहेगा और (लड़ने वाले) बाक़ी लोग चले जाएंगे।[2]

सफ़र के नेक साथी का इक्राम करना

हज़रत रबाह बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम एक लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गए। हुज़ूर सल्ल० ने हम में से हर तीन आदमी को एक ऊंट सवारी के लिए दिया, सेहरा और जंगल में तो हम में से दो सवार हो जाते और एक पीछे से ऊंट को चलाता और पहाड़ों में हम सभी उतर जाते। हुज़ूर सल्ल० मेरे पास से गुज़रे। मैं उस वक़्त पैदल चल रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ रबाह ! मैं देख रहा हूं कि तुम पैदल चल रहे हो ? (क्या बात है ?)

मैंने कहा, मैं तो अभी उतरा हूं। इस वक़्त मेरे दोनों साथी सवार हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० (आगे चले गए और आप) का गुज़र मेरे दोनों साथियों के पास से हुआ, जिस पर उन्होंने अपना ऊंट बिठाया और दोनों उससे उतर गए।

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 171
2. कंज़, भाग 5, पृ० 44

जब मैं उन दोनों के पास पहुंचा, तो दोनों ने कहा, तुम इस ऊंट पर आगे बैठ जाओ और (मदीना) वापसी तक तुम यों ही बैठे रहो। हम दोनों बारी-बारी सवार होंगे। (तुम्हें अब पैदल नहीं चलना) मैंने कहा, क्यों? उन दोनों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० हमें अभी फ़रमाकर गए हैं कि तुम्हारा साथी बहुत नेक आदमी है, तुम उसके साथ अच्छी तरह रहो।[1]

लोगों के मर्तबे का ख़्याल करना

हज़रत अम्र बिन मिख़राक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा खाना खा रही थीं कि उनके पास से एक इज़्ज़तदार आदमी गुज़रा, उसे बुलाकर उन्होंने अपने साथ (खाने पर) बिठा लिया। इतने में एक और आदमी उनके पास से गुज़रा, (उसे बुलाया नहीं, बल्कि) उसे (रोटी का) एक टुकड़ा दे दिया। उनसे किसी ने पूछा कि दोनों के साथ एक जैसा मामला क्यों नहीं किया?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात का हुक्म दिया है कि हम लोगों के साथ उनके मर्तबे के मुताबिक़ मामला करें और हर एक को उसके दर्जे पर रखें।[2]

हज़रत मैमून बिन अबी शबीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक मांगने वाला हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आया (और उसने मांगा) हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, इसे एक टुकड़ा दे दो। फिर एक इज़्ज़तदार आदमी आया तो उसे अपने साथ (दस्तरख़्वान पर) बिठा लिया, किसी ने उनसे पूछा, आपने ऐसा (अलग-अलग मामला) क्यों किया?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[3]

अबू नुऐम ने इस तरह रिवायत किया कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 42,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 142,
3. अबू दाऊद, अबू नुऐम, बैहक़ी,

अन्हा एक सफ़र में थीं, तो उन्होंने क़ुरैश के कुछ लोगों के लिए दोपहर का खाना तैयार करने का हुक्म दिया, (जब वह खाना तैयार हो गया तो) एक मालदार इज़्ज़तदार आदमी आया। आपने फ़रमाया, उसे बुला लो। उसे बुलाया गया तो वह सवारी से नीचे उतरा और (बैठकर) खाना खाया, फिर वह चला गया।

इसके बाद एक मांगने वाला आया, तो फ़रमाया, इसे (रोटी का) टुकड़ा दे दो। फिर फ़रमाया, उस मालदार के साथ (इकराम का) यह मामला करना ही हमारे लिए मुनासिब था और इस फ़क़ीर ने आकर मांगा तो मैंने उसे इतना देने को कह दिया कि जिससे वह ख़ुश हो जाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें हुक्म दिया। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

पहले यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि हज़रत अली रज़ि० ने एक आदमी को एक जोड़ा और सौ दीनार दिए। किसी ने उनसे पूछा, तो फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि लोगों के साथ उनके दर्जे के लिहाज़ से पेश आओ। उस आदमी का मेरे नज़दीक यही दर्जा था।

मुसलमान को सलाम करना

क़बीला मुज़ैना के हज़रत अग़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे एक जरीब (एक पैमाना जिसमें चार क़फ़ीर ग़ल्ला आता था) खजूरें देने का हुक्म दिया। खजूरें एक अंसारी के पास थीं। वह अंसारी देने में टाल-मटोल करते रहे। मैंने इस बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अबूबक्र ! तुम सुबह इनके साथ जाओ और (उस अंसारी से) लेकर खजूरें इनको दे दो। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझसे कहा, सुबह नमाज़ पढ़कर फ़्लां जगह आ जाना।

मैं नमाज़ पढ़कर वहां गया, तो हज़रत अबूबक्र वहां मौजूद थे। हम

1. हुलीया, भाग 4, पृ० 379, शर्हुल अह्या, भाग 6, पृ० 265

दोनों उस अंसारी के पास गए। रास्ते में जो आदमी भी हज़रत अबूबक्र रज़ि० को दूर से देखता, वह तुरन्त उनको सलाम करता, हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या तुम देख नहीं रहे हो कि ये लोग (पहले सलाम करके) फ़ज़ीलत में तुमसे आगे निकल गए हैं? अब आगे सलाम में तुमसे कोई आगे न निकलने पाए। इसके बाद हमें जो आदमी दूर से नज़र आता, हम उसके सलाम करने से पहले उसे जल्दी से फ़ौरन सलाम कर देते।[1]

हज़रत ज़ोहरा बिन हुमैज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे सवार था। जब हम लोगों के पास से गुज़रते, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० उन्हें सलाम करते। लोग जवाब में हमारे लफ़्ज़ों से ज़्यादा लफ़्ज़ सलाम में ज़िक्र करते। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, आज तो लोग (अज्र व सवाब में) हम पर ग़ालिब आ गए।

एक रिवायत में यह है कि आज तो लोग हमसे ख़ैर में बहुत आगे निकल गए।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं सवारी पर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे बैठा हुआ था। जब हम लोगों के पास से गुज़रते तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० अस्सलामु अलैकुम कहते। लोग जवाब में अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहते, इस पर हज़रत अबूक्र रज़ि० ने फ़रमाया, आज तो लोग हमसे बहुत आगे निकल गए।[3]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार वाज़ फ़रमाया, तो उसमें यह फ़रमाया कि हर काम में सब्र को लाज़िम पकड़ो, चाहे वह काम तुम्हारी मर्ज़ी का हो या न हो, क्योंकि सब्र बहुत अच्छी आदत है। अब तुम्हें दुनिया बहुत पसन्द आने लग गई है और उसने अपने दामन

1. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 206, अदबुल मुफ़रद, पृ० 145, कंज़, भाग 5, पृ० 52
2. इब्ने अबी शैबा,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 52 व 53,

तुम्हारे सामने फैला दिए हैं और उसने अपनी ज़ीनत वाले कपड़े पहन लिए हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० (को तो अमल का शौक़ था, इसलिए वे) अपने घर के सेहन में बैठते थे और यह कहा करते थे कि हम इसलिए यहां बैठे हैं ताकि हम लोगों को सलाम करें और फिर लोग भी हमें सलाम करें।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ चलते और रास्ते में कोई पेड़ आ जाता, जिसकी वजह से हम एक दूसरे से अलग हो जाते थे, तो फिर जब हम इकट्ठे होते थे, तो एक दूसरे को सलाम करते थे।[2]

हज़रत तुफ़ैल बिन उबई बिन काब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में आया करता, वह मेरे साथ बाज़ार जाते। जब हम बाज़ार जाते तो हज़रत अब्दुल्लाह का जिस कबाड़िए पर, बेचने वाले पर, जिस मिस्कीन पर, ग़रज़ यह कि जिस मुसलमान पर गुज़र होता, उसे सलाम करते।

एक दिन मैं उनकी ख़िदमत में गया। वह मुझे अपने साथ बाज़ार ले गए। मैंने कहा, आप बाज़ार किस लिए आते हैं? न तो आप किसी बेचने वाले के पास रुकते हैं और न किसी सामान के बारे में पूछते हैं और न क़ीमत मालूम करते हैं और न बाज़ार की किसी मज्लिस में बैठते हैं। आइए हम यहां बैठे जाते हैं, कुछ देर बातें करते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ पेटू! (मेरा पेट बड़ा था) हम तो सलाम की वजह से बाज़ार आते हैं, इसलिए जो मिलता जाए, उसे सलाम करते जाओ।

एक रिवायत में यह है कि हम तो सलाम की वजह से बाज़ार आए हैं, इसलिए हमें जो मिलेगा हम उसे सलाम करेंगे।[3]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 156,
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 207, अदबुल मुफ़्रद, पृ० 148,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 310, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 141, अदबुल मुफ़्रद, पृ० 148,

हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ियल्लाहु अन्हु की जिससे मुलाक़ात होती थी, उसे तुरन्त सलाम करते थे। रिवायत करने वाले कहते हैं, मेरे इल्म में ऐसा कोई आदमी नहीं, जिसने उन्हें पहले सलाम किया हो, अलबत्ता एक यहूदी जान-बूझकर एक स्तून के पीछे छिप गया और (जब हज़रत उमामा पास पहुंचे, तो) एकदम बाहर आकर उसने उनको पहले सलाम कर लिया।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० ने उससे फ़रमाया, ऐ यहूदी ! तेरा नाश हो, तूने ऐसा क्यों किया ?

उसने कहा, मैंने यह देखा कि आप सलाम बहुत ज़्यादा करते हैं (और सलाम में पहल करते हैं) इससे मुझे पता चला कि यह फ़ज़ीलत वाला कोई अमल है, इसलिए मैंने चाहा कि फ़ज़ीलत मुझे भी हासिल हो जाए।

हज़रत उमामा रज़ि० ने फ़रमाया, तेरा नास हो। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह ने अस्सलामु अलैकुम को हमारी उम्मत (मुस्लिमा) के लिए आपस का सलाम बनाया है और हमारे साथ रहने वाले ज़िम्मी काफ़िरों के लिए इसे अम्न की निशानी बनाया है।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर वापस जा रहे थे। मैं उनका हाथ पकड़े हुए साथ चल रहा था। रास्ते में जिस आदमी पर उसका गुज़र होता, चाहे वह मुसलमान होता या नसरानी, छोटा होता या बड़ा, हज़रत अबू उमामा उसे सलामुन अलैकुम ज़रूर कहते। जब घर के दरवाज़े पर पहुंचे, तो उन्होंने हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, ऐ मेरे भतीजे ! हमें हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात का हुक्म दिया है कि हम आपस में सलाम फैलाएं।[2]

हज़रत बशीर बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, कोई आदमी

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 33
2. हुलीया, भाग 6, पृ० 112,

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को उनसे पहले सलाम नहीं कर सकता था।[1]

सलाम का जवाब देना

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह ! आपने जवाब में फ़रमाया, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

फिर दूसरे ने आकर कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाहि व रहमतुल्लाहि। आपने फ़रमाया, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

फिर तीसरे ने आकर कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाहि व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। हुज़ूर सल्ल० ने उसके जवाब में फ़रमाया, व अलैक। इस पर उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां और फ़्लां ने आकर आपको सलाम किया (और मैंने भी आपको सलाम किया। आपने तीनों को सलाम का जवाब दिया, लेकिन) इन दोनों को आपने मुझसे अच्छा जवाब दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने सलाम में कोई चीज़ तो छोड़ी नहीं क्योंकि तुमने अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहा) और अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَإِذَا حُيِّيتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا. (سورت نساء آیت ۸۶)

'और जब तुमको कोई (मशरूअ तौर पर) सलाम करे तो उस (सलाम) से अच्छे लफ़्ज़ों में सलाम करो या वैसे ही लफ़्ज़ों को कह दो।'

(सूरः निसा, आयत 86)

(चूंकि तुमने सलाम में सारे ही लफ़्ज़ कह दिए थे, इसलिए) मैंने तुम्हारे सलाम का जवाब तुम्हारे ही लफ़्ज़ों में दिया है।[2]

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 145
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 33

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया कि यह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तुम्हें सलाम कह रहे हैं। मैंने कहा, व अलैकस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू और मैं कुछ लफ़्ज़ और बढ़ाने लगी तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सलाम इन लफ़्ज़ों पर पूरा हो जाता है। हज़रत जिब्रील ने कहा, 'रहमतुल्लाहि व बरकातुहू अलैकुम अहलल बैत'[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे लोग फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु से (अन्दर आने की) इजाज़त लेने के लिए फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि। जवाब में हज़रत साद ने धीरे से कहा, व अलैकस्सलामु व रहमतुल्लाहि और इतने धीरे से जवाब दिया कि हुज़ूर सल्ल० सुन न सके।

तीन बार यही हुआ कि हुज़ूर सल्ल० सलाम फ़रमाते और हज़रत साद रज़ि० चुपके से जवाब देते। इस पर हुज़ूर सल्ल० वापस जाने लगे तो हज़रत साद हुज़ूर सल्ल० के पीछे गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। आपका हर सलाम मेरे कानों तक पहुंचा और मैंने आपके हर सलाम का जवाब दिया, लेकिन जान-बूझकर धीरे से दिया ताकि आप सुन न सकें। मैंने चाहा कि आपके सलाम की बरकत ज़्यादा से ज़्यादा हासिल कर लूं।

फिर वह हुज़ूर सल्ल० को अपने घर ले गए और उनके सामने तेल पेश किया। हुज़ूर सल्ल० ने वह तेल खाया। खाने के बाद हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ पढ़ी[2]—

أَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلَائِكَةُ وَأَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंसार को मिलने जाया करते थे। जब आप अंसार के घरों में तशरीफ़ लाते तो अंसार के बच्चे अगर आपके पास जमा हो जाते, आप

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 33,
2. अहमद, अबू दाऊद,

उनके लिए दुआ फ़रमाते और उनके सरों पर हाथ फेरते और उन्हें सलाम करते।

चुनांचे एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर आए और उनको सलाम किया और अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि कहा। हज़रत साद रज़ि० न जवाब तो दिया, लेकिन धीरे से दिया ताकि हुज़ूर सल्ल० सुन न सकें। हुज़ूर सल्ल० ने तीन बार सलाम किया और हुज़ूर सल्ल० का मामूल यही था कि तीन बार से ज़्यादा सलाम नहीं किया करते थे। तीन बार में घरवाले अन्दर आने की इजाज़त दे देते तो ठीक, वरना आप वापस तशरीफ़ ले जाते। फिर आगे पिछली हदीस जैसी हदीस ज़िक्र की है।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन जुबैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे। हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें सलाम किया। उन्होंने सलाम का जवाब न दिया। हज़रत उमर रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास गये और उनसे हज़रत उस्मान रज़ि० की शिकायत की। (ये दोनों हज़रात हज़रत उस्मान रज़ि० के पास आए।) हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से कहा, आपने अपने भाई को सलाम का जवाब क्यों न दिया?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैंने (उनके सलाम को) सुना ही नहीं। मैं तो गहरी सोच में था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने पूछा, आप क्या सोच रहे थे?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मैं शैतान के ख़िलाफ़ सोच रहा था कि वह ऐसे बुरे ख़्यालों को मेरे दिल में डाल रहा था कि ज़मीन पर जो कुछ है, वह सारा भी मुझे मिल जाए, तो भी इन बुरे ख़्यालों को ज़ुबान पर नहीं ला सकता। जब शैतान ने मेरे दिल में ये बुरे ख़्याल डालने शुरू किए, तो मैंने दिल में कहा, ऐ काश! मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछ लेता कि इन शैतानी ख़्यालों से निजात कैसे मिलेगी?

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 34,

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्ल० से इसकी शिकायत की थी और मैंने हुज़ूर सल्ल० से पूछा था कि शैतान जो बुरे ख़्याल हमारे दिलों में डालता है, उनसे हमें निजात कैसे मिलेगी?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनसे निजात तुम्हें इस तरह मिलेगी कि तुम वह कलिमा कह लिया करो, जो मैंने मौत के वक़्त अपने चचा को पेश किया था, लेकिन उन्होंने वह कलिमा नहीं पढ़ा था।[1]

यही वाक़िया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से इससे ज़्यादा तफ़्सील से इब्ने साद ने नक़ल किया है और उसमें यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गए और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में जाकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल के ख़लीफ़ा रज़ि० ! क्या मैं आपको हैरानी में डालने वाली बात न बताऊं? मैं हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रा। मैंने उन्हें सलाम किया, लेकिन उन्होंने मेरे सलाम का जवाब न दिया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० खड़े हुए और हज़रत उमर रज़ि० का हाथ पकड़ा और दोनों हज़रात चल पड़े और मेरे पास आए तो मुझसे हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, ऐ उस्मान रज़ि० ! तुम्हारे भाई (उमर रज़ि०) ने बताया है कि वह तुम्हारे पास से गुज़रे थे और उन्होंने तुम्हें सलाम किया था, लेकिन तुमने उनके सलाम का जवाब नहीं दिया, तो तुमने ऐसा क्यों किया?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा रज़ि० ! मैंने तो ऐसा नहीं किया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, बिल्कुल किया है और अल्लाह की क़सम ! यह (घमंड) तुम बनू उमैया वालों की पुरानी आदत है।

मैंने कहा, (ऐ उमर रज़ि० !) मुझे न तो तुम्हारे गुज़रने का पता चला और न तुम्हारे सलाम करने का। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, आप ठीक कह रहे हैं। मेरा ख़्याल यह है कि आप किसी सोच में थे, जिसकी वजह से आपको पता न चला। मैंने कहा, जी हां।

1. कंज़, भाग 1, पृ० 74

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, आप क्या सोच रहे थे?

मैंने कहा, मैं यह सोच रहा था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया, लेकिन मैं हुज़ूर सल्ल० से यह न पूछ सका कि इस उम्मत की निजात किस चीज़ में है? मैं यह सोच भी रहा था और अपनी इस कोताही पर हैरान भी हो रहा था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से यह बात पूछी थी और हुज़ूर सल्ल० ने मुझे बताई थी। मैंने कहा, वह क्या है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से यह पूछा था कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इस उम्मत की निजात किस चीज़ में है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, जो आदमी मुझसे इस कलिमा को क़ुबूल कर लेगा जो मैंने अपने चचा पर पेश किया था, लेकिन उन्होंने क़ुबूल नहीं किया था, तो यह कलिमा उस आदमी के लिए निजात का ज़रिया होगा। हुज़ूर सल्ल० ने अपने चचा पर यह कलिमा पेश किया था[1]—

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं मस्जिद में हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रा। मैंने उन्हें सलाम किया। उन्होंने मुझे आंख भरकर देखा भी, लेकिन मेरे सलाम का जवाब न दिया। मैं अमीरुल मोमिनीन् हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में गया और मैंने दो बार यह कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या इस्लाम में कोई नई चीज़ पैदा हो गई है?

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, क्या हुआ?

मैंने कहा, और तो कोई बात नहीं, अलबत्ता यह बात है कि मैं अभी मस्जिद में हज़रत उस्मान रज़ि० के पास से गुज़रा। मैंने उनको सलाम किया। उन्होंने मुझे आंख भरकर देखा भी, लेकिन मेरे सलाम का जवाब न दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने आदमी भेजकर हज़रत उस्मान रज़ि० को

1. इब्ने साद, भाग 5, पृ० 312,

बुलवाया और (जब हज़रत उस्मान रज़ि० आ गए तो) उनसे फ़रमाया, आपने अपने भाई (साद रज़ि०) के सलाम का जवाब क्यों नहीं दिया?

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मैंने तो ऐसा नहीं किया। मैंने कहा, आपने किया है और बात इतनी बढ़ी कि उन्होंने अपनी बात पर क़सम खा ली और मैंने अपनी बात पर क़सम खा ली। थोड़ी देर बाद हज़रत उस्मान रज़ि० को याद आ गया, तो उन्होंने फ़रमाया—

'अस्तग़्फ़िरुल्लाह व अतुबू इलैहि' आप मेरे पास से अभी गुज़रे थे। उस वक़्त मैं इस बारे में सोच रहा था जो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी थी और वह बात ऐसी है कि जब भी मुझे याद आती है, तो मेरी निगाह पर और मेरे दिल पर एक परदा पड़ जाता है (जिसकी वजह से न कुछ नज़र आता है और न कुछ समझ में आता है।)

मैंने कहा, मैं आपको वह बात बताऊं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ के शुरू के हिस्से का ज़िक्र फ़रमाया (कि दुआ के शुरू में उसे पढ़ना चाहिए) इतने में एक देहाती आया और हुज़ूर सल्ल० उससे बातों में लग गए। फिर हुज़ूर सल्ल० खड़े हो गए और चल पड़े।) मैं भी आपके पीछे चल दिया। फिर मुझे ख़तरा हुआ कि मेरे पहुंचने से पहले कहीं हुज़ूर सल्ल० घर के भीतर न चले जाएं, इसलिए मैंने ज़मीन पर पांव ज़ोर से मारे, इस पर हुज़ूर मेरी ओर मुतवज्जह हुए और फ़रमाया, यह कौन है? अबू इस्हाक़ हैं?

मैंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है?

मैंने कहा, और तो कोई बात नहीं है। बस यह बात है कि आपने दुआ के शुरू के हिस्से का ज़िक्र किया था, फिर वह देहाती आ गया था और आप उससे बातों में लग गए थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, वह मछली वाले (हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ है जो उन्होंने मछली के पेट में मांगी थी—

'ला इला-ह इल्ला अन-त सुबहा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०'

इन कलिमों के साथ जो मुसलमान भी दुआ करेगा, अल्लाह उसकी दुआ ज़रूर कुबूल फ़रमाएंगे ।[1]

सलाम भेजना

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अशअस बिन क़ैस और हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को मिलने आए और शहर मदाइन के एक किनारे में उनकी झुग्गी के अन्दर गए। अन्दर जाकर उन्हें सलाम किया और दुआ के ये कलिमे कहे, 'हय्याकल्लाहु' (अल्लाह आपको ज़िंदा रखे।)

फिर उन दोनों ने पूछा, क्या आप ही सलमान फ़ारसी हैं? हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, जी हां! इन दोनों हज़रात ने कहा, क्या आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी हैं? उन्होंने कहा, मालूम नहीं। पर इन दोनों हज़रात को शक हो गया और उन्होंने कहा, शायद यह वह सलमान फ़ारसी नहीं हैं, जिनसे हम मिलना चाहते हैं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने उन दोनों से कहा, मैं ही तुम्हारा वह चाहा हुआ आदमी हूं जिससे तुम मिलना चाहते हो। मैंने हुज़ूर सल्ल० को देखा है और उनकी मज्लिस में बैठा हूं, लेकिन हुज़ूर सल्ल० का साथी वह है जो हुज़ूर सल्ल० के साथ जन्नत में चला जाए। (यानी उसका ईमान पर ख़ात्मा हो जाए और मुझे अपने ख़ात्मे के बारे में पता नहीं है।) आप लोग किस ज़रूरत के लिए मेरे पास आए हैं?

उन दोनों ने कहा, शाम देश में आपके एक भाई हैं, हम उनके पास से आपके पास आए हैं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने पूछा, वह कौन हैं?

उन दोनों ने कहा, वह हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, उन्होंने तुम दोनों के साथ जो हदिया भेजा है, वह कहां है?

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 68, कंज़, भाग 1, पृ० 298.

उन दोनों ने कहा, उन्होंने हमारे साथ कोई हदिया नहीं भेजा।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, अल्लाह से डरो और जो अमानत लाए हो, वह मुझे दे दो। आज तक जो भी उनके पास से मेरे पास आया है, वह अपने साथ उनकी ओर से हदिया ज़रूर लाया है।

उन दोनों ने कहा, आप हम पर कोई मुक़दमा न बनाएं, हमारे पास हर तरह के माल व सामान हैं, आप इनमें से जो चाहें ले लें।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं तुम्हारा माल या सामान लेना नहीं चाहता, मैं तो वह हदिया लेना चाहता हूं जो उन्होंने तुम दोनों के साथ भेजा है।

उन दोनों ने कहा, अल्लाह की क़सम! उन्होंने हमारे साथ कुछ नहीं भेजा है, बस हमसे इतना कहा था कि तुम लोगों में एक साहब (ऐसे एहतराम के क़ाबिल) रहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब उनसे तंहाई में बात किया करते थे तो किसी और को उनके साथ न बुलाते थे। जब तुम उनके पास जाओ, तो उन्हें मेरी तरफ़ से सलाम कह देना।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, मैं इसके अलावा और कौन-सा हदिया तुम दोनों से चाहता था? और कौन-सा हदिया सलाम से अफ़ज़ल हो सकता है? यह सलाम अल्लाह की ओर से एक बरकत वाला और पाकीज़ा हदिया है।[1]

मुसाफ़ा करना और मुआनक़ा करना (हाथ मिलाना और गले मिलना)

हज़रत जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने सहाबा रज़ि० से मिलते तो जब तक उन्हें सलाम न कर लेते, उस वक़्त तक उनसे मुसाफ़ा न फ़रमाते।[2]

एक आदमी ने हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मैं आपसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के बारे में पूछना चाहता

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 40, हुलीया, भाग 1, पृ० 201,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 36,

हूं। हज़रत अबूज़र रज़ि० ने कहा, अगर इसमें राज़ की कोई बात न हुई, तो मैं वह हदीस तुम्हें ज़रूर सुना दूंगा।

उस आदमी ने कहा, जब आप लोग हुज़ूर सल्ल० से मिला करते थे, तो क्या हुज़ूर सल्ल० आप लोगों से मुसाफ़ा किया करते थे?

हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया, जब भी हुज़ूर सल्ल० से मेरी मुलाक़ात हुई, हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे ज़रूर मुसाफ़ा फ़रमाया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे मुसाफ़ा करना चाहा। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने एक ओर हटकर अर्ज़ किया कि मैं इस वक़्त नापाक हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब कोई मुसलमान अपने भाई से मुसाफ़ा करता है, तो इन दोनों के गुनाह ऐसे गिर जाते हैं जैसे (पतझड़ के मौसम में) पेड़ के पत्ते गिर जाते हैं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम (मिलते वक़्त) एक दूसरे के सामने झुका करें? आपने फ़रमाया, नहीं। हमने कहा, तो क्या एक दूसरे से मुआनक़ा किया करें (गले मिला करें) आपने फ़रमाया, नहीं। हमने कहा, तो क्या एक दूसरे से मुसाफ़ा किया करें? आपने फ़रमाया, नहीं (यानी मुसाफ़ा तो हर वक़्त होना चाहिए और मुआनक़ा सफ़र से आने पर होना चाहिए, वैसे नहीं।)[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जब कोई आदमी अपने भाई या दोस्त से मिलता है, तो क्या वह उसके सामने झुक जाए? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। उस आदमी ने कहा, तो क्या उससे चिमट जाए? और उसका बोसा लेने लगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। फिर उस

1. कंज़, भाग 5, पृ० 54,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 37
3. कंज़, भाग 5, पृ० 54,

आदमी ने कहा, क्या उसका हाथ पकड़कर उससे मुसाफ़ा करें? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां।[1]

रज़ीन की रिवायत में यह है कि चिमटने और बोसा लेने के जवाब में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, हां, अगर सफ़र से आया हो, तो ऐसा कर सकता है।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना आए, तो उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे घर में थे। उन्होंने आकर दरवाज़ा खटखटाया, हुज़ूर सल्ल० (ज़्यादा ख़ुशी की वजह से) नंगे ही अपना कपड़ा घसीटते हुए खड़े होकर उनकी ओर चल दिए, (यानी ऊपर का बदन नंगा था) अल्लाह की क़सम! मैंने न इससे पहले हुज़ूर सल्ल० को (किसी का) नंगे (स्वागत करते हुए) देखा और न इसके बाद। हुज़ूर सल्ल० ने जाकर उनसे मुआनक़ा फ़रमाया और उनका बोसा लिया।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० जब आपस में मिलते तो एक दूसरे से मुसाफ़ा किया करते और जब सफ़र से आया करते, तो आपस में मुआनक़ा किया करते।[4]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को रात के किसी हिस्से में अपना कोई भाई याद आ जाता तो (रात गुज़ारनी मुश्किल हो जाती और) आप फ़रमाते, हाय, यह रात कितनी लम्बी है। (फ़ज्र की) फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ते ही तेज़ी से (उस भाई की तरफ़) जाते और जब उससे मिलते तो उसे गले लगाते और उससे चिमट जाते।[5]

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमर

---

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 97
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 142,
3. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 97,
4. हैसमी, भाग 8, पृ० 36
5. कंज़, भाग 5, पृ० 42,

रज़ियल्लाहु अन्हु शामदेश आए तो आम लोग और वहां के बड़े आदमी सब उनका स्वागत करने आए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरे भाई कहां हैं? लोगों ने पूछा, वे कौन हैं? आपने फ़रमाया, हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु। लोगों ने कहा, अभी आपके पास आते हैं।

चुनांचे जब हज़रत अबू उबैदा रज़ि० आए तो हज़रत उमर रज़ि० (सवारी से) नीचे उतरे और उनसे मुआनक़ा किया, फिर और हदीस ज़िक्र की जैसे आगे आएगी।[1]

मुसलमान के हाथ, पांव और सर का बोसा लेना

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर से वापस आए, तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० का स्वागत किया। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें अपने साथ चिमटा लिया और उनकी आंखों के दर्मियान बोसा लिया और फ़रमाया, मुझे मालूम नहीं कि मुझे जाफ़र रज़ि० के आने की ज़्यादा ख़ुशी है या ख़ैबर के जीते जाने की।

दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने उनको अपने साथ चिमटा कर उनसे गले मिले।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन रज़ीन रहमतुल्लाहि कहते हैं कि हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने अपने इस हाथ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की है।

हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं कि बैअत के बाद हमने हज़रत सलमा के हाथ को चूमा और उन्होंने इससे मना न फ़रमाया।[3]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बोसा लिया है।[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 101,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 34
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 42,
4. हैसमी, भाग 8, पृ० 42,

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बोसा लिया है।[1]

हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, (तबूक की लड़ाई से मेरे पीछे रह जाने पर) जब अल्लाह की ओर से मेरी तौबा क़ुबूल हो जाने की आयत उतरी, तो मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मैंने हुज़ूर सल्ल० का हाथ लेकर चूमा।[2]

हज़रत अबू रजा उतारिदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदीना आया तो मैंने देखा कि लोग एक जगह जमा हैं और उनके बीच में एक आदमी है जो दूसरे आदमियों के सर को चूम रहा है और कह रहा है कि मैं आप पर क़ुरबान जाऊं, अगर आप न होते तो हम हलाक हो जाते।

मैंने पूछा, यह चूमने वाला कौन है? और किसको चूम रहा है? किसी ने बताया कि यह हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के सर का बोसा इस वजह से ले रहे हैं कि सबकी राय यह थी कि जिन मुर्तद्द लोगों ने ज़कात देने से इन्कार किया है, उनसे लड़ाई न लड़ी जाए और अकेले हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय यह थी कि उनसे लड़ा जाए और आख़िर सबकी राय के ख़िलाफ़ हज़रत अबूबक्र रज़ि० की राय पर अमल हुआ और उसमें इस्लाम का बहुत फ़ायदा हुआ।[3]

हज़रत ज़ारेअ बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हम (मदीना मुनव्वरा) आए, तो हमें बताया गया कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, तो हम आपके दोनों हाथों और पांवों का बोसा लेने लगे।[4]

हज़रत मिज़ैदा अब्दी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अशज

---

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 143, अराक़ी, भाग 8, पृ० 181,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 48, इराक़ी, भाग 2, पृ० 181,
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 350,
4. अदबुल मुफ़रद, पृ० 144.

रज़ियल्लाहु अन्हु चलते हुए आए और आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ लेकर उसे चूमा। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, तुममें दो आदतें ऐसी हैं, जिनको अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पसन्द करते हैं।

हज़रत अशज ने अर्ज़ किया, क्या ये आदतें फ़ितरी तौर पर मेरे अन्दर मौजूद थीं या बाद में मेरे अन्दर पैदा हुई हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, बल्कि ये आदतें तुम्हारे भीतर फ़ितरी तौर पर मौजूद थीं।

उन्होंने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी फ़ितरत में ऐसी आदतें रख दीं जिनको अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पसन्द करते हैं।[1]

हज़रत तमीम बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु शाम देश पहुंचे तो हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनका स्वागत किया और उनसे मुसाफ़ा किया (हाथ मिलाया) और उनके हाथ का बोसा लिया। फिर दोनों (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने को याद करके) तंहाई में बैठकर रोने लगे।

हज़रत तमीम फ़रमाया करते थे कि (बड़ों के) हाथ चूमना सुन्नत है।[2]

हज़रत यह्या बिन हारिस ज़िमारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरी हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। मैंने अर्ज़ किया, क्या आपने अपने इस हाथ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की है? उन्होंने कहा, जी हां।

मैंने कहा, ज़रा अपना हाथ मुझे दें ताकि मैं उसे चूम लूं। चुनांचे उन्होंने मुझे अपना हाथ दिया और मैंने उसे चूमा।[3]

हज़रत यूनुस बिन मैसरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम हज़रत

---

1. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 86,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 54,
3. हैसमी, भाग 8, पृ 42,

यज़ीद बिन अस्वद के यहां बीमारपुर्सी के लिए गए, इतने में हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु भी वहां आ गए। हज़रत यज़ीद ने जब उनको देखा तो अपना हाथ बढ़ाकर उनका हाथ पकड़ लिया और फिर उसे अपने चेहरे और सीने पर फेरा, क्योंकि हज़रत वासिला ने (इन हाथों से) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की थी।

हज़रत वासिला ने हज़रत यज़ीद से कहा, ऐ यज़ीद! आपका अपने रब के बारे में कैसा गुमान है? उन्होंने कहा, बहुत अच्छा है।

हज़रत वासिला ने फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह फ़रमाते हैं, मेरा बन्दा मेरे साथ जैसा गुमान करेगा, मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा। अगर अच्छा गुमान करेगा, तो अच्छा मामला करूंगा और बुरा करेगा तो बुरा करूंगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रज़ीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम रबज़ा के पास से गुज़रे तो हमें लोगों ने बताया कि यहां हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। चुनांचे हम उनके पास गए। जाकर हमने उन्हें सलाम किया। उन्होंने अपने दोनों हाथ बाहर निकालकर फ़रमाया, मैंने इन दोनों हाथों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत की थी और उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला। उनका हाथ ख़ूब बड़ा था, जैसे कि ऊंट का पांव हो। चुनांचे हमने खड़े होकर उनके हाथ को चूमा।[2]

हज़रत इब्ने जुदआन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि क्या आपने अपने हाथ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छुआ है?

हज़रत अनस रज़ि० ने कहा, जी हां। इस पर हज़रत साबित ने उनके हाथ को चूमा।[3]

1. हुलीया, भाग 9, पृ० 306,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 144, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 39
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 144,

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ और दोनों पांव चूम रहे थे।[1]

मुसलमान के एहतराम में खड़ा होना

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि मैंने कोई आदमी ऐसा नहीं देखा जो बात-चीत में और उठने-बैठने में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलता-जुलता हो। हुज़ूर सल्ल० जब हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को आता हुआ देखते तो उनको मरहबा कहते, फिर खड़े होकर उनका बोसा लेते। फिर उनका हाथ पकड़कर लाकर उन्हें अपनी जगह बिठाते और जब हुज़ूर सल्ल० उनके यहां तश्रीफ़ ले जाते, तो वह मरहबा कहतीं, फिर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० का बोसा लेतीं।

मरज़ुल वफ़ात में वह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आईं, तो उन्होंने उन्हें मरहबा कहा, और उनका बोसा लिया और फिर चुपके से इनसे कुछ बात की जिस पर वे रोने लग पड़ीं। हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा इनसे चुपके से कुछ बात की, जिस पर वह हंसने लग पड़ीं।

मैंने औरतों से कहा, मैं तो समझती थी कि इनको यानी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को आम औरतों से बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत हासिल है, लेकिन यह भी एक आम औरत ही निकलीं। पहले रो रही थीं, फिर एकदम हंसने लग पड़ीं।

फिर मैंने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से पूछा कि हुज़ूर सल्ल० ने तुमसे क्या कहा था?

उन्होंने कहा, (यह राज़ की बात है, अगर मैं आपको बता दूं, तो) फिर तो मैं राज़ खोलने वाली हो जाऊंगी। जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हो गया, तब हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने बताया कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे चुपके से पहले यह कहा था कि मेरा इंतिक़ाल होने वाला है, इस पर मैं रोने लग

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 144,

गई थी। इसके बाद फिर चुपके से यह फ़रमाया था कि तुम मेरे ख़ानदान में से सबसे पहले मुझसे आ मिलोगी, इससे मुझे बहुत ख़ुशी हुई और यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। (इस पर मैं हंसने लगी थी)।[1]

हज़रत हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाते तो हम आपके लिए खड़े हो जाते, यहां तक कि आप दोबारा अपने घर तशरीफ़ ले जाते।[2]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी लाठी पर टेक लगाए हुए हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए, हम आपके लिए खड़े हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जैसे अजमी लोग एक दूसरे की ताज़ीम में (हाथ बांधकर) खड़े हो जाते हैं, तुम ऐसे मत खड़े हो।[3]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए। अल्लाह अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़रमाए। उन्होंने कहा, खड़े हो जाओ, हम उस मुनाफ़िक़ के ख़िलाफ़ मुक़दमा हुज़ूर सल्ल० के सामने पेश करेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, खड़े तो सिर्फ़ अल्लाह के लिए ही होना चाहिए, किसी और के लिए नहीं होना चाहिए। (आने वाले के दिल में यही जज़्बा होना चाहिए कि लोग मेरे लिए न खड़े हों।)[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत जितनी महबूब थी, उतनी किसी और की नहीं थी, लेकिन जब हुज़ूर सल्ल० को (आता हुआ) देख लिया करते थे तो खड़े नहीं हुआ करते थे, क्योंकि उन्हें मालूम था कि खड़ा होना हुज़ूर सल्ल० को पसन्द नहीं है (हुज़ूर सल्ल० चाहते थे कि सहाबा रज़ि० के साथ बे-तकल्लुफ़ी और सादगी के साथ

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 138,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 40
3. कंज़, भाग 5, पृ० 55, जमउल फ़वाइद, भाग 5, पृ० 143,
4. हैसमी, भाग 8, पृ० 40

रहें तकल्लुफ़ात न हों।)[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस बात से मना फ़रमाया है कि आदमी किसी को उसकी जगह से उठाकर ख़ुद उसकी जगह बैठ जाए और हज़रत इब्ने उमर रज़ि० का मामूल यह था कि जब उनके लिए कोई आदमी अपनी जगह से खड़ा हो जाता तो उसकी जगह न बैठते।[2]

हज़रत अबू ख़ालिद वालिबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हम लोग खड़े हुए हज़रत अली बिन अबी तालिब का इन्तिज़ार कर रहे थे ताकि वह आगे बढ़ें कि इतने में वह बाहर आए और फ़रमाया, क्या बात है, तुम लोग सीना तान कर (फ़ौजियों की तरह) खड़े हुए नज़र आ रहे हो।[3]

हज़रत अबू मिज्लज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर आए। बाहर हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम बैठे हुए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि० तो खड़े हो गए, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० बैठे रहे और इन दोनों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ऊंचे दर्जे वाले और वज़नी आदमी थे।

हज़रत मुआविया रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जिसको इस बात से ख़ुशी होती है कि अल्लाह के बन्दे उसके लिए खड़े हों, उसे दोज़ख़ की आग में अपना घर बना लेना चाहिए।[4]

मुसलमान की ख़ातिर अपनी जगह से ज़रा सरक जाना

हज़रत वासिला बिन ख़त्ताब कुरैशी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 138, बिदाया, भाग 6, पृ० 57
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 169, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 150
3. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 28,
4. अदबुल मुफ़रद, पृ० 144

सल्लम अकेले बैठे हुए थे। आप उसकी वजह से अपनी जगह से ज़रा सरक गए। किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जगह तो बहुत है (फिर आप क्यों अपनी जगह से सरके ?)

हुज़ूर सल्ल० ने उसको फ़रमाया, यह भी मोमिन का हक़ है कि जब उसका भाई उसे देखे तो अपनी जगह से उसके लिए सरक जाए।[1]

हज़रत वासिला बिन असक़अ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी मस्जिद में दाख़िल हुआ, उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में अकेले बैठे हुए थे। हुज़ूर सल्ल० उस आदमी की वजह से अपनी जगह से ज़रा सरक गए। उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जगह तो बहुत है।

आपने फ़रमाया, यह भी मुसलमान का हक़ है[2] और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घरवालों के इकराम के बाब में यह क़िस्सा गुज़र चुका है कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से अपनी जगह से सरके और यों कहा, ऐ अबुल हसन रज़ि० ! यहां आ जाओ।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के और हज़रत अबूबक्र रज़ि० के दर्मियान बैठ गए।

पास बैठने वाले का इक्राम करना

हज़रत कसीर बिन मुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं जुमा के दिन मस्जिद में गया तो मैंने देखा कि हज़रत अम्र बिन मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु एक हलक़े में पांव फैलाकर बैठे हुए हैं। जब उन्होंने मुझे देखा तो अपने पांव समेट लिए और फ़रमाया, तुम जानते हो कि मैंने किस वजह से अपने पांव फैला रखे थे ? इसलिए फैलाए थे ताकि कोई नेक आदमी आकर बैठ जाए।

हज़रत मुहम्मद बिन अब्बादा बिन जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 55,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 40.

हैं, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक लोगों में सबसे ज़्यादा एहतराम के क़ाबिल मेरे पास बैठने वाला है।

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मेरे नज़दीक लोगों में से सबसे ज़्यादा इकराम के क़ाबिल मेरे पास बैठने वाला है, उसे चाहिए कि वह लोगों की गरदन फलांग आए और मेरे पास बैठ जाए।[1]

मुसलमान के इक्राम को क़ुबूल करना

हज़रत अबू जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, दो आदमी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत अली रज़ि० ने उनके लिए एक गद्दा बिछाया, उनमें से एक तो गद्दे पर बैठ गया और दूसरा ज़मीन पर। जो ज़मीन पर बैठ गया, उसे हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उठो और गद्दे पर बैठो, क्योंकि ऐसे इकराम का इंकार तो गधा ही कर सकता है।[2]

मुसलमान के राज़ को छिपाना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी बेटी हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हु बेवा हो गईं। उनके शौहर ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे और बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे। उनका मदीने में इंतिक़ाल हो गया। मेरी हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे कहा, अगर आप चाहें तो मैं हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ि० का आपसे निकाह कर दूं। उन्होंने मुझे कुछ जवाब न दिया।

कुछ दिनों के बाद हुज़ूर सल्ल० ने हफ़सा रज़ि० से शादी का पैग़ाम दिया। आख़िर मैंने हुज़ूर सल्ल० से उसकी शादी कर दी। फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुझे मिले और उन्होंने कहा, तुमने हफ़सा रज़ि० को मुझ पर पेश किया था। मैंने तुम्हें उसका कोई जवाब नहीं दिया

1. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 167,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 55,

था, शायद तुम्हें इससे मुझ पर गुस्सा आया होगा। मैंने कहा, हां, आया तो था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने उस वक़्त तुम्हें इसलिए जवाब नहीं दिया था कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को हज़रत हफ़्सा रज़ि० का ज़िक्र करते हुए सुना था, (जिससे मुझे अन्दाज़ा हुआ कि हुज़ूर सल्ल० उनसे शादी करना चाहते हैं) और मैं हुज़ूर सल्ल० के राज़ को खोलना नहीं चाहता था। अगर हुज़ूर सल्ल० उनसे शादी न करते, तो मैं ज़रूर कर लेता।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की। जब मैंने देखा कि आपकी ख़िदमत से फ़ारिग़ हो गया हूं, तो मैंने (अपने दिल में) कहा, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अब दोपहर को आराम फ़रमाएंगे, तो मैं आपके पास से बाहर चला गया। बाहर बच्चे खेल रहे थे।

मैं खड़े होकर उनके खेल को देखने लग गया। इतने में हुज़ूर सल्ल० तशरीफ ले आए और बच्चों के पास पहुंचकर उन्हें सलाम किया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने मुझे बुलाया और किसी काम के लिए भेज दिया और गोया कि वह काम मेरे मुंह मे है। मैं आपका काम पूरा करके आपकी ख़िदमत में (बताने) गया और इस तरह देर से अपनी वालिदा के पास वापस पहुंचा, तो उन्होंने पूछा, आज तुम देर से क्यों आए हो?

मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने किसी काम से भेज दिया था। मेरी वालिदा ने पूछा, वह काम क्या था?

मैंने कहा, वह हुज़ूर सल्ल० के राज़ की बात है।

मेरी वालिदा ने कहा, ठीक है, हुज़ूर सल्ल० का राज़ छिपाकर रखना। चुनांचे मैंने आज तक हुज़ूर सल्ल० का वह राज़ किसी इंसान को नहीं बताया। (ऐ मेरे शागिर्द!) अगर मैं किसी को बताता, तो तुम्हें तो ज़रूर बता देता।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 361, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 120,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 169, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 148,

यतीम का इक्राम करना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यतीम के सर पर हाथ फेरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अपने दिल की सख़्ती की शिकायत करने लगा, आपने फ़रमाया, क्या तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए और तुम्हारी यह ज़रूरत पूरी हो जाए? तुम यतीम पर शफ़क़त किया करो और सर पर हाथ फेरा करो और अपने खाने में से उसे खिलाया करो, उससे तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा और तुम्हारी ज़रूरत पूरी हो जाएगी।[2]

हज़रत बशीर बिन अक़रबा जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमात ह कि उहुद की लड़ाई के दिन मेरी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई। मैंने पूछा, मेरे वालिद का क्या हुआ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह तो शहीद हो गए, अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए। मैं यह सुनकर रोने लगा।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे पकड़कर मेरे सर पर हाथ फेरा और मुझे अपने साथ अपनी सवारी पर सवार कर लिया और फ़रमाया, क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हारा बाप बन जाऊं और आइशा रज़ि० तुम्हारी मां।[3]

वालिद के दोस्त का इक्राम करना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब मक्का मुकर्रमा जाते तो अपने साथ एक गधा भी रखते, जब ऊंटनी पर सफ़र करते-करते उकता

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 160,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 160,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 161, इसाबा, भाग 1, पृ० 153,

जाते, तो आराम करने के लिए उस पर बैठ जाते और एक पगड़ी भी साथ ले जाते, जिसे (ज़रूरत पड़ने पर) सर पर बांध लेते।

एक दिन वह उस गधे पर सवार होकर जा रहे थे कि एक देहाती उनके पास से गुज़रा। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उससे पूछा कि क्या तुम फ़्लां बिन फ़्लां नहीं हो?

उसने कहा, हां, मै वही हूं। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसे अपना वह गधा दे दिया और फ़रमाया, इस पर सवार हो जा और पगड़ी भी उसे दे दी और फ़रमाया, इससे अपना सर बांध लेना।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के एक साथी ने उनसे कहा, आप जिस गधे पर आराम किया करते थे, वह भी उसे दे दिया और जिस पगड़ी से अपना सर बांधा करते थे, वह भी उसे दे दी। अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए। (आपने ऐसा क्यों किया?)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि नेकियों में सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने वालिद के इंतिक़ाल के बाद उसके मुहब्बत व ताल्लुक़ वालों से अच्छा सुलूक करे। इस देहाती के वालिद (मेरे वालिद) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के महबूब दोस्त थे।[1]

अदबुल मुफ़रद की रिवायत में इस तरह से है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से उनके एक साथी ने कहा, क्या इस देहाती को दो दिरहम देने काफ़ी नहीं थे?

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि अपने वालिद के दोस्तों से अच्छा सुलूक करो और उनसे ताल्लुक़ात ख़त्म न करो, नहीं तो अल्लाह तुम्हारे नूर को बुझा देंगे।[2]

हज़रत अबू उसैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मेरे मां-बाप के इंतिक़ाल के

1. जमउल फवाइद, भाग 2, पृ० 169,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 9

बाद कोई ऐसा काम है जिसके करने से मैं मां-बाप के साथ नेकी करने वाला समझा जाऊं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, उन दोनों के लिए दुआ करना, इस्तग़फ़ार करना और उनके जाने के बाद उनके वायदे पूरा करना और मां-बाप के ज़रिए से जो रिश्तेदारी बनती है, उसका ख़्याल रखना और उनके दोस्तों का इक्राम करना।[1]

मुसलमान की दावत क़ुबूल करना

हज़रत ज़ियाद बिन अनउम अफ़रीक़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में एक लड़ाई में समुन्दर का सफ़र कर रहे थे कि हमारी नाव हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु की नाव से जा मिली। जब हमारा दोपहर का खाना आ गया तो हमने उन्हें (खाने के लिए) बुला भेजा, इस पर हज़रत अय्यूब रज़ि० हमारे पास आए और फ़रमाया, तुमने मुझे बुलाया है, लेकिन मैं रोज़े से हूं, फिर भी मैं तुम्हारी दावत ज़रूर क़ुबूल करूंगा, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मुसलमान के अपने भाई पर छः हक़ वाजिब हैं। अगर उनमें से एक भी काम छोड़ेगा, तो अपने भाई का हक़ वाजिब छोड़ेगा—

1. जब उससे मिले तो उसे सलाम करे,
2. जब वह उसे दावत दे, तो उसे क़ुबूल करे,
3. उसे जब छींक आए, तो उसे जवाब दे,
4. जब बीमार हो तो उसका पूछना करे,
5. जब उसका इंतिक़ाल हो तो उसके जनाज़े में शरीक हो, और
6. जब उससे नसीहत की मांग करे, तो उसे नसीहत करे। आगे पूरी हदीस ज़िक्र की है।[2]

हज़रत हुमैद बिन नुऐम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर

1. अबू दाऊद,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 134.

बिन ख़त्ताब और हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हुमा को किसी ने खाने की दावत दी, जिसे इन लोगों ने कुबूल कर लिया (और उसके घर खाने के लिए तश्रीफ़ ले गए।)

जब ये दोनों हज़रात खाना खाकर वहां से बाहर निकले तो हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया, मैं इस खाने में शरीक तो हो गया हूं, लेकिन अब मेरा दिल चाह रहा है कि मैं उसमें शरीक न होता तो अच्छा था।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने पूछा, क्यों?

फ़रमाया, मुझे इस बात का डर है कि उसने यह खाना अपनी शान दिखाने के लिए खिलाया है।[1]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने शादी की। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अमीरुल मोमिनीन थे। हज़रत मुग़ीरह ने उनको (शादी) के खाने पर बुलाया। जब हज़रत उस्मान रज़ि० (खाने के लिए) तश्रीफ़ लाए तो फ़रमाया, मेरा तो रोज़ा था, लेकिन मैंने चाहा कि आपकी दावत कुबूल कर लूं और आपके लिए बरकत की दुआ कर दूं। (यानी आना ज़रूरी है, खाना ज़रूरी नहीं है।)[2]

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब तुम्हारा कोई दोस्त या पड़ोसी या रिश्तेदार सरकारी मुलाज़िम हो और वह तुम्हें कुछ हदिया दे या तुम्हारी खाने की दावत करे तो तुम उसे कुबूल कर लो (अगर उसकी कमाई में कुछ शुबहा है तो) तुम्हें तो वह चीज़ बग़ैर कोशिश के मिल रही है और (ग़लत कमाई का) गुनाह उसके ज़िम्मे होगा।[3]

मुसलमान के रास्ते से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को दूर कर देना

हज़रत मुआविया बिन कुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत

1. कंज़, भाग 5, पृ० 66,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 66,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 66,

माक़ल मुज़नी रहमतुल्लाहि अलैहि के साथ था। उन्होंने रास्ते से कोई तक्लीफ़ देने वाली चीज़ हटाई। आगे जाकर मुझे भी रास्ते में एक तक्लीफ़ देने वाली चीज़ नज़र आई। मैं जल्दी से उसकी तरफ़ बढ़ा, तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?

मैंने कहा, आपको यह काम करते हुए देखा था, इसलिए मैं भी इस काम को करना चाहता हूं।

उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! तुमने बहुत अच्छा किया। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुसलमानों के रास्ते से किसी तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटाएगा, उसके लिए एक नेकी लिखी जाएगी और जिसकी एक नेकी भी (अल्लाह के यहां) क़ुबूल हो गई, वह जन्नत में दाख़िल होगा।[1]

छींकने वाले को जवाब देना

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में आपको छींक आ गई, इस पर सहाबा रज़ि० ने कहा, 'यर्हमुकल्लाहु'।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम०'[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी को छींक आई, उसने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं (इस छींक आने पर) क्या कहूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'अलहम्दु लिल्लाहि' कहो।

सहाबा रज़ि० ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हम उसको जवाब में क्या कहें?

आपने फ़रमाया, तुम लोग 'यर्हमुकल्लाहु' कहो।

उस आदमी ने कहा, मैं इन लोगों के जवाब में क्या कहूं?

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 87,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 57

आपने फ़रमाया, तुम कहो—

'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम'[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें यह सिखाते थे कि जब हम में से किसी को छींक आ जाए, तो उसे छींक का क्या जवाब दें।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सिखाते थे कि तुममें से किसी को छींक आए तो उसे—

'अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०' कहना चाहिए और जब वह यह कह ले तो उसके पास वालों को 'यर्हमुकल्लाहु' कहना चाहिए। जब पास वाले यह कह चुकें तो उसे—

'ल-यग़्फ़िरुल्लाहु ली व लकुम' कहना चाहिए।[3]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के एक कोने में एक आदमी को छींक आई तो उसने कहा, अलहम्दु लिल्लाहि।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'यर्हमुकल्लाहु'

फिर घर के कोने में एक और आदमी को छींक आ गई और उसने कहा,

'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन व हम्दन कसीरन तय्यिबन मुबारकन फ़ीहि०'

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह आदमी (सवाब में) उससे उन्नीस दर्जे

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 57,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 57
3. हैसमी,

बढ़ गया।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दो आदमियों को छींक आई। हुज़ूर सल्ल० ने एक की छींक का तो जवाब दिया, लेकिन दूसरे को जवाब न दिया। हुज़ूर सल्ल० से उसकी वजह पूछी गई तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसने तो छींक के बाद 'अलहम्दु लिल्लाह' कहा था और दूसरे ने नहीं कहा था, (इसलिए मैंने पहले को जवाब दिया और दूसरे को नहीं दिया।)[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दो आदमियों को छींक आई। उनमें से एक दूसरे से (दुनिया के एतबार से) ज़्यादा मर्तबे वाला था। ज़्यादा मर्तबे वाले को छींक आई। उसने अलहम्दु लिल्लाह नहीं कहा। हुज़ूर सल्ल० ने उसे छींक का जवाब नहीं दया। फिर दूसरे को छींक आ गई, उसने 'अलहम्दु लिल्लाहि' कहा तो हुज़ूर सल्ल० ने उसकी छींक का जवाब दिया।

इस पर उस ऊंचे मर्तबे वाले ने कहा, मुझे आपके पास छींक आई, लेकिन आपने मेरी छींक का जवाब न दिया और उसे छींक आई तो उसकी छींक का जवाब दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसने (छींकने के बाद) अल्लाह का नाम लिया था। इसलिए मैंने भी अल्लाह का नाम ले लिया और तुम अल्लाह को भूल गए तो मैंने भी तुम्हें भुला दिया।[3]

हज़रत अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया, वह उस वक़्त हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के घर में थे। मुझे छींक आई तो उन्होंने मेरी छींक का जवाब न दिया और हज़रत उम्मे फ़ज़्ल को छींक आई तो हज़रत अबू मूसा ने उनकी छींक का जवाब दिया।

1. कंज़, भाग 5, पृ० 56,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 5, पृ० 145,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 58, अदबुल मुफ़रद, पृ० 136, कंज़, भाग 5, पृ० 57,

मैंने जाकर अपनी वालिदा को सारी बात बताई। जब हज़रत अबू मूसा रज़ि० मेरी वालिदा के पास आए तो मेरी वालिदा ने उनकी ख़ूब ख़बर ली और फ़रमाया, मेरे बेटे को छींक आई तो आपने उसका कोई जवाब न दिया और हज़रत उम्मे फ़ज़्ल को छींक आई तो आपने उसे जवाब दिया तो हज़रत अबू मूसा ने मेरी वालिदा से कहा, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब तुममें किसी को छींक आए और वह 'अलहम्दु लिल्लाह' कहे तो तुम उसकी छींक का जवाब दो और अगर वह अलहम्दु लिल्लाह न कहे तो उसकी छींक का जवाब न दो और मेरे बेटे को छींक आई उसने अलहम्दु लिल्लाह नहीं कहा, इसलिए मैंने उसकी छींक का जवाब नहीं दिया और हज़रत उम्मे फ़ज़्ल को छींक आई, उन्होंने अलहम्दु लिल्लाहि कहा, इसलिए मैंने उसकी छींक का जवाब दे दिया।

इस पर मेरी वालिदा ने कहा, तुमने अच्छा किया।[1]

हज़रत मक्हूल अज़दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पहलू में बैठा हुआ था कि इतने में मस्जिद में कोने में एक आदमी को छींक आई, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुमने अलहम्दु लिल्लाह कहा है, तो फिर 'यर्हमुकल्लाह'।[2]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को छींक आती और कोई उन्हें 'यर्हमुकल्लाहु' कहता तो यह उसे जवाब में कहते—

'यर्हमुनल्लाहु व ईया कुम व ग़फ़-र लना व लकुम'[3]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी को हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पाए छींक आई, उस आदमी ने अलहम्दु लिल्लाह कहा, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उससे कहा, तुमने

1. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 137,
2. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 136,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 57

कंजूसी से काम लिया, जब तुमने अल्लाह की तारीफ़ की है, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर भी दरूद भेज देते।

हज़रत ज़ह्हाक बिन क़ैस यश्कुरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी को हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास छींक आई, तो उस आदमी ने कहा—

'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने कहा, अगर तुम इसके साथ—

'वस्सलामु अला रसूलिल्लाह०' मिलाकर पूरा कर देते तो ज़्यादा अच्छा था।[1]

हज़रत अबू जमरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को सुना कि जब वह किसी को छींक का जवाब देते तो कहते[2]—

عَافَانَا اللّٰہُ وَاِیَّاکُمْ مِنَ النَّارِ یَرْحَمُکُمُ اللّٰہُ

मरीज़ की बीमारपुर्सी करना और उसे क्या कहना चाहिए

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरी आंखों में दर्द था, जिसकी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरी बीमारपुर्सी फरमाई।[3]

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि विदाई हज वाले साल में मैं बहुत ज़्यादा बीमार हो गया था। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ लाए, तो मैंने कहा, मेरी बीमारी ज़्यादा हो गई है और मैं मालदार आदमी हूं और मेरा और कोई वारिस नहीं है, सिर्फ़ एक बेटी है तो क्या मैं अपना दो

1. कंज़, भाग 5, पृ० 57,
2. अदबुल मुफ़्रद, भाग 135,
3. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 124,

तिहाई माल सदक़ा कर दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं।

मैंने कहा, आधा माल सदक़ा कर दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, हां, तिहाई माल सदक़ा कर दो और तिहाई भी बहुत है। तुम अपने वारिसों को माल छोड़कर जाओ, यह इससे बेहतर है कि तुम उनको फ़क़ीर छोड़कर जाओ और वे लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और तुम जो भी ख़र्चा अल्लाह की रिज़ा के लिए करोगे, उस पर तुम्हें अल्लाह की ओर से बदला ज़रूर मिलेगा, यहां तुम जो लुक़्मा बीवी के मुंह में डालोगे, उस पर भी बदला मिलेगा।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे तो ऐसा लग रहा है कि और मुहाजिर तो आपके साथ मक्का से वापस चले जाएंगे, मैं यहां ही मक्का में रह जाऊंगा और मेरा इंतिक़ाल यहां मक्का में हो जाएगा और चूंकि मैं मक्का से हिजरत करके गया था, तो अब मैं यह नहीं चाहता कि मेरा यहां इंतिक़ाल हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, तुम्हारी ज़िंदगी लम्बी होगी (और तुम्हारा इस मर्ज़ में यहां इंतिक़ाल नहीं होगा) और तुम जो भी नेक अमल करोगे, उससे तुम्हारा दर्जा भी ऊंचा होगा और तुम्हारी इज़्ज़त में बढ़ोत्तरी होगी और तुम्हारे ज़रिए से इस्लाम का और मुसलमानों का बहुत फ़ायदा होगा और दूसरों का बहुत नुक़्सान होगा। (चुनांचे इराक़ की जीत का यह ज़रिया बने) ऐ अल्लाह ! मेरे सहाबा रज़ि० की हिजरत को आख़िर तक पहुंचा, (बीच में मक्का में फ़ौत होने से टूटने न पाए) और (मक्का में मौत देकर) उन्हें एड़ियों के बल वापस न कर।

हां, रहम खाने के क़ाबिल साद बिन ख़ौला हैं (कि वह मक्का से हिजरत करके गए थे और अब यहां फ़ौत हो गए हैं) उनके मक्का में फ़ौत होने की वजह से हुज़ूर सल्ल० को उन पर तरस आ रहा था।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 173, मुस्लिम, भाग 5, पृ० 39

एक बार बीमार हो गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पैदल चलकर मेरी बीमारी पूछने के लिए तशरीफ़ ले आए। मैं उस वक़्त बेहोश था। हुज़ूर सल्ल० ने वुज़ू फ़रमाया, और अपने वुज़ू का पानी मुझ पर छिड़का, जिससे मुझे फ़ायदा हुआ। मैं होश में आया तो देखा कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ रखते हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अपने माल में क्या करूं? मैं अपने माल के बारे में क्या फ़ैसला करूं?

आपने इसका कोई जवाब न दिया, यहां तक कि मीरास की आयत नाज़िल हो गई।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक गधे पर सवार हुए। उस गधे के पालान पर फ़िदक की बनी हुई चादर पड़ी हुई थी और मुझे अपने पीछे बिठा कर हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु की बीमारी पूछने के लिए तशरीफ़ ले गए, यह वाक़िया बद्र की लड़ाई से पहले का है।

चलते-चलते हुज़ूर सल्ल० का गुज़र एक मज्लिस पर हुआ, जिसमें अब्दुल्लाह बिन उबई बिन सलूल भी था। अभी तक अब्दुल्लाह ने इस्लाम ज़ाहिर नहीं किया था। इस मज्लिस में मुसलमान, मुश्रिक, बुतपरस्त और यहूदी सब मिले-जुले बैठे थे और इस मज्लिस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

जब आपकी सवारी का गर्द व ग़ुबार उस मज्लिस पर पड़ा तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने अपनी नाक पर चादर रख ली और कहा, हम पर गर्द व ग़ुबार न डालो। हुज़ूर सल्ल० सलाम करके वहां खड़े हो गए और सवारी से नीचे उतरकर उन्हें अल्लाह की दावत देने लग गए और उन्हें क़ुरआन भी पढ़कर सुनाया।

अब्दुल्लाह निब उबई ने कहा, ऐ आदमी ! जो आप कह रहे हैं, अगर यह हक़ है, तो इससे कोई बात ज़्यादा अच्छी नहीं हो सकती, लेकिन आप हमारी मज्लिसों में आकर अपनी बात सुनाकर हमें तक्लीफ़ न

1. सहीह बुख़ारी, भाग 2, पृ० 843, अदबुल मुफ़्रद, पृ० 75

पहुंचाया करें। आप अपने ठिकाने पर वापस जाएं और हम में से जो आपके पास आए उसे आप अपनी बात सुना दिया करें।

हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल! आप हमारी मज्लिसों में तशरीफ़ लाया करें और हमें अपनी बात सुनाया करें। हमें यह बहुत पसन्द है। इस पर मुसलमानों, मुश्रिकों और यहूदियों ने एक दूसरे को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया और बात इतनी बढ़ी कि एक दूसरे पर हमलावर होने वाले ही थे, इसलिए हुज़ूर सल्ल० इन सबको ठंडा करते रहे, यहां तक कि सब ख़ामोश हो गए।

फिर हुज़ूर सल्ल० अपनी सवारी पर सवार होकर चल पड़े, यहां तक कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० के पास पहुंच गए। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ साद! अबू हुबाब यानी अब्दुल्लाह बिन उबई ने जो कहा, क्या तुमने वह नहीं सुना?

हज़रत साद रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप उसे माफ़ कर दें और उससे दरगुज़र फ़रमा दें। अल्लाह ने आपको सब कुछ अता फ़रमा दिया, हालांकि आपके तशरीफ़ लाने से पहले (मदीना) की इस बस्ती वालों ने तो इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया था कि इसे ताज पहनाकर अपना सरदार बना लें, लेकिन इतने में आप अल्लाह की ओर से हक़ लेकर आ गए, जिसकी वजह से ऐसा न हो सका, बस इस वजह से उसे आपसे जलन है, और आपकी रहबरी उसकी गले के नीचे नहीं उतर रही है। आज जो कुछ आपने उसे करते देखा है, वह सब इसी ग़ुस्से और जलन की वजह से है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बीमार देहाती की बीमारपुर्सी के लिए गए और आपकी आदत यह थी कि जब किसी बीमार के पास बीमारपुर्सी के लिए तशरीफ़ ले जाते, तो फ़रमाते—

'ला बा-स तहूरुन इनशाअल्लाहु तआला'

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 845,

'कोई डर की बात नहीं, अल्लाह ने चाहा तो यह बीमारी (गुनाहों से) पाकी का ज़रिया है।' चुनांचे उसे भी ये कलिमात कहे, तो उसने जवाब में कहा, आप इसे पाकी का ज़रिया कह रहे हैं। बात ऐसे नहीं है, बल्कि यह तो बहुत तेज़ बुख़ार है जो एक बूढ़े पर जोश मार रहा है और यह बुख़ार तो उसे क़ब्रस्तान दिखाकर छोड़ेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तो फिर ऐसे ही सही।[1] चुनांचे वह इसी बीमारी में मर गया।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बहुत तेज़ बुख़ार हो गया। चुनांचे मैं इन दोनों लोगों के पास गई और मैंने कहा, ऐ अब्बा जान! आप कैसे हैं? ऐ बिलाल रज़ि० आप कैसे हैं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० का जब बुख़ार तेज़ होता, तो वह यह शेर पढ़ा करते—

كُلُّ امْرِئٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ   وَالْمَوْتُ أَدْنَى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

'हर आदमी अपने घरवालों में रहता है और उसे कहा जाता है कि अल्लाह तुम्हारी सुबह ख़ैर व आफ़ियत वाली बनाए, हालांकि मौत तो उसके जूते के फ़ीते से भी ज़्यादा क़रीब है।'

और जब हज़रत बिलाल रज़ि० का बुख़ार उतर जाता तो वह (मक्का को याद करके) यह शेर पढ़ते —

أَلَا لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتَنَّ لَيْلَةً   بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيلُ

'ग़ौर से सुनो, काश मुझे मालूम हो जाता कि मैं क्या कोई रात (मक्का की) वादी में गुज़ारूंगा इज़ख़िर और मेरे आस-पास (मक्का की) घास और ज़ोरदार घास होगी।'

وَهَلْ أَرِدَنْ يَوْمًا مِيَاهَ مَجَنَّةٍ   وَهَلْ يَبْدُوَنْ لِي شَامَةٌ وَطَفِيلُ

'मैं और क्या किसी दिन मजिन्ना के चश्मों पर उतरूंगा और क्या

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 844,

शामा और तफ़ील नामी (मक्का के) पहाड़ मुझे नज़र आएंगे।'

मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर ये सारी बातें बताईं तो हुज़ूर सल्ल० ने दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! हमें मक्का से जितनी मुहब्बत है, उतनी या उससे ज़्यादा मदीना की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा कर दे। ऐ अल्लाह! मदीना को सेहत देनेवाली जगह बना दे और हमारे लिए उसके मुद्द और साअ (और मैदानों में) बरकत डाल दे और इसका बुख़ार जुहफ़ा नामी जगह पर मुंतक़िल कर दे।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुममें से आज रोज़ा किसने रखा है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने।

फिर आपने पूछा, तुममें से आज किसी ने किसी बीमार की बीमारपुर्सी की है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, तुममें से आज कौन किसी जनाज़े में शरीक हुआ है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं।

फिर आपने पूछा, आज किसने किसी मिस्कीन को खाना खिलाया है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैंने।

हुज़ूर सल्ल०ने फ़रमाया, जो आदमी एक दिन में ये सारे काम करेगा, वह जन्नत में ज़रूर जाएगा।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का पूछना करने आए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो भी मुसलमान किसी बीमार का पूछना करता है, तो अगर वह सुबह को

---

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 844,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 75,

करता है, तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं जो शाम तक उसके लिए इस्तग़फ़ार करते रहते हैं और उसे (इस पूछने के बदले में) जन्नत में एक बाग़ मिलेगा और अगर वह शाम को पूछना करता है, तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते जाते हैं, जो इसके लिए इस्तग़फ़ार करते रहते हैं और उसे जन्नत में एक बाग़ मिलेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हसन बिन अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुमा का पूछना करने आए तो उनसे अली रज़ि० ने पूछा कि क्या आप पूछना की नीयत से आए हैं या सिर्फ़ मिलने के लिए आए हैं?

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, नहीं। मैं तो पूछना की नीयत से आया हूं, इस पर हज़रत अली रज़ि० ने पिछली हदीस जैसा मज़्मून बयान किया।[2]

हज़रत अबू फ़ाख़िता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का पूछना करने आए तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर तशरीफ़ लाए और पूछा, ऐ अबू मूसा रज़ि० ! आप पूछना करने आए हैं या मिलने?

उन्होंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! नहीं, मैं तो पूछना करने आया हूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुसलमान किसी मुसलमान का पूछना करता है, तो सुबह से शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं और अल्लाह उसको जन्नत में एक ख़रीफ़ यानी बाग़ अता फ़रमाते हैं।

रिवायत करने वाले कहते हैं, हमने पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! ख़रीफ़ किसे कहते हैं?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ख़रीफ़ पानी की वह नाली है

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 50
2. अहमद, भाग 1, पृ० 121

जिससे खजूरों के बाग़ को पानी दिया जाता है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बीमारपुर्सी करने आए, तो हज़रत अली रज़ि० ने उनसे फ़रमाया कि तुम हसन रज़ि० की बीमारपुर्सी करने आए हो, हालांकि तुम्हारे दिल में (मेरे बारे में) बहुत कुछ है।

हज़रत अम्र रज़ि० ने उनसे कहा, आप मेरे रब तो हैं नहीं कि जिधर चाहें, उधर मेरे दिल को फेर दें (बस अल्लाह ही ने मेरे दिल में ऐसी राय डाली है जो आपकी राय के ख़िलाफ़ है।)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, इस सब (राय के इख़्तिलाफ़) के बावजूद हम आपको आपके फ़ायदे की बात ज़रूर बताएंगे। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो मुसलमान अपने भाई की बीमारपुसी करता है, उसके लिए अल्लाह सत्तर हज़ार फ़रिश्ते भेज देते हैं। दिन में जिस वक़्त भी बीमारपुर्सी करेगा, उस वक़्त से शाम तक वे उसके लिए दुआ करते रहेंगे और रात को जिस वक़्त भी बीमारपुर्सी करेगा, उस वक़्त से सुबह तक वह उसके लिए दुआ करते रहेंगे।[2]

हज़रत सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। वह (कूफ़ा के मुहल्ले) किन्दा में किसी बीमार की बीमारपुर्सी करने गए। उसके पास जाकर उन्होंने कहा, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, अल्लाह मोमिन की बीमारी को उसके गुनाहों के मिटने का और उससे अल्लाह के राज़ी होने का ज़रिया बनाते हैं और फ़ाजिर और बदकार की बीमारी तो ऐसी है कि जैसे ऊंट को उसके घरवालों ने बांध दिया, फिर उसे खोल दिया। ऊंट को कुछ पता नहीं कि उसे क्यों बांधा था और उसे क्यों छोड़ा है?[3]

1. अहमद, भाग 1, पृ० 91,
2. अहमद, भाग 1, पृ० 97, हैसमी, भाग 3, पृ० 31,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 72

हज़रत सईद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उनके एक दोस्त की बीमारपुर्सी करने गया जो कि क़बीला क़िन्दा से था। उनसे हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह अपने मोमिन बन्दे को किसी बीमारी या आज़माइश में डाल देते हैं और फिर उसे आफ़ियत देते हैं, इससे उसके पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं और आगे ज़माने में वह अल्लाह की रिज़ा का तलबगार हो जाता है और अल्लाह अपने फ़ाजिर बन्दे को भी किसी बीमारी या आज़माइश में डाल देते हैं, फिर उसे आफ़ियत देते हैं, लेकिन वह ऊंट की तरह होते हैं, जिसे उसके घरवालों ने पहले बांधा था, फिर उसे खोल दिया। उस ऊंट को ख़बर नहीं कि घरवालों ने उसे क्यों बांधा था, फिर उसे क्यों छोड़ा है?[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब किसी बीमार की बीमारपुर्सी करने जाते, तो उससे पूछते कि क्या हाल है? और जब उसके पास से खड़े होने लगते, तो फ़रमाते 'ख़ारल्लाहु ल-क' (अल्लाह तुम्हें ख़ैर अता फ़रमाए।)[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी हुज़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक बीमार की बीमारपुर्सी गए, उनके साथ कुछ और लोग भी थे। घर में एक औरत थी जिसे उनका एक साथी देखने लगा, तो उससे हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, अगर तेरी आंख फूट जाती, तो यह तेरे लिए (ना महरम को देखने से) ज़्यादा बेहतर था।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बीमार की बीमारपुर्सी करने के लिए तशरीफ़ ले जाते तो उसके सरहाने बैठ जाते, फिर सात बार यह दुआ पढ़ते—

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 206,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 78,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 78,

'अस्अलुल्ला-हल अज़ीम रब्बल अर्शिल अज़ीम अंय्यशिफ़यक०'

अगर उसकी मौत में कुछ देर है, तो वह आदमी ज़रूर ठीक हो जाता।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बीमार के पास जाते, तो यह दुआ पढ़ते[2]—

'अज़हबिल बा-स रब्बन्नासि वशिफ़ अन्तशशाफ़ी ला शाफ़ि-य इल्ला अन-त' इब्ने जरीर की रिवायत में ये लफ़्ज़ हैं[3]—

'ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाअल्ला युग़ादिरु स-क़-मन०'

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सलम जब किसी बीमार का पूछना करते, तो अपना दायां हाथ उसके दाएं गाल पर रखकर यह दुआ पढ़ते[4]—

ला बा-स अज़हिबिल बा-स रब्बन्नासि इशिफ़ अन्तशशाफ़ी ला यक-शिफ़ुज़-ज़ुर-र इल्ला अन-त

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बीमार के पास जाते तो यह दुआ पढ़ते—

'अज़हबिल बास रब्बन्नासि वशिफ़ अन्तशशाफ़ी ला शाफ़ि-य इल्ला अन्त शिफ़ाअन ला युख़ादिरु सक़मन'[5]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बीमार का पूछना करते, तो अपना हाथ

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 79
2. अहमद, तिर्मिज़ी
3. कंज़, भाग 5, पृ० 50
4. मजमा,
5. कंज़, भाग 5, पृ० 51

जिस्म के उस हिस्से पर रखते जहां तक्लीफ़ होती और यह दुआ पढ़ते[1]—

'बिस्मिल्लाहि ला बा-स'

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पूछना करने के लिए तशरीफ़ लाए। जब आप बाहर जाने लगे, तो फ़रमाया, ऐ सलमान! अल्लाह तुम्हारी बीमारी को दूर कर दे और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फ़रमाए और तुम्हें दीन में और जिस्म में मरते दम तक आफ़ियत नसीब फ़रमाए।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी मरीज़ के पास तशरीफ़ ले जाते या कोई मरीज़ आपके पास लाया जाता तो हुज़ूर सल्ल० यह दुआ पढ़ते[3]—

अज़हिबिल बा-स रब्बन्नासि इश्फ़ि व अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाअल्ला युग़ादिरु स-क़-मन०

'हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन कलिमों के साथ हिफ़ाज़त की दुआ करते और पिछली हदीस वाले कलिमे बताए और आगे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मरज़ुल वफ़ात में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी ज़्यादा हो गई, तो मैं हुज़ूर सल्ल० का हाथ लेकर हुज़ूर सल्ल० के जिस्म पर फेरने लगी और यही कलिमे पढ़ने लगी।

हुज़ूर सल्ल० ने अपना हाथ मुझसे खींच लिया और फ़रमाया, ऐ मेरे रब! मुझे माफ़ फ़रमा और मुझे रफ़ीक़ (आला यानी अपने आप) से

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 299
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 299
3. सहीह बुख़ारी, भाग 2, पृ० 847,

मिला दे। यह हुज़ूर सल्ल० का आख़िरी कलाम था जो मैंने हुज़ूर सल्ल० से सुना।[1]

अन्दर आने की इजाज़त मांगना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सलाम फ़रमाते, तो तीन बार फ़रमाते, (यानी इजाज़त मांगने के लिए घर से बाहर तीन बार सलाम ज़ोर से करते, इजाज़त मिल जाती तो ठीक, वरना बाहर से वापस चले जाते, या मतलब यह है कि जब मज्मा ज़्यादा होता तो सारे मज्मे को सुनाने के लिए हुज़ूर सल्ल० तीन बार सलाम फ़रमाते, दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ और सामने, या मतलब यह है कि हुज़ूर सल्ल० जब किसी को मिलने उसके घर जाते तो तीन बार सलाम फ़रमाते, एक इजाज़त लेने के लिए और दूसरा अन्दर जाते वक़्त और तीसरा वापसी के वक़्त) और जब कोई अहम बात फ़रमाते तो तीन बार फ़रमाते, (ताकि कम से कम समझ वाला भी बात समझ जाए।)[2]

हज़रत क़ैस बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें मिलने के लिए हमारे घर तशरीफ़ लाए। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने (इजाज़त के लिए बाहर से) फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि।

मेरे वालिद ने (हुज़ूर सल्ल० के सलाम का) जवाब धीरे से दिया। मैंने कहा, क्या आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इजाज़त देना नहीं चाहते?

उन्होंने कहा, ज़रा हुज़ूर सल्ल० को बार-बार हमें सलाम करने दो।

हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

(मेरे वालिद) हज़रत साद रज़ि० ने फिर धीरे से जवाब दिया।

---

1. इब्ने साद, भाग 2, पृ० 14,
2. सहीह बुख़ारी, भाग 2, पृ० 923,

हुज़ूर सल्ल० ने फिर फ़रमाया, अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि और इसके बाद हुज़ूर सल्ल० वापस चल पड़े।

हज़रत साद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पीछे गए और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने आपका हर सलाम सुना है और हर सलाम का धीरे से जवाब दिया है, बस धीरे से इसलिए जवाब दिया, ताकि आप हमें बार-बार सलाम करें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उनके साथ वापस आए।

हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के लिए नहाने का पानी तैयार करवाया, जिससे हुज़ूर सल्ल० ने ग़ुस्ल किया। फिर हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को ज़ाफ़रान या वर्स (ख़ुश्बूदार घास) में रंगी हुई चादर दी, जिसे हुज़ूर सल्ल० ने ओढ़ लिया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने हाथ उठाकर यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह ! तू अपनी रहमतें और मेहरबानी साद रज़ि० के ख़ानदान पर नाज़िल फ़रमा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने कुछ खाना खाया।

फिर जब हुज़ूर सल्ल० ने वापसी का इरादा फ़रमाया, तो हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के सामने एक गधा पेश किया, जिसे एक अच्छी चादर डालकर तैयार किया गया था। हज़रत साद रज़ि० ने कहा, ऐ क़ैस ! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जाओ। मैं साथ चल पड़ा। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, मेरे साथ सवार हो जाओ। मैंने इंकार किया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो सवार हो जाओ या वापस चले जाओ। इस पर मैं वापस चला गया।[1]

हज़रत रिबई बिन हिराश रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मुझे बनू आमिर के एक आदमी ने यह क़िस्सा सुनाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, क्या मैं अन्दर आ जाऊं?

हुज़ूर सल्ल० ने बांदी से फ़रमाया, बाहर जाकर उस आदमी से कहो

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 143.

कि वह यों कहे, अस्सलामु अलैकुम, क्या मैं अन्दर आ जाऊं? उसने अन्दर आने की इजाज़त लेने में अच्छा तरीक़ा अख़्तियार नहीं किया।

मैंने हुज़ूर सल्ल० की यह बात बाहर से सुन ली और बांदी से बाहर आने से पहले ही मैंने कहा, अस्सलामु अलैकुम, क्या मैं अन्दर आ जाऊं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, व अलैक! अन्दर आ जाओ। आगे और हदीस भी ज़िक्र की।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने बालाख़ाने में थे कि हज़रत उमर रज़ि० आए और उन्होंने कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह! अस्सलामु अलैक! क्या उमर (रज़ि०) अन्दर आ जाए?[2]

ख़तीब ने इस वाक़िए का इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र किया है कि हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्सलामु अलैकुम! क्या उमर (रज़ि०) अन्दर आ जाए?[3]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तीन बार अन्दर आने की इजाज़त मांगी। फिर हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इजाज़त दी।[4]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी भेजकर हमें बुलाया, हम लोग आए और हमने इजाज़त मांगी।[5]

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास था कि इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उन्होंने इजाज़त लेने के लिए दरवाज़ा धीरे से खटखटाया, हुज़ूर

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 158, जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 143,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 44,
3. कंज़, भाग 5, पृ० 51,
4. कंज़, भाग 5, पृ० 51,
5. हैसमी, भाग 8, पृ० 45,

सल्ल० ने फ़रमाया, इनके लिए (दरवाज़ा) खोल दो।[1]

हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरवाज़े के सामने खड़े होकर अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, दरवाज़े के सामने खड़े होकर इजाज़त मत मांगो।

एक रिवायत में यह है कि हज़रत साद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में थे, मैं आकर दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया और मैंने इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने इशारा फ़रमाया, ज़रा परे हट जाओ। (मैं परे हट गया) और फिर आकर मैंने इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इजाज़त लेने की ज़रूरत तो सिर्फ़ निगाह ही की वजह से होती है।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक हुजरे में झांका। (हुज़ूर सल्ल० ने देख लिया) हुज़ूर सल्ल० एक तीर या कई तीर के फल लेकर उसकी ओर खड़े होकर लपके। मैं आपको देख रहा था कि गोया आप उसे अचानक चौके मारने के लिए मौक़ा खोज रहे थे।[3]

हज़रत सह्ल बिन साद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े के बिल में से झांका। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के हाथ में एक कंघी थी, जिससे आप सर खुजा रहे थे। जब हुज़ूर सल्ल० ने उसे (झांकते हुए) देख लिया तो फ़रमाया, अगर मुझे पता होता कि तुम मुझे देख रहे हो तो मैं यह कंघी तुम्हारी आंख में मार देता। निगाह की वजह से ही इजाज़त लेने का हुक्म दिया गया है।[4]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अंसार

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 45
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 44,
3. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 922
4. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 1020

की एक मज्लिस में बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु घबराए हुए आए और कहने लगे मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से तीन बार इजाज़त मांगी, लेकिन मुझे इजाज़त न मिली, आख़िर मैं वापस आ गया। हज़रत उमर रज़ि० ने (हज़रत अबू मूसा रज़ि० को बुलाया और) फ़रमाया, आप अन्दर क्यों नहीं आ गए?

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, मैंने तीन बार इजाज़त मांगी थी, लेकिन मुझे इजाज़त न मिली, तो मैं वापस आ गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब तुममें से कोई तीन बार इजाज़त मांगे और उसे इजाज़त न मिले, तो उसे चाहिए कि वह वापस चला जाए।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम्हें इस पर गवाह पेश करने होंगे, क्या आप लोगों में से किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात सुनी है?

हज़रत उबई ने फ़रमाया, (हम सबने हुज़ूर सल्ल० से यह हदीस सुनी है, इसलिए) आपको यह हदीस सुनाने के लिए हम लोगों में से सबसे कम उम्र आदमी ही खड़ा होगा। मैं सबसे छोटा था, मैंने खड़े होकर हज़रत उमर रज़ि० को बताया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात इर्शाद फ़रमाई थी।[1]

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि० रिवायत करने वाले ने हज़रत उमैर रज़ि० का यह जुम्ला नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्ल० की यह बात मुझसे वाक़ई छिपी रही, बस मैं बाज़ारों में ख़रीदने-बेचने में लगा रहा।[2]

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए तीन बार इजाज़त मांगी। मुझे इजाज़त न मिली। मैं वापस चल पड़ा। हज़रत उमर रज़ि० ने आदमी भेजकर मुझे बुलाया, (मैं आ गया), तो मुझसे फ़रमाया, ऐ अल्लाह के बन्दे! आपको मेरे दरवाज़े पर इन्तिज़ार करना बड़ा मुश्किल

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 923,
2. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 1092,

लगा। आपको मालूम होना चाहिए, लोगों को आपके दरवाज़े पर इन्तिज़ार करना ऐसे ही मुश्किल लगता है।

मैंने कहा, (नहीं, मैं इस वजह से वापस नहीं गया), बल्कि मैंने आपसे तीन बार इजाज़त मांगी थी, जब न मिली, तो मैं वापस चला गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आपने यह बात किससे सुनी है? (कि तीन बार में इजाज़त न मिले तो आदमी वापस चला जाए।)

मैंने कहा, मैंने यह बात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, यह कैसे हो सकता है कि जो बात हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न सुनी हो, वह आप हुज़ूर सल्ल० से सुन लें? अगर आप इस पर गवाह न लाए तो मैं आपको सबक़ भरी सज़ा दूंगा।

मैं वहां से बाहर आया। कुछ अंसार मस्जिद में बैठे हुए थे, मैं उनके पास आया। मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, क्या इसमें किसी को शक है? मैंने उन्हें हज़रत उमर रज़ि० की बात बताई तो उन्होंने कहा, आपके साथ हमारा सबसे कम उम्र आदमी ही जाएगा। इस पर मेरे साथ हज़रत अबू सईद ख़ुदरी या हज़रत अबू मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हुमा खड़े होकर हज़रत उमर रज़ि० के पास गए और वहां जाकर उन्होंने यह वाक़िया सुनाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को मिलने गए। हम भी आपके साथ गए।

वहां पहुंचकर हुज़ूर सल्ल० ने सलाम किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० को (अन्दर आने की) इजाज़त न मिली। फिर हुज़ूर सल्ल० ने दोबारा सलाम किया, फिर तीसरी बार सलाम किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० को इजाज़त न मिली, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो हमारे ज़िम्मे था, वह हमने कर दिया। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० वापस आ गए। पीछे से हज़रत साद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे और उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! उस ज़ात की क़सम, जिसने

आपको हक़ देकर भेजा, आपने जितनी बार सलाम किया, मैंने हर बार आपका सलाम सुना और मैंने हर बार जवाब दिया, लेकिन मैं चाहता था कि आप मुझे और मेरे घरवालों को बार-बार सलाम करें, (इसलिए मैं धीरे-धीरे जवाब देता रहा।)

इस पर हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के बारे में पूरी अमानतदारी से काम लेने वाला हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हां, (मैं आपको ऐसा ही समझता हूं) लेकिन मैंने चाहा कि (और ज़्यादा इत्मीनान के लिए) अच्छी तरह इसकी जांच हो जाए।[1]

हज़रत आमिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उनकी एक बांदी हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी को लेकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गई और उसने (दरवाज़े पर पहुंचकर) कहा, क्या मैं अन्दर आ जाऊं?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं।

वह वापस चली गई तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उसे बुलाओ और उससे कहो कि वह (इजाज़त लेने के लिए) यों कहे, अस्सलामु अलैकुम! क्या मैं अन्दर आ जाऊं?[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ अस्लम! मेरे दरवाज़े पर पहरा दिया करो और किसी से कोई चीज़ हरगिज़ न लेना। एक दिन उन्होंने मेरे जिस्म पर नए कपड़े देखे तो पूछा, ये कपड़े तुम्हें कहां से मिल गए?

मैंने कहा, हज़रत उबैदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे दिए हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि० से तो ले

1. अदबुल मुफ़रद
2. कंज़, भाग 5, पृ० 51

लिया करो और किसी से हरगिज़ न लेना। फिर मैं एक दिन दरवाज़े पर खड़ा (पहरा दे रहा) था कि हज़रत ज़ुबैर रज़ि० आए, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं अन्दर चला जाऊं? मैंने कहा, अमीरुल मोमिनीन कुछ देर के लिए मसरूफ़ हैं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने हाथ उठाकर इस ज़ोर से मेरे कानों के पीछे मारा कि मेरी चीख़ निकल गई।

मैं हज़रत उमर रज़ि० के पास अन्दर गया। उन्होंने पूछा, तुम्हें क्या हुआ?

मैंने कहा, हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने मुझे मारा है और उनकी सारी बात हज़रत उमर रज़ि० को बता दी। इस पर हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाने लगे, अल्लाह की क़सम! मैं ज़ुबैर रज़ि० को देख लूंगा, फिर फ़रमाया, उन्हें अन्दर भेज दो। मैंने उन्हें हज़रत उमर रज़ि० के पास अन्दर भेज दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, आपने इस ग़ुलाम को क्यों मारा?

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, यह कह रहा था कि मैं तुम लोगों को अन्दर नहीं जाने दूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या इससे पहले इसने कभी मेरे दरवाज़े से आपको वापस किया है?

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तो अगर इसने आपसे कहा था कि थोड़ी देर इन्तिज़ार कर लें, क्योंकि अमीरुल मोमिनीन ज़रा मसरूफ़ हैं तो आप इन्तिज़ार कर लेते और मुझे माज़ूर समझ लेते। अल्लाह की क़सम! जब किसी दरिन्दे को घायल कर दिया जाता है, तो बाक़ी दरिंदे उसे खा जाते हैं। आपने उसे मारा है, तो दूसरे भी मारने लग जाएंगे।[1]

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए और उन्होंने अन्दर आने की इजाज़त मांगी। मैंने उन्हें इजाज़त दे दी, मेरी बांदी मेरे सर में कंघी कर रही थी। मैंने उसे रोक दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, उसे कंघी करने दो।

1. कंज़, भाग 5, पृ० 5।

मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अगर आप मेरे पास पैग़ाम भेज देते तो ख़ुद ही आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाता।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, ज़रूरत तो मुझे है, (इसलिए मुझे ही आना चाहिए था।)[1]

एक साहब कहते हैं कि एक बार फ़ज्र की नमाज़ के बाद हम लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। उन्होंने हमें इजाज़त दे दी और अपनी बीवी पर एक चादर डाल दी और फ़रमाया, मैंने इसे पसन्द न किया कि तुम लोगों से इन्तिज़ार कराऊं।[2]

हज़रत मूसा बिन तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिद साहब के साथ अपनी वालिदा के पास जाने लगा तो वालिद साहब (कमरे के) अन्दर दाख़िल हो गए। मैं भी उनके पीछे अन्दर जाने लगा तो वह मेरी ओर मुड़े और इस ज़ोर से सीने पर मारा कि मैं सुरीन के बल गिर गया, फिर फ़रमाया, क्या तुम इजाज़त लिए बग़ैर अन्दर आ रहे हो ?[3]

हज़रत मुस्लिम बिन नज़ीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से इजाज़त मांगी और अन्दर झांककर कहा, मैं अन्दर आ जाऊं ?

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, तेरी आंख तो अन्दर आ चुकी है, हां, तेरी सुरीन अभी अन्दर नहीं आई और एक आदमी ने कहा, क्या मैं अपनी मां से भी अन्दर आने की इजाज़त लूं ?

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने फ़रमाया, अगर वालिदा से इजाज़त न लोगे (तो कभी तुम अपनी वालिदा को ऐसी हालत में देखोगे जो तुम्हें बिल्कुल अच्छी न लगेगी।)[4]

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 189,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 46,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 155, फ़त्ह, भाग 11, पृ० 20
4. अदबुल मुफ़रद, पृ० 159,

हज़रत अबू सुवैद अब्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहां गए और जाकर हम उनके दरवाज़े पर बैठ गए, ताकि हमें अन्दर जाने की इजाज़त मिल जाए, जब इजाज़त मिलने में देर हो गई, तो मैं खड़े होकर दरवाज़े के सूराख़ से अन्दर देखने लग गया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को इसका पता चल गया। जब उन्होंने हमें इजाज़त दे दी, तो हम अन्दर जाकर बैठ गए। उन्होंने फ़रमाया, अभी तुममें से कौन मेरे घर में झांक रहा था?

मैंने कहा, मैं।

उन्होंने फ़रमाया, तुमने मेरे घर में झांकना किस वजह से जायज़ समझा?

मैंने कहा, इजाज़त मिलने में देर हो रही थी, इसलिए मैंने देख लिया, मुस्तक़िल देखने का इरादा नहीं था, फिर साथियों ने उनसे कई बातें पूछीं। मैंने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! आप जिहाद के बारे में क्या फ़रमाते हैं?

उन्होंने फ़रमाया, जो जिहाद करेगा, वह अपने लिए करेगा।[1]

मुसलमान से अल्लाह के लिए मुहब्बत करना

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में हुज़ूर सल्ल० ने पूछा कि इस्लाम का कौन-सा हिस्सा सबसे ज़्यादा मज़बूत है?

सहाबा रज़ि० ने कहा, नमाज़।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नमाज़ बहुत अच्छी चीज़ है, लेकिन जो मैं पूछ रहा हूं, वह यह नहीं है।

सहाबा रज़ि० ने कहा, रमज़ान के रोज़े।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, रोज़ा भी अच्छी चीज़ है, लेकिन यह वह नहीं है।

---

1 हैसमी, भाग 8, पृ० 44

सहाबा रज़ि० ने कहा, जिहाद।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिहाद भी अच्छी चीज़ है, लेकिन यह वह चीज़ नहीं है। फिर फ़रमाया, ईमान का सबसे मज़बूत हिस्सा यह है कि तुम अल्लाह के लिए मुहब्बत करो और अल्लाह के लिए बुग़्ज़ रखो।[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, कौन-सा अमल अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब है?

किसी ने कहा, नमाज़ और ज़कात, किसी ने कहा, जिहाद।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब अमल अल्लाह के लिए मुहब्बत करना और अल्लाह के लिए बुग़्ज़ रखना है।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सिर्फ़ मुत्तक़ी आदमी से मुहब्बत किया करते थे।[3]

हज़रत उस्मान बिन अबिल आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, दो आदमी ऐसे हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्ल० को इन दोनों से मुहब्बत थी—एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, दूसरे हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा।[4]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़ौज का अमीर बनाकर भेजते थे और इस फ़ौज में हुज़ूर सल्ल० के आम सहाबा रज़ि० होते थे, तो किसी ने हज़रत अम्र रज़ि० से कहा, हुज़ूर सल्ल० आपको अमीर बनाते थे और अपने क़रीब करते थे और आपसे मुहब्बत करते थे।

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्ल० वाक़ई मुझे अमीर बनाया

1. अहमद,
2. मुज्जमिउज़्ज़वाइद, भाग 1, पृ० 90,
3. हैसमी, भाग 10, पृ० 274,
4. इब्ने असाकिर,

करते थे, लेकिन मुझे यह मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल० इस तरह मेरा दिल लगाने के लिए फ़रमाते थे या वाक़ई हुज़ूर सल्ल० को मुझसे मुहब्बत थी, लेकिन मैं तुम्हें ऐसे दो आदमी बताता हूं कि जब हुज़ूर सल्ल० का इंतिक़ाल हुआ, उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० को उनसे मुहब्बत थी, एक हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद और दूसरे हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा।[1]

इब्ने साद की रिवायत में इसके बाद यह मज़्मून है कि लोगों ने कहा, अल्लाह की क़सम ! यह (अम्मार बिन यासिर) सिफ़्फ़ीन की लड़ाई के दिन आप लोगों के हाथों क़त्ल हुए थे। हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, आप लोग ठीक कह रहे हैं, वाक़ई वे हमारे हाथों क़त्ल हुए थे।[2]

हज़रत उमामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैं (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दरवाज़े पर) बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत अली और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अन्दर जाने की इजाज़त लेने आए और यों कहा, ऐ उसामा ! अन्दर जाकर हुज़ूर सल्ल० से हमारे लिए इजाज़त ले आओ।

मैंने अन्दर जाकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत अली रज़ि० और हज़रत अब्बास रज़ि० अन्दर आने की इजाज़त चाह रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें मालूम है, वे दोनों क्यों आए हैं ? मैंने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे मालूम है, उन्हें अन्दर भेज दो।

उन दोनों ने अन्दर आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम आपसे यह पूछने आए हैं, आपको अपने रिश्तेदारों में से सबसे ज़्यादा महबूब कौन है ?

आपने फ़रमाया, फ़ातिमा बिन्त मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हा।

उन्होंने कहा, हम आपके घरवालों के बारे में नहीं पूछ रहे हैं।

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 238,
2. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 188,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब वह आदमी है जिस पर अल्लाह ने इनाम फ़रमाया है और मैंने भी उस पर इनाम किया है और वह है उसामा बिन ज़ैद रज़ि० ।

इन दोनों ने कहा, उनके बाद कौन?

आपने फ़रमाया, फिर अली बिन अबी तालिब।

इस पर हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने तो अपने चचा को सबसे आख़िर में कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अली रज़ि० ने आपसे पहले हिजरत की है (और हमारे यहां दर्जा दीन की मेहनत के मुताबिक़ बनता है।)[1]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा।

उस आदमी ने पूछा और मर्दों में से कौन?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु।

उस आदमी ने पूछा, फिर कौन? आपने फ़रमाया, अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु।[2]

हज़रत अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपको लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब कौन है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा।

मैंने कहा, मैं मर्दों में से पूछ रहा हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनके वालिद।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक आदमी गुज़रा। पास बैठे हुए उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 351,
3. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 67,

सल्ल० ! मुझे इस आदमी से मुहब्बत है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने इसे बताया है?

उसने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उसे बता दो। चुनांचे वह साहब उसके पीछे गए और उसे कहा, मैं आपसे अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूं। उस आदमी ने जवाब में दुआ दी—

अह्बबकल्लज़ी अह-बब-तनी लहू

'जिस ज़ात की वजह से तुमने मुझसे मुहब्बत की, वह तुमसे मुहब्बत करे।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक आदमी ने हुज़ूर सल्ल० के पास आकर सलाम किया और फिर वापस चला गया। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे उस आदमी से मुहब्बत है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने उसे यह बात बता दी है?

मैंने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह बात अपने भाई को बता दो।

चुनांचे मैं उसी वक़्त वहां से चल पड़ा और जाकर उसे सलाम किया, फिर मैंने उसका कंधा पकड़कर कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं आपसे अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूं। उसने कहा, मैं भी आपसे अल्लाह के लिए मुहब्बत करता हूं और मैंने कहा, अगर हुज़ूर सल्ल० मुझे इसका हुक्म न देते, तो मैं यह (बताने का) काम न करता।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सर्जिस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से मुहब्बत करता हूं।

1. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 147, कंज़, भाग ५, पृ० 42,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 282,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने उनको यह बात बता दी है? मैंने कहा, नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उन्हें बता दो।

फिर जब मेरी हज़रत अबूज़र रज़ि० से मुलाक़ात हुई, तो मैंने कहा, मुझे आपसे अल्लाह के लिए मुहब्बत है।

उन्होंने जवाब में मुझे यह दुआ दी—

(यह ऊपर वाली दुआ है)

फिर मैंने वापस आकर हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपनी मुहब्बत के बताने में भी अज्र व सवाब मिलता है।[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास से गुज़रा, तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, यह आदमी मुझसे मुहब्बत करता है।

लोगों ने पूछा, ऐ इब्ने अब्बास रज़ि० ! आपको कैसे पता चला?

उन्होंने कहा, इसलिए कि मैं उससे मुहब्बत करता हूं, (क्योंकि दिल को दिल से राह होती है। अगर तुम्हें किसी से मुहब्बत है, तो समझ लो कि उसे भी तुमसे मुहबबत है।)[2]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी मुझसे मिले और पीछे से मेरा कंधा पकड़कर उन्होंने कहा, ग़ौर से सुनो, मैं तुमसे मुहब्बत करता हूं। मैंने जवाब में यह दुआ दी—

أَحَبَّكَ الَّذِىْ أَحْبَبْتَنِىْ لَهُ

फिर उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब किसी आदमी को किसी से मुहब्बत हो तो उसे चाहिए कि वह उसे बता दे। अगर हुज़ूर सल्ल० ने यह न फ़रमाया होता, तो मैं तुम्हें न बताता। फिर मुझे वह शादी का पयाम देने लगे और यों कहा, देखो,

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 282,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 275,

हमारे यहां एक लड़की है (और तो उसमें बहुत ख़ूबियां हैं, बस एक ख़राबी है कि) वह कानी है (यानी उसका ऐब भी बता दिया, ताकि मामला साफ़ रहे।)[1]

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने मुझसे फ़रमाया कि अल्लाह के लिए मुहब्बत करो और अल्लाह के लिए बुग़्ज़ रखो और अल्लाह के लिए दोस्ती करो और अल्लाह के लिए दुश्मनी करो, क्योंकि अल्लाह की दोस्ती और क़ुर्ब सिर्फ़ उन्हीं ख़ूबियों से हासिल हो सकता है, जब तक आदमी ऐसा नहीं बन जाएगा वह चाहे कितनी नमाज़ें पढ़ ले और चाहे कितने रोज़े रख ले, ईमान का मज़ा नहीं चख सकता, अब तो लोगों का भाईचारा सिर्फ़ दुनिया के मामलों की वजह से रह गया है।[2]

मुसलमान से बात-चीत छोड़ देना और ताल्लुक़ात ख़त्म कर लेना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मोहतरम बीवी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मांज़ाद भाई हज़रत तुफ़ैल के बेटे हज़रत औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कुछ बेचा या कुछ हदिया में दिया, तो उनको पता चला कि (उनके भांजे) हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने उस पर यह कहा है कि अल्लाह की क़सम! (यों खुला ख़र्च करने से) या तो हज़रत आइशा रज़ि० ख़ुद से रुक जाएं, वरना मैं उन पर पाबन्दी लगाकर उन्हें रोक दूंगा।

हज़रत आइशा रज़ि० ने पूछा, क्या हज़रत अब्दुल्लाह ने यह बात कही है?

लोगों ने कहा, हां।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, मैं अल्लाह के लिए नज़्र मानती हूं कि मैं

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 80,
2. हैसमी, भाग 1, पृ० 90,

इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से कभी बात नहीं करूंगी। जब (बात-चीत छोड़े हुए) काफ़ी दिन हो गए, तो हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने किसी को अपना सिफ़ारिशी बनाकर हज़रत आइशा रज़ि० के पास भेजा। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मैं इब्ने ज़ुबैर रज़ि० के बारे में न तो किसी की सिफ़ारिश क़ुबूल करूंगी और न अपनी नज़्र तोड़ूंगी।

जब हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने देखा कि बहुत ज़्यादा दिन गुज़र गए हैं, तो उन्होंने क़बीला बनी ज़ोहरा के हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अब्देयग़ूस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से बात की और उनसे कहा, मैं आप दोनों को अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूं कि आप लोग मुझे हज़रत आइशा रज़ि० के पास ज़रूर ले जाएं, क्योंकि मुझसे ताल्लुक़ तोड़ लेने की नज़्र मानना हज़रत आइशा रज़ि० के लिए जायज़ नहीं है।

चुनांचे ये दोनों अपनी चादरों में लिपटे हुए हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० को लेकर आए, और हज़रत आइशा रज़ि० से इजाज़त मांगी और यों कहा, अस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, क्या हम अन्दर आ जाएं?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, आ जाओ।

इन लोगों ने कहा, क्या हम सब आ जाएं?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, हां, सब आ जाओ। उन्हें पता नहीं था कि इन दोनों के साथ इब्ने ज़ुबैर रज़ि० भी हैं। जब ये लोग अन्दर आए, तो हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० परदे के अन्दर चले गए और हज़रत आइशा रज़ि० से लिपट गए और उन्हें अल्लाह का वास्ता देकर रोने लग गए और हज़रत मिस्वर और हज़रत अब्दुर्रहमान भी उन्हें वास्ता देने लगे कि वे इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से ज़रूर बात कर लें और उनके उज़्र को क़ुबूल कर लें और यों कहा कि आपको मालूम है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी मुसलमान से ताल्लुक़ तोड़ लेने से मना फ़रमाया है और किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं है कि वह अपने भाई को तीन दिन से ज़्यादा छोड़े रखे।

जब इन लोगों ने (रिश्तों के जोड़ने और माफ़ करने की) फ़ज़ीलतें

बार-बार याद दिलाई और मुसलमान से ताल्लुक़ काट लेने-से मना करने का ज़िक्र बार-बार किया तो हज़रत आइशा रज़ि० उन दोनों को समझाने लगीं और रोने लगीं और कहने लगीं कि मैंने नज़्र मान रखी है और नज़्र को तोड़ना बहुत सख़्त है, लेकिन वे दोनों अड़े रहे, यहां तक कि हज़रत आइशा रज़ि० ने हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से बात कर ही ली और अपनी क़सम को तोड़ने के कफ़्फ़ारे में चालीस गुलाम आज़ाद किए और उन्हें जब अपनी यह क़सम याद आती तो इतना रोतीं कि उनका दोपट्टा आंसुओं से गीला हो जाता।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा मुहब्बत हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से थी (क्योंकि हज़रत आइशा रज़ि० ने अपने उस भांजे की तर्बियत ख़ुद की थी) और वह भी हज़रत आइशा रज़ि० के साथ तमाम लोगों से ज़्यादा अच्छा सुलूक किया करते थे।

हज़रत आइशा रज़ि० की आदत यह थी कि जो भी आता था, वह सारे का सारा सदक़ा कर देती थीं, कुछ बचाकर नहीं रखती थीं। इस पर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, हज़रत आइशा रज़ि० के हाथों को इतना ज़्यादा ख़र्च करने से रोकना चाहिए।

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मेरे हाथों को रोका जाएगा? मैं भी क़सम खाती हूं कि मैं उनसे कभी बात नहीं करूंगी।

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० (बहुत परेशान हुए और) उन्होंने कुरैश के बहुत से आदमियों को और ख़ास तौर से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ननिहाल वालों को अपना सिफ़ारिशी बनाकर हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में भेजा, लेकिन हज़रत आइशा रज़ि० ने किसी की सिफ़ारिश क़ुबूल नहीं की। आख़िर हुज़ूर के ननिहाल में से क़बीला बनी ज़ोहरा के हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अस्वद बिन अब्देयग़ूस और

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 297, अदबुल मुफ़रद, पृ० 59

हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से कहा, जब हम इजाज़त लेकर अन्दर जाने लगें तो तुम परदे के अन्दर चले जाना ।

चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया। (आख़िर हज़रत आइशा रज़ि० उनसे राज़ी हो गईं और उन्होंने अपनी क़सम तोड़ दी।) फिर हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में दस ग़ुलाम भेजे, जिन्हें हज़रत आइशा रज़ि० ने (क़सम तोड़ने के कफ़्फ़ारे में) आज़ाद कर दिया था और बाद में और ग़ुलाम आज़ाद करती रहीं, यहां तक कि चालीस ग़ुलाम आज़ाद कर दिए और फ़रमाया, (चालीस ग़ुलाम आज़ाद करके भी इत्मीनान नहीं हो रहा है, इसलिए) अच्छा ता यह था कि मैं नज़्र में अपने ज़िम्मे कोई अमल मुक़र्रर कर लेती, ताकि अब उसे करके मैं मुतमइन हो जाती। (जैसे मैं यों कहती अगर मैं इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से बात करूं तो दो ग़ुलाम आज़ाद करूंगी, तो अब दो ग़ुलाम आज़ाद करके मैं मुतमइन हो जाती। मैंने तो सिर्फ़ यह कहा कि मैं नज़्र मानती हूं कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि० से बात नहीं करूंगी और उसमें अमल की कोई मिक़्दार मुक़र्रर नहीं की।[1]

आपस में सुलह कराना

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ुबा वाले आपस में लड़ पड़े, यहां तक कि उन्होंने एक दूसरे पर पत्थर बरसाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसका पता चला तो फ़रमाया, आओ चलें, उनकी सुलह कराएं।[2]

हज़रत सह्ल की एक रिवायत में यह है कि बनू अम्र बिन औफ़ का आपस में कुछ झगड़ा हो गया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ सहाबा रज़ि० को लेकर उनमें कुछ सुलह कराने तशरीफ़ ले गए। आगे और मज़्मून भी है।[3]

1. सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 297,
2. सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 371,
3. सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 370.

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया गया कि अगर आप अब्दुल्लाह बिन उबई के पास तशरीफ़ ले जाएं तो यह बहुत मुनासिब होगा, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० गधे पर सवार होकर तशरीफ़ ले गए और मुसलमान आपके साथ पैदल चल रहे थे। रास्ते की ज़मीन ऊसर थी। जब हुज़ूर सल्ल० उसके पास पहुंचे तो उस (बदबख़्त) ने कहा, आप मुझसे दूर रहें, अल्लाह की क़सम! आपके गधे की बदबू से मुझे तक्लीफ़ हो रही है, इस पर एक अंसारी ने कहा, अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्ल० का गधा तुमसे ज़्यादा अच्छी ख़ुश्बू वाला है।

यह सुनकर अब्दुल्लाह की क़ौम के एक आदमी को गुस्सा आ गया और उन दोनों में गाली-गलौच शुरू हो गई। इस पर उन दोनों में से हर एक के साथियों को गुस्सा आ गया, यहां तक कि वे छड़ियों, हाथों और जूतों से एक दूसरे को मारने लगे।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमें फिर यह ख़बर मिली कि इस पर यह आयत उतरी—

وَاِنْ طَآئِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا

(سورت حجرات آیت ۹)

'और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो इन दोनों के दर्मियान इंसाफ़ के साथ सुलह करा दो।' (सूरः हुजुरात, आयत 9)[1]

और बीमार की बीमारपुर्सी के शीर्षक के तहत इमाम बुख़ारी की यह हदीस हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से गुज़र चुकी है कि इस पर मुसलमानों, मुश्रिकों और यहूदियों ने एक दूसरे को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया और बात इतनी बढ़ी कि एक दूसरे पर हमलावर होने ही वाले थे, इसलिए हुज़ूर सल्ल० उन सबको ठंडा करते रहे, यहां तक कि सब ख़ामोश हो गए।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि औस

1. सहीह बुख़ारी, भाग 1, पृ० 370

और ख़ज़रज अंसार के दो क़बीले थे और जाहिलियत के ज़माने में उनमें आपस में बड़ी दुश्मनी थी। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए तो यह सारी दुश्मनी जाती रही और अल्लाह ने उनके दिलों में मुहब्बत डाल दी।

एक बार ये लोग अपनी एक मज्लिस में बैठे हुए थे कि औस के एक आदमी ने ऐसा शेर पढ़ा, जिसमें ख़ज़रज की बुराई का ज़िक्र था, तो जवाब में ख़ज़रज के एक आदमी ने औस की बुराई वाला शेर पढ़ दिया। वे दोनों बारी-बारी ऐसे शेर पढ़ते रहे, यहां तक कि वे एक दूसरे से लड़ने के लिए उठ खड़े हुए और अपने हथियार लेकर लड़ने के लिए चल दिए।

यह ख़बर हुज़ूर सल्ल० तक पहुंची और इस बारे में वह्य भी उतरी। आप जल्दी से तशरीफ़ लाए और आपकी पिंडुलियां खुली हुई थीं (ताकि आसानी से तेज़ चल सकें) जब आपने उनको देखा तो ऊंची आवाज़ से यह आयत पढ़ी—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ

(سورت آل عمران آیت ۱۰۲)

'ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरा करो, डरने का हक़ और अलावा इस्लाम के और किसी हालत पर जान मत देना।'

(सूरः आले इम्रान, आयत 102)

आपने और आगे की आयतें भी पढ़ीं। इन आयतों के सुनते ही इन लोगों ने अपने हथियार फेंक दिए और एक दूसरे के गले लगकर रोने लगे।[1]

मुसलमान से सच्चा वायदा करना

हज़रत हारून बिन रियाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया, तो फ़रमाया, फ़्लां आदमी को तलाश करो, क्योंकि मैंने उससे अपनी बेटी (की शादी करने) का एक क़िस्म का वायदा किया

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 80,

था। मैं नहीं चाहता कि अल्लाह से मेरी मुलाक़ात इस हाल में हो कि निफ़ाक़ की तीन निशानियों में से एक निशानी यानी वायदाख़िलाफ़ी मुझमें हो, इसलिए आप लोगों को इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैंने अपनी बेटी की इससे शादी कर दी है।[1]

मुसलमान के बारे में बदगुमानी करने से बचना

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी एक मज्लिस के पास से गुज़रा। उस आदमी ने सलाम किया, जिसका उस मज्लिस वालों ने जवाब दिया।

जब वह उन लोगों से आगे चला गया तो मज्लिस के एक आदमी ने कहा, मुझे तो यह आदमी बिल्कुल पसन्द नहीं है। मज्लिस के दूसरे लोगों ने कहा, चुप रहो, अल्लाह की क़सम ! हम तुम्हारी यह बात उस आदमी को ज़रूर बताएंगे। ऐ फ़्लान ! जाओ, और इसने जो कहा है, वह उसे बता दो।

(चुनांचे इसने जाकर उस आदमी को यह बात बता दी, इस पर) उस आदमी ने जाकर हुज़ूर सल्ल० को सारी बात बता दी और उस आदमी ने जो कहा था, वह भी बता दिया और यों कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप उसे आदमी भेजकर बुलाएं और उससे पूछें कि वह मुझसे क्यों बुग़्ज़ रखता है। चुनांचे (उस आदमी के आने पर) हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा कि तुम इस आदमी से क्यों बुग़्ज़ रखते हो ?

उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसका पड़ोसी हूं और मैं इसे अच्छी तरह जानता हूं। मैंने इसे कभी नफ़्ल पढ़ते हुए नहीं देखा। यह तो बस यही (फ़र्ज़) नमाज़ ही पढ़ता है, जिसे नेक और बद हर एक पढ़ता है।

दूसरे आदमी ने कहा, ज़रा इससे यह पूछें कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि मैंने नमाज़ का वुज़ू ठीक न किया हो या नमाज़ को बेवक़्त पढ़ा हो ? उस आदमी ने कहा, नहीं। फिर उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसका पड़ोसी हूं और इसे अच्छी तरह जानता हूं।

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 159

मैंने इसे कभी किसी मिस्कीन को खाना खिलाते हुए (यानी नफ़्ली सदक़ा करते हुए) नहीं देखा, बस यह तो सिर्फ़ ज़कात अदा करता है जो नेक व बद हर एक अदा कर ही लेता है।

दूसरे आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इससे पूछें कि क्या इसने मुझे किसी मांगने वाले को मना करते हुए देखा है? हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तो उसने कहा, नहीं।

फिर उस आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं इसका पड़ोसी हूं और मैं इसे अच्छी तरह जानता हूं। मैंने इसे कभी नफ़्ली रोज़ा रखते हुए नहीं देखा। यह तो बस (रमज़ान के) महीने के ही रोज़े रखता है, जिन्हें नेक व बद हर एक रख ही लेता है।

दूसरे आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप इससे पूछें कि क्या इसने कभी यह देखा है कि मैं बीमार भी न हूं और सफ़र पर भी न हूं और फिर मैंने उस दिन रोज़ा न रखा हो? हुज़ूर सल्ल० ने उससे इस बारे में पूछा, तो उसने कहा, नहीं।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, मेरे ख़्याल में तो यह आदमी तुमसे बेहतर है, (क्योंकि तुममें कदूरत है और उसमें नहीं है।)[1]

मुसलमान की तारीफ़ करना और तारीफ़ की कौन-सी शक्ल अल्लाह को नापसन्द है

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला बनू लैस के एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर तीन बार अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपको शेर सुनाना चाहता हूं। (आख़िर चौथी बार में हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी) तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को वे शेर सुनाए, जिनमें हुज़ूर सल्ल० की तारीफ़ थी। सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर कोई शायर अच्छे शेर कहता है, तो तुमने भी अच्छे शेर कहे हैं।[2]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 170
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 119

हज़रत ख़ल्लाद बिन साइब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास गया। उन्होंने मेरे मुंह पर मेरी तारीफ़ की और यों कहा कि मैंने आपके मुंह पर आपकी तारीफ़ इसलिए की कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब मोमिन के मुंह पर उसकी तारीफ़ की जाती है तो उसके दिल में ईमान बढ़ जाता है (क्योंकि तारीफ़ से वह फूलेगा नहीं, बल्कि उसका अमल पर यक़ीन बढ़ेगा कि नेक अमलों की वजह से लोग तारीफ़ कर रहे हैं।)[1]

हज़रत मुतर्रिफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे वालिद ने अपना यह क़िस्सा बयान किया कि बनू आमिर के वफ़्द के साथ मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गया। हमने अर्ज़ किया, आप हमारे सरदार हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया (सच्चे) सरदार तो अल्लाह ही हैं। फिर हमने अर्ज़ किया, आप फ़ज़ीलत में हम सबसे बड़े हैं और हम सबसे ज़्यादा सख़ी हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, तुम यह कह सकते हो, बल्कि इसमें भी कुछ कमी करो तो अच्छा है। शैतान तुम पर ग़लबा पाकर तुम्हें अपना वकील न बना ले। (उन लोगों के बढ़-चढ़कर बयान करने को हुज़ूर सल्ल० ने नापसन्द फ़रमाया।)

रज़ीन ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से इस जैसी रिवायत नक़ल की है, उसमें यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं यह नहीं चाहता कि अल्लाह ने जो दर्जा मुझे अता फ़रमाया है, तुम मुझे उससे बढ़ाओ, मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ हममें से सबसे बेहतर और सबसे बेहतर के बेटे! और ऐ हमारे सरदार और हमारे

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 119
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 150

सरदार के बेटे ! इस पर आपने फ़रमाया, तुम मेरे बारे में वह कहो, जो मैं तुम्हें बताता हूं ताकि शैतान तुम्हें सही रास्ते से हटा न सके, मुझे उसी दर्जे पर रखो जो अल्लाह ने मुझे अता फ़रमाया है, मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूं।[1]

हज़रत अबूबक्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक आदमी ने दूसरे आदमी की तारीफ़ की, तो हुज़ूर सल्ल० ने उसे तीन बार फ़रमाया, तुमने अपने साथी की गरदन तोड़ दी। तुममें से किसी ने अगर किसी की तारीफ़ ज़रूर ही करनी हो, और उसे उसकी अच्छी सिफ़तें यक़ीनी तौर पर मालूम हों तो यों कहना चाहिए कि मेरा फ़्लां के बारे में यह गुमान है और अल्लाह ही उसे बेहतर जानते हैं, अल्लाह के सामने वह किसी को मुक़द्दस बनाकर पेश न करे, बल्कि यों कहे, मेरा गुमान यों है, मेरा ख़्याल यह है।[2]

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुना कि एक आदमी दूसरी की तारीफ़ कर रहा है और तारीफ़ में हद से आगे बढ़ रहा है, तो फ़रमाया, तुमने (ज़्यादा तारीफ़ करके) उस आदमी की कमर तोड़ दी।[3]

हज़रत रजा बिन अबी रजा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन मैं हज़रत मिह्जन अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास चला, यहां तक कि हम बसरा वालों की मस्जिद तक पहुंचे, तो वहां मस्जिद के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर हज़रत बुरैदा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे। मस्जिद में सक्बा नामी आदमी बड़ी नमाज़ पढ़ रहे थे। हज़रत बुरैदा ने एक चादर ओढ़ी हुई थी और उनकी तबियत में मिज़ाह (हंसना-हंसाना) बहुत था, इसलिए उन्होंने कहा, ऐ मिह्जन ! क्या आप भी वैसी नमाज़ पढ़ते हैं, जैसी सक्बा पढ़ते हैं ?

हज़रत मिह्जन ने इस बात का कोई जवाब न दिया और वापस आ

1. कंज़, भाग 2, पृ० 182, बिदाया, भाग 6, पृ० 44,
2. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 150
3. कंज़, भाग 2, पृ० 182,

गए और हज़रत मिह्जन ने कहा, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा। फिर हम लोग चलने लगे, और चलते-चलते हम उहुद पहाड़ पर चढ़ गए। हुज़ूर सल्ल० ने मदीना की तरफ़ मुंह करके फ़रमाया, हाय हसरत! और अफ़सोस! एक दिन इस बस्ती को बस्ती वाले छोड़ देंगे, हालांकि उस दिन यह बस्ती बहुत ज़्यादा आबाद होगी। दज्जाल मदीना आएगा, लेकिन उसे मदीना के हर दरवाज़े पर फ़रिश्ता मिलेगा, इसलिए वह मदीना में दाख़िल नहीं हो सकेगा।

फिर हुज़ूर सल्ल० उहुद पहाड़ से नीचे उतरे। जब हम मस्जिद में पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल० ने एक आदमी को रुकूअ-सज्दा करते हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा। हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे पूछा, यह कौन है?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह फ़्लां है। और उसकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ करने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बस करो, इसकी तारीफ़ उसे न सुनाओ, वरना यह हलाक हो जाएगा, फिर आप चलने लगे और जब अपने हुजरों के पास पहुंचे, तो आपने अपने दोनों हाथों को झाड़ कर तीन बार फ़रमाया, तुम्हारे दीन का सबसे बेहतरीन अमल वह है, जो सबसे ज़्यादा आसान हो।[1]

इसी रिवायत को इमाम अहमद ने भी ज़रा तफ़्सील से नक़ल किया है, उनकी रिवायत में यह है कि हज़रत मिह्जन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं हुज़ूर सल्ल० के सामने उस नमाज़ी की तारीफ़ मुबालग़े के साथ करने लगा और मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह फ़्लां आदमी है और इसमें ये और ये ख़ूबियां हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ामोश हो जाओ, इसे ये बातें न सुनाओ, वरना तुम इसे हलाक कर दोगे। फिर हुज़ूर सल्ल० चलने लगे। जब हम हुजरे के पास पहुंच गए तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरा हाथ छोड़ दिया। फिर आपने फ़रमाया, तुम्हारे दीन का सबसे बेहतरीन अमल वह है जो सबसे ज़्यादा आसान हो, तुम्हारे दीन का सबसे बेहतरीन अमल वह है जो सबसे ज़्यादा आसान हो, तुम्हारे दीन का सबसे बेहतरीन अमल वह है

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 51.

जो सबसे ज़्यादा आसान हो।[1]

इमाम अहमद की एक रिवायत में यह है कि हज़रत मिह्जन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! यह फ़्लां हैं और मदीने वालों में सबसे अच्छे हैं और मदीना वालों में सबसे ज़्यादा नमाज़ पढ़ने वाले हैं। हुज़ूर सल्ल० ने दो या तीन बार फ़रमाया, इसे मत सुनाओ, वरना तुम इसे हलाक कर दोगे। फिर फ़रमाया, तुम ऐसी उम्मत हो जिसके साथ अल्लाह ने आसानी का इरादा फ़रमाया है।[2]

हज़रत इब्राहीम तैमी के वालिद बयान करते हैं कि हम लोग हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठे हुए थे कि इतने में एक आदमी ने उनके पास आकर सलाम किया। लोगों में से एक आदमी ने उसके मुंह पर उसकी तारीफ़ करनी शुरू कर दी।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुमने तो उस आदमी को ज़िब्ह कर डाला, अल्लाह तुम्हें ज़िब्ह करे, तुम उसके मुंह पर उसके दीन के बारे में उसकी तारीफ़ कर रहे हो।[3]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ की तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम मुझे भी हलाक कर रहे हो और अपने आपको भी।[4]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे, उनके पास कोड़ा भी रखा हुआ था और लोग भी हज़रत उमर रज़ि० के आस-पास बैठे हुए थे कि सामने से हज़रत जारूद रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो एक आदमी ने कहा कि यह क़बीला रबीआ के सरदार हैं।

उसकी इस बात को हज़रत उमर रज़ि० ने और उनके आस-पास के

1. इमाम अहमद, भाग 5, पृ० 32,
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 182,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 182,
4. कंज़, भाग 2, पृ० 167,

लोगों ने और ख़ुद हज़रत जारूद रज़ि० ने भी सुन लिया। जब हज़रत जारूद रज़ि० हज़रत उमर रज़ि० के क़रीब आ गए तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनको कोड़ा मारा। हज़रत जारूद ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैंने आपका क्या कुसूर किया है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, 'मेरा क्या कुसूर किया है? क्या तुमने उसकी बात को नहीं सुना है? हज़रत जारूद ने कहा, सुना है? तो फिर क्या हो गया?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे इस बात का डर हुआ कि (उसके तारीफ़ी कलिमे सुनकर) कहीं तुम्हारे दिल में (घमंड और बड़ाई वग़ैरह का) बुरा असर न पैदा हो जाए, इसलिए मैंने चाहा कि यह सारा असर झाड़ दूं।[1]

हज़रत हम्माम बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ करने लगा, तो हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु जो भारी भरकम थे, वह उस आदमी की ओर गए और घुटनों के बल बैठकर उसके मुंह पर कंकड़ियों की लपें भरकर डालने लगे।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने उनसे फ़रमाया, आपको क्या हो गया?

हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब तुम (दुनिया का फ़ायदा हासिल करने के लिए और लोगों को बिगाड़ने के लिए) तारीफ़ करने वालों को देखो तो उनके चेहरों पर मिट्टी डाल दिया करो (हज़रत मिक़्दाद रज़ि० ने इसका ज़ाहिरी मतलब मुराद लिया है, लेकिन ज़ाहिर में हुज़ूर सल्ल० का मक़्सद यह है कि इसे कुछ न दो।)[2]

हज़रत अबू मामर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी खड़े होकर एक अमीर की तारीफ़ करने लगा, तो हज़रत मिक़्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु उस पर मिट्टी डालने लगे और फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

1. कंज़, भाग 2, पृ० 167,
2. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 414, अबू दाऊद, भाग 5, पृ० 241,

सल्लम ने हमें इसी बात का हुक्म दिया है कि (ग़लत मक़सद के लिए) तारीफ़ करने वालों के चेहरों पर हम मिट्टी डाला करें ।[1]

हज़रत अता बिन अबी रबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक आदमी दूसरे आदमी की तारीफ़ करने लगा, तो हज़रत उमर रज़ि० उसके चेहरे की तरफ़ मिट्टी डालने लगे और फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब तुम तारीफ़ करने वालों को देखो तो उनके चेहरों पर मिट्टी डालो ।[2]

हज़रत अता बिन अबी रबाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तारीफ़ कर रहा था, (कुछ देर के बाद) हज़रत इब्ने उमर रज़ि० उसके चेहरे पर मिट्टी डालने लगे और फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि जब तुम तारीफ़ करने वालों को देखो तो उनके चेहरों पर मिट्टी डालो ।[3]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि और दूसरे लोग बयान करते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कहा, ऐ लोगों में सबसे बेहतर ! या यों कहा, ऐ लोगों में से सबसे बेहतर के बेटे ! तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, न मैं लोगों में सबसे बेहतर हूं और न सबसे बेहतर का बेटा हूं, बल्कि अल्लाह के बन्दों में से एक बन्दा हूं, अल्लाह की रहमत से उम्मीद रखता हूं और उसके अज़ाब से डरता हूं, अल्लाह की क़सम ! (बे-वजह तारीफ़ें करके) तुम आदमी के पीछे पड़ जाते हो और फिर उसको हलाक करके छोड़ते हो (कि उसके दिल में घमंड और बड़ाई पैदा हो जाती है ।)[4]

हज़रत तारिक़ बिन शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत

1. तिर्मिज़ी, भाग 2, पृ० 62, अदबुल मुफ़रद, पृ० 50
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 51
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 117
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 307

अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कभी-कभी आदमी अपने घर से बाहर जाता है और उसके साथ उसका दीन होता है, लेकिन जब वह वापस जाता है, तो उस वक़्त उसके पास दीन में से कुछ बाक़ी नहीं होता। उसकी शक्ल यह है कि वह आदमी बाहर जाकर ऐसे आदमी के पास जाता है, जो न अपने नफ़ा-नुक़सान का मालिक है और न उसके नफ़ा-नुक़सान का और यह अल्लाह की क़समें खाकर कहता है कि आप ऐसे हैं और ऐसे हैं (उससे कुछ लेने के लिए उसकी तारीफ़ें करता है, लेकिन वह उसे कुछ नहीं देता) और वह इस हाल में वापस जाता है कि उसकी कोई ज़रूरत भी पूरी नहीं हुई होती और वह (ग़लत तारीफ़ करके) अल्लाह को अपने पर नाराज़ भी कर चुका होता है।[1]

रिश्तों का जोड़ना और काटना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार (नुबूवत से पहले) क़ुरैश बड़े अकाल के शिकार हो गए, यहां तक कि उन्हें पुरानी हड्डियां तक खानी पड़ीं और उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से ज़्यादा ख़ुशहाल क़ुरैश में कोई नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अब्बास रज़ि० से फ़रमाया, ऐ चचा जान! आप जानते ही हैं कि आपके भाई अबू तालिब के बच्चे बहुत ज़्यादा हैं और आप देख ही रहे हैं कि क़ुरैश पर बड़ा अकाल आया हुआ है, आइए उनके पास चलते हैं और उनके कुछ बच्चे हम संभाल लेते हैं।

चुनांचे इन दोनों ने जाकर अबू तालिब से कहा, ऐ अबू तालिब! आप अपनी क़ौम का (बुरा) हाल देख ही रहे हैं और हमें मालूम है कि आप भी क़ुरैश के एक फ़र्द (व्यक्ति) हैं। (अकाल से आपका भी हाल बुरा हो रहा है।) हम आपके पास इसलिए आए हैं, ताकि आपके कुछ बच्चे हम संभाल लें।

अबू तालिब ने कहा, (मेरे बड़े बेटे) अक़ील को मेरे लिए रहने दो

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 118,

और बाक़ी बच्चों के साथ तुम जो चाहो, करो। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को और हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को ले लिया। ये दोनों इन लोगों के पास उस वक़्त तक रहे, जब तक ये मालदार होकर अपने पैरों पर न खड़े हो गए।

हज़रत सुलैमान बिन दाऊद रिवायत करने वाले कहते हैं कि हज़रत जाफ़र हज़रत अब्बास के पास रहे, यहां तक कि वह हिजरत करके हब्शा चले गए।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत जुवैरीया रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, मैं यह ग़ुलाम आज़ाद करना चाहती हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम यह ग़ुलाम अपने उस मामूं को दे दो जो देहात में रहते हैं, यह उनके जानवर चराया करेगा, इसमें तुम्हें सवाब ज़्यादा मिलेगा।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब यह आयत आई—

وَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ (سورت اسراء آیت ۲۶)

'और रिश्तेदार को उसका हक़ (माली और ग़ैर-माली) देते रहना'

(सूरः इसरा, आयत 26)

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! फ़दक बस्ती (की आमदनी) तुम्हारी है। (फ़दक बस्ती हिजाज़ में मदीने से दो-तीन दिन की दूरी पर थी, जो हुज़ूर सल्ल० को ग़नीमत के माल में मिली थी।)[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे कुछ रिश्तेदार हैं, जिनके साथ मैं रिश्ते जोड़ता हूं, लेकिन वे मुझसे ताल्लुक़ तोड़ते हैं। मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करता हूं, वे मेरे साथ बुरा सुलूक करते हैं। मैं सहन करके

---

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 153,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 153,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 158,

उनसे आंखें चुराता हूं, वे मेरे साथ जिहालत का मामला करते हैं (बे-वजह मुझ पर नाराज़ होते हैं और मुझ पर सख़्ती करते हैं।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम वैसे ही हो जैसा तुम कह रहे हो, तो गोया तुम उनके मुंह में गर्म राख की फंकी डाल रहे हो। (तुम्हारे अच्छे सुलूक के बदले में बुरा सुलूक करके वह अपना नुक़्सान कर रहे हैं) और जब तक तुम इन सिफ़तों पर रहोगे, उस वक़्त तक तुम्हारे साथ अल्लाह की तरफ़ से मददगार रहेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मेरे कुछ रिश्तेदार ऐसे हैं जिनके साथ मैं रिश्ता जोड़ता हूं और वे रिश्ते तोड़ते हैं और मैं उन्हें माफ़ करता हूं, वे फिर भी मुझ पर ज़ुल्म करते जाते हैं। मैं उनके साथ अच्छा सुलूक करता हूं, वे मेरे साथ बुरा सुलूक करते हैं, तो क्या मैं उनकी बुराई का बदला बुराई से न दूं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस तरह तो तुम सब (ज़ुल्म में) शरीक हो जाओगे, बल्कि तुम फ़ज़ीलत वाली शक्ल अख़्तियार करो और उनसे रिश्ते जोड़ते रहो। जब तक तुम ऐसा करते रहोगे, उस वक़्त तक तुम्हारे साथ एक मददगार फ़रिश्ता रहेगा।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत अबू अय्यूब सुलैमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जुमेरात की शाम को, हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, हमारी उस मज्लिस में जो भी रिश्तों को काटने वाला बैठा हुआ है, मैं उसे पूरी ताकीद से कहता हूं कि वह हमारे पास से उठकर चला जाए। इस पर कोई खड़ा न हुआ।

उन्होंने यह बात तीन बार कही, तो इस पर एक नवजवान अपनी फूफी के पास गया, जिससे उसने दो साल से ताल्लुक़ात ख़त्म कर रखे

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 315,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 154,

थे और उसे छोड़ा हुआ था। वह जब अपनी फूफी के पास पहुंचा तो फूफी ने उससे पूछा, मियां, तुम कैसे आ गए?

उसने कहा, मैंने अभी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को ऐसे और ऐसे फ़रमाते हुए सुना है, (इस वजह से आया हूं।)

फूफी ने कहा, उनके पास वापस जाओ और उनसे पूछो कि उन्होंने ऐसा क्यों फ़रमाया है?

(उस नवजवान ने वापस आकर उनसे पूछा, तो) हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि हर जुमेरात की शाम को तमाम बनी आदम के अमल अल्लाह के सामने पेश किए जाते हैं (और इंसानों के अमल तो क़ुबूल हो जाते हैं, लेकिन) रिश्ते काटने वाले का कोई अमल क़ुबूल नहीं होता।[1]

हज़रत आमश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन सुबह की नमाज़ के बाद हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक हलक़े में बैठे हुए थे, उन्होंने फ़रमाया, मैं रिश्ते काटने वाले को अल्लाह की क़सम देकर कहता हूं कि वह हमारे पास से उठकर चला जाए, क्योंकि हम अपने रब से दुआ करने लगे हैं और आसमान के दरवाज़े रिश्ते तोड़ने वाले के लिए बन्द रहते हैं, (तो इसकी वजह से हमारी दुआ भी क़ुबूल न होगी।)[2]

---

1. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 12,
2. हैसमी, भाग 8, पृ० 151,

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम के अख़्लाक़ और आदतें कैसी थीं और उनका आपस का रहन-सहन कैसा था?

अच्छे अख़्लाक़ का बयान

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़

हज़रत साद बिन हिशाम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में अर्ज़ किया, आप मुझे बताएं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ कैसे थे?

उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम क़ुरआन नहीं पढ़ते हो?

मैंने कहा, पढ़ता हूं।

उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ क़ुरआन हैं। (यानी आपके अख़्लाक़ क़ुरआन में ज़िक्र किए गए हैं या जो अख़्लाक़ क़ुरआन में बयान किए गए हैं, वे सब हुज़ूर सल्ल० में थे।)[1]

इब्ने साद की रिवायत में इसके बाद यह मज़्मून है कि हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क़ुरआन लोगों के सबसे अच्छे अख़्लाक़ लेकर आया है।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ क़ुरआन है, जहां क़ुरआन राज़ी होता है, वहां हुज़ूर सल्ल० राज़ी होते थे और जहां क़ुरआन नाराज़ होता है, वहां हुज़ूर सल्ल० नाराज़ होते थे।[3]

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 35,
2. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 90, दलाइलुन्नुबूव:, पृ० 56,
3. याक़ूब बिन सुफ़ियान

हज़रत ज़ैद बिन बाबनूस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ कैसे थे ? आगे पिछले हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है। इसके बाद यह है कि हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुमने सूरः मुअ्मिनून पढ़ी है ? —क़द अफ़्लह-हल मुअ्मिनून से दस आयतें पढ़ो। (मैंने दस आयतें पढ़ीं तो) फ़रमाया, बस इन आयतों में जो कुछ बयान हुआ है, वह सब कुछ हुज़ूर सल्ल० के अख़्लाक़ थे।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि कोई आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला नहीं था। जब भी आपको आपका कोई सहाबी पुकारता तो आप उसके जवाब में लब्बैक कहते। इसी वजह से अल्लाह ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई—

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (سورت نون آیت ۴)

'बेशक आप अच्छे अख़्लाक़ के ऊंचे पैमाने पर हैं।'[2]

(सूरः नून, आयत 4)

क़बीला बनू सराह के एक आदमी कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि आप मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ के बारे में बताएं।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, क्या तुम क़ुरआन की यह आयत—

وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ

नहीं पढ़ते हो ? (लो, हुज़ूर सल्ल० के अच्छे अख़्लाक़ का क़िस्सा सुनो) एक बार हुज़ूर सल्ल० अपने सहाबा के साथ बैठे हुए थे। मैं भी हुज़ूर सल्ल० के लिए खाना तैयार कर रही थी और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा भी तैयार कर रही थीं, लेकिन उन्होंने मुझसे पहले खाना तैयार कर लिया (और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में भेज दिया। मुझे पता चला कि

1. बिदाया, भाग 62, पृ० 35
2. दलाइल, पृ० 57,

वह खाना भेज रही हैं तो) मैंने बांदी से कहा, जा और हफ़सा रज़ि० का प्याला उलट दे।

चुनांचे हज़रत हफ़सा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सामने खाना रखने लगीं, तो बांदी ने प्याला उलट दिया, जिससे खाना इधर-उधर बिखर गया (और प्याला टूट गया) हुज़ूर सल्ल० ने प्याले के टुकड़े जमा किए और जो खाना ज़मीन पर बिखर गया था, उसे भी जमा किया और उस खाने को आपने और सहाबा ने खाया, फिर मैंने अपना प्याला भेजा।

हुज़ूर सल्ल० ने वह सारा प्याला हज़रत हफ़सा रज़ि० के पास भेज दिया और फ़रमाया, अपने बरतन की जगह पर बरतन ले लो और इसमें जो खाना है, उसे खा लो। मैंने हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर इस वाक़िए से नागवारी का असर कुछ भी न देखा।[1]

हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि कुछ लोग मेरे बाप हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और उन्होंने कहा, आप हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ अख़्लाक़ बताएं।

हज़रत ज़ैद रज़ि० ने फ़रमाया, मैं हुज़ूर सल्ल० का पड़ोसी था। जब आप पर वह्य नाज़िल होती तो आप मेरे पास पैग़ाम भेजते, मैं आकर वह्य लिख देता। जब हम दुनिया का ज़िक्र करते तो आप भी उसका ज़िक्र फ़रमाते और जब हम आख़िरत का ज़िक्र करते तो आप भी हमारे साथ आख़िरत का ज़िक्र फ़रमाते और जब हम खाने-पीने की बात कहते, तो आप भी करते, (यानी आप हमारे साथ घुल-मिलकर बे-तकल्लुफ़ी से रहते और सही बातों में हमारा साथ देते।) यह सब कुछ मैं हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से बयान कर रहा हूं।[2]

हज़रत सफ़िया बिन्त हुई रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला कोई नहीं

1. कंज़, भाग 4, पृ० 44
2. दलाइल, पृ० 57, तिर्मिज़ी, पृ० 25, बिदाया, भाग 6, पृ० 42, मज्मा, भाग 9, पृ० 17, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 185, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 90

देखा। (हुज़ूर सल्ल० के अच्छे अख़्लाक़ का क़िस्सा तुमको सुनाती हूं।)

हुज़ूर सल्ल० ने ख़ैबर से वापसी पर मुझे अपनी ऊंटनी के पीछे बिठा रखा था। रात का वक़्त था। मैं ऊंघने लगी, तो सर कजावे की पिछली लकड़ी के साथ टकराने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने अपने हाथ से मुझे हिलाकर फ़रमाया, अरी, ठहर जा, ऐ बिन्ते हुई ! ठहर जा ! (यह कोई सोने का वक़्त है ?)

जब हुज़ूर सल्ल० सह्बा नामी जगह पर पहुंचे, तो फ़रमाया, ऐ सफ़िया ! मुझे तुम्हारी क़ौम (ख़ैबर के यहूदियों) के साथ जो कुछ करना पड़ा, मैं उसकी तुमसे माज़रत चाहता हूं। असल में उन्होंने मेरे बारे में यह कहा था। (हुज़ूर सल्ल० उन यहूदियों की बुरी हरकतों और इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशों का ज़िक्र करते रहे।)[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब लोगों से ज़्यादा मेहरबान थे। अल्लाह की क़सम ! सख़्त सर्दी की सुबह को जो भी ग़ुलाम या बांदी या बच्चा आपकी ख़िदमत में पानी लाता, (ताकि आप उसे इस्तेमाल कर लें और फिर वे उसे बरकत के लिए वापस ले जाएं) तो आप इंकार न फ़रमाते, बल्कि (कड़ी सर्दी के बावजूद) आप उस पानी से चेहरा और हाथ धो लेते और जब भी आपसे कोई आदमी बात पूछता तो आप पूरी तवज्जोह से उसकी बातें सुनते और अपना कान उसके क़रीब कर देते और आप उसकी तरफ़ मुतवज्जह ही रहते और वही आपको छोड़कर जाता तो जाता और जब कोई आपका हाथ पकड़ना चाहता, तो आप उसे पकड़ने देते और वही आपका हाथ छोड़ता तो छोड़ता, आप न छोड़ते।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सुबह की नमाज़ पढ़ लेते तो मदीना के ख़ादिम यानी ग़ुलाम और बांदियां अपने बरतनों में पानी लेकर आते, आपके पास जो भी बरतन लाया जाता, आप (बरकत के लिए) अपना

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 15
2. दलाइल, पृ० 57,

हाथ उसमें डाल देते। कभी-कभी ये लोग सर्दियों की सुबह में ठंडा पानी लाते, तो हुज़ूर सल्ल० इसमें भी हाथ डाल देते।[1]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी से मुसाफ़ा करते (हाथ मिलाते) या कोई और आपसे मुसाफ़ा करता तो आप उससे अपना हाथ न छुड़ाते, बल्कि वही दूसरा आदमी अपना हाथ हुज़ूर सल्ल० के हाथ से अलग करता और अगर कोई आदमी आपकी तरफ़ मुंह करके बात करता तो आप उसकी तरफ़ मुतवज्जह ही रहते, यहां तक कि फ़ारिग़ होकर वही आदमी आपसे चेहरा फेर लेता और कभी किसी ने यह मंज़र नहीं देखा कि हुज़ूर सल्ल० ने अपने पांव अपने पास बैठने वाले की तरफ़ फैला रखे हों। (यानी ऐसा कभी नहीं हुआ।)[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने कभी यह नहीं देखा कि कोई आदमी हुज़ूर सल्ल० के कान में बात कर रहा हो और हुज़ूर सल्ल० उससे अपना सर दूर कर लें, बल्कि वही आदमी अपना सर दूर करता और यह भी कभी नहीं देखा कि हुज़ूर सल्ल० का हाथ किसी आदमी ने पकड़ रखा हो और हुज़ूर सल्ल० ने उससे अपना हाथ छुड़ाया हो, बल्कि वही आदमी हुज़ूर सल्ल० का हाथ छोड़ता।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब भी कोई आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लेता, तो हुज़ूर सल्ल० उसका हाथ न छोड़ते। वही हुज़ूर सल्ल० का हाथ छोड़ता तो छोड़ता और न कभी आपके घुटने के पास बैठने वाले के सामने फैले हुए दिखाई दिए और जब भी आपसे कोई हाथ मिलाता तो आप पूरी तरह उसकी ओर मुतवज्जह हो जाते और उस वक़्त तक दूसरी ओर मुतवज्जह न होते, जब तक वह अपनी बात से फ़ारिग़ न हो लेता।[4]

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 256,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 39, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 99
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 39
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 15

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मदीना वालों की कोई बच्ची आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लेती, तो हुज़ूर सल्ल० उसके हाथ से अपना हाथ न छुड़ाते और फिर वह जहां चाहती, हुज़ूर सल्ल० को ले जाती ।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मदीना वालों की बांदी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हाथ पकड़ लेती और अपनी ज़रूरत के लिए जहां चाहती, ले जाती ।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक औरत की अक़्ल में कुछ ख़लल था। उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे आपसे कुछ काम है ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे फ़्लां ! तुम जो-सी गली चाहो, देख लो, मैं वहां तुम्हारा काम कर दूंगा। (गली इसलिए मुक़र्रर कराई, ताकि उसका काम भी कर दें और अजनबी औरत से अकेले मिलना भी न हो, गली तो आम रास्ता होती है। चुनांचे उसने एक गली बताई।)

हुज़ूर सल्ल० ने उस गली में जाकर एक ओर होकर अकेले में उसकी बात सुनी, यहां तक कि उसने अपनी ज़रूरत की सारी बात कह ली ।[3]

हज़रत मुहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं एक सफ़र से वापस आया तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ लिया और छोड़ा ही नहीं। आख़िर मैंने ही आपका हाथ छोड़ा ।[4]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दो कामों में अख़्तियार दिया जाता, तो जो इन दोनों में से ज़्यादा आसान होता, उसे अख़्तियार फ़रमाते, बस शर्त यह थी कि वह गुनाह का काम न हो। अगर वह काम गुनाह का होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और हुज़ूर सल्ल० कभी भी

1. अहमद, इब्ने माजा
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 39
3. सहीह मुस्लिम, भाग 2, पृ० 256, दलाइलुन्नुबूव:, पृ० 57
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 17

अपनी ज़ात की वजह से किसी से बदला नहीं लेते, हां किसी को अल्लाह का हराम किया हुआ काम करते हुए देखते, तो उससे ज़रूर बदला लेते, लेकिन यह बदला लेना अल्लाह के लिए होता।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ से कभी अपने किसी ख़ादिम को या किसी औरत को या किसी और चीज़ को नहीं मारा, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते हुए किसी को मारा हो तो और बात है। और जब भी आपको दो (दुनिया के) कामों में अख़्तियार दिया जाता, तो दोनों में से जो आसान होता, वही आपको ज़्यादा पसन्द होता, बशर्तेकि वह काम गुनाह न होता। अगर वह गुनाह होता, तो हुज़ूर सल्ल० उससे सबसे ज़्यादा दूर रहते और आपके साथ कितनी भी ज़्यादती की जाती, आप अपनी ज़ात की वजह से कभी किसी से बदला न लेते, अलबत्ता कोई अल्लाह का हुक्म तोड़ता तो उससे अल्लाह के लिए बदला लेते।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, मैंने कभी नहीं देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़ात के लिए कभी किसी के ज़ुल्म का बदला लिया हो, अलबत्ता जब अल्लाह का हुक्म तोड़ा जाता, तो हुज़ूर सल्ल० उस पर सबसे ज़्यादा नाराज़ होते और जब भी आपको दो कामों में अख़्तियार दिया जाता, तो दोनों में से जो ज़्यादा आसान होता, उसे ही अख़्तियार फ़रमाते, बशर्तेकि वह गुनाह न होता।[3]

हज़रत अबू अब्दुल्लाह जदली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ के बारे में पूछा, तो उन्होंने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० न तो तबीयत के एतबार से ज़ुबान पर बुरी बात लाने वाले थे और न तकल्लुफ़ के साथ गन्दी बात करते थे और न बाज़ारों में चिल्लाते और शोर मचाते थे और बुराई का बदला बुराई से न देते थे, बल्कि माफ़

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 36, कंज़, भाग 4, पृ० 47, दलाइल, पृ० 57
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 36, मुस्लिम, भाग 2, पृ० 256, कंज़, भाग 4, पृ० 47
3. शमाइल, पृ० 25, कंज़, भाग 4, पृ० 47

फ़रमा देते और दरगुज़र फ़रमाते ।[1]

हज़रत तवामा के ग़ुलाम हज़रत सालिहा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ूबियां बयान करते हुए फ़रमाते कि हुज़ूर सल्ल० जब किसी की तरफ़ मुतवज्जह होते तो पूरी तरह मुतवज्जह होते और जब किसी से तवज्जोह हटाते तो उधर से अपना सारा जिस्म हटा लेते। मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! न आप तबियत के एतबार से गन्दी बात करते थे और न आप तकल्लुफ़ के साथ बेहयाई की बात किया करते थे और न आप बाज़ारों में शोर मचाने वाले थे[2] और न मैंने आपसे पहले आप जैसा देखा और न आपके बाद ।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न गाली देने की आदत थी और न किसी पर लानत करने की और न आप तबियत के एतबार से भी गन्दी बात करते थे और जब किसी पर नाराज़ होते तो यों फ़रमाते कि फ़्लां को क्या हुआ ? उसका माथा धूल में सन जाए ।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न तबियत के एतबार से गन्दी बात करते थे और न तकल्लुफ़ के साथ और आप फ़रमाया करते कि तुममें सबसे बेहतरीन वे लोग हैं, जिनके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों ।[5]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु मेरा हाथ पकड़ कर मुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में ले गए। और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अनस समझदार

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 36, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 90, कंज़, भाग 4, पृ० 47
2. याक़ूब बिन सुफ़ियान,
3. ज़ादहू आदम,
4. अहमद, बुख़ारी,
5. बिदाया, भाग 6, पृ० 36

लड़का है, यह आपकी ख़िदमत किया करेगा।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की सफ़र-हज़र में ख़िदमत की। अल्लाह की क़सम! मैंने जो काम किया उस पर आपने कभी यह नहीं फ़रमाया, तुमने ऐसा क्यों किया? और जो काम मैंने न किया हो, उस पर आपने कभी यह नहीं फ़रमाया, तुमने यह काम क्यों नहीं किया?[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे ज़्यादा अख़्लाक़ वाले थे। एक बार आपने मुझे किसी काम से भेजा। मैंने ऊपर से वैसे ही कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जाऊंगा और दिल में यह था कि जिस काम का हुज़ूर सल्ल० हुक्म दे रहे हैं, मैं उसके लिए ज़रूर जाऊंगा।

चुनांचे मैं वहां से बाहर आया, तो मेरा गुज़र कुछ बच्चों पर हुआ जो बाज़ार में खेल रहे थे। (मैं वहां खड़ा हो गया) अचानक हुज़ूर सल्ल० ने आकर पीछे से मेरी गुद्दी पकड़ ली। मैंने हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ देखा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हंस रहे थे। आपने फ़रमाया, ऐ अनस रज़ि०! जहां जाने को मैंने तुम्हें कहा था, तुम वहां गए?

मैंने कहा, जी हां! अभी जाता हूं। अल्लाह की क़सम! मैंने हुज़ूर सल्ल० की नौ साल ख़िदमत की है। मुझे याद नहीं है कि मैंने कोई (ग़लत) काम कर दिया हो, तो इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया हो कि तुमने यह काम क्यों किया? या कोई काम छोड़ दिया हो तो यह फ़रमाया हो कि तुमने यह काम क्यों नहीं किया?[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दस साल ख़िदमत की। अल्लाह की क़सम! इस सारी मुद्दत में आपने न तो कभी मुझे उफ़ फ़रमाया, और न कभी किसी काम के लिए यह फ़रमाया, यह क्यों किया? या यह क्यों न किया?[3] —

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 253,
2. मुस्लिम,
3. मुस्लिम, बुख़ारी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने दस साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की, कभी ऐसे नहीं हुआ कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे काम बताया हो और मैंने उसमें सुस्ती की हो या उसे बिगाड़ दिया हो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे मलामत की हो, बल्कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में से कोई मुझे मलामत करता, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उससे फ़रमाते, इसे छोड़ो, अगर यह काम होना मुक़द्दर होता तो हो जाता।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने कई साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की है, आपने मुझे गाली दी और न कभी मुझे मारा और न कभी डांटा और न कभी त्यौरी चढ़ाई और अगर आपने मुझे कोई काम बताया और उसमें मुझसे सुस्ती हो गई तो आप इस पर मुझे नाराज़ नहीं हुए, बल्कि अगर आपके घरवालों में से कोई नाराज़ होता तो उसे फ़रमाते इसे छोड़ दो, अगर यह काम मुक़द्दर होता, तो यह ज़रूर हो जाता।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए तो मेरी उम्र आठ साल थी। मेरी मां मुझे साथ लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गईं और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे अलावा अंसार के तमाम मर्दों और औरतों ने आपको कोई न कोई तोहफ़ा दिया है और मेरे पास तोहफ़ा देने के लिए इस बेटे के अलावा और कुछ नहीं है, इसलिए आप इसे मेरी तरफ़ से क़ुबूल फ़रमा लें, जब तक आप चाहेंगे, यह आपकी ख़िदमत करेगा।

चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० की दस साल ख़िदमत की। इस मुद्दत में आपने न तो कभी मुझे मारा, न मुझे गाली दी और न कभी त्यौरी चढ़ाई।[3]

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 37, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 11
2. दलादल, पृ० 157
3. कंज़, भाग 7, पृ० 9.

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के अख़्लाक़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि क़ुरैश के तीन आदमी ऐसे हैं जिनके चेहरे सब लोगों से ख़ूबसूरत और जिनके अख़्लाक़ सबसे ज़्यादा अच्छे हैं और जिनमें हया सबसे ज़्यादा है। अगर ये लोग तुमसे बात करें, तो कभी ग़लत बात नहीं कहेंगे और अगर तुम उनसे कोई बात करोगे तो वे तुम्हें झूठा नहीं समझेंगे, वे लोग ये हैं—

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि क़ुरैश के तीन आदमी ऐसे हैं, जिनके चेहरे सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, जिनके अख़्लाक़ सबसे उम्दा और जिनमें हया सबसे ज़्यादा है, वह हज़रत अबूबक्र, हज़रत उस्मान और हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं।[2]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं अपने सहाबा में से जिसके भी अख़्लाक़ पर पकड़ करना चाहूं, तो कर सकता हूं, बस एक अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० ऐसे हैं कि उनकी पकड़ नहीं कर सकता।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन उस्मान क़ुरैशी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बेटी के घर तशरीफ़ ले गए। वह (अपने शौहर) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का सर धो रही थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बिटिया! अबू अब्दुल्लाह (यानी हज़रत उस्मान रज़ि०) के साथ अच्छा सुलूक किया करो, क्योंकि

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 56,
2. इसाबा, भाग 2, पृ० 253,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 253, हाकिम, भाग 3, पृ० 266.

मेरे सहाबा में से सबसे ज़्यादा उनके अख़्लाक़ मुझसे मिलते-जुलते हैं।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी मोहतरमा हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गया, उनके हाथ में कंघी थी। उन्होंने कहा, अभी हुज़ूर सल्ल० मेरे पास से बाहर तशरीफ़ ले गए हैं। मैं उनके सर के बालों में कंघी कर रही थी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने अबू अब्दुल्लाह (यानी हज़रत उस्मान रज़ि०) को कैसा पाया?

मैंने कहा, बहुत अच्छा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उनका इकराम करती रहो, क्योंकि वह अख़्लाक़ में मेरे सहाबा में से मुझसे सबसे ज़्यादा मिलते-जुलते हैं।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आज़ाद किए ग़ुलाम हज़रत अस्लम रज़ियल्लाहु अन्हु के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, तुम शक्ल और अख़्लाक़ में मुझसे मिलते-जुलते हो।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत जाफ़र और हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा तीनों नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत ज़ैद रज़ि० से फ़रमाया, तुम हमारे भाई और मुहब्बत करने वाले साथी हो। यह सुनकर हज़रत ज़ैद रज़ि० (ख़ुशी के मारे) मस्त होकर उछलने लग गए।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत जाफ़र रज़ि० से फ़रमाया, तुम शक्ल और सीरत में मुझसे मिलते-जुलते हो। इस पर हज़रत जाफ़र रज़ि० हज़रत ज़ैद रज़ि० से ज़्यादा उछले। फिर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, तुम मुझसे हो और मैं तुममें से हूं। यह सुनकर मैं हज़रत जाफ़र

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 81,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 81, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 4,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 272

रज़ि० से भी ज़्यादा उछला।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया, तुम्हारे अख़्लाक़ मेरे अख़्लाक़ जैसे हैं और तुम्हारी शक्ल व सूरत मुझसे मिलती-जुलती है, इसलिए तुम मुझसे हो और ऐ अली रज़ि० ! तुम मुझसे हो और मेरे बेटों यानी नवासों के बाप हो।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसी बात सुनी है कि मझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि इसके बदले में मुझे लाल ऊंट मिल जाएं (जो कि अरबों में सबसे अच्छा माल समझा जाता था), मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि जाफ़र की शक्ल और सीरत मुझसे बहुत मिलती है और ऐ अब्दुल्लाह ! अल्लाह की सारी मख़्लूक़ में तुम अपने बाप से सबसे ज़्यादा मिलते हो। (मैं वालिद से मिलता-जुलता हुआ हूं और वालिद हुज़ूर सल्ल० से मिलते-जुलते हैं, तो मैं भी हुज़ूर सल्ल० से मिलता-जुलता हो गया।)[3]

हज़रत बहरीया रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं, मेरे चचा हज़रत ख़िदाश रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक प्याले में खाते हुए देखा, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से वह प्याला हदिए के तौर पर मांग लिया। (हुज़ूर सल्ल० ने उनको वह प्याला दे दिया) चुनांचे वह प्याला हमारे यहां रखा रहता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हमसे फ़रमाया करते थे कि वह प्याला मेरे पास निकालकर ले आओ।

हम ज़मज़म के पानी से भरकर वह प्याला हज़रत उमर रज़ि० के पास लाते, हज़रत उमर रज़ि० उसमें से कुछ पीते और कुछ (बरकत के लिए) अपने सर और चेहरे पर डाल लेते। फिर एक चोर ने हम पर बड़ा ज़ुल्म किया कि वह हमारे सामान के साथ उसे भी चोरी करके ले गया।

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 130
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 272
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 222

प्याले की चोरी के बाद हज़रत उमर रज़ि० हमारे पास आए और दस्तूर के मुताबिक़ प्याले की मांग की।

हमने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! वह प्याला तो हमारे सामान के साथ चोरी हो गया।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, वह चोर तो बड़ा समझदार है, जो हुज़ूर सल्ल० का प्याला चुराकर ले गया। रिवायत करने वाले कहते हैं, अल्लाह की क़सम ! हज़रत उमर रज़ि० ने न तो चोर को बुरा-भला कहा, और न उस पर लानत भेजी।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उऐना बिन हिस्न बिन (हुज़ैफ़ा बिन) बद्र रज़ियल्लाहु अन्हु (मदीना) आए और वह अपने भतीजे हज़रत हुर बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां ठहरे। हज़रत हुर उन लोगों में से थे, जिन्हें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपने क़रीब रखते थे और इबादत गुज़ार उलेमा ही हज़रत उमर रज़ि० की मज्लिसे शूरा में होते थे, चाहे वे जवान होते या बड़ी उम्र के। हज़रत उऐना ने अपने भतीजे से कहा, ऐ मेरे भतीजे ! तुम्हें अमीरुल मोमिनीन के यहां बड़ा दर्जा हासिल है, तुम उनसे मेरे लिए आने की इजाज़त हासिल करो।

उन्होंने जाकर अपने चचा के लिए हज़रत उमर रज़ि० से इजाज़त मांगी। हज़रत उमर रज़ि० ने इजाज़त दे दी। जब वह हज़रत उमर रज़ि० के पास गए, तो उनसे यह कहा, ऐ इब्ने ख़त्ताब ! देखो, अल्लाह की क़सम ! आप हमें ज़्यादा नहीं देते और हमारे बीच अदल का फ़ैसला नहीं करते हैं।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० को गुस्सा आ गया और हज़रत उऐना को सज़ा देने का इरादा फ़रमा लिया। हज़रत हुर ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० से फ़रमाया—

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ (سورة اعراف آيت ١٩٩)

---

1. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 57, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 400

'सरसरी बर्ताव को क़ुबूल कर लिया कीजिए और नेक काम की तालीम कर दिया कीजिए, और जाहिलों से एक किनारा कर लिया कीजिए।' (सूर: आराफ़, आयत 199)

और यह भी उन जाहिलों में से है, (इसलिए आप इनकी इस बात से किनारा कर लें।)

जब हज़रत हुर ने यह आयत पढ़ी तो अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ि० वहीं रुक गए (और सज़ा देने का इरादा छोड़ दिया) और हज़रत उमर रज़ि० की यह बहुत बड़ी ख़ूबी थी कि वह किसी काम का इरादा कर लेते, फिर उन्हें बताया जाता कि अल्लाह की किताब उस काम से रोक रही है, तो तुरन्त उस इरादे को छोड़ देते और एकदम रुक जाते।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मैंने हमेशा यही देखा कि जब भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी बात पर ग़ुस्सा आया, फिर किसी ने उनके सामने अल्लाह का नाम ले लिया या उन्हें आख़िरत की पकड़ से डराया या उनके सामने क़ुरआन की आयत पढ़ दी, तो हज़रत उमर रज़ि० ग़ुस्से में जिस काम का इरादा कर चुके होते थे, उससे एकदम रुक जाया करते थे।[2]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा, ऐ अस्लम! तुम लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कैसा पाया?

मैंने कहा, बहुत अच्छा पाया, लेकिन उन्हें जब ग़ुस्सा आ जाता है, तो फिर मसला बड़ा मुश्किल हो जाता है।

हज़रत बिलाल रज़ि० ने फ़रमाया, आगे अगर तुम्हारी मौजूदगी में हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आ जाए, तो तुम उनके सामने क़ुरआन पढ़ने लग जाना। इनशाअल्लाह उनका ग़ुस्सा चला जाएगा।

हज़रत मालिकदार (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम)

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 416,
2. इब्ने साद,

रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे डांटा और मारने के लिए कोड़ा उठा लिया। मैंने कहा, मैं आपको अल्लाह का वास्ता देता हूं। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने वह कोड़ा नीचे रख दिया और फ़रमाया, तुमने एक बड़ी ज़ात का मुझे वास्ता दिया है।[1]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु शुरू से मेरे दोस्त थे और जिस दिन वह इस्लाम लाए, उस दिन से लेकर उहुद की लड़ाई में शहादत पाने तक वह मेरे साथ रहे। वह हबशा की दोनों हिजरतों में हमारे साथ गए थे और सारे क़ाफ़िले में से वही मेरे सफ़र के साथी रहे। मैंने कोई आदमी उनसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला और मुख़ालफ़त न करने वाला नहीं देखा।[2]

हज़रत हब्बा बिन जुवैन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठे हुए थे। हमने हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) रज़ियल्लाहु अन्हु की कुछ बातों का ज़िक्र किया और लोगों ने इनकी तारीफ़ की और यों कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! हमने कोई आदमी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला और उनसे ज़्यादा नर्मी से तालीम देने वाला और साथ उठने-बैठने वालों के साथ उनसे ज़्यादा अच्छा सुलूक करने वाला और उनसे ज़्यादा तक़्वा और एहतियात वाला नहीं देखा।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूं कि तुम ये तमाम बातें सच्चे दिल से कह रहे हो?

लोगों ने कहा, जी हां।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे इस बात पर गवाह बनाता हूं कि मैं भी उनके बारे में वे तमाम बातें कहता हूं जो इन लोगों ने कही हैं, बल्कि मैं तो इनसे भी ज़्यादा कहता हूं।

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अली रज़ि० ने यह भी फ़रमाया कि हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० ने क़ुरआन पढ़ा और उसके हलाल को

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 413,
2. इब्ने साद भाग 3, पृ० 82

हलाल और उसके हराम को हराम समझा (यानी हलाल को अख़्तियार किया और हराम को छोड़ दिया) वह दीन के बहुत बड़े फ़क़ीह और नबी सल्ल० की सुन्नत के ज़बरदस्त आलिम थे।[1]

हज़रत सालिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कभी किसी ख़ादिम को लानत नहीं की, बस एक बार एक ख़ादिम को लानत की थी, तो उसे आज़ाद कर दिया था।

हज़रत ज़ोहरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने अपने ख़ादिम को लानत करने का इरादा किया और अभी इतना ही कहा था कि, ऐ अल्लाह! 'इस पर ला. . .' कि रुक गए और लफ़्ज़ पूरा न किया और फ़रमाया, मैं इस लफ़्ज़ को ज़ुबान से कहना नहीं चाहता।[2] और सहाबा किराम के माल ख़र्च करने के शौक़ के उन्वान के तहत यह हदीस गुज़र चुकी है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत चेहरे वाले, सबसे ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाले और सबसे ज़्यादा खुले हाथ वाले यानी सख़ी-दाता थे।[3]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 110,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 307,
3. हाकिम

नर्मी, बरदाश्त और माफ़ी

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नर्मी और बरदाश्त

इमाम बुख़ारी अपनी किताब में रिवायत करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुनैन की लड़ाई में जीत हासिल करने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिल रखने की वजह से माल देने में बहुत से (नए) लोगों को तर्जीह दी (और पुरानों को न दिया, नए लोगों को ग़नीमत का वह सारा माल दे दिया।)

चुनांचे हज़रत अक़रअ बिन हाबिस रज़ियल्लाहु अन्हु को सौ ऊंट दिए और हज़रत उऐना बिन हिस्न रज़ियल्लाहु अन्हु को भी उतने ही दिए और भी कुछ लोगों को दिया, इस पर एक आदमी ने कहा, ग़नीमत के माल की इस बांट में अल्लाह की रिज़ा सामने नहीं रही। मैंने कहा, मैं यह बात हुज़ूर सल्ल० को ज़रूर बताऊंगा। चुनांचे मैंने हुज़ूर सल्ल० को बताई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर रहम फ़रमाए, उन्हें तो इससे भी ज़्यादा सताया गया था, लेकिन उन्होंने सब्र किया था, (चुनांचे मैं भी सब्र करूंगा)।

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में यह है कि इस पर एक आदमी ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! इस बांट में अद्ल व इंसाफ़ से काम नहीं लिया गया और न अल्लाह की रिज़ा इसमें सामने है। मैंने कहा, मैं यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़रूरत बताऊंगा। चुनांचे मैंने जाकर हुज़ूर सल्ल० को बता दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० अद्ल (इंसाफ़) नहीं करेंगे तो फिर और कौन कर सकता है? अल्लाह मूसा पर रहम फ़रमाएं, उन्हें तो इससे भी ज़्यादा सताया गया था, लेकिन उन्होंने सब्र किया था।

बुख़ारी और मुस्लिम में यह रिवायत है कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के पास मौजूद थे। आप लोगों में कोई चीज़ बांट रहे थे कि इतने में बनू तमीम का एक आदमी ज़ुल ख़ुवैसरा आया और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इंसाफ़ से बांटें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तेरा नाश हो, अगर मैं इंसाफ़ नहीं करूंगा, तो कौन इंसाफ़ करेगा। (अगर मैं इंसाफ़ नहीं करूंगा) तो मैं नाकाम और बर्बाद हो जाऊंगा। जब मैं इंसाफ़ नहीं करूंगा, तो फिर और कौन करेगा।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे इजाज़त दें, मैं इसकी गरदन उड़ा दूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं इसे छोड़ दो। इसके ऐसे साथी हैं कि इनके नमाज़-रोज़े के मुक़ाबले में तुम अपने नमाज़ रोज़े को कम समझोगे। ये लोग क़ुरआन पढ़ेंगे, लेकिन क़ुरआन इनकी हंसुली से आगे (इनके दिल की तरफ़) नहीं जाएगा (या क़ुरआन हंसुली से आगे बढ़कर ऊपर अल्लाह की ओर नहीं जाएगा) और ये लोग इस्लाम से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर शिकार को लग कर उससे पार होकर आगे चला जाता है। तीर के फल को देखा जाए, तो उसमें कोई चीज़ नज़र नहीं आएगी, फिर उसकी तांत को देखा जाए (जिससे फल को लकड़ी पर मज़बूत किया जाता है) तो इसमें भी कोई चीज़ नज़र नहीं आएगी, फिर उसकी लकड़ी को देखा जाए, तो उसमें भी कोई चीज़ नज़र नहीं आएगी, फिर उसके पर को देखा जाए, तो उसमें भी कोई चीज़ नज़र नहीं आएगी, हालांकि यह तीर उस शिकार की ओझड़ी और ख़ून में से गुज़र कर पार गया है, लेकिन इस ओझड़ी और ख़ून का इसमें कोई निशान नज़र नहीं आएगा। उनकी निशानी यह है कि उनमें एक काला आदमी होगा, जिसके एक बाज़ू का गोश्त औरत के पिस्तान की तरह या गोश्त के टुकड़े की तरह हिलता होगा। ये लोग उस वक़्त ज़ाहिर होंगे जबकि लोगों में इख़्तिलाफ़ और बिखराव का ज़ोर होगा।

हज़रत अबू सईद फ़रमाते हैं, मैं गवाही देता हूं कि मैंने यह हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है और मैं गवाही देता हूं कि इन लोगों से हज़रत अली रज़ि० ने लड़ाई लड़ी थी, मैं भी उनके साथ था। हज़रत अली रज़ि० ने उस आदमी को लाने का हुक्म दिया। लोग

उसे ढूंढकर हज़रत अली रज़ि० के पास ले आए और हुज़ूर सल्ल० ने उसकी जो निशानी बताई थी, वह मैंने उसमें पूरी तरह से देखी।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि (जब मुनाफ़िक़ों का सरदार) अब्दुल्लाह बिन उबई मर गया तो उसके साहबज़ादे (हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उबई रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि आप मुझे अपनी क़मीज़ दे दें, मैं इसमें अपने बाप को दफ़नाऊंगा और आप उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएं और उसके लिए इस्तग़फ़ार फ़रमाएं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें अपनी क़मीज़ दे दी और फ़रमाया, जब जनाज़ा तैयार हो जाए तो मुझे ख़बर कर देना, मैं उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ूंगा।

जब हुज़ूर सल्ल० जनाज़े की नमाज़ पढ़ने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको पीछे खींच कर कहा, क्या अल्लाह ने आपको मुनाफ़िक़ों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से मना नहीं फ़रमाया?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे (इस्तग़फ़ार करने, और न करने) दोनों बातों का अख़्तियार दिया है, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है 'इस्तग़्फ़िर लहुम अव ला तस्तग़्फ़िर लहुम' (सूरः तौबा, आयत 80) (चाहे आप इन (मुनाफ़िक़ों) के लिए इस्तग़फ़ार करें या इनके लिए इस्तग़फ़ार न करें)

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उसकी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई, फिर यह आयत उतरी—'व ला तुसल्लि अला अ-हदिम मिन्हुम मा-त-अ-बदा'

(सूरः तौबा आयत 84)

(और इनमें कोई मर जाए तो उसके (जनाज़े) पर कभी नमाज़ न पढ़िए।)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब अब्दुल्लाह बिन उबई

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 362,

मर गया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के लिए बुलाया गया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले गए। जब आप नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए तो मैं घूमकर आपके सामने खड़ा हो गया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप अल्लाह के दुश्मन अब्दुल्लाह बिन उबई को जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने लगे हैं, जिसने फ़्लां-फ़्लां दिन और यह और यह कहा था और मैं उसके दिन गिनवाने लगा। हुज़ूर सल्ल० मुस्कराते रहे। जब मैं बहुत कुछ कह चुका, तो आपने फ़रमाया, ऐ उमर! पीछे हो जाओ, अल्लाह ने मुझे (मुनाफ़िक़ों के लिए इस्तग़फ़ार करने, न करने का) अख़्तियार दिया है। मैंने (इस्तग़फ़ार करने की शक्ल को) अख़्तियार किया है। अल्लाह ने फ़रमाया है, अगर आप उनके लिए सत्तर बार भी इस्तग़फ़ार करेंगे, तब भी अल्लाह उनको न बख़्शेगा। अगर मुझे यह मालूम होता कि सत्तर बार से ज़्यादा इस्तग़फ़ार करने से उसकी मग़फ़िरत हो जाएगी, तो मैं ज़रूर करता। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और जनाज़े के साथ क़ब्रस्तान गए और उसके दफ़न होने तक आप उसकी क़ब्र पर खड़े रहे।

बहरहाल हुज़ूर सल्ल० के मुक़ाबले पर जो मैंने जुर्रात से काम लिया, उस पर मुझे बहुत हैरानी थी। अल्लाह और रसूल० ही बेहतर जानते हैं (कि इसमें क्या मस्लहत थी) अल्लाह की क़सम ! अभी इस बात को थोड़ी देर ही गुज़री थी कि ये दो आयतें उतरीं—

إِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ (سورة توبه آيت ٨٠)

इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ाई और न उसकी क़ब्र पर खड़े हुए और इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने तक आपका यही तरीक़ा रहा।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब अब्दुल्लाह बिन उबई मर गया। उसके बेटे ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप उनके

1. तिर्मिज़ी

जनाज़े में तश्रीफ़ नहीं लाएंगे, तो लोग हमें हमेशा इसका ताना देते रहेंगे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० तश्रीफ़ ले गए, तो आपने देखा कि वे लोग उसे क़ब्र में रख चुके हैं, तो आपने फ़रमाया, क़ब्र में रखने से पहले तुमने मुझे क्यों नहीं बताया। चुनांचे उसे क़ब्र से निकाला गया और हुज़ूर सल्ल० ने उस पर सर से लेकर पांव तक दम फ़रमाया। आपने उसे अपनी क़मीज़ पहनाई, (क्योंकि उसने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी क़मीज़ पहनाई थी। हुज़ूर सल्ल० उसके इस एहसान का बदला देना चाहते थे और उसके बेटे का दिल भी रखना चाहते थे।)[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब अब्दुल्लाह बिन उबई को क़ब्र में रख दिया गया, तब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसके पास पहुंचे, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर इसे बाहर निकाला गया, हुज़ूर सल्ल० ने इसे अपने घुटनों पर रखा और उस पर दम फ़रमाया और उसे अपनी क़मीज़ पहनाई।[2]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक यहूदी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू किया, जिसकी वजह से आप कुछ दिन बीमार रहे। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है। इसने गिरहें लगाकर फ़्लां कुएं में फेंक दिया है। आप आदमी भेजकर उसे मंगवा लें।

आपने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा, वह उसे निकालकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लाए। हुज़ूर सल्ल० ने इन गिरहों को खोला, तो हुज़ूर सल्ल० ऐसे ठीक होकर खड़े हुए कि जैसे कि बन्धन से निकले हों। (मालूम हो जाने के बावजूद) हुज़ूर सल्ल० ने न तो यह बात आख़िरी दम तक इस यहूदी को बताई और न उसने इसका कोई नागवार असर हुज़ूर सल्ल० के चेहरे पर कभी देखा।[3]

---

1. अहमद, नसई,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 378,
3. अहमद, नसई,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू हुआ था, जिसके असर की वजह से आपको यह महसूस होता था कि आप अपनी बीवियों के पास गए हैं, लेकिन हक़ीक़त में आप गए नहीं होते थे।

हज़रत सुफ़ियान रिवायत करने वाले कहते थे, यह असर सबसे सख़्त जादू का होता है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! क्या तुम्हें मालूम है कि मैंने अल्लाह से दुआ मांगी थी, वह अल्लाह ने क़ुबूल फ़रमा ली। मेरे पास दो फ़रिश्ते आए, एक मेरे सर के पास बैठ गया और दूसरा पांव के पास।

सर वाले ने दूसरे से कहा, इन हज़रत को क्या हुआ है?

दूसरे ने कहा, इन पर जादू हुआ है।

पहले ने पूछा, जादू किसने किया है?

दूसरे ने कहा, लबीद बिन आसम ने, जो क़बीला बनू ज़ुरैक़ का है और यहूदियों का साथी और मुनाफ़िक़ है।

पहले ने पूछा, इसने जादू किस चीज़ में किया है?

दूसरे ने कहा, कंघी पर और कंघी से गिरे हुए बालों पर किया है।

पहले ने पूछा, ये चीज़ें कहां हैं?

दूसरे ने कहा, नर खजूर के ख़ोशे के ग़िलाफ़ में ज़रवान कुंएं के अन्दर जो पत्थर रखा हुआ है, उसके नीचे रखे हुए हैं।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, हुज़ूर सल्ल० उस कुंएं पर तशरीफ़ ले गए और ये चीज़ें उसमें से निकालीं और फ़रमाया, यह कुंवां वही है, जो मुझे सपने में दिखाया गया है। इस कुंएं का पानी ऐसा लाल था, जैसे मेंहदी वाले बरतन को धोने के बाद पानी का रंग लाल होता है और इस कुंएं के खजूरों के पेड़ ऐसे डरावने थे कि जैसे शैतानों के सर हों। मैंने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया, ये चीज़ें आपने लोगों को क्यों न दिखा दीं? उन्हें दफ़न क्यों कर दिया?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे तो (जादू से) शिफ़ा अता फ़रमा दी है और मैं किसी के ख़िलाफ़ शर और फ़ित्ना खड़ा

नहीं करना चाहता।[1]

इमाम अहमद की दूसरी रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का छः माह तक यह हाल रहा कि आपको ऐसे मालूम होता था कि जैसे आप बीवी के पास गए हों और हालांकि आप गए हुए नहीं होते थे, फिर आपके पास दो फ़रिश्ते आए। आगे और हदीस बयान की।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक यहूदी औरत बकरी के मांस में ज़हर मिलाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास लाई। हुज़ूर सल्ल० ने उसमें से कुछ खाया (तो आपको पता चल गया)। उस औरत को आपकी ख़िदमत में लाया गया। हुज़ूर सल्ल० ने उससे उस ज़हर के मिलाने के बारे में पूछा, तो उस औरत ने साफ़ कहा, मैं आपको क़त्ल करना चाहती थी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह मेरे ख़िलाफ़ तुम्हारे इस मंसूबे को हरगिज़ कामियाब करने वाले नहीं थे।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, क्या आप उस औरत को क़त्ल नहीं करेंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं ज़िंदगी भर हुज़ूर सल्ललाहु अलैहि व सल्लम के गले के कव्वे पर इस ज़हर का असर देखता रहा।[3]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक यहूदी औरत ने बकरी के गोश्त में ज़हर मिलाकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में दावत में भेजा। (उसमें से कुछ खाने के बाद) हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, रुक जाओ, इस गोश्त में ज़हर मिला हुआ है। हुज़ूर सल्ल० ने उस यहूदी औरत से पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया?

1. बुख़ारी, मुस्लिम
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 574,
3. बुख़ारी, मुस्लिम

उस औरत ने कहा, मैं यह मालूम करना चाहती थी कि अगर आप सच्चे नबी हैं, तो अल्लाह आपको बता देंगे (कि इसमें ज़हर है, चुनांचे ऐसा ही हुआ) और अगर आप झूठे हैं तो आप ज़हर से हलाक हो जाएंगे और लोगों की जान आपसे छूट जाएगी। (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने उसे कुछ न कहा।[1]

इमाम अहमद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वाली इस हदीस जैसी हदीस हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से नक़ल करते हैं, इसमें यह मज़्मून भी है कि जब भी हुज़ूर सल्ल० को इस ज़हर की वजह से जिस्म में तक्लीफ़ महसूस हुआ करती तो आप सिंगी लगवाते। चुनांचे एक बार सफ़र में आप तशरीफ़ ले गए और आपने एहराम बांधा और आपको इस ज़हर का असर महसूस हुआ तो आपने सिंगी लगवाई।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ैबर की एक यहूदी औरत ने बकरी को भूना और फिर उसमें ज़हर मिलाया और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में उसे भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी दस्ती को लिया और उसमें से खाने लगे और आपके साथ कुछ सहाबा ने भी उसका मांस खाया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, अपने हाथ रोक लो।

हुज़ूर सल्ल० ने आदमी भेजकर उस औरत को बुलाया और उससे फ़रमाया, क्या तुमने इस बकरी में ज़हर मिलाया है?

उस यहूदी औरत ने कहा, आपको यह बात किसने बताई है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह दस्ती का टुकड़ा जो मेरे हाथ में है, उसने मुझे बताया है।

उस औरत ने कहा, हां मैंने मिलाया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ज़हर मिलाकर तू क्या हासिल करना चाहती थी?

---

1. बैहक़ी, अबू दाऊद, अहमद, बुख़ारी,
2. अहमद

उस औरत ने कहा, मैंने सोचा कि अगर आप सच्चे नबी होंगे तो यह ज़हर मिली बकरी आपका नुक़्सान नहीं कर सकेगी और अगर आप नबी नहीं हैं, तो हमारी जान आपसे छूट जाएगी। हुज़ूर सल्ल० ने उस औरत को माफ़ कर दिया और उसे सज़ा न दी और जिन सहाबा ने उस बकरी का गोश्त खाया था, उनमें से कुछ सहाबा रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया और उस ज़हरीली बकरी का जो गोश्त आपने खाया था, उसकी वजह से आपने अपने कंधे पर सिंगी लगवाई।

हज़रत अबू नह्द रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको सींग और छुरी से सिंगी लगवाई, हज़रत अबू नह्द अंसार के क़बीले बनू बयाज़ा के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे।

एक रिवायत में है कि इंतिक़ाल करने वाले सहाबी हज़रत बिश्र बिन बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु थे और हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर उस औरत को क़त्ल कर दिया गया।[1]

हज़रत मरवान बिन उस्मान बिन अबी सईद बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मरज़ुल वफ़ात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत बिश्र बिन बरा बिन मारूर की बहन आईं, तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको फ़रमाया, ऐ उम्मे बिश्र! मैंने तुम्हारे भाई के साथ जो बकरी का गोश्त ख़ैबर में खाया था, उसकी वजह से मुझे उस वक़्त अपने दिल की रग कटती हुई महसूस हो रही है और तमाम मुसलमान यह समझ रहे थे कि जैसे अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को नुबूवत से नवाज़ा, ऐसे ही अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को शहादत का दर्जा भी अता फ़रमाया है।[2]

हज़रत जादा बिन ख़ालिद बिन सिम्मा जुसमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मोटे आदमी को देखा तो हाथ से उसके पेट की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया, अगर यह (माल) इस जगह के अलावा किसी और जगह होता तो तुम्हारे लिए बेहतर था। फिर हुज़ूर सल्ल० के पास एक आदमी लाया गया

1. अबू दाऊद
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 208,

और सहाबा ने बताया कि यह आदमी आपको (नऊज़ुबिल्लाहि मिन ज़ालिक) क़त्ल करना चाहता था। हुज़ूर सल्ल० ने इससे फ़रमाया, 'डरो मत। अगर तुम्हारा यह इरादा था तो अल्लाह ने तुम्हें इसमें कामियाब नहीं होने दिया।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुदैबिया समझौते के मौक़े पर मक्का के अस्सी आदमी हथियार लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा पर हमलावर होने लगे थे। वे लोग बेख़बरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करना चाहते थे। हुज़र सल्ल० ने उनके ख़िलाफ़ बद-दुआ की तो वे सब पकड़े गए।

हज़रत अफ़्फ़ान रिवायत करने वाले कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने उनको माफ़ कर दिया और यह आयत उतरी—

وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَاَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ
بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَیْهِمْ (سورت الفتح آیت ۲۴)

और वह ऐसा है उसने इनके हाथ तुमसे (यानी तुम्हारे क़त्ल से) और तुम्हारे हाथ उन (के क़त्ल) से ठीक मक्का (के क़रीब) में रोक दिए बाद इसके कि तुमको उन पर क़ाबू दे दिया था।' (सूरः फ़त्ह, आयत 24)[2]

यही क़िस्सा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु और ज़्यादा तफ़्सील से बयान करते हैं, इसमें यह है कि हम लोग हुदैबिया में इसी तरह ठरहे हुए थे कि अचानक हथियार लगाए हुए तीस नवजवान ज़ाहिर हुए, वे हम पर हमला करना चाहते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके लिए बद-दुआ फ़रमाई तो अल्लाह ने उनके सुनने की ताक़त ख़त्म कर दी, इसलिए वे कुछ न कर सके। चुनांचे हम लोगों ने खड़े होकर उनको पकड़ लिया। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, क्या तुम

---

1. ख़फ़ाजी, भाग 2, पृ० 25
2. अहमद, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई

लोग किसी की ज़िम्मेदारी पर आए हो? या किसी ने तुम्हें अम्न दिया है?

उन लोगों ने कहा, नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें छोड़ दिया, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी[1]—

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, (मेरे क़बीले) दौस ने (मेरी दावत) नहीं मानी और (इस्लाम क़ुबूल करने से) इन्कार कर दिया, इसलिए आप उनके ख़िलाफ़ बद-दुआ कर दें।

हुज़ूर सल्ल० ने क़िबले की तरफ़ मुंह करके हाथ उठाए। लोगों ने कहा, अब तो क़बीला दौस वाले हलाक हो गए, (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० उनके लिए बद-दुआ फ़रमाने लगे हैं) लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत नसीब फ़रमा और उन्हें यहां ले आ। ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत नसीब फ़रमा और उन्हें यहां ले आ। ऐ अल्लाह! दौस को हिदायत नसीब फ़रमा और उन्हें यहां ले आ।'

चुनांचे हज़रत तुफ़ैल वापस गए और ख़ैबर के मौक़े पर दौस के सत्तर-अस्सी घराने मुसलमान करके ले आए।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की नर्मी और बरदाश्त

हज़रत अबू ज़ारा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मैं, मेरी पाकीज़ा बीवियां और मेरी नेक औलाद बचपन में सबसे ज़्यादा नर्म थी और बड़े

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 192,
2. बुख़ारी, मुस्लिम,

होकर सबसे ज़्यादा इल्म वाली बन गई। हमारे ज़रिए से अल्लाह झूठ और ग़लत बात को दूर करता है और हमारे ज़रिए से बावले भेड़िए के दांतों को तोड़ता है और जो चीज़ें तुमसे ज़बरदस्ती छीनी जाती है, वह हमारे ज़रिए से अल्लाह वापस कराता है और तुम्हारी गरदन की (गुलामी की) रस्सियां खोलता है और हमारे ज़रिए से अल्लाह शुरू कराता है और आख़िर तक पहुंचाता है।[1]

और हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का यह फ़रमान गुज़र चुका है कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से ज़्यादा हाज़िर दिमाग़, ज़्यादा अक़्लमंद, ज़्यादा इल्म रखने वाला और ज़्यादा नर्म किसी को नहीं देखा।[2]

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 50
2. मुशावरतु अह्लिरांए, भाग 1, पृ० 400

शफ़क़त और मेहरबानी

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं कभी नमाज़ शुरू करता हूं और मेरा ख़्याल यह होता है कि नमाज़ ज़रा लम्बी पढ़ाऊंगा, लेकिन मैं नमाज़ में किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेता हूं तो नमाज़ को छोटी कर देता हूं, क्योंकि मुझे पता है कि बच्चे के रोने से उसकी मां परेशान होगी।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि मेरा बाप कहां है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दोज़ख़ में। जब हुज़ूर सल्ल० ने इस जवाब पर उसके चेहरे पर नागवारी का असर देखा तो फ़रमाया, मेरा बाप और तेरा बाप दोनों दोज़ख़ में हैं। (बेहतर यही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मां-बाप के जन्नती या दोज़ख़ी होने के बारे में ख़ामोशी अपना ली जाए, क्योंकि कुछ रिवायतों में इनके जन्नती होने का ज़िक्र है और कुछ रिवायतों में यह है कि क़ियामत के दिन इनका इम्तिहान लिया जाएगा, अल्लाह ही बेहतर जानते हैं।)[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ख़ूनबहा अदा करने में मदद लेने आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे कुछ दे दिया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, क्या मैंने तुम पर एहसान कर दिया?

उस देहाती ने कहा, न आपने एहसान किया और न अच्छा सुलूक किया। कुछ मुसलमानों को उसकी इस बात पर गुस्सा आ गया और उन्होंने खड़े होकर उसे मारना चाहा तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें इशारे से

1. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 66,
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 66,

फ़रमाया कि रुक जाओ।

जब हुज़ूर सल्ल० वहां से खड़े होकर अपने घर पहुंचे तो इस देहाती को घर बुलाकर फ़रमाया, तुम हमारे पास कुछ लेने आए थे। हमने तुमको (वहां सहाबा रज़ि० के सामने) कुछ दिया, जिस पर तुमने कुछ नामुनासिब बात कह दी। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने उस देहाती को कुछ और दिया और उससे पूछा, अब तो मैंने तुम पर एहसान कर दिया।

उस देहाती ने कहा, हां। अल्लाह आपको मेरे घरवालों और मेरे ख़ानदान की तरफ़ से अच्छा बदला दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम हमारे पास आए थे और तुमने मांगा, हमने तुम्हें कुछ दिया, लेकिन तुमने इस पर कुछ नामुनासिब बात कह दी जिसकी वजह से मेरे सहाबा रज़ि० के दिल में तुम्हारे ऊपर ग़ुस्सा आ गया, इसलिए अब तुम उनके पास जाकर उनके सामने वह बात कह देना, जो तुमने अब मेरे सामने कही है, ताकि उनका ग़ुस्सा जाता रहे, उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनांचे जब वह देहाती सहाबा रज़ि० के पास वापस पहुंचा, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

तुम्हारा साथी हमारे पास आया था और उसने कुछ मांगा था जिस पर हमने उसे कुछ दिया था, लेकिन इस पर उसने नामुनासिब बात कही थी। अब हमने इसे घर बुलाकर कुछ और दिया है, जिस पर उसने कहा कि अब वह राज़ी हो गया है, क्यों ऐ देहाती ! बात ऐसी ही है ना?

उस देहाती ने कहा, जी हां, अल्लाह आपको मेरे घरवालों और मेरे खानदान की ओर से भला बदला दें। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरी और इस देहाती की मिसाल उस आदमी जैसी है जिसकी एक ऊंटनी थी जो बिदक गई, लोग इसके पीछे लग गए, इससे वह और ज़्यादा भागने लगी, ऊंटनी वाले ने लोगों से कहा, तुम लोग इसका पीछा छोड़ दो, मैं इसे ख़ुद पकड़ लूंगा। मैं इसके मिज़ाज और आदत को ख़ूब जानता हूं, मैं नर्मी करके उसे पकड़ लूंगा।

चुनांचे वह ऊंटनी की ओर चल पड़ा और ज़मीन पर पड़ा हुआ खजूर का बेकार ख़ोशा लेकर उसे बुलाता रहा, यहां तक कि वह आ गई

और मान गई। आख़िर उसने उस पर कजावा कसा और उस पर बैठ गया। उसने पहले जो बात कही थी, उस पर अगर मैं तुम्हारी बात मानकर उसे सज़ा दे देता तो यह दोज़ख़ में दाख़िल हो जाता।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की शफ़क़त

हज़रत अस्मई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, लोगों ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से बात करें कि वह लोगों के साथ नर्मी अख़्तियार करें। इस वक़्त तो उनके रौब का यह हाल है कि कुंवारी लड़कियां भी अपने परदे में उनसे डरती हैं।

हज़रत अब्दुर्रहमान ने जाकर हज़रत उमर रज़ि० से यह बात की, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मैं तो उनके साथ ऐसे ही पेश आऊंगा, क्योंकि अगर उनको पता चल जाए कि मेरे दिल में इन लोगों के लिए कितनी मेहरबानी, शफ़क़त और नर्मी है, तो ये मेरे कंधे से कपड़े उतार लें।[2]

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 404, ख़फ़ाजी, भाग 2, पृ० 78
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 2, पृ० 416

शर्म और हया

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हया

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कुंवारी लड़की अपने पर्दे में जितनी शर्म व हया वाली होती है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उससे ज़्यादा हया वाले थे और जब हुज़ूर सल्ल० को कोई बात नागवार होती थी, तो आपके चेहरे से उस नागवारी का साफ़ पता चल जाता था।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसी हदीस नक़ल की गई है और उसमें यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम० ने फ़रमाया कि हया तो सारी की सारी ख़ैर ही ख़ैर है।[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी पर पीला रंग देखा जो आपको बुरा महसूस हुआ। जब वह आदमी चला गया, तो आपने फ़रमाया, अगर तुम लोग उसे यह कह दो कि वह यह पीला रंग धो डाले तो बहुत अच्छा है।

आपकी अक्सर मुबारक आदत यह थी कि जब किसी की कोई चीज़ नागवार होती थी, तो आप उस आदमी के मुंह पर उसे सीधे-सीधे न कहा करते।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को किसी आदमी के किसी ऐब की ख़बर पहुंचती, तो उस आदमी का नाम लेकर यों न फ़रमाते कि फ़्लां को क्या हो गया कि वह यों कहता है, बल्कि यों फ़रमाते कि लोगों को क्या हो गया है कि वे

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 416, बिदाया, भाग 6, पृ० ३६, शमाइल पृ० 26, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 192, हैसमी, भाग 9, पृ० 17
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 17
3. अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई,

यों और यों कहते हैं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के आज़ाद किए हुए एक गुलाम कहते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने (हया की वजह से) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शर्म की जगह कभी नहीं देखी।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की हया

हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चहेती बीवी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों ने उनसे यह वाक़िया बयान किया कि हुज़ूर सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० की चादर ओढ़े हुए अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे कि इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी और आप उसी तरह लेटे रहे और वह अपनी ज़रूरत की बात करके चले गए।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल०ने उन्हें भी इजाज़त दे दी। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें भी इजाज़त दे दी और आप उसी तरह लेटे रहे। वह भी अपनी ज़रूरत की बात करके चले गए। हज़रत उस्मान रज़ि० फ़रमाते हैं, फिर मैंने इजाज़त मांगी, तो आप उठकर बैठ गए और हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाया कि तुम भी अपने कपड़े ठीक कर लो (फिर मुझे इजाज़त दी)।

मैं भी अपनी ज़रूरत की बात करके चला गया, तो हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या बात है, आपने हज़रत उस्मान रज़ि० के आने पर जितना एहतिमाम किया, उतना हज़रत अबूबक्र रज़ि० और हज़रत उमर रज़ि० के आने पर नहीं किया?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस्मान बहुत ही हया वाले आदमी हैं तो

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 38
2. शमाइल, पृ० 26

मुझे डर हुआ कि अगर मैं उन्हें इसी हालत में इजाज़त दे दूंगा, तो वह अपनी ज़रूरत की बात कह न सकेंगे, इस हदीस के बहुत से रिवायत करने वाले यह भी रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाया, क्या मैं उससे हया न करूं, जिससे फ़रिश्ते हया करते हैं।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (घर में) बैठे हुए थे और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आपके पीछे बैठी हुई थीं कि इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु इजाज़त लेकर अन्दर आए। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इजाज़त लेकर अन्दर आए, फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इजाज़त लेकर अन्दर आए। हुज़ूर सल्ल० बातें कर रहे थे और हुज़ूर सल्ल० के घुटने खुले हुए थे।

(बाक़ी लोगों के आने पर तो हुज़ूर सल्ल० ऐसे रहे, लेकिन) हज़रत उस्मान रज़ि० के आने पर हुज़ूर सल्ल० ने अपने घुटनों पर कपड़ा डाल लिया और अपनी बीवी (हज़रत आइशा रज़ि०) से फ़रमाया, ज़रा पीछे हटकर बैठ जाओ। ये लोग हुज़ूर सल्ल० से कुछ देर बात करके चले गए, तो हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी सल्ल०! मेरे वालिद और दूसरे सहाबा रज़ि० अन्दर आए, तो आपने न तो घुटने पर अपना कपड़ा ठीक किया और न मुझे पीछे होने को कहा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या मैं उस आदमी से हया न करूं, जिससे फ़रिश्ते हया करते हैं। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, फ़रिश्ते उस्मान रज़ि० से ऐसे हया करते हैं, जैसे अल्लाह और रसूल से करते हैं। अगर वह अन्दर आते और तुम मेरे पास बैठी होतीं, तो वह न तो बात कर सकते और न वापस जाने तक सर उठा सकते।[2]

1. अहमद, मुस्लिम
2. बिदाया, भाग 7, पृ० 203, 204, हैसमी, भाग 9, पृ० 82

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बहुत ज़्यादा हयादार होने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि कभी-कभी हज़रत उस्मान रज़ि० घर में होते और दरवाज़ा भी बन्द होता, लेकिन फिर भी वह ग़ुस्ल के लिए अपने कपड़े न उतार सकते और वह इतने शर्मीले थे कि (ग़ुस्ल के बाद) जब तक वह कपड़े से सतर न छिपा लेते, कमर सीधी न कर सकते, यानी सीधे खड़े न हो सकते।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोग अल्लाह से हया करो, क्योंकि मैं बैतुलख़ला (लेट्रिन) में जाता हूं तो अल्लाह से शरमा कर अपने सर को ढक लेता हूं।[2]

हज़रत साद बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमारा बिन ग़ुराब यह्सुबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं है कि मेरी बीवी मेरे सतर (गुप्तांग) को देखे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्यों ?

उन्होंने कहा, मुझे इससे शर्म आती है और यह मुझे बहुत बुरा लगता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने बीवी को तुम्हारा लिबास और तुम्हें उनका लिबास बनाया है और (कभी-कभी) मेरे घरवाले मेरा सतर और मैं उनका सतर देख लेता हूं।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप ऐसा कर लेते हैं ?

---

1. अहमद, भाग 1, पृ० 73, हैसमी, भाग 9, पृ० 82, हुलीया, भाग 1, पृ० 56,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 144,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, फिर आपके बाद कौन हो सकता है? (जिसकी हर काम में पैरवी की जाए, ऐसे तो आप ही हैं?)

जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु चले गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इब्ने मज़ऊन तो बहुत ज़्यादा हयादार, पाकदामन और सतर छिपा कर रखने वाले हैं।[1]

हज़रत अबू मिज्लज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं अंधेरे कमरे में नहाता हूं, तो मैं अल्लाह से शर्म की वजह से जब तक अपने कपड़े न पहन लूं, उस वक़्त तक अपनी कमर सीधी करके खड़ा नहीं हो सकता।[2]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी कमरे में नहा लेते, तो सीधे खड़े न होते, बल्कि कमर झुकाकर कुबड़े बनकर चलते और कपड़े लेकर पहन लेते, (फिर सीधे होते)[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु जब सोया करते, तो इस डर से कपड़े पहने रहते कि कहीं सोते में उनका सतर न खुल जाए।[4]

हज़रत उबादा बिन नुसय्यि रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ लोगों को देखा कि लुंगी बांधे बग़ैर पानी में खड़े हैं, तो फ़रमाया, मैं मर जाऊं, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर मर जाऊं, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, फिर मर जाऊं, फिर मुझे ज़िंदा किया जाए, यह मुझे इससे ज़्यादा पसन्द है कि मैं उनकी तरह करूं।[5]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 287
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 260, इब्ने साद, भाग 5, पृ० 84
3. अबू नुऐम,
4. अबू नुऐम, भाग 4, पृ० 22
5. अबू नुऐम, भाग 4, पृ० 84

हज़रत अशज्ज अब्दुल क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम्हारे अन्दर दो आदतें ऐसी हैं, जिन्हें अल्लाह पसन्द फ़रमाते हैं।

मैंने पूछा, वे दो आदतें कौन सी हैं?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बुर्दबारी (बरदाश्त और नर्मी) और हया।

मैंने पूछा, ये पहले से मेरे अन्दर थीं या अब पैदा हुई हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, पहले से थीं।

मैंने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने मुझे ऐसी आदतों पर पैदा फ़रमाया, जो उसे पसन्द हैं।[1]

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 140,

ख़ाकसारी और आजिज़ी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ाकसारी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। उन्होंने आसमान की ओर देखा कि आसमान से एक फ़रिश्ता उतर रहा है, तो उन्होंने कहा, जब से यह फ़रिश्ता पैदा हुआ है, उस वक़्त से अब तक यह ज़मीन पर कभी नहीं उतरा।

जब वह फ़रिश्ता ज़मीन पर उतर गया, तो उसने कहा, ऐ मुहम्मद! आपके रब ने मुझे आपके पास यह पैग़ाम देकर भेजा है कि आपको बादशाह और नबी बनाऊं या बन्दा और रसूल?

हज़रत जिब्रील ने कहा, ऐ मुहम्मद! आप अपने रब के सामने ख़ाकसारी अख़्तियार फ़रमाएं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं बन्दा और रसूल बनना चाहता हूं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा इस हदीस को बयान करके आख़िर में फ़रमाती हैं कि इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने कभी टेक लगाकर खाना नहीं खाया, बल्कि फ़रमाते थे कि मैं ऐसे खाता हूं जैसे ग़ुलाम खाता है और ऐसे बैठता हूं जैसे ग़ुलाम बैठता है।[2]

माल वापस करने के बाब में तबरानी वग़ैरह की रिवायत से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की इसी जैसे मतलब वाली हदीस गुज़र चुकी है।

हज़रत अबू ग़ालिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप हमें ऐसी हदीस सुनाएं जो आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हो।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 19
2. हैसमी,

फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० की सारी बातें कुरआन (के मुताबिक़) होती थीं। आप अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा से ज़्यादा करते थे और बयान थोड़े से थोड़ा करते थे, नमाज़ लम्बी पढ़ते थे। आप नाक नहीं चढ़ाते थे और इससे घमंड नहीं महसूस फ़रमाते थे कि मिस्कीन और कमज़ोर आदमी के साथ जाकर उसकी ज़रूरत पूरी करके ही आएं।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करते थे और लग़्व और बेकार बात क़तई तौर पर नहीं करते थे, गधे पर सवार हो जाते थे और ऊन का कपड़ा पहन लेते थे और ग़ुलाम की दावत क़ुबूल फ़रमा लेते थे और अगर तुम ख़ैबर की लड़ाई के दिन हुज़ूर सल्ल० को देखते कि गधे पर सवार हैं, जिसकी लगाम खजूर की छाल की बनी हुई थी, तो अनोखा मंज़र (दृश्य) देखते।

तिर्मिज़ी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० बीमार का पूछना करते थे और जनाज़े में शिर्कत फ़रमाते थे।[2]

हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गधे पर सवार होते थे और ऊन पहनते थे और बकरी की टांगों को क़ाबू में करके उसका दूध निकालते और मेहमान की आव-भगत करते।[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़मीन पर बैठा करते थे, ज़मीन पर खाया करते थे और बकरी की टांग बांधकर दूध निकाला करते थे और कोई ग़ुलाम जौ की रोटी की दावत किया करता, तो उसे भी क़ुबूल फ़रमा लिया करते थे।[4]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 20, बिदाया, भाग 6, पृ० 45,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 45, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 95,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 45, हैसमी, भाग 9, पृ० 20
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 20

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि (मदीना से बाहरी आबादी अवाली का कोई आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आधी रात के वक़्त जौ की रोटी पर बुलाता, तो भी आप उसे क़ुबूल फ़रमा लेते।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कोई आदमी जौ की रोटी और बदमज़ा चर्बी की दावत देता तो आप उसे क़ुबूल फ़रमा लिया करते (और अपना सब कुछ दूसरों पर ख़र्च करने का यह हाल था कि) आपकी एक ज़िरह एक यहूदी के पास रेहन रखी हुई थी और इंतिक़ाल तक आपके पास इतना माल जमा न हो सका कि जिसे देकर आप उस ज़िरह को यहूदी से छुड़ा लेते।[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक आदमी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तीन बार आवाज़ दी, हुज़ूर सल्ल० हर बार जवाब में 'लब्बैक-लब्बैक' फ़रमाते।[3]

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक औरत मर्दों से बेहयाई की बातें किया करती थी और बहुत ही बेबाक और बद कलाम थी। एक बार वह हुज़ूर सल्ल० के पास से गुज़री। हुज़ूर सल्ल० एक ऊंची जगह पर बैठे हुए सरीद खा रहे थे, इस पर उस औरत ने कहा, इन्हें देखो, ऐसे बैठे हुए हैं जैसे ग़ुलाम बैठता है, ऐसे खा रहे हैं, जैसे ग़ुलाम खाता है।

यह सुन कर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कौन-सा बन्दा मुझसे ज़्यादा बन्दगी अख़्तियार करने वाला होगा?

फिर उस औरत ने कहा, यह ख़ुद खा रहे हैं और मुझे नहीं खिला रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तू भी खा ले। उसने कहा, मुझे तो अपने हाथ से अता फ़रमाएं।

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 20
2. शिमाइल, पृ० 23,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 20, कंज़, भाग 4, पृ० 45

हुज़ूर सल्ल० ने इसे दिया तो उसने कहा, जो आपके मुंह में है, उसमें से दें। हुज़ूर सल्ल० ने उसमें से दिया, जिसे उसने खा लिया। (इस खाने की बरकत से) उस पर शर्म व हया ग़ालिब आ गई और इसके बाद उसने अपने इंतिक़ाल तक किसी से बेहयाई की कोई बात न की।[1]

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी सामने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो उस पर कपकपी छा गई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तसल्ली रखो, मैं बादशाह नहीं हूं, मैं तो क़ुरैश की ऐसी औरत का बेटा हूं जो सूखा हुआ गोश्त भी खा लिया करती थी।[2]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी मक्का की जीत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात करने लगा तो उस पर कपकपी छा गई। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[3]

हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मस्जिद की तरफ़ निकला। आपके जूते का फ़ीता टूट गया। मैंने ठीक करने के लिए हुज़ूर सल्ल० से जूती ले ली।

हुज़ूर सल्ल० ने मेरे हाथ से जूती लेकर फ़रमाया, फ़ीता तो मेरा टूटा और ठीक तुम करो। इससे ऊपर और बड़ा होना नज़र आता है और मैं दूसरों पर अपना ऊपर होना और बड़ा होना पसन्द नहीं करता, (बल्कि मैं तो सबके बराबर बनकर रहना चाहता हूं।)[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ख़ुज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने कुछ साथियों के साथ जा रहे थे। किसी ने कपड़े से आप पर साया कर दिया। जब आपको ज़मीन पर साया नज़र आया तो आपने सर उठाकर देखा तो

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 21,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 20,
3. बिदाया, भाग 4, पृ० 293,
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 21

एक साहब चादर से आप पर साया कर रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, रहने दो और कपड़ा उससे लेकर रख दिया और फ़रमाया, मैं भी तुम जैसा आदमी हूं। (अपने लिए कोई फ़र्क़ करने वाला सुलूक नहीं चाहता।)[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैंने दिल में कहा, मालूम नहीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कब तक हममें रहेंगे, यह मालूम करने के लिए मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप साए के लिए एक छप्पर बना लें तो बहुत अच्छा हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तो लोगों में ऐसे घुल-मिलकर रहना चाहता हूं कि ये लोग मेरी एड़ियां रौंदते रहें और मेरी चादर खींचते रहें, यहां तक कि अल्लाह (दुनिया से उठाकर) मुझे उन लोगों से राहत दे। (मैं अपने लिए अलग जगह बनाना नहीं चाहता)।[2]

हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं पता चलाऊंगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हममें और कितना रहेंगे, तो मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं देख रहा हूं कि आम लोगों के साथ रहने से आपको तक्लीफ़ होती है। उनका सारा धूल-धक्कड़ आप पर आ जाता है, इसलिए अगर आप अपने लिए एक तख़्त बना लें, जिस पर बैठकर आप लोगों से बात किया करें, तो यह बेहतर होगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वही जवाब दिया जो पिछली हदीस में गुज़र गया।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि आपके इस जवाब से मैं समझ गया कि अब आप हममें थोड़े दिनों ही रहेंगे।[3]

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 21
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 21
3. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 180, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 193

हज़रत अस्वद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि जब नबी क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर तशरीफ़ लाते तो क्या किया करते थे?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया कि घरवालों के काम-काज में लग जाते और जब नमाज़ का वक़्त आ जाता, तो बाहर तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ाते।[1]

हज़रत उर्व: रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में कुछ'क्या करते थे?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हां, हुज़ूर अपनी जूती ख़ुद गांठ लिया करते और अपने कपड़े सी लिया करते, आप घर में इसी तरह काम किया करते, जिस तरह आप लोग करते हैं।

हज़रत अमरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहती हैं, मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने घर में क्या किया करते थे?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, हुज़ूर सल्ल० भी इंसान ही थे तो और इंसानों की तरह आप अपने कपड़ों में से (शुबहे की वजह से) जुएं निकाल लेते थे और अपनी बकरी का दूध निकालते थे और अपने काम ख़ुद किया करते थे।[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने वुज़ू का पानी किसी के सुपुर्द न फ़रमाते, (बल्कि ख़ुद उससे वुज़ू फ़रमाते) और जब आप कोई सदक़ा देना चाहते तो ख़ुद देते।[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पूछना करने के लिए तशरीफ़ लाए,

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 91,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 44
3. जमउल फ़वाइद, भाग 2, पृ० 180

आप न ख़च्चर पर सवार थे और न तुर्की घोड़े पर, (बल्कि पैदल) तशरीफ़ लाए थे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पुराने कजावे पर हज फ़रमाया और कजावे पर एक चादर थी जिसकी क़ीमत चार दिरहम भी नहीं थी। इसके बावजूद आपने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसे हज की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, जिसमें न दिखावा हो, न शोहरत।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में (जीते हुए की हैसियत से) दाख़िल हुए, तो लोग ऊंची जगहों पर चढ़कर हुज़ूर सल्ल० को देख रहे थे, लेकिन ख़ाकसारी और आजिज़ी की वजह से आपका सर कजावे को लगा हुआ था।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मक्का-विजय के दिन जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में दाख़िल हुए थे, तो आपकी ठोढ़ी ख़ाकसारी की वजह से कजावे पर थी।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़ी तुवा नामी जगह पर पहुंचे, तो अपनी सवारी पर खड़े हो गए। उस वक़्त आपने लाल यमनी धारीदार चादर सर पर बांधी हुई थी और उसका एक किनारा मुंह पर डाला हुआ था। जब अल्लाह ने देखा कि अल्लाह ने मक्का पर जीत दिला दी है, तो हुज़ूर सल्ल० ने अल्लाह के सामने आजिज़ी ज़ाहिर करने के लिए अपना सर झुका लिया, यहां तक कि आपकी दाढ़ी कजावे के बीच के हिस्से को लग रही थी।[5]

---

1. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 65,
2. शिमाइल, पृ० 24
3. हैसमी, भाग 6, पृ० 169
4. बैहक़ी,
5. बिदाया, भाग 4, पृ० 293,

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बाज़ार गया। हुज़ूर सल्ल० कपड़ा बेचने वालों के पास बैठ गए और चार दिरहम में एक शलवार ख़रीदी। बाज़ार वालों ने एक (सोना-चांदी) तौलने वाला रखा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, तौलो और झुकता हुआ तौलो और हुज़ूर सल्ल० ने वह शलवार ले ली।

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शलवार लेकर उठानी चाही, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया, चीज़ का मालिक ख़ुद इसे उठाने का ज़्यादा हक़दार होता है। हां, अगर वह मालिक इतना कमज़ोर हो कि अपनी चीज़ को उठा न सकता हो, तो फिर उसका मुसलमान भाई उसकी मदद कर दे।

मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप यह शलवार पहनेंगे?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, दिन-रात सफ़र व हज़र में पहनूंगा, क्योंकि मुझे सतर ढांकने का हुक्म दिया गया है और मुझे इससे ज़्यादा सतर ढांकने वाली कोई चीज़ न मिली।[1]

दूसरी रिवायत में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तौलने वाले से फ़रमाया, तौलो और झुकता हुआ तौलो।

उस तौलने वाले ने कहा, मैंने यह बात किसी और से नहीं सुनी। मैंने उसे कहा कि तेरे हलाक होने और तेरे दीन के बिगाड़ के लिए यह काफ़ी है कि तू अपने नबी को नहीं पहचानता। यह सुनकर उसने तराज़ू वहीं फेंकी और कूद कर उठा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ को लेकर उसे बोसा देना चाहा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे अपना हाथ पीछे खींच लिया और फ़रमाया, यह क्या है? ऐसे तो अजम के लोग अपने बादशाहों के साथ करते हैं और मैं तो बादशाह नहीं हूं। मैं तो आप

1. नसीमुर्रियाज़, भाग 2, पृ० 105,

लोगों में से ही एक आदमी हूं। चुनांचे उसने झुकता हुआ तौला और अपने तौलने की उजरत ली।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की ख़ाकसारी

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ऊंट पर बैठकर शाम देश तशरीफ़ लाए तो लोग इस बारे में आपस में बातें करने लगे (कि अमीरुल मोमिनीन को घोड़े पर सफ़र करना चाहिए था, ऊंट पर नहीं करना चाहिए था, वग़ैरह, वग़ैरह। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इन लोगों की निगाह ऐसे इंसानों की सवारी पर जा रही है, जिनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। (इससे शाम के कुफ़्फ़ार मुराद हैं।)[2]

हज़रत हिशाम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का एक औरत पर गुज़र हुआ जो असीदा घोंट रही थी, (असीदा वह आटा है जिसे घी डालकर पकाया जाता है।) हज़रत उमर रज़ि०ने उससे कहा, असीदा को इस तरह नहीं घोंटा जाता। यह कहकर उससे हज़रत उमर रज़ि० ने डोई ले ली और फ़रमाया, इस तरह घोंटा जाता है और उसे घोंट कर दिखाया।[3]

हज़रत हिशाम बिन ख़ालिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को (औरतों से) यह कहते हुए सुना कि जब तक पानी गर्म न हो जाए, तुममें से कोई औरत आटा न डाले और जब पानी गर्म हो जाए, तो थोड़ा-थोड़ा करके डालती जाए और डोई से उसको हिलाती जाए, इस तरह अच्छी तरह हिल जाएगा और टुकड़े-टुकड़े नहीं बनेगा।[4]

हज़रत ज़िर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत

1. मज्मा, भाग 5, पृ० 21
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 417
3. इब्ने साद
4. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 417

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ईदगाह नंगे पांव जा रहे हैं।[1]

हज़रत उमर मख़्ज़ूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐलान कराया 'अस्सलातु जामिअतुन' (सब नमाज़ में जमा हो जाएं, ज़रूरी बात करनी है।)

जब लोग ज़्यादा से ज़्यादा जमा हो गए, तो हज़रत उमर रज़ि० मिंबर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह की हम्द व सना और दरूद व सलाम के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! मेरी कुछ ख़ालाएं थीं जो क़बीला बनू मख़्ज़ूम की थीं। मैं इनके जानवर चराया करता था। वे मुझे मुट्ठी भर किशमिश और खजूर दे दिया करती थीं। मैं उस पर सारा दिन गुज़ारा करता था और वह बहुत ही अच्छा दिन होता था। फिर हज़रत उमर रज़ि० मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपने और तो कोई ख़ास बात कही नहीं, बस अपना ऐब ही बयान किया।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने औफ़ ! तेरा भला हो। मैं तंहाई में बैठा हुआ था, मेरे मन ने मुझसे कहा, तू अमीरुल मोमिनीन है, तुझसे अफ़ज़ल कौन हो सकता है ? तो मैंने चाहा कि अपने नफ़्स को उसकी हैसियत बता दूं।[2]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैंने अपना यह हाल देखा है कि मेरे पास खाने की कोई चीज़ नहीं होती थी। मैं क़बीला बनू मख़्ज़ूम की अपनी ख़ालाओं को मीठा पानी लाकर दिया करता था। वे मुझे किशमिश की कुछ मुट्ठियां दे दिया करती थीं। बस यह किशमिश ही खाने की चीज़ होती थी।

आख़िर में यह भी फ़रमाया, मुझे अपने मन में कुछ बड़ाई महसूस हुई तो मैंने चाहा कि उसे कुछ नीचे झुकाऊं।[3]

---

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 418,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 417
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 293.

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु एक सख़्त गर्म दिन में सर पर चादर रखे हुए बाहर निकले। उनके पास से एक जवान गधे पर गुज़रा तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ जवान! मुझे अपने साथ बिठा ले।

वह नवजवान कूद कर गधे से नीचे उतरा और उनसे अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप सवार हो जाएं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, पहले तुम सवार हो जाओ, मैं तुम्हारे पीछे बैठ जाऊंगा। तुम मुझे नर्म जगह बिठाना चाहते हो और ख़ुद सख़्त जगह बैठना चाहते हो। चुनांचे वह जवान गधे पर आगे बैठा और हज़रत उमर रज़ि० उसके पीछे। आप जब मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो आप पीछे बैठे हुए थे और सब लोग आपको देख रहे थे।[1]

हज़रत सिनान बिन सलमा हुज़ली रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि एक बार मैं कुछ लड़कों के साथ निकला और हम मदीना में गिरी हुई अधकचरी खजूरें चुनने लगे कि इतने में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कोड़ा लिए हुए आ गए। जब लड़कों ने उनको देखा तो वे सब खजूरों के बाग़ में इधर-उधर बिखर गए। लेकिन मैं वहीं खड़ा रहा और मेरी लुंगी में कुछ खजूरें थीं जो मैंने वहां से चुनी थीं, मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! ये खजूरें वह हैं जो हवा से नीचे गिरी हैं, (यानी मैंने पेड़ से नहीं तोड़ी हैं।)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी लुंगी में रखी हुई इन खजूरों को देखा और मुझे न मारा। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! (मैं अब घर जाना चाहता हूं, रास्ते में) आगे लड़के खड़े हैं, जो मेरी तमाम खजूरें छीन लेंगे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, नहीं, हरगिज़ नहीं, चलो, (मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।) चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० मेरे साथ घर तक आए।[2] हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा बयान करते हैं कि

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 417
2. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 90

मैंने कई बार देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जब मक्का से मदीना वापस आते तो (मदीना के तनिक पहले) मुअर्रस मस्जिद (ज़ुल हुलैफ़ा) में क़ियाम फ़रमाते और जब मदीना मुनव्वरा में दाख़िल होने के लिए सवार होते तो सवारी पर पीछे ज़रूर किसी को बिठाते और कोई न मिलता तो किसी लड़के को ही बिठा लेते और उसी हाल में मदीना में दाख़िल होते।

रिवायत करने वाले कहते हैं, मैंने कहा, क्या हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत उस्मान रज़ि० अपने पीछे किसी ख़ाकसारी के ख़्याल से बिठाया करते थे और यह भी चाहते थे कि पैदल आदमी को सवारी मिल जाए, इसका भी फ़ायदा हो जाए और यह भी चाहते थे कि वे और बादशाहों जैसे न हों (कि वह तो किसी आम आदमी को अपने पीछे नहीं बिठाते)। फिर वे बताने लगे कि अब तो लोगों ने नया तरीक़ा ईजाद कर लिया है, ख़ुद सवार हो जाते हैं और ग़ुलाम और लड़कों को अपने पीछे पैदल चलाते हैं और यह बहुत ही ऐब की बात है।[1]

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मुझे हमदानी ने बताया कि मैंनें हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि आप ख़च्चर पर सवार हैं और उनका ग़ुलाम नाइल इनके पीछे बैठा हुआ है, हालांकि आप उस वक़्त ख़लीफ़ा थे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु रात को अपने वुज़ू का इन्तिज़ाम ख़ुद किया करते थे। किसी ने उनसे कहा, अगर आप अपने किसी ख़ादिम को कह दें तो वह यह इन्तिज़ाम कर दिया करेगा।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, रात उनकी अपनी है, जिसमें वह आराम करते हैं।[3]

हज़रत ज़ुबैर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरी

1. कंज़, भाग 2, पृ० 143,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 60
3. कंज़ भाग 5, पृ० 143,

दादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़ादिमा थीं। उन्होंने मुझे बताया कि (तहज्जुद के वक़्त) हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घरवालों में से किसी को न जगाते, हां, अगर कोई ख़ुद से उठा हुआ होता तो उसे बुला लेते और वह आपको वुज़ू के लिए पानी ला देता और आप हमेशा रोज़ा रखते।[1]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने एक बार देखा कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में एक चादर में सोए हुए हैं और उनके पास कोई भी नहीं है, हालांकि उस वक़्त आप अमीरुल मोमिनीन थे।[2]

हज़रत उनैसा रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं कि मुहल्ले की लड़कियां अपनी बकरियां लेकर (दूध निकलवाने के लिए) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ के पास आया करती थीं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० उन्हें ख़ुश करने के लिए फ़रमाया करते थे कि, क्या तुम चाहती हो कि मैं इब्ने अफ़रा की तरह तुम्हें दूध निकालकर दूं?[3]

ख़लीफ़ों और सरदारों की ज़िंदगी के तौर-तरीक़े के उन्वान के तहत हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और हज़रत इब्ने मुसय्यिब रज़ि० वग़ैरह हज़रात की यह रिवायत गुज़र चुकी है कि हज़रत अबूबक्र ताजिर आदमी थे, हर दिन सुबह जाकर ख़रीदा-बेचा करते। उनका बकरियों का एक रेवड़ भी था जो शाम को उनके पास वापस आता, कभी उसको चराने ख़ुद जाते और कभी कोई और चराने जाता। अपने मुहल्ले वालों की बकरियों का दूध भी निकाल दिया करते।

जब यह ख़लीफ़ा बने तो मुहल्ले की एक लड़की ने कहा, (अब तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़लीफ़ा बन गए हैं, इसलिए) हमारे घर की बकरियों का दूध अब तो कोई नहीं निकाला करेगा।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने यह सुनकर फ़रमाया, नहीं, मेरी उम्र की

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 463,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 60,
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 361,

क़सम ! मैं आप लोगों के लिए दूध ज़रूर निकाला करूंगा और मुझे उम्मीद है कि ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी जो मैंने उठाई है, यह मुझे उन भले अख़्लाक़ से नहीं हटाएगी जो पहले से मुझमें हैं। चुनांचे ख़िलाफ़त के बाद भी मुहल्ले वालों का दूध निकाला करते थे और कभी-कभी मज़ाक़ में मुहल्ले की लड़की से कहते, ऐ लड़की ! तुम कैसा दूध निकलवाना चाहती हो ? झाग वाला निकालूं या बिना झाग के ?

कभी वह कहती झाग वाला और कभी कहती, बग़ैर झाग के। बहरहाल जैसे वह कहती, वैसे यह करते।

हज़रत सालेह कम्बल बेचने वाले रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरी दादी जान ने यह बयान किया कि मैंने एक बार देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिरहम की खजूरें ख़रीदीं और उन्हें अपनी चादर में डालकर उठाने लगे, तो मैंने उनसे कहा या किसी मर्द ने उनसे कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपकी जगह मैं उठा लेता हूं।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। (मैंने ये खजूरें बच्चों के लिए ख़रीदी हैं, इसलिए) बच्चों का बाप ही उनके उठाने का ज़्यादा हक़दार है।[1]

हज़रत ज़ाज़ान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार में अकेले तशरीफ़ ले जाते, हालांकि आप अमीरुल मोमिनीन थे, जिसे रास्ता न मालूम होता, उसे रास्ता बताते, गुम हुई चीज़ का एलान करते, कमज़ोर की मदद करते और दुकानदार और सब्ज़ी बेचने वाले के पास से गुज़रते, तो उसे क़ुरआन की यह आयत सुनाते—

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا

(سورت قصص آیت ۸۳)

'यह आख़िरत का घर हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना।'

(सूरः क़सस, आयत 84)

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 81, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 56, बिदाया, भाग 8, पृ० 5

और फ़रमाते कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी है जो लोगों के हाकिम हैं और उन्हें तमाम लोगों से वास्ता पड़ता है और वे अद्ल और इंसाफ़ और ख़ाकसारी वाले हैं।[1]

हज़रत जुरमूज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु घर से बाहर आ रहे हैं और उन्होंने क़तर की बनी हुई दो लाली लिए हुए चादरें ओढ़ी हुई हैं, एक लुंगी आधी पिंडुली तक और दूसरी उतनी ही लम्बी चादर अपने पर लपेटी हुई है। हाथ में कोड़ा भी है जिसे लेकर वह बाज़ारों में जाया करते और बाज़ार वालों को अल्लाह से डरने का और अच्छे तरीक़े से बचने का हुक्म दिया करते और फ़रमाते, पूरा तौलो और पूरा नापो और यह भी फ़रमाते कि गोश्त में हवा न भरो (इस तरह गोश्त मोटा नज़र आएगा और लोगों को धोखा लगेगा।[2]

हज़रत अबू मतर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन मैं मस्जिद से बाहर निकला, तो एक आदमी ने मुझे पीछे से आवाज़ देकर कहा कि अपनी लुंगी ऊंची कर ले, क्योंकि लुंगी ऊंचा करने से पता चलेगा कि तुम अपने रब से ज़्यादा डरने वाले हो और इससे तुम्हारी लुंगी ज़्यादा साफ़ रहेगी और अपने सर के बाल साफ़ कर ले और अगर तू मुसलमान है। मैंने मुड़कर देखा तो वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे और उनके हाथ में कोड़ा भी था।

फिर हज़रत अली रज़ि० चलते-चलते ऊंटों के बाज़ार में पहुंच गए, तो फ़रमाया, बेचो ज़रूर, लेकिन क़सम न खाओ, क्योंकि क़सम खाने से सामान तो बिक जाता है, लेकिन बरकत ख़त्म हो जाती है। फिर एक खजूर वाले के पास आए तो देखा कि एक ख़िदमत करने वाली रो रही है।

हज़रत अली रज़ि० ने उससे पूछा, क्या बात है?

उस ख़िदमत करने वाली ने कहा, इसने मुझे एक दिरहम की खजूरें दीं, लेकिन मेरे मालिक ने इन्हें लेने से इंकार कर दिया है।

हज़रत अली रज़ि० ने खजूर वाले से कहा, तुम इससे खजूरें वापस

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 56, बिदाया, भाग 8, पृ० 5,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 18, इस्तीआब, भाग 3, पृ० 48,

ले लो और इसे दिरहम दे दो, क्योंकि यह तो बिल्कुल बे-अख़्तियार है। (अपने मालिक की मर्ज़ी के बग़ैर कुछ नहीं कर सकती) वह लेने से इंकार करने लगा। मैंने कहा, क्या तुम जानते हो कि यह कौन हैं? उस आदमी ने कहा, नहीं।

मैंने कहा, यह हज़रत अली अमीरुल मोमिनीन हैं, उसने तुरन्त खजूरें लेकर अपनी खजूरों में डाल लीं और उसे एक दिरहम दे दिया और कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं चाहता हूं कि आप मुझसे राज़ी रहें।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, जब तुम लोगों को पूरा दोगे तो मैं तुमसे बहुत ज़्यादा राज़ी रहूंगा, फिर खजूर वालों के पास से गुज़रते हुए फ़रमाया, मिस्कीन को खिलाया करो, इससे तुम्हारी कमाई बढ़ जाएगी, फिर मछली वालों के पास पहुंच गए, तो फ़रमाया, हमारे बाज़ार में वह मछली नहीं बिकनी चाहिए जो पानी में मरकर ऊपर तैरने लग गई हो, फिर आप कपड़े के बाज़ार में पहुंच गए।

यह खद्दर का बाज़ार था, एक दुकानदार से कहा, ऐ बड़े मियां! मुझे एक क़मीज़ तीन दिरहम की दे दो। उस दुकानदार ने हज़रत अली रज़ि० को पहचान लिया तो उससे क़मीज़ न ख़रीदी। फिर दूसरे दुकानदार के पास गए। जब उसने भी पहचान लिया तो उससे भी न खरीदी, फिर एक नवजवान लड़के से तीन दिरहम की क़मीज़ ख़रीदी। (वह हज़रत अली रज़ि० को न पहचान सका) और उसे पहन लिया। उसकी आस्तीन गट्टे तक लम्बी थी और ख़ुद क़मीज़ टख़ने तक थी।

फिर असल दुकानदार कपड़ों का मालिक आ गया तो उसे लोगों ने बताया कि तेरे बेटे ने अमीरुल मोमिनीन के हाथ तीन दिरहम में क़मीज़ बेची हैं तो उसने बेटे से कहा, तुमने इनसे दो दिरहम क्यों न लिए। चुनांचे वह दुकानदार एक दिरहम लेकर हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में आया और अर्ज़ किया, यह दिरहम ले लें।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, क्या बात है?

उसने कहा, इस क़मीज़ की क़ीमत दो दिरहम थी। मेरे बेटे ने आपसे तीन दिरहम ले लिए। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, उसने अपनी

रज़ामंदी से तीन दिरहम में बेची और मैंने अपनी ख़ुशी से तीन में ख़रीदी।[1]

हज़रत अता रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा आटा गूंधतीं और इनके सिर के बाल लगन से टकराते।[2]

हज़रत मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि अरब की बेवा ख़ातून यानी हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा शाम को तो तमाम मुसलमानों के सरदार (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के यहां दुल्हन बनकर आईं और रात के आख़िरी हिस्से में आटा पीसने लगीं।[3]

हज़रत सलामा अजली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मेरा एक भांजा गांव से आया, उसे क़ुदामा के नाम से पुकारा जाता था। उसने मुझसे कहा, मैं हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलना और उन्हें सलाम करना चाहता हूं। चुनांचे हम उन्हें मिलने चले, वह हमें मदाइन शहर में मिल गए। वह उन दिनों बीस हज़ार फ़ौज के अमीर थे। वह तख़्त पर बैठे हुए खजूर के पत्तों की टोकरी बना रहे थे। हमने उन्हें जाकर सलाम किया।

फिर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुल्लाह! यह मेरा भांजा देहात से मेरे पास आया है। आपको सलाम करना चाहता है।

हज़रत सलमान ने फ़रमाया, 'व अलैहिस्सलामु व रहमतुल्लाहि'। मैंने कहा, यह कहता है कि इसे आपसे मुहब्बत है। उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह इसे अपना प्रिय बनाए।[4]

हज़रत हारिस बिन उमैरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं मदाइन में हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने देखा कि वह अपनी खाल रंगने की जगह में दोनों हाथों से एक खाल को रगड़

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 57,
2. हुलीया, भाग 3, पृ० 312
3. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 64,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 197,

रहे हैं। जब मैंने उन्हें सलाम किया तो उन्होंने कहा, ज़रा अपनी जगह ठहरना, मैं अभी बाहर आता हूं।

मैंने कहा, मेरा ख़्याल है कि आपने मुझे पहचाना नहीं। उन्होंने कहा, नहीं, (मैंने तुम्हें पहचान लिया है) बल्कि मेरी रूह ने तुम्हारी रूह को पहले पहचाना। मैंने बाद में तुम्हें पहचाना, क्योंकि तमाम रूहें जमा हुई फ़ौज हैं, तो जिन रूहों का आपस में वहां परिचय अल्लाह के लिए हो गया, वह तो एक दूसरे से मानूस हो जाती हैं और जिनका जोड़ अल्लाह के अलावा किसी वजह से हुआ। वह एक दूसरे से मानूस नहीं होतीं।[1]

हज़रत अबू क़िलाबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया। हज़रत सलमान आटा गूंध रहे थे। उस आदमी ने कहा, यह क्या है? (कि आप ख़ुद ही आटा गूंध रहे हैं।

उन्होंने फ़रमाया, (आटा गूंधने वाले) ख़ादिम को हमने किसी काम के लिए भेज दिया, इसलिए हमने इसे अच्छा न समझा कि हम इसके ज़िम्मे दो काम लगा दें। फिर उस आदमी ने कहा, फ़्लां साहब आपको सलाम कह रहे थे।

हज़रत सलमान ने पूछा, तुम कब आए थे?

उसने कहा, इतने अर्से से आया हुआ हूं।

हज़रत सलमान ने फ़रमाया, अगर तुम सलाम न पहुंचाते, तो फिर यह वह अमानत गिनी जाती जो तुमने अदा नहीं की (तुम्हारे ज़िम्मे बाक़ी रहती।)[2]

हज़रत अम्र बिन अबू क़ुर्रा किन्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे बाप ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में यह बात पेश की कि वह उनकी बहन से शादी कर लें, लेकिन हज़रत सलमान ने इंकार कर दिया, बल्कि (मेरे बाप की आज़ाद की हुई) बुक़ैरा नामी बांदी

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 196, हुलीया, भाग 1, पृ० 198,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 201, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 64, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 218,

से शादी कर ली, फिर (मेरे बाप) हज़रत अबू क़ुर्रा को पता चला कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सलमान के दर्मियान कुछ बात हुई है, तो मेरे बाप हज़रत सलमान के पास गए, वहां जाकर उन्होंने हज़रत सलमान के बारे में पूछा, तो घरवालों ने बताया कि वह अपने सब्ज़ी के खेत में हैं।

मेरे बाप वहां चले गए, तो वहां हज़रत सलमान के पास एक टोकरी थी जिसमें सब्ज़ी थी। उन्होंने अपनी लाठी उस टोकरी के दस्ते में डालकर अपने कंधे पर रखी हुई थी, फिर वे लोग वहां से चल पड़े।

जब हज़रत सलमान घर पहुंचे और वह अपने घर के अन्दर दाख़िल होने लगे तो उन्होंने कहा, अस्सलामु अलैकुम। फिर उन्होंने (मेरे बाप) हज़रत अबू क़ुर्रा को अन्दर आने की इजाज़त दी। मेरे बाप ने अन्दर जाकर देखा तो बिछौना बिछा हुआ था और उसके सरहाने कुछ कच्ची ईंटें थीं और थोड़ी सी कुछ और चीज़ भी रखी हुई थी।

उन्होंने मेरे बाप से कहा, तुम अपनी (आज़ाद की हुई) बांदी के इस बिस्तर पर बैठ जाओ जिसे वह अपने लिए बिछाती है।[1]

क़बीला बनू अब्द क़ैस के एक साहब कहते हैं कि मैंने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को गधे पर सवार एक लश्कर में देखा, जिसके वह अमीर थे। उन्होंने शलवार पहनी हुई थी, जिसकी पिंडलियां (हवा की वजह से) हिल रही थीं। फ़ौज वाले कह रहे थे, अमीर साहब आ रहे हैं।

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अच्छे और बुरे का पता तो आज (यानी दुनिया से जाने) के बाद (क़ियामत के दिन) चलेगा।[2]

क़बीला बनू अब्दे क़ैस के एक साहब कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक लश्कर के अमीर थे। मैं उनके साथ-साथ था, वह लश्कर के कुछ जवानों के पास से गुज़रे। जवान उन्हें देखकर हंसे और कहने लगे, यह हैं तुम्हारे अमीर।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 198,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 199.

मैंने हज़रत सलमान ने कहा, ऐ अबू अब्दुल्लाह! क्या आप देख नहीं रहे हैं कि यह क्या कर रहे हैं?

उन्होंने फ़रमाया, इन्हें छोड़ो। (जो करते हैं, करने दो), क्योंकि अच्छे और बुरे का पता तो आज के बाद (कल क़ियामत के दिन) चलेगा। अगर तुम्हारा बस चले तो मिट्टी खा लेना, लेकिन दो आदमियों का भी अमीर न बनना और मज़्लूम और बेबस व मजबूर की बद-दुआ से बचना, क्योंकि उनकी दुआ को कोई नहीं रोक सकता (सीधी अर्श पर जाती है)[1]

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु मदाइन के गवर्नर थे। वह घुटने तक की शलवार और चोग़ा पहन कर बाहर लोगों में निकलते, तो लोग उन्हें देखकर कहते, 'गर्ग आमद, गर्ग आमद'

हज़रत सलमान रज़ि० पूछते, ये लोग क्या कह रहे हैं?

लोग बताते कि ये आपको अपने एक खिलौने जैसा बता रहे हैं। हज़रत सलमान फ़रमाते कोई बात नहीं, (दुनिया में अच्छा या बुरा होने से फ़र्क़ नहीं पड़ता) असल में अच्छा वह है जो कल अच्छा गिना जाए।[2]

हज़रत हुरैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने देखा कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु एक गधे पर सवार हैं, जिसकी पीठ नंगी है और उन्होंने सुम्बुलान नामी जगह की बनी हुई छोटी सी क़मीज़ पहन रखी थी, जो नीचे से तंग थी, उनकी पिंडुलियां लम्बी थीं, उन पर बाल भी बहुत थे। क़मीज़ उनकी ऊंची थी जो घुटनों तक पहुंच रही थी। मैंने देखा कि बच्चे पीछे से उनके गधे को भगा रहे हैं। मैंने बच्चों से कहा, क्या तुम अमीर से परे नहीं हटते?

हज़रत सलमान ने फ़रमाया, इन्हें छोड़ो, अच्छे-बुरे का तो कल पता चलेगा।[3]

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 63,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 63
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 63

हज़रत साबित रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु मदाइन के गवर्नर थे। एक बार क़बीला बनू तैमुल्लाह का एक शामी आदमी आया। उसके पास भूसे का एक गट्ठर था। उसे रास्ते में हज़रत सलमान मिले। उन्होंने घुटने तक की शलवार और चोग़ा पहन रखा था। उस आदमी ने उनसे कहा, आओ, मेरा यह गट्ठर उठा लो। वह आदमी उनको पहचानता नहीं था।

हज़रत सलमान रज़ि० ने वह गट्ठर उठा लिया। जब और लोगों ने हज़रत सलमान रज़ि० को देखा तो उन्होंने उन्हें पहचान लिया और उस आदमी से कहा, यह तो (हमारे) गवर्नर हैं। उस आदमी ने हज़रत सलमान से कहा, मैंने आपको पहचाना नहीं। हज़रत सलमान ने फ़रमाया, नहीं, मैं तुम्हारे घर तक इसे पहुंचा दूंगा।

दूसरी सनद की रिवायत में यह है कि हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने (तुम्हारी ख़िदमत की) नीयत की है, इसलिए जब तक मैं इसे तुम्हारे घर तक नहीं पहुंचा दूंगा, इसे (सर से उतार कर) नीचे नहीं रखूंगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु अपने हाथों से काम करके कोई चीज़ तैयार किया करते थे। जब उन्हें इस काम से रक़म मिल जाती, तो गोश्त या मछली ख़रीद कर उसे पकाते, फिर कोढ़ के रोगियों को बुलाते और उनके साथ खाते।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु किसी को गवर्नर बनाकर भेजते तो उसके समझौता नामे में (लोगों को) यह लिखते कि जब तक यह तुम्हारे साथ अदल व इंसाफ़ का मामला करते रहें, तुम इनकी बात सुनते रहो और मानते रहो। चुनांचे जब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को मदाइन का गवर्नर बनाकर भेजा तो उनके समझौते नामे में यह

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 63,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 200,

लिखा कि इनकी बात सुनो और मानो और जो तुमसे मांगें, वह उनको दे दो।

वह जब हज़रत उमर रज़ि० के पास से चले, तो गधे पर सवार थे। गधे पर पालान पड़ा हुआ था और उस पर उनका सफ़र का सामान भी था। जब यह मदाइन पहुंचे, तो वहां के रहने वाले ज़िम्मियों ने और देहात के चौधरियों ने उनका स्वागत किया। उस वक़्त उनके हाथ में रोटी और गोश्त वाली हड्डी थी और गधे पर पालान पर बैठे हुए थे। उन्होंने अपना समझौता नामा उन लोगों को पढ़कर सुनाया, तो उन्होंने कहा, आप जो चाहें, हमसे फ़रमाइश करें।

उन्होंने फ़रमाया, जब तक मैं तुममें रहूं, मुझे खाना और मेरे इस गधे का चारा देते रहो, फिर वह काफ़ी दिनों तक रहे। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें लिखा कि (मदीना) आ जाओ। जब हज़रत उमर रज़ि० को पता चला कि हज़रत हुज़ैफ़ा मदीना पहुंचने वाले हैं, तो वह उनके रास्ते में एक जगह छिपकर बैठ गए, जहां से हज़रत हुज़ैफ़ा उन्हें न देख सकें।

हज़रत उमर रज़ि० ने देखा कि वह उसी हालत पर वापस आ रहे हैं, जिस हालत पर गए थे, तो बाहर निकलकर उन्हें चिमट गए और फ़रमाया, तू मेरा भाई है और मैं तेरा भाई हूं।[1]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मदाइन पहुंचे तो वह गधे पर सवार थे, जिस पर पालान पड़ा हुआ था और उनके हाथ में रोटी और गोश्त वाली हड्डी थी, जिसे वे गधे पर बैठे हुए खा रहे थे।[2]

हज़रत तलहा बिन मुसर्रिफ़ रिवायत करने वाले की रिवायत में यह भी है कि उन्होंने अपने दोनों पांव एक ओर लटका रखे थे।

हज़रत सुलैम अबू हुज़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर रफ़ू का काम करता था। हज़रत जरीर घर से बाहर आते और ख़च्चर पर सवार होते

1. कंज़, भाग 7, पृ० 23,
2. हुलीया, भाग 2, पृ० 277

और अपने पीछे अपने ग़ुलाम को बिठा लेते।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सल्लाम रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार में गुज़र रहे थे और इनके सर पर लकड़ियों का एक गट्ठा रखा हुआ था। किसी ने उनसे कहा, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? हालांकि अल्लाह ने आपको इतना दे रखा है कि आपको ख़ुद उठाने की ज़रूरत नहीं है, आप तो दूसरों से उठवा सकते हैं।

फ़रमाया, मैं अपने दिल से घमंड निकालना चाहता हूं, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि वह आदमी जन्नत में नहीं जा सकेगा, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी घमंड होगा।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, ख़ाकसारी की बुनियाद तीन चीज़ें हैं—

1. आदमी को जो भी मिले, उसे सलाम में पहल करे, २. मज्लिस में अच्छी जगह के बजाए ख़राब जगह में बैठने पर राज़ी हो जाए और ३. दिखावे और शोहरत को बुरा समझे।[3]

1. हैसमी, भाग 8, पृ० 273,
2. तर्ग़ीब, भाग 4, पृ० 345,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 143

हंसी-दिल्लगी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हंसी-दिल्लगी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमसे मज़ाक़ भी फ़रमा लेते हैं?

आपने फ़रमाया, हां, मगर मैं कभी ग़लत बात नहीं कहता।[1]

एक आदमी ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मज़ाक़ फ़रमाया करते थे? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, हां।

उस आदमी ने कहा, आपका मज़ाक़ कैसा होता था?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० के मज़ाक़ का यह क़िस्सा सुनाया कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी एक बीवी को खुला कपड़ा पहनने को दिया और फ़रमाया, इसे पहन लो और अल्लाह का शुक्र अदा करो और नई दुल्हन की तरह इसका दामन घसीट कर चलो।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अख़्लाक़ तमाम लोगों से अच्छे थे। मेरा एक भाई अबू उमैर नामी था जो दूध छोड़ चुका था। जब हुज़ूर सल्ल० हमारे यहां तशरीफ़ लाते और उसे देख लेते, तो फ़रमाते, ऐ अबू उमैर ! तुम्हारे नुग़ैर (यानी लाल चिड़िया या बुलबुल) का क्या हुआ? नुग़ैर परिन्दे के साथ अबू उमैर खेला करता था।

कभी-कभी नमाज़ का वक़्त आता और आप हमारे घर में होते, तो आप इर्शाद फ़रमाते कि मेरे नीचे जो बिछौना है, उसे झाड़ो और उस पर पानी छिड़को। हम ऐसे ही करते, फिर हुज़ूर सल्ल० आगे खड़े हो जाते, हम आपके पीछे खड़े हो जाते। आप हमें नमाज़ पढ़ाते, वह बिछौना

1. शिमाइल, पृ० 17, अदबुल मुफ़रद, पृ० 41,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 43

हुज़ूर के पत्तों का बना हुआ था।[1]

दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोगों के साथ घुल-मिलकर रहते थे, यहां तक कि आप मेरे छोटे भाई से फ़रमाते, ऐ अबू उमैर ! नुग़ैर परिन्दे का क्या बना ?[2]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां तशरीफ़ ले गए तो उनके एक बेटे को बड़ा ग़मगीन देखा, जिसका उपनाम अबू उमैर था।

हुज़ूर सल्ल० का तरीक़ा यह था कि आप जब अबू उमैर को देखा करते तो उससे मज़ाक़ फ़रमाया करते। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है, अबू उमैर ग़मगीन नज़र आ रहा है ?

घरवालों ने बताया कि उसका नुग़ैर परिंदा मर गया है जिससे यह खेला करता था। इस पर हुज़ूर सल्ल० उससे (दिल्लगी के लिए) फ़रमाने लगे, ऐ अबू उमैर ! नुग़ैर परिंदे का क्या बना ?[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया और उसने हुज़ूर सल्ल० से अपने लिए सवारी मांगी, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हम तुम्हें ऊंटनी का बच्चा देंगे।

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं ऊंटनी के बच्चे को क्या क्या करूंगा ? (मुझे तो सवारी के लिए जानवर चाहिए, वह बच्चा तो सवारी के काम नहीं आ सकेगा) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हर ऊंट ऊंटनी का बच्चा ही तो होता है।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 38
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 42, तिर्मिज़ी
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 506,
4. बिदाया, भाग 6, पृ० 46, अदबुल मुफ़रद, पृ० 41, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 224

अलैहि व सल्लम ने एक बार मुझसे मज़ाक़ में फ़रमाया, ओ दो कान वाले ![1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि देहात के रहने वाले एक आदमी का नाम ज़ाहिर था। वह गांव से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए (सब्ज़ी-तरकारी वग़ैरह) हदिया लाया करते और जब यह वापस जाने लगते, तो हुज़ूर सल्ल० उन्हें शहर की चीज़ें दे दिया करते और हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते, ज़ाहिर हमारा देहात है और हम उसका शहर हैं। हुज़ूर सल्ल० को उनसे बड़ी मुहब्बत थी, लेकिन थे यह बड़े बद-सूरत।

एक बार हज़रत ज़ाहिर अपना सामान बेच रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने पीछे से जाकर उनको कौली इस तरह भरी कि वह हुज़ूर सल्ल० को देख न सकें यानी उनकी कमर अपने सीने से लगाकर उनकी बग़लों के नीचे से दोनों हाथ ले जाकर उनकी आंखों पर रख लिए।

हज़रत ज़ाहिर ने कहा, मुझे छोड़ दो यह कौन है? फिर पीछे मुड़कर देखा तो हुज़ूर सल्ल० को पहचान लिया और अपनी पीठ पर हुज़ूर सल्ल० के सीने से अच्छी तरह चिमटाने लगे और हुज़ूर सल्ल० मज़ाक़ के तौर पर फ़रमाने लगे, इस ग़ुलाम को कौन ख़रीदेगा?

हज़रत ज़ाहिर ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप मुझे बेचेंगे तो मुझे खोटा और कम क़ीमत पाएंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन तुम अल्लाह के नज़दीक खोटे और कम क़ीमत नहीं हो, बल्कि अल्लाह के यहां तुम्हारी बड़ी क़ीमत है।[2]

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अन्दर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने सुना कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की आवाज़ हुज़ूर सल्ल० से ऊंची हो रही है, उन्होंने अन्दर जाकर थप्पड़ मारने के लिए हज़रत आइशा रज़ि० को पकड़ा और फ़रमाया, तुम अपनी आवाज़ अल्लाह के रसूल से ऊंची

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 46, शिमाइल, पृ० 16, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 142,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 46, हैसमी, भाग 9, पृ० 369

कर रही हो। हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबूबक्र रज़ि० को रोकने लगे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० इसी गुस्से में वापस चले गए।

जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० वापस चले गए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया देखा, मैंने तुम्हें कैसे उस आदमी से छुड़ा लिया?

कुछ दिनों के बाद फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से अन्दर आने की इजाज़त मांगी, (इजाज़त मिलने पर अन्दर गए) तो देखा कि दोनों में यानी हुज़ूर सल्ल० और आइशा रज़ि० में सुलह हो चुकी है। इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, जैसे आप दोनों ने अपनी लड़ाई में शरीक किया था, ऐसे ही अपनी सुलह में भी मुझे शरीक कर लें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हमने तुम्हें शरीक कर लिया, तुम्हें शरीक कर लिया।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सफ़र में गई। मैं उस वक़्त नव-उम्र लड़की थी। मेरे देह पर गोश्त भी कम था और मेरा बदन भारी नहीं था। हुज़ूर सल्ल० ने लोगों से कहा, आप लोग आगे चले जाएं। चुनांचे सब चले गए तो मुझसे फ़रमाया, आओ, मैं तुमसे दौड़ में मुक़ाबला करूं। चुनांचे हम दोनों में मुक़ाबला हुआ, तो मैं हुज़ूर सल्ल० से आगे निकल गई और हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे।

फिर मेरे जिस्म पर मांस ज़्यादा हो गया और मेरा देह भारी हो गया और मैं पहले क़िस्से को भूल गई, तो फिर मैं आपके साथ सफ़र में गई। आपने लोगों से कहा, आगे चले जाओ।

लोग आगे चले गए, फिर मुझसे फ़रमाया, आओ, मैं तुमसे दौड़ में मुक़ाबला करूं। चुनांचे हम दोनों में मुक़ाबला हुआ, तो हुज़ूर सल्ल० मुझसे आगे निकल गए। हुज़ूर सल्ल० हंसने लगे और फ़रमाया, यह पहली दौड़ के बदले में है। (अब मामला बराबर हो गया।)[2]

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 46,
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 68

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में चल रहे थे। एक हुदी पढ़ने वाला (हुदी उन पदों को कहा जाता है, जिन्हें पढ़ने से ऊंट और तेज़ चलने लगते हैं) हुज़ूर सल्ल० की पाक बीवियों के ऊंटों को हुदी पढ़कर आगे से चला रहा था और ये पाक बीवियां हुज़ूर सल्ल० से आगे-आगे जा रही थीं। हुज़ूर सल्ल० ने (हुदी पढ़ने वाले को) फ़रमाया, ऐ अनजशा ! तेरा भला हो। इन कांच की शीशियों के साथ नर्मी करो (ऊंटों को ज़्यादा तेज़ न चलाओ।)[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी कुछ बीवियों के पास गए। उन पाक बीवियों के साथ हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अनजशा ! इन शीशियों को धीरे-धीरे लेकर चलो। (ऊंट ज़्यादा हुदी सुनकर मस्ती में आ गए, तो ये औरतें गिर जाएंगी या हुदी के पदों से इनके दिल चकनाचूर हो जाएंगे।)

हज़रत अबू क़लाबा कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने ऐसी बात इर्शाद फ़रमाई है, अगर तुममें से कोई यह बात कहता तो तुम इसे ऐब की बात समझते और वह बात यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इन शीशियों को धीरे से लेकर चलो।[2]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बूढ़ी औरत ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! आप दुआ फ़रमा दें कि अल्लाह मुझे जन्नत में दाख़िल करे।

आपने फ़रमाया, ऐ उम्मे फ्लां ! जन्नत में कोई बूढ़ी औरत नहीं जाएगी। वह औरत रोते हुए वापस जाने लगी, तो आपने फ़रमाया, इसे बता दो कि वह जन्नत में बुढ़ापे की हालत में दाख़िल नहीं होगी (बल्कि जवान कुंवारी बनकर जन्नत में आएगी) क्योंकि अल्लाह फ़रमाते हैं—

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 47,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 41,

إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا (سورت واقعہ آیت ۳۵، ۳۶)

'हमने (वहां की) इन औरतों को ख़ास तौर से बनाया है यानी हमने उनको ऐसा बनाया कि वे कुंवारियां हैं।' (सूर: वाक़िया, आयत 35-36)[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का मज़ाक़ और दिल्लगी

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं तबूक की लड़ाई में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप चमड़े के एक छोटे ख़ेमे में तशरीफ़ रखते थे। मैंने आपको सलाम किया। आपने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया, अन्दर आ जाओ।

मैंने अर्ज़ किया, क्या सारा ही आ जाऊं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सारे ही आ आओ। चुनांचे मैं अन्दर चला गया।

हज़रत वलीद बिन उस्मान बिन अबुल आलिया फ़रमाते हैं कि हज़रत औफ़ रज़ि० ने जो यह कहा कि क्या मैं सारा ही आ जाऊं? यह ख़ेमे के छोटे होने की वजह से कहा था।[2]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई मज़ाक़ की बात की तो हज़रत आइशा रज़ि० की मां ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इस क़बीले की कुछ मज़ाक़ की बातें क़बीला किनाना से हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह ख़ानदान हमारे मज़ाक़ का एक हिस्सा है।[3]

हज़रत अबुल हैसम रहमतुल्लाहि अलैहि को एक साहब ने बताया

1. शिमाइल, पृ० 17
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 46,
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 41,

कि उन्होंने ख़ुद सुना कि हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हर्ब रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मज़ाक़ के तौर पर कह रहे थे। अल्लाह की क़सम ! ज्यों ही मैंने आपसे लड़ाई करनी छोड़ी, तमाम अरब ने भी छोड़ दी, वरना आपकी वजह से सींग वाला और बे-सींग वाला, सभी एक दूसरे से टकरा रहे थे।

हुज़ूर सल्ल० सुनकर मुस्कराते रहे और आपने फ़रमाया, ऐ अबू हंज़ला ! तुम भी ऐसी बातें करते हो।[1]

हज़रत बक्र बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा मज़ाक़ में एक दूसरे पर ख़रबूज़े फेंकते थे, लेकिन जब हक़ीक़त और काम का वक़्त होता तो उस वक़्त वह मर्द मैदान होते (यानी उस वक़्त मज़ाक़ नहीं करते थे, (जब काम न होता तो कभी-कभी करते थे।[2]

हज़रत क़ुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने सीरीन से पूछा कि क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा आपस में हंसी मज़ाक़ किया करते थे ?

हज़रत इब्ने सीरीन ने कहा, हां, वह आम लोगों जैसे ही थे। चुनांचे हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा मज़ाक़ में यह शेर पढ़ा करते—

يُحِبُّ الْخَمْرَ مِنْ مَالِ النَّدَامٰى   وَيَكْرَهُ اَنْ تُفَارِقَهُ الْفُلُوْسُ

'वह कंजूस है, इसलिए अपने साथियों के माल से शराब पीना चाहता है और माल की जुदाई से उसे बड़ी नागवारी होती है।[3]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत की ग़रज़ से बसरा (शामदेश का एक शहर) तशरीफ़ ले गए, उनके साथ हज़रत नुऐमान और हज़रत सुवैबित बिन

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 43,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 41,
3. हैसमी, भाग 8, पृ० 89

हरमला रज़ियल्लाहु अन्हुमा बद्री सहाबी भी थे। हज़रत सुवैबित खाने के सामान के ज़िम्मेदार थे। हज़रत नुऐमान ने उनसे कहा, मुझे कुछ खाना खिला दो।

हज़रत सुवैबित ने कहा, हज़रत अबबक्र रज़ि० गए हुए हैं, जब वह आ जाएंगे, तो खिला दूंगा।

हज़रत नुऐमान की तबियत में हंसी और मज़ाक़ बहुत ज़्यादा था। वहां क़रीब में कुछ लोग अपने जानवर लेकर आए हुए थे। हज़रत नुऐमान ने उनसे जाकर कहा, मेरा एक ख़ूब चुस्त और ताक़तवर अरबी ग़ुलाम है, तुम लोग उसे ख़रीद लो। उन लोगों ने कहा, बहुत अच्छा।

हज़रत नुऐमान ने कहा, बस इतनी बात है कि वह ज़रा बातूनी है और शायद वह यह भी कहे कि मैं आज़ाद हूं। अगर तुम उसके इस कहने की वजह से उसे छोड़ दोगे तो फिर रहने दो, यह सौदा मत करो और मेरे ग़ुलाम को न बिगाड़ो।

उन्होंने कहा, नहीं, हम तो इसे ख़रीदेंगे और इसे नहीं छोड़ेंगे। चुनांचे इन लोगों ने दस जवान ऊंटनियों के बदले में उन्हें ख़रीद लिया। हज़रत नुऐमान दस ऊंटनियां हांकते हुए आए और उन लोगों को भी साथ लाए और आकर उन लोगों ने कहा, यह रहा तुम्हारा वह ग़ुलाम! इसे ले लो।

जब वे लोग हज़रत सुवैबित को पकड़ने लगे तो हज़रत सुवैबित ने कहा, हज़रत नुऐमान ग़लत कह रहे हैं, मैं तो आज़ाद आदमी हूं। उन लोगों ने कहा, उन्होंने तुम्हारी यह बात हमें पहले ही बता दी थी। चुनांचे वे लोग हज़रत सुवैबित के गले में रस्सी डालकर ले गए।

इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि० वापस आए, तो उन्हें इस क़िस्से का पता चला तो वह और उनके साथी इन ख़रीदने वालों के पास गए और सारी बात बताकर उनकी ऊंटनियां उनको वापस कीं और हज़रत सुवैबित को वापस लेकर आए। फिर मदीना वापस आकर इन लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सारा वाक़िया सुनाया तो हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० इस क़िस्से को याद करके साल

भर हंसते रहे।[1]

इन लोगों के दिल बिल्कुल साफ़-सुथरे थे और हज़रत सुवैबित को मालूम था कि हज़रत नुऐमान की तबियत में हंसी-मज़ाक़ बहुत है, इसलिए उन्होंने कुछ बुरा न मनाया।

हज़रत रबीआ बिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आया और अपनी ऊंटनी मस्जिद से बाहर बिठा कर मस्जिद के अन्दर चला गया।

हज़रत नुऐमान बिन अम्र अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु, जिन्हें अन-नुऐमान कहा जाता था, उनसे हुज़ूर सल्ल० के कुछ सहाबा ने कहा, हमारा गोश्त खाने को बहुत दिल चाह रहा है। अगर तुम इस ऊंटनी को ज़िब्ह कर दो और हमें इसका गोश्त खाने को मिल जाए तो बहुत मज़ा आएगा। हुज़ूर सल्ल० बाद में ऊंटनी की क़ीमत उसके मालिक को दे देंगे।

चुनांचे हज़रत नुऐमान ने उस ऊंटनी को ज़िब्ह कर दिया। फिर वह देहाती बाहर आया और अपनी ऊंटनी को देखकर चीख पड़ा कि ऐ मुहम्मद! हाय, उन लोगों ने मेरी ऊंटनी को ज़िब्ह कर दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल० मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले आए और पूछा, यह किसने किया है?

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, नुऐमान ने।

हुज़ूर सल्ल० नुऐमान के पीछे चल पड़े और उसका पता करते-करते आखिर हज़रत ज़ुबाआ बिन्त ज़ुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा के घर पहुंच गए। हज़रत नुऐमान उसके अन्दर एक गढ़े में छिपे हुए थे और उन्होंने अपने ऊपर खजूर की टहनियां और पत्ते वग़ैरह डाल रखे थे। चुनांचे एक आदमी ने ऊंची आवाज़ से यह तो कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैंने उसे नहीं देखा, लेकिन उंगली से उस जगह की

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 98, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 26, भाग 3, पृ० 573

ओर इशारा कर दिया, जहां हज़रत नुऐमान छिपे हुए थे।

हुज़ूर सल्ल० ने वहां जाकर उन्हें बाहर निकाला, तो पत्तों वग़ैरह की वजह से उनका चेहरा बदला हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तुमने ऐसा क्यों किया?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! जिन लोगों ने अब आपको मेरा पता बताया है, उन्होंने ही मुझे कहा था कि इस ऊंटनी को ज़िब्ह कर दो।

हुज़ूर सल्ल० मुस्कराने लगे और उनका चेहरा साफ़ करने लगे और फिर हुज़ूर सल्ल० ने उस देहाती को इस ऊंटनी की क़ीमत अदा की।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुसअब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत मख़्रमा बिन नौफ़ल बिन उहैब ज़ोहरी रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना मुनव्वरा में एक आंखों के अंधे बड़े मियां थे। उनकी उम्र एक सौ पन्द्रह साल थी। एक दिन वह मस्जिद में पेशाब करने खड़े हुए, तो लोगों ने शोर मचा दिया। हज़रत नुऐमान बिन अम्र बिन रिफ़ाआ बिन हारिस बिन सवाद नज्जारी रज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास आए और उन्हें मस्जिद के एक कोने में ले गए और उनसे कहा, यहां बैठकर पेशाब कर लो और उन्हें बिठाकर ख़ुद वहां से चले गए। उन्होंने वहां पेशाब कर लिया तो लोगों ने शोर मचा दिया।

पेशाब करने के बाद उन्होंने कहा, तुम्हारा भला हो, मुझे यहां कौन लाया था?

लोगों ने कहा, नुऐमान बिन अम्र ने।

उन्होंने कहा, अल्लाह उनके साथ यह करे और यह करे (यानी उन्हें बद-दुआ दी और मैं भी नज़्र मानता हूं कि अगर वह मेरे हाथ लग गए तो मैं उन्हें अपनी इस लाठी से बहुत ज़ोर से मारूंगा, चाहे उनका कुछ भी हो जाए। इस वाक़िए को काफ़ी दिन गुज़र गए, यहां तक कि हज़रत मख़्रमा भी भूल गए।

एक दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद के कोने में खड़े

1. इस्तीआब, भाग 3, पृ० 575, इसाबा, भाग 3, पृ० 570

हुए नमाज़ पढ़ रहे थे और हज़रत उस्मान रज़ि० बड़ी यकसूई से नमाज़ पढ़ा करते थे, इधर-उधर तवज्जोह न फ़रमाया करते। हज़रत नुऐमान हज़रत मख़्रमा के पास गए और उनसे कहा, क्या आप नुऐमान को मारना चाहते हैं?

उन्होंने कहा, जी हां। वह कहां है? मुझे बताओ। हज़रत नुऐमान ने लाकर उन्हें हज़रत उस्मान के पास खड़ा कर दिया और कहा, यह हैं मार लो। हज़रत मख़्रमा ने दोनों हाथों से लाठी इस ज़ोर से मारी कि हज़रत उस्मान रज़ि० के सर में घाव हो गया। लोगों ने उन्हें बताया कि आपने तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ि० को मार दिया।

हज़रत मख़्रमा के क़बीला बनू ज़ोहरा ने जब यह सुना तो वह सब जमा हो गए। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह नुऐमान पर लानत करे। तुम नुऐमान को छोड़ दो, क्योंकि वह बद्र के मैदान में शरीक हुआ था। (इसलिए इनकी रियायत करनी चाहिए।)[1]

---

1. इस्तीआब, भाग 3, पृ० 577, इसाबा, भाग 3, पृ० 570

सख़ावत और दान

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सख़ावत और दान

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नेकी के कामों में तमाम लोगों से ज़्यादा सख़ी थे और आपका सख़ी होना सबसे ज़्यादा रमज़ान में ज़ाहिर होता, जब आपकी मुलाक़ात हज़रत जिब्रील से होती और हज़रत जिब्रील रमज़ान की हर रात में हुज़ूर सल्ल० से मिला करते और आपसे क़ुरआन का दौर करते और फिर तो आप ख़ैर और नेकी के कामों में आम लोगों को फ़ायदा पहुंचाने वाली हवा से भी ज़्यादा सख़ी हो जाते।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि कभी ऐसे नहीं हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई चीज़ मांगी गई हो और आपने फ़रमाया हो नहीं।[2]

हज़रत अबू उसैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो चीज़ भी मांगी जाती थी, आप उसे रोकते नहीं थे (बल्कि दे दिया करते थे)।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई चीज़ मांगी जाती और आपका देने का इरादा होता, तो आप हां फ़रमाते और (न होने की वजह से) न देने का इरादा फ़रमाते तो ख़ामोश हो जाते और किसी चीज़ के बारे में न न फ़रमाते।[4]

---

1. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 69, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 195
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 43.
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 13
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 13.

हज़रत रुबैअ बिन्त मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मुझे मेरे बाप मुअव्विज़ बिन अफ़रा ने एक साअ ताज़ा खजूरें जिन पर छोटी-छोटी रोएंदार ककड़ियां रखी हुई थीं, देकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा। हुज़ूर सल्ल० को ककड़ी बहुत पसन्द थी, उस वक़्त बहरैन से कुछ ज़ेवर हुज़ूर सल्ल० के पास आए हुए थे, हुज़ूर सल्ल० ने हाथ भरकर वे ज़ेवर मुझे दिए।

एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझे इतना सोना या ज़ेवर दिए जिससे मेरे दोनों हाथ भर गए थे।[1]

इमाम अहमद की रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्ल० ने यह भी फ़रमाया, यह ज़ेवर पहन कर अपने आपको सजा लेना।

हज़रत उम्मे सुंबला रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ हदिया लेकर गईं। आपकी प्यारी बीवियों ने उसे क़ुबूल करने से इंकार कर दिया और कह दिया कि हम नहीं लेंगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पाक बीवियों को फ़रमाया तो उन्होंने लिया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उम्मे सुंबुला को एक घाटी जागीर के तौर पर अता फ़रमाई, जिसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श ने बाद में हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुम से ख़रीदा।[2]

माल ख़र्च करने के उन्वान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सख़ावत के क़िस्से गुज़र चुके हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की सख़ावत

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक औरत ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मैंने यह नीयत की है कि मैं यह कपड़ा अरब के सबसे ज़्यादा

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 13, बिदाया, भाग 6, पृ० 56,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 14,

सख़ी आदमी को दूंगी। पास ही हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए थे, हुज़ूर सल्ल० ने इनकी ओर इशारा करते हुए फ़रमाया, इस नवजवान को दे दो।

(चुनांचे उस औरत ने हज़रत सईद को यह कपड़ा दे दिया) इसी वजह से इन कपड़ों को सईदी कपड़े कहा गया।[1]

माल ख़र्च करने के उन्वान में सहाबा के क़िस्से गुज़र चुके हैं।

ईसार और हमदर्दी

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम पर एक ऐसा ज़माना भी आया है कि हममें से कोई भी अपने आपको दीनार व दिरहम का अपने मुसलमान भाई से ज़्यादा हक़दार नहीं समझता था और अब ऐसा ज़माना आ गया है कि हमें दीनार व दिरहम से अपने मुसलमान भाई से ज़्यादा मुहब्बत है। आगे और भी हदीस है।[2]

ईसार के और क़िस्से, सख़्त प्यास, कपड़ों की कमी और अंसार के क़िस्से और ज़रूरत के बावजूद ख़र्च करने के उन्वान में गुज़र चुके हैं।

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 189,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 185,

सब्र करना

आम बीमारियों पर सब्र करना

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सब्र

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया। हुज़ूर सल्ल० को बुख़ार चढ़ा हुआ था। आपने एक चादर ओढ़ी हुई थी। मैंने चादर के ऊपर से हाथ रखा और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपको कितना तेज़ बुख़ार चढ़ा हुआ है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हम (नबियों) पर इसी तरह सख़्त तक्लीफ़ और आज़माइश आया करती है और हमारा अज्र व सवाब भी दोगुना होता है।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! लोगों में सबसे ज़्यादा आज़माइश किन पर आई है?

आपने फ़रमाया, नबियों पर। मैंने कहा, फिर किन पर? आपने फ़रमाया, उलेमा पर। मैंने कहा, फिर किन पर? आपने फ़रमाया, नेक बन्दों पर। कुछ नेक बन्दों के जिस्म में इतनी जुएं पड़ जाती थीं कि उसी में उनका इन्तिक़ाल हो जाता था और कुछ पर इतनी तंगदस्ती आई थी कि उन्हें चोग़ा के अलावा कोई और चीज़ पहनने को न मिलती थी, लेकिन तुम्हें दुनिया मिलने से जितनी ख़ुशी होती है, उन्हें आज़माइश और तक्लीफ़ से इससे ज़्यादा ख़ुशी होती थी।[1]

हज़रत अबू उबैदा बिन हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उनकी फूफी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हम औरतें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूछने के लिए गईं, हुज़ूर सल्ल० को बुख़ार चढ़ा हुआ था। आपके फ़रमाने पर पानी का एक मश्कीज़ा

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 243, कंज़, भाग 2, पृ० 154, हुलीया, भाग 1, पृ० 370,

पेड़ पर लटकाया गया, फिर आप उसके नीचे लेट गए और उस मश्कीज़े से पानी की बूंदें आपके सर पर टपकने लगीं। चूंकि आपको बुख़ार बहुत तेज़ था, उस (की तेज़ी कम करने के) लिए आपने ऐसा किया था।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप अल्लाह से यह दुआ करते कि वह आपकी बीमारी को दूर कर दे तो बहुत ही अच्छा होता।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तमाम इंसानों में सबसे ज़्यादा सख़्त तक्लीफ़ और आज़माइश नबियों पर आती है, फिर उन पर जो उनके क़रीब हों, फिर उन पर जो उनके क़रीब हों, फिर उन पर जो उनके क़रीब हों।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को बीमार हो गए, फिर आपकी बीमारी बढ़ने लगी और आप अपने बिस्तर पर करवटें बदलने लगे। मैंने कहा, हममें से कोई इस तरह करता तो आप उस पर नाराज़ होते।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मोमिन बन्दों पर तक्लीफ़ ज़्यादा आती है और मोमिन बन्दे को जो भी तक्लीफ़ पहुंचती है, चाहे बीमारी हो या कांटा ही लगे, अल्लाह इसकी वजह से उसकी ख़ताओं को मिटा देते हैं और उसके दर्जे बुलन्द फ़रमा देते हैं।[2]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ि० का बीमारियों पर सब्र

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बुख़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आने की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, यह कौन है? बुख़ार ने कहा, उम्मे मिलदम हूं। (यह बुख़ार का उपनाम है) हुज़ूर सल्ल० ने बुख़ार को हुक्म दिया कि क़ुबा वालों में चले जाओ, (चुनांचे बुख़ार उधर चला गया) और उन्हें बुख़ार होने लगा और अल्लाह ही जानता है कि उन्हें कितना बुख़ार

1. कंज़, भाग 2, पृ० 154, हैसमी, भाग 2, पृ० 292,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 154, हैसमी, भाग 2, पृ० 292,

हुआ। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर बुख़ार की शिकायत की।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग क्या चाहते हो? अगर तुम लोग चाहो, तो मैं अल्लाह से दुआ कर दूं और अल्लाह तुम्हारा बुख़ार दूर कर दे और अगर तुम चाहो, तो (तुम्हारा बुख़ार बाक़ी रहे और) यह बुख़ार तुम्हारे लिए (गुनाहों से) पाकी का ज़रिया बन जाए।

उन क़ुबा वालों ने अर्ज़ किया, क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, तो उन्होंने अर्ज़ किया, फिर तो बुख़ार को रहने दें।[1]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बुख़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हाज़िरी की इजाज़त चाही। हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम कौन हो?

उसने कहा, मैं बुख़ार हूं, गोश्त को काटता हूं और ख़ून चूस लेता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाओ क़ुबा वालों के पास चले जाओ। चुनांचे बुख़ार क़ुबा वालों के पास चला गया और (और क़ुबा वालों के चेहरे पीले हो गए) तो उन्होंने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बुख़ार की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम लोग क्या चाहते हो? अगर तुम चाहो तो मैं अल्लाह से दुआ करूं और वह तुम्हारा बुख़ार दूर कर दे और अगर तुम चाहो तो बुख़ार को रहने दो और तुम लोगों के बाक़ी तमाम गुनाह माफ़ हो जाएं।

उन्होंने कहा, ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आप बुख़ार को रहने दें।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बुख़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे आप अपने उन सहाबा के पास भेज दें जिन्हें आप सबसे ज़्यादा चाहते हों। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अंसार के पास चले

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 260
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 306, बिदाया, भाग 6, पृ० 160,

जाओ। चुनांचे बुख़ार उनके पास चला गया और सबको बुख़ार आने लगा, जिसकी वजह से वे सब गिर गए।

अंसार ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हमारे यहां बुख़ार आया हुआ है, आप हमारे लिए सेहत व शिफ़ा की दुआ फ़रमा दें। हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमाई तो बुख़ार चला गया।

एक औरत हुज़ूर सल्ल० के पीछे आई और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए दुआ फ़रमा दें, मैं भी अंसार में से हूं, इसलिए मेरे लिए भी वही दुआ फ़रमा दें जैसे आपने अंसार के लिए दुआ फ़रमाई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें इन दो बातों में से कौन-सी बात ज़्यादा पसन्द है? एक यह कि मैं तुम्हारे लिए दुआ कर दूं और तुम्हारा बुख़ार चला जाए। दूसरी यह कि तुम सब्र करो और तुम्हारे लिए जन्नत वाजिब हो जाए?

उसने तीन बार कहा, नहीं। अल्लाह की क़सम, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं सब्र करूंगी और फिर कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं अल्लाह की जन्नत को ख़तरे में नहीं डाल सकती।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक नवजवान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुआ करता था, वह कुछ दिन न आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है? फ़्लां नज़र नहीं आ रहा है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, उसे बुख़ार हो गया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उठो, उसका पूछना करने चलें।

जब हुज़ूर सल्ल० उस नवजवान के घर में उसके पास गए तो वह रोने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, मत रोओ, क्योंकि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझे ख़बर दी है कि बुख़ार मेरी उम्मत के लिए जहन्नम के बदले में है।[2]

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 160, अदबुल मुफ़रद, पृ० 73
2. मज्मा, भाग 2, पृ० 302

हज़रत अबू सफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार पड़े तो कुछ लोग उनका पूछना करने आए और उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा रज़ि० ! क्या हम आपके लिए किसी डाक्टर को न बुला लाएं, जो आपको देख ले?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, डाक्टर मुझे देख चुका है, (यानी अल्लाह तआला)

इन लोगों ने पूछा, फिर उस डाक्टर ने आपको क्या कहा है?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, उसने कहा है कि मैं जो चाहता हूं, उसे कर गुज़रता हूं।[1]

हज़रत मुआविया बिन क़ुर्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार बीमार हो गए तो उनके पास उनके साथी आए और उन्होंने कहा, ऐ अबुद्दर्दा ! आपको क्या शिकायत है?

उन्होंने कहा कि मुझे अपने गुनाहों से शिकायत है? उन्होंने पूछा, आप क्या चाहते हैं? उन्होंने फ़रमाया, मैं जन्नत चाहता हूं।

उन्होंने कहा, क्या हम आपके लिए किसी डाक्टर को बुला न लाएं?

उन्होंने फ़रमाया, डाक्टर ने ही तो मुझे (बीमार करके बिस्तर पर) लिटाया है, (यानी अल्लाह ने।)[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रह्मतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, शामदेश में प्लेग की महामारी फैली, तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह प्लेग तो अज़ाब है, इसलिए तुम लोग इससे भाग कर घाटियों में चले जाओ। यह बात जब हज़रत शुरहबील बिन हसना रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची तो उन्हें ग़ुस्सा आ गया और फ़रमाया, हज़रत अम्र बिन आस ग़लत कहते हैं। मैं तो (शुरू ज़माने में मुसलमान होकर) हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की सोहबत आख़्तियार कर चुका था

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 141, हुलीया, भाग 1, पृ० 34, कंज़, भाग 2, पृ० 153,
2. हलीया, भाग 1, पृ० 218, इब्ने साद, भाग 7, पृ० 118,

और उन दिनों हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० तो अपने घरवालों के ऊंट से ज़्यादा गुमराह थे (यानी वह काफ़िर थे) यह प्लेग तो तुम्हारे नबी की दुआ है। (क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने दुआ मांगी है कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को नेज़ों के ज़रिए भी अपने रास्ते की शहादत नसीब फ़रमा और प्लेग के ज़रिए भी) और यह तुम्हारे रब की रहमत है (कि प्लेग से जो मरेगा, वह अल्लाह के यहां शहीद जाना जाएगा) और तुमसे पहले जो नेक लोग थे, यह उनकी वफ़ात का ज़रिया है।

यह बात हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को पहुंची तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इस प्लेग की बीमारी में से मुआज़ की सन्तान को बड़ा हिस्सा नसीब फ़रमा।

चुनांचे इनकी दो बेटियां इसी बीमारी में इंतिक़ाल कर गईं और इनके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान को भी प्लेग हो गया तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने कहा, यह सच्ची बात आपके रब की ओर से (बतलाई गई) है। इसलिए आप शक करने वालों में से हरगिज़ न बनें। तो हज़रत मुआज़ ने फ़रमाया, तुम मुझे इनशाअल्लाह सब्र करने वालों में से पाओगे।

और हज़रत मुआज़ रज़ि० को हथेली की पीठ पर प्लेग का दाना निकल आया तो फ़रमाने लगे, यह दाना मुझे लाल ऊंटों से ज़्यादा प्रिय है। उन्होंने देखा कि उनके पास बैठा हुआ एक आदमी रो रहा है, फ़रमाया, तुम क्यों रो रहे हो?

उस आदमी ने कहा, मैं इस इल्म की वजह से रो रहा हूं जो मैं आपसे हासिल किया करता था। फ़रमाया, मत रो, क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ऐसे इलाक़े में रहते थे, जहां कोई आलिम नहीं था, तो अल्लाह ने उन्हें इल्म अता फ़रमाया, इसलिए जब मैं मर जाऊं तो इन चार आदमियों से इल्म हसिल करना, यानी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत सलमान और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम।[1]

1. कंज़, भाग 4, पृ० 325, हैसमी, भाग 2, पृ० 312, हाकिम, भाग 1, पृ० 276, हुलीया, भाग 1, पृ० 240,

अबू नुऐम की रिवायत में यह है कि हज़रत मुआज़, हज़रत अबू उबैदा, हज़रत शुरहबील बिन हसना और हज़रत अबू मालिक अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुम एक ही दिन प्लेग की बीमारी के शिकार हुए, तो हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, यह प्लेग तुम्हारे रब की तरफ़ से रहमत है (कि इस पर शहादत का दर्जा मिलता है) और तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ है और तुमसे पहले के नेक बन्दों की रूह क़ब्ज़ करने का ज़रिया है। ऐ अल्लाह ! आले मुआज़ को इस रहमत में से बड़ा हिस्सा अता फ़रमा।

अभी शाम नहीं हुई थी कि उनके बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान को प्लेग हो गया। यह उनके सबसे पहले बेटे थे और उसी के नाम से इनका उपनाम अबू अब्दुर्रहमान था और हज़रत मुआज़ रज़ि० को उससे मुहब्बत सबसे ज़्यादा थी।

हज़रत मुआज़ मस्जिद में आए तो देखा कि उनका बेटा अब्दुर्रहमान बहुत बेचैन है, तो उन्होंने कहा, ऐ अब्दुर्रहमान ! तुम कैसे हो?

अब्दुर्रहमान ने जवाब में कहा, यह सच्ची बात आपके रब की ओर से है। आप शक करने वालों में से हरगिज़ न हों।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने फ़रमाया, और इनशाअल्लाह, तुम मुझे सब्र करने वालों में से पाओगे। आख़िर उसी रात अब्दुर्रहमान का इंतिक़ाल हो गया और अगले दिन उनको हज़रत मुआज़ रज़ि० ने दफ़न किया। फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० को भी प्लेग की बीमारी हो गई और नज़ा की ऐसी सख़्त हालत उनको हुई कि किसी को न हुई होगी। जब भी मौत की सख़्ती में इनको कमी महसूस होती तो आंख खोलकर कहते, ऐ मेरे रब ! तू मेरा जितना गला घोंटना चाहता है, घोंट ले, तेरी इज़्ज़त की क़सम ! तू जानता है कि मेरा दिल तुझसे बहुत मुहब्बत करता है।[1]

हज़रत शहर बिन ख़ौशब रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी क़ौम के एक आदमी हज़रत राबा से विरायत करते हैं कि जब प्लेग की महामारी फैलने लगी, तो हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों में बयान करने

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 211

खड़े हुए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! यह बीमारी तो तुम्हारे रब की रहमत है और तुम्हारे नबी की दुआ है और तुमसे पहले के नेक बन्दों की मौत का ज़रिया थी और अबू उबैदा अल्लाह से दरख़्वास्त करता है कि अल्लाह अबू उबैदा को इस बीमारी में से उसका हिस्सा अता फ़रमाए। चुनांचे उन्हें भी प्लेग की बीमारी हुई जिसमें उनका इंतिक़ाल हो गया।

फिर उनके बाद हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों के अमीर बने, तो उन्होंने भी खड़े होकर बयान किया और फ़रमाया, ऐ लोगो ! यह बीमारी तुम्हारे रब की रहमत है और तुम्हारे नबी की दुआ है और तुमसे पहले के नेक बन्दों की मौत का ज़रिया थी। मुआज़ अल्लाह से दरख़्वास्त करता है कि वह मुआज़ की औलाद को इस बीमारी में से उनका हिस्सा अता फ़रमाए। चुनांचे उनके बेटे अब्दुर्रहमान को प्लेग की बीमारी हुई और उसमें उनका इंतिक़ाल हो गया।

फिर हज़रत मुआज़ रज़ि० ने खड़े होकर अपने लिए बीमार होने की दुआ मांगी तो उनकी हथेली में प्लेग का दाना निकल आया। मैंने देखा कि हज़रत मुआज़ रज़ि० उसे देख रहे थे और अपनी हथेली को पलट कर फ़रमा रहे थे। (ऐ हथेली !) मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि तुझमें जो यह प्लेग की बीमारी है, उसके बदले मुझे दुनिया की कोई चीज़ मिल जाए।

जब हज़रत मुआज़ रज़ि० का इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को लोगों का अमीर बनाया गया, तो उन्होंने खड़े होकर बयान किया और फ़रमाया, ऐ लोगो ! यह बीमारी जब किसी को होती है तो आग की तरह भड़कती है, इसलिए तुम लोग पहाड़ों में जाकर इससे अपनी जान बचाओ।

इस पर हज़रत वासिला हुज़ली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, आप ग़लत कह रहे हो, अल्लाह की क़सम, मैं इस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में रहा हूं, जिस वक़्त आप मेरे इस गधे से ज़्यादा गुमराह थे (यानी काफ़िर थे)।

हज़रत अम्र रज़ि० ने फ़रमाया, आप जो कह रहे हैं, मैं इसका जवाब तो नहीं दूंगा, लेकिन अल्लाह की क़सम ! अब हम लोग यहां नहीं

रहेंगे। चुनांचे हज़रत अम्र बिन आस वहां से चले गए और लोग भी चले गए और इधर-उधर बिखर गए और अल्लाह ने प्लेग की बीमारी इनसे दूर फ़रमा दी।

जब हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अम्र बिन आस की इस राय की ख़बर मिली तो अल्लाह की क़सम! उन्होंने उसे नापसंद न फ़रमाया।[1]

हज़रत अबू क़िलाबा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि शामदेश में प्लेग की बीमारी फैली तो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, यह नापाक बीमारी फैल चुकी है, इसलिए तुम यहां से चले जाओ और घाटियों में इधर-उधर बिखर जाओ।

हज़रत मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब उनकी इस बात का पता चला तो उन्होंने उनकी इस बात की तस्दीक़ न फ़रमाई, बल्कि फ़रमाया, नहीं, यह प्लेग तो शहादत का दर्जा दिलाता है और इसकी वजह से अल्लाह की रहमत उतरती है और यह तुम्हारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ है, ऐ अल्लाह! मुआज़ रज़ि० को और उसके घरवालों को अपनी इस रहमत में से हिस्सा अता फ़रमा।

हज़रत अबू क़िलाबा कहते हैं, यह तो मैं समझ गया कि प्लेग से शहादत का दर्जा मिलता है और रहमत उतरती है, लेकिन इस बात का मतलब न समझ सका कि प्लेग तुम्हारे नबी की दुआ है, यहां तक कि किसी ने मुझे बताया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रात नमाज़ पढ़ रहे थे, फिर आपने यह दुआ तीन बार मांगी, ऐ अल्लाह! फिर या तो बुख़ार हो या प्लेग हो।

सुबह को हुज़ूर सल्ल० के घरवालों में से किसी ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आज रात मैंने आपको एक ख़ास दुआ मांगते हुए सुना है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तुमने वह दुआ सुन ली? उसने कहा, जी हां।

---

1. बिदाया, भाग 7, पृ० 78,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने अपने रब से यह दुआ की कि मेरी उम्मत भुखमरी से हलाक न हो। अल्लाह ने यह दुआ कुबूल फ़रमा ली और मैंने यह दुआ मांगी कि उन पर ऐसा दुश्मन मुसल्लत न हो जो उनको जड़ से उखाड़ दे और बिल्कुल ख़त्म कर दे और यह भी दुआ की कि उनका आपस में इख़्तिलाफ़ न हो कि इनके अलग-अलग गिरोह बनें और इनमें आपस में लड़ाई हो, लेकिन यह आख़िरी दुआ कुबूल न हुई और इसका मुझे इंकार हो गया। इस पर मैंने तीन बार अर्ज़ किया कि फिर मेरी उम्मत को बुख़ार हो या प्लेग।[1]

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अमवास (शामदेश की एक जगह का नाम है) के प्लेग से हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु और इनके घरवाले बचे हुए थे, तो उन्होंने यह दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! अबू उबैदा के घरवालों को (इस बीमारी में से) हिस्सा नसीब फ़रमा।

चुनांचे हज़रत अबू उबैदा की छोटी उंगली में प्लेग की फुंसी निकल आई तो वह उसे देखने लगे। किसी ने कहा कि यह तो (छोटी सी है) कुछ भी नहीं है, तो फ़रमाया, मुझे अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि वह उस फुंसी में बरकत नसीब फ़रमाएंगे और जब अल्लाह थोड़ी चीज़ में बरकत डालते हैं तो वह ज़्यादा हो जाती है।[2]

हज़रत हारिस बिन उमैरा हारिसी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु को प्लेग की बीमारी हुई तो हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हारिस को हाल पूछने के लिए हज़रत अबू उबैदा की ख़िदमत में भेजा। हज़रत अबू उबैदा ने हज़रत हारिस को प्लेग की फुंसी दिखाई जो उनकी हथेली में निकली हुई थी।

हज़रत हारिस ने जब यह फुंसी देखी, तो वह डर गए, क्योंकि उन्हें यह फुंसी बड़ी मालूम हुई, इस पर अबू उबैदा ने अल्लाह की क़सम

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 311,
2. इब्ने असाकिर,

खाकर कहा कि मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं कि इस फुंसी की जगह लाल ऊंट मिल जाएं।[1]

आंख की रोशनी के चले जाने पर सब्र करना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का आंख की रोशनी के चले जाने पर सब्र करना

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते है कि मेरी आंखें दुखने आ गईं। हुज़ूर सल्ल० मेरे पूछने को तश्रीफ़ लाए, तो आपने फ़रमाया, ऐ ज़ैद! अगर तुम्हारी आंखें ऐसी ही दुखती रहीं और ठीक न हुईं, तो तुम क्या करोगे?

मैंने कहा, सब्र करूंगा और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम्हारी आंखें यों ही दुखती रहीं और तुमने सब्र किया और सवाब की उम्मीद रखी, तो तुम्हें इसके बदले में जन्नत मिलेगी।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत ज़ैद बिन अरक़म की आंखें दुखने आ गईं, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उनकी बीमारपुर्सी को गया। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ ज़ैद! तुम्हारी आंखों को जो तक्लीफ़ है, अगर तुम उस पर सब्र करोगे और उस पर अल्लाह के सवाब की उम्मीद रखोगे, तो तुम अल्लाह से इस हाल में मिलोगे कि तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह न होगा।[3]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बीमार था, इस वजह से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी बीमारपुर्सी के लिए तश्रीफ़ लाए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारी इस बीमारी से तो कोई ख़तरा नहीं है, लेकिन तुम्हारा उस वक़्त क्या हाल

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 74,
2. अदबुल मुफ़्रद, पृ० 78,
3. हैसमी, भाग 2, पृ० 308,

होगा, जब तुम मेरे बाद ज़िंदा रहोगे और अंधे हो जाओगे।

मैंने कहा कि मैं सब्र करूंगा और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, फिर तुम तो बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। चुनांचे हज़रत ज़ैद रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के इंतिक़ाल के बाद वाक़ई अंधे हो गए।[1]

तबरानी की रिवायत में यह मज़्मून भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत ज़ैद अंधे हो गए थे, फिर अल्लाह ने उनकी निगाह की रोशनी वापस फ़रमा दी, फिर हज़रत ज़ैद का इंतिक़ाल हुआ। अल्लाह उन पर रहमत उतारे।[2]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी की रोशनी चली गई। लोग उनको पूछने के लिए आए, तो उन्होंने फ़रमाया, मुझे आंखों की इसलिए ज़रूरत थी, ताकि मैं उनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत करूं। जब हुज़ूर सल्ल० ही तशरीफ़ ले गए तो अब अल्लाह की क़सम! मुझे इससे बिल्कुल ख़ुशी नहीं होगी कि मेरी आंखों की यह तक्लीफ़ (यमन के शहर) तबाला के किसी हिरन को हो जाए।[3]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 157, हैसमी, भाग 2, पृ० 309,
2. अदबुल मुफ़रद, पृ० 78, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 85
3. अदबुल मुफ़रद, पृ० 78, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 25

औलाद, रिश्तेदारों और दोस्तों की मौत पर सब्र

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सब्र

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबज़ादे) हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि हुज़ूर सल्ल० के सामने उनकी आख़िरी सांसें चल रही थीं। यह देखकर हुज़ूर सल्ल० की आंखों में आंसू आ गए और आपने फ़रमाया, आंख आंसू बहा रही है और दिल ग़मगीन हो रहा है, लेकिन हम ज़ुबान से वही बात कहेंगे जिससे हमारा रब राज़ी हो। ऐ इब्राहीम! अल्लाह की क़सम! हम तुम्हारे जाने की वजह से ग़मगीन हैं।[1]

हज़रत मक्हूल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु पर सहारा लिए हुए अन्दर तशरीफ़ लाए। अन्दर हज़रत इब्राहीम की आख़िरी सांसें चल रही थीं। जब उनका इंतिक़ाल हो गया, तो हुज़ूर सल्ल० की दोनों आंखों से आंसू बहने लगे, तो हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हज़रत अब्दुर्रहमान ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इससे तो आप लोगों को रोकते हैं। जब मुसलमान आपको रोता हुआ देखेंगे, तो वे भी रोने लग जाएंगे।

जब आपके आंसू रुक गए, तो आपने फ़रमाया, यह रोना तो रहम यानी दिल की नर्मी की वजह से है, जो दूसरों पर रहम नहीं करता है, उस पर भी रहम नहीं किया जाता। हम तो लोगों को मुर्दे पर नौहा करने से रोकते हैं और इस बात से रोकते हैं कि मुर्दे की उन ख़ूबियों का ज़िक्र किया जाए जो उसमें नहीं थीं। अगर अल्लाह का सबको इकट्ठा कर देने का वायदा और मौत का चालू रास्ता न होता और हममें से बाद में जाने

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 90

वालों का पहले जाने वालों से जा मिलना न होता, तो हमें इससे ज़्यादा ग़म होता और हम इसके जाने पर ग़मगीन हैं, आंख से आंसू बह रहे हैं, दिल ग़मगीन है, लेकिन हम ज़ुबान से ऐसी बात नहीं कहेंगे जिससे हमारा रब नाराज़ हो और इसकी दूध पीने की मुद्दत जन्नत में पूरी की जाएगी।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में आपकी एक साहबज़ादी ने आपके बुलाने के लिए एक आदमी यह पैग़ाम देकर भेजा कि इनके बेटे का इन्तिक़ाल होने वाला है। हुज़ूर सल्ल० ने आने वाले क़ासिद से फ़रमाया कि वापस जाकर मेरी बेटी को बता दो कि अल्लाह ने जो चीज़ हमसे ले ली, वह भी उसी की है और जो हमें दी है, वह भी उसी की है और अल्लाह के यहां हर चीज़ का वक़्त मुक़र्रर है और उसे कह दो कि वह सब्र करे और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखे। (वह क़ासिद साहबज़ादी के पास जवाब लेकर गया, लेकिन साहबज़ादी ने इसे दोबारा भेज दिया।)

वह क़ासिद दोबारा आया और उसने कहा कि वह आपको क़सम देकर कह रही हैं कि आप इनके पास ज़रूर तशरीफ़ ले जाएं। इस पर हुज़ूर सल्ल० खड़े हुए और आपके साथ हज़रत साद बिन उबादा रज़ि०, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०, हज़रत उबई बिन काब रज़ि० और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हुम और कुछ सहाबा भी खड़े हुए। मैं भी इन लोगों के साथ गया। (जब वहां पहुंचे, तो) इस बच्चे को उठाकर हुज़ूर सल्ल० के पास लाया गया, बच्चे का सांस उखड़ा हुआ था, (ऐसे आवाज़ आ रही थी) जैसे कि वह पुराने और सूखे मश्कीज़े में हो। हुज़ूर सल्ल० की दोनों आंखों से आंसू बहने लगे।

हज़रत साद रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! यह क्या है?

आपने फ़रमाया, यह रहम और शफ़क़त का माद्दा है जिसे अल्लाह

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 88, 89

ने अपने (ख़ास) बन्दों के दिलों में रखा है, अल्लाह अपने बन्दों में से उन्हीं बन्दों पर रहम फ़रमाते हैं जो दूसरों पर रहम करने वाले हों।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, तो आपने ऐसा दर्दनाक मंज़र देखा कि इससे ज़्यादा दर्दनाक मंज़र कभी न देखा था। आपने देखा कि इनके कान, नाक वग़ैरह अंग काट दिए गए हैं। आपने फ़रमाया, अल्लाह की रहमत तुम पर हो। जहां तक मुझे मालूम है कि तुम रिश्ते-नाते जोड़ने वाले और बहुत ज़्यादा नेकियां करने वाले थे। अल्लाह की क़सम! अगर तुम्हारे बाद वाले रिश्तेदारों के रंज व ग़म के ज़्यादा होने का ख़तरा न होता, तो मेरी खुशी इसमें थी कि मैं तुम्हें यहां ही ऐसे छोड़ देता (और दफ़न न करता और तुम्हें दरिंदे खा जाते, यों तुम्हारी क़ुर्बानी और बढ़ जाती) ताकि अल्लाह तुम्हें दरिंदों के पेटों में से जमा करके उठाता।

ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! इन काफ़िरों ने जैसे तुम्हारे नाक-कान अंग काटे हैं, मैं उनमें से सत्तर काफ़िरों के इसी तरह नाक-कान अंग काटूंगा, इस पर हज़रत जिब्रील अलैहि० यह सूरः लेकर उतरे—

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُمْ بِهِ آیت کے آخر تک (سورت نحل آیت ۱۲۶، ۱۲۷)

'और अगर बदला लेने लगो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के हक़ में बहुत अच्छी बात है और आप सब्र कीजिए और आपका सब्र करना ख़ुदा ही की तौफ़ीक़ से है और इन पर ग़म न कीजिए और जो कुछ वे तदबीरें किया करते हैं, इससे तंगदिल न होइए।' इस पर हुज़ूर सल्ल० ने अपनी इस क़सम को पूरा न किया, बल्कि इसका कफ़्फ़ारा अदा किया।'[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु (की

1. कंज़, भाग 8, पृ० 118,
2. हैसमी, भाग 6, पृ० 119, हाकिम, भाग 4, पृ० 197

शहादत के बाद उन) पर खड़े हुए तो आपने बहुत ज़्यादा दिल दुखाने वाली हालत देखी, इस पर आपने फ़रमाया, अगर अपनी रिश्तेदार औरतों के रंज व ग़म के बढ़ जाने का ख़तरा न होता, तो मैं उन्हें दफ़न न करता और यहां ऐसे ही छोड़ देता, ताकि ये दरिंदों के पेटों और परिन्दों के पोटों में चले जाते और वहां से अल्लाह उन्हें हश्र के मैदान में उठाते।

इनकी दर्दनाक हालत देखकर हुज़ूर सल्ल० ने ग़म की ज़्यादती के साथ फ़रमाया कि अगर वे काफ़िर मेरे क़ाबू आ गए तो मैं उनमें से तीस आदमियों के नाक-कान अंग काटूंगा, इस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी—

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عُوقِبْتُم بِهِ وَلَئِن صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ

(तर्जुमा पहले गुज़र चुका है) يَمْكُرُونَ

फिर आपके फ़रमाने पर हज़रत हमज़ा रज़ि० को क़िब्ला रुख़ लिटाया गया और आपने नौ तक्बीरें कहकर उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (फिर उनका जनाज़ा वहीं रहने दिया।) फिर आपके पास शहीदों को लाया गया। जब भी कोई शहीद लाया जाता तो उसे हज़रत हमज़ा के पहलू में रख दिया जाता (चूंकि शहीदों की लाश 72 की तायदाद में थी, इस वजह से) आपने हज़रत हमज़ा की और दूसरे शहीदों की बहत्तर बार जनाज़े की नमाज़ पढ़ी। फिर आपने खड़े होकर इन शहीदों को दफ़न किया।

जब क़ुरआन की ऊपर वाली अयात उतरी, तो आपने काफ़िरों को माफ़ कर दिया और उनसे दरगुज़र फ़रमा लिया और उनके कान-नाक और दूसरे अंगों के काटने का इरादा छोड़ दिया।[1]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद शहीद हुए, तो मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। जब आपने मुझे देखा तो आपकी आंखों में आंसू आ गए। अगले दिन मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो आपने फ़रमाया, आज भी तुम्हें देखकर मुझे वही रंज व सदमा हो रहा है

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 120

जो कल हुआ था।[1]

हज़रत ख़ालिद बिन शुमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके घर तशरीफ़ ले गए। वहां हुज़ूर सल्ल० के सामने हज़रत ज़ैद रज़ि० की बेटी बिलख-बिलख कर रोने लगी। इस पर आप भी रोने लग गए और इतना रोए कि आपके रोने की आवाज़ आने लग गई। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह क्या है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह एक दोस्त का अपने महबूब दोस्त के शौक़ में रोना है।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हुम का इंतिक़ाल हो चुका था। इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका बोसा लिया, उस वक़्त आप रो रहे थे और आपकी आंखों से आंसू बह रहे थे।[3]

इब्ने साद की रिवायत में यह है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आंसू बहकर हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० के गाल पर गिर रहे हैं।[4]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का मौत पर सब्र

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत हारिसा बिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बद्र की लड़ाई के दिन शहीद हुए थे और यह उस जमाअत में थे जो फ़ौज की देख-भाल करने वाली थी, उन्हें अचानक एक नामालूम तीर लगा, जिससे यह शहीद हो गए। इनकी मां

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 136,
2. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 32,
3. इसाबा, भाग 2, पृ० 464,
4. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 288,

ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप मुझे बताएं कि हारिसा कहां है? अगर वह जन्नत में है, तो मैं सब्र करूंगी, वरना अल्लाह भी देख लेंगे कि मैं क्या करती हूं, यानी कितना नौहा करती हूं। उस वक़्त तक नौहा करना हराम नहीं हुआ था।

हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, तेरा भला हो ! क्या तुम बेवक़ूफ़ हो गई हो (कि एक ही जन्नत समझती हो) जन्नतें तो आठ हैं और तुम्हारे बेटे को 'फ़िरदौसे आला' जन्नत मिली है।[1]

एक रिवायत में यह है कि अगर हारिसा जन्नत में है तो मैं सब्र करूंगी और अगर कहीं और है तो मैं इसकी वजह से रोने में सारा ज़ोर लगाऊंगी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उम्मे हारिसा ! वहां तो कई जन्नते हैं और तुम्हारा बेटा फ़िरदौसे आला में गया है।[2]

तबरानी की रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उम्मे हारिसा ! वहां एक जन्नत नहीं है, बल्कि बहुत-सी जन्नतें हैं और वह फिरदौसे आला जन्नत में है। हज़रत उम्मे हारिसा ने कहा, फिर तो मैं सब्र करूंगी।

इब्ने नज्जार की रिवायत में यह है कि हज़रत उम्मे हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मेरा बेटा जन्नत में है, तो न तो मैं रोऊंगी और न ग़म ज़ाहिर करूंगी और अगर वह जहन्नम में है, तो मैं जब तक दुनिया में ज़िंदा रहूंगी, रोती रहूंगी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे हारिसा ! वहां एक जन्नत नहीं है, बल्कि कई जन्नतें हैं और (तुम्हारा बेटा) हारिस (प्यार की वजह से हारिसा की जगह हारिस फ़रमाया) तो फ़िरदौसे आला में है। इस पर वह हंसती हुई वापस गईं और कह रही थीं, वाह ! वाह ! ऐ हारिस ! तेरे क्या कहने ![3]

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 274, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 167
2. कंज़, भाग 5, पृ०273, 275, हाकिम, भाग 3, पृ०208, इब्ने साद, भाग 3, पृ०68,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 46,

हज़रत मुहम्मद बिन साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़बीला बनू क़ुरैज़ा की लड़ाई में अंसार के एक साहब शहीद हो गए, जिन्हें ख़ल्लाद कहा जाता था। किसी ने आकर उनकी मां से कहा, ऐ उम्मे ख़ल्लाद! ख़ल्लाद शहीद हो गए तो वह नक़ाब पहने हुए बाहर आईं। किसी ने कहा, तुम्हारा बेटा ख़ल्लाद शहीद हो गया है और तुमने नक़ाब पहना हुआ है? (तुम्हें ग़म ज़ाहिर करने के लिए नक़ाब उतार देना चाहिए।)

उन्होंने कहा, अगर मेरा बेटा ख़ल्लाद चला गया है, तो इसका मतलब यह तो नहीं है कि मैं शर्म व हया को भी हाथ से जाने दूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसकी ख़बर हुई, तो आपने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, ख़ल्लाह को दो शहीदों का अज्र मिला है।

किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ऐसा क्यों हुआ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसलिए कि अह्ले किताब ने उसे क़त्ल किया है।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (उनकी मां) हज़रत सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा (अपने शौहर) अबू अनस के पास आईं और कहा, आज मैं ऐसी ख़बर लाई हूं जो तुम्हें पसन्द नहीं आएगी।

अबू अनस ने कहा, तुम उस देहाती के पास से हमेशा ऐसी ख़बरें लाती हो जो मुझे पसन्द नहीं आतीं।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, थे तो वे देहाती, लेकनि अल्लाह ने उन्हें चुन लिया और उन्हें पसन्द करके नबी बनाया है।

अबू अनस ने कहा, अच्छा क्या ख़बर लाई हो?

हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, शराब हराम कर दी गई।

अबू अनस ने कहा, आज से मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई हो गई। (यानी मैंने तुम्हें तलाक़ दे दी) और अबू अनस रज़ि० शिर्क की हालत में ही मरा और हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु (जो इस

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 83 कंज़, भाग 2, पृ० 157, इसाबा, भाग 1, पृ० 454

वक़्त तक काफ़िर थे) हज़रत उम्मे सुलैम के पास (शादी करने के इरादे से) आए तो हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, जब तक तुम मुश्रिक रहोगे, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती।

हज़रत अबू तलहा ने कहा, नहीं अल्लाह की क़सम! जो तुम कह रही हो, वह तुम चाहती नहीं हो। हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, मैं क्या चाहती हूं? (हज़रत अबू तलहा ने कहा, तुम सोना और चांदी लेना चाहती हो (मुश्रिक होने का बहाना तो तुम वैसे ही कर रही हो)। हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा कि मैं तुम्हें और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात पर गवाह बनाती हूं कि अगर तुम इस्लाम ले आओगे, तो मैं तुमसे इस्लाम पर राज़ी हो जाऊंगी (और मह्र की मांग न करूंगी, यह इस्लाम ही मह्र होगा)

हज़रत अबू तलहा ने कहा, मेरा यह काम कौन करेगा?

हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, ऐ अनस! उठो और अपने चचा के साथ जाओ। चुनांचे (मैं उठा और) हज़रत तलहा भी उठे और उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा, फिर हम दोनों चलते रहे, यहां तक कि जब हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने हमारी बातें सुन लीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अबू तलहा हैं, इनके माथे पर इस्लाम की रौनक़ है।

चुनांचे हज़रत अबू तलहा ने जाकर हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और कलिमा शहादत—

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

पढ़ा, हुज़ूर सल्ल० ने इस्लाम पर ही उनकी शादी हज़रत उम्मे सुलैम से कर दी। हज़रत उम्मे सुलैम से उनका बेटा पैदा हुआ। जब वह चलने लगा और बाप को उससे बहुत प्यार हो गया, तो अल्लाह ने उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली। फिर हज़रत अबू तलहा जब घर आए, तो उन्होंने पूछा, ऐ उम्मे सुलैम! मेरे बेटे का क्या हुआ?

हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, पहले से बेहतर है। (यह ग़लत नहीं कहा, इसलिए कि मोमिन की हालत मरने के बाद दुनिया से बेहतर हो जाती

है।) फिर हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा, आज आपने दोपहर के खाने में देर कर दी, तो क्या आप दोपहर का खाना खाएंगे? फ़रमाती हैं, फिर मैंने खाना उनके सामने रखा और मैंने उनसे कहा, कुछ लोगों ने एक आदमी से कोई चीज़ उधार के तौर पर ली। फिर वह उधार उनके पास कुछ दिनों रहा और उधार देने वाले ने आदमी भेजकर उस उधार चीज़ को अपने क़ब्ज़े में ले लिया और अपना उधार वापस ले लिया, तो क्या उन लोगों को इस पर परेशान होना चाहिए।

हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने कहा, नहीं।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, फिर आपका बेटा इस दुनिया से चला गया है। आपको अल्लाह ने दिया था और अब उसे वापस ले लिया है।)

हज़रत अबू तलहा रज़ि० से पूछा, इस वक़्त वह कहां है?

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, वह अन्दर कोठरी में है। चुनांचे हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने अन्दर जाकर उस बच्चे के चेहरे से कपड़ा हटाया और इन्ना लिल्लाहि पढ़ी और जाकर हुज़ूर सल्ल० को हज़रत उम्मे सुलैम की सारी बात बताई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसने मुझे हक़ देकर भेजा है। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने चूंकि अपने बेटे के मरने पर सब्र किया है, इसलिए अल्लाह ने उनके रहम में एक और लड़के का हमल शुरू कर दिया है। चुनांचे जब हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० के यहां वह लड़का पैदा हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ अनस! अपनी मां से जाकर कहो कि जब तुम अपने बेटे की नाफ़ काट लो, तो उसे कुछ चखाने से पहले मेरे पास भेज दो।

चुनांचे हज़रत सुलैम रज़ि० ने वह बच्चा मेरे बाज़ुओं पर रख दिया और मैंने आकर हुज़ूर सल्ल० के सामने उस बच्चे को रख दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे सामने तीन अजवा खजूरें लाओ। चुनांचे मैं तीन खजूरें लाया। हुज़ूर सल्ल० ने उनकी गुठलियां निकालकर फेंक दीं और फिर उन्हें अपने मुंह में डालकर चबाया और उस बच्चे का मुंह

खोलकर उसमें डाल दीं। बच्चा उन्हें ज़ुबान से चूसने लगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह अंसारी है, इसलिए इसे खजूर पसन्द है फिर फ़रमाया, जाकर अपनी मां से कहो, अल्लाह तुम्हारे लिए इस बेटे में बरकत अता फ़रमाए और इसे नेक और तक़्वा वाला बनाए।[1]

बज़्ज़ार की एक रिवायत में यह है कि हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने शादी के पैग़ाम के जवाब में कहा, क्या मैं आपसे शादी कर लूं? क्योंकि आप ऐसी लकड़ी की इबादत करते हैं, जिसे मेरा फ़्लां ग़ुलाम घसीटे फिरता है।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु का एक बेटा बीमार था। हज़रत अबू तलहा रज़ि० घर से बाहर गए तो पीछे से उसका इंतिक़ाल हो गया। हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने वापस आकर पूछा कि मेरे बेटे का क्या हुआ? हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, पहले से ज़्यादा सुकून में है। फिर हज़रत उम्मे सुलैम ने उनके सामने रात का खाना खाया। हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने खाना खाया, और बाद में उनसे सोहबत भी की। जब वह फ़ारिग़ हो गए, तो हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने कहा, बच्चे को दफ़न कर दो।

सुबह को आकर हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने सारी बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने आज रात सोहबत की है? उन्होंने कहा, जी हां। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! इन दोनों (की सोहबत) में बरकत अता फ़रमा। चुनांचे उनके यहां लड़का पैदा हुआ। हज़रत अबू तलहा रज़ि० ने मुझसे फ़रमाया, इसे हिफ़ाज़त से हुज़ूर की ख़िदमत में ले जाओ।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने बच्चे के साथ मुझे खजूरें भी दीं। मैं उस बच्चे को लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० ने बच्चे को लिया और फ़रमाया, क्या इस बच्चे के साथ कोई चीज़ भी है?

मैंने कहा, हां, खजूरें भी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने खजूरें लेकर उन्हें चबाया

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 261, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 316,

और उन्हें अपने मुंह से निकालकर उस बच्चे के मुंह में तालू पर लगा दिया और उसका नाम अब्दुल्लाह रखा।[1]

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उम्मीद है कि अल्लाह उन दिनों की उस रात में बरकत फ़रमाएंगे।

चुनांचे हज़रत सुफ़ियान कहते हैं कि एक असांरी आदमी ने कहा, मैंने उस बच्चे के नौ बेटे देखे, जो सब क़ुरआन पढ़े हुए थे।[2]

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहिमा फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाह अन्हु के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को तायफ़ की लड़ाई में एक तीर लगा था, (जिसका घाव एक बार तो भर गयां था, लेकिन) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंतिक़ाल के चालीस दिन के बाद वह घाव फिर फट गया और उसमें उनका इंतिक़ाल हो गया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए और फ़रमाया, ऐ बिटिया! अल्लाह की क़सम! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि जैसे किसी बकरी का कान पकड़ कर उसे हमारे घर से निकाल दिया हो।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जिसने आपके दिल को मज़बूत कर दिया और इस मौक़े की हिदायत पर आपको पक्का कर दिया। (यानी इस मौक़े पर सब्र व हिम्मत से काम लेने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी।)

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० बाहर आ गए, फिर अन्दर आए और फ़रमाया, ऐ बिटिया! क्या तुम्हें इस बात का डर है कि तुमने अब्दुल्लाह को ज़िंदा ही दफ़न कर दिया हो?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, ऐ अब्बा जान! इन्ना लिल्लाहि व

1. बुख़ारी, भाग 2, पृ० 822.
2. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 174,

इला अलैहि राजिऊन०

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, मैं शैतान मर्दूद से उस अल्लाह की पनाह चाहता हूं जो सुनने वाला और जानने वाला है। ऐ बिटिया ! हर आदमी के दिल में दो तरह के विचार आते हैं, एक अच्छे जो फ़रिश्ते की तरफ़ से आते हैं, दूसरे बुरे जो शैतान की तरफ़ से आते हैं। फिर क़बीला सक़ीफ़ का वफ़्द (तायफ़ से) हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास आया, तो वह तीर जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को लगा था, वह उनके पास था। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने वह तीर निकाल कर उन्हें दिखाया और पूछा कि आप लोगों में से कोई इस तीर को पहचानता है? तो क़बीला बनू अजलान के हज़रत साद बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, इस तीर को मैंने तराशा था और मैंने इसका पर लगाया था और इसका पट्ठा लगाया था और मैंने ही यह तीर मारा था।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, (मेरा बेटा) अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० इसी से शहीद हुआ है, इसलिए तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने इसे तुम्हारे हाथों शहादत से नवाज़ा और तुम्हें उसके हाथ से (क़त्ल करा कर) ज़लील नहीं किया, (वरना तुम दोज़ख़ में जाते।) बेशक अल्लाह बड़े हिमायत व हिफ़ाज़त वाले हैं।[1]

बैहक़ी की रिवायत में यह है कि अल्लाह ने तुम्हें उसके हाथ से ज़लील नहीं किया। बेशक अल्लाह ने तुम दोनों के लिए (फ़ायदा में) फैलाव पैदा फ़रमा दिया।[2]

हज़रत अम्र बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब भी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां कोई बच्चा पैदा होता, तो हज़रत उस्मान रज़ि० उसे मंगवाते, उसे कपड़े के टुकड़े में लपेट कर लाया जाता, फिर वह उसे नाक लगाकर सूंघते। किसी ने पूछा, आप इस तरह क्यों करते हैं? फ़रमाया, मैं इसलिए करता हूं, ताकि मेरे दिल में उसकी कुछ मुहब्बत पैदा हो जाए और फिर अगर उसे कुछ हो (यानी

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 477,
2. बैहक़ी, भाग 9, पृ० 98,

बीमार हो जाए या मर जाए) तो (इस मुहब्बत की वजह से) दिल को रंज व सदमा हो, और फिर सब्र किया जाए और उसकी जन्नत मिले। (जब बच्चे से मुहब्बत नहीं होगी, तो उसकी बीमारी या मौत का सदमा भी नहीं होगा और सब्र करने की ज़रूरत नहीं होगी।[1]

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा, क्या बात है, आपका कोई बच्चा ज़िंदा नहीं रहता? फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं, जो मेरे बच्चों को इस फ़ानी घर से ले रहा है और हमेशा रहने वाले घर यानी जन्नत में जमा कर रहा है।[2]

हज़रत उमर बिन अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन ख़त्ताब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कोई रंज व सदमा पहुंचता, तो (अपने तसल्ली देने के लिए) फ़रमाते कि मुझे (मेरे भाई) हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु (की शहादत) का ज़बरदस्त सदमा पहुंचा था, लेकिन मैंने इस पर सब्र कर लिया था (तो यह तो इससे छोटा है, इस पर तो सब्र करना ही चाहिए।)

हज़रत उमर रज़ि० ने अपने भाई हज़रत ज़ैद रज़ि० के क़ातिल को देखा, तो फ़रमाया, तेरा भला हो! तुमने मेरे ऐसे भाई को क़त्ल किया है कि जब भी पुरवा हवा चलती है, तो मुझे वह भाई याद आ जाता है। (यानी मुझे इससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत है।)[3]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए, तो (उनकी बहन) हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा उन्हें खोजती हुई आईं। उन्हें मालूम नहीं था कि हज़रत हमज़ा रज़ि० के साथ क्या हुआ? रास्ते में हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से इनकी मुलाक़ात हुई। हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से कहा, तुम अपनी मां को बता दो (कि हज़रत हमज़ा रज़ि० शहीद हो गए हैं।)

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 157,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 157
3. हाकिम, भाग 3, पृ० 227, बैहक़ी, भाग 9, पृ० 98

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने हज़रत अली रज़ि० से कहा, नहीं, बल्कि आप अपनी फूफी को बताएं। हज़रत सफ़िया रज़ि० ने इन दोनों से पूछा कि हज़रत हमज़ा रज़ि० का क्या हुआ? इन दोनों ने ऐसे ज़ाहिर किया जैसे कि उन्हें मालूम नहीं है।

वह चलते-चलते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक पहुच गईं। हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखकर फ़रमाया, मुझे इस बात का डर है कि सदमे की ज़्यादती से उनके दिमाग़ पर असर न पड़ जाए, इसलिए आपने उनके सीने पर हाथ रखकर दुआ फ़रमाई (और फिर उन्हें बताया जिस पर) हज़रत सफ़िया रज़ि० ने इन्नालिल्लाहि पढ़ी और रोने लगीं।

फिर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले गए और हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास जाकर खड़े हो गए। उनके नाक-कान और दूसरे अंग कटे हुए थे, तो आपने फ़रमाया, अगर (रिश्तेदार) औरतों की परेशानी का डर न हो तो, मैं उन्हें (दफ़न न करता, बल्कि) यहीं छोड़ देता, ताकि कल क़ियामत के दिन उनका हश्र परिन्दों के पोटों और दरिन्दों के पेटों जैसा होता।

फिर आपके फ़रमाने पर शहीदों के जनाज़ों को लाया गया और आप उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने लगे और उसकी शक्ल यह हुई कि हज़रत हमज़ा रज़ि० के साथ नौ और जनाज़े रखे जाते। आप सात तक्बीरों के साथ उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ते, फिर नौ जनाज़े तो उठा लिए जाते, लेकिन हज़रत हमज़ा रज़ि० का जनाज़ा वहीं ही रहने दिया जाता, फिर नौ और जनाज़े लाए जाते। आप सात तक्बीरों के साथ इनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ते। यों ही सिलसिला चलता रहा, यहां तक कि आप उनकी नमाज़ जनाज़ा से फ़ारिग़ हुए।[1]

हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं कि उहुद की लड़ाई के दिन एक औरत सामने से तेज़ चलती हुई नज़र आई। ऐसा मालूम हो रहा था कि वह मक़्तूल शहीदों को देखना चाहती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे पसन्द न फ़रमाया कि यह औरत उन्हें देखे। इसलिए हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, औरत! औरत! यानी इसे रोको।

1. हाकिम, भाग 3, पृ० 197, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 170, मज्मा, भाग 6, पृ० 118

मुझे देखने से यह अन्दाज़ा हो गया कि यह मेरी मां हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। चुनांचे मैं दौड़ कर उनकी ओर गया और उनके शहीदों तक पहुंचने से पहले मैं उन तक पहुंच गया। उन्होंने मेरे सीने पर ज़ोर से हाथ मारा और वह बड़ी ताक़तवर थीं और उन्होंने कहा, परे हट! ज़मीन तेरी नहीं है।

मैंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ी ताकीद से आपको इधर जाने से रोका है। यह सुनकर वह वहीं रुक गईं और उनके पास दो चादरें थीं, उन्हें निकालकर फ़रमाया, ये दो चादरे हैं, अपने भाई हमज़ा के लिए लाई हूं। मुझे उनके शहीद होने की ख़बर मिल चुकी है, इसलिए उनको इनमें कफ़न दे दो।

चुनांचे हम लोग वे चादरें लेकर कफ़नाने के लिए हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास गए। वहां हमने देखा कि एक अंसारी शहीद भी पड़े हुए हैं जिनके साथ काफ़िरों ने वही सुलूक किया हुआ है जो उन्होंने हमज़ा रज़ि० के साथ किया था, तो हमें इसमें बड़ी ज़िल्लत और शर्म महसूस हुई कि हज़रत हमज़ा रज़ि० को दो चादरों में कफ़न दिया जाए और अंसारी के पास एक भी चादर न हो।

चुनांचे हमने कहा, एक चादर हमज़ा की और दूसरी अंसारी की। दोनों चादरों को नापा तो एक बड़ी थी और एक छोटी। चुनांचे हमने दोनों के लिए क़ुरआ डाला और जिसके हिस्से में जो चादर आई उसे उसमें कफ़ना दिया।[1]

हज़रत ज़ोहरी, हज़रत आसिम बिन उमर बिन क़तादा, हज़रत मुहम्मद बिन यह्या और दूसरे लोग हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बारे में नक़ल फ़रमाते हैं कि हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा अपने भाई को देखने आईं तो उन्हें रास्ते में (उनके बेटे) हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु मिले। उन्होंने कहा, ऐ अम्मा जान! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि आप वापस चली जाएं।

उन्होंने कहा, क्यों मुझे यह ख़बर मिल चुकी है कि मेरे भाई के

1. हैसमी, भाग 6, पृ० 118

नाक-कान- अंग काटे गए हैं और उनके साथ यह सब कुछ अल्लाह की वजह से किया गया है और जो कुछ हुआ है, हम उस पर बिल्कुल राज़ी हैं। इनशाअल्लाह, मैं हर तरह सब्र करूंगी और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखूंगी।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने जाकर हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा, इन्हें जाने दो, न रोको। चुनांचे वह हज़रत हमज़ा रज़ि० के पास गईं और उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की। फिर हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर हज़रत हमज़ा रज़ि० को दफ़न कर दिया गया।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन (मेरे शौहर) हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से मेरे यहां आए और उन्होंने कहा कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से एक बात सुनी है जिससे मुझे बहुत ज़्यादा ख़ुशी हुई है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब किसी मुसलमान पर कोई मुसीबत आती है और वह उस पर इन्नालिल्लाहि पढ़े और यह दुआ पढ़े—

अल्लाहुम-म अजिर-नी फ़ी मुसीबती वख़्‌-लुफ़ ली ख़ैरम-मिन्हा०

'ऐ अल्लाह! मुझे इस मुसीबत में अज्र फ़रमा और जो चीज़ चली गई है उससे बेहतर मुझे अता फ़रमा', तो अल्लाह उसे इससे बेहतर अता फ़रमाते हैं।

हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं, मैंने उनकी इस बात को याद रखा। चुनांचे जब हज़रत अबू सलमा का इंतिक़ाल हुआ तो मैंने 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ी और यह दुआ पढ़ी। दुआ तो मैंने पढ़ ली, लेकिन दिल में यह ख़्याल आता रहा कि अबू सलमा से बेहतर मुझे कौन मिल सकता है?

जब मेरी इद्दत पूरी हो गई तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरे पास आने की इजाज़त मांगी। उस वक़्त मैं खाल रंग रही थी। मैंने कीकड़ के पत्तों से हाथ धोए। (खाल के रंगने में कीकड़ के पत्ते इस्तेमाल होते थे।) और

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 349,

फिर मैंने आपको इजाज़त दी और मैंने आपके लिए चमड़े का गद्दा रखा जिसके भीतर खजूर की छाल भरी हुई थी। आप उस पर बैठ गए और अपने साथ शादी का पैग़ाम दिया।

जब आप बात पूरी फ़रमा चुके तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो हो नहीं सकता कि मुझे आपसे शादी करने का चाव न हो, लेकिन एक बात यह है कि मेरी तबियत में ग़ैरत बहुत है, तो मुझे इस बात का डर है कि इस ग़ैरत की वजह से आप मेरी ओर से कोई ऐसी बात देखें जिस पर अल्लाह मुझे अज़ाब दे। दूसरी बात यह है कि मेरी उम्र भी ज़्यादा हो गई है और तीसरी बात यह है कि मैं बाल-बच्चों वाली औरत हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने जो ग़ैरत का ज़िक्र किया है उसे अल्लाह दूर फ़रमा देंगे और तुमने उम्र ज़्यादा होने का जो ज़िक्र किया है, तो तुम्हारी तरह मेरी उम्र भी ज़्यादा हो गई है और तुमने बच्चों का ज़िक्र किया है, तो तुम्हारे बच्चे मेरे बच्चे हैं। इस पर मैंने हुज़ूर सल्ल० की बात मान ली और फिर वाक़ई अल्लाह ने मुझे हज़रत अबू सलमा से बेहतर शौहर अता फ़रमा दिया, यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हम हज या उमरे से वापस आए, तो ज़ुल हुलैफ़ा पर हमारा स्वागत हुआ और अंसारी लड़के अपने घरवालों का स्वागत कर रहे थे, तो लोग हज़रत उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु से मिले और उन्हें बताया कि उनकी बीवी का इंतिक़ाल हो गया है।

यह सुनकर वह अपने मुंह पर कपड़ा डालकर रोने लगे। मैंने उनसे कहा, अल्लाह आपकी मग़फ़िरत फ़रमाए। आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं। आपको इस्लाम में पहल हासिल है और आप पुराने मुसलमान हैं। आपको क्या हुआ कि आप एक औरत की वजह से रो रहे हैं?

इस पर उन्होंने सर से कपड़ा हटाया और कहा, आप सच फ़रमाती हैं।

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 91, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 63, 64

मेरी ज़िंदगी की क़सम ! हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद मुझे किसी पर रोने का हक़ नहीं पहुंचता, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में बड़ी फ़ज़ीलत वाली बात फ़रमाई थी, मैंने पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में क्या फ़रमाया था ? उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया था, साद बिन मुआज़ रज़ि० के मरने पर अर्श भी हिल गया।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, उस वक़्त हज़रत उसैद रज़ि० मेरे और हुज़ूर सल्ल० के दर्मियान चल रहे थे।[1]

हज़रत औन रहमतुल्लाहिल अलैहि कहते हैं, जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु को इनके भाई हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल की ख़बर मिली, तो वह रोने लगे। किसी ने उनसे कहा, क्या आप रो रहे हैं ?

उन्होंने फ़रमाया, वह नसब में मेरे भाई थे और हम दोनों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इकट्ठे रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद मुझे यह पसन्द नहीं है कि मैं इनसे पहले मरता, बल्कि इनका पहले इंतिक़ाल हो और मैं सब्र करूं और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखूं, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मैं पहले मरूं और मेरे भाई सब्र करके अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखें।[2]

हज़रत ख़ैसमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु को इनके भाई हज़रत उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल की ख़बर मिली तो उनकी दोनों आंखों से आंसू बहने लगे और फ़रमाया यह (रोना) रहमत और शफ़क़त की वजह से है, जो अल्लाह दिलों में डालते हैं। इब्ने आदम का इन (आंसुओं) पर कोई अख़्तियार नहीं है।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी सलीत रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 43, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 12, हाकिम, भाग 3, पृ० 289, कंज़, भाग 8, पृ० 118, मज्मा, भाग 9, पृ० 309
2. हुलीया, भाग 4, पृ० 253,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 95,

मैंने देखा कि हज़रत अबू अहमद बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु (अपनी बहन) हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के जनाज़े को उठाए हुए जा रहे हैं, हालांकि वह अंधे थे और वह रो रहे थे। फिर मैंने सुना कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे हैं, ऐ अबू अहमद ! जनाज़े से एक तरफ़ हो जाओ, लोगों की वजह से तुम्हें तक्लीफ़ होगी, उनके जनाज़े को उठाने के लिए लोगों की बड़ी भीड़ थी।

हज़रत अबू अहमद ने कहा, ऐ उमर ! हमें इसी बहन की वजह से हर ख़ैर मिली है और उनके जाने पर जो रंज व सदमा मुझे है, वह जनाज़ा उठाने से कम हो रहा है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर तो तुम चिमटे रहो, चिमटे रहो।[1]

हज़रत अह्नफ़ बिन क़ैस रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि क़ुरैश लोगों के सरदार हैं, इनमें से जो भी किसी दरवाज़े में दाख़िल होगा, उसके साथ लोगों की एक बड़ी जमाअत भी ज़रूर दाख़िल होगी। मुझे उनकी इस बात का मतलब समझ में न आया, यहां तक कि उन्हें नेज़े से घायल किया गया।

जब उनकी वफ़ात का वक़्त आया, तो उन्होंने हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह लोगों को तीन दिन नमाज़ पढ़ाएं और उन्होंने इस बात का भी हुक्म दिया कि नए ख़लीफ़ा के मुक़र्रर होने तक लोगों को खाना पकाकर खिलाया जाए।

जब लोग हज़रत उमर रज़ि० के जनाज़े से वापस आए तो दस्तरख़्वान बिछाए गए और खाना रखा गया, लेकिन रंज व ग़म की ज़्यादती की वजह से लोग खाना नहीं खा रहे थे, तो हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ लोगो ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हुआ, हमने उसके बाद खाया और पिया, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ तो हमने इनके बाद खाया और पिया, इसलिए खाना खाना तो ज़रूरी है, इसलिए आप

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 80

सब यह खाना खाएं। फिर हज़रत अब्बास रज़ि० ने हाथ बढ़ाकर खाना शुरू कर दिया तो तमाम लोगों ने हाथ बढ़ाया और खाना शुरू कर दिया तो उस वक़्त मुझे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बात समझ में आई कि क़ुरैश लोगों के सरदार हैं।[1]

हज़रत अबू उऐना रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जब किसी आदमी को किसी मुसीबत पर तसल्ली दिया करते तो फ़रमाया करते, आदमी अगर सब्र और हौसला से काम ले, तो कोई मुसीबत नहीं है और घबराने और परेशान होने में कोई फ़ायदा नहीं है। मौत से पहले का मामला बहुत आसान है और इसके बाद का मामला बहुत सख़्त है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के सदमे को याद कर लिया करो, इससे तुम्हारी हर मुसीबत हलकी हो जाएगी, अल्लाह तुम्हें बड़ा बदला दे।[2]

हज़रत सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अशअस बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हु को उनके बेटे की वफ़ात पर तसल्ली दी, तो फ़रमाया, अगर (बेटे के जाने पर) आपको रंज व सदमा है तो यह रिश्तेदारी का तक़ाज़ा है, अब अगर आप सब्र करेंगे, तो अल्लाह आपके बेटे का बदला अता फ़रमाएंगे। अगर सब्र करोगे तो भी तक़्दीर का लिखा पूरा होकर रहेगा, लेकिन आपको अज्र व सवाब मिलेगा और अगर गिला-शिकवा करोगे तो भी तक़्दीर का लिखा पूरा होकर रहेगा, लेकिन आपको गुनाह होगा।[3]

आम मुसीबतों पर सब्र करना

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में थे। आपके पास एक अंसारी औरत आई और उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 19, कंज़, भाग 7, पृ० 67, हैसमी, भाग 5, पृ० 196,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 122,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 122

ख़बीस (शैतान) मुझ पर ग़ालिब आ गया है।

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, तुमको जो तक्लीफ़ है, अगर तुम उस पर सब्र करो तो क़ियामत के दिन तुम इस हाल में आओगी कि न तुम पर कोई गुनाह होगा और न तुमसे हिसाब लिया जाएगा।

उस औरत ने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मैं मरते दम तक (इन्शाअल्लाह !) सब्र करूंगी, अलबत्ता मुझे यह डर रहता है कि इस हालत में शैतान मुझे नंगा कर देगा। आपने उसके लिए इस बारे में दुआ फ़रमाई। चुनांचे जब इसे महसूस होता कि शैतानी असरात शुरू होने वाले हैं तो वह आकर काबा के परदों से चिमट जाती और शैतान से कहती, दूर हो जा, तो वह शैतान चला जाता।[1]

हज़रत अता रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मैं जन्नती औरत न दिखाऊं? मैंने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, ज़रूर दिखाएं।

उन्होंने फ़रमाया, यह काली औरत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आई और उसने कहा, मुझे मिरगी का दौरा पड़ता है, जिससे सतर खुल जाता है। आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हें जन्नत मिले। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए अल्लाह से दुआ कर दूं कि वह तुम्हें आफ़ियत अता फ़रमाए।

उस औरत ने कहा, नहीं, नहीं, मैं तो सब्र करूंगी, बस अल्लाह से यह दुआ फ़रमा दें कि मेरा सतर न खुला करे।[2]

यह क़िस्सा बुख़ारी और मुस्लिम में भी है। बुख़ारी में यह भी है कि हज़रत अता ने इन उम्मे ज़ुफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा कि रंग उनका काला और क़द लम्बा है और काबा के परदे पर टेक लगाकर बैठी हुई हैं।[3]

---

1. बज़्ज़ार,
2. अहमद,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 160

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जाहिलियत के ज़माने में एक बदकार औरत थी (वह मुसलमान हो गई) तो एक मर्द उसके पास से गुज़रा या वह किसी मर्द के पास से गुज़री तो उस मर्द ने उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया। उस औरत ने कहा, रुक जाओ, अल्लाह ने शिर्क को ख़त्म कर दिया है और इस्लाम को ले आए हैं। चुनांचे उस आदमी ने उसे छोड़ दिया और वापस चला गया, लेकिन मुड़कर उसे देखने लगा, यहां तक कि उसका चेहरा एक दीवार से टकरा गया।

उस आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर सारा वाक़िया बयान किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अल्लाह के ऐसे बन्दे हो कि जिसके साथ अल्लाह ने ख़ैर का इरादा फ़रमाया है, क्योंकि अल्लाह जब किसी बन्दे के साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं तो उसे इस गुनाह की सज़ा जल्दी दे देते हैं यानी दुनिया में दे देते हैं और जब किसी बन्दे के साथ शर का इरादा फ़रमाते हैं, तो उसके गुनाह की सज़ा रोक लेते हैं, (दुनिया में नहीं देते हैं) बल्कि उसकी पूरी सज़ा इसे क़ियामत के दिन देंगे।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़लीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ एक जनाज़े में था कि इतने में उनके जूते का फ़ीता टूट गया। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाहि पढ़ी और फ़रमाया, हर वह चीज़ जिससे तुम्हें तक्लीफ़ हो, वह मुसीबत है (और मुसीबत के आने पर इन्ना लिल्लाहि पढ़ने का हुक्म है, इसलिए मैंने इन्ना लिल्लाहि पढ़ी)।[2]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के जूते का अगला फ़ीता टूट गया, तो उन्होंने कहा, 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन०' लोगों ने अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आप जूते के एक फ़ीते की वजह से इन्ना लिल्लाहि पढ़ते हैं?

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 155,
2. इब्ने साद, बैहक़ी

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, हर वह चीज़ जो मोमिन बन्दे को नागवार लगे, वह उसके हक़ में मुसीबत है (और हर मुसीबत में इन्ना लिल्लाहि पढ़नी चाहिए।)[1]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त लिखा कि रूमी फ़ौज जमा हो रही है और इनसे बड़ा ख़तरा है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उन्हें जवाब में यह लिखा, अम्मा बादु ! जब भी मोमिन बन्दे पर कोई सख़्ती आती है तो अल्लाह उसके बाद फैलाव ज़रूर लाते हैं और यह नहीं हो सकता कि एक तंगी दो आसानियों पर ग़ालिब आ जाए। (यह क़ुरआन की आयत 'इन-न मअल उसरि युसरा' की ओर इशारा है कि एक तंगी के बाद दो आसानियां मिलती हैं) और अल्लाह अपनी किताब में फ़रमाते हैं—يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (سورت آل عمران آیت ۲۰۰)

'ऐ ईमान वालो ! ख़ुद सब्र करो और मुक़ाबले में सब्र करो और मुक़ाबले के लिए मुस्तैद रहो और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पूरे कामियाब हो।' (आले इम्रान, आयत 200)[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन मेंहदी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को दो ऐसी फ़ज़ीलतें हासिल हैं जो न हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को मिल सकीं और न हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को। एक तो उन्होंने ख़िलाफ़त के मामले में अपनी ज़ात के बारे में सब्र किया, यहां तक कि मज़्लूम बनकर शहीद हो गए और दूसरी यह कि तमाम लोगों को मुस्हफ़े उस्मानी पर जमा फ़रमाया।[3]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 154,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 54
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 58.

शुक्र

सय्यिदिना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शुक्र

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन (मस्जिद से) बाहर निकले और अपने कोठे की तरफ़ तशरीफ़ ले गए, फिर अन्दर जाकर क़िब्ले की ओर मुंह करके सज्दे में गिर गए और इतना लम्बा सज्दा किया कि मुझे यह गुमान होने लगा कि अल्लाह ने सज्दे में ही आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली है।

मैं आपके क़रीब जाकर बैठ गया। फिर आपने सज्दे से सर उठाया। आपने पूछा, यह कौन है? मैंने कहा, अब्दुर्रहमान! आपने फ़रमाया, तुम्हें क्या हुआ? मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! आपने इतना लम्बा सज्दा किया कि मुझे यह गुमान होने लगा कि अल्लाह ने सज्दे में ही आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली है।

आपने फ़रमाया, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए थे और उन्होंने मुझे यह बशारत दी कि अल्लाह फ़रमा रहे हैं कि जो आप पर दरूद भेजेगा, मैं उस पर रहमत भेजूंगा, जो आप पर सलाम भेजेगा, मैं उस पर सलाम भेजूंगा, इसलिए मैं शुक्रिया अदा करने के लिए अल्लाह के सामने सज्दे में गिर गया।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं (एक रात) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया, तो आप खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे और सुबह तक आप खड़े ही रहे और फिर आपने इतना लम्बा सज्दा किया कि मुझे यह गुमान होने लगा कि सज्दे में आपकी रूह क़ब्ज़ हो गई है।

(नमाज़ और सज्दे से फ़ारिग़ होकर) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम जानते हो, मैंने ऐसा क्यों किया? मैंने कहा, अल्लाह और उसके रसूल

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 287

ही ज़्यादा जानते हैं। आपने चार-पांच बार यही सवाल फ़रमाया, फिर फ़रमाया, मेरे रब ने जितनी देर मेरे लिए मुक़द्दर फ़रमाई थी, मैंने इतनी देर नमाज़ पढ़ी, फिर मेरे रब ने मुझ पर ख़ास तजल्ली फ़रमाई (और कुछ बातें फ़रमाईं) और इसके आख़िर में मुझसे पूछा कि मैं आपकी उम्मत के साथ क्या करूंगा?

मैंने कहा, ऐ मेरे रब! आप ही ज़्यादा जानते हैं, फिर मेरे रब ने तीन या चार बार यही सवाल किया, फिर आख़िर में मुझसे फ़रमाया, मैं आपकी उम्मत के साथ क्या करूंगा? मैंने कहा, ऐ मेरे रब! आप ही ज़्यादा जानते हैं। मेरे रब ने फ़रमाया, मैं आपको आपकी उम्मत के बारे में ग़मगीन नहीं करूंगा, इस वजह से मैंने अपने रब के सामने सज्दा किया, और मेरा रब थोड़े अमल पर ज़्यादा अज्र देने वाला है और शुक्र करने वालों को पसन्द करता है।[1]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ तो देखा कि आप पर वह्य उतर रही है। जब वह्य का सिलसिला ख़त्म हुआ तो आपने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया, मेरी चादर मुझे दे दो, (चादर लेकर) आप बाहर तशरीफ़ ले गए। जब मस्जिद के अन्दर पहुंचे तो वहां कुछ लोग बैठे हुए थे, इनके अलावा मस्जिद में और कोई नहीं था। आप उन लोगों के पास एक तरफ़ बैठ गए (क्योंकि कोई साहब इनमें बयान कर रहे थे।)

जब बयान करने वाले का बयान ख़त्म हो गया, तो आपने सूरः अलफ़ि लाम-मीम तंज़ील सज्दा पढ़ी, फिर आपने इतना लम्बा सज्दा किया कि लोगों ने आपके सज्दे की ख़बर सुनकर मस्जिद में आना शुरू कर दिया, यहां तक कि दो मील दूर से भी लोग पहुंच गए और (इतने लोग आ गए कि मस्जिद कम पड़ गई और हज़रत आइशा रज़ि० ने अपने घरवालों को पैग़ाम भेजा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंच जाओ, क्योंकि मैंने आज हुज़ूर सल्ल० को ऐसा

1. हैसमी, भाग 2, पृ० 288.

काम करते हुए देखा है कि इससे पहले कभी नहीं देखा।

फिर आपने अपना सर उठाया, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने बड़ा लंबा सज्दा फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरे रब ने मुझे यह अतीया दिया है कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी जन्नत में हिसाब के बग़ैर दाख़िल होंगे। मैंने इस अतीए का शुक्रिया अदा करने के लिए अपने रब के सामने इतना लम्बा सज्दा किया।

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपकी उम्मत तो बहुत ज़्यादा और बहुत पाकीज़ा है। आप अल्लाह से और मांग लेते। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने दो-तीन बार और मांगा। इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आपने तो अपनी सारी उम्मत अल्लाह से ले ली।[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से एक आदमी गुज़रा जो किसी पुरानी बीमारी में पड़ा हुआ था। हुज़ूर सल्ल० ने सवारी से नीचे उतरकर शुक्र का सज्दा अदा किया (कि अल्लाह ने मुझे इस बीमारी से बचाकर रखा।)

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु उस आदमी के पास से गुज़रे और उन्होंने भी नीचे उतरकर सज्दा शुक्र अदा किया, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस आदमी के पास से गुज़रे और उन्होंने नीचे उतर कर सज्दा शुक्र अदा किया।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घरवालों की जमाअत भेजी और उनके लिए यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! अगर तू इन लोगों को सही सालिम वापस ले जाएगा तो मेरे ज़िम्मे तेरा यह हक़ होगा कि मैं तेरा शुक्रिया

1. मज्मा, भाग 2, पृ० 289
2. मज्मा, भाग 2, पृ० 289,

इस तरह अदा करूंगा जिस तरह अदा करने का हक़ है।

कुछ ही दिनों के बाद वे लोग सही सालिम वापस आ गए तो आपने फ़रमाया, अल्लाह की कामिल नेमतों पर उसी के लिए तमाम तारीफ़ें हैं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपने यह नहीं फ़रमाया था, अगर अल्लाह इन्हें वापस लाएगा तो मैं अल्लाह के शुक्र का हक़ अदा करूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (ये कलिमे कहकर) क्या मैंने ऐसा नहीं कर दिया।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का शुक्र

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मांगने वाला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० के फ़रमाने पर उसे एक खजूर दे दी गई। उसने वह खजूर फेंक दी। फिर एक और सवाल करने वाला आया, तो आपने फ़रमाया, इसे भी एक खजूर दे दो। उसने खजूर लेकर कहा, सुब्हानल्लाह ! हुज़ूर सल्ल० की ओर से एक खजूर (यह तो बहुत बड़ी नेमत है।)

(उसकी इस कैफ़ियत से ख़ुश होकर) हुज़ूर सल्ल० ने लौंडी से फ़रमाया, उम्मे सलमा रज़ि० के पास जाओ और उनसे कहो कि उनके पास जो चालीस दिरहम हैं, वह इस सवाल करने वाले को दे दें।[2]

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक सवाल करने वाला नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे एक खजूर दे दी। उस आदमी ने कहा, सुब्हानल्लाह ! नबियों में से इतने बड़े नबी और वह एक खजूर सदक़े में दे रहे हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने उससे फ़रमाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि इस एक खजूर में बहुत सारे ज़र्रे हैं।

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 157
2. बैहक़ी,

फिर हुज़ूर सल्ल० के पास दूसरा सवाल करने वाला आया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे भी एक खजूर दी। उसने (खुश होकर) कहा, यह खजूर नबियों में से एक नबी की ओर से मिली है। जब तक मैं ज़िंदा रहूंगा, यह खजूर मेरे पास रहेगी और मुझे उम्मीद है कि उसकी बरकत हमेशा मिलती रहेगी।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने (लोगों को) उसके साथ भलाई करने का हुक्म दिया और कुछ ही दिनों बाद वह मालदार हो गया।[1]

हज़रत सुलैमान बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु (मक्का और मदीना के बीच) ज़जनान नामी जगह के पास से गुज़रे, तो फ़रमाने लगे, मैंने अपने आपको देखा कि मैं (बचपन में अपने बाप) ख़त्ताब के जानवर इस जगह चराया करता था, लेकिन अल्लाह की क़सम! मेरी जानकारी के मुताबिक़ वह सख़्त मिज़ाज और कठोर थे। फिर मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत का वाली बन गया हूं। फिर यह शेर (पद) पढ़ा—

لَا شَيْئَ فِيْمَا تَرَى إِلَّا بَشَاشَتُهٗ ۞ يَبْقَى الْإِلٰهُ وَيُوْدِى الْمَالُ وَالْوَلَدُ

'जो कुछ तुम देख रहे हो, उसमें (ज़ाहिरी) बशाशत के सिवा और कुछ नहीं है, अल्लाह की ज़ात बाक़ी रहने वाली है, बाक़ी तमाम माल और औलाद फ़ना हो जाएगी।'

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ने अपने ऊंट से फ़रमाया, चल।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर मेरे पास दो सवारियां लाई जाएं, एक शुक्र की, दूसरी सब्र की, तो मुझे इसकी परवाह नहीं है कि मैं किस पर सवार हुआ।[3]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऐसे मुसीबत के मारे आदमी के पास से गुज़रे जो कोढ़ी, अंधा, बहरा और गूंगा था। आपने उन साथियों से पूछा, क्या तुम्हें इसमें

1. कंज़, भाग 4, पृ० 42
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 417,
3. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 417

अल्लाह की कोई नेमत नज़र आ रही है? साथियों ने कहा, नहीं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इसमें भी अल्लाह की नेमत है। क्या आप लोग देख नहीं रहे कि यह पेशाब कर लेता है। पेशाब क़तरा-क़तरा करके नहीं आता है और न मुश्किल से निकलता है, बल्कि आसानी से निकल आता है, यह भी अल्लाह की ज़बरदस्त नेमत है।[1]

हज़रत इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी को सुना कि वह कह रहा था कि ऐ अल्लाह! मैं अपनी सारी जान और सारा माल तेरे रास्ते में ख़र्च करना चाहता हूं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम लोग ख़ामोश क्यों नहीं रहते? अगर कोई मुसीबत आ जाए तो सब्र करो और अगर आफ़ियत मिले तो शुक्र करो।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, यह बात मैंने ख़ुद सुनी है कि हज़रत उमर रज़ि० को एक आदमी ने सलाम किया। हज़रत उमर रज़ि० ने सलाम का जवाब दिया और उससे पूछा, तुम कैसे हो? उसने कहा, मैं आपके सामने अल्लाह की तारीफ़ बयान करता हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यही जवाब मैं तुमसे सुनना चाहता था।[3]

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को यह लिखा कि जितनी दुनिया मिले, उस पर क़नाअत करो, क्योंकि अल्लाह कुछ बन्दों को रोज़ी ज़्यादा देते हैं और कुछ को कम। वह इस तरह हर एक को आज़माना चाहते हैं, इसलिए जिसे रोज़ी ज़्यादा दी है, अल्लाह देखना चाहते हैं कि वह अल्लाह का शुक्र कैसे अदा करता है। अल्लाह ने अपने बन्दे को जो कुछ अता फ़रमाया है, उसके बदले में अल्लाह का जो हक़ बन्दे पर फ़र्ज़ बनता है, उसकी अदाएगी

1. कंज़, भाग 2, पृ० 154
2. कंज़, भाग 2, पृ० 154,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 151,

यह है कि बन्दा उसका शुक्र अदा करे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, शुक्र वालों के लिए अल्लाह की तरफ़ से हमेशा नेमतें बढ़ती रहती हैं, इसलिए तुम नेमतों की ज़्यादती तलब करो, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ (سورت ابراہیم آیت ۷)

'अगर तुम शुक्र करो, तो तुमको ज़्यादा नेमत दूंगा।'

(सूरः इब्राहीम, आयत 7)[2]

हज़रत सुलैमान बिन मूसा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी ने बताया कि कुछ लोग बुराई में लगे हुए हैं, आप इनके पास जाएं, हज़रत उस्मान रज़ि० वहां गए तो देखा कि वे लोग तो सब बिखर चुके हैं, अलबत्ता बुराई का असर मौजूद है, तो उन्होंने इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि उन्होंने उन लोगों को बुराई पर न पाया और एक गुलाम आज़ाद किया।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, नेमत मिलने पर तुरन्त अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और शुक्र अदा करने से नेमत और बढ़ती है। शुक्र और नेमत का बढ़ना एक ही रस्सी में बंधे हुए हैं। जब बन्दा शुक्र अदा करना छोड़ेगा, तब अल्लाह की ओर से नेमत का बढ़ना बन्द होगा।[4]

हज़रत मुहम्मद बिन काब कुरज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐसे नहीं हो सकता कि अल्लाह किसी के लिए शुक्र का दरवाज़ा तो खोल दें और अपनी ओर से नेमत बढ़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दें और दुआ का दरवाज़ा तो किसी के लिए खोल दें और दुआ की कुबूलियत का दरवाज़ा बन्द रखें और तौबा का दरवाजा तो किसी के लिए खोल दें और मग़्फ़िरत

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 151
2. कंज़, भाग 2, पृ० 151,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 60
4. बैहक़ी,

का दरवाज़ा बन्द रखें। मैं तुम्हें (इसकी ताईद में) अल्लाह की किताब यानी क़ुरआन में से पढ़कर सुनाता हूं, अल्लाह ने फ़रमाया है—

ادْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (سورت مؤمن آیت ۶۰)

'मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी दरख़्वास्त क़ुबूल करूंगा।'

(सूरः मोमिन, आयत 60)

और अल्लाह ने फ़रमाया है—

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ

और फ़रमाया है—

اُذْكُرُوْنِیْٓ اَذْكُرْكُمْ (سورت بقرہ آیت ۱۵۲)

इन (नेमतों) पर मुझको याद करो, मैं तुमको (इनायत से) याद रखूंगा।'

(सूरः बक़रः, आयत 152)

और फ़रमाया है—

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

(سورت نساء آیت ۱۱۰)

'और जो व्यक्ति कोई बुराई करे या अपनी जान का नुक़्सान करे, फिर अल्लाह से माफ़ी चाहे तो वह अल्लाह को बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला पाएगा।' (सूरः निसा, आयत 110)[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं सुबह और शाम इस हाल में करूं कि लोग मुझ पर कोई मुसीबत न देखें, तो मैं मुसीबत से बचे रहने को अपने ऊपर अल्लाह की ओर से बहुत बड़ी नेमत समझता हूं।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जो आदमी यह समझता है कि अल्लाह की नेमत सिर्फ़ खाना और पीना ही है तो उसकी समझ कम है और इसका अज़ाब नज़दीक आ चुका है।[3]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 151,
2. इब्ने असाकिर
3. कंज़, भाग 2, पृ० 152, हुलीया, भाग 1; पृ० 210,

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जो बन्दा ख़ालिस पानी पिए और वह पानी बग़ैर किसी तक्लीफ़ के अन्दर चला जाए और फिर बग़ैर किसी तक्लीफ़ के (पेशाब के ज़रिए से) बाहर आ जाए, तो उस पर शुक्र करना वाजिब हो गया।[1]

जब हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा शहीद कर दिए गए, तो उनकी मोहतरमा वालिदा (मां) हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा की वह चीज़ गुम हो गई जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको अता फ़रमाई थी और एक थैले में रखी रहती थी। वह उसे खोजने लगीं। जब वह चीज़ मिल गई तो सज्दे में गिर पड़ीं।[2]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 152,
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 290

अज्र व सवाब हासिल करने का शौक़

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अज्र व सवाब हासिल करने का शौक़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई में तीन आदमियों को एक ऊंट मिला था, (जिस पर वे बारी-बारी सवार होते थे।) चुनांचे हज़रत अबू लुबाबा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ऊंट में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शरीक थे। जब हुज़ूर सल्ल० के पैदल चलने की बारी आई तो दोनों ने अर्ज़ किया कि (आप ऊंट पर सवार रहें) हम आपकी जगह पैदल चलेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम दोनों मुझसे ताक़तवर भी नहीं हो और न मैं तुमसे ज़्यादा अज्र व सवाब का ग़ैर ज़रूरतमन्द हूं, (बल्कि मुझे भी सवाब की ज़रूरत है, इसलिए मैं भी पैदल चलूंगा।)[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का अज्र व सवाब हासिल करने का शौक़

हज़रत मुत्तलिब बिन अबी वदाआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी देखा जो बैठकर नमाज़ पढ़ रहा था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया बैठकर नमाज़ पढ़ने वाले को खड़े होकर नमाज़ पढ़ने वाले से आधा सवाब मिलता है। यह सुनकर तमाम लोग मशक़्क़त और तक्लीफ़ के बावजूद खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो इन दिनों मदीना में बुख़ार का ज़ोर था। चुनांचे लोगों को बुख़ार होने लगा। एक दिन हुज़ूर

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 261, मज्मा, भाग 6, पृ० 69
2. हैसमी, भाग 2, पृ० 150,

सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो लोग बैठकर नमाज़ पढ़ रहे थे। आपने फ़रमाया, बैठकर पढ़ने वाले की नमाज़ सवाब में खड़े होकर पढ़ने वाले से आधी होती है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० और आपके सहाबा रज़ि० मदीना आए, तो सहाबा रज़ि० को मदीना का बुख़ार चढ़ गया और इतने बीमार हुए कि उन्हें बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ी, अलबत्ता हुज़ूर सल्ल० को अल्लाह ने बुख़ार से बचाए रखा।

सहाबा किराम रज़ि० बुख़ार से इतने कमज़ोर हो गए थे कि वे बैठकर नमाज़ पढ़ा करते थे। एक दिन हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ लाए और सहाबा रज़ि० उसी तरह बैठकर नमाज़ पढ़ रहे थे, तो आपने उनसे फ़रमाया, यह जान लो कि बैठकर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े होकर पढ़ने वाले से आधी होती है। यह फ़ज़ीलत सुनकर तमाम मुसलमान कमज़ोरी और बीमारी के बावजूद ज़्यादा सवाब हासिल करने के शौक़ में तकल्लुफ़ के साथ खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे।[2]

हज़रत रबीआ बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं सारा दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करता था और जब इशा पढ़कर हुज़ूर सल्ल० घर तशरीफ़ ले जाते, तो मैं आपके दरवाज़े पर बैठ जाता, मैं कहता, शायद अल्लाह के रसूल सल्ल० को कोई ज़रूरत पेश आ जाए। मैं काफ़ी देर तक सुनता रहता कि हुज़ूर सल्ल० 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' पढ़ते रहते। मैं यों ही बैठा रहता, यहां तक कि थक कर वापस चला जाता या नींद आ जाती, तो वहां ही सो जाता।

जब हुज़ूर सल्ल० ने देखा कि मैं आपकी दिल व जान से ख़िदमत कर रहा हूं और आपको ख़्याल हुआ कि मेरा हुज़ूर सल्ल० पर हक़ बनता है, तो आपने फ़रमाया, ऐ रबीआ बिन काब! मुझसे मांग लो। जो मांगोगे, तुम्हें ज़रूर दूंगा।

---

1. फ़त्ह, भाग 3, पृ० 395
2. बिदाया, भाग 3, पृ० 224.

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मैं ज़रा सोच लूं फिर आपको बताऊंगा, मैंने दिल में सोचा तो मेरे दिल में यह बात आई कि दुनिया तो बहरहाल ख़त्म होने वाली है और जाने वाली चीज़ है और ज़रूरत के मुताबिक़ मुझे रोज़ी मिल ही रही है, इसलिए मैं अल्लाह के रसूल से अपनी आख़िरत के लिए मांगूंगा, क्योंकि उनका अल्लाह के यहां बड़ा ख़ास दर्जा है।

चुनांचे यह सोचकर मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ रबीआ! तुमने क्या सोचा है?

मैं अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं यह चाहता हूं कि आप अपने रब के यहां मेरी सिफ़ारिश फ़रमाएं, ताकि वह मुझे दोज़ख़ की आग से आज़ाद कर दे।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें यह बात किसने समझाई?

मैंने कहा, उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मुझे यह बात किसी ने नहीं समझाई, बल्कि जब आपने फ़रमाया कि मुझसे मांगो, जो मांगोगे, वह मैं तुम्हें ज़रूर दूंगा और अल्लाह के यहां आपको बड़ा ख़ास दर्जा हासिल है, तो मैंने इस मामले में ग़ौर किया, तो मुझे नज़र आया कि दुनिया ख़त्म होने वाली और चली जाने वाली चीज़ है और ज़रूरत के मुताबिक़ मुझे रोज़ी मिल ही रही है, इसलिए मैंने सोचा कि अल्लाह के रसूल सल्ल० से मैं अपनी आख़िरत के लिए ही मांगूं।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० काफ़ी देर ख़ामोश रहे, फिर फ़रमाया, मैं तुम्हारी सिफ़ारिश ज़रूर करूंगा, लेकिन तुम इस बारे में सज्दों की ज़्यादती से मेरी मदद करो।[1]

मुस्लिम की रिवायत में इस तरह से है कि हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के पास रात गुज़ारता था और वुज़ू का पानी और ज़रूरत की चीज़ आपकी ख़िदमत में पेश कर दिया करता था। एक बार आपने मुझसे फ़रमाया, मुझसे मांगो। मैंने अर्ज़ किया, मैं

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 335,

जन्नत में आपका साथ मांगता हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यही या कुछ और मांगना चाहते हो? मैंने अर्ज़ किया, बस यही। आपने फ़रमाया, अच्छा तो तुम इस बारे में सज्दों की ज़्यादती से मेरी मदद करो।[1]

हज़रत अब्दुल जब्बार बिन हारिस बिन मालिक अदसी मनावी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैं सरात के इलाक़े से वफ़्द (प्रतिनिधिमंडल) लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया। हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मैंने अरबों के तरीक़े से यों सलाम किया कि आपकी सुबह अच्छी हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने (हज़रत) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को और उनकी उम्मत को इसके अलावा और सलाम दिया है जो वे एक दूसरे को करते हैं।

मैंने कहा, अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, 'व अलैकस्सलाम।' फिर आपने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? मैंने कहा, जब्बार बिन हारिस। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। आज से तुम अब्दुल जब्बार बिन हारिस हो। मैंने कहा, बहुत अच्छा, आज से मेरा नाम अब्दुल जब्बार बिन हारिस है। चुनांचे मैं इस्लाम में दाख़िल हो गया और हुज़ूर सल्ल० से बैअत हो गया।

जब मैं बैअत हो गया, तो लोगों ने हुज़ूर सल्ल० को बताया कि यह मनावी तो अपनी क़ौम का बेहतरीन घुड़सवार है। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुझे एक घोड़ा सवारी के लिए इनायत फ़रमाया, फिर मैं हुज़ूर सल्ल० के यहां ठहर गया और आपके साथ लड़ाइयों में शरीक होकर काफ़िरों से ख़ूब लड़ता रहा। एक बार हुज़ूर सल्ल० को मेरे उस घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ न आई, तो फ़रमाया, क्या बात है? अदसी के घोड़े की हिनहिनाने की आवाज़ नहीं आ रही है?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मुझे यह ख़बर मिली

1. तर्ग़ीब, भाग 1, पृ० 213,

कि आपको मेरे घोड़े की आवाज़ से तक्लीफ़ होती है, इसलिए मैंने उसे ख़स्सी कर दिया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने घोड़ों को ख़स्सी करने से मना फ़रमाया।

मुझसे लोगों ने कहा, क्या ही अच्छा होता कि तुम भी हुज़ूर सल्ल० से अपने लिए कोई ख़त ले लेते जैसे तुम्हारे चचेरे भाई हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० से लिया था। मैंने कहा, उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से दुनिया की कोई चीज़ मांगी है या आख़िरत की? लोगों ने कहा, दुनिया की। मैंने कहा, दुनिया तो मैं छोड़कर आया हूं। मैं तो हुज़ूर सल्ल० से यह चाहता हूं कि कल (क़ियामत के दिन) अल्लाह के सामने मेरी मदद फ़रमाएं।[1]

हज़रत अम्र बिन तग़लिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ लोगों को माल दिया और कुछ लोगों को न दिया, तो जिनको न दिया, वे हुज़ूर सल्ल० से कुछ नाराज़ हो गए, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं कुछ लोगों को इसलिए देता हूं कि अगर न दूंगा तो मुझे डर है कि बे-सब्री करेंगे और घबराने लग जाएंगे और जिन लोगों के दिल में अल्लाह ने ख़ैर और इस्तग़ना के जज़्बात रखे हैं, उनको इसी ख़ैर और इस्तग़ना के हवाले कर देता हूं और अम्र बिन तग़लब भी उन्हीं लोगों में से है।

हज़रत अम्र कहते हैं, मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान के बदले मुझे लाल ऊंट मिल जाएं।[2]

हज़रत अम्र बिन हम्माद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक साहब ने हमें यह क़िस्सा सुनाया कि एक बार हज़रत अली और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा तवाफ़ करके बाहर आए, तो उन लोगों ने देखा कि एक देहाती आदमी अपनी मां को अपनी पीठ पर उठाए हुए है और यह शेर पढ़ रहा है— أَنَا مَطِيَّتُهَا لَا أَنْفِرُ ۔ وَإِذَا الرِّكَابُ ذُعِرَتْ لَا أَذْعَرُ ۔ وَمَا حَمَلَتْنِي وَأَرْضَعَتْنِي أَكْثَرُ

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 215,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 361, इस्तीआब, भाग 2, पृ० 518

'मैं अपनी मां की ऐसी सवारी हूं जो बिदकती नहीं और जब सवारियां डरने लगती हैं तो मैं नहीं डरता और मेरी मां ने जो पेट में मुझे उठाया और जो मुझे दूध पिलाया, वह मेरी इस ख़िदमत से कहीं ज़्यादा है।' लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक०

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ अबू हफ़्स ! आओ हम भी तवाफ़ करें, क्योंकि (इस देहाती की इस ऊंची कैफ़ियत की वजह से) रहमत उतर रही है, तो वह हमें भी मिल जाएगी। फिर वह देहाती मताफ़ में दाख़िल होकर तवाफ़ करने लगा और ये शेर पढ़ रहा था—

और कह रहा था, लब्बैक अल्लाहुम-म लब्बैक

हज़रत अली रज़ि० यह शेर पढ़ने लगे—

'अगर तुम अपनी मां के साथ अच्छा सुलूक करते रहे हो, तो अल्लाह भी बहुत ज़्यादा क़द्रदान हैं, वह तुम्हें इस थोड़ी मुद्दत के बदले में बहुत ज़्यादा देंगे।'[1]

हज़रत मैमून बिन मेहरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि नज्दह हरूरी (यह ख़ारिजी था) के साथी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ऊंटों के पास से गुज़रे और उन्हें हांक कर साथ ले गए। इन ऊंटों का चरवाहा आया और उसने कहा, ऐ अबू अब्दुर्रहमान ! आप अपने ऊंटों के बारे में सवाब की नीयत कर लें।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने पूछा, ऊंटों का क्या हुआ ?

उस चरवाहे ने कहा, नज्दह (ख़ारिजी) के साथी उनके पास से गुज़रे थे, वह उन्हें ले गए।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि०ने पूछा, यह क्या बात है कि वह ऊंट तो ले गए और तुम्हें छोड़ गए ?

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 310,

उसने कहा, वह तो मुझे भी ऊंटों के साथ ले गए थे, लेकिन मैं उनसे किसी तरह छूटकर आ गया।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने पूछा, तुम उन्हें छोड़कर मेरे पास क्यों आ गए? उसने कहा, मुझे आपसे मुहब्बत उनसे ज़्यादा है? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, क्या तुम उस अल्लाह की क़सम खाकर कह सकते हो, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि तुमको मुझसे मुहब्बत उनसे ज़्यादा है। उसने अल्लाह की क़सम खाकर यह बात कह दी।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, उन ऊंटों के बारे में तो सवाब की नीयत मैंने कर ही ली थी, अब ऊंटों के साथ तुम्हारे बारे में भी कर लेता हूं। चुनांचे उन्होंने उस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया।

कुछ दिनों के बाद किसी ने आकर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को कहा कि आपको अपनी फ़्लां नाम वाली ऊंटनी लेने का कुछ ख़्याल है? वह बाज़ार में बिक रही है और उसने उस ऊंटनी का नाम भी लिया।

हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा, मेरी चादर मुझे दो। जब कंधे पर चादर रखकर खड़े हो गए तो फिर बैठ गए और चादर नीचे रख दी और फ़रमाया, मैंने उस ऊंटनी के बारे में सवाब की नीयत कर ली थी, तो अब मैं उसको लेने क्यों जाऊं?[1]

हज़रत अम्र बिन दीनार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने इस बात का इरादा फ़रमाया कि वह शादी नहीं करेंगे तो उनसे (इनकी बहन) हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने कहा कि आप शादी करें, क्योंकि अगर बच्चे पैदा होकर मर गए तो आपको (सब्र करने की वजह से) सवाब मिलेगा और अगर वे बच्चे ज़िंदा रहे तो वे आपके लिए अल्लाह से दुआ करते रहेंगे।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़ुरात नदी के किनारे सिफ़्फ़ीन की तरफ़ चले जा रहे थे, तो उन्होंने यह दुआ मांगी, ऐ

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 300, इसाबा, भाग 2, पृ० 348,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 125,

अल्लाह ! अगर मुझे यह मालूम हो जाए कि तू मुझसे इस बात से ज़्यादा राज़ी होगा कि मैं अपने आपको इस पहाड़ से नीचे गिरा दूं और लुढ़कता हुआ नीचे चला जाऊं (और यों ख़ुद को हलाक कर दूं) तो मैं इस तरह करने के लिए बिल्कुल तैयार हूं और अगर मुझे यह मालूम हो जाए कि तू मुझसे इस बात से ज़्यादा राज़ी होगा कि मैं बहुत बड़ी आग जला कर उसमें छलांग लगा दूं, तो मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार हूं। ऐ अल्लाह ! अगर मुझे यह मालूम हो जाए कि तू मुझसे इस बात से ज़्यादा राज़ी होगा कि मैं पानी में छलांग लगा कर डूब जाऊं तो मैं इसके लिए बिल्कुल तैयार हूं और मैं यह लड़ाई केवल तेरी वजह से लड़ रहा हूं और मुझे यक़ीन है कि जब मेरा मक़सद तुझको राज़ी करना ही है, तो तू मुझे नामुराद व महरूम नहीं करेगा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं आज जितना ख़ैर का काम कर रहा हूं, यह मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इससे दोगुना काम करने से ज़्यादा महबूब है, क्योंकि हुज़ूर सल्ल० के साथ हमें आख़िरत की फ़िक्र होती थी, दुनिया की फ़िक्र होती ही नहीं थी और आज तो दुनिया हमारी तरफ़ उमडी चली आ रही है।[2]

---

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 258, हुलीया, भाग 1, पृ० 143,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 287, हैसमी, भाग 9, पृ० 354,

इबादत में कोशिश और मेहनत

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोशिश और मेहनत

हज़रत अलक़मा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (इबादत के लिए) कोई दिन ख़ास किया करते थे?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं। आपके सारे काम हमेशा हुआ करते थे और इबादत करने की जितनी ताक़त हुज़ूर सल्ल० में थी, उतनी तुममें से किसमें होगी।[1]

हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नफ़्लों में इतना लम्बा क़ियाम फ़रमाया कि आपके मुबारक पांव फट गए। किसी ने अर्ज़ किया, क्या अल्लाह ने आपके अगले-पिछले तमाम गुनाह माफ़ नहीं कर दिए? (इसलिए आप इतनी ज़्यादा इबादत क्यों करते हैं?) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो क्या फिर मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं?[2]

इस बारे में वाक़िए नमाज़ के बाब में आएंगे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की कोशिश और मेहनत

हज़रत ज़ुबैर बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि अपनी दादी से नक़ल करते हैं, जिन्हें रुहैमा कहा जाता था कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हमेशा रोज़ा रखा करते थे और सारी रात अल्लाह की इबादत किया करते थे, बस शुरू रात में कुछ देर आराम करते।[3]

---

1. सिफ़तुस्सफ़वा, पृ० 74,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 58, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 384,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 56, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 10

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा इबादत में इस दर्जे को पहुंचे, जिस दर्जे को कोई न पहुंच सका। एक बार इतनी ज़बरदस्त बाढ़ आयी कि इसकी वजह से लोग तवाफ़ न कर सकते थे, लेकिन हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने तैर कर तवाफ़ के सात चक्कर पूरे किए।[1]

हज़रत क़तन बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सात दिन लगातार बग़ैर इफ़्तार के रोज़े रखा करते थे, जिसकी वजह से उनकी आंतें सूख जाया करती थीं और हज़रत हिशाम बिन उर्व: रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सात दिन लगातार खाए-पिए बग़ैर रोज़े रखा करते थे। जब ज़्यादा बूढ़े हो गए तो तीन दिन लगातार रोज़े रखते।[2]

इन दोनों बुज़ुर्गों और दूसरे सहाबा किराम के वाक़िए नमाज़ के बाब में आएंगे।

---

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 226,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 226,

बहादुरी

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० की बहादुरी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत, सबसे ज़्यादा दान करने वाले और सबसे ज़्यादा बहादुर थे। एक रात मदीना वाले (किसी आवाज़ को सुनकर) घबरा गए, तो लोग उस आवाज़ की ओर चल पड़े।

उन्हें सामने से हुज़ूर सल्ल० वापस आते हुए मिले। हुज़ूर सल्ल० उनसे पहले आवाज़ की ओर चले गए थे। हुज़ूर सल्ल० हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु के घोड़े पर नंगी पीठ पर सवार थे। आपकी गरदन में तलवार लटक रही थी। आप फ़रमा रहे थे, डरने की कोई बात नहीं और फ़रमाया, हमने इस घोड़े को समुन्दर (की तरह जारी-सारी पाया) हालांकि मशहूर यह था कि यह घोड़ा सुस्त और कमज़ोर है। (हुज़ूर सल्ल० की बरकत से तेज़ हो गया।)

मुस्लिम में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में इस तरह है कि एक बार मदीना में घबराहट की बात पेश आई। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु से 'मन्दूब' नामी घोड़ा मांग कर लिया और उस पर सवार होकर गए और वापस आकर फ़रमाया, हमें घबराहट की कोई चीज़ नज़र नहीं आई और हमने तो इस घोड़े को समुन्दर की तरह पाया और जब लड़ाई ज़ोरों पर आती, तो हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आगे करके ख़ुद को बचाया करते।[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बद्र की लड़ाई के दिन मुश्रिकों के हमले से हमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओट लेकर अपना बचाव किया। आप लोगों में सबसे

1. मुस्लिम,

ज़्यादा निडर थे। बड़ी बे-जिगरी से लड़ते थे।[1]

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, यह बात मैंने ख़ुद सुनी है कि क़बीला क़ैस के आदमी ने हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि क्या हुनैन की लड़ाई के दिन आप लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छोड़कर भाग गए थे?

हज़रत बरा ने फ़रमाया, जी हां, लेकिन हुज़ूर सल्ल० नहीं भागे थे। क़बीला हवाज़िन वाले बड़े तीरंदाज़ थे। जब हमने उन पर हमला किया, तो उन्हें हार हो गई तो हम लोग माले ग़नीमत समेटने पर टूट पड़े। उस वक़्त उन्होंने हम पर तीरों की बौछार कर दी।

मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपने सफ़ेद ख़च्चर पर सवार हैं और उसकी लगाम हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु पकड़े हुए हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं 'अनन्नबीयु ला कज़िब' (मैं नबी हूं, और यह बात झूठ नहीं है।)

बुख़ारी की एक रिवायत में यों है—

'मैं नबी हूं और यह बात झूठ नहीं है। मैं अब्दुल मुत्तलिब का पोता हूं।' (लोगों को हिम्मत दिलाने के लिए आपने अपने ख़ानदान का ज़िक्र किया)

बुख़ारी की एक और रिवायत में यह है कि फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़च्चर से नीचे तशरीफ़ लाए।[2]

हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नीचे तशरीफ़ ले आए और अल्लाह से मदद तलब फ़रमाई और यों फ़रमाया—

'अल्लाहुम-म नज़्ज़िल नस-र-क' इसमें यह बढ़ा हुआ है कि ऐ

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 37,
2. बुख़ारी, मुस्लिम, नसई,

अल्लाह ! अपनी मदद फ़रमा' और जब लड़ाई ज़ोरों पर आ जाती तो हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओट में अपना बचाव किया करते थे और उस वक़्त जो हुज़ूर सल्ल० के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ता, वह सबसे ज़्यादा बहादुर जाना जाता ।[1]

जिहाद के बाब में सहाबा किराम की बहादुरी के तहत हज़रत अबूबक्र, हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत तलहा, हज़रत साद, हज़रत हमज़ा, हज़रत अब्बास, हज़रत मुआज़ बिन अम्र, हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा, हज़रत अबू दुजाना, हज़रत क़तादा, हज़रत सलमा बिन अकवअ, हज़रत अबू हदरद, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, हज़रत बरा बिन मालिक, हज़रत अबुल मेहजन, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत अम्र बिन मादीकर्ब और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के वाक़िए गुज़र चुके हैं ।

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 328,

तक़्वा और इंतिहाई एहतियात

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तक़्वा और इंतिहाई एहतियात

हज़रत शुऐब रहमतुल्लाहि अलैहि के दादा (हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रात के वक़्त अपने पहलू में पड़ी हुई खजूर मिली। आपने उसे खा लिया, लेकिन फिर आपको नींद न आई।

पाक बीवियों में से किसी ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आज रात आपको नींद नहीं आई ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे अपने पहलू के नीचे पड़ी हुई खजूर मिली। मैंने उसे खा लिया, लेकिन बाद में मुझे ख़्याल आया कि हमारे यहां तो सदक़े की खजूरें भी थीं, कहीं यह खजूर उनमें से न हो। (इस ख़्याल की वजह से मुझे नींद न आई।)[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा का तक़्वा और इंतिहाई एहतियात

हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे इल्म में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा और कोई आदमी ऐसा नहीं है जिसने खाना खाकर क़ै कर दिया हो, इनका क़िस्सा यह है कि उनके पास खाना लाया गया जिसे उन्होंने खा लिया, फिर उन्हें किसी ने बताया कि यह खाना तो हज़रत इब्ने नुऐमान रज़ियल्लाहु अन्हु लाए थे। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुमने मुझे इब्ने नुऐमान के मंत्र पढ़ने की उजरत में से खिला दिया। फिर उन्होंने क़ै फ़रमाई।[2]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 59,
2. अहमद

कि हज़रत इब्ने नुऐमान रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे और बड़े ख़ूबसूरत थे। कुछ लोगों ने उनके पास आकर कहा, क्या आपके पास ऐसी औरत का कोई इलाज है जिसको हमल नहीं ठहरता? उन्होंने कहा, है। उन लोगों ने पूछा, वह इलाज क्या है?

हज़रत इब्ने नुऐमान ने कहा, यह मंत्र है, ऐ नाफ़रमान रहम! चुप कर और ख़ून बहाने का काम छोड़ दे। इस औरत को ज़्यादा बच्चे जनने से महरूम किया जा रहा है। ऐ काश! यह ज़्यादा बच्चे जनना इस नाफ़रमान रहम में होता। यह औरत हमल से हो या यह ठीक हो। इस मंत्र के बदले में इन लोगों ने उन्हें बकरी और घी हदिया भी दिया। (वह वाक़िया जाहिलियत के ज़माने में पेश आया था।)

हज़रत इब्ने नुऐमान रज़ि० उसमें से कुछ लेकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़िदमत में आए। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उसमें से कुछ खा लिया। (फिर उनको इस वाक़िए का पता चला) तो खाने से फ़ारिग़ होकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० उठे और जो कुछ खाया था, वह सब क़ै कर दिया और फिर फ़रमाया, आप लोग हमारे पास खाने की चीज़ ले आते हो और हमें बताते नहीं कि यह चीज़ कहां से आई है।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ग़ुलाम था जो तैशुदा मिक़्दार में कमा कर उन्हें दिया करता था। एक रात वह कुछ खाना लाया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उसमें से एक लुक़्मा खाया। ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि आप हर रात मालूम किया करते थे (कि कहां से कमा कर लाए हो?) लेकिन आज रात आपने मुझसे न पूछा। आपने फ़रमाया कि भूख ज़्यादा होने की वजह से न पूछ सका, अब बताओ यह खाना कहां से लाए हो?

उसने कहा, मैं जाहिलियत के ज़माने में एक क़ौम के पास से गुज़रा था और मैंने उनके एक बीमार पर दम किया था। उन्होंने मुझे कुछ देने का वायदा किया था। आज मेरा गुज़र उधर को हुआ, तो उनके यहां

1. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 360

शादी हो रही थी। उन्होंने मुझे यह दिया।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, तुम तो मुझे हलाक करने लगे थे। इसके बाद हलक़ में उंगली डाल कर क़ै करने की कोशिश की, मगर एक लुक़्मा और वह भी भूख की तेज़ी में खाया गया, न निकला। किसी ने अर्ज़ किया, पानी से ही क़ै हो सकती है। उन्होंने पानी का बहुत बड़ा प्याला मंगवाया और पानी पी-पीकर क़ै फ़रमाते रहे, यहां तक कि मुश्किल से वह लुक़्मा निकाला।

किसी ने अर्ज़ किया कि अल्लाह आप पर रहम फ़रमाएं, यह सारी मशक़्क़त उस एक लुक़्मे की वजह से बरदाश्त फ़रमाई? आपने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मेरी जान के साथ भी यह लुक़्मा निकलता तो भी मैं इसको निकालता। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो बदन हराम माल से परवरिश पाए, आग उसके लिए बेहतर है। मुझे यह डर हुआ कि मेरे बदन का कोई हिस्सा उस लुक़्मे से परवरिश न पा जाए।[1]

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार दूध पिया जो उन्हें बहुत पसन्द आया। जिन साहब ने पिलाया था, उनसे मालूम किया कि तुम्हें यह दूध कहां से मिला? उन्होंने बताया कि मैं फ़्लां पानी पर गया था, वहां सदक़े के जानवर पानी पीने आए हुए थे। इन लोगों ने उन जानवरों का दूध निकालकर हमें दिया। मैंने अपने उस मश्कीज़े में वह दूध डाल लिया। यह सुनकर हज़रत उम्र रज़ि० ने मुंह में उंगली डालकर वह सारा दूध क़ै कर दिया।[2] हज़रत मिस्वर बिन मख़्रमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तक़्वा और एहतियात सीखने के लिए हम लोग हर वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ लगे रहते थे।[3] हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु एक दिन कूफ़ा में बाहर निकले, तो एक दरवाज़े पर

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 31, सिफ़तुस्सफ़्वा, भाग 1, पृ० 95, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 360,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 418,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 290,

खड़े होकर उन्होंने पानी मांगा, तो अन्दर से एक लड़की लोटा और रूमाल लेकर निकली। आपने उससे पूछा, ऐ लड़की! यह घर किसका है? उसने कहा, फ़्लां दिरहम परखने वाले का है, तो आपने फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि दिरहम परखने वाले के कुंएं से पानी न पीना और टैक्स वसूल करने वाले के साए में हरगिज़ न बैठना।[1]

हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की दो बीवियां थीं। उनमें से जिसकी बारी का दिन होता, उस दिन दूसरी के घर से वुज़ू न करते। फिर दोनों बीवियां हज़रत मुआज़ रज़ि० के साथ शामदेश गईं और वहां इकट्ठी दोनों बीवियां बीमार हुईं और अल्लाह की शान दोनों का एक ही दिन में इंतिक़ाल हुआ। लोग उस दिन बहुत मश्ग़ूल थे, इसलिए दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। हज़रत मुआज़ रज़ि० ने दोनों में कुरआ डाला कि किसको क़ब्र में पहले रखा जाए।[2]

हज़रत यह्या रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु की दो बीवियां थीं। जब एक के पास होते तो दूसरी के यहां से पानी भी न पीते।[3] हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को लब्बैक पढ़ते हुए सुना, उस वक़्त हम लोग अरफ़ात में खड़े थे। एक आदमी ने उनसे पूछा, क्या आप जानते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० ने अरफ़ात से कब कूच फ़रमाया। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे नहीं मालूम। (यह उन्होंने एहतिमाम की वजह से फ़रमाया) लोग हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की इस एहतियात से बहुत हैरान हुए।[4]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 165,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 234,
3. अबी नुऐम
4. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 229

अल्लाह पर भरोसा

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह पर भरोसा

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नज्द की लड़ाई में गया। जब हुज़ूर सल्ल० वहां से वापस हुए तो दोपहर के वक़्त एक ऐसी घाटी में पहुंचे, जिसमें कांटेदार पेड़ बहुत थे। वहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ि० ने आराम किया और सहाबा रज़ि० पेड़ों के साए में इधर-उधर फैल गए। हुज़ूर सल्ल० भी एक पेड़ के साए में आराम फ़रमाने लगे और हुज़ूर सल्ल० ने अपनी तलवार उस पेड़ पर लटका दी।

हम सब सो गए कि अचानक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बुलाया, हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा कि एक देहाती आपके पास बैठा हुआ था। आपने फ़रमाया कि मैं सोया हुआ था, इसने आकर मेरी तलवार पेड़ से उतारी और उसे म्यान में से निकाल लिया। मैं उठा तो उसके हाथ में नंगी तलवार कसी हुई थी। उसने मुझसे कहा, आपको मुझसे कौन बचाएगा?

मैंने कहा, अल्लाह!

उसने फिर कहा, आपको मुझसे कौन बचाएगा?

मैंने कहा, अल्लाह।

फिर उसने तलवार को म्यान में रख दिया और बैठ गया और हालांकि उसने हुज़ूर सल्ल० का क़त्ल करने का इरादा कर लिया था, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे कोई सज़ा न दी।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बीला मुहारिब और ग़तफ़ान से नख़ला नामी जगह पर लड़ाई लड़ रहे थे। जब उन लोगों ने मुसलमानों को ग़फ़लत में देखा

1. बुख़ारी, मुस्लिम,

तो उनमें से एक आदमी, जिसका नाम ग़ौरस बिन हारिस था, वह आया और तलवार लेकर हुज़ूर सल्ल० के सर पर खड़े होकर कहने लगा, आपको मुझसे कौन बचाएगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह!

यह सुनते ही उसके हाथ से तलवार नीचे गिर गई। हुज़ूर सल्ल० ने तलवार उठा कर उससे पूछा कि अब तुमको मुझसे कौन बचाएगा? उसने कहा, आप तलवार के बेहतरीन लेने वाले बन जाइए, यानी मुझे माफ़ कर दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। उसने कहा, नहीं, अलबत्ता मैं आपसे यह अह्द करता हूं कि मैं कभी भी आपसे नहीं लड़ूंगा और जो लोग आपसे लड़ेंगे, उनका भी साथ नहीं दूंगा, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने उसे छोड़ दिया। उसने अपने साथियों को जाकर कहा, मैं तुम्हारे पास ऐसे आदमी के पास से आ रहा हूं, जो लोगों में से बेहतरीन हैं, फिर आगे ख़ौफ़ की नमाज़ का ज़िक्र किया।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का अल्लाह पर भरोसा

हज़रत याला बिन मुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद तश्रीफ़ ले गए और वहां वह नफ़्ल नमाज़ पढ़ने लगे। हमने वहां जाकर पहरा देना शुरू कर दिया। जब हज़रत अली रज़ि० नमाज़ से फ़ारिग़ हुए, तो वह हमारे पास तश्रीफ़ लाए और फ़रमाया, तुम लोग यहां क्यों बैठे हुए हो? हमने कहा, हम आपका पहरा दे रहे हैं।

उन्होंने फ़रमाया, आसमान वालों से पहरा दे रहे हो या ज़मीन वालों से? हमने कहा, ज़मीन वालों से। उन्होंने फ़रमाया, ज़मीन पर उस वक़्त तक कोई चीज़ नहीं हो सकती, जब तक आसमान में इसके होने का फ़ैसला न हो जाए और हर इंसान पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो हर बला

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 84,

को उससे दूर करते हैं और इसकी हिफ़ाज़त करते रहते हैं, यहां तक कि इसकी तक़्दीर का लिखा आ जाए और जब तक़्दीर का कोई फ़ैसला आ जाता है, तो ये दोनों फ़रिश्ते इसके और तक़्दीर के दर्मियान से हट जाते हैं और अल्लाह की तरफ़ से मेरी हिफ़ाज़त का बड़ा मज़बूत इन्तिज़ाम है। जब मेरी मौत का वक़्त आ जाएगा, तो इन्तिज़ाम मुझसे हट जाएगा और आदमी को ईमान की मिठास उस वक़्त तक नहीं मिल सकती, जब तक इसको यह यक़ीन न हो जाए जो कुछ अच्छा या बुरा उसको पहुंचा है, वह इससे ख़ता करने वाला नहीं था और जो इससे ख़ता कर गया वह इसे पहुंचने वाला नहीं था।[1]

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जब हज़रत अली रज़ि० की ज़िंदगी की आख़िरी रात आई तो उन्हें क़रार नहीं था (कभी अन्दर जाते, कभी बाहर) घरवालों को ख़तरा महसूस हुआ (कि उनके साथ कुछ हो न जाए), तो उन्होंने आपस में चुपके से मश्विरा करके यह तै किया कि हज़रत अली रज़ि० को बाहर नहीं जाना चाहिए और उन्होंने यह बात उनकी ख़िदमत में ख़ुदा का वास्ता देकर अर्ज़ की।

उन्होंने फ़रमाया, हर बन्दे के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं कि जब तक तक़्दीर के लिखे हुए का वक़्त न आ जाए, उस वक़्त तक हर बला इस बन्दे से दूर करते रहते हैं और जब तक़्दीर का वक़्त आ जाता है, तो फिर वे दोनों फ़रिश्ते उसके और तक़्दीर के बीच से हट जाते हैं। फिर हज़रत अली रज़ि० मस्जिद तशरीफ़ ले गए, जहां उन्हें शहीद कर दिया गया।[2]

हज़रत अबू मिजलज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि क़बीला मुराद के एक आदमी हज़रत अली रज़ि० के पास आए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ रहे थे। नमाज़ के बाद हज़रत अली रज़ि० की ख़िदमत में उसने अर्ज़ किया कि क़बीला मुराद के कुछ लोग आपको क़त्ल करना चाहते हैं, इसलिए आप अपनी हिफ़ाज़त का

1. अबू दाऊद
2. अबू दाऊद

इन्तिज़ाम कर लें।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि हर आदमी के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो हर उस बला से इसकी हिफ़ाज़त करते हैं जो इसके मुक़द्दर में लिखी हुई न हों और तक़्दीर का जब वक़्त आ जाता है, तो ये फ़रिश्ते इसके और तक़्दीर के दर्मियान से हट जाते हैं। बेशक मुक़र्रर किया हुआ वक़्त एक मज़बूत ढाल है।[1]

हज़रत यह्या बिन अबी कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि और दूसरे लोग कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि हम आपका पहरा न दें?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हर आदमी की मौत उसका पहरा दे रही है।[2]

हज़रत जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि के वालिद हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि दो आदमी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से अपने झगड़े का फ़ैसला करवाने आए। हज़रत अली रज़ि० इन दोनों को लेकर एक दीवार के नीचे बैठ गए, तो एक आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह दीवार गिरने वाली है।

उन्होंने फ़रमाया, अपना काम करो, अल्लाह हमारी हिफ़ाज़त के लिए काफ़ी है। फिर इन दोनों की बात सुनकर फ़ैसला फ़रमाया और वहां से खड़े हुए, फिर वह दीवार गिर गई।[3]

हज़रत अबू ज़बिया रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु मरज़ुल वफ़ात (वह मरज़ जिसमें मौत हो जाए) के शिकार हुए तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु इनके पूछने के लिए तश्रीफ़ ले आए और फ़रमाया, आपको क्या शिकायत है?

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अपने गुनाहों की

1. कंज़, भाग 1, पृ० 88,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 75,
3. दलाइल, पृ० 211,

शिकायत है। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, आप क्या चाहते हैं? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, मैं अपने रब की रहमत चाहता हूं। हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, क्या मैं आपके लिए डाक्टर न बुला लाऊं? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, डाक्टर ने ही (यानी अल्लाह ही ने) तो मुझे बीमार किया है। हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, क्या मैं आपके लिए बैतुल माल में से वज़ीफ़ा न मुक़र्रर कर दूं? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, वह वज़ीफ़ा आपके बाद आपकी बेटियों को मिल जाएगा।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा, क्या आपको मेरी बेटियों पर फ़ाक़े का डर है? मैंने अपनी बेटियों को कह रखा है कि वे हर रात सूरः वाक़िया पढ़ लिया करें। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो आदमी हर रात सूरः वाक़िया पढ़ेगा, उस पर कभी फ़ाक़ा नहीं आएगा। (इसलिए वज़ीफ़े की ज़रूरत नहीं है।)[1]

बीमारियों पर सब्र करने के उन्वान में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का ऐसा ही क़िस्सा गुज़र चुका है, अलबत्ता उसमें सूरः वाक़िया का ज़िक्र नहीं है।

तक़्दीर पर और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि मेरी सुबह किस हालत में होती है, मेरी पसन्दीदा हालत पर होती है या नापसन्दीदा हालत पर, क्योंकि मुझे मालूम नहीं है कि जो मैं पसन्द कर रहा हूं उसमें ख़ैर है या जो मुझे पसन्द नहीं है, उसमें ख़ैर है।[2]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि किसी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे फ़ाक़ा मालदारी से और बीमारी सेहत से ज़्यादा महबूब है।

---

1. तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 281,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 145,

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह अबूज़र पर रहम फ़रमाए, मैं तो यह कहता हूं कि जो आदमी भी अल्लाह पर भरोसा करे और यह समझे कि अल्लाह जो हालत भी इसके लिए पसन्द फ़रमाते हैं वह ख़ैर ही है, तो वह अल्लाह की ओर से भेजी हुई हालत के अलावा किसी और हालत की कभी तमन्ना न करेगा और यह कैफ़ियत 'फ़ैसले पर राज़ी' रहने के मर्तबे का आख़िरी दर्जा है।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जो अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होगा, तो अल्लाह ने जो फ़ैसला किया है, वह तो होकर रहेगा, लेकिन उसे (इस पर राज़ी होने की वजह से) बदला मिलेगा और इस पर जो राज़ी न होगा, तो भी अल्लाह का फ़ैसला होकर रहेगा, लेकिन उसके नेक अमल बर्बाद हो जाएंगे।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हर आदमी इस बात की तमन्ना करेगा कि काश, वह दुनिया में गुज़ारे के क़ाबिल ही खाना खाता। और दुनिया में सुबह व शाम पेश आने वाले हालात में इंसान का नुक़्सान तब होता है, जब इन हालात पर दिल में गुस्सा और रंज हो और तुममें से एक आदमी अपने मुंह में अंगारा इतनी देर रखे कि वह बुझ जाए। यह उसके लिए इससे बेहतर है कि जिस काम के लिए इससे बेहतर है कि जिस काम के लिए अल्लाह ने होने का फ़ैसला कर रखा है, उसके बारे में वह यह कहे कि काश यह न होता।[3]

तक़्वा

हज़रत कुमैल बिन ज़ियाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बाहर निकला। जब आप क़ब्रस्तान पहुंचे, तो क़ब्रों की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ

1. कंज़, भाग 2, पृ० 145,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 145,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 137,

क़ब्र वालो ! ऐ पुराने हो जाने वालो ! ऐ वहशत वालो ! तुम्हारे यहां के हालात क्या है? हमारे यहां के हालात तो यह हैं कि (तुम्हारे बाद तुम्हारे) माल बांट दिए गए और बच्चे यतीम हो गए और तुम्हारी बीवियों ने और शौहर कर लिए, तो ये हैं हमारे यहां के हालात, तुम्हारे यहां के हालात क्या हैं ?

फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, ऐ कुमैल ! अगर इन्हें जवाब देने की इजाज़त होती, तो ये जवाब में कहते कि बेहतरीन तोशा तक़्वा है। फिर हज़रत अली रज़ि० रोने लगे और फ़रमाया, ऐ कुमैल ! क़ब्र अमल का संदूक़ है और मौत के वक़्त तुम्हें इसका पता चलेगा।[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोग तक़्वा के साथ अमल के क़ुबूल होने का ज़्यादा एहतिमाम करो, क्योंकि तक़्वा के साथ किया गया अमल थोड़ा नहीं होता और जो अमल क़ुबूल हो जाए, वह थोड़ा कैसे समझा जा सकता है ?[2]

हज़रत अब्दे ख़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तक़्वा के साथ किया गया अमल थोड़ा नहीं समझा जाता और जो अमल क़ुबूल हो जाए वह थोड़ा कैसे समझा जा सकता है ?[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे यह मालूम हो जाए कि अल्लाह मेरे किसी अमल को क़ुबूल कर लेंगे, यह मुझे इससे ज़्यादा महबूब है कि मुझे इतना सोना मिल जाए जिससे सारी ज़मीन भर जाए।[4]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (आख़िरत की तैयारी करने वाले) अक़्लमंद लोगों का सोना और उनका रोज़ा न रखना

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 142,
2. अबू नुऐम, इब्ने असाकिर,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 142
4. कंज़, भाग 2, पृ० 142,

कितना अच्छा लगता है और वे लोग (आख़िरत की तैयारी न करने वाले) बेवक़ूफ़ लोगों की शब-बेदारी और रोज़ा रखने से किस तरह ऐब लगाते हैं? तक़्वा और यक़ीन वाले आदमी की नेकी का ज़र्रा धोखे में पड़े हुए लोगों के पहाड़ों के बराबर इबादत से ज़्यादा बड़ा और ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला और (तराज़ू में) ज़्यादा वज़नी है।[1]

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर मुझे यह यक़ीन हो जाए कि अल्लाह ने मेरी एक नमाज़ क़ुबूल फ़रमा ली है, तो यह मुझे दुनिया और दुनिया में जो कुछ है उससे ज़्यादा महबूब होगा, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है—

إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (سورت مائده آیت ۲۷)

'अल्लाह तक़्वा वालों का अमल ही क़ुबूल करते हैं।'[2]

(सूरः माइदा, आयत 27)

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुममें से जो आदमी अल्लाह के लिए कोई चीज़ छोड़ेगा, अल्लाह उसे इससे बेहतर चीज़ वहां से अता फ़रमाएंगे, जहां से मिलने का उसे गुमान न होगा और जो इस बारे में सुस्ती करेगा और चीज़ को इस तरह लेगा कि किसी को पता न चल सके, तो अल्लाह उस पर उससे ज़्यादा सख़्त मुसीबत वहां से ले आएंगे, जहां से मुसीबत के आने का उसे गुमान भी नहीं होगा।[3]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 211,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 143
3. कंज़, भाग 2, पृ० 142

अल्लाह का ख़ौफ़ और डर

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़ौफ़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं देख रहा हूं कि आप बूढ़े हो गए हैं। (कुछ कमज़ोरी के निशान नज़र आने लग गए हैं।) आपने फ़रमाया, मुझे सूरः हूद, सूरः वाक़िआ, सूरः मुर्सलात, सूरः अम-म य-त-साअलून और सूरः इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया।[1]

बैहक़ी में यह रिवायत है कि हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप पर बुढ़ापे के निशान बहुत जल्द ज़ाहिर हो गए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मुझे सूरः हूद और इस जैसी और सूरतों, वाक़िया, अम-म य-त-साअलून और इज़श्शम्सु कुव्विरत ने बूढ़ा कर दिया।[2]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मैं कैसे ख़ुशहाली और मज़ेदार ज़िंदगी वाला हो सकता हूं, जबकि सूर फूंकने वाला सूर मुंह में ले चुका है और अपनी पेशानी झुकाए हुए है और कान लगाए इन्तिज़ार कर रहा है कि कब इसे सूर फूंकने का हुक्म दिया जाता है?

मुसलमानों ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हम अब क्या पढ़ें? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया—

हस्बुनल्लाहु व नियमल वकीलु अलल्लाहि तवक्कलना० पढ़ा करो।[3]

1. बैहक़ी,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 59,
3. बिदाया, भाग 6, पृ० 56,

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़ारी को यह आयत पढ़ते हुए सुना—

اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا (سورت مزمل آیت ۱۲)

'हमारे यहां बेड़ियां हैं और दोज़ख़ है' (सूरः मुज़्ज़म्मिल, आयत 12)

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० बेहोश हो गए।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० का ख़ौफ़

हज़रत सह्ल बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक अंसारी नवजवान के दिल में अल्लाह का डर इतना ज़्यादा पैदा हो गया कि जब भी उसके सामने जहन्नम का ज़िक्र होता, वह रोने लग जाता और उसकी कैफ़ियत का इतना ज़्यादा ग़लबा हो गया कि वह हर वक़्त ही घर में रहने लगा, बाहर निकलना छोड़ दिया। किसी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इसका तज़्किरा किया तो आप उसके घर तशरीफ़ ले गए, वहां पहुंचकर हुज़ूर सल्ल० ने उसे गले लगा लिया, इतने में उसकी जान निकल गई और उसकी लाश नीचे गिर गई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम अपने इस साथी का कफ़न-दफ़न करो। अल्लाह के डर ने इसके जिगर के टुकड़े कर दिए।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से भी ऐसी ही हदीस नक़ल की गई है और उसमें यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस नवजवान के पास तशरीफ़ ले गए। जब उस नवजवान की हुज़ूर सल्ल० पर निगाह पड़ी तो वह खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० के गले लग गया और इसी में उसकी जान निकल गई और वह मरकर नीचे गिर पड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम अपने साथी का कफ़न-दफ़न करो। जहन्नम के डर ने उसके जिगर के टुकड़े कर दिए। उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अल्लाह ने इसे

1. कंज़, भाग 4, पृ० 43,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 223,

जहन्नम से पनाह अता फ़रमा दी है। जो आदमी किसी चीज़ की उम्मीद करता है, वह उसे ढूंढा करता है और जो किसी चीज़ से डरता है वह उससे भागता है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं जब अल्लाह ने अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर यह आयत उतारी—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (سورت تحریم آیت ۶)

'ऐ ईमान वालो ! तुम अपने को और अपने घरवालों को (दोज़ख़ की उस आग से बचाओ, जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।'

(सूर: तहरीम, आयत 16)

तो आपने एक दिन यह आयत अपने सहाबा रज़ि० को सुनाई। सुनते ही एक नवजवान बेहोश होकर गिर पड़ा। आपने उसके दिल पर हाथ रखा तो वह हरकत कर रहा था। अपने फ़रमाया, ऐ नवजवान ! 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' पढ़ो। उसने कलिमा पढ़ा, जिस पर हुज़ूर सल्ल० ने उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी दी।

सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या यह ख़ुशख़बरी हममें से सिर्फ़ इसी के लिए है ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुमने अल्लाह का यह इर्शाद नहीं सुना—

ذَٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ (سورت ابراہیم آیت ۱۴)

(और) यह हर उस आदमी के लिए (आम) है, जो मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरे डरावे से डरे। (सूर: इब्राहीम, आयत 14)[2]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार हुए। हुज़ूर सल्ल० पूछना करने के लिए उनके यहां तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

1. कंज़, भाग 2, पृ० 144,
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 194,

व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उमर रज़ि० ! अपने आपको किस हाल पर पा रहे हो ?

उन्होंने अर्ज़ किया, (अल्लाह की मेहरबानी की) उम्मीद भी लगाए हुए हूं और (अपने कामों की वजह से) डर भी रहा हूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस मोमिन के दिल में उम्मीद और डर जमा हो जाते हैं, तो अल्लाह उसकी उम्मीद को पूरा कर देते हैं और जिस चीज़ से डरता है, उससे उसे बचा लेते हैं।[1]

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जहां सख़्ती और तंगी की आयत ज़िक्र करते हैं, वहां उसके क़रीब ही नर्मी और वुसअत की आयत भी ज़िक्र करते हैं और जहां नर्मी और वुसअत की आयत ज़िक्र करते हैं, वहां उसके क़रीब ही सख़्ती और तंगी की आयत भी ज़िक्र करते हैं, ताकि मोमिन के दिल में चाव और डर दोनों हों और (निडर होकर) अल्लाह से नाहक़ तमन्नाएं न करने लगे और (ना उम्मीद होकर) ख़ुद को हलाकत में न डाल दे।[2]

और ख़लीफ़ों के ख़ौफ़ के बाब में हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के ख़ौफ़ के क़िस्से गुज़र चुके हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, अगर मुझे जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान खड़ा कर दिया जाए और मुझे मालमू न हो कि दोनों में से किस तरफ़ जाने का हुक्म मिलेगा तो इस बात के जानने से पहले ही मुझे राख बन जाना पसन्द होगा कि दोनों में से किस तरफ़ मुझे जाना है।[3]

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि काश मैं मेंढा होता, मेरे घरवाले मुझे ज़िब्ह करते, फिर मेरा गोश्त खा लेते और मेरा शोरबा पी लेते।

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 145
2. कंज़, भाग 2, पृ० 144,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 60, मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 10,

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, काश मैं एक टीले पर पड़ी हुई राख होता, जिसे आंधी वाले दिन हवा उड़ा देती।[1]

हज़रत क़तादा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मुझे यह बात पहुंची है कि हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया, काश, मैं राख होता, जिसे हवाएं उड़ा ले जाएं।[2]

हज़रत आमिर बिन मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने एक आदमी ने कहा, मुझे सिर्फ़ इतनी बात पसन्द नहीं है कि मैं उन लोगों में से हो जाऊं जिनको दाहिने हाथ में आमालनामे मिलेंगे, बल्कि मुझे तो मुक़र्रबीन (क़रीबी पाने वाले) में से होना ज़्यादा पसन्द है।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमाया, यहां तो एक आदमी ऐसा है, जो यह चाहता है कि मरने के बाद उसे दोबारा ज़िंदा ही न किया जाए। (बल्कि उसे बिल्कुल ही ख़त्म कर दिया जाए) इससे वह अपनी ज़ात मुराद ले रहे थे। (अपने आपको तवाज़ो के पहलू से जन्नत का हक़दार नहीं समझते थे।)[3]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर मुझे जन्नत और जहन्नम के बीच खड़ा करके यह कहा जाए कि तुम पसन्द कर लो, चाहे जन्नत और जहन्नम में से किसी में चले जाओ, तो मैं राख बन जाने को पसन्द करूंगा।[4]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! जो कुछ मैं जानता हूं, अगर तुम वह जान लो, तो तुम अपनी बीवियों से बे-तकल्लुफ़ न हो सको और तुम्हें बिस्तरों पर सुकून न मिले। अल्लाह की क़सम! मेरी आरज़ू है कि काश, अल्लाह मुझे पेड़ बनाते, जिसे काट

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 74, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 413
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 26,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 133,
4. अबू नुऐम

दिया जाता और जिसके फल खा लिए जाते ।[1]

हज़रत हिज़ाम बिन हकीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुमने जो कुछ मरने के बाद देखना है, अगर तुम्हें अब उसका यक़ीन हो जाए, तो न मज़े लेकर खाने खाओ और न मज़े लेकर कुछ पियो और न घरों के साए में बैठ सको, बल्कि मैदानों की ओर निकल जाओ और अपने सीनों को पीट-पीटकर अपनी जानों पर रोते रहो और मेरी आरज़ू है कि काश मैं पेड़ होता जिसे काट कर उसका फल खा लिया जाता ।[2]

हज़रत अबू दाऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मेरी आरज़ू है कि काश मैं अपने घरवालों का मेंढा होता। इनका कोई मेहमान आता और वह मेरी रगों पर छुरी फेरकर मुझे ज़िब्ह कर देते। ख़ुद भी मेरा गोश्त खाते और मेहमान को भी खिलाते ।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, मेरी आरज़ू है कि काश, मैं यह वाला स्तून होता ।[4]

हज़रत ताऊस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे इलाक़े में तशरीफ़ लाए तो हमारे बड़ों ने इनसे कहा कि अगर आप इर्शाद फ़रमाएं तो इन पत्थरों और लकड़ियों को जमा करके आपके लिए एक मस्जिद बना दें।

उन्होंने फ़रमाया, मुझे इस बात का डर है कि कहीं क़ियामत के दिन इस मस्जिद को अपनी पीठ पर उठाने का मुझे मुकल्लफ़ न बना दिया जाए ।[5]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा काबा के अन्दर तशरीफ़ ले गए, तो मैंने सुना कि वह

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 164
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 216,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 145
4. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 12
5. हुलीया, भाग 1, पृ० 236,

सज्दे में पड़े हुए यह कह रहे थे, (ऐ अल्लाह !) तू जानता है कि सिर्फ़ तेरे डर की वजह से मैंने कुरैश से इस दुनिया के बारे में रुकावट नहीं डाली।[1]

हज़रत अबू हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का एक इराक़ी आदमी पर गुज़र हुआ जो धरती पर बेहोश पड़ा हुआ था। उन्होंने पूछा, इसे क्या हुआ ? लोगों ने बताया कि जब इसके सामने कुरआन पढ़ा जाता, तो इसकी यह हालत हो जाती है।

उन्होंने फ़रमाया, हम भी अल्लाह से डरते हैं, लेकिन हम तो बेहोश होकर ज़मीन पर नहीं गिरते।[2]

हज़रत शद्दाद बिन औस अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु जब बिस्तर पर लेटते तो करवटें बदलते रहते और उनको नींद न आती और यों फ़रमाते, ऐ अल्लाह ! जहन्नम ने मेरी नींद उड़ा दी, फिर खड़े होकर नमाज़ शुरू कर देते और सुबह तक इसमें लगे रहते।[3]

हज़रत अम्र बिन सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, अल्लाह की क़सम ! मेरी आरज़ू है कि काश मैं कोई पेड़ होती। अल्लाह की क़सम ! मेरी आरज़ू है कि काश, मैं मिट्टी का ढेला होती। अल्लाह की क़सम ! मेरी आरज़ू है कि काश ! अल्लाह ने मुझे पैदा ही न किया होता।[4]

हज़रत इब्ने अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के इंतिक़ाल से पहले इनकी ख़िदमत में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए और इनकी तारीफ़ करने लग गए कि ऐ अल्लाह के रसूल की मोहतरम बीवी ! आपको ख़ुशख़बरी हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपके अलावा और किसी कुंवारी

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 292
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 312,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 264,
4. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 74

औरत से शादी नहीं की। और आपका (ज़िना की तोहमत से) छुटकारा आसमान से उतरा था।

इतने में सामने से हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़िदमत में हाज़िर हुए तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया, यह अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० मेरी तारीफ़ कर रहे हैं और मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि आज मैं किसी से अपनी तारीफ़ सुनूं। मेरी तमन्ना तो यह है कि काश मैं भूली-बिसरी हो जाती।[1]

---

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 74

अल्लाह के ख़ौफ़ से रोना

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रोना

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, मुझे क़ुरआन पढ़कर सुनाओ।

मैंने अर्ज़ किया, मैं आपको क़ुरआन सुनाऊं, हालांकि क़ुरआन तो ख़ुद आप पर उतरा है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरा दिल चाहता है कि मैं दूसरे से क़ुरआन सुनूं? चुनांचे मैंने सूरः निसा पढ़नी शुरू कर दी और जब मैं—

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا

(سورت النساء آیت ۴۱)

आयत 41 पर पहुंचा तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बस करो। मैंने आपकी ओर देखा, तो आपकी आंखें आंसू बहा रही थीं।[1]

हुज़ूर सल्ल० के रोने कुछ वाक़िए नमाज़ के बाब में आएंगे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा का रोना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब यह आयत उतरी—

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۔

(سورت النجم آیت ۵۹، ۶۰)

'सो क्या (ऐसे डर की बातें सुनकर भी) तुम लोग इस (ख़ुदा के) कलाम से ताज्जुब करते हो और हंसते हो और (अज़ाब के डर से) रोते नहीं हो' (सूरः नज्म, आयत 59-60) तो चबूतरे वाले इतना रोए कि आंसू उनके गालों पर बहने लगे। हुज़ूर सल्ल० ने जब इनके रोने की

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 59.

हल्की-हल्की आवाज़ सुनी तो आप भी इनके साथ रो पड़े। आपके रोने की वजह से हम भी रो पड़े।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने भी फ़रमाया, जो अल्लाह के डर से रोएगा, वह आग में दाख़िल नहीं होगा और जो गुनाह पर इसरार करेगा वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा और अगर तुम गुनाह न करो (और इस्तग़फ़ार करना छोड़ दो) तो अल्लाह ऐसे लोगों को ले आएगा जो गुनाह करेंगे (और इस्तग़फ़ार करेंगे) और अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करेंगे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत — وَقُوْدُهَا النَّاسُ ـــــ وَالْحِجَارَةُ

'जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।' (सूरः बक़रः आयत 24) तिलावत की।

फिर आपने फ़रमाया कि जहन्नम में एक हज़ार साल तक आग जलाई गई, यहां तक कि वह लाल हो गई। फिर एक हज़ार साल तक आग जलाई गई, यहां तक कि वह सफ़ेद हो गई, फिर एक हज़ार साल और जलाई गई, यहां तक कि वह काली हो गई। अब यह आग काली और अंधेरी है, इसका शोला कभी नहीं बुझता।

हुज़ूर सल्ल० के सामने एक काले रंग का आदमी बैठा हुआ था। वह यह सुनकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। इतने में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आसमान से उतर आए और उन्होंने पूछा कि यह आपके सामने रोने वाले कौन हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह हब्शा के हैं और हुज़ूर सल्ल० ने उसकी तारीफ़ की।

हज़रत जिब्रील ने कहा, अल्लाह फ़रमा रहे हैं, मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम! अर्श पर मेरे बुलन्द होने की क़सम! जिस बन्दे की आंख दुनिया में मेरे डर से रोएगी, मैं जन्नत में उसे ख़ूब हंसाऊंगा।[2]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मैं

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 190
2. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 194

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए आया तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्ल० के क़ायम मुक़ाम बन चुके थे। पहले तो उन्होंने अल्लाह की ख़ूब तारीफ़ बयान की और फिर ख़ूब रोए।[1]

हज़रत मुहम्मद हसन बिन मुहम्मद बिन अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के ख़ुतबे में 'इज़श-शम्सु कुव्विरत' पढ़ रहे थे। जब 'अलिमत नफ़्सुम-मा अहज़रत' पर पहुंचे तो (रोने के ग़लबे की वजह से) इनकी आवाज़ बन्द हो गई।[2]

हज़रत हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये आयत पढ़ीं—

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَّا لَهُ مِن دَافِعٍ ۝

(سورت طور آیت ٧، ٨)

'बेशक आपके रब का अज़ाब ज़रूर होकर रहेगा, कोई उसको टाल नहीं सकता।' (सूरः नूर, आयत 7-8)

तो उनका सांस फूल गया (और वह बीमार हो गए) और बीस दिन तक (ऐसे बीमार रहे कि) लोग उनका पूछना करते रहे।[3]

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हमें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई, जिसमें सूरः यूसुफ़ शुरू कर दी। पढ़ते-पढ़ते जब

وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ

पर पहुंचे तो इतना रोए कि आगे न पढ़ सके और रुकूअ कर दिया।[4]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन हाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 260
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 387,
3. अबू उबैद,
4. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ० 401,

फ़ज्र की नमाज़ में सूरः यूसुफ़ पढ़ रहे थे। मैं आख़िरी सफ़ (पंक्ति) में था। जब पढ़ते-पढ़ते 'इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि' पर पहुंचे तो मैंने आख़िरी सफ़ से हज़रत उमर रज़ि० के बिलक-बिलक कर रोने की आवाज़ सुनी।[1]

हज़रत हिशाम बिन हसन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन पढ़ते हुए जब (अज़ाब की) किसी आयत पर गुज़रते तो इनका गला घुट जाता और इतना रोते कि नीचे गिर जाते और फिर (कमज़ोर हो जाने की वजह से) कई दिन घर रहते और लोग इनको बीमार समझ कर पूछना करते रहते।[2]

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत हानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ि० किसी क़ब्र पर खड़े होते, तो इतना रोते कि दाढ़ी तर हो जाती। उनसे किसी ने पूछा कि आप जन्नत और दोज़ख़ का तज़्किरा करते हैं और नहीं रोते हैं, लेकिन क़ब्र को याद करके रोते हैं?

फ़रमाया, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, जो इससे आसानी से छूट गया, उसके लिए बाद की मंज़िलें सब आसान हैं और जो इस (अज़ाब) में फंस गया, उसके लिए बाद की मंज़िलें और भी ज़्यादा सख़्त हैं और मैंने हुज़ूर सल्ल० से यह भी सुना है कि मैंने कोई मंज़र ऐसा नहीं देखा कि क़ब्र का मंज़र उससे ज़्यादा घबराहट वाला न हो।[3]

रज़ीन की रिवायत में यह भी है कि हज़रत हानी कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ि० को एक क़ब्र पर यह शेर पढ़ते हुए सुना है—

فَإِنْ تَنْجُ مِنْهَا تَنْجُ مِنْ ذِيْ عَظِيْمَةٍ ۔ وَإِلَّا فَإِنِّيْ لَا إِخَالُكَ نَاجِيًا

'(ऐ क़ब्र वाले!) अगर तुम इस घाटी से आसानी से छूट गए तो तुम बड़ी ज़बरदस्त घाटी से छूट गए, वरना मेरे ख़्याल में तुम्हें आगे की

1. इब्ने साद, बैहक़ी
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 15,
3. तिर्मिज़ी

घाटियों से नजात नहीं मिल सकेगी।'[1]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे, वह रो रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, आप क्यों रो रहे हैं?

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहा, एक हदीस की वजह से रो रहा हूं जो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है कि दिखावे का छोटा दर्जा भी शिर्क है और अल्लाह को बन्दों में से सबसे ज़्यादा महबूब वे लोग हैं जो तक़्वा वाले हों और इनके हालात लोगों से छिपे हुए हों। ये लोग अगर न आएं तो कोई इन्हें न खोजे और अगर आ जाएं तो इन्हें कोई न पहचाने। यही लोग हिदायत के इमाम और इल्म के चिराग़ हैं।[2]

हज़रत क़ासिम बिन अबी बज़्ज़ा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक साहब ने यह वाक़िया मुझे बयान किया कि इन्होंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा को सूरः 'वैलुललिल मुतफ़्फ़िफ़ीन०' पढ़ते हुए सुना। जब वह

'जिस दिन तमाम आदमी दुनियाओं के रब के सामने खड़े होंगे' पर पहुंचे तो रोने लगे और इतना रोए कि बे-अख़्तियार होकर ज़मीन पर गिर गए और इससे आगे न पढ़ सके।'[3]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब भी हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा सूरः बक़रः की आख़िर की ये दो आयतें पढ़ते तो रोने लग जाते।

إِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ

'जो बातें तुम्हारे नफ़्सों में हैं, उनको अगर तुम ज़ाहिर करोगे या कि छिपाए रखोगे, अल्लाह तुमसे हिसाब लेंगे।'

---

1. तर्ग़ीब, भाग 5, पृ० 322, हुलीया, भाग 1, पृ० 61
2. हाकिम, भाग 3, पृ० 270, हुलीया, भाग 1, पृ० 15,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 305, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 234,

और फ़रमाते, यह हिसाब तो बहुत सख़्त है।[1]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब—

اَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ

(سورت حدید آیت ۱۶)

'क्या ईमान वालों के लिए इस बात का वक़्त नहीं आया कि इनके दिल ख़ुदा की नसीहत के और जो सच्चा दीन (अल्लाह की ओर से) उतरा है, उसके सामने झुक जाएं' (सूरः हदीद, आयत 15) पढ़ते तो रोने लग जाते और इतना रोते कि चुप करना अख़्तियार में न रहता।[2]

हज़रत यूसुफ़ बिन मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैं हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां गया, वह अपने साथियों में बयान कर रहे थे। (हज़रत इब्ने उमर रज़ि० बयान सुनने लग गए, थोड़ी देर बाद) मैंने देखा तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की आंखों में से आंसू बह रहे थे।[3]

हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आयत—

فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ (سورت نساء آیت ۴۱)

'सो उस वक़्त क्या हाल होगा, जबकि हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह को हाज़िर करेंगे।' (सूरः निसा, आयत 41)

आख़िर तक पढ़ी, तो हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा रोने लगे और इतना रोए कि उनकी दाढ़ी और गरेबान आंसुओं से तर हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के पहलू में जो आदमी बैठा हुआ था, उसने मुझे बताया (कि जब मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को इतना ज़्यादा रोते हुए देखा, तो) मेरा दिल चाहा कि मैं खड़े होकर हज़रत उबैद बिन उमैर रज़ि० से कहूं कि अब आप बयान ख़त्म कर दें,

---

1. अबू नुऐम और अहमद,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 305, इसाबा, भाग 2, पृ० 349,
3. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 162, हुलीया, भाग 1, पृ० 305

क्योंकि आप इन बड़े मियां को बहुत तक्लीफ़ पहुंचा चुके हैं।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं मक्का से मदीना तक हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के साथ रहा। वह जब भी किसी जगह क़ियाम करते, वहां वह आधी रात अल्लाह की इबादत में खड़े रहते।

हज़रत अय्यूब ने रिवायत करने वाले से पूछा कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० किस तरह क़ुरआन पढ़ते?

उन्होंने कहा, एक बार हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने—

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ (سورۃ ق آیت ۱۹)

'और मौत की सख़्ती (क़रीब) आ पहुंची। यह (मौत) वह चीज़ है जिससे तू बिदकता है।' (सूरः क़ाफ़, आयत 19)

पढ़ी तो ख़ूब ठहर-ठहर कर उसे पढ़ते रहे और दर्द भरी आवाज़ से ख़ूब रोते रहे।[2]

हज़रत अबू रजा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के (चेहरे पर) आंसुओं के बहने की जगह (ज़्यादा रोने की वजह से) पुराने तस्मा (फ़ीता) की तरह थी।[3]

हज़रत उस्मान बिन अबी सौदा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु इस मस्जिद की दीवार पर, जो जहन्नम की घाटी की तरफ़ है, सीना रखे हुए रो रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अबुल वलीद! आप क्यों रो रहे हैं?

उन्होंने फ़रमाया, कि यह वही जगह है, जिसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बताया कि उन्होंने इस जगह जहन्नम को देखा था।[4]

---

1. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 162
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 327,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 329,
4. हुलीया, भाग 6, पृ० 110,

हज़रत लैला बिन अतारिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरी मां हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए सुरमा तैयार करती थीं। वह बहुत रोया करते थे। वह अपना दरवाज़ा बन्द करके रोते रहते, यहां तक कि इनकी आंखें दुखने लग जातीं। इसलिए मेरी मां उनके लिए सुरमा तैयार किया करती थीं।[1]

हज़रत मुस्लिम बिन बिश्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक बार हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बीमारी में रो रहे थे। किसी ने अर्ज़ किया, ऐ अबू हुरैरह ! आप क्यों रो रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, मैं तुम्हारी इस दुनिया पर तो नहीं रो रहा हूं, बल्कि इस वजह से रो रहा हूं कि सफ़र बहुत दूर का है और मेरा तोशा कम है और मैं उस घाटी पर चढ़ गया हूं, जिसके बाद जन्नत और दोज़ख़ को रास्ता जाता है और मुझे मालूम नहीं है कि इन दोनों में से किसके रास्ते पर मुझे चलाया जाएगा।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 290
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 62, हुलीया, भाग 1, पृ० 383,

सोच-विचार करना और सबक़ लेना

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा का सोच-विचार करना और सबक़ लेना

हज़रत अबू रैहाना रज़ियल्लाहु अन्हु के अज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत हमज़ा बिन हबीब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू रैहाना रज़ि० एक लड़ाई से वापस आए, रात को खाना खाया फिर वुज़ू किया और फिर मुसल्ले पर खड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी और एक सूर: पढ़ने लगे और नमाज़ में ऐसे मगन हुए कि उसी में फ़ज्र की अज़ान हो गई।

उनकी बीवी ने कहा, ऐ अबू रैहाना ! आप लड़ाई में गये थे, जिसमें आप ख़ूब थक गए थे, फिर आप वापस आए तो क्या आप पर हमारा कोई हक़ नहीं है और आपके वक़्तों में हमारा कोई हिस्सा नहीं है ?

उन्होंने फ़रमाया, है, लेकिन अल्लाह की क़सम ! तुम मुझे याद आतीं, तो तुम्हारा मुझ पर हक़ होता। इनकी बीवी ने पूछा, तो आप किस चीज़ में इतना गुम हो गए थे (कि मेरा ख़्याल भी न आया ?)

फ़रमाया, अल्लाह ने जन्नत और उसकी लज़्ज़तों का जो बयान फ़रमाया है, मैं उन्हें सोचने लग गया था, बस इसी में फ़ज्र की अज़ान कान में पड़ी।[1]

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद एक आदमी बसरा से सफ़र करके हज़रत उम्मे ज़र (हज़रत अबूज़र रज़ि० की बीवी रज़ियल्लाहु अन्हा) के पास हज़रत अबूज़र रज़ि० की इबादत पूछने गया। चुनांचे उस आदमी ने हज़रत उम्मे ज़र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए आया हूं, ताकि आप मुझे हज़रत अबूज़र रज़ि० की इबादत के बारे में बताएं। उन्होंने बताया कि वह सारा दिन

1. इसाबा, भाग 2, पृ० 157

तहाई में बैठकर सोच-विचार करते रहते थे।[1]

हज़रत औन बिन अब्दुल्लाह बिन अत्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का सबसे अफ़ज़ल अमल कौन-सा था? उन्होंने कहा, सोच-विचार करना और सबक़ लेना।[2]

अबू नुऐम ने हज़रत औन रज़ि० से यह हदीस नक़ल की है कि हज़रत उम्मे दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु सबसे ज़्यादा कौन-सा अमल करते थे? उन्होंने कहा, सबक़ लेना।

दूसरी रिवायत में है, सोच-विचार करना।[3]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक घड़ी सोच-विचार करना सारी रात इबादत करने से बेहतर है।[4]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बहुत से लोग ख़ैर (भलाई) के दरवाज़ों के खुलने का और शर (बुराई) के दरवाज़ों के बन्द होने का ज़रिया बनते हैं और इस पर उन्हें बहुत ज़्यादा सवाब मिलेगा। बहुत से लोग शर (बुराई) के दरवाज़ों के खुलने का और ख़ैर के दरवाज़ों के बन्द होने का ज़रिया बनते है और उन्हें इसकी वजह से बड़ा गुनाह होगा और एक घड़ी का सोच-विचार सारी रात की इबादत से बेहतर है।[5]

हज़रत हबीब बिन अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, एक आदमी हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आया। वह लड़ाई में जाना चाहता था, इसलिए अर्ज़ किया, ऐ अबुद्दर्दा! मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 164,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 208
3. सिफ़तुस्सफ़्वा, भाग 1, पृ० 258,
4. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 392,
5. कंज़, भाग 2, पृ० 142,

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, तुम अल्लाह को ख़ुशी और राहत में याद रखो, अल्लाह मुसीबत में तुम्हें याद रखेगा और जम तुम अपने दिल में दुनिया की किसी चीज़ का चाव और रग़बत पाओ तो ग़ौर करो कि उस चीज़ का क्या अंजाम होगा (कि मिट्टी से बनी है और एक दिन मिट्टी हो जाएगी।)[1]

हज़रत सालिम बिन अबी जाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि दो बैल हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे जो काम कर रहे थे। उनमें से एक काम करता रहा और दूसरा खड़ा हो गया, तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया, इसमें भी सबक़ है (कि जो बैल काम छोड़कर खड़ा हो गया है, उसे मालिक डंडे से मारेगा।)[2]

नफ़्स (मन) का मुहासबा (जांच-पड़ताल)

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम कहते हैं कि जो अल्लाह की रिज़ा के लिए अपने नफ़्स से लड़ेगा (और उसकी नहीं मानेगा, बल्कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अल्लाह वाले काम नफ़्स से कराएगा) तो उसे अल्लाह अपने ग़ुस्से से बचाए रखेंगे।[3]

हज़रत साबित बिन हज्जाज रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम अपने नफ़्सों का इससे पहले जायज़ा लो कि अल्लाह तुम्हारा जायज़ा ले और तुम अपने नफ़्सों का इससे पहले ख़ुद मुहासबा करो कि अल्लाह तुम्हारा हिसाब ले। तुम आज अपने नफ़्सों का मुहासबा (हिसाब) करो, इससे कल को हिसाब में आसानी होगी और (क़ियामत के दिन की) बड़ी पेशी के लिए नेक अमल अख़्तियार करके संवर जाओ—

'जिस दिन (ख़ुदा के सामने हिसाब के वास्ते) तुम पेश किए जाओगे

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 209,
2. सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 258,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 162,

(और) तुम्हारी कोई बात (अल्लाह से) छिपी न होगी ।'[1]

(सूरः हाक़्क़ा, आयत 18)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ बाहर निकला। चलते-चलते हज़रत उमर रज़ि० एक बाग़ में दाख़िल हो गए। (मैं बाहर रह गया) वह बाग़ के अन्दर थे और मेरे और उनके दर्मियान एक दीवार ही थी। मैंने सुना कि वह अपने आपको ख़िताब करके कह रहे हैं, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह की क़सम ! तुम्हें अल्लाह से ज़रूर डरना होगा, वरना अल्लाह तुम्हें ज़रूर अज़ाब देंगे ।[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 52,
2. मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 400,

ख़ामोशी और ज़ुबान की हिफ़ाज़त

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ामोशी

हज़रत सिमाक रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, क्या आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िरी दिया करते थे? उन्होंने फ़रमाया, हां, और हुज़ूर सल्ल० ज़्यादातर ख़ामोश रहा करते थे।[1]

हज़रत अबू मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुआ करते थे और उस वक़्त हम लोग नवजवान लड़के थे। मैंने हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा ख़ामोश रहने वाला किसी को नहीं देखा, जब आपके सहाबा आपस में बातें करते और बहुत ज़्यादा बातें करते तो आप सुनकर मुस्करा देते।[2]

हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन बाहर तशरीफ़ लाए और अपनी सवारी पर सवार होकर चल पड़े। आपके सहाबा भी आपके साथ थे। इनमें से कोई भी आपसे आगे नहीं चल रहा था।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अल्लाह से दुआ करता हूं कि वह हमारे (मरने के) दिन को आपके (इंतिक़ाल) के दिन से पहले कर दे। अल्लाह हमें आप (के इंतिक़ाल) का वह दिन न दिखाए, लेकिन अगर हमें वह देखना पड़ गया तो फिर हम आपके बाद कौन-से अमल किया करें? ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, हम जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह (अल्लाह के रास्ते में किया गया जिहाद) किया करें?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह बहुत अच्छा

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 297, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 372,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 298,

अमल है और लोगों को इसकी आदत भी है, लेकिन इससे भी ज़्यादा (नफ़्स को) क़ाबू में लाने वाला अमल है। चुनांचे हज़रत मुआज़ रज़ि० को जितने भी ख़ैर वाले अमल मालूम थे, उन्होंने उनमें से हर एक का नाम लिया। हुज़ूर सल्ल० हर एक के जवाब में यही फ़रमाते रहे कि लोगों को इसकी आदत है, लेकिन इससे भी ज़्यादा (नफ़्स को) क़ाबू में लाने वाला अमल है।

आख़िर में हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! लोगों को उन तमाम अमलों के करने की आदत है, तो इनसे भी ज़्यादा (नफ़्स को) क़ाबू में लाने वाला अमल कौन-सा है? हुज़ूर सल्ल० ने अपने मुंह की ओर इशारा करके फ़रमाया, ख़ामोश रहना और सिर्फ़ ख़ैर की बात करना।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, जो कुछ हम ज़ुबान से बोलते हैं, क्या उस पर हमारी पकड़ होगी?

हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० की रान पर हाथ मारकर कहा, तेरी मां तुझे गुम करे। ऐसे एक दो जुम्ले (वाक्य) और कहे और फ़रमाया, लोगों को इनके नथने के बल जहन्नम में इनकी ज़ुबानों की बातें ही तो गिराएंगी जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि ख़ैर की बात कहे और शर से ख़ामोश रहे। तुम लोग ख़ैर की बात कहो तो (अज्र व सवाब को) ग़नीमत में पाओगे और शर से ख़ामोश रहो, (दोनों दुनिया की आफ़तों से) बचे रहोगे।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० की ख़ामोशी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी क़त्ल हो गया, तो एक औरत ने उस पर रोते हुए कहा, ऐ शहीद होने वाले !

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ामोश रहो, तुम्हें कैसे पता चला कि वह

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 299

शहीद है? हो सकता है कि वह बेकार की बातें करता रहा हो या ऐसी चीज़ों के ख़र्च करने में कंजूसी से काम लेता रहा हो, जिनके ख़र्च करने से उसे किसी तरह की कमी न आती हो।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम में से एक आदमी उहुद की लड़ाई में शहीद हुआ और भूख की वजह से उसके पेट पर एक पत्थर बंधा हुआ था, तो उसकी मां उसके चेहरे से मिट्टी साफ़ करने लगी और कहने लगी, ऐ मेरे बेटे! तुझे जन्नत मुबारक हो।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें कैसे पता चला? (कि यह जन्नती है) शायद यह बेकार की बातें करता रहा हो या ऐसी चीज़ों को रोक कर रखता हो, जिनके ख़र्च करने में कोई नुक़्सान न हो।[2]

हज़रत ख़ालिद बिन नुमैर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बहुत ज़्यादा ख़ामोश, ग़मगीन और बेचैन रहते और आम तौर पर फ़रमाया करते कि मैं अल्लाह की आज़माइश से उसी की पनाह चाहता हूं।[3]

हज़रत अबू इदरीस ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं दमिश्क़ की मस्जिद में दाख़िल हुआ तो मैंने वहां एक हज़रत देखे, जिनके सामने के दांत बहुत चमक रहे थे और वह बहुत ज़्यादा ख़ामोश रहने वाले थे और उनके साथ जो लोग थे, उनका हाल यह था कि उनका आपस में किसी मामले में इख़्तिलाफ़ हो जाता, तो वे इनके सामने पेश करते और फिर से इस मामले में जो फ़ैसला करते, सब उससे मुतमइन हो जाते। मैंने पूछा, यह हज़रत कौन हैं? लोगों ने बताया कि यह हज़रत मुआज़ बिन जबल हैं।[4]

हज़रत अस्लम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ओर झांक कर

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 303
2. तिर्मिज़ी, मिश्कात,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 142,
4. हाकिम, भाग 3, पृ० 269

देखा, तो वह अपनी ज़ुबान खींच रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० के ख़लीफ़ा! आप क्या कर रहे हैं?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, इसी ने तो मुझे हलाकत की जगहों पर ला खड़ा किया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस्म का हर अंग ज़ुबान की तेज़ी की शिकायत करता है।[1]

हज़रत अबू वाइल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार सफ़ा पहाड़ी पर चढ़े और ज़ुबान को पकड़ कर कहने लगे, ऐ ज़ुबान! ख़ैर की बात कह, ग़नीमत हासिल करेगी। बुरी बात न कह, बल्कि चुप रह, शर्मिन्दा होने से बच जाएगी और सलामती में रहेगी। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि इब्ने आदम की ज़्यादा ख़ताएं उसकी ज़ुबान से सामने आती हैं।[2]

हज़रत सईद जुरैरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने यह वाक़िया सुनाया कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा कि वह अपनी ज़ुबान की नोक पकड़ कर कह रहे हैं तेरा नास हो। ख़ैर की बात कह, ग़नीमत हासिल करेगी और बुरी बात न कह, बल्कि चुप रह, सलामती में रहेगी। एक आदमी ने उनसे पूछा, ऐ इब्ने अब्बास! क्या बात है, मैं देख रहा हूं कि आप अपनी ज़ुबान की नोक पकड़ कर यह बात कह रहे हैं? उन्होंने फ़रमाया, मुझे यह बात पहुंची है कि बन्दे को क़ियामत के दिन जितना गुस्सा अपनी ज़ुबान पर आएगा उतना और किसी चीज़ पर नहीं आएगा।[3]

हज़रत साबित बुनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन अपने एक साथी से कहा, दस्तरख़्वान लाओ, ताकि हम इसमें लग जाएं तो इनके एक और साथी ने कहा, मैंने जब से आपकी सोहबत अख़्तियार की है, मैंने कभी

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 302, हुलीया, भाग 1, पृ० 33,
2. हैसमी, भाग 10, पृ० 300,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 328,

आपसे ऐसी बात नहीं सुनी। उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम ! बस यही एक बात मेरी ज़ुबान से अचानक निकल गई है, वरना जब से मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुदा हुआ हूं, हमेशा मेरी ज़ुबान से नपी-तुली बात निकली है, (यानी हमेशा सोच-समझ कर बोलता रहा हूं, बस आज ही चूक हो गई है।) आगे ऐसा नहीं होगा।[1]

हज़रत सुलैमान बिन मूसा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दिन कहा, दस्तरख़्वान लाओ, ताकि हम भी उसके साथ कुछ खेल लें, तो इस बोल पर उनकी साथियों ने पकड़ की और यों कहा, हज़रत अबू याला (यह हज़रत शद्दाद का उपनाम है) को देखो, आज इनकी ज़ुबान से कैसी बात निकली है।

उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे ! जब से मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत हुआ हूं, हमेशा मैंने सोच-समझकर कर नपी-तुली बात ही कही है। बस यही एक बात अचानक कह बैठा हूं यानी मुझसे चूक हो गई है। इस बात को छोड़ो और तुम इससे बेहतर बात ले लो और यह दुआ है, ऐ अल्लाह ! हम तुझसे हर काम में जल्दी न करने और क़दम जमाए रखने की दुआ मांगते हैं और मांगते हैं कि रुश्द व हिदायत पर पक्का बने रहें, तेरी नेमतों का शुक्र अदा करते रहें और तेरी अच्छी इबादत करने की तौफ़ीक़ हासिल करते रहें और तुझसे अच्छा दिल और सच्ची ज़ुबान मांगते हैं और तेरे इल्म में जितना ख़ैर है, उसे मांगते हैं और उन शरों से पनाह मांगते हैं, जिन्हें तू जानता है। यह दुआ मुझसे ले लो और वह बात जो अचानक निकल गई उसे छोड़ दो।[2]

फिर अबू नुऐम ने दूसरी सनद से इस जैसी रिवायत बयान की है जिसमें यह है कि जो बात मेरी ज़ुबान से निकल गई है, उसे तुम याद न रखो, बल्कि अब जो मैं तुम्हें कहूंगा, उसे याद कर लो और वह यह है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि लोग जब सोना और चांदी का ख़ज़ाना जमा करने लग जाएं, तो

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 265
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 266.

तुम इन कलिमों को ख़ज़ाना बना लेना। यानी इन्हें ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ते रहना। ऐ अल्लाह! मैं आपसे हर काम में जमाव और रुश्द व हिदायत में पक्कापन मांगता हूं। फिर पिछली हदीस जैसे लफ़्ज़ों का ज़िक्र किया और साथ ही यह दुआ भी ज़िक्र की और तू मेरे जितने गुनाहों को जानता है, मैं तुझसे उन तमाम गुनाहों की मग़फ़िरत चाहता हूं। बेशक तू ही ग़ैब की तमाम बातों का जानने वाला है।[1]

हज़रत ईसा बिन उक़्बा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके अलावा कोई माबूद नहीं, धरती पर कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसे ज़ुबान से ज़्यादा उम्र क़ैद की ज़रूरत हो।[2] हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मैं तुम्हें बेकार बातें करने से डराता हूं और ज़रूरत भर बात करना ही तुम्हारे लिए काफ़ी है।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा ख़ताएं उन लोगों की होंगी जो दुनिया में बेकार बहस-मुबाहसा करते रहते थे।[4]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ज़ुबान सारे जिस्म के ठीक रखने की बुनियाद है। जब ज़ुबान ठीक हो जाए, तो सारे अंग ठीक हो जाते हैं और जब ज़ुबान बेक़ाबू हो जाती है, तो तमाम अंग बे-क़ाबू हो जाते हैं।[5]

इब्ने अबिदुन्या की एक रिवायत में है, अपनी शख़्सियत को छिपा, फिर तेरा ज़िक्र नहीं हुआ करेगा (और तू बिगड़ने से बच जाएगा) और ख़ामोशी अपना, तू सलामती में रहेगा। एक रिवायत में यह है कि ख़ामोशी जन्नत की तरफ़ बुलाने वाली है। एक रिवायत में हज़रत अली

1. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 266, तफ़्सीरे इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 351,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 134, हैसमी, भाग 10, पृ० 303,
3. तबरानी, हैसमी,
4. तबरानी, हैसमी,
5. इब्ने अबिद्दुनिया

रज़ियल्लाहु अन्हु से ये शेर (पद) नक़ल किए गए हैं—

لَا تُفْشِ سِرَّكَ إِلَّا إِلَيْكَ فَإِنَّ لِكُلِّ نَصِيحٍ نَصِيحًا

'अपना भेद अपने तक बचाए रख और किसी पर ज़ाहिर न कर, क्योंकि हर भला चाहने वाले के लिए कोई न कोई भला चाहने वाला होता है।'

فَإِنِّي رَأَيْتُ غُوَاةَ الرِّجَالِ لَا يَدَعُونَ أَدِيمًا صَحِيحًا

'क्योंकि मैंने गुमराह इंसानों को देखा है कि वे किसी आदमी को बे-दाग़ सही-सालिम नहीं रहने देते।'[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जैसे तुम लोग बात करना सीखते हो, ऐसे ही ख़ामोश रहना भी सीखो, क्योंकि ख़ामोश रहना बहुत बड़ी बुर्दबारी (बरदाश्त करना) है और तुम्हें बोलने से ज़्यादा सुनने का शौक़ होना चाहिए और कभी बेकार बोल न बोलो। हंसी की बात के बग़ैर ख़ामख़ाही मत हंसो और बे-ज़रूरत किसी जगह मत जाओ।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मोमिन के जिस्म में कोई अंग अल्लाह को उसकी ज़ुबान से ज़्यादा पसंदीदा नहीं है। इसकी वजह से अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे और काफ़िर के जिस्म में कोई अंग अल्लाह को उसकी ज़ुबान से ज़्यादा नापसन्दीदा नहीं है। इसकी वजह से अल्लाह उसे जहन्नम में दाख़िल करेंगे।[3] हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बन्दे को सबसे ज़्यादा जिस अंग को पाक करने की ज़रूरत है, वह इसकी ज़ुबान है।[4] हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कोई बन्दा उस वक़्त तक तक़्वे वाला बन सकता, जब तक वह अपनी ज़ुबान की हिफ़ाज़त न करे।[5]

---

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 158,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 159
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 220,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 307
5. इब्ने साद, भाग 7, पृ० 22,

बात-चीत

हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात-चीत

बुखारी में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात-चीत ऐसी साफ़ और इत्मीनान से होती थी कि अगर कोई उसके कलिमे (शब्द) गिनना चाहे, तो गिन सकता था।

बुख़ारी में हज़रत आइशा रज़ि० की दूसरी रिवायत में यह है कि मैं तुम्हें ताज्जुब की बात न बताऊं कि अबू फ़लाल आए और मेरे हुजरे के क़रीब बैठकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें इतनी आवाज़ से बयान करने लगे कि मुझे भी सुनाई दे रही थीं। मैं नफ़्ल नमाज़ पढ़ रही थी और वह मेरी नमाज़ ख़त्म होने से पहले ही वहां से उठकर चले गए। अगर वह मुझे मिल जाते तो मैं उनको रद्द करती और उन्हें बताती कि हुज़ूर सल्ल० तुम्हारी तरह लगातार जल्दी-जल्दी बातें नहीं किया करते थे।

यह रिवायत इमाम अहमद, मुस्लिम और अबू दाऊद ने भी ज़िक्र की है और इसके शुरू में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की अजीब बात न बताऊं। फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया है।

इमाम अहमद और अबू दाऊद हज़रत आइशा रज़ि० की यह रिवायत ज़िक्र करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात-चीत का हर मज़्मून दूसरे से अलग होता था, और हर एक आपकी बात समझ जाता था। आप लगातार जल्दी-जल्दी बात नहीं फ़रमाते थे।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात-चीत खुले अक्षरों के साथ होती थी या हर-हर शब्द अलग-अलग होता था और इसमें जल्दी नहीं पाई जाती थी।

इमाम अहमद और बुख़ारी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई अहम बात फ़रमाते, तो उसे तीन बार दोहराते और जब किसी क़ौम के पास जाकर सलाम करते तो तीन बार करते।

इमाम अहमद हज़रत सुमामा बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु जब कोई (बात करते तो उसे तीन बार दोहराते और वह यह बताया करते कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी जब कोई (अहम) बात फ़रमाते तो उसे तीन बार दोहराते और इजाज़त भी तीन बार लेते।

तिर्मिज़ी में हज़रत सुमामा बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई (अहम) बात फ़रमाते तो इसे तीन बार दोहराते ताकि अच्छी तरह समझ में आ जाए।[1]

इमाम अहमद बुख़ारी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से यह रिवायत करते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि मुझे जामे कलिमे (जिनके लफ़्ज़ थोड़े और मानी ज़्यादा हैं) देकर भेजा गया है, और रौब के ज़रिए मेरी मदद की गई है। एक बार मैं सो रहा था तो ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियां मुझे दी गईं और मेरे हाथ में रख दी गईं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे हुए बात-चीत कर रहे होते तो (अल्लाह के शौक़ और वह्य के इन्तिज़ार में) बार-बार निगाह आसमान की ओर उठाते।[2]

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ौम के बुरे से बुरे आदमी की ओर भी दिल रखने के ख़्याल से पूरी तरह मुतवज्जह होकर बात फ़रमाते, (जिसकी वजह से उसको अपने बारे में पूरा ख़्याल हो जाता था।) चुनांचे ख़ुद मेरी

1. तिर्मिज़ी,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 40, 41.

ओर भी हुज़ूर सल्ल० की पूरी तवज्जोह होती थी और बात का रुख़ भी मेरी ओर ज़्यादा होता था, यहां तक कि मैं यह समझने लगा कि मैं क़ौम का बेहतरीन आदमी हूं, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० सबसे ज़्यादा तवज्जोह फ़रमाते हैं।

मैंने इसी ख़्याल से एक दिन मालूम किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं अफ़ज़ल हूं या अबूबक्र रज़ि० ?

हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अबूबक्र रज़ि० !

फिर मैंने पूछा, कि मैं अफ़ज़ल हूं या उमर रज़ियल्लाहु अन्हु !

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उमर रज़ि०।

फिर मैंने पूछा कि मैं अफ़ज़ल हूं या उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उस्मान रज़ि० ! जब मैंने हुज़ूर सल्ल० से साफ़-साफ़ पूछा, तो हुज़ूर सल्ल० ने बिना रियायत सही-सही बता दिया। मेरी रियायत में मुझे अफ़ज़ल नहीं फ़रमाया। मुझे अपनी इस हरकत पर बाद में शर्मिंदगी हुई और बड़ी तमन्ना हुई कि काश मैं हुज़ूर सल्ल० से यह बात न पूछता ![1]

---

1. शिमाइल, पृ० 25, हैसमी, भाग 9, पृ० 15,

मुस्कराना और हंसना

सय्यिदिना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुस्कराना और हंसना

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है कि मैंने कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़ोर से इतना हंसते हुए नहीं देखा कि आपके जबड़े औरों को नज़र आने लगें। आप तो बस मुस्कराया करते थे।

तिर्मिज़ी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि मैंने किसी को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा मुस्कराने वाला नहीं देखा।

तिर्मिज़ी में इन्हीं हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की दूसरी रिवायत यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हंसना-मुस्कराना ही होता था। (आख़िरत वाले मामलों में तो आप हंस लिया करते थे, दुनिया की बातों पर सिर्फ़ मुस्कराया करते थे।)[1]

मुस्लिम में यह रिवायत है कि हज़रत सिमाक बिन हर्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, क्या आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में बैठा करते थे?

हज़रत जाबिर रज़ि० ने कहा, बहुत। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर सूरज निकलने तक नमाज़ की जगह ही बैठे रहते। जब सूरज निकल आता, तब वहां से खड़े होते। उस वक़्त सहाबा रज़ि० बातें करते रहते और कभी जाहिलियत के ज़माने की कोई बात करके हंसा करते, लेकिन हुज़ूर सल्ल० मुस्कराते रहते।

तबालिसी में हज़रत सिमाक रहमतुल्लाहि अलैहि की यह रिवायत है कि मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु से यह मालूम किया

1. तिर्मिज़ी,

कि क्या आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में बैठा करते थे?

उन्होंने फ़रमाया, जी हां। लेकिन हुज़ूर सल्ल० की ख़ामोशी बहुत ज़्यादा और आपकी हंसी बहुत कम थी। आपके सहाबा रज़ि० आपके सामने कभी आपस में एक दूसरे को शेर सुनाते। हुज़ूर सल्ल० भी वे ही जुम्ला (वाक्य) उनके मामलों के बारे में इर्शाद फ़रमा देते। सहाबा तो हंसा करते, लेकिन हुज़ूर सल्ल० अक्सर मुस्कराया ही करते।[1]

हज़रत हुसैन बिन यज़ीद कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी हंसते हुए नहीं देखा। आप तो बस मुस्कराया ही करते थे और आप कभी भूख की तेज़ी की वजह से पेट पर पत्थर भी बांध लिया करते थे।[2]

हज़रत अमरा रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं कि मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपनी बीवियों के साथ तंहाई में होते तो आपका क्या अन्दाज़ होता था?

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारे मर्दों की तरह इनका तरीक़ा होता था? लेकिन यह बात ज़रूर है कि आप लोगों में सबसे ज़्यादा शरीफ़, सबसे ज़्यादा नर्म, बहुत हंसने और मुस्कराने वाले थे।[3]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वह्य आती या आप बयान फ़रमाते, तो मैं यों महसूस करता कि आप ऐसी क़ौम को डरा रहे हैं, जिस पर अल्लाह का अज़ाब आया हुआ है और जब यह कैफ़ियत जाती रहती, तो मैं देखता कि आपका चेहरा सबसे ज़्यादा ख़ुश और आप सबसे ज़्यादा मुस्कराने वाले और आपका जिस्म सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है।[4]

---

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 41, 42, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 372
2. कंज़, भाग 4, पृ० 42, इसाबा, भाग 1, पृ० 340,
3. , कंज़, भाग 4, पृ० 47, बिदाया, भाग 6, पृ० 44, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 91
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 17

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम लोगों से ज़्यादा हंसने वाले और सबसे अच्छी तबियत वाले थे।[1]

हज़रत आमिर बिन साद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि (मेरे बाप) हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ंदक़ की लड़ाई के दिन इतना हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए। हज़रत आमिर कहते हैं कि मैंने पूछा कि किस बात पर हंसे थे?

हज़रत साद रज़ि० ने कहा कि एक काफ़िर ढाल लिए हुए था और साद गो बड़े माहिर तीरंदाज़ थे, लेकिन वह अपनी ढाल को इधर-उधर कर लेता था, जिसकी वजह से अपने माथे का बचाव कर लेता था (गोया मुक़ाबले में हज़रत साद का तीर लगने न देता था, हालांकि यह मशहूर तीरंदाज़ थे।)

साद ने एक बार तीर निकाला (और उसको कमान में खींच कर इन्तिज़ार में रहे) जिस वक़्त उसने ढाल से सर उठाया, तुरन्त ऐसा लगाया कि माथे से चूका नहीं और वह तुरन्त गिर गया, उसकी टांग भी ऊपर को उठ गई। इस पर हुज़ूर सल्ल० इतना हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए।

मैंने पूछा कि इसमें से कौन-सी बात पर हुज़ूर सल्ल० हंसे। उन्होंने कहा कि साद ने उस आदमी के साथ होशियारी से जो मामला किया, उस पर।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक साहब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं तो हलाक हो गया, (क्योंकि मैंने अल्लाह का हुक्म तोड़ दिया।) मैं रमज़ान में अपनी बीवी से सोहबत कर बैठा।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 17
2. शिमाइल, पृ० 16,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कफ़्फ़ारे में एक ग़ुलाम आज़ाद करो।

उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे पास तो ग़ुलाम नहीं है।

हुज़ूर ने फ़रमाया, दो महीने लगातार रोज़े रखो।

उन्होंने अर्ज़ किया, यह मेरे बस में नहीं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, साठ मिस्कीनों को खाना खिलाओ।

उन्होंने अर्ज़ किया, मेरे पास खिलाने के लिए कुछ नहीं। थोड़ी देर के बाद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में खजूर के पत्तों से बने हुए टोकरे में खजूरें आईं। हुज़ूर सल्ल० ने पूछा, मसला पूछने वाले कहां हैं?

(वह आए तो) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लो, ये खजूरें सदक़ा कर दो।

उन्होंने अर्ज़ किया, अपने से भी ज़्यादा फ़क़ीर पर सदक़ा करूं? अल्लाह की क़सम मदीने के दोनों तरफ़ जो कंकरीले मैदान हैं, इनके दर्मियान कोई घराना हमसे ज़्यादा फ़क़ीर नहीं है। इस पर हुज़ूर सल्ल० इतना हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए और आपने फ़रमाया, अच्छा, (जब तुम इतने ही ज़रूरतमंद हो, तो) फिर तुम्हीं इसे अपने घरवालों पर ख़र्च कर लो। (बाद में कफ़्फ़ारा दे देना।)[1]

हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं उस आदमी को ख़ूब जानता हूं जो सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होगा और उसे भी जानता हूं जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकाला जाएगा। क़ियामत के दिन एक आदमी ख़ुदा के दरबार में हाज़िर किया जाएगा। उसके लिए यह हुक्म होगा कि उसके छोटे-छोटे गुनाह उस पर पेश किए जाएं और बड़े-बड़े गुनाह छिपा दिए जाएं।

जब उस पर छोटे-छोटे गुनाह पेश किए जाएंगे कि तूने फ़्लां दिन फ़्लां-फ़्लां गुनाह किए हैं, तो वह इक़रार करेगा, इसलिए कि इंकार की गुंजाइश न होगी और वह अपने बड़े गुनाहों से डर रहा होगा, फिर यह हुक्म होगा कि इसको हर गुनाह के बदले एक नेकी दो, तो वह आदमी

1. सहीह बुख़ारी, भाग 2, पृ० 899

यह हुक्म सुनते ही ख़ुद बोलेगा कि मेरे तो अभी बहुत से गुनाह बाक़ी हैं जो यहां नज़र नहीं आते।

हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी यह बात नक़ल फ़रमा कर इतने हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं उस आदमी को जानता हूं जो सबसे आख़िर में आग से निकलेगा, वह एक ऐसा आदमी होगा जोकि ज़मीन पर घसिटता हुआ जहन्नम से निकलेगा, (जहन्नम के अज़ाब की तेज़ी की वजह से सीधा न चल सकेगा) उसको हुक्म होगा कि जा, जन्नत में दाख़िल हो जा।

वह वहां जाकर देखेगा कि लोगों ने तमाम जगहों पर क़ब्ज़ा कर रखा है। सब जगहें भरी हुई हैं, चुनांचे वापस आकर अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! लोग तो सारी जगहें ले चुके हैं। (मेरे लिए तो अब कोई जगह बाक़ी नहीं रही।) वहां से इर्शाद होगा कि (दुनिया का) वह ज़माना भी तुम्हें याद है, जिसमें तुम थे। वह कहेगा, ख़ूब याद है। इर्शाद होगा, अच्छा तुम तमन्नाएं करो। चुनांचे वह ख़ूब तमन्नाओं को ज़ाहिर करेगा। वहां से इर्शाद होगा कि तुमको तुम्हारी तमन्नाएं भी दीं और दुनिया से दस गुना ज़्यादा भी दिया। वह अर्ज़ करेगा, आप बादशाहों के बादशाह होकर मुझसे मज़ाक़ फ़रमाते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० इतने हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए।[2]

वक़ार और संजीदगी

हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मज्लिस में सबसे ज़्यादा

1. शिमाइल, पृ० 16,
2. तिर्मिज़ी

वक़ार के साथ बैठते थे। आपके मुबारक जिस्म का कोई अंग बाहर (लोगों) की तरफ़ फैला हुआ नहीं होता था।[1]

हज़रत शह्र बिन हौशब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा जब आपस में बात-चीत करते और इनमें हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु भी होते तो सब उन्हें रौब और हैबत की निगाह से देखते।[2]

हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हिम्स की एक मस्जिद में गया तो देखा कि उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तीस के क़रीब अधेड़ उम्र के सहाबा बैठे हुए हैं और इनमें एक नवजवान सुरमई आंखों वाले, चमकीले दांतों वाले भी बैठे हुए हैं, जो बिल्कुल बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि ख़ामोश बैठे हुए हैं। जब इन लोगों को किसी चीज़ में शक होता तो वह इस नवजवान की तरफ़ मुतवज्जह होकर इससे पूछते (और इसके जवाब से मुतमइन हो जाते) मैंने अपने क़रीब बैठे हुए एक साथी से पूछा कि यह कौन हैं?

उसने कहा, यह हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। इससे इनकी मुहब्बत मेरे दिल में घर कर गई। मैं इन लोगों के साथ रहा, यहां तक कि ये लोग इधर-उधर चले गए।[3]

हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफ़त के शुरू में एक दिन मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा के साथ मस्जिद गया। उस दिन सहाबा किराम सबसे ज़्यादा तायदाद में वहां जमा हुए थे। मैं अन्दर जाकर एक मज्लिस में बैठ गया, जिसमें तीस से ज़्यादा सहाबा थे। वे सब हुज़ूर सल्ल० की ओर से हदीस बयान कर रहे थे।

उनमें एक गहरे गेहूवें रंग वाले, मीठी बातें करने वाले, बड़े सुन्दर व ख़ूबसूरत नवजवान भी थे और उन सबमें इनकी उम्र सबसे कम थी।

---

1. शर्हुश्शिफ़ा, भाग 2, पृ० 117
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 231,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 231,

जब इन लोगों को किसी हदीस में शक होता तो वे इस नवजवान के सामने पेश कर देते, फिर वह इन लोगों को इनकी हदीस सही-सही सुना देते, लेकिन जब तक इनसे वे लोग पूछते नहीं, यह उन्हें कोई हदीस न सुनाते।

मैंने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के बन्दे ! आप कौन हैं ?

उन्होंने फ़रमाया, मैं मुआज़ बिन जबल हूं।[1]

गुस्सा पी जाना

हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से सख़्त-सुस्त बात की, तो मैंने अर्ज़ किया, क्या मैं इसकी गरदन उड़ा दूं ?

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुझे झिड़क दिया और फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद इस काम पर गरदन उड़ाने का अख़्तियार किसी को नहीं है।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि किसी बन्दे ने गुस्से के घूंट से ज़्यादा बेहतर घूंट दूध या शहद का कभी नहीं पिया।[3]

ग़ैरत

हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि फ़्लां आदमी इसके बाप की बीवी के पास जाता है (जो इसकी मां नहीं है।)

मैंने कहा, अगर तुम्हारी जगह मैं होता, तो मैं उसकी गरदन उड़ा देता। यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० हंसे और फ़रमाया, ऐ उबई ! तुम कितने

1. अबी नुऐम
2. कंज़, भाग 2, पृ० 161
3. कंज़,

ग़ैरत वाले हो, लेकिन मैं तुमसे ज़्यादा ग़ैरत वाला हूं और अल्लाह मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरत वाले हैं।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, अगर मैं किसी आदमी को अपनी बीवी के साथ देख लेता, तो तलवार की धार से उसे क़त्ल कर देता। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर पहुंची तो आपने फ़रमाया, क्या तुम लोगों को साद की ग़ैरत से ताज्जुब हो रहा है? अल्लाह की क़सम! मैं साद से ज़्यादा ग़ैरत वाला हूं और अल्लाह मुझसे ज़्यादा ग़ैरत वाले हैं और ग़ैरत ही की वजह से अल्लाह ने ज़ाहिरी और बातिनी बेहयाई के कामों को हराम क़रार दिया है और उज़्र क़ुबूल करना अल्लाह से ज़्यादा किसी को महबूब नहीं। इसी वजह से अल्लाह ने डराने वाले और ख़ुशख़बरी सुनाने वाले (नबी) भेजे और अपनी तारीफ़ सुनना अल्लाह से ज़्यादा किसी को पसन्द नहीं और इसी वजह से अल्लाह ने जन्नत का वायदा फ़रमाया है।

मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अगर मैं अपनी बीवी के साथ किसी आदमी को पाऊं तो जब तक मैं चार गवाह न ले आऊं, उस वक़्त तक क्या मैं इसे हाथ न लगाऊं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां।

हज़रत साद रज़ि० ने अर्ज़ किया, हरगिज़ नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, मैं तो इससे पहले ही जल्दी से तलवार से उसका काम तमाम कर दूंगा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो, तुम्हारा सरदार क्या कह रहा है? यह बहुत ग़ैरत वाले हैं, लेकिन मैं इनसे ज़्यादा ग़ैरत वाला हूं और अल्लाह मुझसे ज़्यादा ग़ैरत वाले हैं।[2]

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 132,
2. मिश्कात, पृ० 278,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से एक लम्बी हदीस इस बारे में नक़ल की गई है। इसमें यह है कि सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप साद को कुछ न फ़रमाएं। यह बहुत ग़ैरत वाले हैं। इसी ग़ैरत की वजह से यह हमेशा कुंवारी औरत से ही शादी करते हैं और जिस औरत को यह तलाक़ देते हैं, हममें से किसी को उससे शादी करने की हिम्मत नहीं होती है।

हज़रत साद ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मुझे यक़ीन है कि चार गवाह लाने का हुक्म है और यह अल्लाह की तरफ़ से आया है, लेकिन मुझे हैरानी तो इस बात पर हो रही है कि किसी कमीनी औरत की रानों पर कोई मर्द रानें रखे हुए बदकारी कर रहा हो और मैं चार गवाह लाने तक उसे कुछ नहीं कह सकता, इसे हटा नहीं सकता। अल्लाह की क़सम ! इतने में गवाह लाऊंगा, इतने में वह अपनी शहवत पूरी करके जा चुका होगा। (मैं तो इसका काम वहीं तमाम कर दूंगा।)[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रात मेरे पास से उठकर बाहर चले गए। मैंने इससे बड़ी ग़ैरत महसूस की। आप वापस तशरीफ़ लाए और परेशानी में मैं जो कुछ कर रही थी उसे देखकर आपने फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुम्हें क्या हुआ ? क्या तुम्हें भी ग़ैरत आ गई ?

मैंने अर्ज़ किया कि मुझ जैसी (महबूब बीवी) को आप जैसे (महान ख़ाविन्द) पर ग़ैरत क्यों न आती ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, असल में बात यह है कि तुम्हारा शैतान तुम्हारे पास आया था।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या मेरे साथ शैतान है ? आपने फ़रमाया, हां। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आपके साथ भी शैतान है ?

---

1. हैसमी, भाग 5, पृ० 12,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, लेकिन अल्लाह ने इसके साथ मेरी मदद फ़रमाई, जिसकी वजह से वह मुसलमान हो गया या मैं उसकी धोखाधड़ी से बचा रहता हूं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की तो मुझे बहुत परेशानी हुई, क्योंकि लोगों ने हमें बताया था कि वह ख़ूबसूरत हैं। मैंने किसी बहाने छिपकर उन्हें देखा तो वाक़ई अल्लाह की क़सम ! उनका जितना हुस्न व जमाल मुझे बताया गया था, उससे कई गुना मुझे उनमें नज़र आया। फिर मैंने इसका हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से ज़िक्र किया।

हज़रत आइशा और हज़रत हफ़सा रज़ि० का आपस में बड़ा जोड़ था। उन्होंने कहा, ग़ैरत की वजह से वह तुम्हें ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आईं, वरना वह इतनी ख़ूबसूरत नहीं हैं जितना लोग कहते हैं। चुनांचे हज़रत हफ़सा रज़ि० ने किसी बहाने से छिपकर उन्हें देखा और मुझे आकर कहा, मैं उन्हें देख आई हूं, अल्लाह की क़सम ! तुम उनको जितना ख़ूबसूरत बता रही हो, वह इतनी ख़ूबसूरत नहीं हैं, बल्कि उसके क़रीब भी नहीं है, हां, ख़ूबसूरत ज़रूर हैं।

चुनांचे मैंने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० को फिर जाकर देखा, तो अब वह मुझे वैसी ही नज़र आईं जैसा कि हज़रत हफ़सा ने बताया था। मेरी ज़िंदगी की क़सम ! मैं चूंकि ग़ैरत वाली थी, इसलिए पहले वह मुझे ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आई थीं।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, क्या मुझे यह बात नहीं पहुंची है कि तुम्हारी औरतें बाज़ारों में अजमी काफ़िर लोगों से टकराती फिरती हैं? क्या इस पर तुम्हें ग़ैरत नहीं आती? जिसमें ग़ैरत नहीं है, उसमें कोई ख़ैर (भलाई) नहीं है।[3]

---

1. मिश्कात, पृ० 280,
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 94,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 161.

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ग़ैरत दो तरह की होती है। एक अच्छी ग़ैरत, जिसकी वजह से इंसान अपने घरवालों का सुधार करता है और दूसरी ग़ैरत बुरी (नाफ़रमान लोगों की ग़ैरत) जिसकी वजह से इंसान दोज़ख़ में चला जाता है।[1]

नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अन्दर तशरीफ़ लाए और तीन बार फ़रमाया, ऐ इब्ने मसऊद रज़ि० ! मैंने भी तीन बार अर्ज़ किया, लब्बैक (हाज़िर हूं) ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम जानते हो, लोगों में सबसे अफ़ज़ल कौन है?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ही ज़्यादा जानते हैं?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लोगों में सबसे अफ़ज़ल वह है जिसके अमल सबसे अच्छे हों, बशर्तेकि उसे दीन की समझ हासिल हो जाए। फिर आपने फ़रमाया, ऐ इब्ने मसऊद !

मैंने अर्ज़ किया, लब्बैक ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

आपने फ़रमाया, तुम जानते हो, लोगों में सबसे बड़ा आलिम कौन है?

मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उसका रसूल ही ज़्यादा जानते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लोगों में सबसे बड़ा आलिम वह है कि जब लोगों में इख़्तिलाफ़ हो जाए, तो वह (हालात का असर न ले, बल्कि) इस मौक़े पर उसकी सबसे ज़्यादा निगाह हक़ पर हो, चाहे वह अमल में कुछ कम हो और अगरचे वह चूतड़ों के बल पर घसीट कर चलता हो। मुझसे पहले जो लोग थे, उनके बहत्तर फ़िर्क़े बन गए थे, उनमें से सिर्फ़ तीन फ़िर्क़ों को निजात मिली, बाक़ी सब हलाक हो गए।

—एक तो वह फ़िर्क़ा, जिन्होंने बादशाहों का मुक़ाबला किया और

1 कंज़, भाग 2, पृ० 161.

हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्सलाम के दीन की वजह से और अपने दीन की वजह से उन बादशाहों से लड़ाई लड़ी। बादशाहों ने उन्हें पकड़ कर क़त्ल किया, आरों से चीरकर उनके टुकड़े कर दिए।

—दूसरा फ़िर्क़ा वह था जिनमें बादशाहों से मुक़ाबले की ताक़त नहीं थी और उनमें रहकर इनको अल्लाह की और हज़रत ईसा बिन मरयम के दीन की दावत देने की हिम्मत नहीं थी। ये लोग अलग-अलग इलाक़ों की ओर निकल गए और सन्यास अपना लिया। इन्हीं के बारे में अल्लाह ने फ़रमाया है—

وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ

(سورت حدید آیت ۲۷)

'और उन्होंने सन्यास को ख़ुद ईजाद किया, हमने इसको उन पर वाजिब न किया था, लेकिन उन्होंने हक़ की रिज़ा के वास्ते उसको अख़्तियार किया था, सो उन्होंने इस (सन्यास) की पूरी रियायत न की।

(सूरः हदीद, आयत 27)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो मुझ पर ईमान लाए और मेरी तस्दीक़ करे और मेरी पैरवी करे, वह उस सन्यास की पूरी रियायत करने वाला समझा जाएगा, जो मेरी पैरवी न करें, यही लोग हलाक होने वाले हैं।

और एक रिवायत में यह है कि एक फ़िर्क़ा तो जाबिर बादशाहों के पास ठहरा रहा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दावत देता रहा, जिस पर उन्हें पकड़ कर क़त्ल किया गया, आरों से चीरा गया, आग में ज़िंदा जला दिया गया। उन्होंने जान दे दी, लेकिन सब्र का दामन न छोड़ा। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[1]

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम अपने रब की तरफ़ से एक खुले रास्ते पर रहोगे, जब तक तुममें दो नशे न ज़ाहिर न हो जाएं—एक जिहालत का नशा, दूसरा ज़िंदगी की मुहब्बत का नशा और

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 260

तुम भलाई का हुक्म देने और बुराइयों को मिटाने का काम नहीं कर सकोगे और अल्लाह के रास्ते में जिहाद न कर सकोगे। इस ज़माने में क़ुरआन और हदीस को बयान करने वाले उन मुहाजिरों और अंसार की तरह होंगे जो शुरू में इस्लाम लाए थे।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, क्या मैं तुम्हें ऐसे लोग न बताऊं जो न नबी होंगे और न शहीद, लेकिन उनको अल्लाह के यहां इतना ऊंचा रुत्बा मिलेगा कि क़ियामत के दिन नबी और शहीद भी उन्हें देखकर ख़ुश होंगे और वे नूर के ख़ास मिंबरों पर होंगे और पहचाने जाएंगे।

सहाबा ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वे कौन लोग हैं?

आपने फ़रमाया, ये वह लोग हैं जो अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का महबूब बनाते हैं और अल्लाह को उसके बन्दों का महबूब बनाते हैं और लोगों का भला चाहने वाले बनकर ज़मीन पर फिरते हैं।

मैंने अर्ज़ किया, यह बात तो समझ में आती है कि वह अल्लाह को उसके बन्दों का महबूब बनाएं, लेकिन यह समझ में नहीं आ रहा कि वह अल्लाह के बन्दों को अल्लाह का महबूब कैसे बनाएंगे?

आपने फ़रमाया, ये लोग अल्लाह के बन्दों को उन कामों का हुक्म देंगे जो काम अल्लाह को महबूब और पसन्द हैं और उन कामों से रोकेंगे जो अल्लाह को पसन्द नहीं हैं। वे बन्दे जब इनकी बात मानकर अल्लाह के पसन्दीदा काम करने लग जाएंगे तो ये बन्दे अल्लाह के महबूब बन जाएंगे।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना नेक लोगों के अमलों के सरदार हैं, इन दोनों को कब छोड़ दिया जाएगा?

आपने फ़रमाया, जब तुममें वे ख़राबियां पैदा हो जाएंगी, जो बनी

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 271
2. कंज़, भाग 2, पृ० 139

इसराईल में पैदा हुई थीं।

मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बनी इस्राईल में क्या ख़राबियां पैदा हो गई थीं?

आपने फ़रमाया, जब तुम्हारे नेक लोग दुनिया की वजह से नाफ़रमानों के सामने दीनी मामलों में नर्मी बरतने लगें और दीनी इल्म सबसे बुरे लोगों में आ जाए और बादशाही छोटों के हाथ लग जाए, तो फिर तुम उस वक़्त ज़बरदस्त फ़िल्ने में पड़ जाओगे। तुम फ़िल्नों की ओर चलोगे, और फ़िल्ने बार-बार तुम्हारी ओर आएंगे।[1]

हज़रत क़ैस बिन अबी हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा बने तो वह मिंबर पर तशरीफ़ लाए और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! तुम यह आयत पढ़ते हो—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

(سورت مائدہ آیت ۱۰۵)

'ऐ ईमान वालो ! अपनी चिन्ता करो जब तुम राह पर चल रहे हो, तो जो आदमी गुमराह रहे, तो इससे तुम्हारा कोई नुक़्सान नहीं।'

(सूरः माइदा, आयत 105)

और इसका ग़लत मतलब लेते हो। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि लोग जब किसी बुराई को देखें और उसे न बदलें, तो अल्लाह (बुराई करने वालों और न करने वालों) सबको सज़ा देंगे (करने वालों को करने की वजह से और न करने वालों को न रोकने की वजह से।)[2]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जिस दिन हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह रखा गया यानी वह ख़लीफ़ा बने, उस दिन वहीं मिंबर पर बैठे और अल्लाह

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 276, कंज़, भाग 2, पृ० 139,
2. अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसई, इब्ने माजा, बैहक़ी

की हम्द व सना बयान की और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजा, फिर हुज़ूर सल्ल० मिंबर पर जहां बैठा करते थे, दोनों हाथ बढ़ाकर वहां रखे, फिर फ़रमाया, मैंने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यहां बैठे हुए सुना कि आप आयत—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ

का मतलब बयान फ़रमा रहे थे। आपने फ़रमाया, हां, जिस क़ौम में बुराई के काम होने लगें और गन्दे कामों के ज़रिए फ़साद फैलाया जाने लगे और वे न उसे तब्दील करें और न उसको बुराई समझें, तो अल्लाह इन सबको ज़रूर सज़ा देगा और इनकी दुआ क़ुबूल न होगी, फिर अपने दोनों कानों में उंगलियां डालकर फ़रमाया, अगर मेरे दोनों कानों ने ये बातें हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से न सुनी हों, तो मेरे दोनों कान बहरे हो जाएं।[1]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब कुछ लोग ऐसे लोगों के सामने गुनाह के काम करें जो इनसे ज़्यादा ताक़तवर और असरदार हों और वे इन कामों से न रोकें तो इन सब पर अल्लाह ऐसा अज़ाब उतारेंगे जिसे इनसे नहीं हटाएंगे।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब तुम किसी मूरख को देखते हो कि वह लोगों की बेइज़्ज़ती कर रहा है, तो तुम इस पर इंकार क्यों नहीं करते?

लोगों ने कहा, हम इसके ज़ुबान चलाने से डरते हैं।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इस तरह तो तुम (क़ियामत के दिन नबियों के) गवाह नहीं बन सकोगे।[3]

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, भलाई को फैलाते और

1. कंज़ुल उम्माल, भाग 2, पृ० 138,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 138,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 139,

बुराई को रोकते रहो, शायद वह वक़्त आ जाए कि तुम्हारे बुरों को तुम पर मुसल्लत कर दिया जाए और उन बुरों के ख़िलाफ़ नेक लोग बद-दुआ करें और वह क़ुबूल न की जाए।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोग भलाई फैलाने और बुराई के मिटाने का एहतिमाम करते रहो और अल्लाह के दीन के लिए कोशिश करते रहो, वरना ऐसे लोग तुम पर छा जाएंगे जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देंगे और अल्लाह उन्हें अज़ाब देगा।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, तुम लोग भलाई फैलाते और बुराई से ज़रूर रोकते रहना, वरना तुम पर तुम्हारे बुरे लोग मुसल्लत कर दिए जाएंगे, फिर तुम्हारे नेक लोग भी दुआ करेंगे, तो क़ुबूल नहीं होगी।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अनहु ने एक बयान में इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! तुमसे पहले लोग इस वजह से हलाक हुए कि वे लोग गुनाह किया करते थे और इनके रब्बानी उलेमा और दीनी बुज़ुर्गों ने इन्हें इन गुनाहों से रोका नहीं। जब वे गुनाहों में हद से बढ़ गए और रब्बानी उलेमा और दीनी बुज़ुर्गों ने उन्हें न रोका तो आसमानी सज़ाओं ने उन्हें पकड़ लिया, इसलिए तुम लोग भलाई का हुक्म देते और बुराई से रोकते रहो, वरना तुम पर भी वही सज़ाएं नाज़िल होंगी जो इन पर हुई थीं और इस बात का यक़ीन रखो कि भलाई फैलाने और बुराई रोकने से रोज़ी ख़त्म नहीं होती और मौत का वक़्त क़रीब नहीं आता।[4]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जिहाद की तीन क़िस्में हैं—

एक हाथ से जिहाद करना,

दूसरा ज़ुबान से जिहाद करना,

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 139,
2. इब्ने अबी शैबा,
3. हारिस,
4. कंज़, भाग 2, पृ० 139,

तीसरा दिल से जिहाद करना, सबसे पहले हाथ वाला जिहाद ख़त्म होगा, फिर ज़ुबान वाला ख़त्म होगा, फिर दिल वाला। जब दिल की यह हालत हो जाए कि वह नेकी को नेकी न समझे और बुराई को बुराई न समझे तो उसे औंधा कर दिया जाता है, यानी उसके ऊपर वाले हिस्से को नीचे कर दिया जाता है, (फिर ख़ैर और नेकी का जज़्बा उसमें नहीं रहता।)[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सबसे पहले तुम हाथ वाले जिहाद के सामने बेबस और मग़लूब हो गए, फिर दिल वाले जिहाद के सामने। इसलिए जिस दिल की यह कैफ़ियत हो जाए कि वह नेकी को नेकी न समझे और बुराई को बुराई न समझे तो उसके ऊपर वाले हिस्से को ऐसे नीचे कर दिया जाएगा जैसे थैले को उलटा दिया जाता है और फिर थैले के अन्दर की सारी चीज़ें बिखर जाती हैं।[2]

हज़रत तारिक़ बिन शहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि इतरीस बिन उरक़ूब शैबानी ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहा, जो आदमी नेकी का हुक्म न करे और बुराई से न रोके, वह हलाक हो गया। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, यह (तो आगे की बात है) वह आदमी भी हलाक हो गया, जिसका दिल नेकी को नेकी न समझे और बुराई को बुराई न समझे।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, तीन क़िस्म के इंसानों में तो ख़ैर है, इनके अलावा किसी में ख़ैर नहीं है—

एक वह आदमी जिसने देखा कि एक जमाअत अल्लाह के रास्ते में दुश्मन से लड़ाई लड़ रही है। वह अपना माल और जान लेकर इनके साथ लड़ाई में शरीक हो गया।

दूसरा वह आदमी जिसने ज़ुबान से जिहाद किया और नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका।

1. बैहक़ी,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 139,
3. हैसमी, भाग 7, पृ० 275, हुलीया, भाग 1, पृ० 35, कंज़, भाग 2, पृ० 140,

तीसरा वह आदमी, जिसने दिल से हक़ को पहचाना।[1]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुनाफ़िक़ों से अपने हाथ से जिहाद करो, लेकिन अगर इसकी ताक़त न हो और इनके सामने त्यौरी चढ़ाकर अपनी नागवारी ज़ाहिर कर सकते हो, तो फिर यही कर लेना।[2]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, जब तुम किसी बुराई को होते हुए देखो और उसे बन्द करने और रोकने की तुममें ताक़त न हो, तो तुम्हारी निजात के लिए इतना काफ़ी है कि अल्लाह को मालूम हो जाए कि तुम इस बुराई को दिल से बुरा समझते हो।[3]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, किसी जगह अल्लाह की नाफ़रमानी का काम हो रहा हो और कोई आदमी उस मौक़े पर मौजूद हो, लेकिन वह दिल से उसे बुरा समझता हो, तो वह उन लोगों में गिना जाएगा जो इस नाफ़रमानी के मौक़े पर मौजूद नहीं हैं और जो नाफ़रमानी के मौक़े पर मौजूद तो न हो, लेकिन वह इस नाफ़रमानी पर दिल से राज़ी हो तो वह उन लोगों की तरह होगा जो इस नाफ़रमानी के मौक़े पर मौजूद हैं।[4]

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बहुत जल्द बहुत से काम ग़लत होंगे, जो इन कामों के मौक़े पर मौजूद तो न हो, लेकिन दिल से इन पर राज़ी हो तो वह उस आदमी की तरह समझा जाएगा जो मौक़े पर मौजूद था और जो मौक़े पर मौजूद था, लेकिन दिल से उसे बुरा समझ रहा था वह उस आदमी की तरह समझा जाएगा जो मौक़े पर नहीं था।[5]

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नेक लोग इस

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 276,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 140, हैसमी, भाग 7, पृ० 276,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 140,
4. इब्ने अबी शैबा व अबू नुऐम,
5. कंज़, भाग 2, पृ० 140,

दुनिया से पहले चले जाएंगे, फिर शक वाले बाक़ी रह जाएंगे जो न किसी नेकी को नेकी समझेंगे और न किसी बुराई को बुराई समझेंगे।[1]

हज़रत अबू रुक़ाद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं नवउम्र लड़का था। एक बार मैं अपने मालिक के साथ घर से निकला और चलते-चलते हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में पहुंच गया। वह फ़रमा रहे थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक आदमी कोई बोल बोलता था, जिसकी वजह से वह मुनाफ़िक़ हो जाता था और अब मैं सुनता हूं कि तुम लोग वे बोल एक मस्जिद में चार-चार बार बोल लेते हो। देखो, तुम लोग भलाइयों का हुक्म करते रहो और बुराइयों से ज़रूर रोकते रहो और ख़ैर के कामों पर ज़रूर उभारते रहो, वरना अल्लाह तुम सबको अज़ाब से हलाक कर देगा या फिर तुम पर तुम्हारे बुरों को अमीर बना देगा और तुम्हारे नेक लोग दुआ करेंगे, लेकिन तुम्हारे हक़ में क़ुबूल न होगी।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह उस पर लानत फ़रमाए, जो हममें से नहीं है। अल्लाह की क़सम! तुम भलाई का हुक्म करते रहो और बुराई से रोकते रहो, वरना तुम आपस में लड़ने लगोगे और तुम्हारे बुरे तुम्हारे नेक लोगों पर ग़ालिब आकर क़त्ल कर देंगे, फिर नेकी का हुक्म देने वाला और बुराई से रोकने वाला बाक़ी न रहेगा, फिर अल्लाह तुमसे ऐसे नाराज़ होंगे कि तुम अल्लाह से दुआ करोगे, लेकिन वह तुम्हारी कोई दुआ क़ुबूल न करेगा।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि तुम पर एक ज़माना ऐसा आएगा, जिसमें तुममें सबसे बेहतरीन आदमी वह जाना जाएगा जो भलाई का हुक्म करने और बुराई से रोकने का काम न करे (अपने सुधार की चिन्ता करे, दूसरों के सुधार की चिन्ता न करे, लेकिन अभी वह ज़माना नहीं आया।)[4]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 135, हैसमी, भाग 7, पृ० 280,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 279, कंज़, भाग 2, पृ० 140,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 279
4. अबी नुऐम, भाग 1, पृ० 280, कंज़, भाग 2, पृ० 140.

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, बहुत से काम ऐसे हैं जिनको पिछले समयों में बुरा समझा जाता था, लेकिन आज वे नेकी के काम समझे जाते हैं और बहुत से काम आज बुराई के समझे जाते हैं, लेकिन आगे के ज़माने में उन्हें नेकी का काम समझा जाने लगेगा और तुम लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहोगे, जब तक तुम उस काम को नेकी न समझने लगो, जिसे तुम बुराई समझते थे और उस काम को बुराई न समझने लगो, जिसे तुम नेकी समझते थे और जब तक तुम्हारा आलिम तुम्हारे सामने हक़ बात कहता रहे, उसको हल्का न समझा जाए।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, अगरचे मैं एक नेकी पर अमल नहीं कर रहा होता हूं, लेकिन मैं दूसरों को उस नेकी पर अमल करने का हुक्म देता हूं और मुझे अल्लाह से उस पर बदला मिलने की उम्मीद है।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों को किसी काम से रोकने का इरादा फ़रमाते तो अपने घरवालों से पहले फ़रमाते और फ़रमाते, तुममें से जिसके बारे में मुझे पता चला कि उसने वह काम किया है जिससे मैंने रोका है तो मैं उसको दोगुनी सज़ा दूंगा।[3]

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हुमा अपने साथ कुछ लोगों को जमाअत बनाकर नेकी का हुक्म दिया करते थे। हज़रत उमर रज़ि० को जब किसी बुराई की ख़बर मिलती, तो फ़रमाते, जब तक मैं और हिशाम ज़िंदा हैं, यह बुराई नहीं हो सकेगी।[4]

हज़रत अबू जाफ़र ख़तमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मेरे दादा हज़रत उमैर बिन हबीब बिन ख़ुमाशा रज़ियल्लाहु अन्हु को बालिग़ होने

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 141,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 140, हुलीया, भाग 1, पृ० 213,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 141
4. कंज़, भाग 2, पृ० 141,

के वक़्त से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल हुई थी, उन्होंने अपने बेटे को यह वसीयत फ़रमाई, ऐ बेटे! बेवक़ूफ़ों के पास बैठने से बचो, क्योंकि इनके पास बैठना बीमारी है, जो बेवक़ूफ़ की बरदाश्त करता है, वह ख़ुश रहता है और जो उसकी ग़लत बातों का जवाब देगा, उसे आख़िर में शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी और जो बेवक़ूफ़ की थोड़ी तक्लीफ़ को बरदाश्त नहीं करता, उसे फिर ज़्यादा तक्लीफ़ बरदाश्त करनी पड़ती है।

जब तुममें से कोई भलाई का हुक्म देना और बुराई से मना करना चाहे तो उसे चाहिए कि वह अपने मन को तक्लीफ़ों पर सब्र करने की आदत डाले और अल्लाह से सवाब मिलने का यक़ीन रखे और क्योंकि जिसे अल्लाह से सवाब मिलने का यक़ीन होगा, उसे तक्लीफ़ों के पेश आने से कोई परेशानी नहीं होगी।[1]

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी बक्रा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबू बक्रा रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला बनू ग़ुदाना की एक औरत से शादी की। फिर इस औरत का इंतिक़ाल हो गया, वह इसके जनाज़े को उठाकर क़ब्रस्तान ले गए। उस औरत के भाइयों ने कहा, हम इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे।

हज़रत अबूबक्रा रज़ि० ने इनसे फ़रमाया, ऐसे न करो, क्योंकि मैं इसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने का तुमसे ज़्यादा हक़दार हूं।

इन भाइयों ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी ठीक कह रहे हैं। चुनांचे उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर वह क़ब्र में दाख़िल होने लगे तो लोगों ने इतने ज़ोर से धक्का दिया कि वह ज़मीन पर गिर गए और बेहोश हो गए। फिर उन्हें उठाकर घर लाया गया, वहां इनके बीस बेटों और बेटियों की चीख़ें निकल गईं। मैं इन बीस में सबसे छोटा था।

जब इन्हें होश आया तो फ़रमाया, तुम मुझ पर ज़ोर-ज़ोर से मत रोओ। अल्लाह की क़सम! मुझे अबू बक्रा की जान से ज़्यादा और

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 266, इसाबा, भाग 3, पृ० 30

किसी जान का निकलना महबूब नहीं है।

यह सुनकर हम सब घबरा गए और हमने कहा, ऐ अब्बा जान! क्यों? (आप दुनिया से क्यों जाना चाहते हैं?)

उन्होंने फ़रमाया, मुझे इस बात का डर है कि कहीं ऐसा ज़माना मेरी ज़िंदगी में न आ जाए जिसमें भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने का काम न कर सकूं और उस ज़माने में कोई ख़ैर न होगी।[1]

हज़रत अली बिन ज़ैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज्जाज के साथ महल में था। वह इब्ने अशअस की वजह से लोगों का जायज़ा ले रहा था कि इतने में हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ ले गए, जब वह नज़दीक आए तो हज्जाज ने कहा (नऊज़ु बिल्लाहि मिन ज़ालिक) ओ ख़बीस! ओ फ़ित्नों में चक्कर लगाने वाले! कहो, तुम कभी हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ होते हो और कभी इब्ने ज़ुबैर रज़ि० के साथ और कभी इब्ने अशअस के साथ। ग़ौर से सुनो! मैं तुम्हें ऐसे जड़ से उखाड़ दूंगा जैसे गोंद को उखाड़ा जाता है और मैं तुम्हारी खाल ऐसे उतारूंगा, जैसे गोह की खाल उतारी जाती है।

हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह अमीर को सुधारे। वह इस कलाम से किसको ख़िताब कर रहे हैं।

हज्जाज ने कहा, मैं तुम्हें ख़िताब कर रहा हूं। अल्लाह तुम्हारे कानों को बहरा करे।

इस पर हज़रत अनस रज़ि० ने इन्ना लिल्लाहि पढ़ी और वहां से बाहर आ गए और फ़रमाया, अगर मुझे अपने बच्चे याद न आ जाते जिन पर मुझे इस हज्जाज की ओर से ख़तरा है, तो आज मैं खड़े-खड़े इसी जगह उसे ऐसी खरी-खरी सुनाता कि वह मुझे बिल्कुल जवाब न दे सकता।[2]

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 280,
2. हैसमी, भाग 7, पृ० 274

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार मैंने हज्जाज को ख़ुत्बा देते हुए सुना। उसने ऐसी बात कह दी जो मुझे बिल्कुल ग़लत नज़र आई। मैंने उसे टोकना चाहा, लेकिन फिर मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान याद आ गया कि किसी मोमिन के लिए अपने नफ़्स को ज़लील करना मुनासिब नहीं।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मोमिन अपने नफ़्स को कैसे ज़लील करेगा?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह अपने आपको ऐसे इम्तिहान के लिए पेश कर दे कि जिसकी उसमें ताक़त न हो।[1]

तंहाई और अलग-थलग रहना

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अकेले रहने से बुरे साथियों से राहत मिलती है।[2]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अपने वक़्तों में अकेले और तंहाई में बैठने का हिस्सा भी रखा करो।[3]

हज़रत मुआफ़ा बिन इमरान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का गुज़र कुछ ऐसे लोगोंके पास से हुआ जो एक ऐसे आदमी के पीछे चल रहे थे जिसे अल्लाह के किसी मामले में सज़ा हुई थी, तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इन चेहरों के लिए कोई ख़ुश आमदीद (स्वागत) नहीं है जो सिर्फ़ शर के मौक़े पर नज़र आते हैं।[4]

हज़रत अदसा ताई रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं सरिफ़ नामी जगह पर था कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे यहां तशरीफ़ लाए। मेरे घरवालों ने मुझे कुछ चीज़ें देकर इनकी ख़िदमत में भेजा। हमारे जो ग़ुलाम ऊंटों की ख़िदमत में थे, वे चार दिन सफ़र वाली दूरी

---

1. हैसमी, भाग 7, पृ० 274,
2. इब्ने अबी शैबा व अहमद
3. कंज़, भाग 2, पृ० 159, फ़त्हुल बारी, भाग 11, पृ० 262,
4. कंज़, भाग 3, पृ० 159,

से एक परिंदा पकड़ कर लाए। मैं वह परिंदा लेकर इनकी ख़िदमत में गया तो उन्होंने मुझसे पूछा, तुम यह परिंदा कहां से लाए हो?

मैंने कहा, हमारे कुछ ग़ुलाम ऊंटों की ख़िदमत में थे, वे चार दिन के सफ़र की दूरी से यह परिंदा लाए हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, मेरी दिली आरज़ू यह है कि यह परिंदा जहां से शिकार करके लाया गया है, मैं वहां (अकेला) रहा करूं, न मैं किसी से किसी मामले में कोई बात करूं और न कोई मुझसे बात करे, यहां तक कि अल्लाह से जा मिलूं।[1]

हज़रत क़ासिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, आप मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दें।

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया, तुम अपने घर में रहा करो (बाहर न जाया करो) और अपनी ज़ुबान को (बेकार की बातों से) रोक कर रखा करो और अपनी ख़ताएं याद करके रोया करो।[2]

हज़रत इस्माईल बिन अबी ख़ालिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने अपने बेटे हज़रत अबू उबैदा को तीन वसीयतें कीं, फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह के डरने की वसीयत करता हूं और तुम अपने घर ही में रहा करो और अपनी ख़ताओं पर रोया करो।[3]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरी दिली आरज़ू यह है कि मुझे कोई ऐसा आदमी मिल जाए जो मेरे कारोबार को संभाल ले और मैं दरवाज़ा बन्द करके घर में रहा करूं, न कोई मेरे पास आए, न मैं किसी के पास जाऊं, यहां तक कि मैं (इसी हाल में) अल्लाह से जा मिलूं।[4]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि अगर वस्वास (शैतान) का डर न होता, तो मैं ऐसे इलाक़े में चला जाता, जहां

---

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 304, कंज़, भाग 2, पृ० 159,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 135
3. हैसमी, भाग 1, पृ० 299
4. कंज़, भाग 2, पृ० 159, हुलीया, भाग 1, पृ० 278,

कोई जान-पहचान वाला, दिल लगाने वाला न होता (और तंहाई अपना लेता) क्योंकि इंसान को (बुरे) इंसान ही बिगाड़ते हैं।[1]

हज़रत मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत यह्या बिन सईद रहमतुल्लाहि अलैहि को फ़रमाते हुए सुना कि हज़रत अबू जह्म बिन हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हु अन्सार के साथ नहीं बैठा करते थे, जब इनसे अकेले रहने के बारे में कोई ज़िक्र करता (कि आप अलग-थलग क्यों रहते हैं, तो फ़रमाते कि लोगों का शर अकेले रहने से ज़्यादा है।[2]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुसलमान के लिए बेहतरीन इबादतगाह उसका घर है, जिसमें रहकर वह अपने नफ़्स (मन), निगाह और शर्मगाह को (बुरे कामों से) रोके रखता है और बाज़ार में बैठने से बचो, क्योंकि इससे इंसान ग़फ़लत में पड़ जाता है और बेकार के कामों में लग जाता है।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार मैं हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रा तो वह अपने दरवाज़े पर खड़े हुए हाथ से ऐसे इशारे कर रहे थे, गोया कि अपने आपसे बातें कर रहे हों। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! क्या बात है? आप अपने आपसे बातें कर रहे हैं।

हज़रत मुआज़ ने फ़रमाया, मालूम नहीं क्या बात है? अल्लाह का दुश्मन यानी शैतान मुझे इन कामों से हटाना चाहता है, जो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुने हैं, शैतान यों कहता है कि आप ज़िंदगी भर यों ही घर में बैठकर मशक़्क़त उठाते रहोगे, आप बाहर जाकर लोगों की मज्लिस में क्यों नहीं बैठते?

मैंने हुज़ूर सल्ल० को फ़रमाते हुए सुना है कि जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकलता है, वह अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो

1. कंज़, भाग 2, पृ० 159,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 159,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 159,

किसी बीमार का पूछना करने जाता है, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो सुबह या शाम को मस्जिद जाता है, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो मदद करने के लिए इमाम के पास जाता है, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है और जो घर बैठ जाता है और किसी की बुराई और चाव नहीं करता, वह भी अल्लाह की ज़िम्मेदारी में होता है। अल्लाह का दुश्मन यह चाहता है कि घर से बाहर निकलूं और लोगों की मज्लिस में बैठा करूं।[1]

जो मिल जाए, उसी पर राज़ी रहना (क़नाअत)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अह्नफ़ रज़ियल्लाहु अनहु को एक क़मीज़ पहने हुए देखा। हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, ऐ अह्नफ़ रज़ि० ! तुमने यह क़मीज़ कितने में ख़रीदी ?

हज़रत अह्नफ़ रज़ि० ने कहा, बारह दिरहम में।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम्हारा भला हो। तुम छः दिरहम की क़मीज़ ख़रीदते और बाक़ी छः दिरहम किसी ख़ैर (भलाई) के काम में खर्च कर देते, जैसे कि तुम जानते हो।[2]

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त लिखा कि दुनिया में जितनी रोज़ी मिल रही है, तुम इस पर राज़ी रहो, और इसी पर क़नाअत कर लिया करो, क्योंकि रहमान ने अपने बन्दों को कम ज़्यादा रोज़ी दी है और यों अल्लाह हर एक को आज़माना चाहते हैं। जिसे रोज़ी ज़्यादा दी है अल्लाह देखना चाहते हैं कि यह कैसे शुक्र अदा करता है? और अल्लाह का असल शुक्र यह है कि अल्लाह ने जो दिया है, उसे वहां ख़र्च करे जहां अल्लाह चाहते हैं।[3]

1. हैसमी, भाग 10, पृ० 304, कंज़, भाग 2, पृ० 161,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 161
3. कंज़, भाग 2, पृ० 161,

हज़रत अबू जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बार घटिया और सूखी खजूरें खाईं और फिर पानी पिया, फिर अपने पेट पर हाथ मार कर फ़रमाया, जिसे उसका पेट जहन्नम में दाख़िल करे, अल्लाह उसे अपनी रहमत से दूर रखे, फिर यह शेर पढ़ा—

وَإِنَّكَ مَهْمَا تُعْطِ بَطْنَكَ سُؤْلَهُ وَفَرْجَكَ نَالَا مُنْتَهَى الذَّمِّ أَجْمَعَا

'तुम अपने पेट और शर्मगाह की ख़्वाहिश जितनी भी पूरी करोगे, उतनी इन दोनों को इंतिहाई दर्जे की निन्दा मिलेगी।'[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ इब्ने आदम ! तू आज के दिन की फ़िक्र कर और आने वाले कल की फ़िक्र न कर। जल्दी करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि अगर कल तुझे मौत नहीं आनी है तो कल की रोज़ी तेरे पास खुद ही आ जाएगी और यह अच्छी तरह समझ ले कि तू अपनी ज़रूरत के लिए जितना माल कमा रहा है, वह तो दूसरों के लिए जमा कर रहा है।[2]

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे से फ़रमाया, ऐ बेटे ! जब तुम ग़िना हासिल करना चाहते हो, तो वह तुम्हें क़नाअत से मिलेगी, क्योंकि जिसमें क़नाअत नहीं हुई, उसे कितना भी माल मिल जाए, उसे ग़िना हासिल नहीं हो सकती है।[3]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 161,
2. कंज़, भाग 2, पृ० 161,
3. कंज़, भाग 2, पृ० 161,

निकाह में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० का तरीक़ा

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह

हज़रत जाबिर बिन समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु या कोई दूसरे सहाबी फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बकरियां चराया करते थे, फिर उन्हें छोड़कर आप ऊंट चराने लग गए। हुज़ूर सल्ल० और आपके शरीक ऊंट किराया पर दिया करते थे। उन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन को भी ऊंट किराया पर दिया।

जब वे लोग सफ़र पूरा कर चुके तो इन ऊंटों का कुछ किराया हज़रत ख़दीजा रज़ि० की बहन के ज़िम्मे रह गया। हुज़ूर सल्ल० का शरीक जब हज़रत ख़दीजा की बहन के पास किराया का तक़ाज़ा करने जाने लगता तो हुज़ूर सल्ल० से कहता, आप भी मेरे साथ चलें। हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते तुम चले जाओ, मुझे तो शर्म आती है।

एक बार हुज़ूर सल्ल० का शरीक तक़ाज़ा करने गया तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० की बहन ने पूछा, (तुम अकेले तक़ाज़ा करने आए?) मुहम्मद कहां हैं?

हुज़ूर सल्ल० के शरीक ने कहा, मैंने तो उनसे कहा था, आओ चलें। लेकिन उन्होंने कहा, मुझे शर्म आती है।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० की बहन ने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा हया वाला और ज़्यादा पाक दामन और ऐसा और ऐसा आदमी नहीं देखा। यह सुनकर उनकी बहन हज़रत ख़दीजा रज़ि० के दिल में हुज़ूर सल्ल० की मुहब्बत बैठ गई, तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० को पैग़ाम भेजकर बुलाया और कहा कि आप मेरे वालिद के पास जाएं और उन्हें मेरे निकाह का पैग़ाम दें।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आपके वालिद मालदार आदमी हैं, वह ऐसा नहीं करेंगे।

हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, आप इनसे जाकर मिलें और इनसे बात करें। आगे बात मैं संभाल लूंगी। जब वह नशे में हों, उस वक़्त उनके पास जाना। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने ऐसा ही किया। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से हज़रत ख़दीजा रज़ि० की शादी कर दी।

सुबह को जब वह अपनी मज्लिस में बैठे तो किसी ने उनसे कहा, आपने अच्छा किया, (अपनी बेटी ख़दीजा से) मुहम्मद सल्ल० की शादी कर दी।

उन्होंने कहा, क्या वाक़ई मैंने शादी कर दी है? लोगों ने कहा, जी हां।

वह फ़ौरन वहां से खड़े होकर हज़रत ख़दीजा के पास आए और यों कहा कि लोग यों कह रहे हैं कि मैंने (तुम्हारी) शादी मुहम्मद से कर दी है?

हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, हां, ठीक है। अब आप अपनी राय को ग़लत न समझें, इसलिए कि हज़रत मुहम्मद सल्ल० ऐसे और ऐसे हैं और बहुत बड़ी ख़ूबियों वाले हैं। हज़रत ख़दीजा रज़ि० ज़ोर लगाती रहीं, आख़िर उनके बाप राज़ी हो गए। फिर हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने दो औक़िया चांदी या सोना हुज़ूर सल्ल० के पास भेजा और अर्ज़ किया कि एक जोड़ा ख़रीद कर मुझे हदिया कर दें और एक मेंढा और फ़्लां-फ़्लां चीज़ें ख़रीद लें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने ऐसा ही किया।[1]

एक रिवायत में यह है, हज़रत ख़दीजा ने कहा, जोड़ा ख़रीद कर मेरे वालिद को हदिया कर दें।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा (से शादी) का ज़िक्र किया और हज़रत ख़दीजा रज़ि० के बाप हुज़ूर सल्ल० से हज़रत ख़दीजा की शादी पर राज़ी न थे। हज़रत ख़दीजा के खाने-पीने का इन्तिज़ाम किया और अपने बाप और क़ुरैश के कुछ

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 222,

आदमियों को बुलाया।

चुनांचे इन लोगों ने (आकर) खाना खाया और शराब पी, यहां तक कि सब नशे में चूर हो गए, तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह मुझे निकाह का पैग़ाम दे रहे हैं। आप उनसे मेरी शादी कर दें। उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से हज़रत ख़दीजा रज़ि० की शादी कर दी। इस पर हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने अपने वालिद को खुलूक़ ख़ुश्बू लगाई और उन्हें जोड़ा पहनाया। उस ज़माने में शादी के मौक़े पर वालिद के साथ ऐसा करने का दस्तूर था।

जब उनका नशा उतरा तो उन्होंने देखा कि उन्होंने खुलूक़ ख़ुश्बू लगा रखी है और जोड़ा पहन रखा है, तो उन्होंने कहा, मुझे क्या हुआ? यह क्या है?

हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, आपने हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह से मेरी शादी कर दी है?

उन्होंने कहा, क्या मैंने अबू तालिब के यतीम से शादी कर दी है? नहीं, नहीं, मेरी ज़िंदगी की क़सम! नहीं!

हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने कहा, आपको शर्म करनी चाहिए। आप अपने आपको क़ुरैश की निगाह में मूर्ख साबित करना चाहते हैं? लोगों को बताना चाहते हैं कि आप नशे में थे? चुनांचे वह अपने बाप को समझाती रहीं, यहां तक कि वह राज़ी हो गए।[1]

हज़रत नफ़ीसा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत ख़दीजा बिन्त खुवैलद रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी समझदार, दूर तक सोचने वाली, ताक़तवर और शरीफ़ ख़ातून थीं। अल्लाह ने भी इनके साथ इकराम और ख़ैर का इरादा फ़रमा लिया। वह उस वक़्त क़ुरैश में सबसे अफ़ज़ल ख़ानदान वाली और सबसे ज़्यादा शराफ़त वाली और सबसे ज़्यादा मालदार थीं। उनकी क़ौम का हर आदमी उनसे शादी करने की तमन्ना रखता था और उनसे शादी के लिए बहुत माल ख़र्च करने के लिए तैयार था।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 220

जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ख़दीजा रज़ि० का तिजारती क़ाफ़िला शाम देश से लेकर वापस आए तो हज़रत ख़दीजा रज़ि० ने मुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में अन्दाज़ा लगाने के लिए भेजा। मैंने जाकर कहा, ऐ मुहम्मद सल्ल० ! आप शादी क्यों नहीं करते ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि शादी करने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।

मैंने कहा, अगर शादी के ख़र्च का इन्तिज़ाम हो जाए और आपको ख़ूबसूरत, मालदार, शरीफ़ और जोड़ की औरत से शादी की दावत दी जाए तो क्या आप क़ुबूल नहीं कर लेंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह औरत कौन है? मैंने कहा, हज़रत ख़दीजा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मेरी उनसे शादी कैसे हो सकती है? मैंने कहा, इसकी मैं ज़िम्मेदार हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तो मैं तैयार हूं।

मैंने जाकर हज़रत ख़दीजा रज़ि० को बताया, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को पैग़ाम भेजा कि फ़्लां वक़्त तशरीफ़ ले आएं और अपने चचा अम्र बिन असद को पैग़ाम भेजा कि वह इनकी शादी कर दें, तो वह आ गए और हुज़ूर सल्ल० भी अपने चचों के साथ तशरीफ़ ले आए और एक चचा ने हुज़ूर सल्ल० की शादी करा दी।

अम्र बिन असद ने कहा, यह ऐसे जोड़ के ख़ाविंद हैं जिनको इंकार नहीं किया जा सकता।

इस शादी के वक़्त हुज़ूर सल्ल० की उम्र पचीस साल थी और हज़रत ख़दीजा रज़ि० की उम्र चालीस साल थी। वह हाथी वाले वाक़िए से पन्द्रह साल पहले पैदा हुई थीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत आइशा और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हुमा से निकाह

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हो गया, तो मक्का ही में हज़रत

उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अनहु की बीवी हज़रत ख़ौला बिन्त हकीम बिन औक़स रज़ियल्लाहु अनहुमा ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप शादी नहीं करते ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, किससे ? उन्होंने कहा, आप चाहें तो कुंवारी से और आप फ़रमाएं तो बेवा से।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कुंवारी कौन है ?

उन्होंने कहा, अल्लाह की मख़्लूक़ में आपको जो सबसे ज़्यादा महबूब हैं, उनकी बेटी हज़रत आइशा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, बेवा कौन हैं ? उन्होंने कहा, हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा जो आप पर ईमान लाई हैं और आपके दीन की पैरवी कर चुकी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा जाकर दोनों से मेरा ज़िक्र करो।

हज़रत ख़ौला रज़ि० हज़रत अबूबक्र रज़ि० के घर गईं। वहां मेरी मां हज़रत उम्मे रुम्मान रज़ियल्लाहु अन्हा उन्हें मिलीं। हज़रत ख़ौला रज़ि० ने कहा, ऐ उम्मे रुम्मान ! अल्लाह कितनी बड़ी ख़ैर व बरकत आपको देना चाहते हैं। मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आइशा रज़ि० से शादी का पैग़ाम देने के लिए भेजा है।

हज़रत उम्मे रुम्मान रज़ि० ने कहा, मैं तो चाहती हूं, लेकिन तुम हज़रत अबूबक्र रज़ि० का इन्तिज़ार कर लो वह आने ही वाले हैं। चुनांचे जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० आ गए तो हज़रत ख़ौला रज़ि० ने कहा, ऐ अबूबक्र रजि० ! अल्लाह कितनी ख़ैर व बरकत आप लोगों को देना-चाहते हैं। मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आइशा से शादी का पैग़ाम देने के लिए भेजा है।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, क्या आइशा रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० की शादी हो सकती है ? यह तो उनकी भतीजी है।

हज़रत ख़ौला रज़ि० ने वापस जाकर हुज़ूर सल्ल० को हज़रत अबूबक्र रज़ि० की यह बात बताई। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वापस जाकर अबूबक्र रज़ि० से कहो कि तुम इस्लाम में मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई

हूं। (यह ख़ून का रिश्ता नहीं है, इसलिए) तुम्हारी बेटी की मुझसे शादी हो सकती है।

हज़रत ख़ौला रज़ि० ने जाकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बताया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुला लाओ। हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से मेरी शादी कर दी।[1]

हज़रत अबू सलमा और हज़रत यह्या बिन अब्दुर्रहमान बिन हातिब रहमतुल्लाहि अन्हुमा कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा, वापस जाकर अबूबक्र रज़ि० को बता दो कि मैं तुम्हारा और तुम मेरे इस्लामी भाई हो और तुम्हारी बेटी की शादी मुझसे हो सकती है।

हज़रत ख़ौला रज़ि० कहती हैं, मैंने वापस जाकर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्ल० का जवाब बता दिया। उन्होंने कहा, ज़रा इन्तिज़ार करो। यह कहकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० बाहर चले गए।

हज़रत उम्मे रुम्मान रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा, मुतइम बिन अदी ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को अपने बेटे ज़ुबैर का आइशा रज़ि० के लिए पैग़ाम दिया था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुतइम से वायदा कर लिया था और हज़रत अबूबक्र रज़ि० कभी अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करते हैं, इसलिए वह मुतइम से बात करने गये हैं।

चुनांचे जब हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुतइम के पास पहुंचे तो उसके पास उसकी बीवी बैठी हुई थी जो उसके बेटे (जुबैर) की मां थी। मुतइम की बीवी ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को ऐसी बात कही, जिसकी वजह से यह वायदा पूरा करना हज़रत अबूबक्र रज़ि० के ज़िम्मे न रहा, जो उन्होंने मुतइम से किया था। इसकी शक्ल यह हुई कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुतइम से कहा, आप इस लड़की (आइशा रज़ि०) के मामले में क्या कहते हैं?

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 225,

मुतइम ने अपनी बीवी की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, ऐ फ़्लानी! तुम क्या कहती हो? उसने हज़रत अबूबक्र रज़ि० की तरफ मुतवज्जह होकर कहा, अगर हम इस नवजवान की शादी (तुम्हारी बेटी से) कर दें, तो शायद तुम ज़ोर लगाकर मेरे बेटे को अपने दीन में दाख़िल कर लोगे। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुतइम से कहा, आप क्या कहते हैं? उसने कहा, यह जो कुछ कह रही है, आप उसे सुन ही रहे हैं, (यानी मेरी बात भी यही है, गोया दोनों ने इंकार कर दिया) इस तरह दोनों के इंकार से वह वायदा ख़त्म हो गया जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने मुतइम से कर रखा था।

वहां से वापस आकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हज़रत ख़ौला रज़ि० से कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुला लाओ। चुनांचे वह हुज़ूर सल्ल० को बुला लाईं और हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से हज़रत आइशा रज़ि० की शादी कर दी। उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि० की उम्र छः साल थी।

फिर हज़रत ख़ौला रज़ि० हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहां गईं और उनसे कहा, अल्लाह ने कितनी बड़ी ख़ैर व बरकत तुम्हें देने का इरादा फ़रमा लिया है।

हज़रत सौदा रज़ि० ने कहा, वह कैसे?

हज़रत ख़ौला ने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे शादी का पैग़ाम देकर भेजा है।

हज़रत सौदा ने कहा, मैं तो चाहती हूं, मेरे वालिद (ज़मआ) के पास जाओ और उनसे तज़्किरा करो। वह बहुत बूढ़े, बड़ी उम्र वाले हैं, हज में भी न जा सके थे। हज़रत ख़ौला रज़ि० ने जाकर उनको जाहिलियत के तरीक़े पर सलाम किया। ज़मआ ने पूछा, यह औरत कौन है? हज़रत ख़ौला ने कहा, ख़ौला बिन्त हकीम। ज़मआ ने पूछा, क्या बात है? क्यों आई हो?

हज़रत ख़ौला रज़ि० ने कहा, मुझे हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने भेजा है, वह सौदा से शादी करना चाहते हैं। ज़मआ ने कहा, वह तो बहुत उम्दा और जोड़ के ख़ाविंद हैं, लेकिन तुम्हारी सहेली (यानी सौदा) क्या

कह रही हैं? हज़रत ख़ौला रज़ि० ने कहा, वह भी चाहती हैं। ज़मआ ने कहा, अच्छा, हज़रत मुहम्मद को मेरे पास लाओ।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ज़मआ के पास गए और ज़मआ ने हुज़ूर सल्ल० से हज़रत सौदा रज़ि० की शादी कर दी। हज़रत सौदा रज़ि० के भाई अब्द बिन ज़मआ हज से फ़ारिग़ होकर जब मक्का आए तो वह इस शादी की ख़बर सुनकर अपने सर पर मिट्टी डालने लगे, लेकिन मुसलमान होने के बाद कहा करते थे कि मैं तो बड़ा बेवक़ूफ़ था। मैंने इस वजह से अपने सर पर मिट्टी डाली थी कि हुज़ूर सल्ल० ने (मेरी बहन) सौदा बिन्त ज़मआ रज़ि० से शादी कर ली थी।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, फिर हम लोग मदीना आ गए और सुख़ मुहल्ले में क़बीला बनू हारिस बिन ख़ज़रज में ठहर गए। एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे घर तशरीफ़ लाए। खजूर के दो तनों के दर्मियान एक झूला डाल रखा था। मैं उस पर झूला झूल रही थी। मेरी मां ने मुझे झूले से उतारा। मेरे सर के बाल छोटे थे, उन्हें ठीक किया और पानी से मेरा मुंह धोया, फिर मुझे लेकर चलीं और दरवाज़े पर मुझे खड़ा कर दिया। मेरा सांस चढ़ा हुआ था। मैं वहां खड़ी रही, यहां तक कि मेरा सांस ठीक हो गया, फिर मुझे मेरे कमरे में ले गईं।

मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० हमारे घर में एक तख़्त पर तशरीफ़ रखते हैं और आपके पास अंसार के बहुत से मर्द और औरतें बैठी हुई हैं। मेरी वालिदा ने मुझे उस कमरे में बिठा दिया।

फिर मेरी वालिदा ने कहा, यह आपकी बीवी हैं। अल्लाह आपके लिए इसमें और इसके लिए आप में बरकत नसीब फ़रमाएं।

यह सुनते ही तमाम मर्द और औरतें एकदम खड़े होकर चले गए। यों मेरी रुख़सती हो गई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमारे ही घर में ख़लवत फ़रमाई और मेरी शादी पर न कोई ऊंट ज़िब्ह हुआ, न कोई बकरी। अलबत्ता हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में वह प्याला भेज दिया जो वह हुज़ूर

सल्ल० की ख़िदमत में उस बीवी के घर भेजा करते थे, जिसकी बारी होती थी। उस वक़्त मेरी उम्र सात साल थी (लेकिन सही रिवायत यह है कि उस वक़्त हज़रत आइशा रज़ि० की उम्र नौ साल थी।)[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से निकाह

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शादी पहले हज़रत ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सह्मी रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई थी। वह बद्र की लड़ाई में भी शरीक हुए थे। उनका मदीना में इंतिक़ाल हो गया। इनके इंतिक़ाल के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई तो उनसे हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अगर आप चाहें तो मैं आपसे हज़रत हफ़सा रज़ि० की शादी कर दूं।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मैं ज़रा इस बारे में सोच लूं। कुछ दिनों के बाद हज़रत उस्मान रज़ि० ने कहा, मेरी तो यही राय बनी है कि मैं शादी न करूं।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से कहा, अगर आप चाहें तो मैं आपसे हफ़सा रज़ि० की शादी कर दूं। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ख़ामोश रहे। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि० के इंकार से ज़्यादा ग़ुस्सा मुझे हज़रत अबूबक्र रज़ि० की ख़ामोशी पर आया। फिर कुछ दिनों के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हफ़सा से शादी का पैग़ाम दिया और मैंने हफ़सा रज़ि० की शादी हुज़ूर सल्ल० से कर दी।

फिर हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुझे मिले और उन्होंने कहा, तुमने जिस वक़्त हफ़सा से शादी की बात मुझसे की थी और मैंने तुम्हें इसका कोई जवाब नहीं दिया था, शायद तुम्हें मुझ पर ग़ुस्सा आया होगा। मैंने कहा, हां।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 227

हज़रत अबूबक्र रज़ि०. ने कहा, मैंने तुम्हें सिर्फ़ इस वजह से जवाब नहीं दिया था, क्योंकि मुझे मालूम था कि हुज़ूर सल्ल० ने हफ़सा से शादी का ज़िक्र किया है और मैं हुज़ूर सल्ल० का राज़ खोलना नहीं चाहता था। अगर हुज़ूर सल्ल० उससे शादी न करते, तो मैं कर लेता।[1]

इब्ने हब्बान की रिवायत में इतना यह भी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की (कि मैं उनसे हफ़सा की शादी करना चाहता हूं और वह इंकार कर रहे हैं।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हफ़सा रज़ि० की उस्मान रज़ि० से बेहतर आदमी से शादी हो जाएगी और उस्मान रज़ि० की हफ़सा रज़ि० से बेहतर औरत से शादी हो जाएगी, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उस्मान रज़ि० की शादी अपनी बेटी से कर दी (और हज़रत हफ़सा रज़ि० से ख़ुद शादी कर ली।)[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मेरी इद्दत पूरी हो गई, तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे शादी का पैग़ाम भेजा। मैंने उन्हें इंकार कर दिया। फिर हुज़ूर सल्ल० ने शादी का पैग़ाम देकर एक आदमी भेजा, मैंने उससे कहा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बता दो कि मुझमें ग़ैरत का मज़्मून बहुत ज़्यादा है और मेरे बच्चे भी हैं और मेरा कोई सरपरस्त यहां मौजूद नहीं है। (उस आदमी ने जाकर ये बातें हुज़ूर सल्ल० को बताईं।)

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जाकर उम्मे सलमा रज़ि० से कह दो कि तुमने जो कुछ कहा है कि मुझमें ग़ैरत का मज़्मून बहुत ज़्यादा है, तो मैं

1. जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 214,
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 5, पृ० 120,

अल्लाह से दुआ करूंगा, यह ग़ैरत (की ज़्यादती) जाती रहेगी और तुमने जो कहा है कि मेरे बच्चे भी हैं, तो तुम्हारे बच्चों का भी इन्तिज़ाम हो जाएगा और तुमने जो कहा है कि मेरा कोई सरपरस्त यहां नहीं है, तो तुम्हारा कोई मौजूद या ग़ैर-हाज़िर सरपरस्त (मुझसे शादी करने पर) नाराज़ नहीं होगा। (उस आदमी ने जाकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० को ये तमाम बातें बताईं)

इस पर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने अपने बेटे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, उठो और मेरी शादी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कर दो। चुनांचे उसने मेरी हुज़ूर सल्ल० से शादी कर दी।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब मैं मदीना आई, तो मैंने मदीना वालों को बताया कि मैं अबू उमैया बिन मुग़ीरह की बेटी हूं, लेकिन इन लोगों ने मेरी इस बात को न माना, फिर इनमें से कुछ लोग हज को जाने लगे, तो उन्होंने कहा, क्या तुम अपने ख़ानदान वालों को कुछ लिखोगी। चुनांचे मैंने उन्हें ख़त लिखकर दिया। जब वे लोग हज करके मदीना वापस आए, तो उन्होंने बताया कि यह ठीक कह रही हैं। इससे मदीना वालों की निगाह में मेरी इज़्ज़त और बढ़ गई।

जब मेरी बेटी ज़ैनब पैदा हुई (और मेरी इद्दत पूरी हो गई) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझे शादी का पैग़ाम दिया, तो मैंने कहा, मुझ जैसी औरत का भी निकाह हो सकता है। मेरी उम्र इतनी ज़्यादा हो गई है कि अब मेरा कोई बच्चा पैदा नहीं होगा और मुझमें ग़ैरत बहुत है और मेरे बच्चे भी हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं उम्र में तुमसे बड़ा हूं और तुम्हारी ग़ैरत को अल्लाह दूर कर देगा और तुम्हारे बच्चे अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के हवाले। फिर (मैं राज़ी हो गई और) हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे शादी कर ली।

फिर हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाते और मुहब्बत से फ़रमाते कि

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 459, जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 214,

ज़नाब कहां है? (ज़ैनब को लाड-प्यार की वजह से ज़नाब फ़रमाते) एक दिन हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु आकर ज़ैनब को ज़ोर से ले गए और यों कहा, इसकी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी ज़रूरत पूरी करने में दिक़्क़त पेश आती है। मैं उसे दूध पिलाती थी।

फिर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ज़नाब कहां है? उस वक़्त (मेरी बहन) हज़रत क़रीबा बिन्त अबी उमैया भी वहां थीं। उन्होंने कहा (अम्मार) बिन यासिर रज़ि० उसे ले गए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात मैं तुम्हारे पास आऊंगा, मैंने खाल का एक टुकड़ा निकाला (जिसे चक्की के नीचे रखा जाता था, ताकि आटा उस पर गिरे) और घड़े में से जौ के दाने निकाले और कुछ चर्बी निकाली और फिर चर्बी में मिलाकर हुज़ूर सल्ल० के लिए मलीदा तैयार किया।

चुनांचे वह रात हुज़ूर सल्ल० ने मेरे यहां गुज़ारी और सुबह को फ़रमाया, तुम अपने ख़ानदान में इज़्ज़त वाली हो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए बारी की सात रातें मुक़र्रर कर दूं, लेकिन यह ख़्याल रखना कि अगर तुम्हारे लिए सात रातें मुक़र्रर करूंगा, तो बाक़ी बीवियों के लिए भी सात रातें मुक़र्रर करनी होंगी।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा से निकाह

हज़रत इस्माईल बिन अम्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि मैं हब्शा में थी। मुझे पता ही उस वक़्त चला जब (हब्शा के बादशाह) नजाशी रज़ियल्लाहु अन्हु की अबरहा रज़ियल्लाहु अन्हा नामी बांदी उनकी ओर से क़ासिद बनकर आई और यह बादशाह के कपड़ों और तेल की ख़िदमत पर मुक़र्रर थी। उसने मुझसे इजाज़त मांगी, मैंने उसे इजाज़त दी।

उसने कहा, बादशाह नजाशी यह कह रहे हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. कंज़, भाग 7, पृ० 117, इसाबा, भाग 4, पृ० 459, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 93,

अलैहि व सल्लम ने मुझे लिखा है कि मैं आपकी शादी हुज़ूर सल्ल० से कर दूं। मैंने कहा, अल्लाह तुम्हें भी ख़ैर की ख़ुशख़बरी दे। (यानी मैं राज़ी हूं।)

फिर उसने कहा, बादशाह यह कह रहे हैं कि आप किसी को वकील मुक़र्रर कर दें जो आपकी शादी कर दे। इस पर मैंने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को (जोकि मेरे चचा थे) बुलाकर अपना वकील बना दिया और मैंने हज़रत अबरहा (रज़ि०) को चांदी के दो कंगन और चांदी के दो पाज़ेब, जो कि मैंने पहने हुए थे और चांदी की वे सारी अंगूठियां, जो मेरे पांव की हर उंगली में थीं, सब उतार कर इस ख़ुशख़बरी में दे दी।

शाम को हज़रत नजाशी रज़ि० ने हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु और जितने मुसलमान वहां थे, उन सबको बुलाया और यह ख़ुत्बा पढ़ा कि तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो बादशाह है, सब ऐबों से पाक है, अम्न देने वाला है, ज़बरदस्त है, ख़राबी दुरुस्त करने वाला है और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं और यह वही रसूल हैं, जिसकी ख़बर हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहि० ने दी थी। अम्माबाद,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह हुक्म फ़रमाया है कि मैं उनका निकाह हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० बिन्त अबू सुफ़ियान से कर दूं। चुनांचे मैं हुज़ूर सल्ल० के हुक्म की तामील कर रहा हूं और हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से इनको चार सौ दीनार मह्र में दे रहा हूं। यह कहकर हज़रत नजाशी रफ़्जि० ने चार सौ दीनार इन लोगों के सामने रख दिए।

इसके बाद हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि० ने बात शुरू की और फ़रमाया, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, मैं उसी की तारीफ़ करता हूं और उसी से मग़्फ़िरत चाहता हूं और इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और रसूल हैं। अल्लाह ने इनको हिदायत और दीन हक़ देकर भेजा, ताकि इस दीन हक़ को तमाम दीनों पर

ग़ालिब करे, अगरचे मुश्रिकों को यह बात नागवार गुज़रे, अम्माबाद,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो हुक्म फ़रमाया है, मैं उसे क़ुबूल करता हूं और मैंने हुज़ूर सल्ल० से उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफ़ियान की शादी कर दी। अल्लाह अपने रसूल को (इस शादी में) बरकत नसीब फ़रमाए।

फिर हज़रत नजाशी रज़ि० ने वे दीनार हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि० को दिए जो हज़रत ख़ालिद रज़ि० ने ले लिए। फिर मुसलमान वहां से उठने लगे, तो हज़रत नजाशी रज़ि० ने कहा, आप लोग बैठे रहें, क्योंकि नबियों की सुन्नत यह है कि जब वह शादी करते हैं, तो उनकी शादी पर खाना खाया जाता है। फिर हज़रत नजाशी ने खाना मंगवाया और उन सबने खाया और फिर सब चले गए।[1]

हज़रत इस्माईल बिन अम्र बिन आस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने (हब्शा में) सपना देखा कि मेरे ख़ाविंद उबैदुल्लाह बिन जहश की शक्ल व सूरत बहुत बिगड़ी हुई है। मैं घबरा गई, मैंने कहा उसकी हालत बदल गई है, चुनांचे वह सुबह को कहने लगा, ऐ उम्मे हबीबा! मैंने दीन के बारे में बहुत सोचा है, मुझे तो कोई दीन ईसाइयत से बेहतर नज़र नहीं आ रहा है। मैं तो पहले ईसाई था, फिर मैं मुहम्मद सल्ल० के दीन में दाख़िल हुआ था, अब मैं फिर ईसाई धर्म में वापस आ गया हूं।

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम्हारे लिए इस तरह करने में बिल्कुल ख़ैर नहीं है और जो सपना मैंने देखा था, वह मैंने उसे बताया, लेकिन इसने उसकी कोई परवाह नहीं की। आख़िर में वह शराब पीने में ऐसा लगा कि उसी में मर गया।

फिर मैंने सपना देखा कि किसी आने वाले ने मुझसे कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन!

यह सुनकर मैं घबरा गई और मैंने इसका फल यह निकाला कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझसे शादी करेंगे। अभी मेरी इद्दत ख़त्म

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 143,

हुई ही थी कि हज़रत नजाशी रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ासिद मेरे पास आया, फिर आगे पिछले हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया। इसके बाद यह मज़्मून है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि० ने फ़रमाया कि जब वह माल (यानी चार सौ दीनार) मेरे पास आया, तो मैंने हज़रत अबरहा रज़ि० को, जिन्होंने मुझे ख़ुशख़बरी दी थी, पैग़ाम देकर बुलाया और मैंने उससे कहा, उस दिन मैंने तुम्हें जो कुछ दिया था, वह तो थोड़ा था, इसलिए कि मेरे पास माल नहीं था, अब मेरे पास माल आ गया है। यह पचास मिस्क़ाल (पौने उन्नीस तोले) सोना ले लो और इसे अपने काम में ले आओ।

उसने एक डिब्बा निकाला जिसमें मेरी दी हुई तमाम चीज़ें थीं और उसने वह मुझे वापस करते हुए कहा कि बादशाह ने मुझे क़सम देकर कहा है कि आपसे कुछ न लूं और मैं ही बादशाह के कपड़ों और ख़ुश्बू को संभालती हूं और मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन को अख़्तियार कर लिया है और मुसलमान हो गई हूं और बादशाह ने अपनी तमाम बीवियों को हुक्म दिया है कि इनके पास जितना इत्र है, वह सारा आपके पास भेज दें।

चुनांचे अगले दिन ऊद, वर्स, अंबर और ज़बाद, बहुत सारी ख़ुश्बुएं लेकर मेरे पास आई और ये तमाम ख़ुश्बुएं लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आई और आप देखते कि ये ख़ुश्बुएं मेरे पास हैं और मैंने लगा रखी हैं, लेकिन आपने कभी इन्कार नहीं फ़रमाया।

फिर हज़रत अबरहा ने कहा, मुझे आपसे एक काम है कि आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मेरा सलाम अर्ज़ कर दें और उन्हें बता दें कि मैंने उनका दीन अपना लिया है। इसके बाद हज़रत अबरहा मुझ पर और ज़्यादा मेहरबान हो गई और उसी ने मेरा सामान तैयार कराया था। वह जब भी मेरे पास आती तो यह कहती, जो काम मैंने आपको बताया है उसे न भूल जाना।

जब हम लोग हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आए, तो मैंने हुज़ूर सल्ल० को सारी बात बताई कि कैसे शादी, मंगनी वग़ैरह हुई और हज़रत अबरहा रज़ि० ने मेरे साथ कैसा अच्छा सुलूक किया। हुज़ूर सल्ल० सुनकर मुस्कराए। फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० को हज़रत अबरहा का

सलाम पहुंचाया। हुज़ूर सल्ल० ने जवाब में फ़रमाया, व अलैहस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू०[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की इद्दत पूरी हो गई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया—जाओ और ज़ैनब रज़ि० से मेरे निकाह का ज़िक्र करो। हज़रत ज़ैद रज़ि० गए। जब वह इनके पास पहुंचे तो वह आटे में ख़मीर डाल रही थीं।

हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि जब मैंने उनको देखा, तो मुझे अपने दिल में उनका एक बड़कपन महसूस हुआ कि हुज़ूर सल्ल० इनसे शादी करना चाहते हैं, (इसलिए यह बहुत बड़े रुत्बे वाली औरत है) और इस बड़कपन की वजह से मैं उन्हें देखने की हिम्मत नहीं कर सका, इसलिए मैं एड़ियों के बल मुड़ा और उनकी ओर पीठ करके कहा कि ऐ ज़ैनब! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भेजा है। वह तुमसे शादी करना चाहते हैं।

हज़रत ज़ैनब रज़ि० ने कहा, मैं जब तक अपने रब से मश्विरा न कर लूं, उस वक़्त तक मैं कोई काम नहीं किया करती। यह कहकर, वह खड़ी होकर अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह पर चली गईं और उधर हुज़ूर सल्ल० पर क़ुरआन नाज़िल हुआ (जिसमें अल्लाह ने फ़रमाया, हमने तुम्हारी शादी ज़ैनब से कर दी। चूंकि अल्लाह के शादी करने से हज़रत ज़ैनब रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की बीवी बन गई थीं, इस वजह से) हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले गए और हज़रत ज़ैनब रज़ि० के पास इजाज़त लिए बिना अन्दर चले गए।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि जब हुज़ूर सल्ल० ने उनसे ख़लवत फ़रमाई, तो हुज़ूर सल्ल० ने हमें वलीमा में गोश्त और

---

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 20, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 97

रोटी खिलाई। अक्सर लोग खाना खाकर बाहर चले गए, लेकिन कुछ लोग खाने के बाद वहीं घर में बैठकर बातें करते रहे। आप घर से बाहर तशरीफ़ लाए। मैं भी आपके पीछे-पीछे चल पड़ा।

आप अपनी बीवियों के मकानों में तशरीफ़ ले गए और अन्दर जाकर हर एक को सलाम करते, वह पूछतीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने अपने घरवालों को कैसा पाया?

अब मुझे याद नहीं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को बताया या किसी और ने बताया कि लोग चले गए हैं, तो आप चले और (हज़रत ज़ैनब रज़ि० वाले) घर में दाख़िल होने लगे। मैं भी आपके साथ दाख़िल होने लगा, तो हुज़ूर सल्ल० ने मेरे और अपने दर्मियान परदा डाल दिया और परदे का हुक्म नाज़िल हुआ।

इस मौक़े पर अल्लाह ने जो अदब मुसलमानों को सिखाया, वह हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा को बता दिया—

لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّا اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ (سورت احزاب آيت ۵۳)

'ऐ ईमान वालो ! नबी के घरों में (बे-बुलाए) मत जाया करो, मगर जिस वक़्त तुमको खाने की इजाज़त दी जाए।' (सूरः अहज़ाब, आयत 53) ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी का इंतिज़ार न करो, लेकिन जब तुमको बुलाया जाए (कि खाना तैयार है) तब जाया करो, फिर जब खाना खा चुको तो उठकर चले जाया करो और बातों में जी लगाकर मत बैठे रहा करो, इस बात से नबी को नागवारी होती है। वह तुम्हारा लिहाज़ करते हैं और अल्लाह साफ़-साफ़ बात कहने से (किसी का) ख़्याल नहीं करता। जब तुम इनसे कोई चीज़ मांगो तो परदे के बाहर से मांगा करो। यह बात (हमेशा के लिए) तुम्हारे दिलों और इनके दिलों के पाक रहने का अच्छा ज़रिया है और तुमको जायज़ नहीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० को तक्लीफ़ पहुंचाओ और न यह जायज़ है कि तुम आपके बाद आपकी बीवियों से कभी भी निकाह करो। यह ख़ुदा के नज़दीक बड़ी भारी (गुनाह की) बात है।[1]

---

1. अहमद, नसई, मुस्लिम,

बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश से ख़लवत फ़रमाई और वलीमा में रोटी और गोश्त खिलाया। हुज़ूर सल्ल० ने खाने पर बुलाने के लिए मुझे भेजा। लोग आते और खाना खाते और बाहर चले जाते, फिर दूसरे लोग आते, खाकर बाहर चले जाते। मैं लोगों को बुला-बुलाकर भेजता रहा, यहां तक कि जब मुझे बुलाने के लिए कोई न मिला, तो मैंने अर्ज़ किया,

'ऐ अल्लाह के नबी सल्ल० ! मुझे कोई ऐसा नहीं मिल रहा है जिसे मैं खाने पर बुलाऊं?' हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, खाना उठा लो और लोग तो चले गए, लेकिन तीन आदमी ऐसे रह गए जो घर में बैठकर बातें करते रहे। हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले गए और हज़रत आइशा रज़ि० के मकान में तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, ऐ घरवालो ! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, व अलैकुम अस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अल्लाह आपको इस शादी में बरकत नसीब फ़रमाए। आपने अपने घरवालों को कैसा पाया?

हुज़ूर सल्ल० अपनी तमाम बीवियों के घरों में तशरीफ़ ले गए और उन सबसे यही फ़रमाते जो हज़रत आइशा रज़ि० को फ़रमाया था और वे सब जवाब में हुज़ूर सल्ल० को यही कहतीं जो हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा था। फिर हुज़ूर सल्ल० वापस तशरीफ़ लाए तो देखा कि वे तीनों आदमी बैठे बातें कर रहे हैं। आप बहुत शर्म व हया वाले थे, (इसलिए इन तीनों से कुछ न फ़रमाया) और आप फिर हज़रत आइशा रज़ि० के घर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए।

अब मुझे याद नहीं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० को बताया या किसी और ने बताया कि वे लोग चले गए हैं, तो आप वापस तशरीफ़ लाए और जब आपने एक क़दम चौखट के अन्दर रख लिया और एक अभी बाहर ही था तो आपने मेरे और अपने दर्मियान परदा डाल लिया और परदे की आयत उतरी।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने एक मोहतरम बीवी के साथ पहली रात गुज़ारी, तो (मेरी मां) हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने खजूर, घी और आटे को मिलाकर हलवा तैयार किया और एक बरतन में डालकर मुझसे कहा कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ले जाओ और अर्ज़ करो कि यह थोड़ा सा खाना हमारी तरफ़ से ख़िदमत में पेश है।

उस ज़माने में लोग बड़ी मशक़्क़त और तंगी में थे। चुनांचे वह लेकर मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० ने आपकी ख़िदमत में यह खाना भेजा है। वह आपको सलाम कह रही हैं और अर्ज़ किया है कि यह हमारी ओर से थोड़ा-सा खाना ख़िदमत में पेश है।

हुज़ूर सल्ल० के खाने को देखकर फ़रमाया, इसे घर के कोने में रख दो, फिर फ़रमाया, जाओ और फ़्लां-फ़्लां को बुला लाओ और बहुत-से मुसलमानों के नाम हुज़ूर सल्ल० ने लिए और यह भी फ़रमाया और जो भी मुसलमान मिले उसे भी बुला लाओ। हुज़ूर सल्ल० ने जिनके नाम लिए, मैंने उनको भी बुलाया और जो मुसलमान मिला, उसे भी बुलाया। मैं वापस आया, तो घर, चबूतरा और आंगन लोगों से भरा हुआ था।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने पूछा, ऐ अबू उस्मान ! (यह हज़रत अनस रज़ि० का उपनाम है) लोग कितने थे ?

हज़रत अनस रज़ि० ने कहा, लगभग तीन सौ।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह खाना ले आओ। चुनांचे मैं वह ले आया और हुज़ूर सल्ल० ने उस पर हाथ रखकर दुआ मांगी और कुछ पढ़ा, फिर फ़रमाया, दस-दस का हलक़ा बना लो और बिस्मिल्लाह पढ़कर हर इंसान अपने सामने से खाए। चुनांचे सहाबा रज़ि० ने बिस्मिल्लाह पढ़कर खाना शुरू किया, यहां तक कि सबने खाना खा लिया।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, इस खाने को उठा लो। मैंने आकर उठाया तो मुझे पता नहीं लग रहा था कि जब मैंने रखा था, उस वक़्त खाना ज़्यादा था या अब उठाते वक़्त ज़्यादा है।

और लोग तो चले गए, लेकिन कुछ लोग हुज़ूर सल्ल० के घर में बैठे

बातें करते रहे और हुज़ूर सल्ल० की मोहतरम बीवी, जिनसे अभी शादी हुई थी, वह दीवार की तरफ़ मुंह करके बैठी हुई थीं। ये लोग बहुत देर तक बातें करते रहे, जिससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत तक्लीफ़ हुई, लेकिन हुज़ूर सल्ल० सबसे ज़्यादा शर्म व हया वाले थे। इन बैठने वालों को अगर इसका अन्दाज़ा हो जाता, तो यह बैठना उन पर भी बोझ होता। (लेकिन उन्हें इसका अन्दाज़ा नहीं हो सका)

हुज़ूर सल्ल० वहां से उठकर गए और अपनी तमाम बीवियों को सलाम किया। जब इन बैठने वालों ने देखा कि हुज़ूर सल्ल० वापस आ गए हैं तो उस वक़्त उन्हें अन्दाज़ा हुआ कि इनकी बातों से हुज़ूर सल्ल० को तक्लीफ़ हुई है तो इस पर वे तेज़ी से दरवाज़े की तरफ़ झपटे और चले गए। फिर हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और परदा डाल दिया। आप अन्दर घर में तशरीफ़ ले गए और मैं आंगन में रह गया।

आपको घर में थोड़ी देर ही गुज़री थी कि अल्लाह ने आप पर क़ुरआन उतारा। आप ये आयतें पढ़ते हुए बाहर तशरीफ़ लाए—

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

हुज़ूर सल्ल० ने तमाम लोगों से पहले ये आयतें पढ़कर मुझे सुनाईं और मुझे सबसे पहले इन आयतों के सुनने की सआदत नसीब हुई।[1]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत सफ़िया बिन्त हुई बिन अख़्तब रज़ियल्लाहु अन्हा से ख़िताब

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब ख़ैबर में क़ैदी जमा किए गए तो हज़रत दिह्या रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन क़ैदियों में से एक बांदी मुझे दे दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जाकर ले लो। चुनांचे उन्होंने हज़रत सफ़िया बिन्त हुई रज़ियल्लाहु अन्हा को ले लिया, तो एक

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 146, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 104,

आदमी ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी ! आपने क़ुरैज़ा और नज़ीर की सरदार सफ़िया बिन्त हुई रज़ि०, हज़रत दिह्या को दे दी, वह तो आप ही के लिए मुनासिब है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस (सफ़िया) को यहां लाओ। जब हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें देखा तो फ़रमाया (ऐ दिह्या !) तुम इसकी जगह क़ैदियों में से कोई और लौंडी ले लो। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें आज़ाद किया और उनसे शादी कर ली।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग ख़ैबर गए। जब ख़ैबर का क़िला अल्लाह ने फ़त्ह करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दे दिया तो आपके सामने किसी ने हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ बिन अख़तब रज़ियल्लाहु अन्हा के हुस्न व जमाल का ज़िक्र किया। इनका शौहर क़त्ल हो चुका था और इनकी नई शादी हुई थी और वह अभी दुल्हन ही थीं, तो हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें अपने लिए ख़ास कर लिया।

हुज़ूर सल्ल० उन्हें वहां से लेकर चले। जब आप सहबा नामी जगह के सद नामी पहाड़ के क़रीब पहुंचे तो हज़रत सफ़िया रज़ि० हैज़ से पाक हो गईं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे ख़लवत फ़रमाई। फिर हुज़ूर सल्ल० ने चमड़े के छोटे दस्तरख़्वान पर खजूर, घी और आटे का हलवा तैयार किया। फिर मुझसे फ़रमाया, अपने आस-पास के लोगों को ख़बर कर दो (कि वलीमा तैयार है।)

हज़रत सफ़िया रज़ि० की रुख़्सती पर हुज़ूर सल्ल० की ओर से यही वलीमा था, फिर हम वहां से मदीना चले, तो मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० ऊंट की कोहान पर चादर से हज़रत सफ़िया रज़ि० के लिए परदे का इन्तिज़ाम फ़रमाते, फिर ऊंट के पास बैठकर अपना घुटना खड़ा कर देते जिस पर अपना पांव रखकर हज़रत सफ़िया रज़ि० ऊंट पर सवार होतीं।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. अबू दाऊद, बुख़ारी, मुस्लिम
2. बुख़ारी,

अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर और मदीना के दर्मियान हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ तीन रातें गुज़ारीं और मैंने आपके वलीमा के लिए लोगों को बुलाया, इस वलीमे में न रोटी थी और न गोश्त, बल्कि आपका वलीमा यों हुआ कि हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने चमड़े के दस्तरख़्वान बिछाए और उन पर खजूर, पनीर और घी रख दिया, लोग एक दूसरे से पूछने लगे कि हज़रत सफ़िया रज़ि० उम्मुल मोमिनीन हैं या बांदी ?

तो लोगों ने कहा, अगर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें परदा कराया, फिर तो यह उम्मुल मोमिनीन हैं और अगर परदा न कराया, तो फिर यह हुज़ूर सल्ल० की बांदी हैं। जब आप वहां से चलने लगे तो आपने हज़रत सफ़िया के लिए अपने पीछे कुछ बिछाकर नर्म जगह बनाई और परदा लटकाया।[1]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ बिन अख़्तब रज़ियल्लाहु अन्हुमा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ेमे में दाख़िल हुईं, तो लोग वहां जमा हो गए और मैं भी वहां पहुंच गया, ताकि मुझे भी वलीमा में से कुछ मिल जाए। हुज़ूर सल्ल० ने बाहर आकर फ़रमाया, तुम अपनी मां के पास से उठकर चले जाओ, (यानी मैंने हज़त सफ़िया रज़ि० से शादी की है, इसलिए वह अब तुम्हारी मां बन गई हैं)

जब इशा का वक़्त हुआ तो हम दोबारा हाज़िर हुए। फिर हुज़ूर सल्ल० हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए। आपकी चादर के एक कोने में डेढ़ मुद्द उम्दा खजूरें थीं और फ़रमाया, अपनी मां का वलीमा खा लो।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा की आंखों में नीला निशान था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि यह तुम्हारी आंखों में नीला निशान कैसा है ?

---

1. बिदाया, भाग 4, पृ० 196,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 251, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 124,

हज़रत सफ़िया रज़ि० ने कहा, मैंने अपने ख़ाविंद से कहा, मैंने सपने में देखा कि चांद मेरी गोद में आ गया है, तो उसने मुझे थप्पड़ मारा और कहा, क्या तुम यसरिब (मदीना) के बादशाह को चाहती हो ?

हज़रत सफ़िया रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा मुझे किसी से बुग़्ज़ नहीं था, क्योंकि आपने मेरे बाप और शौहर को क़त्ल किया था। (शादी के बाद) हुज़ूर सल्ल० मेरे बाप और शौहर के क़त्ल करने की वज्हें बयान फ़रमाते रहे और यह भी फ़रमाया, ऐ सफ़िया! तुम्हारे बाप ने मेरे ख़िलाफ़ अरब के लोगों को जमा किया और यह किया और यह किया। ग़रज़ यह कि हुज़ूर सल्ल० ने वज्हें इतनी बयान कीं कि आख़िर मेरे दिल में से हुज़ूर सल्ल० का बुग़्ज़ बिल्कुल निकल गया।[1]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत सफ़िया रज़ि० के पास (ख़ेमे में) अन्दर तशरीफ़ ले गए, तो हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े पर सारी रात गुज़ारी। जब सुबह को उन्होंने हुज़ूर सल्ल० को देखा तो अल्लाहु अकबर कहा। उस वक़्त हज़रत अय्यूब रज़ि० के पास तलवार भी थी। उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! इस लड़की की नई-नई शादी हुई थी और आपने उसके बाप-भाई और ख़ाविंद को क़त्ल किया है। मुझे उसकी ओर से आप पर इत्मीनान नहीं था (इस वजह से मैंने रात यहां गुज़ारी है।)

हुज़ूर सल्ल० मुस्कराए और हज़रत अबू अय्यूब के बारे में भली बातें कहीं।[2]

एक रिवायत में यह है कि हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने अर्ज़ किया कि मैंने यह सोचा कि अगर रात को किसी वक़्त हज़रत सफ़िया रज़ि० (आपको) तक्लीफ़ पहुंचाने के लिए कोई हरकत करें, तो मैं आपके क़रीब ही रहूं।

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 251,
2. हाकिम, भाग 4, पृ० 28, कंज़, भाग 7, पृ० 119, इब्ने साद, भाग 2, पृ० 116.

हज़रत अता बिन यसार रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ैबर से मदीना आईं तो इनको हज़रत हारिसा बिन नोमान रज़ियल्लाहु अन्हु के एक घर में ठहराया गया। अंसार की औरतें सुनकर हज़रत सफ़िया रज़ि० के हुस्न व जमाल को देखने आने लगीं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा भी नक़ाब डाले हुए आईं। जब हज़रत आइशा रज़ि० वहां से बाहर निकलीं, तो हुज़ूर सल्ल० भी उनके पीछे-पीछे बाहर निकल आए और पूछा, ऐ आइशा रज़ि० ! तुमने क्या देखा?

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, मैंने एक यहूदी औरत देखी।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐसे न कहो, क्योंकि यह तो मुसलमान हो गई है और बहुत अच्छी तरह मुसलमान हुई है।[1]

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि से सही सनद से रिवायत है कि जब हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हु आईं तो इनके कान में सोने का बना हुआ खजूर का एक पत्ता था, तो इन्होंने इसमें से कुछ हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को और इनके साथ आने वाली औरतों को हदिया किया।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस ख़ुज़ाईया रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीला बनी मुस्तलिक़ की क़ैदी औरतों को बांटा तो हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ियल्लाहु अन्हु के या इनके चचेरे भाई के हिस्से में आईं। उन्होंने अपने से किताबत की, यानी यह कहा कि मैं इतनी रक़म दे दूंगी, तुम मुझे आज़ाद कर देना और यह बहुत मीठी और ख़ूबसूरत थीं, जो भी इनको देखता, यह उसके दिल को खींच

1. इब्ने साद
2. इसाबा, भाग 4, पृ० 347,

लेतीं। यह अपने इन पैसों की अदायगी में मदद लेने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आईं। अल्लाह की क़सम! ज्यों ही मैंने इनको अपने हुजरे के दरवाज़े पर देखा तो मुझे अच्छा न लगा और समझ गई कि मैंने इनकी जो ख़ूबसूरती देखी है, हुज़ूर सल्ल० को भी नज़र आएगी।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं हारिस बिन ज़िरार की बेटी जुवैरिया हूं जो कि अपनी क़ौम के सरदार थे और अब जो मुझ पर मुसीबत आई है, वह आपसे छिपी नहीं है (कि अब लौंडी बन गई हूं।) मैं हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शम्मास या इनके चचेरे भाई के हिस्से में आई हूं और मैंने पैसों की एक तैशुदा मिक़्दार देने पर उनसे आज़ाद करने का एक वायदा ले लिया है और अब मैं इन पैसों के बारे में आपसे मदद लेने आई हूं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम इससे बेहतर चीज़ के लिए तैयार हो?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! वह क्या है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैं तुम्हारी तरफ़ से सारे पैसे अदा कर देता हूं और तुमसे शादी कर लेता हूं।

उन्होंने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं बिल्कुल तैयार हूं।

फिर लोगों में यह ख़बर मशहूर हो गई कि हुज़ूर सल्ल० ने जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ि० से शादी कर ली है। लोग कहने लगे कि (हुज़ूर सल्ल० के शादी करने के बाद, तो यह हज़रत जुवैरिया रज़ि० के क़बीले वाले) हुज़ूर सल्ल० के ससुराल वाले बन गए, इसलिए इस क़बीले के जितने आदमी मुसलमानों के यहां क़ैद थे। मुसलमानों ने इन सबको छोड़ दिया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० की इस शादी की वजह से क़बीला बनू मुस्तलिक़ के सौ घराने आज़ाद हुए।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मेरे इल्म में ऐसी कोई औरत नहीं है जो हज़रत जुवैरिया से ज़्यादा अपनी क़ौम के लिए बरकती

साबित हुई हो।[1]

वाक़िदी की एक रिवायत में यह है कि इनके ख़ाविंद का नाम सफ़वान बिन मालिक था।

हज़रत उर्वः रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रत जुवैरिया बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के (हमारे इलाक़े में) तशरीफ़ लाने से तीन रात पहले सपना देखा कि गोया चांद यसरिब से चलकर मेरी गोद में आ गया है। किसी को भी यह सपना बताना मुझे अच्छा न लगा, यहां तक कि हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ ले आए। जब हम क़ैद हो गईं, तो मुझे अपने सपने के पूरा होने की उम्मीद हो गई।

हुज़ूर सल्ल० ने मुझे आज़ाद करके मुझसे शादी कर ली। अल्लाह की क़सम ! मैंने हुज़ूर सल्ल० से अपनी क़ौम के बारे में कोई बात न की, बल्कि (जब मुसलमानों को पता चला कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे शादी कर ली है और मेरी क़ौम हुज़ूर सल्ल० के ससुराल वाले बन गए हैं, तो (इस रिश्ते के एहतराम में) मुसलमानों ने ख़ुद ही (मेरी क़ौम के) तमाम क़ैदियों को आज़ाद कर दिया और इसका पता मुझे उस वक़्त चला, जब मेरी एक चचेरी बहन ने आकर बताया (कि वह आज़ाद हो गई है) इस पर मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया।[2]

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत मैमूना बिन्त हारिस हिलालिया रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह

हज़रत इब्ने शिहाब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया समझौते के अगले साल ज़ीक़ादा सन् 07 हि० में उमरे के लिए तशरीफ़ ले चले। ज़ीक़ादा वही महीना है जिसमें एक साल पहले मुश्रिकों ने मस्जिदे हराम में जाने से रोका था। जब आप याजिज नामी जगह पर पहुंचे तो हज़रत जाफ़र बिन

1. बिदाया, भाग 5, पृ० 195, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 161, हाकिम, भाग 4, पृ० 26,
2. बिदाया, भाग 4, पृ० 159, हाकिम, भाग 4, पृ० 27

अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु को आगे हज़रत मैमूना बिन्त हारिस बिन हज़्न आमरिया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास भेजा।

हज़रत जाफ़र रज़ि० ने हज़रत मैमूना रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० की ओर से शादी का पैग़ाम दिया, तो हज़रत मैमूना रज़ि० ने अपना मामला हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुर्द कर दिया। हज़रत मैमूना रज़ि० की बहन हज़रत उम्मे फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अब्बास रज़ि० की बीवी थीं। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत मैमूना रज़ि० की शादी हुज़ूर सल्ल० से कर दी।

इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सरफ़ नामी जगह पर आकर ठहर गए और मक्का मुकर्रमा से हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा वहां आ गईं और वहां उनकी रुख़्सती हुई। वहां ही बाद में इनका इंतिक़ाल हुआ।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से शादी की और मक्का में तीन दिन क़ियाम फ़रमाया। तीसरे दिन हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा क़ुरैश की एक जमाअत के साथ आपके पास आया और इन लोगों ने हुज़ूर सल्ल० से कहा, आपके ठहरने का वक़्त पूरा हो चुका है, इसलिए आप यहां हमारे पास से चले जाएं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसमें तुम लोगों का क्या हरज है कि तुम मुझे यहां रहने दो। मैं रुख़्सती कर लूं, फिर मैं वलीमे का खाना तैयार करूं जिसमें तुम भी शरीक हो जाओ।

उन लोगों ने कहा, हमें आपके खाने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप तो बस यहां से चले जाएं। आख़िर हुज़ूर सल्ल० हज़रत मैमूना बिन्त हारिस रज़ि० को वहां से लेकर चले और सरफ़ नामी जगह पर उनसे रुख़्सती फ़रमाई।[2]

---

1. हाकिम, भाग 4, पृ० 30
2. हाकिम, भाग 4, पृ० 31

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी करना

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी का पैग़ाम आया तो मेरी एक बांदी ने मुझसे कहा, क्या तुम्हें मालूम है कि हुज़ूर सल्ल० के पास हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की शादी का पैग़ाम आया है।

मैंने कहा, नहीं।

उसने कहा, शादी का पैग़ाम आ चुका है। आप हुज़ूर सल्ल० के पास क्यों नहीं चले जाते, ताकि हुज़ूर सल्ल० तुमसे शादी कर दें?

मैंने कहा कि क्या मेरे पास ऐसी कोई चीज़ है जिसके ज़रिए मैं शादी कर सकूं?

उस बांदी ने कहा, अगर आप हुज़ूर सल्ल० के पास जाएंगे तो हुज़ूर सल्ल० आपसे ज़रूर शादी कर देंगे, अल्लाह की क़सम! वह मुझे उम्मीद दिलाती रही, यहां तक कि मैं हुज़ूर सल्ल० के पास चला गया।

जब मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने बैठा, तो मुझसे बोला न गया और हुज़ूर सल्ल० के रौब और दबदबे की वजह से मैं बात न कर सका। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम क्यों आए हो? क्या तुम्हें कोई ज़रूरत है?

मैं ख़ामोश रहा, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, शायद तुम फ़ातिमा से शादी का पैग़ाम देने आए हो।

मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मह्र में देने केलिए तुम्हारे पास कुछ है?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! कुछ नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने तुमको जो ज़िरह हथियार के तौर पर दी थी, उसका क्या हुआ? वह ज़िरह क़बीला हुतमा बिन मुहारिब की बनाई हुई थी और उस ज़ातकी क़सम, जिसके क़ब्ज़े में अली की जान है,

उसकी क़ीमत चार दिरहम न थी (बल्कि चार सौ अस्सी दिरहम थी, जैसा कि आगे इब्ने असाकिर की रिवायत में आ रहा है।) मैंने कहा, वह मेरे पास है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मैंने फ़ातिमा से तुम्हारी शादी कर दी है, तुम वह ज़िरह फ़ातिमा को भेज दो और उसी को फ़ातिमा की मह्र समझो। बस यह था अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी हज़रत फ़ातिमा का मह्र।[1]

हज़रत बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अंसार के कुछ लोगों ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, तुम हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी का पैग़ाम दो। चुनांचे हज़रत अली रज़ि० हुज़ूर सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अबू तालिब के बेटे (अली रज़ि०) को क्या काम है?

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी फ़ातिमा रज़ि० से शादी का पैग़ाम देना चाहता हूं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, मरहबा व अह्ला। इसके आगे और कुछ न फ़रमाया। हज़रत अली रज़ि० बाहर आए तो अंसार के वही लोग हज़रत अली रज़ि० का इन्तिज़ार कर रहे थे। इन लोगों ने पूछा, क्या हुआ?

हज़रत अली रज़ि०ने कहा, और तो मैं कुछ नहीं जानता, आपने बस इतना फ़रमाया, मरहबा व अह्ला। इन लोगों ने कहा, हुज़ूर सल्ल० ने (यह जुम्ला फ़रमा कर) तुम्हें अह्ल (घरवाली) भी दिया और मरहबा भी यानी फैली जगह भी। हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से इन दोनों में से एक चीज़ ही काफ़ी थी।

जब हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० की शादी कर दी तो उनसे फ़रमाया, ऐ अली! दुल्हन (के घर) आने पर वलीमा का होना ज़रूरी है। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मेरे पास एक मेंढ़ा है। (मैं वह दिए देता हूं) और अंसार ने हज़रत अली रज़ि० के लिए कुछ साअ मकई जमा की। जब रुख़सती की रात आई, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया,

1. बिदाया, भाग 3, पृ० 346, कंज़ुल उम्माल, भाग 7, पृ० 113,

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने पानी मंगाकर उससे वुज़ू किया और वह पानी हज़रत अली रज़ि० पर डाल दिया और यह दुआ दी, ऐ अल्लाह ! इन दोनों में बरकत नसीब फ़रमा और इन दोनों के लिए इस रुख़्सती में बरकत नसीब फ़रमा ।[1]

तबरानी और बज़्ज़ार की रिवायत में यह है कि अंसार की एक जमाअत ने हज़रत अली रज़ि० से कहा, अगर तुम फ़ातिमा (रज़ि०) से शादी का पैग़ाम दो, तो बहुत अच्छा हो और आख़िर में हुज़ूर सल्ल० की दुआ यह है, ऐ अल्लाह ! इन दोनों में बरकत नसीब फ़रमा और इनके शेर जैसे दो बच्चे में बरकत नसीब फ़रमा । रौयानी और इब्ने असाकिर की रिवायत में यह है, ऐ अल्लाह ! इन दोनों में बरकत नसीब फ़रमा, इन दोनों पर बरकत नसीब फ़रमा, और इन दोनों के लिए इनकी नस्ल में बरकत नसीब फ़रमा और एक रिवायत में है, ऐ अल्लाह ! इन दोनों के इस जमा होने में बरकत नसीब फ़रमा ।

हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि जब हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा रुख़्सत होकर हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के यहां आईं तो हमें उनके घर में यही कुछ चीज़ें मिलीं—एक चटाई बिछी हुई थी, एक तकिया था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी और एक घड़ा और एक मिट्टी का लोटा था ।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को पैग़ाम भेजा कि जब तक मैं न आ जाऊं, उस वक़्त तक अपने घरवालों के क़रीब न जाना । चुनांचे जब हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए, तो फ़रमाया, क्या मेरा भाई यहां है ? हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा जो कि हज़रता उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की मां हैं और वह एक हब्शी और नेक औरत थीं, उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जब आपने अपनी बेटी की शादी हज़रत अली रज़ि० से कर दी, तो अब यह आपके भाई कैसे हुए ?

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 209, कंज़, भाग 7, पृ० 113, बिदाया, भाग 7, पृ० 341, साद, भाग 8, पृ० 21,

हुज़ूर सल्ल० ने दूसरे सहाबियों का आपस में भाईचारा कराया था और हज़रत अली रज़ि० का भाईचारा अपने साथ किया था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इस भाईचारे के साथ यह शादी हो सकती है? फिर हुज़ूर सल्ल० ने एक बरतन में पानी मंगाया, फिर कुछ पढ़कर हज़रत अली रज़ि० के सीने और चेहरे पर हाथ फेरा। फिर हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि० को बुलाया, तो फ़ातिमा रज़ि० उठकर आपके पास आईं और वह शर्म व हया की वजह से अपनी चादर में लड़खड़ा रही थीं।

हुज़ूर सल्ल० ने उस पानी में कुछ हज़रत फ़ातिमा रज़ि० पर छिड़का और उनसे कुछ फ़रमाया और यह भी फ़रमाया, अपने ख़ानदान में मुझे जो सबसे ज़्यादा महबूब था, उससे तुम्हारी शादी करने में मैंने कोई कमी नहीं की। फिर हुज़ूर सल्ल० ने परदे या दरवाज़े के पीछे किसी आदमी का साया देखा, तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह कौन है? मैंने कहा, अस्मा रज़ि०! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या अस्मा बिन्त उमैस? मैंने कहा, जी हां, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इकराम की वजह से आई हो? मैंने कहा, जी हां। जब किसी जवान लड़की की रुख़सती हो तो उस रात इस लड़की के पास किसी रिश्तेदार औरत का होना ज़रूरी है, ताकि अगर इस लड़की को कोई ज़रूरत पेश आ जाए, तो यह औरत उसकी ज़रूरत पूरी कर दे।

इस पर हुज़ूर सल्ल० ने मुझे ऐसी ज़बरदस्त दुआ दी कि मेरे नज़दीक वह सबसे ज़्यादा भरोसेमंद अमल है। फिर हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया, तो अपनी बीवी संभालो, फिर हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले गए और अपने घर में दाख़िल होने तक हज़रत फ़ातिमा, हज़रत अली, दोनों के लिए दुआ फ़रमाते रहे।[1]

एक रिवायत में हज़रत अस्मा बिन्त अमीस रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की रुख़सती वाली रात को मैं भी वहां थी। जब

1. तबरानी,

सुबह हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने आकर दरवाज़ा खटखटाया। हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० ने खड़े होकर दरवाज़ा खोला। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे फ़रमाया, ऐ उम्मे ऐमन! मेरे भाई को बुलाओ। उन्होंने कहा, क्या वह आपके भाई हैं? आपने उनसे अपनी बेटी की शादी कर दी है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे ऐमन! मेरे पास बुला लाओ। औरतें हुज़ूर सल्ल० की आवाज़ सुनकर इधर-उधर हो गईं। फिर हुज़ूर सल्ल० एक कोने में बैठ गए, फिर हज़रत अली रज़ि० आए तो हुज़ूर सल्ल० ने इनके लिए दुआ फ़रमाई और उन पर कुछ पानी छिड़का, फिर फ़रमाया, फ़ातिमा को मेरे पास बुलाओ। जब हज़रत फ़ातिमा आईं तो वह शर्म व हया की वजह से पसीने-पसीने हो रही थीं और छोटे-छोटे क़दम रख रही थीं।

आपने फ़रमाया, चुप हो जाओ, मैंने तुम्हारी शादी ऐसे आदमी से की है जो मुझे अपने ख़ानदान में सबसे ज़्यादा महबूब है। आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून है।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की (मुझसे) शादी की, तो आपने पानी मंगाकर उससे कुल्ली की, फिर मुझे अपने साथ अन्दर ले गए और वह पानी मेरे गरीबान और मेरे दोनों कंधों के दर्मियान छिड़का और 'कुल हुवल्लाहु अहद', 'कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़-लक़' 'कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नासि' पढ़कर मुझ पर दम किया।[2]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उनकी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी का पैग़ाम भेजा, फिर मैंने अपनी एक ज़िरह और अपना कुछ सामान चार सौ अस्सी दिरहम में बेचा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसके दो तिहाई की ख़ुश्बू और एक तिहाई के कपड़े ख़रीद लो, और पानी के एक घड़े में कुल्ली फ़रमाई और फ़रमाया, इसे ग़ुस्ल

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 210,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 113,

करो और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से फ़रमाया कि अपने बच्चे को मेरे आने से पहले दूध न पिलाना, लेकिन हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को दूध पिला दिया, हज़रत हसन रज़ि० को न पिलाया, बल्कि हुज़ूर सल्ल० ने उनके मुंह में कोई चीज़ डाली, जिसका पता न चला। इसी वजह से दोनों भाइयों में हज़रत हसन रज़ि० ज़्यादा इल्म वाले थे।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी के मौक़े पर हम भी मौजूद थे। हमने इससे अच्छी कोई शादी नहीं देखी। बिछौने में हमने खजूर की छाल भरी और खजूर और किशमिश हमारे पास लाई गई, जिसे हमने खाया और शादी की रात में हज़रत फ़ातिमा रज़ि० का बिछौना एक मेंढे की खाल थी।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जहेज़ में एक झालर वाली चादर, एक मश्कीज़ा और एक तकिया दिया, जिसमें इज़ख़र घास भरी हुई थी।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर भेजा तो उनके साथ एक झालर वाली चादर और चमड़े का तकिया, जिसमें खजूर की छाल और इज़ख़र घास भरी हुई थी और एक मश्कीज़ा भी भेजा। वे दोनों आधी चादर को नीचे बिछा लेते थे और आधी को ऊपर ओढ़ लेते थे।[4]

हज़रत रबीआ अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह

हज़रत रबीआ अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं नबी

1. कंज़, भाग 7, पृ० 112, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 21
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 209
3. कंज़, भाग 7, पृ० 113,
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 210,

करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत किया करता था। एक बार हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, क्या तुम शादी नहीं करते? मैंने कहा, नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अल्लाह की क़सम ! न मैं शादी करना चाहता हूं और न बीवी को देने के लिए मेरे पास कुछ है और न मुझे कोई ऐसी चीज़ पसन्द है कि जिसमें लगकर मुझे आपको छोड़ना पड़े।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे मुंह फेर लिया, फिर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे दोबारा फ़रमाया, ऐ रबीआ ! क्या तुम शादी नहीं करते? मैंने कहा, न मैं शादी करना चाहता हूं और न बीवी को देने के लिए मेरे पास कुछ है और न मुझे कोई ऐसी चीज़ पसन्द है जिसमें लगकर मुझे आपको छोड़ना पड़े।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फिर मुंह फेर लिया, फिर मैंने दिल में सोचा कि अल्लाह की क़सम ! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरी दुनिया और आख़िरत की मस्लहत को मुझसे ज़्यादा जानते हैं। अल्लाह की क़सम ! अगर इस बार हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम शादी नहीं करते? तो मैं कहूंगा, हां करता हूं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप जो इर्शाद फ़रमाएं।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, ऐ रबीआ ! क्या तुम शादी नहीं करते? मैंने कहा, ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप जो इर्शाद फ़रमाएं। आपने फ़रमाया, फ़्लां ख़ानदान वालों के पास चले जाओ और अंसार के एक क़बीले का नाम लिया जो कभी-कभी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया करते थे और फ़रमाया, जाकर इनसे कहो कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, हुज़ूर सल्ल० फ़रमा रहे हैं कि मेरी शादी अपनी फ़्लां औरत से कर दो।

चुनांचे मैंने जाकर उन लोगों से कहा कि मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हारे पास भेजा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि मेरी शादी कर दो।

उन लोगों ने कहा, ख़ुश आमदीद हो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और अल्लाह के रसूल के क़ासिद को, अल्लाह

की क़सम ! अल्लाह के रसूल सल्ल० का क़ासिद अपनी ज़रूरत पूरी करके ही वापस जाएगा।

चुनांचे उन्होंने मेरी शादी कर दी और मेरे साथ बड़ी मेहरबानी और शफ़क़त का मामला किया और मुझसे कोई गवाह भी नहीं मांगा। वहां से हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में बड़ा परेशान वापस आया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं ऐसे लोगों के पास गया, जो बड़े सख़ी और अख़्लाक़ वाले हैं। उन्होंने मेरी शादी कर दी और मुझसे बड़ी शफ़क़त और मेहरबानी का मामला किया और मुझसे गवाह भी नहीं मांगे, लेकिन अब मेरे पास मह्र देने के लिए कुछ नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बुरैदा अस्लमी ! इसके लिए खजूर की गुठली के बराबर सोना जमा करो। चुनांचे उन्होंने गुठली के बराबर सोना जमा किया। वह सोना लेकर मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह सोना उनके पास ले जाओ और उनसे कहो कि यह उस औरत का मह्र है।

चुनांचे मैंने इन लोगों को जाकर कहा, यह उस औरत का मह्र है। उन्होंने इसे क़ुबूल कर लिया और बड़े ख़ुश हुए और कहा, यह तो बहुत ज़्यादा है और बड़ा पाकीज़ा है। मैं फिर परेशान होकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में वापस आया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ रबीआ ! क्या बात है ? तुम परेशान क्यों हो ?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! इन लोगों से ज़्यादा अख़्लाक़ वाला कोई क़ौम मैंने नहीं देखी। मैंने इनको जो दिया, उससे वह बहुत ख़ुश हुए और उन्होंने मुझसे बड़ा अच्छा सुलूक किया और कहा, यह तो बहुत ज़्यादा है और बड़ा पाकीज़ा है, लेकिन अब मेरे पास वलीमा के लिए कुछ नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ बुरैदा ! इसके लिए बकरी का इन्तिज़ाम करो। चुनांचे वे लोग एक मोटा-ताज़ा मेंढा मेरे लिए ले आए और हुज़ूर सल्ल० ने मुझसे फ़रमाया, तुम आइशा रज़ि० से जाकर कहो कि जिस टोकरे में अनाज है, वह भेज दे।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने जो फ़रमाया था, वह जाकर मैंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में अर्ज़ कर दिया। हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, इस टोकरे में सात साअ जौ हैं, अल्लाह की क़सम! हमारे पास इसके अलावा और कोई चीज़ खाने की नहीं है, यह ले लो। मैं वह जौ लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और हज़रत आइशा रज़ि० ने जो फ़रमाया था, वह हुज़ूर सल्ल० को बता दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह जौ और मेंढा इनके पास ले जाओ और इनसे कहो कि जौ की रोटी और मेंढे का सालन बना लें। इन लोगों ने कहा, रोटी तो हम पका देंगे, लेकिन मेंढा तुम पकाओ। चुनांचे मैंने और क़बीला अस्लम के कुछ आदमियों ने मिलकर उसे ज़िब्ह किया, उसकी खाल उतारी और उसे पकाया, इस तरह रोटी और गोश्त का इन्तिज़ाम हो गया, जिसे मैंने वलीमा में खिलाया और खाने के लिए मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाया, फिर इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने मुझे एक ज़मीन अता फ़रमाई और हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को भी दी और दुनिया आ गई और मेरा और हज़रत अबूबक्र रज़ि० का खजूर के एक पेड़ के बारे में इख़्तिलाफ़ हो गया।

मैंने कहा, यह मेरी हद में है। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, नहीं, यह मेरी हद में है। इस पर मेरे और हज़रत अबूबक्र रज़ि० में कुछ बात बढ़ गई और उन्होंने मुझे कुछ सख़्त लफ़्ज़ कह दिया, जो मुझे नागवार गुज़रा, लेकिन वह फ़ौरन शर्मिन्दा हुए और उन्होंने मुझसे फ़रमाया, ऐ रबीआ! तुम भी मुझे उस जैसा सख़्त लफ़्ज़ कह लो, ताकि बदला हो जाए।

मैंने कहा, नहीं, मैं तो नहीं कहूंगा। उन्होंने फ़रमाया, तुम भी कह लो, वरना मैं जाकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ करूंगा। मैंने कहा, नहीं, मैं बिल्कुल नहीं कहूंगा। इस पर वह ज़मीन के झगड़े को वहीं छोड़कर हुज़ूर सल्ल० की ओर चल पड़े। मैं भी उनके पीछे चल पड़ा। इतने में (मेरे) क़बीला अस्लम के कुछ लोगों ने आकर कहा, अल्लाह अबूबक्र रज़ि० पर रहम फ़रमाए, वह किस बात पर हुज़ूर सल्ल० से शिकायत लगाने जा रहे हैं, ख़ुद ही तो उन्होंने तुम्हें सख़्त बात कही है।

मैंने कहा, तुम जानते हो, यह कौन हैं? यह अबूबक्र सिद्दीक़ हैं यह

हुज़ूर सल्ल० के ग़ार सौर के साथी हैं। यह मुसलमानों में बड़ी उम्र वाले हैं। तुम लोग चले जाओ। अगर उन्होंने मुड़कर तुम्हें देख लिया कि तुम मेरी मदद करने आए हो तो वह नाराज़ हो जाएंगे और जाकर हुज़ूर सल्ल० को बताएंगे, तो उनके नाराज़ होने की वजह से हुज़ूर सल्ल० नाराज़ हो जाएंगे और इन दोनों के नाराज़ होने की वजह से अल्लाह नाराज़ हो जाएंगे तो रबीआ तो हलाक हो जाएगा।

इन लोगों ने कहा कि हम अब क्या करें? मैंने कहा, तुम लोग वापस चले जाओ।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गए और मैं अकेला उनके पीछे चलता रहा। उन्होंने जाकर सारा वाक़िया जैसा हुआ था, बताया। हुज़ूर सल्ल० ने मेरी ओर सर उठाकर फ़रमाया, ऐ रबीआ! तुम्हारा और सिद्दीक़ का क्या मामला है?

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! ऐसे ऐसे बात हुई थी। उन्होंने मुझे सख़्त लफ़्ज़ कह दिया जो मुझे नागवार गुज़रा। फिर उन्होंने मुझसे कहा, तुम भी मुझे इस जैसा लफ़्ज़ कह लो ताकि बदला हो जाए, लेकिन मैंने इन्कार कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमने ठीक किया, इनको बदले में सख़्त लफ़्ज़ न कहो, बल्कि यह कह दो, ऐ अबूबक्र! अल्लाह आपकी मग़्फ़िरत फ़रमाए।

हज़रत हसन रावी (रिवायत करने वाले) कहते हैं, हज़रत अबूबक्र, अल्लाह इन पर रहम फ़रमाए, रोते हुए वापस गए (कि रबीआ मुझसे आगे बढ़ गए)[1]

हज़रत जुलैबीब रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह

हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत जुलैबीब रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे आदमी थे, जो औरतों में चले जाते,

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 257, बिदाया, भाग 5, पृ० 336, कंज़, भाग 7, पृ० 36, इब्ने साद, भाग 3, पृ० 44

उनके पास से गुज़रते और उनसे हंसी-मज़ाक़ कर लिया करते। मैंने अपनी बीवी से कहा कि हज़रत जुलैबीब रज़ि० को कभी अपने पास न आने देना। अगर वह तुम्हारे पास आ गया तो मैं यह करूंगा, यह करूंगा और अंसार का दस्तूर यह था कि जब उनकी कोई औरत बेवा हो जाती तो उस वक़्त तक उसकी आगे शादी न करते, जब तक यह पता न चल जाता कि हुज़ूर सल्ल० को उसकी ज़रूरत है या नहीं।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंसारी से फ़रमाया, अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दो।

उसने कहा, ज़रूर ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुक्म सर आंखों पर ! यह मेरे लिए बड़े इज़्ज़त की बात है और आंखों की ठंडक की वजह है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन मैं ख़ुद शादी नहीं करना चाहता।

उस अंसारी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! किससे शादी करना चाहते हैं ?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जुलैबीब से। उस अंसारी ने कहा, ज़रा मैं उसकी मां से मश्विरा कर लूं। चुनांचे जाकर अपनी बीवी से कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारी बेटी के लिए शादी का पैग़ाम दे रहे हैं।

उसकी बीवी ने कहा, ज़रूर हुक्म सर आंखों पर। अंसारी ने कहा कि हुज़ूर सल्ल० अपने लिए पैग़ाम नहीं दे रहे हैं, बल्कि हज़रत जुलैबीब रज़ि० के लिए दे रहे हैं।

बीवी ने कहा, जुलैबीब, बिल्कुल नहीं, जुलैबीब, बिल्कुल नहीं। अल्लाह की क़सम ! उससे हम शादी नहीं करेंगे।

जब वह अंसारी हुज़ूर सल्ल० को जाकर अपनी बीवी का मश्विरा बताने के लिए उठने लगे तो उस लड़की ने कहा, मेरी शादी का पैग़ाम आप लोगों को किसने दिया है? उसकी मां ने उसे बताया (कि हुज़ूर सल्ल० ने दिया है) तो उस लड़की ने कहा, क्या आप लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात का इंकार करोगे ? मुझे हुज़ूर सल्ल० के हवाले कर दो वह मुझे हरगिज़ बर्बाद न होने देंगे।

चुनांचे उसके वालिद (बाप) ने जाकर हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ कर दिया कि मेरी बेटी आपके अख़्तियार में है, जिससे चाहें शादी कर दें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत जुलैबीब रज़ि० से उसकी शादी कर दी।

फिर हुज़ूर सल्ल० एक लड़ाई में तशरीफ़ ले गए, जब अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को जीत दिला दी, तो आपने फ़रमाया, कौन-सा साथी तुम लोगों को नज़र नहीं आ रहा है? सहाबा ने कहा, कोई ऐसा नहीं है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन मुझे जुलैबीब रज़ि० नज़र नहीं आ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उन्हें तलाश करो। सहाबा ने तलाश किया तो वे सात काफ़िरों के पास शहीद पड़े हुए मिले कि उन्होंने इन सात को क़त्ल किया था। फिर उन्होंने इन्हें शहीद कर दिया।

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह हज़रत जुलैबीब सात काफ़िरों के पहलू में पड़े हुए हैं। पहले इन्होंने क़त्ल किया फिर उन्होंने उन्हें शहीद कर दिया। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ख़ुद उनके पास तशरीफ़ ले गए और दो या तीन बार फ़रमाया, इसने सात को क़त्ल किया, फिर उन्होंने उसे शहीद कर दिया। यह मेरा है और मैं इसका हूं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने इनके जिस्म को अपने बाज़ुओं पर रख लिया, फिर इनके लिए क़ब्र खोदी गई। इनके लिए और तो कोई तख़्त नहीं था, बस हुज़ूर सल्ल० के बाज़ू ही तख़्त थे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद उनको क़ब्र में रखा। इस हदीस में इस बात का ज़िक्र नहीं है कि हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें ग़ुस्ल दिया।

हज़रत साबित रज़ि० कहते हैं कि अंसार में कोई बेवा औरत उस लड़की से ज़्यादा ख़र्च करने वाली नहीं थी।

हज़रत इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबू तलहा ने हज़रत साबित से कहा कि क्या तुम्हें मालूम है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस लड़की को क्या दुआ दी थी—यह दुआ दी थी कि ऐ अल्लाह ! तू इस पर ख़ैर को ख़ूब बहा दे और इसकी ज़िंदगी को मशक़्क़त वाली न बना। चुनांचे अंसार में कोई बेवा औरत इससे ज़्यादा ख़र्च करने वाली न थी।[1]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 268.

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह

हज़रत अबू अब्दुर्रहमान सुलमी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़बीला किन्दा की एक औरत से शादी की और उसके घर ही में उसकी रुख़्सती हुई। जब रुख़्सती वाली रात आई तो उनके साथ उनके साथी भी चलते हुए, उनकी बीवी के घर तक आए। वहां पहुंचकर हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, अब आप लोग वापस चले जाएं। अल्लाह आप लोगों को बहुत अज्र अता फ़रमाए और इन लोगों को अन्दर अपनी बीवी के पास न ले गए जैसा कि बेवक़ूफ़ लोगों का दस्तूर है।

वह घर बहुत सजा हुआ था। दीवारों पर परदे पड़े हुए थे। यह देखकर उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम्हारे घर को बुख़ार चढ़ा हुआ है? (जो उस घर इतने परदे लटका रखे हैं?) या काबा किन्दा क़बीले में आ गया है? (जो तुमने इस घर को इतना सजा रखा है) घरवालों ने कहा, न तो हमारे घर को बुख़ार चढ़ा हुआ है और न काबा किन्दा में आ गया है। जब इन लोगों ने दरवाज़े के परदे के अलावा बाक़ी तमाम परदे उतार दिए, तब हज़रत सलमान रज़ि० घर के अन्दर गए। जब अन्दर गए तो उन्हें बहुत सारा सामान नज़र आया, फ़रमाया, यह सामान किसका है?

उन्होंने बताया, यह सामान आपका और आपकी बीवी का है।

उन्होंने फ़रमाया, इतने सामान की तो मेरे ख़लील सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे वसीयत नहीं फ़रमाई थी। उन्होंने तो मुझे यह वसीयत फ़रमाई थी कि दुनिया में से मेरा सामान इतना हो, जितना एक सवार के सफ़र का तोशा होता है। फिर उन्होंने बहुत-सी बांदियां देखीं, फ़रमाया, ये बांदियां किसकी हैं? उन्होंने कहा, ये आपकी और आपकी बीवी की हैं।

फ़रमाया, मेरे ख़लील सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इतनी बांदियां रखने की मुझे वसीयत नहीं फ़रमाई। उन्होंने तो मुझे इसकी वसीयत फ़रमाई थी कि मैं बांदियां इतनी रखूं, जिनसे मैं ख़ुद निकाह कर सकूं या उनका दूसरों से निकाह कर सकूं। अगर मैं इतनी सारी बांदियां रखूंगा तो ये तो ज़िना पर मजबूर हो जाएंगी (और मालिक होने

की वजह से) इनके बराबर मुझे भी गुनाह होगा और इससे उनके गुनाह में कोई कमी न आएगी।

फिर जो औरतें उनकी बीवी के पास बैठी हुई थीं, उनसे फ़रमाया, क्या अब तुम मेरे पास से चली जाओगी? और मुझे अपनी बीवी के साथ तंहाई का मौक़ा दोगी? उन्होंने कहा, जी हां। चुनांचे वे चली गईं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने जाकर दरवाज़ा बन्द किया और परदा लटका दिया और आकर अपनी बीवी के पास बैठ गए और उसकी पेशानी पर हाथ फेरकर बरकत की दुआ की और उससे कहा कि जिस काम का मैं तुम्हें हुक्म दूंगा, क्या तुम उसमें मेरी इताअत करोगी?

उसने कहा, आप हैं ही ऐसी जगह पर कि आपकी बात मानी जाए।

उन्होंने फ़रमाया कि मेरे ख़लील सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यह वसीयत फ़रमाई थी कि जब मैं अपनी बीवी के साथ (पहली बार) इकट्ठा हूं तो अल्लाह की इताअत पर इकट्ठा हूं।

चुनांचे हज़रत सलमान रज़ि० और उनकी बीवी खड़े होकर नमाज़ पढ़ने की जगह गए और कुछ देर नमाज़ पढ़ी और फिर दोनों अपनी जगह पर वापस आ गए और फिर उन्होंने उस बीवी से अपनी वह ज़रूरत पूरी की जो इंसान अपनी बीवी से किया करता है। सुबह को उनके साथी उनके पास आए और पूछा, हज़रत! आपने अपने घरवालों को कैसा पाया?

उन्होंने टालने की कोशिश की। इन लोगों ने दोबारा पूछा, तो वह फिर टाल गए। लोगों ने तीसरी बार फिर पूछा, तो पहले तो उन्हें टाला, फिर फ़रमाया, अल्लाह ने परदे और दरवाज़े बनाए ही इसलिए हैं, ताकि इनके अन्दर की चीज़ें छिपी रहें। आदमी के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह ज़ाहिरी हालात के बारे में पूछे, छिपे हुए अन्दर के हालात हरगिज़ न पूछे। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि बीवी के साथ के अन्दर के हालात बताने वाला उस गधे और गधी की तरह है जो रास्ते में जोड़ा खा रहे हों।[1]

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 185,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक सफ़र से वापस आए तो इनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुलाक़ात हुई तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, आप अल्लाह के पसन्दीदा बन्दे हैं।

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, तो फर आप (अपने ख़ानदान में) मेरी शादी करा दें। हज़रत उमर रज़ि० इस पर ख़ामोश रहे। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, आप मुझे अल्लाह का पसन्दीदा बन्दा तो समझते हैं, लेकिन मुझे अपना दामाद बनाना आपको पसन्द नहीं है।

सुबह को हज़रत उमर रज़ि० की क़ौम के लोग हज़रत सलमान रज़ि० के पास गए। हज़रत सलमान रज़ि० ने पूछा, क्या कोई काम है? इन लोगों ने कहा, जी हां। हज़रत सलमान रज़ि० ने पूछा, क्या है? इनशाअल्लाहु आप लोगों का काम हो जाएगा।

उन लोगों ने कहा कि आपने हज़रत उमर रज़ि० से जो शादी का पैग़ाम दिया है, वह वापस ले लें। हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, मैंने यह पैग़ाम हज़रत उमर रज़ि० की अमारत (अमीर होने) की वजह से नहीं दिया था, बल्कि मैंने तो इस वजह से दिया था कि वह नेक आदमी हैं, शायद अल्लाह मेरे और उनके इस रिश्ते से नेक औलाद पैदा फ़रमा दें।

चुनांचे फिर उन्होंने क़बीला किन्दा में शादी की और इसके बाद पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र किया।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का निकाह

हज़रत साबित बनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ क़बीला बनू लैस की एक औरत से हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु का पैग़ाम देने गए और (घर के) अन्दर जाकर हज़रत सलमान रज़ि० की फ़ज़ीलतें और उनके शुरू में मुसलमान होने और उनके इस्लाम लाने के वाक़िए तफ़्सील से बयान किए और उन्हें बताया कि हज़रत सलमान

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 291,

रज़ि० उनकी फ़्लां नवजवान लड़की से शादी करना चाहते हैं।

इन लोगों ने कहा, हज़रत सलमान रज़ि० से तो शादी करने को हम तैयार नहीं हैं, अलबत्ता आपसे करने को तैयार हैं। चुनांचे वह उस लड़की से शादी करके बाहर आए और हज़रत सलमान रज़ि० से कहा, अन्दर कुछ बात हुई है, लेकिन उसे बताते हुए मुझे शर्म आ रही है। इस पर हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने उन्हें सारी बात बताई।

यह सुनकर हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, (आप मुझसे क्यों शर्मा रहे हैं) वह तो मुझे आपसे शर्माना चाहिए, क्योंकि मैं उस लड़की को शादी का पैग़ाम दे रहा था जो अल्लाह ने आपके मुक़द्दर में लिखी हुई थी।[1]

हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी बेटी दर्दा की एक ग़रीब सादा मुसलमान से शादी करना

हज़रत साबित बुनानी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि यज़ीद बिन मुआविया ने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी बेटी हज़रत दर्दा से शादी का पैग़ाम दिया तो हज़रत अबुद्दर्दा ने उनको इन्कार कर दिया। यज़ीद के साथ उठने-बैठने वालों में से एक आदमी ने यज़ीद से कहा, अल्लाह आपकी इस्लाह फ़रमाए, क्या आप मुझे इजाज़त देते हैं कि मैं हज़रत दर्दा से शादी कर लूं?

यज़ीद ने कहा, तेरा नाश हो, दफ़ा हो जा। उस आदमी ने कहा, अल्लाह आपकी इस्लाह फ़रमाए, आप मुझे इजाज़त दे दें। यज़ीद ने कहा, अच्छा! चुनांचे उस आदमी ने हज़रत दर्दा से शादी का पैग़ाम दिया तो हज़रत अबुद्दर्दा ने उस आदमी से अपनी बेटी की शादी कर दी।

इस पर लोगों में यह बात मशहूर हो गई कि यज़ीद ने हज़रत अबुद्दर्दा की बेटी से शादी का पैग़ाम दिया तो उसे तो इन्कार कर दिया और एक आम ग़रीब मुसलमान ने उस बेटी से शादी का पैग़ाम दिया तो उससे शादी कर दी। इस पर हज़रत अबुद्दर्दा ने फ़रमाया, मैंने ऐसा अपनी बेटी के फ़ायदे की वजह से किया। तुम्हारा क्या ख़्याल है कि

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 200, हैसमी, भाग 4, पृ० 275,

(अगर मैं दर्दा की शादी यज़ीद से कर देता तो) हर वक़्त उसके सर पर ख़्वाजा सरा यानी ख़स्सी ग़ुलाम (ख़िदमत के लिए) खड़े रहते और घरों पर निगाह डालती तो (सोने-चांदी की ज़्यादती की वजह से) उसकी आंखें चकाचौंध हो जातीं, लेकिन फिर उसका दीन कैसे बाक़ी रहता, (बस हर वक़्त दुनिया में लगी रहती।)[1]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की शादी करना

हज़ररत अबू जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी बेटी से शादी का पैग़ाम दिया। हज़रत अली रज़ि० ने कहा, वह तो छोटी है। किसी ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा (वह छोटी नहीं है) बल्कि हज़रत अली रज़ि० यह कहकर इंकार करना चाहते हैं।

इस पर हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे दोबारा बात की (तो हज़रत अली रज़ि० राज़ी हो गए और उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से अपनी बेटी का निकाह कर दिया और) उन्होंने कहा, मैं उसे आपके पास भेजता हूं। अगर आपको पसन्द आ गई तो वह आपकी बीवी है ही।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि० को हज़रत उमर रज़ि० के पास भेजा तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनकी पिंडुली से कपड़ा हटाना चाहा, तो उन्होंने कहा, कपड़ा नीचे ही रहने दें। अगर आप अमीरुल मोमिनीन न होते तो मैं आपकी आंख पर थप्पड़ मारती। (वापस जाकर हज़रत उम्मे कुलसूम ने हज़रत अली रज़ि० को सारी बात बताई तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, वह ऐसा कर सकते हैं क्योंकि वह तुम्हारे ख़ाविंद हैं।)[2]

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 561, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 260
2. कंज़, भाग 8, पृ० 291, इसाबा, भाग 4, पृ० 492

हज़रत मुहम्मद (बिन अली) रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को (उनकी बेटी) हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी का पैग़ाम दिया, तो हज़रत अली रज़ि० ने कहा, मैंने तो यह फ़ैसला किया हुआ है कि अपनी तमाम बेटियों की शादी सिर्फ़ (अपने भाई) हज़रत जाफ़र (बिन अबी तालिब) रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटों से करूंगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, आप उसकी मुझसे शादी कर दें। अल्लाह की क़सम! इस धरती पर कोई मर्द ऐसा नहीं है जो उसके इकराम का इतना एहतिमाम कर सके जितना मैं करूंगा।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा, अच्छा, मैंने (उस बेटी का निकाह आपसे) कर दिया।

हज़रत उमर रज़ि० ने आकर मुहाजिरों से कहा, मुझे शादी की मुबारकबाद दो। उन्होंने उन्हें मुबारकबाद दी और पूछा, आपने किससे शादी की है? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हज़रत अली रज़ि० की बेटी से, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मेरे रिश्ते और ताल्लुक़ के अलावा हर रिश्ता और ताल्लुक़ क़ियामत के दिन ख़त्म हो जाएगा। मैंने अपनी बेटी की शादी तो हुज़ूर सल्ल० से की थी, अब मैंने चाहा कि हुज़ूर सल्ल० की नवासी से मेरी शादी हो जाए, तो और ज़्यादा रिश्ते का ताल्लुक़ हासिल हो जाए।

हज़रत अता ख़ुरासानी रहमतुल्लाहि अलैहि की रिवायत में यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा को मह्र में चालीस हज़ार दिए।[1]

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु का अपनी बेटी से हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अनहु की शादी करना

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्र बिन हुरैस

1. इब्ने साद, इसाबा,

रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु को (उनकी बेटी से) शादी का पैग़ाम दिया, तो हज़रत अदी ने फ़रमाया, मह्र के बारे में मेरा फ़ैसला मानोगे तो मैं अपनी बेटी की आपसे शादी करूंगा।

हज़रत अम्र रज़ि० ने पूछा, अच्छा, वह आपका फ़ैसला क्या है ?

हज़रत अदी ने कहा, तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक उम्दा नमूना मौजूद है। मेरा तुम्हारे बारे में यह फ़ैसला है कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा वाला मह्र यानी चार सौ अस्सी दिरहम दोगे।[1]

हज़रत हुमैद बिन हिलाल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अदी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अन्हु को शादी का पैग़ाम दिया तो हज़रत अदी रज़ि० ने कहा, मैं आपसे शादी तो कर दूंगा, लेकिन मह्र के बारे में मेरा फ़ैसला मानना होगा।

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, मेरे बारे में आपका जो फ़ैसला है, वह मुझे बता दें, बाद में हज़रत अदी ने उनको यह पैग़ाम भेजा कि मैंने चार सौ अस्सी दिरहम मह्र का फ़ैसला किया है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है।[2]

हज़रत बिलाल और उनके भाई रज़ियल्लाहु अन्हुमा का निकाह

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके भाई ने यमन के एक घराने में अपनी शादी का पैग़ाम दिया तो हज़रत बिलाल रज़ि० ने यों फ़रमाया, मैं बिलाल हूं और यह मेरा भाई है। हम दोनों हब्शा के ग़ुलाम हैं, हम गुमराह थे, हमें अल्लाह ने हिदायत दी और हम दोनों ग़ुलाम थे, हमें अल्लाह ने आज़ाद कर दिया। अगर आप लोग हम दोनों की शादी कर देंगे, तो अल-हम्दु लिल्लाह यानी हम अल्लाह का शुक्र अदा करेंगे और अगर नहीं करोगे

1. इब्ने असाकिर
2. कंज़, भाग 8, पृ० 299,

तो अल्लाहु अकबर, यानी अल्लाह बहुत बड़े हैं, वह कोई और इन्तिज़ाम कर देंगे। आप लोगों से कोई शिकायत नहीं होगी। (इन लोगों ने इन दोनों की शादी कर दी।)

हज़रत अम्र बिन मैमून रहमतुल्लाहि अलैहि अपने बाप (हज़रत मैमून रह०) से नक़ल करते हैं कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के एक भाई नसब में अपनी निस्बत अरब की तरफ़ करते थे और कहते थे कि वह अरबों में से हैं। उन्होंने अरब की एक औरत को शादी का पैग़ाम भेजा। उस औरत के रिश्तेदारों ने कहा, अगर हज़रत बिलाल रज़ि० आएंगे तो हम आपसे शादी करेंगे।

चुनांचे हज़रत बिलाल रज़ि० आए और उन्होंने मस्नून ख़ुत्बा पढ़कर फ़रमाया, मैं बिलाल बिन रिबाह हूं और यह मेरा भाई है, लेकिन यह अख़्लाक़ और दीन में बुरा आदमी है, अगर तुम चाहो तो इससे शादी कर दो और अगर चाहो तो छोड़ दो। उन्होंने कहा, जिसके आप भाई हों, हम उससे ज़रूर शादी करेंगे। चुनांचे उन्होंने अपनी औरत की हज़रत बिलाल रज़ि० के भाई से शादी कर दी।[1]

निकाह में काफ़िरों से मिलता-जुलता काम अपनाने पर इंकार

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त सुमाली रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में से थे। वह हज़रत उमर रज़ि० की ओर से हिम्स के गवर्नर थे। एक रात वह हिम्स में पहरे के लिए गश्त कर रहे थे कि इनके पास से एक बारात दुल्हन को लिए हुए गुज़री और उन लोगों ने इस दुल्हन के सामने कई जगह आग जला रखी थी। उन्होंने कोड़े से बारातियों की ऐसी पिटाई की कि वे सब दुल्हन को छोड़कर भाग गए,

सुबह को हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० मिंबर पर बैठे और अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, हज़रत अबू जन्दला रज़ियल्लाहु अन्हु ने

1. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 237,

हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से शादी की तो वलीमा में हज़रत उमामा रज़ि० के लिए कुछ मुट्ठी खाना तैयार किया।

अल्लाह अबू जन्दला रज़ि० पर रहम करे और उमामा पर रहमत नाज़िल करे और अल्लाह तुम्हारी रात वाली दुल्हन और बारातियों पर लानत करे। इन लोगों ने कई जगह आग लगा रखी थी और काफ़िरों से मिलता-जुलता काम अपना रखा था और अल्लाह काफ़िरों के नूर को बुझाने वाला है।[1]

मह्र का बयान

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मह्र बारह औक़िया और एक नुश था, जिसके पांच सौ दिरहम होते हैं, क्योंकि एक औक़िया में चालीस दिरहम और एक नुश में बीस दिरहम होते हैं।[2]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, मेरे इल्म में ऐसा आदमी कोई न आए जिसने चार सौ से ज़्यादा मह्र मुक़र्रर किया हो, क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० का मह्र चार सौ दिरहम या इससे कम था। अगर मह्र ज़्यादा करना कोई तक़्वा और इज़्ज़त की बात होती तो तुम लोग इन बुज़ुर्गों से मह्र में आगे नहीं जा सकते थे। फिर मिंबर से नीचे तशरीफ़ ले आए।

फिर एक कुरैशी औरत इनके सामने आई और उसने कहा, क्या आपने लोगों को चार सौ से ज़्यादा मह्र रखने से मना किया?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, हां।

उस औरत ने कहा, क्या आपने अल्लाह को क़ुरआन में यह फ़रमाते हुए नहीं सुना—

وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنْطَارًا (سورت نساء، آیت ٢٠)

---

1. इसाबा, भाग 4, पृ० 37,
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 161,

'और तुम उस एक (औरत) को ढेर का ढेर माल दे चुके हो, तो उसमें से कुछ भी मत लो।' (सूरः निसा, आयत 20) (यानी उस आयत में मह्र में बहुत ज़्यादा माल देने को अल्लाह ने ज़िक्र फ़रमाया। जिससे मालूम हुआ कि ज़्यादा मह्र देना भी जायज़ है।)

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे माफ़ी मांगता हूं। तमाम लोग उमर से ज़्यादा दीन की समझ रखते हैं। फिर वापस मिंबर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ लोगो ! मैंने तुम्हें चार सौ से ज़्यादा मह्र देने से मना किया था, लेकिन अब तुम्हें इजाज़त है कि जितना चाहो या जितना तुम्हारा दिल कहे, तुम उतना मह्र दे सकते हो।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अनहु ने बयान फ़रमाया। अल्लाह की हम्द व सना के बाद फ़रमाया, ग़ौर से सुनो, औरतों के मह्र ज़्यादा मुक़र्रर न करो। अगर मुझे किसी के बारे में पता चला कि उसने इससे ज़्यादा मह्र दिया है जितना ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया था या आपकी बेटियों को दिया गया था, तो मैं ज़्यादा मह्र लेकर बैतुल माल में जमा कर दूंगा।

फिर हज़रत उमर रज़ि० मिंबर से नीचे उतर आए तो क़ुरैश की एक औरत ने इनके सामने आकर कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या अल्लाह की किताब पैरवी की ज़्यादा हक़दार है या आपकी बात ?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह की किताब ! क्या बात है ?

इस औरत ने कहा, आपने लोगों को औरतों के मह्र ज़्यादा बढ़ाने से मना किया, हालांकि अल्लाह अपनी किताब में फ़रमा रहे हैं—

وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا (سورت نساء آیت ۲۰)

यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने दो तीन बार फ़रमाया, हर एक उमर से ज़्यादा दीन की समझ रखता है, फिर मिंबर पर वापस आकर लोगों से फ़रमाया, मैंने तुम्हें औरतों के मह्र बहुत ज़्यादा मुक़र्रर करने से मना

1. कंज़, भाग 8, पृ० 298, हैसमी, भाग 4, पृ० 284, इब्ने साद, भाग 9, पृ० 161

किया था, लेकिन अब तुम्हें अख़्तियार है, हर आदमी अपने माल में जो चाहे करे।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अगर ज़्यादा मह्र आख़िरत में दर्जे और मर्तबे की बुलन्दी का ज़रिया होता तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटियां और बीवियां इसकी ज़्यादा हक़दार थीं।[2]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने औरत को दो हज़ार मह्र देने की इजाज़त दी और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने चार हज़ार की इजाज़त दी।[3]

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से चार सौ दिरहम पर शादी की तो हज़रत सफ़िया रज़ि० ने हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को यह पैग़ाम भेजा कि ये चार सौ तो हमें काफ़ी नहीं होंगे। इस पर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से छिपकर दो सौ दिहरम बढ़ा दिए।[4]

हज़रत इब्ने सीरीन रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक औरत से शादी की और उसके पास सौ बांदियां भेजीं। हर बांदी के साथ हज़ार दिरहम भेजे, (कुल लाख दिरहम मह्र के हो गए।)[5]

---

1. बैहक़ी,
2. कंज़ुल उम्माल, भाग 8, पृ० 298,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 298,
4. कंज़, भाग 8, पृ० 298,
5. हैसमी, भाग 4, पृ० 284

रहन-सहन

औरतों, मर्दों और बच्चों का आपसी रहन-सहन

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने आटा, दूध या घी मिलाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हरीरा पकाया और आपकी ख़िदमत में पेश किया। हुज़ूर सल्ल० मेरे और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के दर्मियान बैठे हुए थे। मैंने हज़रत सौदा रज़ि० से कहा, आप भी खा लें। उन्होंने इंकार किया। मैंने कहा, या तो आप खाएं, वरना मैं आपके मुंह पर मल दूंगी। उन्होंने फिर भी इंकार किया तो मैंने हरीरा हाथ में डालकर उनके चेहरे पर लेप दिया।

इस पर हुज़ूर सल्ल० हंस पड़े। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनका हाथ हरीरा में डालकर कहा, तुम आइशा रज़ि० के चेहरे पर मल दो। चुनांचे उन्होंने मेरे चेहरे पर मल दिया, तो हुज़ूर सल्ल० इस पर भी हंसे।

इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से गुज़रे। वह किसी को पुकारते हुए, ऐ अब्दुल्लाह ! ऐ अब्दुल्लाह ! कह रहे थे। हुज़ूर सल्ल० समझे कि हज़रत उमर रज़ि० अन्दर आएंगे, इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, (उमर रज़ि० अन्दर आ रहे हैं) तुम दोनों उठो और अपने मुंह धो लो।

चूंकि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत उमर रज़ि० का इतना ख़्याल फ़रमाया, इस वजह से मैं हमेशा हज़रत उमर रज़ि० से डरती थी।[1]

और एक रिवायत में यह है कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत सौदा रज़ि० के लिए अपना घुटना नीचे कर दिया ताकि वह मुझसे बदला ले सकें। चुनांचे प्याले में से कुछ हरीरा लिया और मेरे चेहरे पर मल दिया और हुज़ूर सल्ल० हंस रहे थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज़ाद की हुई बांदी हज़रत रज़ीना रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत सौदा यमानीया

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 316, मुंतख़ब, भाग 4, पृ० 393, कंज़, भाग 7, पृ० 302

रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को मिलने आईं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। हज़रत सौदा रज़ि० ख़ूब बनाव-संगार करके बड़ी अच्छी शक्ल व सूरत में आई थीं। उन्होंने यमनी चादर और यमनी ओढ़नी ओढ़ी हुई थी। उन्होंने आंख के किनारे एलवे और ज़ाफ़रान के दो बड़े-बड़े निशान लगा रखे थे, जो गरदन के फोड़े के बराबर थे।

रिवायत करने वाली हज़रत अलीला कहती हैं कि मैंने औरतों को देखा कि वे एलवा और ज़ाफ़रान वग़ैरह ज़ीनत के लिए इस्तेमाल करती थीं। हज़रत हफ़सा रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० से कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाएंगे और यह हमारे दर्मियान चमक रही होंगी।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, ऐ हफ़सा रज़ि० ! अल्लाह से डरो।

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने कहा, नहीं। मैं तो इनका बनाव-सिंगार सारा ज़रूर ख़राब करूंगी।

हज़रत सौदा रज़ि० ऊंचा सुनती थीं, उन्होंने पूछा, तुम दोनों क्या बातें कर रही हो?

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ सौदा रज़ि० ! काना (दज्जाल) निकल आया है। उन्होंने कहा, अच्छा, फिर यह सुनकर बहुत ज़्यादा घबरा गईं और कांपने लगीं। फिर उन्होंने कहा, मैं कहां छिपूं?

हज़रत हफ़सा रज़ि० ने कहा, उस ख़ेमे में छिप जाओ। वहां खजूर के पत्तों का बना हुआ एक ख़ेमा था जिसमें लोग छिपते थे। यह जाकर उसमें छिप गईं। उसमें गर्द व ग़ुबार और मकड़ी के जाले बहुत थे। इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए तो देखा ये दोनों हंस रही हैं और हंसी के मारे दोनों से बोला नहीं जा रहा है।

हुज़ूर सल्ल० ने तीन बार पूछा, इतना क्यों हंस रही हो? तो दोनों ने हाथ से उस ख़ेमे की तरफ़ इशारा किया। आप वहां तशरीफ़ ले गए तो देखा कि हज़रत सौदा रज़ि० कांप रही हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे पूछा, ऐ

सौदा रज़ि० ! तुम्हें क्या हुआ ?

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! काना निकल आया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, वह अभी नहीं निकला, लेकिन निकलेगा ज़रूर। वह अभी नहीं निकला, लेकिन निकलेगा ज़रूर। फिर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें बाहर निकाला और उनके कपड़ों और जिस्म से गर्द व ग़ुबार और मकड़ी के जाले साफ़ किए।[1]

तबरानी की रिवायत में मज़्मून इस तरह है कि हज़रत हफ़सा रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० से कहा कि हुज़ूर सल्ल० हमारे पास तशरीफ़ लाएंगे। हम मैली-कुचैली नज़र आएंगी और यह हमारे दर्मियान चमक रही होंगी।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे हुए थे। इतने में उन्होंने लोगों और बच्चों के शोर की आवाज़ सुनी। आपने देखा कि एक हब्शी औरत नाच रही है और लोग उसके आस-पास जमा हैं। आपने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! इधर आओ और ज़रा देखो, मैं हुज़ूर सल्ल० के कंधों पर अपना गाल रखकर कंधे और सर के बीच से देखने लगी।

आप पूछते, ऐ आइशा रज़ि० ! अभी तुम्हारा दिल नहीं भरा। मैं कह देती, नहीं, मैं देखना चाहती थी कि हुज़ूर सल्ल० के यहां मेरा दर्जा कितना है। मैं इतनी देर यों खड़ी देखती रही कि हुज़ूर सल्ल० थक गए और कभी एक पांव पर आराम करते और कभी दूसरे पर।

इतने में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए, तो सारे लोग और बच्चे इधर-उधर चले गए। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैंने देखा कि उमर रज़ि० के आने पर इन्सानों और जिन्नों के शैतान सब भाग गए।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि अल्लाह की कसम ! मैंने देखा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे

---

1. हैसमी, भाग 4, पृ० 316,
2. मुंतखब, भाग 4, पृ० 393,

हुजरे के दरवाज़े पर खड़े होते और मस्जिद (के आंगन) में हब्शी लोग नेज़ों से खेल रहे होते और आप मेरे लिए अपनी चादर से परदा करते, ताकि मैं हुज़ूर सल्ल० के कान और कंधे के दर्मियान से इनका खेल देख सकूं। फिर आप मेरी वजह से खड़े रहते, यहां तक कि मैं देखना बस करती, आप लोग ख़ुद ही अन्दाज़ा लगा लें कि एक नवउम्र खेल कूद की शौक़ीन लड़की के देखने की मिक़्दार क्या होगी।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ज़ैनब बिन्त जह्श रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ ले जाते और उनके यहां शहद पी लिया करते। (इस पर मुझे रश्क आया) मैंने और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपस में तै किया कि हम दोनों में से जिसके पास हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाएं, वह हुज़ूर सल्ल० से यह कहे कि मुझे आपसे मग़ाफ़ीर की बू आ रही है। आपने मग़ाफ़ीर खाई है। (मग़ाफ़ीर एक बूदार गोंद है, यानी आपने जो शहद पिया है, उसकी मक्खी ने मग़ाफ़ीर के पेड़ से रस चूस लिया होगा। और बूदार चीज़ हुज़ूर सल्ल० फ़रिश्तों की वजह से इस्तेमाल नहीं फ़रमाते थे।)

चुनांचे हम दोनों में से एक के पास हुज़ूर सल्ल० तशरीफ़ लाए और उसने यह बात हुज़ूर सल्ल० से कह दी। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, मैंने मग़ाफ़ीर नहीं खाई, अलबत्ता मैंने ज़ैनब बिन्त जह्श के यहां शहद पिया है, वह भी आगे कभी नहीं पियूंगा फिर आयत उतरी जिसके लफ़्ज़ों में हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत हफ़्सा रज़ि० को ख़िताब किया गया है। इनमें यह आयत भी है- يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا

'व इज़ असर्रन्नबीयु इला बाज़े अज़्वाजिही हदीसा०'

इस आयत से मुराद यही है जो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैंने मग़ाफ़ीर नहीं खाई अलबत्ता शहद पिया है।

इब्राहीम बिन मूसा हिशाम से नक़ल करते हैं, इस आयत से मुराद हुज़ूर सल्ल० का यह फ़रमान है कि मैं आगे हरगिज़ शहद नहीं पियूंगा।

1. मिश्कात, पृ० 272,

मैंने क़सम खा ली है। (ऐ हफ़सा !) तुम यह बात किसी को न बताना।

आयत का तर्जुमा—'ऐ नबी ! जिस चीज़ को अल्लाह ने आपके लिए हलाल किया है, आप (क़सम खाकर) उसको (अपने ऊपर) क्यों हराम फ़रमाते हैं, फिर वह भी अपनी बीवियों की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़स्मों का खोलना (यानी क़सम तोड़ने के बाद उसके कफ़्फ़ारा का तरीक़ा) मुक़र्रर फ़रमा दिया है और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है और वह बड़ा जानने वाला और बड़ी हिक्मत वाला है। और जबकि पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी किसी बीवी से एक बात चुपके से फ़रमाई, फिर जब उस बीवी ने वह बात (दूसरी बीवी को) बता दी और पैग़म्बर को अल्लाह ने वह्य के ज़रिए इसकी ख़बर कर दी, तो पैग़म्बर ने (इस ज़ाहिर कर देने वाली बीवी को) थोड़ी सी बात तो बता दी और थोड़ी सी बात को टाल गए, सो जब पैग़म्बर ने इस बीवी को वह बात बताई, वह कहने लगी, आपको इसकी किसने ख़बर कर दी ? आपने फ़रमाया, मुझको बड़े जानने वाले, ख़बर रखने वाले (यानी ख़ुदा) ने ख़बर कर दी। ऐ (पैग़म्बर की) दोनों बीवियों ! अगर तुम अल्लाह के सामने तौबा कर लो तो तुम्हारे दिल माइल हो रहे हैं।'[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हलवा और शहद पसन्द था। जब अस्र पढ़कर आते तो अपनी बीवियों के यहां जाते और पहले किसी एक के पास चले जाते। चुनांचे एक दिन आप हज़रत हफ़सा बिन्त उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के यहां गए और हर दिन जितना उनके यहां ठहरते थे, उससे ज़्यादा ठहरे, इस पर मुझे ग़ैरत आई।

मैंने इसकी वजह मालूम की तो किसी ने मुझे बताया कि हज़रत हफ़सा रज़ि० की क़ौम की एक औरत ने उन्हें शहद की एक कुप्पी हदिया में दी थी, तो हज़रत हफ़सा रज़ि० ने उसमें से कुछ शहद हुज़ूर

1. बुख़ारी, मुस्लिम

सल्ल० को पिलाया है। (इस वजह से हुज़ूर सल्ल० को वहां देर लग गई।) मैंने कहा, ग़ौर से सुनो, अल्लाह की क़सम! हम हुज़ूर सल्ल० के लिए ज़रूर कोई तदबीर करेंगी। (ताकि हुज़ूर सल्ल० आगे हज़रत हफ़सा रज़ि के यहां ज़्यादा देर न लगाया करें।)

मैंने हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि हुज़ूर सल्ल० आपके यहां आएंगे, हुज़ूर सल्ल० जब तशरीफ़ लाएं, तो आप उनसे कहें कि आपने मग़ाफ़ीर खाई है? वह फ़रमाएंगे, नहीं। तो आप इनसे कहें, तो यह बू कैसी है, जो मुझे महसूस हो रही है? हुज़ूर सल्ल० फ़रमाएंगे, मुझे हफ़सा रज़ि० ने शहद पिलाया है। तो आप कह देना कि उस शहद की मक्खी ने उरफ़त पेड़ से रस चूसा होगा, (जिसकी वजह से मग़ाफ़ीर वाली बू शहद में आ गई होगी) मैं भी हुज़ूर सल्ल० को यही बात कहूंगा, ऐ सफ़िया! तुम भी हुज़ूर सल्ल० को यही बात कहना।

हज़रत सौदा रज़ि० कहती हैं, अल्लाह की क़सम! (ऐ आइशा रज़ि०!) तुम्हारी बात ख़त्म हुई ही थी कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे दरवाज़े पर तशरीफ़ ले आए, तो तुम्हारे डर की वजह से मैं हुज़ूर सल्ल० को तुम्हारी बात ऊंची आवाज़ से वहीं दरवाज़े पर ही कह देने लगी थी, लेकिन मैंने ख़ुद को रोका।

जब हुज़ूर सल्ल० मेरे पास पहुंच गए, तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या आपने मग़ाफ़ीर खाई है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। मैंने कहा, तो फिर यह बू कैसी है, जो मुझे महसूस हो रही है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हफ़सा रज़ि० ने मुझे शहद पिलाया था। मैंने कहा, उस शहद की मक्खी ने उर्फ़त पेड़ का रस चूसा होगा?

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं, जब हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए, तो मैंने भी यही कहा। जब हुज़ूर सल्ल० हज़रत सफ़िया रज़ि० के यहां गए, तो उन्होंने भी यही कहा। फिर हुज़ूर सल्ल० जब हफ़सा रज़ि० के यहां गए, तो उन्होंने हुज़ूर सल्ल० से कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या मैं आपको उस शहद में से पिलाऊं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है। हज़रत सौदा रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! हमने हुज़ूर सल्ल० को शहद पीने से रोका है। मैंने

उनसे कहा, आप ख़ामोश रहें।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, मेरे दिल में बड़ी आरज़ू थी कि मैं हज़रत उमर रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों में से उन दो औरतों के बारे में पूछूं, जिनके बारे में अल्लाह ने 'इन ततूबा इलल्लाहि फ़क़द सग़त क़ुलूबुकुमा' फ़रमाया है, लेकिन बहुत दिनों तक मुझे पूछने का मौक़ा न मिला। आख़िर एक बार हज़रत उमर रज़ि० हज पर तशरीफ़ ले गए। मैं भी उनकेसाथ हज पर गया।

हम लोग सफ़र कर रहे थे कि हज़रत उमर रज़ि० ज़रूरत से, रास्ते से एक तरफ़ को चले गए। मैं भी पानी का बरतन लेकर उनके साथ हो लिया। आप ज़रूरत से फ़ारिग़ होकर मेरे पास वापस तशरीफ़ लाए। मैंने आपके हाथों पर पानी डाला। आपने वुज़ू किया। मैंने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों में से वे दो औरतें कौन हैं, जिनके बारे में अल्लाह ने 'इन ततूबा इलल्लाहि फ़क़द सग़त क़ुलूबुकुमा' फ़रमाया है ?

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ऐ इब्ने अब्बास रज़ि० ! तुम पर ताज्जुब है (कि इल्म में इतने मशहूर हो और फिर तुम्हें मालूम नहीं कि ये औरतें कौन हैं ?)

हज़रत ज़ोहरी कहते हैं, हज़रत उमर रज़ि० को इस सवाल पर ताज्जुब तो हुआ, लेकिन फिर उन्होंने सारा क़िस्सा सुनाया, कुछ नहीं छिपाया और फ़रमाया, वे दोनों हफ़सा रज़ि० और आइशा रज़ि० हैं। फिर तफ़्सील से सारा क़िस्सा सुनाने लगे और फ़रमाया, हम क़ुरैश क़बीला वाले औरतों पर ग़ालिब थे। जब हम मदीना आए तो देखा कि यहां के मर्दों पर औरतें ग़ालिब हैं तो हमारी औरतें उनकी औरतों से सीखने लगीं। मेरा घर अवाली में क़बीला बनू उमैया बिन ज़ैद में था। मैं एक दिन अपनी बीवी पर ज़रा नाराज़ हुआ तो वह आगे से जवाब

1. तफ़्सीर, इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 387, जमउल फ़वाइद, भाग 1, पृ० 229, इब्ने साद, भाग 8, पृ० 85,

देने लगी। मैं उसके इस जवाब देने से बड़ा हैरान हुआ। मेरे लिए बिल्कुल नई बात थी।

वह कहने लगी, आप मेरे जवाब देने से क्यों हैरान हो रहे हैं? वह तो अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियां भी आपको जवाब दे देती हैं, बल्कि कुछ तो नाराज़ होकर हुज़ूर सल्ल० को सारा दिन रात तक छोड़े रखती हैं।

मैं यह सुनकर घर से चला और हफ़सा रज़ि० के पास गया और मैंने कहा, तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जवाब देती हो? उन्होंने कहा, जी हां।

मैंने कहा, तुममें से कुछ औरते हुज़ूर सल्ल० को सारा दिन रात तक छोड़े रखती हैं। उन्होंने कहा, जी हां।

मैंने कहा, तुममें से जो भी ऐसा करेगी, वह तो अपना बड़ा नुक़्सान करेगी और अगर अल्लाह के रसूल के नाराज़ होने की वजह से अल्लाह नाराज़ हो गए, तो फिर तो वह हलाक व बर्बाद हो जाएगी, इसलिए आइंदा कभी हुज़ूर सल्ल० का आगे से जवाब न देना और उनसे कुछ न मांगना, और मुझसे जो चाहे मांग लेना और तुम अपनी पड़ोसिन यानी हज़रत आइशा रज़ि० से धोखा न खाओ (कि वह हुज़ूर सल्ल० को आगे से जवाब दे देती है और हुज़ूर सल्ल० से नाराज़ हो जाती है, वह ऐसा कर सकती है) क्योंकि वह तुमसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है और हुज़ूर सल्ल० को उससे तुमसे ज़्यादा मुहब्बत है। (तुम ऐसा न करो।)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, मेरा एक अंसारी पड़ोसी था। हम दोनों बारी-बारी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाया करते थे। एक दिन वह जाता और सारे दिन में जो वह्य उतरती या और कोई बात पेश आती, वह शाम को आकर मुझे बता देता और एक दिन मैं जाता और शाम को वापस आकर सब कुछ उसे बता देता।

उन दिनों हमारे यहां इसका बहुत चर्चा था कि क़बीला ग़स्सान हम पर चढ़ाई करने के लिए तैयारी कर रहा है। चुनांचे एक दिन मेरा यह पड़ोसी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया और इशा में मेरे पास वापस आया।

उसने मेरा दरवाज़ा खटखटाया और मुझे आवाज़ दी। मैं बाहर आया, उसने कहा, एक बहुत बड़ा हादसा पेश आ गया है। मैंने कहा, क्या हुआ? क्या ग़स्सान ने चढ़ाई कर दी है? उसने कहा नहीं, बल्कि इससे बड़ा और ज़्यादा परेशानी में डालने वाला हादसा पेश आया है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पाक बीवियों को तलाक़ दे दी है।

मैंने कहा, हफ़्सा तो नामुराद हो गई और घाटे में पड़ गई और मुझे तो पहले ही ख़तरा था कि ऐसा हो जाएगा। सुबह की नमाज़ पढ़कर मैंने कपड़े पहने और मदीना गया। वहां से सीधे हफ़सा रज़ि० के यहां गया। वह रो रही थी। मैंने पूछा, क्या हुज़ूर सल्ल० ने तुम सबको तलाक़ दे दी है? उसने कहा, यह तो मुझे मालूम नहीं है, अलबत्ता हमसे अलग होकर बालाख़ाने में तशरीफ़ रखते हैं।

फिर मैं आपके काले ग़ुलाम के पास आया और उससे कहा, उमर रज़ि० को अन्दर आने की इजाज़त ले दो। वह ग़ुलाम अन्दर गया और बाहर आया। फिर उसने कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से आपका ज़िक्र किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे।

फिर मैं (मस्जिद) चला गया। जब मैं मिंबर के पास पहुंचा तो देखा कि बहुत से लोग बैठे हुए हैं। उनमें से कुछ लोग रो रहे हैं। मैं कुछ देर बैठा रहा। फिर जब मेरी बेचैनी बढ़ी तो मैंने जाकर फिर उस ग़ुलाम से कहा, उमर को इजाज़त ले दो।

वह ग़ुलाम अन्दर गया, फिर उसने बाहर आकर कहा कि मैंने हुज़ूर सल्ल० से आपका ज़िक्र किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे। मैं फिर मिंबर के पास जाकर बैठ गया, लेकिन बैठा न गया। मैंने जाकर फिर ग़ुलाम से कहा, उमर के लिए इजाज़त ले दो। वह अन्दर गया, फिर उसने बाहर आकर कहा, मैंने हुज़ूर सल्ल० से आपका ज़िक्र किया, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ख़ामोश रहे। मैं लौटने लगा, तो ग़ुलाम ने मुझे बुलाया और कहा, आप अन्दर चले जाएं। हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी है।

मैंने अन्दर जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम किया। आप एक ख़ाली बोरिए पर टेक लगाकर बैठे हुए थे और बोरिए

के निशान आपके पाक जिस्म पर उभरे हुए थे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है? हुज़ूर सल्ल० ने मेरी ओर सर उठाकर फ़रमाया, नहीं।

मैंने (ख़ुशी की वजह से) कहा, अल्लाहु अकबर, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने हमें देखा होगा कि हम क़ुरैशी लोग अपनी औरतों पर ग़ालिब थे। जब हम मदीना आए तो हमें यहां ऐसे लोग मिले, जिन पर उनकी औरतें ग़ालिब थीं, तो हमारी औरतें इनकी औरतों से सीखने लगीं। एक दिन मैं अपनी बीवी पर नाराज़ हुआ, तो वह आगे से मुझे जवाब देने लगी। मैं उसके जवाब देने पर बड़ा हैरान हुआ।

उसने कहा, आप मेरे जवाब देने पर क्या हैरान हो रहे हैं, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियां हुज़ूर सल्ल० को जवाब देती हैं, बल्कि सारा दिन रात तक हुज़ूर सल्ल० को छोड़े रखती हैं।

मैंने कहा, इनमें से जो भी ऐसा करेगी, वह नामुराद होगी और घाटे में रहेगी, अगर अल्लाह के रसूल के नाराज़ होने की वजह से अल्लाह नाराज़ हो गए, तो वह हलाक व बर्बाद हो जाएगी।

इस पर हुज़ूर सल्ल० मुस्कराने लगे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० !

फिर मैं हफ़सा रज़ि० के पास आया और मैंने उससे कहा, तुम अपनी पड़ोसन (हज़रत आइशा रज़ि०) से धोखा न खाना, वह तुमसे ज़्यादा ख़ूबसूरत है और हुज़ूर सल्ल० को उससे तुमसे ज़्यादा मुहब्बत है। हुज़ूर सल्ल० दोबारा मुस्कराए।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! जी लगाने की और बात करूं? आपने फ़रमाया, करो, फिर मैं बैठ गया और सर उठाकर हुज़ूर सल्ल० के घर पर नज़र डाली तो अल्लाह की क़सम ! मुझे सिर्फ़ तीन खालें बग़ैर रंगी हुई नज़र आईं। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप दुआ करें कि अल्लाह आपकी उम्मत में फैलाव फ़रमाए और अल्लाह ने रूम और फ़ारस में फैलाव कर रखा है, हालांकि वे अल्लाह की इबादत नहीं करते।

फिर आप सीधे होकर बैठ गए और आपने फ़रमाया, ऐ इब्ने ख़त्ताब रज़ि० ! क्या तुम अभी तक शक में हो? इन लोगों को इनकी नेकियों का बदला दुनिया ही में दे दिया गया है।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मेरे लिए इस्तिग़फ़ार फ़रमा दें, चूंकि हुज़ूर सल्ल० को अपनी पाक बीवियों पर ज़्यादा ग़ुस्सा आ गया था, इस वजह से आपने क़सम खा ली थी कि एक महीने तक इनके पास नहीं जाएंगे। आख़िर अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल० को तंबीह फ़रमाई।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी बीवियों से अलगाव अपना लिया तो मैं मस्जिद में गया और देखा कि सहाबा सोच में पड़े हुए हैं और कंकरियां उलट-पुलट रहे हैं और कह रहे हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है और यह वाक़िया परदे का हुक्म नाज़िल होने से पहले का है।

मैंने दिल में कहा कि मैं इस तलाक़ वाली बात का पता ज़रूर चलाऊंगा (कि हुज़ूर सल्ल० ने दी है या नहीं) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास जाकर उन्हें नसीहत करने की तफ़्सील बताई, फिर फ़रमाया, मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में गया तो आपके ग़ुलाम हज़रत रब्बाह रज़ियल्लाहु अन्हु बालाख़ाने की दहलीज़ पर मौजूद थे। मैंने आवाज़ देकर कहा, ऐ रब्बाह ! मुझे हुज़ूर सल्ल० से अन्दर आने की इजाज़त ले दो। फिर आगे पिछली हदीस जैसा मज़्मून ज़िक्र फ़रमाया।

फिर फ़रमाया, मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! औरतों का मामला आपके लिए कुछ मुश्किल नहीं है। अगर आपने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है तो कोई फ़िक्र और परेशानी की बात नहीं है, क्योंकि अल्लाह आपके साथ हैं और अल्लाह के फ़रिश्ते, हज़रत जिब्रील, हज़रत मीकाईल, हज़रत अबूबक्र और सारे मुसलमान आपके

1. बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, नसई।

साथ हैं और मैं इस बात पर अल्लाह की तारीफ़ करता हूं कि जब भी मैं कोई बात कहा करता था, तो मुझे उम्मीद होती थी कि अल्लाह ज़रूर मेरी बात की तस्दीक़ फ़रमाएंगे।

चुनांचे इस बार भी ऐसा ही हुआ और यह आयत उतरी—

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ

और यह आयत उतरी—

وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ (سورت تحریم آیت ۴،۵)

'अगर पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ दे दें तो इनका परवरदिगार बहुत जल्द तुम्हारे बदले इनको तुमसे अच्छी बीवियां दे देगा और अगर (इसी तरह) पैग़म्बर के मुक़ाबले में तुम दोनों कार्रवाइयां करती रहीं, तो याद रखो, पैग़म्बर का रफ़ीक़ अल्लाह है और जिब्रील हैं, और नेक मुसलमान हैं और इनके अलावा फ़रिश्ते (आपके) मददगार हैं।'

(सूरः तहरीम, आयत 5, 4)

मैंने पूछा, 'क्या आपने इन्हें तलाक़ दे दी है?' हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं।

फिर मैंने मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर ज़ोर से ऊंची आवाज़ में एलान किया कि हुज़ूर ने अपनी बीवियों को तलाक़ नहीं दी है। इस पर यह आयत उतरी—

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ
وَاِلٰٓى اُولِي الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ (سورت نساء
آیت ۸۳)

'और जब इन लोगों को किसी बात की ख़बर पहुंचती है, चाहे अम्न हो या डर, तो इसको मशहूर कर देते हैं और अगर ये लोग इसको रसूल के और जो इनमें ऐसे मामलों को समझते हैं, उनके ऊपर हवाला रखते तो इसको वे लोग तो पहचान ही लेते जो इनमें इसकी जांच कर लिया करते हैं।'

(सूरः निसा, आयत 83)

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं, उस तलाक़ के बारे में मैंने ही जांच की थी।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मकान में बैठे हुए थे और लोग हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े पर बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत अबूबक्र आए और उन्होंने अन्दर जाने की इजाज़त मांगी, लेकिन उन्हें इजाज़त न मिली, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर इजाज़त मांगी, तो उन्हें भी न मिली, लेकिन थोड़ी देर बाद दोनों को इजाज़त मिल गई।

दोनों अन्दर गए, तो हुज़ूर सल्ल० बैठे हुए थे और आपके आस-पास आपकी पाक बीवियां बैठी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल० बिल्कुल ख़ामोश थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अपने दिल में कहा कि मैं ज़रूर ऐसी बात करूंगा जिससे हुज़ूर सल्ल० को हंसी आ जाए, तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर आप देखते कि मेरी बीवी बिन्त ज़ैद ने अभी मुझसे ख़र्चा मांगा था, तो मैंने उसकी गरदन पर मारा था।

यह सुनकर हुज़ूर सल्ल० हंस पड़े और इतने हंसे कि आपके मुबारक दांत ज़ाहिर हो गए। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये भी मेरे चारों ओर बैठी हुई मुझसे ख़र्चा मांग रही हैं।

यह सुनकर हज़रत अबूबक्र रज़ि० हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु को मारने के लिए उनकी ओर उठे और हज़रत उमर रज़ि० हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा की ओर उठे। दोनों कह रहे थे तुम दोनों हुज़ूर सल्ल० से वह कुछ मांगती हो जो उनके पास नहीं है।

हुज़ूर सल्ल०ने इन दोनों को मारने से रोक दिया, तो आपकी पाक बीवियां कहने लगीं, अल्लाह की क़सम ! इस मज्लिस के बाद हम कभी हुज़ूर सल्ल० से ऐसी चीज़ नहीं मांगेंगी जो हुज़ूर सल्ल० के पास न हो। फिर अल्लाह ने अख़्तियार देने वाली आयत उतारी जिसमें पाक बीवियों को हुज़ूर सल्ल० के पास रहने, न रहने में अल्लाह ने अख़्तियार दिया है।

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 4, पृ० 389, कंज़, भाग 1, पृ० 269,

हुज़ूर सल्ल० सबसे पहले हज़रत आइशा रज़िल्लाहु अन्हा के पास गए और उनसे फ़रमाया मैं तुम्हारे सामने एक बात रखूंगा, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसमें जल्दबाज़ी से काम न लेना, बल्कि मां-बाप से मश्विरा करके कोई फ़ैसला करना।

हज़रत आइशा रज़ि० ने पूछा, वह बात क्या है?

हुज़ूर सल्ल० ने यह आयत तिलावत फ़रमाई--

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ (سورت احزاب آیت ۲۸، ۲۹)

'ऐ नबी! आप अपनी बीवियों से फ़रमा दीजिए कि तुम अगर दुनिया की ज़िंदगी (का ऐश) और उसकी बहार चाहती हो, तो आओ, मैं तुमको कुछ (दुनिया) के माल व मत्ता दे दूं और तुमको भले तरीक़े से विदा कर दूं और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो, और उसके रसूल को और आख़िरत को, तो तुममें भले लोगों के लिए अल्लाह ने बड़ा बदला तैयार कर रखा है।' (सूरः अहज़ाब, आयत 28, 29)

हज़रत आइशा रज़ि० ने कहा, क्या मैं आपके बारे में मां-बाप से मश्विरा करूं? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं तो अल्लाह और उसके रसूल को ही अपनाऊंगी और मैं आपसे दरख़्वास्त करती हूं कि आप अपनी बीवियों में से किसी को न बताएं कि मैंने क्या अख़्तियार किया है।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह ने मुझे सख़्ती करने वाला बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारे अख़्तियार के बारे में जो औरत भी पूछेगी, मैं उसे बता दूंगा।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि जब अख़्तियार वाली आयत उतरी, तो हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बीवियों में से सबसे पहले मुझसे पूछा और फ़रमाया, मैं तुम्हारे सामने एक बात रखूंगा, तुम उसमें जल्दी फ़ैसला न करना, बल्कि अपने मां-बाप से मश्विरा करके फ़ैसला करना। हुज़ूर सल्ल० जानते थे कि मेरे मां-बाप हुज़ूर सल्ल० को छोड़ने का कभी

1. बुख़ारी, मुस्लिम,

मश्विरा न देंगे।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

'या ऐयुहन्नबीयु क़ुल लि अज़्वाजिक . . . ' (दो आयतें)

मैंने कहा, क्या मैं इस बारे में अपने मां-बाप से मश्विरा करूं? हरगिज़ नहीं, मैं तो अल्लाह, उसके रसूल और आख़िरत को चाहती हूं।

फिर हुज़ूर सल्ल० ने अपनी तमाम बीवियों को अख़्तियार दिया, लेकिन सबने वही जवाब दिया जो हज़रत आइशा रज़ि० ने दिया था।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम पाक बीवियों को (अपने पास रहने, न रहने में) अख़्तियार दिया था और हमने आपके पास रहने को ही अख़्तियार किया था और हुज़ूर सल्ल० ने इसे हम पर कोई तलाक़ वग़ैरह न समझा।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, कि जब तुम मुझसे राज़ी होती हो और जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो तो (अगरचे तुम दोनों हालतें मुझसे छिपाती हो, लेकिन) मुझे पता चल जाता है।

मैंने कहा, आपको इसका कैसे पता चलता है?

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जब तुम मुझसे राज़ी होती हो, तो कहती हो, नहीं। मुहम्मद के रब की क़सम! और जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो, तो कहती हो, नहीं, इब्राहीम के रब की क़सम!

मैंने कहा, जी हां! अल्लाह की क़सम! ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! मैं सिर्फ़ आपका नाम छोड़ती हूं, दिल में आपकी मुहब्बत में कमी नहीं होती।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थी। मैंने दौड़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु

1. बुख़ारी, मुस्लिम,
2. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 3, पृ० 481,
3. मिश्कात, पृ० 272,

अलैहि व सल्लम से मुक़ाबला किया, तो मैं हुज़ूर सल्ल० से आगे निकल गई और यह मुक़ाबला पैदल दौड़ने में हुआ था। फिर जब मेरा जिस्म भारी हो गया, तो फिर मैंने आपसे दौड़ में मुक़ाबला किया, लेकिन इस बार हुज़ूर सल्ल० मुझसे आगे निकल गए और आपने फ़रमाया, मेरी यह जीत तुम्हारी उस जीत के बदले में है।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा (ख़ाला जान) का मेहमान बना और उस रात हज़रत मैमूना रज़ि० को (माहवारी की वजह से) नमाज़ नहीं पढ़नी थी। लेटते वक़्त वह एक चादर लाईं, फिर दूसरी चादर लाईं जिसे बिस्तर के सिरहाने रख दिया। फिर उन्होंने लेटकर अपने ऊपर चादर डाल ली और अपने पहलू में मेरे लिए भी एक बिस्तर बिछा दिया और मैं इनके पास इनके तकिए पर सर रखकर लेट गया।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए। आप इशा की नमाज़ पढ़ चुके थे। बिस्तर के पास आकर सिरहाने से वह चादर उठाई और उसे लुंगी के तौर पर बांधा और अपने दोनों कपड़े उतार कर टांग दिए। फिर हज़रत मैमूना रज़ि० के पास उनकी चादर में लेट गए। आख़िर रात में आप खड़े होकर एक लटके हुए मश्कीज़े की ओर गए। आपने उसे खोला और उससे वुज़ू करने लगे। मेरा इरादा हुआ कि मैं खड़े होकर पानी डालूं, लेकिन फिर मैंने सोचा कि इस तरह हुज़ूर सल्ल० को पता चल जाएगा कि मैं जाग रहा हूं और शायद आपको अच्छा न लगे।

फिर आप बिस्तर के पास आए और वह लुंगी उतारकर दोनों कपड़े पहन लिए, फिर नमाज़ पढ़ने की जगह तशरीफ़ ले गए और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। फिर मैं भी उठा और वुज़ू करके आपके बाईं तरफ़ आकर खड़ा हो गया। आपने पीछे से हाथ से मुझे पकड़ा और मुझे अपने दाईं तरफ़ खड़ा कर लिया। आपने तेरह रकअतें पढ़ीं, मैंने भी आपके साथ तेरह रकअतें पढ़ीं।

फिर आप बैठ गए। मैं भी आपके साथ बैठ गया, फिर आपको ऊंघ

---

1. मिश्कात पृ० 273,

आ गई जिसकी वजह से आपका मुबारक गाल मेरे गाल के क़रीब आ गया और मुझे आपके सांस की आवाज़ ऐसे सुनाई दे रही थी जैसे कि सोने वाले की होती है, फिर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर कहा, नमाज़, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हुज़ूर सल्ल० खड़े होकर मस्जिद तशरीफ़ ले गए, वहां आपने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी। हज़रत बिलाल रज़ि० ने नमाज़ के लिए इक़ामत कही।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बुढ़िया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आई। हुज़ूर सल्ल० ने उससे पूछा, तुम कौन हो? उसने कहा, जस्सामा मुज़नीया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, नहीं आज से तुम्हारा नाम हुस्साना मुज़नीया है, तुम कैसी हो? तुम्हारा क्या हाल है? हमारे बाद तुम लोग कैसे रहे?

उसने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ख़ैरियत है, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों। जब वह बाहर चली गई तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने इस बुढ़िया पर बड़ी तवज्जोह फ़रमाई।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! यह ख़दीजा रज़ि० के ज़माने में हमारे पास आया करती थी और पुराने ताल्लुक़ात की रियायत करना ईमान में से हैं।[2]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं, एक बुढ़िया हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया करती थी। हुज़ूर सल्ल० उसके आने से बहुत ख़ुश होते थे और उसका इकराम फ़रमाते थे। मैंने कहा, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों, आप इस बुढ़िया का जितना ख़्याल फ़रमाते हैं, उतना किसी और का नहीं फ़रमाते हैं।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह ख़दीजा रज़ि० के पास आया करती थी और क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ताल्लुक़ और मुहब्बत वाले का इकराम करना ईमान में से है।[3]

---

1. कंज़, भाग 5, पृ० 119,
2. बैहक़ी, इब्ने नज्जार,
3. कंज़, भाग 7, पृ० 115,

हज़रत अबुत्तुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जअर्राना में गोश्त बांट रहे थे। मैं उस वक़्त नवउम्र लड़का था और ऊंट का एक अंग उठा सकता था कि इतने में एक औरत हुज़ूर सल्ल० के पास आई। हुज़ूर सल्ल० ने उसके लिए अपनी चादर बिछाई।

मैंने पूछा, यह कौन हैं? हुज़ूर सल्ल० ने बताया, यह उनकी वह वालिदा (मां) हैं जिन्होंने आपको बचपन में दूध पिलाया था।[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गया तो मैंने देखा कि एक छोटा-सा हब्शी लड़का हुज़ूर सल्ल० की कमर दबा रहा है। मैंने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या आपको कोई तक्लीफ़ है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऊंटनी ने आज रात मुझे गिरा दिया था।[2]

हज़रत क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जूती पहनाया करते थे, फिर लाठी लेकर हुज़ूर सल्ल० के आगे चलते। जब हुज़ूर सल्ल० अपनी मज्लिस में पहुंच जाते, तो वह हुज़ूर सल्ल० की दोनों जूतियां उतारकर अपने बाज़ुओं में डाल लेते और हुज़ूर सल्ल० को लाठी दे देते। फिर जब आप मज्लिस से उठने लगते, तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० हुज़ूर सल्ल० को जूती पहनाते, फिर लाठी लेकर हुज़ूर सल्ल० के आगे चलते, यहां तक वह हुज़ूर सल्ल० से पहले हुजरे में दाख़िल होते।[3]

हज़रत अबू मलीह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुस्ल फ़रमाते, तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु आपके लिए परदा करते और जब आप सो जाते तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० आपको उठाते और आपके साथ अकेले चलते।[4]

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 188,
2. कंज़, भाग 4, पृ० 44,
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 153
4. इब्ने साद

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ़ लाए, उस वक़्त मेरी उम्र दस साल थी और जब हुज़ूर सल्ल० का इन्तिक़ाल हुआ, उस वक़्त मेरी उम्र बीस साल थी और मेरी मां और ख़ालाएं वग़ैरह मुझे हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत की तर्ग़ीब दिया करती थीं।[1]

हज़रत सुमामा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत अनस रज़ि० से कहा, क्या आप बद्र की लड़ाई में शरीक हुए थे?

हज़रत अनस रज़ि० ने फ़रमाया, तेरी मां न रहे। मैं बद्र की लड़ाई से कहां ग़ायब रह सकता था?

हज़रत मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अंसारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र तशरीफ़ ले गए तो हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० भी हुज़ूर सल्ल० के साथ गए। उस वक़्त वह नवउम्र लड़के थे और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत किया करते थे।[2]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि बीस अंसार नवजवान अलग-अलग ज़रूरतों के लिए हर वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहा करते थे। जब आपको कोई काम पेश आता, तो उसके लिए उन्हें भेज देते।[3]

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि चार या पांच सहाबी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से या हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े से कभी अलग न होते थे, बल्कि हर वक़्त पड़े रहते थे।[4]

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग बारी-बारी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रहा करते थे कि आपको कोई ज़रूरत होगी या आप किसी काम के लिए हमें भेज देंगे। इस तरह आख़िरत के सवाब की उम्मीद में बारी-बारी ख़िदमत

---

1. इब्ने अबी शैबा, अबू नुऐम,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 141,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 22
4. हैसमी, भाग 9, पृ० 22,

करने वाले बहुत हो गए। चुनांचे एक दिन हुज़ूर सल्ल० हमारे पास बाहर तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हम लोग आपस में दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे।

आपने फ़रमाया, यह क्या कानाफूसी हो रही है? क्या मैंने तुम्हें कानाफूसी करने से मना नहीं किया था?[1]

हज़रत आसिम बिन सुफ़ियान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु या हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु को यह फ़रमाते हुए सुना कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस बात की इजाज़त मांगी कि मैं आपके दरवाज़े पर रात गुज़ारूं, ताकि आपको रात में जब भी कोई ज़रूरत पेश आए तो आप मुझे उठा लें। हुज़ूर सल्ल० ने इजाज़त दे दी और मैंने वह रात वहां गुज़ारी।[2]

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रमज़ान के महीने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नमाज़ पढ़ी। फिर आप खड़े होकर नहाने लगे, तो मैंने आपके लिए परदा किया। (ग़ुस्ल के बाद) बरतन में कुछ पानी बच गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर तुम चाहो तो इसी से नहा लो और चाहो तो इसमें और पानी मिला लो।

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपका बचा हुआ यह पानी मुझे और पानी से ज़्यादा महबूब है। चुनांचे मैंने उसी से ग़ुस्ल किया और हुज़ूर सल्ल० मेरे लिए परदा करने लगे, तो मैंने कहा, आप मेरे लिए परदा न करें। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, नहीं। जिस तरह तुमने मेरे लिए परदा किया इसी तरह मैं भी तुम्हारे लिए ज़रूर परदा करूंगा।[3]

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ज़्यादा बच्चों पर शफ़ीक़ और मेहरबान और किसी को नहीं देखा। मदीना की अवाली बस्तियों में (आपके साहबज़ादे) हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अनहु के लिए दूध पीने

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 22,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 22,
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 164.

का इन्तिज़ाम हुआ था। हुज़ूर सल्ल० वहां तशरीफ़ ले जाते, हम आपके साथ होते। आप घर के अन्दर तशरीफ़ ले जाते, हालांकि अन्दर धुंवां हो रहा होता था, क्योंकि दूध पिलाने वाली औरत के शौहर लोहार थे। आप हज़रत इब्राहीम रज़ि० को लेकर चूमते और फिर वापस कर देते।

जब हज़रत इब्राहीम रज़ि० का इन्तिक़ाल हुआ तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि इब्राहीम मेरा बेटा है, दूध पीने के ज़माने में उसका इन्तिक़ाल हुआ है। उसके लिए दूध पिलाने वाली दो हूरें मुक़र्रर हुई हैं, जो जन्नत में इसके दूध पीने की बाक़ी मुद्दत पूरी करेंगी।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत उबैदुल्लाह और कसीर बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम को एक लाइन में खड़ा करते और फ़रमाते कि तुममें से जो पहले मेरे पास आएगा, उसे यह इनाम मिलेगा, तो वे सारे हुज़ूर सल्ल० के पास पहले पहुंचने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते और आकर आपकी कमर और सीने पर गिरते। हुज़ूर सल्ल० उन्हें चूमते और अपने से चिमटा लेते।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो आपके ख़ानदान के बच्चे आपके स्वागत के लिए मदीना से बाहर जाते।

चुनांचे एक बार एक सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो मुझे घरवाले पहले बाहर ले गए, तो आपने मुझे अपने आगे बिठा लिया, फिर लोग हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के दो बेटों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा में से एक को लाए। उन्हें हुज़ूर सल्ल० ने अपने पीछे बिठा लिया, तो इस तरह हम तीन आदमी एक सवारी पर सवार मदीना में दाख़िल हुए।[3]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मैं

---

1. मुस्लिम, भाग 2, पृ० 254, बिदाया, भाग 6, पृ० 45
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 17
3. इब्ने असाकिर.

बच्चों के साथ खेल रहा था कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास से सवारी पर गुज़रे। आपने मुझे और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के एक नव-उम्र बेटे को सवारी पर बिठा लिया। इस तरह हम सवारी पर तीन आदमी हो गए।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि यह वाक़िया देखने के क़ाबिल था कि मैं हज़रत उबैदुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत कुसम बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम बच्चे थे और हम लोग खेल रहे थे कि इतने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सवारी पर हमारे पास से गुज़रे। आपने फ़रमाया, (ऐ लोगो !) यह बच्चा उठाकर मुझे दे दो।

चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने मुझे अपने आगे बिठा लिया, फिर फ़रमाया, उसे (कुसम) भी उठाकर मुझे दे दो। (लोगों ने उठाकर दे दिया) और उन्हें अपने पीछे बिठा लिया। हज़रत अब्बास रज़ि० को हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि० से मुहब्बत हज़रत कुसम रज़ि० से ज़्यादा था। आपने हज़रत उबैदुल्लाह रज़ि० को रहने दिया और हज़रत कुसम को बिठा लिया, तो इसमें अपने चचा की ज़्यादा मुहब्बत का ख़्याल न किया और उनसे कोई शर्म महसूस न की।

फिर आपने मेरे सर पर तीन बार हाथ फेरा। जब भी आप सर पर हाथ फेरते, तो फ़रमाते, ऐ अल्लाह ! तू जाफ़र की औलाद में जाफ़र का ख़लीफ़ा बन जा। (यानी वह तो शहीद होकर दुनिया से जा चुके, अब तू ही उनके बच्चों को संभाल ले।)[2]

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कंधों पर देखा, तो मैंने कहा, तुम दोनों के नीचे कितना अच्छा घोड़ा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये दोनों घुड़सवार भी तो कितने अच्छे हैं।[3]

1. इब्ने असाकिर,
2. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 222
3. कंज़, भाग 7, पृ० 106, मज्मा, भाग 9, पृ० 182,

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को कंधे पर उठाए हुए बाहर तशरीफ़ लाए, तो एक आदमी ने कहा, अरे मियां ! तुम बड़े उम्दा सवार पर सवार हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, यह सवार भी तो बहुत उम्दा है।[1]

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे कि इतने में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों या दोनों में से एक आए और आकर हुज़ूर सल्ल० (उस वक़्त आप सज्दे में थे) की पीठ पर सवार हुए। हुज़ूर सल्ल० ने जब (सज्दे से) सर उठाया तो उन्हें हाथ से थामे रखा और (नमाज़ के बाद) फ़रमाया, तुम्हारी सवारी कितनी उम्दा है।[2]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो मैंने देखा कि हुज़ूर सल्ल० अपने दोनों हाथों और दोनों घुटनों पर चल रहे हैं और हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा आपकी कमर पर बैठे हुए हैं और फ़रमा रहे हैं, तुम दोनों का ऊंट बड़ा उम्दा है और तुम दोनों बहुत अच्छा बोझ हो।[3]

हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आस-पास बैठे हुए थे कि इतने में हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा आईं और उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! हसन और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा गुम हो गए हैं। इस वक़्त दिन चढ़ चुका था। हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया, उठो और मेरे दोनों बेटों को तलाश करो।

चुनांचे हर आदमी ने अपना रास्ता लिया और चल पड़ा और मैं हुज़ूर सल्ल० का रास्ता लेकर चल पड़ा। हुज़ूर सल्ल० चलते रहे, यहां

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 104,
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 182,
3. हैसमी, भाग 9, पृ० 182,

तक कि एक पहाड़ के दामन में पहुंच गए तो देखा कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि० दोनों एक दूसरे से चिमटे हुए खड़े हैं और पास ही एक काला नाग अपनी दुम पर खड़ा है, जिसके मुंह से आग की चिंगारियां निकल रही हैं। (शायद अल्लाह ने नाग भेजा ताकि बच्चों को आगे जाने से रोके।)

हुज़ूर सल्ल० जल्दी से उस नाग की ओर बढ़े। उस नाग ने हुज़ूर सल्ल० को मुड़कर देखा और चल पड़ा और एक सूराख में दाख़िल हो गया। फिर हुज़ूर सल्ल० दोनों के पास गए और दोनों के चेहरे पर हाथ फेरा और फ़रमाया, मेरे मां-बाप तुम दोनों पर क़ुर्बान हों। तुम दोनों अल्लाह के यहां कितने इज़्ज़त के क़ाबिल हो, फिर एक को दाहिने कंधे पर और दूसरे को बाएं कंधे पर बिठा लिया।

मैंने कहा, तुम दोनों को ख़ुशख़बरी हो कि तुम्हारी सवारी बहुत ही उम्दा है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ये दोनों बहुत अच्छे सवार हैं और इनके बाप इन दोनों से बेहतर हैं।[1]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। हमें किसी ने खाने के लिए बुलाया, (हम हुज़ूर सल्ल० के साथ खाने के लिए चले, तो) रास्ते में हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु मिले जो बच्चों के साथ खेल रहे थे। हुज़ूर सल्ल० जल्दी से लोगों से आगे बढ़े और उन्हें पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। हज़रत हुसैन रज़ि० इधर-उधर भागने लगे। हुज़ूर सल्ल० और हज़रत हुसैन रज़ि० एक दूसरे के साथ हंसने लगे, आख़िर हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें पकड़ लिया और एक हाथ इनकी ठोढ़ी पर और दूसरा उनके सर और कानों के दर्मियान रखा और अपने से चिमटा कर उनका बोसा लिया, फिर फ़रमाया, हुसैन रज़ि० मुझमें से है और मैं हुसैन रज़ि० में से हूं। जो इनसे मुहब्बत करे। अल्लाह उससे मुहब्बत करे। हसन और हुसैन रज़ि० दोनों नवासों में से हैं।[2]

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 182, कंज़, भाग 7, पृ० 107
2. कंज़, भाग 7, पृ० 107

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का रहन-सहन

हज़रत अबू इस्हाक़ सबीओ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी मैली-कुचैली पुराने कपड़ों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के पास आईं। उन्होंने पूछा, तुम्हें क्या हुआ है? जो तुमने ऐसी शक्ल व सूरत बना रखी है?

उनकी बीवी ने कहा, हज़रत उस्मान रज़ि० रात भर इबादत करते हैं और दिन भर रोज़ा रखते हैं। किसी ने यह बात हुज़ूर सल्ल० को बताई। जब हुज़ूर सल्ल० की हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि० से मुलाक़ात हुई तो आप उन पर नाराज़ हुए और फ़रमाया, क्या तुम मेरे नमूने पर नहीं चलते हो?

उन्होंने कहा, क्यों नहीं? अल्लाह मुझे आप पर कुरबान करे।

इसके बाद उनकी बीवी अच्छी शक्ल व सूरत में अच्छी ख़ुश्बू लगाकर आईं और जब हज़रत उस्मान रज़ि० का इंतिक़ाल हुआ तो उन्होंने ये शेर (पद) कहे—

يَا عَيْنُ جُودِي بِدَمْعٍ غَيْرِ مَمْنُونٍ   عَلَى رَزِيَّةِ عُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ

'ऐ आंख! उस्मान बिन मज़ऊन की (वफ़ात की) मुसीबत पर ऐसे आंसू बहा जो कभी न रुकें।'

عَلَى امْرِئٍ بَاتَ فِي رِضْوَانِ خَالِقِهِ   طُوبَى لَهُ مِنْ فَقِيدِ الشَّخْصِ مَدْفُونٍ

'ऐसे आदमी पर आंसू बहा जो अपने पैदा करने वाले को राज़ी करने में सारी रात गुज़ार देता था। ये दफ़न होकर गुम हो गए हैं। इनके लिए जन्नत का तूबा पेड़ है।'

طَابَ الْبَقِيعُ لَهُ سُكْنَى وَغَرْقَدُهُ   وَأَشْرَقَتْ أَرْضُهُ مِنْ بَعْدِ تَفْتِينٍ

'बक़ीअ और उसके ग़रक़द पेड़ों में उसका ठिकाना बहुत ही उम्दा बना है और बक़ीअ की ज़मीन कुफ़्फ़ार के दफ़न होने की वजह से फ़िल्ने वाली थी। अब हज़रत उस्मान रज़ि० के दफ़न होने से रोशन हो गई।'

وَأُوْدِيَتِ الْقَلْبُ حُزْنًا لَا انْقِطَاعَ لَهُ حَتَّى الْمَمَاتِ فَمَا تَرْقَى لَهُ شُؤُوْنِي

'और उनकी मौत की वजह से दिल में ऐसा ग़म पैदा हुआ है जो मौत तक ख़त्म नहीं होगा और इनके लिए आंसुओं की रगें कभी न सूखेंगी।'[1]

हज़रत उर्वः की रिवायत में हज़रत उस्मान रज़ि॰ की बीवी का नाम ख़ौला बिन्त हकीम बताया गया है और यह कि वह हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गई थीं और इनकी रिवायत में यह भी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ उस्मान रज़ि॰ ! सन्यास को हमारे लिए सवाब दिलाने वाली इबादत नहीं बताया गया है। मैं तुम्हारे लिए अच्छा नमूना नहीं हूं। अल्लाह की क़सम ! तुम लोगों में मैं अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाला और उसकी हदों की सबसे ज़्यादा हिफ़ाज़त करने वाला मैं हूं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे बाप ने क़ुरैश की एक औरत से मेरी शादी की। जब वह मेरे पास आई तो मैंने इसकी कोई परवाह न की, क्योंकि मुझे नमाज़-रोज़े जैसी इबादत का बहुत शौक़ था।

एक बार (मेरे बाप) हज़रत अम्र बिन आस रज़ि॰ अपनी बहू (यानी मेरी बीवी) के पास गए और उससे पूछा, तुमने अपने शौहर को कैसा पाया? उसने कहा, वह अच्छे आदमी हैं। या कहा, अच्छे शौहर हैं, लेकिन अभी तक उन्होंने हमारे किसी पहलू को खोलकर देखा ही नहीं और हमारे बिस्तर के क़रीब ही नहीं आए।

हज़रत अम्र रज़ि॰ मेरी ओर मुतवज्जह हुए और मुझे ख़ूब बुरा-भला कहा कि मैंने क़ुरैश की ख़ानदानी औरत से तेरी शादी की और तूने उसे बीच में लटका रखा है, (तू उसके पास जाता ही नहीं।) फिर उन्होंने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरी शिकायत कर दी। हुज़ूर सल्ल॰ ने आदमी भेजकर मुझे बुलाया। मैं हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में गया।

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ॰ 106, इब्ने साद, भाग 3, पृ॰ 394, कंज़, भाग 8, पृ॰ 305,

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम दिन यह रोज़े रखते हो? मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम रात भर इबादत करते हो? मैंने कहा, जी हां।

हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लेकिन मैं तो कभी रोज़ा रखता हूं और कभी इफ़्तार करता हूं और रात को कभी नमाज़ पढ़ता हूं और कभी सोता हूं और बीवियों के पास भी जाता हूं (यह मेरी सुन्नत है) और जो मेरी सुन्नत से मुंह मोड़े, वह मुझसे नहीं। (उसका मुझसे कोई ताल्लुक़ नहीं है।)

फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, महीने में एक क़ुरआन ख़त्म कर लिया करो। मैंने कहा, मुझमें इससे ज़्यादा पढ़ने की ताक़त है। आपने फ़रमाया, दस दिन में एक ख़त्म कर लिया करो। मैंने कहा, मुझमें इससे भी ज़्यादा की ताक़त है। आपने फ़रमाया, अच्छा, तीन दिन में ख़त्म कर लिया करो। फिर आपने फ़रमाया, हर महीने तीन दिन रोज़े रखा करो। मैंने कहा, मुझमें इससे ज़्यादा की ताक़त है। आप दिन बढ़ाते रहे, यहां तक कि आपने फ़रमाया, एक दिन रोज़ा रखा करो और एक दिन इफ़्तार किया करो, क्योंकि ये बेहतरीन रोज़े हैं और ये मेरे भाई दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े हैं।

हज़रत हुसैन की हदीस में यह है कि फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इबादत के हर शौक़ीन पर कुछ मुद्दत ऐसी आती है जिसमें उसे इबादत का बहुत जोश व जज़्बा होता है और जोश व जज़्बा कुछ अर्से चलता है, फिर उसमें कमी आ जाती है। जब कमी आती है तो कोई उस वक़्त सुन्नत तरीक़ा अख़्तियार करता है और कोई बिदअत तरीक़ों को। जिसने जोश व जज़्बे की कमी के ज़माने में सुन्नत तरीक़े को अख़्तियार किया, वह हिदायत पा गया और जो किसी और तरफ़ चला गया, वह तबाह व बर्बाद हो गया।

हज़रत मुजाहिद कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा जब बूढ़े और कमज़ोर हो गए, तो वह कई दिन लगातार रोज़े रखते, फिर इसके बाद कुछ दिन न रखते, ताकि कुछ ताक़त आ जाए और

इसी तरह वह क़ुरआन की मंज़िल पढ़ा करते, कभी ज़्यादा पढ़ते और कभी कम। लेकिन तीन या सात दिन में मिक़्दार पूरी कर लिया करते।

फिर इसके बाद कमज़ोरी बढ़ जाने के ज़माने में कहा करते थे कि मैं अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रुख़्सत क़ुबूल कर लेता तो यह मुझे उस इबादत की ज़्यादती से ज़्यादा महबूब होता, जिसे मैंने अख़्तियार किया है, लेकिन मैं एक तरीक़े को अपनाते हुए हुज़ूर सल्ल० से जुदा हुआ हूं, अब मुझे अच्छा नहीं लगता कि मैं इसे छोड़कर कोई और तरीक़ा अपनाऊं। (यानी हुज़ूर सल्ल० की ज़िंदगी में आपके इंतिक़ाल तक जो तरीक़ा मैंने रोज़ाना तिलावत के लिए अपना लिया था, अब मैं उनमें कमी करना अच्छा नहीं समझता, चाहे मुझे कितनी मशक़्क़त करनी पड़े, उन्हें ही करूंगा।[1]

हज़रत अबू हुजैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अनहु और हज़रत अबुद्दर्दा के दर्मियान भाईचारा कराया। एक दिन हज़रत सलमान रज़ि० हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को मिलने आए तो उन्होंने देखा कि हज़रत उम्मे दरदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पुराने सादा से कपड़े पहन रखे हैं। तो उनसे कहा, तुम्हें क्या हुआ? (तुमने ऐसे कपड़े क्यों पहन रखे हैं?)

उन्होंने कहा, आपके भाई हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० को दुनिया का चाव बिल्कुल नहीं है। इतने में हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० आ गए और उन्होंने हज़रत सलमान रज़ि० के लिए खाना तैयार किया और उनसे कहा, आप खाएं मेरा तो रोज़ा है। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, जब तक आप नहीं खाएंगे, मैं नहीं खाऊंगा। चुनांचे हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने खाना खा लिया।

जब रात हुई तो हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० इबादत के लिए खड़े होने लगे। हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, अभी तो सो जाओ। चुनांचे वह सो गए। कुछ देर बाद फिर खड़े होने लगे तो हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा, अभी और सो जाओ। जब आख़िर रात हुई तो हज़रत सलमान

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 285, सिफ़तुस्सफ़वा, भाग 1, पृ० 271,

रज़ि० ने कहा, अब खड़े हो जाओ। फिर दोनों ने नमाज़ पढ़ी। फिर हज़रत सलमान रज़ि० ने इनसे फ़रमाया, आपके रब का भी आप पर हक़ है, लेकिन आपके नफ़्स का भी आप पर हक़ है और आपके घरवालों का भी आप पर हक़ है। हर हक़ वाले को उसका हक़ दो।

फिर हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० ने जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये सारी बातें बताईं, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सलमान रज़ि० ने ठीक कहा।[1]

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे शादी की तो इनके पास ज़मीन थी और एक घोड़ा था। इसके अलावा इनके पास कोई माल था, न ग़ुलाम और न कोई और चीज़। घोड़े की ख़िदमत के सारे काम हज़रत ज़ुबैर रज़ि० के बजाए मैं ही करती थी, इसकी देख-भाल करती थी, इसके लिए घास चारा वग़ैरह लाती थी और कुंए से पानी खींचने वाले ऊंट के लिए खजूर की गुठलियां कूटती थी। इसके लिए घास वग़ैरह लाती थी, उसे पानी पिलाती थी और कुएं से पानी निकालने के लिए बड़े डोल को ख़ुद ही सीती थी और घर का आटा भी गूंधती थी, लेकिन मुझे रोटी अच्छी पकानी नहीं आती थी। इसलिए मेरी अंसारी पड़ोसीन औरतें रोटी पका दिया करती थीं। वे बड़ी सच्ची और मुख़्लिस औरतें थीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को जो ज़मीन दी थी, वह मदीना से दो तिहाई फ़रसख़ यानी दो मील दूर थी। मैं वहां से अपने सर पर गुठलियां लाद कर लाती थी। चुनांचे मैं एक दिन गुठलियां सर पर रखे हुए आ रही थी कि रास्ते में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (ऊंट पर सवार) मुझे मिल गए। आपके साथ सहाबा रज़ि० की एक जमाअत भी थी। हुज़ूर सल्ल० ने मुझे बुलाया और (ऊंट को बिठाने के लिए) इख़-इख़ फ़रमाया ताकि मुझे अपने पीछे बिठा लें।

मुझे लोगों के साथ चलने में शर्म आई और हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की

1. बुख़ारी, भाग 1, पृ० 264, हुलीया, भाग 1, पृ० 188, कंज़, भाग 1, पृ० 137, फ़त्हुलबारी, भाग 4, पृ० 151, इब्ने साद, भाग 4, पृ० 85,

ग़ैरत याद आ गई, क्योंकि वह लोगों में सबसे ज़्यादा ग़ैरत वाले थे। हुज़ूर सल्ल० समझ गए कि मुझे शर्म आ रही है, इसलिए आप तशरीफ़ ले गए।

मैंने जाकर हज़रत ज़ुबैर रज़ि० को बताया कि मैं सर पर गुठलियां लेकर आ रही थी। रास्ते में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिले। आपके साथ सहाबा रज़ि० की एक जमाअत थी। हुज़ूर सल्ल० ऊंट बिठाने लगे, ताकि मैं आपके साथ सवार हो जाऊं, लेकिन मुझे शर्म आ गई और आपकी ग़ैरत का ख़्याल आ गया।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम हुज़ूर सल्ल० के साथ सवार हो जातीं, इससे मुझे इतना बोझ न होता, जितना मुझे तुम्हारे गुठलियां सर पर लाने से हुआ है, इसके बाद हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे पास एक बांदी भेजी जिसने घोड़े की देख-भाल और ख़िदमत के तमाम काम संभाल लिए, तो मुझे ऐसे लगा कि जैसे उन्होंने मुझे क़ैद से आज़ाद कर दिया हो।[1]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में थीं। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० उन पर सख़्ती किया करते थे। हज़रत अस्मा रज़ि० ने जाकर अपने अब्बा जान से हज़रत ज़ुबैर रज़ि० की शिकायत की।

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरी बेटी! सब्र करो, क्योंकि जब किसी औरत का नेक ख़ाविंद हो, फिर वह ख़ाविंद मर जाए और वह औरत उसके बाद और शादी न करे तो इन दोनों को जन्नत में जमा कर दिया जाएगा।[2]

हज़रत कहमस हिलाली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था और लोग भी बैठे हुए थे कि इतने में एक औरत आकर हज़रत उमर रज़ि० के पास बैठ गई और

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 250
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 251

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मेरे ख़ाविंद की शरारत बढ़ गई है और उसकी भलाई कम हो गई है।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुम्हारा ख़ाविंद कौन है? उसने कहा, हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, उन्हें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत हासिल है और वह सच्चे आदमी हैं। हज़रत उमर रज़ि० के पास एक आदमी बैठा हुआ था। उससे हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या वह आदमी ऐसे नहीं हैं?

उस आदमी ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आपने इनके बारे में जो कहा है, हमें भी यही मालूम है। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एक आदमी से कहा, जाओ, अबू सलमा को मेरे पास बुलाकर ले आओ।

जब हज़रत उमर रज़ि० ने उस औरत के ख़ाविंद के पास आदमी भेजा तो वह औरत उठकर हज़रत उमर रज़ि० के पीछे आकर बैठ गई। थोड़ी देर में वह आदमी उस औरत के ख़ाविंद हज़रत अबू सलमा को बुलाकर ले आया और वह आकर हज़रत उमर रज़ि० के सामने बैठ गए। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह मेरे पीछे बैठी हुई औरत क्या कह रही है?

हज़रत अबू सलमा रज़ि० ने पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! यह औरत कौन है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह आपकी बीवी है। हज़रत अबू सलमा रज़ि० ने कहा, यह क्या कह रही हैं? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, यह कह रही हैं कि आपकी ख़ैर कम हो गई और आपकी बुराई ज़्यादा हो गई है।

हज़रत अबू सलमा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इसने बहुत बुरी बात कही है। यह अपने क़बीले की नेक औरतों में से है, लेकिन इसके पास कपड़े इन सब औरतों से ज़्यादा हैं और घर में आसानी और राहत का सामान भी सबसे ज़्यादा है, बस इतनी बात है कि इसका शौहर बूढ़ा हो गया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने उस औरत से कहा, अब तुम क्या कहती हो? उसने कहा, यह ठीक कह रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि० कोड़ा लेकर उस औरत की ओर बढ़े और कोड़े से उसकी ख़बर ली, फिर फ़रमाया, अपनी जान की दुश्मन! तू इसका सारा माल खा गई और इसकी जवानी फ़ना कर दी और अब इसकी ऐसी शिकायत लगा रही है जो इसमें नहीं है।

उस औरत ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप जल्दी न करें, अल्लाह की क़सम! आगे मैं कभी (शिकायत की) इस मज्लिस में नहीं बैठूंगी (यानी कभी शिकायत नहीं लगाऊंगी) फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि इस औरत को तीन कपड़े दिए जाएं और इस औरत से कहा, मैंने जो तुझे मारा है, ये कपड़े उसके बदले में ले लो।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि वह क़िस्सा मुझे ऐसा याद है कि गोया मैं अब भी उस औरत को कपड़े लेकर उठते हुए देख रहा हूं। फिर हज़रत उमर रज़ि० ने उस औरत के ख़ाविंद की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया, तुमने जो मुझे इसको सज़ा देते हुए देखा है, इसकी वजह से तुम इसके साथ बुरा सुलूक न शुरू कर देना।

उन्होंने कहा, मैं ऐसा नहीं करूंगा। चुनांचे वे मियां-बीवी दोनों वापस चले गए।

फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि मेरी उम्मत का बेहतरीन ज़माना वह है जिसमें मैं हूं, फिर दूसरा ज़माना, फिर तीसरा ज़माना, फिर इनके बाद ऐसे लोग पैदा हो जाएंगे जो गवाही देने से पहले ही क़स्में खाने लग जाएंगे और अभी उनसे मांगी न जाएगी कि वे पहले ही गवाही देने लग जाएंगे और बाज़ारों में शोर मचाते फिरेंगे।[1]

हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक औरत हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आई और कहने लगी कि मैं आपके पास ऐसे आदमी की शिकायत करने आई हूं जो तमाम दुनिया वालों से ज़्यादा बेहतर हैं। उनसे बेहतर वही आदमी हो

1. कंज़, भाग 8, पृ० 303, इसाबा, भाग 4, पृ० 93,

सकता है जो इनसे ज़्यादा अमल करे या इनके बराबर अमल करे। वह रात से सुबह तक इबादत करते हैं और सुबह से शाम तक रोज़ा रखते हैं। इतना बताने के बाद उस औरत को शर्म आ गई और उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप मुझे माफ़ फ़रमा दें।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें भला बदला दे, तुमने इस आदमी की बहुत अच्छी तारीफ़ की है। मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया है।

जब वह औरत चली गई, तो हज़रत काब बिन सूर रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस औरत ने आपसे शिकायत करने में कमाल कर दिया है।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, इसने क्या शिकायत की है? हज़रत काब रज़ि० ने कहा, इसने अपने ख़ाविन्द की शिकायत की है। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, इस औरत को मेरे पास लाओ और इसी तरह आदमी भेजकर उसके ख़ाविंद को भी बुलाया।

जब वे दोनों आ गए तो हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत काब से कहा, तुम इन दोनों में फ़ैसला करो। हज़रत काब ने कहा, आपके होते हुए मैं फ़ैसला करूं, यह कैसे हो सकता है? हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, तुम इसकी शिकायत को समझ गए, मैं न समझ सका, इसलिए तुम ही फ़ैसला करो।

हज़रत काब रज़ि० ने कहा, अल्लाह फ़रमाते हैं—

فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ (سورۃ نساء آیت ۳)

'और औरतों से, जो तुमको पसन्द हों, निकाह कर लो और दो-दो औरतों से और तीन-तीन औरतों से और चार-चार औरतों से।'

(सूरः निसा, आयत 3)

उसके ख़ाविंद से कहा, तुम तीन दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्तार किया करो और इसके पास रहा करो और तीन रात नफ़्ल इबादत किया करो और एक रात इसके साथ गुज़ारा करो।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, तुम्हारा यह फ़ैसला तो मुझे तुम्हारी पहली बात से भी ज़्यादा पसन्द आया है, फिर हज़रत उमर रज़ि० ने

हज़रत काब रज़ि० को बसरा वालों का क़ाज़ी बनाकर भेज दिया।[1]

शैकरी ने हज़रत शाबी रहमतुल्लाहि अलैहि से यही वाक़िया इससे ज़्यादा लंबा नक़ल किया है और इसमें यह भी है कि हज़रत उमर रज़ि० ने उस औरत से कहा, तुम मुझे सच बात बताओ और हक़ बात को ज़ाहिर करने में कोई डर नहीं होना चाहिए।

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं एक औरत हूं। मुझमें भी वह ख़्वाहिश है जो औरतों में हुआ करती है।

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल करते हैं कि एक औरत ने आकर हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि मेरा ख़ाविंद रात भर इबादत करता है और दिन भर रोज़े रखता है, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या तुम मुझे यह कहना चाहती हो कि मैं उसे रात की इबादत से और दिन के रोज़े से रोक दूं ?

वह औरत चली गई, फिर उसने दोबारा आकर वही बात फिर कही। हज़रत उमर रज़ि० ने फिर वही जवाब दिया। इस पर हज़रत काब बिन सौर रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन ! इस औरत का भी हक़ है। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, क्या हक़ है ?

हज़रत काब ने कहा, अल्लाह ने उसके ख़ाविंद केलिए चार बीवियां हलाल क़रार दी हैं, तो आप औरत को चार बीवियों में से एक समझ लें। उसे हर चार रातों में से एक रात और हर चार दिनों में से एक दिन मिलना चाहिए। चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उसके ख़ाविंद को बुलाकर कहा कि हर चार रातों में से एक रात अपनी बीवी के पास गुज़ारा करो और हर चार दिनों में से एक दिन इसकी वजह से रोज़े न रखा करो।[2]

हज़रत अबू ग़रज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत इब्ने अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़कर अपनी बीवी के पास ले गए और उससे कहा, क्या तुम मुझसे बुग़्ज़ रखती हो ? उसने कहा, हां। हज़रत इब्ने अरक़म रज़ि० ने कहा, आपने ऐसा क्यों किया ? हज़रत अबू ग़रज़ा रज़ि० ने

1. इब्ने साद
2. कंज़, भाग 8, पृ० 307-308, इसाबा, भाग 3, पृ० 315,

कहा, क्योंकि लोग मुझे बहुत ज़्यादा बातें करने लग गए थे।

हज़रत इब्ने अरक़म रज़ि० ने जाकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को यह बात बताई। हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत ग़रज़ा रज़ि० को बुलाकर कहा, आपने ऐसा क्यों किया? हज़रत अबू ग़रज़ा रज़ि० ने कहा, क्योंकि लोग मुझे बहुत ज़्यादा बातें करने लग गए थे।

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू ग़रज़ा रज़ि० की बीवी को बुलाया। वह भी आई और उसके साथ एक फूफी भी आई जिसे कोई नहीं जानता था। फूफी ने उससे कहा, अगर हज़रत उमर रज़ि० तुमसे पूछें कि तुमने ऐसा साफ़ जवाब क्यों दिया? तो तुम कह देना कि उन्होंने क़सम देकर मुझसे पूछा था (कि क्या तुम मुझसे बुग़्ज़ रखती हो?) इसलिए झूठ बोलना मैंने मुनासिब न समझा।

चुनांचे हज़रत उमर रज़ि० ने उससे पूछा, तुमने यह बात क्यों कही? हज़रत अबू ग़रज़ा की बीवी ने कहा कि मुझे क़सम देकर पूछा था, इसलिए झूठ बोलना मैंने मुनासिब न समझा। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, नहीं, तुम्हें झूठ बोल देना चाहिए था और कोई अच्छी बात कह देनी चाहिए थी। (मियां-बीवी ताल्लुक़ात अच्छे रखने के लिए एक दूसरे से झूठी मुहब्बत ज़ाहिर कर सकते हैं।) क्योंकि तमाम अच्छे रहन-सहन की बुनियाद (मियां-बीवी की) मुहब्बत ही नहीं होती, बल्कि कुछ घरों में (मियां-बीवी में मुहब्बत नहीं होती, लेकिन अच्छे रहन-सहन की) बुनियाद ख़ानदानी शराफ़त और इस्लाम होता है।[1]

हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत आतिका बिन्त ज़ैद बिन अम्र बिन तुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा के निकाह में थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को उनसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने एक बाग़ उनको इस शर्त पर दिया कि वह उनके मरने के बाद किसी से शादी नहीं करेंगी।

तायफ़ की लड़ाई में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० को एक तीर लगा था,

1. कंज़, भाग 8, पृ० 303,

जिसका घाव तो उस वक़्त ठीक हो गया, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के चालीस दिन बाद वह घाव फिर हरा हो गया, जिससे हज़रत अब्दुल्लाह का इंतिक़ाल हो गया। उनकी बीवी हज़रत आतिका रज़ि० ने मर्सिए में ये पद कहे—

وَآلَيْتُ لَا تَنْفَكُّ عَيْنِي سَخِينَةً عَلَيْكَ وَلَا يَنْفَكُّ جِلْدِي أَغْبَرَا

مَدَى الدَّهْرِ مَا غَنَّتْ حَمَامَةُ أَيْكَةٍ وَمَا طَرَدَ اللَّيْلَ الصَّبَاحُ الْمُنَوَّرَا

'और मैंने क़सम खाई है कि ज़िंदगी भर उस वक़्त तक मेरी आंखें आप पर गर्म आंसू बहाती रहेंगी (ग़म के आंसू गर्म होते हैं) और मेरा जिस्म गर्द से अटा रहेगा (यानी मैं साज-सज्जा नहीं करूंगी) जब तक घने जंगल की कबूतरी गाती रहेगी और रात के बाद रोशन सुबह आती रहेगी, यानी हमेशा रोती रहूंगी।'

फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको शादी का पैग़ाम दिया, तो उन्होंने जवाब में कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने मुझे इस शर्त पर एक बाग़ दिया था कि मैं उनके बाद शादी न करूंगी।

हज़रत उमर रज़ि० ने कहलाया कि किसी आलिम से शादी के बारे में मसअला पूछ लो, तो उन्होंने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० की विरासत को (बाग़ को) वापस कर दो और शादी कर लो। (चुनांचे उन्होंने वह बाग़ वापस कर दिया और) हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे शादी कर ली और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुछ सहाबा को आदमी भेजकर वलीमा के लिए बुलाया। इन सहाबा रज़ि० में हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे और हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से हज़रत अली रज़ि० का हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ि० से भाईचारे का ताल्लुक़ था।

हज़रत अली रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० से कहा, आप मुझे इजाज़त दें तो मैं हज़रत आतिका रज़ि० से कुछ बात कर लूं। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, कर लो।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ आतिका रज़ि० ! (तुमने यह शेर

यानी पद कहा था अब उसके ख़िलाफ़ कर लिया।)

وَآلَيْتُ لَا تَنْفَكُّ عَيْنِي سَخِينَةً عَلَيْكَ وَلَا يَنْفَكُّ جِلْدِي أَغْبَرَا

'मैंने क़सम खाई है कि मेरी आंखें आप पर गर्म आंसू बहाती रहेंगी और मेरा जिस्म धूल से अटा रहेगा।'

(यह सुनकर हज़रत आतिका रज़ि० ज़ोर से रो पड़ीं) हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह आपको माफ़ करे। मेरी बीवी का ज़ेहन ख़राब न करें।[1]

हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की आज़ाद की हुई बांदी हज़रत नुदबा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत मैमूना रज़ि० ने मुझे (अपने भांजे) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा के पास भेजा। मैं उनके पास गई, तो मैंने देखा कि उनके घर में दो बिस्तर बिछे हुए हैं। (एक उनका और एक उनकी बीवी का)।

मैंने वापस जाकर हज़रत मैमूना से कहा, मेरे ख़्याल में तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने अपनी बीवी को छोड़ रखा है। हज़रत मैमूना रज़ि० ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की बीवी बिन्त सरज किन्दी को पैग़ाम भेजकर बुलाया और उनसे पूछा (क्या तुम्हें हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने छोड़ रखा है?)

हज़रत बिन्ते मरज ने कहा, नहीं, मेरे और उनके दर्मियान कोई जुदाई नहीं है। वह तो आज कल मुझे माहवारी हो रही है, (इसलिए बिस्तर अलग-अलग कर रखे हैं।) इस पर हज़रत मैमूना रज़ि० ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० को यह पैग़ाम भेजा कि तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत से मुंह फेर रहे हो। हुज़ूर सल्ल० माहवारी की हालत में भी अपनी बीवियों के साथ लेटा करते थे, अलबत्ता आपकी बीवियां घुटने या आधी पिंडुली तक कपड़े डाल लिया करती थीं।[2]

हज़रत इक्रिमा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, यह तो मुझे पता न चल सका कि खाना किसने दूसरे के लिए तैयार किया था, हज़रत इब्ने

1. कंज़, भाग 8, पृ० 302, इसाबा, भाग 4, पृ० 356
2. कंज़, भाग 5, पृ० 138,

अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने या उनके चचेरे भाई ने? बहरहाल ये लोग खाना खा रहे थे और एक बांदी उनके सामने काम कर रही थी, खाना वग़ैरह ला रही थी कि उनमें से किसी ने इस बांदी से कहा, ओ ज़िना करने वाली! तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसा न कहो। अगर इस बांदी की वजह से तुम्हें दुनिया में शरई हद (सज़ा) न लग सकी तो आख़िरत में तो ज़रूर लगेगी।

उस आदमी ने कहा, अगर बात वाक़ई ऐसी ही हो जैसी मैंने कही है तो?

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, (अगर बात ऐसी ही हो सही, तो भी भरी मज्लिस में कहनी नहीं चाहिए, क्योंकि) अल्लाह गन्दी बात कहने और जान-बूझकर बदकलामी करने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाते और गन्दी बात कहने और बदकलामी करने वाले को अल्लाह के पसन्द न करने की बात हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने ख़ुद कही थी।[1]

हज़रत अबू इम्रान फ़लस्तीनी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी उनके सर में से जुएं निकाल रही थीं। उनकी बीवी ने अपनी बांदी को आवाज़ दी। बांदी ने आने में देर कर दी तो उनकी बीवी ने कहा, ओ ज़िना करने वाली!

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, क्या तुमने उसे ज़िना करते देखा है? उनकी बीवी ने कहा, नहीं। हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! तुम्हें इस बांदी की वजह से क़ियामत के दिन अस्सी कोड़े मारे जाएंगे। उनकी बीवी ने उस बांदी से माफ़ी मांगी। बांदी ने माफ़ कर दिया।

हज़रत अम्र रज़ि० ने कहा, यह बेचारी तुम्हें क्यों न माफ़ करे, यह तुम्हारी मातहत जो है, इसे आज़ाद कर दो। उनकी बीवी ने कहा, क्या यह आज़ाद करना काफ़ी हो जाएगा? (फिर मुझे आख़िरत में सज़ा तो नहीं मिलेगी) हज़र अम्र रज़ि० ने कहा, हां, उम्मीद है।[2]

हज़रत अबुल मुतवक्किल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत

---

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० ४९,
2. कंज़, भाग 5, पृ० 48,

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की एक हब्शिन बांदी थी, जिसकी किसी हरकत की वजह से तमाम घरवाले बड़े ग़मगीन और परेशान थे। एक दिन हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उसे मारने के लिए कोड़ा उठा लिया, लेकिन फिर फ़रमाया, अगर मुझे क़ियामत के दिन के बदले का डर न होता, तो मैं तुम्हें इस कोड़े से मार-मारकर बेहोश कर देता, लेकिन अब मैं तुझे ऐसे शख़्स के हाथ बेचूंगा जो तेरी क़ीमत पूरी-पूरी देगा (यानी अल्लाह) जा, तू अल्लाह के लिए आज़ाद है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन क़ैस या इब्ने अबी क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु एक शाम तशरीफ़ लाए थे, तो मैं भी उन लोगों में शामिल था जिन्होंने हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उनका इस्तिक़बाल किया था। हज़रत उमर चल रहे थे कि उन्हें अज़्रिआत शहर के करतब दिखाने वाले लोग तलवारें और नेज़े लिए हुए मिले। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, ठहरो, इन्हें रोको और वापस करो।

हज़रत अबू उबैदा रज़ि० ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह इन अजमियों का रिवाज है (कि अमीर के आने पर ख़ुशी ज़ाहिर करने के लिए अपने करतब दिखाते हैं) अगर आप इनको इससे रोकेंगे तो ये लोग यह समझेंगे कि आप इनका अम्न का समझौता तोड़ना चाहते हैं। (इस समझौते में इनको अपने रिवाज पर चलने की इजाज़त हासिल है)।

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर इनको छोड़ दो, क्योंकि इस वक़्त उमर और उमर के ख़ानदान सबको हज़रत अबू उबैदा रज़ि० की इताअत करनी पड़ेगी।[2]

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से दौड़ में मुक़ाबला किया तो हज़रत ज़ुबैर रज़ि० आगे निकल गए और उन्होंने कहा, रब्बे काबा की क़सम! मैं आपसे आगे निकल गया। फिर हज़रत

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 384,
2. कंज़, भाग 7, पृ० 334,

उमर रज़ि० ने उनसे दोबारा मुक़ाबला किया। इस बार हज़रत उमर रज़ि० आगे निकल गए, तो उन्होंने कहा, रब्बे काबा की क़सम! मैं आपसे आगे निकल गया।[1]

हज़रत सुलैम बिन हंज़ला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम हदीसें सुनने के लिए हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए। जब (हदीसें सुनाकर) हज़रत उबई रज़ि० खड़े हुए तो हम भी आपके साथ खड़े होकर चलने लगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इनसे मिले और उन्होंने फ़रमाया, क्या तुम्हें इस बात का ख़्याल नहीं है कि यों लोगों का तुम्हारे साथ चलना ख़ुद तुम्हारे लिए फ़ित्ने और बिगड़ने की वजह है और उनके लिए ज़िल्लत का ज़रिया है।[2]

हज़रत अबुल बख़्तरी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उसने कहा, आज लोगों का मामला कितना अच्छा है। मैं सफ़र से आ रहा हूं, अल्लाह की क़सम! मैं जिसके यहां भी ठहरा, मुझे ऐसे लगा कि जैसे मैं अपने बाप के बेटे के यहां ठहरा हूं। हर एक ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया और बड़ी मेहरबानी से पेश आया।

हज़रत सलमान रज़ि० ने फ़रमाया, ऐ मेरे भतीजे! यह ईमान के ताज़ा और उम्दा होने की निशानी है। क्या तुम देखते नहीं हो कि जब जानवर पर सामान लादा जाए (और सफ़र क़रीब पर हो, जानवर भी ताज़ा दम हो) तो फिर जानवर सामान लेकर ख़ूब तेज़ चलता है और जब सफ़र लम्बा हो (और जानवर थक चुका हो) तो फिर जानवर रुक-रुककर चलता है और पीछे रह जाता है। (इसलिए ईमान को ताज़ा करते रहो और उसे उम्दा बनाते रहो।)[3]

हज़रत हय्या बिन्त अबी हय्या रहमतुल्लाहि अलैहा कहती हैं कि एक दिन ठीक दोपहर के वक़्त एक आदमी मेरे पास अन्दर आया। मैंने

---

1. कंज़, भाग 7, पृ० 334,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 61,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 203,

कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! तुम्हें क्या ज़रूरत पेश आ गई? उन्होंने कहा, मैं और मेरा एक साथी, हम दोनों अपने ऊंट ढूंढने आए हैं। मेरा साथी ऊंट ढूंढने चला गया है और मैं यहां साए में आया हूं, ताकि कुछ देर साए में बैठ जाऊं और कुछ भी पी लूं।

मैंने खड़े होकर उन्हें थोड़ी-सी लस्सी पिलाई और उन्हें पहचानने की कोशिश की। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! आप कौन हैं? उन्होंने कहा, अबूबक्र रज़ि०। मैंने कहा, वही अबूबक्र रज़ि०, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ास सहाबी हैं जिनका ज़िक्र मैं सुन भी चुकी हूं। उन्होंने हां, जी हां।

फिर मैंने उन्हें बताया कि जाहिलियत के ज़माने में हमारी क़बीला ख़सअम के साथ लड़ाई रहती थी और हम आपस में भी लड़ते रहते थे, लेकिन अब अल्लाह ने हमें आपस में उलफ़त व मुहब्बत नसीब फ़रमा दी। (यह सब इस्लाम की बरकत है)

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! लोगों में उलफ़त व मुहब्बत कब तक रहेगी? उन्होंने फ़रमाया, जब तक कि इमाम सीधे रहेंगे।

मैंने पूछा, इमाम कौन होते हैं?

उन्होंने कहा कि क्या तुमने देखा नहीं कि हर क़बीले में एक सरदार होता है, जिसके पीछे लोग चलते हैं और उसकी बात मानते हैं। यही वे लोग हैं, जब तक ये ठीक चलते रहेंगे, लोगों में तमाम काम ठीक रहेंगे।[1]

हज़रत हारिस बिन मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं (शामदेश से) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो मुझसे हज़रत उमर रज़ि० ने पूछा, तुमने शाम वालों को किस हाल में छोड़ा? मैंने उन्हें शाम वालों का हाल बताया, तो उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और उसकी तारीफ़ की, फिर फ़रमाया, शायद तुम लोग मुश्रिकों के साथ बैठते हो?

मैंने कहा, नहीं अमीरुल मोमिनीन !

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अगर तुम मुश्रिकों के साथ बैठने

1. कंज़, भाग 3, पृ० 162

लगोगे तो तुम उनके साथ खाने-पीने लग जाओगे और तुम लोग उस वक़्त तक ख़ैर पर रहोगे जब तक तुम यह (उनके साथ खाने-पीने का) काम नहीं करोगे।[1]

हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात का हुक्म दिया कि वह अपना सारा लेन-देन खाल के टुकड़े पर लिखकर हज़रत उमर रज़ि० को पेश करें।

हज़रत अबू मूसा रज़ि० का एक ईसाई मुंशी था। उसने सारा हिसाब लिखकर हज़रत उमर रज़ि० को पेश किया जो हज़रत उमर रज़ि० को बहुत पसन्द आया और हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, इसका हाफ़िज़ा बहुत तेज़ है। (फिर उस मुंशी से कहा) हमारे पास शामदेश से एक ख़त आया है क्या तुम चलकर मस्जिद में हमें वह ख़त पढ़ दोगे?

हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, मैं तो यह काम नहीं कर सकता। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्यों? क्या यह जुनुबी (नापाक) है? हज़रत अबू मूसा रज़ि० ने कहा, नहीं, यह तो ईसाई है।

रिवायत करने वाले कहते हैं कि यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने मुझे डांटा और मेरी रान पर मारकर कहा, इसे यहां से निकाल दो, फिर यह आयत पढ़ी—

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى اَوْلِيَآءَ (سورت مائدہ آیت ۵۱)

'ऐ ईमान वालो! तुम यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त मत बनाना।'

(सूरः माइदा, आयत 51)[2]

---

1. कंज़, भाग 2, पृ० 300
2. कंज़, भाग 4, पृ० 37,

खाना-पीना, पहनावा और घर

खाने-पीने में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का तरीक़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाह अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कभी खाने में ऐब नहीं निकालते थे। अगर तबियत चाहती तो खा लेते वरना छोड़ देते।[1]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बकरी के गोश्त में सबसे ज़्यादा दस्ती पसन्द थी।[2]

हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दस्ती बहुत पसन्द थी और दस्ती के गोश्त में ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़हर डालकर दिया गया था और सबका ख़्याल यह था कि यहूदियों ने ही आपको ज़हर दिया था।[3]

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास घर में तशरीफ़ लाए। हमने आपके लिए एक बकरी ज़िब्ह की। इन लोगों को मालूम था कि हमें गोश्त पसन्द है। आगे हदीस में मशहूर क़िस्सा है।[4]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कद्दू पसन्द था। आपके पास खाना लाया गया या आपको खाने के लिए बुलाया। चूंकि मुझे मालूम था कि आपको कद्दू पसन्द है, इसलिए मैं कद्दू खोज कर करके आपके सामने रखने लगा।[5]

---

1. तफ़्सीर इब्ने कसीर, भाग 2, पृ० 68,
2. बिदाया, भाग 6, पृ० 40
3. कंज़, भाग 4, पृ० 37
4. शिमाइल, पृ० 12
5. शिमाइल, पृ० 12

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब खाना खा लेते तो अपनी तीन उंगलियां चाट लिया करते।[1]

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़मीन पर बैठकर खाना खाते थे और दूध निकालने के लिए बकरी की टांगों को बांधा करते और जौ की रोटी पर भी गुलाम की दावत कर लिया करते। (यानी आप बहुत ख़ाकसारी बरतते।)[2]

हज़रत यह्या बिन कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु हर दिन सरीद का एक प्याला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा करते और हुज़ूर सल्ल० जिस बीवी के यहां होते, वह वहीं ही भेज दिया करते।[3]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक बकरी का दूध निकाला गया। उसमें आपने कुछ पिया और फिर पानी लेकर आपने कुल्ली की और फ़रमाया कि इस दूध में चिकनाहट होती है।[4]

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (सफ़र में) एक जगह ठहरे। वहां एक औरत ने अपने बेटे के साथ एक बकरी आपके पास भेजी। आपने उसका दूध निकाला, फिर उस लड़के से कहा, यह अपनी मां के पास ले जाओ। (वह अपनी मां के पास ले गया) उसकी मां ने जी भरकर दूध पिया।

वह लड़का दूसरी बकरी ले आया। हुज़ूर सल्ल० ने उसका दूध निकाला और मुझे पिलाया। फिर वह लड़का एक और बकरी ले आया। उसका दूध निकालकर हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुद पिया।[5]

---

1. शिमाइल, पृ० 12
2. कंज़, भाग 4, पृ० 44
3. कंज़, भाग 4, पृ० 37
4. कंज़, भाग 4, पृ० 37
5. कंज़, भाग 4, पृ० 44,

हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना दाहिना हाथ खाने-पीने, वुज़ू करने और इन जैसे कामों के लिए फ़ारिग़ रखते और बायां हाथ इस्तिंजा करने, नाक साफ़ करने और इन जैसे कामों के लिए रखते।[1]

हज़रत जाफ़र बिन अब्दुल्लाह बिन हकम बिन राफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं बच्चा था और कभी इधर से खा रहा था और कभी उधर से। हज़रत हकम रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे देख रहे थे। उन्होंने मुझसे फ़रमाया, ऐ लड़के! ऐसे न खाओ, जैसे शैतान खाता है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब खाना खाते तो आपकी उंगलियां आपके सामने ही रहती थीं। (इधर-उधर न जाती थीं।)[2]

हज़रत उमर बिन अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ खाना खा रहा था, तो मैं प्याले के चारों ओर से गोश्त लेने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपने सामने से खाओ।[3]

हज़रत उमैया बिन मख़्शी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि एक आदमी खाना खा रहा है। उसने बिस्मिल्लाह नहीं पढ़ी। खाते-खाते बस एक लुक़्मा रह गया। जब उसे मुंह की ओर उठाने लगा तो उसने 'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आख़िरुहू' कहा। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हंस पड़े और फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! शैतान तुम्हारे साथ खाना खाता रहा, फिर जब तुमने बिस्मिल्लाह पढ़ी, तो जो कुछ उसके पेट में था, वह सब उसने क़ै कर दिया।

और एक रिवायत में यह है कि जब तुमने अल्लाह का नाम लिया, तो उसके पेट में जो कुछ था, वह उसने क़ै कर दिया।[4]

1. कंज़, भाग 8, पृ० 45,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 46, इसाबा, भाग 1, पृ० 344
3. कंज़, भाग 8, पृ० 46
4. कंज़, भाग 8, पृ० 45,

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक बार हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे कि इतने में खाने का एक प्याला लाकर रखा गया। हुज़ूर सल्ल० ने खाने से हाथ रोके रखा, तो हमने भी अपने हाथ रोके रखे, क्योंकि जब तक हुज़ूर सल्ल० खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाते थे, हम भी नहीं बढ़ाते थे।

इतने में एक देहाती आया। ऐसे लग रहा था कि जैसे कोई उसे धक्के देकर ला रहा हो। उसने खाने के लिए प्याले की ओर हाथ बढ़ाया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका हाथ पकड़ लिया। फिर एक लड़की आई उसका भी ऐसे लग रहा था जैसे उसे कोई धक्के देकर ला रहा हो। वह भी खाने में हाथ डालने लगी तो हुज़ूर सल्ल० ने उसका भी हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया, लोगों के जिस खाने पर अल्लाह का नाम लिया जाए, वह खाना शैतान के लिए हलाल हो जाता है।

जब शैतान ने देखा कि हमने अपने हाथ रोके हुए हैं तो वह इन दोनों को लेकर आया ताकि यह बग़ैर बिस्मिल्लाह के खाना शुरू करें और खाना उसके लिए हलाल हो जाए। उस अल्लाह की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं है! शैतान का हाथ इन दोनों के हाथों के साथ मेरे हाथ में है।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छः आदमियों के साथ खाना खा रहे थे कि इतने में एक देहाती दाख़िल हुआ और इनके सामने का सारा खाना दो लुक़्मों में रखा गया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर यह बिस्मिल्लाह पढ़ता तो यह खाना सबके लिए काफ़ी हो जाता। जब तुममें से कोई खाना खाने लगे तो उसे बिस्मिल्लाह पढ़नी चाहिए। अगर बिस्मिल्लाह पढ़ना शुरू में याद न रहे तो जब भी बिस्मिल्लाह याद आ जाए, 'बिस्मिल्लाहि अव्वलुहू व आख़िरुहू' कह ले।[2]

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 46,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 48,

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे वालिद के यहां आकर ठहरे। मेरे वालिद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सत्तू और खजूर और घी का बना हुआ हलवा लेकर आए। हुज़ूर सल्ल० ने उसे खाया। फिर मेरे वालिद पीने की कोई चीज़ लेकर आए जिसे हुज़ूर सल्ल० ने पिया, फिर प्याला दाईं ओर से एक साहब को दे दिया और आप जब खजूर खाया करते तो गुठली को इस तरह डाला करते। (हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने अपनी उंगली से उसकी पीठ की ओर इशारा करके बताया।)

जब हुज़ूर सल्ल० सवार होने लगे, तो मेरे वालिद ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० के ख़च्चर की लगाम पकड़ी और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आप हमारे लिए अल्लाह से दुआ फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल ने यह दुआ फ़रमाई, ऐ अल्लाह ! इनको जो रोज़ी तूने दी है, उसमें बरकत नसीब फ़रमा। इनकी मग़्फ़िरत फ़रमा, इन पर रहम फ़रमा।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ने मेरी वालिदा से कहा कि अगर तुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कुछ खाना पका लो तो बहुत ही अच्छा हो। फिर मेरी मां ने सरीद तैयार किया, फिर मेरे वालिद गए और हुज़ूर सल्ल० को बुलाकर ले आए।

हुज़ूर सल्ल० ने सरीद के बीच की सबसे ऊंची जगह पर अपना हाथ रखा और फ़रमाया, अल्लाह का नाम लेकर खाओ। चुनांचे सबने प्याले के किनारे से खाना शुरू किया। जब सब खा चुके तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! इनकी मग़्फ़िरत फ़रमा, इन पर रहम फ़रमा, और इनकी रोज़ी में बरकत नसीब फ़रमा।[2]

हज़रत इब्ने आबद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ इब्ने आदब ! क्या तुम जानते हो कि

1. इब्ने अबी शैबा व अबू नुऐम,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 47,

खाने का हक़ क्या है? मैंने कहा, खाने का हक़ क्या है? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तुम यों कहो, बिस्मिल्लाह, ऐ अल्लाह! जो रोज़ी तूने हमें दी है, उसमें बरकत नसीब फ़रमा।

फिर फ़रमाया, क्या तुम जानते हो कि जब तुम खाना खा चुको तो उसका शुक्र क्या है? मैंने कहा, खाने का शुक्र क्या है? उन्होंने फ़रमाया, खाने का शुक्र यह है कि तुम खाने के बाद यह दुआ पढ़ो—

'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सक़ाना।'[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहु ने फ़रमाया, बहुत ज़्यादा खाने-पीने से बचो, क्योंकि ज़्यादा खाने-पीने से जिस्म ख़राब हो जाता है और इससे कई बीमारियां पैदा हो जाती हैं और नमाज़ में सुस्ती आ जाती है, इसलिए खाने-पीने में बीच का रास्ता अख़्तियार करो, क्योंकि बीच का रास्ता अख़्तियार करने से जिस्म ज़्यादा ठीक रहता है और फ़िज़ूलख़र्ची से ज़्यादा दूर रहता है। अल्लाह मोटे आलिम को पसन्द नहीं फ़रमाते (जिसे अपना जिस्म ज़्यादा खा-पीकर मोटा करने की फ़िक्र हो) और आदमी तभी हलाक होता है जब अपनी शह्वतों को अपने दीन पर मुक़द्दम कर देता है।[2]

हज़रत अबू महज़ूरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था कि इतने में हज़रत सफ़वान बिन उमैया रज़ियल्लाहु अन्हु एक प्याला लेकर आए और हज़रत उमर रज़ि० के सामने रख दिया। हज़रत उमर रज़ि० ने मिस्कीनों को और आस-पास के लोगों के गुलामों को बुलाया और उन सबने हज़रत उमर रज़ि० के साथ यह खाना खाया और फिर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, अल्लाह उन लोगों पर लानत करे जो इस बात से मुंह फेरते हैं कि उनके गुलाम उनके साथ खाना खाएं।

हज़रत सफ़वान रज़ि० ने कहा, हमें इनके साथ खाने से इंकार नहीं, लेकिन हमें इतना अच्छा खाना नहीं मिलता जो हम ख़ुद भी खा लें और

---

1. कंज़, भाग 8, पृ० 46
2. कंज़, भाग 8, पृ० 47,

इन्हें भी खिला दें। इसलिए हम खाना अलग बैठकर खा लेते हैं।[1]

इमाम मालिक बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि मुझे यह बताया गया कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने एक बार जोहफ़ा नामी जगह पर पड़ाव डाला तो इब्ने आमिर बिन कुरैज़ रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपने नानबाई से कहा, तुम अपना खाना हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के पास ले जाओ। वह प्याला लेकर गया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, रख दो। वह नानबाई दूसरा प्याला लेकर गया और पहला प्याला उठाने लगा।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने कहा, क्या करने लगे हो? उसने कहा, मैं इस प्याले को उठाने लगा हूं। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, नहीं। दूसरे में जो कुछ है, वह पहले में ही डाल दो। चुनांचे वह नानबाई जो भी लाता, उसे पहले में डलवाते। वह नानबाई ग़ुलाम जब इब्ने आमिर के पास गया, तो उसने कहा, यह तो उजड्ड देहाती हैं। हज़रत इब्ने आमिर ने उससे कहा, यह तुम्हारे सरदार हैं। यह हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं।[2]

हज़रत जाफ़र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा अनार का एक दाना लेते और उसे खा लेते। किसी ने उनसे कहा, ऐ इब्ने अब्बास! आप ऐसा क्यों करते हैं? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, मुझे यह ख़बर पहुंची है कि ज़मीन में जो अनार भी उगता है, उसमें जन्नत का एक दाना ज़रूर होता है, तो मैं एक-एक दाना इस ख़्याल से खा रहा हूं कि शायद जन्नत वाला दाना यही हो।[3]

हज़रत ज़ैद बिन सूहान रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत सालिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं अपने आक़ा हज़रत ज़ैद बिन सूहान रज़ि० के साथ बाज़ार में था। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० हमारे पास से गुज़रे। उन्होंने एक वसक़ (साठ साअ यानी सवा पांच मन) ग़ल्ला

1. कंज़, भाग 5, पृ० 48,
2. हुलीया, भाग 1, पृ० 301,
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 323

ख़रीद रखा था। हज़रत ज़ैद रज़ि० ने उनसे कहा, ऐ अल्लाह के बन्दे ! आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी होकर यह कर रहे हैं। (इतना ग़ल्ला जमा कर रहे हैं।)

हज़रत सलमान रज़ि० ने कहा कि इंसान जब अपनी रोज़ी जमा कर लेता है तो उसका नफ़्स मुतमइन होकर इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जाता है और वस्वसा डालने वाला शैतान उससे नाउम्मीद हो जाता है।[1]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया, मैं अपने हाथ से कमा कर खाने को पसन्द करता हूं।[2]

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे पास पन्द्रह खजूरें थीं, पांच खजूरें मैंने इफ़्तारी में खाईं और पांच सेहरी में और पांच खजूरें मैंने अपने इफ़्तार के लिए बचा लीं।[3]

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़ुलाम हज़रत मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ि० ने पीने की कोई चीज़ मंगवाई। मैं उनके पास पानी का एक प्याला लाया और मैंने उस प्याले में फूंक मार दी तो हज़रत अली रज़ि० ने उसे वापस कर दिया और पीने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया, तुम ही इसे पी लो। (तुम्हें फूंक नहीं मारनी चाहिए थी।)[4]

पहनावे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि० का तरीक़ा

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ था। उन्होंने फ़रमाया कि मैंने हज़रत अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 307
2. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 200
3. हुलीया, भाग 1, पृ० 384,
4. इब्ने साद, भाग 6, पृ० 237

आपने एक शामी जुब्बा पहना हुआ था जिसकी आस्तीनें तंग थीं।[1]

हज़रत जुन्दुब बिन मकीस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब कोई वफ़्द आता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनते और अपने बड़े और ऊंचे सहाबा रज़ि० को भी इस बात का हुक्म देते। चुनांचे मैंने देखा कि जिस दिन किन्दा का वफ़्द आया, उस दिन हुज़ूर सल्ल० ने यमनी जोड़ा पहना हुआ था और हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अनहुमा ने भी ऐसे ही कपड़े पहने हुए थे।[2]

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु आधी पिंडुली तक लुंगी बांधा करते थे और फ़रमाते थे कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लुंगी ऐसी हुआ करती थी।[3]

हज़रत अशअस बिन सुलैम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने अपनी फूफी से सुना, वह अपने चचा से नक़ल कर रही थीं कि मैं एक बार मदीना में चला जा रहा था कि इतने में एक आदमी ने मेरे पीछे से कहा, अपनी लुंगी को ऊपर उठा लो कि इसमें तक़्वा भी ज़्यादा है और इससे लुंगी भी ज़्यादा देर चलेगी। मैंने मुड़कर देखा तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे।

मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो काली और सफ़ेद धारियों वाली एक मामूली चादर ही है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या तुम्हें मेरे नमूने पर चलने का शौक़ नहीं है? मैंने देखा तो हुज़ूर सल्ल० की लुंगी आधी पिंडुलियों तक थी।[4]

हज़रत अबू बुरदा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक पैवन्द वाली चादर और एक मोटी लुंगी निकालकर दिखाई और फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

---

1. कंज़, भाग 4, पृ० 37
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 346,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 55,
4. शिमाइल, पृ० 9

का इन दो कपड़ों में इंतिक़ाल हुआ था।[1]

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कपड़ों में क़मीज़ सबसे ज़्यादा पसन्द थी।[2]

हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि की क़मीज़ की आस्तीनें गट्टे तक थीं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की जीत के दिन मक्का में दाख़िल हुए तो आपने काला साफ़ा बांधा हुआ था।

हज़रत अम्र बिन हुवैस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काला साफ़ा पहनकर लोगों में बयान किया।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं, एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों में बयान फ़रमाया और आपके सिर पर चिकनी पट्टी थी।

हज़रत नाफ़ेअ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब पगड़ी बांधते तो उसका शमला दोनों कांधों के बीच में लटका लेते।

हज़रत नाफ़ेअ कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० भी ऐसे ही करते।

हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद और हज़रत सालिम दोनों को भी ऐसा करते देखा है।[3]

किसी ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि चमड़े का बिस्तर था, जिसके अन्दर खजूर के पेड़ की छाल भरी हुई थी।[4]

---

1. तिर्मिज़ी, शिमाइल, पृ० 9
2. वही, पृ० 5
3. शिमाइल, पृ० 9
4. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 464.

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक अंसारी औरत मेरे पास अन्दर आई और उसने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर एक चुग़ा है, जिसे दोहरा करके बिछाया हुआ है। उसने जाकर एक बिस्तर मेरे पास भेजा जिसमें ऊन भरा हुआ था।

फिर हुज़ूर सल्ल० मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! यह क्या है?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! फ़्लां अंसारी औरत मेरे पास आई। उसने आप का बिस्तर देखा। फिर उसने जाकर यह बिस्तर मेरे पास भेज दिया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, इसे वापस कर दो, लेकिन मैंने वापस न किया, क्योंकि मेरा दिल चाह रहा था कि यह बिस्तर मेरे घर में रहे, यहां तक कि आपने तीन बार वापस करने का हुक्म दिया और आख़िर में फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! यह बिस्तर वापस कर दो। अल्लाह की क़सम! अगर मैं चाहता तो अल्लाह मेरे साथ सोने और चांदी के पहाड़ चला देते।[1]

हज़रत मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि किसी ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आपके घर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर कैसा था? उन्होंने फ़रमाया, चमड़े का था, जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी और किसी ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि आपके घर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर कैसा था?

उन्होंने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर एक टाट था, जिसे हम दोहरा करके बिछाते थे। उस पर हुज़ूर सल्ल० आराम फ़रमाते। एक रात मैंने अपने दिल में कहा कि अगर मैं चोहरा करके बिछाऊं तो ज़्यादा नर्म हो जाएगा। चुनांचे उस रात हमने उसे चोहरा करके बिछा दिया। सुबह को हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात तुमने मेरे लिए क्या बिछाया था?

हमने कहा, आपका वही बिस्तर था, बस आज हमने उसे चोहरा करके

1. इब्ने साद, भाग 1, पृ० 465,

बिछाया था, ख़्याल था कि इस तरह आपका बिस्तर ज़्यादा नर्म हो जाएगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि इसे पहली हालत पर कर दो, क्योंकि इसकी नर्मी ने आज रात मुझे नमाज़ से रोक दिया, (या तो उठ ही न सका था, या देर से उठा।)[1]

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने एक बार देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नए कपड़े मंगवा कर पहने। जब आपकी हंसुली तक कुरता पहुंचा, तो आपने यह दुआ पढ़ी—

'अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व अ-त-जम्मलु बिही फ़ी हयाती'०

फिर फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जो मुसलमान बन्दा नया कपड़ा पहने, फिर वह यह दुआ पढ़े, जो मैंने अभी पढ़ी है, फिर जो पुराने कपड़े उतारे हों, वह किसी मुसलमान फ़क़ीर को अल्लाह के लिए दे दे तो जब तक उस फ़क़ीर के जिस्म पर इन कपड़ों में से एक धागा भी रहेगा, यह बन्दा अल्लाह की हिफ़ाज़त में, अल्लाह की ज़िम्मेदारी और अल्लाह की पनाह में रहेगा। वह पहनाने वाला, चाहे ज़िन्दा रहे या मर जाए, चाहे ज़िंदा रहे या मर जाए, चाहे ज़िंदा रहे या मर जाए।[2]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन बारिश हुई थी। मैं बक़ीअ के क़रीब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक औरत गधे पर सवार गुज़री। उस पर उसको किराए पर देने वाला यानी गधे का मालिक भी था। वह ज़मीन के निचले हिस्से से गुज़रने लगी, तो वह गिर गई। हुज़ूर सल्ल० ने चेहरा दूसरी ओर फ़रमा लिया।

लोगों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह तो शलवार पहने हुए है, (इसलिए उसका सतर नंगा नहीं हुआ) आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह !

1. बिदाया, भाग 6, पृ० 53, इब्ने साद, भाग 1, पृ० 465,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 55,

मेरी उम्मत की शलवार पहनने वाली औरतों की मग़फ़िरत फ़रमा। ऐ लोगो ! शलवार पहना करो, क्योंकि शलवार से सबसे ज़्यादा सतर छिपता है और जब तुम्हारी औरतें बाहर निकला करें तो शलवार पहना कर उनकी हिफ़ाज़त किया करो।[1]

हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे हिरक़्ल (रूम का बादशाह) के पास भेजा। जब मैं वहां से वापस आया, तो हुज़ूर सल्ल० ने मुझे मिस्र का बना हुआ एक बारीक सफ़ेद कपड़ा दिया और फ़रमाया, आधे से तुम अपनी क़मीज़ बना लो और आधा अपनी बीवी को दे दो, वह इसकी ओढ़नी बना लेगी। जब मैं वापस जाने लगा तो मुझे बुलाया और फ़रमाया कि अपनी बीवी से कहना कि वह इसके नीचे एक और कपड़ा भी ओढ़े, नीचे का बदन नज़र न आए।[2]

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हज़रत दिह्या कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु जो हदिए लाए थे, उसमें से एक सफ़ेद खुरदरा बारीक मिस्री कपड़ा हुज़ूर सल्ल० ने मुझे पहनने को दिया। मैंने वह अपनी बीवी को दे दिया। फिर एक दिन मुझसे हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है, तुम वह सफ़ेद मिस्री बारीक कपड़ा क्यों नहीं पहनते ?

मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैंने वह कपड़ा अपनी बीवी को पहनने के लिए दे दिया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अपनी बीवी से कह देना कि वह इसके नीचे बनियान वग़ैरह पहना करे, क्योंकि मुझे डर है कि इस कपड़े में उसका जिस्म नज़र आएगा।[3]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने एक दिन कपड़े पहने और घर में चल रही थी और अपने दामन और कपड़ों को देख रही थी (और ख़ुश हो रही थी कि) इतने में हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु

1. कंज़, भाग 8, पृ० 55,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 61,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 62,

मेरे पास अन्दर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ आइशा रज़ि० ! इस वक़्त अल्लाह तुम्हें (रहमत की निगाह से) नहीं देख रहे हैं।[1]

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने एक बार नई क़मीज़ पहनी। मैं उसे देखकर ख़ुश होने लगी, वह मुझे बहुत अच्छी लग रही थी। हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, क्या देख रही हो? इस वक़्त अल्लाह तुम्हें नहीं देख रहे हैं। मैंने कहा, क्यों?

उन्होंने फ़रमाया कि जब दुनिया की ज़ीनत की वजह से बन्दे के दिल में उज्ब (अपने को कुछ समझना) की कैफ़ियत पैदा हो जाए, तो जब तक वह इस ज़ीनत को अपने से दूर नहीं कर देगा, अल्लाह उससे नाराज़ रहेंगे।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैंने वह क़मीज़ उतार कर फ़ौरन सदक़ा कर दी, तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने फ़रमाया, शायद यह सदक़ा करना उस उज्ब का कफ़्फ़ारा बन जाए।[2]

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी जमीला अंसारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि० की क़मीज़ की आस्तीन गट्टे से आगे बढ़ी हुई नहीं होती थी।[3]

हज़रत बुदैल बिन मैसरा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के दिन तशरीफ़ ले जा रहे थे। उन्होंने सुम्बुलान नामी जगह की बनी हुई लम्बी क़मीज़ पहनी हुई थी और अपने देर से आने का उज्र पेश करने लगे और फ़रमाने लगे, इस क़मीज़ की वजह से मुझे देर हो गई। वह अपनी आस्तीन को खींचते थे, जब उसे छोड़ते, तो वह उंगलियों के किनारे तक फिर वापस आ जाती।

हज़रत हिशाम बिन ख़ालिद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नाफ़ से ऊपर लुंगी बांधा करते थे।

हज़रत आमिर बिन अबीदा बाहिली रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं

1. हुलीया,
2. कंज़, भाग 8, पृ० 54
3. इब्ने साद,

कि मैंने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रेशम मिले हुए ऊनी कपड़े के बारे में पूछा। हज़रत अनस रज़ि॰ ने फ़रमाया, मेरा दिल चाहता है कि अल्लाह इस कपड़े को पैदा ही न फ़रमाते और हज़रत उमर और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के अलावा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हर सहाबी ने इस कपड़े को पहना है। (यह कपड़ा हलाल था, लेकिन इसे अजम के मालदार लोग पहनते थे, इसलिए हज़रत अनस रज़ि॰ ने इसे पसन्द न किया।)[1]

हज़रत मसरूक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर तशरीफ़ लाए। उन्होंने सूती जोड़ा पहना हुआ था। लोगों ने उन्हें तेज़ नज़र से देखा, तो उन्होंने यह शेर (पद) पढ़ा—

لَا شَيْءَ فِيمَا تَرَىٰ تَبْقَىٰ بَشَاشَتُهُ   يَبْقَى الْإِلٰهُ وَيُوْدِي الْمَالُ وَالْوَلَدُ

'दुनिया की जितनी चीज़ें तुम देख रहे हो उनमें से किसी चीज़ की चमक-दमक बाक़ी नहीं रहेगी, अल्लाह बाक़ी रहेंगे। माल व औलाद सब ख़त्म हो जाएंगे।'

फिर फ़रमाया, आख़िरत के मुक़ाबले में तो दुनिया ख़रगोश की एक छलांग की तरह है।[2]

हज़रत शद्दाद बिन हाद के आज़ाद किए हुए गुलाम हज़रत अबू अब्दुल्लाह रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने एक जुमा के दिन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को मिंबर पर देखा। उन्होंने अदन की बनी हुई मोटी लुंगी बांधी हुई थी, जिसकी क़ीमत चार-पांच दिरहम थी और एक गेरूवे रंग की कोई चादर ओढ़ी हुई थी। उनके जिस्म पर गोश्त कम था। दाढ़ी लम्बी और चेहरा ख़ूबसूरत था।[3]

हज़रत मूसा बिन तलहा रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु जुमा के दिन लाठी का सहारा लेकर चलते थे। आप लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत थे। उन्होंने एक पीली लुंगी

---

1. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ॰ 419
2. मुंतख़बुल कंज़, भाग 4, पृ॰ 405,
3. हाकिम, भाग 3, पृ॰ 96,

बांध रखी थी और दूसरी पीली चादर ओढ़ रखी थी। वह चलते रहते, यहां तक कि आकर मिंबर पर बैठ जाते।[1]

हज़रत सुलैम अबू आमिर रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु पर यमानी चादर देखी जिसकी क़ीमत सौ दिरहम थी।[2]

हज़रत मुहम्मद बिन रबीआ बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा अपनी औरतों को लिबास में इतना फैलाव देते थे जिससे गर्मी-सर्दी से बचाव और आबरू की हिफ़ाज़त और ज़ीनत हासिल हो सके। चुनांचे मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु पर रेशम मिले हुए ऊनी कपड़े की एक चादर देखी जिसकी क़ीमत दो सौ दिरहम थी, जिसके दोनों तरफ़ के किनारे पर हाशिया था।

हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमाया, यह चादर (मेरी बीवी) हज़रत नाइला की है। मैंने उन्हें पहनने को दी थी। अब मैं उन्हें ख़ुश करने के लिए ख़ुद पहन रहा हूं।[3]

हज़रत ज़ैद बिन वह्ब रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बसरा वालों का एक वफ़्द आया। उसमें एक ख़ारिजी था जिसे जाद बिन नाजा कहा जाता था। उसने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़मीज़ पर नाराज़ी ज़ाहिर थी। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया, तुझे मेरी क़मीज़ से क्या? मेरी क़मीज़ घमंड से बहुत दूर इस लायक़ है कि मुसलमान मेरी पैरवी करे।[4]

हज़रत अम्र बिन क़ैस रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि किसी ने हज़रत अली रज़ि० से पूछा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप अपनी क़मीज़ पर पैवन्द क्यों लगाते हैं?

---

1. हैसमी, भाग 9, पृ० 80
2. हैसमी, भाग 9, पृ० 80
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 58,
4. हुलीया, भाग 1, पृ० 82

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, इससे दिल में नर्मी और ख़ाकसारी पैदा होती है और मोमिन उसकी पैरवी करता है।[1]

हज़रत अता अबू मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर बे-धुले खद्दर की एक क़मीज़ देखी।[2]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू हुज़ैल रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर रै नामी जगह की बनी हुई क़मीज़ देखी। जब हज़रत अली रज़ि० अपने हाथ को लंबा करते तो आस्तीन उंगलियों के किनारे तक पहुंच जाती और जब हाथ (लंबा करना) छोड़ देते तो आधे बाज़ू के क़रीब तक पहुंच जाती।[3]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जब क़मीज़ पहना करते तो आस्तीन को लम्बा करते और जितनी आस्तीन उंगलियों से आगे बढ़ जाती, उसे काट देते और फ़रमाते आस्तीनों को हाथों से आगे नहीं बढ़ना चाहिए।[4]

हज़रत अबू सईद अज़्दी रहमतुल्लाहि अलैहि क़बीला अज़्द के इमामों में से थे, वह फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह बाज़ार तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया, किसी के पास ऐसी क़मीज़ है जिसकी क़ीमत तीन दिरहम हो? एक आदमी ने कहा, मेरे पास है। वह आदमी वह क़मीज़ हज़रत अली रज़ि० के पास ले आया। हज़रत अली रज़ि० को वह क़मीज़ पसन्द आ गई और फ़रमाया, शायद यह तीन दिरहम से बेहतर हो यानी इसकी क़ीमत तीन दिरहम से ज़्यादा हो। उस आदमी ने कहा, नहीं, इसकी क़ीमत यही है।

फिर मैंने पूछा कि हज़रत अली रज़ि० अपने कपड़े में से दिरहमों की गांठ खोल रहे थे, फिर खोलकर उन्होंने उसे तीन दिरहम दिए और वह क़मीज़ पहन ली तो उसकी आस्तीन उंगलियों के किनारे से आगे बढ़ी हुई थी। हज़रत अली रज़ि० के फ़रमाने पर उंगलियों से ज़्यादा हिस्से

1. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 57
2. इब्ने अबी शैबा
3. मुंतख़ब, भाग 5, पृ० 57
4. कंज़, भाग 8, पृ० 55

को काट दिया गया।[1]

हज़रत अबू गुसैन के एक आज़ाद किए हुए गुलाम कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह बाहर तश्रीफ़ लाए और खद्दर बेचने वाले के पास गए और उससे फ़रमाया, क्या तुम्हारे पास सुम्बुलान शहर का बना हुआ लम्बा कुरता है?

इस खद्दर वाले ने एक कुरता निकाला, जिसे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहना तो वह उनकी आधी पिंडुलियों तक आया। फिर उन्होंने दाएं-बाएं देखकर फ़रमाया, मुझे तो यह ठीक ही लग रहा है, यह कितने का है?

उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! चार दिरहम का। हज़रत अली रज़ि० ने लुंगी में से खोलकर चार दिरहम उसे दिए और फिर वहां से तश्रीफ़ ले गए।[2]

हज़रत साद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु चार-पांच सौ की चादर या जोड़ा पहना करते थे।[3]

हज़रत कुज़आ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं, मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर खुरदरे कपड़े देखे। मैंने उनकी ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अबू अब्दुर्रहमान! चूंकि आपने खुरदरे कपड़े पहन रखे हैं, इसलिए मैं आपके लिए खुरासान का बना हुआ नर्म कपड़ा लाया हूं। इन्हें आप पर देखकर मेरी आंखें ठंडी होंगी।

उन्होंने फ़रमाया, मुझे दिखाओ, मैं भी ज़रा देखूं। चुनांचे उन्होंने उसे हाथ लगाकर देखा और फ़रमाया, क्या यह रेशम है? मैंने कहा, नहीं, यह रूई का है।

फ़रमाया, मुझे इस बात का डर है कहीं इसको पहनकर मैं घमंड करने वाला और इतराने वाला न बन जाऊं और अल्लाह को कोई घमंडी और

---

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 83
2. बिदाया, भाग 8, पृ० 3
3. इब्ने साद, भाग 3, पृ० 131

इतराने वाला पसन्द नहीं है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुबैश रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर मआफ़िर शहर के बने हुए दो कपड़े देखे और उनका कपड़ा आधी पिंडुली तक था।[2]

हज़रत वक़्दान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से पूछा कि मैं कौन से कपड़े पहना करूं? हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया, ऐसे कपड़े पहनो, जिनमें मूरख लोग तुम्हें नीचा न समझें और अक़्लमंद और बुर्दबार लोग तुम पर नाराज़ न हों।

उस आदमी ने पूछा, ऐसे कपड़े किस क़ीमत के होंगे? उन्होंने फ़रमाया, पांच दिरहम से लेकर बीस दिरहम तक।[3]

हज़रत अबू इस्हाक़ रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को आधी पिंडुली तक लुंगी बांधते हुए देखा।

दूसरी रिवायत में हज़रत अबू इस्हाक़ कहते हैं कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कई सहाबा हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन अरक़म, हज़रत बरा बिन आज़िब और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम को आधी पिंडलियों तक लुंगी बांधते हुए देखा।[4]

हज़रत उस्मान बिन अबी सुलैमान रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने हज़ार दिरहम का कपड़ा ख़रीद कर पहना।[5]

हज़रत कसीर बिन उबैद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में गया तो उन्होंने फ़रमाया, ज़रा ठहरो, मैं अपना फटा हुआ कुरता सी लूं।

1. हुलीया, भाग 1, पृ० 302,
2. इब्ने साद, भाग 4, पृ० 175,
3. अबू नुऐम, भाग 1, पृ० 302,
4. हुलीया, भाग 4, पृ० 341
5. हुलीया, भाग 1, पृ० 321.

मैंने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! अगर मैं बाहर जाकर लोगों को बताऊं (कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० तो अपना फटा हुआ कपड़ा सी रही हैं) तो वे सब आपके इस सीने को कंजूसी समझेंगे (कि आप बड़ी कंजूस हैं, इसलिए फटा हुआ कपड़ा सी रही हैं।)

हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमाया, तू अपना काम कर। जो पुराना कपड़ा नहीं पहनता उसे नया कपड़ा पहनने का कोई हक़ नहीं। (या जो दुनिया में पुराना नहीं पहनेगा, उसे आख़िरत में नया कपड़ा नहीं मिलेगा।[1]

हज़रत अबू सईद रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक आदमी हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास अन्दर गया। वह उस वक़्त अपना नक़ाब सी रही थीं। उस आदमी ने कहा, ऐ उम्मुल मोमिनीन ! क्या अल्लाह ने माल में फैलाव नहीं पैदा कर रखा है ? उन्होंने फ़रमाया, अरे मियां ! हमें ऐसे ही रहने दो, जिसने पुराना कपड़ा नहीं पहना, उसे नया पहनने का कोई हक़ नहीं।[2]

हज़रत हिशाम बिन उर्व: रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हज़रत मुंज़िर बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा इराक़ से आए तो उन्होंने (अपनी मां) हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमत में मर्व और कुवा के बने हुए बारीक और उम्दा जोड़े भेजे। यह वाक़िया उनकी आंख की रोशनी के चले जाने के बाद का है। उन्होंने उन जोड़ों को हाथ लगाकर देखा, फिर फ़रमाया, ओहो ! इस (मुंज़िर) के जोड़े को ऐसे ही वापस कर दो।

हज़रत मुंज़िर को यह बात बड़ी नागवार गुज़री। उन्होंने कहा, ऐ अम्मा जान ! ये कपड़े इतने बारीक नहीं हैं कि उनसे जिस्म नज़र आए। हज़रत अस्मा रज़ि० ने फ़रमाया, अगर जिस्म नज़र नहीं आएगा तो जिस्म की बनावट तो इन कपड़ों से मालूम हो जाएगी। फिर हज़रत मुंज़िर ने उनके लिए मर्व और कुवा के आम और सादा कपड़े ख़रीद कर दिए तो वे हज़रत अस्मा रज़ि० ने क़ुबूल फ़रमा लिए और फ़रमाया, ऐसे

1. अदबुल मुफ़रद, पृ० 68,
2. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 73

कपड़े मुझे पहनाया करो।[1]

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक औरत ने आकर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरा कुरता फट गया है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, क्या मैं तुम्हें इससे पहले पहनने का कपड़ा नहीं दे चुका हूं। उस औरत ने कहा, दिया तो था, लेकिन वह अब फट गया है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस औरत के लिए एक अच्छा जोड़ा और धागा मंगाया और उससे फ़रमाया, जब रोटी या सालन पकाओ, फिर तो यह पुराना जोड़ा पहना करो। जब खाना पकाने से फ़ारिग़ हो जाया करो, तो फिर यह नया जोड़ा पहना करो, क्योंकि जो पुराना कपड़ा न पहने, उसे नया पहनने का हक़ नहीं है।[2]

हज़रत ख़रशा बिन हर्र रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से एक नवजवान गुज़रा, जिसकी लुंगी टख़ने से नीचे जा रही थी, बल्कि वह उसे ज़मीन पर घसीटते हुए जा रहा था। हज़रत उमर रज़ि० ने उसे बुलाकर फ़रमाया, क्या तुम्हें माहवारी आती है? उसने कहा, क्या मर्द को भी माहवारी आती है?

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, फिर तुम्हें क्या हुआ कि तुमने लुंगी क़दमों से नीचे लटका रखी है? फिर हज़रत उमर रज़ि० ने एक छुरी मंगाई और उसकी लुंगी का किनारा पकड़ कर टख़नों के नीचे से काट दिया।

हज़रत ख़रशा रज़ि० कहते हैं, अब भी वह मंज़र मेरे सामने है और मुझे उसकी एड़ियों पर लुंगी के धागे नज़र आ रहे हैं।[3]

हज़रत अबू उस्मान नह्दी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि हम लोग आज़र बाईजान में थे, वहां हमारे पास हज़रत उत्बा बिन फ़रक़द रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त आया, जिसमें यह मज़्मून था, अम्मा बादु लुंगी बांधा करो और

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 252
2. कंज़, भाग 8, पृ० 55,
3. कंज़, भाग 8, पृ० 59

चादर ओढ़ा करो और जूते पहना करो और मोज़े उतार फेंको और शलवारें उतार दो (उनकी जगह लुंगी बांधा करो) और अपने आप इस्माईल अलैहिस्सलाम का पहनावा अपनाओ और नाज़ व नेमत की ज़िंदगी और अजमी लोगों का पहनावा न अपनाओ और धूप में बैठा करो, क्योंकि यही अरबों का हम्माम है और साद बिन अदनान जैसी सादा और मशक़्क़त वाली ज़िंदगी अख़्तियार करो और सख़्त खुरदरे और पुराने कपड़े पहनो। तीरों से निशाना बाज़ी किया करो, घोड़ों की रकाबें काट दो और कूद कर घोड़ों पर सवार हुआ करो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक उंगली से ज़्यादा रेशम पहनने से मना किया है और हज़रत उमर ने बीच की उंगली से इशारा किया।[1]

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के घर

हज़रत मुआज़ बिन मुहम्मद अंसारी रहमतुल्लाहि अलैहि कहते हैं कि एक मज्लिस में हज़रत इम्रान बिन अनस रहमतुल्लाहि अलैहि भी थे। इस मज्लिस में हज़रत अता खुरासानी पाक क़ब्र और मिंबर के बीच बैठे हुए थे, उनको मैंने यह कहते हुए सुना है कि मैंने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सललम की पाक बीवियों के घर खजूर की टहनियों के बने हुए थे और इनके दरवाज़ों पर काले बालों के बने हुए परदे थे।

फिर मैं उस वक़्त मौजूद था जबकि वलीद बिन अब्दुल मलिक बादशाह का ख़त पढ़ा जा रहा था जिसमें उसने हुक्म दिया था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के घर मस्जिदे नबवी में शामिल कर दिए जाएं, उस दिन से ज़्यादा रोने वाले मैंने कभी नहीं देखे।

चुनांचे मैंने हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रहमतुल्लाहि अलैहि को उस दिन यह कहते हुए सुना कि अल्लाह की क़सम! काश कि ये लोग इन घरों को इनके हाल पर रहने देते ताकि मदीने में पैदा होने वाली नस्लें,

---

1. कन्ज़, भाग 8, पृ० 58

और दुनिया के कोने-कोने से आने वाले लोग देख लेते कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़िंदगी में किस चीज़ को काफ़ी समझा, इससे लोगों के दिलों में दुनिया के बढ़ाने और उसमें फ़ख़ करने का चाव न पैदा होता।

हज़रत मुआज़ रज़ि० कहते हैं कि जब हज़रत अता ख़ुरासानी अपनी बात पूरी कर चुके तो हज़रत इम्रान बिन अबी अनस ने कहा, इनमें से चार घर कच्ची ईंटों के थे और उनका आंगन खजूर की टहनियों से बना हुआ था और पांच घर खजूर की टहनियों के थे जिन पर गारा लगा हुआ था और उनका सेहन कोई नहीं था। उनके दरवाज़ों पर बालों के परदे थे। मैंने परदों को नापा तो वह तीन हाथ लम्बा और एक हाथ से ज़्यादा चौड़ा था और आपने उस दिन लोगों के बहुत ज़्यादा रोने का ज़िक्र किया (तो यह मुझे भी याद है)।

मैं भी एक ऐसी मज्लिस में बैठा जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के कुछ बेटे बैठे हुए थे, जिनमें हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और हज़रत अबू उसामा बिन सह्ल बिन हुनैफ़ और हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे और ये सब इतना ज़्यादा रो रहे थे कि इनकी दाढ़ियां तर हो गई थीं और उस दिन हज़रत उसामा रज़ि० ने यह भी कहा था कि काश ये घर ऐसे ही छोड़ दिए जाते और इन्हें गिराया न जाता, ताकि लोग (इन घरों को देखकर) ऊंचे और बड़े घर न बनाते और देख लेते कि अल्लाह ने अपने नबी के लिए क्या पसन्द किया, हालांकि दुनिया के ख़ज़ानों की चाबियां उनके हाथ में थीं।[1]

---

1. इब्ने साद, भाग 8, पृ० 167